

॥३ अहंतिहकार, वा निरुद्ध नवद्वी कलिमहता न बीरता ।

नैतिक मूल्य १ टैका
आर्थिक, सामाजिक ३२ टैका

আমি "খাবেনের দাফ" শিরোনামে এক ভূতন
উপায় ও সুবিধা সাধনাম করিয়া মঞ্জীত্রে গ-
কল্পিতে হেঁকিটীয়া করিয়াছি শুধু কামনা-
বিন দাফলা অনুবাদ পত্রিকা-বাস্য প্রচার করি-
তে দেবসু আমি একাদিকার প্রাপ্ত হইয়াছি-
অন্তরক সম্বন্ধেই প্রাপ্ত অ. দেশ-অনুবাদি কার্য-কর-
বার সর্ব সাধারণকে বিজ্ঞাপন করা বাইতেছে
যে জন্য কেহ কোন ভিগ্নদের প্রকাশিত পত্ৰ-
কার আইন-দ্রষ্টার দাফলা অনুবাদ প্রেরী পুনর-
পত্রিকা-কাৰে প্রচার করি করেন। যদি কেহ
জাহা করেন তবে তিনি আমার কতি পুনের
দাফী হইবেন।

সংস্কৃত বঙ্গোপসাগর পুস্তকালয়ে বিজ্ঞপ্তি প্রদত্ত
আছে।

ନାମର ଅଢ଼ି ।

ଟିକିତ ମନ କରୁଥିବା ଶୁଭକାଳ ଆଗେଇବ ଏ-
 କଳ ନୋମ ଶୁଭାଶିଷର ଦୁର୍ଲ୍ଲଭ କାଳ ଅକ୍ଷତ ହେଉ-
 ନ କରୁଣା କାହିଁ ଚିନ୍ତାରେ ବିଷୟସୁଖକୁ କଲିନା
 ହିତରେ, ତାହା ମଧୁସୂଦନଙ୍କ ଦୁର୍ଲ୍ଲଭ କାଳ
 ହେଉ, ସି ବାଟେ ଆଶ୍ରମ ଦୁର୍ଲ୍ଲଭ ଶୁଭକାଳ

द्वितीयः भागः

মোমপ্রকাশের স্থান

अग्निवर्ष

[illegible]

विष्णु भवन ६

[illegible]

विद्युत् १

নব্বই লাখ ত্রিশ টকা, জাতি সনদ, খাতিয়াতে দে
 আবার বস্তুরে জব্বার কামালদে এক জন নব্বা
 নব্বা ১০ টাকার মাসিক বেতনে এক জন হই-
 তাবে যে কেহ উহার মিসরী উদ্দেশ্য হইবেক
 সেই আপন প্রতিষ্ঠা, গৃহ, ও নব্বা নব্বা সন-
 দিত নব্বা জাতিতে পঠাইবে, উহার মিস-
 বেতন দুই হইবে গাভী ২০ টাকা করি নাইবেক ।
 হাওলতী ৩০ চাবল পলাত, জাতি
 জাতি ২০ মাস ১৬২ } ভেল এক মাসিক
 ইনামিয়ার হাওলতী
 ৩০ ডিভিশন পলাত

विश्वविद्यालय

ਦਰਬਾਰੁ ਸਾਬ ਸੁਰਿਦੇਵੁ

【附】

२०२. श्री. कृष्णदेव-१६ वृ. कविदेव-२०१६ ई.पू.

ADDITIONAL COMMENTS:

1. **Introduction**
 2. **Background**
 3. **Methodology**
 4. **Results**
 5. **Conclusion**
 6. **References**
 7. **Appendix**
 8. **Index**
 9. **Table of Contents**
 10. **Summary**
 11. **Abstract**
 12. **Keywords**
 13. **Subject Headings**
 14. **Notes**
 15. **Footnotes**
 16. **References**
 17. **Appendix**
 18. **Index**
 19. **Table of Contents**
 20. **Summary**
 21. **Abstract**
 22. **Keywords**
 23. **Subject Headings**
 24. **Notes**
 25. **Footnotes**
 26. **References**
 27. **Appendix**
 28. **Index**
 29. **Table of Contents**
 30. **Summary**
 31. **Abstract**
 32. **Keywords**
 33. **Subject Headings**
 34. **Notes**
 35. **Footnotes**
 36. **References**
 37. **Appendix**
 38. **Index**
 39. **Table of Contents**
 40. **Summary**
 41. **Abstract**
 42. **Keywords**
 43. **Subject Headings**
 44. **Notes**
 45. **Footnotes**
 46. **References**
 47. **Appendix**
 48. **Index**
 49. **Table of Contents**
 50. **Summary**
 51. **Abstract**
 52. **Keywords**
 53. **Subject Headings**
 54. **Notes**
 55. **Footnotes**
 56. **References**
 57. **Appendix**
 58. **Index**
 59. **Table of Contents**
 60. **Summary**
 61. **Abstract**
 62. **Keywords**
 63. **Subject Headings**
 64. **Notes**
 65. **Footnotes**
 66. **References**
 67. **Appendix**
 68. **Index**
 69. **Table of Contents**
 70. **Summary**
 71. **Abstract**
 72. **Keywords**
 73. **Subject Headings**
 74. **Notes**
 75. **Footnotes**
 76. **References**
 77. **Appendix**
 78. **Index**
 79. **Table of Contents**
 80. **Summary**
 81. **Abstract**
 82. **Keywords**
 83. **Subject Headings**
 84. **Notes**
 85. **Footnotes**
 86. **References**
 87. **Appendix**
 88. **Index**
 89. **Table of Contents**
 90. **Summary**
 91. **Abstract**
 92. **Keywords**
 93. **Subject Headings**
 94. **Notes**
 95. **Footnotes**
 96. **References**
 97. **Appendix**
 98. **Index**
 99. **Table of Contents**
 100. **Summary**
 101. **Abstract**
 102. **Keywords**
 103. **Subject Headings**
 104. **Notes**
 105. **Footnotes**
 106. **References**
 107. **Appendix**
 108. **Index**
 109. **Table of Contents**
 110. **Summary**
 111. **Abstract**
 112. **Keywords**
 113. **Subject Headings**
 114. **Notes**
 115. **Footnotes**
 116. **References**
 117. **Appendix**
 118. **Index**
 119. **Table of Contents**
 120. **Summary**
 121. **Abstract**
 122. **Keywords**
 123. **Subject Headings**
 124. **Notes**
 125. **Footnotes**
 126. **References**
 127. **Appendix**
 128. **Index**
 129. **Table of Contents**
 130. **Summary**
 131. **Abstract**
 132. **Keywords**
 133. **Subject Headings**
 134. **Notes**
 135. **Footnotes**
 136. **References**
 137. **Appendix**
 138. **Index**
 139. **Table of Contents**
 140. **Summary**
 141. **Abstract**
 142. **Keywords**
 143. **Subject Headings**
 144. **Notes**
 145. **Footnotes**
 146. **References**
 147. **Appendix**
 148. **Index**
 149. **Table of Contents**
 150. **Summary**
 151. **Abstract**
 152. **Keywords**
 153. **Subject Headings**
 154. **Notes**
 155. **Footnotes**
 156. **References**
 157. **Appendix**
 158. **Index**
 159. **Table of Contents**
 160. **Summary**
 161. **Abstract**
 162. **Keywords**
 163. **Subject Headings**
 164. **Notes**
 165. **Footnotes**
 166. **References**
 167. **Appendix**
 168. **Index**
 169. **Table of Contents**
 170. **Summary**
 171. **Abstract**
 172. **Keywords**
 173. **Subject Headings**
 174. **Notes**
 175. **Footnotes**
 176. **References**
 177. **Appendix**
 178. **Index**
 179. **Table of Contents**
 180. **Summary**
 181. **Abstract**
 182. **Keywords**
 183. **Subject Headings**
 184. **Notes**
 185. **Footnotes**
 186. **References**
 187. **Appendix**
 188. **Index**
 189. **Table of Contents**
 190. **Summary**
 191. **Abstract**
 192. **Keywords**
 193. **Subject Headings**
 194. **Notes**
 195. **Footnotes**
 196. **References**
 197. **Appendix**
 198. **Index**
 199. **Table of Contents**
 200. **Summary**
 201. **Abstract**
 202. **Keywords**
 203. **Subject Headings**
 204. **Notes**
 205. **Footnotes**
 206. **References**
 207. **Appendix**
 208. **Index**
 209. **Table of Contents**
 210. **Summary**
 211. **Abstract**
 212. **Keywords**
 213. **Subject Headings**
 214. **Notes**
 215. **Footnotes**
 216. **References**
 217. **Appendix**
 218. **Index**
 219. **Table of Contents**
 220. **Summary**
 221. **Abstract**
 222. **Keywords**
 223. **Subject Headings**
 224. **Notes**
 225. **Footnotes**
 226. **References**
 227. **Appendix**
 228. **Index**
 229. **Table of Contents**
 230. **Summary**
 231. **Abstract**
 232. **Keywords**
 233. **Subject Headings**
 234. **Notes**
 235. **Footnotes**
 236. **References**
 237. **Appendix**
 238. **Index**
 239. **Table of Contents**
 240. **Summary**
 241. **Abstract**
 242. **Keywords**
 243. **Subject Headings**
 244. **Notes**
 245. **Footnotes**
 246. **References**
 247. **Appendix**
 248. **Index**
 249. **Table of Contents**
 250. **Summary**
 251. **Abstract**
 252. **Keywords**
 253. **Subject Headings**
 2

निष्ठापन

[illegible]

一、政治

গোবিন্দবাল :

電 報 掛 號 〇 〇 〇 〇 〇 〇

한글서체

१२०६ आर्य समाज के संस्थापक महाराज श्री

कृत्रिमत्व, कृतकत्व आदि

हरेण्ड पत्रिका : अक्टूबर : हरेण्ड पत्रिका :

(पञ्चमः सर्गः)

महाराज कंठिवासी है। यहाँ कविता भवना है।

महाराष्ट्र सरकार, निवासे, शाहूजीवाडी, अहमदनगर

কবি-সমালোচনা

ନବମ୍ବର ୧୯୫୩ ମସିହା

पक्ष विपक्ष के सदस्यों को भी पाठ्यक्रम के अनुसार

— ११३ —

[illegible]

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

विद्यार्थकृपायै नमः

संविधानसभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

3. 2000年12月15日，在“2000年中国城市竞争力”会议上，中国城市竞争力研究会会长、清华大学教授李京文指出，中国城市竞争力研究会成立三年来，一直把研究中国城市竞争力作为主要任务，并在此基础上，每年发布中国城市竞争力报告。中国城市竞争力研究会认为，中国城市竞争力报告是研究中国城市竞争力的重要成果，也是研究中国城市竞争力的重要工具。中国城市竞争力研究会认为，中国城市竞争力报告是研究中国城市竞争力的重要成果，也是研究中国城市竞争力的重要工具。

1990

জাতিরা যদি এমন বৈশিষ্ট্যে পুঙ্খ
জীবিত হন, তাহা হইলে বোধ হয় তাঁ
হারা একগুণকার ভারতবর্ষের তখনকার
ভারতবর্ষ বলিয়া চিনিতে পারেন না।

১। রাজস্ব—ছইবৎসর পূর্বে আমরা
ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের বর্ষের অসম্পত্তি
দেখিয়া সাতিশষ শতক হইয়াছিল।
হয় কোটি টাকা কিংবে পরিপূর্ণ হইবে,
তাহা তাহারা দ্বিগুণ করি হইয়াছিল।
উইলসন সাহেব আরবাসের সমস্ত বিধান-
করিতে আসিয়া ইনকম ট্যাক্স প্রচলিত ও
লাইসেন্স ট্যাক্স ও নোট প্রচলিত প্র-
স্তাব করিয়া যান। তিনি বায় সংকল্প
যে সমস্ত উপায় অবলম্বনের সক্ষম
করিয়াছিলেন, অকালে মৃত্যু হওয়ার
সে মনোমনি সিদ্ধ হইল না। তাঁহার
মৃত্যুর পর লেড সাহেব কলিকাতায় আ-
সিয়া বায় সংকল্পগুলি গুরুতর গ্রহণ
করিলেন। তিনি দেখিলেন মুতনবিধ কর
দ্বারা অসম্পত্তি দূর করা অসাধ্য। বহু দিন
অপরিমিত সৈন্য, ও নান্যাকার অমান-
্যক দান থাকিবে, ততদিন কোন ক্রমেই
অর্থের অসম্পত্তি দূর হইবার সম্ভাবনা
নাই। তিনি তদ্বিমিত্ত সৈন্য ও রাজ্য
সংক্রান্ত বাণের সংকল্পকার্যে মন
হইলেন। বাহারা পূর্বতন প্রকার অনু-
মরণ করিয়া আসিতেছিলেন, তাঁহার
নয় সংকল্পের নান স্থানিয়া দিগন্ত
ইয়া উঠিলেন। কিন্তু লর্ড ক্যানিং ও স-
র বাউল ফিয়ার কাহারও বাক্যে ধর্নপাত
না করিয়া লেড সাহেবের সভাপতি
করিতে লাগিলেন। অতঃ পর মিলে-
টারি ও সিভিল কিনাজ কমিসন মি-
মুক্ত হইলেন। কর্ণেল বালফোর সৈন্য
সংক্রান্ত টেম্পল সাহেব রাজ্য সংক্রা-
ন্যক অন্য বায় সংকল্পে প্ররক্ত হই-
য়া আফিসের অমান্যক কর্মচারি-
কে ছাড়িয়া দিলেন। কয়েটি ফেলা অ-
ন্য কর্মচারিও ছাড়িয়া দিয়া করা হই-

ল। এতদ্বারা গবর্ণমেন্ট যে বিষয়ে যে ব্যয়
করিতেন, তন্মত্ব কাহারও তাহা বিবেচ-
না করিয়া বায় সংকল্পে প্রবেশ করা
হইল। এজেন্ট প্রণালীর সৃষ্টি হইল।
বায় সংকল্পের এমন আগ্রহ হইল। উ-
ঠিল যে কিনাজ কমিসন কয়েটি কা-
লেজ উঠাইয়া দিবার প্রস্তাব করিলেন
কিন্তু মোতালাফের ভারতবর্ষীয় গবর্ণমে-
ন্ট এই প্রস্তাবের অনুমোদন করিলেন না।
এবং কর্ণেল বালফোর বহুসংখ্য সিপা-
হী ও পুলিশ সৈন্য ছাড়াইয়া দিবার এ-
বং এক লক্ষ দশহাজার সৈন্য রাখবার
অনুরোধ করিলেন। ইউরোপীয় সেনার
সংখ্যা কমাইয়া দিবার তাঁহার ইচ্ছা ছি-
ল, লেড সাহেব ও ভারতবর্ষীয় গবর্ণমে-
ন্টের টেটসেফটোরিকে এবিষয়ের জন্য
লিখিয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহাদিগের চেষ্টা
সফল হইল না। বাহা হউক, সৈন্য স-
ংক্রান্ত অনেক বায় সংকল্প করা হয়।
লেড সাহেব এগেল নামে আরবাসের
হিসাব দিয়া ব্যবস্থাপক সভায় বলিলেন
আর মুতনবিধ করের প্রয়োজন নাই।
আরবাসের সমস্ত বিধান হইয়াছে। এই
কথা শুনিয়া সকলে দ্বিগুণ করিলেন লর্ড-
সেন্স ট্যাক্স প্রবর্তিত হইবে না। কিন্তু লে-
ড সাহেব পীড়াবশতঃ ইংলণ্ডে যাওয়ার
এবং চীন দেশে অধিকেনের মুক্তা স্থান
হওয়াতে ১ লা আগস্ট সব বাউল ফিয়ার
ব লাইসেন্স ট্যাক্স প্রচলিত করিলেন।
চলিবে অসম্পত্তি ধনি উদ্ভিত হইল।
আসেসমেন্টেরাও আইনের অর্থ নিশ্চয়
বৃদ্ধিতে পারিলেন না। এই করসংগ্রহ
সফল রহিল। পরিশেষে লর্ড ক্যানিং স্ব-
দেশ যাত্রাকালে এই ঘণিত আইন উঠা-
ইয়া দিলেন। বাহাদিগের নিকট হইতে
লাইসেন্স ট্যাক্স লওয়া হইয়াছিল, তাহা
দিগকে তাহা কিরাইয়া দেওয়া হইল।
একণে ভারতবর্ষের অর্থের অসম্পত্তি
দূর হইয়াছে যদি ইউরোপীয় সৈন্য

কমাইয়া দেয়া হয় ও ইংলণ্ডে
নান্য স্থান করা হয় তাহা হইলে আ-
মাদিগর ২০০ বারের বাহা যাবে উদ্ভূত
হইতে পারে। এখনও ইংলণ্ডের সৈন্য
বাহ দিলে আর দুই কোটি টাকা উদ্ভ-
বাবে। বাণিজ্যের জন্য দ্বিগুণ হই-
তে। ইনকম ট্যাক্স উঠাইয়া যাইবে, সব-
লে এই প্রকার সম্ভাবনা করিতেছেন।
ওমিকে মাফের্টের সমস্ত বাণিজ্য বস্তুর
অমান্য কর উঠাইয়া দেওয়া আশঙ্ক-
ন। কিন্তু ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট, সাধারণ
লোকে ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট তাঁহা-
দিগের এই গাধনা অন্যায় বলিয়া ইচ্ছা
হে উপেক্ষা প্রদর্শন করিয়াছেন।

২। ব্যবস্থাপক সভা—লর্ড ক্যানিং
সি ১৮৫৩ অব্দে ব্যবস্থাপক সভার সৃষ্টি
করিয়া যান। বাহাদিগের সেন্সিভলিভ এক
এক জন এতনভোগী প্রতিমিত্ত গণ
জেনরেলের কোর্সিলের মেম্বরের ও দু
শিম কোর্টে জজের টহার সভাপতি
মনোনীত হন। বহুসর ভারতীয় উদ্ভ-
বীভূতের রাজবংশীয়দিগকে অর্ধকোটি
টাকা দেওয়াতে সকলে অতিশয় বিরক্ত
হন, তৎকালে সর বাণেশ পিকক ব্যবস্থাপ-
ক সভায় আসীন হইয়া সচিবের সাহস
সহকারে তাহার কারণ জিজ্ঞাস করিল।
গবর্ণমেন্ট লাইসেন্স দিলেন এবং বিবে-
চনা করিতে বলিলে তিনি স্পষ্টাক্ষরেই
বলিলেন, প্রচলিত করের বাণের হিসাব
না পাইলে সভা মুতনবিধ কব স্থাপনের
সভায় করা করিবেন না। তাঁহার এই দ্বিগুণ
প্রতিজ্ঞা ও সাহসিকতা দর্শন করিয়া
ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে ভীত হইয়া টেট-
সেফটোরিকে পত্র লিখিলেন। সরচার্লস
উড ইংলণ্ডীয় মহাসভার অনুমতি লইয়া
পূর্বতন ব্যবস্থাপক সভা উঠাইয়া দিলেন
তৎপরিবর্তে ভারতবর্ষের স্বতন্ত্র, বহুদেশ
এবং মোঘাই ও মাদ্রাজে স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র সভা
সংস্থাপন করিবার আজ্ঞা করিলেন। এই

সকল সত্য অথবা রাজপুরুষের ইচ্ছা-
রাপী। এদেশীয়েরা প্রবেশ করিবার অ-
সুবিধা পাইয়াছেন। ইহা এদেশীয়দিগের
একটি উদ্ভিগ্ন মোগান সমস্যা নাই। অসি-
ম কোর্টের জজের আর সভ্য বালিগা পরি-
গণিত নহেন। কিন্তু গবর্নর জেনারেল ইচ্ছা
করিলে তাঁহাদিগের সভ্য হইতে পারিবেন।
নবমের মাস অবধি এই সকল সভ্যের কার্য
আরম্ভ হইয়াছে। যে যুক্তি অবলম্বন ক-
রিয়া সভ্য সংস্থাপন হইয়াছে তাহাতে
সভ্যের স্বাধীনতা নাই। পরাধীন সভ্য হই-
তে কাঙ্ক্ষিত করণাত্তের প্রত্যাশা করাও
যায় না। কিন্তু এদেশীয় ব্যবস্থাপকগণ
সদৃশ সাহস, রাজনীতিকতা ও অশেষ
নিষ্ঠাভিত্তি প্রদর্শন করিতেছেন, তাহাতে
এদেশের সিনিয়র ইন্টেলিগেন্ট হইবে একপ
আশঙ্করও বাইতেছে। রাজা দিনকরাত্ত,
বাবু প্রমথকুমার ঠাকুর, রাজা প্রতাপচন্দ্র
সিংহ প্রভৃতি সকলেই স্বাধীনহুতি হইয়া
অবিশেষ পারদর্শিতা সহকারে নিজ নিজ
কর্তব্য কার্য সম্পাদন করিতেছেন। বিশেষ
যত্নে রাজ্য হিন্দু রাজ্যে বেক্ষণ অমান্য
বুদ্ধিবৃত্তি (ইন্টেলিজেন্স) প্রদর্শন করিতেছে।
তাহাতে নিঃসন্দেহে রাজনীতিক
নাথ্য পরিগণিত হয়। বিশেষরূপে এ
দেশের কল্যাণের জন্যে পরিচেষ্টা করিবেন
সন্দেহ নাই।

৩। সূচন বিষয়াদি প্রকৃতি—যে
মূল কাল, মঙ্গলময় ভারতবর্ষে সূচন
ব্যবস্থাপক সভা স্থাপন করেন, তাহা হইয়া
সংসদ সভ্যদের পরিদর্শ ও উচ্চতর বি-
চারালয় স্থাপন করিবার আভাস হয়। সি-
বিলিয়ামেরা বহুলাংশে এখানে প্রদান
পাশ্চাত্য সভ্যদের একটি করিয়া রাখিয়া
ছেন। গুণ ও কার্যদক্ষতা থাকুক, তার
না থাকুক, সিবিগিয়ান হইলেই কাশ
সহকারে উচ্চতর পর পাইয়া থাকেন। ম-
হাসতা এই কৃষিক জমি আর্থিক পরি-
বর্তন করিয়া অটোরিতবিগকে উচ্চপদ

নিজ আত্মা করিয়াছেন। ইহার মধ্যেই
চুইজন অটোরিত সহকারী সেক্রেটারি
হইয়াছেন। জনসংস্কৃতি সূচন দ্বারা উ-
দ্ভাষিত হইবে

সদর আদালত ও সুপ্রিম কোর্ট এনজ-
করা হইবে। উচ্চতর ১ জন বিচার
পতি হইবেন। বর্তমান সুপ্রিম কোর্টের
বিচারপতিরা, সদর আদালতের বিবি
লিয়ান বিচারপতিরা, একজন বারি-
ফেই এবং জনসংস্কৃতি এডভোকেটের বিচার
কার্যে নিয়োজিত হইবেন। সকলেই
বর্তন সমান হইবে। এদেশীয় ও ইন্ডো-
পীয় বালিগা রাজপুরুষদিগের বহু সংখ্যে
যে পক্ষপাত বিরাজমান দুই ১২ এবং
বহু তৎপ্রাচুর্য্য দৃষ্ট হইতেছে না।
বিচারপতিরা ন্যায্য ন্যায্য একত্রিত হই-
বেন।

১৯৬২ খ্রঃ সালের আনুমানিক অবধি ম-
হাবিশ্যনের আইন ও ফৌজদারি আইন
প্রচলিত হইয়াছে। এই আইনের আ-
শিক দেখা আছে, তাহ আমরা অস্বীকার
করি না, কিন্তু পাপতিয়ার মন বিবেচনা
ইহার সর্বশেষ উপযোগিতা দৃষ্ট হই-
তেছে। এতৎসঙ্গে ১৯৬২ মধ্যে গিয়া
সংস্কৃত ১৯৬২ ২ অনেক সময় আশি-
গাছে। কখন দ্বারা ১৯৬২ আশি হই-
তেছে। ১৯৬২ ১৯৬২ স্বাধীনতার এ-
কাল লক্ষ্য। কিন্তু ভারতবর্ষে ই-
হার আশিগাছিয়া বহু প্রতিবন্ধক
আছে। বিচারালয়ের দ্বারা একটি
শাখা চলিয়াছে। এক্ষণে ফোর্ট আদা-
লত স্থাপন হইয়াছে। বহুজন বারি-
ফেই ও সদর আদালত এই সকল পদ প্রাপ্ত
হইয়াছেন। কিন্তু বারিকটরদিগকে তৎপদ
স্থাপন করাতে সর্বশেষ উপায় প্রদর্শ-
ন।

৪। পুলিশ—ভারতবর্ষের বিশেষতঃ
বঙ্গদেশের পুলিশ অতি অধম। ভারতীয়
এদেশে বনকাহুয়ার ১২১২ স্থাপিত হই

রাছে। এই প্রাণী অসুস্থতার একজন
স্বাবধারণক ও বহুজন সহকারী ও
এক, ইন্সপেক্টর ও দ্বারা নিযুক্ত
হেন। মাজিস্ট্রেটের আর পূর্ববর্ত পুষ্টি
উপরে মাকার সহজে অন্তর্ভুক্ত। চারজন
রিতে পারিবেন না। একজন করিয়া
এবিধের প্রধান কর্তা হইবেন।

৫। সৈন্য—যেমন একদিকে পুষ্টি
উৎকর্ষ সাধিত হইতেছে, তেমনি
দিক সৈন্যদল কমান হইতেছে।
বর্ষে ভারতবর্ষীয় ও ইংলণ্ডীয় উভয়
মানসের একত। সৈন্যদল বরা হই-
ছে। এই নিয়ম হওয়াতে পূর্বতন
সৈন্যের সৈন্যপাদিগের কিঞ্চিৎ
বিধা হইয়াছে। অনেক পেশন লা-
ছেন। অসুস্থদের মধ্যেই সৈন্য
কোম্পানির নাম লোপ হইবে না
নাই। এক্ষণে ১,১০,০০০ সিপাহী
১০,০০০ ইন্ডোপীয় সৈন্য ভারত
আছে। ১০০০ সৈন্য আশিগাছ হইয়া
১২,০০০ অকর্মণ্য সৈন্য বেতন
হইতেছে। ইংলণ্ড ও এখানে
সৈন্যের জন্য আশিগাছের আ-
কোটি টাকা। বঙ্গদেশের রাজস্ব
গিতেছে। ভারতবর্ষীয় গবর্নমে-
ন্টার ইহার প্রতিবাদ করিতেছেন,
ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট এপর্য্যন্ত
কথাব করণপাশ করেন নাই।

৬। নোট—১ লা মার্চ অবধি
নোটের নোট প্রচলিত হইয়াছে
জীব বঙ্গদেশীয় ব্যাঙ্কের সহিত
হইয়া গিয়াছে। লোকে গবর্নমেন্টের
লক্ষ্যে অসুস্থ বা অনিচ্ছা প্রকাশ
নোহেন না। অধিক পরিমাণে
চলন ব্যয় সংস্কারের একটি উৎস
পার। ব্যাঙ্ক নোট ক্রমে লোপ
হইবে, কারণ ব্যাঙ্ক যে নোট
তাহা অব বর্ধিত হইতেছে না।
মোট চারি কোটি টাকার নোট

গাওঁগৰ্ণমেন্ট কাগজ কৰা কৰিতেছেন। ত
মিবন্ধন কাগজের বাজার অতিশয় গরম
হইয়াছে। কিন্তু রাজ্য বিষয়ে পারদর্শী
ব্যক্তিদিগের অনেক বলিতেছেন, শেষে
গবৰ্ণমেন্টকে ক্ষতি প্রাপ্ত হইতে হইবে।

৭। নীল—নীলঘটিত গোলযোগও
গত বৎসরের ঘটনা মধ্যে সামান্য বলি-
য়া পরিগণিত নহে। গত দুই বৎসর কা-
ল নীলঘটিত গোলযোগ হইতেছে। নীল
করেরা মসীতোভাবে এজার নিকটে প-
রাজিত হইয়া শেষে ঈশানিকে জজ ক-
রিবার অভিপ্ৰায়ে অসম্মত করুণা করি-
তে আরম্ভ করেন। সুতরাং এজারও
তদ্বন্ধে অসম্মত হন। তাহাতে নীল
করেরা এত কথো প্রকাশ করিয়া দিলেন
যে এজাগণ ইউরোপীয়দিগকে অকস্মাৎ
হইতে দূর করিয়া দিবার চেষ্টায় আছে
ন। গবৰ্ণর ও মরিস তাঁহাদিগের মাথা
পায়ায় জুলিয়া গিয়া বিশেষ কমিসনর
নিয়োগের অনুমতি করিলেন। তদনুসা-
রে মর্টেনস ও মরিস সাহেব নীলা, য
শোহর ও পাবনা গমন করিলেন। তাঁ-
হারা অনুসন্ধান করিয়া জানিতে পারি-
লেন এজাদিগের নীলধন বা তরাই
নীলধন প্রদেশের নীলঘটিত গোলযোগ
প্রসূত কারণ। যেহেতু নিৰ্ম্মিত কব লতা
হইতেছে, সেখানে প্রজাবা কোন কাম
করিতেছে না। এত জানার গোল
যোগ হইতেছে ইতিমধ্যে নীলধন
হিঁর হইল। গত সাহেব অনুবাদ কথিয়া
মজবুত গবৰ্ণমেন্টের সেক্রেটারি সিং
জক্স সাহেব তাহার কয়েক খণ্ড দি-
লেন। কার সাহেব তাৎসব্যরকম উভ
লার্ড মাক্‌টসবারি সভতি ইংলণ্ডে কয়েক
কক্ষম প্রধান লোকের নিকটে ও অতদে
নীল কয়েকজন সম্পাদকের নিকটে প্র-
কাশ করিলেন। শেষের মধ্যে এই, পুস্তক
ল নীলঘটের ব্যৱে প্রেরণ করা হয়। নী-
ল এই স্থান পাইয়া উন্নয়নকারী

হইয়া লেণ্টনটে গবৰ্ণরের নিকটে পুস্তক
প্রেরণ কর্তার নাম ও পুস্তক প্রেরণের
কারণ বিজ্ঞাপ্য করিলেন। তিনি এই উ-
ত্তর দিলেন, তাঁহার আজ্ঞানুসারে পুস্তক
প্রেরিত হয় না, এবং পুস্তকের মধ্যে
কাহাব গানি সূচক কোন কথাও নাই।
কিন্তু নীলকরেরা এই উত্তর পাইয়া তুষ্ট
হইলেন না। তাঁহারা রাগান্বিত হইয়া পুস্তক
ক মুদ্রণ কর্তা মাসুদুলের নামে নালিশ
করিলেন। অতঃপর লন্ডন সাহেব নিজে
নাম দাক্ত করিলেন। নীলকরদিগের বা
য়ে তাঁহাব নামে মোকদ্দমা হইতে গিয়া
ল। সব মর্ডাণ্ড ওরেন্স বিচারাসনের
অনুচিত পক্ষপাত, কড়তা, উদ্ধতা, ও অ-
দৃষ্টান্তীয় পণ্ডিত্য প্রদান করিয়া লন্ডন
সাহেবের এক নাম বারাদাস ও . . .
টাকা জরিমানার আজ্ঞা দিলেন। নীল-
কর ও কয়েকজন বণিক প্রতিরোধে স-
কল মোটেই লন্ডন সাহেবের দুঃখে দুঃখ
করিলেন। বাকী এতাদৃশ্য মি-হ তাঁ-
হাব উদ্দেশ্য বাধ ও বাধ কামীপ্রসন্ন
মি-হ করিনানার টাকা দিলেন। অনেক
টকা অপ্রত্যাশিত ভাণ্ড টাকা দিতেও স-
ক্ষম ছিলেন। লন্ডন সাহেব এক মাস
পরে কারাগার হইতে বাহির হইলেন।
চাবি নিক হইতে তাঁহার নিকটে সাক্ষাৎ
স্বতন্ত্র পত্র আসিতে লাগিল। ইংলণ্ডীয়
সেক্রেটারী তাঁহার দুঃখে দুঃখে প্রকাশ
করিলেন। লন্ডন সাহেবের বিচার কালে
মহাভাণ্ডার মজলুম যাবতীয় বাজারকে
গণিত দিয়াছিলেন বলিয়া এতদেশীয় স-
মুদ্রণ প্রকাশ লোক একজ হইয়া সভা
বাকী প্রকাশ বাধাবান্ধ দেবের বাটতে
এক সভা করিয়া সব মর্ডাণ্ড ওরেন্সের
উদ্দেশ্যেব বিষয় যেট সেক্রেটারির
গোচর করিলেন। প্রায় ২০,০০০ লোক
এ আবেদন পত্রে স্বাক্ষর করেন। বিশেষ
প্রাণ্ডয়ার বিয়া এই আবেদন পত্র গো-
পনে মুদ্রিত হইয়া স্বাক্ষর প্রাপ্ত এক

মাস চতুর্দিক প্রেরিত হয়, ইংলিসমান
ও চরকরা সম্পাদক একত্রেও অন্য
৫০০ টাকার মতে চাচিয়াছিলেন, একথা
একটা হইয়াছিল যে তথাপি কেহ এক
খণ্ড দেন নাই। মরিস ওরেন্স আবেদন
নের উত্তর দান কালে মর্ডাণ্ড ওরেন্সকে
সাবধান করিয়া দিলেন। সেই অবধি এই
বিচার কর্তার স্বত্বের অনেক পরিবর্তন হই-
য়াছে। গত ফৌজদারি সেমিননে তিনি
ইউরোপীয়দিগের পাপকিরার বুদ্ধি প্র-
থিয়া একাধিকপে কোপ প্রকাশ করিয়া-
ছেন।

ওদিকে মর্টেনস ও মরিস সাহেব
এর রিপোর্ট প্রাপ্ত হইয়া ভারতবর্ষীয়
গবৰ্ণমেন্ট তাঁহাদিগকে ধন্যবাদ দিলেন।
কিন্তু গত অক্টোবর মাসে লন্ডন গোল
ডান সভা আশানুগিতের বেশ গোপন
করিয়া পুনরায় নীলঘটিত গোলযোগের
বিষয় গবৰ্ণমেন্টের গোচর করিলেন। ল-
র্ড কামিন্ডার বার্টন কিয়ারের পরাম-
র্শ ক্রমে এত সাহেবকে এক ককশ পত্র
লিখিয়া এই বলিয়া তিরস্কার করিলেন যে
তিনি নীল কমিসনরদিগের বিশেষকরণ
শায়ী করেন নাই এবং বামসনরেরও কে
এল বিবাদের কারণ অন্বেষণ করিয়া কা-
ল হরণ করিয়াছেন। অতঃপর পুনরায়
লন্ডন কমিসনর নিযুক্ত করিয়া নীলকর
ও এজাদিগের পাপের সন্ধান সন্ধান
করিয়া দিবার আজ্ঞা দিলেন। প্রায় সাহেব
এ এই অন্যায় পত্রের অত্যাচার বিদ্রোহ
তাড়িত্যনে ঘটিলেন, তিনি ও বর্তমান
গোরা গবৰ্ণর জেনারেল আজ্ঞানুসারেই
কার্য্য করিয়াছেন। ফলতঃ গবৰ্ণর জেন-
রেলের তাদৃশ পত্র লিখিয়া লেণ্টনটে
গবৰ্ণরের অসম্মত কাম অনুরোধ হই-
য়াছে। এ কাণ্ডের জটিল বুদ্ধিশূন্য
হই নাই। বাকী হউক, কব আদালতের
জন্য পুনরায় দুই জন কমিসনর জজ
কালেক্টর ও মালিকের অসম্মত পাই

রা নীল প্রধান প্রদেশে গমন করিয়াছেন।

৮। তুলা—আমেরিকার গৃহ বিচ্ছেদ যুদ্ধের ফলস্বরূপে তত্ত্বাবধায়কগণের আগমন হইতে তুলা আনয়ন প্রবর্তিত হইল। অধুনা ভারতবর্ষে তাঁহাদিগের দৃষ্টি প্রতিষ্ঠিত হইল। ভারতবর্ষীয় গণগণের উদ্বোধন নান্য দিকে কনিসমর প্রেরণ করিলেন। তুলা সকল নিকা বিক্রয় করিবার প্রাধান্য ন হইল। চতুর্দিকে রাজপথাদি শুদ্ধ হইতে লাগিল।

৯। রেলওয়ে—ভারতবর্ষের রেলওয়ে প্রকল্প প্রস্তুত হইতেছে। এদিকে কলিকাতা হইতে মুম্বই, আলাহাবাদ হইতে আগরা, লাহোর হইতে অমৃতসর, করাচি হইতে বরদা, এবং মাদ্রাজ হইতে নোন্দগিরি পর্য্যন্ত রাস্তার সড়ক চলিতেছে। (স্বা. শুদ্ধ প্রা. সহস্রকোশ রেইলওয়ে খুলিয়াছে)। ওদিকে মাতলাব রেইলওয়ে কতকদূর খুলিয়াছে। জুনাসের মধ্যে পূর্ব বঙ্গের রেলওয়ে গাড়ি চলিবার সম্ভাবনা আছে। এই দুইটি রেলওয়ে সম্পূর্ণ হইলে বাণিজ্যের সবিশেষ প্রসারিত হইবার সম্ভাবনা আছে।

১০। পবলি ওয়ার্ক—গবর্ণমেন্ট রাজপথাদির বিষয়ে সবিশেষ যত্নবান হইয়াছেন। কনকমটাক্স হইতে ৩২ লক্ষ ও সাধারণ রাজস্ব হইতে প্রায় ছয় কোটি টাকা দেওয়া হইয়াছে। বাণিজ্য ও তুলা বস্ত্রাদি করিবার সুবিধা করাই এই ব্যবস্থার প্রধান উদ্দেশ্য।

১১। শিক্ষা—গবর্ণমেন্ট শিক্ষা-কাথো ক্রিষ্টিয়ান মনোযোগী হইয়াছেন। এ বিষয়ে আর দশলক্ষ টাকা দিবার প্রস্তাব হইয়াছে। বঙ্গদেশীয় রাজস্ব হইতে শিক্ষা-ব্যয়বাহার বাটীর জন্য দেড় লক্ষ টাকা দেওয়া হইয়াছে। শীঘ্র একটি আভিসাধারণ শিক্ষা-প্রণালী স্থাপিত হইবে, ইংলও এই এ বিষয়ে আশা আশিরাছে। চতুর্দিক

কেই বিদ্যাবিস্তারী উন্নতি দৃষ্ট হইতেছে। আত্মীয় শিক্ষা-প্রণালী স্থাপিত হইলে সভ্যতার আলোক আরও বিস্তৃত হইবে সন্দেহ নাই।

১২। জুর্জিক ও মারীভার—মত ২২ মত উত্তর পশ্চিম প্রদেশ ও পঞ্জাবে জুর্জিক হইয়া বিস্তৃত লোকে প্রাণত্যাগ করে। ভারতবর্ষীয় সভ্য আশা-নিগের আভাবিক দেশে হৈমন্তি ও প্রাণত্যাগ বিনয় সম্প্রদায়ের সহিত মিলিত হইয়া এক টানা করি নেন। এ দেশের সকল স্থান হইতে টানা আসিতে লাগিল। ইংলণ্ডীয় লোকেরা নৈসর্গিক বদান্যতা হেতু প্রায় দশলক্ষ টাকা প্রদান করিলেন। প্রায় ছয় মাস কাল জুর্জিক ছিল। নৈসর্গিক সম্প্রদায়ের সেক্রেটারি উড মাদেব ও কর্ণেল বেয়াড এবং এ বিষয়ে যথোচিত কষ্ট ও পরিশ্রম স্বীকার করিয়া জুর্জিকপীড়িত লোকদিগকে যথেষ্ট আশ্বস্ত করিলেন। মিসনরির সাহায্যে ও সফল হইয়া দরিদ্রের সাহায্য করিয়া থাকেন। পঞ্জাবের লীগট নামে একজন পাদ্রি যারপর নাই কষ্ট সহ্য করিয়াছিলেন। অনন্তর, বাঙ্গলা দেশে যারা মত, জিবেদী, চালিস, প্রভৃতি স্থানে মারীভার উৎপত্তি হয়। কলিকাতা রাজ্য সমগ্র দুরাবশয় হইয়া এ বিষয়ে যথোচিত সাহায্য দান করেন।

১৩। এতদেশীয় রাজগণের সম্মাননা—গত ১৯শ বঙ্গ এতদেশীয় রাজগণের সম্মানার্থ এক প্রকার সুতন সম্মানচিহ্ন প্রস্তুত হইয়াছে। মহারাজ সিদ্ধিগা, হোলকার, পাতিয়ালা, বাজা ওড়িশা কয়েক জন প্রধান রাজা এই চিহ্ন প্রাপ্ত হইয়াছেন। লড ডেগলহাউসি এ দেশীয় রাজগণকে উপকা ও অনাদর করিয়া যে অধি প্রস্তুত করিয়া যান, লর্ড ক্যানিং এ দেশীয় প্রধান ব্যক্তিদিগের সম্মাননা প্রদান করিয়া তাহা নিশ্চয় করেন। কলকাতা জিনি এই উপায় দ্বারা অনেক কার্য সাধন করিয়াছেন।

১৪। মনোনিবেশ মাজিষ্ট্রেট—ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের আশ্বস্ত্যসাধন এতদেশীয় অনেক সম্ভ্রান্ত ব্যক্তিকে অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট প্রদত্ত হয়। পঞ্জাবে ও অযোধ্যায় ইহার উৎকৃষ্ট ফল প্রত্যক্ষ হইয়াছে। বঙ্গদেশে এটি প্রথা প্রসারিত হইয়াছে। কিন্তু পঞ্জাব ও অযোধ্যায় মাত্র এখানে ফল দর্শন হইতেছে না।

১৫। ভারতবর্ষীয় সভা—আমাদিগের দেশের যে দিনদিন প্রসারিত হইতেছে, তদ্বিষয়ে নাহারাও সন্দেহ নাই। বিদ্যা শিক্ষা ইহার প্রধানতম কারণ। কিন্তু রাজনীতি প্রতিষ্ঠিত যে উন্নতি লাভ হইতেছে, তাহার প্রধান কারণ ভারতবর্ষীয় সভা। এই সভাকে এতদর্থ ধন্যবাদ দেওয়া উচিত। এই সভা প্রথমে জমীদারদিগের সভা বলিয়া পরিগণিত হইয়া ক্রমে সমস্ত ভারতবর্ষীয়ের প্রতিনিধি বলিয়া পরিগণিত হইয়াছেন। এক্ষণে দেশের সমুদায় লোকই প্রায় তাঁহাদিগের মতে চলিতেছেন। শিবপুর, বারাসত, ও লক্ষ্মী নগরে শাখা ভারতবর্ষীয় সভা স্থাপিত হইয়াছে। সভার অধুনা প্রথম গবর্ণমেন্ট অনেক কার্য করিয়াছেন ও করিতেছেন। সম্ভ্রান্তিকার তমাকের উপরে টাক্স পরিত্যাগ ইহার একটা প্রধান প্রমাণ। মফস্বলের স্থানে স্থানে যদি শাখা ভারতবর্ষীয় সভা স্থাপিত হয় এবং সেই সেই সভা যদি এ দেশীয়দিগের শিক্ষার্থে মনোনিবেশ করেন, স্বল্পকাল মধ্যেই এ দেশের সবিশেষ প্রসারিত হইয়া উঠে।

পূর্বদীর অন্য অন্য অংশে যে সমস্ত ঘটনা ঘটিয়াছে, তাহার মধ্যে আমেরিকার গৃহযুদ্ধই প্রধান। যেকোন সম্মত পাঠ্য বাইতেছে, তাহাতে ও যুদ্ধ শীঘ্রই শেষ হইবে একপ বোধ হইতেছে। টো লিতে স্বাধীনতা ক্রমশঃ প্রাপ্ত হইতেছে। রোম ও বিনিস ভিন্ন আর সকল স্থানের লোকেই রাজা বিবর্তন ইংলণ্ডের স্বাধীনতা শীঘ্র করিয়াছে। রুশিয়া

সম্রাট কৃষকদিগকে জমিদারদিগের দাস হইতে মুক্ত করিয়া দিয়াছেন। তদ্বার স্বাধীন শাসনশাসনীয় স্থাপন করিবার ইচ্ছা ক্রমশঃ বলবতী হইতেছে। ইংলণ্ডের প্রধান ঘটনার মধ্যে রাজকুমার আলবার্টের মৃত্যু। তিনি ইংলণ্ডের পাদ্রিগণ করিয়া যথার্থ অধ্যয়নসময় পরে আসনকার্যে যথোচিত সহায়তা করিতেছিলেন। তাঁহার মৃত্যুতে সকলেই দুঃখিত হইয়াছেন।

আদালতের সকল নকদম

সমিতি হইয়াছে।

এই প্রশ্নের নীচের বড় সহকর্মী

নিয়ে অনেক ৩০০ হাজার গীলাংস।
কোটা পাইয়াছেন, কিন্তু অন্যাপি ইহার প্রকৃত মিত্র হইয়াছে। কেহ অর্থ প্রত্যাখ্যাত, কেহ আইনের, কেহ বা আমলার কেহ বা বিচারপতির প্রতি দোষারোপ করেন। অর্থ প্রত্যাখ্যাত দোষাবাদীরা নগেন, এদেশের লোকেরা বিশ্বাসী, প্রবন্ধক ও আলকারী (সিবেশ না জানিয়া সাধারণ্যে এইকপ দোষারোপ করা হইয়া থাকে) বাণীরা নাকদম করিতে যায়, তাহারা আদালতে প্রায় সত্য কথা কয় না। সুদূর বিয়র্কই বিশ্বাসীরা আক্রমণ করিয়া রাখে। নকদম কারীদিগের এই একর সত্য আর আছে, মিথ্যা না করিলে নকদমায় জগৎ হয় না। কখনও যে স্থলে সকলই মিথ্যা, সেখানে বিচারপতি কি করিতে পারেন? বিচারের পথ না পাইলে তিনি কিরূপে বিচার করিবেন?

বাঁহারা আইনের দোষ নেন, তাহারা বলেন, আইন অনুসারে বিচার করি। কেহ গেলে বিচারকর্তাকে বাহ্যিক উপরেই নির্ভর করিতে হয়।

এখন একত লক্ষ্যক্রম ধর্মিক
মিলাত। যে ব্যক্তি সাক্ষাদান
করিতে

ও বিচারকর্তাকে অধিক প্রবন্ধনা করিতে পারে, সেই প্রশংসিত হয়। যে ব্যক্তি র বাহ্যিক বিশ্বাস করিয়া নকদমায় জয় পরাজয়ের অনুমতি দিতে হইবে, সেই যদি এইকপ মিথ্যার আক্রমণ হইল, তাহা হইলে যথার্থ বিচার দর্শন প্রত্যাখ্যাত কোথায়?

আমলাদোষকর্তনকারিরা বহিরা থাকেন, আদালতের আমলারাই বিচার লাভের মতানুসরণ। ন্যায়সম্মত রক্ত ধর্মিক ব্যক্তিরা প্রায় আমলাকপে আদালতে প্রবেশ করেন না। অসচ্চরিত্র ব্যক্তিরা দ্বারা আদালত পরিপূর্ণ। তাহারা দুষ্ট ব্যক্তিদিগের কিছুই অসাধা নাই। উৎকোচ পাইলে ন্যায়কে অন্যায় বলিয়া এবং অন্যায়কে ন্যায় বলিয়া বিচারকর্তার ক্ষতিজনক জগাইয়া দেওয়া তাহাদিগের বড় চুক্ক হইয়াছে।

বাঁহারা বিচারকর্তাকে দ্বিষ্ট করেন, তাহারা বলেন, বিচারপতিদিগের প্রায় সকলেরই এক একটা দোষ আছে। কতকগুলি অতিশয় উচ্চতমতাব। তাহারা উচ্চতম বশতঃ বিচারক্রিয়ার জটিল পথে প্রবেশ করিতে পারেন না। সুতরাং যদি প্রতিবাদির ন্যায্যন্যায় নিকপণ তাহাদিগের পক্ষে সহজ হয় না। কোন কোন বিচারকর্তার পক্ষপাত দোষ আছে। তন্মিজন তাহারা বিচার বাণী অজ্ঞ হইয়া যান, ন্যায্যন্যায় কিসে পারেন না। কেহ কেহ অত্যন্ত মন্দ মেধ। তাহারা জটিল নকদমায় অস্থির হোলে কোনক্রমেই সমর্থ নহেন। কোন কোন বিচারকর্তার বিলক্ষণ বুদ্ধি ও বিবেচনাশক্তি আছে, সচিবাদের প্রধান প্রতিবন্ধক পক্ষপাতাদি দোষও নাই। কেবল এক আমলা দোষের দাস হইয়া তাহারা নকদমায় সূক্ষ্ম ও যথার্থ বিচারে শক্ত হইয়া না।

যে সকল ব্যক্তি বিচারকর্তার দোষ

কেই বিচার প্রতিবন্ধক বলিয়া নির্দেশ করেন, আমরা তাহাদিগের বাঁহাদের সম্পূর্ণ অনুমোদন করিতেছি। বিচারকর্তা যদি কোমল লোকাদি পরিত্যাগ পুষ্টক দক্ষতা সহকারে কার্য করেন, অর্থ প্রত্যাখ্যাত প্রবন্ধনাই বল, সচিবাদের অনুভব বা দিতাই বল, আর আমলাগণের উৎকোচ গ্রাহ্যই বল, কিছুতে কিছু কনিত হইতে পারে না। নির্দোষ, অসম, ও পক্ষপাতাদি দ্বিষ্ট বিচারকর্তার নিকটেই আমলার অভুত ও অর্থ প্রত্যাখ্যাত প্রবন্ধনা থাকে। আমরা ইহার অনেক উদাহরণ দর্শন করিয়াছি। যে বিচারাসনে বসিয়া একজন বিচারকর্তা যে আমলা, যে আইন ও যে অর্থ প্রত্যাখ্যাত লক্ষ্য অথবা যথ বিচার করিয়া গিয়াছেন, সেই বিচারাসনে আসীন হইয়া সেই আইন সেই আমলা ও সেই অর্থ প্রত্যাখ্যাত লক্ষ্য অপরাধ ব্যক্তি লক্ষ্য ও বিচার করিতেছেন। আমরা যে বিষয় লক্ষ্য করিতে প্রবন্ধ হইয়াছি, আমলা নিজেই তাহার সাক্ষী হইলে দণ্ডায়মান অছি। আমাদিগের এক পাপাত্ম প্রতিক্রিয়া আমাদিগের পৈতৃক বিষয়ের কিরূপ অধিকার করিয়া গিয়াছিল। এখন আদালতের বিচারকর্তা প্রতিপক্ষকেই সেই বিষয়ে অভিযুক্ত করেন। কেহ আপীল করিয়া আমাদিগের বিপর আমাদিগের চতুর্ভাষ। যদি আপীল আদালত না থাকিত, আমলা ও ন্যায় বিবরণ হইতে বঞ্চিত হইয়াছিল। বিচারকর্তাদিগের দোষে বিচার বাণীত অল্প বলিয়াই আপীল আদালতের ক্ষতি হইয়াছে। বিচারপতিদিগের দোষ আছে বলিয়াই আমরা নকদমা বিশেষে আপীল রহিত করিবার প্রস্তাবে অনুমোদন করি না।

অন্য বদর্থে এ বিষয়ের প্রশংসা হইয়াছে, সে এই—তাহার অজের বিচার কার্যে অপটুতা নিবন্ধন যথেষ্ট অনিষ্ট ঘটতে

[illegible]

গমন করিতে লাগিলেন। এই সময় এক জনের গিরিশ্চন্দন কন্যা নামে গাইয়া দেয়। উভি পূর্বে বলিয়াছি যে তিনি প্রজাধিপত্যে চুই জাগ করিয়া আর এত ভাগ অন্য দিকে পাঠাইয়া দিয়াছিলেন। যে সকল প্রজা অনাদিগে প্রেরিত হইয়াছিল তাহারাও এইরূপ অশেষ যন্ত্রণা ভোগ করিয়া একটি ক্ষুদ্র দীপে অবস্থিতি করিতে ছিল। পরে মৈবগতাই হউক আর অন্য প্রকারেই হউক হিলি সাহেব স্বয়ং আনীত প্রজাপ্রত্যেককে সেই দীপে ছাড়িয়া দিলেন। প্রথম দুই মল একত্র হইল। এতদেব বাকব গঞ্জের কয়েকজন বরদ্বন্দ্বাজ অনেক অসুস্থমান করিয়া এই হতভাগ্য প্রজাদিগকে বাচিব করি-
য়াছে। হিলি সাহেব পলায়ন করিয়াছেন। পুলিশীয়ার ৩০০টি মাজিষ্ট্রেটের নিকট এই মোকদ্দমা আছে। গবর্ণমেন্টে এই বিষয়ে অসুস্থকি রিপোর্ট হইয়াছে। গবর্ণমেন্ট অসুস্থতি করিয়াছেন যে, যে ব্যক্তি হিলি সাহেব প্রভৃতি ভিন্নজন প্রজা অনাদিগকে ধরিয়া ব অসুস্থমান করিয়া দিতে পারিবেন তিনি প্রত্যেক ব্যক্তিকে ধরাতে দুই হাজার টাকা বহিসাবে ৬,০০০ ছয় সহস্র টাকা পারিভোজিক প্রাপ্ত হইবেন। বর্তমানে গবর্ণমেন্টের এই অসুস্থতি প্রকাশ হয় তৎকালে হিলি সাহেব চি-
প্পুটে অবস্থিতি করিতেছিলেন। সস্তা ত তিনি মারিত। এইরূপ আমেরিক জাহাজে আবেদন পূর্বক আমেরিকার পলায়ন করিয়াছেন।

এদিকে মরে সাহেব দেখেন যে সর্বশেষ উপস্থিত হইয়াছে, প্রায় সকল কর্মই প্রকাশ হইয়া পড়িয়াছে। এখন কি করেন, কি রূপে প্রকাশ হইয়া বসেন এই রূপ অনেক ভাবিয়া চিন্তিয়া শেষে জাল করিয়া হিলি সাহেবের নামে ৬০,০০০ টাকা তহবীল তহরুপাতের নালিশ দিলেন। হিলি সাহেব মরে পলায়ন হাজার টাকা তহবীল ভাঙ্গিয়া পলায়ন করিয়াছে, শু-
নিলেই গবর্ণমেন্ট বিশ্বাস করিবেন যে ইনি প-
রুষ ধার্মিক, এসকল অভিচারের দিল্লি কিছুই
জানেন না। সাহা হউক এই মোকদ্দমায় যে
রূপ দণ্ডবিধান হয় পবে প্রকাশ করিতে চেষ্টা
করিব।

আমরা বিবেচনা করি, সাহেব হইলে কি
হয়, এই গুরুতর মোকদ্দমায় কেহ অমনি নি-
কুতি পাইতে পারিবেন না, সে রূপ দুইটি দে-
খিয়াছি তাহাতে বোধ হয় প্রত্যেক ইংরাজের
গম টাকা, বড় বেশী হয় পাঁচ টাকা করিয়া অধি-
কৃত হইবেক। এক গুরুতরও কি নীলকর সা-
হেবেরা লালিত হইবে না - অবশ্যই হইবে।
অতএব এখনই একবার হইবার আবশ্যক কি
না মনে করিতে হইবে।

এই প্রস্তাব লেখা সমাপ্ত হইলে
আমরা প্রতিক্রিয়া প্রকাশ হইলাম যশোরের

মাজিষ্ট্রেট সাহেব মরে সাহেবের নিকট উক্ত
সময় ৮ অভিচারের বিচার কৈশিকত তলব করি-
য়াছিলেন। মরে সাহেব তখন তাহা বড় একটা
প্রশ্ন করেন নাই। এখন তিনি নিতান্ত চাপা-
চাপী ও গোপনযোগ্য মোকদ্দমা উক্ত মাজিষ্ট্রেট
সাহেবের সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত গোপ-
নীয় পত্র লিখিয়াছেন। মাজিষ্ট্রেট সাহেব উ-
ক্ত দিগাহে যেন মোকদ্দমা নিষ্পাদন কর
ব পক্ষে অসম্মত তাহার সহিত সাক্ষাৎ করিব না।
ইহার সাধ্য ভূমি আবার তৎকাল অসিদ্ধ না।
মাজিষ্ট্রেট সাহেব একপ প্রত্যক্ষ দেখিতে
আমরা তাহার উপর মাজিষ্ট্রেট মনুষ্য হইয়াছি।
একপ উপবোধ অসুস্থরোধে বশবর্তী ও অজ্ঞাতি
পক্ষপাতী না হওয়াতে তিনি অবশ্যই বশ্য-
ভাজন হইবেন।

পরিশেষে ইংলিসমান সম্পাদকে একটি
কথা জিজ্ঞাসা করিয়া লেখনীকে বিজ্ঞাপিত
তিনি প্রায় সমুদায় সংবাদই সর্বাংশে প্রকাশ
করেন। কি স্বদেশে কি বিদেশে, কি লোক-
লয়ে কি প্রদেশে কি জেলায় তাহা সর্বত্রই প্র-
কাশ সংবাদ দাতা আছেন। আমরা যে দিন
মনে করি যে অদ্য এই বিশেষ সংবাদটি প্রকাশ
সর্বপ্রকারে প্রকাশ করিলাম, সেই দিন প্রায় সের
সংবাদটি উৎসাহে পড়েও দেখিতে পাই।
কলিকাতার মধ্যে অগ্রা সংবাদ সংগ্রহ বিষয়ে
কেহই ইংলিসমানকে পরাজয় করিতে পারেন
না, পরন্তু দুইয়ের বিষয় এই যে তিনি এই সকল
সংবাদ শুনিতে পান না। ইহার কারণ কি?
তাহার সংবাদ দাতারা কি এই সকল অভিচার
বিষয়ক সংবাদ লিখিতে চানেন না? অথবা
তাহার কি এক চরম অজ্ঞ। তিনি কি সকল বিক-
সমান মেরিতে পারেন না? কোন ব্যক্তি যদ্যপি
কোন ইংরাজের প্রতি ইহার অভিযোগের এ-
কাংশও অভিচার কবিত তাহা হইলে যে তিনি
“বিউটিফি মিউটিফি” করিয়া পাগল হইতেন,
তাহা হইলে তাহার সুদীর্ঘ বক্তৃতার হটার
সকলেশ্বর লোক বিমোহিত হইত, তাহা হইলে
যে তাহার ৫।৭ দিনের কাগজে বাজান্দি
যে উহার গালি মুক্তি করিয়া বড় সড় অভিজ্ঞ-
রিচল প্রকাশ হইতে থাকিত। এসময় লেখনী
প্রতিভা ও সংবাদ দাতৃগণের সংবাদ সংগ্রহ
নিপুণতা নাই কেন? কোন করি বলিয়াছেন যে
“সহজাত্মকঃ স্বদ্বন্দ্বের পরদোষকণা বিদ্য চক্ষুঃ
অপোদোষকণা মুক্তিতাঃ পরব্রহ্মবোধগ-
মঃ।” যাঁহারা অসাধু তাহার প্রাণনাশের
দুর্নীতি দর্শন করিবার সময় অজ্ঞ ও পরদোষ দ-
র্শনের সময় দিব্যচক্ষু হন এবং আপনাদের গু-
ণবর্ণনার সময় তাহার দীর্ঘ দীর্ঘ বক্তৃতা প্র-
কাশ হইতে থাকে। যখন তাহার পরের প্র-
শংসা করিবার সময় উপস্থিত হয় তখন তাহা-
রা মৌনব্রত অবলম্বন করেন। ইংলিসমান গত

পাঠক। ১৭৭৭ খ্রীঃাব্দে
সম্মান - ১৭৭৭ খ্রীঃাব্দে
১৭৭৭ খ্রীঃাব্দে
১৭৭৭ খ্রীঃাব্দে

বিবিধসংবাদ।

২৩ এপ্রিল মোমপ্রকাশ।

একপ জনপ্রিয় বক্তৃতা মরে সাহেবের
কৌশলকে ছাড়িয়া উক্ত মাজিষ্ট্রেটের
বক্তৃতা নিম্নলিখিত রূপে হইয়াছিল।
যখন জবাব দিয়া হইল তখন
কীর প্রতিক্রিয়া হইল।

এক খান ইংরাজী পত্র সাহেবের
বিবরণে কথিত হইয়াছে যে ১৮৭৭
সম্মানকে মনে রাখিয়া ১৮৭৭
পদ বুঝিয়া লইবেন যে ১৮৭৭
স্বয়ং ইংলণ্ড যাত্রা পদক্ষেপ করুন যে
কোনও প্রকল্পে আসিতে না হয়
লজ্জা সাহেব ১৮৭৭ বা না আসুন, তিনি যে
অপেক্ষা করিয়া গেলেন কেটি মাক্স নামে
জলে ডাহা নির্মাণ হইবেন না।

এক ব্যক্তি উক্তাধিকারী না
কাস্তব গমন করিতে সারাজেব অপরূপ
নৈহাতি খানাবাদেব দাবোয়া তাহা
বি আশ্রয় করে, তাহাতে তাহা এক ব-
সব নিয়াদ হইয়াছে। এতদেও পুলিশের
চাফিদিগের টেকনা হইল না।

কুচবেহারেব রাজা গবর্ণমেন্টের নিকটে
চুই শত পিপাহী চাফিরাছেন ডোটিদিক
দমন করা বাজার অভ্যর্থিত। তিনি পিপাহী
চিৎরে বেড়ান দিবেন। শেষে এটি হইল।

ইংলিসমান সম্পাদক বেলা হইতে টে
লিগ্রাফ যে যে সমাদ পাঠ্য হইল ততঃ
করা মাজিষ্ট্রেটী কাগজের শুদ্ধ কর্মচার
অতিকুলে আবেদন করিয়াছেন। আশা
বণিকেরা এদেশের সমস্ত চাহেন।

হিন্দু পেট্রিট সম্পাদক স্মিয়াছেন বর্তমানে
শীর গবর্ণমেন্ট তমকের কব লইবার চেষ্টা প-
ত্যাগ করিয়াছেন। স্থায়ী কাজ করিলে অনেক
চেষ্টাই পরিচালনা করিতে হয়।

উক্ত সম্পাদক বলেন বড়ার আইন্ট ম-
জিষ্ট্রেটের পদ উঠিয়া গিয়াছে। একজন অচি-
হিত তেপুটি কালেক্টর তলতা শাস্তি
ভাঙ্গা হইয়াছেন। কনট্রোলার পুলিশ না
হইতে হইতে কর্তৃপক্ষ এত ব্যস্ত হইয়াছেন
কেন?

চাকরাপ্রকাশের ক্রিয়ার সংবাদ দাতা ব-
লেন, ততঃ ফেরিফের ওবরসিয়ার একজন
মুনসিফ এক ইট মারিতে ওবরসিয়ার সাহেবের
নামে দাখিল হয়। ততঃ আইন্ট মাজিষ্ট্রেট

সোমপ্রকাশ

প্রবর্তকঃ প্রকৃতিবিজ্ঞান পার্শ্বিকঃ সরস্বতী প্রতিমতী ন দীপ্তাঃ

ভাগ। } সন ১২৬২। ২ বৈশাখ। ইং ১৮৬২ ২১ এপ্রেল {

দৈনিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

—•••—

সোমপ্রকাশ প্রাক্কগণের প্রতি।

চৈত্র মাস অতীত হওরাতে আমের প্রথম সোমপ্রকাশের মূল্যকাল অতীত হইয়াছে, অতএব তাঁহাদিগকে বিনয় পূর্বক জানান হইতেছে, তাঁহার অগ্রগত পূর্বক ১লা করিয়া আগামি বর্ষের অগ্রিম মূল্য প্রেরণ করেন।

—•••—

বিজ্ঞাপন।

সোমপ্রকাশের স্থান পরিবর্তন।

সোমপ্রকাশ যত্র এতদিন যে স্থানে ছিল, তৈশ্বাৎ মাসের ১লা তারিখ তাহা পরিভ্রমণ করা হইয়াছে। অতঃপর আনাদিগকে পত্রিকা লিখিতে হইলে আপাততঃ কলিকাতা সংস্কৃত বস্ত্রে লিখিত হইবে। পত্র আমরা স্থান নিরূপণ করিয়া লিখিব।

বিজ্ঞাপন।

প্রতি মাসের গবর্ণমেন্টের গেজেটে যে সকল আইন ও সরকারি আদর্শ এবং রাজকীয় বিজ্ঞাপন প্রকাশ হয় তাহাবতেস অবিলম্বে বাঙ্গালা অগ্রবাদ উদ্ধৃত করিয়া নব বাক্যের সংহিতা নামক পত্রিকাকারে প্রতি মাসে প্রতি মাসে অধি প্রকাশ কবিত্তেছি এবং অমতিবিলম্বে প্রতি মাসে প্রকাশ করিতেও অসীমত হইয়াছি। তাইনাদি বাঙ্গালা অগ্রবাদ সাপ্তাহিক পত্রিক, বার্ষিক পত্রিকাকারে প্রকাশ করবার একাধিকারী হইবার জন্য ১৮৪৭ সালের ২০ আইন মতে

গবর্ণমেন্টে রেজিষ্টারী করিয়াছি। এখন আমি সাধারণের রাজ নিয়ম শিক্ষণ এবং যতন উপায় ও সুবিধা সংস্থাপন করিয়া সকলো গবর্ণমেন্টে রেজিষ্টারী করিয়াছি। এখন আইনাদির বাঙ্গালা অগ্রবাদ পত্রিকাকারে প্রচার করিতে কেবল আমি একাধিকার প্রাপ্ত হইয়াছি, অতএব গবর্ণমেন্টের আদেশ অনুযায়ী কার্য করণার্থ সর্ব সাধারণকে বিজ্ঞাপন কর, যাইতেছে যে অন্য কেহ যেন তিন মাসের প্রকাশিত সন্দার আইনাদির বাঙ্গালা অগ্রবাদ প্রেরণী পত্রিকাকারে প্রচারন করেন। যদি কেহ তাহা করেন তবে তিনি আমার কতি পুরণের দায়ী হইবেন।

ঔরামচন্দ্র ভৌমিক

চাকার নগর আদীন আদালতের উবীল।

বিজ্ঞাপন।

সর্ব সাধারণকে জ্ঞাত করা যাইতেছে যে আমার চত্বরে অর্থ কর্মালয়ে এক জন মকদম নছিল ৫০ টাকা মাসিক বেতনে চরকার হইয়াছে যে কেহ উহার নিমিত্ত ইচ্ছা করাই হোক সেই স্থাপন প্রতিষ্ঠা পত্র ৫০ মকদম নমুনা সমলিত দখলান্ত আমাকে পাঠাইবে, উহা দৃষ্টে যেমত কর্তব্য হয় পক্ষাৎ জ্ঞাত করা যাইবেক।

র. ওসামি গী } চার্লস একলিকউটট চক্রি-
২৪ এপ্রিল ১৮৬২ } নিয়ম বাঙ্গালীতে চিত্রিত
মজার।

বিজ্ঞাপন।

রেবেরণ্ড লড সাহেবের প্রতিমূর্তি

মূল্য টাকা।

সংস্কৃত বস্ত্রের পুস্তকালয়ে ও রাধাবাসু-
রে ১০২ নং ভবনে তত্ত্ব করিলে পাইবেন

বালোয়াছাট এটিক।

মূল্য ১০ মাস।

সংস্কৃত বস্ত্রের পুস্তকালয়ে বিজ্ঞাপন প্র-
দত্ত আছে।

বিজ্ঞাপন।

ঔরামচন্দ্র ভৌমিক বিদ্যালয় ও ঔরামচন্দ্র ভৌমিক ঠাকুরের প্রতিমূর্তি দ্বিতীয়বার প্রদত্ত করা হইয়াছে। ইহার প্রত্যেক খণ্ডের মূল্য এক টাকা। সংস্কৃত বস্ত্রে ও বিগনরোর নীচে ৮ নং গৃহে তত্ত্ব করিলে পাইবেন।

এন, সি, বোম্বাই প্রেস।

সোমপ্রকাশ।

২ ই বৈশাখ।

১৮৬২ ৬০ অক্টোবর আর বার।

লেড সাহেব গত বুধবার ১৮৬২.৬৩ অক্টোবর আর বার প্রসঙ্গ করিয়া দুই মাসের অধিক কাল এক দীর্ঘ বক্তৃতা করিয়াছেন। উইলসন সাহেব যতনবিধ কর স্থাপন ও তত্ত্ব প্রদান করিয়া যেমন সকলের বি-
বিক্রি ও অমশোভাজন হইয়া যান, লেড সাহেব তেমনি খ্যাতিলাভ করিলেন। অল্প দিন হইল, পাঠকগণ জবণ করিয়াছেন, তারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট লাইসেন্স কর উঠাইয়া দিয়াছেন, এবারে আর একটি আনন্দকর সমাচার জবণ করুন। যাহাদি-
গের পাঁচ শত টাকার মূল্য আর, তাঁহাদি-
গকে কর দিতে হইবে না; পাঁচশ.৫ টাকার উক্ত আয়দান রাষ্ট্রদ্রব্যকে শতকরা চারি টাকা কর দিতে হইবে না।

জেনি, লোকেরা যে এই উৎপাত হইতে মুক্তি লাভ করিলেন, ইহা সামান্য আত্মা দেয় বিবরণ নহে। এই স্থিতি কর এক কালে কবে উঠিয়া যাইবে, আমরা এক্ষণে এই গণ্ডীকা করিতেছি। লাই সেন্স টাক্স রহিত করা বল, আর ইনকম টাক্স স্থান করা বল, উভয়ই লেভ সাহেবের যত্নে হইয়াছে। লেভ সাহেব মার্কেটের কাপড়ের শুল্ক কমাইয়া পাঁচ, ও হুতার শুল্ক ৩।০ টাকা করিয়াছেন। আমিকানী সমাক, সরাপ ও কাগজের মাসুলও কমান হইয়াছে। বাজার যে আর্থনা ছিল, লেভ সাহেব আর্থনিক তাহা পূর্ণ করিয়াছেন, কাহাকে বঞ্চিত করেন নাই। ইহা লেভ সাহেবের লোক বশতা ও বিনয়প্রাতিতার পরিচয় প্রদান করিতেছে।

লাইসেন্স টাক্স উঠিয়া গেল, ইনকম টাক্স ও বস্ত্র শুল্কের শুল্ক কমিয়া গেল, তথাপি ব্যয় অপেক্ষা প্রায় ছেড়কোটি টাকা আর অধিক হইবে। বর্তমান বৎসরে সমুদায় ভারতবর্ষে ৪২, ২১, ৭০, ২০০ টাকা আর হইয়াছে। আগামি বর্ষে ৪৩, ৭৬, ৬২০০০ টাকা আর হইবার সম্ভাবনা আছে। অনেক বাদ সাধ দিয়া এই হিসাব ধরা হইয়াছে। অধিকের বাক্য এক্ষণে গতে ১৫০০ টাকার বিক্রয় হইতেছে, কিন্তু লেভ সাহেব ১২০০ টাকা বাজার গণনা করিয়া হিসাব করিয়াছেন। লেভ সাহেব আপাততঃ কিছু কিছু কম আর হইতেছে, তথাপি একপ সম্ভাবনা আছে, অধিক না হউক, পূর্ব বৎসরের ন্যায় আর হইবে। কলকাতা মোটে ৪৩ কোটি টাকা আর নিঃসন্দেহ হইয়া যাইতে পারে। আমাদিগের অবিশেষ আত্মাভ্যাসের বিষয় এই, ভূমিতে ১০ লক্ষ ইন্ডিয়ান ৩০ লক্ষ ও পাবলিক ওয়ার্ক ২০ লক্ষ অধিক আর হইয়াছে।

কিন্তু কলিকাতা হইলে কেবল

এক ভূমিতে অধিকতর আর হইতে সন্দেহ নাই।

১৮৬২। ৬৩ অব্দে ভারতবর্ষে ৩৫,২০ ৫৫২১০ টাকা ব্যয় হইবে। বর্তমান বর্ষে [১৮৬১। ৬২ অব্দে] ৩৬,৪৬,৩৩,০২০ টাকা ব্যয় হইয়াছে। এ হিসাবে ২৫,৭৭,৮৮০ টাকা ব্যয় সংক্ষেপ হইতেছে। কিন্তু যথার্থ ব্যয় অর্থাৎ সুদ, রেলওয়ের কামীনের টাকা বাসে গণনা করিলে ২৫ কোটি ব্যয় হইয়াছে। সেনা দলের ব্যয় সংক্ষেপই ইহার প্রধান কারণ। বাসের মধ্যে পন্য বাবট প্রধান। অন্য অন্য বর্ষের সহিত এতৎসংক্রান্ত ব্যয়ের তুলনাতিরেক করিলে স্পষ্ট প্রমাণ হইবে, এ বিষয়ের বিস্তার ব্যয় কমিধাছে যথাঃ

বর্ষ	টাকা ব্যয়
১৮৬১। ৬০	২০২০২০০৭০
১৮৬১। ৬১	১৫৮৩৮৮০০০
১৮৬১। ৬২	১২৮০০০০০০
১৮৬২। ৬৩	১২২০০০০০০

ভারতবর্ষ যদিগকে ইংলণ্ডের অর্থনৈতিক সেনা দলের যে ব্যয় দিতে হইতেছে, লেভ সাহেব এক প্রকাব তহবিল প্রতিবাদ করি যা যে কথা বলেন সে এই—

“ভারতবর্ষের নামে ইংলণ্ডে যে সেনা আছে, তাহাদিগের জন্য আমাদিগের রক্ষা ব্যয় করিতে হইতেছে। ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট স্বীকার করিয়াছেন, “দেশে যত ইউরোপীয় সৈন্য আছে, হুতাকপ হার। বশতাঃ তাহাদিগের সংখ্যা কমিয়া গেল। তাহাদিগের পরিবর্তে আর মুতন সৈন্য প্রেরিত হইবে না। কলকাতা একপ বোধ হইতেছে যে অল্প কাল মধ্যে এখন বন্দোবস্ত হইবে আমাদিগের প্রয়োজন মত ইউরোপীয় সৈন্য থাকিবে। যদি ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট পূর্বে এত কম অবদান করিতেন, তাহা হইলে ভারতবর্ষ যোর তর বিপদের সমবে এক গুরুতর হইতে হইতে পারিতেন। কিন্তু শেষ মুখ

পরম সুখ; আমরা বিপদ হইতে উদ্ধার হইয়াছি। এক্ষণে আর অগণিত ইউরোপীয় সৈন্য নাই; অনাবশ্যক সৈন্য দলের পদ শূন্য হইলে তাহা আর পরিপূরিত হইবে না। আমরা একপ বিশ্বাস হই যাচ্ছি যদি ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট পূনর্বার আমাদিগের সুবিধা হেতু ১৪০০০ অথবা ১৫০০০ সৈন্য ইংলণ্ডে রাখিয়া ভারত বর্ষ হইতে তাহাদিগের বেতন লন, ফৌট সেক্রেটারি ইহার নিবারণ করিবেন। এত দূর স্পষ্ট প্রতীক্ষমান হইতেছে, লেভ সাহেবের অর্থতাঃ ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টকে এত কম বলা হইয়াছে, আমরা এত দিন আমাদিগের সুবিধার জন্য অতি বহুসং কয়েক কোটি টাকা অপব্যয় করিয়াছি, কিন্তু আমরা আর তাহা করিব না। যাহা হউক দেখা যাইতে, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট এই প্রতিজ্ঞা পালন করিতে পারেন কিনা।

হুতাকপ ও রক্ষণীয় সুবিধা হেতু রক্ষা প্রস্তুত করিবার নিমিত্ত এ বৎসর আর এক কোটি টাকা দেওয়া হইবে, ইনকম টাক্স হইতে ৩৮ লক্ষ টাকা দেওয়া হইয়াছে। বিদ্যা শিক্ষা ও রক্ষাদিগের জন্য অতি প্রেসিডেন্সিতে মুতন কর দান করা হইবে। তহবিলের কর হ গেল, তবে বৎসরে মুতন দিখ কর আদায়ের উপায় কি? পান - পান ও তমাক উভয়ই সমান। তহবিলের কর যে মুতন দিতে পারিত্যক হইয়াছে, পানের করও সেট মুতন দিতে পারি ত্যাগ করা উচিত। অপর, বিদ্যা শিক্ষা সংক্রান্ত কর কোন ক্রমেই আমাদিগের অনুমোদিত নহে। বিদ্যা যে এমন প্রাণ নীয পদার্থ, করদ্রুত হইলে ইহাও দক লের নিত্যক বিদিক্ত হইয়া উঠিবে।

একটি বিশেষ আত্মাভ্যাসের বিষয় এই বিদ্যা বিধে পূর্ব শুল্ক ৫০ লক্ষ টাকা দেওয়া হইয়াছে। লগ বৎসর পূর্বে সমুদায় ভারতবর্ষের শিক্ষার জন্য ১১ লক্ষ ব্যয় ব্যয় হওয়া হয়। বিদ্যাই দেশের সৌ

ভাণ্ডা লাভের মূল। গবর্ণমেন্ট সেই বিষয় বিষয়ে যে পরিমাণে দান করিয়াছেন, সেই পরিমাণে প্রজাপণ সৌভাগ্যশালী হইবে। প্রজার সৌভাগ্য হইলেই রাজার সৌভাগ্য।

পরিশোধে আমাদিগের মনের ভাব প্রকাশ না করিয়া এ প্রস্তাবের উপসংহার করা বিবেচ্য হইতেছে না। ভারতবর্ষ যেন দরাবব লেগে সংস্কারের ন্যায় সদর ও দ্বিবি চিত্ত রাজস্ব সংক্রান্ত কার্যকারক প্রাপ্ত হন। ব্যয় সংক্ষেপ দ্বারা রাজস্বের আয় বায় সমতা বিধান সম্ভব। পাকিলেও হাঙ্গার। প্রকৃতপক্ষে অকারণ করপীড়ন, ভাঁড়ার। যেন রাজস্ব সংক্রান্ত প্রাধান্য কাম্যাকারক হইয়া ভারতবর্ষে না আইসেন। তাদৃশ ভ্রাতাকাক। পরবশ বালি বাক ভারতবর্ষের যত কষ্টের কারণ।

জুতা খুলিয়া সম্মান প্রদর্শন।

লর্ড ডেলহৌসি অনেক বিষয়গত আমাদিগের চিরস্মরণীয় হইয়াছেন। কিন্তু এতদ্ব্যতীত, কি ক্ষতি বৈধ, কি এদেশীয়দিগের অবমাননা, অনুধাবন করিয়া দেখিলে উক্ত লাভ। সম্ভবতঃই মূল। উহার দুইটা দর্শন করিয়া, একদেশীয়দিগকে 'অপমান করা' ইউরোপীয়দিগের একটি প্রথা হইয়া উঠিয়াছে। একবারে জাল কদিকা ধুত হইল, অসমি তাঁপের থাকের। ভারতের এ দেশের যাবতী। লোককে গালি দিতে আরম্ভ করিলেন। কয়েক মন্তব্য হতভাগ্য নির্দোষ সিপাহী নিসাদী হইল ওৎফণ্ড। যাবতীর ভারতবর্ষের নৃশংস ও হতবলিয়া সমুদায় দেশ উৎসন্ন ছিল। প্রস্তাব হইল। কয়েক জন এই প্রস্তাব কগজ চুরি করিল, অসমি সমুদায় রাজ্য লিকে চোর বলা হইল। আনন্স! কথিত। এ সকল বিষয়ে উপেক্ষা করিতে পারি কিন্তু লর্ড ডেলহৌসি জুতা খুলিয়া ইউরোপীয়দিগের প্রতি সম্মান প্রদর্শনের

যে নিয়ম করিয়া যান, তাহা কোন ক্রমেই উপেক্ষণীয় নহে। বৃহৎ স্রীলোকের বেশ বিন্যাস, অবিবেকির শাসনভাৱে ৩৭, অনতিজ্ঞের পণ্ডিত বসিয়া পরিচর দান এবং জুতা খুলিয়া সম্মান প্রদর্শন এগুলি নিত্যকর্ম অসহ্য।

লর্ড ডেলহৌসি এই নিয়ম করিয়া যান যে একদেশীয়েরা যখন গবর্ণর জেনে রলের দরবারে ও প্রধান আদালতে যাই যেন তখন প্রাণাধিককে জুতা খুলিয়া যাইতে হইবে। ইউরোপীয়েরা টুপি খুলিয়া প্রাণাধিকের প্রতি সম্মান প্রদর্শন করেন। এ দেশীয়দিগকে জুতা খুলিয়া সেই সম্মান প্রদর্শন করিতে হয়। এই বৃদ্ধি আইন প্রচলিত হওয়া অবধি আমাদিগের দেশের তেজস্বী তত্ত্ব লোকেরা কোন দরবারে বা সাধারণ স্থলে যাইতে চাহেন না। অস্প দিন হইল, সুরত নগরের তত এক জন পারসীকে জুতা খুলিয়া এজল সে অসিতে বলেন, পারসী তাহাতে অসম্মত হন; পরে বিচারপতির সহিত তাঁহার অনেক তর্কবিতর্ক হয় শেষে মাহেব তাঁহাকে জুতা চাইয়া আসিতে দিলেন। এই বিষয় চট্টো বোয়াই নগরে অসমান্য হইতেছে। ততঃ মটতে রিডিউ পারসীকে গালি দিয়া তন্ময় ঐশ্বরিকারী অতিথাদের হাত বাক্য কথা গান টুঁড়িয়া বাধা করিয়াছেন। কিন্তু শেষে এই সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যাহা বিলম্বিত জুতা ও মোকা পরিধান তাহাদিগকে এই নিয়ম প্রদান করা উচিত নহে। এই সিদ্ধান্ত অসম্মত কোর্টবর্ষে সন্দেশ নাট। বাহা হউক, তৎপরেই সর্বপ্রধান পত্রিকা টাইমস অব ইন্ডিয়া নিজ অপকপাতিতা প্রদর্শন করিয়া এই বৃদ্ধি আইনকে এককালে উৎসেহ দিবার অনুরোধ করিয়াছেন।

যখন অনেকজাতীয় পারমাণেশ জগ করিয়া তত্ত্বা নগ্ন পরিধান করেন, যখন লে তাঁহার সেনাপতিগণ অস্ত্রের বিরুদ্ধে

হইয়াছিলেন; কিন্তু সেই সেনাপতির। যদি এই সময়ে উপস্থিত হইয়া ইউরোপীয় সভ্যতার জাতির উল্লিখিত সম্মান পাইবার আশা দেখিতেন, তাহা হইলে তাঁহাদিগের কি ভাব জন্মিত? ভারতবর্ষে ইউরোপীয়েরা ভাবেন, ইউরোপীয়রাই এ দেশীয়দিগের আরাধ্য। ভারতবর্ষে বরাহ অবতার হইয়াছিলেন বলিয়া কি সবল পুরুষেরই চরণে দণ্ডবৎ পতিত হইয়া প্রণিপাত করিতে চাইবে? অত্যা ইউরোপীয়েরা এমনি অতিমাত্রী হইয়া উঠিয়াছেন, অন্যের অসম্মান্য ক্রটি দেখি নাই এককালে কোথায় অধীর হইয়া উঠেন এবং সমান্য সম্মান লাভ হইলেই তাহাদিগের সর্বোপরে পরিসীমা থাকে ন সমাজ চিরকাল একবিধ অবস্থার থাকিবার নহে। বিদ্যা, সভ্যতা ও বাহ্যবস্ত্র প্রভাবের ক্রমশঃ রীতি নীতি সকল পরিবর্তিত হইতেছে। পূর্বে রাজা ও নবাবদিগের সম্মুখে সাক্ষাৎ প্রণিপাত করিতে হইত, এক্ষণে কোন্ ব্যক্তি অসম্মত ব্যবহার বলিয়া তাদৃশ প্রণামে যুগা প্রদর্শন না করেন? সম্মানের বিষয়ে গবর্ণমেন্টকে সম্মতের মুখ চাহিয়া থাকিতে হয়। কুকিয়া রাজার গায়ে নিজ চরণ স্পর্শ করাইয়া সম্মান প্রদর্শন করে। পূর্বেই ইউরোপীয় রাজারা পোপের পদ চুম্বন করিতেন। এক্ষণে কোন্ রাজা তাদৃশ কার্যে সম্মত হইবেন?

এই সময়ে নিকটে কতজন।

প্রদর্শনসম্মত।

পত্নী বুধবার ভারতবর্ষীয় সভ্য প্রাণে প্রাণে সাহেবেব নিকটে কতজন প্রদর্শন নার্য একটি সভ্য হইয়াছিল। সকলে দ্বিধা করিয়াছেন নেপটেনট গবর্ণরকে এক এ হুস দিয়া তাঁহার এক চিত্রিত প্রতিমূর্তি দিবে। কিন্তু আমরা এই প্রস্তাবে তন তদন্ত করিতে পারিতেছি না। যে ব্যক্তি

রূপকদিগকে বহুকালের অভ্যাসে ও যা
সব লুপ্ত হইতে মুক্ত করিয়াছেন; যিনি
চতুর্দিকে ছরপসার প্রতিবন্ধকতা সত্ত্বেও
স্বস্বপিত্ত বিষয় পরিত্যাগ করেন নাই,
যিনি বারবার তর্জিক তর্জিত ও বিকৃত
হইয়াও কখনো কালের নিমিত্ত বিচলিত হই-
ন নাই; যিনি প্রবল শত্রুগণকে ভুক্ত ও
প্রধানের সহিত বিবাহ করিয়াছেন, তাঁহার
কি এই পুরস্কার? লর্ড ক্যানিং বরাবর
উচ্চ গ্রেণির সম্মান ও নীলকরদিগের স-
হায়তা করিয়া আসিয়াছেন। তিনি এক
প্রকৃতমণী প্রতিভা পাইলেন, কিন্তু
গ্রাণ্ট সাহেবের এক চিত্রপট মাত্র করা
হইল? শুনি। অজ্ঞানিত হইলাম বাবু
লাল বিহারী দে এ বিষয়ের প্রতিবাদ ক-
রিয়াছিলেন। সত্যেরা তাঁহাকে নিরস্ত
করিবার নিমিত্ত এই কথা বলেন, অধিক
টাকা আদায় হইলে এক প্রকৃতমণী প্রতি-
ভা কর্তৃক হইবে।

তারতবর্ষীয় সভা যা করেন করুন, কৃপ-
কেরা আজিও মৌনী হইয়া রহিয়াছেন
কেন? তাঁহারা যদি তাহাদিগের উদ্ধার ক-
রিবার অন্তিম চিন্তা না করেন তাহা হইলে
তাহাদিগকে অকৃতজ্ঞ হইতে হইবে। আ-
জিও তাহাদিগকে অধিক দিতে বলিতেছি-
না। একতাক ব্যক্তি দুই আনা করিয়া দি-
লেই যথেষ্ট হইবে। কেন প্রভা হইতে
অসম্মত হইবেন? আমরা ঢাকা চণ্ডীম-
কুমিজা ময়মনসিংহ পাবনা বরিশাল
রাজশাহী মুরসিদাবাদ নদীয়া যশোর
একুতি স্থানের লোকদিগকে অনুরোধ
করিতেছি তাঁহারা অবিলম্বে এক সভা
করিয়া চিন্তা করুন। মধ্যম শ্রেণীর লোক
দিগের এ বিষয়ে যত্নবান হওয়া অতিশয়
আবশ্যিক। তাঁহারা কি এ অতীত সম্মা-
দনে সমর্থ নছেন? তবে তাহাদিগের কি
সের জীৱিকি ও বিসের গৌরব? কোথায়
বা তাহাদিগের স্বদেশানুগাণ?

নীলকরদিগের কর সংগ্রহ প্রসঙ্গ
লর্ডেরা বাহাদুরবাদ।

সামান্যতঃ যদি প্রতিবাদির ও দলা-
দলিপ্রিয় ব্যক্তিদিগের যেকোন পরস্পর
জিগীষা দেখিতে পাওয়া যায় আমাদিগের
কর্তৃপক্ষ রাজপুরুষদিগেরও সেইরূপ জি-
গীষা বৃদ্ধি বলবতী দৃষ্ট হইতেছে। এত
খুলক কেবল যে প্রকৃত বিষয়ের মীমাংসা
হওয়া দুঃস্বপ্ন হইয়াছে একমুখ নহে, দুই
চারেরাও প্রত্যয় পাইতেছে। বোধ হয়
পাঠকগণ বিম্বিত হইবেন নাই। পূর্বে সর
বার্টল ক্রিয়ার গবর্নর জেনারেলের না-
কস কলেক্টর দ্বারা আকৃত হইয়া নীলকর
দিগের কর সংগ্রহ প্রসঙ্গ লইয়া অজ্ঞান
লেপ্টেনেন্ট গবর্নর গ্রাণ্ট সাহেবকে অসু-
চিত বাক বিক্রম ও তিরস্কার করেন।
গ্রাণ্ট সাহেবও তাহাব সমুচিত উত্তর দা-
নে বিম্বিত হই নাই। তারতবর্ষীয় গবর্নর
জিগীষা পরবশ হইয়া পুনরায় গ্রাণ্ট সা-
হেবের প্রদত্ত উত্তরের প্রত্যুত্তর দান ক-
রিয়াছেন। কিন্তু বিষয়ের বিষয় একে, তার
তবর্ষীয় গবর্নরমেটের এখনও পদাট এক
রূপ সংস্কার আছে যে তাঁহারা মধ্যস্থ
প্রেরণ দ্বারা নীলকর ও প্রজাগণের পর-
স্পর বিবাদে মীমাংসা করিয়া দিবেন।
গবর্নর জেনারেল বরো সমুদে স্বীকার
করিয়াছেন, খাজনা লইয়া নীলকরদিগের
সহিত প্রজাগণের যে বিরোধ হইতেছে,
নীলই তাহার আদি কারণ। ইহাও অব-
গতিত পরেই তিনি কহিয়াছেন, পূর্বের
ন্যায় নীল বপন না হওয়াতে নীলকরেরা
অপত্ত বাকি খাজনা আদায় করিবর,
খাজনা বৃদ্ধি করিবর এবং কোঃ এডাল্টকে
না পূরণ এই অক্তিপ্রায়ে ভূমি পরিমাণ
সনিবার 'পাণ্ডে' অধিকতর যত্নবান হই-
বেন।

পূর্বকৃত নীল হইতেছে না বলিয়া যে
সকল ব্যক্তি খাজনা বাড়াইতেছে, আর
পাণ্ডে নীলকরের সম্পর্কে গেলে নীল

বপন করিতে হয়, এই ভয়ে তাহারা নীল
কর সম্পর্কে ঘাইতে চাহিতেছে না, মধ্য-
স্থতা তাহা সে উভয়ের বিবাদ নিষ্পত্তি
হইবার সম্ভাবনা আছে কি না একমুখ ভবি-
ষ্য বিনেচিৎ হইতেছে। বিবাদ কারণের
উন্মুলন না করিয়া বিরোধ মীমাংসা চে-
ষ্টা বিড়ম্বনা। সেই কারণসত্ত্বে যদি কথ-
চিত্ত মীমাংসা করিয়া দেওয়া সম্ভাবিত
হয় সচরাচর প্রবলে ও দুর্বলে যেকোন
বিবাদ নিষ্পত্তি হইয়া থাকে সেইরূপ হই-
বে সন্দেহ নাই। দরিদ্র রূপকদিগকে আ-
জিও নিঃসংশয় কতিপয় হইতে চাই-
বে। পাণ্ডে এ মীমাংসাই কাতান্তরে বহু
অনর্থের মূল হইয়া উঠিবে। কলকাতা গব-
র্নর জেনারেল মধ্যস্থ প্রেরণ করিয়া মীমাং-
সা চেষ্টা না করিয়া যদি নীল প্রধান প্র-
দেশের ভূমির নিবিধ করিয়া খাজনা নি-
শ্চিত করিয়া দিতেন, সাময়িক কৃতার্থতা
লাভ করিতে পারিতেন।

মে ডক্টর কালোজের বাহাদুর।

ডিপার্টমেন্ট

যে সমস্ত ব্যক্তি কলিকতা মেডিকেল
কালোজের বাহাদুর ডিপার্টমেন্টে অধ্যয়ন
করেন, তাহাদিগের পুস্তকেব সমস্ত
ও শিক্ষার অংশতা প্রকৃতি দ্বারা একটি বি-
বরণ উল্লেখ দ্বারা সাধারণ পূর্ণ এক
বালি আমাদিগের নিম্নে এক বালি
প্রেরিত পত্র পাঠাইয়া দিয়াছেন, আমরা
তাৎক্ষণিক প্রতিক্রিয়া এই প্রকৃতি গ্রহণ করিলাম।
অত্র মেডিকেল কালোজের বাহাদুর
ডিপার্টমেন্টের চতুর্দিকে যত্নে কণা দি-
লিগি। 'কালোজের বাহাদুর' বিষয়ই নি-
খিতে সমস্ত বিবাদ তত্ত্ব বিচার ভয়ে সংক্ষেপে
এক বহুকা। বিদ্যে যাত্রের উল্লেখ করা
পাইতেছে।

প্রথম পুস্তকের অধ্যায় দ্বিতীয়, নবমের
অধ্যায়। তৃতীয় শিক্ষকদিগের অনায়া
চরুণ, গবর্নরমেটের উপস্থাপন। প্রথম, আর্জিও
সাক্ষাৎ ভাষা ও উক্ত ১৮২২-২৩ ও ২৪

কর নাহি। পুষ্কর সংকট ব্যবসায়ী টোলের
জরিদারের মায়া মাজল। ডিপার্টমেন্টের ডা-
ক্টারদের অধিকাংশ পুষ্করই বর্তমানে লিখিয়া
-১২৬২ হয় ইহা ও ডিপার্টমেন্টের লেখক কই,
কিন্তু সচিবের কামেরে প্রস্তুত করিতে
নাহে। কেবল এই করে ডিপার্টমেন্টের অফিসের
ময়, প্রকৃত রূপে শিক্ষার ও অনেক ব্যাঘাত
করিয়া থাকে। মহাশয়! এ দেশীয় যে সকল
ব্যক্তি মেডিকেল কলেজে সুশিক্ষিত হইয়া
ছেন, তাঁহারা বিধিঃ মনোযোগ করিয়া
নামের পুষ্কর অফিসের দূর বিবেচনা
করেন। কিন্তু ডিপার্টমেন্টের বর্তমানে লিখিয়া
উদ্যোগের দৃষ্ট হইতেছে, তাহাব কারণ বি-
ভিন্নভাবে আশিঃ সমর্থ নহি।

দ্বিতীয়, সমস্যা-সম্পত্তি। জিন বৎসর
কাল হইতে এই বাঙালি ডিপার্টমেন্টের হাজি-
দিগের লিখার কাল। ততক্ষণে প্রাথমিক
এই লিখার করিয়া এখন যে, এ জিন বৎসরের
মধ্যে দুই বৎসর কালেজের শিক্ষা শেষ করিয়া
আর এক বৎসর কাল কেবল হাসপাতালে অস্ত্র
চিকিৎসা শিক্ষা করিতে হইবে। ইহা
শয়! দুই বৎসর কালের মধ্যে শারীর বিদ্যা
সম্পূর্ণরূপে শিক্ষা করা নিতান্ত অসম্ভব।
সম্পূর্ণরূপে শিক্ষা করা দুই বৎসর পাছক, অতি
আবশ্যিক বিষয়গুলিও ভালরূপে শিক্ষা হয়
না। জিন বৎসরের পরবর্ত্তে যদি চারি বৎ-
সর পাছ বৎসর নিয়ম করা হয়, তাহা হইলে
কিঞ্চিৎ ব্যাপ্তি হইবার সম্ভাবনা আছে।

তৃতীয়, শিক্ষকদিগের অনায়াস। শিক্ষক
অভ্যাসেরা গাণিত্য গণিত্য অধ্যাপনার বিষয়
গুলি যথা কথঞ্চিৎ উপদেশ দ্বারা শীঘ্র শীঘ্র
শেষ করিতে পারিলেই অধ্যাপনার কষ্টব্য
কষ্ট শেষ হইল মনে করিয়া থাকেন। কিন্তু
এই সময়ে মধ্যে দুইটি বিষয় গুলি শিক্ষা
করা ডিপার্টমেন্টের সাধারণতঃ কিনা, তাহারা
সে বিবেচনা করেন না।

চতুর্থ, গবর্নমেন্টের উপেক্ষা। গবর্নমেন্ট
যদি মনোযোগ করেন, নিঃসন্দেহ উপায় উক্ত
বিষয় গুলির দোষ সংশোধন করিতে পারেন।
গবর্নমেন্টে কি অন্য যে ক্ষেত্রে মনোযোগ
করেন না বলিতে পারি না।

৩রা বৈশাখ ১২৬২ কল্যাণী জনসা

পরে আরেক মেডিকেল কলেজের বা-
ঙালি ডিপার্টমেন্টের বিষয় যে যে কথা
লিখিয়াছেন, তাহাও এমটিও অসমর্থ
নহে। এই ডিপার্টমেন্টের কথা শ্রবণ হই-
লে তৎক্ষণাৎ অধ্যাপকের অন্তঃকরণ
এই উদ্দেশ্য হইতে থাকে, গবর্নমেন্ট কেবল
অধ্যাপককে ছোত দিবার নিমিত্তই এই
ডিপার্টমেন্টের সৃষ্টি করিয়াছেন। উক্ত প্র-
কৃতরূপ শিক্ষার স্থান করা গবর্নমেন্টের
অভিপ্রেরিত মতে উক্ত কেবল শিক্ষার অনু-
করণ স্থান করা হইয়াছে। না অন্যতম
জ্ঞান সম্প্রদায়, না আছে নিমিত্ত বাস্তব
নিগের যথোচিত উৎসাহ দান। তবে
জ্ঞানী যমসন্তোষের দেশীয় বৈদ্যদিগের
আলাপ চলিতেছে। গবর্নমেন্ট আবার কত
কগুলি মনের দ্বিতীয় সন্তোষের প্রস্তুত ক-
রিয়া দিতেছেন। বাঙালি ডিপার্টমেন্টের
ছাত্রগণ! আমাদিগের এই লেখকে কষ্ট
হইও না। আমরা এক্ষণে কথা কহিতেছি।
ডিপার্টমেন্টের গবর্নমেন্ট হইতেছে না।
তখন ডিপার্টমেন্টের হইতেছে সম্প্রদায়
সম্প্রদায় আছে। অনেক কষ্ট কষ্ট মত
জানিলেও কথঞ্চিৎ চলে যাউ কিঞ্চিৎ এ
কাজটা। পঁচা কাট কষ্ট মত জানিলে
চলে না। সে মতের নাই। এ দেশের
অধ্যাপকের মতে, গবর্নমেন্ট অধ্যাপককে
এই বিজ্ঞানকে জেনিতেছেন। ইহা হইলে
অধ্যাপকের লজ্জিত ও কষ্ট হইবার বিষয়
কি।

গবর্নমেন্ট যদি মেডিকেল কলেজের
বাঙালি ডিপার্টমেন্টের সংস্কার ক্রিয়ায়
যত্নবান হন, কৃতব্য হইতে পারেন কি
না এবং কি উপায় অবলম্বন করিয়াই বা
সেই সংস্কার করিতে হইবে, এক্ষণে কথি-
য় বিবেচিত হইতেছে। আপাততঃ জিন
বৎসর কাল বাঙালি ডিপার্টমেন্টের হাজি-
গণের শিক্ষার সময় বিলম্বিত হইয়াছে
এবং এই সকল ছাত্র পরীক্ষার উত্তীর্ণ হই-
য়া কল্যাণী হইলে ডিপার্টমেন্টে অতি যত্ন

সামান্য বেতনে নিয়োজিত করা হইয়া
থাকে, কিন্তু এই সময়ের ও বেতনের বৃদ্ধি
করিয়া দেওয়া কিছু বড় কঠিন কার্য নয়।
বাঙালি ডিপার্টমেন্টের চিকিৎসাশাস্ত্র
অধ্যয়নই অতিশয় দুর্বল হইতেছে। তাহারা
মেডিকেল কলেজে শিক্ষা করিয়াছেন,
তাঁহারা অধ্যাপকদেরই ব্যস্ত সময়, তাঁ-
হারা যে বৃত্তিপ্রবৃত্তি হইয়া আবশ্যিক প্রক-
রণ করিয়া এ অসম্ভাব দূর করিয়া দিবেন
। স প্রত্যাশা অসম্ভব। গবর্নমেন্টকে এ বি-
ষয়ে মনোযোগ মনোযোগী ও কিঞ্চিৎ অ-
ধিকতর অর্থ ব্যয় করিতে হইবে। তাহারা
প্রথমে কয়েক ব্যক্তিকে মনোযোগী করিয়া
কিছু অধিক বেতন ভালরূপে চিকিৎসা-
শাস্ত্রে সুশিক্ষা প্রদান করুন, পাছাৎ এই
সকল ব্যক্তিকে প্রকৃত অধ্যয়ন কার্যে নিয়ো-
জিত করিবেন। গবর্নমেন্টকে ডিপার্টমেন্টের
মাসিক হাজি মিকাণ করিয়া দিতে হইবে,
একপ করিলে তাহারা নিশ্চিন্ত মনে প্রক-
রণে সমর্থ হইবেন, অতীত সিদ্ধি হই-
বে সন্দেহ নাই। যত দিন লোকে শ্রম
উৎসাহী হইয়া এদ্বিধ কার্যে প্রবৃত্ত না-
হয়, তত দিন রাজসাহায্য নিতান্ত আব-
শ্যক। আমরা প্রাচীন কালের যে সময়
উৎকৃষ্ট প্রকৃত দেখিতে পাই, তাহাও অধি-
কায় রাজসাহায্য সহায়্য বলেই হইয়াছে।

—

আমরা কৃতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করি
তেছি বঙ্গরমপুর দত্তবা সনাতনের অষ্টম
সাম্প্রতিক (১২৬৭ সালের) আয় বাস বি-
তির বিবরণ পুস্তক প্রাপ্ত হইয়াছি। সেই
আয় বাস বিতির বিবরণ এই -

আয়	ব্যয়	হিস্তি
৩৩৮৫০/৫	১২৮২৫/১৫	২১০২৫/১০
আয়ের বিবরণ।		
মাসিক দত্তবা		১২১৮১০/০
বার্ষিক দত্তবা প্রাপ্তি		৬৫
এককালীন দত্তবা প্রাপ্তি		৫৪১০/০
হাওলাতি টাকার মুদ		২৩ ১১/১০

বাহু কৈলাসচন্দ্র বসু সিবিএল ক্লাসে ফরি
সনের সন্নিবেশ সাহায্য করিতে গরবমেটে
তাহাকে ১০০০ টাকা পুরস্কার দিয়াছেন।

গোবর্ধন সাটভেট রিভিউ সম্পাদক বলেন
মহারাজ সিদ্ধিলা বোম্বাই নগরে বাউতেছেন।
একজন জমজমাতি রাজা ইংলেণ্ডে বাইবেন।
কুসংস্কার নিগড় ক্রমশঃ তার উৎসেছে।

মহাত্মা এডমোশীয়দিগের যে সত্য আছে,
ঐ সত্য সর উইলিয়ম ডেমিসনের মিকটে বি-
ভাসি অধিকারের পোষী হইয়া এক আবেদন
পত্র প্রদান করিয়াছেন। সিদ্ধিলা যথের অর্থ
এই পত্রীগ্রামে যে সকল দুঃখ পতিত আছে,
জীবদারেরা তাহা আপনাদিগের জমীদারির
অন্তর্গত করিয়া লয়েন। তাহারা চিরকাল এই
যত্ন ভোগ করিয়া আসিতেছেন। সর উইলি-
য়ম ডেমিসন তাহাদিগের আবেদন গ্রাহ্য
করিয়া বলিলেন “আমার এ বিষয় বিবেচনা
করিবার সময় নাই। হাঁ বড় গ্রীষ্ম!”

বিব্রেট বিভাগের জেলের অধ্যক্ষ ভক্ত
র করণিণ কলিকাতার আসিবাল সময়ে বর্ধ-
বাস লনিলেন। সেপ্টেম্বর ১৯৬৬ ডেমিস নামক
এক কল্লু আফিসর ওলাউঠার আক্রান্ত হই-
য়াছেন। তাহাকে মর্শন করিবার জন্য করুণি-
ক অস্ত্রোপাধ করা হয়, কিন্তু বাঙ্গালীয় শকট
ডায়া যট্টা ব বলিয়া তিনি তাকা করেন নাই,
এজন্য ভারতবর্ষের গবর্ণমেণ্ট তাহাকে পর-
চ্যুত করিয়াছেন।

একজন পত্রীকোত্তর সিবিএলানিগকে ল-
ইরা সংবাদ পত্র মহাআন্দোলন হইতেছে।
এই যুবকদিগের দুঃখতাব ক্রমশঃ প্রকাশ হই-
তেছে। “কম্পিটন ওয়ালারা ৩ পেনে উ-
পনিবেশের গবর্ণরের ন্যায় হইয়া উঠেন সে-
মিতে পাউ।

দুই জন ইউরোপীয় নাবিক এক যাক
চুবট চুক্তি করিতে তাহাদিগের এক মাস কারা
বাসের আদেশ হইয়াছে।

আর এক জন ইউরোপীয় চুক্তি করিতে তা-
হাদের সেসিরনে সমর্পণ করা হইয়াছে। ক্রমে
নয়ক গুলজার হইতেছে।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন সুখিমানার
কবিসনর তত্ত্ব্য বেহুল বিক্রম নামক সংবাদ
পত্রের সম্পাদককে হাড়াইয়া দিয়াছেন। কবি-

নবরের অনতিমিত কোন বিষয় সেখা ইহার
কারণ। পক্ষাবে স্বাধীনতার আধিপত্য রক্ষিত
করাতে ১২ জন নরেন্স দেওসর উত্তিরার ম-
নের লোকের এক জির পার।

ইংলিস নামক এক জন ইউরোপীয় এক মত
টাকার ব্যাংক মোট চুক্তি করিতে তাহাকে সে-
সিরনে সমর্পণ করা হইয়াছে। কোল জর ইতি-
হা ও ইংলিসমান প্রকৃতি এখনও কি উই-
রোপীয়দিগের তত্ত্ব ও এদেশীয়দিগের তত্ত্ব
আলাপত রাখিবার চেষ্টা করিবেন?

উত্তর পশ্চিমাকলে এক জন ইউরোপীয়
মৃত্যু রুতি আরত করিয়াছে। তথায় ক্রমশঃ
চুক্তির ইউরোপীয়ের সংখ্যা রুখি হইতেছে।
ইহারাই কি উপনিবেশকারীদিগের আদর্শ?

গ্রাউ সাহেবের মরণার্থ কর্তব্য অবধার
নের উদ্দেশে ভারতবর্ষের সত্যকে এক
সত্য হইয়াছে।

পত্নী সত্যাহে আর মন লক টাকার গবর্ণ-
মেণ্টে কাগজ বিক্রয় হইয়াছে।

ক্রেতাব ইতিয়া সম্পাদক এদেশীয়দিগের
সুযোগানে অধিকতর প্রেরতি দেখিয়া আক্ষেপ
করিয়াছেন। ইউরোপীয়দিগের সংসর্গে
এ দেশীয়দিগের এই বিদ্যারই বিলম্ব লিকা
হইয়াছে।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন, সব চারলস-
উত আকা দিয়াছেন প্রধানতর বিচারালয়
হইতে ইংলণ্ডীয় প্রিবিকৌন্সিলে যে সমস্ত
যোককতার আপীল হইবে লিগাল রিমেডা-
গারকে তাহার সংক্ষেপ রুডাক লিবিয়া দিতে
হইবে।

আসান হইতে সংসদ আনিয়াছে তত্ত্ব্য
গোলবোগের কিঞ্চিৎ শান্তি হইয়াছে।

আমরা শুনিয়া চুঃখিত হইলাম কাজ
দিনের রাও পীড়িত হইয়াছেন।

টোনসে হইতে বেলিবোগে নিম্নলিখিত
সমাচার আনিয়াছে। বিদ্রোহীরা অদ্যাপিও
হীনবল হয় নাই। সালের ১০ কোশ পথের মধ্যে
যত বিদ্রোহী আছে ইংল্যান্ড কর্তৃক রণত
রির অধ্যাকেরা তাহাদিগের সহিত সন্ধদা বুল
করিতেছেন। সাংকেতে আর ১০০০০ পলায়িত
ব্যক্তি আনিয়াছে তাহাদিগের সকলকে আধা
র দেওয়া করিল হইয়া উঠিয়াছে। পিকিন ও

আপান হইতে কোন সিন্ধব সংবাদ আটসে
নাই। নাবকিনে নলীর অপর পদে সন্ন্যাসের
সেনারা যুদ্ধার্থে আগমন করিয়া পুনঃস্থিত হই-
য়াছে।

নিউগো হইতে সংবাদ আনিয়াছে বিদ্রো-
হী দিগের এক মন আহাজ কুসাম আধিকার
করিবার জন্য প্রস্তুত হইয়াছে।

অন্য চৌহালে মহলোকের সন্ধান হই-
বে, তথায় অনেক পুন্স কল ও উৎকৃষ্ট মণ্যা-
দি প্রদর্শিত হইবে।

সম্রাতি পুর্বাধের জেলের প্রস্তুত করা
মহা সঙ্কট নির্মিত হয়, অসমকে তাহা মর্শন
করিয়া সঙ্কট হইয়াছেন। আলিপুরের জেলের
মহাশক্তি সাধারণের সম্মুখে উপস্থিত করা না
হয় কেন?

এ, এ, রবার্টস সাহেব পক্ষাবের রাজস্ব
বিষয়ের কমিসনর হইয়াছেন। রবার্টস সাহেব
ভারতবর্ষের ব্যবস্থাপক সভার সভ্য হই-
বেন।

লাহোর ক্রমিকেল সম্পাদক বলেন কর্তার
পুরে যে আকিসরেরা নর্তকীদিগের প্রতি দুব্য
বহার করিয়া হৃত হন সেপ্টেম্বরগবর্ণর তাহা-
দিগের উপর অভিযার বিরক্ত হইয়াছেন।

একজন কিরিজি কয়েকটি পুলিশ ও কম্পান-
চুক্তি করিতে তাহার দুই সখা কানাবাসের
আদেশ হইয়াছে।

হরকরাসম্পাদক বলেন সরিষার নামকসেফে-
টারি আকিসের একজন কোশী ২০০ টাকা
বেতনে হৃতম কর্তাবুলারি পুলিশের একজন
সহকারী হইয়াছেন। রাজ্যের অপাহুটে এই
বেলা তরিয়া বাইবে।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন কিসার নামক
একজন সিবিএলান জিলাফুরের রেসিডেন্ট
হইয়াছেন। মিলেটারিরা আর রেসিডেন্ট হই-
য়া থাকেন।

পরিষিটের মহাশক্তি অভিযার বিশৃঙ্খলার
রাখা কর উক্তসম্পাদক তাহার এসজ করিয়া
আক্ষেপ করিয়াছেন। বস্ত্তঃ কর্তব্যসিগের
দোষে অনেকে কতিপ্রস্তু হইয়া থাকেন।

রাহপুর হাটে ওলাউঠার অভিযার প্রা-
র্তাব হইয়াছে।

ইংলিসমান লিখিত হইয়াছে, রাজা প্র-

কাপড়ের সিংহ কয়েক দিবস পূর্বে যখন যথ্য নামে বান, তাহা পূরা পানে উল্লসিত হইয়াছিল। এ সময়েও যদি সত্য হয় অত্যন্ত সুখের বিষয় সন্দেহ নাই, কিন্তু এ সংবাদ মিথ্যা। আশাদিগের বিলক্ষণ বোধ হইতেছে। বোধ করি রাজাও ইহা অলীক বলিয়া প্রতিপন্ন করিবেন।

বোম্বাই গেজেট সম্পাদক বলেন, দাক্ষিণাত্য কয়েকটি তুল্য আবাদ হইবে। উত্তরোত্তরীয় কৃষকেরা কাব্য করিবেন। কৃষিকর্মের উন্নতি বৃদ্ধি হইবে। ভাল কিন্তু ইউরোপীয়েরা কৃষি কাব্য করিবেন, এইটী শুনিতে শঙ্কা জন্মিতো।

কিছুদিন হইল এক জন ইউরোপীয় জিরা-নপুরে রেই-ওয়ে হইতে নামিবার সময়ে আপনার থলে ভুলিয়া যান। জনস্ব ভূত জন লোক তাহা লইয়া যায়। তাহার তদন্তান্ত ২৩০০ টাকার নোট চুরি করিয়া। খণ্ডিত ভগ-লির টেসন নষ্টরূপে দেয়। ইতি মধ্যে টেলি গ্রাফে সংবাদ আসাতে তাহার। বৃত্ত হইয়াছে।

মুর্শিদাবাদের নবাব গাফিল সাহেবের অর্থ-পাখিচকের জন্য ২০০০ টাকা প্রদান করিয়াছেন।

বোম্বাই বিশ্ববিদ্যালয়ের চারিজন ভাই, এ, উপাধি পাইয়াছেন। ইহারা সকলেই ব্রাহ্মণ। ১৮৫৯ খ্রিঃ অবদি ১০২ জন ব্রাহ্মণ প্রবেশিকা পরীক্ষা দিয়াছেন।

হুগলি নগরে 'লাজিও' গোষ্ঠীর প্রকোপ কমে নাই।

হারিংটন সাহেব কিয়দিনের জন্য গবর্নর জেনারেলের কোম্পানির মেম্বর হইয়াছেন।

এবার চীন দেশ হইতে ১০০ ব্রহ্মা ব্রহ্মা লিবরপুলে যথানী হইয়াছে।

সর উইলিয়াম ডেনিসন বিদ্যালয়িকা ও প্রবন্ধ রচনা আবশ্যকতা বিষয়ে দুই প্রস্তাব প্রেরিয়াছেন। এসে লেখা গবর্নরদিগের অবশ্য কর্তব্য কর্তব্য বটে।

লাড কানিং কয়েকটি দশন করিয়া গমন করিয়াছেন।

কারুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে পারসীক সেনারা করা ন নক একটি নগর অধিকার করিয়াছেন। ইহার নবাব উদাদিগের সহায়তা করিতেছেন।

বৃত্ত। করিতেছেন। ইনকম টাক কমাইবার চেষ্টা হইতেছে, এ সময়ে আবার পারস্যে যুদ্ধ উপস্থিত হইল।

লেন্ডনকে কর্ণেল ক্রস ভাবতবর্ষের গুলি মিসাইনপেকটর জেনারেল হইয়াছেন। ক্রস সা-হস লাড মলভিনের কুটিল।

নিম্ন লিখিত গবর্নমেন্ট নোট সকল তির্যক রাধা প্রদীপে প্রচলিত হইয়াছে।

কলিকাতা	২,৩০,০০০
বোম্বাই	১,১৫,০০০
বাক্সা	২২,০০০

মোট ৩,৬৭,০০০
শীঘ্র চারি কোটি হইবে। এই সকল নোটের প্রতিরূপ টাকা বহিরাহে।

উক্ত সম্পাদক বলেন আশাদিগের সমস্ত হইয়াছে। হোলা প্রতি টাকার ১১৩ ক রিয়া বিক্রয় হইয়াছে। এবং সমস্ত উক্ত সকল জন্মিয়াছে।

গেণ্ডুলমের দ্বারা পাখা টানিবার যে হ-তন আবিষ্কার হইয়াছে, উক্ত পশ্চিম-ভাগের গবর্নমেন্ট তদন্তসারে কার্য করিবার চেষ্টা করিতেছেন ইহার আবিষ্কার কারী গ্রাফ সাহেবের প্রতি আলাহাবাদে গবর্নর দ্বারা আদেশ হইয়াছে।

গবর্নর সাহেবের সম্পাদক বলেন কানীর মন্তব্যপ্রদান পক্ষ সিংহ মন্ত হইয়াছে।

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন, লক্ষ্মী নগর ইউরোপীয় সেনাদলের এক জন সৈনিক পুরুষ কোন সামান্য অপরাধে কারারুদ্ধ হও-রাজে তুলি করিয়া আত্মকর্তা করিয়াছে। সৈনিকপুরুষেরা হয় ত প্রকৃত অপরাধ করি-য়া যত হয়, নতুবা সামান্য অপরাধ করিয়া কঠিন দণ্ড পায়।

টাইমস্‌ আর ইণ্ডিয়া সম্পাদক বলেন বোম্বাইয়ের তেপুটি বাজিষ্ট্রেটেরা তিন প্রে-নীতে বিচরিত হইবেন। উদাদিগের ৫০০, ৪০০, ৩০০, করিয়া বেতন হইবে।

বাহোর ক্রমিকেনে লিখিত হইয়াছে এক ব্যক্তি এক জন ইউরোপীয়কে বধ করিয়াছে সন্দেহ করিয়া তত্তত কর্তৃপক্ষ বিলা বিচার

তাহাকে দশ বার বৎসর কারারুদ্ধ করিয়াছেন। পক্ষাবের বৃদ্ধি এই চিহ্ন। অথবা পক্ষাবে-রই বা কোন কি, আশাদিগের ঠিক জেনে তা-নকে তিন চারি বৎসর কারাতে থাকে।

ভগলীতে সঙ্গতি রূতি ও কামদেবের পূজা হইয়া গিয়াছে। ভগলীকে পাটা মন্দের আত্ম হইয়াছে। শুনা যাউতেছে একজন পেছারের উদ্ভাবনে এই বৃণিত পূজা হয়। এই সকল দশন করিয়া আশাদিগের এক এক বার উক্ত হয় যে গবর্নমেন্ট আইন করিয়া বন পুরুষ কুণ্ডিত উৎস। সকল উঠাইয়া দেন।

বোম্বাইয়ের ব্যবস্থাপক সভার প্রথম সে-নিয়ম সম্পন্ন হইয়াছে। ইহার পর জবিমানার বিল বিবেচনা করিতে হইবে, এই বেল। আশাদিগের ব্যবস্থাপকেরাও কিঞ্চিৎ বিব্রাণ করি-য়া দিচ্ছ হউন।

সিদ্ধাপতিয়ার রাজ্য এসময় ন্যায়গণ সে-বের মত হইয়াছে। সিন্ধ দান বিল যত তা-র বিশেষ উৎসাহ ছিল।

মত শুক্রবার নিম্ন লিখিত মূল্যে অতি-নেম বিক্রয় হইয়াছে।

	সিন্ধুক	ইকা
বেহারের	১০০০	১২০০,০০০
কানী	১০০০	১২০০,০০০

গত প্রতি সিন্ধুক ১০০ টাকার বিক্রয় হইয়াছে।

টুকীল সন ১২৬২ নাম তপিন কোর্ট হই-তে কাটরা দেওয়া হইয়াছে। লাড জালডা-স' সন ১২৬২ প্রতিবাদ করেন না কেন।

—২—

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভা।

১২ ই এপ্রিল শনিবার।

মৌলবী আবদুল লাতিক টিক। গাউর ভাড়া-দ্বির্ভ করিবার বিল অর্পণ করিয়া এক বক্তৃতা করিলেন।

মেটলাও সাহেব কে বলেন সপক্ষে কবি। কয়েকটি অর্থ সংশোধন করিলেন এবং ১০ জন ছিলেন পালক প্রকৃতির ভাড়া নির্ণয় কর-কর্তব্য কিন্তু গবর্নমেন্টের হস্তে তাড়া দিব কবি-বার ভাড়া না দিয়া ব্যবস্থাপক সভায় হস্ত এ-তার দেওয়া উচিত। এই বিল সিলেক্ট কমি-টিতে সমর্পিত হইল।

বাহুরমা প্রসাদ দ্বারা ১৮৫৯ অব্দে ১১ আ-ইন সংশোধন বিল অর্পণ করিলেন। এই বিল বিলম্বিত হইল।

স্বদেশীয় সাহেবের প্রস্তাবক্রমে বাঙ্গালীরা তাহা সকল অধো অধো পান। কবিবাব বিলের প্রকৃতি গঠিত হইল। কাউই সাহেব কয়েকটি সংশোধন করিলেন।

লসিটন সাহেব ১৮৪৯ অক্টোবর ১০ আইন সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ করিবার প্রস্তাব করিলেন। বাবু রমাপ্রসাদ ব'দ এই বিলের প্রতি আপত্তি করিয়া অধিবেশনটা পর্যন্ত তাহা স্থগিত করিবার অনুরোধ করিলেন। লসিটন সাহেব তাঁহার প্রস্তাব ১০ অক্টোবর, ১৮৪৯ সনক সত্তা এইমত হওয়াতে এই বিল প্রকৃতি হইল।

স্বদেশীয় সাহেব জমীদার ভাণ্ডার বিলে লসিটন কমিটির রিপোর্ট পাঠ করিবার প্রস্তাব করিলেন। ইহা অধিবেশনক বিতর্কিত পর্ব পর্যন্ত স্থগিত হইল।

ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভা।

১৬ ই এপ্রেল বুধবার।

ভারি টম সাহেবের প্রস্তাব ক্রমে ইন্ডিয়ান আইন সংশোধন বিষয়ক বিল বিধি বদ্ধ হইল।

লসিটন সাহেব ১৮ ৩৫ অক্টোবর ২ আইন পরিষদ বিষয়ক বিল প্রস্তাব দিলেই কমিটির রিপোর্ট প্রদান করিলেন। ভারি টম সাহেব নিম্ন লিখিত প্রস্তাবের বিপোর্ট প্রদান করিলেন।

স্বদেশীয় টাক ও পয়সা করিবার বিল। কোম্পানি আইন সংশোধন বিষয়ক বিল।

লসিটন সাহেব ১৮ ৩৯ অক্টোবর ১০ আইন (বাণী টাকার নালীসে আইন) সংশোধন বিষয়ক বিল অর্পণ করিয়া তাহা সিলেক্ট কমিটির হস্তে অর্পণ করিতে অনুরোধ করিলেন।

লসিটন সাহেব ১৮ ৬০ অক্টোবর ১০ আইন সংশোধন বিষয়ক বিল অর্পণ করিয়া তাহা সিলেক্ট কমিটির হস্তে প্রদান করিলেন। এই বিল অর্পণ করিবার সময়ে তিনি ১৮ ৬০ অক্টোবর অর্থ বা-য়ের হিসাব প্রদান করিলেন। আর দুইখণ্ড পর্যন্ত বক্তৃতা করিয়া রহিল।

কাউই ও কিটজ উইলিয়াম সাহেব রক্তাক্ত সাহেব ও ডেপুটি সেক্রেটারি করাতের সাহেবের আদেশ প্রকাশ করিয়া এইরূপ অতিপ্রায় প্রকাশ করিলেন পাঁচ বৎসর বাইতে ১। বাইতে এই স্থগিত কর উদ্বিগ্ন বাইবে।

লসিটন সাহেব ১৮ ৬০ অক্টোবর ৩২ আইন (ইন-কম টাক সংশোধন বিষয়ক বিল) অর্পণ করিয়া তাহা সিলেক্ট কমিটির হস্তে দিলেন।

ভারি টম সাহেব উত্তর পশ্চিমাকল ও বঙ্গ-

দেশের সবধের করের বিল সভায় অর্পণ করিলেন।

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন।

কালেক্টর সাহেবের নোটিশ

আদেশানুসারী নিয়োগ।

২৭ই মার্চ।

এক, বি. সিংহ সাহেব বরেন্দ্রনগরে প্রথম প্রেরিত মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন, কিন্তু যতদিন অন্য হুকুম না হয় পূর্ণিবার জন্মের প্রতিনিধি থাকিবেন।

এইচ এইচ. ডব্লিউ সাহেব মেদিনীপুর দ্বিতীয় প্রেরিত মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

আর, বি. ককবেল সাহেব একগে অম্বলি লইয়া অম্বলিয়ার আদেশ উনি ওকাল মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

এক এম. হেলিও সাহেব রাজশাহী আইন মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন। কিন্তু যতদিন অন্য হুকুম না হয় চন্দ্রাবদে মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর থাকিবেন।

এইচ. চ্যানকি সাহেব দ্বিতীয় প্রেরিত আইন মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

৪১ অক্টোবর।

জিহাউর ল. মাকিনর মৌলবি মেলাউয়ার আলি কোজদার আইনের ১৮৬১ সালের ৫ আইন ১২ ধারা অনুসারে এই প্রকল্পে প্রথম প্রেরিত অধীন মাজিষ্ট্রেটের কবতা পাঠিবেন।

৭ই অক্টোবর।

মানকুবেদ আবদুগণি রঘুনাথ পুত্রের হুকুমের মৌলবি করকত আলি কোজদার আইনের ১৮৬১ সালের ২৫ আইন ২ ধারা বতে এবং ১৮৬৪ সালের ১০ আইন ১ ধারা বতে এই প্রকল্পে দ্বিতীয় প্রেরিত অধীন মাজিষ্ট্রেটের কবতা পাঠিবেন।

মৌলবি আবদুদ মতিফ পবীকা সত্তার এক জন মতা হইবেন।

৮ই অক্টোবর।

সংখ্যক পঞ্জাব গদাডিক সৈন্য দলের অধ্যক্ষ কর্নেল এইচ. এক. ডেককোর্ড সি. বি. ১৮৬০ সালের ১১ আইন বতে ৬ আইন সংক্রান্ত নকশার বিচার জন্য অনিন্দা প্রদেশের কমিসনার হইবেন।

কিন্তু ও মারপের আজিসনাল জন্মের প্রতিনিধি ডব্লিউ এইচ. বরট্ট সাহেব এই সকল আদেশের আজিসনাল জন্ম হইবেন।

এক, এক. ডেককোর্ড সাহেব মারপে মাজিষ্ট্রেট ও

কালেক্টর প্রতিনিধি হইবেন।

এক. এম. আরমুৎ সাহেব জিগুরার আইন মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

সি. ডি. ফিল্ড সাহেব পূর্ণিয়ার আইন মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

৯ই অক্টোবর।

ডব্লিউ জি. ইয়ং সাহেব জিগুরার প্রথম প্রেরিত মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

১০ই অক্টোবর।

কাগেন, ডব্লিউ, টি কেশব বরেন্দ্রীয় গণিত পুলিশ সেনাদলের অধ্যক্ষ হইবেন।

লসিটন সাহেব সি. ডি. সেকান, বি. সি. বিলি একগে বিদ্যায় লসিটন আদেশ প্রথম গণিত পুলিশ সেনাদলের অধ্যক্ষ হইবেন।

সি. ডি. মুন্ডা সাহেব প্রতিনিধি দ্বিতীয় মাজিষ্ট্রেট হইবেন।

জি. গ. সিং সাহেব সীওতা পদবিনার সাক্ষর কমিসনার হইবেন।

১১ই অক্টোবর।

ওকাল প্রতিনিধি অতিরিক্ত জজ এক, এ. ডাব্লিউ. এলকিমুটো সাহেব কিছু দিনের জন্য উক্ত জেলার প্রতিনিধি সিবিএ ও সিনিয়র জজের কর্তব্য করিবেন।

প্রেরিত।

স্বদেশীয় সোমপ্রকাশসম্পাদকে।

কুমারখালির অসন্তব সাহ।

বধোচিত সম্মানপূর্বক নিবেদনসমতঃ।

উঃ কি পরিচাপ। গত কল্য কিংগের রজনী প্রত্যাহ হইয়াছিল, একে দ্বিপ্রহরের প্রচণ্ড বার্তাও ডাল, তাহাতে কটিকাস্থল বাবুর বিবদ বেগ, বোধ হইতে লাগিল বেন বজ্রবতী আলয়ের হস্তে পতিত হইয়া বাহ্যপ্রাণ শব্দধরের নার কপিত হইতেছে। তখন যাহার দিকে দৃষ্টি কেন করা যায়, দেখা যায় তাহারই চিত্র বিকৃত, কেহই স্মৃতিস্ত নহেন, বিশেষতঃ সেই সময় মৃত্যু মাজিষ্ট্রেট আচারের সময় উপস্থিত, তাহাও পাকার প্রকৃতঃ কাচাবে প্রকৃত হইতেছে, কেহ আহা করিয়াছে, কেহ আহাবে বসিয়াছে, এমন সময়ে এই কুমার খালির পশ্চিম দিকে অগ্নি লাগিয়া এক ঘণ্টার মধ্যে দক্ষিণ দিকের আর ৩, ৪ কোণ ব্যাপিয়া যত বনভী বাগী ও গোল বাগী ছিল, সবুজার দহ হইয়া গেল। তাহাও ভগ্নাবশিষ্ট প্রকৃত

[illegible]

১০ খ্রিঃ "কাল সাধারণে জন্ম" ১৮৮০ খ্রিঃ
বিদ্যাশিক্ষার সাধন সাধন বাক্যসমূহ উল্লেখ
দানার্থ এই বিদ্যালয়টি প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে
মৌজাদার মহোদয়ের ইচ্ছাতে কয়েকটি সন্তান
নবীবাঁক, শিকারত, গায়ে, নিখুঁত, ১৮৮০
খ্রিঃদেব অল্পবয়সে পবিত্রতমে একটি বিদ্যা
টীক আলফালাল মাদ্রাসা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এক্ষণে
যে যে দেশটিতেই যথাস্থানে এই বিদ্যালয়
সংস্থাপিত এককালীন দান করিয়াছেন অথবা
বাক্যসমূহ মাদ্রাসা করিয়াছেন ও এতদনন্ত
এসিদ্ধ প্রত্যক্ষবিশিষ্টেই মাদ্রাসা প্রতিষ্ঠাপনা
পন ১৮৮০ সনুদার পুস্তকের এক এক পত্র
বালক নগকে প্রতিবেদনসহ পাঠি তা সক প্রদান
করিতেছেন ও যে সময়, পত্রিকা এই বিদ্যালয়
যেব উন্নতত বন্যাদারিক ও মানসিক পাই
মাত্র করিয়াছেন আশা: সর্বদা: কখনো তাহা
পেন সকলের নিকট প্রচারিত। শ্রীধার কর্ণাট
এবং বিনীতভাবে প্রার্থনা এই যে তাঁহা যাব-
কীবন যেন ফরাসিভাষার দ্বারা বালকনগকে
বিশ্বস্ততা হন

সহশ্রিত! গত ২২ এ, টেজ রুহ্মলডিবৎ
চন্দন নগদহ উৎরাগী ও বঙ্গ বিদ্যালয়ের দ্বিতীয়
বার্ষিক পুরস্কার বিবরণকারী সূচীকরণে সম্পদ
হইয়াছে। এই কার্যোপলক্ষে যেদেশ ৫ বিদ্যে-
পত্র কতক স্থান বিদ্যাভূমিতে ভূতলাকেন সমা-
পন্ন হয়। কার্যবাহ্যে সভাপতি শ্রীযুক্ত বেবর ও
শ্রীমান সাহেব উৎরাগী কল্যাণবিদ্যা শিক্ষার
ক্ষেত্রে সঙ্গীত শিকার যোগ্যসাধকতা
স্বয়ংকরিত। কবিতা সভায় সকলেই
কবিতা কলাসভায় ভাঙ্কন সাংস্কিন সাহেব
কবিতা পোষকতা করিলেন। অনন্তর আবর্তন
জন দেখে ভূত লোক যোগ্যসাহেব সহিত বি-
দ্যালয় টিগিত সাহেবের ও উৎরাগী সাহেবের উ-
পায় নির্ভরের সাংসাক্ত বিষয়ক বক্তৃতা করিলে
সভা ভঙ্গ হইল।

সম্পাদক মহাশয় ! আমরা অতিশয় দুঃখিত
হইয়া থাকিল করিতেছি যে, অন্তত আদালতের
সম্মুখে আসিলেই উকিল বাহু কান্টাটাক লাস গ্রা-
নীরোগে আক্রান্ত হইয়া গত এই এপ্রিল মাস-
ব্যাপ অর্থোপদেশের পূর্বে পরলোক গমন করি-
তাহেন। ইনি রাজলক্ষী, ইংরাজী ও পারসী এই

নবীনস্ব মিবেনন ।
 মহাশয় ! আমি কতকগুলি অগুরুষ্ট হান অ-
 মণ করিয়া আভিনয় পীড়িত হইরাছি অতরাং
 অধিক চুবদেগে বাইতে পারিতেছি ন । অতএব

[illegible]

অননি এতদেব সোমপ্রকাশ তঁহার মনের উপর
পড়িয়া বিলম্ব করি কবিতা এবং দারোগা-
কে জ্ঞাপন না করিয়া কতকগুলি পালীগালি দিয়া
বিহার করিল। হ সোমপ্রকাশ অননি এতদেব খানার
আগিয়া উপস্থিত হইয়া তিপুটিমাজিষ্টেট, মা-
জিষ্টেট ও পুলিশ সুপারিন্টেন্ডেন্টের স্থান এক
এক খানি রিপোর্ট করিলেন। সম্রাতি কালনার
তেপুটিবাহু আসিয়া অনেক লোককে বন্দী করি-
য়া লইয়া গিয়াছেন একবেলি হস্ত হস্তা যার না।
অতীত এরূপ অশান্তি স্থান অনেক আছে।

এই ক্ষেত্রে সর্ব খানিতে চারিটি বিবরণ লিখিত
হিল। তাহার একটি বিবরণ তখন ব্যক্তিগত অনুসন্ধান
মিকাবাদে বিপুল খাজান প্রদান করা গেল
না। সম্পাদক।

মামিয়ার জীবিত সোমপ্রকাশ সম্পাদকের।

বাঙ্গালা দেশের দক্ষিণ পশ্চিম বিভাগের
বিদ্যালয় সমূহের ইন্সপেক্টর জীবিত হেনরি
উত্তো সাহেব মহোদয় অত্র নগরে শুভাগমন
করিয়া প্রায় সপ্তাহ অবস্থান করিয়া গিয়া
ছেন। ইংরাজী বাঙ্গালা উভয় বিদ্যালয়ের
ছাত্রগণের পরীক্ষা গ্রহণ করিয়া তিনি পরি-
ভোষ প্রাপ্ত হইয়াছেন। সংবাদ পত্রের কেবল
আমরা তাহার শুভাগমন পাঠ করিয়াছিলাম
কখন মননগোচর করি। মননেজিয়েব চরি-
ত্বার্থতা লাভ করি নাই, এবার তাহা সম্পূর্ণ
হইয়াছে। তিনি ২৮এ এক সন্ধ্যায় বামিনী
৮মটিকার মহল গবর্ণমেণ্ট ইংরাজী বিদ্যালয়
হুই এক সন্ধ্যায় ব্যাপার প্রদর্শন করিয়া গিয়া
ছেন, তাহা আমরা কখন কি বিস্মিত হইতে
পারিব। এই বামিনীতে তিনি অত্রতা আসিয়া
সন্ধ্যায় ব্যক্তির সমক্ষে অদর্শপদ হইয়া
কতকগুলি মুক্তি প্রদর্শন করিয়া সকলকে মো-
হিত করিয়া গিয়াছেন। বিদ্যালয়স্থ ছাত্রগণও
অন্যতঃ হিতেন না। সাহেব মহোদয় প্রত্যেক
প্রকার যেরূপে বাধ্য করিয়াছিলেন, তদনুসারে
তাহা প্রায় ক্রমেই প্রতিগোচর হয় নাই
কিন্তু শনিবার ইংরাজী বিদ্যালয়ের উচ্চতম
ছাত্রী প্রাচীর চাত্র এবং নগরস্থ বিদ্যালয়রাগি
মহাশয়দিগকে আশ্বাস দিয়া পড়িয়া ও গ্রহ
নকত্র গণের গতি, চলাচল ইত্যাদি ও জে.
বার ওয়া প্রভৃতি কথাসমূহ প্রদর্শন করিয়া

চিত্তিত মুক্তি প্রদর্শন পূর্বক বিস্তারিত রূপে
তাহার কারণ ব্যাখ্যা করিয়াছেন। তিনি অ-
ভিন্নর পরিভ্রম খীল ও অধিকৃত চিত্ত, স-
ক্ষেপতঃ ইনিস্পেক্টর। গণের বে বে শুণ
থাকা ইতিত তাহা এতদেব উত্তোতে বিদ্যা-
মান আছে।

গতকাল্য রবিবার নববর্ষাগমন উপলক্ষে
অত্রতা প্রাঙ্গণ সম্মার পর সমাজ হুই এক
চিত্ত হইয়া নিয়মিত রূপে পর একের উপা-
সনা করেন। উপাসনা শেষ হইলে উপাচার্য
জীবিত ভোলানাথ চক্রবর্তী মহাশয় একটি
বক্তৃতা পাঠ করিলেন। বক্তৃতাটি অতিশু-
বল ও প্রোতগুণের অবলম্বন করি হইয়াছিল।
চক্রবর্তী মহাশয় আমাদের সর্বতোভাবে ধন্য
বাদ জানেন। তিনি ইংরাজী বিদ্যালয়ের প্র-
ধান পণ্ডিতের সঙ্গে যতদূর আশিষিত হই
রাছেন, ততদূর তিনি এই সত্যকে উপলব্ধি
পদ অতিক্রমিত রূপে গ্রহণ করিয়াছেন। সত্য
তাহার উচ্চা নিকট রূপে পাঠ্য গদ্য
আছে। তাঁহার বক্তৃতা শেষ হইলে পরবর্তীতে
ইংরাজী বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্ষক জীবিত
বাবু রাজনারায়ণ বসু মহোদয় সমাগত জন-
গণ নবকে সন্তোষান্বিত হইয়া একটি বক্তৃতা
করিলেন। রাজনারায়ণ বাবু মহাশয় এতদেব
কিলে, এখানকার বাবুতীর মাঝে অনেককালে
অকৃত্রিম কৃত্রিম চারের আশিষিত হইয়া
পাকে। কলকাতা তাহার বক্তৃতা ও চৌর্য অতি
অশান্তি হইয়া মোদীপুরে তাহার অতি
বিক্রম সত্যতার সত্যের চৌর্য। সত্যের কা-
ল্য সমাধা হইলে যুবক একদল সন্তোষপ্র-
দেব বামিনীতে একত্রিত হইয়া ভোজন সমাপন
করিয়া ছাত্রিকের অর্থ গৃহে গমন করিলেন।
এই সমস্ত লক্ষণ দেখিয়া আশাশ্রমের মনে
চেনে। ইন্দ্রজিত উত্ততির আশা সম্ভাবিত
হইতে পারে।

জীবিত সোমপ্রকাশ সম্পাদকের।

মহাশয়। আমরা জানিতাম কলিকাতা
গবর্ণমেণ্টের পোশাকের বস্ত্রাদি ইত্যাদি
বিদেশী তাকার বিদেশী সেক্টর দ্বারা

পারিবে না। কিন্তু সম্রাতি সোমপ্রকাশের
কারীর কথানি পত্র, তৎপরে তৎপরে
আম এককাল ৭৩ দেখিয়া আমার সে
দুর হইয়াছে। শুভবাৎ কাদির ডেপুটী
কিঞ্চিৎ শুণাচৌকীন নাকরিয়া কান্ত চৌকি
পরিলামন। ম ৭৭৭ তৎপরে চৌকির
কীর্জন কবিতা গোল অকলতা প্রযুক্ত
লক্ষিত হন, সেই রূপ ইহার বক্তৃতা
কীর্জন করা বাউব না কেন তথাপি
কেউ লক্ষিত হইতে হয়। 'আহা' ইনি
সম্রাটকে তেমনি দ্বায় পলায়ন, তেমনি
চৌকির তেমনি অপকপাত। যদি
সত্য গুণের পুরস্কার প্রদান করেন তাক
লে ইনি যে কীর্জাগণ্য তাহাও আর
নাই। ইহার কাচ'দিব কাচ। অদীনস
দিগেব জাতি ব্যবহার ও সম্রাটের
লিখিতে গেলে অতিশয় বিস্তারিত
কালকালি নাকর আম আসিয়া, যে
বিহার লিখিত কবিতা, লিখিত
হার বিসময় লিখিত।

মহাশয়। এই প্রাঙ্গণের কতকগুলি
প্রকার সত্য অত্রতা দ্বারা
বাক্য হয়। মহাশয় ডেপুটী
লিখিত দ্বিতে আশা
বিবাদী প্রত্যেকটি মহাশয়
সাক্ষ্য হওয়ারই ডেপুটী
হইয়া উঠিল পরদিন
লেখ্য। নিতান্ত বিমোহিত
পকেই জয় হইল। বাহার
স্বটে না, তাহার বক্তৃতা
গায়। তাহার। যেমন
ডেপুটী বাবুর আরেকটি
লিখিয়া কান্তহইতে
গের মোক্তারো নাহেববে
পারি মহাশয় তাহা
পক্ষক বিচার লিখিত
আর লিখিতে

এই প্রাঙ্গণের কতকগুলি
সোমপ্রকাশের দক্ষিণ
মোমবাঁধ আর

সোমপ্রকাশ

“প্রবর্তিতঃ প্রকৃতিহিতার পার্থিবঃ সরস্বতী জীবিতমহতী ন চীষতাঃ”

২৩/৩/৩৮
সংখ্যা ১১

সন ১২৬৯। ১৬ বৈশাখ। ইং ১৮৬২/২৮ এপ্রেল

মাসিক মূল্য ১ টাকা
মাসিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন

সোমপ্রকাশ প্রাক্ষণিকের প্রতি।

চৈত্র মাস ত্রীতী তথ্যেতে অনেকের
এদিক সোমপ্রকাশের মূল্যবান অসীম হই-
য়াছে, অতএব তাঁহাদিগকে বিনয় পূর্বক
জানান হইতেছে, তাঁহারা অন্তর্গত পূর্বক
নরা করিয়া আগামি বর্ষের অগ্রিম মূল্য প্রে-
ম করুন।

বিজ্ঞাপন।

সোমপ্রকাশের স্থান পরিবর্তন।

সোমপ্রকাশ বহু এতদিন যে স্থানে ছিল,
বৈশাখ মাসের ১লা অবধি তাহা পরিভ্রমণ
করা হইয়াছে। অতঃপর আনাদিগকে প-
ত্রাদি লিখিতে হইলে আপাততঃ কলিকাতা
সংস্কৃত বস্ত্র লিখিতে হইবে। পরে আমরা
এই নিবন্ধন করিয়া লিখিব।

বিজ্ঞাপন।

সকল সাধারণকে জ্ঞাত করা হইতেছে
যে আমরা নগরে অর্থাৎ কলকাতায় এক জন
নকল নবিল ১০ টাকা মাসিক বেতনে দরকার
হইয়াছে যে কেহ উহার নিমিত্ত উবেদার হই-
বেক সেহ আপন প্রতিষ্ঠা পত্র ও নকল
নমুনা সমলিত দরখাস্ত আমাকে পাঠাইবে,
উহা হুটে যেমত হুকুম কর পক্ষা জ্ঞাত করা
হইবেক।

বাংলাদেশী } চারজন একত্রিত হই-
১৪/৩/৩৮ } লিখিত হইয়াছে ১৩/৩/৩৮

বিজ্ঞাপন।

ক্রীষক উৎসাহক বিদ্যাভাগর ও ক্রীষক
সেবকনাথ ঠাকুরের প্রতিষ্ঠিত দ্বিতীয়বার
প্রবর্ত করা হইয়াছে। ইহার প্রত্যেক খণ্ডের
মূল্য এক টাকা। সংস্কৃত বস্ত্র ও মিসনরীর
নীচে ৮ নং হুটে তথ্য করিলে পাইবেন।

এম, সি, খোস কোম্পানি।

সোমপ্রকাশ।

১০ ই বৈশাখ।

পত্র প্রেরকের প্রতি।

মাগুরার পত্র অতি অসময়ের মত লি-
খিত হইয়াছে এই হেতু উপেক্ষিত হইল।
কালীর পত্র প্রেরক হুরসিদ্ধাবাদের শিক্ষা
সংক্রান্ত ভেদটি ইনস্পেকটরের অসদত
নিষ্পন্ন করিয়াছেন বলিয়া তাঁহার পত্র আ-
দৃত ও প্রকটিত হইল না।

লার্ড এলগিন ও লার্ড
হোলডার্স সভা।

কেহ বলেন লার্ড এলগিন নৌয়ার
ও একত্রে; কেহ বলেন, তিনি অভিনয়
খুঁজ, ডেলহোসির বলের ন্যায় তাঁহার
বিলম্বন চতুরতা আইসে; কেহ কেহ
অনুমান করেন, তিনি স্বজাতিপক্ষপাতী।
কিন্তু তাঁহার পূর্ব পূর্ব কার্য তাঁহার চরিত্র
একপ পরিচয় দেয় না। বাক্য ও
কার্য দ্বারা লোকের স্বভাব ও চরিত্রের
পরিচয় হইয়া থাকে। তিনি দুই দিক সর্ব
দ্বন্দ্ব কমতা প্রাপ্ত হইয়া চীনদেশের যুদ্ধে
গমন করেন, দুই বারই তিনি স্বজাতির
গৌরব রক্ষা করিয়া সন্ধি করিয়া আই

সেন। তিনি যদি লার্ড ডেলহোসির
সের লোক হইতেন, আমরা এত দিন
চীনদেশকে স্বাধীন দেখিতে পাইতাম না।
তিনি যে স্বজাতির প্রতি পক্ষপাত কোষে
অন্ধ মহেন, লার্ড হোলডার্স সভার প্রবর্ত
অভিনয়ন পত্রের প্রত্যক্ষ দানই তাহা
কহিয়া দিতেছে। তিনি প্রত্যক্ষ দান
কালে এই কথা বলেন।

“আমি তিন্ন তিন্ন জাতি পূর্ণদেবে
বহিতি করিতেছি, আপনারা মনে করি,
তেহেন, ভারতবর্ষে যে নানা জাতি আ-
ছেন আমি তাঁহাদিগের পরস্পরের মতাব
সম্বার করিয়া দিতে সমর্থ হইব; কিন্তু
এ স্থলে আমার বক্তব্য এই, গবর্ণমেন্ট
এ বিষয়ে অসম্মত করিতে পারেন। গবর্ণ
মেন্টের কর্তব্য কর্ম এই যে মধ্যস্থত
কার্য করিয়া জাতি, বর্ণ ও ধর্ম ভেদ না
করিয়া ইংলণ্ডেশ্বরীর সমুদায় জাতির প্রজা
র মূল্যরূপে সুখ-সুখির চেষ্টা করেন; এবং
যে স্থলে পরস্পরের স্বত্ব ও অধিকার ল
ইয়া বিবাদ হয়, বিনা পক্ষপাতে তাহার মী
মাংসা করেন। অপর, ইংরাজেরা এদেশে
যে সভ্যতা প্রবর্তিত করিতেছেন, তাহা
এতদেশীয়েরা মঙ্গলের বিষয় জ্ঞান কবি
বেন কি না, ইংরাজেরা এদেশীয় জীব্যাদির
উৎপাদন বিষয়ে যে চেষ্টা করিতেছেন,
তাহা এ দেশের লোকেরা উপকারেব হেতু
বলিয়া বিবেচনা করিবেন কি না এবং
এদেশীয়দিগের ধর্ম অব্যাহত থাকিবে কি
না, এই বিষয় শুনি তাবতবর্ষ হইতে

দুইগের কার্যের উপর প্রবন্ধরূপে নির্ভর করিতেছে।

লর্ড কার্নও চলিয়া গেলেন, লর্ড এলগিন তৎপদে প্রতিষ্ঠিত হইলেন। গবর্নর পরিবর্তন সহকারে পূর্ব গবর্নরের অবলম্বিত রাজনীতিও পরিবর্তিত হইল, অনেকে এইরূপ আশঙ্কা করিয়াছিলেন, কিন্তু লর্ড এলগিনের উপরি লিখিত বাক্য দ্বারা সে আশঙ্কা এক প্রকার দূরীভূত হইতেছে, কার্যে যে ইহার বাস্তবতা ঘটিবে একপও বোধ হইতেছে না। দ্বিতীয় ইউক, ঐরুক্তি কারিগরকে এ অধিকারকালটাও কিঞ্চিৎ অসুখে ক্ষেপণ করিতে হইবে অসুখের কারণ এই, কার্যকালে জাতি ও বর্ণভেদ থাকিবে না, একথা শুনিলেই তাহাদিগের চিত্ত বিবস হয়। অথবা কেবল এই অধিকার বলিয়া কেন, ব্রিটিশ গবর্নমেন্ট সত্যতঃ যে উচ্চতর সোপানে অধিকৃত হইয়াছেন, তাহা হইতে যদি উঠি না হন, ঐরুক্তিকারীরা জাতি ও বর্ণভেদ ঘটিত পক্ষপাত বার্তা বড় শুনিতে পাইবেন না।

বিজ্ঞান শিক্ষার উৎসাহ দ্বিগুনিত
সত্যের আশংকতা।

এই ভারতবর্ষে যৎকালে হিন্দুদিগের রাজত্ব ছিল, তৎকালে দর্শন বিজ্ঞানাদি বাস্তবিক বিষয়েরই অনুশীলন চলিয়াছিল। কি চিকিৎসা শাস্ত্র, কি গণিত শাস্ত্র, কি জ্যোতিষ, কি ভূগোল সকল শাস্ত্রেরই অনুশীলন-সম্বন্ধ আমাদিগের ঐতিহ্যে পরিচীত হইয়া থাকে, বহু বিষয়ের আবিষ্কৃত হইয়াছিল। ভাষ্যবাচ্য পৃথিবীর গঠন, জীবজন্তুর নিরূপণ করেন এবং গ্রহনক্ষত্রাদি দর্শন করিবার নিমিত্ত দূরবীক্ষণ যন্ত্রেরও সৃষ্টি করিয়াছিলেন। একপও অনেক বিষয় আছে যে ইউরোপীয়েরা সেই সেই বিষয় ভারতবর্ষ হইতে গ্রহণ করিয়া আবিষ্কৃত না হইতে হইতে হইয়াছেন। কিন্তু

ভারতবর্ষের পরাধীনতা প্রভৃতি কয়েকটা দোষ নিবন্ধন সকল বিষয় সম্পূর্ণতা ও উচ্চতর পরমা সীমা প্রাপ্ত হয় নাই। দ্বিতীয় ইউক, আমাদিগের ক্ষোভের বিষয় এই, আমাদিগের পূর্ব পুরুষেরা যে সকল বিজ্ঞানের আবিষ্কৃত্য ও উদ্ভাবন করিয়া গিয়াছেন, আমাদিগের দ্বারা তাহার ঐরুক্তি না হইয়া ক্রমশঃ তাহার বিলোপ হইতেছে। অধিকতর ক্ষোভের বিষয় এই, ইউরোপীয়েরা যে আবিষ্কৃত্য করিয়াছেন ও করিতেছেন, তাহারাও আমরা সেই মূল্য তা গুরুণ করিতে পারিলাম না।

এ স্থলে আমাদিগকে জিজ্ঞাসা করিতে পারেন, আমাদিগের দর্শন বিজ্ঞানাদি সংক্রান্ত ঐরুক্তি লাতের কি কোন উপায় নাই উত্তর—উপায় আছে। দুই শতাব্দী পূর্বে ইংলণ্ডে বিজ্ঞান শাস্ত্রের সমধিক ঐরুক্তি ছিল না। দ্বিতীয় চার্লসের সময়ে রয়াল সোসাইটি সভা সংস্থাপিত হয়, তদবধি বিজ্ঞান শাস্ত্র বিদ্যাব্যবেগে ঐরুক্তি লাভ করিতেছে। রয়াল সোসাইটির যত্নে অশ্রুতপূর্ব ও অদৃষ্টচর দেশ সকল আবিষ্কৃত হইয়াছে; অজুতপূর্ব বস্তু সকলের আবিষ্কৃত্য ও সৃষ্টি হইয়াছে; এবং অসাধারণ গুণ সম্পন্ন ব্যক্তিরাজি নিজ নিজ বুদ্ধি ও বিদ্যাবলে স্বদেশের সম্রাট উন্নতি সাধন করিয়াছেন। ডাক্তর লর্ড নার, ক্যাপ্টেন কেটর, সর জোসেফ ব্যাঙ্কস, সব জন ক্রান্তলিন প্রভৃতির নিকটে ভূগোল ও বিজ্ঞান কি পর্যন্ত না গণপ্রস্তুত আছেন। আমরা স্পষ্টাক্ষরে নির্দেশ করিতে পারি যদি রয়াল সোসাইটির সৃষ্টি না হইত, তাহা হইলে কি পৃথিবী উল্লিখিত পণ্ডিতগণকে প্রসব করিয়া কৃতার্থ হইতেন। ভারতবর্ষের পূর্বকল সম্ভানগণ দর্শন বিজ্ঞানাদি বিষয়ে যে ব্যুৎপত্তি লাভ করিয়াছিলেন, উচ্চতর রাজগণের উৎসাহ দান কি তাহার কারণ নহে, রয়াল সোসাইটির নাই। ভারতবর্ষে এ একটি সভা করিবার

কাল উপস্থিত হয় নাই? কি সেনা দল, কি বেলগের কি চিকিৎসা ডিপার্টমেন্ট অনুসন্ধান করিলে সর্বত্রই উপযুক্ত লোক মিলিতে পারে। তাহাদিগকে যদি যথোচিত উৎসাহ দেওয়া হয়, এদেশে বিজ্ঞানের ঐরুক্তি হইবে সন্দেহ নাই। রসায়ন বিদ্যা, পদার্থ বিদ্যা, ভূতত্ত্ব বিদ্যা অনুশীলনের স্থান ভারতবর্ষ অপেক্ষা উচ্চতর দৃষ্ট হয় না। হিমালয়, হিমাগিরি প্রভৃতি পর্বতে যে কত অজুত পদার্থ আছে তাহার নির্ণয় নাই। আমাদিগের দেশের লোকেরা যদি উৎসাহ পান, এই সকল স্থানে কায়মনো ব্যাক্যে আবিষ্কৃত্য কার্যে ব্যাপৃত হইবেন সন্দেহ নাই। দিল্লীর রামজী রঘুনাথ কাল কুলসের যে মূর্ত্তন প্রণালী বাহিব করিয়াছেন, ডিমরগান প্রভৃতি পণ্ডিতেরা তাহার ভূরি প্রশংসা করিয়াছেন।

আমরা গবর্নমেন্টকে এই সকল কালে অনুরোধ করিতেছি ইংলণ্ডের রয়াল সোসাইটির ন্যায় এখানে একটি সভা সংস্থাপন করুন। সভা আপাততঃ চিত্রশিল্প, জ্যোতিষ, ভারতবর্ষের সভ্যত্বের আধিবেশন দিবে। পদার্থ বিদ্যালয়ের বাটী প্রস্তুত হইলে তথায় থাকিবেন। এতৎ সংক্রান্ত মূলধন বরিয়া তাহা হইতে যদি উৎসাহ দান করা হয়, আমরা শীঘ্র বিজ্ঞানের সবিশেষ ঐরুক্তি দর্শন করিব সন্দেহ নাই।

১৮৬৩ আকের দিব্যবিজ্ঞান
প্রবেশিকা পরীক্ষার
বাক্য। পুস্তক।

একের রাজত্ব গিয়া অপরের রাজত্ব হইলে কিয়ৎকাল আর সনুদায় বিষয়েই বিশৃঙ্খলা ঘটে। একপ হইবার বিশিষ্ট কারণ আছে। যিনি যত দিনে লক্ষ্যপ্রতিষ্ঠ হইয়া রাজ্যের অবস্থা বাহুল্যরূপে অবগত হন, তিনি চলিয়া যান, আর রাজ্যের অবস্থানান্তরিত থাকি, আগমন করেন। আমাদিগের বাহুল্য তাহা বিষয়ে এই ঘটনা ঘটিয়াছে। বহু কালের লক্ষ্যপ্রতিষ্ঠ

ত তাহা বিলুপ্ত আর হইয়াছে, বাঙ্গলা তাহা জন্মঃ তাহার অধিকার হরণ করি তেছে । এবিধ সময়ে বিশৃঙ্খলঃ ঘটী অস ভাবিত নহে । এখন যে ব্যক্তি বা মনে ক রিতেছেন, তাহাই বাঙ্গলাতে লিখিতে হেন । এক্ষণে বাঙ্গলার লেখক অবস্থা, সং ক্ত জ্ঞান ব্যক্তিরেবে এ তাবধ গ্রন্থ প্রণয়ন দূরে থাকুক, ইহাতে সম্যকরূপে বুঝ পক্তি লাভেরও সম্ভাবনা নাই । কিন্তু বিস্ত রের বিবরণ এই, যাহারা কখন সংকত পদ্য করে নাই তাহাদিগকে বাঙ্গলা তা বদ্য গ্রন্থ রচনা করিতে অন্তর দেখিতে পাওয়া যায় । না আছে তাহাদিগের রচ না লালিতা, না আছে তাহা তাহাদিগের বশে, না আছে তাব বিস্তৃতি, তাবশ ব্য ক্তির প্রসঙ্গকর্তৃব্যবশোক্ত বাঙ্গলা বিড় ঙ্গনা সম্ভব নাই ।

এই প্রণয়ন বিষয়ে যেকোন যথেষ্টাচা রিত্য দৃষ্ট হইতেছে, উৎসাহ দাতারাও তে মনি উৎসাহ দান বিষয়ে যথেষ্টাচারিত্য প্রকাশ করিতেছেন । অনেক বাঙ্গলার বসন্ত নহেন । তাহার সময়ে সময়ে অ যোগ্য পাত্রের উৎসাহ বর্জন করিয়া থাকেন, কিন্তু যোগ্য পাত্রের তাহাদিগের অনাদরভূত হইয়া ততোৎসাহ হইতে ছেন । অযোগ্যের উৎসাহ ও যোগ্যের অনুৎসাহ উভয়ই অনিষ্টের হেতু । অন্দের কথা ত অনেক দূরে আছে; রাজপুরুষে রাও উল্লিখিত ব্যবহারে পৰ্যাপ্ত নহেন । তাহার বাঙ্গলা ভাষা অনতিক্রমঃ সুতরাং তাহাদিগের তাদৃশ ঘটনা বিশ্বমানই নহে । উল্লিখিত যথেষ্টাচারী গ্রন্থপ্রণয়নকারিদি গের চম্পু বৃত্তি নিবারণ করিতে পারেন এক্ষণে শুধু দেবজ ব্যক্তিও বিরল । ১৭৬ অন্দের বিশ্ববিদ্যালয় প্রবেশিকা পরীক্ষার বাঙ্গলাপুস্তকই অন্য আমাদিগের এই প্রস্তাবের অবতারণা করিয়াছে । আমরা এই প্রস্তাবের দুটি স্থান উদ্ধৃত করিয়া দি লাম; পাঠকগণ দেখুন কেমন সুন্দর

এই স্থানি মনোমীত করা হইয়াছে ।
আমোদ প্রমোদ বাহোজন এষ্ট গার ।
অতাবেতে অবশ্য উত্তর নাট তঃ ॥
বাহারা নাহিঃ খারে সত্যতার যার ।
পিতাপুত্র দুইজনে সমান গোয়ার ॥
কাহারে বন্ধুতা বলে কাহারে প্রণয় ।
কঠিন ধর্ম লোকে অবগত নহ ।
সত্য মোক বারা তারা কোমল প্রণতি ।
আত্মিক বারা তাহাদের অন্য রীতি ॥
অন্তর্বাঃ হয় বনি আপনার দেশ ।
তবু কবকের ভাগ অংশ বিশেষ ॥
তোপঝিলানের বাহা মনে বড় নাই ।
তালতেই হুই বালা করে বলে পাউ
ইঞ্জিরজানিত কথ কত নাহি জানে ।
কহানে রা পার কিছু স্থিতি তাহেইনে ॥

ধরাতে তুরঙ্গ এবং পারস্য দেশীয় প্র খান লোকেরা সর্ব আতির অপেক্ষা সপুত্র নলিরা বিখ্যাত, তদেহ এই যে উদ্দেশীয় উক্ত পদমীত জনগণ জিজ্ঞাসা এবং সর্কেনীরা দেশজাত প্রসিদ্ধ সুপীযসীদিগকে অর্থ দ্বারা ক্রয় করিয়া বিবাহ করে, কিন্তু যদ্যপি ইউ- রোপ খণ্ডের প্রখ্যাতনামে ঐ জনগণের বা- দীনতা কথ্য থাকিত, তথা উক্ত দেশীয় প্র খান বংশীয়েরা যেকোন অপমান বলিয়া বি- খ্যাত, সেইরূপ বলুমান ও গুহিমান রূপে অগ্রগণ্য হইত নন্দেই নাই । অতএব এতলে ইহাও বিজ্ঞাপ্য, যে বাঙ্গলা দেশে সুপ্রীণালি- নী কামিনীমাত্র পবিত্র করিলেই যে কোন ব্যক্তির স্তম্ভান লাভ হইবেক এত প্রত্যাশা করা উচিত নহে । এতদেশীয় স্ত্রীলোকদিগের কারাবরণে বিমোচন না হইলে এবং তাহার সীতা, সাবিত্রী, কান্তিনী এবং রোগলী প্রক- ির নাম সমাদৃত ও সুশিখিত না হইলে তাহাদিগের গর্ভে সন্তানসম্পন্ন বলয়ন সম্ভা- নগণের আশির্ভাব কথো অসম্ভব ।

এই কারেরা কথা লিখিতে জানেন না, কেবল এই মাত্র অপকার নয়, বুল না কাণ্ড ক্রম জন্মিয়াছে । স্ত্রীলোক সুশি ক্ষিত না হইলে যদি সাহসবান সম্ভান না জন্মিত, তাহা হইলে প্রাচীন কালের স্মার্তা মণ্ডরের রমণীগণ বীরপ্রসূ হইতেন না । অপর কবকেরা কি ইঞ্জিরজানিত

সুখ ভোগ করে না ? এখানে ইঞ্জিরজানিত সুখ শব্দের অর্থ কি ? কলকঃ শিক্কা সং ক্রান্ত কাষের অধ্যাকেরা এই প্রতিজ্ঞা ক- রিয়াছেন, গবর্ণমেন্টের ব্যয় করাইবেন; কিন্তু অজার কিছু হইতে দিবেন না । এ ছের কিরই কেবল তাঁহাদিগের এই রীতি লক্ষিত হয় না; স্থানে স্থানে শিক- কের ও অধ্যাকের বিবরণেও এই রীতি স্প দৃষ্ট হইয়া থাকে ।

প্রাপ্ত ।

সুতম কাব্য ।

পারস্য দেশীয় মহাকাবি হাকের বতদিন জীবিত ছিলেন, ততদিন রাজা, আধীর, মন্ত্রী সেনাপতি প্রভৃতি সকলেই তাহার লেখনীকে অতিশয় ভয় করিতেন । এই সময়ে সিন্ধকের নি ষ্টে বর্তি কোন স্থানে করেকজন যুদ্ধক বনিক খেজুর খাইয়া তাহার আঁচী এক জন উষ্ট্র চা লকের গায়ে নিক্ষেপ করাত্তে সে বলিল ' তোমরা আমাকে অপমান করিলে, অত- এব আমি আঁচী বাইরাট তোমাদিগের নামে কবিতা লিখি । ' সহিব হইয়া কাব্য লিখিতে সাহস । শূকরের হস্তি রূপ ধারণ করিবার ইচ্ছা ! অনপ বৃষ্টতার কাব্য সম্ভব নাই । বাহী হইক, সে ব্যক্তি অপমানিত হইয়া হাকের হইতে চাহিয়াছিল, তদ্বিকিত তাহার সেই বাক্য ঘো- যের না হইয়া গুণেরই হইয়াছে, কিন্তু হরকা- নী মন্তব্যঃ কি দুঃখে অমল বিলাস লিখিয়া তারতভ্রম হইতে চাহিয়াছেন । উষ্ট্র চালকের ম্যায় তাঁহাকে কোন অপমান সধ্য করিতে হয় নাই । তবে কি তিনি নিজে কোন বিদ্যার স্মরণ হইবার আশয়ে একাধ্য করিয়াছেন । তিনি যে জীবিকার জন্য এক্ষণ কাব্যে প্রস্তু হইয়াছেন, একথা বলা বাইতে পারে না, লে- খনীকে উপজীব্য করিয়া চলেন এক্ষণ লোক তারতবর্ধে বিরল । বিশেষতঃ আজিও কাম- দগের সমাজের তাদৃশ অবস্থা হয় নাই । আমরা এই ক্ষুদ্র অধ্যয় পুস্তক খান মুদ্রিত করিবার কারণ বুঝিতে পারিতেছি না । যাহা উক্ত, এবিধ অধ্যয় পুস্তক প্রচার যথ হয়, ইহা নিত্য প্রার্থনীয় হইয়াছে ।

বাক সত্যানন্দ নির্দোষ ১৭৭৬ খ্রঃ

“কুলল নিশ্চিত আশি, গন্ধিত বন্ধন পানি
কুল, নাহি হয় ইন্দীবরে ॥
নাশা চিনি তিল কুল, হুএ জিনি কর্ণ মুল,
রুক্মাখার বিধ ওষ্ঠাধর ।

নাথের বিজয়রূপে রাজার নন্দন
 ১১৭ ৩৫৭ সুখিখ্যাত নৌতিজ সুজন ॥
 নৌতিজ সুখিখ্যাত নৌতিজ সুজন ॥
 নন্দন ৩৫৭ সুখিখ্যাত নৌতিজ সুজন ॥
 সুখিখ্যাত নৌতিজ সুজন ॥
 ১১৭ ৩৫৭ সুখিখ্যাত নৌতিজ সুজন ॥
 ১১৭ ৩৫৭ সুখিখ্যাত নৌতিজ সুজন ॥

বোম্বাই গবর্ণমেন্ট এই নগর হইতে কল্যাণ
শস্য ডাকের উদ্ধার, দিবার বিজ্ঞাপন করি-
য়াছেন। বোম্বাইয়ের ডাক কমিউজার ডাক

মকমলাট্টে মধ্যাহ্নকালেনে মিরেটে ভর-
নক অরহইভেতে। দুর্ভিক্ষের পর অবধি ধর
সীরা ও বাউয়ের মননশেষ প্রাকৃতিক হইয়াছে।
মহান বার কলিকো ও গবর্নমেণ্ট ইংলণ্ডের

নাম তারতনবে কিছুমিহিপাল নিয়ম প্রচলিত
করিবেন না।

দ্বিতীয়েজেট সম্পাদক বলেন আলাহা-
বাদে কয়েক জন কুচলী লোক চতুর্দিকে অগ্নি
চুহেছে। সঙ্গতি একজন সৈনিক এক ব্যক্ত-
কে লিবিরে অগ্নি দিতে দেখে, কিন্তু তাকে
মৃত্যু করিতে পারে নাই। আলাহাবাদের
সমাপ্তি আজ। দ্বিতীয়জন এতদেবীরেরা
রাষ্ট্রযোগে আলো লইয়া লিবিরের ভিতরে
গিয়েছেন।

এবংসর উত্তরপশ্চিমাংশে প্রচুর শুল্ক
নাম লইয়াছে। কানী ও লিওনি জমার
এক কতিপয় অংশ টাকা আদায় হইয়াছে।

খানেমিকার উত্তর বিভাগের সেনারা
ক্রমে জয়ী হইতেছে। সেরফিম ও নাসবিল
এক নগরই গবর্নমেন্টের করতল হইয়াছে।
সমামের সংবাদ লাভ। তুরিস্তি বিদেশ
প্রত্যক্ষণ করিয়াছেন। ইং যেখানে কামত
মামন সভাবনা সেইখানেই ইংলিস্তান ও
তাহার অধুচরগণের কাণ্ড।

কাকা প্রকাশ সম্পাদক তত্ত্বা কামেরের
জন্য এক জন ৩৮০ টি, ২২২০ টি লিগুস্তিক প্রবাস
গাড়ী কামত করেন। তত্ত্বা লিবিলা সঙ্কলন
৩ দিনের চিকিৎসা করিবেন লিবিয়া প্রতি
নাম। আত চাঁদা পাইয়া থাকেন, কিন্তু
তাহা ৬০০০ কোন ফ্রান্সকে উপকার নাই।
চাকরি করিয়া গেলে উপরি লাভ চাতি
না। এ ১০ টাকাই উক্ত লিবিলা সঙ্কলনের উ-
প লাভ।

এক সম্পাদক তত্ত্বা মাজিষ্ট্রেটের কাম
এক সঙ্কলিত এক দ্রব্য প্রদর্শন করিয়াছেন।
এক আইনের উল্লেখ করাতে গারের বলিগেন
এক আইন পো। লোনা ৩৮০ ৮০০ ৮০০ ৮০০
এক লোনা ৩৮০ ৮০০ ৮০০ ৮০০

উক্ত দ্রব্যে ইহেন বাগান বিস্তারিত
সমাপ্তি প্রদর্শিত। অনেক লোক তথায়
চলিত ছিলেন। এজিগোডাম অমের-
গোদাম নহে। ইহাতে প্রাকৃতিক জীবন
সম্পন্ন আছে। এক সৈন্য চাকরগণেরা
প্রাপ্তি করিয়াছিল তাহোমসজী না
এ ৩০ ৩০ ৩০ ৩০ ৩০ ৩০ ৩০ ৩০
ত্যাগ করিয়াছে, ২০ ২০ ২০ ২০ ২০ ২০ ২০ ২০

ত্যাগ সভাবনা আছে। এ আবেগ পরিভ্রাণ
কর ই উ চত।

উত্তর পশ্চিমাংশে একটি নীলকর সো-
লানি হইয়াছেন। যেলাও সাহেব প্রকৃতি
কয়েকজন দেবদেবীর নীলকর ও চা কর ইহার
উদ্যোগী। মশ লক টাকা ইহারিগের মূল্য।
কোম্পানি বহুর খাটাইরা নীলবপন করিবেন।
তাহারা স্থল বিশেষে রাষ্ট্র প্রথা অবলম্বন
করিবেন। নীলকরেরা কি কুরিয়াছেন বস-
মেসে আর নীল বপন করিবার চেষ্টা নিকল।

বোম্বাই স্টাডে লিবিউ গড়ে প্রকাশিত
হইয়াছে মজারাজ গিফিয়া বোম্বাই মশন কবি-
বার ইচ্ছা পরিভ্রাণ করিয়াছেন।

লক্ষ্যনগরীর নবাব চক্রাধর্মোলা (আ-
লিনকিয়ার জাত) কয়েকখানি গড়ে কাঠের
হোমের জাল স্বাক্ষর করিয়া এই কথা লিখিয়া
ছিলেন যে বিজ্ঞোকেব সময়ে নবাব গবর্নমেন্টের
সহায়তা করিয়াছিলেন। আত এই পুরস্কার বস-
প সাহাকে চক্রি করিয়া দেওয়া হইবে। নবাব
বের ৫০, টাকা করিয়া হইয়াছে।
আলের এই দণ্ড কোন্ আইন অঙ্গসারে হই-
ল।

এ ডকাল ডিপার্টমেন্টের ইনস্পেক্টর জে-
নরল ডকাল জমাদাউন গারের নিজ পর পলি-
ত্যাগ কয়েক আততাবীর গবর্নমেন্ট প্রকাশ
কপে গেতেই তাহার প্রকাশ করিয়া তাহা-
কে অন্যত্র প্রকাশ ও তাহার পদত্যাগের
জনা দুঃখ প্রকাশ করিয়াছেন। উক্ত ডকাল
৬২ বৎসর এখানে প্রবর্তিত করেন। কবি
গের যুদ্ধ তিনি অপমানার পার্থক্যতার
সবিশেষ পরিচয় প্রদান করেন। কবে প্রকাশ
লোক সকল অবসৃত হইতেছেন, নতুন ভারত
বন্দে সঙ্কলিত হইতেছে।

আমরা শ্রমীরা আশ্চর্যিত হইলাম হুগলি
একটি শাখা তারতনবায় সভা হইয়াছে।
তত্ত্বা অনেক সভাপতি লোক তাহার সভ্য হই-
লেন। কিন্তু কামেরের বিষয় এই তাহার সভ্য
বিদ্যের সংখ্যা অপেক্ষাকৃত অল্প। থাকিতে
কৃতবিদ্যের সংখ্যা অধিক হইল, সভা কেন
বিধয়ে বিশেষরূপে চর্চা রাখেন। চাকর
লোকগণের কবে উৎসাহ হইবে।

ইন্দ্রিয় বিলুপ্ত হইতে বর্তমানের পুতি

গের কর্মচারির নিয়ম লিখিত হিসাব প্রকাশ
করিয়াছেন:-

কর্মচারি	প্রত্যেকের বেতন।
১ ইনস্পেক্টর জেনরল	২৫০০। ৩০
৪ সহকারী	১২০০
৪ সহকারী ইনস্পেক্টর	১০০০
৮ প্রথম জেনির জেলা সুপারিন্টেন্ডেন্ট	৭০০
৮ দ্বিতীয় জেনির	৬০০
৮ তৃতীয় জেনির	৫০০
২০ প্রথম জেনির সহকারী	৪০০
৩০ দ্বিতীয় জেনির	৩০০
৪০ তৃতীয় জেনির	২০০
১০০ প্রথম জেনির ইনস্পেক্টর	১৫০
২০০ দ্বিতীয় জেনির	১০০
২৪০ তৃতীয় জেনির	৭০
২৪ সহকারী ইনস্পেক্টর	২৫
২৪০ দ্বিতীয় জেনির	২০
২৪০ তৃতীয় জেনির	১৫
২৪০ তৃতীয় জেনির প্রথম জেনির	১৪
২৪০ দ্বিতীয় জেনির	১২
৩৮০ তৃতীয় জেনির	১০
৮০০ প্রথম জেনির কনস্টেবল	৮
৮৮০ দ্বিতীয় জেনির	৭
৮৮০ তৃতীয় জেনির	৬

সর্বশেষ ইহার জন্য ৫০ লক্ষ টাকা ব্যয়
হইবে। রামপুর বোয়ালিয়া, ককবগর, কটক,
পুরী, রাণীগঞ্জ, ঢাকা, করিমপুর ও মধনপুরে
হুতন পুলিশের এক এক প্রখান থানা হইবে।

অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট লিগকে যে প্রাণ-
লীতে কার্য করিতে হইবে, তাহা স্থির করিয়া
লিবিয়া নিমিত্ত কয়েকটি নিয়ম প্রকাশ করা হই-
য়াছে। নিয়মগুলি স্থানান্তরে প্রকটিত হইল।
আমরা তাবিয়াহিলার অবৈতনিক মাজি-
ষ্ট্রেটেরা লাইসেন্স চাকর করব হইলেন।

আমরা একপে পাই পয়সা সত্তর আনা
বিলম্ব হইতেছে। বিট পয়সা সাড়ে ষোল
আনা।

অমেরদ্যাব নবাবের স্ত্রী আনিসকি কী
বিবাহে ৩০ দিন পূর্বে সমাপ্তিতে চলিতা
বাহিরে ৫০০০ পাঠিতেন না। গবর্নমেন্ট
সম্পত্তি তাঁকে সম্পূর্ণ স্বাধীনতা প্রদান
করিয়াছেন।

মত দিন

যে উপায়ে উত্তম

যোগান হয় উল্লম্ব এক কমিউন নিবেদিত হইয়াছেন। জাহাঙ্গীর বিনের এই প্রধান সে নাপতি এত দিনেরপর কবিরি এটের জোর দিগের প্রতি চাটফেপ করিয়াছেন। কিন্তু আ কিসেরে। বিবেচন সত্তব না হইলে কমিউন কিছুই করিতে পারিবেন না। পবনিক ওয়াং-কের রাকস দিগের কি কিছুই হইবে না।

এখান সেনাপাত জাহা কবিয়াছেন যে স্থান এলাউট হইবে সেখান হইতে সৈন্য দিগকে অস্ত্র দানে তাঁবুর তিত্তর রাখিতে হইবে। সেখানেও এলাউট গমন করিলে জাহাঙ্গীরের প্রত্যেক বান্দুর বিপরীত দিকে ঘাইতে হইবে। এলাউটের নিয়মণ হইলে বাঁধে বি শেষ ১০০ পারিষ্কৃত না কবিলে খেনাঙ্গিকে প্রত্যেক ওয়াং জাহাঙ্গীর হইবে না। সর দি পদোক্ত আকিসমিগকে এবিষয়ে সন্দেহে গো. হইতে বসিয়াছেন। প্রজার এলাউটার সৈন্যের উপায় করিতে হইবে সে কথাটি নই।

আমরা শুনিলাম শিকসংক্রান্ত জাহাঙ্গীরে ভূতপূর্ব অধ্যক্ষ ইয়াং সাহেব বজলেশীষ সে প্রোটরি হইবেন। হেলিতে সাভোবের প্রিয় পাঠেবা কমেই দেখানিতেছেন।

নাংহার জনিকেল সম্প্রদায় উক্ত মণ্ডল পুরাতন মকল বংশীয়দিগের অন্তিমিকা, দট. এলাউট অমুৎসব রাখিতে অমুৎসব করিয়া ছেন। জাহাঙ্গীর জাহাঙ্গীরের এক মকটাকা ব্যস ১০ কবিলে যমুনা জমিদার এলাউট কোণায় বাট-জাহাঙ্গীরের দিউরোজ জাহাঙ্গীর সেনাগ-এর শিবিরস্থাপন করিতে বলিয়াছেন। জাহাঙ্গীরেরা রোম মনবীর অষ্টালিনা তর কবিয়াছিল বলিয়া চিরকাল মিশরীয় হইয়াছে। এবতবধি হইয়াছে কি সে তর উক্ত করেন।

সম্রাতি যেখন মোসাইটিতে মালমার্জি সাহেব বাঙ্গীয় বস্ত্রের বিবয়ে এক উত্তম প্রস্তাব পাঠি দিয়াছেন। তাকর উক্তরাজা জেননা-রায়ণ সিংহের বস্ত্র জাহাঙ্গীরের এই কথা বলেন এই মতের এলাউটের ও ইউরোগীর অনেক ব্যক্তি উপদেশ দান দ্বারা পরস্পরের মোহন্যবর্জন করিতেছেন। উক্তরাজার স-জব হইবেন। মালিঙ্গা জাহাঙ্গীরের আদে জাহাঙ্গীর এলাউটার অমূলক বলিয়া প্রতীয়মান হইতে-বে।

টে। অম্য জাহাঙ্গীরের একজন সখপ্রধান ক-লীম ও জাহাঙ্গীরের ব্যবস্থাপক সখপ্রধান মজা-রাজা জেননারায়ণ সিংহ উপস্থিত হইয়াছেন। তিনি এক প্রাচীন মহাসম্রাট বংশের প্রতিনিধি, যে বংশ এলাউটের ইতিহাসের মধ্যে প্রধান স্থান অধিকার করিয়াছেন। যে মত মানবজাতির বসতি ১০ কোটি মনুষ্যের কল বাবস্থা প্রস্তুত করিয়াছেন, সেই মতায় এক জন এলাউটের আদীর প্রবেশ করাতে প্রকাশ পাইতেছে গভর্ণমেণ্টে এক নীতি অব লখন করিয়া উক্তরাজার পদস্পর্শ দৈব শক্তি করিয়া মতায় করিয়া দিবার মতায় করি যাইছেন। সকলের বুকে এ কথা শুনিতে পা ওয়া যায় না।

করাটিকে বিনিময় সবেই এলিয়া যুক্ত হন, উক্তকে আদ্যাপিও বৃত্ত কর। জাহাঙ্গীরের মনবর্মেণ্টে তাকাকে কালপুল পা-ঠাইতে আদ্য কবিয়াছেন। এ কবিয়া অতি রক্তাণ্য বলিতে হইবে নানা মতের এত নি কোঁথ নছেন যে পারস্য দেশে পাইতে করাটি হইয়া বহার যাইবেন।

দিনের এক জন পত্র প্রেরক প্রস্তাব করিয়াছেন নাগাঙ্গিরকে আক্রমণ না করিয়া তাহাঙ্গিরের তাহাঙ্গিরের প্রবোদ বাণিজ্য করিতে উৎসাহ দেওয়া কর্তব্য। জাহাঙ্গীরের বেচা বরলিগেব সুবিধা হয় না।

কোও অব টিকিরা সম্প্রদায় সখ প্রেসি ডেশির মায় জাহাঙ্গীরে বিদ্যা। রাময়ে ৫০ লক্ষ টাকা নিবারণ অমুৎসব করিয়াছেন। ১০ টাকা দেওয়া হইতে জাহাঙ্গীর জাহাঙ্গীরের মত প্রকৃণ্ড এবং আয় এলাউট কেনল মত বিদ্যালয়ে ব্যয় করিতে হইবে। সে বলে গোল ব্যক্তি ৫০০০ টাকার অধিক দান করিবেন সে স্থলে গভর্ণ মেণ্টের সেই পবিন ১০ টাকা দেওয়া কর্তব্য। সম্প্রদায় নীল, মালিক প্রকৃণ্ডিকে এ বিবয়ে দান করিতে বলিয়াছেন। তবে বাগানে নাচে কোঁটাকা ব্যয় করিবে।

লকৌনগরে একটি বিদ্যালয় ও মুক্তকা-লয় স্থাপিত হইয়াছে। বাহু গিরিশঙ্কর মোহ টেকার উদ্যোগী। জাহাঙ্গীরের বিদ্যা ও রাজ্য সংক্রান্ত জাহাঙ্গীর বাঙ্গালী দিগের দ্বারা হই-বে।

সম্রাটর হিন্দুস্থানী সম্প্রদায় লিখিয়াছেন লকৌনগরে একটি লীবাঙ্গীর লোক আদ্যিরা-ছে। সে সাহেব পাঁচহাত লম্বা, বস্ত্রের বেষ্ট প্রায় পাঁচহাত, হস্ত পদাদি সেই পরিমাণে। কিন্তু সে অতিশয় দুর্বলতাইরে এক গরুর গাড়িতে লইয়া ঘাইতে হয়। সে প্রত্যাহ প্রায় ১০০ টাকার দান পাইতেছে।

রংপুর দিক প্রকাশ হইতে উদ্ধৃত।

দিন দিন বড় লোকের বিদ্যা বুদ্ধি সভ্যতা বৃদ্ধি পাইতেছে, ছল এতরোণা অবকনাও তত বাড়িতেছে, বিশেষ বঙ্গ দেশেই তাহাব প্রচুর্য অধিক দেখা যাইতেছে, জাহাঙ্গীর হুগি অপেক্ষা জাহাঙ্গীরের। সে অংশে আরো পটু, গড় ৩ বর্ষের মধ্যে কলিকাতার দিকটী বাসি অনেক ভলিন মনা দান। যদি মহোদয় দ্বারা মনোদার কল হই বা জাহাঙ্গীর পথে পদার্পণ করার ওক্তর রাজ মতে দণ্ডিত হইয়াছেন, তাহাঙ্গীর মধ্যে বাহু শিব-কৃষ্ণ বন্দোপাধ্যায় বাহু কলিঙ্গ প্রদায় পণ্ডিত প্রকৃতি ২। ৩ জন ভক্তি প্রধান লোক কারাবন্দী প্রদেশেই পক্ষ পাইলেন, অপার কয়েক জন এখনও বড় ভোগ করিতেছেন, উক্তরাজা দি-বাসি জীবন্ত বাহু করকৃষ্ণ বন্দোপাধ্যায় শিব-কৃষ্ণ বন্দোপাধ্যায়ের দীপান্তর হইল। মদ্যে ২৫ পরগনার এচও সেনস জজ মেং জাহাঙ্গীর না-কেবের চকে পড়িয়া কারাবদ্ধ হইলেন পরিবর্তে তাগো তাগো পুণ্যবলে ৩। ৪ বাস হাজতে থাকিয়া আপীল আদালতের হুগে বুদ্ধি পান পাইলেন সে গজ হুগে না হইতেই পুনরায় দ্বিতীয় এক মোকদ্দমার লিঙ্গ হইয়া জাহাঙ্গীরের পরিপা-ক জাহাঙ্গীরে।

আমরা লংবাস দাতার পত্র প্রদানে গত সংখ্য ক পক্ষে জাহাঙ্গীর বিবরণ চুখক বিবরণ মাত্র প্রকা-শ কবিয়াছি, এক্ষণে কোও অব ইতিম, পত্র পাঠি আক্ষেপ পূর্বক প্রকাশ করিতেছি, রাহু জাহাঙ্গীর উপযুক্ত কৃত্য জীবন্ত পীতাব বহু দ্বারা এক পাট। এলাউট করিয়াছিলেন, বিচারে জাহাঙ্গীর কলিঙ্গ প্রকাশ হইয়া মদ্য নিয়ন্ত্রণ জাহাঙ্গীরের বিচারে ৫ বর্ষের জন্য কারাবদ্ধ হইয়া ছেন, খাটনির বিনিময়ে মদ্য মদ্য বৃত্তা বও দিতে হইবেক। জাহাঙ্গীরে, কলিঙ্গ প্রকাশিবার জাহাঙ্গীর মদ্য জাহাঙ্গীর প্রকাশ গভর্ণমেণ্টে আবেদন করিবেন, এং কোঁজেল নিউমর্ক সাহেব বহু প্রকৃষ্ণ লইয়া, প্রবণে

দ্বিগকে এক মহাপুত্রের পরাক্রান্ত করিয়াছে। উক্তর
জলের বিস্তার লোক হত হইয়াছে। সেনাপতি
মাকিলন কেরারকাকস কোর্ট হাউসে প্রধান
শিবির স্থাপিত করিয়াছেন। পটমাক নদী তীরস্থ
পথ পরিষ্কৃত হইয়াছে।

ইটালিয়ান সূতন বস্ত্র সজ্জার বেস্তপে রাজ
কার্য্য করিবেন, সেই অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়া-
ছেনঃ— রোম নগর রাজধানী ও বিনস
নাধীন হইবে। দাঁকন ইটালিয়ান সেনারা। বাক্য
কীর সেনাসমূহ হইবে কথ্য হইতেছে।
রোম নগরস্থিত কবানী হুত পোপের সহিত
শাপনে সাক্ষাৎ করিয়া কটায় পারিস যাত্রা
করিয়াছেন।

আনিসাব বস্ত্রবেগের অনেক পল্লভ্যার ক-
রিয়াছেন। জাতি সাধারণ মনোর অভিিনিধি
পদে কবিবার জন্য বিশেষ চেষ্টা করা
হইতেছে।

কদানী মহাসভায় যে সমস্ত এগিনিধি বি-
বদীয় বাণিজ্য ব্যবহার উপরে অধিক ত্রুক্ষ ল
ইয়া অন্তর্গত বনিকদিগের সুবিধা করিতে
চাহিয়াছিলেন, তাহার। বলিয়াছেন ইংলণ্ডের
সহিত সম্পর্কিত বাণিজ্য বিষয়ে যে লাভ হই-
য়াছে তাহাতে জাতিকে কতিপয় হইতে
হইবে।

হাউস অব কমন্স এই বলিয়া ডক্টিমিওর্ক
করিয়া গিয়াছে যে উপনিবেশান্তিতে যে সমস্ত
দুগ্ধ প্রকৃত প্রস্তুত করা যায় গবর্ণমেন্টকে তদর্প
করা যায় করিতে হয়।

পেপ পুনর্জীবন আশ্রিত পীড়িত হইয়া-
ছেন

লবার্ডির লোকের। পদম সমাধির গারিগ-
লাভকে প্রত্যাশন করিয়াছেন।

ইটালিয়ান সর্ক হানেই কাডীর রাইকল সকা
সংস্থাপিত হইতেছে।

একটি জনপ্রতি গারিবল্ডির বাটেলির
সহিত সজ্জা হইয়াছে।

বাহিরে দেখিতে আসিলে বিজ্ঞান শক্তি হ-
ইয়াছে বটে কিন্তু বাস্তবিক হয় নাই।

কেনিংস্টনের কামডেন হাউস সামক দাতি
পুষ্টি গিয়াছে। ইতিহাস রচয়িত্ত্ব কারখানাও
নষ্ট হইয়াছে।

কডকগুলি প্রধান ব্যক্তি ইংলণ্ড হইতে ইউ-
নাইটেড টেটস পর্যন্ত টেলিগ্রাফ করিবার উ-
দ্দেশ্যে লার্ডপার্স উদ্দেশ্য সহিত সাক্ষাৎ করিয়া-
ছেন।

পেজেন্ট প্রকাশিত হইয়াছে ভারতবর্ষ

সেন। মজোর অনেক আকিলর উক্ত পদে অধি-
কৃত হইয়াছেন।

নিরুসাবলী।

বিজ্ঞাপন

১৬ই এপ্রেল।

অবেতনিক মাজিষ্ট্রেটদিগকে যে যে নিয়মে
কার্য্য করিতে হইবে, তাহা সাধারণের গোচ-
রাধ প্রকাশিত হইল।

১ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা নিজ নিজ
কর্তব্য কর্মের তার গ্রহণ কবিবার পূর্বে জেলার
মাজিষ্ট্রেটের সম্মুখে নিম্ন লিখিত শপথ করি-
বেনঃ—

“আমি, অমৃত, অমৃত জেলার অবৈতনিক
মাজিষ্ট্রেট পদে অভিষিক্ত হইয়া শপথ করি-
তেছি, যে আমি এই জেলার মাজিষ্ট্রেটের
এলাকার মধ্যে শান্তি বক্ষার্থ যথাসাধ্য মাজি-
ষ্ট্রেটের সহায়তা করিব; আমি অপকপাতিতা
ও ত্রুততা সহকারে নিজ কর্তব্য কর্ম সম্পাদন
করিব, আমার কর্তব্য কর্ম সম্পাদনের সময়ে
গবর্ণমেন্টের আজ্ঞা প্রতিরোধে সাক্ষ্য সহজে
অথবা পরোক্ষে টাক, অথবা পুরস্কারাদি গ্রহণ
করিব না, এবং আমি প্রচলিত আইনের অঙ্গ
লাগী হইয়া যেমন জাম ও বিবেচনা; তদনুসারে
কার্য্য করিব।”

২য়। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা যে কমতা
পাইবেন, তদনুসারে বিচার করিবেন। সময়ে
সময়ে তাহারদিগকে কমতা হেত্তরা হইবে। তা-
হার। পুলিশের উপরে কোন কমতা প্রকাশ ক-
রিতে পারিবেন না। কিন্তু কোন ব্যক্তিকে বন্দী
করিবার জন্য পুলিশের উপর পরমান দিতে
পারিবেন।

৩য়। যদি বিচারের সময়ে অবৈতনিক মা-
জিষ্ট্রেট কোন পুলিশ কর্মচারি কার্যের দোষ
সন্দেহ করেন, তাহা হইলে তিনি তদ্বিষয় মিক-
টর্ডি পুলিশের প্রধান কর্মচারির গোচর করি-
বেন।

৪র্থ। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটরা নিজ নিজ
জেলার পুলিশ কর্মচারি কি অন্য ব্যক্তির বি-
জ্ঞাপন ও আশ্রয় দিতে যোকনাদি গ্রহণ করিতে
পারেন। মাজিষ্ট্রেট ইচ্ছা করিলে অবৈতনিক
মাজিষ্ট্রেটের নিকটে যে যে কোজদারি যোক-
নাদি অঙ্গসজ্জা, অথবা বিচার ও বিলম্বিত
তার দিতে পারিবেন। তাহার। সেলিয়ানে ও
অসিমকোর্টে সমর্পণ করিবার যোকনাদি ও এ-
খম বিচার কবিতে পারিবেন। কিন্তু এরূপ হলে

দেখিতে হইবে অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের। গব-
র্ণমেন্টের নিকটে উক্ত কমতা প্রাপ্ত হইয়াছেন
কি না।

৫ম। জেলার মাজিষ্ট্রেটের। কনিমসরের
অঙ্গসজ্জা অঙ্গসজ্জা কোন অবৈতনিক মাজি-
ষ্ট্রেটের এলাকার সীমা বহু পরিমাণ দিতে পারি-
বেন; অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট তাহার ব্যক্তিরে
কমতা প্রকাশ করিতে পারিবেন না।

৬ষ্ঠ। যদি কোন অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট
কোন যোকনাদি বিচারের সময়ে দেখে যে
সাক্ষ্য সহজে অথবা পরস্পর সহজে তাহাতে
তাচার মনের আর্থ আছে, তাহা হইলে তি-
নি তৎক্ষণাৎ ঐ যোকনাদি মাজিষ্ট্রেটের নিকটে
প্রেরণ করিবেন।

৭ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের কোজদারি
আইনের ২২ ধারানুসারে দ্বিতীয় অথবা প্রথম
প্রেরিত সহকারি মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাইতে
পারিবেন; এবং তদনুসারে কোজদারি বিচার
পাত হইয়া যোকনাদি বিলম্বিত করিবেন।

৮ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের। প্রধানতম
কর্মচারিকে কোন পরামি প্রদিতে চাহিলে
তাহা মাজিষ্ট্রেটের দ্বারা প্রেরণ করিবেন।

৯ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের। এই বিষয়ে
বিশেষরূপে দৃষ্টি রাখিবেন যে অর্থি প্রত্যর্থি
দিগকে রক্ষা বিলম্ব করিয়া কষ্ট পাইতে না হয়।

১০ম। প্রধানতম কর্মচারির আশ্রয় অঙ্গ-
সজ্জা অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটদিগকে পুস্তকালয়ে
নিম্ন লিখিত হিসাবগুলি রাখিতে হইবে; মা-
জিষ্ট্রেটের। যে সে সময়ে যেইগুলি যেন সম্পূর্ণ
দেখিতে পারেনঃ—

জেলার দোষের	হিসাব।
অন্য অন্য লানান্য দোষের	৫।
জরিমানার	৫।
আপেক্ষকের	৫।
প্রত্যেক জন ও ধরনের	৫।
সেলিয়ানে সমর্পণ করিবার	৫।
অর্থি প্রত্যর্থি দিগের আত্যাহিক	
মাজিষ্ট্রেটের	৫
সমনের	৫
প্রেরণার পরমানার	৫
সহকারির সকলের	৫

১১ম। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের। ঐ সকল
বিষয়ের ক্রম মাজিষ্ট্রেটের নিকটে হইতে পাই
বেন।

১২ম। যেখানে সর্ক সাধারণ অবাধে বাই-
তে পারেন। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেটের। এরূপ
হলে বিচার কবিবেন।

১৩৭। অষ্টৈভনিক মাজিষ্ট্রেটেরা ব্যবহারের জন্য মাজিষ্ট্রেটের নিকট হইতে একই টি নো হর পাইবেন ।

১৩৮। যে সকল মাজিষ্ট্রেট যথা নিয়মে প্রত্যাহ নোকদমা করিলেন তাহার আদালত বেতন ও কাগজ কলসের দায় পাইবেন ।

১৩৯। জেলার মধ্যস্থিত কোন অষ্টৈভনিক মাজিষ্ট্রেট যখন কোন ব্যক্তিকে কারারুদ্ধ করি যেন অথবা জেদিলেন, কিম্বা জুজিবেকোট সন্-পর্ণ করিলেন, তখন পরমানা ও তৎ সংক্রান্ত অন্য অন্য কাগজের সহিত অবিলম্বে তাহা নিকটবর্তি পুলিশকর্তার নিকট সমর্পণ করি যেন ।

১৪০। জনিবারা প্রকৃতিতে যে সকল টাকা লম্বাইবে অষ্টৈভনিক মাজিষ্ট্রেটেরা প্রতিমাসে যে মহালার এবং মাজিষ্ট্রেট প্রদর্শিত নির-মাজিষ্ট্রেটের টাকা এক হিসাব মাজিষ্ট্রেট অথ-বা তৎ স্থানের কোন কর্মচারির নিকটে প্রেরণ করিলেন ।

১৪১। কোন জাবদান, বা জমীনের জ-না প্রকৃতির টাকা কিবাইতে হইলে তাহা মাজি-ষ্ট্রেটের আদালত হইতে হইবে । অষ্টৈভনিক মাজিষ্ট্রেটেরা কাহাকে কোন টাকা দিতে পারি-বেন না ।

১৪২। অষ্টৈভনিক মাজিষ্ট্রেটেরা প্রতি মাসে কত নোকদমা করিলেন তাহার এক হি-সাব পরমানের ১লা দিবসে পুলিশের দ্বারা মাজিষ্ট্রেটের নিকট প্রেরণ করিবেন ।

১৪৩। মাসিক ও তৈমসানিক হিসাব পর মানের ৩ দিনের মধ্যেই প্রেরণ করিতে হই-বে । বাৎসরিক হিসাব আত্মসারি মানের ১০ই রের মধ্যে পাঠাইতে হইবে ।

প্রেরিত ।

সাম্যবর জিহুত সোমপ্রকাশ সম্পা

দক মহালার ।

সম্পাদক মহালার গত ১০ই জ্যৈষ্ঠ নির ইঞ্জিমান বিকারমার ও ১লা সেপ্তেম্বর সন্-মাহ প্রত্যাহরে দুই হইল যে জগন্নিব সব মা-নির্নী টি সাহসন বারু জোধপদ হইল । চুহুডা জিহুতসনগিরি অধ্যক্ষ গণের নামে জিলাহ মা-জিষ্ট্রেট সাহেবের নিকট মিথ্যা একটি অভি-প্রার্থে করিয়া জন সমাজে বিলক্ষণ উল্লেখনীয় হইয়াছেন । কিন্তু কি চমৎকার, আমি এবং আ-কার-না-বা-বি দোষাকর কর করিয়া ও অপব্যক্ত

যে কারারুদ্ধ হইয়াই, বা আমার নাম সংব-পরে একাল হইয়াই ইত্যাকারণ আমার জে-লা গাউ শীকার করিতে হইলেন । যৌব জীবন অথবা মোহের জন্য অকৃত্যাপ করিলেই তাহার প্রাপ্তি হইল, একদা শীর দোষাবলি পশ্চাৎ লিখিতেছি, এবং আপনাদের নিকট আমার এই নিবেদন যে যাহাতে আমার অচিরে ক্ষমতি করে একরূপ কোন উপদেশ প্রদান করিয়া দাখি-ত করিবেন ?

প্রথমতঃ আমার জন্মস্থান ও বাসস্থান এবং বংশের পরিচয় দিতেছি । আমার জন্মস্থান ও বাসস্থান মহা নগর কলিকাতা, জাতিতে কৃষ্ণ, তৃত্বো অতি নীচ কিন্তু জাতীয় ব্যবসায় দুই পু-ত্রবাবু রহিত হইয়াছে, পিতা ও পিতৃব্য মহা-লার বা সামান্য ব্যবসায় দ্বারা জীবন যাত্রা কাপন করিয়াছিলেন, আমি যৌথযোগে কিছু কিছু চাকরি বা বিদ্যা শিক্ষা করিয়া অবাধ্যতা জন্য উত্তর পশ্চিম প্রদেশে গমন করিয়াছিলাম খোঁটা দিগেব সহ-বাসে থাকিলাম, খোঁটা অত্যন্ত প্রাপ্ত হইয়া খোঁটা-দিগেব নামে তৎকালীন ইংল্যান্ড ও বোম্বায়া করিতে উৎসুক হইয়াছিলাম এক্ষণে স্বদেশে প্রত্যাবর্তন করিয়া এগুলি জিলাহ অধীনে কোন স্থানে অবস্থিত করিতেছি, কিন্তু খোঁটা অত্যন্ত প্রাপ্ত করিতে পারি নাই, জাতীয় সমুদ্র এই যে উড়ে ও ভুলে যান বেহা-বা অত্যন্ত লক্ষ্য করে বা, সুতরাং এক পালকী গাড়ি দ্বারা গমনা গম-ন করি, যানারোহণ পূর্বক যখন গমন করি তখন মনের অকৃত্যাপে কাহার সহিত কথা কহি না, নানা প্রকার বিচিত্র বিচিত্র পার্শ্বস্থ পরিদর্শন করি কিন্তু অবস্থার জন্য পারিচ্ছদের মর্যাদা রক্ষা হয় না । বরং চরিত্রের অধিক, বাৎসরিক দেহ ধর্ম্মকৃত মন্থক বেশ শূন্য দুই একটি মণ্ড-বীন, চক্ষু জ্বর, উদর জ্বর ইত্যাদি এইরূপ, আমার ভগ্ন কেশন, অধীনস্থ লোক দ্বিগকে ভুলে সম্ভারণ করিয়া থাকি, সাধারণের উপকার জনক ঔষধ আদ্যাদ্য করি, উপায় বিহীন রোগি-দগ চিকিৎসার জন্য আনিলে কবচবিয়া দিবসে সাধারণ চেষ্টা পাই, অনিবার্য হইলে আপন-নিমিত্ত হ ল ঔষধ করি করিতে অকৃত্যাপ করি এবং একটাকা মূল্যের জ্বো তিন টাকা লই, একটাকা একজন মুসলমান ঔষধ পাইবার নিমিত্ত আদিবার তাহার ক্ষমতা ধারণ করিয়া অপমান করি, বিখ্যাত হোজখামার গণিকালয়ে রজনী বোগে ধূম ও মদ্যপান করিয়া কালহার্য করি, কোন সময়ে মদ্যপ হইয়া বক্তাবার, স্বর্গ বার-কের মন্থক চূর্ণ করিয়াছিলাম গণে এই অপমা-

নিত্ত মুসলমান ও আহত বণিক রাজদ্বারে অভিযোগ করিলেন সজ্জি করি, আমার নিকটে যে ঔষধ কর না করে তাহার চিকিৎসা করি না, যদি আমার অন্তরে অন্য কোকানে ঔষধ কর-কনে তবে তাহার ও কোকান দ্বারের অন্তর্নি-পনের চেষ্টা দার, অন্তরে জিহুতসন বিলক্ষণ মাতর হই, আমার দোষাখ্যায় বিচার নাই, সম্পাদক মহালার, আমার ওপালিব পরিচয় প্রাপ্ত হইলেন এক্ষণে মনে আশঙ্কা হইয়াছে যে চমকে আমার দশা কি হইবে ।

কল্যাণ জ্যৈষ্ঠ পিত জনসা ।

-০০-

সাম্যবর জিহুত সোমপ্রকাশ সম্পা

দক মহালার সমীপে ।

এই প্রামেব এক জন অর্ধবলিকেন পত্নী মৃত-বংশা দোষগত হইয়াছে । গত দুপদাসে এক ব্যক্তি হুজবেলী ভাউ উক্ত জুর্ণ বংশকের বণ্টা-তে আশ্রয় করিয়া, আপনাকে মহাজানী অ-সাধ্যসাধক ও সান্নাতি চিকিৎসকে নিযু-ত করিয়া পবি গ দিয়া কহিল যে আমি তোহার বনিতার মৃতবংশাদেব পিতা-মাতা দ্বারা অচি-বেতন করিতে পারি । এই কথা শ্রবণ করিয়া জুর্ণ-বা ক ও তাহার দ্বারা এই প্রকৃতকর নিকট একবারে যেন । বন । মুজো বিজ্ঞান হইল এবং জাতিগত বাগ্ৰত, ব সাহিত সোম হুত কবিবার অকৃত্যাপ করিল । গর দিবস অপরাহ্নে বেলা ৪ ১ খটিকার সময় সেই ভাউ এ ব্যক্তির আবারে আসি-রা । তাহা-কে একটি মৃণ্ম কলস বাধি পুণ-কায় । তাহাতে হিন্দুধর্ম্ম উল্ল প্রদান করিয়া বাধিতে এবং আতপতুল ও মিউজানি মৈ-বেদ্যের অ-প্রেরণা দিও কহিয়া স্থানান্তর গমন করিল । বণিক তরুণ করিল । গর ২৭-কক সাহসকালে একটি মৃত পতন গর বধীন মন্থক হস্ত করিয়া উপস্থিত হইল । অনন্তর একটি কাঠামনে বস্ত্রাচ্ছন্ন করিয়া, তরুণি উক্ত পাত মন্থক স্থাপন করিয়া পুজা করিতে বসিল । কিরংকণ পরে বৃত্ত অর্ধ বণিকজারাকে কহিল "তুমি গম্ভীর অলকার গার হটা-উম্মোচন করিয়া যে যে অলকার যুগ্ম আছে অর্থাৎ যে অলকার দক্ষিণাঙ্গে একটি ও বামোঙ্গে একটি প-রিধান করিতে হয়, তাহান এক এক পাট আ-বার নিকট ও এক এক পাট করিয়া আপনাব নিকট রাখ এবং যে অলকার অধুগ আছে তা-

হাও আমার দিকট দূর হইতে জোয়ার অল-
কারে কুড়াইয়া করিলেক।" অবশ্য ইহাও
অন্যদিকে নদীর অলকার বাহু হইতে
খুলিয়া, এক পাট বীক মল, এক ছক, দুইছা
এবং এক ছক। জাবি (এই গরমালি কলার)
ও একটি সোমার কেশর ও একটি সূর্য মল এবং
একটি পিতলের হার একমুদে ৬ মকা অলকার
বর্ত্তে দিয়া। অবশিষ্ট অলকার দিকট রাখিল।
অনন্তর প্রভাতকাল স্থান সমাপনান্তে এই বর্ণি
ককে পৌত্র দান করিয়া আনিতে অজ্ঞাত করি-
ল, বনির গমন করিলে, খুঁজি তদীর তথ্যকে
এক নিম্নানে রাখা হইতে মুক্তিয বালুকা আন-
ন করিতে আদেশ করিল। এইরূপে যখন তা
১১। উত্তরে বহির্গত হইল তখন খুঁজি আর ইতি
সাধন ব সময় পাইয়া অলকারাদি হস্তগত করিয়া
খুঁজির হারের দিকে পলায়ন করিল। অনন্তর
বাকনছিল। বালুকানয়ন করিয়া জন শূন্য
গৃহস্থানে বিশ্রাম কর হইল এবং পূর্বোক্ত বারি-
পরিতে ঘটে হস্ত এবিষ্ট করিয়া তদন্তরে যখন
স্বয়ং অলকার দেখিতে পাইল না, তখন একে-
বারে ক্রন্দন করিয়া উঠিল। তৎপরে স্বর্গবিক
প্রত্যাপন করিয়া তদন্তর দর্শন করিয়া বস্ত্রের
অবধানে ইতস্ততঃ জ্ঞপন করিল, তখন সে বাগির
গামা পার হইয়াছে আর তাকে পার কে? অবশ্য
যে প্রবন্ধকের অজ্ঞানতা না পাইয়া হতান হইয়া
পুলিবে যখন ছিল। দেখা বাউক পুলিগের বাবা-
লীর কি করেন? যাহা হউক, মহাপ্র। বেটা হা-
রের বিবরণিতে কাকিতে পড়িয়াছে অর্থাৎ স্ব-
পালী মনে করিয়া পিতলের হার পাছাটা
লইয়া গিয়াছে। এখন পরীক্ষা পুলিগে এবিষয়ের
কিছু অজ্ঞান হয় নাই, পরে-বেগন হয় একাশ
করিব নিবেদন।

মানিক পুত্রলিরা

সন ১২৬২ ৬ বৈশাখ

কন্যচিত্র পাঠক

—৩৩—

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাপ্রেরণ।

২২য় তাং। সোম একান্ত একাশকরিতে কটি
করিব না নিবেদন ইতি।
১২৬২ সাল তাং ২ বৈশাখ বহুবলপূর্ণ।
কন্যচিত্র দৃশ্যক।

২২য় তাং। সোম একান্ত একাশকরিতে কটি
করিব না নিবেদন ইতি।
১২৬২ সাল তাং ২ বৈশাখ বহুবলপূর্ণ।
কন্যচিত্র দৃশ্যক।

এবং আমাদিগের লেগুটমেন্ট-বর্ধন মহাপ্র-
তব গ্রাউন্ডে নদীর দিকট কুড়াইয়া একাশার্থ
এক সতা অজ্ঞান করিল, ইহা। কেবল। সাতিন
আজাদিত হইয়াছে। এই সত্য বাহু পকামন
বন্দোপাধ্যায়, বাহু পৌরদাল বলাধ, বাহু পুলি-
ন বিহারী সেন বাহিকার সেন বাহু রামদাল
সেন বাহু-আপকুক বন্দোপাধ্যায় বাহু অধি-
কার গজোপাধ্যায় বাহু দীননাথ গজোপা-
ধ্যায় বাহু দীনবল্লভাচার্য বাহু বৈকুণ্ঠনাথ দাশ
বাহু রামদাল চৌধুরী প্রভৃতি মহোদয় গণ উ-
পস্থিত ছিলেন। সত্য কার্য্যারত হইলে মহা-
প্রতব গ্রাউন্ডেবকে প্রদান করিবার জন্য যে
অভিনন্দন পত্র প্রস্তুত করা হইয়াছিল বাহু পৌ-
রদাল বলাধ তাহা পাঠ করিলেন। তাহার পর
বাহু পুলি ন বিহারী সেন করিলেন "গ্রা-
উন্ড সাহেব আমাদেব দেশের বৈষ্ণব উপকার ক-
রিয়াছেন তাহা বর্ণনাতীত, এজন্য আমাদিগের
সকলের আশ্রয়ত কিকিৎ ২ প্রদান করিয়া তা-
রতবর্ধন সত্য পাঠান আবশ্যক। এই বলিয়া তি-
নি তাহ ১ বর্ধন সতা হইতে প্রেরিত গ্রাউন্ড সাহে-
বের অরণ্য চিহ্ন হাপন করিবার আবশ্যকতা
বিব্রিনী বিজ্ঞাপনী বাহু দীননাথ গজোপাধ্যা-
য়কে পাঠাথ প্রদান করিলেন। তিনি তাহ পা-
ঠ করিয়া করিলেন "আমরা চাঁদা সন্তু করিয়া
না। পাঠাইয়া যদি এখানে একটি "গ্রাউন্ড হাল"
নামক গ্রাউন্ড সাহেবের দিকট কুড়াইয়া একাশার্থ
গৃহনির্মাণ করি; তাহা হইলে ইহাতে দুটি উত্তম
কল হইবে। এক গ্রাউন্ড সাহেবের নীচে কুড়া-
ইয়া একাশ করা; দ্বিতীয় এদেশে সাধারণ হি-
তার্থ লামা সৎকার্যের আলোচনার জন্য সাধা-
রণ সত্যগৃহ নির্মাণ করা। অতএব আমাদেব এই
রূপ করাই কর্তব্য। গজোপাধ্যায় মহাপ্রেরণ এই
প্রস্তাবে বাহু দীননাথ পামাল ও বাহু অধিকা-
চরণ গজোপাধ্যায় পৌরকতা করিলে পর সকল
মতাই তাহার এই প্রস্তাবে ধন্য বাবের সহিত
অনুমোদন করিলেন। পুনরায় বাহু দীননাথ
গজোপাধ্যায় করিলেন আমাদেব এই বিবরণ
চাঁদার জন্য সাত একটি সতা করা আবশ্যক। তা-
হাতে বাহু পুলিবিহারী সেন করিলেন "সাত
কেনী বংগদুর আমাদেব দেশের বহুতর
উপকার সাধন করিয়াছেন। অতএব তাহার প্রতি
মুক্তি নির্মাণের জন্য আমাদেব চাঁদা দেওয়া
কর্তব্য। এই প্রস্তাবে বাহু পকামনবন্দোপাধ্যা-
য় বাহু পৌরদাল বলাধ এবং বাহু রামদাল
চৌধুরী প্রভৃতি সত্যগণ পৌরকতা করিলে
পর সত্যপতি মহাপ্রেরণে বলাধ প্রদান করিয়া
সত্যগৃহ হইল। ইতি পর দ্বিতীয় সত্য বাহু

২২য় তাং। সোম একান্ত একাশকরিতে কটি
করিব না নিবেদন ইতি।
১২৬২ সাল তাং ২ বৈশাখ বহুবলপূর্ণ।
কন্যচিত্র দৃশ্যক।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাপ্রেরণ।

সম্পাদক মহাপ্রেরণ। জাবি কয়েক দিন শারী-
রিক পীড়িত থাকিয়া, ইহার শেষ হস্তান্ত পরে
নিবেদন। এই প্রতিজ্ঞা, প্রতিপালন করিতে
পারি নাই। জেনের মোক্ষমাণ্ডে রূপ বিচার
হইয়াছে, তাহাতে কোনকদই আমায় সে প্র-
তিজ্ঞা পূরণ করিবার ইচ্ছা ছিল। কিন্তু ১৭ই
মার্চ সোমপ্রকাশে সেবিনীপূর্ণ ২২ ২২ ইতি
ব্যক্তিগত পত্রপ্রেরকের প্রেরিত সত্যাদে জেনের
মকমায় নিম্পতি বিবরে কোন কটি মুক্তিগোচর
হওয়াতে কিকিৎ না লিখিয়া কান্ড পাকিৎ লামি
লাম না। প্রেমচাঁদের ৬ মাস দুই সত, এবং
অমাদেবের তিনমাস একমুদে টাকা করিয়া প্র-
তিমানার আদেশ হইয়াছে। এতে তাহের কটি
কি? যত্নের ছেলে যত্নে এস। জেনে পূর্ব
বেদন আধিপত্য এখনও সেইরূপ। কিন্তু হস্তান্ত-
গ্য অতঃপর বহুর কপালে এই পুরকার লাভ
হইল কেন? ইহার পূর্বে তাহাকে কেবল পাট
কাটীয়ার সত্যি করিতে হইত, এখন সাক্ষর
ও প্রেমচাঁদের নামে বালিন ক্রবান্তে অর্থাৎ
বলাধ কথার উত্তরে মাটি কাটীয়ার জরন হই-
য়াছে। মহাপ্রেরণ! তাহা বর্ণন করিতে গেলে বাস-
কের অথবা অজ্ঞানতা পামানন্দন দিগুব
ব্যক্তিরও প্রভাবকরণ বিদ্যুৎ হয়। সাক্ষর সাহে-
বের সত্যি সত্যে তাহার নিজের একটি পু-
ত্র কাটীয়া হইতেছে। অতঃপরকে এই সত্যে
কেন্দ্র হইয়াছে। এই পূর্বের মুক্তি। করক
মহ। (এখানে প্রস্তাবের প্রস্তাব রূপ কি পুত্র-
পালি ধনন করিতে হইলে অধিকাংশ প্রস্তাব
নিমিত্ত মুক্তি। কাটিতে হয়) অতঃপর বালক-
কাল হইতে পরিপ্রমণীল জেনে, সত্যবৎ
কাটীয়ার তাহার সত্যে অসম হইয়া উঠিয়াছে।
তাঁহা আবার করক ধনন করিতে হইল, অ-
নাম্য করলী ৩। ৪ সের ওজনের গাঁড়ি (সত্য
নির্মিত করক ধননের একপ্রকার সত্য।
সেব (সে, এবং অতঃপর বহুর ৮। ৯ সের
ওজনের গাঁড়িতে মুক্তি। ধনন করিতে হইতে
হে। আর মুক্তি। বহন করিতে হইল অমা
জনে এক এক বারে এক এক ভোড়া বহন ২২,
অতঃপরকে এক এক বারে দুইভোড়া ১২। ২৩
বহন করিতে হয়। মহাপ্রেরণ। একে প্রচণ্ড প্রাণ
তাপ, তাহা আবার অনাপেক্ষা ২। ৩৩৭ ২।
ধিক পবিপ্রন; ইহা। অমকমতাতীত পৌরক কথ।

হুয়ে পাকত, ... প্রমণীয় ব্যক্তি কখন করিতে সমর্থ হয়। ... প্রকৃতির সুখ প্রদীপ্তি কেবল হুতাই যে, ... পবন বহু এটি বিলম্ব উপ-লব্ধি হয়। এই ঘটনা দেখিবার জন্য কোন এক শনিবার হাপ-কুলের পর পরস্পরভাৱে অত্যন্ত মনোযোগে ইংরাজী বিদ্যালয়ের কয়েকটি শিক্ষক ও আর দুইজন ছাত্র উক্তস্থানে আসিয়া অধ্যয়নের তাহা অবস্থাবিলোকে প্রায় ২০ ইঞ্চি বিস্তারিত করিয়াছিলেন। তাহা-র পর প্রতি বিচারকদিগের এইরূপ নিগ্রহ করিয়া আর অধিকতর দেখানে থাকিতে না পারিয়া কলিকট্টকে ও মহাকাশে বসন্তকে বসন্ত করিয়া করিতে চলিয়া গেলেন। হার-রে পাকত। তোর কি এতই মহিমা যে, একবারে তোর অপকল্প করিয়া আপনকল্পতা প্রকাশ করিয়া তোকেও থিক তোর তক্তকেও থিক! ... এতাদৃশ, এত এক বিচার গেল, অন্য বিচার-বিষয় নিবেদিতেরি এখন কেলের নিউম-ব্রিট আর্ট। আর্ট। একটি কথাও কেহ কাছার-ত হসিতে পারিবে না। অনেক দিন হইল ... একজন বরকন্দাজ ১০ টারি আমদানী-করিতে প্রেরণ করিয়াছিল বলিয়া ওই কার্ড-খবরে জিহ্বা লাগিছে। টায়েরের সুখা খিয়ার-পাটার প্রতি ওছরমান কারাবানের ... ইহাছে। যদি এইটী বখাৰ্ণ বিচার-বহু-প্র-মণের ও জমাদানের ১৪ বৎসরের ... না। নির্দাসনেও কিছু হয় না, এবং ... গবর্ণমেণ্টমাং করিলেও কিছু হয় না। ... নক্কাল এরকভোগে তাহাদের দোষাভ্যাস-পাতি। যদি এতদাধ এততির বিচারের অন্য-জনি আশ্রয় হইত, তবে এতদগরহ আশ্রয়-কর বনিত। সকলেই সরলাভ্যকরণে বনিত যে, ... মণি দোণী বিগকে অষ্টেট নির্দাসন কর, উ-চিত। অ'হরা তখনই জানি সে সাদাগারে কল-মাং দেওর। কসদাংদের কাজ নহে। এবার সা-জ্ঞানরূপ পিতা বাহাদুরে স'হর, তাহাংগকেও-দোষাভ্যাস কর দেওর। সহজ নহে! এথলে ইহা-ও উক্তক যে, সাজ্ঞানার নামে যে, অভিযোগ-উল্লিখিত হয়, জালিষ্টেট সাহেবই তাহার প্রা-দোষাভ্যাসী। তিনি সাহস না দিলে অতদবস্ত-প্রদীপ্তি পাইয়াও কখন এবিধে মন্ত হইতেন না। তেলক যে কোন দোষাভ্যাস হউক না-কেন, ... একবার সাহেবদের ঘরে-আসিল নব আভাস খীতল হইয়াবায়। বাহা হউক-এবিধে আর হুই আভ্যাস অন্তরে রোমন-কর। তবে আপন যেমন পূর্ক পদ্যাসি

পদ্য করিয়া বার পদ্যই উপকার করিয়া-ছেন, সেইরূপ যদি এখনও আপন পদ্যোপকা-রিতাভ্যাসের বসন্তা হইয়া এই বিধের সা-রাংশ উক্ত করিয়া পদ্যোপকা জুয়া কোন ইয়া-জী নবদগরে এচার জন্য প্রেরণ করেন, ... হইলে সাতিলার বাহিত ও উপকৃত হইবে। কেন-না আমি ত এক ইংরাজী জানি নাই, যদি এ-এখানকার অনেক ইংরাজী জানেন বটে, কি-তদ্বারা তাহা উপকার হইবার সম্ভাবনা নাই। আবার বাহবা বিনীতরূপ জানেন, তর তাঁহারা-আলস্যে অবস্থা ভগাতি প্রকৃত এতদ বিধে হুত-কেপ করেন না।

২। প্রায় ৩।১০ মাস হইল এতদগরে "বিবিধবিষয়বিধারিনী" নামী একটি সভা-অ-ভ্যাস করিয়া কৃতবিদ্যের অবস্থে স্থাপিত হই-য়াছে। তাহা সাপ্তাহিক ও মাসিকনিরন্তর নির্দা-হিত হয়। সাপ্তাহিক কার্য প্রতি রবিবারে ২।৪ ঘটিকা হইতে আরম্ভ হইয়া ৬ ঘটিকার শেষ হয়। মাসিক কার্য রবিবার রাত্রি ৭ ঘটিকা হইতে ১০ ঘটিকা পর্যন্ত চলিয়া স্থগিত হয়। ইহার অ-বস্থা একে বেলক দেখিবে। ইহাতে বোধ-করি অতিরেই ইহার উন্নতি হইবে। ৪টা টৈশ-রবিবারে ইহার নবম মাসিক কার্য হইয়া-গিয়াছে। সে দিবস দোলবারা ছিল। যে-সময়ে সাপ্তাহিক অধিকাংশ লোকে দোষাভ্যাস-হুইয়া নীত ও হুখানোদে রত ছিলেন; যে-সময়ে সকল হুইয়া প্রায় আশির হুতুমে পরি-পূর্ণ ছিল; যে সময়ে সকলেরই অঙ্গবস্ত্র অবা-হুত সন্তান হইয়াছিল; সকলেরই হুতুগুণ বি-কৃতাকার ধারণ করিয়াছিল; যে সময়ে অর্থহরে অনেকেরই বাহ্যজান ন্য হইয়াছিলেন সেই-সময়ে বিবিধবিষয়বিধারিনীর অনুদান ৪০ জন-সভা সুরবেত হইয়া "অঙ্গবেদী কৃতবিদ্যাব্যপের-দ্বারা কর্তব্য কর্ম সম্পাদিত হইতেছে কি না।" এই বিধের আলোচনা করেন। রীতি-মত-হুইয়া বক্তৃতা পঠিত হইলে একটি যুবক-সামোধান করিয়া প্রায় হুই ঘটিকাল পর্যন্ত-এই বিধে এক প্রদীপ বক্তৃতা করিলেন। তাঁহার সেই বক্তৃতার মধ্যে এইটী বিশেষ-উল্লিখিত হইয়াছিল যে "অদা দোলবারা" ইহা এখনও যে উদ্দেশে হউক না কেন, সম্ভ্রতি-ইহা যে কিরূপ হুতুগুণ ও জালিষ্টারক হইয়া-উঠিয়াছে তাহা বিবেচক বাহাই, অতদব করি-বেন। এই হুত বাগানে আমদের নংলিত-হুতরা কনাচ উচিত নহে। এইরূপে সকল সভাই-দোলবারা দোষাভ্যাস করিয়া প্রদীপিত বি-

বরের আশ্রয়ালম করিতে লাগিলেন। সকলে-ই অতদবর্ণ আমদে ও উৎসাহে পনিপূর্ণ-হইল। দোলবারার নংলব-প্রাণ করিলান এই-প্রতিভা করিয়া যুবকগণলী অধিকারী আম-দ্য অতদব করিলেন। এইরূপ আশ্রয়ালমের-পর প্রায় ১১ টা রাত্রিতে সভাকার্য স্থগিত হয়। নবদগের এইরূপ চরিত্র ও উৎসাহ দেখিয়া-অতদা ব্রাহ্মেরাও অনেক ধন্যবাদ প্রদান-ক-য়াছে। বাহা হউক অনেক অতদবর্ণ করি-য়াছে যে, সে দিবস বিবিধবিষয়-বিধারিনীর দোলবারার কোন নংলি-বেই হুত হইয়া। আমরা আশা করি নব্য-অতদবর্ণেরা অতদবর্ণ বিধে এইরূপ অত-দবর্ণ হইলে ... কল সাহ হইবে

আপনার পূর্ক পদ্য প্রেরক
১৮ ১৪ই এপ্রেল। মেদিনীপুর

মূল্যপ্রাপ্তি।

জিহ্বা বহু হুতুগুণ লাল রায় চক্ৰবর্তী
১২৬৮ টৈশ হইতে ৬২ কাকদ পর্যন্ত ১০ টাক।
" তপস্বীচরণ দেব রতনপুর
১২৬৮ টৈশ হইতে ৬২ কাকদ পর্যন্ত ৫ ট
" তপস্বীচরণ বহু বহরমপুর
১২৬৮ টৈশ হইতে আশ্বিন পর্যন্ত ৫ ট
" রাজা সত্যশরণ বোবাল কলিকাতা
১২৬৮ কাকদ পর্যন্ত ১০ ট
" বৈষ্ণব সাধ রায় বান জুম
১২৬৮ টৈশ অবধি আশ্বিন পর্যন্ত ৫ ট
" রাধিকাপ্রদান দেব মৌলিক নওয়াবাল
১২৬৮ টৈশ অবধি আশ্বিন পর্যন্ত ৫ ট
" পরানন্দ সুখোপাধ্যায় বীরভূম
১২৬৮ টৈশ অবধি কাকদ পর্যন্ত ৫ ট
" রাজা প্রাণকালী রায় বহরমপুর
১২৬৮ টৈশ অবধি ৬২ কাকদ পর্যন্ত
" সাম্যচরণ চট্টোপাধ্যায় বহরমপুর
১২৬৮ টৈশ অবধি আশ্বিন পর্যন্ত ৫ ট
" সাম্যচরণ জিহ্বা কলিকাতা
১২৬৮ টৈশ অবধি আশ্বিন পর্যন্ত ৫ ট
" সত্যশরণ বোবাল সাধ রায় কলিকাতা
১২৬৮ টৈশ অবধি আশ্বিন পর্যন্ত ৫ ট

এই পত্র কলিকাতার কলিম পূর্ক মাতলা হেলগরের-দোলবারার জিহ্বা করিয়া চাংলিপোকা প্রাণে জিহ্বা-কলিকাতা, বিদ্যাকলিকাতা, বাগেতে প্রতি দোলবারার-প্রতি প্রকাশিত হয়।

[illegible]

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

4. Warrant Return

SECRET

1990

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十

কর কটকট হইল। আশিও বৎসরেন এই
মুসলিমের খালাস ঘটিতেছেন। মজ
মামলিদের অধিকার সংখ্যা এতদ্বারা দুগুণ
হইল বহু হুজুর হইল না; কিন্তু বিচার
কর্তার বে যে ঐশ খাঁ আবদ্যাক, তার
বর্ষের দুর্ভাগ্যক্রমে উল্লিখিত বিচারক
গণে তাহার অধিকারের সমস্তাব ছিল।
করগণের এদেশীয়দিগের শিক্ষাদান
কর্তব্য অনুমানের ছিলেন না। এমন নয়,
কিন্তু সোক সংখ্যার সহিত করগণের বহু
অর্থের সংখ্যা করিলে মনুষ্যে পাত্য অর্থের
মারি কিবা হস্তির দুবে দুর্ভাগ্যের মার
অতি অকিঞ্চিৎকর বলিয়া প্রতীয়মান হইত
সরকারে মাই। তাহার অধিকার কর্তা ও
অধিকারকর্মীদের যেখানে পর্য্যবসিত
হইত।

[illegible]

ଅବସରରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରାଯାଇଥିବା ଏହି ପ୍ରକାର
 ଶିକ୍ଷା ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ହେବ । ଶିକ୍ଷାଦାନ କ୍ଷେତ୍ରରେ
 ଉପସ୍ଥାପନ କରାଯାଇଥିବା ଏହି ପ୍ରକାର ଶିକ୍ଷାଦାନ
 କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରାଯାଇଥିବା ଏହି ପ୍ରକାର
 ଶିକ୍ଷାଦାନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରାଯାଇଥିବା ଏହି ପ୍ରକାର
 ଶିକ୍ଷାଦାନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରାଯାଇଥିବା ଏହି ପ୍ରକାର

দান করা হয়। এইরূপে বাল্যশিক্ষার মাধ্যমে
 একাদশ করিতেছে। বাল্যশিক্ষার একাদশ
 বেকশ অবধি নব্বই বছর পর্যন্ত। বাল্যশিক্ষার
 বিদ্যাভিষয়ে যদি কোটি টাকা ব্যয় করা হয়
 একদিন সমুদ্রের পানি পান করা যায়। কোটি
 টাকা দান করা এবং বাল্যশিক্ষার মাধ্যমে
 অসংখ্য ব্যাপারও নহে। বাল্যশিক্ষার
 ফলে বাল্যশিক্ষার অনেক টাকা ব্যয়
 নষ্ট হয়ে যায়। পুলিশ কমিশনারের
 বাল্যশিক্ষার পরিচালনা ১৯৩৫-৩৬ অবধি
 নষ্ট হয়ে পুলিশ ২০০০০০০ টাকা ব্যয়
 হয়। বাল্যশিক্ষার মাধ্যমে বাল্যশিক্ষার
 ব্যয় হইবেক। বাল্যশিক্ষার মাধ্যমে
 টাকা ব্যয় হইবেক। বাল্যশিক্ষার মাধ্যমে
 যে বাল্যশিক্ষার মাধ্যমে বাল্যশিক্ষার

বাহ্যিক ক্রিয়াকলাপের দ্বারা
 অধিক টাকা নিজেদের প্রার্থনা পূরণের
 কোম বিখ্যাত শিক্ষণে, বাহ্যিক ব্যক্তি
 হইবে, তাহা প্রত্যক্ষ হইতে পারে। এই
 নবাবেরই আকারে প্রকাশ করিয়া করিয়া
 বিদ্যালয়গুলি কার্য নির্বাহ করেন, এবং
 আশেপাশের যে বহু জন : সাহায্য দান প্র
 প্রকাশ্য বলবতী হইবে, এই আকারই বি
 কল যোগ হইতেছে। এ প্রকা বলবতী হ
 ইয়া আশাশ্রিতের অবস্থিতিতে আছে। ক
 আশাশ্রিতের বহুত্ব এই, এ দেশে কো
 সাহায্য দান প্রকা প্রবর্তন দ্বারা অতী
 স্তমিত হইবার সম্ভব হইয়াছে কি না, গ
 কোই পরীক্ষা বা করিয়া নহেন। বিদ্যা
 রূপিত, আকার করিয়া তাহা হইতে অবস

প্রকাশ না করেন। বাহা প্রকাশে যে সাহায্য দান প্রথা

এই গোষণ নহে। ইহার বোধ নহে শোধন অতিরিক্ত আবশ্যিক। যেখানে বিদ্যালয় হইবে, তত্ৰত্য লোকেরা ছাত্রদের বেতন বাদে বাকী টাকা দিবেন, গবর্ণমেন্টও সেই পরিমাণে সাহায্য করিবেন এই নিয়মটি শুদ্ধতম নহে। ইহা অনেক স্থলে বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা কার্যের প্রধান অন্তরায় হইয়াছে। বাহাদুরগির আপন আপন বিদ্যালয় স্থাপন করিবার আন্তরিক হইলে, তাহাদিগের অনেককে এই নিয়মের ত্রুটি ত্রুটি হইতে দেখা যাইত। গবর্ণমেন্ট আস্ত এ নিয়ম রহিত হইত। ইহা পূর্বেও একবার কহিয়াছি যেখানে গবর্ণমেন্ট লাভ হইয়া থাকে, তাহা হইতে লাভ করা হিসাবে তত্ৰত্য বিদ্যালয় স্থাপন করুন। এখানে আর একটি কথা উল্লেখ করা আবশ্যিক হইতেছে। গবর্ণমেন্ট এক্ষণে জম্মুখান কার্যে যে অর্থ ব্যয় করিতেছেন, তাহার সংক্ষেপ করা নিতান্ত আবশ্যিক। ইনস্পেক্টর ও ডেপুটি ইনস্পেক্টরের সংখ্যা কম করিলে বিদ্যালয় অনুমাত্র হ্রাস হইবার সম্ভাবনা নাই।

কাহাড়ের চাকরগণ ও চাকা-
প্রকাশের সম্বন্ধাদিত্য।

যিনি কাহাড়ে থাকিয়া এতদিন তত্ৰত্য চাকরদিগের ব্যবহার হুজুত চাকাপ্রকাশে সিদ্ধিহীন ছিলেন, তিনি সম্প্রতি আসাদিগের নিকটে একখানি পত্র প্রেরণ করিয়াছেন। পাঠকগণ পত্রখানি যথা স্থানে দর্শন করিবেন। পত্র পাঠ করিলে কোন রূপেই এই বোধ হইবে যে এদেশে স্বতন্ত্র গবর্ণমেন্ট, স্বতন্ত্র রাজশাসন অথবা স্বতন্ত্র রাজ্য নাই। অত্ৰত্য ইউরোপীয়দিগকেই গবর্ণমেন্ট, রাজশাসন ও রাজা বলিয়া বোধ

হয়। চাকাপ্রকাশের উক্ত সম্বন্ধাদিত্য সিদ্ধিহীন, চাকরগণ চাহার আশ সংহারে উন্মত্ত হইয়াছিল, তাঁহাকে অগত্যা কাহাড় পরিত্যাগ করিতে হইয়াছে। ব্যক্তি অথবা সম্প্রদায় বিশেষ যেখানে থাকে বা কিসেবের আশ্রয়ণে সাহসী হইতে পারেন, স্বতন্ত্র গবর্ণমেন্ট থাকিলে কি কখন একপ সম্ভাবিত হয়? উক্ত সম্বন্ধাদিত্য যদি অপরোধী হইয়া থাকেন, আদালত আছে, সেই স্থানে তাঁহার বিচার হইবে এবং আইন আছে, তদনুসারে তাঁহার দণ্ড হইবে; স্বতন্ত্র রাজবিধি গ্রহণ করিয়া স্বতন্ত্র প্রজা হইয়া কাহারও দণ্ড করিবার অসম্ভাবনা নাই। ইউরোপীয়দিগের এবিধ গর্ব ও এবিধ স্বৈরাচারিতাই তাহাদিগের প্রতিএদেশের লোকের বিদ্বেষের কারণ হইয়াছে। যেখানে একপ ব্যবহার, সেখানে দুর্বলের ধন আশ্রয় করার সম্ভাবনা কি? ইউরোপীয়েরা এদেশে আসিয়া বাস করেন তাহা এদেশের লোকের যে অতিশ্রুত নহে, তাহারও কারণ এই। অধিকসংখ্য ইউরোপীয় বাস করিলেই এদেশে অরাজক কাণ্ড হইবে, এই এদেশের লোকের শঙ্কা। এই শঙ্কা অস্বলকও নহে। এদেশে এক্ষণে যে সমস্ত ইউরোপীয় বাস করিতেছেন, তাহার অধিকাংশেরই দুর্ভাবহার দৃষ্ট হইতেছে।

উক্ত সম্বন্ধাদিত্য চাকাপ্রকাশসম্পাদকের উপরে ক্ষোভ প্রকাশ করিয়াছেন। কিন্তু ১২ই বৈশাখের চাকাপ্রকাশে দৃষ্ট হইল, তৎসম্পাদক সম্পাদকীর বাক্য হলে সম্বন্ধাদিত্যর পত্রখানির তাৎপৰ্য্য প্রকাশ করিয়াছেন। অতএব তাঁহার আর ক্ষোভ কি? তবে তিনি কাহাড়ে অবস্থিতির বিষয়ে যে অতিরিক্ত প্রকাশ করিয়াছেন, ব্যতীত হইলে তাহা সুসিদ্ধ হইবার সম্ভাবনা নাই। সম্বন্ধাদিত্য কিঞ্চিৎকাল এতীকা করুন। প্রজাগণের প্রতি সমপক্ষপাতে সমিচার বিতরণ বিষয়ে অত্ৰত্য গবর্ণমেন্টের যে সাহুতর

চেষ্টা দৃষ্ট হইতেছে, তাহাতে স্পষ্ট বোধ হইতেছে, অত্যাচার কৰ্ত্তা যিনি হউন না কেন, অত্যাচার আর অধিক দিন প্রভু করিতে পারে না। জাতি ও ধর্মের বিচার ভেদের কালও ক্রমশঃ হইতেছে। আমরা স্পষ্টাক্ষরে প্রমাণ করিতে পারি, স্বতন্ত্র গবর্ণমেন্ট সম্ভাবিত হইবে, ততদিন গবর্ণমেন্ট সম্বন্ধাদিত্য হইতে পারিবেন না।

ভারতবর্ষের পবলিক ওয়ার্ক ও জন
ডিক্লিন সাহেব।

ইণ্ডিয়া রিকর্ডর সোসাইটি সভার সভাপতি জন ডিক্লিন সাহেব ভারতবর্ষের পবলিক ওয়ার্ক প্রসঙ্গ করিয়া সম্প্রতি এক ক্ষুদ্র পুস্তক প্রণয়ন করিয়াছেন। ভারতবর্ষের সর্ব স্থলে রেলওয়ে হইতেছে। কিন্তু নদীগর্ভ খনন করিয়া প্রশস্ত করিলে এবং নুতনবিধ খাতাদি খনন করিলে যে লাভ সম্ভাবনা আছে, রেলওয়েতে তাহা হইবার সম্ভাবনা নাই, অথচ হাউস অব কমন্সের অধিকাংশ সভ্য ও ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট সেই রেলওয়েরই অনুমোদন করিতেছেন; ইহার প্রতিবাদ করা উক্ত গ্রন্থ প্রচারের মুখ্য উদ্দেশ্য। কমন্স হাউসের সভ্যগণকে সতর্ক করিয়া ইহা লিখিত হইয়াছে। রেলওয়ের অপেক্ষা খাতাদি দ্বারা এদেশের যে অধিকতর উপকার লাভ হইতে পারে, আমাদিগের সামান্য বুঝিতেও তাহা বিলক্ষণ বোধ হইতেছে। নদী নদ ও খাতাদি দ্বারা কেবল যে জবাব দিয় আনয়ন ও প্রেরণাদির সুবিধা হয় একপ নহে, তাহারা দেশের উন্নতিও পের হুঁহি হইয়া সুভিক্ষাদি দোষ প্রশমনের সম্পূর্ণ সম্ভাবনা আছে। যার গণনা করিলেও উক্তের বহু বৈশিষ্ট্য লক্ষিত হইবে। এক ক্ষোভ পক্ষ দ্বারা খনন করিতে যে ব্যয় হয়, রেলওয়ের সেই এক ক্ষোভে তাহার বহুগুণ অধিক ব্যয় হইয়া

থাকে; কেহ বলিয়া না দিলেও ইহা স্পষ্ট বোধগম্য হইতে পারে।

কলকাতা বাহাতে লাভ ও উপকার অধিক এবং ব্যয় অল্প, তাহা এহার অধিকতর প্রার্থনীয় না হইবে? ডিকিন্সন সাহেব এক স্থানে লিখিয়াছেন “গোদাবরী সুবে রাজা ও খাল প্রভৃতির সুবিধা হও লাতে অল্প উপকার দর্শিয়াছে; পূর্বে বর্ষে বাবে ৫। ৬ লক্ষ টাকা প্রায়ের রপ্তানি হইত, পশ্চাৎ প্রায় ৫০ লক্ষ টাকার রপ্তানী আরম্ভ হইয়াছে; তদনুসারে প্রায় গণেরও ধন সমৃদ্ধির হুজি হইয়াছে, এক্ষণে রাজস্ব শতকরা ৪০ টাকা হুজি হইয়াছে নেবিগেশন কোম্পানির শতকরা ৫৫ টাকা লাভ হইবে, সমুদ্রপথে যে ব্যয় হইয়াছে, ২৫ মাইল রেলওয়ে প্রস্তুত করিতে যে ব্যয় লাগে, ততও নহে।”

আমরা ডিকিন্সনের কথা হইতে আর একটি বিষয় জানিতে পারিতেছি। গবর্ণমেন্ট রেলওয়ের প্রতিষ্ঠা হইয়াছেন, ইহা ন্যায় সিদ্ধ হয় নাই। রেলওয়ে কোম্পানি কতিপয় হইলে গবর্ণমেন্টকে সে কতিপয় পূরণ করিয়া দিতে হইবে। কিন্তু তাঁহারা কাকার টাকা লইয়া সেই কতিপয় পূরণ করিবেন, তাঁহাবিদের টাকা কোথা? প্রকার টাকাই তাঁহাবিদের টাকা। অতএব একের টাকা লইয়া অপরকে দেওয়া কি বিধেয় হয়? রেলওয়ে কোম্পানির স্বাধীন হইয়া কার্য করাই যুক্তিসঙ্গত। ডিকিন্সন লিখিয়াছেন “রেলওয়ে কোম্পানি বিনা রাজস্ব কেবল যে ২২ হাজারের পাঁচ পাইয়াছেন একপ নহে; গবর্ণমেন্ট কেবল যে তাহাবিগকে সুবিধা (কেবল এক বোয়াই বীপে চারি মাইলে ৩০ লক্ষ টাকা ব্যয় লাগিয়াছে) দিয়াছেন একপ নহে; এবং গবর্ণমেন্ট শতকরা ৫ টাকা সুদ (একপ হলে অন্য অন্য গবর্ণমেন্ট যাহা দিয়া থাকেন, তাহা অপেক্ষা চতুর্থাংশ অধিক দেওয়া হইয়াছে) দিগেন অধীকার করিয়া

হেঁম একপ নহে; এই পাঁচায় মিথ্যায় অতীত হইলেই রেলওয়ে গবর্ণমেন্টের স্বাধীনতা হইবে, কিন্তু উক্ত কোম্পানি যে টাকা ব্যয় করিয়াছেন, গবর্ণমেন্টকে তাহা প্রত্যর্পণ করিতে হইবে।” এইকপ লিখিয়া তিনি পরিশেষে স্পষ্টাক্ষরে কহিয়াছেন, রেলওয়ে প্রতিষ্ঠা যে প্রকল্প হইতেছে, ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্ট তাহার আদি কার্য নহেন, তাহার আদিকার্য কমল হাউস। তাহা হউক, পরিশেষে আমাদিগের বক্তব্য এই; ডিকিন্সনের প্রস্তাবিত প্রায় পাঠ করিলে তাঁহার কিঞ্চিৎ উক্ত্য প্রকালিত দৃষ্ট হয় বটে; কিন্তু তিনি খাতাদি ধনের অপর্যাপ্ততা বিষয়ে যে যে সুক্তি প্রদর্শন করিয়াছেন তাহার একটাও অসঙ্গত বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে না। ভারতবর্ষে অধিক পরিমাণে খাতাদি হইলে ইহার যে সম্বলীন মঙ্গল লাভ হইবে তাহা বিবেচনা অনুভব নহে নাই।

—

অস্বস্তিয়ার বিমোহ।

ধর্মিষা ও অস্বস্তিয়ার পর্বতে যে বিমোহবহি প্রকলিত হইয়াছে, অব্যাপি তাহার শক্তি হয় নাই। গত ১৪ই এপ্রেল গবর্ণমেন্ট যে ঘোষণা প্রচার করিয়া দিয়াছেন, তাহা বিনা শোণিতপাতে অতিরিক্ত কালমধ্যে তদ্বির্ভাবে সমর্থ হইবে সন্দেহ নাই। ব্রিগেডিয়ার জেমস স. উয়ার্ডকে কমিশনরের পদে নিযুক্তি করিয়া ধর্মিষা ও অস্বস্তিয়ার পর্বতে প্রেরণ করা হইয়াছে। তিনি তদ্রূপ লোকদিগকে এই কথা স্পষ্ট করিয়া জানাইয়া দিগছেন যে, গবর্ণমেন্টের একপ ইচ্ছা নয় যে অস্বস্তিয়ার কষ্ট দেন, রাজ্যমধ্যে কোন উপদ্রব না থাকে, এবং অজ্ঞান মুখে প্রকল্পকে থাকে, ইহাই গবর্ণমেন্টের অভিপ্রেতি; অতএব যে সকল ব্যক্তি বিমোহে প্রবৃত্ত হইয়াছে, তাহার বাকি পরগণা হয়, গবর্ণমেন্ট তাহা গিলকে জমা করিবেন।

বিমোহীদিগকে অস্বস্তিয়ার তুল্য বিমোহ নিবারণের অল্প উৎকৃষ্ট উপায় আছে। বিশেষতঃ বলা হইয়াছে, বিমোহীদিগের যে মনোবেদনা ও ক্ষোভ আছে, তাহা গবর্ণমেন্টের গোচর করিলে গবর্ণমেন্ট অবগত করিবেন। এক, জমা; দ্বিতীয়, স্থায় প্রীকার। এ দুটাই বিমোহীদিগের পক্ষে অনুকূল। স্থায়প্রীকার বিষয়ে গবর্ণমেন্টের বিশেষ রূপে মনোযোগ করা অতিশয় আবশ্যিক। বিনা কারণে লোকের কখন ইচ্ছাপূর্বক বিমোহে অনুরক্ত হয় না। তবে নির্দোষ লোকেরা ভিন্নপ্রমাণ প্রমাণে তালপ্রমাণ জ্ঞান করিতে পারে। তাহা হউক, বিমোহের কারণ অন্বেষণ করিয়া তাহার উৎসলমকতা অবশ্য কর্তব্য হইয়াছে। যে কারণে বিমোহ ঘটনা হউক, যে গবর্ণমেন্টের অধিকারমধ্যে বিমোহ ঘটে তাঁহারা কলকাতা জম হন সন্দেহ নাই। জুর্জাণাক্সের ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্টের অধিকার মধ্যে পুনা পুনা বিমোহ ঘটতেছে। যে পুণের কথা নিম্নপরিবারস্থ বাবতীর ব্যক্তির মতের ভাব অবগত হইয়া সমস্তরূপে কার্য নির্বাহ করেন, সে পুণে কি বিবাদপ্রসঙ্গ প্রকলিত দৃষ্ট হয়?

গবর্ণমেন্ট ঘোষণার তাৎপর্য উপরে উল্লিখিত হইল; কিন্তু ইংলিসমান সম্পাদক লিখিয়াছেন, জেমস স. উয়ার্ড এই কথা প্রচার করিয়া দিয়াছেন যে ব্যক্তি বিমোহের অবিনাশকলিগকে ধরিয়া দিতে পারিবেন তাহাকে হাজার টাকা পুরস্কা দিবে এবং প্রায়ের প্রধান ব্যক্তি ব্যক্তি দ্বিতীয় জমা যে সকল লোকে পরগণত হইবে তাহাবিগকে নিঃসংশয় জমা করা হইবে, তিনি তাহা বিবেচনা করিবেন। এ কথা যদি সত্য হয়, জেমস স. উয়ার্ড গবর্ণমেন্টের ঘোষণা ব্যক্তি বিকল করা হইয়াছে। প্রায়ের প্রধান ব্যক্তিরা অত্যন্ত না পাইলে কি বিনা শোণিতপাতে দ্রুত বিমোহ আশি সত্তাবনা আছে? প্রায়ের

মাতা লিখিয়াছেন সম্রাট কে. এ. এই ইতি-
বা পরে মুরসিমাবাদের নবাবের বিরুদ্ধে যে
সকল প্রস্তাব লিখিত হইয়াছে তাহা স্তূতপূর্ব
রেসিডেণ্ট কপেল বেনিকিন্স লিখিত। আমরা
এত দিনের পর শুণ্ড কথা জানিতে পারি-
লাম।

মূলতঃ সোসাইটি ও অনুবাদক সমাজ
একত্রিত হইয়াছেন।

ইহুদ পোটিয়ুট সম্পাদক অবন করিয়াছেন
বার হীরালাল সীল মুরসিমাবাদের নবাবের
শোমসহ ও মুন্সী আদীর আলী গব্বর জেন-
রেলের মদদবারের উকীল হইয়াছেন।

উক্ত সম্পাদক বখার্ব কপে করকর, পত্রকে
পাণ্ডা করকর, বলিয়াছেন; একপকার
করকর লেখা দর্শন করিলে এই কথা অনু-
সন্ধান করিয়া দেখা যায় না।

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও
১৩ টৈশাখের মধ্যাহ্নে তারতবর্ষীয় সভা
১০ মতা হয়, তাৎক্ষণিক করিয়া দেও ও

১১ গণিত দলের সিলভেট মুরাপানে
অন্ত হইয়া সেনাপতিকে গালি দেওয়াতে
তাঁহাকে খোড়া হইতে টানিয়া কোলিয়া দেও
রাতে তাহার ১১ বৎসর মেয়াদ হইয়াছে।

এনসাইন হিল সেনাদলের সাধারণ সৈ-
নিক পুরুষদিগের সহিত মুরাপান ও নানা
প্রকার কুব্যবহার করাতে তাঁহাকে পদচ্যুত
করা হইয়াছে। গরু হিও রোজ যে প্রকার আ-
রাজ করিয়াছেন আর কিছুকাল ইহা করিলে
সেনাদল পাসিত হইবে সন্দেহ নাই।

মাজাজে বাইকাউট করানোয় এক
জন করানী আল করিয়া দত্ত হইয়াছে। এই
ব্যক্তি আপনাকে এক জন প্রধান বন্দীর
করানী বলিয়া প বড় দিয়া মাজাজের ন্যা-
য়ের প্রধান প্রধান ব্যক্তির সহিত বহুত
করে। কিন্তু ক্রিমস হইল সে অপরিণিত ব্যক্তি
মহা ধুম ধাম করে, পরে এক বিল জাল করিয়া
বিচারালয়ে প্রেরিত হইয়াছে। তাঁহার প্রতি
অদ্যাপি কোন দণ্ডের আশা হয় নাই।

মাজাজের ব্যবস্থাপক সভার অধৈবিক
তাপন নান্যবর (অনুবেদন) এই উপাধি প্রাপ্ত
হইয়াছেন। কিন্তু সম্পাদক বলেন সভা
লেই তাহার এই উপাধি দ্বারা আশ্রিত
কিন্তু সভার বাহিরে তাহারিণকে এই উপাধি
দ্বারা সম্মান করা উক্ত সম্পাদকের
মত নহে। উৎকলীয় মহাসভার সভ্যের
সভার বাহিরেও এই উপাধি ধারণ করিয়া
থাকেন।

উক্ত পত্রের মণ্ডনস্থিত সংবাদমাতা ইং-
লণ্ডেশ্বরীর দয়াযুতা ও ধর্ম্মভিত্তিক এক বৃদ্ধি
প্রদর্শন করিয়াছেন। তাঁহার বাসস্থান অস-
বরণের নিকটবর্ত্তি এক দরিদ্র ব্রীলোক পীড়ার
মৃতবৎ হওয়াতে এক জন পুরোহিতকে আ-
নয়ন করিবার জন্য লোক পাঠান হয়। একটি
ব্রীলোক বহুক্ষণ পর্যাণ্ড ধর্ম্ম পুস্তক পাঠ ও
নানোপ্রকার সন্তোষকর বাক্য দ্বারা মৃতব্য-
ক্তির মনোরঞ্জন করিতেছিলেন। পুরোহিত গৃ-
হমধ্যে প্রবেশ করিয়াই অমনি থামিলেন। এই
ব্রীলোকটি বলিলেন মহাশয় 'যাদিয়া' খার
কর্তব্য কণ্ঠ করুন। পুরোহিত দেখিয়া বিম্ব-
ভাপন্ন হইলেন, যিনি সাধারণ ব্রীলোকের ন্যায়
দরিদ্র মৃত্যু ব্যক্তির গৃহে ধর্ম্ম পুস্তক পাঠ
করিতেছিলেন, তিনি মহাবল পরাক্রম ই।

রাজমিগের দখলী। ইংলণ্ডের এই গুণে
একটিমিগের আরাধ্য হইয়াছেন।

এক ব্যক্তি আপনাকে লেপ্টেনেন্ট ভগলাস
বলিয়া পরিচয় দিয়া উইপার্ট নামক এক জন
হোটেলরককের নিকট হইতে অনেক বস্ত্র
লইয়া গড়ন টুপার্ট কোম্পানির নামে এক
চেক দেয়। উক্ত কোম্পানি চেকের টাকা দেন
নাই। উইপার্ট লেপ্টেনেন্টের নিকট নগদ
টাকা লইতে আসিয়া দেখেন সে প্রহর করি-
য়াছে। উক্ত ব্যক্তি অত্যাশংকিত হইয়া নাই।
ইউরোপীয় ধুর্তের সংখ্যা ক্রমশঃ বৃদ্ধি
হইতেছে।

ইংলিসবান সম্পাদক অবশ্য করিয়াছেন,
যেডিকাল ইনস্পেক্টর জেনরল ডাক্তর হান্স
নাও ডাক্তর করলিখের কর্মে ও ডেপুটি ইন-
স্পেক্টর জেনরল ডাক্তর ডিকন ডাক্তর
বাকিলগের পদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন।

গত কল্যাণ হোট আদালতে গাম্পার না-
মক এক কিরিকি ও তাহার স্ত্রীর নামে ৫০ টা-
কার নালিশ হইয়া ডিকি হওয়াতে বিবি গা-
ম্পার বলিলেন আমার স্বামীর কর্ম নাই কি
একালে আমরা এই টাকা দিব? অজ্ঞ বুলনয়
বলিলেন তুমি বাইরা তাহার উপায় দেখ।

অন্যতঃ সেরে টাকার ১৩ সের শস্য বিক্রয়
হইতেছিল দিল্লীগেজেট সম্পাদক বলেন কিয়
দিবসের মধ্যে টাকার ৩৭ সের হইয়াছে। অ-
নেক আমদানী ইহার কারণ।

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন মহাবাহুর
প্রধান জ্যোতির্বিদ্য বার বোপদেব শাস্ত্রী প্র-
সিদ্ধ সংস্কারের বিপরীত প্রণালীর অনুসরণ
করাতে তাহার আজীর্ণতাৎপন্ন্য তাহাকে
স্বাস্থ্যচ্যুত করিয়াছেন।

এক জন্তু কখনো উক্ত পথে গিয়াছিলেন
জিসি সপার্টার নিকটে এক কয়লা ও লেড
আকর বাহির করিয়াছেন। সপার্টেতে দিদি
করলার আকর থাকে, উক্ত স্থান পাহারার
রেলওয়ের রানীগঞ্জ হইবে।

পেনসোয়ারস সেনানিগমে প্রস্তুত
বার আজ্ঞা দেওয়া হইয়াছে। আমদানিগে
নববর্ষেই আবার পারস্য যুদ্ধে নিগত
কেন না কি?

১৮ই টৈশাখ বুধবার।

লন্ডনে হুতন একটা কোম্পানি হইয়াছেন,

এ কোম্পানির উদ্দেশ্য এই তাহারা রেল-
ওয়েতে প্রবাদি আনিয়া ট্রেনে পোড়িয়া
দিবার নিমিত্ত রাস্তা প্রস্তুত করিবেন। শাখা
রেলওয়ে প্রস্তুত করিবার অন্যও আর এক
কোম্পানি হইয়াছেন। এইরূপ কোম্পানি হট-
লেট দেশের বখার্ব উপকার করিবার সম্ভাবন।

কিনিক পত্রে এক জন আবেদন করিয়া-
ছেন টাকশালের কর্ম চারিরা পুরাতন পোকা
রমিগকে পরগনা দিয়া হুতন লোকসিগকে
দিতেছেন। নববর্ষেই আবার বিলুপ্ত
কাজ করা টাকশালের অধ্যক্ষেরা গৌরবের
বিষয় জ্ঞান করেন।

উক্ত পত্রে ভগলপুরের সংবাদদাতা
লেন তাহার এত বন্ধু নাওডাল সিগকে ধর্মীয়
ধর্মাবলম্বী ও সভ্য করিতে গিয়া সেকা নামক
এক রক্ষ দেখিয়াছেন। তাহার হাল নিকো
না রকের ন্যায়। পত্র প্রেরণ অগ্রহান করেন
এই গাছে কুটনাটন হইতে পারে। উক্ত ডা-
ক্তর দ্বারা ইচ্ছা পরীক্ষা করা উচিত।

দিল্লীগেজেটে লিখিত হইয়াছে ৩৪
অবধি দিল্লী গয়াস্ত যো রাস্তা আ ৩ তথ্য
জয়নক ৮ তাত্ত হইয়াছে। তাহারা নির্ভর
এতদেশীয় ও ইউরোপীয় উভয়েরই সমাপ্তি
হুট করিতেছে। অতঃপর নিম্ন এই পলিস
কর্ম চারিরা এমিয়া এনিয়া জানেন কা।

উক্ত পত্রের কাগলসিদ্ধ সংবাদদাতা
লেন আবার সোজা সফলতা। অতঃপর
তাহার অবস্থা হইয়াছেন। রক্ষা করি নোট
হেতু নিজে সেনাপতিও গ্রহণ করিয়া লক্ষ্য
হারে বাইতেছেন। সোজা সফলতা বলেন
“আমি যদি জীবিত থাকি, চিরদিন সফলতা
করিব।” এই সময় আকবর না থাকিলে পা-
রস্য সেনারা কাবুলে প্রবেশ করিতঃ সমস্ত
হইত না।

মাসাজ টাইমস সম্পাদক অবশ্য করিয়া
ছেন মহাক্ষত্র রাজাকে তদীয় পৈতৃক রাজ্যে
আসিয়া বসিয়া হইবে না। আবার দ্বারমন্ডে
এ সমস্ত সমস্তে প্রস্তুত করিতেছেন কেন?
১৮ই টৈশাখ বুধবার।

সম্পাদকের লিখিত রেজিষ্টারের এত-
দেশীয় সেনাদিগকে হুতাইয়া দেওয়া হইয়া-
ছে। ইউরোপীয় সেনাচল কবে করিয়া আসি
বে?

এক জন প্রতি রেবেনিউ বোর্ড উঠাইয়া
দিবার আজ্ঞা হইয়াছে। বোর্ড কেবল অনস
সিবিলাসদিগের বিজ্ঞান স্থান।

সংশোধিত শুষ্কর আইন গত কল্যা
বিবিস্ত হইয়া নিম্ন লিখিত পদার্থ ১, ২, ৩, ৪, ৫
হইতে যুক্ত হইয়াছে। অসুস্থিত খণ্ড রোপা,
সীল, বস্ত্র, পত্র, অথ প্রভৃতি জীবিত লত
সকল, পদ, কয়লা, উট, পতি, প্রভৃতি, পদ
পদ, পাঠি ফোলা, চর্ম, পুস্তক, কাগজ মান
চিত্র, শিল্পকর্ম এবং যখন কোন স্থান
মা ১ টি বর্ষার্ধ বীজ্ঞান নবেন। লেও স
এবং যেরূপে বিশেষ দুরদশিতা প্রকাশ করিয়াছে
ন।

নিম্নোক্ত নিকটস্থ স্থান যমুনা সৌধ
আকর বাই হইয়াছে। মেজর পত্র
যে এই আকর হইয়াছে। উক্ত সৌধ
টিকিট একটা সামান্য কল ও কাঁচ
দিয়া সৌধ পরিষ্কৃত করিয়া প্রস্তুত
বলিয়াছেন।

লিখিত টিকিট দিয়া যমুনা সৌধ
বাসবিক পত্র হইয়াছে। ১৮ই টৈশাখ
২৭ জন সৈন্য দ্বারা সৌধ, ৫ পাঠি
ছেন।

গত কল্যাণ রাজ্যের বিখ্যাত বিজ্ঞান
জন বিজ্ঞান ও জন বিজ্ঞান, এক উপাধি
করিয়াছেন। ১৮ জন পরীক্ষার্থী
অন্য প্রণালী দ্বারা উত্তীর্ণ হইয়াছেন
এই বিজ্ঞান একজন অনেক অগ্রসর
হইয়াছেন।

কল্যাণ ১৮ই টৈশাখ ১২৬৩। ১৮
মহাক্ষত্র রাজ্যে সফল বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়া
করিয়া লবন করিয়াছেন। রাজ্য নিম্ন
হুতন গুলিগ স্থাপন করি বন, তদ্বিধি
কারতবর্ষ ১৮ মেজর নিকট হইতে জন টি
সৌধীয় পুষ্টি বর্ষচাষি চাউয়াছেন। পায়ের
রাজ্য দেশের অনেক উন্নতি সাধন করি-
ছেন। তখন অনেক পায়ের সাধারণ বা
শিল্প, জাহাজ, যুদ্ধ জাহাজ ও নানা প্রকার
শিল্প বিজ্ঞান হুতাইয়া হইয়াছে। রাজ্য রেল
ওয়ে প্রস্তুত করিবার অল্প বয়সকাল
সত্যতঃ প্রস্তুত আর কোথায় ও বন্ধ থাক
না।

সিলাপুরে একজন আর ওয়াউটার প্রা-
র্তন নাই। তদ্ব্যতীত পুরোধের নিক
টৈশাখ ১৮ প্রকাশার্থ তিন দিবস নিম্ন
বাঁচী পদালায় স্থিত করিয়াছিল।

চ ন বেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে এক
৭৭ বিদ্রোহীদিগের সহিত ইংরাজ ও করানী
সেনাদিগের সর্বদা যুদ্ধ হইতেছে। সশস্ত্র
সিংহ নামক নগরের নিকটে ৭৮০ বিদ্রো-
হীকে আক্রমণ করিয়া ১০০ ব্যক্তিকে বধ ও
৩০১ কে বন্দীকৃত করা হইয়াছে। বিদ্রোহীরা
তখনক অস্তগচায় করিতেছে। জাভারের
দিশে এই অনেক তাহাঙ্গিকে “হুদয়ান”
ও পার্শ্বিক বলির ছিলেন।

দিল্লির পথে লিখিত হইয়াছে ক্রাতি
তে যে ব্যক্তিকে নানা সাহেব বলিয়া ধৃত করা
হয় তাহাকে বোম্বাইতে প্রেরণ করা হইয়া-
ছে। একগ অভিযাত্র প্রবীণ করা হইয়াছে
তথায় তাহা ৫০ বৃত্ত করা হইবে। তাহার ক-
ইয়া কতি পূরণ কে করিবে?

হুতিকরিতে এবার ৮৮,০০০ টাকা দান
করা উদ্ভাটন কর হইয়াছে। ইজারদারকে
এবার কতি প্রত হইতে হইবে।

লাহোর জনিকেল পথে হুট হইল সশস্ত্র
পেনোদারে এক তরানক তুমিকল্প হইয়াছে।

২৭এ এপ্রেল রামপুর বোয়ালিয়ার লো-
করা এক লক্ষ করিয়া আট সাহেবকে এক
এভেস দিয়াছেন।

মামেরিকার এক ব্যক্তি রসায়ন বিদ্যা
দ্বারা দুর্ভুক্ত দুর্গ বেগজিন প্রভৃতি বাকসে
উজাইয়া দিয়ার উপায় উদ্ভাবন করিয়াছেন।

গেও অব ইতিবা সম্পাদক লিখিয়াছেন
“এতদেশীয় ব্যবস্থাপক সিনের প্রতি বিজ্ঞপ
কর। একনে প্রথা হইয়াছে। কিন্তু বিবেচক
দশক বাত্রেই কুহ টি ও স্বাধীনতা। তদাগ
করিয়া ভারতবর্ষের ঐতিহ্য দর্শন করিতে ই
কুক হইলে মঙ্গলোদয় ব্যবস্থাপক সভার বার
এসমুখার ঠাকুর ও রম্যপ্রাণ রায় বিশেষতঃ
ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার রাজা দিনকর
রাও ও দেবদারায়ণ সিংহের ব্যবস্থাপক কা-
ব্য দর্শন করিয়া অবশ্যই স্বীকার করিতে
আসিয়ার অভ্যুত্থান ঐতিহ্য হইবে। সে-
র মুখে একথা আরও কাল লাগে।

উক্ত সম্পাদক মহোদয় পূর্ব বাঙ্গালা দেশ
এক জন প্রবীণ কবিবরদের অধীনে রাধিয়ার
প্রস্তাব করিয়াছেন। তাহা না করিয়া বরং
প্রেরণিত, কবিবরদিগকে বিহার দেওয়া
করুক।

২০এ টৈশাখ শুক্রবার।

একগ জনকতি দেহ সাহেব নীচ ইংল-
ণ্ডে গমন করিবেন। তিনি পুনর্বার নবেম্বর
মাসে আগমন করিবেন। এদিকে ৩০এ এ
প্রেল দুপবার ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার
সেসিয়ন বন্ধ হইয়াছে। রাজা দিনকর রাও,
দেবদারায়ণ সিংহ প্রভৃতি বধ হয়ে গমন ক-
রিয়াছেন।

গবর্নর জেমসন আসিয়া করিয়াছেন ৩১এ
জুলাই অবধি টেলিগ্রাফে গালি ও বোম্বাই
হইতে গবর্নমেন্টের বয়ে ইউরোপীয় সমাচার
আসিবে না। সংবাদপত্রসম্পাদকেরা নিম্ন
নিম্ন ব্যয়ে তাহা করিবেন। মার্চ এলগিন
কি ইংলিসমানে গালির টেলিগ্রাফে বিরক্ত
হইয়াছেন?

টাইলস অব ইতিবা জিজ্ঞাসা করিয়া
ছেন, ভারতবর্ষের বিশ্ববিদ্যালয়ের বিএল
উপাধি ধারী ভায়েরা কি নিমিত্ত হুতন উচ্চ-
তন বিচারালয়ে ওকালতী করিতে পারিবেন
না? যদি ব্যবস্থাজ্ঞাত হইয়া কথা হয়, আম
রা বিলকণকণে বলিতে পারি, হুজির কো-
র্টের বারিটেরা প্রেসিডেন্সি কালেকের
পরীক্ষা দীর্ঘ চান্সরির অগেজা প্রথান হ-
ইবেন না। কিন্তু উদাহারিকে সহজে উচ্চতন
বিচারালয়ে বাইতে মিলে ইউরোপীয় ও এত
কেন্দীর বলিয়া প্রত্যেক থাকে কই?

চীন বেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে বি-
দ্রোহীরা নান্দ ত্যাগ করিবার ইচ্ছা প্রকাশ
না করিতে করানী ও ইংরাজ সেনারা তাহা
দিগকে আক্রমণ করিয়া বুরীকৃত করিয়াছে।
গবর্নমেন্ট বেডিক নামক জাহাজের সংহার
করিবার জন্য ২২, ২৭/৮/১০ টাকা দিয়াছেন,
ইহার মধ্যে ২১, ৬৩৮/১০ নগর ও ৩, ৩৩২
টাকার দ্বা কেরা হইবে।

সশস্ত্র হাবতার রেইলওয়ে টেননে আর
১২০০ বহুর কর্মজাগ করিয়াছে। তাহার
বলে লোকোমোটর (গাড়ি) ডিপার্টমেন্টের ব-
হুরেরা প্রত্যহ ৮ ঘণ্টা কাজ করে। কিন্তু তা-
হাদিগকে ১০ ঘণ্টা পরিচাল করিতে হয়।
কয়েক দিবসাবধি কাব্য বহিত হইয়াছে।
রেইলওয়ে কোম্পানি বহুরদিগের প্রাণ
পরিপূর্ণ করল, নতুন লোক পাইলেন।

পূর্ব বাঙ্গালার রেলওয়ে গাড়ি পরিবার
আর বড় বিলকু হই। পূর্ব বাঙ্গালার রেলওয়ে
রেল টেনন করণ করিলে হাবতার টেননকে
হুজির দ্বা বোধ হয়। তাহা পাই আর ২০০
হুজ হইবে। তাহা পাই ইহা বিলকু, এক
মিলে আদারিয়া উজির, সবার দিগে না-
সিবেন, আর গাড়ি পাইয়া থাকিবে।
পূর্বক হই হইয়াছে। তাহা পাই গাড়ি

পাড়ির দ্বা। বোম্বাই রেইলওয়ে কুতরি
প্রতির শকটে রোহ ও হুজিতে বড় পাইতে
হয়, ও বসিবার কই, কিন্তু ইহাতে সে সকল
কই নাই, ইহার তুতীর প্রেরণ গাড়ি সকল
কুহ কুহ কামরার বিলকু, প্রত্যেক কামরার
তুই খানি বেত আছে। আর প্রত্যেক কামরার
জামানা ও বহুখতি আছে। যদি পূর্ব বাঙ্গা-
লার রেইলওয়ে কোম্পানি তাহার অপকর্ত
করেন, তাহা হইলে উদাহারের গাড়িকে আ-
রোহীর সংখ্য থাকিবে না।

স্বাধীনমতে সম্পাদক বলেন মহারাজ বি-
দ্রোহী ও রাজা দিনকররাও আগন্তুক দিন
করিয়াছেন।

২১এ টৈশাখ শনিবার।

পূর্ণিমা হইতে একজন বিদ্রোহী শত্রু দি-
খিয়াছেন তাহার সশস্ত্র তরানক কুহ হইয়া
গিয়াছে। এবার সশস্ত্র বিশেষ প্রাণতীক দেখা
বাইতেছে। কয়েক দিবস পূর্ণিমা কলিকাতায়
এ বত কুহ হইতেছে যে পুলিশ কর্মচারীরা
গম্ভীর পানীতে আরোহী উজির নিবেশ
করিয়াছেন।

আমেরিকার গবর্নমেন্ট পুনর্বার এক কথা
বুঝে জরী হইয়াছেন। বহুবিধ প্রভৃতি দেশ
সকল উদাহারের অধীন হইয়াছে। এই
বার বোধ হয় ক্রীত দাসদিগের পাই এক
হইল।

আমরা সমাচার পাইতেছি যে, আমেরিকা
প্রদেশের প্রবাসিদের আশঙ্কিত করা হইতেছে এবং
কলিকাতায় কলিকাতা হইতে বহু কলিকাতায়
হুজি হইতে বহু কলিকাতায় হুজি হইতে
রোহা অম্যার কর হুজি করিতেছে।
কালেকেরা একপ্রকার উদাহারের সমা-
তা করিতেছেন। লোকেরা গবর্নর পাই
হইয়াছে বলিয়া কি বিলকু উজির পাই-
হাছেন?

গবর্নমেন্ট বহুদেশের বিদ্রোহীরা অন্য
এবার ১৪ লক্ষ টাকা দিয়াছেন। ইহার মধ্যে
অনেক লক্ষের বেতন হুজি করা হইতেছে।
বিলকুদিগের বেতন হুজি করা আবশ্যিক, কিন্তু
মহুদার টাকা বের হইতেই পর্যাপ্তি না হয়।

ইংলণ্ডে একটি প্রীলোক এক কালে তিন-
টি পুত্র প্রসব করিয়াছে। ইংলণ্ডের ৬৩
প্রীলোককে ৩০ টাকা পুরস্কার দিয়াছেন।

গত কল্য হুজির কোর্টে ৭৮ চারলস জাক
নদের সম্মুখে জন প্রবাসক ইউরোপীয় হতা-
কারী কির হুজি। তাহার অধিকার উপাধিত
না থাকতে আগাধি সেসিয়নপাত তাগ-
হুজিত হইল। ১৮ জন বিচার সেসিয়
ন আরম্ভ হইবে।

শেখ মুজিবুর রহমান জাতির জনক ১৫ আগস্ট ১৯৭৫

সোমপ্রকাশ

অবতারণা প্রতিষ্ঠিতার পার্শ্বঃ সরস্বতী প্রতিমহতীন ইয়তঃ।

৪ ভাগ।
২৬ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২। ৩০ বৈশাখ। ইং ১৮৬২। ১২ মে }

মাসিক দাম ১ টাকা।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

সমাচার পত্র সম্পাদকদিগের
প্রতিবক্তব্য।

সমাচারপত্র সম্পাদকদিগের প্রতি আমাদের
দিগের বক্তব্য এই, তাহারা মোক্ষপ্রদা-
নের বিষয়ে আশাশ্রিত হইয়া সর্বদা সৎ
পত্র প্রকাশ করিয়া থাকেন, তাহা সংস্কৃত
কালেজের ছাত্রদের নিকটে পাঠাইয়া দি-
বেন। সমাচার পত্র তির অন্য কোন পত্র
লিখিবার যদি প্রয়োজন হয়, সে সকল পত্র
সংস্কৃত ভাষায় প্রেরণ করিবেন।

বিজ্ঞাপন।

ঐযুক্ত কালীপ্রসন্ন সিংহ মহোদয়ের কর্তৃক
অধ্যবসিত বহাচারতায় উল্লিখিত পত্র প্রস্তুত
হইয়া বিতরণিত হইতেছে, প্রাকগণ আশিয়া
গ্রহণ করুন।

পুরাণসংগ্রহ প্রাধান্য বিচার
কলিকাতা বোড়ার কাছে। প্রধান বিতরণী।
শকাব্দ ১৭৮৩/২৪ বৈশাখ

সোমপ্রকাশ।

৩০ বৈশাখ সোমবার।

পত্র প্রেরকের প্রতি।

গত সপ্তাহে অগ্রিম ২০ খান প্রেরিত
পত্র আমাদের হস্তে গত হইয়াছে। ইহা-
র কতকগুলি দীর্ঘকাল, কতকগুলি অন্য
ও কতকগুলি ভাষায় প্রেরণযোগ্য
নয় বলিয়া সকলগুলি প্রেরিত হইল না।

— ৩ —

নীলপ্রধান প্রদেশে সমস্ত গবর্ণ
মেণ্টের সম্মেলন।

এক জন নীলীয়া হইতে ৩০এ এপ্রেল
পের ইন্ডিয়ান মিররে লিখিয়াছেন “কেবল
একটি কুটির আর হাজার প্রজা ভেপুটি
কালেক্টরের নিকটে আবেদন করিয়া
জানাইয়াছে যে তাহারা দুই দিনের মধ্যে
জাহাঙ্গিরের জমা ত্যাগ করিবে।; নীলক
রেরা যে অভ্যাস করিতেছে, ইহাতেও
কি আর তব্ধবে সন্দেহ থাকে : লোকে
বিশেষতঃ বাঙ্গালা দেশের লোকে অস্প
ষ্ট হইলে কি পৈতৃক বাস স্থান ও জমা ত্যাগ
করিতে পারেন? নীলকরদিগের ইচ্ছাই যদি
বলবতী হইল, গবর্ণমেন্টে প্রয়োজন কি?
গবর্ণমেন্ট কি একপ বিশ্বাস করিতেছেন
যে এই সকল প্রজা কুলোকেব কুপারামর্শে
নীলকরদিগের তর্য প্রদর্শনার্থ এইরূপ
আবেদন করিয়াছে। তাহারা যখন বাস্তবিক
জমা ত্যাগ করিবে তখনই গবর্ণমেন্টের
চৈতন্য হইবে। নীলকরেরা অবলীলা
জ্বলন অসমর্থ রূপে করতল করিতেছেন;
যে কালে একজন কর ছিল, সে কালে চারি
পাঁচ জন কর খাতিয়া করা হইয়াছে। কর
হ্রাস করিবার আর ৮০,০০০ বিজ্ঞাপন
বেওয়া হইয়াছে। ভেপুটি কালেক্টরেরা
গবর্ণমেন্টের কৃত্রিম নীল প্রদেশে বিস্ময়িত
হইয়া স্বেচ্ছাক্রমে নীলকরেরা
যে কর হ্রাস করিতেছেন তাহা অসমর্থ
নহে। তাহারা যে আশঙ্কিত করিতেছে
তৎপ্রতি কর্তৃপক্ষ কর্তৃক হইয়াছে না। তাহা

হাদিগের গো, মহিষ, গৃহাশ্রিত করি
য়া অম্যায় কর আদায় করা হইতেছে।
নীল প্রধান প্রদেশের সর্ব স্থলেই ইহা
কার ব্যবস্থা হইয়াছে। আর দুই বছর
কাল ক্রমাগত মোকদমা করিয়া করিয়া
করকেরা অবসন্ন ও নিতান্ত বিব্রত হইয়া
পড়িয়াছে। সুবিচার হইলে বরং জাহাঙ্গি
রের কোত কিঞ্চিৎ দূর হইত; কিন্তু জা
হাঙ্গিরের ভাগ্যে সেটি ঘটিল না। জাহা
ঙ্গিরের দুই কুলই মোকদমা করিয়া
কমিসনার জাজন সাহেব কর
সংস্থা মোকদমার সুবিধার প্রার্থনা
হইয়াছে; কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখিলে
নিঃসংশয় প্রকীর্তন হইবে, জাহাঙ্গির
এ আত্ম বিক্রম্য রাজ হইবে, প্রজা
দের ভাগ্য সুখি হইয়া উঠিবে। তাহার
সকলকে সিবিজিয়ান ও অচিরিত ভেপুটি
কালেক্টর প্রকৃতিকে জানেন, তাহার
অবশ্যই স্বীকার করিবেন উক্ত প্রকীর্তি
দিগের আত্ম অমোঘ; তাহারা একবার
যে আত্ম দেন, তাহার আর পরিবর্তন
হইবে না। ফলতঃ প্রাকগণ সাহেবের অ
জ্ঞান প্রজাদিগের আর কিছু দায় হইবে
এই মাত্র।

অথবা, আমরা গবর্ণমেন্টকে বুঝা
বলিতেছিই বা কেন? নীলকরেরা যা
র্যের জমা কর পারেন এমন কর নাই
গবর্ণমেন্টের এটি বুঝা দূরে থাকুক, তাহা
আবার নীলকরদিগের সহায়তার জন্য
এক জনের অপরাধে পরীক্ষা হইবে

কর্তার লোকের দণ্ড বিধানের বিধি বিধি
বদ্ধ করিতে উদ্ভূত হইয়াছেন। আমরা
গবর্ণমেন্ট সকল বিষয়েই অসন্তুষ্ট।
কয়েকটি যুদ্ধ প্রিয় সভা জালিয়া
হইলে বারন রিকেসলি তা
সমস্তার বলেন, সকল সভা
নিষেধিত; গবর্ণমেন্ট তাঁ
হাদিগের দ্বারা শান্তি ভঙ্গ হইবার ভয় ক
রেন; কিন্তু সেই শান্তি রক্ষা করা "কি গব
র্ণমেন্টের কর্তব্য নহে"। তাঁহারা সতর্ক
হইবেন যেন কেহ অম্যারিটরণ করিতে
না পারেন। এ-দেশের কর্তৃপক্ষ এই নীতিটি
বিস্তৃত হইয়াছেন। বর্তমান বিশেষের অর্থ
সম্প্রদায় বিশেষের অতীত সাধন উদ্দেশ্য
করিয়া কোন বিধি বিধান অতিশয় গর্হিত।
একের অপরাধে অন্যের দণ্ড বিধান কি
শান্তি রক্ষার সঙ্গুপায়? এতদ্বিধি কি শান্তি
রক্ষার উৎকৃষ্ট উপায় নাই? নীলকরদি
গের অত্যাচার নিবারণ হইলে কি সহজে
শান্তি রক্ষা হয় না? আমরা গবর্ণমেন্টের রাজ
পুত্রকে কি নীলকরদিগের ন্যায় মনে
নব্বয় প্রজাতি চিরকাল তাঁহাদিগের যে
ফাটরিয়া ও "জিরাজিকারীদিগের," অত্যা
চার সহ্য করিবে? যে সম্প্রদায়ের প্রতি
নিষিদ্ধা বলেন গবর্ণমেন্ট মজুরদিগের বে
তন বৃদ্ধি করাতে চা করদিগের কষ্ট হই
তেছে, সে সম্প্রদায় এ দেশের কেমন
হিউম্যান গবর্ণমেন্ট বুঝিয়াও বুঝিবেন না।

অধিক কথা কি, আমরা গবর্ণমেন্টের রাজপু
ত্রকে নীলকরদিগের মায়াজালে বদ্ধ হ
ইয়া পড়িয়া মিরজাবির বৈফল্য সম্পাদনে
উদ্বিগ্ন হইয়াছেন। তাঁহারা ১৮৫৯ অব্দের
শান্তি করিয়া লিখিয়াছেন

১. "নীলকরদিগের সম্প্রদায় গত দুইবারের প
রে অত্যন্ত বৃদ্ধি করিয়াছেন হারাজ লভের মতন।
গবর্ণমেন্ট হুজুর হইয়াছে আফগানের চা-ক-র
২. "নীলকরদিগের পাইতেছেন না। এই সকল
লোক অপমানিতকে সভা ও ভারতবর্ষের
বর্ধমান বৃদ্ধি করিয়া গরিব দিতে পরাও
হইবে না।"

কেহ পরগণার হারের অতিরিক্ত কর লই
তে পারিবেন না এবং যে স্থলে কৃষকদি
গের মধ্যে ভূমির উৎকর্ষ সাধিত হইবে
তথায় কর বৃদ্ধি করা হইবে না। এই আ
ইনে কি অলাভানি দেওয়া হইবে? নীলক
রেরা নীলগবণ করাইবার উদ্দেশ্যে অসমত
করদার্য্য করিতেছেন, ইহা কি এখনও
জানিতে বাকী আছে? আবাবের তথ্যই
নাট। গবর্ণমেন্ট কি ইহার নিবারণ করিবে
ননা? গত শতাব্দীতে তাতারেরা রুশিয়া রা
জ্যত্যাগ করিয়া চীন দেশে গমন করে; তন্নি
বন্ধন আফ্রিকার শাসনকর্তা যাবজ্জীবন
করাবদ্ধ ও চিরকালের জন্য বৃণাজন
হইয়াছেন। বঙ্গদেশীয় প্রজাতি কি তা
হাদিগের অবলম্বিত উপায় গ্রহণ করিতে
উদ্যত হয় নাই? এক্ষণে তাহারা নীলকর
দিগের জমীদারি ত্যাগ করিয়া অন্যত্র বা
ইতেছে। কিন্তু গবর্ণমেন্টের শাসন এণ্ড
ীদোষে যদি তাহারা সেখানেও ভিত্তি
ধাকিতে না পারে, শেষে কি ভারতবর্ষীয়
গবর্ণমেন্টের অধিকার পরিত্যাগে উদ্বিগ্ন
হইবে না? গবর্ণমেন্ট কি শেষে এইটা দে
খিতে চান

"আমরা বারবার কহিতেছি গবর্ণমেন্ট
নীলকরদিগের অসমত কর গ্রহণ প্রয়াস
রহিত করুন এবং প্রত্যেকের ভূমির সী
মা বদ্ধ করিয়া বর্ধার্য্য করদার্য্য করুন। বি
শেষ কমিসনরেরা প্রত্যেক পল্লীগ্রামে
গিয়া ভূমি জরিপ করিয়া কর নির্ধারণ
করিয়া আনুন। কর লইবার জন্য বৎস
রের কয়েক দিন স্থির করা যউক। নীল
করেরা করনা লইলে নিকটবর্তি কালেক্ট
র ও ডেপুটি কালেক্টরের নিকটে তাহারা
টাকা জমা করিয়া দিবে। এবং আবাব
প্রভৃতি এককালে নিষেধ করিতে হইবে।
এই উপায় অবলম্বন না করিলে কিছুতেই
নীলকর ও প্রজাদিগের পরস্পরের বিরোধ
শান্তি হইবে না। বাহারা অদ্যাপিও তা
কে, পুনর্বার নীল জমিবে তাঁহারা বিব

জামে পতিত হইয়াছেন। তাঁহারা মিস্ত্র
জানিবেন বঙ্গদেশে নীলের শেষ হইয়াছে।
নীলকরেরা যদি ন্যায্য কর লইয়া সন্তুষ্ট
না হন, তাঁহারা এই সিদ্ধান্ত করিয়া রাখুন
কিছু দিন পরে তাঁহাদিগকে আপন আপন
জমীদারী পতিতভূমির দেখিতে হইবে।

কাগলের বৃদ্ধ

আমরা পূর্বে পাঠকবর্গের গোচর ক
রিয়াছি। পাবলীকসেনারা আর্মীর দোস্ত
মহম্মদের রাজ্য আক্রমণ করিয়াছে। তা
হারা কোরাসান হইতে করা পর্য্যন্ত আনি
য়া তথায় আর্মীর পুত্র মহম্মদ আকবুল
হাদিকে পরাজয় করে। পরে তাহারা করা
বগর অধিকার করিয়াছে। আর্মীর তখন
জেলেলাবাদে ছিলেন। তিনি তৎকালে
কয়েক জন অস্থিরমতি অবাধ্য সরদার ও
জারগীরদারের সম্মতি বাজেআলু করি
বার কায্য লইয়া ব্যস্ত সমস্ত ছিলেন। এই
অশান্ত সন্ধান তাঁহার কর্ণগোচর হইলে
তিনি উক্ত সরদারদিগের অনেকের জার
গীর প্রত্যাগ করিলেন এবং তাঁহাদিগকে
শত্রুর সহিত যুদ্ধ করিতে আহ্বান দিলেন।
এদিকে হিরাটের রাজা সুলতান জান
পারসীক সেনাদিগের সহায়তা করিতে
ছেন, তাহারা ক্রমশঃ অগ্রসর হইতেছে।
দোস্ত মহম্মদের কয়েক জন সরদার ও
বিপক্ষ পক্ষ পক্ষপাতী হইয়াছেন। তা
হার সম্ভাব্য সেনাপতিও তাঁহার প্রতি সম
র্থক অনুসৃত নহেন। উক্ত আর্মীর হিরা
টের রাজার উপরে অধিকতর জাতমন্য
হইয়াছেন। তিনি স্পষ্টাক্ষরেই কহিয়া
ছেন "পরমেশ্বরের ইচ্ছায় যদি আমি জী
বিত থাকি, তাহা হইলে হিরাট ভূমিসাৎ
করিব।" তিনি ইহা অপেক্ষাও মহামহা
বিপদ হইতে উত্তীর্ণ হইয়াছেন সভ্য; তাঁ
হার বুদ্ধির তীক্ষ্ণতা, রূপপাতিয়া ও সমর
চাতুর্য্যের বিষয়ে কেহ সন্দেহ করেন না।
কিন্তু তিনি এক্ষণে অতিশয় রুদ্ধ হইয়া

হেন। তাঁহার বীর্যবর পুত্র আকলাপ
(বাধাকে আকলাপের) দেহে কলক
বলতঃ 'বোঝা আকবর, রমিত' প্রাণ
ত্যাগ করিয়াছেন। পারস্য সেনারাও
যুদ্ধ বিঘ্নে অসুস্থপন্ন হইবে, অতএব দোস্ত
মহম্মদ নীচ যে তাহাবিগকে সুসীমিত ক
রিয়া উঠিতে পারেন একপ বোধ হয় না।

আমাদিগের গবর্ণমেন্ট এ সময়ে কি
করিবেন? এখন এই প্রেরণ মীমাংসা করা
আবশ্যক হইতেছে। ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট
ও অত্রতা গবর্ণমেন্ট উভয়েরই এই সংকা
র আছে, ভারতবর্ষের প্রতি রুশিয় সমু
টের বিলক্ষণ সতৃক দৃষ্টি আছে। তিনি
সুযোগ পাইলে কোন ক্রমেই তাহা পরি
চাল্য করিবেন না। পারস্যাবিশিষ্ট উক্ত সমু

টর অনুগত; তাঁহার সহায়তার সমুটের
ভারতবর্ষে আগমন অসম্ভাবিত নহে। তা
রতবর্ষে আসিতে হইলে হিরাট হইয়া আ
সিতে হইবে। এই নিমিত্ত ইহা ভারতব
র্ষে 'হার', বলিয়া নির্দেশিত হইয়া থাকে।
এই নিমিত্তই লর্ড আকলাপ ১৮৩৯
অব্দে আকলাপহানে সেনা প্রেরণ করিয়া
৩০,০০০ সৈন্য ও ইংরাজ জাতির গৌরব
বিনাশ করিয়াছিলেন। এখন পর্য্যন্তও আ
মাদিগকে এই অকিস্মাকারিতাবিকৃতিত
যুদ্ধে ১৭ কোটি টাকা ব্যয় করিতে হইতেছে।
১৮৫৬ অব্দে যখন পা
রস্য সেনারা হিরাট অধিকার করে, সর
জেমস্ আউটরাম পারস্য দেশ আক্রমণ
কহিতে যান। হিরাট পারস্যরাজ্যের হস্ত
গত না হয়, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের এই
ঐকান্তিক চেষ্টা। তাঁহার দোস্ত মহম্মদ
বাঁকে ভারতবর্ষের কলক স্বরূপ জ্ঞান ক
রেন। এ সময়ে কি তাঁহার এ হৃদয় আত্মী
রকে শত্রু হস্তে নিক্ষেপ করিয়া নিশি
ধাকিবেন।

রুশিয় সমুটের ভারতবর্ষে লক্ষ্য
আছে এ কথা অস্বার্থ্য নহে, কিন্তু এক্ষণে
রুশিয়ান বৈরপ গোলাযোগ উপস্থিত।

রাষ্ট্রনির্বাসন সত্তাবনা হইয়াছে, তাহাতে
ভরসা সমুটি যে এমন সময়ে ভারতবর্ষের
দিকে দৃষ্টিপাত করিবেন কোন রূপেই
একপ বোধ হইতেছে না। আর যদিও
তিনি ভারতবর্ষ আক্রমণ করিবার ইচ্ছা ক
রেন, তাহাও পূর্ণ হইবার সম্ভাবনা অল্প।
চারি লক্ষ রুশিয় সৈন্য সমভিব্যাহারে না
লইয়া ভারতবর্ষে প্রবেশ সুসাধ্য নয়। না
দীরগাহ প্রকৃতি সহজে ভারতবর্ষ জয় করি
য়াছিলেন বটে, কিন্তু সে কাল অতীত হই
য়াছে। রুশিয় সমুটি যদিও চুরাশাশ্রিত হই
য়া ভারতবর্ষে আগমন করেন, অনতিবিলম্বে
তাঁহাকে পলায়ন করিতে হইবে। ভারত
বর্ষে নীল ও ইনকম টাক্স ঘটিত যে কিছু
গোলযোগ থাকুক না কেন, এদেশীয়েরা
করাশি অথবা রুশিয়দিগের অধীনতা বী
কারে উন্মুখ নহেন। যদি সুখ ও স্বাধী
নতা আমাদিগের অদৃষ্টে থাকে, ইংলণ্ডের
অনুগ্রহেই হইবে। যখন দেশের লোক
সেবাগণ ও গবর্ণমেন্ট সকলেই বিকপ, ত
খন রুশিয়দিগের প্রবেশে আসিয়া কৃত
কার্য হইবার সম্ভাবনা কি? দোস্ত মহম্মদ
পুরাতন বন্ধু, তাঁহাকে সাহায্য দান করা
উচিত বটে, কিন্তু যেন আমাদিগকে পুন
র্বার ১৭ কোটি টাকা ব্যয় হইতে না
হয়। আমরা এখন পুরুষদিগের অবি
স্থাকারিতাদোষে পুনরায় যেন বিপদাপন্ন
না হই। আমাদিগের গবর্ণমেন্ট পারস্যাবি
পতির সহিত যুদ্ধে লিপ্ত হন, ইহা কোন
ক্রমেই আমাদিগের অনিচ্ছিত নহে।
আমরা স্পষ্টাক্ষরে ইহার প্রতিবাদ করি
তেছি। সম্প্রতি ভারতবর্ষ ভারতের অর্থ
কুহু হইতে উত্তীর্ণ হইয়াছে, এখনও স
ম্পূর্ণরূপে ইনকম টাক্স রূপ রাজ্যগ্রাস হইতে
মুক্তিলাভ করিতে পারেন নাই; এ সময়ে
যে ব্যক্তি গবর্ণমেন্টকে অর্থ আসিয়ার
সৈন্য প্রেরণে উৎসাহিত করিবেন, তিনি
ভারতবর্ষের শত্রু বলিয়া পরিশুদ্ধ হই
বেম সন্দেহ নাই।

উৎসব ও উৎসবদিগের ব্যক্তিগণ।
একদা আর আট্টাইক মাই, সে কার
গিয়াছে, হৃদয়লগ্ন অমোদে এই আশ্রয়
করিয়া থাকেন। কলক আশ্রয়দিগের সম
জের একটি বিশেষ অবস্থা ঘটিয়াছে, ইহ
অন্যদেশে দৃষ্ট হয় না। অন্য অর্থ বৈদে
নবাত্ত নৃত্য, গীত, বাজ্য প্রকৃতি তাঁহা
সেন, হুজুরা এ সকলের নিকটে হইতে নি
দায় গ্রহণ করিয়া থাকেন, কিন্তু বসন্তে
হুজুরাই বাবা, পাঁচালী প্রকৃতিতে আসন
এবং কৃতবিদ্য হুবকেরা তাহাতে নিম্ন
হইয়া পুস্তক পাঠ, সত্যার তর্ক বিতর্ক ও স
বান পত্রাবি পত্র সমধিক অনুরক্ত হইতেন
হুজুরা উল্লিখিত ব্যক্তিগণ আমোদে
হুজুরা লম্বুচেতার কর্তৃক বিবেচনা করেন।
বাঁহার উল্লিখিত আমোদের বিবেচন
বোধ হয়, তাঁহার এই কথা কহিলে
আজি কালি চাঁদা, সত্য, রাজনীতি সংগ্র
হ তর্ক বিতর্ক ও বর্ণন বিজ্ঞানাদি শিক্ষা
কাল উপস্থিত, এ সময়ে কি কোন এক
আমোদ করা উচিত? আমাদিগের মা
জুমির কি একপ অবস্থা হইয়াছে? ব
মরা হুজুরার হিতসাধন পরিচাল্য করি
কেবল নিজ সুখের প্রতি দৃষ্টিপাত করি
উল্লিখিত অর্থ আমোদ আমোদ আস
হইবে? পক্ষান্তরে উৎসবদিগের ব্যক্তি
বলিতে পারেন "আমরা যদি বাবাইয়
পূজা করি, বাই মাচ দেখি, অথবা ব
লুনি, তাহা হইলে নব্য সম্প্রদায়ের সা
মকেরা ক্রুদ্ধ হইয়া উঠেন; জানি যা
পেলে নিশা হয়, প্রাণ্ট সাহেবের অর
চিহ্নে না দিয়া যাওয়ার পাতলা দিলে
বায় হয়। তবে কি আমরা কেবল পেচ
মাত্র গভীর হইয়া বসিয়া থাকিব? পা
গণ! আমরা ইহার অন্যতর কোম বটে
অনুমোদন করিতেছি না। আমোদ নি
আবশ্যক, ইহা প্রকৃতির নিয়ম। আমাদি
র শরীর বৈকল্য নিস্তার পর সূক্ষ্মবল ও
হন আমাদিগের পবিত্র চেতন আমাদিগে

মন সুস্থ ও আনন্দিত হইয়া। কোমল ব্যক্তি স
মস্ত দিন কেবল গিরি, শিকড়কা, কিয়া
ওকালতী করিতে সমর্থ হইত। কিন্তু সকল
প্রকার আমোদ প্রমোদ সকল সময়ে ও
সকল অবস্থায় প্রীতিকর হইয়া। সুকোরা
যে যাত্রা পাঁচালী প্রভৃতিতে আমল সুখ
অনুভব করেন, নব্য সঙ্গীতকারের তাহা ভাল
নামে না কেন, এক্ষণে তাহাদের বিবেচিত
হইতেছে।

পূর্বকালে যে যে বিষয়ে হিন্দু জাতির
জীবিত লাভ হইয়াছিল, এই জাতির রাজস্ব
ও স্বাধীনতা লোপের সঙ্গে সঙ্গে সে সমুদায়
বিষয়েরই প্রায় ক্ষয় হইয়া যায়। অতি
দূরাদি বিষয়ে হিন্দু জাতি যে উৎকর্ষ লাভ
করেন, ক্রমে তাহার বহু বিপর্যাস হয়,
তকিরিখী রুচিও ক্রমশঃ বিপর্যাস হইয়া
উঠে। আমরা এক্ষণে যে যাত্রাদি দর্শন
করি, তাহা সেই রুচি বিপর্যাসবোধের
ফল। এখন সে রসভূমি নাই, এখন সে
অনুরূপ ভূমিকা, বিস্তৃত নাট্যাঙ্গি ও বিস্তৃত
সংগীতাদির রীতিও নাই। এখন সমুদায়
দায়ই বিকার প্রাপ্ত হইয়াছে। আলমারি
কেবল অলীক লোককে নাটকের একটি
প্রধান দোষ বলিয়া গণনা করিয়াছেন,
কিন্তু এই দোষটি একজনকার যাত্রাদির একটি
প্রধান গুণ বলিয়া ব্যাখ্যাত হইয়া থাকে।
যথেষ্ট যে কতগুলি লোক হইয়া গিয়াছে
এবং এখনও আমরা যাত্রাদিগকে বুদ্ধ এই
শব্দ দ্বারা নির্দেশ করিয়া থাকি, তাহাদি
গের অধিকাংশ লোক এই সকল অলীক
যাত্রাদির একান্ত ভক্ত। এই মহাপুরুষের। কে
বল যে আমাদের দেশের নাটক নাট
কা প্রভৃতির অভিনয়াদিকে হীন দশা পা
ওয়াইয়াছেন একপ নকে, হাজারিগের
হইতে আমাদের দেশ নানা প্রকারে
বুদ্ধিশা ও দুর্ভাগ্য প্রাপ্ত হইয়াছে। তাহাদি
গের যেকোন গুণ, তাহাতে একপ দটনা
হওয়া অসম্ভাবিত মনে। তাহারা না জা
নের সংস্কৃত, না জানেন বাঙ্গলা, না জানেন

ন ইংরাজী। হাজারিগের এমন গুণ, তা
হাদের অসাধ্য কি আশীর্বাদ সকল
এদেশের যাবতীর লোকের যে প্রবন্ধক
বলিয়া গালি দিয়াছেন এবং সর মড়াট
ওয়েলস যে আজি ও গালি দিতেছেন, সে
কেবল এই মহাপুরুষের গুণে। চুলকাটা
নোঁপহাটা আমল। দলই উহারিগের প্রধা
ন। গলাস্তরে, নব্য সঙ্গীতকারের নামাধি
ইংরাজী এছ পাঠ করিয়া রুচিপরিবর্ত হই
য়াছে, সুতরাং চলিত সম্ভাষণ বাত্মনিত্তে তাঁ
হাদের প্রীতি আছে না। এক একটা ক
রিয়া ধরিয়া দেখ, উহাতে প্রীতি জন্মবার
সম্ভাবনাও নাই।

প্রথম, ওস্তাদিকবিতা। সখীসবাদ, বি
রহ প্রভৃতি কতকগুলি গান অপ্রশংসনীয়
নয়, কিন্তু বাদ্যে ও স্বরের যেকোন মিষ্টতা,
তাহাতে এই কবিতা যত শীঘ্র বিলুপ্ত হয়,
ততই অজ্ঞানের বিষয়। হুলে ও কাওয়া
বাদ্যকর, গায়কেরা ও প্রায় জাতিতে একপ
মোহাদিগের প্রভাব চীৎকারধনি ও খেউ
ফেতে এই কবিতার উৎকর্ষের পরিণাম প
রিচয় দিয়াছে। দ্বিতীয়, যাত্রা। ইহা বরং
কতক ভাল। কিন্তু ইহা প্রাচীন কালের
অভিনয়ের বিকৃত আদর্শ। অভিনয়ের তিন
ভিন্ন ব্যক্তির রূপ, বেশ, বাক্য ও ব্যবহা
রের প্রতি কিছুমাত্র দৃষ্টিপাত করা হয়
নাই। আঙ্গুলবাতিও কখন খশোদা
সাজে, গৌরবর্ণ বালকও কখন কৃষ্ণ হয়,
এবং কাকি সঙ্গ শ্যামবর্ণ বালক ও রাধার
রূপ ধারণ করে। পরিচ্ছদের বিষয়েও এই
রূপ। যাত্রার ঢাকাই শাড়ি পরা বর্শে দাও
কখন কখন দেখিতে পাওয়া যায়। শোক,
রাগ, সখোষ প্রকাশ করিবার সময়ে
কখনকি প্রকার অঙ্গভঙ্গী করিতে হয়,
তাহা যাত্রার নট নটী প্রভৃতি কেহই
জানে না। ব্যহারের বিষয়েও নিতান্ত
অনভিজ্ঞ। হয় ত প্রজ্ঞানচরিত হইতেছে
এমত সময়ে বরংক জন ইংরাজের বেশ
ধরিয়া আসিয়া উপস্থিত হউল। পাঁচালী,

হাপ আকড়াই প্রভৃতিও কখনই নাই।
ইহার ভিকটে ওস্তাদি ও যাত্রা
সহস্র গুণে অপ্রশংসনীয়। অধিক কথা
কি, মদ, গুলি, ও গাঁজার পরিপাক না
হইলে পাঁচালী ও হাপ আকড়াই দলে
প্রবেশাধিকার হয় না। বহু দিন আমল
গের জীলোকেরা সংগীত বিষয়া না শিখি
বেন, তত দিন বাই ও পেমটার প্রভৃতি
দূর চাইবে না। সামান্য বারাদনা লইয়া
আমোদ করা কিস্যাতার বিপরীত কাব্য
নহে।

যাত্রা, পাঁচালী, বাই ও খেমটা প্রভৃতি
একে একে সকলই বর্জিত হইল, তবে কি
আমলিগের দেশের লোকেরা এককালে
উন্নত প্রমোদে বঞ্চিত থাকিবেন। ইহার
উত্তরে আমাদের বক্তব্য এই, আমলি
গের পূর্বতন অভিনয়াদি পুনরুজ্জীবিত
হউক। রত্নাবলী, শকুন্তলা প্রভৃতির অভিনয়
দর্শন করিয়া আমরা তাবিরাজিলাম
এই সত্য আমোদ ক্রমশঃ পুনরুজ্জীবিত
হইবে, কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই, আর
উহার প্রদান নাই। জীবিত বাবু রাধামাধব
হালদার প্রভৃতি কয়েক ব্যক্তি সাধারণ
রসভূমি করিবার প্রয়াস পাইয়াছিলেন,
কিন্তু উৎসাহ বিরহে তাহা পরিত্যক্ত
হইয়াছে। পুনরায় তাহাদি পর এ বিষয়ে
চেষ্টাবান হওয়া উচিত। যতাবের অনু
করণ দর্শন ব্যক্তিরকে কৃতবিদ্যাবাদি
গিগের নরন ও মনের প্রীতি জন্মিবার
সম্ভাবনা নাই।

—••—

মুদ্রণ প্রস্থ।

সম্প্রতি হুইথানি মুদ্রণ প্রস্থ আমরা
গের হস্তে আসিয়াছে। সীতাহরণ ও প্রকৃ
তিপ্রেম। ঢাকা বাঙ্গালবাজার প্রান্তে
দের দ্বিতীয় শিকক জীবিত বাবু মোহন
চাঁদ বসাক সীতাহরণ প্রচার করিয়া ঢাকা
বাঙ্গলায় প্রস্তুত করিয়াছেন। ইহার
মূল্য আট আনা। প্রকৃতিপ্রেম কলিকাতা

হিন্দু বিদ্যালয়ের অধ্যাপক শ্রীমুখ
বাবু হারকানাথ রায় প্রণীত। এ গ্রন্থখানি
প্ৰথম। ইহা পাঠ করিয়া আমাদিগের
এই সংস্কার অভিরাহে গ্রন্থকারের বিশেষ
কবিত্ব শক্তি আছে। আমাদিগের এক
মিত্র এই গ্রন্থের বিষয়ে যে অতিশ্রম প্র-
কাশ করিয়াছেন, তাহা এইখানে প্রদীপ্ত
হইল।

সংগ্রহি আবারকানাথ রায় প্রকৃতিপ্রেম
নামক এক খানি সুতন কাব্য প্রণয়ন করিয়া
ছেন। রায় মহাশয় অতি সুকবি ও লক্ষ্যপ্রতি-
ষ্ঠ রাসরসাত্মকে তিনি নিজ কবিত্ব শক্তির
সবিশেষ পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। এই সুতন
একটা ভাষার এই শক্তির সম্বন্ধে প্রমাণ
পাওয়া যায়। আমরা দিন দিন বহুবিধ
সুতন গ্রন্থ দেখিয়া থাকি, কিন্তু উৎসাহের
প্রভাব নাই। প্রকৃতিপ্রেম অনুবাদ নহে
এই কাব্য খানি কেবল রচনাতেই সুতন এবং
নহে, ইহা যে শৃঙ্খলাতে প্রণীত হইয়াছে তা-
হাও সুতন। অ.পাতকঃ শব্দ ও বিজ্ঞান সা-
জ্ঞানির অনুশীলন প্রাচুর্য্যে, সত্যতার
সমাগমে ও ভিন্নভাষীর লোকের সহিত
সম্বাসে অস্বদেশীয়দিগের ভাব, মতি, ও
কচির বহু বিপর্যয় হইয়াছে, সুতরাং প্রাচীন
প্রণালীর রচনা পাঠ করিয়া ভাষাদিগের
ভুক্তি ভ্রমে না, কিন্তু প্রকৃতি-প্রেমের রচনাব-
নব্য পাঠক মণ্ডলীর মনোরঞ্জন করিবার বি-
শিষ্ট উপবে গিতা আছে। রায় মহাশয় এই
কাব্য খানি কোন প্রিয়তম ছাত্রের কবিতাসু-
প্রতিভার উৎসাহে বাহি পেচন করিবার জন্য
প্রণয়ন করিয়াছেন। এই হেতু তিনি অ-
পূৰ্ব্ব কৌশল করিয়া প্রসঙ্গসঙ্গতি ক্রমে
মধ্যে মধ্যে কাব্য রচনার অনেক বিধি ও
ব্যবস্থা প্রদর্শন করিয়াছেন। তৎপাঠে কেবল
ভাষার ছাত্রেরই উপকার হইবে এমন নহে
অস্বদেশীয় কবি ও গ্রন্থকারদিগের বিপুল উ-
ৎসাহের সজাবনা। অপর, দেশীয় ভাষালীকা
ও ভাষার উন্নতি সাধন এবং একমত্য অব-
লম্বন ও সত্যতার সম্বন্ধে বিষয়ে তিনি যে যে
কথা লিখিয়াছেন সে সমুদায় গুলিই মুকুটস্থ
কথাঃ এই কাব্য খানির মধ্যে একটা প্ৰা-
সঙ্গিক ও অস্বদেশীয় কথা নাই। ইহার মগ্ন ও

মনোযোগী ভাব ও প্রকৃতি প্রেম
মনোহর ও উৎসাহী হইবে। প্রকৃতিপ্রেম
সরল ও প্রসঙ্গ পদ্ধতিতে বোধ হয় যেন অব-
লম্বন লেগনী হইতে বিনির্গত হইয়াছে।
আর লক্ষ্যসকল রচনার এইমনি রশে আছে
যে সুপ্রাণি ইত্যর ও সঙ্গতিবদ্ধ শব্দ প্রয়-
ুক্ত হয় নাই, এবং কবিত্ব ও অলম্বনতা প্র-
কৃতি মোহ ও কোমল মনে সঞ্চিত হইতে
না। আত্মোপাস্ত এক হৃদয়ে রচনা করিতে
কাব্য অতি মীমস তর বলিয়া প্রকৃতিপ্রেম
নানা কল্পে রচিত হইয়াছে। নানাবিধ হৃদয়
কাতে ইহার আয়ো অধিক নির্ভরতা হইয়াছে
এই গ্রন্থে বাঙ্গালা, ব্রজবোলা ও সংস্কৃতভাষা
রী মানা প্রকার হৃদয় আছে। প্রকৃতিপ্রেমের
পুষ্ঠার ভোটক হৃদয়ে নারায়ণ কবির যে সলীল
রচিত হইয়াছে তাহা অতি মনোহর। সর্বা-
পেক্ষা চতুর্থ সর্গের শেষে ১০৮ পুষ্ঠার রম-
ভাষার সলীল হৃদয়বাহী করেব পংক্তি অ-
তিশয় প্রকৃতিসুখাবহ হইয়াছে। নিম্নে কতি-
পয় পংক্তি উদ্ধৃত হইল, পাঠ কবিলেই পাঠ-
কগণ রায় মহাশয়ের রচনাশক্তি লক্ষ্য
করিতে পারিবেন।

হৃদয়ী অবসান রে।

শিকুল প্রত্যাহ্বান করে গান রে ॥
তার প্রাণী দিলীখরী, বুঝি নিদ্রা তর করি,
প্রাণপতি হস্তাবেশে করেন আহ্বান রে।
তালে রক্তমণি হলে, সকলে বানান বলে,
কায় সাধা তার ভাব করিতে সম্মান রে ॥
বহু হেরি মহোৎসব, তবে তরু চল চল,
মনস্তপে নীরে তানে মহাসা বরান রে।
মধুকর মধুকী, গুন গুন রব করি,
বুঝি কালগুণ গেয়ে করে মধু পান রে ॥
নানা পক্ষী নানা করে, কিনা কসকলি করে,
বুঝি তারা প্রকৃতির করিছে ব্যাখ্যান রে।
মহেশ্বর সজবহ, করে করে অহবহ,
প্রত্যাহ্বান সমাচার করে বুঝি জান রে ॥
নব দুর্বাদলোপসি, নীহার কি শোভা করি,
বেশ নীল নাগোপরে বেদের মহান রে।
বুঝি বা প্রকৃতি সত্য, তবে তোর হৃদয় অতি,
প্রেম অকপাত করে হয় আহ্বান রে ॥
তারুক গায়কে রাগে অকুণ্ঠ রাসিনী রাগে,
হারিগুণ গায় কিনা কুণ্ঠের সুভাস রে।
বাজে কি শ্যামের বাদী, কিনা একি সুধারানি।

কিনা পিক কাকরী না হয় ডেকে জান রে ॥
গোপাল গোপন করে, আশ্রিত মগ্ন হয়ে,
হৃদয়ী বাজারে করে প্রেরিত প্রেরণ রে।
এ ভাব দেখিলে পরে, মনে পড়ে নষ্টবরে,
মনে পড়ে গোষ্ঠলীলা করে মনোপ্রণ রে ॥
মত চোর নিশাচর, হেরি প্রত্যাহ্বান করে,
সচকিত হয়ে তবে শব্দে প্রেরণ রে।
মহাপাণী হৃদয়কালে, বেদন দেখিলে কালে,
তরে বরদার করি হয় কল্পমান রে ॥
কীর্তন চকস চিত, থাকে নির প্রকৃতিত,
করে জীব নানা মত কর্তব্য বিধান রে।
বুঝি এই কালে মন, অমূল্য বোঝন ধন,
পাইয়ে হয় বা নানা গুণের নিধান রে ॥
আমাদিগের মিত্রের আশ্রয়ার্থী
বহু যে কথা বলেন, তাহা বহু অস্বদেশীয়
অভিও যদি আমরা কবিত্বশক্তি একাধে
কুকলীলা বর্ণন ব্যতিরিক্ত বিবরণের না পাই,
তাহা হইলে আমাদিগের কি উদ্ভাবনী
শক্তি ও সুতন রচনার কলতা হইবে।
কুকলীলা বর্ণন করিতে গেলে অবিকল
হলে ভাবেরও সুতন হইতে পারে।

সংস্কৃত ১৫ই মার্চ ১৮৬২।

প্রিয় সম্পাদক! আগনার পাঠক
গুনিয়া আশ্বাসিত হইবেন যে, ভাষালীকা-
ভাষার দ্বারা ভারতবর্ষীয় সংস্কৃত ১৫ মার্চ-
র মধ্যে বোঝাই হইতে প্রাচীন উপস্থিত
হইয়াছে। অস্বদেশীয় মধ্যে অস্বদেশীয়
বদেমে মনোহর একদিনের পুণ্যস্থিত বিদ্যা-
লীর সমাচার প্রদান করিবেন।
সম্পাদকগণের দাম্পত্য-বিবাহ সংস্কৃত
নিম্ন লিখিত করেকটি বিশেষ সম্বাদ প্রক-
শিত হইয়াছে। ১৮৫৮ খ্রীষ্টাব্দের ১১ই
জানুয়ারি এখানে দাম্পত্য-বিবাহ বিচারালয়
স্থাপিত হয়। তদবধি উক্ত বিচারালয়ে ১৮
৬১ শকের ৩০এ জুলাই পর্যন্ত সর্বমুদ্য ৭৮
খানি আবেদন পত্র অর্পিত হয়। ১৮২৬ অব-
ধি ১৮৬১ পর্যন্ত দ্বারীর দ্বীকে ও দ্বীক দ্বাণী
কে পরিভ্রমণ করিয়া স্বতন্ত্র বাল করিবার অতি-
প্রায়ে ২৪৮ খণ্ড আবেদন পত্র প্রাচীন ও ন-
বীন বিচারালয়ে সমর্পিত হয়; তদ্বধ্যে ব্যক্তি-
চর জনা : ৫৮, নির্ভরতা জনা ১২৪, পতি-

চাপ করিয়া পলায়ন নিষেধ ১৩। নবীন বি-
চারাঙ্গের ১১ট অস্ত্রারি অধি ৩০এ জুলাই
পর্যন্ত ৪১৬টি বিগ্রে দাম্পত্যবিয়োগ নিষেধ
হইয়াছে, ২২টি বোকদমা অগ্রাহ হইয়াছে,
এবং ৩১৫টি বিগ্রে আদালতী উত্তর দেয়
নাই। ১৮৬১ নংক ৩০এ জুলাই দাম্পত্য-
বিয়োগের নিষিদ্ধ ১৪খান আবেদন পত্র
বিচারালয়ে সমর্পিত হয়।

২০এ মার্চ।

অদ্যকার ষ্টাণ্ডার্ড পত্রে 'ভারতবর্ষ বি-
বরে সাবধান' এই নামে একপ্রস্তাব প্রকা-
শিত হইয়াছে, ভারতবর্ষীয়েরা রাজপুরুষের
প্রতি অসন্তুষ্ট, ইহা প্রতিপাদন করা উক্ত
প্রস্তাবের উদ্দেশ্য। নিম্ন লিখিত করেকটি বি-
বরণ সাধারণ অসন্তোষের কারণ বলিয়া নির্দে-
শিত হইয়াছে। বখা হুতন হুতন টাক, লতন
এতদ্বাকের উপর শুষ্ক; আর একটা হুতন
ব্যবস্থা, বাহার বায়া ভারতবর্ষের অনেক ক
বতাবান ব্যক্তি রাজকর সংগ্রহের পৈতৃক
অধিকার হইতে পরিত্যক্ত হইয়াছেন। পলী
প্রাণের স্বকাল জনগণের নির্যাদির প্রতি
হস্তার্পণ। প্রাণের মণ্ডল দিগকে পদচ্যুত ক-
রিবার চেষ্টা। প্রাণের দর্শনবিশেষ কোন প্র-
কার প্রতিবন্ধকতাচরণ। এবং লক্ষ্যাদির হু-
র্দ্যাত্য। লেখক সর্বশেষে এই অতিপ্রাণ
করিয়াছেন যে রাজপুরুষেরা নানা
প্রকার ব্যবস্থা পরিবর্তন করিতে গিয়া বেন
আর ভারতবর্ষে অগ্র প্রচলিত করিয়া
করেন

আপনার পাঠকের মধ্যে অনেকে উই
হোইটের নাম শুনিয়া থাকিবেন। কেহ
কেহ, বোধ করি তাঁহার ও তাঁহার স্ত্রীর অ-
বরণীয় পুস্তক সকল পাঠ করিয়াছেন। উই
লিয়ম হোইট চলিশবর্ষ যাবৎ গ্রন্থ লিখিত সব
লিখিত করিয়াছেন, কিন্তু আশ্চর্য্য বিষয় এই
যে তিনি ন্যায় অথবা অন্যায় রূপে হটক,
মুদ্রাক্ষরদের সহিত বিবাদ না করিয়া থাকিতে
পারেন না। এইরূপ বিবাদের নিমিত্ত তিনি
বহুকালব্যধি প্রসিদ্ধ আছেন। সংপ্রতি এই
প্রকার এক বিবাদে প্রবৃত্ত হইয়া পরাজিত হ-
ইয়াছেন। তিনি হাল ও বট নামক দুজাকর
দিককে চারিষর্ষের নিমিত্ত এক পুস্তকের

আধিকার বিক্রয় করেন। দুজাকরেরা এই চারি-
ষর্ষের মধ্যে এক পুস্তক দুইয় করিয়াছিলেন
যে চারিষর্ষ অতীত হইয়াছে তথাপি সমুদায়
নিষেধিত হয় নাই, সুতরাং তাহারা অদ্যাপি
এ পুস্তক বিক্রয় করিতেছেন। হোইট বিচা-
রালয়ে অভিযোগ করিলে এই নিষেধ হইল
যে এই চারিষর্ষের মধ্যে যতখণ্ড পুস্তক মুদ্রিত
হইয়াছে, তাহা বিধিনিষেধিত, অতএব নিষ-
িদ্ধ সময় অতীত হইলেও সেই পুস্তক সকল
ন্যায়রূপে বিক্রীত হইতে পারে। কিন্তু সা-
ধারণে এবিচারে দোষার্পণ করিতেছেন।

সম্রাট নপোলেন অন্ জুলিয়ন্ কেশরীর
ইতিহাস নামক এক পুস্তক দ্বারা প্রচারিত
করিবেন। মকার নামক কবি সম্রাটের আ-
বেশে এই পুস্তক হইতে এক নাটক প্রস্তুত
করিতেছেন। ইংরেজেরা বিক্রয় করিবার
এক হল পাইয়াছেন।

করাণীশ দেশীয় রাজকুমারসম্বন্ধে ঋত
হইল যে গত ১৬ই মার্চে তিনি সপ্তম বর্ষে
প্রবেশ করিয়াছেন। বত মাত্রের সভ্যদেরা
নানা বিধে প্রশংসা লাভ করিয়া থাকেন
কেহই মরিয়ার অনুসন্ধান করেন না। কিন্তু
সর্ববাদিসম্মত মত অনুসন্ধান পাওয়া যায়
যে ক্ষুদ্র নপোলেন অসাধারণ বুজবান,
তিনি সপ্তমবর্ষে কেবল প্রবেশ করিয়াছেন,
অথচ চারিটি পুস্তক তাহার কথোপকথন করি-
তে পারেন, মরবিদ্যার বিলক্ষণ পটু হইয়া
ছেন। তিনি উত্তম আশ্রয়, সঙ্গপ্রকুরচিহ্ন,
এবং সাধারণের অন্তরাণভাজন। বলিতে
কি, পূর্বদেশীয় যে সকল রাজপুত্রের
বিবরে গল্প শুনা যায়, করাণী রাজকুমার ব-
স্তুতঃ তদনুরূপ।

আমেরিকার ওহিও প্রদেশে মিকাল
কিলিপ্ নামক এক 'নিগ্রো' (অর্থাৎ
আফ্রিকার রক্তপুরুষ) ১২৫ বৎসর বয়সে সং-
প্রতি প্রাণত্যাগ করিয়াছে।

সংপ্রতি পারিসগরের বৃক্ষসকল বুকুলিত
হইয়াছে; যে কেহ পারিস অলৌকিক চমৎ-
কারিত্ব প্রত্যক্ষ করিয়াছেন, তিনিই বুঝিতে
পারিবেন যে তথাকার বৃক্ষসকল বুকুলিত ও
সুস্বাদিত হইলে তথায় গন্ধর্বলোক ও
কেনন প্রভের প্রবেশ হয়।

অস্টিয়ায় সম্রাট ক্রিপিন্স মোজেক ম-
র্দন প্রধানমন্ত্রিকে একত্রিত করিবার চেষ্টা
করিতেছেন।

গ্রীশের উপমহাদেশ হইবার উপক্রম
হইতেছে। মহারাজ ওথো এক মোষণাপত্র
প্রচার করিয়াছেন। এবং বিম্রোহীদিগকে দ-
মন করিবার নিমিত্ত প্রকাবর্গকে আহ্বান ক-
রিয়াছেন।

অবগতি হইল যে এক করাণীশ আমেরি-
কার চিলী প্রদেশে বাস করিয়া তথাকার লো-
কের এমত প্রিয় হয় যে তাহারা তাহাকে
রাজত্ব প্রদান করে। সংপ্রতি তিনি প্রেতি-
বেশী প্রাতিদের সঙ্গিত যুদ্ধে পরাজিত হইয়া,
বন্দী হইয়াছেন।

পালিম্বকে সম্রাজ বন্দীভাবে চলিতেছে।
গত ১৭ই মার্চ ইংলান্ডে হোস্ অক লর্ডে উ-
পস্থিত ছিল। লর্ড নর্মানবি ইটালি সম্রাজ
একঘণ্টারও অধিক কাল এক বক্তৃতা করেন,
তৎকালে অন্যান্য গভ্যের কথা দ্বারা থাকুক,
'গর্ভি' হিত হয়। লর্ড চান্সেলর ও বিলক্ষণ
অনামনক হইয়া ছিলেন। কেবল লর্ড রসেল
বিরুদ্ধ বক্তৃতা করিতে হইবে বলিয়া অবধান
করিয়াছিলেন। মার্কস ব্যক্তির ইচ্ছা বিশ্বয়
কর বোধ হয় যে যে ইংরেজেরা সামান্যতঃ
বখা পাঠজন একত্রে বসিয়া একজনকে অল-
বহিত দোখলে তুণীল বলিয়া থাকেন, তা-
হারা মহাসম্রাজের অববধানতাকে দুর্বলী জ্ঞান
করেন না।

'একলিখিতনের' অট্টালিকা সম্পূর্ণ হইয়া
আনিতেছে; উহা 'রুটাল পালেসের' অ-
পেক্ষা নিরুপ্ততর হইয়াছে, 'অট্টালিকা'র
ইষ্টকমর ভিত্তি দেখিলে প্রকাণ্ড ভাণ্ডাগারে
ন্যায় বোধ হয়, একজন করাণীশের নিমিত্ত
এই বিবরের এক কোঠক জনক পত্র টাইন্স
পত্রে প্রকাশিত হইয়াছে। বাকালাতাচার
অনুবাদ করিয়া তাহার তিরতা ও বৌদ্ধিক-
বহতা রক্ষা করা ভার।

২১এ মার্চ।

মহারাজী বিক্টোরিয়ার চরিত্র বিশদে
বক্ত্যমান আখ্যায়িকা প্রস্তুত হইল। অল্প দিন-
পূর্বে ওয়াটট দীপস্থ অসুখ মানন রাজ
নিকেতনের প্ররোচিত প্রয়োজনবশতঃ রাজ
হাটীর নিকটস্থিত এক প্রাচীন ও দরিদ্র ব্য-

জিহ্বা হইতে গমন করিল। তিনি আর উচ্চ ক্রিয়া দেখিলেন এক এক পোষাক পরিহিত। এই প্রকার ন্যাসদীপে বসিয়া এই প্রকার আ-
ত্ম ন্যাসক কাক্য সকল পাঠ করিতেছেন। সু-
তরাং তিনি প্রস্থান করিতে উদ্যত হইলেন।
উক্ত স্ত্রী ইহা দেখিয়া বলিলেন মহাশয়।
গমন করিবেন না। এ অবস্থায় প্রকার পক্ষে
তদাশ্রয় ব্যক্তির উপদেশ নাতিশয় উপকার
জনক। এই বলিয়া রমণী প্রস্থান করিলেন।
অবশেষে আশা হইল যে কল্যাণী স্বয়ং নি-
শন রোগপ্রসূত হইতে পর্যাগমন করাইতে
হিলেন।

আমেরিকার রাজসভাপতি জিলকন্ এ-
এপ বোধাপত্র প্রচার করিয়াছেন যে যুদ্ধে
বিশ্বের অর্থব্যয় হইতেছে। এই অর্থ সংযোগ
করিয়া দিতে পারিলে জীক দাসদিগের মুক্তি
লাভ হইতে পারে। বোধ হয় আমেরিকা ইহাতে
সম্মত হইতে পারে। এক্ষণ হইলে যুদ্ধেরও
শেষ হইবে। এবং দাসদেরও মুক্তিলাভের
এক কার্য সিদ্ধ হইবে। ইংলণ্ডের নৈসর্গিক
অবস্থার মর্ম বুঝা যায়। এই বলিয়া বনকে
প্রবোধ দিতে হিলাব বেনীত প্রস্তাব করিয়া-
ছে, অন্যপ্রকারে উত্তীর্ণা দেখি যে বেশী
বেত হুগার হয়ে আশ্রয় হইয়াছে। এখানে
কখন গ্রীষ্ম, কখন শীত। এবং কখন বর্ষা
তাকার স্থিরতা নাই।

উত্তমভেদে অধিক সুনি অঙ্গকাল পূর্বে
কলিকাতা হইতে আমেরিকা দীপে প্রেরিত
হয়। তাহার উদ্দেশ্য হইতে উদ্ভূত হইয়াছে।

আমেরিকার দক্ষিণপক্ষের পাতে নর
হতে পতে এইভাবে প্রদেশে বস্তু তুল্য ও তা
নাক সঞ্চিত আছে, সমুদায় দত্ত করিবার
পরাধন করিতেছে।

২৩এ মার্চ।

গত শনিবারের পোষ্টেটর পত্রে ভারত
বর্ষের উপযুক্ত লোকদিগকে সম্মান জনক পদ
প্রদান বিষয়ে এক প্রচারা ও অপকপাতচু-
বিত্ত প্রস্তাব প্রকাশিত হইয়াছে। উহা পাঠ
করিয়া নাতিশয় তৃপ্ত হইলাম। লেখক অবি-
স্মারিত রূপে প্রতিপাদন করিয়াছেন ভারত-
বর্ষের লোকদিগকে ইংরেজ নির্মিত শাসন
কর। রাজপুরুষদের সর্বতোভাবে কর্তব্য।

ইংরেজ-ভারতবর্ষের লোকদিগকে গরম
কমপ। নিকট হইতেছে। ইহা গরম প্রা-
বীর যে ভারতবর্ষেরা কুসংস্কার বর্জন
করিয়া ইংলণ্ডে নরম-প্রবাসগমন করেন
তাহা হইলে আমাদের দেশের উন্নতির পথ
অধিকতর পরিষ্কৃত হইবে। আদি অনতি বি-
লম্ব লম্বনে বঙ্গের আত্মবিশেষের সুখ-
লোকস করিবার প্রত্যাশা করিতেছি।

২৪এ মার্চ।

ভারতবর্ষে নানা স্থানে অনতিদীর্ঘ
লৌহ বস্ত্র নির্মাণার্থ এক কোম্পানি স্থাপিত
হইবে। মালান্ প্রদেশে প্রাচীন 'গৌড়া'
বর্ত্তমানের সহিত নবীন সম্রাটের
এক বিবাহ হইয়াছে। অনেকের জ্ঞতি
এর এই যে পৃথিবীতে বর্ম (বখা বর্ত্তান ব-
র্ম, মুসলমান বর্ম ইত্যাদি) আছে বলিয়া
মহুয়া কুল রক্ষা পাইতেছে, কিন্তু অপকপা-
তে বিচার করিয়া দেখিলে বোধ হইবে যে
পৃথিবীতে এ পর্যন্ত বস্ত্র দুর্গতি ঘটয়াছে,
তাহার অর্ধেক কেবল উক্ত বস্ত্র ধর্মের নি-
মিত্ত।

২৫এ মার্চ।

আমেরিকার 'কেডরলেরা' ক্রমিক জর-
লাভ করিতেছে।

লণ্ডন-আমেরিকাদেশীয় জর্জ পিভি
লণ্ডনের দরিদ্রদের উপকারার্থ গুরুত্ব লক্ষ
মুদ্রা দান করিয়াছেন।

লণ্ডনে এক সভাপ্রাণার্থ পুরুষোত্তম
মুতলিয়রের মুক্তি প্রস্তাব প্রাপ্ত হইয়াছে।
ভারতবর্ষ হইতে যদি কতিপয় উপযুক্ত ব্য-
ক্তি প্রেরিত হন তবেই তাঁহার সহায় অতি-
প্রায় সিদ্ধ হইবার সম্ভাবনা।

লণ্ডন ২৩এ মার্চ ১৮৩২।

ঐউনিচাঁদ ওয়াশ।

বিবিধ সংবাদ।

১৩এ বৈশাখ সোমবার।

চীন দেশে এক্ষণে ১৩১২ টাকার মানব-
দেশীয় অধিকনের মাক বিক্রীত হইতেছে।
কিন্তু দিবস তথ্য ভারতবর্ষ অপেক্ষা অপ-
মূল্যে অধিক বিক্রীত হয়।

আপাশি সোমবারে সেও সাহেব ডালহৌ-

নি ইনসিটিউট মজার ভারতবর্ষের জিন জিন
আতি ও উদ্যোগের ভার, যিহনে এক প্র-
স্তাব পাঠ করিবেন।

বনিক সম্রাটের অগ্ররোধ অগ্রদারে
ভারতবর্ষের গর্বমন্ডে সন্মান করিয়াছেন,
তুলা ও রেশমের কাপড় উত্তরেরই এক প্রকা-
র গুরু গ্রহণ করিবেন।

কিনিক সম্পাদক 'জির্জানা' করিয়াছেন
"অতিবিত্ত কর্মচারিদিগের আবেদন" কি
হইল? টেট-সেক্রেটারির বাজে কাগজের
মুক্তিতে আছে।

উক্ত সম্পাদক জগদ করিয়াছেন ইংলণ্ড
হইতে মুনিবিত্ত মুদ্রি আশির আকাউন্ট
আকিমে নিবৃত্ত করা হইবে। এদেশে কি বি-
লাতী কল কলে না?

ভাগলপুরের জর্জ মাকডোনাভুত, মাক
এক জন ইউরোপীয় তুলা ও পাঠ প্রকার,
করিবার এক হুজব বস্ত্র প্রস্তুত করিয়া গর্ব-
মন্ডের নিকটে এক পাঠে (কেবল জির্জিই
এই বস্ত্র বিক্রয় করিবেন তাহার সন্মতি
পত্র) লইয়াছেন।

৩০এ এপ্রেল অরুণি নবলপুর জেলা জর-
দেশীয় গর্বমন্ডের হস্ত হইতে গর্বমন্ডের
হস্তে গিয়াছে। ইহা বখ্যাতরতবর্ষের কবি-
সনরের অধীন হইবে।

বিলী গেজেট সম্পাদক 'অভিগুণ' করিয়া-
ছেন ভারতবর্ষের প্রেইলওয়ে কোম্পানি আ-
সাধাবান হইতে, আশ্রয়ক, রাজস্বযোগে
বাল্পীর লকট প্রেরণ করেন না, তাহাতে ই-
উরোপীয়দিগের অসুবিধা হয়। সম্পাদক
ব্যক্ত করিয়া বলিয়াছেন, কোম্পানি এতদ্দে-
শীয় আত্মাধীনদিগের নিকটেই আর সমুদায়
লাভ হয় বলিয়া ইউরোপীয়দিগের জন্য কি-
ছুই করিতে চাহেন না। কোম্পানি জিহ্বি
কারীদিগের জন্য কতি সহ্য করেন না এ বড়
অভ্যাস।।

বোম্বাই গর্বমন্ডে আত্মা করিয়াছেন ত-
ত্রত্য অসৈনিক ব্যবস্থাপকদিগকে পাথের
প্রভৃতির জন্য ২০০০ টাকা প্রতি সেসিরনে
কেওরা হইবে। সাধারণের নবাব সম্রাতি
২৮-০০ টাকা পাইয়াছেন। তবে বেতনের ব্যব-
স্থা করা হইক না কেন?

কল্যাণি এক সংবাদ পত্রে লিখিত হইয়া

এই, কলীমগিরের সহায়তার প্রার্থনা প্রকাশ্যে
করেই আধিকার করিয়া কাশ্মীরের আক্রমণ
করিয়াছে । এখন কলীমগিরের ক্ষতি
এমন ।

কর্নেল ক্রম কর্ণেল আলফোর্ডের পরিবর্তে
বিশেষতঃ বিলাতীয় সৈন্যদের আশ্রয় হ-
ইয়াছেন ।

চাকানিউল সম্প্রদায় বলেন জুহারখানির
হত্যাকারী ছিলিকে সম্রাট চাকার ঘোষা দি-
য়াছেন এবং বোধ হয় সে চাকার বিকটবর্তি
কোন পক্ষীদ্বারা আচ্ছাদিত । সে যে ধরা পড়ে
না সে কেবল পুণ্ড্রবর্ষচারিদিগের গুণ ।

কলীমগির সুবিখ্যাত মন্ত্রী কাউন্সিল মেনেল
রোডের ৮২ নম্বর বয়সে মৃত্যু হইয়াছে ।
মেনেল রোড এক জন প্রধান সাংবিধানিক
মন্ত্রী বিখ্যাত ছিলেন । নেপোলিয়নের
বিপত্তির পর বিদ্রোহের পরে সে সভা হয়,
তিনি তাহার মধ্যে এক জন প্রধান ছিলেন ।

গবর্নমেন্টে অরুণিয়ার মিনিস্ট্রিগের নি-
কটে ইনকমটাক্স লাইবার্শিপের আদায়
এ দিকে চা-করেরা তাহারিগকে বিনা বেতনে
খাটাইবার চেষ্টা করিয়াছেন । ও দিকে গবর্ন-
মেন্ট ইনকমটাক্স লাইভে চলিলেন, সোনার
সোরাগা হইল ।

রঙ্গপুরে ওলাউরার প্রাদুর্ভাব হইয়াছে ।

চাকানিউল সম্প্রদায় বলেন চট্টগ্রামে
একটি শাখা ভারতবর্ষীয় সত্তা সংস্থাপিত হই-
বে । প্রজাতির কষ্ট নিবারণ করা তাহারি-
গের উদ্দেশ্য । সম্প্রদায় চাকার লোকসিগকে
এবিধে মনোযোগী হইতে অনুরোধ করি-
য়াছেন । চাকা ককনগর ও বশোহরে এপ্র-
কার সভা হওয়া নিতান্ত আবশ্যিক ।

উক্ত সম্প্রদায় আরও বলেন ওজন্ত্য কো-
ম বিচারপতি বিচারাসনে বসিয়া প্রত্যেক সপ-
সকে গালি দেন, মধ্যে মধ্যে মুসলিম আছে । এ
বিষয় কর্তৃপক্ষের গোচর করিবার জন্য এব-
দুঃস্বপ্ন করিলে কি ভাল হয় না ?

২৪এ বৈশাখ মঙ্গলবার ।

সর জর্জ লর্ড বোম্বাই নগর ত্যাগ করি-
য়াছেন । ওজন্ত্য সাইটে রিভিউ সম্প্রদায় এই
আবেদন করিয়াছেন ক্ষুদ্রপুর্ক শাসনকর্তা ব্যব-
স্থাপক সভার অধিকাংশ একজনীয়দিগকে

বিযুক্ত করিয়াছেন, কিন্তু তিনি এখন সময়ে
কলীমগিরের বিকটে এতদূর প্রাণত হইয়াছে ।
সর জর্জ লর্ড বোম্বাই বোম্বাইবাসিনীগের
অপমান করেন । তিনি প্রথমবার নয়
বার করেন, এখন তাহার ক্ষতি হইয়াছে
প্রথম কর্তৃত্ব শাসনকর্তা আসিল হইতে
গাজেখান অথবা টুপি খোলা ইহার কিছুই
করেন নাই । দ্বিতীয়তঃ কলীমগিরের গবর্ন-
মেন্টের প্রকাশ্যে মৃত্যু গীতের সময়ে আহুত
হইতেছেন । সর জর্জ লর্ড তাহা বন্ধ করিয়া
দেন । এই গুলিই রোগের কারণ বোধ হয় ।

বোম্বাইয়ের ব্যবস্থাপক সভার অধ্যক্ষ
মধ্য প্রদেশের সর্দার (সর বার্টন প্রিন্সের
আজ্ঞা) একনিবন শকটে আক্রোহণ করিয়া বা-
ইতেছিলেন এবং সমস্ত লকটোরোহী লস্ক-
বসেই যে জিজ্ঞাসাইয়ের জাভাতা ক্ষতবেগে
তাহার নিকটে দিয়া গমন করেন, ব্যবস্থাপক
সাহেব রাগান্বিতভাবে তাহাকে ধাক্কা
বলিলেন । উক্ত পাত্রি বোম্বাই খাটাইলেন ।
তাহার পর উক্তের বাধিততা হইতে লাগিল ।
ইতিমধ্যে পারসী উক্ত সাহেবকে এক চাবুক
মারিলেন (বোধ হয় সাহেব কই বলিয়া থাকি-
বেন) । তদনন্তর দ্বিতীয় সাহেব পুলিশে নালিশ
করেন, কিন্তু শেষে উক্তের সকা করিয়াছেন ।

“ কেঁচো খুড়িতে খুড়িতে সাপ বাহির হয় । ”

কাহুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে মোস্তা
নব্বত বা ১১ই এপ্রেল কাশ্মীরে যাত্রা করি-
য়াছেন । তাহার সহিত বিস্তর সেনা গিয়াছে,
কিন্তু একজন জনরব উঠিয়াছে এই সুযোগে
ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টে এই দেশ অধিকার
করিবেন । এই জনরবটি আবারিগের গবর্ন-
মেন্টে সৌজন্যের পত্রিকার মধ্যে ।

পঞ্জাবের লেফটেনেন্ট গবর্নর আজ্ঞা ক-
রিয়াছেন যে প্রদেশের যে সকল দরিদ্র কৃষক-
কে দুর্ভিক্ষের পর গো মরিষ ও শস্যাদিবিজ-
ক্রয় করিতে টাকা দেওয়া হয়, তাহার তাই-
বাসবেদ পর চাকি কিছিতে টাকা দিবে ।
তদনন্তর এইসকল টাকা আদায় করিবার
তার প্রাণ হইয়াছে । গবর্নমেন্টে স্পষ্ট আজ্ঞা
দিয়াছেন কৃষকদিগের যেন কোন কষ্ট না হয় ।
গবর্নমেন্টের এ দয়া নীলকরদিগের এইপ্রকার
স্বার্থকে প্রতিরোধ করিতে পারেন না ।

হরকরা সম্প্রদায় সিংহপুর হইতে সংবাদ
পাইয়াছেন সম্রাট চীনসেনীক মিনোহীদি-
গের সহিত ইংলান্ড ও কলীমগির সেনাদিগের
যে যুদ্ধের তাহাতে অনেক ইউরোপীয়ের
মৃত্যু হইয়াছে এবং রণভূমির অত্যন্ত প্রা-
ণের গুরুতর রূপে আহত হইয়াছে ।
কলীমগির হইতে ২২ই হইতে উক্ত প্রদেশ
করিয়াছে । ওজন্ত্য পিতৃ সর্দার পিতৃ
মিত্রা অধ্যক্ষ আরও করিয়াছেন ।
অন্য বিদেশীয়েরা প্রবেশিকাশ্রম
পিতৃ দর্শন করিতে পারিবেন ।

আবা বীণের নিকটে বোম্বাইয়া
সংবাদ প্রাদুর্ভাব হইয়াছে ।

উক্ত সম্প্রদায় এখন করিয়াছেন বাজার
র প্রতিনিধি কর্তৃক সাহেব ৮ই মে ইংলান্ড
গমন করিবেন । তিনি এক কালে পদত্যাগ
করিয়াছেন । পুরাতন লোকের সকলেই গমন
করিলেন ।

ইংলিস্তান সম্প্রদায় কাহুল হইতে সং-
বাদ প্রাপ্ত হইয়াছেন, সম্রাট একজন বসিন
হমফ্রি মানক এক খানি প্রাম দ্বারা করিয়াছে ।
অরুণিয়ার কলীমগির প্রধান ও অপ্রধান সাধ-
রণে কলীমগিরের ঘোষণা করিয়া না দিলে
শীঘ্র উপদ্রব আশ্রিত সভাবনা নাই ।

উক্ত পক্ষে প্রকাশিত হইয়াছে সম্রাট
কএকজন নাগা দুইজন সিংহীকে আহত
ও এক ব্যক্তিকে হত করিয়া পলায়ন ক-
রে । পরে পরস্পর বিবাদ করিতে তাহারিগের
এক ব্যক্তি গোয়েন্দা হইয়া অপর কএক জন-
কে পরাইয়া দিয়াছে ।

উক্ত পক্ষের পারিসংহ সংবাদ দাতা বলেন
ইংলণ্ডীয় ও কলীমগির গবর্নমেন্ট চীনসেনীক স-
ম্রাটের সহায়তা করিয়া বিদ্রোহীদিগকে দম-
ন করিবেন সঙ্কল্প করিয়াছেন । বিদ্রোহীরা
একপক্ষে যে অত্যাচার করিতেছে তাহাতে ই-
উরোপীয়দিগের বাণিজ্য নষ্ট হইবার সভাবনা
বলিয়াই পুরোক্ত গবর্নমেন্টেরা এই কার্যে
প্রবৃত্ত হইতেছেন ।

মিল্লোগেজেট সম্প্রদায় মিল্লোগেজেল
সারোয়া তরুট সাহেবের মৃত্যুর বিষয় লিখি-
য়া আবেদন করিয়াছেন প্রধানমন্ত্রিপদাভি-
ষিক্ত লোকেরা বিদ্রোহকারী সাহায্য সাহস

প্রদর্শন করিয়া সম্মান প্রাপ্ত হইয়াছেন কিন্তু ডব্লিউ অসেক হুজুরকারী সাহস প্রকাশ করিয়া ও পরিচালনার আশঙ্কায় হইলেন। ইং-রাজ জাতির এইত লোক, জাহাজিগের হুজুর গিয়া শুভন স্বাধীনতা স্বাধীনতা। ও শুভের পুরস্কার শুভের পুরস্কার এই শব্দ, কিন্তু খন, সহায় ও প্রধানবংশ এই জিবিধ সুবিধা না থাকিলে সঃ শুভে উৎসর্গ হইলেও কেহ উক্ত পদ লাভ করিতে পারে না।

উক্ত পত্রের জাহাজিগের দ্বিত সংবাদ দাতা বলেন ডব্লিউ আবকারী সেরেজারার বলেন সিদ্ধোহকালে বখন রাজা সাহেব বিদুরের শাসন করা ছিলেন তখন তাঁহার আশঙ্কায় বক এক জন উত্তরোপীর জীলোক ও পুরুষের প্রাণবধ করা হয়। দোষীর হুজুর বিনয়ে জাহাজিগের কোন আপত্তি নাই কিন্তু বেন . . . অন্দের বিচারপতিগিরের ম্যার বে সে . . . সাক্ষ্য প্রাণিহত্যা না করা হয়।

২৫ এ বৈশাখ বুধবার।

শাস্ত্রাঙ্কের আলকারী বাটকোঠে কার সীদ একবৎসর মিয়ান হইয়াছে। প্রধান বিচারপতি হুজুরা দিবার সময়ে এই বলিয়া সাক্ষ্য করিয়াছেন যে তিনি সুস্থিমান লোক হইয়া কিরূপে ঐ অসহ্য কাণ্ড করিলেন। প্রধান বিচারপতি কারসীর বে সুস্থি দেখিয়াছেন, সে দুর্বলি।

কিংসফের একজন পত্রপ্রেরক হুজুরি চৌকিদারিটাক ও ডব্লিউ মাজিষ্ট্রেট পাম ব সাহেবের বেজাচারিতার বিবরণ লিখিয়া প্রচার করিয়াছেন। তিনি বলেন ডব্লিউ শাখা ভারতবর্ষীয়সভা পামর সাহেবের অন্যান্য ব্যবহারের বিবরণ প্রকাশিত কর্তৃপক্ষ গোচর করিবেন। এডিকে পামর সাহেব প্রথমজেনির মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইয়াছেন

বনিক সম্রাটের আপনাদিগের রিপোর্ট প্রকাশ করিয়াছেন। কিন্তু উইলিয়ম সাহেব সতাপতির পদ ত্যাগ করাতে বলেন সাহেব তাহাতে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন। আকাদের বিনয় এই বনিক সম্রাটের রিপোর্ট মধ্যে নীনের কোন প্রসঙ্গ করেন নাই।

উত্তর মাগরে আবিষ্কারাকারী সর জন

হুজুরিগের দ্বী কলিকাতার আশ্রয় করিয়াছেন। সর জন কলিকাতা উত্তর মাগরে প্রাণ ত্যাগ করেন কিন্তু কোথায় তাঁহার হুজুর তাহা শির না বকরাতে হুজুরিগের মিয়ান বহুর অসেক লোককে তাহার অন্তঃস্বার্থ প্রেরণ করেন। উক্ত গণবতী রমণী একপ্রে ইংরাজগিরের তিন তিন উপনিবেশ সর্বম করিতেছেন। পতিগরারণী রমণী হুজুরের অসকার স্বরূপ।

ইংলিসমান সম্পাদক জনগিণ্ডি হইতে সংবাদ পাইয়াছেন হুজুরের রাজাকে বে হুজুর সেনা দিবার কথা হয় জাহাজিগকে অস্বাধীন প্রেরণ করা হয় নাই বোধ হয় হইবেও না।

উক্ত সম্পাদক বলেন মালিবায়ের জাইকে মাজিষ্ট্রেট মিয়ান বিক্রম বাণিজ্য ব্যাপারে লিও হুজুরাও ও উপচৌকিদারি হুজুর করাতে তাঁহার বিচার হইবে। পাটনার কমিসনর ও জজ এবং সাহাবাদের কালেক্টর তাঁহার বিচার করিবেন। সিবিলিয়ানে সিবিলিয়ানের বিচার করিবেন। কারেন না একজন হুজুর ও পত্রীকোষীর্ণ সিবিলিয়ান।

সিটেন কার, সুই জাকসন, (মদীয়ার জজ)ও কোম সাহেব প্রধানতঃ বিচারালয়ের সিবিলিয়ান বিচারপতি হইবেন, এবং বাহুর মাদ্রাসার দ্বার এডমেনীর বিচার পতি হইতেছেন।

বোম্বাই সাইটে' রিবিউ সম্পাদক বলেন মারওয়ার হইতে যে খাতুনিখিত হুজুরা প্রেরণ করা হয় তাহুর হেনস তাহা হইতে স্বা বাহির করিয়াছেন।

উক্ত সম্পাদক ' ভারতবর্ষের বিপদ ' উইলিয়ামের একপ্রস্তাবে ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টকে পুনর্বার পারস্তদেশীয় রাজার সহিত বন্ধ করিতে অনুরোধ করিয়াছেন। সাইটে' রিবিউর বেকগ স্বতাব তাহাতে তাহাকে বোম্বাইয়ের ইংলিসমান বলিলে বলা যায়। গবর্নমেন্টে যেন ঐ প্রকার লোকের কথা ভারতবর্ষকে পুনর্বার বণপ্রস্ত না করেন

বোম্বাই মগরে বেজুর কট'সের এক জন পারসীর সহিত জুতা পুলিশার বিবরণ লইয়া

যে বিবাহ হয়, তাহিবিব উক্ত দেশের পারসীর নামে পুলিশে নাজীল করেন। কিন্তু তাঁহার আবেদন অগ্রাহ্য হইয়াছে। বন্দেনীর মধ্য সম্রাটের পারসীদিগের হুজুরাণী হইল।

চাকা রিউন সম্পাদক 'অবধ' করিয়াছেন গবর্নমেন্টে মেওয়ারী বিচারালয়ের আধীন গিরের কি স্থিতি করিয়াছেন। লোকে একপু জাবিনেন বা যে আদীনেহা এই বর্জিত ঠাক পাইবেন জাহাজিগের নির্ভরিতা বেজুর হইয়াছে। ঐ কি গবর্নমেন্টের কোষভুক্ত হইবে।

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন চাকার দী-হরি হুজুর জুরি হইয়াছেন তদন্তে অসম্মান নাম স্বাক্ষর করিতে পারেন না। এবং ডোন ও চতাল ও তদন্তে আছে, হুজুরাও অসম্মানেকের জুরি হইতে ইচ্ছুক নহেন। জাতির অন্য আইনে মার না, দুর্ব লোকে, কিপ্রকারে জুরি হইবে?

বিবরণসম্বন্ধে পত্রিকা সম্পাদক লিখিত জাহাজিগের লাভ এলফিন হুজুরিগের মবাবের সহিত সাক্ষ্য করেন নাই। মার্জ ডাল হাউলি রাজা ও মবাবদিগের অবমাননা করিয়া ভারতবর্ষে অগ্রি-জাহাজিগের বিচারে কিন্তু কর্ণেল বেকিগির বলেন লোক তাহা হুজুর না।

রমপুর দিকপ্রদানে লিখিত হইয়াছে তখার প্রতিবৎসর অসেক বাসিতে ও কান দেশের পুজাও হুজুরাও ও ডব্লিউ লোকেরা দুই বাস পুজিয়া তাহার উপরে হিমপাঙ্কা, কাটা প্রভৃতি রাখিয়া তাহার চতুর্দিকে দ্বী পুরুষ একত্রিত হইয়া হুজুর ও মান প্রকার অসীলব্যবহার করে। আদরা সকলে একত্র হইলে কি এই সকল অসহ্য প্রথা নিবারণ করিতে পারি না?

আদরা মকলোদর মাক একখানি হুজুর সাপাহিক পত্র পাইয়াছি। ইহা প্রতি মকল-বারে প্রকাশিত হইবে। একপ্রে তাহা যে প্র-কারে লিখিত হইতেছে তাহাতে তবিত্যে ইহা হইতে দেশের কল্যাণ সভাবনা আছে।

প্রভাকরের কানীর সংবাদ দাতা বলেন ডব্লিউ লোকেরা গবর্নমেন্টের হুজুর নোট লইতে অনিচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন।

আমরা শুনিতে পাইতেছি, কলিকাতার
কুলিদিগের মধ্যে “হুঁ!ৎসুত্য়” প্রবেশ করিয়া
ছে। তাহাদিগের ইউরোপীয় প্রধানেরা তা-
হাদিগকে ভয়ানক প্রহার করে। তাহাদিগকে

লোক অনেক দুঃস্থ হইয়াছে। উক্ত ব্যক্তি
৫ টি দুইজন হস্তাকারীর জিন্স বস্ত্র প্রস্তুত
সেখানে উক্ত "ইউনিয়ন কারিগর" উদ্ভা-
কে পদচ্যুত করিবার আবেদন করি-
য়াছেন। ইউরোপীয়েরা একেলে আসিয়া বাস
করেন। ইহা এদেশীয়দিগের অভিপ্রেত নহে,
কেন্দ্র অথ ইতিয়া প্রকৃতি তাহার কারণ বু-
ঝিতে পারিতেছেনত ?

২৭এ বৈশাখ শুক্রবার।

উলিসনাম সম্পাদক বলেন লর্ড মি-
ট্রোরের নামক এক জন আয়ারল্যান্ডীয় সন্ত্রাস-
লোক তারতবর্ষে লীকার খরিতে আসিয়াছে-
ন। আসন্ন পর্যন্ত এখন পুরাতন হইয়া-
ছে।

লেনটনকে ট্রিলিয়ান নামক এক ব্যক্তি
কুকের আড়ম্বর একটি বোকা ক্রম করিয়া
পুত্র না চিয়া পলায়ন করে। পরে তাহাকে
রাণীগঞ্জে গুলি করা হয়। সস্ত্রাসি ছোট আ-
দালতে তাহার নামে নালীস হওয়াতে সে
টাকা দিয়া চি বলে এবং তৎক্ষণে সেই কথা-
নারে আশ্রয় নেন। পরে ট্রিলিয়ান লিখিত
এক পত্র বাহির হওয়াতে পুনর্বিচারের আশা
হইয়াছে। এই পত্রে সে বলে কিছু দিন
বিলম্বে টাকা দিতে চাহিয়াছিল। ছোট আ-
দালতে এই লোকের এক কোণে কাটা মোক-
দমা বিস্তার হইয়া থাকে।

চরকা সম্পাদক বলেন ট্রিলিয়ান নামক জা-
তায়ের সর বাটলি ক্রিয়ারের পুস্তকটি বাইতে
ছিল, ইতিমধ্যে উক্ত জাহাজ জল মগ হই-
য়াছে। সর বাটলি ক্রিয়ারের পুস্তকানুসারে অ-
নেক উক্ত পুস্তক ছিল, এটি কতিপয়ে তাহার
বিলম্বে কষ্ট সোধ হইবে।

কীলগতি পুনর্বার সৌভাগ্য করিতেছে।
ইহাঙ্গিরের প্রতি এসপ্রকাশে কিছুই হইবে না।
গবর্নমেন্টে কলকগুলি মিসনরি প্রেরণ করিয়া
তাঁহাদিগকে সত্য ও চরিত্রিত করিবার চেষ্টা
করুন।

সস্ত্রাসি আমেরিকার লক্ষ্য বিভাগের
একখানি লোহিত জাহাজ অস্কালা মধ্যে
উক্ত বিভাগের দুইখানি কাঁচ নির্মিত জাহা-
জ নষ্ট করিয়াছে। পরে উক্ত বিভাগের এক
খানি কুস্ত্র লোহিত জাহাজ দুই মাত্র কামান
নষ্ট করিয়া বিদ্রোহী জাহাজকে আক্রমণ করিয়া
দুরীভূত করে। উৎসাহী গবর্নমেন্টের দায়
বাড়িল।

২৮এ বৈশাখ শুক্রবার।
গত কল্যাণ মাসের মধ্য কলিকাতা
ভাগি করিয়াছেন। তদ্বিষয়ে ১২ কোণ হয়।
মধ্য এয়ার কলিকাতার আশিরিখানারকারে
অপমান সহ্য করিয়াছেন। পুলিশ কলিকাতার
ওদ্যাকোপ সাহেব তাহার শরীর রক্ষক সেনা
দিগের তরবারি কাঁচিয়া লইয়া ছিলেন। তাহ-
তবর্ষের কোন ব্যক্তি কি ইহাতে লিপ্ত হই-
বেন ?

বুধবার দুলা আদীর আসির বাটীতে
মুসলমানেরা এক সভা করিয়া বীতন সাহেব
কে এক অস্ত্রনন্দন পত্র প্রদান করিবার সঙ্ক-
প করিয়াছেন। তেপুটি মাজিষ্ট্রেট চট্টবার
বড় সমস্ত হইয়াছে।

বোম্বাইয়ের বিখ্যাত মাসের উপাধি পত্র
দিবার সময়ে সর বাটলি ক্রিয়ার এক উৎকৃষ্ট
বক্তৃতা করিয়া ছাত্র দিগের উৎসাহ বর্জন ক-
রিয়াছেন।

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্নমেন্টের কাগজ
বিক্রয় হইতেছে :—

৪ টাকার	দিকা	কাগজ	৮২১	৮২১
২ " "	কোম্পানির	এ	২২৫	২০
৫ " "	এ	এ	১০৪	১০৪
১১ " "	এ	এ	১১০	১১১

মাস্তাজ ও বোম্বাই নগরে কাগজেরও
এই মূল্য।

১০৮ এপ্রেল পর্যন্তের ইউরোপীয়
সম্ভাব্য।

সেনাপতি মাকিনন গটমাক হিত সেনা-
দের এক প্রধান অংশ মরুরো দুর্গের দিকে প্রে-
রন করিয়াছেন। এবং তিনি নিজে নিউবর্ষ অ-
ধিকার করিয়া তাহাদিগের পক্ষাৎ গমন করি-
বেন। বিদ্রোহীরা বোকা ও মাকো ভাগ করা
তে গবর্নমেন্টের সেনারা তাহা আধিকার কবি-
য়াছে।

একটি মৃতদেহ আরব ২ কামান পৌঁছা কর
হইয়াছে। ওয়ারিয়ার মধ্য জাহাজের এক অংশ
লোক দিয়া আরত করিয়া তাহা একানন দ্বারা
ভেদ ও চূর্ণ করা হইয়াছে।

বাকী ও ভাষ্যবসী সেনাদল একত্রিত
করাতে পোহোজ সেনাদলের অধিকারেরা যে
সকল আবেদন করিয়াছেন, অদ্য রাত্রে সর
এম কংকোভার তাহার সকল হাউল অব কম-
কো দ্বিবার প্রস্তাব করিবেন।

করাগীলমুটি নিম্ন সেনাদলের ৩২০০০ টন
করাইবার আজাদিগাছেন।

বাকী বিষয়ের মত্রে আরব্যের দিমাক
প্রধান করিয়া করিয়াছেন ৫০০০০০ টাকা উদ্ভূ-
ত হইবে। তিনি ভূপের প্রা (এক প্রকার বেলন)
কর উঠাইয়া দিবার ভাবের কর করাইয়া এবং
সরাণের কর পরিবর্ত করিবার প্রস্তাব করি-

আসিয়ার মাকব বিদ্রোহীরা এক মৌলনী
পত্র লিখেন কিন্তু তাহার মত্রে প্রমাণ পতি
নাই। তাই লইয়া দুইজন করিয়াছেন।

ইটালির মন্ত্রীমণ্ডলের আন্তরোধ পরতন্ত্র হই-
য়া গাবিয়াল্ডি বেলান্স ও মিনিসিট্র প্রমাণ
করিবার ইচ্ছা ভাগ করিয়াছেন। সেনাপতিমণ্ডল
সার মিতটে ময়ুর। পুনর্বার করকর্তৃ হইয়াছে
একপ অন্ত্রতি সেনাপতিমণ্ডল দুইজন করিয়া
তাহাদিগের নংহাবাদি বর্জন করিয়াছেন
রাজাকে রোম হইতে হালাকরিয়া করিবার
প্রস্তাব লইয়া। ইটালির প্রতিমিথি মন্ত্রীমণ্ডল
আন্দোলন হইতেছে।

স্পেনীয় গবর্নমেন্ট এই অভিপ্রায় প্রকাশ
করিয়াছেন যে তাহার। বেলিকোর আদীর
নষ্ট করিবার কোন চেষ্টা করিবেন না।

ইংলণ্ড হইতে বেলজিয়নে ও বেলজিয়নে
হইতে ইংলণ্ডে প্রত্যাবর্তন করিয়া তাক প্রমাণ
গমন করিতে এই প্রস্তাব হইয়াছে। বেলজিয়নে
র প্রতিমিথি সভা তাহা দ্বিবার বিবেচনা করিয়া
ছেন ১লা মে অবধি দুইবার আরত হইবে প্রমাণ
সম্ভাবনা আছে।

ইটার পক্ষ উপলক্ষে পানিরিবে ২০ এ
এপ্রেল পর্যন্ত বক্তৃতা করিবেন।

গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বালমোহনীর সেন্টমেন্ট গবর্নমেন্ট

কামোশাহারী নিয়োগ

২৪ পরগণা, বশোহর, মদীরা ও পানিয়ার
প্রতিমিথি তেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও তেপুটি কালেক-
টর বাহুবরদাশ্রমায় হস্তাকি করিয়াছেন।
সাক্তোর, মলমিথি ও গজাপুর পরগণায় কলক
চালন করিতে পারিবেন।

তেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও তেপুটি কালেকটর
কালীচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় করিমপুরের মদীরা
মলমিথি ও গজাপুর পরগণায় এবং পানিয়ার
মলমিথি, মোহনশাহী, মলমিথি ও কো
নাহি পরগণায় কলক চালন করিবেন।

মদীয়ার তেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও তেপুটি কালেক-
টর মৌলবী মদমদ মাকব করিমপুরের
সাক্তোর, মলমিথি ও গজাপুর পরগণা ও পানিয়ার
মলমিথি, মোহনশাহী ও বেলমিথির তেপুটি
মাজিষ্ট্রেট ও তেপুটি কালেকটর হইবেন।

বশোহর, মদীরা, ২৪ পরগণা ও পানিয়ার
প্রতিমিথি তেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও তেপুটি কালেক-
টর বাহুবরদাশ্রমায় হস্তাকি করিয়াছেন।
সাক্তোর, মলমিথি ও গজাপুর পরগণায় কলক
চালন করিবেন।

বশোহর, মদীরা, করিমপুর ও ২৪
তেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও তেপুটি কালেকটর
আনন্দ মোহন মলমিথির পানিয়ার মলমিথি
মোহনশাহী, মলমিথি ও বেলমিথি পর
কলক চালন করিবেন।

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়, কলিকাতা-৭০
১৯৬০

১ম মে- দীনাজপুরের জুজ হৈ, ২ম ডিসেম্বর-
হৈ ১৮৮৯ মালের ৩ আইনের অনুসারে এ
কালো বিবেচন মনসবের ক্ষমতা পাইয়েন।

শ কনিবেশ। সংপ্রতি আমি বুজের আসিয়াছি।
 ১২ই বৈশাখ পঞ্চমধ্যে স্থিতিস্থাপন লেনা ব
 অজ্ঞানতঃ বর্গ নামক স্থানে ছিল। এই দিন
 সাংসার সময়ে ভাব্য কি ভাব্যক-কই ৮ইয়া পি-
 য়াছে। প্রথমতঃ দিবিড় বনবটায় চতুর্ভুজ আ-
 য় হয়। পরে উত্তর দিক হইতে বায়ু বেন আয়
 নামক ৮ইয়া আসিতে আরম্ভ করে। বুজের বেধে
 বড় বড় শাখা সকল মড় মড় করিতে লাগিল।
 বট ভটাসকল হস্তিগুণেরন্যায় দৌলুলা মান হই
 তে লাগিল। কলোজিনীর জল বিশাল অরজাকু
 তি ৮ইয়া কলর ববে বহিতে লাগিল। অপর
 কল-মধ্যে কর্ণাধীর্ষ ৮ইতে লাগিল। অবিরল
 দ্বাধা শিলারূপে আরম্ভ হইল। শিলার ঠানঠানি
 শ ক আর আয়-ভের টন টনানিতে ফুটর গোট
 ও জলচর প্রাণিসকল অতিশয় ব্যাকুল হইল।
 প্রাণভয়ে কে কোথায় যায় কিছুই স্থির নাই। উ-
 কি ভাব্যক সময় এই সময়েরই একখানি গৃহ উ-
 ত্তিয়া নষ্ট হইয়া পড়ে। ভগ্নমো পুষ্টিজন পক্ষিক
 ছিল। ৩০.১। বায়ুবেগে অনারত ৮ইয়া মান
 স্থানে পড়িল। পথে অতি নিরুদ ৮ইলে পিয়া দে
 খিলান। তাহাদিগের মধ্যে কইর মানিক
 কাহারও পদ ৮ইয়া ও ৮ইয়া কাহারও পুষ্টি
 ভয় হইয়াছে। আর ৮ই একজন একে বা
 রেই পকত পাঠিয়াছে। সম্পাদক দ্বাধা। আমি
 আকস্মে একপ কড় ও শিলারূপে কখন ঢকে দে
 খিনাই। বুজে বায়ু উড়াইব নিদ্রা যাত্র এক
 পোয়া করিয়া এক একটি শিল। পড়ে। তাহা
 উক পদাবিবল গ্রাম মধ্যে পিয়া। দেখিলান গুহমা
 ব্রহ্ম নাই। কেবল ৮ই একটি অটালি, মাত
 প্রাণ, বন্যার সময় ঘেরপা সকলই অলম্বন হয়
 কেবল দুই একটি ৮ইয়া বাক উন্নত থাকে।
 ক দেই কপ বেধ হইতে লাগিল। আর হস্তে
 ব রক্ত লাগ ও গৃহানন্দ। মানদ্রী লগ্না পদ
 অঙ্গ বিবাদ বাবতেছে কাবণ সকলই এক-
 হইয়াছে। কান্দ্রব্য কাহারও কেহই চিন
 তে পাবে না। চরমক বিশেষ রূপে কড় লখিয়া
 কোণোহইব বা আবশ্যক নাই। দুই একটি আ
 ন্য ৮ইয়া লিখিতে ৮ইবে দুইগান বেইল
 গুরুমর্টের পরামর্শ মাধ্যম লাগিতে তিনজন
 এক সাংসার অই ৮ইয়াছে। বদন্তর
 দ্বাধী তাহাদিগের মানব লীলা সংবরণ করিতে
 ৮ইয়া, আর শুনিলাম কগলপদ একটি খোঁজ
 ব প্রতি অচ্যুত মিথুন পীড়ন কহাতে উবেশা
 মিত্র নামক একজন ভক্তলোকের তিনমাণ কাব
 বাক হইয়াছে। আহা! মনুষ্যপৌড়ক কাদি প্রভৃ-
 তি কানের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেটদিগের কি লি-
 ক্ত না? তাহবেইবা কেন? পাণ্ডায়ন, পাণ
 শতে ন কিংবা পাণ্ডায়নদিগের পাণ্ড পাপে
 কিছুকরমা — বুজেরে সংবাদ সঙ্গে লিখিয়া
 অজ্ঞা বাহ্যলভয়ে লিখিতে পনিলাম।
 জগৎকারিণঃ
 সজের।

এইবার কলিকাতাও বঙ্গের পূর্ব সীমানা হইল এবং
কোনোমুহুর্তেই সমস্ত বঙ্গের তাহার হস্তে আসিল। এইমুহুর্তে
বীরকামের বিদ্রোহের সাজিতে এত সোমবার
কলিকাতা পড়িল।

প্রেরিত ।

अविनाश निरापन्न—महाभक्त । जागृत निमित्त
विश्वसनीय । अतः सर्वे धर्मार्थं यत्नयन्तः । अविनाश

সোমপ্রকাশ

“**अवर्तकां प्रकृतिविज्ञानं पारिवः सन्नयती अतिमहती न हीयताम् ।**”

४ छात्र।
२१ नरथी।

{ সন ১২৬২ । ৭ জ্যৈষ্ঠ । ইং ১৮৬২ । ১২ মে }

वार्षिक शुल्क १ टाका ,
वार्षिक आयुक्त २० टाका

विष्णुपत्रम् ।

ଆହୁକଗଣେଷ୍ଟ୍ର ଆଦି ।

বৈশাখমাস জ্যেষ্ঠ হওয়াতে অনেকের
 প্রস্তুত সৌর প্রকাশের মূল্য নিঃশেষিত হইয়া
 ৫ তাহাদিগকে বিনয় পূর্বক জানান যাউ-
 তেছে যে তাঁহারা অনগ্রহ পূর্বক স্বরায়
 আশাশি বর্ষের মূল্য পাঠাইয়া দেন। আশা-
 ত ৮ সংকত বস্ত্রেই মূল্য পাঠাইবেন।

— 4 —

সে।ম।প্রক।শ।

‘ই টক্যে লেখবার’।

ମହାଶ୍ୱେନକେର ଶକ୍ତି ।

বীরভূমের অন্তঃপাতী কীর্ত্তার গ্রামে
শ্রীযুক্ত বাবু শিবচন্দ্র সরকারের যত্নে বাল
কলিগের পাঠার্থ একটি এবং বালিকাদি
গের শিক্ষার্থ একটি এই দুটি বিদ্যালয়
প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, তৎসম ক্রান্ত যে পর
আশাদিগের হস্তগত হইয়াছে, স্থানান্তর
প্রযুক্ত তাহা প্রকটিত হইল না ।

লক্ষীপাশা নিবাসী বিপিনবিহারী মহা
 কারের নিখিত নড়াইলের কালীয়া গ্রামে
 র ত্রাণ সমাজের প্রতি প্রাচীন মন্ত্রনামে
 র বিবেচনামূলক পাঠকগণের জ্ঞান সীতি
 কর হইবে না বলিয়া প্রকটিত হইল না ।

‘ময়মন সিংহের দুই খানি এবং করিম
পুরের এক খানি পত্র নিত্যই আমার বসি
য়া উপেক্ষিত হইল।

কগলিব অভ্যুপাতি বালি গ্রামের ম
দনমহোৎসবসংক্রান্ত পত্রে অনেক দিনের
সহাদ লিখিত হইয়াছে বলিয়া প্রকাশ করা
গেল না।

লেখ সাফেবের প্রস্তাব পাঠ।

ভারতবর্ষের বর্তমান রাজস্ব সংক্রান্ত
প্রধান কার্য, নির্বাহক অমরেন্দ্র লেও সা
হেব গত ১২ই মে মোমবার সন্ধ্যার পর
তেলহাউস ইনটিটিউট সভায় এক প্রস্তা
ব পাঠ করেন। গবর্নর জেনেরল লর্ড
এলগিন, লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বীভন সাহেব
প্রভৃতি অনেক প্রধান ব্যক্তি সভায়লে
উপস্থিত ছিলেন। প্রস্তাবটি বহু বিতর্ক
হইয়াছে। উহা অতিশীঘ্র শ্রুতকাকারে
মুদ্রিত ও প্রচারিত হইবে। লেও সাহেব
প্রস্তাব মধ্যে নিম্ন লিখিত কয়েকটি মূল
কথার উল্লেখ করিয়াছেন। প্রথম, ভাষার
সৃষ্টি। দ্বিতীয়, সামবজাতির দৈনন্দিন
জীবনিক সহকারে ঐ ভাষার বহুবিধ পরি
বর্ত্ত। তৃতীয়, তিন্ন তিন্ন ভাষার ব্যাকরণ
পানি গত সৌসাদৃশ্য দর্শন করিয়া তিন্ন
তিন্ন জাতির এক মূল হইতে উৎপত্তি নি
র্ণয়। চতুর্থ, আর্থ্য বংশের তিন্ন তিন্ন দেশ
গমন ও ভাষায় বসতি। পঞ্চম, হিন্দু ও
ইসলামিগের ঐ বংশ হইতে জন্ম।

লেও সাংঘেব শোষোক্ত বিষয়টি লইয়া
 অধিকক্ষণ বক্তৃতা করেন। হিন্দু ও ইংরা
 জেরা এক বীজ, পুরুষ হইতে উৎপন্ন, ইহা
 রা পরস্পর জাতৃত্বাপন্ন; অতএব ইহা
 দিগের পরস্পর বিচ্ছেদ্যের পরিত্যাগ ক
 রিয়া সৌহার্দ সম্পন্ন হওয়া উচিত, এতৎ
 প্রতিপাদনই লেও সাংঘেবের
 প্রস্তাব পাঠের মুখ্য উদ্দেশ্য।

আজি কালি এই একটি ধরন দেখা
বাইতেছে, যাঁহারা বক্তৃতা দ্বারা আপনাদি
গের উদার ভাবের পরিচয় দিয়া আশংসা
লহিতে অভিলাষী হন, তাঁহারাও ক্রিষ্টিক
একার বক্তৃতা করেন, আর যাঁহারা
সংসার লোক, হিন্দু ও ইংরাজদিগের
পরস্পরের প্রতি বিবেচ্য হুঁরি কর্ণধর
রা বাস্তবিক অসুখিত হইতেছেন, তাঁহা
রাও পরস্পরের ঐশ্বর্য নষ্টন করিয়া
উল্লিখিত বক্তৃতা করিয়া থাকেন। কিন্তু
সাহেব এখান রাজপুত্র, অর্থাৎ হিন্দু ও
ইংরাজেরা পরস্পর ঘৃণ্যভাবাপন্ন হন,
তাঁহারা যে একপ ইচ্ছা হইবে, একথা কখন
বাহুল্য। উক্তর জাতির সৌভাগ্য বঞ্চিত
হিলেকে দ্বিভিন্ন আশিপত্র প্রদেয় ন
হয়, সম্ভাবিত নহে, ইহা তাঁহাদের আ
শিত নাই। দ্বিভিন্ন রাজপুত্রেরা একতর
দিগের উদ্বোধন না জমাইয়া রাজ্য করেন
এইটিই তাঁহাদের ইচ্ছা, সম্ভাবিত ইহকাল
টান অকৃত্তি রহিত করিবার চেষ্টা দ্বারা
তাহা স্পষ্ট প্রতীক্ষমান হইতেছে। কিন্তু
কোন্দের বিষয় এই, উক্তর জাতির সৌভ
গ্য পথের কষ্টক স্বরূপ হইয়া পক্ষপাত
প্রভৃতি যেগুলি প্রতিবন্ধকতাচরণ করি
তেছে, তাহাগুলন বিধানে কাঁহারও নহি
শেষ বস্তু দৃষ্ট হইতেছে না। সেই প্রতিব
ন্ধক গুলি দূরীভূত না হইলে উক্তর জা
তির অকৃত্তিম ঐশ্বর্য হওয়া কোন ক্রমেই
সম্ভাবিত নহে। যে দিকে দৃষ্টিপাত করা
যায়, সেই দিকেই পক্ষপাত লক্ষিত হয়।
এক জন ইংরাজ ও এক জন বাঙ্গালি উক্ত

কর্মচারী হইয়া থাকিলে এখানে
বের নিকটে থাকিলে পক্ষপাত
অপেক্ষা হীনতা নহে, তথাপি প্রধান
স্বয়ং বাঙ্গালিকে উপেক্ষা করিয়া ইংরাজ
কর্ম করিবেন। এতদ্বিধ পক্ষপাত দূর
করিয়া বাঙ্গালির মন কি কখন ইংরাজের
প্রতি সৌহার্দ্য সম্পন্ন হইতে পারে? এক
জন বাঙ্গালি যে যেখানে যে কর্ম করিতে
হয়, তাহাতে এক জন ইংরাজ আ
সিয়া, অতঃপর তাহার বিপক্ষে যেমন
হইবে, তদ্বিধা? ইহা দেখিয়া কি বাঙ্গা
লির মন প্রীতিপ্রসন্ন থাকিতে পারে?
বাঙ্গালি অপেক্ষা ইংরাজদিগের ব্যয় অ
ধিক, এতদ্বিধ নিত্য অকিঞ্চিৎকর, পদস্থ
বাঙ্গালিদিগকে যে কুপোষ্য পোষণ করি
তে হয়, তাহাতে যে ব্যয় হয়, তাহা অনেক
পদস্থ ইংরাজের ব্যয়ের অপেক্ষা অধিক.
বিশেষতঃ একজনকার পদস্থ বাঙ্গালিদিগের
ব্যয় কোন ক্রমেই ন্যূন নহে।

এখানে কেবল এক চাকরীই পক্ষপা
তের উদাহরণ স্বরূপ প্রদর্শিত হইল?
এইরূপ অনেক বিষয়ে আছে। এদে
খায়েরা এই সকল দেখিয়া ক্রমশঃ বীত
শ্রম হইতেছেন। ইহারা এত দিন এ সক
ল বিষয় তত অনুভব করিতেছেন না। যদ্বা
রা সেই অনুভবশালিতা জন্মে, এখন দিন
দিন সেই কারণ উপস্থিত হইতেছে। পক্ষ
পাত দূর করিয়া লোকের মনে যে বৈ
ষম্য হয়, ইহা অনৈসর্গিক নহে। বাইব
লোক্ত কথা পুরুষ কেইন এতদ্বিধ প্রাণে
সংহার করে কেন? বাইবল হতে জন্ম
প্রাপ্ত যে পক্ষপাত করেন, কেই

নিরাসাধুতাক্রম তাহার একটি কারণ
হইল। কিন্তু হিন্দুদিগের সহিত ইংরাজ
দিগের যে ইচ্ছা বিশেষ করা হয় আমরা
কি কখন কারণ দেখিতেছি না।
এই বিষয়ে ইন্দীপ্তন বাঙ্গালিদিগের
স্বাধীনতা সর্বত্র বর্ণিত হইয়া থাকে। তবে
সামাজিক মন বিচারে ইহাদিগের হীনতাই

করিবার কারণ।
শাস্ত্রের বর্ণনায় প্রদত্ত হইল, ইং
রাজদিগের অধিক বল থাকিতে অনেকে
ইহাও এদেশীয়দিগকে অপমান করেন।
তাহাও ইন্দীপ্তনদিগের বিষয় বিচারের
কারণ হইয়াছে। অনেককে আমরা এ
অপেক্ষা করিতে শুনিতে পাই। কলতঃ
উল্লিখিত পক্ষপাত নিবন্ধন যে সমস্ত অ
বৈধ কার্য অনুষ্ঠিত হইতেছে, যত দিন
তাহা পরিহার্য না হইবে, তত দিন অজ
তঃ গবর্ণমেন্টের নির্বৃত্তি লাভের সম্ভাবনা
নাই।

বাঙ্গালি বিদ্যালয় ও গবর্ণমেন্টের
সাহায্য দান।

গবর্ণমেন্টের সাহায্যদানপ্রণালী গত যে
দোষ আছে, আমরা পূর্বে বিশেষ করিয়া
তাহার উল্লেখ করিয়াছি। এই সম্বন্ধে
প্রণালী বাঙ্গালি শিক্ষার গত প্রতিবন্ধকতা
চরণ করিতেছে, ইংরাজীও তত নহে।
দুটি কারণে লোকের ইংরাজীশিক্ষার অ
ধিকতর ব্যয় ও অনুরাগ জন্মিয়াছে। এক,
ইহা রাজতাবা। যাবতীয় রাজকার্য ইহাতে
নির্বাহ হইতেছে, ইহা জানিলে অর্থোপা
র্জন্যের পথ সুগম হয়। দ্বিতীয়, এতাবতী
বাঙ্গালতাবা অপেক্ষা বহুগুণে উৎকৃষ্ট হ
ইয়াছে। যাঁহারা কেবল জ্ঞানোপার্জন
জন্য সন্তানকে শিক্ষাকার্যে নিয়োজিত
করেন, তাঁহাবাদ ইংরাজীর প্রতি পক্ষ
পাতী হইয়াছেন। ইহাতে অনেক উৎকৃষ্ট
গ্রন্থ আছে। তদ্ব্যবহা জ্ঞানদার সহজে
উপাটন করিয়া দেয়।

বাঙ্গালী ভাষায় এই উত্তম গুণেবই স
ম্ভাবনাই। প্রথমতঃ বাঙ্গালী ভাষা ইংরাজী
ন্যায় অর্থকরী নহে। ইহার দশাও অম্যা
পি উৎকৃষ্ট হয় নাই। এ ভাষায় উৎকৃষ্ট
গ্রন্থদর্শন দুর্লভ। এই দুটি গুণ নাই বলি
য়া কি এ ভাষা উপেক্ষিত হইবে? উপেক্ষার
কথা দূরে থাকুক, তাহাতে ইহার সর্বাঙ্গীন
উন্নতিলাভ হয়, সেচেষ্টা করা সর্বতোতা

বে বিধেয়। বাঙ্গালী দেশের উন্নতি ইহার
উন্নতিমুখ মীলন করিয়া রাখিয়া হইবে। ইহা
ব উন্নতি ইংরাজকে বাঙ্গালী পর উন্ন
তিলাভপ্রদায়ী হইতবলা সন্দেহ নাই।
যখন এদেশীয়দিগের বোঝানুসারে বাঙ্গ
লী ভাষার অনুশীলন বিষয়ে বিশেষরূপে নি
বর্ত্তমান হইব, তখন দুটি মহান অনুরাগ দৃষ্ট হই
তেছে, অথচ ইহার উপেক্ষা কোন ক্রমেই
সুবিধ হইতেছে না, তখন গবর্ণমেন্টের এ
বিষয়ে বিশেষ মনোনিবেশ করা অবশ্য
কর্তব্য। গবর্ণমেন্ট ভিন্ন আমরা আর কা
হাকে কহিব প্রজাগণ লব্ধ হইতবলা হইতে
না পারে, তাহাও পিতৃহানীর গবর্ণমেন্টের
সেই হিচসিদ্ধান্ত লইতে হয়। অসত্য
রাজগণের ন্যায় অ.মা.দিগের গবর্ণমেন্ট নি
র্বোধ ও অবিবেক নহেন। প্রকারে হিতসা
ধন যদি গবর্ণমেন্টের মুখ্য উদ্দেশ্য হয়, প্র
জার বদেষ্টাও তাহাও প্রীতি সাধনের তুল্য
হিতকর কার্য অঙ্গ আছে।

বাঙ্গালীভাষায় উন্নতি লাভ গবর্ণমেন্ট
সাহায্য দানের উপায় নিত্য নিত্য করি
তেছে, ইহা যখন হির হইল, তখন সাহা
য্যদানবিষয়ে ইংরাজীর সহিত ইহার
কিছু বিশেষ করা অসম্ভব আদ্যাক। আ
মা.দিগের অভিপ্রায় সে বিশেষ এই, গব
র্ণমেন্ট যাবৎ বর্ত্তমান সাহায্য দান প্রণালী
পরিবর্ত্তিত না করেন, তাহাও বাঙ্গালী বিষয়ে
এই নিয়ম করুন, যে যে স্থানে বঙ্গবিদ্যা
লয় হইবে, তত্রতা লোকেরা হিন্দুদের বে
তন সমস্ত যত টাকার সংযোগ করিয়া দি
বেন, গবর্ণমেন্ট তত টাকার সাহায্য প্রদান
করিবেন। এ নিয়ম হইলেও অনেক স্থলে
বঙ্গ বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে। অ
ধিক সংখ্যা বঙ্গ বিদ্যালয় হইলে বঙ্গভাষার
উৎকৃষ্ট প্রচার যে অসম্ভাব আছে, তাহাও
ক্রমশঃ দূরীভূত হইবে। উৎসাহলাভ ও
প্রয়োজন উপস্থিত হইলে কোন বিধেরই
অসম্ভাব থাকে না। পরিশেষে এই প্রশ্ন উ
থিত হইতেছে, আমরা যে প্রস্তাব করি

তেছি, গবর্ণমেন্ট কি আপন ইচ্ছায় কনসল
প কার্য করিবেন? কখনই না। বাঙালী লি
কর আবশ্যিকতা আমাদিগের দেশের যে
সকল ব্যক্তির হৃদয়ঙ্গম হইয়াছে, তাঁহারা
উল্লিখিত প্রার্থনা করিয়া চতুর্দিক হইতে
অবেদন করুন। গবর্ণমেন্ট তাঁহাদিগের
অগত্যা বুঝিলে এখিত্তে যথোচিত মনোযোগ
করিবেন সন্দেহ নাই। আজি কালি সবি
শেষ আমদানি ব্যতিরেকে কার্য সিদ্ধি হই
ব ব সম্ভাবনা অতি কম।

কি মঙ্গল বিচার

অজ্ঞ মাজিষ্ট্রেট ও উইকোচগ্রাহী না
বাগরাই সব মহাভৈরব। বাবুপক
সকল এত যে আইন করিতেছেন, প্রধান
পুরুষের সর্বত্র সমদর্শিকপে সৎ ও
যশ বিচার প্রবর্তিত করিবার এত যে
চেষ্টা করিতেছেন, এই মহাপুরুষদিগের
হৃদয় সমুদায় বুঝা হইতেছে। বোধ হয়,
সমুদায় তাহাতেই নাম আমাদিগের পাঠক
গণের কাহারও অবদিত নাই, সে নিজ
বাস স্থানের নিকটবর্তি গ্রামের লোকদি
গের নিকটে ব্যক্তি করিয়া রাখিয়াছেন।
যাহা সেই ব্যক্তি কিত, তাহার অবা
ধিত পাইত। সে সমুদায় বুঝি করিয়া তাহা
দিগের সর্বত্র হরণ করিয়া আনিত না,
অন্যথা হইলেই অন্যথা হইত। সে যখন
এ ব্যক্তি আদায় করিতে যাইত, গৃহস্থের
কোন কপে তাহাকে কিছু কিছু লবণ
তক্ষণ করাইতেন। ইহাও তাৎপর্য এই
রহু নিমক হারান হইয়া তাহার ডাকাতি
করিতে না পারে। রহুও তাহার একবার
লবণ পাইত, তাহার গৃহে সমুদায় বুঝি কার্য
তন। কিন্তু আমাদিগের দারোগা বহু
দিগের কিছুতেই পারিবার বা নাই, লব
ণের আদায় কবই কর, তাঁহারা সর্ব
ত্র করিতে চাহেন না।

সম্প্রতি অন্যতর দারোগা সাহেবের
জন্য নিবন্ধন একটি বিবরণ হইল।

সাহেব। বিবরণের পত্রিকা পুণ্ডার
সংবাদ দাতা লিখিয়াছেন, কথায় তাঁর
অনুগ্রহকারী একজন জন রামাৎ বৈষ্ণব প
মন করিয়াছিল। সকলেই জানেন রামা
তেরা নিতান্ত নিম্ন নহে। তাহাদিগের স
বে একটা হস্তী ও কয়েকটি অশ্ব ছিল।
তাহার দারোগা তাহাদিগকে দত্তা বলি
য়া প্রেরণ করেন (বোধ হয় তাহারা দা
রোগা সাহেবের মনোবাঞ্ছা পূর্ণ করে
নাই) এবং তত্বে মাজিষ্ট্রেট সাহেবের নিক
টে পাঠাইয়া দেন। মাজিষ্ট্রেট সাহেব
তাহাদিগের হস্তী মাস কারাবাসের অংশ
দিয়াছেন এই সহায় যদি সত্য হয়, তখন
কর অস্বাভাবিক কাণ্ড সন্দেহ নাই। অধিক
সংখ্য মাজিষ্ট্রেট ও দারোগাকে আমাদি
গের যেকোন জানা আছে, তাহাতে এস
বন্দ বড় অবিশ্বাস হইতেছে না। আমা
দিগের প্রতিবেশী এক গ্রামের এক গৃহ
স্থের গৃহে একটা ডাকাতি হয়। দারোগা
আপনার ঢালাকী দেখাউবার নিমিত্ত কত
কগুলি মানুষকে ডাকাতি করিয়াছে। এ
প্রকার করেন। মকদ্দমের মাজিষ্ট্রেটের
দ্বারা দেশীয় কাজীদিগের অপেক্ষা অল্প
ও রূপীয় বিচারকদিগের ন্যায় শ্রেষ্ঠ
চারী। লোককে কারাবাস করিবার তা
হাদিগের যে কুখ্যাতি হইতেছে সে বিবানে
র আইন তাহা ভুল করিবার বিলম্ব
উপায় হইয়াছে। আমরা বিশেষ জানি
তাহার বর্জন গবর্ণমেন্টে কখনই একজন ব্যক্তি
প্রেরণ নহে যে বিনা প্রমাণে কোন ব্য
ক্তিকে কারাবাস করায়। কিন্তু মাজি
ষ্ট্রেটেরা কি জন্য ইহার বিপরীত কার্য
করেন তাহা আমরা বুঝিতে পারিতেছি
না।

যাহা হউক, আমরা গবর্ণমেন্টকে অনু
রোধ করিতেছি তাঁহারা অবিলম্বে পুণ্ডার
মাজিষ্ট্রেটের কৈফিয়ৎ চাহিয়া পাঠান।
যদি কেবল ইচ্ছা হইত উপরে নিবন্ধন কথিত
রামাৎদিগকে কারাবাস করা হইত না থাকে,

তাহা হইলে তাহাদিগকে এই দণ্ডে দণ্ড
করিয়া মাজিষ্ট্রেটের বেতন হইতে তাহা
বিভেদ ক্ষতি পূরণ করিয়া তাঁহাকে বিশেষ
রূপে সতর্ক করিয়া দেওয়া কর্তব্য।

কিন্তু মাজিষ্ট্রেটের আসন্নকাল।

যে কোন ধর্ম হউক, উপাসকগণের
ঐহিক ও পারিত্রিক প্রার্থনাই তাহার
উদ্দেশ্য। কিন্তু উপাসকগণের স্বার্থপরতা
ও মূর্খতা নিবন্ধন বহু স্থলে সেই উদ্দেশ্য
ব্যাহত হইয়াছে। এক প্রকার উপাসনা
হিন্দুদিগের আদি ধর্ম; উপাসকদিগের
দোষে উহা ক্রমে এমন বিকৃত হইয়া উঠি
য়াছে যে এখন অনেক সভ্য সমাজে
হিন্দু ধর্মাবলম্বী বলিয়া পরিচয় দিতে লজ্জা
বোধ করেন। উপাসকদিগের ক্রুরতা ও
মূর্খতা দ্বারা মুসলমান ধর্ম নিতান্ত দুর্বি
ত হইয়াছে। রোমান ক্যাথলিকেরা খৃষ্ট
ধর্মকে কি শোচনীয় অবস্থায় পাতাই
য়াছে : সম্প্রতি চীন দেশে যাহারা রাজ
বিপক্ষ হইয়া মহান উপদ্রব উপস্থিত করি
য়াছে, তাহারা খৃষ্ট ধর্মাবলম্বী বলিয়া পরি
চয় দেন, ইংল্যান্ডেরা খৃষ্ট ধর্মাবলম্বী বলিয়া
প্রথমে তাহাদিগের অনুপেক্ষপাতী হইয়া
ছিল, কিন্তু তাহাদিগের কার্য কর্ম
করিয়া এখন আবার তাঁহারা বিপক্ষ হই
য়া উঠিয়াছেন। কলকাতা উপাসকদিগের
স্বার্থপরতা ও মূর্খতা ধর্মের অধিকতর
অনিষ্ট করিয়াছে। আমরা যদ্যপি অন্য
এই বিষয়ের প্রসঙ্গ করিতেছি, তাহা নিম্নে
লিখিত হইতেছে।

সোমবারগের সভাপ্রকাশ নামে এক
খানি সমাদরণ আছে, তৎসম্পাদক
কর্মণ দাস মূলতী তত্বে অন্যতর ধর্মস
ম্প্রদায়ের প্রধান পুরোহিতের দোষের
কথা লিখিয়াছে। অতীতের তাহা স
ংক্রান্ত প্রকাশ করেন। প্রধান পুরো
হিত হইয়া বী-প্রজ্ঞের জী আপনাকে
কোনতর বলিয়া পরিচয় দেন এবং

বঙ্গ-ধর্মোপাসকদিগের শ্রী কন্যাশ্রী ম
হারা (৭.১) করিয়া থাকেন। সত্যপ্রকাশে
এমত পুরোহিতের (ইহাকে মহারাজ
বিশেষ) এইসকল দুর্ভাবহারের কথা নি
শ্চিত হওয়াতে মহারাজ তত্ত্বতা মুখিমকো
মালীশ করেন। সম্প্রতি তাহার বিচার
হইয়া গিয়াছে। মহারাজের ৫ টাকা জরি
ফা হইয়াছে আর তাঁহাকে মোকদ্দমার
খরচাও দিতে হইবে।

মান শূন্যেহিত উপাসকদিগের দ্বী ক
নাশি লইয়া ব্যবহার করিবেন, ইহা কোন
ধর্ম শাস্ত্রে আছে : এত দিন অম্যানাক্রকা
র সমুদায় সাহস করিয়া রাখিয়াছিল, চ
করিয়া ধর্ম্যনাম কঙ্কু দ্বারা আবৃত
হইয়া যাহা মনে করিয়াছে, তাহাই হই
রাছে। প্রতিবাদ করিবার নোক ছিল না।
এখন সে কাল অতীত হইয়াছে। সাহস
পুরঃসর এই সকল চক্ষু-বৃত্তির বিষয় প্রক
শ করিতে পারে এখন একপ অনেক লো
ক হইয়াছে। এই সকল বিষয় বহু প্রক
শিত হইবে, ততই লোকের হিত ধর্মের
প্রতি অনগ্রহা জন্মিবে।

বোম্বাইয়ের প্রধান বিচারপালি উক্ত
মোকদ্দমায় আজ্ঞা দিবার সময়ে এই কথা
বলেন, “যে বিষয় নীতি বিরুদ্ধ তাহা কখন
ধৰ্ম্মানুমোদিত হইতে পারে না। যে স
কল প্রথাব “স্বাভাবিক মূল পর্যাঙ্ক নষ্ট ক
রিবার ক্রমতা আছে. প্রকাশ্যরূপে তাহার
প্রতিবাদ করা নিতান্ত আবশ্যিক।” যদি
আমরা অনুধাবন করিঃ দেখি স্মৃতি প্রতী
য়মান হইবে, প্রধান বিচারপালি প্রকারা
ন্তরে ভারতবর্ষ যদিগকে প্রচলিত কুম্ভকার
পরিভ্রাণে যত্নশীল হইতে অনুরোধ করি
য়াছেন।

তারত্ববর্ণনঃ এ অংশে উক্ত গ্রন্থে বর্ণন
নাম ধার্মিক নাই এমন নয় । তবধী চক্র
হি । এই চক্রের আত্মকমিতের সুব পান
বারাণসী দেবন কি অনুভূত নয় - ১৬
জনকতি কোন কোন তত্ত্ববর্ণনীর

লোকও চক্রেখরের আশ্রমনার দৈহ সম
পণ করেন। মেড়ামেড়ী, কড়াভজা যা
উল্লেখ্য। এ সমুদায় দর্শে কি কুক্রিয়া
ক্রোশ প্রব দিত দৃষ্ট হয় না। বহুপ্রকার
সম্পাদক প্রদীপ সম্পাদকদিগের আদ
র্শ গ্রহণ করিয়াছেন। যখন ভাস্কর্যের
মঙ্গল সাধন সম্পাদকদিগের উদ্দেশ্য ইটি
হচ্ছে, তখন প্রোগি বিশেষ অথবা স্বাধীন
শেষের মনোরঞ্জন চেষ্টা পরিত্যাগ করিয়া
অপেক্ষ পূর্ণচিত্তে ব্যবসায় দোষের উদ্ধার
করা বিদ্য। যে দেশে বিদ্যুৎ দ্বারা ও বি
দ্যুৎ প্রাণী প্রভৃতি ন্যায়, তাহার যথার্থ
উন্নতি লাভের সম্ভাবনা নাই।

ନବମ ଡିଏ ଏପ୍ରିଲ ୨୫ ୫୨ ।

খ্রিষ্টান্দারক ' প্রকাশ্যরূপে পবিত্রতা
দিয়া সকলে রাজকীয় প্রাপ্ত হইবেন এতৎ
বিষয়ক প্রস্তাব ১ নং এপ্রেল জেন্স আফ
কমন্স সমাজে বিতৰিত হয় । হেন্ৰিসি
সাহেব সমাজে এই প্রস্তাব করেন যে
মিথিলা সর্ববিধ সংস্কার যাবতীয় পদ
কেবল পবিত্রোত্তীর্ণ ব্যক্তি-ভিমেই প্রতি
স্থাপিত হয় । যদিও এক প্রস্তাব বিচার্য
তৎপাত্ৰ হইল তথাপি উক্তবিচার দ্বারা প্রা-
ক্ৰ পবিত্রতা বিষয়ে কোন কোন কমন্স-বাহু স-
ভার অতিপ্রায় জ্ঞান হইয়াছে । হেন্ৰিসি
সাহেব কহিলেন যে পূৰ্ব্বোক্ত একে অনেক
পদ কেবল অল্পগ্রহ বা আত্মীয়তানিবন্ধন
প্রাপ্ত হইতেছে অতএব ইহা সন্নিহিত কাং-
ক্ষা পবিত্রোত্তীর্ণ ব্যক্তি দ্বিগুণে রাজব্যব-
স্থাপিত করা উচিত । সুতরাং টাট সাহেব এই
প্রস্তাবের পোষকভাৱ কহিলেন যে তাবত-
ধর্ম সিভিলসার্ভিস বিষয়ে প্রকাশ্য পবিত্রতা যে
তাত্ত্বিক বীতি প্রবর্তিত হইয়াছে তাহা কল-
পিত হয় নাই, পুঙ্খ কৌট নীচকুলজাত ব্যক্তি
সিগকে ভারতবর্ষের রাজকাৰ্গে নিযুক্ত
কর, সিভিল সার্ভিসকে নীচকরা মাত্র । তথাপি
তিনি টাট সাহেবের কথায় সন্তোষ হেন্ৰিসি সাহেবের
প্রতিকটা কহিলেন স্কটল্যান্ড সাহেব বলিলেন
যে 'বীজান দাঁতামুসারে কাংক্ষিত আতি
বিস্তৃত অধ্যয়ন হার হইয়া সাহিত্য ও

[illegible]

তা করিলেন। কিন্তু পরিচালনা সমিতির কার্যক্রম
হইল। ইংলণ্ডে প্রকাশিত কবিতার অর্থ
পি জিরোভাব এর নাই।

সংসদে ন্যাটো সাহেব জিটন রাজ্যের সা-
গামীবর্ষের আর ব্যাঙ্ক এস্টিমেট অর্পণ
করিয়াছেন। ব্যয় ১০,০০,০০০ পৌণ্ড, আর,
১০.০০ পৌণ্ড।

নাসমর্পণ নাটকের ইংরেজী অনুবাদ
এখানে মুদ্রিত হইয়া বিক্রীত।

রোমক পত্রে এমত জনরস উন্নিয়াছে যে
পোপ বেগম সমরকে দেবীকে প্রতিষ্ঠিত ক-
রিবার অতিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন। বস-
দেশের বৈষ্ণবদের ন্যায় (বৈষ্ণবেরা একা
বাস্তব গোমালকাথলিক নাস) বোম্বাই
কাথলিক পটোনের। বৃত্ত ব্যক্তি বিশেষকে
সিদ্ধান্ত পরামর্শ শিবেচনা করিয়া গোমালী
গণের দেবতাক্রমে প্রতিষ্ঠিত করে বেগম
সমর সেই রূপ এক দেবী হইবেন। বেগমের
চরিত্র আপনাত পাঠকের মধ্যে অনেক
অঙ্গত থাকতে পারেন। তাহার উপপাতি
দানীর সহিত হাক পটীকাস করিয়াছিল বলি-
য়া বেগম এই দানীকে এক কাষ্ঠাসনের নিরে
জীবক প্রোথিত করিয়াছিলেন। অঙ্গ করি-
য়া বেগম ছয়জন উপপতির মনোরঞ্জন করি-
তেন। পরে স্বকবিতায় উপস্থিতী করেন। মনে
মনে তাহার উল্লেখে বিলম্ব বিশ্বাস ছিল,
আপা তাঁহার হস্তে শালগ্রামাদির অবমাননা
হইত না। তথাপি, উটালি প্রদেশে তাঁহার
বিস্তার ধন নিশ্চিত হইবাতে বোধ হয় বোম্বাই
কাথলিক দেবীকরণে ভবিষ্যৎ কালে বিখ্যাত
হইবেন। বোম্বাই খর্চ উপস্থি হওয়া প্রবৃত্তি
প্রাপ্ত নহে। একব্যক্তি আজীবন সুপথ্যবলী
থাকিয়া দুই কালে যদি বলেন আশি প্রভৃতি
শুখোৎসব স্থাপন রাখিয়া মরিতেছি তলে সে
শেষ মেল জিগের সহিত মিলিত হইবে। সা-
সাদের স্বদেশীয় ধর্ম যে ইহার কত আকর্ষণ,
তাঁহা আপনাত পাঠকেরা বিবেচনা করিবেন।

সংপ্রতি একজন সমাচারপত্র সম্পাদক
ইকাপুর্নক অনঙ্গন করিয়া দেহভাগ করিয়া
ছেন।

পুরা টায়েরা বেকশ কলেক্ট পবীক
হীণ হইয়া থাকেন, প্রীতান্ত্রিককে সেই
এপকার সিবার নিশ্চিত চেষ্টা হইতেছে।

ইংলণ্ডের একটি বিশেষ কীর্ষি এই যে উক্ত
ব্যক্তি ব্যক্তিরা আশ্রয়ার্থী সিনকে উন্নতায়ক
করিবার নিশ্চিত নিয়ম চেষ্টা করিয়া থাকেন।

একজিবিধন কাণ্ড আশ্রয় করিবার নিশ্চিত
করেকজন কবিশর, নিযুক্ত হইয়াছেন। ইংল-
ণ্ডেরী তৎকালে লণ্ডন হইতে দুই থাকি
বেন। ইহা নিশ্চিত বলিয়া প্রভু হইল যে স-
মিতি মণোলে এন্ ইংলণ্ডে আগমন করিবেন।

করাণী দেবীর বিখ্যাত কবি ও লেখক
লিমাটি ন আদারের দেবীর অনেকদে আশ-
মন করিয়াছেন। কবিরের সাধারণ ভাষায়-
সারে তিনি একদে দেবী দশায় পড়িয়াছেন,
এক ব্যক্তি তাহার পক্ষ হইয়া ব্যবস্থাপক সমা-
জে তাঁহাকে প্রতি দিবার নিশ্চিত আবেদন পত্র
প্রদান করেন। কিন্তু লিমাটির ইহা অর্থ না-
জ ব্যবস্থাপক সমাজের এক সত্যকে পত্র লি-
খিলেন যে এই আবেদন পত্র যেন অগ্রাহ হয়।
কাণ্ড, তিনি বলেন করাণী লোকেরা যে ক-
প রাজশাসন প্রণালী অবলম্বন করুন না কেন,
তাঁহাতে তাঁহার কোন আপত্তি নাই, কিন্তু পূ-
র্বে তিনি রাজশাসন বিষয়ে পূনঃ পুনঃ যে ম-
ত প্রচার করিয়াছেন, তাঁহাতে সমাজের রা-
জকোষ হইতে প্রতি গ্রহণ করিতে পারেন
না। এ ব্যবহার লিমাটির উপযুক্ত বটে।
আপনাত পাঠকের মধ্যে অনেক জানেন
যে উক্ত কবি সাধারণত পক্ষ লোক।

১৫ এপ্রেল।

খান্‌ডেইয়ের জুলাই ১৫ অবসারীরা পা-
রিষেটে অর্পণ করিবার ১০,০০ এক আবে-
দন পত্র প্রেরিত করিয়াছেন। তাহাতে উক্ত
হইয়াছে যে ভারতবর্ষের গবর্নরকে হুজুর উ-
পদ্য শতকরা পাঁচ টাকা ও বজের উপর শত-
করাংশ টাকা যে শুদ্ধ দান করিয়াছেন,
তাঁহা অতি অন্যায্য। তাহার। ভারতবর্ষের
ব্যবসায়ী সিনকে কেবল উৎসাহ দেওয়া হই-
তেছে। ভারতবর্ষের ধনীসিগের স্বাতন্ত্র্য
প্রতি কাম্যে নিযুক্ত পাঁচ উচিত, যেহেতু
বহু ব্যবসারে তাঁহাদের হস্তক্ষেপ অনধিকার-
চেষ্টা বিশেষ। আবেদন কারীদের প্রার্থনা এই
যে বজের ব্যঙ্গার তাঁদের প্রতি এক চেষ্টা
করা না দেওয়াতে গবর্নরকে পক্ষপাতিতা
করিতেছেন।

আপান দেবীর রাজকুতরা করাণী
দেশে উপস্থিত হইয়াছেন। অন্যকার প্রায়
পত্রে উক্ত হইয়াছে যে তাঁহার। বার্লিন, ও
লিঅ নগর সমস্ত আশ্রয় ব্যাপার কৌতুক-
লের সহিত অবলোকন করিয়াছেন। কোন
কোন করাণী সম্পাদক বিখ্য। করিয়া দিখি-
য়াছেন যে লিঅ নগরে তাঁহার। কাণ্ডীয় শ-
কটে আয়োজন করিতে কীকৃত। প্রকাশ ক-
রেন। কিন্তু লেখকের মরণ করা উচিত হি-
ল যে মিসর দেশে লৌহ বর্ষ ও বাণী শকট
বর্তমান আছে, এবং রাজ কুতরা তাঁহার।
আগমন করিয়াছেন। লাইটন নগরে অবিল
যে বলকিরদের রিবিউ প্রদর্শিত হইবে
লার্ড লাইট অধ্যক্ষতা করিবেন।

রাজা রামমোহন রায়ের কু সুখি আ-
তম নাহে ইতিহাস তৎ বিবরে এক অত্যু-
ত পুস্তক প্রেরিত করিয়াছেন। তাহা
হইতেছে। এবং অবতিবিলম্বে প্রচারিত
হইবে।

বৃত্ত অল্‌বট বাহাদুরের কীর্ষি আপ
নার উপযুক্ত টাকা সংগ্রহ হয় নাই, অতএব
সাধারণ্যে তিকা আশ্রয় হইয়াছে।

এত হইল যে এক ব্যক্তি ব্যতিক্রম বৈ-
গারিবাল্‌ডির সহিত সাক্ষাৎ করিতে উদ্য
করিতেছিল। অঙ্গসম্মান করাতে তাঁহার সি-
কট বারুদ ও গুলিপূর্ণ এক পিস্তল হুই হইল
পকাশ বহু পূর্বে 'রাহাআবি' বিষয়ে বস-
নের যে কাণ্ড অবস্থা ছিল। একদে ইটালি
কোন কোন অংশের অবস্থা সেইরূপ হই-
য়াছে।

আর্থেল ও রীড সাহেব ইটালিয়া বৈ-
শ্বামির ডাইরেক্টর কামে মনোনীত হই-
ছেন। উক্ত কোম্পানি আজিও প্রাণ ত্যা
করেন নাই।

সিদ্ধ-রেল-ওয়ে কোম্পানি প্রত্যেক অং
২০ পৌণ্ড হিসাবে ১২৫০০০ অংশ দ্বারা
৫০০,০০০ পৌণ্ড মূলধন রক্ষি করিবার নি-
শ্চি আবেদন করিয়াছেন। তৎপা পত্র
তে দিল্লী পথান্ত লৌহবর্ষ প্রাপ্ত হইবে।
আমদানি হইতে কোন গুরুতর সংব

विहंगम च चन्द्र

ନବମ ୧୫ତ୍ ଟେକ୍ସ ୧୫ ୭

गवर्धनचूडैः तिन चानि आशय दन्तोपुत्र क.

॥ भद्रं कर्णे वासिष्ठं नोद, एवं वाचिनी नाम्ना ॥

করে, প্রতিবাদী গোপনে তাহার এক নৌকা বিক্রয় করিয়াছে। বাজিট্রেট গৃহের এই বিবরণের প্রমাণ করিলেই সে বলিল, আমি কি জন্য নালিশ করিয়াছি বলিতে পারি না। এটুকুপ আয়ো সে অনেক বিখ্যা করিয়াছে। বাজিট্রেট তাহার দুই শত টাকার জাখীন লইয়া মোকদ্দমা স্থগিত রাখিয়াছেন। দেখা বাজিট্রেট এখ্যাবাদিতার কি দণ্ড করেন?

৩১এ টৈখাখ মজলদার।

কিনিক সম্পাদক বলেন, সব আসিট্রেটে মজলদার ডাক্তার এ, মজলদার নিজ পদ ত্যাগ করিয়া এক, ডি, উপাধির জন্য ইংলণ্ডে অধ্যয়ন করিতে যান। তিনি এ উপাধি পাইয়াছেন। এখনকে তাহাকে পুনরায় কর্ম দিয়াছেন। সব আসিট্রেটে মজলদার পদত্যাগ করিলেও যদি তাহাদিগকে পুনরায় কর্ম দিবার নিয়ম বদল হয়, উক্ত ১৮কিংসক লোক দুইজন হয় না।

এক ব্যক্তি ৩৮ গণিত এতদেশীয় সেনা-মন্ত্রের সুবেদার বেজবের প্রাণবধ করিয়াছে। এ সেনা মল রাজিকালে বাড়িতে ছিল সুবেদার অধিকারীরা তাহাদিগের পক্ষান্তে ছিলেন, এমনত সবয়ে এক বন্দকের শব্দ হইল। তিনি তৎক্ষণাৎ হুত হইয়া অস্ত্র হাতে পতিত হইলেন। এক জন লোকনায়ককে সকলে হত্যা করিয়া বলিয়া দিয় করিয়াছেন, কারণ সে ব্যক্তি পলায়িত হইয়াছে। আশ্চর্যের বিষয় এই, প্রবেশের পাখ বর্তি সেনারা সকলেই বলিভে তাহারা হত্যাকারীকে মর্দন করেন নাই। সুবেদার নিহত হইলে গবর্নর সর্বশেষ আকুল করিয়াছিলেন, অতএব তাহাকে বধ হইতে অনেকে বলিভতছেন ৩৮ গণিত সেনাদলকে কর্ম হইতে ছাড়িয়া দেওয়া উচিত। এ সকল সে সব পর মণ্ড শুনিলেই প্রকুল।

ইংলিসহান সম্পাদক বলেন উপনিবেশে লইয়া খাইবার জন্য যে মজলদার দিয় করা হয়, তাহাদিগের আশ্রয় প্রতি মনোযোগ দেওয়া হয় না, তাহাতে অনেকে তাহাকে প্রতিবার নৈকই কুলির পাড় জায় প্রাণত্যাগ করে। অনেক সবয়ে একপও ঘটনা হইয়াছে,

তা মাতার হুত হওয়ার উদ্যম হীন শিশুদিগকে মজলদার নিবেগ করা হইয়াছে।

সব মজলদার উক্ত ভবিষ্যৎ সর্ভাকরে এই আ-
শ্রয় করিয়াছেন যে মজলদারের আশ্রয় প্রতি-
তি-বিলিষ্টরূপে মনোযোগ দেওয়া হয়।
বাহারা প্রাণত্যাগ করিবে উপনিবেশের প্রতি-
তিনি তাহাদিগের মজলদারকে হুত হইবে
পুনঃ প্রেরণ করিবেন, অথবা তাহাদিগের
মতোচিত ভরণপোষণ করিবেন। প্রতিসাহেব
মজলদারের কষ্ট নিবারণের জন্য ব্যবস্থাপক
সভায় এক বিল অর্পণ করিবেন প্রস্তাব করি-
য়াছেন, কিন্তু তিনি তাহা কাৰ্য্যবহৃত করিতে
পারেন নাই। বীভন সাহেব এতদ্বিষয়ে ম-
নোযোগী হইল।

সংবাদ আসিয়াছে গ্রীস দেশের বিদ্রোহ পা-
কি হইয়াছে। রাজকীয় সেনারা বিদ্রোহিদিগের
প্রধান দুগ অধিকার করিয়াছে। বাহা হ-
উক আসের বাবতীর লোক রাজা এখোর
প্রতি বিরক্ত হইয়াছেন। প্রজা রজন করিয়া
শাসন কার্য নিরীহ করা অনেক রাজারই
ঘটে না।

ইংলণ্ডে একটা প্রথা হইয়াছে গ্রী ও
পল্লব বিবাহার্থী হইলে বর ও কন্যার নিমিত্ত
সংবাদ পত্রে বিজ্ঞাপন করিয়া দেয়। তাহাতে
আপন আপন বরস, কপ, সম্পত্তি প্রভৃতির
বিবরণ লেখা হয়। সম্পত্তি এক কৌতুকাবহ
ঘটনা ঘটয়াছে। এক ব্যক্তি একদা এই ভাবে
এই বিজ্ঞাপন করিয়া দেয় তাহার বরস আপ-
ন বাৎসরিক ৩০০০ টাকা আয় আছে। সে যদি
একটি ভাল স্ত্রী পায় বিবাহ করে। এই বিজ্ঞা-
পন দেখিয়া এক স্ত্রী লোক তাহার নিকটে লি-
খিয়া পাঠাইল যে সে বিবাহ করিবে না দিয়
করিয়াছিল, কিন্তু তাহার বিজ্ঞাপন দেখিয়া
তাহার বিবাহ করিবার মানস হইয়াছে। উক্ত
যে এই কপ দুই চারি পত্র লেখা লিখি হইলে
পর স্ত্রী লোকটি একখানি প্রেমের নাম নির্দেশ
করিয়া লিখিয়া পাঠাইল যদি তিনি সেট
হুত বান এই স্ত্রী লোকের সহিত সাক্ষাৎ হ-
ইবে। পত্র মধ্যে লেখা ছিল, তিনি যখন
তাহার প্রিয়তমার সহিত সাক্ষাৎ করিতে
বাইবেন, তখন বেন হুতবেশে বান। নায়ক
এই পত্র পাইয়া মহাশঙ্কিত হইল। সে
শব্দে উত্তীর্ণা নির্দিষ্ট নামে উপনীত হইলে-
ন। কতক হুত বাইতে, না বাইতে করের জন

ভীমশক্তি পুনিব প্রবর্তী আসিয়া তাহাকে
প্রেরণ করিল। এক দিনের পর একখান পা-
ইল যে স্ত্রীলোকটি বিজ্ঞাপন করিয়াছিল
তাহাকে দণ্ড বসিয়া পুনিবে সংবাদ দেয়।
পাঠকগণ। এটি বখা কৌতুকাবহ ঘটনা কি-
না?

সম্রাটর বিদ্রোহী সম্পাদক মজলদার
করেন, আকগানি শাস্তির কয়েক মজলদার
সরদারের চক্রান্তে ডাক্তার হুত হইয়াছে। পা-
রস্যাধিপতির আত্মসারে প্রায়শ সেনাগণ
তথায় প্রেরিত হয় নাই, বিদ্রোহী রাজা ম-
লতান জািন পারস দেশে সেনা সংগ্রহ করি-
য়া তাহাদিগকে রাজকীয় সেনা বসিয়া ঘো-
ষণা করিয়া দি-
ন। বাহা হুতক প্রবর্তনকে
বেন ভাল রূপে হুতমান না করিয়া হুতক
না হন।

১৯। ট্যাট বুধবার।

নেটলাও সাহেব বনিক সম্রাটের পক্ষ-
কারী সভাপতি হইয়াছেন। ওয়াশিংটন
বাকী থাকেন কেন?

পাঠকগণ অনিরাহেন বিদ্যাতী
শুভক উত্তীর্ণা নিরাহে সম্রাতি কলিক
জন যনিক ইংলণ্ড হইতে কতকটা
আমদানি করেন। কষ্টক কালে
উপায় লক্ষ্য হইল কষ্টক, ভবিষ্যৎ
বোডে আবেদন করিতে তাহারা আত্ম ক-
করিয়াছেন হুতিত কাগজ জি আর সম্রাট
কাগজে শুভক লওয়া হইবে। ইহার অর্থ
কি?

গত বর্ষে বঙ্গদেশে পাবলিক ওয়ার্ক হেতু
নিম্ন লিখিত টাকা ব্যয় হইয়াছে:—

সুভদন কার্যে	১৭,৮৫,০৫০
সংস্কার কার্যে	১২,৯৫,৮০৮
বেতন ইত্যাদি	১১,৯৯,৬২৮

মোট টাকা ৪১,৮০,৪৮৬

পাবলিক ওয়ার্কের তত্ত্বাবধির উপর অ-
বেশন করিলে ইহার তিন অংশ বাহির হইতে
পারে।

করাগীরা আসিয়া খেতে পুনরায় আধি-
পত্য স্থাপন চেষ্টায় আছে। কোচিন গৌন ডা-
হাদিগের হুতগত হইয়াছে, চীন দেশে তা-
হারা ক্রমে হিরণ্য হইয়া উঠিতেছে।

করানী রণতরির অধিক সজ্জাতি বর্ডারের
তুলনামূলক এই কথা লিখিয়া পাঠাইয়াছেন
রাজধানীর যে সমস্ত প্রজা বিদ্রোহী হইয়া
ছেন, তিনি (রণতরির অধিক) তাহা
নিগের দমনার্থ সাহায্য দান করিবেন। কিন্তু
রাজধানী তদুত্তরে কহিয়াছেন বিদ্রোহীদিগে-
র সহায়তা আশঙ্ক্য হইল তিনি ভারতব-
র্ষীয় গণতান্ত্রিক নীতিতে প্রথমে অস্বীকার
করবেন। এই কথা পূর্ক যেরূপে বেনো অস-
হকারীরা থাকিবে।

গত কলকাতা পৌরসভায় একটি চারিভাষী
কিরিসি বালক মার্কিট পাসে প্রাণত্যাগ
করিয়াছে। প্রত্যক্ষদর্শী জনসাধারণে গাফি-
লিয়ার নিবেদন করে। মাঠে পুলিশ
কি 'তাহা জাট' না।

গতবার বেলা পাঁচ ঘটিকার সময়ে মেডি-
ক্যাল কলেজের ছাত্রদিগের পুরকার দেওয়া
হইয়াছিল। পুটেনারি গবর্নর তথ্য উপস্থি-
তিতে।

মিসমার সম্পাদক আনিয়াছেন অনেক
দীর্ঘ চীনদেশীয় সরাটের সেনা দলে
গর করিয়াছেন।

গ্রিকাবাসী এক ব্যক্তি সাতের নি-
কীর সেনাদলের অধ্যক্ষতা পদ
প্রাপ্ত করিয়াছেন। অনেক ইংরেজ সার্কিসর
কলেজের প্রথম দরবার ইচ্ছা প্রকাশ করি-
য়াছেন। 'অন্য' গার্ডভলজমহাশয়।

বেহারের অহিকেনের রক্তকিণের ফে-
লের বিবর প্রসঙ্গ করিয়া উক্ত সম্পাদক বীডন
সাহেবের প্রশংসা করিয়া লিখিয়াছেন "এ
কণে রক্ত ও তুতি সাধাবণ লোকদিগের র-
ক্ষা করিয়া তাহাদিগের দুঃখ দূর করা নিত্যা-
ন্ত কর্তব্য হইয়াছে। বতকালোদি তাহাদি-
গের ইচ্ছা সফল ছিল যে তাহার 'অন্য' গ-
বর্নকেই অস গর করিয়াছে। 'অন্য' তা-
হারা বসে পরিবর্ত দর্শন করিয়া থাকিবে।

গত বার অসম্পাদক প্রকাশ করিত না। উল্লসিত
তাব প্রকাশন করিত। এক্ষণে এই অসম্পাদক
পরিবর্ত হইতেছে। বিন্যাস, সাম-
গ্রিক ত্রুটি, সর জন পিটার গ্রাফের ক্রিয়া
হইল ওয়ে টেলিগ্রাফ প্রকৃতিতে তাহাদি-
গের কঠোর অনেক হাস করিয়াছে। এদেশীয়

করকের। এস-ভার বল, আইনের মর্ম, 'আবে-
দন, সভা প্রকাশের কথা বিসময় বুঝিয়াছে
অতএব তাহাদিগের মুখ স্বকলের প্রতি
অনন্যোন্মাদী ইত্য নিতান্ত দুর্ভাগ্য দায়।
করকের। এত দিন নিম্ন বস্তু বুঝিতে পারে
নাট বলিয়াই ওয়ার্ল্ডের প্রোট তাহাদিগের জী-
ত দাঁতন ন্যায় রাখিবার পরামর্শ দিয়া আ-
নিয়াছেন।

২রা মেইনট হু-পতিবার।
পেটনকে গার্লট ও লায়াল সাহেব এক
রগিঙ্গ ইন্টার্ন সেনাট বলিয়া তাহাদিগের
২০ টাকা জরিমানা হইয়াছে।
করাজিতে ইংবোপীয় মূলককের সংখ্যা
বৃদ্ধি হইয়াছে। ইংলিগের নিমিত্ত পথে যাও-
না তার হইয়াছে। এই সকল বক্তির উপরে
পুলিশ আইন জারি না করা হয় কেন।

সিঙ্গ ও পজাবের বেল ওয়ে কোম্পানি
১৮৩০ অব্দে মধ্যে লাহোর অবস্থি মূলতান
পর্যন্ত রেলওয়ে পুলিশের অধীকার করিয়া
ছেন। তাহারা লাহোর অবস্থি দ্বিগুণ
একটি রেলওয়ে পরিবার চেইন আ-
ছেন।

প্রোট আফগানের প্রধান অস মূলতান দ.হে
বের চক্রে বিলিয়ার্ডের গোলা লাগাতে
ব্যাপৃত হইয়াছেন। তাহার চিকিৎসকেরা বলি-
য়াছেন চকুটি অস হইবে। মূলতান সাহেবের
অসুখপাতি কালে উত্তরকি সাহেব তাহার
কাব্য করিবেন।

মার্কটের তত্ত্বাবধি কর্তৃত্বের মান
প্রকৃতির মূল্য বৃদ্ধি হওয়াতে সঞ্চয় করি-
য়াছেন এদেশে আর অধিক কাপড় পাই-
বেন না। একপ করিলে অনেককে ক্ষতি হই-
কার করিতে হইবে।

সম্রাতি পেণ্ড নগরের অসম্পাদক ও প্রো-
মের প্রায় সমুদায় অসম্পাদক লালিয়া তথ্য
সংশয় হইয়াছে। তথ্য কান্ত নির্মিত বাটীর
অধিক বলিয়াই সর্বদা এই দুর্ভাগ্য
ঘটিয়া থাকে।

দিল্লীগেজেটের এক জন সংবাদদাতা
যশনা মসজিদে দুর্বৃত্তের বিনয় পুনরুদ্ধার ক-
রিয়াছেন। মসজিদে বালী গাফিয়া কাইতেছে,
তাহার উপর যে সকল শিশুগণ হক হইয়াছে।

ডিল্লীগেজেটের এক জন সংবাদদাতা
যশনা মসজিদে দুর্বৃত্তের বিনয় পুনরুদ্ধার ক-
রিয়াছেন। মসজিদে বালী গাফিয়া কাইতেছে,
তাহার উপর যে সকল শিশুগণ হক হইয়াছে।

ডিল্লীগেজেটের এক জন সংবাদদাতা
যশনা মসজিদে দুর্বৃত্তের বিনয় পুনরুদ্ধার ক-
রিয়াছেন। মসজিদে বালী গাফিয়া কাইতেছে,
তাহার উপর যে সকল শিশুগণ হক হইয়াছে।

তাহা শীঘ্র কাটিয়া না ফেলিলে এত বৃষ্টি
শীঘ্র বিনষ্ট হইবে। লাল জোয়াতি প্রকাশ
তাহার নিকটবর্তি বাটের মেরামতের জন্য
এক কক টাকা দিয়াছেন। পাবলিক লোক
ডিপার্টমেন্ট হইতে টাকার সংকলন না
কর।

পার দেশ হইয়া টেলিগ্রাফ করিবান
মনা টেলিগ্রাফ গবর্নমেট ভারতবর্ষীয় খননা
র হস্তে ১০ এক টাকা লইয়াছেন। এট টে-
লিগ্রাফ চ না ভারতবর্ষ টেলিগ্রাফ উত্তরোত্ত
উপর হইবে, তাব আমরা কিভাবে সমুদায়
কর।

ইংলিসমার সম্পাদক স. ম. লাইবাছেন
একদেশে করোজন ১০ এক জন ইংরেজ
আফিসর ও লয়েক ল. সেনের প্রাথমিক
করিয়াছে। তাহাদিগের গবর্নমেট এক শতাব্দীর
মধ্যে সমুদায় নিবারণ করিতে সক্ষম হই-
লেন না। বড় লজ্জার কথা।

বোম্বাই গেজেট সম্পাদক ব. ব. বোম্বাই
যে "কড়াবতার" মতাবজ্ঞ বদুনাথ জী
মাত্র একম সম্পাদকের চমৎকার বোম্বাই নগর
হইতে সচর গণের মত পোষণ করে-
ছেন। সম্পাদক তাহা নামে মিথ্যাবাদতার
লিখ করিবার উল্লেখ আছে। বতকাল
বাসী যুবকেরা ইচ্ছা দেখিয়া লিখিত হইবে।

মুদ্রিত বটলোপীয় নিবারণ। তত্ত্বা-
কিটিনি সিপাল কার্যের তার পরামর্শ গ্রহণ
করিয়াছেন। গবর্নমেট এদেশে এই অসম্পাদক
প্রতি রাগিয়া আশি ও ১০ পাই হইতেছেন।

দিল্লীগেজেট সম্পাদক ব. ব. বোম্বাই
ফে. ম. ও টমাস সাহেব পুলিশের মতাবজ্ঞ
অজুন সিং নামক এক জন বিপ্লবী ১০
তাহার দুইজন সহচরকে বন্দী করিয়াছেন।
অজুন সিংহ আগবীর ফে. হইতে ১০ হইতে
করিয়া মতাবজ্ঞ করিতেছিল। তাহাৎ
কর্তব্য করিবার সময়ে সে এখন পরামর্শ
কাশ করিয়াছেন ও এত আশাত প্রাপ্ত হই-
ছিল যে কিয়দিকের মতো তাহার প্রাণী
যোগ হইবে।

মেইন বোম্বাই টেলিগ্রাফ হইতে সমাচার
আনিয়াছে করানী ও ইংরাজ সেনাসা সাহে-
ব নিকট বক্তি নিয়োজিতগণের সমুদায়

आदरणाभ्याम् ।

২রা মে—নবদ্বীপ ও বাগাচরের প্রতি-
নিধি ভেগুটি মাজিষ্ট্রেট ও ১৬ জন কালেক্টর বাবু
দ্বিরঞ্জন মুখোপাধ্যায় পৃথিবীর বদলি হইবেন
এবং কোর্টবারি আইনের (১৮৬: সালের ২৫
কাজ) ২২ ধারার অনুসারে ঐ প্রদেশে
বিচারের অধীন মাজিষ্ট্রেটের কমতা।

১৯৩৬ সালের ১২ই আগস্ট
 ১৯৩৬ সালের ১২ই আগস্ট
 ১৯৩৬ সালের ১২ই আগস্ট

সাতকীর মুদ্রক বাবু বজেন্দ্রনাথ মিত্র
১৮৫২ অব্দের ১০ আক্টোবর ১৫ খ্রিঃ মাসে
২৪ শনিবার তেখুটি কালেক্টেইস কমিটি গঠিত
হইল।

সময়ে বিচার করা হয়। তবে, তিনি
কয়েক জনকে বন্দী করে রাখেন।

महाराजः "क. वि. वि." मन्त्रालय

সোমপ্রকাশ

“এবর্ততাঃ প্রকৃতিত্বতার পার্থিবঃ সরস্বতী ক্রতিমহতী ন হীরতাঃ”

৪ ভাগ।
২৮ সংখ্যা।

{ সন ১২৬৭ । ১৪ জ্যৈষ্ঠ । ইং ১৮৬২ । ২৬ মে }

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

এ হুংগণের প্রতি।

সৈন্যখামাস অতীত হওয়াতে অনেকের প্রাপ্ত নোমপ্রকাশের মূল্য নিঃশেষিত হইয়াছে। তাহা নিগণ্যে বিনয় পূর্বক জানান হইতে যে তাহার। অগ্রগ্রহ পূর্বক স্থাপন কাগামি বর্ধের মূল্য পাঠাইয়া দেন। আপাততঃ সংস্কৃত বস্ত্রের মূল্য পাঠাইবেন।

সোমপ্রকাশ।

১৪ জ্যৈষ্ঠ সোমবার।

পত্র প্রেরকের প্রতি।

মহানন্দ সিংহের ব্রাহ্মসনাতনের অন্যতম সন্ত। প্রিয়ুত্ব বারু রাধাচরণ দেব পুত্রের কতকগুলি ব্রাহ্মসনাতনের সীতানুসারে সম্পন্ন হইয়াছে, তৎসংক্রান্ত যে একটি বক্তৃতা আমাদিগের নিকটে প্রেরিত হইয়াছে তাহা অত্যন্ত বিস্তৃত বলিয়া একটিই হইল না।

উচিত বক্তৃতা পত্রও দীর্ঘ হইয়াছে বলিয়া প্রকাশ করা গেল না।

হিতাঙ্গির পত্রে বক্তৃতি কথ্য দেখা গেল না।

নিঃশেষিত অত্যাচার।

আমাদিগের বহুসংখ্যক মেদিনীপুরের পত্রপ্রেরক নিম্ন লিখিত পত্রখানি পাঠাইয়া দিয়াছেন।

প্রিয়ুত্ব সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয়ের।

১২৬৭ সন ১৪ জ্যৈষ্ঠ ১৪ জ্যৈষ্ঠ ১৪ জ্যৈষ্ঠ

কিছু দিন হইল মেদিনীপুরস্থ কোন পত্র প্রেরক আপনায় সোমপ্রকাশে অত্রতা জমীদার নজিরালি খাঁর নীলকর্মচার অত্যাচার বিষয়ক ক্রমে ক্রমে চুইখানি পত্র লিখিয়াছিলেন। তন্মধ্যে শেষ পত্রে এইভাবে প্রকাশিত হইয়াছিল যে এক্ষণে আর তত অত্যাচার হইতেছে না। বাস্তবিক আপনায় পত্র প্রেরকের বাক্য বক মিথ্যা নহে। আমবা এ পর্যন্ত রামনগর, জাগুল, মনিবগঃ প্রভৃতি স্থানের প্রজাদিগকে অপেক্ষাকৃত নিরুপদ্রবে বাস করিতে দেখিয়াছিলাম। কিন্তু সত্যি আর তাহাদের সেকণ অবস্থা নাই। তাহাদের বিংশ বিপদ উপস্থিত হইয়াছে। কয়েকদিন ক্রমাগত রষ্টি হওয়াতে পোকা নীলবীজ ছড়াইবার উত্তম সুযোগ হইয়াছে। এ সময় নীল বুনিয়াদ হইলে বিংশ আর্থক নি হয় দেখিয়া নজিরালি খাঁর আর দাসেরা প্রজাদিগের অঙ্গ প্রত্যঙ্গের জন্ম ব্যয় সমস্ত ও হিতাহিত জ্ঞানহীন হইয়াছেন। তাহারা এখনে আট বাঃ বাদিয়া। আমাদিগের প্রতি সেকণ অত্যাচার করিতেছেন তাহা গম্য বা মগন করিলে স্থান পণ্যগুলি মর্দনের গোপিত উচ্চ হইয়া উঠে। আদি ৪। ২ দিন এই বাঃ প্রেরা হস্তিপুটে মারোহণ করিয়া প্রায় ১ খান মাজল এবং কতক দারিদ্র্যল নগদী সঙ্গে করিয়া কোত্রা পক্ষে ৩০৭ বহিষ্কৃত হইল। এখনদিন অত্র মানব জনের স্থানে বাউয়া প্রজাদের সবুজ ১০০০ মাজল দিতে ও নীলবীজ ছড়াইতে আদেশ দিলেন। তৎক্ষণাৎ তৎক্ষণে অগ্রসর হইল। প্রজারা ইতিপূর্বে যে সকল ভূমিতে অন্যান্য অন্য রোপণ করিয়াছিল

হইল। যে সকল প্রজা সাহস মাত্র সহায় করিয়। আপন আপন ভূমি রক্ষা করিতে আনিবাহিল তাহারা বিলক্ষণ শাস্তি পাইল। অনেকে গুরুতর আঘাত প্রাপ্ত হইল। “হা নিকু ৩ আমি একটু লিখিতে ভুলিয়া গিয়াছিলাম। নীল কর্মচারীরা এইরূপ অত্যাচার করিবে পূর্বেই প্রজারা তাহা জানিতে পারিয়াছিল এবং অত্রতা অরেক্ট মাজি ট্রেটের নিকটস্থ হইয়া মর্দন করিয়াছিল যে আমাদের নীলচাষ করিতে কোন ক্রমে ইচ্ছা নাই। কিন্তু শুনিতেছি নজিরালি খাঁর নীলকর্মচারীরা জোর করিয়া আমাদের ভূমিতে নীল বুনিয়াদ করিবেন এবং তৎক্ষণে লক্ষ মাজা হইবারও সম্ভাবনা আছে। অত্র এব খাহাতে আমাদের ভূমিতে নীল বুনিয়াদ না পাবে ও দাঙ্গা না হয়, আপনি তাহার উপায় বিধান করুন। যুগ্মি মাজি ট্রেট মাজেন তাহাতে এইরূপ ভুল্য দিলেন যে আমি নীলের কিছুই করিতে পারি না, কাহাকে নীল বুনিয়াদ বলিতে ও পারি না এবং কাহাকে নিবারণ করিতে ও পারি না। তবে দাঙ্গা নিবারণ জন্য পুলিশের লোক পাঠাইয়া দিতেছি। তিনি বিবাহস্থলে উপস্থিত থাকিয়া দাঙ্গা নিবারণ করিবার জন্য দারোগাগণে গবঃস্থানী দিলেন। দারোগা স্বয়ং তথায় গাইলেন না। অবপন্নিতে রহিলেন। নাকো দারোগাগণে (পোলাকে) পাঠাইয়া ১০ জন নীল প্রজাদিগের সর্বস্ব ও অঙ্গপাত দে মিয়া আত্মকরণে একটু দয়ার সঞ্চয় হইয়া বর্তমান পুলিশকর্মচারীদিগের মধ্যে এতদপ লোক অতি বিরল। নাকো দারোগা দেয়া দাঙ্গার জন্য বাজার হস্ত কারতে গিয়া

এইতে লাগিল তাহা দেখিয়াও দেখিলেন না। নিজে কাঁচক প্রভৃতির কোরে যখন লাগিল, তখন সেইসকল, প্রজারা অসম্মুখে আপন আপন ক্ষেত্রের উপর লয়ন করিয়া পড়িল, সমস্তি নায়েব দারোগা আপন অস্ত্রের দ্বারা তাহাদিগকে তলাত করিয়া দিতে লাগিলেন। তখন নয়েব দারোগা প্রজাদিগের বিরুদ্ধে দুই একটি মিথ্যা রিপোর্ট করিতে লাগিলেন। ফলতঃ পুলিশ মোতায়েন থাকিতে প্রজাদিগের অধিকতর সর্বনাশ ও নজিরালির পৌষনাস হইয়া উঠিল। নীল কর্মচারীরা পর দিন উক্ত প্রকারে জাগ্রত হইয়া প্রজাদিগের সর্বনাশ করিয়া আসিয়াছেন। এই রূপে এক এক দিন এক এক গ্রামে যাইয়া পাকাইয়া আসিতেছেন। ধামাধরা নায়েব দারোগা সর্বত্রই সঙ্গে সঙ্গে যাইতেছেন। নীল নামেরা যে কত দিনের পর কত গ্রাম দূর পার করিয়া কাত হইবেন তাহা এখন বলিতে পারি না।

কি চরমকার বাপাস? বিচার স্থানের দুই তিন ফ্রেঞ্চেসে যথেষ্ট একজন সামান্য জমিদারের সাক্ষ্যে অকুতোভয়ে যৎপরোনাস্তি অত্যাচার করিতেছে। আমি তাহাদের সাহসকে ভগ্ন করি। অত্যাচারিতরা ও আমার অঙ্গ সাধবাদের আশ্রয় নহেন। দুই তিন ফ্রেঞ্চেসের ভিতরে যে সকল অরাজক কাণ্ড লক্ষিত হইতেছে তাহারা তাহাব নিবারণ করিতে ও বাধা দিয়া অবগত হইতে সমর্থ হইতেছেন না। আর সিকপেট বা ইটবেরা প্রভৃতি প্রথম এক জন নায়েব দারোগাব নিবৃত্ত হইতে শাস্তিদণ্ড ও স্বার্থ সর্বাঙ্গ প্রাপ্তি বন্ধ। আসি কত যাইতে পারি না। এমন স্থান নাই যেখানে ডেপুটি মাজিস্ট্রেটের প্রেরণ করা হইতে পারে। এখন অনেক সময় আসি গিয়া তাহার দি নতুন আসি গিয়া তার অপেক্ষায় রহিলাম।

শাস্তি বর্ণ বিবেচনা করিয়া দেখুন, কত মাজিস্ট্রেট সাহেব বেতন প্রাপ্ত হইয়াও তাহা কেমন যুক্তিযুক্ত হইয়াছে? তিনি কি যুক্তিতে বলিলেন আমি নীলের বিষয়ে কিছু বলিতে পারি না। অত্যাচার নিবারণ করা, নিবারণের কার্যকর নহে? তিনি এই

দিগের সর্বনাশ করিয়া অপর দৃষ্টিতে জোর করিয়া প্রকাশ করে তাহা দি অত্যাচার নহে। নীল কর্মচারীরা প্রজাদের অত্যাচারে কেহ নীল বুঝিতে পারে দারোগাকে এক পত্র পঠিয়া দেওয়া হইতেছিল। তাহা হইলে একজন নীল যথার। অত্যাচার করিতেছে দেখা করিবার বদ পত্র পা হইত না। অথবা সকলই করিতে সক্ষম হইত, এই নায়েব দারোগাব উপরেই এই কার্যের ভার পড়িত।

বেদিনীপুর ১৩ই মে।

আজি কালি কেমন হইয়াছে, “অত্যাচার অত্যাচার” এই শব্দ অবিরত প্রতিগোচর হইতেছে। যেখানে এক পক্ষে জম ও অপর পক্ষে সুন্দর বিনিয়োগ সম্বন্ধ, সেইখানেই অত্যাচার। নীল করেরাও অত্যাচারকারী বলিয়া লক্ষ্য হইতে হইয়াছেন। তা করেরাও নীলকর দিগের অত্যাচারকারিতাজনিত কীর্তির অংশগ্রাহী হইয়াছেন। করকার নিজ পরপ্রেরক বেহারের অহিকেনকবিবাপ্ত বক্তৃতিদিগের প্রতি কৃত অত্যাচার হস্ত লইয়া তুললকাণ্ড করিয়া তুলিয়াছেন। আমাদিগের মুতন লেপেটের গবর্ণর নীডন সাহেব উহার অনুগতান ও নিবারণ চেষ্টা দ্বারা মুতন লক্ষ্য নিজ পদের গৌরব বর্ধনে উদ্যত হইয়াছেন। আমাদিগের পত্র প্রেরকেরাও নিশ্চিন্ত নহেন। কোন স্থানে কে কি অত্যাচার করিতেছে, সতর তাহার অনুসন্ধান করিয়া প্রকাশ করিয়া দিতেছেন।

একজন এইসকল উপস্থিত হইতেছে এখন ব্রাহ্মপুত্রদিগকে অত্যাচার নিবারণ নিষেধ সমধিক যত্নশীল দেখা যাইতেছে, প্রজাদের উহার নিবারণ হইবে, তাহা নহে। দিন দিন উহার বৃদ্ধি হইতে লাগিল। ইহার কারণ কি? এখন কার লোক কি অত্যাচারকারী হইয়াছে?

অথবা, প্রজাদিগের সমস্তি কেমন

হইতেছে, তাহাদিগের অনুভবশালিতা শক্তি অধিকতর বর্ধিত হইয়াছে? পূর্বে অত্যাচারকারী ছিল না, এখনকার লোকেরাই অত্যাচারকারী হইয়াছে, এ অতি নিকটবর্ত্তকর বাক্য। কালভেদে অনুভবশালিতার তারতম্য হইয়াছে, এ কথাও প্রোতব্য নহে। তবে যে এখন অন্য কৃত অত্যাচার বাক্য অহরহঃ আমাদিগের প্রতি মূলের উত্তর জন্মাইতেছে, তাহার একটা বিশিষ্ট কারণ উপস্থিত লক্ষিত হইতেছে। পূর্বে দুর্বলতর মনে করিত প্রবল দিগেব অত্যাচার সহ্য করিবার নিমিত্তই তাহাদিগের জয় লাভ হইয়াছে। সুতরাং তাহারা পূর্বে অত্যাচারকে অত্যাচার বলিয়া জ্ঞান করিত না, যাহারা মনে তাহা বুঝিতে পারিত, তাহারাও তবু তাহা ব্যক্ত করিতে পারিত না। এখন আর অত্যাচার স্বনামীল ব্যক্তিদিগের সে অবস্থা নাই। এখন অত্যাচারকে অত্যাচার বলিয়া তাহাদিগের জ্ঞান ভগ্নিগাঢ় এবং সেই অত্যাচার বাক্য প্রচার করিয়া দিবারও আর হাদৃশ বাধা নাই। তন্নিবন্ধনই “অত্যাচার অত্যাচার” এই শব্দ অত্র ক্ষণ আমাদিগের প্রতি মূলে বিধিত হইতেছে।

যতপ দেখা যাইতেছে, তাহাতে কোন রূপে যতপ বোধ হইতেছে না যে অত্যাচারপ্রভৃতি শীঘ্র রুদ্ধ হইবে। যাহা সেই অত্যাচার সমাক্ষেপে নিবর্ত্তিত হইতেছে, তাহাও দুর্বলদিগের জ্ঞান চর্চা উজ্জীলন দিচ্ছনা হইয়াছে সন্দেহ নাই। দুর্বলদিগের এই অবস্থা নির্দশ করিয়া, বাইবল বর্ণিত আদমের অবস্থা আমাদিগের প্রতিপক্ষে অধিকতর প্রমাণ দেয়। বার্ষিক বনে, জমির আদমের কবি, ইত্যাদি নামক উদ্যানে রাখা দিলেন এবং এ উদ্যান অধ্যুষিত জল ময় প্রভৃতি ব্রহ্মের কল সজ্জা করিতে নি

সেই বৃক্কের কল তক্ষণ না করিয়াছিলেন,
ততদিন মহাকুর্খী ছিলেন, যখন ভাল বস
জানিতে পারিলেন, তখনই বিপাকে পড়ি
য়েন, শোক মোহাদি আসিড। তাঁহাকে আ
ক্রমণ করিল, তিনি স্বর্গসমূহ ইফের উ
দান কইতে আরম্ভ হইলেন। চর্যন কলকদি
গেব এখন স্থানান্তর অবশিষ্ট আছে।
সেইটা হইলেই সর্বত্র পূর্ণ হয়।

ਅਰਥਾਤ: ਗਵਰਨਮੈਂਟੋਰ ਨਾ ਅਰਥ
ਬਣਿਤ ਅਰਥ ਨਾ ਹੋਵੇ।

অম্মাদিগের বর্তমান রাজস্ববিধ কর্ম
 প্রথমতঃ লেও সাহেব বাজার সং-
 স্কার প্রথমতঃ কার্য্য কার্য্যের পক্ষে 'ম'
 বিধিত হইয়া অবশেষে না হইতে ছুটে বঙ্গের
 কার্য্য করিলেন। তাঁহার পুনর্বার
 মঙ্গল সমস্ত উপস্থিত হইল। তিনি
 মঙ্গল পক্ষে অস্বীকৃত হইয়াছেন, তাহার
 করিলেন এখন তাহার গণনা করা অ-
 সম্ভব হইতেছে না। তিনি যে কুচকাষা
 করিয়াছেন, তাহা বিবেচনা নাই। বিত্তের
 জন্য পূর্ব অবধি অস্বীকৃত পদার্থটি আয়ের
 অংশতা ও খারের অধিকা নিবন্ধন করা
 গিয়াছিল। লেও সাহেবের যত্নে সে
 নষ্ট দুরীভূত হইয়াছে। তিনি অম্মাদিগ
 প্রাপ্ত অর্থ দেখাইয়াছেন। তিনি
 ১৮৬২-৬৩ অকের আয় বাধ হিসাব মধ্যে
 অধিকেন সংক্রান্ত সে আয় অনুমান কার
 য় ছিলেন, বাড়ি অধিকেনের অনিষ্ট হই-
 য়ে তাহা অনেক কমিয়া যাটবে সন্দেহ
 নাই, তাহা পি গমনেরটিকে পুনর্বার পূর্বের
 অর্থক্ষেপে পরিণত হইতে উচিত নহে,
 তাহা সুস্পষ্ট বোধগম্য হইতেছে।

নেও সাহেব অর্থ কষ্টে দুঃ কঠিনঃ
 শ্রম ত উপায় অবলম্বন করিয়াছেন। আন
 ব একদিন সকল বিষয়েই অসুখ্য পৰ্য্যবে
 ষ্টের নবাবী কাণ্ড দেখিতেছিলাম। কো
 ন বিষয়েই শৃঙ্খলা ছিল না। শৃঙ্খলা না থা
 নার ফল আশ হঠক সকল কইবার নড়া
 নাই। - নেও - - - - - যাবতীয়

ত্রিগার্টমেন্টের ব্যবস্থার কার্য, প্রচলনা বহু
 করিতে উদ্যত হইরাছেন। অন্য অন্য টি
 গার্টমেন্ট, অগেলার, বহুকালারি কিম্বা
 নিরাল ত্রিগার্টমেন্টে অধিকতর বিশ্বাস
 না ছিল। উহার বিশ্বাসলা নিবন্ধন অধিক
 তর অনিষ্টও ঘটতেছিল। লেড সাহেব
 উহার সংশোধন বিষয়ে মনোনিবেশ করি
 রাছেন। ১৩ই মের গবর্ণমেন্টের প্রতিজ্ঞা
 প্রত্যয়সে সাক্ষ্যদান করিতেছে।

একদিন বিবিজা সর্বাণ্টেরাই এই ডিপার্টমেন্টের আস করিয়া রাখিয়াছিলেন। তাহাদিগের একচেটিয়া ছিল বলিয়া ইহা কাজও সুন্দররূপে সম্পন্ন হইতেছিল না। সেও সাবেক এই দোষের সংশোধনার্থ এই ডিপার্টমেন্টের কর্মচারিদিগের জোনি বিভাগ করিয়াছেন। উক্ত জোনি সহকারি কর্মচারিদিগের ১৫০০ অবধি ২০০০ এবং মীচ জোনিদিগের ৪০০ অবধি ৭০০ টাকা পর্য্যন্ত বেতন হইবে। সেও সাহেব আশ্রয় একটা মহৎ কার্য্য করিয়াছেন। এই ডিপার্টমেন্টের নিমিত্ত কতকগুলি কর্মচারি প্রদত্ত করিবার উপায় করা হইয়াছে। শিক্ষারিদিগের ২৫০ টাকা পর্য্যন্ত বেতন হইবে। প্রস্তাবিত ডিপার্টমেন্টে কর্মচারি নিয়োগ কালে চিকিৎসিত ও অচিকিৎসিত এবং জাতি, ধর্ম ও বর্ণ ভেদ বিচার থাকিবে না। যদি কার্য্যকরে বাস্তবিক হইবার অনুসরণ করা হয়, এটিও একটি অনঙ্গ উপকারক। এদেশীয়দিগকে যদি সুশিক্ষিত করিয়া লওয়া হয় গবর্ণমেন্ট স্বল্পদ্বায়ে কার্য্য সাধন সম্ভব হইবে। এদেশীয়েরা ৭ টুঙ্গ সাহেব হইল। আপনাদিগের বুদ্ধিবল্লি ও কন্যার পরিচালনায় বাস্তব হইবে। এদেশীয়দিগকে সুশিক্ষিত করি। কর্মদিবার প্রথা যদি যাবতীর ডিপার্টমেন্টে প্রবর্তিত হয় কেবল যে ব্যয় সংক্ষেপ হইয়া অর্থের সমৃদ্ধ হইবে একপক্ষে, গবর্ণমেন্ট ও এদেশীয়দিগের কৃত্তর আনুগাণ্ড্য হইবে।

বিজ্ঞানের পর যখন কলম বাঁ... করত।
 বিধম প্রভাব হইল। "কলম" নামের লেখক
 হইল, তৎকালে লর্ড ক্যানিং এই উপায়
 বলহীন করিবারই অনুরোধ করিয়াছিলেন।
 পর চার্লস ডিবিলির মেরু হইয়া প্রভাব
 অনুমোদিত। উইলসন নামের লেখক
 প্রভাব হইল। যদি এই উপায় অবলম্বন
 করিতেন, ইংলন্ড ঠাস প্রযুক্তি করিয়া
 লোককে অসুখিত করিবার প্রয়োজন
 হইত না।

১৯১২ সালের ১৫ আইন ১৭৭ ১।
তদন্তকারী সভা উক্ত আইনের সংশোধন প্রসঙ্গ নইয়া আপনাদিগের অভিপ্রেত সংশোধন প্রস্তাব করিয়া বঙ্গদেশীয় ব বহুপক সভার যে আবেদন পত্র প্রদান করেন, কয়েক সপ্তাহ হইল, তৎকালে এক্ষণে আপনাদিগের সম্মুখে পুষ্টিত ৩টি রাখে। আপনাদিগেরও এই বিষয়ে কিছু বলিবার ইচ্ছা ও প্রতীক্ষা আছে। যে সভা উল্লিখিত আইনের সংশোধন প্রস্তাব গ্রহণ করেন, তাঁহারা এ সেসনে বক্তৃতা করিবার কাজ করিয়া বিজ্ঞপ্তি করিতেছেন। তাঁহাদিগের কৃত পরিবর্তন এবং ভারত বর্ষীয় সভার পরিবর্তন প্রস্তাব বিবেচনা ও যুক্তি সঙ্গত হইয়াছে কিনা, তাহা বিবেচিত হইতেছে।

১৮৫৯ অব্দের ১০ আইন বিধিবদ্ধ
ইবার পূর্বে যাঁহারা একান্ত অতি জমীদার
দিয়ে ঠেঁয়সি বাবতার দর্শন করিয়াছিলেন
এবং ঐ আইন বিধিবদ্ধ হইলে পর জমী
দার ও প্রজা উভয়ের সম্বন্ধ দর্শন করি
রাছেন, তাঁহাদিগের চিত্ত উহার পরিবর্ত
সম্বন্ধ প্রদণ করিয়া চমকিত হইয়া উঠি
বে সম্ভব নাই। উহা দ্বারা কেবল প্র
জাদিগের স্বত্ব ও অধিকার নির্ণীত হইয়া
ছে। একপক্ষ লোক, জমীদারদিগে ও নত
প্রজাদিগের সুবিধা ও চর্যাক্রান্তি নিবারণ হইবে।
পূর্বে নিখ... ও সম্ভব... প্রভৃতি প্র...

দেখিছিলাম। তাহা হইলে তাহা হইয়া যা
যব অথবা অন্য কোন প্রকার প্রতি
কেন্দ্রীয় কর্তৃত্ব হইলে সেই প্রকারে
কর করিয়া অতিশ্রমে বাকী থাকি
অপেক্ষা করিয়া কিংবা পক্ষম ও
পক্ষ করিয়া তাহাকে এককালে উৎসন্ন
করিতেন। তদ্বিধ প্রকারে ধরিয়া আমি
তাঁহাদের ওখানে রক্তকরা এবং লৌহী
লাবৃত উপানত প্রহারাও অসচরাচর
হিঁলি না। ১০ আইন হইয়া অবধি তাঁহা
বিগের হস্ত রক্ত হইয়াছে। পক্ষান্তরে যে
মকল প্রকা শুদ্ধতা করিয়া কর না দেয়।
তাহাদিগেরও শাসনের সহপার হইয়াছে।
বাকী থাকিলে বখারীতি নালিশ হইলে
এবং বখাবিধি প্রমাণ প্রদোষ প্রদর্শিত
হইলে জুর্জের আর অব্যাহতি পাইবার
যো থাকে না।

মার্মন, করিসাহেব প্রভৃতি উল্লিখিত
আইনসূত্রের মূল কারণ। বহুকালাবধি তাঁ
হারা বহুকালপ্রায় পাইয়া কৃতকার্য
হইয়াছেন। ইহার সংগ্রহ আরও অনেক অনুস
জ্ঞানকর্তা ও অনেক পরিজ্ঞান হইয়াছিল,
তাহাতেই ইহা অর্জিত হইয়াছে। কিন্তু
নীল ও জমিদারদিগের জুর্জের ইহাকে
পুনরায় মলিন করিয়া তুলিতেছে। প্রকা
দিগের বহুকালের অসামল্য বহু হই
তে বঞ্চিত হইবার উপক্রম হইয়াছে।
জমিদারেরাও অত্যাচার করিবার পুনরায়
পথ পাইতেছেন।

সংশোধিত আইন দ্বারা নির্দিষ্ট হই
কাজে, জমিদারেরা কর না লইলে প্রজাব
কালে উত্তরিত কর জমা করিয়া দিলে প্রেক্ষ
পূর্বক কর না দিলে প্রজাদিগের শতক
২৫ টাকার হিসাবে অর্থ মণ্ড হইবে। জ
মিদারেরা যদি প্রজাদিগকে জন্ম কবিবার
অভিপ্রায়ে কর না লয়, তাহা হইলে তাঁহা
দিগকে অতিশ্রম করিয়া দিতে হইলে এ
বিধিতে দোষ লক্ষিত হইতোত না। বরী
ইহা প্রাথমিক হইয়াছে। আমরা বহুনি

ন অবধি এবিধ সঙ্কটের ভূয়োভূয়
অনুরোধ করিয়া আসিতেছি। কিন্তু দুটি
নিয়ম অত্যন্ত অনাচার করিয়া ওড়িয়া
মান দিতেছে। প্রথম, জমিদারেরা
করগ্রহণ না করিলে প্রজাদিগকে যদি
কালেউত্তরিত কর হানিল কবিতে হয়
তাহাদিগকে ইচ্ছামতে প্রবেশন করিতে
হইবে, জমিদারেরা কেঁচতি পূরণ করি
য়া দিবেন না। দ্বিতীয়, জমিদারেরা আ
পন ইচ্ছায় নিজ নিজ জমি জরিপ করি
তে পারিবেন। প্রজারা জরিপের সময়ে
উপস্থিত থাকে ভাল, নচেৎ তাহাদিগের
অনুপস্থিতিকালে জরিপ হই। তদনুসারে
কর ধার্য হইবে। এই নিয়মটা বহুবিধ
অন্যে প্রকৃতি হইবে সন্দেহ নাই। জ
মিদারদিগের ইচ্ছাই বলবতী হইবে। তাঁ
হাদিগের ইচ্ছানুসারে কর ধার্য হইবে,
প্রজারা প্রতিবাদ করিয়া কিছুই কবিতে
পারিবেন না। প্রজারা যদি জরিপের সম
য়ে উপস্থিত না হয়, তথাপি জরিপ হইবে
এ নিয়ম করিতে হইতেছে কেন? প্রজাদি
গের জুর্জের তাহাদিগের অনুপস্থিতির কা
রণ এইটা না বুঝিয়া সেকলরীপক, শ্যাম
চাঁদ ও লৌহীলাবৃত উপানত এইগুলি
কেই কারণ বলিয়া ধরা করিলে ব্যবস্থাপ
কদিগের বহুদর্শিতা প্রদর্শিত হইত স
ন্দেহ নাই। ব্যবস্থাপক সভা আগানি সে
স্মরণে এই অনিষ্টকর ধারাটির পরিবর্তন ক
রেন, ইহা আমাদের একান্ত প্রার্থনীয়
হইয়াছে। অনিষ্ট ঘটিলে জমিদারেরা চেষ্টা
অপেক্ষা তাহাতে তাহা ঘটিলে না পারে
সেই চেষ্টাকরা সহস্রভাবে জোরকর।

একালে আমাদের আর একটি বক্ত
বা আছে। নীলকরেরা এবং তাহাদিগের
সম্পদ সম্পাদকেরা চেষ্টা পাইয়াছিলেন
এক না দিলে প্রজাদিগের জমা বাজেরাও
হইত। কিন্তু ব্যবস্থাপক সভা তাহাতে
সম্মত হইল না। তাহারা স্থির করিয়াছেন
নিম্নলিখিত প্রকারে নীল লওয়া হইবে। প্র

জারা যদি কিস্তি কিস্তিতে না দেয় এবং
তাহাদিগের অন্য অন্য সম্পত্তি বিক্রয় ক
রি। আবশ্যক অর্থ সংগৃহীত না হয়, সে
বে জমা বিক্রয় হইবে। প্রকরণে এদেশে
এইরূপ কতকগুলি লোক জমিদারী জুটিয়া
ছেন, তাহারা প্রজাদিগের জমিদারী লো
প করিয়া তাহাদিগকে বৈশ্বাসিন্দ্র প্রদর্শী
করিবার চেষ্টা করিতেছেন। ব্যবস্থাপক
সভা যে তাহাদিগের বাক্য অগ্রাহ্য করি
তেছেন, ইহা কেবল তাহাদিগের পৌরবে
এ মত। তারতবর্ষের ও সৌভাগ্যের দ্বিধা
বলিত হইবে। অধিক কি যে দিন প্রজা
রা ভূমিত বহু হইতে বঞ্চিত হইয়া দৈনিক
ক প্রমত্তী হইবে, সেই দিনই নিম্নলি
কামিবে তারতবর্ষের শেষ হইবে।

জমিদারেরা যদি জুর্জেরা করিয়া কর
প্রহণ না করেন, প্রজারা কর কালেউত্তরি
তে জমা করিয়া দিলে। এই নিয়মটা দ্বারা
বিশিষ্ট উপকান দলিবার সম্ভাবনা আ
ছে। যদি কালেউত্তর ও ডেপুটিকালেক্টরেরা
অনুপট চিত্তে নিজ নিজ কর্তব্য কর
করেন, এবং নীলকারেরা অসম্মত কর
লইবার আশা ত্যাগ করেন, তাহা হইলে
নীল সংক্রান্ত বিবাদের শেষ হইবার সম্পূর্ণ
সম্ভাবনা।

জুর্জের প্রকারে প্রকৃতি দীর্ঘ হইয়া
উঠিল, তারতবর্ষের সত্তা ১০ আইন সংশোধ
নের যে যে প্রকৃতি করিয়াছেন, তদ্বিধ
অন্য জুর্জের হইল বোধ হয় পাঠকগণ আ
গানি বারে দেখিতে পাইবেন।

বঙ্গীয় বিধান সভাবলী।

আমরা এই গানের একখানি সূত্র
স্বক প্রাপ্ত হইয়াছি। ইহা আমাদের
জুর্জের প্রকৃতি কৌতুক জমাইয়া দিতেছে
ইহাতে সাপের ভূতের ও তাইনের মত
প্রকৃতি অনেকগুলি মন্ত আছে। প্র
গুলির যেমন ছন্দ, তেমনি রচনা, তেমনি
অর্থ ও তেমনি কোমল অংশ প্র

নাই। এই জগৎ কল্যাণের পথকে বলাই
মৌনব্রত বাস্তবিক ও কল্পিত। এতদ্বারা
তৎকাল করিয়া যেত কিন্তু বিবর্তিত করে।
সিদ্ধি এই মন্ত্র গুলি সংগ্রহ করিয়া মুক্তি
এ চারিত্র্য করিয়াছেন, এই মতো তাঁহা
নাম নাই, কি উদ্দেশ্যে ইহা প্রচারিত
হইয়াছে, তাহাও স্পষ্টাক্ষরে নির্দেশিত
নাই। এই মন্ত্র গুলি বিলুপ্ত হইয়া বাইতে
ছে, ইহার উদ্ধার করিলে অগতির মহান
উপকার সাধিত হইবে, এ বিবেচনা করি
য়া প্রচারিত। যন্ত্র ও পরিভাষা স্বীকার
পূর্বক ঐশ্বরিক খানি মুক্তি করিয়াছেন
কিন্তু কোন ক্রমেই সম্ভাবিত বোধ হইতে
ছে না। বাহারা লেখা পড়ার চর্চা করেন,
ইহাদিগের মধ্যে আজিও একপ নির্বোধ
আছেন, আত্মনির্ভর এমন বিশ্বাস নাই।
এদেশীয়েরা আজিও উল্লিখিত নির্ব
দ্ধি মন্ত্রে অন্ধা করেন, এই বলিয়া উ
পাস করা অথবা ইহাদিগের এই নির্ব
দ্ধি দর্শন করিয়া ক্ষেত্র করা, প্রচারিত
তার উদ্দেশ্য হইতে পারে। যে উদ্দেশ্য
হইতে, উল্লিখিত মন্ত্রে বিশ্বাস থাকিতে এ
দেশীয়দিগের বতরণ অনিষ্ট ঘটতেছে।
উল্লিখিত মন্ত্রে বিশ্বাস থাকিতে এদেশীয়
দিগের বুদ্ধি তীক্ষ্ণতাবর্জিত হইয়া গীন
দশ। প্রাপ্ত হইতেছে এই মাত্র উপকার নগ
সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায়, কেহ ছ
শিক্ষিত। বোম্ব্রো হইলে উল্লিখিত মন্ত্র
প্রচারকাবীর। রোগীকে ভূতাবিষ্ট অথবা
ডাউনদক্ট বিবেচনা করিয়া উদ্দেশ্য সে
বন প্রদান পরিত্যাগপূর্বক রোজা ডাকা
ইয়া বাড়াতে আরম্ভ করেন। রোগী
অতিরিক্তমধ্যে কেবল রোগের নয় বনদুত
বোজারও হস্ত হইতে মুক্তি লাভ করে।
এই শীঘ্র মুক্তিলাভ করিবার বিশিষ্ট কার
ণও আছে। এক, রোগের চিকিৎসা হই
ল না। দ্বিতীয়, ক্রমসংক্রমণ রোজাদিগের
নিদাক্ষণ আশ্রিত।

বিদেশীয় পণ্ডিতগণ যন্ত্র ও মন্ত্রে করি

এদেশীয়দের কি বুঝি, কি নির্ব
দ্ধি, কি সুশিক্ষিত, কি অশিক্ষিত। সকল
তমস্ত্রে অন্ধা করিয়া থাকে
না। বাস্তবিক জ্ঞান নাই। সুশিক্ষিত দি
গের কথাই শুনাই, বুদ্ধিমান লোকেরাও
এ সকল মন্ত্রে প্রভাব করেন না। কিন্তু
কি সুশিক্ষিত, কি বুদ্ধিমান প্রায় কেই
সম্পূর্ণ কাগে পীড়া কালে যন্ত্রে উদ্ধার
প্রবেশ নিষেধ করিতে পারেন না। অজ্ঞ
ও নির্বোধ দিগেরই উল্লিখিত মন্ত্রে দৃঢ়তর
বিশ্বাস আছে। সুশিক্ষিত দিগের গৃহেও
সেই নির্বোধ ও দুর্ভ লোকের অপ্রভুত
নাই। এদেশের স্ত্রীলোকেরা অবজ্ঞাব
হেদে প্রায় দুর্ভ, তদ্বিষয় মন্ত্র গৃহে অনেক
অশিক্ষিত পুরুষও আছে।

আমরা যে সকল মন্ত্রের প্রসঙ্গ করি
য়া অদ্য লেখনী গ্রহণ করিগছি, তাহা
সত্য হইবার সম্ভাবনা আছে কি না। এক
শ্রেণীকর্য বিবচিত হইতেছে। ভূতের
ও তাইনের মন্ত্রের বিষয়ে অধিক বক্তব্য
নাই। ভূত ও তাইন বলিয়া বাস্তবিক প
দার্থ আছে, এ কথা প্রামাণিক লোকে
স্বীকার করেন না। উহা এতদূর মাত্র।
যে যতদিন অজ্ঞ থাকে, তত দিনই এ
সকল কল্পিত পদার্থ বাস্তবিক আছে ব
লিয়া লোকের সংস্কার থাকে। সেজগি
রের সময়ে ইংলণ্ডে এ সংস্কারের সর্বেশ
ব প্রাচুর্য ছিল। উপাস্য করিবার উ
দ্দেশ্যে তিনি নিজ গ্রন্থে তাহা বহুল
প্রসঙ্গ করিয়াছেন। এক্ষণে ইংলণ্ড হইতে
সম্পূর্ণ কাগে উদ্ধার তির্যাক্ত হইয়াছে।
বাইবেলে যে ভূতের কথা আছে, বাইবেল
ব্যাপ্যাকর্তারা তাহার অন্য অর্থ করে
ন। মূল যখন অসত্য হইল, তখন ভূত
ও তাইনের আবেশমন্ত্রের সত্য হইবার
সম্ভাবনা কি।

একদে সর্পমন্ত্রের সত্য সত্যতার বিষয়
বিবেচনা করা আবশ্যিক। মুক্তি থলিয়া বিবে
চনা করিতে গেলে মন্ত্র কখন সত্য হইতে

পারে না। যতাবত আত্মনির্ভর শীঘ্র
প্রভুতি যে সমস্ত উপদ্রব দ্বারা থাকে,
তৎপ্রতিঃরোর উদ্দেশ্যে কল্প মৈসর্গিক
উপায় সূট হইয়াছে। মন্ত্র ইহার সূট
নয়, বনুয়া সূট, অতএব ইহা কোন ক্রমেই
মৈসর্গিক উপায় বলিয়া অবলম্বিত হইতে
পারে না। অপর, হিন্দু শাস্ত্রকারেরা যে
সমস্ত মন্ত্রকে অপৌরুষেয় বলিয়া নির্দে
শ করিয়া গিয়াছেন, সর্পাদি মন্ত্র তদ্ব
ধোও নিবর্তিত নহে। ইহা বৈশ্বাক্ষর মন্ত্র।
বিশেষতঃ অশুচি জাতির মন্ত্রপাঠে অধি
কার নাই। কিন্তু হিন্দু শাস্ত্রানুসারে যে
যে জাতি অশুচী বলিয়া উপেক্ষিত হই
য়া থাকে, সেই সেই চাণ্ডালাদি অশুচি
জাতিই সর্পাদিমন্ত্রপ্রয়োগী।

অজ্ঞ লোকদিগের প্রবেশার্থই আত্ম
নির্ভরকে এত কহিতে হইল, সুবুদ্ধি বাস্তি
রা এই সামান্য বিষয় লইয়া অধিকতর
আড়ম্বর দেখিয়া বিরক্ত হইবেন সম্ভব
নাই, আর বাড়ী বাড়িতে প্রয়োজন নাই।
অমর গুটি দুই মন্ত্র উদ্ধৃত করিয়া দিলা
ম। পাঠকগণ দেখুন, বর্ণার্থ এই মন্ত্র সূট
হইয়াছে, ইহার তৎপ্রতীকারে সামর্থ্য আ
ছে কি না।

আজ্ঞানার।

অর্থঃ আপনাকে জড়ন।

ট্যা ট্যা ট্যা টেলি, ক্যা ক্লপ নি হঃপাট
কই হঃ চাহিত বিষ নাই, নাই বিষ বিবর্তিত
আজ্ঞায় নাই। পাঠকার এই মন্ত্র বলিতে হয়।

বিদ্যাকরের মন্ত্র।

রোজা এইমন্ত্র ৭ বার পাঠ করিয়া

কলার করিয়া থাকে।

যা পুঙ্খল সকল চলি কাজন বিষ ভোজন করি,
আই বিষ কল কলানে বিব মানকাধ করি চ
পাইস করি নিকলিয় করে, কাল কুটিল, স
পের বিব চুর্কাঙ্গ পুখ চাঁদ সপাঙ্গুল, স
খানে মনবলি, হব, চৌকিটি মা পা বিব মো
দিয়ে সুখ মে।

হিন্দু ভাষায় কাড়ন।

এই মন্ত্র ১৩ বার বলিলে

বিস কল হয়।

মোক্ষল নচরী শোভনতি, বাজা নি সপা

উপস্থিত আছেন। গালিও কোর্সার বিধি, তেজস্বিত্য কেন কোন বিষয় অসম্ভব, চিত্তাভিযান যাবৎ এই, ইচ্ছা উদ্ভেদিত, মোক্ষাভিযান সংশ্লিষ্ট সোমটিভি, কালটিভি, কথটিভি, কল ন কোন কোন সাপ খাইলে বিধি চমোবে খো-পার কাউস, উক্ত বিধি মত পিঠা, মার বিধি বা বটেয়ে ঠিক বিধি তোমার দিগন্তস্থে বা হুধে ক আছ।—

এই প্রত্যাদ লিখন সাপ হইলে পর এ দেশে ডাইন প্রভৃতি আছে বলিয়া বিশ্বাস থাকতে কত অনিষ্ট ঘটতেছে, হাতে হাতেই আমরা তাহার এক উদাহরণ পাইলাম। ডাইন বলিয়া কপীনামে একটি জীলো কের প্রাণ বধ করা হইয়াছে। সদর রিপোর্ট দ্বারা জানা গেল, কপীর প্রতিবেশী এক ব্যক্তির পীড়া হইলে কোন কাপে তাহার পীড়া শান্তি না হওয়াতে সকলে কহিল কপী ডাইন তাহাকে খাইয়াছে, তন্নিমিত্তই তাহার পীড়া ভাল হইতেছে না। এই কথা শুনিয়া তাহার দেবর তাহাকে এমনি নিমন্ত্রণ প্রহার করে যে সে তাহাতেই প্রাণ ত্যাগ করিয়াছে।

লোপনটো গবর্নর আর্ট সাংগন ও

নীলকর মাক অপর।

লক্ষীপাড়া নীলকুঠীর সহকারী কাষা সম্পাদক জন মাক অর্থর সাহেব অথবা নীলকর সভা গত লেপ্টেনেন্ট গবর্নর জন পিটার আর্ট সাহেবের নামে সুপ্রিম কোর্টে যে অভিযোগ করেন, তাহাতে প্রধান বিচারপতি সর বার্গেস পিককে সাহেব আর্ট সাহেবের এক টাকা দণ্ড করিয়াছেন। গত বারে এ সমাচার পত্রিকার পত্র গোচর করা হইয়াছে।

সবু মর্ডাট ওয়েলস সাহেব লও সাহেবের মকদ্দমায় যে দণ্ডাজ্ঞা দেন, তাহা ক্ষুদ্র ব্যক্তির স্বাধীনতার আঘাত করে, এ বারের সর বার্গেস পিকের অজ্ঞা রাজকর্মচারিদিগের স্বাধীনবাসিতার বাধা দিত করিয়াছে। পাঠকগণ অগ্রে অভিযোগ লক্ষণটি অবগত করুন। উল্লিখিত কর্মীর

অধীন প্রজাবিগের সহিত একত্র কুঠীর কর্মচারিদিগের বিবাহ হয়। প্রজাগণের সহিত বিরোধকালে কুঠীর কর্মচারীরা বহু ন্যায়ানুগত ও বৈধ ব্যবহার করিয়া থাকেন, তাহা আমাদিগের পাঠকগণের অবগিত নাই। বিবাহের পর নদীয়ার কমিশনার লিগিটম সাহেব এই রিপোর্ট করেন, তাহার এইরূপ বিশ্বাস জন্মিয়াছে যে উপস্থিত বিবাহে কুঠির সহকারী কর্মচারী মাক অর্থর সাহেবের সহকারিতা আছে। পক্ষাৎ এ মকদ্দমায় সদর আদালতে গার। অত্যাচার কারী বলিয়া যে যে ব্যক্তির নামে অভিযোগ হয়, সদরের জজেরা সাক্ষিবাক্যে অনেক দর্শন করিয়া তাহা দিগকে মুক্ত করিয়া দেন। আর্ট সাহেবের অপরাধ এই, বাচাল গবর্নমেন্টের যে সকল কাগজ পত্র একত্র সংগৃহীত হইয়া পুস্তকাকারে মুদ্রিত হয়, লিগিটম সাহেবের উল্লিখিত রিপোর্ট তন্মধ্যে প্রচারিত হইয়াছে। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর পুস্তক মুদ্রণ কালে তাহা পরিত্যাগ করেন নাই।

সুপ্রিম কোর্টের প্রধান বিচার পতি যে মুক্তি অবলম্বন করিয়া দণ্ডাজ্ঞা প্রদান করেন, তাহাও পাঠকগণের অগোচর রাখা বিধেয় হইতেছে না। তাহার অভিপ্রেত মুক্তি এই, রাজকর্মচারিদিগের আপনতঃ এমতায় মতো যে সকল ঘটনা হয়, তাহা উপরি পক্ষ ব্যক্তিদিগের গোচর করিবার বিষয়ে তাহাদিগের অধিকার আছে। কিন্তু বাস্তবে ব্যক্তিগণের নিন্দা হয়, রাজকর্মচারিদিগের বিজ্ঞাপিত তেমন বিবরণ প্রকাশ করা বিধেয় নহে। তাহা বিবরণ হাউস অব কমন্সের আজ্ঞানুসারে প্রকাশিত হইলেও প্রচারকারিকে দণ্ডনীয় হইতে হইবে। উপস্থিত বিষয়ে মাক অর্থরের নিন্দা মুক্তকণ্ঠে প্রকাশ করা হইয়াছে। সদরের জজদিগের মতে তাহা সম্পূর্ণ ভুল।

লওসাং দেব নামে অভিযোগ আর উপস্থিত অভিযোগ এতটাই নিতান্ত অপ্রা

হা। কিন্তু সুপ্রিম কোর্টের জজেরা ইহা প্রত্যাহা করিয়া কেবল আপনাদিগের চিত্ত বোর্বলোর পরিচর দিয়াছেন একপ নহে সুপ্রিম কোর্টের বিচার যে সময়ে সময়ে বিড়ম্বনা মাত্র হয়, তাহারও পরিচর দেখা হইয়াছে। যদি মুক্তি ধরিয়া বিবেচনা করা যায় যে ব্যক্তি বাস্তবিক নিরোধ্য, যদি কেহ বিশেষ বশতঃ তাহার অনিষ্ট করিবার উদ্দেশে মিথ্যা অপবাদ প্রচার করে, অপবাদকারী দণ্ডনীয় হয় সন্দেহ নাই। আর বাস্তবিক দোষ আছে, যদি কেহ তাহার অপবাদ করে, তাহার দোষ প্রমাণ হইলে না হউক অপবাদকারী দণ্ডনীয় হইতে পারে না। কিন্তু আইনে ইহার বিপরীত বলে, বাস্তবিক দোষীর অপবাদকারীও দোষ প্রমাণ করিয়া দিতে না পারিলে দণ্ডনীয় হন। অনেক অকারণ লোকের অপবাদ দোষ বলিয়াই এই আইন দোষ জন্মিয়াছে। কিন্তু রাজকর্মচারিদিগের বিষয়ে ঠিক এইরূপ হয় না। তাহারা দোষী ব্যক্তির দোষের প্রমাণগত বৈকল্য দর্শন করিলেও মকদ্দমার আনুপূর্বিক যাবতীয় তত্ত্ব আলোচনা করিয়া তাহাদিগের যেকোন মতাব জন্মে, তাহার তাহা প্রচার করিতে পারেন। তাহাদিগের এ অধিকার না থাকিলে আপীল বিধি বিকল হইয়া যায়। জজেরা আপীলের মকদ্দমায় যদি নিম্ন পক্ষ ডেপুটি মার্জিস্ট্রেট প্রচারের সংস্কারের কথা প্রচার করেন, তাহাও কি দণ্ডনীয় হইবেন উপস্থিত স্থলে তাহাই ঘটয়াছে। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর অনেক সংস্কার বিষয়ে প্রচার করিয়া দিবেছেন। বিশেষতঃ আইনে দোষ হইলেও যখন বিচারপতি মুক্তিতে পারেন অপবাদকারীর অতিসাক্ষি হইত নহে, তখন দণ্ড করা হি ন্যায়ানুগত হয়। সর্বত্র আইনের অফসারের অনুসরণ করা সুবুদ্ধি বিচারকগণ কর্তব্য নহে। সবু সাং দোষীর দোষ কি সম্পূর্ণ হয়, বাস্তবিক মাক অর্থর উল্লিখিত দোষে লও

হিলেন, এবং লোক জনের জাহাজ কোম
সংগ্রহ হইল না, কেবল হস্তা অক্ষা
বিত্ত নহে। অপর, মাক অর্ধর খুঁজে বী
কার করিয়াছেন, উল্লিখিত অপরাধ নিব
জন উহার কোন আনিষ্ট হয় নাই, তবে
নও কেন? আনিষ্টকারিতা বিবেচনা করি
য়াই নও বিধির সূচি হইয়াছে। সেপ্ট
মর্ট পর্বর যদি বাস্তবিক অপরাধী হইয়া
থাকেন, তাহার প্রতি মকদ্দমার সমুদায়
ব্যয় দিবার অনুজ্ঞা হইল না কেন?

পুতকরী পত্রিকা।

এই দুতন পত্রিকার একখণ্ড আমাদি
গের হস্তগত হইয়াছে। আমরা পাঠ করিয়া
অতিশয় পরিভ্রান্ত হইলাম। বালিগঙ্গের কয়ে
কজন বিদ্যানুরাগী ব্যক্তি ইহার প্রণয়নকার্যে
প্ররক্ত হইয়াছেন। ইহা মাসে মাসে একবার
করিয়া বাহির হইবে। ইহাতে যে কয়েকটি
বিষয় যে রীতিতে লিখিত হইয়াছে, তাহা
দেখিয়া স্পষ্টবোধ হইতেছে, কয়েকজন
তাল লোক এতৎসম্পাদন কার্যে ত্রুটি
হইয়াছেন। তাহার। যদি প্রধানর না হন,
এই পত্রিকার নাম অর্থ হইবে সন্দেহ
নাই। ইহার হারিতা-বিবরণে আমাদিগের
সম্প্রদায় ও সংসার ভিত্তিতে না। মাসিক
চারি আনা মাত্র মূল্য নিরূপিত হইয়াছে।
সম্প্রদায় মধ্যে গ্রাহক সংখ্যা বৃদ্ধি হইবার
সম্পূর্ণ সম্ভাবনা আছে। সম্প্রদায় উৎকর্ষ
ত্বা পাইলে কোন্ ব্যক্তি গ্রহণ করিতে
অভিলাষী না হইবেন? আমরা এই পত্রিকা
হইতে একটি বিষয় উদ্ধৃত করিয়া দিতেছি,
পাঠকগণ ইহার উৎকর্ষ ও অপকর্ষ বুঝি
তে পারিবেন।

বানরের অনুচরীকা।

স্পেন দেশস্থ কোম সামান্য ব্যক্তি নামা
ব্যবসায় অশলভন করিয়া দেখিল যে কিছুতেই
উত্তম রূপে জীবিকা-সিদ্ধি হয় না। অবশেষে
মুসলমানদের দেশে গিয়া ইপি বিক্রয় করিতে
এই স্থির করিল। অনন্তর তাহার যে বৎসি
কিং সংস্থান ছিল তাহা ইপি করে বিক্রয়

করিয়া ইপি গরিয়া থাকে সেইরূপ কতকগুলি
গাংগ্রহ করিয়া আত্মিক দেশে প্রদান করিল।

একরা প্রত্যয়ে গাংগ্রহাণ করিয়া একাকী
এ বিদেশে ভ্রমণ করিতে আরম্ভ করিল। ক্রমে
বেলা দুই প্রহর হইয়া উঠিল। মধ্যাহ্নকালে
আত্মিক দেশে প্রত্যয় হইয়া থাকে।
পশ্চিম আত্মপে তাপিত হইয়া বিজ্ঞানার্থ এ
কটি রককার্য শরম করিল এবং শরম করি
বার পূর্বে একটি ইপি বাহির করিয়া মস্তকে
লিখিল। বেলা অপরাহ্ন হইলে পশ্চিমের নিহা-
তক হইল। কিন্তু কি সর্বনাশ! চক্ষুসীলন
করিয়া দেখে যে বুকের সমুদায় পাখার
অনংখা পাখাগুলি লোহিত বর্ণ ইপি পরি
ধান করিয়া হস্তক্ষেপ করিয়া আছে।

বানরেরা পশ্চিমকে ইপি মাখার দিতে
দেখিয়াছিল এবং সে নিরীক হইয়া মাত্র তা-
হার ইপিগুলি বহিষ্কৃত করিয়া সকলেই এক
একটি মাখার দি গিলিল। সুযোগবিত্ত পশ্চিম
তদধর্মে শোকে অধীর হইয়া গিরে ক্রাধাত
করত হাহাকার করিতে লাগিল এবং বিরক্ত
হইয়া মস্তকের ইপিটি ছুতলে নিক্ষেপ করিল।
কি আশ্চর্য! পশ্চিমকে ইপি কেনিতে দে
খিয়া বানরেরাও তৎক্ষণাৎ সকলে খ খ খ
কের ইপি ছুতলে নিক্ষেপ করিল। তখন প-
শ্চিম বৎপত্রোন্মাদি আনন্দিত হইয়া ইপিগুলি
সংগ্রহ করিয়া গেল।

কোন কোন দেশে নিম্ন লিখিত উপায়ে
বানর ধরিয়া থাকে। তত্ত্ব লোকে একটি পা
য়ে অল রাখিয়া হস্ত বন্ধাদি প্রকালন করে,
পরে সেই পথে তরল আঠা পুণ করিয়া কিছু
দূরে চলিয়া যায়। বানরেরা তদধর্মে আশ-
মাত্রাও বৃদ্ধ প্রকালন করিতে আইলে
এবং যেমন এ আঠাবারা বৃদ্ধ খোঁড় করে,
অবশি তাহাদের পক্ষ সকল জুড়িয়া
যায়, সুতরাং অধঃস্থ হইয়া তাহারা আর প
লাইতে পারে না। তখন সহজেই তাহারা গৃহ
হয়।

জাপান আমেরিকার বানরদের মধ্যে এক
বানর বন্য রোগের আতাত প্রাদুর্ভাব হওয়া-
তে কোন ডাক্তার ডিম্বাধারার্থ এটি উপায়
উদ্ভাবন করেন। তিনি দুই ডিম্বা বালকের
হস্তাধার

কাতে তাহাদের মোমদুর্বাধিক করিয়া দি-
লেন। তিনি বাহা করিলেন বানরটী তাহা অ-
ভিনিবেশপূর্বক দেখিল। তৎপরে ডাক্তার
মহাশয় একটি ছোট বানর, কিছু বীজ, ও এক
খামি ছুরিকা তথায় রাখিয়া গেলেন।
বাহা ভাবিয়া ছিলেন তাহাই ঘটিল। ডাক্তার
মহাশয় অন্তরাল হইতে দেখিতে পাইলেন
যে এই বন্য বানর সেই বানরশাবকের হস্ত পক্ষ
বন্ধন করিয়া মোমদুর্বাধিক করিয়া দিল।
ক্রমে ক্রমে অন্যান্য বানরও এই চিকিৎসা
লিখিল এবং সকলেই মোমদুর্বাধিক হও
রাজে চরিত বন্য রোগ নীচ নিবারিত
হইল।

একজন কোন দেশে কতকগুলি মৌকার
অখাক হইয়া একটি ঘাণে কিছুদিন অবস্থি
তি করেন। তিনি প্রত্যয় প্রাতঃকালে মৃত্ত খা
বন করতেন। কিছুদিন পরে দেখিলেন একটি
বানর তাহার মৃত্ত মৃত্তখান করিতেছে, আর
কিছুকাল গত হইলে দেখিলেন যে মৃত্ত
বানর নদীর তটে এক একটি উইলো পাখা
হস্তে করিয়া রীতিমত মৃত্ত খান

বিবিধ সংবাদ।

১ই ট্যাক্স সোমবার।

আঠিত গেজেট সম্পাদক করেন তথায়
এক বাসিতে দুই লক্ষ টাকা খরচ ও রৌপ্যের
অলঙ্কার এবং হীরক পাওতা দিয়াছে। এই
বাসিটি বেগমের, অধিকাংশ অলঙ্কারে তাহার
নাম কোদা আছে।

কিনিক সম্পাদক করেন প্রাচী সাহেবের
মোকদ্দমা বিবরণে গত মনিয়ার যে লেখা হয়,
তাহাতে ভ্রম হইয়াছিল, খরচা ও এক টাকা
দিতে হইবে না, কেবল কতি পূরণ জন্য ১ টা-
কা মাত্র দিবেন। কিনিকের আতি বশতঃ
সোমবার গণেশ জন্ম হইয়াছিল।

কলিকাতা ও তরিকটবর্তি মুসলমানেরা
বীতন সাহেবকে এক এড্‌ভেন দিয়াছেন। সে-
পট্টনকে পর্বর তাহার উত্তর দান কালে ক-
হিয়াছেন যে এড্‌ভেনের বানকরের বিল্যাপিকা
বিবরণে তিনি বিশেষ রূপে মনোযোগী হইবে-
এ বিল্যাপিকা

অন্য সকলের বরবান হওয়া উচিত। সকলে আগে মূলমানবিককে আলবোলা ছাড়াই-বার চেঁচা তকন, পক্ষাং লেখা পড়া শিখাই-বেন।

দিল্লী গেজেট সম্পাদক বলেন কিলবে ই বে অপরাহ ৫১০ খটিকার সময় কুসিক্স হইয়া গিয়াছে।

হিন্দুশেটিংস্ট সম্পাদক উলিয়াছেন, কানিং কণ্ডে ৪৩৭০ টাকা আদায় হই-রাছে।

সুনা শেল শোণ মনের সেহু নির্মাণ স-ম্পন্ন হইয়াছে।

অন্যতর ইউরোপীয় সমাচার পত্রে বৃষ্ট হইল পুর্নকিন্ত নামে এক স্থানের এক কার-খানার একটি চোং কাটিয়া আর ২৩জন লো-ক মারা গিয়াছে।

বীরভূমের অন্তঃপাতী কুওলা হটতে এক ব্যক্তি লিখিয়া পাঠাইয়াছেন, তথায় এক জন তরু সন্তান ৩০ টাকা পণ লইয়া পাচ মাসের একটি কন্যার বিবাহ দিয়াছেন। কন্যা ক্রম বিক্রয় প্রথা ও বাল্য বিবাহ উভয়ই 'ন', তখন একপ বটনা বিস্ময়

৮ ই ট্যাক্স মঙ্গলবার।

আলেক জগুর মোতার নামে এক ব্যক্তি কিলিক গায়ে লিখিয়াছেন যে তিনি পূর্বে সব আসিষ্টাণ্ট সর্জন ছিলেন কিন্তু উপাধি লাভের নিমিত্ত বিলাতে পরীক্ষা দিতে গমন করেন, পরীক্ষাও হইয়া প্র-ত্যুগমন করিয়াছেন, এক্ষণে ভারতবর্ষীয় পর্বনম্বে উাহাকে সেট কর্ম আবার দিতে চাহিয়া ছিলেন কিন্তু তিনি তাহা গ্রহণ করেন নাই।

টাইমস্ অফ ইণ্ডিয়া সম্পাদক সমাচার পাইয়াছেন যে লাভ কানিং আলেক জ-ণ্ডিয়া হইতে ২২এ এপ্রেল মারসেসিক নগ-রে বাক্স করিয়াছেন। এই স্থানে আউটবাম সাহেবের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইয়াছিল।

মাজাজ হইতে বেপার পর্যায় বান্দীস নকট চলিতে আরম্ভ হইয়াছে।

কিলিক মোতার নামে এক জন আফিসর কুসিক্সার লিখিয়া দিয়া বারুদ করে কি না এই

ছড়োর গায়ে লেগে দিয়া গুলি করেন। প্র-থম গুলিতে কিছু হয় নাই কিন্তু দ্বিতীয়বার এই কণ গুল করাতে তাহার পায়ে আতিলয় আঘাত লাগে গুলিক্রোপ কর্তার অপরাধের বিচার হইয়া ৩ মাসের কারাবাসের আজ্ঞা হইয়াছে। কিন্তু বিচার পত্ৰিয়া প্রাপ্তি সেন-পতি কমা করেন এই অন্তরোধ করিয়াছিলে ন। সেনাপতি কমা না করিয়া কহিয়াছেন বখোচিত দণ্ড হয় নাই। পরীক্ষার জন্য ৫ তারুণ গর্ভিত কর্ম করা আতিলয় অন্তর্ভিত হইয়াছে। গুলি পায়ে না লাগিয়া ঢেকে দিয়া রোগ লাগিলে প্রাণ বাঁচের স-ভাবনা ছিল। আফিসরদিগের অনেকেই প্রায় এই কণ প্র-বুদ্ধি হন।

৯ ই ট্যাক্স বুধবার।

হরকরা সম্পাদক ম্যাকে সাহেবের নামে অপবাদ লিখিয়া ছিলেন বলিয়া ম্যাকে সাহে-ব তাহাকে উকীল দ্বারা লিখিয়া পাঠাইয়াছেন যদি তিনি নিজ অপবাদ কালন না করেন, তা-হার নামে অবিলম্বে সুপ্রিম কোর্টে অভিযোগ হইবে। এই বারে হরকরার সাহসিকতা ও সত্য-সম্বাদ সংগ্রহ করিবার পরিচয় হইবে।

কিলিক সম্পাদক কছেন, গবনমেন্টের রা-জস্ব ও বিচার স-ক্রান্ত অচিরিত কর্মচারিয়া এই বলিয়া গবনমেন্টে আবেদন করিবেন যে তাঁহাদিগের ৭০০ টাকার অধিক বেতন নাই, কিন্তু ইউরোপীয়দিগের তুল্য কর্ম করিয়া থাকেন, তবে ইউরোপীয়দিগের অধিক এবং তাঁহাদিগের কম কেন? গবনমেন্টে বিদ্যালয়ের নিককেরাও কেন এই সঙ্গে যোগ দিল না। বোম্বাই নগরে সর বাটল দ্বিয়ার নিয়ম করিয়া-ছেন, বাঁহাদের পায়ে বোম্বা আছে তাহারা চন্দ্র পাছুকা লইয়া গবনমেন্টে বাটীতে আসিতে পারিবেন, কিন্তু বাঁহারা বোম্বা ব্যবহার না করেন, তাঁহাদিগকে জুতা খুলিয়া আসিতে হইবে। এ কথা বড় অন্য হয় নাই। মন এক ব-তে পরিভার হয় না।

স্টারভে রিভিউ সম্পাদক কছেন, পারস্য চক্রের নিশ্চিত সমাচার পাওয়া গিয়াছে। আফগান জা নামে ইয়াটে একজন রাজা আ-ছেন। তিনি সমুদায় আফগান কান তরু ক-রিবার নিমিত্ত একান্ত আতিলানী হইয়াছেন।

এ ব্যক্তি আপন টসনা লইয়া কাননগর অধি-কার করিয়াছেন। তিনি পারস্য রাজ্য হটতে অনেক সাজাও পাইয়াছেন।

টাইলিনমান সম্পাদক কছেন নেপাল দর-বার হটতে গণ্ডার কনিশনরকে এই পত্র লেখা হইয়াছিল যে এক জন গুরুণা নেপাল হটেতে পলায়ন করিয়া দ্বিটিনরাজ্যে আসিনা চে অতএব তাহাকে ধৃত করিয়া প্রেরণ করা হয়। কনিশনর সাহেব কোন অন্তসম্বাদন না করিয়া তাহাকে 'স্ট্রা' পাঠাইয়া দিয়াছেন বলিয়া গবনমেন্ট 'স' প্রতি আতিলয় 'অ' সন্তোষ প্রকাশ ক-

১৪ নং খা হাইদা 'ন' এর 'ম'নে কে এদেশে বিরোধি কালে 'ম'নত্যাগ করেন, তাহাদিগের অরণার্থ কটল 'এক কীর্তি স্তম্ভ' নিশ্চিত হইতেছে।

কর্ম এগজামিনার সম্পাদক কছেন, 'লাতে মিস র্যাটরিক নামে একটি স্ত্রীলোক রাশিতে অবস্থান করিতেছিলেন এমত সময় রাসারিতে এখি লাগিয়া সকল ভয় হইয়া গিয়াছে। তি-নিও ভালগ্রাসে পতিত হইয়াছেন। তিনি যেনন কণবতী ভেদনি গুণবতী ছিলেন, ম-ত্যস্ত দুঃখেব মহান।

হরকরার লণ্ডনের স-বাদদাতা কছেন, নীলদপণ পুনরার মুদ্রিত হইয়াছে। এবারে কি লংসাহেবকে জেলে বাইতে হইবে?

হরকরা সম্পাদক কছেন টংলগেখরী 'ন' বেধ করিয়া দিয়াছেন এ বৎসর তাঁহার জন্ম-তিথি উপলক্ষে সোমারোহ না হয়। উচিত আজ্ঞা হইয়াছে।

১০ ই ট্যাক্স রহস্যপতিবার।

কিলিক সম্পাদক উলিয়াছেন, লেং সা-হেব পীড়ার জন্য হয় মাসের বিচার পাইয়া-ছেন। তবে তাঁহার বিলাত বাটীর 'স'র বিলম্ব নাই।

উক্ত সম্পাদক বলেন লেং সাহেব প্রত্যা-বর্তন কালে বিলাতের বিশ্ববিদ্যালয় হটতে কর্মচারী সকলকে সঙ্গে লইয়া আনিবেন। এটা যদি সত্য হয়, তাঁহার এখানে লোক প্রভুত করিবার চেঁচার সহিত এ ব্যবহারের বিরোধ হইতেছে।

লাহোর, মুখিয়ানা বেরিলি ও 'আলাহ'

বাক্যে অতিশয় বড় হইয়া অত্যন্ত কড়ি হই
সাহেব। যত্নের ছান পক্ষি ইচ্ছা সিদ্ধি।

নিম্নোক্তকর্তার আদেশের সংবাদাদিত
করেন রাও সাহেবকে কাঁপুপ্রে প্রেরণ করা
হইতেছে।

ই-লিসমান সম্পাদক করেন ২৫ সংখ-
পাদিক ইলমোর অনেক ওলাউটার গ্রাণ
ভাগ করিতেছে। এবার অনেক স্থানে বড়

ওলাউটার প্রাচুর্য বর্ধিত হইয়াছে। এক ব্যক্তি আশাশুনিগের নিকট কছিল
চাকার অস্ত্র-পাতি মাণিকগড়ে অতিশয় ও
লাইঠ। হইয়াছে।

যত দিন বুলনর সাহেব আরোগ্য লাভ
না করেন তত দিন বেককরন সাহেব কলি
কতা হোট আদালতের প্রথম সেকের কর্ম
করবেন।

সিটনকার সাহেব নিজামতে অতিরিক্ত
জত হইয়াছেন। নীলকরেরা যে চূপ করিয়া
অছেন।

একজন গাওয়ারান দুই কতাক ঘোটক
শকটে যোজিত করিয়া চালাইতেছিল, পুলিশ
সে তাহার ও টাক জরিমান। হইয়াছে। প
স্তর প্রতি নিষ্ঠুর বাহাদুর নিবারণীসতা তখন
ক ম করিতেছেন।

কু ও অব ইতিহাস সম্পাদক করেন বরিলসে
২০০০ লোক ওলাউটার দ্বারা পড়িয়াছে।
সংবাদকারী লোক সংখ্যা বিবেচনা করিলে সে
স্থানে লোক নাই বলিলে হয়।

উক্ত সম্পাদক আরো করেন বিজয় প
স্থানের রাজা এক পথ নির্দেশ করিয়া ৫০,০০
টাকা দিয়াছেন। এই শু কান।

উক্ত সম্পাদক অনিরাছেন লার্ড কানিং
গরন কালে যে আহাজে বান, তাহা পথে
হয় হইয়াছে অন্য এক আহাজ দ্বারা গরন
করিতে হইয়াছে।

১১ই জ্যৈষ্ঠ শুক্রবার।

সমর যেন সাহেব বৃত্তি রিডি সাহেবের ক
থ নিযুক্ত হইয়াছেন।

গত বেলযোগে সভাচার আসিয়াছে। সে
মুতন প্রধানতম আসাদজ সেপ্টেম্বর মাসে
প্রতিষ্ঠিত হইবে। সর বার্টেন পিক সাহেব
নিয়ম প্রস্তাব করিবার অনুমতি পাইয়াছেন।

নিম্নোক্তকর্তার সম্পাদক করেন অরপুর্ন

অরপুর্ন কর হইয়াছে। অটোমিকা সকল কর
হইয়া গিয়াছে এবং এতদ্বারা ও এত শিল প
ভিরাহে যে ভেতন কোর কখন মেথেন নাই ও
অমেন নাই।

২৫ই মেসকারন সাহেব কলিকাতার
হুতা সংখ্যা করিয়া পুস্তকাকারে প্রচার
করিয়াছেন। তাহাতে ২০ বৎসরের হিসাব
লিখিত হইয়াছে। তিনি করেন প্রতিবৎসর
কিন্তু ও বুলনরান মতে ১৭০০ বরে। ওলাউটা
দ্বারা অধিক সংখ্যা লোকের মৃত্যু হয়। এমে
শীরের অগেফা ইউরোপীয় কয় মরে। বৎস-

রের মধ্যে আশ্রয় পাঠ ভিলেবর ও যবৎসরেই
অধিক পীড়া হয়, সুলাই ও জুনই মর্জাপে-
কা ভাল বার। কেকদ্বাধি পাঠ এপ্রেল ও মে
মাসে ওলাউটার অতিশয় প্রাচুর্য হয়।
মুঃম চাইল ব.মহারই এই পীড়াবতির কারণ
হি হু ও বুলনরান যে অধিক মরে সহরের
মিউনি সিগল বখোবত তাহার এক কারণ।

কিনিক সম্পাদক করেন কলিকাতার নিক
উবর্ডি ২৪ পরগণার এলাকার মধ্যে পূর্বে সা-
দক দ্বা বিক্রয়ের জন্য মোকাম করিতে হই-
লে লাইসেন্স লইলেই হইত কিন্তু এক্ষণে কলি
কাতার অধীন হওয়াতে কলিনরের বত
বাতিয়েকে বিক্রয়ের যো নাই। দাদক দ্বা
বিক্রয়ের বত প্রতিবৎসক হয় ততই ভাল।

কিনিকের করজানাতের সংবাদ দাতা
করেন যে তাহার এক হল মৃত্যু গবর্নমেন্টের
ডাক বৃষ্ট করিয়া লইয়াছিল, কিন্তু তাহার
ধরা পড়িয়াছে।

ইউইতিহাস রেলওয়ের অডিট ডিপার্ট-
মেন্টের অধ্যাকের লোহ সিদ্ধক হইতে গত
শনিবার ২১ টাকা চুরি যায়। সাহেব বালাসি
কোরানিকিকে সন্ধান করিয়া সকলের তেল
খুসিয়া সার্জন দ্বারা অন্বেষণ করেন কিন্তু
টাকা প্রাপ্ত হন নাই। কোরাণিরা একবাক্য
হইয়া আকিল হইতে চলিয়া আসেন। সোম-
বার আকিলের নিকট উপস্থিত হইয়া ছিলেন
কিন্তু কেহই ভিতরে যান নাই। সাহেব বি-
বতি পূর্বক রহিলেন যে কোরাণিগকে অপ-
হাস করিবার অত এতাদৃশ কর্ম করা হয়
নাই। কেবল কোরাণির নির্দোষিতা সন্ধান
করিবার জন্য অন্বেষণ করা হইয়াছে। সাহে-
বের দুখাইয়া দিয়ার কি কথা? ইংরাজ

কোরানিগের তেল অন্বেষণ করা হইয়া না
কেন।

দৌবাই পাটতে' রিবিউ সম্পাদক ক-
রেন, বোম্বাইবিদ্যালয়ের ছাত্রসিগকে
উপনি প্রদান করা হইয়াছে। ৪টি বাক্য বি,
এ, এবং ৪ টি এল, এম উপাধি পাইয়াছেন।
সর বার্টেন ক্রির সভাপলে অধ্যাকতা করিয়া
ছিলেন তিনি এ দেশীয় বালকদিগের সুখি
রতির পরিচয় প্রদান করিয়া এই আ-
ক্ষেপ করিয়াছেন যে এদেশীয়েরা বেশ ভূষণ
বিষয়ে অত্যন্ত বিবেচন করিয়া থাকেন। আর
ইহারা কোন হুতন বিষয়ের আবিষ্কার ক-
রিতে সক্ষম নহেন। বোধ হয় অনেক দিন
অবধি মিলেনীয় রাজার অধীনে থাকিয়া ব-
নের উৎসাহ গিয়াছে। তথাপি ত অনেকের
এই ইচ্ছা যে ইহারা দাসের মত থাকেন।

১২ই জ্যৈষ্ঠ শনিবার।

এক ব্যক্তি লিখিয়া পাঠাইয়াছেন, দ-
জীলপুরের কিঞ্চিৎ দক্ষিণ কুটিলোদা দিবাসী
একজন পরলা কবলাদী বদিক, গত ওলা
জ্যৈষ্ঠ শুক্রবার রাত্রি অল্পমান ৩ বজের মন-
র এক মোট পরলা লইয়া বিজের নক হইতে
বাগি বাইতেছিল, অল্পমগরের নগর রাজ্যে
বাগারে ঘোষদিগের গদার পূর্ব পাতে রুক-
বোহন বিজের রথের নিকটে হঠাৎ একজন
দস্যু আসিয়া ঐ ঘণিকের দাতার এক দাসের
আঘাত করে। সে দিন বিজের গভের হাট-
বার, রাজ্যের দুই একজন ঘেটো মোক চলি
তেছিল, এবং তাহার নিকটেও মোক
সক্তি আছে, বদিক চীৎকার করা
পলায়ন করিল এবং দুই এ
আসিয়া পড়িল, ওলা গেল পরমার ৭.
বা বাইতে পারে নাই। অল্পমগর প্রাণে
কতলি অত লোকের সন্ধান মেসোখোর হই-
ছে। বোধ হয় তাহারের মধ্যেই কোন মহাপা-
ত্রের এই কর্ম। এমের্পে কখন মৃত্যু ভয় ছিল
না, উক্ত ভয়ের এই হুতন অবতারণ। বাগা
হটক, তাকবোর বিবর এই, একদবার মরত-
র থানা হইতে ঐ স্থান আট রুটির অধিক
দূর মরে। তাহার চীৎকার করিলে সহজেই
থানা হইতে অনায়াসে ওলা যায়। তাহাতে
আবার রাজিকালের মত, তথাপি থানার
কর্মচারীরা যে ঐ ঘণিকের চীৎকার শুনি ও

হইবেন এবং কোকদারি আইনের (১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২২ ধারা ও ১৮৫৪ সালের ১০ আইনের ১ ধারা মতে রাজসাহিতে প্রথম জেলার অধীন মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

বলুয়ার নিমক চৌকীর প্রতিনিধি অধ্যক্ষ বাহু স্বাক্ষরিত প্রার্থনাপত্র এই প্রবেশে নিমক চৌকীর অধ্যক্ষ হইবেন।

বালেশ্বরের নিমক এজেন্টের দ্বিতীয় সহকারী ডব্লিউ সি মেক সাহেব অষ্টম জেলিতে ছিলেন সপ্তম জেলিতে অধিষ্ঠিত হইবেন।

আর. শিবকুমার সাহেব জেলখরে নিমক চৌকীর অষ্টম জেলের সহকারী অধ্যক্ষ হইবেন।

তালিকাতার প্রতিনিধি ডেপুটি কালেক্টর ও মাংসকার অধ্যক্ষ জে. মেককি সাহেব ১৮৬০ সালের ৩০ আইন অনুসারে এই স্থানের কমিশনার সত্বে সম্পাদক হইবেন।

১০ই মে—সদর মেডিক্যালি নিয়ন্ত্রিত আলালতে, নিম্নলিখিত আওরিক্ত জজ নিযুক্ত হইবেন।

এফ. বি. কেম. সাহেব ডব্লিউ. এস. সিটলকার সাহেব, এল. এস. কাকসন সাহেব।

ডব্লিউ. এফ. ১৮৬৩ সনের সাহেব বাধর গুপ্তা নিবাস ও মেসিয়ান জজের প্রতিনিধি হইবেন।

জে. কে. আলেকজান্ডার সাহেব মুন্সেফে মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

জে. টিউড সাহেব জুন, ১৩ তারিখ কার্যভার গ্রহণ করিবেন এবং ১৮৬১ সালের ২৫ আইন ২২ ধারা মতে ও ১৮৫১ সালের ১০ আইন ১ ধারা মতে প্রথম জেলার সহকারী মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন এবং ১৮৫৪ সালের ১০ আইন ১৩ ধারাকে ডেপুটি কালেক্টরের ক্ষমতা পাইবেন।

জে. বিম্ব সাহেব পুণ্ড্র মাজিষ্ট্রেট ও বালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

ডব্লিউ. এস. কিলি সাহেব ময়মন সিংহ জা. ইন্ট মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

জে. বি. গুণাবগান সাহেব দিনাজপুরে আইন্ট মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রতিনিধি হইবেন।

বাহু অভয়চরণ মলিক বারাসত বিভাগের দ্বারা তার প্রাপ্ত হইবেন এবং ২৪ পরগনার মাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষমতা পাইবেন।

এইর প্রিকারি সাহেব মুন্সেফে মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টরের সহকারী হইবেন এবং এই প্রদেশে দ্বিতীয় জেলার অধীন মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার কার্য সম্পাদক এজ. মেককি সাহেব অষ্টম কলিকাতা জেলের অধীন কলিকাতা জেলের প্রতিনিধি অধ্যক্ষ থাকিবেন।

নিম্নলিখিত ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

চট্টগ্রামে মৌলবি ডব্বল আলি ও বাহু ডাব্বল আলি বহু। মেদিনী পুর্বে মৌলবি জোহর আলি।

নিম্নলিখিত ক্ষমতাবির: কৌকদারি আইনের (১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২২ ধারা মতে প্রথম জেলার অধীন মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা ১৮৫৪ সালের ১০ আইন মতে ডেপুটি কালেক্টরের ক্ষমতা পাইবেন।

বঙ্গদেশে জে. টিউড।

কটকে আর ডি. ক'ইন।

পাটনায় এ. সি. বি. সি. বেগান।

মুর্শাবাদে ডব্লিউ. আবদুল লাহমান।

চৈরুমে এইচ. এস. হারিসন সাহেব।

নিম্নলিখিত ক্ষমতাবির: কৌকদারি আইনের (১৮৬১ সালের ২৫ আইন) ২২ ধারা অনুসারে প্রথম জেলার অধীন মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

আইটে বার কালিহানস নও বি. এ. এফ. বি. বেল।

চট্টগ্রামে বাহু হামাক সাহেব পাটনায়

সি. ও. এল. সাহেব ও সি. এফ. মিয়া সাহেব।

বগুড়ায়, এল. প. সি. সাহেব।

বর্ধমান, এল. এ. এল. সাহেব।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

চট্টগ্রামে এইচ. ডব্লিউ. ও. বহু।

বাংলায় প্রদানের আগমন করিয়া অঙ্গ আশ- হার অজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

গত ২৪। ২৫এ বৈশাখ এপ্রবেশে প্রাপ্ত হইয়া উঠি হইয়াছে। ২৫এ গম প্রাপ্তি প্রাপ্ত কলিকাতায় হইয়াছে।

এপ্রবেশে প্রাপ্ত হইয়া গম প্রাপ্তি প্রাপ্ত হইয়াছে। কেবল তৈল ও হুতের মূল্য অধিক হইয়াছে।

এবং প্রদানের বাজার প্রাপ্তি দেশের অধিক লক্ষ্য দ্বারা আশিষ্ট হইয়াছে কিন্তু জীলোক্তের লক্ষ্য অপেক্ষা পূর্বের লক্ষ্য অধিক।

২৭এ বৈশাখ।

২৮এ ১২৬২।

২৯এ ১২৬২।

৩০এ ১২৬২।

৩১এ ১২৬২।

৩২এ ১২৬২।

৩৩এ ১২৬২।

৩৪এ ১২৬২।

৩৫এ ১২৬২।

৩৬এ ১২৬২।

৩৭এ ১২৬২।

৩৮এ ১২৬২।

৩৯এ ১২৬২।

৪০এ ১২৬২।

৪১এ ১২৬২।

৪২এ ১২৬২।

৪৩এ ১২৬২।

৪৪এ ১২৬২।

৪৫এ ১২৬২।

৪৬এ ১২৬২।

৪৭এ ১২৬২।

৪৮এ ১২৬২।

৪৯এ ১২৬২।

৫০এ ১২৬২।

৫১এ ১২৬২।

প্রেরিত।

ক্রিয়াকর্ম সোমপ্রকাশসম্পাদক।

মহোদয়ের।

সম্পাদনবিভাগে।

১৪এ. বৈশাখ প্রেরিত।

এই গুরুত্বপূর্ণ বক্তব্যের পরে বক্তব্যের শ্রবণ করে
সোনারপুর বৈদ্যের বক্তব্য ১৫ ডিগ্রীতে প্রাপ্ত হইল
যারকর্তৃক নিম্নলিখিত বক্তব্যের বক্তব্যের প্রাপ্তি সোনার

সোমপ্রকাশ

“এবস্ততাং প্রকৃতিজিতার পার্শ্বিকঃ সরস্বতী প্রভিন্দন্তী ন চীমতাঃ”

৩ ভাগ
২ সংখ্যা

সন ১২৬২ । ২১ জ্যৈষ্ঠ । উঃ ১৮৬২ । ২ জুন

মাসিক মূল্য ১ টাকা
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন ।

এ হকগণের প্রতি ।

দৈনন্দিন অত্যন্ত কষ্টসাধ্য মনে হইতে
একত সোমপ্রকাশেয় মূল্য নিঃশেষিত হইয়া
ছে । তাঁহা লিখ্যক বিনয় পূর্বক জ্ঞানময় হই
তেছে যে তাঁহা কতকগুলি পুস্তক দ্বারা
আগামি বৎসর মূল্য পাঠাইতে পারেন । অগা-
ম্যতঃ সৎকৃত খসড়া মূল্য পাঠাইবেন ।

বিজ্ঞাপন ।

বিষয়বিশেষ নোটক ।

ঐতিহাসিক মিত্র প্রণীত উক্ত নোটক সৎক-
ত যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়া বিক্রয় প্রস্তুত হইতে
আহকগণ নিম্ন লিখিত ঠিকানাতে তত্ত্ব করিলে
পাঠিতে পারিবেন । মূল্য ১০/৮ আন মাত্র
কলিগতা

ঠানটেনিবা , ১১৬ নং কলিগতা সৎকৃত পুস্তক
কলিগতা ১১৬ নং কলিগতা সৎকৃত পুস্তক
দিগের পুস্তকালয় লালগজার, ডি রোজারিও
এক কোম্পানির লাইব্রেরি

বঙ্গবাসী ।

বাখানগর এখসতার উপাচার্য

ঐক্য চূর্ণনক কবিরাজ মহাপ্রভুর নিকট ।

সোমপ্রকাশ ।

১১৬ নং কলিগতা

অন্যোনিবারণী সৎকৃত

আবশ্যকতা ।

মুসলমানদিগের অধিকারের কথা শু-
ক, ইংরাজদিগেরই আধিকার অধিকার
কালে সুনিবাহি ডাকাইতেব, প্রকাশ
কপে পত্র লিখিয়া ডাকাইতি করিতে

যাইত ; দুর্ভাগ্য জনবান অথবা কর্মীদারেরা
প্রকাশ্যে রাষ্ট্রপথ হইতে সুন্দরী জীলেক
দগকে বণ্ণে ধরিয়া লইয়া যাইত ; চো-
রের উপক্রমে নিশ্চিন্তমনে নিদ্রাভুত অনু-
ভব কর। তার ছিল ; অবলের আত্মজান
দুর্বলের সর্বত্র প্রাণনাশের না হউক প্রাণ
নাশ সদৃশ বহুলা ভোগের হেতু হইত ।
এখন সর্বপ্রদেশে (নীল প্রধান-প্রদেশে
ইহার অনেক উপক্রম আজিও কাগজক
আছে) না হউক, অনেককালে উল্লিখিত
দৌরাত্ম্য প্রায় নিঃশেষিত হইয়াছে । শাসন
এংলীর দৈনন্দিন জীবন নবনগোচর
হইতেছে । কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখি-
লে দুর্বলের প্রতি অবলের সম্যক অত্যা-
চার নিবারণের আজিও বহুবিনয় আছে ।
একগণে সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায়, যে
অত্যাচার করিলে তদ্বিষয় সহস্র বাজ
গোচর ও সপ্রমাণ হইয়া গুরুদণ্ড হইবার
সম্ভাবনা আছে, চাকেরা এতদূশ অত্যাচার
প্রায় পরিত্যাগ করিয়াছে । দুর্বলের পক্ষে
আদালতে যে অত্যাচার প্রমাণ করা নি-
শাচ্য নহি, একগণে এতদূশ অত্যাচার প্রোত
এবং হিত দৃষ্ট হইতেছে । আদালত হইতে
সে সকলের প্রতিকার সহজ নয় । দুর্ভাগ্য
স্বরূপ একটি উদাহরণ প্রদর্শিত হইতেছে ।

বোম্বের অবল ও দুর্বল উভয়ের
ভূমি পাশ সংলগ্ন । অবল শীমা অতিক্রম
করিয়া দুর্বলের পাঁচ হাত ভূমি হরণ করি-
ল । যেকপ আদালতের গতি, পাঁচহাত
ভূমির উদ্ধার অল্পতঃ ৫০ টাকার জ্ঞান স

মাত্র হইবার সম্ভাবনা নাই । বঁহারা
আদালতে যকদমা করিয়াছেন, তাঁহারা
কখন ৫ হাত ভূমির জন্য ৫০ টাকা ব্যয়ের
কথা শুনিয়া বিশ্বাসপন্ন হইবেন না । অত-
রা একপ একটি শীমাভিক্রমের সাক্ষ্যদায়ক
বৃত্তান্ত জানি । এককাঠা ভূমি লইয়া সেই
বিবাদ হয় । তাহাতে ১২৫ টাকা ব্যয় হইয়া
যায় । কোন্ বিষয়ে কি ব্যয় হইয়াছিল,
তাহার সমুদায় ঠিক করিয়া বলিতে পারি
তেছি না । কিন্তু যে প্রক্রিয়াতে যকদমাদি
হইয়াছিল, তাহা অবগত করিয়া পাঠকগণ বি-
বেচনা করিয়া দেখুন আমরা যে ব্যয়ের কথা
কহিতেছি, তাহা হইতে পারে কি না ?

প্রথম আবেদন ও উকীলের ব্যয় ।
এক কাঠা ভূমির সাক্ষ্যদায়ক আইনে যে
উকীলের ব্যয় নিবন্ধিত আছে, তাহা অতি
বাসমান্য । তাহাতে উকীলেরা যকদমা
গ্রহণ করিতে সম্মত হন না, সুতরাং অধিক
দিতে হইল । তাহার পর পদাতিকের মি-
য়া দিয়া নালিশ হইয়াছে, প্রতিবাদিকে
জানাইতে হইল । প্রতিবাদী তাহার কোন
উত্তর দিল না, পুনরায় সমন জারী করি-
তে হইল । সুতরাং পুনরায় পদাতিকের
মিয়ার দিতে হইল । তাহার পর সাক্ষী ।
এদেশের সাক্ষীর এমন দুর্ভাগ্য যে যঁহারা

গ্রহণ না করেন তাহাশত সন্তোষের
সাক্ষ্যদায়ক একান্ত পরাধীন ; তাঁহারা যেহে-
তুমে পাণ্ডিত্য ও আদালতে যাইতে চানেন
না । অতঃ সাক্ষী লইয়া যাইতে হইল ।
অতঃ সাক্ষীদিগের এই রীতি, তাহারা সত্য

কিন্তু, অবশেষে মনুক, টাকা না পাইলে
আদালতের পদাঙ্গণ করে না। টাকা পাই
লেই যে তাহাদিগের মন প্রসন্ন হইল,
তাহাও বিনা অর্থব্যয় সম্পন্ন হইল না।
এখন পাঠকগণ কি বিবেচনা করিতেছেন-
একটা ভূমির উদ্ধারার্থ ১২৫ টাকা
ও, অসম্ভাবিত : দরিদ্রবাস্তু এ টাকা
কোথায় পায়।

পটীগ্রামে এক কঠোরমিব মূল্য মত
রাচব পাঁচ টাকার মত অধিক হয় না।
এই পাঁচটার উদ্ধারার্থ ১২৫ টাকা ব্যয়
করিতে সকলের প্রবৃত্তি কমিবে কেন
মকদ্দমা করা কেবল অর্থব্যয় হইলেও হয়
না, লোকবল চাই। তাহার লোকবল নাই,
অন্যে বিষয় কাড়িয়া লইতেছে দেখিয়াও
তাহাকে অগত্যা মনোহত মনে নীল
করিতে হয়।

আমরা দিগ্‌দর্শনার্থ একটি উদাহরণ
প্রদর্শন করিলাম, মকদ্দমের দিনে এই
রূপ সহস্র অনায্য কার্য অনুষ্ঠিত হই
তেছে। তাহার নিবারণের উপায় কি
আদালতের দোষ সংশোধিত হইলে অন্য
মতই তদ্বিষয়ে প্রভু হইত বন, এ আশা সু
দূর পরাহত। আমাদের চিত্র ও বাস্তব লে
খকগণেরই এতদ্বিষয়ের উপায় অনু
সন্ধান করা কর্তব্য। স্থানো অনায্য নিব
রণী সভাস্থাপন করিবার উৎকৃষ্ট
উপায়।

উত্তর পক্ষের এইরূপে সাক্ষ্য দেওয়া
হইলে বিচারকর্তা নাকিহান হইয়া মকদ্দমের
আদালত পাঠাইয়া দিলেন। আদালতের
রুহু, তাহার ন্যায্যপক্ষ তিনি তাহা পূর্ণ ক
রিতে পারিলেন না, সুতরাং আদালত বিপ
রীত রোয়াদ দিলেন। প্রস্তাবিত মকদ্দ
মার কয়েকজন তত্ত্বলোক সাক্ষী ছিলেন।
আদালত ১৯ আইন জারী করিয়া তাহাদি
গকে আদালতে লইয়া যাওয়া হইল।
তাহাদের অঙ্গ ব্যঙ্গ হইল না। কিছুতেই
বিচারকর্তার সংশয়ক্ষণ না হওয়াতে
তিনি যথং মকদ্দমের খেলেন। তাহার
বাহনেরাও (আমলারা) তাহার সমস্ত
বাহন গমন করিলেন। আমলারা কখন

বিনা লাভে একপদ গমন করেন না। তাহা
তেও কিছু গেল। শেষে সুবুদ্ধি বিচারকর্তা
অধিক হতাশ হইয়া দিলেন। আদালত চলে,
তাহাও বিনা অর্থব্যয় সম্পন্ন হইল না।
এখন পাঠকগণ কি বিবেচনা করিতেছেন-
একটা ভূমির উদ্ধারার্থ ১২৫ টাকা
ও, অসম্ভাবিত : দরিদ্রবাস্তু এ টাকা
কোথায় পায়।

পটীগ্রামে এক কঠোরমিব মূল্য মত
রাচব পাঁচ টাকার মত অধিক হয় না।
এই পাঁচটার উদ্ধারার্থ ১২৫ টাকা ব্যয়
করিতে সকলের প্রবৃত্তি কমিবে কেন
মকদ্দমা করা কেবল অর্থব্যয় হইলেও হয়
না, লোকবল চাই। তাহার লোকবল নাই,
অন্যে বিষয় কাড়িয়া লইতেছে দেখিয়াও
তাহাকে অগত্যা মনোহত মনে নীল
করিতে হয়।

আমরা দিগ্‌দর্শনার্থ একটি উদাহরণ
প্রদর্শন করিলাম, মকদ্দমের দিনে এই
রূপ সহস্র অনায্য কার্য অনুষ্ঠিত হই
তেছে। তাহার নিবারণের উপায় কি
আদালতের দোষ সংশোধিত হইলে অন্য
মতই তদ্বিষয়ে প্রভু হইত বন, এ আশা সু
দূর পরাহত। আমাদের চিত্র ও বাস্তব লে
খকগণেরই এতদ্বিষয়ের উপায় অনু
সন্ধান করা কর্তব্য। স্থানো অনায্য নিব
রণী সভাস্থাপন করিবার উৎকৃষ্ট
উপায়।

কৃতবিদ্যা ব্যক্তিদিগকে এই সভাস্থা
পনে কৃতোদ্বোধন হইতে হইবে। যে সে
ব্যক্তিকে সভ্য করিয়া ইষ্ট সিদ্ধি হইবার
সম্ভাবনা নাই। তাহাদিগের ধর্মভঙ্গ আছে,
যংগা অন্যের হিত সাধনকে প্রধান
কর্তব্য বলিয়া জ্ঞান করেন এবং অর্থে অথ
বা চাটুবিচনে তাহাদিগের চিত্তকে বিচলি
ত করিতে না পারে, তাহারা এই সভার
সংগঠন লাভের যোগ্য পাত্র। এই সভা
কে সে প্রতিষ্ঠা যোগ্য করিতে হই
বে, তাহারও উল্লেখ করা যাইতেছে। এই

সভা ধর্ম অথবা সামাজিক বিষয়ে হস্তক্ষেপ
করিতেন না, অন্য প্রকার অনায্যনিবার
ণের চেষ্টা করিবেন। কেহ কাহার প্রতি
হিংসা অমোচ্য করেন, কোনকালে তাহা
সভার গোচর হইলে সভা প্রথমে
তাহার তত্ত্বানুসন্ধান করিবেন। অন্যায়
দস্তার আচরণী সভার হৃদয়ঙ্গম হইলে
সভা অর্থে অনায্যকারিকে তদ্বিষয় হইতে
নিবৃত্ত হইবার অনুরোধ করিবেন।
তিনি যদি অনুরোধ রক্ষা করেন, উ
ক্ত অনায্য সভা অনায্যসহিষ্ণু প্রতি
নিবৃত্ত হইয়া, যি বিষয়টি মিকটু বিচার
পতিব গোচর কাঁবিবেন, বিচারকর্তা কেবল
মহার বাস্তব উপরে বিচার করিয়া কা
র্য্য করিতে না চাহেন অনুসন্ধান করিয়া
নাশনাশ নির্ণয় করিবেন।

এইরূপে এই সভা হইতে পারে, বি
চাবকর্তারা সভার কথা শুনিয়া, কার্য্য ক
রিবেন কেন। অর্থাৎ প্রত্যর্থির আবেদনাদি
অন্য করিয়া কার্য্য করিবারই নিয়ম ও রী
তি আছে। ইহার উদ্দেশ্য এই, যদি প্রস্তাবি
ত সভা সর্বত্র প্রতিষ্ঠিত হয় এবং সকলে
বহুবল হন, সভার কথা শুনিয়া কার্য্য ক
রিলার আইন ও ন্যায় তখন জুড়ক হইবে
না। অন্যায় নিবারণ করা গবর্ণমেন্টের
উদ্দেশ্য। সেই অন্যায় নিবারণ যখন স
ম্পন্ন উদ্দেশ্য হইতেছে, তখন গবর্ণমেন্ট
তাহার অনুমোদন না করিবেন কেন।
এইরূপে বিশেষ করিয়া আমাদিগের একটি
বক্তব্য এই, অন্যায় নিবারণার্থই সভার
সৃষ্টি হইতেছে, কিন্তু সভা যেন এক পক্ষে
পক্ষপাতিনী হইয়া যথং অন্যায় কার্য্যে
প্রবৃত্ত না হন। সভা ন্যায়োপেত কার্য্য
করিলে গবর্ণমেন্ট ইষ্ট চিত্তে অনু
মোদন করিবেন সন্দেহ নাই। এইরূপ
সর্বত্র সভা হইলে গবর্ণমেন্টের অর্থব্যয় ও
পরিচর্য্যাও অসম্ভব লাঘব হইবে। এই স
ভার কার্য্য নির্বাহার্থ কিছু কিছু অর্থের
প্রয়োজন হইবে সন্দেহ নাই। কিন্তু সেই

অর্থ চাঁদা দারা আমদ লোকসিগের নিকট হইতে সংগ্রহ করিতে হইবে।

কেহও মনে করিতে পারেন, আমরা ভারতবর্ষের সত্যের শাখা অথবা আটান পদ্ধতিতে স্থাপন প্রসঙ্গ করিতেছি। ভারতবর্ষীয় সভা ও পদ্ধতিতে ব্যাপক বিষয়, কিন্তু ইহার বিষয় ব্যাপ্য। ভারতবর্ষীয় সভা গবর্নমেন্ট কৃত আইনাদির দোষ সংশোধনই সমধিক যত্নবর্তী। এ সভার সে উদ্দেশ্য নহে, এ সভা প্রজাগণের পরামর্শের প্রতি পরামর্শের অধ্যাচার নিবারণেরই চেষ্টা করিবেন। পদ্ধতিতে ধর্মাদি যাহা যি বিষয়ে হস্তক্ষেপ করেন, ইহার সে সকল বিষয়ে হস্তক্ষেপ উদ্দেশ্য নহে।

আমেরিকার সংসদ।

২৬এ এপ্রেল পর্য্যন্তের যে আমেরিকার সংবাদ পাইয়াছেন, তাহা স্পষ্টাক্ষরে কহিয়া দিতেছি, আমেরিকার দক্ষিণাংশের সহিত উত্তরাংশের যে বিবাদ হইতেছে, ইংলণ্ড ও ক্রাউ উত্তর রাজ্য তাহার নিষ্পত্তি করিয়া দিবে না, সহজে যদি মীমাংসা না হয়, এই উত্তর গবর্নমেন্ট বল প্রকাশেও পরাজয় হইবে না।

টেলিগ্রাফ যোগে যে সমস্ত সমাচার আইসে, কর্মচারিগণের দোষে বহু সময় তাহার বহু ব্যতিক্রম ঘটে। উল্লিখিত বিষয়ে যদি সেইরূপ ব্যতিক্রম ঘটিয়া থাকে, কথা নাই, যদি তাহা না হইয়া সমস্তটি সত্য হয়, আমাদিগের অস্তুরণ বিষয় দ্বারা একান্ত অভিভূত হইতেছে। তর প্রদর্শন দ্বারা হউক, আর মৈত্রী দ্বারা হউক, আমেরিকার বিবাদ শান্তি হইলে জগতের বহুতর ইষ্ট লাভ হয় সন্দেহ নাই। এই কলটি বিবেচনা করিলে উত্তর গবর্নমেন্টের উল্লিখিত কাণ্ডে অনুমোদন করিতে কোন ক্রমেই আমাদিগের অনিচ্ছা জন্মে না, কিন্তু আমাদিগের বিপর্যয়

গের কারণ এই, জাহারা কোন দুক্তি অবলম্বন করিয়া এবিধ কার্য্যে প্রবৃত্তি বিধান করিতেছেন? আমেরিকা স্বাধীন রাজ্য, তাহার উপরে ইংলণ্ড অথবা ক্রাউ প্রভৃতি নাই। কিন্তু এই উত্তর রাজ্য প্রভৃতি ন্যায় কার্য্য করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছেন উত্তর আমেরিকার লোকেরা জীত হইয়া যদি দুঃখাগ্রাস পরিত্যাগ করেন, সর্বাধীন মঙ্গল হয় সন্দেহ নাই। ইংলণ্ড ও ক্রাউ হস্তক্ষেপ করিলে উত্তরাংশের লোকসিগের অস্তুর পরিত্যাগ করিবার সমধিক সম্ভাবনাও আছে। একে উক্ত উত্তর গবর্নমেন্টে প্রবল, শত্রুতা জন্মিলে প্রবলের সক্তি প্রতিযোগিতা করিতে হইবে। দ্বিতীয়তঃ উত্তরাংশের গবর্নমেন্টের অর্থের সম্ভল নাই।

কিন্তু উত্তরাংশের লোকসিগের যদি অপমান জ্ঞান প্রবল হইয়া উঠে, এসকল চিন্তা তিরোহিত হইয়া যায়, তাহা হইলেই বিষয় অনর্থক। ইংলণ্ড ও ক্রাউ উত্তর গবর্নমেন্ট যে বিষয়ে হস্তক্ষেপ করিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন, তাহাও দক্ষিণাংশের আনুকূল্য করা হইতেছে। কিন্তু সেই সাহায্য দান বিধিবোধিত হইতেছে না। অনুধাবন করিয়া দেখিলে দক্ষিণাংশের লোকেরা এক প্রকার রাষ্ট্রবিসম্বকারী। দক্ষিণ ও উত্তর উভয় প্রদেশের লোক এক গবর্নমেন্টের অধীনে থাকতেই আমেরিকার বহু গৌরব। এক্ষণে দক্ষিণাংশ যত্ন হইবার চেষ্টা করিতে সেই গৌরব হানি হইতেছে। ইংলণ্ড যে আমেরিকার নিকট পরাজুত হয় উত্তর অংশের একাধিক বক্ষণ অবস্থান কি তাহার কারণ নয়? জলন্ত দক্ষিণাংশের লোকেরা যত্ন হইবার চেষ্টা রাখে আমেরিকার গবর্নমেন্টের অনিষ্ট ঘটাইতেছে। যে সকল ব্যক্তি নিজ গবর্নমেন্টের অনিষ্টকারী, তাহাদিগের সহায়তা করা কি কর্মই হইব হয়।

ইংলণ্ড ও ক্রাউ য় রাজ্য আমেরিকা

রিকার বিবাদের হস্তক্ষেপ করিতে, আমাদিগের আর একটি অনিষ্টের কারণ হইতেছে। উত্তরাংশের লোকসিগের দ্বারা ব্যবসায়ের প্রতি বিভীষিকা বিস্তারিত হইয়াছে। অতএব উত্তরাংশের এই ব্যবসায় বিলুপ্ত হইবে, কতর সন্দেহ করিতেছে না। গাংশ যদি স্বাধীনতা লাভ করত ব্যবসায় বিলোপের বহু সন্দেহ নাই।

১৮৪৩ অব্দের ১০ আইন

সংশোধন প্রস্তাব।

উপরি উক্ত আইনসংক্রান্ত ভারতবর্ষীয়সভার আবেদন প্রসঙ্গকরা আমাদিগের প্রস্তাবের প্রতিবাদ বিবরণ। আইন সংশোধিত হইয়া যে আইন প্রস্তাবিত হয়, তাহার ২। ও ধারার লিখিত হইয়াছে, অর্থ অথবা এক বর্ষের প্রতি দণ্ডদান অথবা বন্দনার দণ্ড বিষয় অনুমতি হইবে, তাহা দুই সপ্তাহের মধ্যে হইবে। ভারতবর্ষীয় সভা তাহার প্রতিবাদ করিয়াছেন। এ প্রতিবাদ সারাংশে হইয়াছে সন্দেহ নাই।

অপর, সংশোধিত আইনের দ্বিতীয় ধারায় এই প্রস্তাব হয়, যদি কোন প্রস্তাবনা না দেয়, মর্শীল হইলে তাহাতে আপনাদের দেয় প্রস্তাবনা ও দণ্ড উত্তর দিতে হইবে। ভারতবর্ষীয়সভা একে পরিবর্তন প্রসঙ্গ করিয়া এই প্রস্তাব করেন, প্রজাবৈসম্য দ্বারা নিষেধ কিংবা ক্রমে প্রজাবৈসম্য দ্বারা নিষেধ করিয়া দেওয়া আবশ্যক। যে প্রস্তাব তিন কিংবা আপনাদের দেয় প্রস্তাবনা না দিবে, শেষ ডিক্রির ১৫ দিনের পর তাহার জমা বাজেয়াপ্ত হইবে। এ প্রস্তাবটি সুসঙ্গত বলিয়া প্রতীক্ষান করিতেছেন। প্রজাগণকে পৈতৃক ভরসা দেও বিহীন করা কোন ক্রমেই পরামর্শ নহে। তা

যাহা, ন্যায় খাজনা দিতে আস
এখন এমন প্রজা অতিবিরল । তাহা
সর জমা বাজেআল হইবার অনুমতি
দান নাই । এদেশীয় প্রজারা নিজ গৃহ
গের ন্যায় আপন আপন জ
মিকতর স্বেচ্ছ করে । ভূমি
টির তর মা থাকিলে তাহারা
হার জিহ্বা সাধন করিয়া থা
কিয়া সেটাবুঝিতে পারেন না ।

হইয়া উত্তম শস্যাদি জমি
সম্পন্ন হয় । প্রজার সকল
অন্যাদিগের স্বচ্ছন্দ, তাহাও
অন্যাদিগের অনেকে বুঝিয়া উঠিতে
পারেন না । তবে বাহারা চুর্ক, জমা বাজে
আল করিবার নিয়ম করিয়া তাহাদিগকে
স্বচ্ছন্দ করিবার চেষ্টা না পাইয়া যদি দণ্ডের
নিয়ম করা হয়, তাহা হইলে কি অতীত
সম্ভাবনা নাই ? কেবল এক দণ্ডের
করা বস্তু তদ্ব্যতিরিক্ত নিবারণ হইয়াছে,
আর বাহারা চুর্কতা করিয়া খাজনা না
করে, দণ্ড দ্বারা তাহাদিগের কি শাসন হও
সম্ভাবিত নয় ?

সংশোধিত আইন সম্বন্ধে ভারতবর্ষীয়
সভায় যে দুটি প্রধান আপত্তি, তাহাব্য
পরিবর্তিত হইল । তদ্বিষয় সভা অসংশোধিত
আইনের যে যে অংশের সংশোধন
করা করিয়াছেন, তাহাও উল্লিখিত হই
তেছে । ১৮৫৯ অব্দের ১০ আইনের ৩।৪।
৬ ধারার তাৎপর্য এই, যে প্রজা
জিহ্বা দীর্ঘকাল (৪ ধারায় ২০ বৎসরের
এবং ৬ ধারায় ১২ বৎসরের কথা আছে)
ক ভূমি একবিধ খাজনা দিয়া ভোগ করি
য়া আসিয়াছে, জমীদার তাহাকে তাহার
জমি হইতে বঞ্চিত করিতে অথবা তাহার
খাজনা বৃদ্ধি করিতে পারিবেন না । এধারা
গুলি দেশশালার বন্দোবস্তের প্রতিজ্ঞা বি
লম্ব বলিয়া ভারতবর্ষীয় সভা ইহার পরি
বর্তন প্রস্তাব করিয়াছেন । কিন্তু এতৎ পরি
বর্তন সম্বন্ধে অসংশোধিত আইন ।

যুক্তি ২০ বৎসর পর্যন্ত একবিধকরে
খাজনা দিয়া আইনে, তাহার তাদৃশ হারে
খাজনা দিবার বিশিষ্ট কারণ থাকিবার সম্ভ
ব সম্ভাবনা আছে । সেই কারণ জানা অথ
বা প্রমাণ হইল না বলিয়া তাহার তে
ব্যতিক্রম হওয়া কোন ক্রমেই ন্যায়ানুগত
হইতেছে না । এহলে জমিদারদিগের ইচ্ছাও
বিবেচনা করা আবশ্যিক, চিরস্থায়ি বন্দোবস্ত
হওয়াতে তাহারা যেমন লাভবান হইয়া
ছেন এবং বঙ্গলা দেশের সৌভাগ্য বৃদ্ধি
হইয়াছে, তেমনি প্রজাদিগের সহিত যদি
তাঁহাদিগের চিরস্থায়ি বন্দোবস্ত হয়, কেবল
প্রজার নয় তাঁহাদিগেরও স্বচ্ছন্দ লাভ হ
ইবে এবং বঙ্গলা দেশেরও সবিশেষ জিহ
জি হইবে ।

১৬ ও ১৭ ধারার বিষয়ে ভারতবর্ষীয়
সভা যে আপত্তি করিয়াছেন, তাহাতে
কিছু বিশেষ মতন কথা নাই । ৩।৪।৩
ও ৬ ধারাতে যে যুক্তি প্রদর্শিত হইয়া
ছে এবং যে যুক্তিতে সেই সেই আপত্তি
বিস্তারিত হইয়াছে ১৬ ও ১৭ ধারাও সে
ই যুক্তিতে খণ্ডনীয় হইতেছে । দেশশালার
বন্দোবস্তের প্রতিজ্ঞা ততই সেই যুক্তি
অথবা প্রস্তাবত্রাঘিন্ন ভাবে অন্য ২ আপ
ত্তির বিষয় উল্লিখিত হইল না ।

সংসদগণের যুক্তি

উপস্থিত আকগানের মুক্ত কণিতায়
তারা কলিকাতা ন্যায় নিম্নোক্ত ভাবে
গাছে । প্রথমে আমরা শুনিলাম, পার্শ্ব
করা আকগান হইলে প্রজাদিগের অর্থ
হইয়াছেন, দোস্ত মহম্মদ সমর সজ্জা করি
য়াছেন, ইংরাজেরা সৈন্য প্রেরণ দ্বারা দো
স্তের সাহায্য করিবেন কি না, এই বিষয়
লইয়া আন্দোলন হইতেছে । কিন্তু এক্ষণে
সুন্দর যাইতেছে পার্শ্বকদিগের সংগ্রা
হাৎপ্রণয় শাস্তি অলৌক । হিরাজের সুল
তান জামের সজ্জিত দোস্ত মহম্মদের বিবা
হ । সুলতান জান বিশেষকৈ তর সজ্জিত

করিয়া স্বাভীষ্ট সাধন করিবার উদ্দেশ্যে
পার্সীকদিগের সমর সজ্জা প্রচার করিয়া
ছেন । দোস্ত মহম্মদও স্বার্থ সিদ্ধির উদ্দে
শে এই অলৌক সম্বাদে ব্যস্ত হইয়াছেন, তাঁহার
বৎস দিবার কারণ এই, তিনি এই উপা
য়ে যদি ব্রিটিশ গবর্ণমেণ্টের সাহায্য পান,
তাহা অন্যরাস লঙ্ঘ্য হইবে । কিন্তু হুল অ
বশন করিয়া এ পর্যন্ত কেহ কৃতকাব্য
হইতে পারেন নাই ।

মধ্যে আশাব হুনা গেল, সুলতান জা
নের সজ্জিত দোস্ত মহম্মদের সজ্জা হইয়াছে
কিন্তু এখন সুন্দর যাইতেছে, তাহাও অলৌ
ক । এক্ষণে এটা উঠিবার একটি কারণ
আছে । সুলতান জান দোস্ত মহম্মদের
জামাকা । অতএব শীঘ্র সজ্জা হওয়া । আস
জামাকা নচে, গাছা হইক, এক্ষণে হুনা
যাইতেছে দোস্ত মহম্মদ সৈন্যনা অগ্রসর
হইতেছেন । ইংরাজেরা দোস্ত মহম্মদের
সাহায্য করিবেন কি না এখনও স্থির হয়
নাই ।

—০—

নীলপ্রধান প্রদেশ হইতে প্রাপ্ত ।

সংসদগণের যুক্তি । নীলকুঠিখাল
নাহেবেরা কর হজির নালিশকেই প্রজাদিগকে
প্রদত্ত করিবার ক্ষেত্র উপায় দিরা করিয়াছেন ।
সংসদগণের ৬৬শী কালেক্টরেরা অনেকে তাহা
রাজগের সাহায্য করিতেছেন । এটি জিলায়
ভূতগর্য প্রজা দুইটি ইংল্যান্ড জামাকা
হুজিরগা নাহেবেজিগের দুরভিলাষ পূর্ণ হইবার
প্রতিবন্ধক হইয়াছিলেন । এক্ষণে নালিশইন
জামাকা নাহেবে নীলকুঠি প্রজাদিগের কর
সংসদগণের সিংহ দণ্ডিত মোকদমার বিভা নি
স্পত্তি প্রজা কদিসনর নিযুক্ত হইয়া এখানে শু
তাৎপন্ন করিয়াছেন । শুনিলাম এদিকে কুঠিখাল
নাহেবেরা প্রচার করিয়া দিয়াছেন যে দুইস
জামাকা অজিয়ার করাতে আমরা গবর্ণমেণ্টে
লক্ষ্য করিয়া আমাদিগের ধনোন্নত বিভা
রক হইয়া আসিয়াছি । প্রজার প্রথমে সে
কথায় বিশ্বাস করেন নাই । কিন্তু যে সকল প্রজার
ভূমি দখল করিবার স্বচ্ছ নাই তাহাদিগের
প্রতি কুঠিখাল নাহেবে হেজাজদার যে নিরি

এচলিত প্রথা, ব্যবহার অথবা সংস্কারের
 বিরোধী হইরা কোন কথা বলিতে গেলে অ-
 গ্রেই "মুখ দুঃসাহস, নির্লজ্জ প্রকৃতি উগা
 বি লইতে প্রস্তুত হইতে হয়। যিনি কোন বি-
 নয়ের উৎকর্ষ সাধন করিতেছেন, তাঁহারই
 এই ভাগ্য হইয়াছে গালিলিগ, লুচর নক্ষ-
 ত্রামিসোহন রায় প্রকৃতি উদার দৃষ্টিতে বুল
 আবার অবলম্বন। ১৩ বৈশাখের সে মত
 যে আমি হা। জ্যোতী নক্ষত্রের প্রাণিত
 নক্ষত্রের কোন কোন প্রাণিত
 উচ্চ ও নিম্নতমের কার্যের বিষয়ে

প্রিয় বাক্য করি, তাহাতে প্রত্যেকের এক
পত্র প্রেরণ করা। উপর অতিশয় বিরক্ত
হইয়া আমাকে 'প্রবোধ প্রত্যাকর' হিত
প্রত্যাকর' ও প্রত্যাকরের পুরাতন কাইল
কাটি করিতে করিয়াছেন। তর্ক বিনা কোন
বিষয়ের সিদ্ধান্ত করনা, অন্তঃস্ব আখ্যায় প্র
ভাব যে সর্বসাধারণের এক ব্যক্তিরও নিকটে
খণ্ডনীয় বোধ হইয়াছে ইহা আমার আশ্চর্য
সেরা বিবরণ বলিতে হইবে।

প্রত্যেক প্রথমতঃ লিখিয়াছেন আমি
হিন্দুধর্ম বাবুর লিখিত উৎকর্ষ কবিতাদি পাঠ
নাই। ঐ সময় গুণের বিরচিত কবিতার
রস, রস, তাৎপর্য, উপদেশ, ও স্বভাবের স্ব
বর্ণন যে প্রকার সুসঙ্গিত অথচ সরল ভা
ষা প্রকাশ হইয়াছে, তাহার কবিতা শক্তি ত
পূর্ণ রূপে আরোহণ করিয়া উৎকর্ষনে যে প্র
কার সমর্থ হইয়াছে, তিনি কবিতা কৃত্তমে যে
প্রকার নব সৌন্দর্য ও প্রেমবাৎসল্য প্রভৃতি
কবিতার উপযোগী অতি উপদেশ নব নব
রূপে প্রকাশ করিয়াছেন, আমি স হস পুঙ্ক
লিতে পারি গুণাকর ভারতচন্দ্র দ্বারের লি
খিত বিদ্যানুশাসনে সেই রূপ পরম রমণীয় র
স বর্ণিত হয় নাই। ঐ সময় গুণের সরসার র
সিকতা আমি পাঠ করিনাই সত্য, কিন্তু যে হি
সে প্রত্যাকর ও প্রবোধ প্রত্যাকর আনালিগের
প্রবোধ প্রত্যাকর মধ্যে সর্বোৎকর্ষ, এবং বাহা
প্রবোধের আশা রস বিনিতা সকলেই আ
মর পূর্বক পাঠ করিয়াছেন তাহা আমি আ
ন্যোপাস্ত পাঠ করিবাছি। এত পুস্তক দুই সা
নিতে ঐ সময় গুণের উদ্ভাবনী শক্তির কিছু মাত্র
পরিচয় পাও। যাইতেছে না। তিনি অনেক
ভাব চুরি করিয়া কুংপি লস বানাক
রাছেন এই মাত্র। সত্য কথা বলিতে 'এত
পুস্তক দুই খানি মুদ্রিত না করাট ভাঙ্গা চির
পত্র প্রেরণ ঐ সময় গুণের ভাব রস স্বভাব
বর্ণনার প্রকাশ করিয়াছেন। পাঠক-ও দেখুন
কি লিখিত কয়েক পঙ্ক্তিতে বস্তু ভাব রস
স্বভাব বর্ণনা, আছে :-

গোপীগণে বাস করে, গোপীনাথ নাম ধরে
গুণগণা গোপ এক জন

কারো সহ নাহি বস, নাহি জানে ভাল মন্দ
সমানম্য পূর্ণ ভার মন ॥

বিচারিণী তারা তার, কাণা কানি সমাচর,
ঠোর ঠোরে শোনে দ্বারে দ্বারে।

চোখে নাহি চুই হয়, গুণের গুণের রস,
ত তে নোতে ধরিতে না পারে ॥ ৩

পরে কবি বানী করিয়াছেন গোপ কুটম্বের
বাঁজি বাঁজার চল করিয়া আগনার খাটের
নীচে লুকাইত থাকে (বরিত্ত গোপের খট্টা) ॥
রাত্রি বোধে ত হার ত্রী উপপত্তি সহ মনন
করে, সে তাকা প্রত্যাক করে, তথাপি উক্ত
স্ত্রীলোক হঠাৎ স্বামীকে দেখিতে পাইয়া তা
হার কাপনিক প্রকাশ্য করিতে গোপ তাহা
তে ভুলিয়া গিয়া তাহাকে সতী দ্বিত্ব করিয়া
ইহাতে যেমন স্বভাব বর্ণনা তেমনি কান ও
ভেদনি 'উপদেশ' যে ব্যক্তি 'গুণগণা' ৩
ইল তাহার শ্রুতি পুঁঠতা সত্যবিত হয় ২
পূর্ব ব্যক্তির নিজ স্বীকে উপপত্তি সহ মনন
করিয়া সেই অনন্তীয় বাক্যে বিরোধিত ৩
নাই বা কিরূপে সমস্ত হয় ৬

গুণ উপপত্তি ।

গুণ উপপত্তির প্রতি ।

আর কেন মত হোলে কণবতী তেরে
মর মর ভক্ত গা করে চুই করে ॥
সমস্তেতে এখনিই যাবি দেখে দেবে
দেব দেব দেব তোলে একে করে সেবে ॥
যরণ নিকটে তোর রহিয়াছে যেবে
পড়িবি কালের হাতে পালাতে না পেরে ॥
পায়ে ধোরে এই নারী আমারেই বেলে ॥
বিষয় বিস্তার যত চুই গিয়ে সেবে ॥
কেন বস কথা কোম আঁখি তেরে তেরে
পাঠাইল মমালয় এক চুই সেবে ॥

কোন মতে কুলানার নিতে চাস এরে
মত মত ৩ ভাগা বেলে চুই করে ॥
উপপত্তি 'চুইবেতে মত দেখ কালানুখো কাল
বচন 'ব্রিস' কেন দিকে কাল পাশ ॥
'কাল' 'কাল' 'এ নারী কষ্ট মাল ॥
চুই 'আদি' পতি হ'ব এডো পেরি কাল ॥
'কাল' 'কাল' 'কাল' 'কাল' 'কাল' 'কাল'
'কাল' 'কাল' 'কাল' 'কাল' 'কাল' 'কাল' ॥

চুই নিবি প্রিয়তমা, একপলী বানী ॥
নেতবে কেমনে নিবি আর দেখি শালী ॥

গুণ উপপত্তির যুগ ও গুণ বিস্তার
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥

গুণ উপপত্তির বানী বিষয়ে ঐ সময় গুণের
কবিতা শক্তি অপ্রতিহত ছিল না। উপপত্তি
রসিকতা ও আনন্দময় প্রকাশ তাহা সব
লেশ কমতা ছিল। মাসমান সাধনের প্রতি
বিজ্ঞপ করিয়া তিনি যে প্রকার রচনা করিয়া
ছিলেন, আমি অন্যতমের তদুপ রচনা মর্শ
ন করিনাই। কেবল উপপত্তি রসিকতা প্রকাশ
করিতে পারিলেই কিছু কেহ মহাকবি বলিয়া
পরিগণিত হইতে পারেন না। বাহার বর্ণনা
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥
কালানুখো প্রকাশ কালানুখো স্বামী ॥

(১) ব্যক্তিগত ব্যক্তিগত যে সকল ব্যক্তির চরিত্র
বর্ণনা প্রকাশ করেন তাহারা সকলকে 'গুণ'।
'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ'
'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ'
'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ'
'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ'
'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ' 'গুণ'

কাল ব্যাপিরা, ডিবি দাস, প্রভৃতি লোক, যিনি
যাহেন কিছু তাঁহার প্রীতি কোন কাব্যাবি
লোকের বন বখাওঁ হুগে আকর্ষণ করিতে পা
রে? করানী প্রিয়তম কালে "দারসেনি",
হিম ক মানক গীতের স্যায় তিনি কি কোন
কাব্য রচনা করিয়াছেন? পত্র প্রেরক বলেন
তিনি বীলের বিধে গীত রচনা করিয়া গিয়া-
ছেন, যদি তিনি বখাওঁ করি হইবেন, তাহা হ-
ইলে সেই গীত কবকের প্রিয়তম হইয়া উৎস-
াহিত হইত। আমি নিশ্চয় করিয়া বলিতে পা-
রি তাঁহার গীত কবকদিগের শত ভাগের
৯৯ ভাগ ভাগ শুনে নাই।

পত্র প্রেরক ঈশ্বর গুপ্তের মহাশয়বিরোধী
চিনার তুরিতর প্রকাশ্য করিয়াছেন। তাহি-
রে আমার পুনরায় বক্তব্য এই, হয় তিনি বি-
বাহ অথবা পতিত হইয়াছেন, নতুবা তিনি সা-
ধারণের চক্ষে খুলি নিকপ ৩৮টার আছেন
যে ব্যক্তি তাহাবোধিনীর মধ্যস্থিত হোত্র পাঠ
করিয়াছেন তাঁহার কি "হেন ব! তুমি ঈশ্বর
ও শু আমিও ঈশ্বর ও শু" প্রভৃতি প্রকাশ হ-
ইল কাব্য পাঠ করিয়া বিরক্তি অশেষ নাই

বিবিধ সংবাদ ।

১৪ই ইজাৎ সোমবার ।

কিনিক সম্পাদক অনুরোধে করণে জন
সাহেব রাজকাব্য বিশেষের উপলক্ষে পুরস্কা
দেশে গমন অন্য যাত্রা করিয়াছেন।

উক্ত সম্পাদক বলেন সখলপুরে রাস্তা
নির্মাণের উদ্যোগ হইতেছে। ইহাতে গবর্ণ-
মেন্টের অনেক ব্যয় হইবে। কটকের সর্বদানে
উক্ত পথ নাই বলিয়া বড় কর্তৃ হইয়া থাকে, সে
কর্তৃ এইবার দূর হইবে। এইরূপ অন্য অন্য
স্থানেরও কর্তৃ দূর করিলে ভাল হয় না।

গোয়ালপুরের মহারাজ আগরায় গমন
করিয়া মহাসমারোহপূর্বক সেইস্থানের লোক-
দিগকে এক ভোজ দিয়াছেন। উক্ত ভোজ কোন
বিদ্যালয়ে ৬ টাকা দিলে অধিক উপকার
দখিত।

আলাহাবাদে উক্তরপক্ষিকালের রাজ-
ধানী হইবে বলিয়া যে জনরব হয়, তাহা
সত্য বলিয়া বোধ হইতেছে।

ইতিহাসবিদ সম্পাদক করেন সর বর্ডা-

ই প্রথম ন্যায়ের পীড়িত হইয়া রাজ্যকে
পুনঃ করিয়াছেন। তিনি সীত হুইয়া আ-
হু। বাজারিগকে গানি জিয়ার লোক কই?

আলাহাবাদে সেক্ট সম্পাদক করেন, গত
সপ্তাহে এত বড় হইয়াছে যে পলাও বন্যার
জল দুইহাত রুজি হইয়াছিল।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন আলাহাবাদে
একজন বনিক খসাত্য বলিয়া পরিচয় দিয়া
১০০০ টাকা খণ করিয়া পলায়ন করিয়া-
ছে। নগরে মধ্যে মধ্যে এইরূপ অনেক খনী
দেখা দিয়া থাকে, তাহাপি লোকের চৈতন্য
হয় না।

আটত গোয়েট সম্পাদক করেন তথ্য
সোমবার রজনীবোধে অগ্নি লাগিয়া গোমতী
মহীতীর সমস্ত খজুরা বন তদ্বাধেণ হই-
য়াছে।

উক্ত পত্রের আলমোড়ার সংবাদদাতা ক-
হেন তথ্য প্রত্যয় বড় ও বড় হইতেছে, তা-
হাতে শস্যের কতি হইবার বিলম্ব সভ্যনা।
কোনস্থানে হেউতেই কোনস্থানে কিছুই নাই।

উক্ত সম্পাদক বলেন সীতপুরে তদানক
কত বড় হইয়া গিয়াছে। তাহাণ ব্যাপার কেহ
কখন দেখেন নাই, প্রায় ৩ কিম্বা ৪ সের
ওজনে শিল পড়িয়াছে এবং তদ্বারা বহু
সংখ্য জীবহত্যা হইয়াছে। এতবড় শিল-
ভাক্তর দুইই সাহেব এহিছিলেন রাজ্যকে
একবার হুজির সমস্ত সংসা পড়িয়াছিল।

১৫ই ইজাৎ মঙ্গলবার

বারাসত এত দিন এক ক্রম জমা ছিল।
সেখানে এক মাজিষ্ট্রেট ও ১ জন ডেপুটি
মাজিষ্ট্রেট থাকিতেন, তন্নির দুগোকে কাছা-
রি আছে এবং বন্দীগণের থাকিবার এক মে-
লখানা আছে। একগে সে সকল গিয়া সান-
ন্য এক বিভাগ হইল। একটি ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট
মাত্র থাকিবেন। বাবু অতদূরত্ব বলিক সেই
কর্মে নিযুক্ত হইয়াছেন। বারাসতের, ডেপুটি
মাজিষ্ট্রেটের অধীনে থাকা এই প্রথম হইল।

কিনিক সম্পাদক করেন এক জন সম্পা-
দক লিখিয়াছেন, বিদ্যা শিক্ষা নিষিদ্ধ এদেশে
গবর্ণমেন্টে বিদ্যালয়ে সাহায্য দান ও কেন্দ্রীয়
শিক্ষকের বেতন হ্রাস না করিয়া যদি পুস্ত-
কাল ও ইন্সপেক্টরের সংস্থা স্থিতি করেন,

তাহা হইলে উত্তম হয়।

কক যদি পরিহাস না করিয়া থাকেন, তাহা
বলি সকল বিদ্যালয় উঠাইয়া শিক্ষা, কল্যাণ
কেন কিছু হুজির নিরম করিয়া দিলে সারি
ভাল হয়।

উক্ত সম্পাদক করেন সপ্তাহি ইংলণ্ডে যে
এগজিভিসন (মেনা) হইয়া গিয়াছে তা-
হাতে কেবল দুইতনের ও এসিয়ারাজ
পুত্রেরা আগিয়াছিলেন, অন্য রাজ পুত্রেরা
আইসেন নাই। বিশেষতঃ করাসির সম্রাটের
আসিবার কথা অবধারণ ছিল, তিনিও আ-
ইসেন নাই। কিনিক সম্পাদক অস্বাভাবিক কর-
ন, রোমে যে করাসি এসিয়া আছে তাহা
গকে উদ্রিয়া আনা হয় নাই, এই কাব্যটি করা-
দি সম্রাট দুই নেপোলিয়নের বিরুদ্ধ কর্তৃ
হইতেছে, লর্ড পামার্টন এইরূপ বক্তব্য
করাতেই করাসি সম্রাট বিরক্ত হইয়া আই-
সেন নাই।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন লেং সাহেবের
সহিত সরু চারলস উত্তের সভ্য নাই। লেং সা-
হেব বক্তব্যাকালে তাহিছিলেন এ দেশ হইতে
ইংলণ্ডে এসেনোর যে ব্যর দেওয়া হইতেছে,
তাহা অন্যায়, টেট সেক্রেটারির এই কথা
মনোমত হয় নাই। বোধ হয় লেং সাহেবকে
এখানে পুনরায় আগিতে হিবেক না। যদি
সত্য হয় এ অংশে লেং সাহেবের গো-
ষ নাই, টেট সেক্রেটারিরই অন্যায়।

ইংলিসমান সম্পাদক করেন শব্দরাজ
দোষে নামে এক ব্যক্তি কোচবেহারের রাজার
নিকট গিয়া নানা সাহেবের কনিষ্ঠ জাতা ব-
লিয়া পরিচয় দেন। রাজা তাহাকে ধৃত করি-
য়া ব্রিটিশ কর্মচারির হস্তে নিকপ করেন,
কিন্তু সে ব্যক্তি তাহা স্বীকার করে নাই, সে
কহে যে রাজা রোষ পরবশ হইয়া এতদূর
কর্ম করিয়াছেন। কর্মচারিরা তাহাকে পুন-
রায় রাজার নিকট প্রেরণ করিয়াছেন। তবে
কি রাজা গবর্ণমেন্টের প্রস্তাবসম্মত অন্য এই
রূপ করিয়াছেন?

দ্বিতীগোয়েট সম্পাদক করেন জোহান
পুরে সবসেসনিং নামে এক ব্যক্তি বিবাহ
কাল অবধি এক অরুণ্য বাস করে, তাহার
অধীনে অনেক লোক আছে বলিয়া তাহাকে

ধৃত করিতে পারে নাই । সম্পাদকগণ
গণের ১৫ জন পুস্তক টেনে লইয়া ধৃত
হইতে গিয়া তদন্ত আখ্যাত পাঠ্যগ্রন্থ
হার জীবন সংগ্রহ । প্রসিদ্ধ সকল সময়ে
প্রকাশিত হয় না ।

১৬ ট্যাক্স বুথবার ।

কিনিক সম্পাদক কছেন রসরাজ সম্পা-
দক আপন পত্রে এক ব্যক্তির লিখিত
ছিলেন বলিয়া তখন কোজাগি আইন বতে
ধৃত হইয়া জেলে অবস্থিতি কবিতেছেন, আ-
গামি সেসময় তাঁহার বিচার হইবে । সম্পাদ-
ককে আনরা পুর্বেই সাবধান করিয়াছিলেন,
তাহার দুর্বৃত্তি ।

বোম্বাই সাইটে রিভিউ সম্পাদক বলেন
জেনারেলের গবর্নমেন্টের প্রতিনিধি দান-
ব্যবসায়ের প্রতিবন্ধকতাচরণ করিয়াছেন ব-
লিয়া আরবেরা তাহার জীবন নাশের চেষ্টা
কবিতেছেন, কিন্তু গবর্নমেন্ট তুলতানকে ক-
হিয়া পাঠাইয়াছেন যদি কোন অত্যাচার হয়,
তাহাকে অবিলম্বে রাজ্য পরিত্যাগ করিতে
হইবে । তুলতান ! মনুষ্য ব্যবসায় করিয়া লাভ
করিবার কাল আর নাই ।

কিনিকের অঙ্গার স'বাদদাতা কছেন ত-
হার ওলাউঠার অতিশয় প্রাচুর্য হইয়াছে ।
সম্প্রতি একটা বড় হইয়া গিয়াছে । ২ টাক
খরচের মিল এক পড়িয়া ছিল যে ছুনি দেখা
বাব নাই ।

উক্ত সম্পাদক যিনিগছেন অখ্যাত
অগ্নি লাগিয়া ৫-৬ বাগী ভস্ম হইয়াছে ।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন এক ব্যক্তি
এক জনের মস্তক ছেদন করিয়া বাগীতে অ-
র্পণ করিয়া ছিল, সে ধৃত হইয়াছে, কিন্তু বা-
জালি জুরিয়া তাহাকে নিদোষ বলিয়া মুক্তি
দিয়াছেন, একি সম্ভব ?

জেকান হেরাল্ড সম্পাদক কছেন, চিত্র
নামে এক গ্রামে অগ্নি লাগিয়া ৭০০ বাগী ভস্ম
হইয়া গিয়াছে ।

মাস্তাজ এডিনিব্র সম্পাদক কছেন মসী-
খুসর রাজার অতিশয় পীড়া হইয়াছে, তা-

হার পুত্র নাই, ব'র উত্তরাধিকারি নিযুক্ত না
করেন, তাহার রাজ্য গবর্নমেন্টের হস্তে পতি-
ত হইবে । সে সিদ্ধান্ত স্থির আছে ।

বোম্বাই সাইটে রিভিউ সম্পাদক বলেন
এদেশের লোকেরা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যয়ন
শেষ করিয়া গবর্নমেন্টের অধীনে কর্মের চেষ্টা
না করিয়া আপন আপন চেষ্টায় অর্থ উপা-
র্জন করেন । বাণিজ্য ও অন্যান্য অনেক
উপায় আছে । সংগঠন সন্দেহ নাই ।

হরকরা সম্পাদক অবগত হইয়াছেন জুন
মাসের শেষে রেইলওয়ে আলিগড় পর্যন্ত চ-
লিবে এবং ডিসেম্বরে দিল্লী পর্যন্ত যাইবে ।

বাকালি পত্র সম্পাদক কছেন বারু রনা
প্রদাস রায় উক্ততর আদালতের এক জন
জজ হইবেন এবং বারু শত্নাথ পণ্ডিত তা-
হার কর্ম প্রাপ্ত হইবেন ।

হরকরা সম্পাদক বলেন সাণ্ডনান সাহেব
মাসিক ৪০০ টাকা বেতনে অডিটর জেনারেল
লের কর্ম প্রাপ্ত হইয়াছেন ।

বাকালি পত্র সম্পাদক অনিরাছেন সম-
রের মজেরা মুসলমানের বেতন বৃদ্ধির জন্য
গবর্নমেন্টে লিখিয়াছেন ; অতি উচিত কর্ম
হইয়াছে ।

বারু রমাপ্রসাদ রায়ের অধিষ্ঠায় শত
পীড়া হইয়াছে । আজিও তথ্য হইতে পা-
রেন নাই ।

অঙ্গাদিন হইল কুটীগোদানিবাসী ক্রিয়াক-
লগবজু কটাকাধীরে অর্ডারগবর্নমেন্টের এক
টা পুত্র স্বর্গপুরের পূর্ব নবগ্রামে শিখালয়ে
গমন করিয়াছিল । ঐ বালক সহরণ জানিত
না, স্থান করিতে গিয়া পুষ্করীতে জলমগ্ন
হইয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে ।

১৭ ট্যাক্স বুথবার ।

ইংলিসমান সম্পাদক অনিরাছেন, বাবা-
কপূরের সেনা দলের প্রতি সশস্ত্র থাকিবার
সাজা হইয়াছে । আকগানের যুদ্ধে বাউবার
জন্য ত = =

দিল্লী গোষ্ঠে সম্পাদক কছেন আমায়ের
মন্ত্রণালয় আনন্দ্যক বিশ্বাস করিয়া এ দেশী-
রাজিগের হস্তে মনোহার ও অন্ত পত্র প্রভৃতি
রাখা উচিত বহে, ১৮৫৭-৫৮ অব্যের কথা

এখন কেহ বিশ্বাস কর নাই, অস্ত্র না লইয়া
একাকী গমন করা যুক্তিসিদ্ধ নহে এবং দে-
শীয় সশস্ত্র পত্রে প্রতি দৃষ্টি রাখা কর্তব্য ।
এই সকল মহাপুরুষেরাই বিদ্রোহ ঘটাইবার
কারণ ।

আউত গেজেট সম্পাদক কছেন তথ্য
১৪ দিনের মধ্যে ১৪টা ব্যক্তি মারা হইয়াছে ।

লাকা রিভিউ এক জন পত্র প্রেরক কছে
ন, তথ্য এবং জন আসনের এই বলিয়া রি-
পোর্ট করিয়াছেন অল্প সময় বলিয়া এই ব্যক্তি
টাক্স আদায় হইল নচেৎ অধিক চেষ্টা আ-
সেনবটির হাইন বিলম্বণ অধিকার আছে ।

বাকালি সম্পাদক কছেন বিদ্যায় যত উন্ন-
তি হইতেছে ততই মনুষ্য জাতীর জ্ঞান তত
তদ উপায় উদ্ভাবিত হইতেছে । কেহবা মন্ত-
কের গুলি অধিক দূর বাইবার উপায় করি-
তেছেন, কেহ কামান দ্বারা বত সংখ্য লোক
মারিবার চেষ্টা কবিতেছেন, কেহ বাকালি দ্বারা
একবারে সমস্ত গেনা মল ধ্বংস কবিবার
চেষ্টা করিতেছেন, যে উপায়ে হউন, যীব-
নাম হইলেই হইল, অর্থ ধ্বংস হইলে পুনরায়
গ ওয়া যায় । কিন্তু মনুষ্যের জীবন সেরূপ
নহে । উক্ত নোংরা অবস্থায় প্রাণিবন সত্য
ভার বিকল নহে ।

১৮ ট্যাক্স বুথবার ।

সমাচার চিন্তাকামী সম্পাদক করাচি এক
পত্রে লগন করিয়াছেন যে এক জন সিপাহি
আপন সহধর্মিণী ও ঐ দ্বীর সন্তানদ্বয়কে হত
করিয়াছে । তাহাকে ধৃত করা হইয়াছিল, কিন্তু
তরবারি দ্বারা সে আপন জীবন শেষ করিয়া
দণ্ডে হস্ত হইতে মুক্ত হইয়াছে ।

সমাচার পত্রে ছোট আদালতের মোক-
দমার রহস্য লিখিত হয় বলিয়া অনেকে
অসন্তোষ প্রকাশ করিতেছেন । ঐ লোকের
নামের যে লেখক ঐ পত্র লিখিত হইলে তত
দিনকে অধীনে রাখা তার হইল, উঠে
কিনিন সম্পাদক আপন রিপোর্টারকে উক্ত
আদালতে ব'ইতে নিষেধ করিয়াছেন । বাল-
কেরা প্রকল্প করিয়া ধরা পড়িবার সময় যেম-
নো দুর্ভাগ্য করিয়া থাকে, এ উপায়টি সে-
কল হইবে ।

হরকরা সম্পাদক বলেন, সর সত্যীচরণ-
সংস সাহেব গত ১৬ই মে জাজাজ হইতে
পালিতে যাত্রা করিয়াছেন। কেবল এ দেশের
লোক বলিয়া নয়, এ দেশের জন বাহুও তাঁ-
হার সহ হইল না।

ইংলিসমান সম্পাদক গিরিয়া হইতে সং-
বাদ পাইয়াছেন, ইংলণ্ডের লেফট পুর্ন
প্রতি গঠিত জীবন রক্ষা করিয়াছেন। তিনি
এক দল আরবের হস্তে পড়ত হইরাছিলেন,
যে অধিক লোক ছিল না। আরবেরা তাঁহা
দিগের দ্বারা সাহায্য চাই করিবার উপক্রম
করিলে এক ব্যক্তি কহিল ইংলণ্ডের লেফট
পুর্ন তাহাদের সবত্যাগারে আছেন, ইহা
কহিয়া আরবেরা পলায়ন করিল।

বঙ্গদেশীয় লেফটেনেন্ট গবর্নর অন্য মাত
বা রেলওয়ের পিটালির পুল দেখিতে গিয়া-
ছিলেন। আরো অনেক ভ্রম লোক তাহার
সঙ্গে ছিলেন।

জিরাঙ্গুরে একটি মৃত্যু হত্যা হইয়াছে।
এ ব্যক্তি গমতার কর্ম করিত, প্রত্যহ টাকা
পটয়া বাইত, কিন্তু মৃত্যুর দিন তাহার নিক-
টে টাকা ছিল না। জুরাঙ্গুরা টাকা আছে
মনে করিয়াই তাহাকে বধ করিয়াছে। এখন
একপ পুলিশ আছে, কেহ কাহাকে হত্যা
করিলে মনে করিলে হত্যাকালে তাহার নিবা-
রণ সম্ভাবনা নাই।

১৯ই জুলাই শনিবার।

হরকরা সম্পাদক ১৯ই এপ্রেল পর্যন্তের
নিম্ন লিখিত আবেদিকার সম্বাদ পাইয়াছেন।
শিউসবর্গে একটি বৃদ্ধ হইবার সভাবনা
হইছে। করালি দেশীয় বে কার্যকার কঠিনমণ্ডে
গমন করিয়াছেন। তাঁহার রাজকীয় কাপার
ঘটিত কোন টেকশ্য আছে, তাহা দ্বারা মাঝ
ফল মন্য প্রকার অনুমান করিতেছেন। সে-
নাগতি বরগার্ডের জাল চিঠি ধরা পড়িয়া
ছে। মাজেউমেই প্রকৃত আর ব্যর হিসাব
বজেট) পার্লিমেণ্ট সভার অনুমোদিত হই-
য়াছে। ১৯ই বের পার্লিমেণ্ট সভার এই, আবে-
দিকার যে বিবাদ উপস্থিত হইয়াছে, কাল
ও ইংলণ্ড উক্তর রাজ্য বল পূর্নক তাহার
প্রতি করিয়া দিবেন এবং হকিমগঞ্জের খা-

লিমেণ্ট কর্তৃক করিয়া বসিয়া যে অনুব-
হর, তাহাতে সকলে প্রত্যাহ করিতেছেন।
লার্ড পার্লিমেণ্ট পার্লিমেণ্ট সভার এই প্রকার
অভিযোগ প্রকাশ করিয়াছেন।

চীনদেশ হইতে সম্ভার আসিয়াছে,
ইংল্যান্ড ও ক্রাশি সেবারা সম্ভারের সেনার
সহিত মিলিত হইয়া বিদ্রোহীদিগের হস্ত
হইতে একটি নগর ও ১৬০০০ ডলার মূল্যের
দ্রব্য সামগ্রী হস্তগত করিয়াছেন।

৩রা মে পর্যন্তের ইউরোপীয়

সম্ভার।

১লা মে ইংলণ্ডে একজীবন (মেল)
আনত হইয়াছে।

হুইচমের ও রুমিয়ার রাজারা অসংখ্য আশি-
না সাহায্য করিতেছেন, আর ৩৫০০ লোক তা-
হার উপস্থিত হইরাছিলেন।

সেনাপতি সেরিয়েব সেনার ইরকসহ-
রেব নিকটে আছে।

গবর্নমেন্টের বৃদ্ধ জাহাজ ইরকসহরে অ-
নেক জৌপ করিয়াছিল, কিন্তু কোন অপকার
করিতে পারে নাই।

পলাতক গবর্নমেন্ট সেনারিগের হস্তগত
হইয়াছে।

পশ্চিম বঙ্গে সেনাপতি বরগার্ড এখন
পর্যাপ্ত করিছ অধিকার করিয়া আছেন।

গবর্নমেন্ট সেনারা নিউ অব লিঙ্গ জাক-
বগারিদিগকে আক্রমণ করিতেছে।

করালিদের ওয়াসিটনের হুও বিশেষ
কার্যক্রমে রিচমণ্ডে গমন করিয়াছেন।

সেনাপতি লিঙ্গলন কলিয়ার দাসদিগকে
হস্ত করিবার পক্ষে আকর করিয়াছেন।

সেনাপতি গরওন রোম পরিত্যাগ করিয়া
অবিলম্বে করালি দেশে প্রত্যাপন করিবেন
হিব হইয়াছে।

বিক্রম ইমারুলকে অতি সমারোহে সেপ-
লুসে আশ্রয় করা হইয়াছে।

লার্ড কামিং, ডিউক অব নরফল্ক, আরল
রনেল, লার্ড লাক্টনবারি ও লার্ড ক্রিট্জ উই-
লিয়মকে গারটীর সম্মান প্রদত্ত হইবে।

লার্ড কামিং ১৬ই এপ্রেল ফোভারে উপস্থিত
হইয়াছেন। লাপানোর মুক্তক ৩০ই এপ্রেল

ফোভারে আসিয়াছেন এবং এখানে বিশেষ
দ্রষ্ট ছিলেন, আরল রনেলের সহিত ইংল্যান্ড
লাক ২ হইয়াছে।

লাকানারের মুখাবিধকে সাহায্য করি-
বার জন্য টাঙ্গ হইতেছে। বেকাল ক্রিট্জিয়ার-
রের ২ সংখ্য ইউরোপীয় সৈন্যসংগত টাঙ্গ
কেতল এডওয়ার্ড থাকর সাহেবেরা বিকটো-
বিয়া ক্রম পাইবেন।

মে কাবনে ইউরোপীয় ও এদেশীয় সৈন্য এক-
কর করা হইয়াছে, সর চারলস উড সেই কারণ
কবল হুইচমের পিটার করিয়াছেন।

রুমিয়ার গবর্নমেন্ট হুডন ও প্রবণের মে
চেটা করেন, তাহা নিশ্চয় হইয়াছে।

মেকো গবর্নমেন্ট করালিদিগের উপরে
আগ্রহ অভ্যাস করিয়াছেন, জলদয় জেট
হইতে মেকিকোতে সৈন্য ও হুকোপযোগি
সামগ্রী প্রেরিত হইবে।

গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বাংলাদেশীয় লেফটেনেন্ট গবর্নরের

আদেশাবলীসারী নিয়োগ।

১৯ই মে—বাহু পূর্ণচন্দ্র রায় ১৮৬৩ সালের
৩২ আইন অনুসারে কিছুকালের জন্য পাবনা
ও সরমসিংহে আসেন ও ডেপুটি কালেক্টর
হইবেন।

সদীপের হুনসেক বাহু মহেন্দ্র রায় নর-
রাখালিতে দ্বিতীয় জেডির, অধীন বাজিট্টে-
টের কমতা প্রাপ্ত হইবেন।

২১ই মে—সদীপের আসেন ও ডেপুটি
কালেক্টর বাহু আরকানাম দে পকম জেডির
ছিলেন, চতুর্থ জেডির হইয়াছেন।

নিম্ন লিখিত এডিমিথি ডেপুটি বাজিট্টে
ও ডেপুটি কালেক্টরেরা ডেপুটি বাজিট্টে ও
ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

পূর্ণিয়ার বাহু উমারচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়।

কবিদপুরের বাহু দীনবন্ধু বৌলিক।

রঙ্গপুরে মে, টেমর সাহেব।

২১ই মে—মে লেফটেনেন্ট, আর, লিঙ্গ সাহে
ব ছোট নাকপুরে সরকারী কমিসনর হইবেন।

২২ই মে—মে মেডিক ডাক্তর সেখ নর কোটীচ-
পুরের দাতব্য ঔষধালয়ের ভার প্রাপ্ত হইবেন।

২৭ই মে—মে কটকের এডিমিথি সিবিল ও

কিছু দিন হইল কোন এক কৌজলারি মোক-
দমার সাক্ষ্য দিবার জন্য তাঁতিবন্ধ নিবাসী
ঐতুক বাহু বিজয়গোথিন্স চৌধুরী মহাশয়,
এই পাণ্ডুর চতুর্গুটি মালিক্টেট ঐতুকবাহু পূর্ণ
চন্দ্র হুগোপাধ্যায় মহাশয়ের কাছারিতে উপ-
স্থিত হইলে তিনি বিসাগবাধে চৌধুরী মহা-
শয়কে গালি দেন। মন্দাক মহাশয়! মান বড়
ধন, তাহার কিছুকাল পরেই চৌধুরী মহাশয়
তৎস্বাস্থ্য বিশেষ করিয়া সন্বে জানাইতে,
এখানকার মালিক্টেটের প্রতি তাহার
অসন্তোষ জানিবার আশা হইরাছে। তিনি-
লাল ধোলালিয়ার কমিস্যনর সাহেবর নাকি
তদন্ত করিয়া এই বিষয়ের ন্যায় বিচার করিবেন।
কাকে যেমন দেখি তাহা আপনাকে জানাইতে

নয় করিব। সম্পাদক মহাশয়! বাফালির আঁখ
উপার নাই, মদরেও গালি, মকসুসেও গালি,
বিবেচনা ছিল অদেশীয় বিচারক হইলে কুন্নি
গালি খাওয়া বাঁচা নাইবে। কিন্তু তা কোথায়
এখন দেখিতেছি, বেগম ম., তেমন কি, তার
বাড়ী তার সাক্ষীরাই।

অন্তঃসন্ধি পত হইল ডেপুটি ইন্সপেক্টর
কৌশলিন সাহেব খুনজানাকুলে উপস্থিত
হইয়া তৎক্ষণাৎ প্রথম প্রেরণী কএকজন ছাত্রকে
সঙ্গীতকরণ দ্বারা বিলম্ব করান করিয়া গি-
রাছেন। এইত তাই কিরিলীর বাচ্চা কিনা।
তিনিলাম ঐ কুলে একটা অংশে গিয়া ছাত্র আ-
ছে, তাহারি না কি একরূপ প্রায় কবিলে
পাঁচ একায়ে তাহার উত্তর দিয়া প্রথককে
অবাক করে।

সম্পাদক মহাশয়! এ প্রদেশের নীলকর জিলা-
দেরা একপে বস ভাগ করিয়া ছলে প্রজাদের
সর্বনাশ করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। তাহ
অন্য আবার আসেননি হজাঘাতেও অনেককে
কটে ভোগ করিতে হইতেছে। জনৈক প্রজা ঐ
সকল স্রোশে স্রোশিত হইয়া যে একটি গীত পড়ত
করিয়াছে, তাহা শুনি।

সুর ।

আনি আহিগো ডাবিণী কণী তব পাঁর।

রৈলে কোথা গো কুটন প্রকার জীবন,
সহে সব, বার জীবন,
আগো বারেক আসি ভারতে,
দেখে বা গো দুচক্রেতে,
কি ভগ্নেতে আছে তোর প্রকাণ্ড।
বা ছিল লীলেতে সব নিরেছে,
কেবল পরাণ মাত্র অবশেষ রইছে,
অন্য বিনে শীর্ণ দেহ হইছে,
শোকামলে সরা বসু হইছে,
বাগো কোথা বার বল আঁখ,
কিনে পাইব নিস্তার,
উপায় না দেখে মৃত্যু হুগুন ॥
নিভিতে নিভিতে বিদ্রোহ অংশ,
দিয়ে কর তার পরে কবিয়া তুফানে তল,
বল কিশে বল পাব জননি,
খাস কল্ল হৈছে বার পদনী
ও না করাবে আশোনা মান,
করালে যে বিব পান,
নাহি ভাগ হারালেয় প্রাণ ধন।
কিছু দিন-বার দ্বিগে ঘোষণা,
যলোহিলে আমাদের দুচাইবে যাতনা,
এখন বারেক কবে সুখাও না,
তজি খনং কেন চাও না,
দিয়ে আশা মৈদাম জলে,
তাঁহালে কুসারকুলে,
এখন অকুলে হৈ গো মগন ॥

বিদেশী বলিয়ে কি গো এত ভাব,
এ ছেতু দ্বিগ হৈছে কব না কি সবিভব,
এ কোল আটার বুঝা টেলো ভাব,
এই কি উচ্চিভ ভাবে, বা ভোমাদ,
নাগো বিদেশী ম, বলে বদি,
তারে কি বর্জন বিধি,
কোন বিধি লিখেছে এ তুলিখন।
তারিখ ২৬ এপ্রিল ১২৬৩ খ্রিঃ

জীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাশয়ের।

বিশ্বপুত্রিক নিবেদনমিত।

গত ২৮ বৈশাখের সোমপ্রকাশে "আপা

সতে সকল মকসুস সচিবাক কেন হয় না?"
এই প্রশ্নটি দেখিয়া কিছু লিখিতেছি, অতঃপর
পুত্রিক পত্রখানি সংশোধন করিয়া, সোমপ্রকাশে
স্থান স্থান করিলে দাখিল হইবে।

হাস্তান বুলেজীআদালতটি জীযুক্ত বার
নীলমণি নির মহাশয়ের সমর্যাবধি ভাষণ সুতি
ধারণ করিয়াছে। তিনি নিজে বড় বাছুর, বোধ
হয় কেবল অজ্ঞানতমিগের হিতাধিই তাঁহার
দাক্তরী কথা। তাঁহার সমরে গেরেভাদার সীতা-
নাথ বসু একাধিপত্য ছিল।

অনন্তর অগ্নিদৈবের ভয়া জীযুক্ত বাবু নরেন-
দ্র মলিক মহাশয় তৎপরে প্রতিনিধি থাকিব,
সচিবাব ভাষা যশ বিস্তার করিয়া ছিলেন।

একপে জীযুক্ত বাবু হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়
মহাশয় বুলেজী আসন অধিকার করিয়াছেন।
তিনি উচ্চউপাধি প্রাপ্ত সুশিক্ষিত লোক, ইহঁর
দ্বারা সচিবাব লাভের প্রত্যাশা করিয়াছিলাম
কিন্তু তুর্ভাগ্য বশত ইহঁর কএকটি কার্যে নি-
তান্ত সুবিত্ত হইয়াছি।

আমলাদের উপবিলাভেব কথা আপনকা-
র পাঠকবর্গের অবদিত নাই, কিন্তু এ আদাল-
তে অতিশয় বাড়াবাড়ি হইয়া উঠিয়াছে।

প্রত্যেক আদালতী দাখিলে ১০ আনা প্রত্যেক
এজহারে ১০ আনা প্রত্যেক সাকীর ৩, কিরী সে
খাইতে ৮ আনা প্রত্যেক সমর্যাবধি কবাইতে
১০ আনা এবং প্রত্যেক সাকীর কোষানবন্দীতে
১০ আনা চিহ্নাবে, আদালত বাবুরা উভয় পক্ষে
বই নিকট হইতে লইয়া থাকেন। এমন কি উহা
তাঁহাদের দ্বারা পাওনা চইয়া পড়িয়াছে। ই-
হাব উপর যে পক্ষ যত অধিক দেয় তাহার কাজ
রক্ষণ করিয়া থাকেন।

মহাশয়! ১০ টাকার একটি মকসুস আর
লাকে ১৫ টাকা খুল দিতে হয় একবছর তর কো-
মেব কি আদালতে আসা উচিত? বিচার পতি-

দেব অযোগ্যতা বিদ্যোভট আদালত প্রসঙ্গ চই-
বার প্রদান করণ।

একপকার আদালত কেবল কসরুলি গা-
লার সাকী এবং অশিক্ষিত ও অসচ্চরিত অংশ
লাব অংশ হইয়াছে। গবর্ণমেন্ট আর, কতদিন
গবিনাথ উদাসীন থাকিবেন? আদালতের ভাষ
না চাহে। আর কতদিন থাকিবেন? বিবেচনা-
মাত্র আদালত কালট বা সমালয় স্থান করিতে
হইবে।

বিষয়পূর্বক জানাইতেছি গবর্ণমেন্ট নির
লিখিত দুই বিষয়ে গবিনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় ক
১০।

১। বিচারপতিগণের যেমন আইনের
পালিকা পণ্ডিত, হয়, তেমন যোগ্যতা র ও চর্চা
হের পালিকা পণ্ডিত রীতিপ্রবর্তিত করা উচিত।
যে দেশে যিনি বিশেষ ব্যক্তি লাভ না। তাঁরও
পালিবেন, ন কনাপি বিচারপতি লোকের বাচ্চা
না। ২। অধিক লেখাপড়া জানিয়াও যে অনেক
কেবল চর্চা না। এতে, ইহঁর কুসমুভাষে
খাইতে পাবা যায়।

২। আদালতের আমলাগণের পালি-
কা লইবার রীতি প্রচলিত চইয়া। সুশিক্ষিত ও
সচ্চরিত লোককে অধিক বেতনে নিযুক্ত করা-
হয়। ইহঁদের গবর্ণমেন্টের যে খতি হইবে তৎ
পুরণের উপায় বলিতেছি।

একপে আদালতে ইটাল প্রকৃতি যেক
অবস্থায় আছে, তাহা বিবেচনামত খাড়াইয়া
দিলেই যথেষ্ট দ্বার চইবে। ইহঁতে সাধাণে-
রও ক্ষতি হইবে না।

একপে বিচারপতি মহাশয়গণকে অতঃ-
বোধ করিতেছি তাঁহাদের বিবেচনা করিয়া দেখুন
যে কিকিমিকি বিলাতিবধ পুর্বে এদেশীয়ের
নিরূপ ছববস্থা প্রাপ্ত ছিলেন, এখন যে পক্ষ
মহাশয় প্রদেশে প্রবেশে ঘাইতেছে, সে কেবল
১৫ মাসপত্র; শুণেই চইয়াছে সন্দেহ নাই।
সকল বিচারপতি যদি জীযুক্ত বাবু হেমচন্দ্র
বোধ ও জীযুক্ত বাবু কার্ণার মিত্র প্রকৃতি ন্যায়
সহায়ণ বিচারপতিগণের গুণের অভাববশে যত
নীল চন, বিচার কর্তার দোষে যে অনিষ্ট ঘটিতে
ছে, তাহা নিবারণ হইবে।

সাক্ষীগামী

এই পত্র কলিকাতার দক্ষিণ পূর্ব দিক; যলওয়ে
সোমাপুর উল্লসের দক্ষিণ চাইতিগোড়া প্রদেশে জীযুক্ত
বারকারি বিদ্যাপুরের দ্বিগিতে প্রতি সোমবার
প্রাতে প্রকাশিত হয়।

সোমপ্রকাশ

“এবর্ত্তকঃ প্রকৃতিবিজ্ঞান পার্শ্বিকঃ সঙ্গতী জ্ঞানবহী ন দীপ্ততাঃ”

৪ ভাষা।
৩০ সংখ্যা।

সন ১২৬২। ২৮ চৈত্র। ইং ১৮৬২। ৩ জুন

বাসনিক দ্বারা ১ টাকায়
বার্ষিক অধিন ২০ টাকায়

বিজ্ঞাপন।

প্রাকগণের প্রতি।

ইশান্যমান অতীত হওয়াতে অনেকের
প্রমত্ত সোমপ্রকাশের মূল্য নির্দেশিত হইয়া
ছে। তাহাঙ্গকে বিনয় পূর্বক জানান বাই
তেছে যে তাহারা অন্ত্যাহ পূর্বক বরাদ্দ
আগামি বর্ষের মূল্য পাঠাইয়া দেন। আপা-
ততঃ সংকত বয়েই মূল্য পাঠাইবেন।

বিজ্ঞাপন।

বিববিনোদ আটক।

ঐশ্বর্য্য বিত্ত প্রণীত উক্ত নাটক সংক-
ত যন্তে মুদ্রিত হইয়া বিক্রয়্য প্রস্তুত আছে
এাহকগণ নিম্ন লিখিত ঠিকানায় তত্ত্ব করিলে
গ উত্তে পাবিবেন। মূল্য ১০/ আন. মাত্র

কলিকাতা।

ইনষ্ট্রুমেন্ট, ১৭৩ নং ভবনে সংকৃত পুস্ত-
কালগে পটলডাঙ্গা ৮৬ নং ভবনে গুণ্য ব্রাদার্স
নিগেয পুস্তকালয়, লালবাজার ডি বোয়ার্ডিও
এণ্ড কোম্পানির লাইব্রেরি।

বর্জমান।

রাধানগর ব্রজসত্যার উপাচার্য

ঐশ্বর্য্য ব্রজসত্যার কবিরাজ মহাশয়ের নিকট

সোমপ্রকাশ।

১৮ এ ইত্যক সোমবার।

আসামের চা করণ ও মেজর
হপকিসন।

অত্যন্তকারিগিরির পক্ষে কি অল-
কণে কালই পড়িয়াছে। তাহাঙ্গিরে অ-
ত্যাচারকারিতা ও স্বার্থপরতা আর গোপন
রহিতেছে না। মীলকর ও চা-করেরা

আপোষ্যগিরিকে এ মেজর “ঐরিকারী
বলিয়া পরিচয় দিয়া থাকেন। তাহারা
বলেন, “আমরা বিন পরিপূর্ণ ভূমি পরি-
কৃত করিয়া তন্মধ্যে মীল, চা, প্রকৃতি
বপন করিতেছি, আমাদিগের চেতায়
অনেক দ্রব্য উৎপন্ন হইতেছে, এবং আম-
রা যে সকল দ্রব্য বিদেশে রপ্তানি করি-
তেছি, তাহাতে শুদ্ধ স্বল্প সরকারের
অনেক টাকা লাভ হইতেছে।” কিন্তু আ-
মরা ভারতবর্ষের, বিশেষতঃ কৃষক ও অন্ন
জীব ব্যক্তিদগের অনিষ্ট বিনা ইষ্টলাভ
বেধিতেছি না। ঐরিকারিগিরির হস্তে
পতিত হওয়াতে তাহাঙ্গিকে চিরকাল
কষ্ট ভোগ করিতে হইতেছে। তাহাদি-
গের যে কেবল স্বাধীনতা বিলুপ্ত হইয়াছে
একপক্ষে, তাহারা শরীর সমর্পণ করি-
য়াও উন্নত পূরণপাণ্ডা অর্থ লাভে সমর্থ
হইতেছে না। মীলপ্রধান প্রদেশের প্র-
জাগণের চরুনার বিষয় এর্পন আব অপ্র-
মাণ নাই। চা-প্রধান প্রদেশেও ইহা ক-
মখঃ সমমাণ হইতেছে।

আসামের চা-করেরা পূর্বে প্রত্যেক
মজুরকে প্রতি মাসে ২১০ টাকা করিয়া
বেতন দিতেন; ক্রমশঃ বেতন বৃদ্ধি হইয়া
৪১০ হয়। একগে পরিচয়ের যে প্রকার
মূল্য ও গোঁবব বৃদ্ধি হইয়াছে, তাহাতে
৪১০ টাকা মাসিক বেতন অধিক নয়। এ-
বেতনে এখন মজুর পাওয়া যায় না। অল্প
দিন হইল, আসামের অন্তর্গত দেবদুর্গ
ডের একজিভিউটি ইঞ্জিনিয়ার প্রত্যেক

মজুরকে প্রত্যাহ চারি আনা করিয়া মজুরী
দিতে আরম্ভ করিয়াছেন। সুতরাং তত্ক্ষণ
চা-করেরা আর অল্প বারে মজুর পাই-
তেছেন না, তাহাতে তাহারা সন্তোষিত
হইয়া লক্ষীপুরের মহকমী কমিসনার নে-
জর বিবারের নিকটে এই বলিয়া, আবে-
দন করেন যে একজিভিউটি ইঞ্জিনিয়ার
রের প্রতি এই আবেদন কেওঃঃ হয় যে
চা-করেরা মজুরদিগকে যে হিসাবে বেতন
দিয়া থাকেন, তিনিও সেই হিসাবে বেতন
দেন। পাঠকবর্গের অর্থনৈতিক
পারে, এই মেজর বিবার চা-করদিগের
অনুরোধে পড়িয়া একবার এই অভিপ্রায়ে
গবর্নমেন্টে লিখিয়াছিলেন, আসামের লো-
কেরা মজুরী করে না, চা-করেরা মজুর
পাইতেছেন না, অতএব আসামের কো-
কের প্রতি অধিক কর দানের অনুমতি
হইলে তাহাঙ্গিকে অগত্যা মজুরী করি-
তে হইবে। গবর্নমেন্ট এই কথা শুনিয়া
তাহাকে তর্কসনা করিয়াছিলেন।

মেজর বিবার চা-করদিগের অনুরোধে
যে এবার স্পষ্টাকরে লিখিয়াছেন, মজুর
দিগের বেতন না কমাইলে সত্যতার পথ
প্রদর্শকদিগকে (চা-করদিগকে!) কু-
বদ্ধ করিতে হয়। আসামের কমিসনার
মেজর হপকিসন এই পত্র পাইয়া বঙ্গ-
মীর গবর্নমেন্টকে মেজর বিবারের কথা
অগ্রাহ্য করিবার অনুরোধ করেন। কমি-
সনার স্পষ্ট রূপে সম্মাণ করিয়াছেন।
আসামের চা-করেরা মাসে মজুরদিগকে

১০ টাকা বেতন মিলেও তাহা নিশ্চয়ই
হয় না। তিনি বলেন 'আমাদের দেশের
প্রভাবতঃ আমরা কঠিনে অনিচ্ছা, বিলম্বিতঃ
করী করাকে আমরা কঠিন করে, অল্প
বেতন দিয়া তাহা করিয়া করিয়া
ধাওয়া করিয়া করিয়া ইতি

আমাদের দেশের প্রভাবতঃ আমরা কঠিনে
অনিচ্ছা, বিলম্বিতঃ করী করাকে আমরা
কঠিন করে, অল্প বেতন দিয়া তাহা
করিয়া করিয়া ইতি
গত আমেরিক দেশের মজুরদিগের প্রতি
কর্তব্য করিতেছেন না। মেজর
বলিয়াছেন তিনি বৎসরের মধ্যে
লক্ষীপুরে ২৫ লক্ষ টাকার চাকরি
কাজের বীজের মূল্য বতর আছে। যদি
৫০০০ লোক কর্ম করে, তাহা হইলে প্রত্যেক
মজুর ৬০০ টাকার চাকরি উপাধন করিতে

অন্যায়ের শতকরা ২০
টাকা ব্যয় করা যায়; এবং মজুরেরাও
মাসে ১০ টাকা করিয়া পাইতে পারে।
বহুক্ষেপে যদি ১০ টাকা দেওয়া যায়, তবে
ঐরাজকারীরা মজুরদিগের প্রতিবাস্তবিক
প্রতিদিন চাকরি আনা করিয়া দিতে কাতর
কেন।

মেজর হপকিন্স আপনার প্রশংসনীয়
পত্রের এক স্থানে লিখিয়াছেন "চাকরদের
বলেন, তাহারা দেশের ঐরাজ্য করিতে
ছেন। ঐরাজ্য কাকে বলে? বমপরিপূর্ণ
ভূমি পরিষ্কৃত করিলেই কি দেশের ঐরাজ্য
হইল? যদি দেশের লোকের অর্থ
বৃদ্ধি না হয়, তাহাহইলে ভূমিপতিত বা
কাই প্রেরণ:— বার্তা:— ইহাকে সৌ
ভাগ্য বলেন না। মেজরের এত কয়েকটি
বাক্য স্বর্ণময় অক্ষরপঞ্জিক্ত দ্বারা লিখি
বার যোগ্য। এতদ্বারা কি পাই করে
এই কথা কহা হইতেছে না যে দেশের
ঐরাজ্যকারিতারূপ কক্ষক দ্বারা আরও
হইয়া তাহারা কেবল আপনাদিগের অর্থ
বৃদ্ধি করিতেছেন এইমাত্র। যাহা বা অধিক
বেতন পাইবার বোধ্য, তাহাদিগকে অল্প
বেতন দিয়া বলপূর্বক খাটাইয়া লওয়া কি

অত্যাচার নহে? চাকরদের কাছাকাড়
র মতদমতা এক কিম্বা চাকরদিগের
অত্যাচারের বিষয় যে লিখিয়া আসিতে
হইয়া তাহা কি মিথ্যা? যে সকল সম্পাদক
এই প্রশ্নের উত্তর দিয়াছেন

মেজর হপকিন্স এই আইন বিধিবদ্ধ করা
নিষ্পত্তি বলেন) হইলেও চাকরদিগের
অত্যাচারের সম্ভাবনা নাই। মজুরেরা
কষ্টাতি লইয়া কখনই অত্যাচার সহ
করিবে না।
আমরা চাকরদিগকে পুনর্বার সতর্ক
করিয়া দিতেছি, তাহারা যেন কখন মীল
করদিগের দৃষ্টান্তের অনুসরণ না করেন।
লাও হোলডার্স সত্য তাহাদিগকে ক্র
মশঃ পুথি আনিয়া দল বল বৃদ্ধি করিবার
চেষ্টা আছেন। চাকরদের যেন সাবধান
হন, তাহাদিগের কথার বিশ্বাস না করেন।
তাহারা যদি আর কিছু কাল মীলকরণে
র ন্যায় অত্যাচার করেন, তাহা হইলে
তাহাদিগকে তারতবর্ষ ত্যাগ করিতে হই
বে।

আমরা বরাবর যে কথা কহিয়া আসি
তেছি, গবর্নমেন্টও সেই কথা বলিলেন;
মজুরদিগকে পর্যাপ্ত বেতন দান মূলধনে
র অধিকারী ও অর্থদীবি উভয়েরই উপ
কারক। আডাম প্রিথ কহিয়াছেন, মূলধন
সম্বিত রাখিয়া যথোচিত ব্যয় করাতে তা
হার হানি হয় না। পরিঅমের মূল্য যথো
চিত রূপে মীল মিলেই শেষে ক্ষতি প্রস্তু হ
ইতে হয়। মীলকরেরা ঠেকিয়া এই নিয়
মের তাৎপর্য স্বীকার করিয়াছেন। মীল
করদিগের দৃষ্টান্ত দেখিয়া চাকরদিগের
শিক্ষা করা কর্তব্য। এক্ষণে রেইলওয়ে
প্রভৃতিতে মজুরেরা অন্যায়ের প্রত্যক্ষ চা
কি অথবা হয় আনা উপাধন করিতেছে।
এখন এমন নির্বোধ কে আছে যে অল্প
বেতনে অধিক ক্রম করিয়া চাকরদের প্র
কার কপ দক্ষিণা গ্রহণ করিবে? মীলপ্রথা
ন প্রদেশের কৃষক দিগের সহিত চাকর
দের মজুরদিগের বহু প্রভেদ আছে। মী

ল প্রদেশের প্রকার। মীলকরদিগের অ
না ভূমির ক্ষেত্রে অধিককাল অত্যাচার
সহ করিয়াছে, চাকরদের মজুরদিগের
অত্যাচার সহ করিবার সে কারণ নাই
কষ্টাতি লইয়া (মজুরের বিষয় এই
মেজর হপকিন্স এই আইন বিধিবদ্ধ করা
নিষ্পত্তি বলেন) হইলেও চাকরদিগের
অত্যাচারের সম্ভাবনা নাই। মজুরেরা
কষ্টাতি লইয়া কখনই অত্যাচার সহ
করিবে না।

আমরা চাকরদিগকে পুনর্বার সতর্ক
করিয়া দিতেছি, তাহারা যেন কখন মীল
করদিগের দৃষ্টান্তের অনুসরণ না করেন।
লাও হোলডার্স সত্য তাহাদিগকে ক্র
মশঃ পুথি আনিয়া দল বল বৃদ্ধি করিবার
চেষ্টা আছেন। চাকরদের যেন সাবধান
হন, তাহাদিগের কথার বিশ্বাস না করেন।
তাহারা যদি আর কিছু কাল মীলকরণে
র ন্যায় অত্যাচার করেন, তাহা হইলে
তাহাদিগকে তারতবর্ষ ত্যাগ করিতে হই
বে।

-১০-

অত্রত্য কতিপয় ইংরাজ সম্পাদকের
অনুব্রজিত।

কাজকর্ম না থাকিলে মানুষের মন
পরানির্ভরিতায় ও কুকে ধাবমান হয়,
এই যে একটি প্রসিদ্ধ কথা আছে, ইহা
অস্বার্থ নহে। সাধারণ ইহার লক্ষ্য
হল না হউন, কিন্তু ইহার স্বার্থ বহু
পরীক্ষিত হইয়াছে। ইহাও প্রতিপোষক
আর একটি প্রসিদ্ধ বাক্য আছে। সেটি
এই "বসে বসে করি কি, খুড়ার" নামে
পেরদা দি।" কর্ম না থাকিলে পিতৃব্যের
অনির্ভরিতাও গর্হিত বলিয়া বোধ হয় না।
অত্রত্য কতিপয় ইংরাজ সমাচারপত্র সম্পা
দকের এই গতি দেখা যাইতেছে। যখন
তাহাদিগের লিখিবার কোন বিষয় না
থাকে, সেই সময়েই তাহারা এদেশীয় দি
গের অনির্ভরিতায় প্রস্তুত হন। আজি কি

ন! অধিক সম্পাদক বলিলেন, এদেশীয়েরা অতিশয় অকথ্য ও অলস; ইহাদিগকে কোন গুরুতর রাজকর্ম দেওয়া উচিত নয়। অধিক কাহিলেন, এদেশের লোক অত্যন্ত অসত্য, ইহাদিগের হস্তে বিশ্বাসযোগ্য কাজ দেওয়া বিধেয় হয় না। আর এক জন আর এক দিক হইতে তারতর্য বলিয়া উঠিলেন, এদেশীয়দিগকে অস্ত্র শস্ত ব্যবহার করিতে মিলে নিঃশব্দ বিদ্রোহ ঘটবে। অন্য সম্পাদক মনে করিলেন, সকল সম্পাদকই আপন আপন স্বল্প বুদ্ধির পরিচয় দিতেছেন, আমার মৌনী কথা উচিত হইতেছে না। এই তাবিল্য তিনিও এই বলিয়া আপন বুদ্ধি ভাণ্ডারের দ্বার উন্মোচন করিয়া দিলেন যে একদেশের লোককে অধিক লেখাপড়া শিক্ষায় উচিত নয়, তাহা হইলে পরিণামে ভারতবর্ষ ইংরাজ জাতির হস্ত পরিভ্রষ্ট হইয়া যাইবে। আর এক জন তা এই বলিয়া আপনায় বাহাজুরী প্রকাশ করিলেন, ইংরাজ জাতি এদেশের বিরুদ্ধতা, এ দেশী যেরা বিজিত; অতএব উন্নত জাতির সহিত একবিধ ব্যবস্থা প্রণয়ন করিয়া বিজিতের প্রজ্ঞা বুদ্ধিকর্য্য। কোনক্রমেই বিবেচনায় নাহ।

এবস্থি অসারত দুবিত বচনোপন্যাস ইংরাজ সম্পাদক বিগের অদ্বয় দর্শিতার ফল সন্দেহ নাই। তাহার মনে করেন, গবর্ণমেন্টের বড় চিত্ত করিতেছেন। কিন্তু জাতি কলহঃ তাহার বুদ্ধিতে পাতেরন না। সে তাহাদিগের ভুল্য অতিকারী আর নাই। প্রজার অনুরাগ ও বিরোগের উপরে রাজত্বের স্থিতি ও অস্থিতি নির্ভর করিতেছে। উক্ত সম্পাদকেরা যে পরামর্শ দিতেছেন, আমাদিগের গবর্ণমেন্ট যদিও অনুসরণ করেন, গবর্ণমেন্টের প্রজার অনুগত হইবার কি সম্ভাবনা। অতঃপর

পরামর্শের অনুসরণ ঘুরে থাকুক, সম্পাদকেরা যে উক্তপ্রকার বাক্য প্রচার করিতে

হেন, তাহাতেও ইংরাজ জাতির উপরে এ দেশীয়দিগের বিরোধ বৃদ্ধি অধিগতে। যে জাতি প্রজার বিরোধে ভাজন হয়, তাহার রাজত্ব কখন স্থায়ী হয় না। সম্পাদক গণ! তোমরা কি প্রজার অনুরাগ লাভ চেষ্টাকে অকিঞ্চিৎ কর জ্ঞান করিতেছ। অত্রবল দ্বারা ভারতবর্ষকে চির কাল স্বদেশে রাখিবে, তোমরা কি এই মনোবধ করিতেছ; এতোমাদিগের দুর্খনোরণ সন্দেহ নাই। ইতিভাস ইহার বিপরীত কথা কহিতেছে। কোন রাজা কখন এরূপ উপায় অবলম্বন করিয়া রাজ্যপত্র দীর্ঘকাল স্বদেশে রাখিতে সমর্থ হন নাই।

আমরা তোমাদিগকে অনুবোধ করি গেছি, তোমরা ত্রিচ চিত্তে একটি বিষয়ের বিবেচনা কর। তেমরা যে ভারতবর্ষকে বশে রাখিবার উদ্দেশে এত স্বার্থপরতা ও নীচাশয়তা প্রকাশ করিতেছ, সে ভারতবর্ষ কোন্ জাতির পৈতৃক বাসভূমি। সে জাতি যদি তোমাদিগের চন্দ্র হইতে ভারতবর্ষকে লইয়া স্বয়ং পালন করিতে পায়, তাহাতেই বা ক্ষতি কি? তোমাদিগের অপেক্ষা সে জাতিই ইচ্ছাভে সমধিক শত্রু আছে। তোমরা আপনাদিগকে মুক্ত রাখিয়া এদেশীয় সমাজের গত্রের লাব দর্শনার্থ লোক নিবেগ প্রেরণ লইয়া গন্ত হইয়াছ, কিন্তু যদি অনুধাবন করিয়া দেখ তোমাদিগেরই কার্য্য দর্শনার্থ অগ্রে লোক নিবেগ আবশ্যক। তোমরা যে সমস্ত বাক্য প্রেরণ কর, তাহা গিত্তায়া প্রাণলিত করিয়া দেয়, কিন্তু এদেশীয় সম্পাদকদিগের বচনাবলী বিদ্রোহাদীপনী নহে। এদেশীয় রাজ্য পাত এদেশীয়দিগের যে যে অভিপ্রায় প্রকটিত হয়, গবর্ণমেন্ট যদি সেগুলি বিবেচনা করিয়া কার্য্য করেন, বিদ্রোহ সম্ভাবনা থাকে না। একজনকে বাক্য বিদ্রোহের উদ্ভীপন করিতেছে, আর এক জনের বাক্য তাহা মিথ্যা করিতেছে, এ উভয়ের মধ্যে গবর্ণমেন্টের একমুখ হিতকারী কে?

জমিদারদিগের সুশিক্ষা বিবরণ

এদেশের সমস্ত জমিদার

হতেছেন।

এখন উন্নতির কাল। সমুদায় দেশের সমুদায় বিষয়ই প্রায় এখন উন্নতির দিকে ধাবমান হইয়াছে। আমাদিগের দেশও এ নিয়মবদ্ধিত হইবে। কিন্তু এদেশের যেকোন উন্নতি হইয়া উচিত, সেই হইতেছে না। অন্য অন্য দেশের অপেক্ষা এদেশের সবিশেষ উন্নতি হইবার বিশেষ কারণ আছে। ব্রিটিশ গবর্ণমেন্টের অধিকারে আমাদিগের বাস। এগবর্ণমেন্টের অধিকার ইচ্ছা এই যে আমাদিগের যে যে অংশে অনুন্নতি আছে, তাহা দূরীভূত হইয়া সর্বাত্মক উন্নতিলাভ হয়। চিরন্তন কুসংস্কার প্রভৃতি উন্নতির যে সমস্ত দুরতিক্রম প্রতিবন্ধক আছে, তাহা অপসারিত করিবার নিমিত্ত বাহুল্য রূপে বিদ্যালয় আলোক বিস্তার করিবার যথোচিত চেষ্টা হইতেছে। তথাপি আমরা বাস্তবিকতায় বঞ্চিত হইতেছি, তাহার কারণ কি?

এই কারণের অনুসন্ধানের প্রয়োজন হইবে। অনেক অনেকবিধ কারণের নির্দেশ করিবেন সন্দেহ নাই। কিন্তু আমাদিগের মতে জমিদারদিগের সুশিক্ষা বিবরণই প্রকৃত কারণ। এদেশের লোকেরা প্রাচীন প্রচীর ব্যবহারাদির মিতাক্ত অনুরক্ত; এ সকলের সন্দোহতা নিবন্ধন ইহারা যার পর নাই কষ্ট পাইতেছেন, তথাপি উহার দোষকে দোষজ্ঞান করেন না, একথা আমরা অস্বীকার করি না। কিন্তু জমিদারেরা যদি সুশিক্ষিত হইতেন এতদিন এ সকল বিষয়ের কাঙ্ক্ষিত পরিবর্তন হইয়া দেশের সবিশেষ উন্নতি হইত সন্দেহ নাই। এদেশে জমিদারদিগের সর্বতোমুখী প্রভুতা আছে; সমুদায় লোকই তাঁহাদিগের বাধ্য; তাহার কাব্যশেষে প্রকট, তাঁহাদিগকেও জমিদারের নিকটে গুরুভার হইয়া থাকিতে হয়, জমিদারদিগের বাক্য

লক্ষ্যনকরা আত্যাত্তিক সাহসের কার্য। কলতঃ তাঁহারা যদি কোন বিষয়ের পরিবর্তে কৃত সঙ্কল্প ও অধ্যবসায়বান হন, তাঁহাদিগের চেষ্ঠা কখন বিফল হয় না। আমাদিগের দেশের আচার ব্যবহারাদির কখন কোন পরিবর্ত হয় নাই একথা সত্য। পূর্বে সমুদ্র গমনাদির প্রতিবেদ ছিল না, অবলম্বিতরা একবাক্য হইয়া তাঁহার নিবেদন করিয়াছেন। প্রাচীন কালের ব্রাহ্মণদিগের যেরূপ আচার ব্যবহার ছিল, এখন তাহার বহু পরিবর্ত হইয়াছে। ইদানীন্তন ব্রাহ্মণ ও ইদানীন্তন ব্রাহ্মণ উভয়কে একত্র করিবার যদি কোন উপায় থাকিত, তাহা হইলে উভয়কে এক বর্ণ বলিয়া কোন ক্রমেই চিনা যাইত না। তখনকার ব্রাহ্মণেরা দীর্ঘকেশ ও শ্মশ্রু মধ্যমি ধারণ করিতেন, এখনকার ব্রাহ্মণেরা মুক্তিকেশ ও ওঠের উপরিত গণে শ্মশ্রুধারী দৃষ্ট হন। তদানীন্তন ব্রাহ্মণেরা সারং প্রাতঃ ও মধ্যাহ্ন এই ত্রিকালে ত্রিসন্ধ্যা, নিত্য হোম ও বেদাঙ্গা এনা করিতেন, ইদানীন্তন ব্রাহ্মণদিগের হোমাদি বিষয়ে জলাঞ্জলি মাত্র ও রাজারা ধনা সার হইয়াছে। ইজেরাই তদানীন্তন ব্রাহ্মণদিগের শুশ্রূষা করিতেন, ইদানীন্তন ব্রাহ্মণেরা ইজশুশ্রূষ হইয়াছেন। তদানীন্তন ব্রাহ্মণেরা বিনা বেদাধ্যয়ন জল গ্রহণ করিতেন না, ইদানীন্তন ব্রাহ্মণদিগের অনেকে বেদ করণী তাহাও অবগত নহেন। তদানীন্তন ব্রাহ্মণেরা প্রাণপণে সত্য

* শৌচ, অন্তেষ, ইন্দ্রিয়গ্রহ প্রভৃতি দশবিধ ধর্ম প্রতিপালন করিতেন। ইদানীন্তন ব্রাহ্মণদিগের অনেকে এই সকল জলাঞ্জলি দিয়া স্বদেশের জুর্নামের হেতু দূত-কথা দামোদর শোচাধিকার নিগ্রহ বীর্জিন্দা সত্য মজোদে দশকঃ ধর্মলক্ষণঃ।

সমুদ্র

সমুদ্র, কমা, চিত্রবিকাশন হওন, অমায় করিয়া পরধন গ্রহণ না কন, মুজলদ্বারা দেহ শুদ্ধি, দিবস হইতে রত্নবানিব বারণ, পাতকান, অজ্ঞানতা, সত্য ও কোথের অমৃত্যু।

ভুক্ত হইয়াছেন। এইরূপ অন্য অন্য বর্ণেরও আচার ব্যতিক্রম ঘটিয়াছে।

যখন আমাদিগের দেশের আচার ব্যবহারাদি অপরিবর্তনীয় হইতেছে না, এবং প্রবল ব্যক্তির চেষ্ঠা পাইলে তৎপরিবর্ত হয় সম্ভব হইতেছে, তখন দেশের জমীদারেরা মনে করিলে অন্য রাসে বিধবাবিবাহ প্রচলিত করিতে এবং বাল্য ও বহুবিবাহ প্রভৃতি উঠাইয়া দিতে পারেন, তদ্বিনে অণুমাত্র সন্দেহ নাই। তাঁহাদিগের এক এক ব্যক্তির যে ক্ষমতা আছে, সহস্রাধিক মধ্যমি ব্যক্তির ক্ষমতা নাই। তবে যে তাঁহারা পরিবর্ত চেষ্ঠা করিতেছেন না, তাঁহাদিগের সুশিক্ষা বিবর্তই তাহার কারণ। বিধবা বিবাহ প্রচলিত না থাকিতে এবং বাল্য ও বহুবিবাহ প্রচলিত থাকিতে দেশের যে অনিষ্ট ঘটিতেছে, তাহা যদি তাঁহাদিগের হৃদয় সম হইত, তাঁহারা কি ইহার উপায় না করিয়া নিশ্চিৎ থাকিতে পারিতেন? সুশিক্ষা নাই বলিয়া তাঁহাদিগের এই দোষগুলি হৃদয়সম ও তৎসংশোধন অবশ্য কর্তব্য বলিয়া বোধ হইতেছে না। যে বিষয় অবশ্য কর্তব্য বলিয়া বোধ হয়, সুশিক্ষা কি তৎ সম্পাদনে পরাধ্ব হইতে দেয়? আত্যাত্তিক ক্ষতি হইবার অনিশ্চয় সম্ভাবনা থাকিলে তথাপি এক দিন কথা থাকে। জমীদারদিগের সে শঙ্কা নাই। কোন জমীদার যদি আপন গৃহে বিধবা বিবাহ প্রচলিত করেন, তাঁহাকে জাত্যন্তর করিয়া কি কেহ গাহনী হয়? তাঁহারা ইচ্ছা করিলে অন্যকে অন্যায়সে জাত্যন্তর করিতে পারেন, অন্যের এমন কি সাহস আছে যে তাঁহাদিগকে জাত্যন্তর করিবার কথাও একবার মনে করিতে পারেন? আমাদিগের কোন্দেশে বিধবা এই বিধবা প্রচলিত করিবার চেষ্ঠা করা দূরে থাকুক, তাঁহারা উদ্যোগী হইয়া বিধবা বিবাহকারীকে অজ্ঞেয় ও অপাত্ত্যেয়

করিয়া রাখিবার যথোচিত চেষ্ঠা পাইয়া থাকেন।

এই প্রসঙ্গে কয়েক সহস্র প্রধান লোকের শিক্ষাদান অথবা সাধারণের শিক্ষা দান এই উত্তরবিধ শিক্ষাদান প্রণালীর কোনটী যুক্তি অনুসারে অবলম্বন করা বিধেয়, তৎ প্রসঙ্গ উপস্থিত হইতেছে। লর্ড কানিং বাহাদুর উপরি প্রণীত কয়েক সহস্রের শিক্ষাদান প্রণালীর গুরুপাতী ছিলেন। রাজমহলে যে দিন রেলওয়ে গাড়ি খোলা হয়, সেদিন তিনি বক্তৃত্তা কালে স্পষ্টাক্ষরে এই অভিপ্রায় প্রকাশ করি যাইলেন: লর্ড অকলণ্ডেরও একপ মত ছিল। এই মতটী উৎকৃষ্ট যুক্তির অনুসারী সন্দেহ নাই। অসংখ্য লোককে সুশিক্ষিত করিয়া তুলিতে পারিলে বহুসংখ্য উপকার লাভ হয় সন্দেহ কি? আমরাও উপরে সেই সেই উপকার লাভ গণন করিলাম। জমীদার প্রভৃতি প্রধান ব্যক্তিদিগের অর্থবল ও যোকবল আছে তাহার সহিত সুশিক্ষার যোগ হইলে যে মহাকল লাভ হইবে তদ্বিধে অধিক বক্তব্য নাই। কিন্তু এই সকল ব্যক্তির সম্মানগণকে সুশিক্ষিত করিয়া তুলিয়া সহস্র ও সাধারণতঃ কিনা, তদ্বিষয় বিবেচনা করা আবশ্যিক।

জমীদার প্রভৃতির সম্মানগণের সুশিক্ষা হইবার অনেকগুলি প্রতিবন্ধক আছে। প্রথম, জ্ঞানোপার্জনই যে বিদ্যালয় কাল যুগ্য উদ্দেশ্য, আদি ও আমাদিগের দেশের অনেকের সে সংকল্প হয় নাই। জমীদারেরা সেই দলের প্রধান। জমীদারী হিসাব রাখিবার উপযোগি লেখা পড়া শিক্ষাকেই তাঁহারা পর্যাপ্ত জ্ঞান করেন। দ্বিতীয়, জমীদারের সম্মানের অতিশয় অলসবৃত্তাব। আদর পাইয়া তাহাদিগের এমনি কথ্যাস হইয়া উঠে যে উত্তরোত্তর তাঁহাদিগের শরীর অপটু হইয়া পড়ে, অণুমাত্র ক্রেশসহিষ্ণুত শক্তি থাকেনা, চিত্ত চিত্তাশক্তি বিরহিত

হয়। যেসকল সাক্ষির উপস্থিতিতে
জাদিগের কি সুশিক্ষা হইবার সম্ভাবনা
আছে, বিদ্যা শিক্ষা ও বিদ্যা চিহ্নের দর্শন বি
জ্ঞানাদি শিক্ষা সম্পন্ন হওয়া কোন ক্রমেই
সম্ভবিত মনে। তৃতীয়, জমীদার সভা
নয়। অসম্পূর্ণ ভোগপরায়ণ ও বিলাসী হ
ইয়া উঠে। বিলাসপরতা বিদ্যালয়কার
একটি প্রধান প্রতিবন্ধক। চতুর্থ, অসৎ
সংসর্গ। এদেশে বাল্য ও বয়স্কবিভাগে
প্রচলিত থাকিতে জমীদারদিগের অসম্পূর্ণ
এরূপে বিবাহ ও অসম্পূর্ণ বয়সে সম্বন্ধ
এক অপেক্ষা বীভেত জন্ম, তাহার পরও নিয়
মের ব্যতিক্রম, সুতরাং অসম্পূর্ণ বয়সেই শরী
রেব বল বীর্ষ্য ক্ষয় হইয়া যায়। অতঃপর
জমীদার বলে অকাল মৃত্যু দর্শন অসম্ভ
ব। এই সকল কারণে অধিকাংশ
জমীদার সম্বন্ধে অসম্পূর্ণ বয়সে পিতৃদেহ
হয়। উপযুক্ত অধিত্যাক না থাকিতে অস
ম্পূর্ণ ও চাটুকীর দিগের প্রাচুর্য্য বি
শ্বাস হইয়া উঠে। অসৎ সংসর্গ হ
ইলে ক্রমেই মতি হওয়া অনিবার্য্য নহে।
এই কারণে অধিকাংশ জমীদার সম্বন্ধে
বাসনাসক্ত দেখিতে পাওয়া যায়। বসনা
বৃত্তি বিদ্যালয়কার একটি প্রধান
বন্ধন।

উপরে লক্ষ্য প্রদর্শিত হইলে, চন্দ্র
না স্পষ্ট প্রতীকশূন্য হইতেছে, যাঁহারা
মনে করেন, জমীদারদিগকে সুশিক্ষিত
করিয়া তাঁহাদিগের দ্বারা অসম্পূর্ণ
দ্বিতীয় ও তৃতীয় শ্রেণীর লোকদিগকে
সুশিক্ষিত করিয়া তুলিবেন, তাঁহাদিগের
সে চরান্যমাত্র। দ্বিতীয় ও তৃতীয় শ্রেণী
হইতেই কার্য্য অব্যাহত করিতে হইবে
এই দুই শ্রেণীর লোকেরা সুশিক্ষিত হই
লে জমীদারেরা যদি লজ্জা পড়িয়া আপ
নাদিগের সম্বন্ধগণকে সুশিক্ষিত করেন,
এই এক সম্ভাবনা আছে।

আগাম চা কোম্পানির মাঝে

ও কার্টার সাহেব।

উক্ত কোম্পানির অন্যতর অধ্যক্ষ মাঝে
ও কার্টার সাহেব এই কোম্পানির টাকা
ও চার বীজ লইয়া আপনর কায্য সাধন
করিয়াছেন বলিয়া যে জনরব হয়, তাহা
ক্রমেই সত্য হইয়া উঠিতেছে। এই দুই বা
তির কায্যের অনুসন্ধানার্থে যে কমিটি নি
য়োজিত হয়, তাঁহারা বাহ্যিক করিয়া
ছেন, তাহা এখানে প্রকাশ করেন নাই।
এ কোম্পানির ইংলণ্ড অধ্যক্ষসভার
মিকটে প্রেরণ করিয়াছেন। আমরা পর
স্পরা শুনিলাম, এই দুই ব্যক্তির দোষ সম
ান হইয়াছে। কমিটির কায্যদ্বারাও এক
প্রকার সন্দেহ নিরাস হইতেছে। মাঝে ও
কার্টার যদি দোষী না হইবেন, কমিটি
তাঁহাদিগের বিষয় সর্বসাধারণের গোচর ক
রিলেন না কেন? এই মাঝে সাহেব লাও
ফোলডন সভার সভাপতি ছিলেন। তাঁহারা
যাহাই এই সভা প্রতিষ্ঠিত হয়। একতর
হার সভাপতিত্ব পদ পরিত্যাগ হইল কেন
সিহুমে যে তাত্রখনি আছে, তাহা ক
নির্ভারার্থে এক কোম্পানি হয়। এই মাঝে
সাহেবের তথ্য প্রাধান্য ছিল। কিন্তু এ
কোম্পানি কৃতকায্য হইতে পারেন নাই।
ইহাও মাঝে সাহেবের কায্য চন্দ্রনা ও
রিজের বিষয়ে সংশয় জন্মাইয়া দিতেছে।
যাহা হউক মাঝেসাহেবের
কৃত কায্যের বিষয় উল্লেখ করা অতি
শব্দ আবশ্যক হইতেছে। আগাম চা কো
ম্পানি প্রতিষ্ঠা হইয়া, ম. ভ. ব. ন. প. ব. দ.
বিষয় চন্দ্রনা পক্ষে প্রথম প্রকাশিত হয়।
মাঝে সাহেব এই টাকা প্রদান করিয়া
হরকর সম্পাদকের ন্যায় ৩০০০০ টাকার
কতি পূরণ প্রার্থনা করিয়া স্প্রিঙ্গ কোর্টে
নালিস করিয়াছেন। যত দিন মাঝে সাহে
বের চণ্ডি সংস্কারাদি রহিয়াছে, তত
দিন তাহার কৃত মোকদ্দমাত্মক মনে

কর মনে অনেক প্রকার ভর উপস্থিত
করিয়া দিবে সন্দেহ নাই।

মাঝে সাহেবের চরিত্রের অনুসন্ধান
কারি কমিটি তাহার বিষয় সম্বন্ধে প্রকা
শ না করিয়া ইংলণ্ড অধ্যক্ষ সভার সভা
প্রতীক করিয়াছেন। তন্নিমিত্ত আমরা
তাঁহাদিগকে দূষিত করি না, কিন্তু তাঁহারা
যদি মাঝে সাহেবের দোষ গোপন রাখি
বার ও তাঁহার প্রতি ক্ষমা প্রদর্শন করিবার
অনুরোধ করিয়া থাকেন, তাঁহারা সর্বতো
ভাবে দূষিত হইবেন সন্দেহ নাই। মাঝে সা
হেব যদি বাস্তবিক চা কোম্পানির টাকা
ও চার বীজ লইয়া আপনর কায্য উদ্ধার
করিয়া থাকেন, তিনি কোন ক্রমেই ক্ষমা
যোগ্য নহেন। তিনি কেবল যে ব্যায়
বিক্রম কায্য করিয়াছেন এমন নহে,
তাঁহা হইতে একটি বিষয় অনর্থকর অসৎ
প্রবর্তিত হইয়াছে। যদি অন্য কো
ম্পানির অধ্যক্ষ, তাঁহার দুই বছর
অনুসরণ করেন, সমস্ত সম্বন্ধান অস্বস্তিত
হইয়া জগৎকে শ্রীকৃত করিবে সন্দেহ
নাই।

পুণ্ডর প্রাপ্তি।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার ক
রিতেছি, বুধেলারহস্য নাটকের এক
খণ্ড এবং সাল্ট ডিপার্টমেন্টের ১৮ ৬০।
৬১ অঙ্কের একখণ্ড রিপোর্ট প্রাপ্ত হইয়া
ছি। বুধেলারহস্য জিজ্ঞাসী তত্ত্বালকার
প্রণীত। ইনি যখন চট্টগ্রামের গবর্ণমেন্ট
বিদ্যালয়ের প্রধান পণ্ডিতের কার্য্যে নিয়ো
জিত ছিলেন, তৎকালে জিলা রসপুরের
অন্ত পণ্ডিত কাকিমৌরার জিজ্ঞাস্য বাবু শম্ভু,
চন্দ্র রায় চৌধুরীর উৎসাহদানে এতৎ
প্রণয়ন করেন। প্রকাশক মৈপুণ্য সহস্রা
রে ইহাতে এদেশের আচার ব্যবহারাদি
র বিষয় অনেক বর্ণন করিয়াছেন এবং
প্রশংসার অধিকাংশ স্থলে কৌতুকপ্রিয়
প্রদর্শন করিয়াছেন।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া সম্পাদক নিউজিল্যান্ড
হইতে ১ বাস প্রাপ্ত হইয়াছেন, সর জর্জ এয়ার
বল্লভ হুড, লোণেরা শাস্ত্রী, অবলম্বন
করিয়াছে। তদন্ত প্রধান ব্যক্তিরা স্বদেশ
মধ্যে সন্ধান প্রাপ্তি অচলিত করিবার চেষ্টা
প্রদত্ত হইয়াছেন। সর জর্জ এনিউ জিলান্থে
যে উপায় অবলম্বন করিয়াছেন, তারতবর্ষে
জ্ঞান করিলে "ঈশ্বরদি কারী" মতল কপিমা
উচিতেন।

লগনের শিক্ষাদি প্রদর্শনী প্রদান ভারত-
বর্ষের যে সমস্ত ব্যবসায়ী নীতি হইয়াছে, তাহা
তত্ত্বাত্মক লোকের অধিকতর প্রীতিকর হইয়াছে।
গণের জেনবল ভরিত্তিক কলিকাতাও এখা-
ল সমগ্রকারিণী সত্যকে খন্য বাস প্রদান
করিয়াছেন। উক্ত শিক্ষাদি প্রদর্শনী সভায়
এতদেশীয় কয়েক ব্যক্তিকে প্রেরণ করা উ-
চিত ছিল। কিন্তু কলিকাতাপ্রতি পিটবের
একি ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের গটে থাকা অ-
সম্ভব।

ইংলিসহান সম্পাদক বলেন উক্ত পলি-
টিক্যাল অফিসে দেশীয় সংবাদ পত্রের এক জন
দ্রাব্যক হইয়াছেন। তিনি যত অঙ্গীল পু-
রকার প্রচার বসু করিবেন, রসরাজ মত
এই উল্লেখ বসুদেশের ছুরি ন যায়।

সম্প্রতি বীডন সাহেব আলিপুরের দিল
একজন সাহেব মৃত্যুর উৎসব করেন, তাহা-
ল এতদেশীয় ও ইটবোরপীদিগের আদ-
তন ও প্রসঙ্গ করিয়া উক্ত সম্পাদক সেপ্ট-
ম্বর গবর্নমেন্টের এখা সা কবিয়া বলিয়াছেন
মরো, এলাক-টোম ও খেটকাক প্রভৃতি
যে উপায় অবলম্বন করিয়াছিলেন ইহাও সেট
উপায় এত দ্বারা এই উল্লেখ করা লাভ হই-
বে, এতদেশীয় ও ইটবোরপীদিগের পরস্পর
সংঘর্ষ সম্ভাবিত হইবে। একথা সুনিশ্চয়
এখা লোক চটল। ই উৎসবসভায় এতদেশীয়
দিগকে জুতা পুজিয়া যাউতে হইল না; এট
একটা বিশেষ লক্ষ্য।

উপস্থান এখা সাহেব সম্পাদক অবগ করি-
লেন, কোটনাগপুরের রাজা যে হস্তভাঙ্গা
ব্যক্তিকে নানা সাহেব বলিয়া বসু করিয়া
প্রয়ণ করেন, তাহাকে সেপ্টেম্বর গবর্নর মুক্ত
করিবার আদেশ দিয়াছেন। নানা সাহেবের
অন্য কত লোককে " কান লয়ে গেল কাকে
ত কাকে সঙ্গে য় হইতে হইবে।

কলকাতার নর উইলিয়ম ডেনিসন ও মা-
নসং ব্যবস্থাপক সভাকে ভারতবর্ষের জী-
বিত্ত কারণ বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। এই
একটা জীবিত্ত লেখা বাইতেছে, তাহারা " বা-
দুশার কুড়ে হইলেন। অতএব তাহাদিগের
হইতে এককর অপরাধে এখার সমুদায় লো-
কের জরিমানা অথবা কলেক্ট বিলেন তর
ছিল না।

আলাহাবাদ গেজেট সম্পাদক বলেন, এ-
কজন পুলিশ ইন্সপেক্টর এক ব্যক্তির নিকটে আ-
লয় করিতে গিয়া অধিক আয় চাহিয়াতে
সে তাহাতে অসম্মত হইল। উক্ত " মহাশী-
র ৩ তমি ১৩ সাক্ষি লেখাউপাতে নিজে
তবে তাহাকে তাহার খেজানত আয় দিল,
সম্পাদক উল্লিখিত বক্তৃতাতে লিখিয়াছেন
" বাহারা পাতি রক্ষা করিলে তাহারা একাধা
করিলে কি বোধ হয় ১০ হইয়া কি ২ জান না।
এ কুণ্ডে মুরগির বজ্র ঠোকা ১০

সম্পাদী সম্পাদক বলেন, সংবাদ পত্রে
গবর্নমেন্ট কর্মচারিদিগের বিষয় আন্দোলন
করা অন্যাথ। তিনি কহেন যে " ব্যক্তি রাজ
দার্ম নিযুক্ত হইল না কেন নিগদিত সময়ে
আফিস সুবিধা নিমিত্ত কার্য করিলে ও নি-
জারি কাগজ লিখিলে সম্পাদক দিগের কিছু
বলিতা কি কারণ থাকে? যদি হকরার তৃত
পূর্ব সম্পাদক কর্মস এক জন নীল কবিসনর
হন বাজালী সম্পাদক কি নীলব থাকিলেন?

২৩এ উজার্ত বৃহবার।

ভারতবর্ষীয় সুবিখ্যাত বিজ্ঞানবিৎ
হেনরি, জন, কার্টার সাহেবের মৃত্যু হইয়াছে।
ইংলণ্ডীয় পণ্ডিতের। এদেশে প্রায় আসিতে
অসম্মত, কিন্তু কার্টার বিজ্ঞানের উন্নতির
উদ্দেশ্য করিয়া এদেশে বহুকাল অবস্থিতি ক-
রিয়াছিলেন। তাঁহার মৃত্যুতে অনেক চাঞ্চি-
ত হইলেন সন্দেহ নাই।

সিবিলা ও মিলেটারি কিন্ডল কমিশন
এখন কোরাণীদিগকে ছাড়াইয়া যেন, তখনই
"আমবা কলিয়াছিলাম, ১ এ চেট্টা নিফল
হইবে। সম্প্রতি অনেক চাঞ্চি: ছড়ান
কোরাণী নিযুক্ত করা হইতেছে, মিলেটারি
কোর্: ১৩এর আফিসে প্রতিদিনে চর পত
টাকা অধিক ব্যয় করিবার সাক্ষ্য হইয়াছে।
স্বত্বতে কখন কি চাও ভেবে।

গবর্নমেন্ট কিনাশিয়াল ডিপার্টমেন্টে অ-
ন্য পরিদর্শন করিতেছেন। শ্রিয় হইয়াছে
ইংল: হইতে উপযুক্ত মুহুরি আনয়ন করা
হইবে এবং এই ডিপার্টমেন্টের বর্তমান কর্ম-
চারিরা যদি বখাওয়াক প্রণবতা ও অসুখীল,
তার পরিচর প্রদান করিতে পারেন, কখন
উচ্চতর পদ প্রাপ্ত হইবেন। ইংল: হইতে

মুহুরি আনয়ন করা অপব্যয় নদেই নাই
ব্যক্ত প্রকৃতি স্থানে এতদেশীয় মুহুরিরাই
সকল কার্য পরিচালনা থাকেন।

উক্ত পত্রের বাসদহিত সংবাদ দাখা
বলেন সম্প্রতি তথায় অগ্নি লাগিয়া যে সকল
মহিয় লোককে এক কালে নিরাশ্রয় করিয়াছে
তাহাদিগের সহায়তার জন্য তত্ত্বাত্মক ব্যক্তি-
টেটে বরে এক সভা হইয়া ৫০০ টাকা সং-
গৃহীত হইয়াছে। মাঝেমাঝের মজুরদিগের কষ্ট
কওয়াতে ইংলণ্ডের সর্ব স্থানে চাঁদ হইয়াছে।
সুখের বিষয় এই এতদেশীয়েরা ও এই সকল
সংকার্যের অনুষ্ঠান করিয়াছেন।

উক্ত পত্রের সম্পাদক বলেন গবর্নমেন্টের
জিন্ন জিন্ন কর্মচারিদিগের নামে সরকারী পত্র
সহর বখাওয় স্থানে প্রেরণ করিবার জন্য
পোর্ট আফিসে একটি বতত্র বসু থাকিবে।
এখরে সমুদায় সরকারী কাগজ পত্র রাখা
হইবে। গবর্নমেন্টের বাবতীর আফিস এক
বাগীতে হইবার কল্পনা হইতেছে। তাহা
হইলে একজন হকরার দ্বারাই কাজ হ-
ইবে। এতদ্বারা সময় ও অর্থ উভয়বিধ লাভ
হইবে।

ইংলিসহান সম্পাদক অবগ করিয়াছেন,
সর চার্লস উড ভারতবর্ষীয় সিবিলা কর্মচারি-
দিগের একবিধ বস্ত্র পরিধান নিষেধ করিয়া
দিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন। মিলেটারিদিগের
ন্যায় টর্জাদিগেরও এক প্রকার বস্ত্র বস্ত্র
হইবে। তাহা কার্য হলে অকাঙ্ক্ষ সভা ও বস্ত্র
বার প্রকৃতির সময়ে পরিধান করিতে হইবে।
সুশিক্ষিত দলের যেসকল ব্যক্তি যজোপবীত
পরিভাষ্যের চেষ্টা করিতেছেন, তাহারা আ-
র ব্যস্ত হইতেছেন কেন?

আলাহাবাদ গেজেট সম্পাদক বলেন, স-
ম্প্রতি উক্ত নগরে গবর্নমেন্টের টাকা আসি-
তেছিল। ইতিমধ্যে কয়েক জন দস্যু তাহা
হুট করিবার চেষ্টা পার। কয়েক জন পুলিশ
"যেনা ১ দস্যুদিগের উপরে বন্দুক বারিল
কিন্তু কাহারও কিছুই হইল না। দস্যুরা চলি-
য়া গেল, কিন্তু কেহই তাহাদিগকে ধৃত করি-
য়া চেষ্টা করে নাই। পুলিশ সেনাভিধের এত
গুণ, তথাপি গবর্নমেন্ট তাহাদিকে পুরস্কার
দেন না!

উক্ত গল্পে লিখিত হইয়াছে, মন্থা শব্দ রাম সিংহকে বৃত্ত করিবার জন্য ফুলপুরের আতিথ্যে করেক জন সৈন্য প্রেরিত হইয়াছে। শব্দ রাম পূর্বে চালাই গ্রামের অধিদার ছিল। এই সকল বৃত্তান্তে কথ্য করিবার যোগ্য করিয়া দিলে বোধ হয় তাহার অজ্ঞাত্যগ করিতে পারে।

জেন্স, হেনরি উইলসন নামক একজন উচ্চ নিয়াম এক দ্বী বর্তমান থাকিতে পুনরায় বিবাহ করিতে তাহার এখন দ্বী তাহার নামে মালীল করিয়াছেন। তিনিই তাহাকে বৃত্ত করিবার পরদানী হইয়াছে। তিনিই তাহাকে বৃত্ত করিয়া লোকেই সংখ্যা করিয়া

সেই সময় তাহার পুত্রকে বোলে তাহার পুত্রকে কানী পুত্রকে বুলিয়ে

চীনদেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে বিদ্রোহীদিগের সহিত ইংরাজ ও ক্রাসিদিগের পুত্রের একটি যুদ্ধ হইয়াছে। এবার বিদ্রোহীরা অশেষভাবে সাহস সহকারে যুদ্ধ করিয়াছে। ওয়ার্ড নামক একজন ইংরাজ চীনদেশীয় সন্ন্যাসীর সেনাপতি হইয়াছেন।

২৪ই জ্যৈষ্ঠ বৃহস্পতিবার।

লর্ড কানিংকে লইয়া বাইবার অন্য সর চার্লস উড ও লর্ড সিন্ধু প্যারিসে আগমন হইয়া আসিয়াছেন। হুগোও তাহাকে অভিনয় সন্মান পূর্বক গ্রহণ করিয়াছেন।

কমরিশ অন্তরীপের নিকটবর্তি এক গ্রামে এক ব্যক্তি আপনাকে ঈশ্বরের অবতার বলি দ্বা পয়সের দিয়া অনেক শিষ্য সংগ্রহ করিয়াছে। এই গ্রামের লোকেরা খৃষ্টধর্মাবলম্বী। সে ব্যক্তির ধর্ম খানিয়া থাকে। এখন বৃহস্পতিবার সন্ধ্যায় হইতে অনেক তাহার কথার প্রচার করিতেছে। সন্ধ্যায়ই বলা যায় যুসলমানই বল সকল খ্রিস্ট ধর্মাবলম্বী লোক।

বাক্সা টাইমস সম্পাদক বলেন কিছু দিন হইল, খিলাট বোম্বের ওয়াশিংটন নামে এক জন পাদরি আত্মহত্যা করিবার চেষ্টা করিয়া তিনি প্রথমতঃ গুলি খাটবার চেষ্টা করিয়াছিলেন। পঞ্চাৎ সকলে লতক হওয়াতে তিনি এক দিন অলক্ষিত রূপে এক উক্ত

প্রাচীর হইতে কুশিতে পতিত হন। কিন্তু তাহার প্রাণ বিয়োগ হয় নাই। ওয়াশিংটন সাহেব একজন পাদরি, বিশেষতঃ খিলাট, ও খাপি তিনি ধর্ম বিকল্প কার্যে কতিপয়ে গুরু হইয়াছেন। বোধ হয়, পীড়া অথবা অন্য কা

বশ বশত তাহার বুদ্ধি ভ্রম হইয়াছে।

৩০ই মে বাক্সা টাইমসে পুত্র সংবাদে রেইলওয়ে বুলিয়ারে।
চীনার নীলামের প্রদান কেন্দ্রী মালিক (এক জন ক্রিস্টিয়ান) তত্ত্বতঃ বুদ্ধি বার না সিংহ বৃত্তকে। বাক্সে ২ বলাতে বার নি

সিংহল দীপে এ বৎসর ব্যয়বাজে মূল লক্ষ টকা অধিক হইয়াছে। গত বৎসর অপেক্ষা এবার তথায় ১৬৬,১৪০ টাকা অধিক ব্যয় হইয়াছে। সিংহল দীপ ভারতবর্ষীয় গবর্ণমে

র কর্তা আহমেদ অধ্যক্ষ তাহার কাজে মার্য গালাগাতক। বলা আসিয়াছে তাহা বলা করিতে তাহার ১০০০ টাকা অধিক হইয়াছে। ইকিনিয়র কল চালাইবার জন্য অধিক লোক চাহিবারে কাগজের উচ্চতা এতি এই ব্যবহার করেন। মরি বাটস পিকল জায়া দিবার সময়ে কাগজকে বিশেষ রূপে ভাং সন্ধ্যা করিয়াছেন। উক্ত খল ব্যবহারের যত উচ্চ রূপ পাওয়া যায়, সংব্যবহারের তত প

তক্ষণ চেন্নাইজ সম্পাদক বলেন কামদ-প্রাচীরে নবাবের প্রদান মতি সাধারণ লোকের অনেক ভয় করিবার চেষ্টা করিতে তাহার শরীর রক্ষা হেতু ৫০০ অশ্বারোহী সেনা নিযুক্ত হইয়াছে। তাহার ইংলণ্ডের বাক্সে

মধ্য ভারতবর্ষে টিকালার স্থাপিত হইয়াছে। সি এ. আর ব্রাউনিং সাহেব বিদ্যালয় সন্ন্যাস ইনস্পেক্টর হইয়াছেন। বর্তমান খ্যাতিমান বিদ্যালয়ে আত্মকৃত্য প্রদান করা হইয়াছে।

আমরা শুনিলাম উত্তো সাহেব বিদ্যালয় লে টেলিগ্রেফ কর্তৃক জিওলজিক্যাল সন্ন্যাস টেলিগ্রেফ সাহেব তাহার কন্ডাক্টর হইবেন। শিক্ষাসংক্রান্ত ডিপার্টমেন্টে টেলিগ্রেফের কি বিশেষ গুণ আছে, আমরা জানিতে পারিতেছি না।

চন্দ্রনন্দন বসু প্রতি করে ২ জন বোম্বেরি সন্ন্যাস নৌকা ডাকাইতি করিয়াছে। সিলি সাহেবের কামিন্দ হইয়া অবদি চেষ্টা ও চন্দ্রনন্দন হইতে হইয়াছে। আমরা প্রায় সব

১৪ই মে বাগীরে তন্নান কত হইয়া গিয়াছে। এদেশেই বা কবে বৃত্ত সংভাগমন ক

দিল্লীগেজেটের কাবুলস্থিত সাংবাদী তা বলেন আদী দোস্ত বখশ খা খেলাতিগ লজি নগরে সৈয়দা উপনীত হইয়াছেন। সুলতান জাম খানসর মদীর জামা তীরে অবস্থিত করিতেছেন। পারস্য দেশীয় গবর্ণ

মাস্তাউ টাইমস সম্পাদক বলেন, মদী-পুরের রাজ নিজ রাজ্যের ভার সমস্ত লত

সিটিন কার সাহেব সন্ন্যাস আদালতের এক জন আতিথ্য প্রদান হওয়াতে তাহার

মাজার এসিডেন্সিতে মিঃ লিখিত
তুলিতে কাকি হইতেছে—

বিধা	কমিত বিধা
মাজুরা	৩৭১।
ডেমেবিলি	১১২৩৩৫।
মইখাকুর	১৮২৪৪৫।
সামেন	১৪,৩০০।
উত্তর কানাকা	০।
দক্ষিণ কানাকা	১৮৪।
মালবার	৮২৫৭২৫।

এই সকল তুলিতে সর্ব স্তর ৫৫০০ মণ
কাকি হইতেছে। ৪১০টি কেন্দ্র আছে।
সেও অন উত্তর। সম্পাদক ভায়দরবাবের ন
একের প্রতি বিশেষ অংশে দৃষ্টি রাখিতে কতি
সাফল্য। তিনি বলেন নবাব ইংলণ্ডের বন্ধু
নছেন, এব সময়ে সময়ে ইংল্যান্ড দিগকে
অপমান করিয়া থাকেন। ইংলণ্ডের বন্ধু
বণা পত্র না হইলে ভায়দরবাব এতদিন অ
বোধ্যার পথে বাইত।

উক্ত সম্পাদক উত্তর পাকিস্তানের স
বাক পত্রের তত্ত্বাবধায়ক মেয়োরের দিগকে
লিখিতছেন “বলিও এডমেন্সীর পত্র সি
হোই হুচক প্রস্তাব লিখিত হয়, তথাপি সে
সমুদায়ের স্বাধীনতা হুবহু উচিত নহে।”
এডমেন্সীর সর্বান পত্র বিব্রোই হুচক প্রস্তাব
লিখনের বিষয় বিনি বা বহুল, এডমেন্সীয় স
বাক পত্রের স্বাধীনতা হুত হইলে গবর্নমে
ন্টকে আকের ন্যায় চলিতে হইবে।

অযোধ্য গেজেট সম্পাদক বলেন, আ
গরায় সম্প্রতি কয়েক জন প্রচেষ্টিত ব্যক্তি
সমুদায় ইটরোপীয় সেনাকে বিনগান করাইয়া
বধ করিবার চেষ্টার আছে। উত্তর পাকিস্তা
নলের প্রায় ১০০ সম্পাদ পত্রই বিব্রোই হুচক
দেখিতেছেন।

সাঁদার হুট প্রাপ্ত প্রত্য সকল বিক্রীত হই
রাছে। অনেক প্রত্য, বিশেষতঃ আকবরী মো
হর অতিরিক্ত মূল্যে বিক্রীত হইয়াছে।

হুগলীতে সম্প্রতি একটি ডাকাইতি হই
য়া গিয়াছে। মাজুরা খানার দিকট বর্তি এক
কোকান হইতে ১০০০ টাকার প্রত্য লইয়া গি
রাছে। এখন আবার ডাকাইতিদিগের অধি
কার হইল না কি?

উক্ত স্থানের বিচারালয়ে এক অসুস্থ মোক
দমা হইয়াছে। এক জন কিরিজি কম্পাউটার
চিকিৎসালয়ের এক দাসীর প্রতি আনন্দ হই
য়া রাজিযোগে তাহার হৃদে প্রবেশ করে।
দাসী তাহার প্রেমের পুরস্কার করেক লাঠী
দিয়াছিল। তদ্রূপে কীরিজি মোকদম
উক্ত মোকদমা কোর্টদ্বারা ১৮৭৭ করিতে
দাসীর জরিমানা হইয়াছে, কিরিজি বেকশ্বর
খানাস হইয়াছে। বিচারী দী হুচক বটে।

এক জন ইটরোপীয় খানাসী এক ব্যক্তি
কে প্রহার করিয়াছিল। সে পুলিশে আনীত
ও গৃহ হইয়া বলিল “আমি যে সে কাল
নিগারকে হারিবা তারতবর্ধের ক্রমে জিরা
কন এই।

২৫এ টেলিগ্ৰাফ কলকার।

খান। গেল, সর মর্ডাউ ডয়েলস আতি ও
হুচক হইতে পারেন নাই, সিংহল বীণে অব
স্থিতি করিতেছেন।

এক জন মিসনরিকে মাজার প্রেসিডে
ন্সি কালেক্টর অধ্যক্ষ করিতে তদ্রূপে কোম
রা অতিশয় অসন্তুষ্ট হইয়াছেন। মিসনরির
নাম কুমিরাইট অসন্তুষ্ট কেন? যথোপদেশ
দিবার বহন আইন নাই, তখন নকা কি?
ডাঃদিগের দ্বারা ধর্ম নীতির উন্নতি হইবার
সবিলেব সম্ভাবনা আছে।

জর্জ ইষ্টন নামক এক জন ইটরোপীয়
এক জন উকীল বোম্বাইকে প্রহার ও তাহার
পালকী ভগ্ন করিয়া তাহাকে কোন স্থানে বা
ইতে করে। বোম্বাই আদালত দিগকে
আজ্ঞান করিয়া সাহেবকে পালকীতে লইয়া চ
লিল। কিন্তু তাহার দিগের স্থানে না থাটয়া
এক কালে পুলিশে লইয়া গেল। ইষ্টনকে পাচ
টাকা জরিমানা হইয়াছে। তৎ নাকি উক্ত
দিগের বুদ্ধি নাই।

নিম্ন লিখিত অতিবর্তনিক মাজিষ্ট্রেটের
পহার ক্রমে হুচক বাকী প্রদান করিবেন :—

কিটক উকীলমণ্ডল হুই বালকোর, জে,
এচ কলকাতন সাংকো, রাজা কালীচক বা
হাঙ্গুর, বাবু রাইগোপাল ঘোষ, এবং বাবু
মাসিক সিংহ দাস।

অযোধ্যা কবিসমর, রাজা লিখিত সিংহ
প্রভৃতি তথ্য সর্ব স্তর ৩৭ টি প্রাপ্ত বধ
করিয়াছেন।

মাজি দিগের প্রতিজ্ঞাইরূপ হইয়াছে।
বহিঃ সম্প্রদায়ের অনুরোধ ক্রমে গবর্ন
মেণ্ট আপনাদিগের পূর্ব আশা রাখিত ন
বা মাজি দিগকে সকল সময়ে অধি রাখিত
অনুমতি দিয়াছেন। তাহাদিগকে কেবল উ
ক্ত উন্নান রাখিতে হইবে। গবর্নমেণ্ট দী
কৃষকদিগের প্রতি একটা কটাক না করেন
কেন?

মিনিক সম্পাদক বলেন, একদেশীয় সং
বাদ পত্রের স্বাধীনতার প্রতি হস্তার্পণ করা
গবর্নমেণ্টের ইচ্ছা নহে। একদেশীয় সম্পাদক
দিগের অতিপ্রায় অবগত হওয়াই তাহাদি
গের অভিপ্রায়, সেই হেতু উত্তর পাকিস্তানে
এক জন তত্ত্বাবধায়ক হইয়াছেন। আমরা
এরূপ এই অনুরোধ করিয়া আসিতেছি।

উক্ত সম্পাদক মিরাটের পে আকিসের
এক জন কর্মচারির খুঁড়তার বিষয় লিখিয়া
ছেন। মঙ্গলাল নামক এক জন কোরাণী দাসী
লোকের নামে হুচি করিয়া তাহা পেয়ারের
দ্বারা স্বাক্ষরিত করিয়া টাকা লইত।
একদা সে বিবি মাক্তোনাল্ড নামে এক ইট
রোপীয় স্ত্রীলোকের নামে ৪০০ টাকার হুচি
কটিয়া তাহাকে তাহার টাকা লইতে বলে।
সে তদনুসারে কার্য করিল, কিন্তু মঙ্গলাল
তাহার অধিকাংশ টাকা লয়। পরে আর এক
বার এই প্রকার করিবার চেষ্টা পাওরীতে সে
গৃহ হইয়াছে। এক জন বহিঃ তাহার সঙ্গে
রুহ হইয়াছে। উক্ত স্ত্রীলোককে হুচিরা দে
ওয়া হইয়াছে কেন?

হরকরার সমলপুরস্থিত সংবাদদাতা ব
লেন তদ্রূপে বিখ্যাত বিব্রোই হুচক সিংহ
আজ সমলপুর করিয়াছেন। আর কয়েক জন
শীঘ্র আত্মসমর্পণ করিবেন। দ্বার এই
কল।

প্রিন্স অব ওয়েলস পুনর্বার এক জন বি
হুইন আরবের হৃদে পতিত হইয়াছিলেন।
কিন্তু তাহার তাহার নাম অবশ্য চলিয়া গি
রাছে। এসব দেশে অমণ করা উচিত নহে।

ইংলণ্ডে সম্প্রতি একটি শোকাবহ ঘটনা
হইয়াছে। ওয়েল নামক এক ব্যক্তি একটি স
প্তমবর্ষীয়া বালিকাকে বিবাহ করিবার
আশা করে। এই ব্যক্তির পূর্বে বিবাহ হয়।
সে স্ত্রী বর্তমান। এই বালিকার তাহার হুচক

জানিতে পারিয়া আত্মবিস্ময়িত হইয়াছে।
প্রায়ই পনিহা পাওয়া যায়, কোটলিপের
কোণে সরল বালিকারা দুই লোকদিগের
চাতুরীতে পড়িয়া উল্লসিত হইতেছেন।
এই দোষের কোজমারী কণ্ঠ বি বিধে নহে
২৬এ জ্যৈষ্ঠ ননিয়ার।

পাঠকবর্গ এই সোমপ্রকাশেই দেখিয়া
ছেন “বেদন কণ্ঠ” তৈমনি কল ৩ নামে এক
খানি অল্পসংখ্যক পত্র হইয়াছিল। রসবা-
জের সহিত প্রতিযোগিতা ৩৩ উহার উদ্দেশ্য।
উহার গুণ রসবাজারের অংশে স্থান নহে।
আমরা শুনিলাম রসবাজার সম্পাদকের
উহারও সম্পাদক গ্রন্থরচয়ী হইয়াছেন। অসি
নবের কল ভোগ কে নিবারণ করিবে? আম-
রা পূর্বে সাবধান করিয়াছিলাম।

হরকরা সম্পাদক নিম্নলিখিত সমাচার টে-
লিগ্রাফ যোগে প্রাপ্ত হইয়াছেন।

১লা মে নিউইয়র্ক। গবর্নমেন্টের মুখ্য আচার
সমূহ নিউজার্সি নগরের সম্মুখে উ-
স্থিত হইয়াছে। উক্ত নগর সমর্পণ করিবান প্র-
স্তাব হইতেছে। বিদ্রোহীরা পক্ষার ট্রেন হ্রদের
নিকটস্থ ভূলা নষ্ট করিয়াছে। বরগার্ড অনেক
গুরুতরী সেনা প্রাপ্ত হইয়াছেন।

১২ই মে লিডরপুল। নিউজার্সি নগর হইতে
গত হইয়াছে। ৫০০ খুদা ভূলা বিক্রীত হই-
য়াছে।

পঞ্চায়ের গব। মেটে উহার সিদ্ধি নষ্ট করে-
ক খানি বাম্পীয় আত্মক রাখিয়াছেন।

২৩এ জুন লেফটেনেন্ট গবর্নর ভগলপুরে
গমন করিবেন।

কিয়দিনস পূর্বে ওরিয়েন্টাল পাবলিশিং
অফিসের ৭৮০০ টাকা লাইসেন্স প্রাপ্ত হইয়াছে।
সে সম্প্রতি ধৃত হইয়াছে।

হরকরা সম্পাদক জনরসে অল্পসংখ্যক
প্রধান সেনাপতি সকল সৈন্য ও সশস্ত্র
আলবার্ট নগরীর মধ্যে তাঁহাদের
বহুতর বেতন দিয়ার অল্পসংখ্যক করিয়াছেন।
সর হিউ রোজ এত সুখ নহেন।

কিমিক সম্পাদক বলেন, বঙ্গদেশীয়
বৈজ্ঞানিক সঙ্কটোত্তীর্ণ হইয়া সাহেব হইয়া
বের বিদ্যার লাইরা গমন করিতে ইতেন সাহে

ব তাঁহর কণ্ঠ করিবেন। হাইল সাহেব ইতেন
সাহেবের কণ্ঠ ও একতরাত্রে সাহেব ২৪
স সাহেবের কণ্ঠ বিহীন হইবেন। কিন্তু আ-
মরা শুনিলাম হাইল সাহেব সাহেব সে-
ট সি উইবেন।

আলবার্ট নগর এক ব্যক্তির রাণী
স্থিত বগীতে বিখ্যাত হত্যাকারী ছিল
দুর্ভাগ্যবশত আত্মকলিঙ্গ হইয়াছে।
তিনি কর্মচারীরা তাঁহার বাড়ি সম্বন্ধে
গমন করেন। আকলাও তাঁহাদের গমন
প্রতিরোধ করিতে তাঁহাকে পেসিফিক
সমর্পণ করা হইয়াছে। প্রাপ্ত জুরি তাঁহাকে
দোষী স্থির করিয়াছেন। তবেই তা।

নিম্নলিখিত মূল্যে গবর্নমেন্টের কাগজ
বিক্রয় হইতেছে।

৪ টাকার	সিদ্ধি	কপাল	২০০	১১
৪ টাকার	কোম্পানির	এ	১০	২৪
৪ টাকার	এ	এ	১১	১১
১১ টাকার	এ	এ	১১১	১১২

সুপ্রিমকোর্ট।

অভিমানী নামক একব্যক্তি ২৪ টাকার
নোট ও ৩৪০০ টাকা নগদ চুরি করিয়া পলাতন
নামক এক ব্যক্তির নিকটে দাখিলে তাহাকে
গের উত্তরের কঠিন পরিশ্রমের ১৮ মাস কারা
বাসের আদেশ হইয়াছে।

উইলিয়ম টিমস নামক এক ব্যক্তি ১০
টাকার এক নোট চুরি করিয়াছিল, তাহাকে
সর্বস্বাস কারাগারে থাকিতে হইবে।

টমাস আলেকজান্ডার নামক এক ব্যক্তি
তাঁহার কন্যা মিস হারিয়েটের কয়েক খানি
অলঙ্কার নগরন করিতে ৩২ মাস
বিচার হইয়াছে।

জন মেডিস, জন ফ্রান্স ও পিটার ড্যানি
এল নামক তিন ব্যক্তি সিন্ধি দিয়ার চেই। পাব
৩০ মাসের কঠিন পরিশ্রমের দুইবৎসর
বিচার হইবে।

নগর পাবলিশিং হিনের কোম্পানি
১০ টাকার নোটের আদেশ হইয়াছে।

নগর পাবলিশিং হিনের কোম্পানি
১০ টাকার নোটের আদেশ হইয়াছে।

কর্তা এক পরাক্রমের বিপর অলঙ্কার নগরন
করিয়া আকর আলি নামক এক ব্যক্তির নিক-
টে রাখে। বালকটির হৃদয় ও তাঁহার আ-
লি দুই বৎসর বিচার হইয়াছে।

দেব করিম সিন্ধি দিয়ার বালিকা তাঁহার
এক বৎসর কারাবাসের আদেশ হইয়াছে।

ডেনরি বিধান নামক ভারতবর্ষীয় বেট
৩২ মাসের এক জন। দ্যবিল্য নগর
৩২ মাসের এক জন। দ্যবিল্য নগর
৩২ মাসের এক জন। দ্যবিল্য নগর

১০ক মে পঞ্চায়েত ইউরোপীয়
সমাচার।

ইউরোপীয় আত্মকলিঙ্গ হইয়াছে।
উক্ত নগর সেনা, দুর্ভাগ্য প্রচীরের আ-
বল কয়েক খানি। কাড়িয়া গিয়াছে। গবর্নমেন্টের
সেনা ১০ মাসের পঞ্চায়েত গবর্নমেন্টের
নগর ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের

গবর্নমেন্টের সেনা ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের

১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের

১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের

১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের

১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের
১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের ১০ মাসের

সিংহাসন দীপ জ্বলন্তব্যের ব্যবস্থাকেও অব্যাহত রাখার প্রস্তাব দিই। রাউন্ড অব কনফারেন্সে আলোচনা হইয়াছে। কিন্তু বস্ত্রেরা এই দীপ জ্বলন্ত করিতে বড় সন্তুষ্ট নহেন।

করাণী মেসার। বেক্রিকো মনস্তাত্ত্বিকের দ্বারা পরিচালিত। ইংরাজ ও স্পেনীয় সেনাবিগকে ক্রিয়ায় আনা হইবে।

করাণী মেসার। হুতপণ শিলাখি প্রদর্শন পূর্ব ও অন্য অন্য সাধারণ দান দর্শন করিতেছেন। আইউজবলগের জাতি সাধারণ সভা তাঁহাদিগকে উক্ত দেশ দর্শনার্থ আহ্বান করিয়াছেন।

আমেরিকার মহাসভা ইংলণ্ডের সহিত সন্ধি করিয়া দান ব্যবসার রূপিত করিবার প্রস্তাবে সন্তুষ্ট হইয়াছেন। তাঁহারা ইরাকী জাহাজের অধ্যক্ষদিগকে যাবতীয় জাহাজ অবস্থান করিবার অনুমতি দিয়াছেন।

অষ্ট্রীয় গবর্নমেন্ট এই অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন যে তাঁহারা অন্য দেশীয় কোন বিষয়ে চর্চা করিবেন না। এবং ইটালির বিষয়ে কেবল আলোচনা করিবার উপায় অবলম্বন করিবেন।

গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বালসালেমীয় লেপ্টেনেন্ট গবর্নরের

আদেশানুসারী নিয়োগ ।

২৬এ মে—সিইউএর জজ এম এ জি সা সা-চের ১৮৬২ অক্টোবর ২১ এপ্রেলের গেজেটে প্রকাশিত ১৮২৮ অক্টোবর ৩ আইন অনুসারে উক্ত জেলায় বিশেষ কমিশনরের কনডা পাইবেন।

নঃগোয়ালের ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মৌলবী মীর্জা মুহাম্মদ ১৮৫৫ অক্টোবর ২ আইনের ৩ ধারা ও ১৮১৯ অক্টোবর ১০ আইন ও ১৮৩৮ অক্টোবর ২৯ আইন অনুসারে তথ্য নিম্নক চৌকির সুপারভেন্টেণ্ট হইবেন।

জি ডবলিউ, এস ডিকসন সাহেব ১০ই মে অবধি মুজেরের এডমিনিস্ট্রেশন ডেপুটি অফিসের এককর্তা হইবেন।

২৮এ মে ডাক্তার আবু বান্দুবারি বরদন সিংহের কোরকণ্ড কমিটির একজন সভ্য হইবেন।

শিলালমহের ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বাহু কান্তিচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় কটক বিভাগে বদলী হইয়া তথ্য কৌজদারি আইনের ২২ ধারানুসারে প্রথম প্রেণির অধীন মাজিস্ট্রেটের কনডা পাইবেন।

পূর্ণিয়ার ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর ডবলিউ মাহমুদ সাহেব সাহরনে বদলী হইয়া তথ্য কৌজদারি আইনের ২২ ধারানুসারে প্রথম প্রেণির অধীন মাজিস্ট্রেটের কনডা পাইবেন।

সাহরনের ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বাহু খোদুলচন্দ্র চৌধুরি পূর্ণিয়ার বদলী হইয়া তথ্য কৌজদারি আইনের ২২ ধারানুসারে দ্বিতীয় প্রেণির অধীন মাজিস্ট্রেটের কনডা পাইবেন।

৩০এ মে—নিম্নলিখিত কনডারিরা আসানে সহকারী হইবেন :-

লেপ্টেনেন্ট এ এম কায়েস, লেপ্টেনেন্ট এ এম ফিলিপ্স, লেপ্টেনেন্ট সি মেসার। বতমিন অন্য কোন আফ্রা না হয় লেপ্টেনেন্ট ই এ ফিলিপ্স হাজারি বাগের অতিরিক্ত সহকারী কমিশনর হইবেন।

৫ই মে—৪র্থ অর্থবা পশ্চিম বিভাগের রেভিনিউ সর্বের নিম্ন লিখিত ডেপুটি কালেক্টরের ১৮২২ অক্টোবর ৭ আইন ও ১৮২৫ অক্টোবর ৯ আইন অনুসারে কালেক্টরের সম্পূর্ণ কনডা পাইবেন।

বাহু মহেন্দ্রনাথ বসু বশোবর, করিমপুর ও বাকরগঞ্জ।

বাহু জর্জাংশীর ঘোষ বাকরগঞ্জ।

১৫ই মে—১৮৫৬ অক্টোবর ২০ আইনের ৩৬ ধারানুসারে কার্য করিবার জন্য বালেশ্বরে যে সভা বর নিম্নলিখিত ব্যক্তিরা তাতার সভ্য হইবেন।

বাহু মির্জাইচরণ দাস।

পদ্মসোহন মণ্ডল।

নিমলসরজন।

ডেপুটি মাজিস্ট্রেট মৌলবী আবদুল্লাহ এক জিকিউটিব ইঞ্জিনিয়ার।

২২এ মে—নাটোর ডেপুটি মাজিস্ট্রেট এক প্রাইটসাহেব।

প্রসন্ননাথ কণ্ডকমিটির এক জন সভ্য হইবেন।

২৯এ মে—লেপ্টেনেন্ট জি এস ফিলিপ্স কলিকাতার সিভিল ইঞ্জিনিয়ারিং কালেক্টর অন্যতর অধ্যাপক হইবেন।

নিম্নলিখিত ডকুমেন্টারা বরদন সিংহের দাতব্য চিকিৎসালয়ের কার্যনির্বাহ কারিগরী সভার সভ্য হইবেন।

জেপি হাটস সাহেব।

টি আর্থার সাহেব।

বাহু কানীকিশোর রায় চৌধুরী।

ডবলিউ কোল বি, এ, সাহেব বিব জাতি-য়ের সাধারণ বিদ্যালয়। কমিটির সেক্রেটারি হইবেন।

৩০এ মে—ই, ই, ওড সাহেব হুগলি কালেক্টর এডমিনিস্ট্রেশন অধ্যাপক হইবেন।

বাহু কুকবল ডকুমেন্ট বি, এ, ডকুমেন্ট সি কলেজের সহকারী অধ্যাপক হইবেন।

৩১এ মে—হুগলি বাহু সাতকান্দি মেম স্কুলের দলীল সভ্যদের রেজিষ্টার হইবেন।

২রা জুন—সি জমদান সাহেব হাবদার এডমিনিস্ট্রেশন সারজন হইবেন।

৩রা জুন—এফ, বি, গিল্প সাহেব মালদহের এডমিনিস্ট্রেশন ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

এ, এম, মাকসুদ সাহেব বেঙ্গলীপুরের এডমিনিস্ট্রেশন ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

ডবলিউ, কেবলসাহেব সাহরনের সহকারী মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর হইয়া কৌজদারি আইনের ২২ ধারানুসারে দ্বিতীয় প্রেণির অধীন মাজিস্ট্রেটের কনডা পাইবেন।

গড়বেতার ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বাহু কনলাকান্ত বসাক বেঙ্গলীপুর ও হুগলি মাজিস্ট্রেটের সম্পূর্ণ কনডা পাইবেন।

মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক মহাশয়ের সঙ্গীপে।

মহাশয়! নিম্নলিখিত সমাজের কর্মকর্তা যদি প্রকাশিত হইবার যোগ্য হয়, তবে অনুগ্রহ করিয়া প্রকাশ করিবেন।

১। পূর্বপক্ষে উক্ত হইয়াছে যে ঘাটে নৌকা লাগিলেই আট আনা পরমা বর্ষকালের রাজ্যকে দিতে হয়। প্রায় তিন মাস হইল দুই জন নালি এই তত্ত্ব দিতে অস্বীকার করিতে তত্ত্ব আদারীদের সহিত বোরডের বিবাদ হয়। অবশেষে নালিরা রাজ্যদানে অভিযোগ করে, নালিদের হুজু হওয়াতে গবর্নমেন্ট করিয়ারী হইয়া বর্ষকালের রাজ্যের নিকট হইতে তৈকিরং চাহিয়া ছিলেন। রাজ্য উত্তর দিলেন যে আদি এবিদের কিছুই জানি না। ইহারদ্বারা শ্রীযুক্ত অখোর দ্বারা তদ্বিন্যাসে এবিদের কথা জিজ্ঞাসা কর। পরে অখোর বাহুকে ধর্মাবিকরণে উপহিত হইবার জন্য আহ্বান হয়। অখোর বাহু উপহিত না হওয়াতে এখানকার ডেপুটি মাজিস্ট্রেট শ্রীযুক্ত এতাপচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় গত পরশ্বৎ

যোরকে খুতকরণার্থ আয়োজন। অর্থাৎ বা-
বু আবার এখানকার রাজবাড়ির উপরিত্যে-
টে। দারোগা দিয়া রাজবাড়ির মধ্যে খোলসাজ
করাতে রাজবাড়ির নিপাতিতা তরবারি ও বন্দু-
ক লইয়া পুজি করিয়া লইল। পরদিন সার সা-
বেহ ও তেপুটি নীচু হইল। তবে অর্থাৎ বাবুকে
খুত করেন। এখানে রাজবাড়ির সজ্জা বাহার।
হিস গলককেই খুত করা হয়, লালজি ঠাকুরের
সেবা। তিনবার বন্ধ হয়। কলা কোন কোন তর-
জোকে রাখিয়া এখিক ওখিক করা হইয়াছিল,
কাছাকে বা গলাখাতা দিয়া এখিক ওখিক করা
হইয়াছিল।

কলতা কলা কালনার মহাসুলভ হই-
য়াছিল। পরিশেষে আমবা এতাপ বাবুকে ধনা-
বাদ না দিয়া আর থাকিতে পারিলান না, ইনি
অর্থাৎ বাবুর একজন বন্ধু, তথাপি বন্ধু না
রাখিয়া আপনাব কর্তব্য কর্তৃ সম্পন্ন করিয়াছেন।

২। এখানে যে একটি ডিপেন্সারি আছে
তাঁহা উঠিয়া বাইবার সজ্জা হইয়াছে, এখানে-
ব লোকের তাঁহা দিতে বিমুখ হইয়াছে, কারণ এ-
খানকার কুতুর্খর দারোগা জিরাম যোব আমহ
লোককে এই বিজ্ঞাপন দেন যে, যেব্যক্তি ডি-
পেন্সারিতে তাঁহা দিবে তাঁহাকে আর তাকরের
কি দিতে হইবে না কিন্তু এখন কার্যেতে সেপ্রকার
হইতেছেন, সুতরাং অনেকে তাঁহা দিতে সন্ম-
কর করিয়াছে।

৩। গত ১২ ই জ্যৈষ্ঠ শনিবার রাত্রিতে বি-
তর্ধিনী সতর অধিবেশন হইয়াছিল। আমার
সে দিন কোন কার্য নাথাকতে আমিও উপস্থি-
ত হইয়াছিলাম। প্রথমতঃ সতর কার্য দেখিয়া
অপ্রসন্ন হইলাম, সেবে জীবননা তাহু দেখীর ক-
বিরাজদিগেব বিবরে একটি মূল্যবান প্রস্তাব পাঠ
করিলেন। এই প্রস্তাব শুনিয়া আমবা যৎপরো-
নাতি পরিতুষ্ট হইলাম।

১৮ ই জ্যৈষ্ঠ ১৮৮২ ই অক্ষ
কালনা।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয়ের শ্রু।

প্রায় ৫। ৬ মাস হইল দীনবন্ধু গায়ের
এখানে আগমন করাতে অনেক সুখের সময়
হইয়াছে।

সম্প্রতি এতদ্রূপে একটি প্রকার কণী সতঃ
সম্প্রদায় কাশীনাথের দাস বি এল, বরোদার
কেন্দ্রিক উদ্যোগ করিয়াছিলেন। কিন্তু কতিপয়
বৃদ্ধ রাজার অসুস্থতায় বিরত আছেন।

বিদ্যালয়ের বড় পরীক্ষাতে এই নগরের
সুখ ভোগ হওয়াতেই বিদ্যালয় শিক্ত ভূবন বাবু
তেপুটি ইনস্পেক্টর হইয়াছেন। প্রধান শিক্ত
চক্র বাবু বাণী এতদ্রূপ করিবার জন্য দুই মহল
টাকা পাইবেন।

আদালতের অধ্যক্ষক নিরিশ বাবু কৌ-
দারীর স্টাটর হইয়াছেন। ইনি শারীরিক ও
মানসিক উভয় গুণেই প্রশংসিত।

সাবারণ প্রেরণ কোন চক্রবর্তীর প্রাণে প্রায়
দেত লক টাকার প্রাণ হইয়াছে। কিন্তু এই প্রাণে
একটিও বিদ্যালয় দেখিতে পাউতেছি না।
বরিসাল।
১৬ ই জ্যৈষ্ঠ।

সামান্যর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয়ের সমীপে শ্রু।

মহাশয়! গত দুই সপ্তাহে অসহ্য গ্রীষ্ম হও-
রাতে পলিপ্রাণে অতিশয় গর্পতর হইয়াছে।
এমন কি লোকে সর্জনা সর্প ইত্যদ্যে পণ্ডিত
থাকিতে দেখেন এবং তদ্রূপক বাণী হইতে
রাতে বহির্গমন করিতে সাহসী হন না। সম-
স্তি কল্যাণতঃ ও চুচুড়ার মধ্যে ৮ জন লোকের
সর্পাঘাতে মৃত্যু হইয়াছে। মহাশয়! সর্পকিতরা-
নক জন্ত! সাক্ষাৎ বনদণ্ডমূল্য, সর্প কবিলেই
লোকের প্রাণ বিহোগ হয়। আবার এই উচ্চ
দেশে সর্পের প্রাদুর্ভাব অধিক দৃষ্ট হয়। তাহা
তে আবার গত বৎসর অতিশয় বর্ষা হওয়াতে
সমুদ্র স্তান বলে পরিপূর্ণ হইয়াছিল সুতরাং
সর্প সকল প্রাণে ও ঘরে আসিয়া আশ্রয় লইয়া-
ছিল, একপ্রাণে আবার গ্রীষ্ম হওয়াতে তাহাব
বাহির হইয়া সমুদ্রাধিকার মগ্নন কবিতোছে।
গর্পমেষ্টের সর্পতর নিবারণ জন্য একটি বে নি-
রব আছে সেই নিরবাসুসারে কার্য করিলে প্রা-
পি হত্যার অনেক হ্রাস হইতে পারে, তাহাদের
আদেশ এই যে, কোন ব্যক্তি সর্পধরিতা সাক্ষি-
ক্টেটের দিকট আসিয়া তাহাব মস্তক ছেদন
কবিলে কিঞ্চিৎ পুরস্কার পাইবে কিন্তু তাঁহারা যে
অল্প পুরস্কার দিয়া থাকেন তাহাতে কেবল মহল।
এতদ্রূপ হ্রাস ব্যাপারে প্রবৃত্ত হইতে চাহে না।
সুতরাং তাঁহাদের কিঞ্চিৎ অধিক পুরস্কার। ৮-
০০ টিট এতৎ সর্জাই এই নিরবাসুসারে বা-
হ্যেত কার্য হয় তাঁহাদের ভূক্তি রাখা উচিত।
সংগতঃ যদি সমুদ্র জেলার সাক্ষিক্টেটের
বন পরিহার ও সর্পবিনাশের নিয়ম এচলিত
কবিতা। যন তাহী হইলে অনেক উপকার হই-
পারে। জিবেণী, হাসিনহর
নাশিতর উপলক্ষে আপনি সর্জাই দেখনী থা-

রণ করিত। দেশের লোক দ্বিগের চিন্তাকর্ষণ কবি-
তা বহু সংখ্যক লোকের প্রাণ রক্ষা করিয়াছি-
লেন একপ্রাণে সর্পতর নিবারণ জন্য লেখনী ধারণ
করুন। সারী তর নিবারণ জন্য কলিকাতার প্রা-
কসমাজের অধ্যাকরণ ও ভারতবর্ষীয় সভার
অধ্যাকরণ যত্ববান হইয়া আসাতিগের দেশের
মান রক্ষা করিয়াছেন, সুতরাং দেশের কোন
প্রকার অসমল উপস্থিত হইলেই তাঁহাদিগকে-
ই অগ্রণামী হইয়া ওমিবারের চেউ করিতে
চাইবক।

৩ জুন সন ১৮৬২ সাল
জিহারাণচক্র চট্টোপাধ্যায়
উত্তরপাড়া।

পত্রপ্রেরকের প্রতি।

গোলপ্রাণের পত্রে বিশেষ সন্ধান নাই,
অতএব তাহা প্রকাশ করা গেল না।

ফুলিয়ার শ্রীযুক্ত বাবু কৈলাস চক্র সনক-
রের বন্ধে একটি বক্তবিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইয়া-
ছে। তৎসংক্রান্ত পত্র অতঃপর দীর্ঘ। তাহা পাঠ
করিয়া পাঠকগণের দীর্ঘ সন্তোষ লাভের সম্ভা-
বনা নাই। এই হেতু তাহা প্রকাশিত হইলনা।
কালনার একখানি পত্র প্রকাশিত হইয়াছে।
তন্নিমিত্ত দ্বিতীয় পত্র প্রকাশিত হইল না।

মূল্যপ্রাপ্তি।

বাহু ভগবান চক্র ভৌমিক কবিতপূর্ব
১২৬২ বৈশাখ হইতে আকিন পর্যন্ত কোং ৫
মেদিনীপুর লাইব্রেরি মেদিনীপুর
১২৬৩ বৈশাখ অবধি আশ্বিন পর্যন্ত কোং ৫
এইচ উদ্দার সাহেব কলিকাতা
১২৬৩ জ্যৈষ্ঠ হইতে ৭০ টাখ পর্যন্ত কোং ১০
পারেশ দাখ চৌধুরী নদীয়া
১২৬২ জ্যৈষ্ঠ হইতে ৭০ বৈশাখ পর্যন্ত কোং ১০
ডবলউ বেভিরাজ সাহেব যশোর
১৮৬২ মে হইতে ১৮৬৩ এপ্রেল পর্যন্ত
কোং ১০
“চণ্ডীচর” খৌব কিরোজপুর
১২৬২ বৈশাখ অবধি চৈত্র পর্যন্ত কোং ১০
“নবীন কুক পালিত বর্ধমান
১২৬২ জ্যৈষ্ঠ অবধি কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫
শ্রীযুক্ত বাবু নারায়ণ প্রসাদ সেন রাজপু
১২৬২ বৈশাখ অবধি চৈত্র পর্যন্ত কোং ১০
“উমেশ চক্র দাস হাবড়া
১২৬৩ জ্যৈষ্ঠ অবধি কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫

এই পত্র কলিকাতার কলিক পূর্ব বাতলা রেলওয়ের
কোলাপুর স্টেশনের নিকট চাকিগেতা গ্রামে শ্রীযুক্ত
হাজীসাদিক বিক্রান্তকণের বাসিতে অতি সোমবার
প্রাতে প্রকাশিত হয়।

সোমপ্রকাশ

৫৩

“প্রবর্তনঃ প্রকৃতিহিত্যঃ পার্থিবঃ সরস্বতী প্রতিমহতী ন হীবতাঃ

৪ ভাগ।
১১ সংখ্যা।

সন ১২৬২ । ৩ আষাঢ় । ইং ১৮৬২ । ১৬ জুন

মূল্য ১ টাকা
ব যিক অগ্রিম ১০ টাকা।

সোমপ্রকাশ।

৪ ভাগ। আশা নোমবার।

মাক্কেটের মজুরদিগের

সাহায্য চান।

যে পরিমাণে যে দেশের সত্ততা বর, সেই পরিমাণে পৃথিবীর অন্য অন্য ভাগের সত্ততা তাহার সম্পর্ক হইয়া পরস্পর সর্বশেষ উপকার লাভ হইয়া থাকে। একপ যেমত দেশ সংসর্গে যে পরিমাণে অন্য অন্য দেশের উপকার লাভ হয়, সেই সত্তা দেশের বিপৎপাত হইলে অন্য অন্য দেশের সেই পরিমাণে অনিষ্ট ঘটিয়া উঠে। ইংলণ্ড ও আমেরিকার বিষয়ে অবিকল এই ঘটনা হইয়াছে। ইংলণ্ড ও আমেরিকা উভয় দেশ পরস্পর সম্পর্কে এতদিন পরস্পর লিঙ্ক লাভবান হইতেছিল, সম্প্রতি আমেরিকার গৃহবিচ্ছেদ হওয়াতে এই উভয় দেশই সঙ্কটে পড়িয়াছে।

ইংলণ্ডের সঙ্কট আপাততঃ মাক্কেটের মজুরেতেই স্পষ্ট লক্ষিত হইয়াছে। আমেরিকা হইতে ভুল আনয়ন বন্ধ হওয়াতে মাক্কেটের মজুরদিগের চাপ দাড়া বন্ধ হইয়া গিয়াছে। তাহার অল্প দিনা বিপদগ্রস্ত হইবার উপক্রম হইয়াছে। তাহাঙ্গের সাহায্যার্থ চাঁকা হইতেছে। টাইমস অথ ইন্ডিয়া সম্পাদক একত্রিত্বের সাহায্য দানার্থ এদেশীয়দিগকে আকর্ষণ করিয়াছেন। হিন্দুপেট্রিট ও ইন্ডিয়ান ফিল্ড সম্পাদকেরাও তাহার

অনুমোদন করিয়াছেন। আনন্ড ও সম্পূর্ণ করণে এবিধের এদেশীয়দিগের শক্তি বিনিয়োগের অনুরোধ করিতেছি। আমরা যে দেশে থাকি না কেন, বিপদা পন্ন ব্যক্তিদগের বিপদুদ্যার চেষ্টা সর্বতোভাবে বিধেয়। বিশেষতঃ ইংলণ্ডের সহিত এদেশের পরস্পর উপকার ও উপকারক ভাব সম্বন্ধ হইয়াছে। সেদিন ইংলণ্ডের উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের দুর্ভিক্ষে দানশৌণ্ড তা প্রদর্শন করিয়াছেন। এদেশীয়েরাও আয়লণ্ডের দুর্ভিক্ষকালে সাহায্য দানে বিমুখ হন নাই। কিন্তু আমরা কিনিয়া সম্পাদকে র একটি আশ্চর্য ব্যবহার দেখিলাম, তিনি বলেন “যতদিন একপ জানা না যাইবে যে ইংলণ্ড হইতে মাক্কেটের মজুরদিগের সম্ভাব্যক সহায়তা হইবে না, ততদিন তার তবর্ষীয়দিগের নিকটে সাহায্য গ্রহণ উচিত নহে। ইহা বাস্তবঃ পর গর্ব করি বেন যে ইহারা অস্বাভাবে প্রিয়মাণ ইংলণ্ড বাসী দিগের সহায়তা করিয়া ছেন।”

ইংলিস্তান সম্প্রদায় প্রকৃতি একপ কহিলে আমরা বিশ্বাসপন্ন হইতাম না। তাহাদিগের মন অনুসব তাবে পরিপূর্ণ, কিন্তু কিনিয়া পত্রকে এবিধ অনৌদার্য্য দোষ দূষিত বলিয়া আমাদিগের সংকার ছিল না। ইংলণ্ড ও তারতবর্ষ উভয়ই এক রাজার রাজ্য। এই উত্তর রাজ্যের প্রজাগণের পরস্পর বধ্য বাধ কতা হইয়াছে। সৌহার্দ্য হয়, ইহা কি

প্রার্থনীর নহে, পরস্পর উপকার করা কি সৌহার্দ্য বন্ধনের প্রধানতম উপায় নয়? এক জন প্রাচীন সংস্কৃত কবি কহিয়া গিয়াছেন, সহজ ও প্রাকৃত মিত্রতা ও শত্রুতা অপেক্ষা উপকার ও অপকার নিবন্ধন যে মিত্রতা ও শত্রুতা জন্মে, তাহাই গরীরনী।*

কুরি।

“কুরি দ্বারা বিচারের প্রথা ইংরাজদিগের স্বাধীনতার প্রধান উপায়।” স্যাক্সটোন।
১৮৩১ খৃঃ অব্দে ক্রাফ ও জর্জগির কয়েক জন প্রধান ব্যবস্থাপক এই অভিপ্রায় প্রকাশ করেন যে কুরি দ্বারা বিচার প্রথা টুট সাধনীয় নহে। ভবিষ্যৎ এই উভয়দেশে এই বিচারের তদ্বানুসন্ধানার্থ এক এক সভা হন, উভয় সভাই ভিন্ন ভিন্ন প্রকার সিদ্ধান্ত করেন। করানী সভায় হির হইল, কুরি প্রথা অনিষ্টকারিনী নয়। পক্ষান্তরে

* সখা গদীরান শত্রুত্ব কৃতমস্তৌহি কাযাঃ।
না।তামিনীয়ে বিবেচ সমল প্রাকৃতাবপি ॥
মাঃ।

কৃত্রিম (কাবণ বশতঃ জাত) শত্রু ও মিত্র গরীরান্। যে যেতু উহার উপকার ও অপকার দুপ কার্য্য বশতঃ শত্রু ও মিত্র হয়। সহজ (সহ জাত অর্থাৎ এক শরীরাত্মক জাত) শত্রু ও মিত্র এবং প্রাকৃত (প্রকৃতিজ) শত্রু ও মিত্র। ইংলণ্ড ও উপকারাপকার নিবন্ধন মিত্র ও শত্রু হইয়া থাকে। সহজ মিত্র নাড়কুণ্ডে যাদি পিহুসুগেয়াদি ও সহজ শত্রু পিহুবা তৎ পুত্রাদি, আপনাব বিষয়ে পর দ্বার বিষয় থাকে, সেই প্রাকৃত শত্রু ও তাহার পদ দ্বারা বিষয় সেই প্রাকৃত মিত্র।

জন্মগরি ২২ স্থির করিলেন। এখান
অনিক্ত নিম্ন ইট হয় না। অন্তর, জন্ম
গির কোন কোন স্থানে এই প্রথা উঠিয়া
গেল। কিন্তু মরানী সজাট লুই কিলিপ
ক্লাস হইতে উহা উঠাইয়া দিতে সাহসী
হইলেন না।

যদি স্থির চিন্তে জুরি প্রকার দোষ
গুণ বিবেচনা করা যায়, ইহা কোন ক্রমেই
অনিষ্টকারী বলিয়া প্রতীয়মান হয় না।
যে বিষয় একাধিক ব্যক্তির বুদ্ধি দ্বারা বি
বেচিত হয়, তদ্ব্যবহার করিয়া তাহার যেকোন
সুস্থ বিচার হইয়া থাকে। একের বুদ্ধি
দ্বারা সেকপ হইবার সম্ভাবনা নাই। একের
বুদ্ধি সকল সময়ে সকল বিষয়ের অব্যাহত
ভেদ বেঁধে সমর্থ হয় না। তবে যে জুরির
বিচারে দোষ দেখিতে পাওয়া যায়, সে
কেবল বিচারকর্তার ও জুরি মনোনিষ্ঠ
করিবার দোষে হয়। জুরি ও বিচারকর্তা

উভয়ে ভাল হইলে বিচার ভাল হয় সন্দেহ
নাই। জুরি দ্বারা বিচার এমনি প্রশংসা
পায় ও ইহা দ্বারা সবিচার হইবার এত
সম্ভাবনা আছে যে ইংলণ্ডীয় বারগেণা
(মদান জমিদারেরা) মাদ্রাসা চার্জ না
সহ স্বাধীনতার মহাসম্মেলন গ্রহণ সময়ে প্র
কাশ্যরূপে রাজার দ্বারা এই কথা লিখা
হইয়া লইয়াছিলেন যে “প্রত্যেক ব্যক্তি
জন্মের সমকক্ষ ব্যক্তি দ্বারা বিচারিত হই
বেন।”

এই উৎকৃষ্ট বিচার প্রথ এদেশে প্র
চলিত হওয়াতে আমরা এর বাণেশ পিক
কের নিকটে কণী আছি। ইহাও চেষ্টা
করি এই বিষয় এদেশে প্রবর্তিত হয়।
কিন্তু বিচারপতির ও জুরি মনোনিষ্ঠ ক
রিবার দোষে বাঁড়ের গোময়ের ন্যায় ইহা
এক প্রকার অব্যবহার্য হইয়া উঠিয়াছে।

বিচার পতির দোষে জুরির বিচার যে
সমর্থ হয়, আমরা তাহার অনেক উদাহরণ
পাইরাছি। জুরিরা এক প্রকার মত প্রকা
শ করিলে যদি তাহা জজের অনতিমত

হয়, জজ দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার তাঁহাদিগ
কে পুনর্বিচার করিতে বলেন, কলঙ্ক যত
কণ বিচারপতির অন্তিমত মত দেওয়া
না হয়, ততকণ তাঁহাদিগের নিকৃতি পা
কে না। অনেক স্থলে জুরিদিগকে অপমান
সহ্য করিতে হয়। জজের বিচারালয়ে ব
সিয়াই তাঁহাদিগকে পক্ষপাতী ও অনতিমত
বলিয়া থাকেন। সে দিন হুগলির অতিথি
জুজ বর্চ সাহেব এফ মিথ্যা খুশী মকদ্দ
মায় প্রধান জুরি বাবু দারকানাথ চক্রবর্তি
কে “মূর্খ” প্রভৃতি শব্দ প্রয়োগ করিয়া
গালি দিয়াছেন। জুরি জজের মতে মত
দিয়া এক জন নিরপরাধ ব্যক্তির কাঁশীর
পরামর্শ দিলেন না বলিয়া বর্চ সাহেবের
ক্রোধেব পরিসীমা ছিল না। লণ্ড সাহে
বের মকদ্দমায় সর মডাটওয়েলস যেকোন
জুরিদিগের অগ্রো মকদ্দমায় অবস্থা বর্ণন
করেন, তাহা কাহারও অবিলম্বিত নাই।

বিচারপতির দোষের ত এই কথা
পেগ। জুরি মনোনিষ্ঠ করিবার দোষ এই,
অনেক স্থলে মতি অসার ও অপদার্থ
ব্যক্তিরাও জুরির পক্ষে প্রতিষ্ঠিত হইতে
ছেন। তাদৃশ ব্যক্তির দ্বারা যত সং
সুস্থ বিচার হইবার সম্ভাবনা আছে, তদ্বি
ষয়ে অধিক বাক্যব্যয় করা বিকল।
আমরা গবর্নমেন্টকে জুরিদিগের
বিষয়ে মনোযোগী হইতে অনুরোধ
করিতেছি। বিচারকর্তারা জুরিদিগের
অপমান করিলে কোন কৃতবিদ্যা তত্ত্ব লো
কে জুরি হইতে চাহিবেন না। মূর্খ লোক
দিগকে জুরি করা বিচারের অবমাননা মাত্র।
জজেরা মকদ্দমায় অবস্থা বর্ণন করিবার
সময়ে আপনার মত প্রকাশ করিতে পা
বেন সন্দেহ নাই। কিন্তু ইংলণ্ডীয় টিণ্ডাল
ও লাড টেণ্টাডেন প্রভৃতি বিচারপতি
রা নিয়ন্তকাল এই স্বত্বের অনুসরণ করিয়া
কাব্য করিতেন না। মত প্রকাশ করিবার
অধিকার আছে বলিয়া বিচারপতি কখন
জুরিকে একথা বলিতে পারেন না যে

“আপনারা এই প্রকার মত দিবেন।”
এদেশের বিচারপতিরা এই প্রকারই ক
চিয়া থাকেন। সুবিখ্যাত আইনজ্ঞ লাড
কে’ক বলিয়াছেন “জুরি সাক্ষীদিগের
বাক্য অনুসারে আপনারদিগের মত প্রকা
শ করিবেন।” এদেশে কি তাহা করিতে
দেওয়া হইতেছে?

গবর্নমেন্টের নিকটে আমাদের বিচার
একটি অনুরোধ আছে। মকদ্দমে এই নি
য়ম আছে হত্যা প্রভৃতি হইলে এক জন
চিফ জজ মত ব্যক্তির দোষ ক্ষেদ কবিয়া
যে কথা বলেন, তাহাই প্রমাণ হয়। গ
বর্তী টিকেনসক সুচারুরূপে নিজ নিজ
কর্তব্যকর্ম সম্পাদন করিবেন, একপক্ষ
কথা দিওন না। এই নিয়মের দোষে
অনেকস্থলে অমরণ্য বিচার হইয়া থাকে।
অতএব মকদ্দমে করণায়ের জুরির
নিয়মকর্য ফল্য। কোন স্থলে হত্যা হই
লে যদি কবেক জন তত্ত্বলোক জুরি হই।
তদ্বিষয়ের প্রথম বিচার করেন, হত্যা গো
পন করা সহজ হইবে না।

পরিণেবে আমাদের বিচার বড় ব্য এই,
ব্যবস্থাপকসভার এদেশীয়দিগের প্রবেশা
ধিকার দান, উচ্চতম আদালতের বিচার
কর্তৃপক্ষে এদেশীয়দিগের নিয়োগ প্রভৃ
তির ন্যায় জুরি দ্বারা বিচারপ্রথাও এদে
শের সমধিক উন্নতিকারিণী সন্দেহ নাই।
কিন্তু ব্যক্তি বিশেষের দোষে যদি তাহার
প্রতিবন্ধ হয়, তাহার পর কোত আর
নাই

অমৃত্য ইউরোপীয় ও সুপ্রি.

মকোর্ট।

সুপ্রিমকোর্ট বদার্থই জেনি বিশেষের
জর পরাজয়ের স্থান হইয়াছে। এখন এদে
শীয় কোন ব্যক্তি অপরাধ করেন, তখন সু
প্রিমকোর্টে তাহার গুরুতর দণ্ড সিদ্ধান্ত ক
রাই হয়। কিন্তু ইউরোপীয় দোষী হইলে
প্রথমতঃ তাহাকে মুক্ত করিবার উপায় অ

বেষণ করা হয়, নিজস্ব উপায়না থাকিলে সামান্য দণ্ড দিয়া জাহাঙ্গিরে মুক্ত করা হইয়া থাকে। আমরা অনেক বার সেগিরিরাহি যে অপরাধে এক জন এদেশীয় বীণাভরিত হইল, সেই অপরাধেই এক জন ইউরোপীয় বড় অধিক ছয়মাস কারাবাসে রহিল।

পাঠকবর্গ হিলি নামক ছুরাচার বিষয় অবগত হইয়াছেন। মার্চমাসের আরম্ভে কলিকাতায় সংবাদ আসিল, সেই ছুরাচার আকলাও নামক রানীগঞ্জস্থিত এক ইউরোপীয়ের বাটতে আছে। অদনুসারে তিন জন পুলিশকর্মচারী ও রানীগঞ্জের সহকারী মাজিস্ট্রেট টুইডি সাহেব আকলাওর বাটী অনুসন্ধান করিতে গমন করিলেন। আকলাও মাজিস্ট্রেটের অভিযোগ অবগত হইয়া তাঁহাকে গালি দিয়া বাটী হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দিবার চেষ্টা পাইল। স্থানিতে পাই সে তাঁহার গায়ে হাত ও তুলিয়াছিল। মাজিস্ট্রেট তথাপি জিন্ করিতে আকলাও বলিল “তোরা পাঁজি খে সাহুদে গা.গমেটের চাকর।” এই কথা অনেক গালি দেওয়াতে মাজিস্ট্রেট তাহাকে সেগিরনে সমর্পণ করেন। দণ্ড বিধানের আইন অনুসারে এটি গুরুতর অপরাধ সন্দেহ নাই। কিন্তু সুপ্রিমকোর্টে গত বুধবার এ বিষয়ের বিচার হইয়া আকলাও মুক্তিলাভ করিয়াছে। সাক্ষিবাক্য দ্বারা তাহার দোষ সপ্রমাণ হয়, প্রধান বিচার পতিও তাহাকে দোষী স্থির করেন, কিন্তু জুরি মহোদয়েরা তাহাকে মুক্ত করিয়াছেন। জুরি মহোদয়েরা বিচার তার পাইয়াছেন, যা মনে করেন, তাই করিতে পারেন, ধর্ম্য ত পয়ের কথা, আপাততঃ ভারতবর্ষের ক্রিকেটে শান্তি রক্ষা হইবে, তাহার কি স্থির করিলেন -

আমরা আবার শুনিলাম জনরূপের অপরাধ মার্জনা জন্য ইউরোপীয়েরা আবেদন করিবেন। সে ব্যক্তি যেহা পূর্বক মনুনা বধ করিয়াছে, ইহা স্পষ্ট প্রমাণ হইয়াছে,

তথাপি তাহার জীবন রক্ষার চেষ্টা করা হইতেছে। যদি এদেশীয়দিগকে হত্যা করিয়া মকল ইউরোপীয় এইরূপে মুক্ত হয়, এদেশের মকল কোথায়? বর্ণ শুদ্ধ হইলেই কি যে সে ছুরাচার বহুদলে আমা দিগের আশ্রয় বধ করিতে পারিবে?

আমরা বৈরনির্ব্যক্তনাথী নহি, মনুষ্যের প্রাণদণ্ড দর্শনে আমাদিগের উৎসাহ ও অনুরাগ নাই, তবে যে আমরা এবিধ বিচারের প্রতিবাদ করিতেছি, তাহার কারণ কেবল ভারতবর্ষ রক্ষার উদ্দেশ্য। অত্যন্ত ইউরোপীয়েরা যদি মনুষ্য হত্যা করিয়া বহুদলে অব্যাহতি পায়, তাহাহইলে ভারতবর্ষে বাস আর মসর্ণ গৃহে বাস উভয়ই তুল্যরূপে পরিগণিত হইবে সন্দেহ নাই।

এদেশীয় দিগের ইংলণ্ড

গমন

এদেশীয়েরা ক্রমে ইংলণ্ডে পথ পাড়িলেন। ১৮৩১ খৃঃ আবে রামমোহন রায় বিলাত গমন করেন, তাহার পূর্বে ঐ পথ এদেশীয়দিগের সম্বন্ধে অজ্ঞান ছিল। ঐ মহানুভব কেবল এদেশের ধর্ম ও আচার ব্যবহারাদির সংশোধনকারী ছিলেন না, অনেকবিধ শুভ পথ প্রদর্শন করিয়া যান। তদবধি অনেক গুলিকে ক্রমে ক্রমে ইউরোপে গমন করিতে দেখা গেল। এক্ষণে যাহারা যাইতেছেন, তাঁহা দিগের দৃষ্টান্ত সমধিক কলোপধারী হইতেছে। সে দিন আমরা বাবু দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর ও রায় রামলোচন ঘোষের পুত্রের ইংলণ্ড গমন সমাচার পাঠকগণের গৌরব কবিরাহিলাম। আদি এক জন লক্ষ্যপ্রতিষ্ঠ বিদ্যান ব্যক্তির বিলাত গমন সঙ্গত প্রকাশ করা যাইতেছে। সেই ব্যক্তি মাইকেল মধুসূদন দত্ত। প্রথমোক্ত দুই ব্যক্তি নিম্নলিখিত সর্বিস পরীক্ষার্থী হইয়া গমন করিয়াছেন, শেখোক্ত ব্যক্তি বারিকট হইবার বাসনায় গিয়াছেন।

মাইকেল মধুসূদন এক জন উপযুক্ত লোক। ইনি সংস্কৃত, বাঙ্গলা, ইংরাজী, লাতিন প্রভৃতি কয়েকটি ভাষা জানেন। তিনি যে উদ্দেশ্যে যাইতেছেন, তাহাতে নীতি কৃতকার্য হইতে পারিবেম সন্দেহ নাই। তাঁহার ঐ সকল ভাষা কার্যকালে সবিশেষ সহায়তা করিবে। এবিধ পণ্ডিত ব্যক্তির যদি ইংলণ্ডে যান, রাজপুরুষেরা আমাদিগের সম্বন্ধে যে সকল বিষয়ের দার রূপ করিয়া রাখিয়াছেন তা। অচিরকাল মধ্যেই উলটিত হয়।

পূর্বে লেখাপড়ার তাদৃশ চর্চা ছিল না। কুসংস্কার ইংলণ্ড গমনের একটা প্রধান প্রতিবন্ধক ছিল। এখন অপেক্ষাকৃত অনেকের জ্ঞানের বিস্তার আলোক সঞ্চার হইয়াছে, কুসংস্কার অনেকের জ্ঞান হইতে প্রস্থান করিয়াছে। তথাপি আমরা অধিক সংখ্যা লোককে ইংলণ্ড গমনে উৎসাহ দেখিতেছি না। ইহার তিনটি কারণ প্রধান রূপে আমাদিগের বোধগম্য হইতেছে। প্রথম, অলীকলোকতর কুসংস্কারের স্থানপ্রাপ্তি হইয়া কতকগুলি লোকের জ্ঞানে আধিপত্য গ্রহণ করিয়াছে। দ্বিতীয়, কতকগুলির ইংলণ্ড গমনে বিলম্ব অনুরাগ আছে, তাঁহারা স্থান লোকতরও করেন না, কিন্তু অর্থ সঙ্গতি বিরহে কৃতকার্য হইতে পারিতেছেন না। তৃতীয়, কতকগুলি স্বদেশ পরিত্যাগ করিয়া পাতৈক গমনেও উৎসাহী নছেন। যে কারণ হউক, যত দিন এদেশীয় অধিক সংখ্যা লোক বিলাত গমন না করিবেন, ততদিন রাজ্যসম্বন্ধে এদেশীয় দিগের সম্যক উন্নতিলাভ সম্ভাবনা নাই। ততদিন রা. ৩১ ও প্র. ৩১ উভয়ের তিরতাবও দূরীভূত হইবেন। “ক্রিষ্টি কানীরা” যে এদেশে এত প্রভু করিতেছেন, তাহার কারণ কি? আমাদিগের বিনেশগমনবিমুখতাই তাহার অন্যতর কারণ। “ক্রিষ্টি কানীরা” বহুদলে ইংলণ্ডে আমাদিগের দোষ প্রতিপন্ন করিয়া ইষ্টসাধন করিতেছেন, কিন্তু অ.

তাহার প্রতিবাদ করিয়া আত্মতুষ্টি সন্ধান করিতে পারিতেছি না। অন্য কথা কি, আমাদের লগ্নমত সমাজ বাতাস (ইনি বঙ্গদেশের লোক) নীলকর বিগের বাক্যে বিমোহিত হইয়াছেন। ইংলণ্ডে এক্ষণে শিল্প বিজ্ঞানাদি ব্যবসায়িক উৎকর্ষের পুরা কাটা হইয়াছে। এই সকল বিষয়ে আমাদের সর্বশেষ মৈথুণ্য লভের ইচ্ছা জন্মিলে এখন ইউরোপ গমন বাতিরেকে মনোরথ সম্পন্ন হইবার সম্ভাবনা নাই। যতদিন এদেশে এই সকল বিষয়ের সমীচীন জীবিত না হইবে, ততদিন ইউরোপ গমনই আমাদের তত্ত্ব বিষয়ে প্রগাঢ় যত্নপাতি লাভের একমাত্র উপায়।

মাইকেল মধুসূদন দত্ত ইংলণ্ড যাত্রা কালে বঙ্গভূমিকে সন্মোদন করিয়া যে কয়েকটি কবিতা লিখিয়াছেন, তাহা এখানে প্রকাশিত হইল।

বঙ্গভূমির প্রতি।

বেথে, মা, দাসেবে মনে, এ মিনতি কবি গদে।
গাথিতে মনের সান,
যটে যদি পবনাদ,
মধুসূদন কবে না গো। তব মনঃ কোকনকে!
এবং, মৈত্রেয় বংশে,
জীবিতা যদি খসে
এ দেশে আবাস করে, — নাহি খেদ তাহে।
চক্ষু মরি হইবে,
অগ্নি কে কোপা কবে, —
চিন্তিব কবে নীর, হায় বে, জীবন নদে?
কিন্তু যদি বাগ মনে,
নাহি, মা, তব মনঃ
মল্লিকা গলে না গো, পড়িবে ৩০
সেই বন্য নবলসে,
লোকে যবে — তব ভুলে,
নবনব মন্দিরে নিত্য সেবে মন্দির
কিন্তু কান গুল অছে,
বাঁচিবে যে তব কণে,
হেন অনন্ত জাতি, কহ, হে শ্রম, কখন
তবে যদি মরুক,
তুল দোহ, ওখ ধর,
অমর কবিতা বর দেহ কখন, সুবন্দে! —
কুটি বৈদ্য শ্রুতি মনে

মানসে, মা, মধ্য কলে
মধুসূদন ভাষন কি বসন্ত, কি শরদে!
খিদিরপুর ১২৬৩।

১৩ই এপ্রেল ১৮৭২।

প্রিয় সম্পাদক, আমেরিকা হইতে এমত সংবাদ আগত হইয়াছে যে হেনরী লর্দ সাইড অধিরোধে বোর্ফোর্ট দুর্গ অবিলম্বে করিয়াছেন। মেক্স নামক দুর্গে অত্যাচারী কনফেডারেট সৈন্য গ্রহিয়াছে, কিন্তু তাহাদের 'রসদ' পাঠ্যবদ সম্ভাবনা নাই। ৭০০০ কনফেডারেট সৈন্য করিয়া নামক স্থানে একত্রিত হইয়াছে, এবং স্থানান্তরে ২০০০০ একত্রিত বলিয়া শুনা যায়। 'অবি লবে উত্তর পক্ষের এক ঘোরতর যুদ্ধ হইবার সম্ভাবনা আছে। সেক্রেটারি সম্মত রাষ্ট্রসভা মধ্যে এক চৌধ বক্তৃতা করিয়াছেন এবং তাহাতে মূল্য দিয়া কলম্বিয়ার দাসদিগকে মুক্ত করা উচিত ইহা প্রতিপাদন করিয়াছেন। কনফেডারেটদের রাজসভার সোএন নামক সভ্য এমত প্রস্তাব করিয়াছেন যে উৎকর্ষ হইতে দুর্ভাগ্যকে প্রত্যাখ্যান করা, এবং উক্তদেশ হইতে কনফেডারেটদের স্বাধীনতার অস্বীকারপ্রত্যাশা পরিত্যাগ করা উচিত। পূর্বে ইংরেজেরা কনফেডারেটদের পক্ষ হইয়াছিলেন, কিন্তু এক্ষণে তাব পরিবর্তন করিতেছেন।

গত ১৩ই জাপানদেশীয় প্রধান রাজপুত্র শ্রীযুক্ত টাকেনো উচি-সিমমুসু নো-কামী পারিসের রাজনৈকসভানে সম্রাট কর্তৃক সম্মানপত্র গৃহীত হন। রাজপুত্র সম্রাটকে সন্মোদন করিয়া বলিলেন 'মহাবাজ' মিত্রা এবং টেকনের আশ্রয়সারে আমরা অল্প সময়ের সময়ে উপস্থিত হইলাম। জাপানের মিত্র করাতীশদেশের যে সন্ধি স্থাপিত হইয়াছে, তাহারা উত্তর জাতির পরস্পর মিত্রতা ও মিত্র প্রগাঢ়ত্ব হইবে, এই হেতু আমাদের মিত্রতা স্বীকার করিয়া হস্তলিখিত এই লিপিমহা প্রস্তাব প্রদান করিবার তাব আমাদের প্রতি প্রণয় করেন এবং এমত অস্তিত্ব প্রকাশ করিয়াছেন যে নাকি অস্বাভাবিক করিয়া রাখা উচিত একান্ত মানস। আমাদের মহারাজের ১৩তম জন্মবার্ষিকীর আনন্দে এই সমস্ত প্রার্থনা

করিতেছি যে করাতীশ দেশীয় এক যুদ্ধ-পোতা দ্বারা আমরা যথেষ্ট প্রভি প্রেরিত হই। আমাদের প্রাথমিক প্রার্থনা এই যে মহারাজ সপরিবারে সুখভোগ করিতে থাকুন এবং করাতীশ জাতির মঙ্গল হইক ও সম্রাট এই উত্তর দিনেন 'আমি আশা করিতেছি যে সন্ধি স্থাপন দ্বারা মঙ্গলোৎপাদন হইবে। জাপানীয়া যুদ্ধাশীশদেশে আসিয়াছেন, আমাদের রাজ্যের মঙ্গল ব্যর্থ রূপে প্রতীত হইবেন। আপনারা এদেশে যে রূপে গৃহীত হইবেন এবং যে রূপে স্বাধীনতা ভোগ করিবেন, তাহারা অস্বাভাবিক জানিবেন যে অতিশয় সন্তোষের সহিত এক প্রধান ধর্ম। আমি আশা করিতেছি যে জাপানীয়া এক যুদ্ধপোতা দ্বারা কলম্বো প্রেরিত হন। জাপানীয়া যখন প্রত্যাখ্যান করিবেন, তখন ইউরোপ দেশের সুপ্রাচ্যতবেদ সন্ধি এই বোধ করিয়া হইবেন যে জাপান সাম্রাজ্যের সহিত সম্মত রূপে কর, আমরা সর্বত্র তাহা সাধন করি।

পৃথিবীতে যে বস্ত্র দ্বারা মনোপাশ লাভ হইবে, তাহা যদি অপব্যবহারের মতানুসারে উপাধন করে। সম্রাট ও শিল্পবিদ্যার যত উন্নতি হইতেছে ততই মনুষ্যের মঙ্গল ও সম্রাট উত্তম পক্ষ পরিত্যক্ত হইতেছে। যে বা-সীশ্বরধর্মোৎসে এক ব্যক্তি, অতি দুর্ভাগ্য হইতে গিয়া যুদ্ধ শিতার সহিত সাক্ষাৎ করিয়া চরিত্র্য ও তত্ত্ব রহস্যেরা এক জনের সন্ধি স্থাপন করিয়া নিম্নে মধ্যে প্রদান করে। লোভিত্রব্যের দ্বারা পৃথিবীর কত মঙ্গল। কিন্তু তাহা এক্ষণে মনুষ্য মনোরম ভরকর উপায় হইয়াছে। আমেরিকা করাতীশ ও টেকন এই তিন দেশে এক প্রকার অকৃতপূর্ণ ও প্রকৃত লোভ যন্ত্র প্রস্তুত হইতেছে, উহা পোতা বিশেষ। উহাতে অতি অল্প বুদ্ধি কৌশলের আবশ্যক, কিন্তু উহা পৃথিবীকে ছিন্ন ভিন্ন করিবার অমোঘ উপায়।

প্রতিবাদের ১লা আষাঢ় তত্ত্ববর্ষ ও টেকন অঞ্চলে ইংলণ্ডের যত নাবিকসৈন্য আছে, তাহার বিবরণ পার্লিমেণ্টে উপস্থিত হইবে, গত ১লা আষাঢ়ের বিবরণ এই পোতসংখ্যা ৩৮০ টি

ন্য ৩২৮২ : বেডন ১০৭,৮৫০ টাকা : পাইলট
দি ১৩১,০০০ টাকা : বাসেল ১,১১৫,৮০০
টাকা : করলা ২২৬,৫০০ টাকা : ইনফান্ট্রি ১
৩,৫৫০ টাকা : সর্বশেষ বার্ষিক ব্যয় ৪,৫৬০,৫-
৮০ টাকা।

আপনার পাঠকেরা অবগত থাকিবেন যে
কুম্ভাঙ্গরসাগরের বুদান দ্বীপ সকল এক একা-
র ইংলণ্ডের অধীন : তৎকালীয় অধিবাসীরা
যা না প্রকারে বিপীড়িত হইয়া শাসনকর্তার
নিকট এক আবেদন পত্র অর্পণ করেন : কিন্তু
একপ আবেদনে যে রূপ উত্তর সাধারণতঃ
প্রদত্ত হইয়া থাকে, তাহারা সেই রূপ উত্তরই
প্রাপ্ত হইরাছেন।

উক্ত পত্রের এক জন সংবাদদাতা
লিখিয়াছেন : যে আফিকার দাস ব্যবসায় পূর্ন-
বৎ চলিতেছে : এবং যদি ইংলণ্ড আমেরি-
কার দাসদের প্রস্তুত তুল্য প্রকৃতি এবং গ্রহণ
না করিতেন, তবে উহা বন্ধ হইত।
ইংলণ্ড আমেরিকার যুদ্ধের পূর্বে তুলার নি-
মিত্ত বার্ষিক ৩০০,০০০,০০০ টাকা দিতে হি-
সেন : অথচ আমেরিকার ৪,০০,০০০ দাস
হইতে ধন হ্রাস বিষয়ে এক পরস্পর লাভ ক-
রেন নাই।

পারিসের সুব্রু রাজবাড়ীর মিসরীয়
চিত্রশালিকার নিম্নর লেখিত কতকগুলি প্রাচী-
ন ও ভূদৃশ্য শিল্পকলা বস্তু আনীত হই-
য়াছে।

বিখ্যাত ব্রহ্ম লর্ড ব্রহ্ম কিসুংকাল গীর্জি-
ত হইয়াছিলেন : একপে বিলম্বণ আরে.গ্য
লাভ করিয়াছেন।

এক জনরূপ যে সম্রাট নপোলেন্সন সপ-
রিবারে আসিয়া মল দিন ব্যবৎ বসিংহাম না-
মক রাজাটালিকার অবস্থিতি করিবেন।

মিস রাই টাইন্স পত্রে একত অতিপ্রাণ
প্রকাশ করেন যে এদেশে অনেক অবিকাহিতা
স্ত্রী সাতিশয কষ্ট পাইতেছে : তাহাদিগকে
পুরুষোপযুক্ত অধজনক কর্মে নিযুক্ত করা
অন্যায় : তাহাদের দুঃখ অপনয়নের এক উপ-
ায় এই যে তাহারা বিদেশে উপনিবেশিক-
দের মধ্যে প্রেরিত হয়। কাব্যকার কিংসলি
এই অতিপ্রাণের গোবকতা করিয়াছেন, এবং
কহিয়াছেন যে স্ত্রীরা পূর্বা প্রেরিত হইবার
নিমিত্ত হইয়াছেন। প্রতীত হইল যে এদে-

শে ১৮০০০ অতিরিক্ত স্ত্রী আছে : তৎকালে
কিছুকাল বিদেশে বাইবার সুস্থপযুক্ত কত-
কেন বর্ষেই অর্ধসংখ্যান আছে, এবং কতি-
পয় স্বজনবহুনে নিবন্ধ। মিস রাইন্সের প্র-
স্তাব এই যে অবশিষ্ট স্ত্রীদিগের ভারতবর্ষাদি
স্থানে প্রেরণ করিবার নিমিত্ত অর্থ সাহায্য
দেওয়া উচিত। অনেকদেশে প্রত্যেক স্ত্রীর
সহিত সুলনার দুই বা ততোধিক পুরুষ
(সংস্রাভ) বর্তমান আছে।

এগুজিবিদ্য প্রারম্ভনসময়ে এক জন
রূপ উদ্ভিরাহিল যে প্রারম্ভিকেরা এক বিশেষ
বেশে উক্ত কার্য সম্পন্ন করিবেন : কিন্তু
কমিসনরেরা সে অতিপ্রাণ পরিত্যাগ করি-
য়াছেন। বিদেশীর আগন্তুক শিল্পকর্মের
বাহাতে কষ্ট না হয়, এমত উপায় করিবার
সুচরু নিয়ম অবলম্বিত হইতেছে : তাহারা
অতি অপব্যয়ে লগনে অবস্থিতি করিবে।
তাহাদের সুবিধার নিমিত্ত এক জন দ্বিতীয়
নিযুক্ত হইবে : পীড়িত হইলে অত্যন্ত ব্যয়ে
চিকিৎসা প্রাপ্ত হইবে। এবং অনার্যাসে লগ-
নের নানা বিচিত্র স্থানে ভ্রমণ করিতে পা-
ইবে।

ভারতবর্ষেরা যে কপে লর্ড কেনিংকে
প্রতিষ্ঠা পত্র দিয়াছেন : তাহাতে এখানকার
লোকেরা সাতিশয সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছেন :
মান্যবর প্রিন্স বাবু রমা প্রসাদ রায় ও রাঃ
দিনকর রাও ইহাদের বক্তৃতা বিশেষ রূপে
উল্লিখিত হইয়াছে।

টাইন্স সম্পাদক বঙ্গদেশের রাষ্ট্রতত্ত্ব
পের 'অভ্যাস' বিষয়ে এক প্রস্তাব প্রকাশ
করিয়াছেন : ইহা নিতান্ত দুর্ভাগ্যের বিষয়
বলিতে হইবে যে নীলকরেরা রাষ্ট্রতত্ত্বের
দোষ সমাধান করিতে সমর্থ হইতেছে। প্র-
জাতা গণিতাৎ সুবিচার চায়, তবে আপনারা
অগ্রে শুদ্ধ ন্যায় পথ অবলম্বন করুক। নতুবা
তাহাদের অবস্থা অসমর্থ 'নেকড়ে। নেক-
ড়ে' বাদী মেঘরককেব ন্যায় হইবে।

গত রাতে এখন লজিকল মুসাইটি নামক
সমাজে বাবু আনেন্দ্রমোহন ঠাকুর বৌদ্ধধর্ম
বিষয়ে এক প্রস্তাব পাঠ করেন।

এগুজিবিদ্য উপলক্ষে নানা দেশ হইতে
লগনে কতকগুলি সুন্দর চোরের সমাগম হই-
য়াছে : তাহাদের বৌদ্ধধর্ম বিচারার্থ কল্যাণী-

শাসিনের পুণীস সংক্রান্ত কতিপয় লোক
এখানে নিযুক্ত হইবে।

কয়েক দিনসাবধি আকাশ অসহনীয় ভাবে
নির্মল হইয়াছে, সুখ প্রকাশিত
বঙ্গদেশের বায়বাসের ন্যায় অসহনীয়
এই যে নীতকালের মধ্যে অনেক সময় এক
নীত অগ্রভূত হয় নাই।

উদ্ভিদ গুণক।

লগন, ১০ই মে ১৮৬২।

প্রিয় সম্পাদক। শিল্প বিন্যাস-নির্দেশকের
হারোমটন এখানকার সর্ব প্রধান সংবাদ।
আমার অনুত পলাকীয়ার "ওপনিং অফ
ইন্ডিয়ান এগুজিবিদ্য" প্রতিপাদিত
হইতেছে, ইহা আপনাদের পাঠকেরা সুবিধা
লাইবেন। এখানকার নানা সংবাদ পত্রে এই
মহৎ ব্যাপার মানাধুপে বর্ণিত হইয়াছে :
কেহ কেহ ইহাকে সামান্য ও ৫১ শালের
ব্যাপারের অপেক্ষা নিহৃত্তর রূপে বর্ণন
করিয়াছেন, কেহ বা ইহাকে অগ্রভূতপূর্ণ
বলিয়াছেন : পরন্তু আমার হস্ত হইতে
এবিধে এক জন বাঙ্গালির মত কি, ইহাই
আপনারা জানিবার ইচ্ছা করিতে পারেন।

১লা মে রহস্যভিবারের দুই দিন
পূর্বাধি সুখ সম্যক প্রকাশিত হইয়া একা-
নিত হইতেছিল : দিবসের ভাষ কৌল অং-
শেই বঙ্গদেশের বায়বাসের অসহন ছিল
না : কিন্তু উক্ত রহস্যভিবারের আভে আকা-
শ মেঘাকর হইয়া অল বর্ষ হওয়াতে সকলে-
রই মনে বদামলা উপস্থিত হয় : বাহা হউক,
গেলা সন্ধ্যার সময় হঠাৎ অগ্রভূত হইল। নগ-
রের চতুর্দিক হইতে লোক সকল নানা সমাজ
সুসজ্জিত হইয়া ভ্রমণ অতিযুখে গমন করি-
তে লাগিল : বেলা সন্ধ্যার পূর্বে সমস্ত বর্ষ ই-
লকটাদি বাবা গুণ হইল, লকট সকলের গতি
যথার্থরূপে শ্রুত গতির সহিত উপস্থিত হই-
য়াছে : পথের দুই পাশে 'অটালিক' জেলি
হইতে নানা বর্ণের পতাকা উত্তীর্ণমানা এবং
ভ্রমণ রোডের মধ্য ভেদে এক রহস্য পতাকা
"স্বাগত সমস্ত জাতি : বলিয়া লোকদিগের
অত্যর্থতা করিতেছিল। যে কোন পথের যত
দূর দৃষ্টিগোচর হইয়া ছিল, তাহাতে
অপী ও বর্ষা পিত্ত আর কিছুই দেখা যা-
ত

নাই । চতুর্দিকে মেত্রপাত করিয়া ঘোষ হুইতে লাগিল যেন ব্রহ্মটনে একপ্রকার জলপ্লাবন উপস্থিত । রাজপুরুষদিগের আগমনার্থ বকিংহাম পালেস অবধি শিল্প বিন্যাস-নিকেতন পর্যন্ত দুই ক্রোশ ব্যাপিয়া পথের দুই ধারে বিচিত্র সরাহ-ভূষিত অশ্বারোহী সৈন্য সকল দণ্ডায়মান হইল এবং তাহাদের পশ্চাদ্দেশে অসংখ্য লোক সমবেত হইয়া রাজপুরুষদিগকে দেখিবার নিমিত্ত সাতশতরূপী প্রকাশ করিতেছিল, ১১ টার পূর্বাধি “মহাজন” সকল থানা রোহণ পূর্বক জেনিভল হইয়া গমন করিতে লাগিলেন । এদেশের সকল রাজমন্ত্রী সমান রূপ লোকপ্রিয় নহেন, তাহারা সমদিক প্রিয়, তাহাদিগকে দেখিয়া লোক সকল ধন্যবাদ করিতে লাগিল । ক্রমে ক্রমে নানা দেশীয় রাজদূত সকল লোকদের দৃষ্টিপথ অতিক্রম করিলেন । ইহাতি এদেশীয় হৃৎকণ্ঠ রাজদূত সকলকে, ও আপান দেশীয় রাজদূতদিগকে দেখিয়া অনেকে হাস্য করিয়া উঠে, ইহা টোরেজনের অতি যুগলকর অসত্য রীতি । অর্ধ-ঘণ্টাভিত্তি ১২ টার সময় প্রভাকর প্রচণ্ড মুষ্টি ধারণ করিল, তখন শিল্প নিকেতনের চতুর্দিক সমুদায়েরা একেবারে আপ্লাবিত হইয়াছে, নিকেতনের বায়ুমণ্ডলের পরিচয় পূর্বে দিয়াছি, কিন্তু ১২ টা যে যদিও উহা নানা পতাকাগণ শোভিত হয়, তথাপি পূর্ববৎ কেবল বাণিজ্য শালার ন্যায় শোভা হইতে লাগিল । যাহা হউক, অট্টালিকার অভ্যন্তরে এক ভিন্ন ব্যাপার । পাণ্ডুরার মন্দির ও ভগ্নাংশদেবের মন্দির নির্মাণার্থ বিধকর্ম্মের সাহায্য কার্য্যকর হইয়াছিল, কিন্তু উপস্থিত ব্যস্ততায় তাহারে সম্পাদন নিমিত্ত কত শত বিধকর্ম্ম প্রয়োজন । মন্ত্রণের দ্বারা যে একটা কীর্তি অর্জনিত হইতে পারে, ইহা কেবল উইলিয়াম-রাউট সম্পাদন করিতে সমর্থ । পূর্ব ব. পশ্চিম দ্বারে প্রবেশ করিলে ১৫০ হস্তের অধিক উচ্চ ও প্রস্তর ভল হইতে সমুখ ৬৫০ হস্ত দীর্ঘ ও ৬০ হস্ত প্রসারিত গৃহ দৃশ্য হয়, কিন্তু এক মণি অট্টালিকার পরিচয় দিবার সময় নহে, প্রাসাদের অভ্যন্তরস্থ গ্রীষ্ম সজ্জাধিক ব্যক্তি দ্বয় আকর্ষণ করিতেছে । নানা আতীর নানা প্রকার লোক সমবেত হইয়াছে । কোন স্থানে মৃণালীভূত রক্ত, লীল নীল, কক বর্ণের

পরিচ্ছদ-ভূষিত ইংরেজ রাজপুরুষ ও সেনা পতিগণ, সগর্ভিত চিত্তে ইতস্ততঃ নিদ্রাকূপ করিতেছেন, কোথায় বা কল্যাণী, চুরুক, কন প্রভৃতি দেশীয় রাজদূত সকল স্ব স্ব জাতীয় সজ্জার শোভা প্রকাশ করিতেছেন, কোথা, বহুমূল্য শাল যুক্তোহার, এবং রক্ত বর্ণিত উৎসাহধারী রাজা, কোন স্থানে বা যশস্বতা শোভিত রক্ত কৌশল বস্ত্রের অঙ্গরঙ্গনী পরি-ভূত ইউরোপীয় দেশীয় ধনাঢ্য ব্যক্তি । এইরূপে যাজক, টেনস, ব্যবস্থাব্যবসায়ী, শিল্পকর, চিত্রকর, গায়ক প্রভৃতি খাঁর খাঁর বেশে অধিষ্ঠান করিয়াছেন । আপান দেশীয় রাজদূতেরা আপানাদের গভীর ভাব দ্বারা লোক-দিগকে চক্ৰবর্ত্ত করিলেন । তন্মধ্যে দুই জন প্রথম রাজদূত গভীরবস্ত্রের প্রতিমূর্ত্তি বলিলে হয় । তাহারা সমস্ততা অত্যাকর্ষ্য সমারোহ সম্পন্ন করিয়াও কোন ক্রমে অঙ্গ লোকের ন্যায় বিম্বর প্রকাশ করিলেন না । তাহারা বিম্বরস্ত্রের ন্যায় ইতস্ততঃ দৃষ্টিপাতও করেন নাই, কিন্তু তৃতীয় রাজদূতটি তাপে-কাহ্নত ধূমী, তিনি চতুর্দিকে মনোহর-বসন ভূষিত গজদাঁড়ি-নির্ম্মিত ইংরেজ মহিলাদের ভাব ভঙ্গীর দ্বারা স্পষ্টতই উল্লেখিত হন ।

১১ টা ১৫ মিনিট গত হইলে তৃতীয়বারি হইতে লাগিল । তখনই অট্টালিকার দক্ষিণ ভাগ হইতে পশ্চিমভাগে রাজপুরুষেরা জেনিভল হইয়া গমন করিলেন, তথায় রাজসিংহাসন স্থিত ছিল, সকলে যথা স্থানে উপবিষ্ট হইলে অত্র প্রাঙ্গণে একটা বস্ত্রতা পাঠ করিলেন এবং ইংলণ্ডের নীচ হইয়া ডিউক অব কেম্ব্রিজ তাহার উত্তর দিলেন । তখনই রাজপুরুষেরা পূর্ববৎ জেনিভল হইয়া উত্তরদিক দিয়া পূর্বদিকের তলে গমন করিলেন । রাজমন্ত্রীর প্রভূত অশংসাবাদ লাভ করিতে লাগিলেন, বিশেষতঃ লর্ড পামলিষ্টনকে দেখিয়া লোকে আশ্চর্য্যজন্য করিতে লাগিল, তৎপরে যখন ডিউক অব কেম্ব্রিজ চতুর্দিকে ব্যস্ততায় পরিচয় দিয়া পরিবেষ্টিত হইয়া রাজসিংহাসনে উপবেশন করিলেন, তখন যে রাজদূত ব্যাপার লোকের প্রত্যক্ষ হইল, তাহা কথনাতীত । আর্মি পাঠযোগ্য বর্ণনার দ্বারা শের একাংশ সম্পাদন করিতে পারিতেছি না বলিয়া লেখককে সহস্রবার তিরস্কার ক-

রিতেছি । তৎকালে সূর্য্যের কিরণ বিস্তৃত উজ্জল হইল । এবং সত্যতঃ লোকদের অঙ্গ-স্থিত মণিমাণিক্যের উপর পতিত হইয়া এক কালে চক্ৰবর্ত্ত করিতে লাগিল, বলিলে হয় । অট্টালিকার মধ্যস্থ স্তম্ভ ও সবুজ স্তম্ভ শ্রেণী উর্দ্ধদেশে বিচিত্র চক্রাংগ, পশ্চাত্তানে সহস্র সহস্র গাধকপূর্ণিত সজীত বহু, এই সমুদায় একত্রিত হইয়া যার পর নাই শোভা প্রকাশ করিল । তখনই সজীত, কনিয়াজ টেনিসন এই বিষয়ের নিমিত্ত এক সজীত রচনা করেন, তাহা টেনিসনের যোগ্য সন্দেহ নাই, এই সজীত যখন সহস্র সহস্র পর ও যন্ত্র সমিলিত হইয়া সজীত হইল, তখন অনেকেই আনন্দাঙ্গু সধরণ করিতে পারিলেন না । অন্য সজীতের পর ডিউক অব কেম্ব্রিজ শিল্প বিন্যাস-নিকেতন ভূষিত হইল বলিয়া উহার প্রতিষ্ঠা করিলেন । যদিও তাহার বাক্য উদ্ভব রূপে প্রত্যক্ষ হয় নাই, তথাপি ভূগাফনি দ্বারা উহা সর্ব জনের গোচর হইল ।

দেবতারা প্রাক্তন ব্যাপারে বলি দাতীত সন্তুষ্ট হন না, আমাদের দেশে বলির সহিত দেবতাপূজা আরম্ভ হইয়া থাকে । এখানে উহা বলির সহিত শেষ হইল, কল। দেবী একটা বালকের ন্যস্ত লইয়া সন্তুষ্ট হইলেন । এই বালক কোহুংলাকাল হইয়া একটা চলিষ্ণু কলের নিকট দণ্ডায়মান হয়, কলের এক অংশ তাহার অঙ্গোপরি পড়িয়া মস্তক ছেদ করিল ।

যাহা হউক এই মহৎব্যাপারে অন্য কোন বিষটনা হয় নাই, কোন কোন বিষয় একাধার-স্তর ব্যস্ততা করিলে ভাল হইত, কিন্তু চিত্র-একর না হইয়াও লোকে চিত্রের ঘোষ বিচার করিয়া থাকে । ১২ টার ঘটনা অনেকের মনে নিহিত থাকিবে ।

এবার অন্য কোন বিশেষ প্রয়োজনীয় সমাদ নাই । পার্লিমেণ্টে সিংল দীপ তার-তবর্ষ সন্তুষ্ট হইবার প্রস্তাব বিচারিত হইয়াছিল, কিন্তু লর্ড ডানলি প্রভৃতি এই প্রস্তাবের পোষকতা করেন নাই ।

উমিটান গুপ্ত ।

বিবিধ সংবাদ ।

২৮ এ জ্যৈষ্ঠ সোমবার ।

আমরা কতকটা সহকারে খোঁজ করি-
তাই, রঙ্গপুর জিলার অধঃপাতি কাকিন্দান
কর্মী, দায়ী জিহ্বা নারী, চক্র রায় চৌধুরী
সংস্কারের উদ্ভিতির নিমিত্ত ৫০ টাকা দান
করিয়াছেন । সোমপ্রকাশের জীবিত নিমিত্ত
যেমন টাকা দেন, তালি আমানিগের অতিশয়
শাসনের সামগ্রী আমরা ক্ষয় নারী নিমিত্ত
১০ দেশান্তর বিষয়ে বন, ন্যাতা পত্রিক
১০ নক স্বাদ্য শুনিয়াছি । কিন্তু কোডের ১০
১০ এট, ইত্যাদি নারী দায়ী অংশ হইয়া কষ্ট
পাইতেছেন ।

সব দিই বোঝা দখলই সেনা ৫ কাকি-
নবিশেষে আমরোধ করিয়াছেন যে তাহার
১০ দিনের যেমন আমনই শ্রমণী, দায়ী
১০ দেন । ১০ অংশে ৫ করা অন্যান্য, যদিও
১০ কষ্ট ৫, ন্যাকটের মজুরিগের নিমি
১০ মনে অংশ হইত ।

গত শনিবার ১ জনকি ইজেন সাহেব বন
১০ ন্যায় গবর্ণমেন্টের সেক্রেটারি কার্যের তা
১০ র গ্রহণ করিয়াছেন কষ্টে সাহেব মোর্ডে
১০ অংশিগণ, তিনি উপযুক্ত লোকটী মনে
১০ ন্যায় করিয়াছেন । তাহার এই প্রাপ্তি কার্য
১০ ১০ করা প্রাপ্তি ১০ ১০ ১০ হইতেছে,
১০ কনিষ্ঠা বিষয়ে তিনি প্রাপ্তিগণ
১০ ১০ অংশে তাগালী হইবেন না ।

বেলাই নগরে আহিলাদের ১০ গ্রাম ১
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ জন সাহেবে এক ভয়ানক ডাকাতি
১০ হইয়াছিল । ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০
১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০

আমরা শুনিলাম বারাকপুরে একটি দুর্গ
নির্মিত হইবে । সর হিউ রোজের আবার কি
মত করিল ? ইচ্ছা নিরক্ষণ ।

হিন্দুপেট্টার্ট সম্পাদক বলেন গবর্ণমেন্ট
বিদ্যালয়িকার অন্য যে চারি লক্ষ টাকা বরদে
শে অধিক দিয়াছেন, তাহা হইতে এসিয়াটিক
সোসাইটিতে প্রতি বাসে আর চুই শত টাকা
দেওয়া হইবে । এতদেশীয় সংবাদপত্র ও
পুস্তকাদির মধ্য অবগত হইবার জন্য এক জন
তত্ত্বাবধায়ক নিযুক্ত হইবেন । গবর্ণমেন্টে আ-
রও নিজ ব্যয়ে এক বাচ্চালা সংবাদ পত্র প্র-
কাশ করিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন । শেনোকট
অপব্যয় হইবে ।

২৩ এ ট্যাক্স দুজলবারি ।

গত কল্যা একচেহ বাগীতে নিম্নলিখিত
অধিকেন বিক্রীত হইয়াছে:-

সিন্দুক	মূল্য
বেহারের ১৩৪৫	২,৫৩,৩৩০
কাশীর ১১৩৫	১৬,৭৬,৮৭১
গড়ে প্রতি সিন্দুক ১৪৭৫ টাকার বিক্রী-	

ত হইয়াছে

বাংলাদেশের নবরদিগের সহায়তার জন্য
গবর্ণমেন্টহোসে একটা মৃত্যুগীতময় উৎসব
হইবে, ইহাতে যে টাকা আয় হইবে তাহা
বাংলাদেশে পাঠান হইবে ।

সর হিউ রোজ লখৌ নগরে সেনাগণকে
সভা করিতে নিবেদন করিয়াছেন । সেনাদিগকে
শান্ত করিতে হইলে তাহাদিগকে বিবাহ করি-
তে না দেওয়া কর্তব্য, নচেৎ পুস্তকালয়ই কর
আর সভাই কর, সকলই বৃথা হইবে ।

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের মিলিটারি সেক্রে-
টারি কর্নেল নর্ম্যান আপনার চবীন পচি-
হিত কর্মচারিদিগের উপহার্য নিম্ন ব্যয়ে
আকিসে এক পুস্তকালয় স্থাপন করিয়াছেন ।
কেরাণীরা আকিসে বসিবাব স্থানে এখানে ত
ব্যয় পাঠ করিতে পারিবেন । যেসে যেন আ-
কিস বিদ্যালয় হইয়া উঠে না ।

ভারতবর্ষীয় রেইলওয়ে কোম্পানি চব
দিগ দরে অর্থকুর প্রভৃতি জহুরিগে দাই
বাইতে অলমত হইয়াছেন । বাঁহারা ঐ সকল
প্রেরণ করিবেন তাহাদিগকে বিগুন তা-
বনা ।

নান সাহেবের আকুল্যে নান এক
কানপুরে প্রেরণ করিয়া আকুল্যে হইয়াছে ।

আমরা পূর্বে বলিয়াছিলাম, স্বাক্ষর যে
হস্তাঙ্গা পুরোহিতকে করাচিত না, সাহেব
বলিয়, ধৃত কবা হয় তাহাকে মুক্ত করা হই-
য়াছে । এক্ষণে জানা গেল তাহা বৈ, ন্যস্ত
হইতে কলিকাতার আনা হইয়াছে । এ এক-
শে পুনর্বে লক্ষ আছে । বাঁহারা নান, সাহেব
বকে চর্চন করিয়াছেন, তাহাদিগের অনেকে
বলিয়াছেন বিদোহী নবদ্বারের সহিত পুরো-
হিতের অল সৌন্দর্য্য নাই তবে বি জনো
তাহাকে মুক্ত করিয়া রাখা হইয়াছে ।

টাইন স্ট্রু অব ইন্ডিয়া সম্পাদক বলেন
৬ মণিত জুগুণ (মধ্যরোহী) সেনা দলের
কর্নেল কলি আপনার অধীনস্থ বহুক বাগি-
কে সমান অপবাধে কহ করিয়া এত ক)
দিয়াছিলেন যে তাহাতে এক ব্যক্তির মৃত্যু
হইয়াছে । ইংরাজ সেনাদলের এই একটি
বিশেষ মোদ আকিসরের গুরুতর অপ-
রাধ করিয়াছে মুক্ত জন কিং সমান
সেনারা কিছু কসিলেই তাহাদিগের গুরু
দণ্ড হয়

হরকরা সম্পাদক টেলিগ্রাম যোগে নিম্ন
লিখিত সমাচান প্রাপ্ত হইয়াছেন:-আলে
আপিয়া ১২ এ মে । আনেকের বিজ্ঞো-
রা ইরক টাউন ভাগ করিয়াছে । গবর্ণমেন্টের
সেনারা বরগার্ডকে আক্রমণ করিয়াছিল, কিন্তু
হৃতকাণ্য হইতে পারে নাই । উক্তর দলের
বিস্তার লোক হত হইয়াছে । গবর্ণমেন্টের সে-
নাদা উইলিয়ম্ স বগ অধিকার করিয়াছে ।
সিউগার্ড সাহেব লক্ষণ নিশাণের অবদ্রোণ
ক্রিয়া নিখিল করিয়া বাগিভের নিমিত্ত নিউ-
অরলিয়ন্স খুলিয়াছেন । অক্ষিগার সহিত
কালেকর যুদ্ধ আরম্ভ হইয়াছে ।

ইংলিসমানের লেনোন্ডিত সংবাদ দাতা
বলেন তথায় জনরব উঠিয়াছে সমুদ্র ব কুণে
মিস দেওয়া হইয়াছে, ইউরোপীয় সেনাগণের
প্রাণ বিনাশ করা ই তাহার উদ্দেশ্য । এবদ্বিধ
জনশ্রুতির মূল অন্বেষণ করা অতিশয় আ-
শঙ্ক্য । অন্যথা বহুতর অনিষ্ট ঘটবার সম্ভা-
বনা ।

জিলী গবর্ণমেন্টের করপুস্তিত সংবাদ

দাঁড়া বলেন, তত্ত্বাত্ত্ব মন্ত্রী পণ্ডিত শিব-
দীন অতিশয় বিবেচনা সহকারে কর্ম করি-
তেছেন । তিনি গল্প পুরাতন কর্মচারিদি-
গকে দিয়ার দিরা তাহারা কাহাজের ক্রু-
রিতা চারদিগকে বিচার কাণে নিযুক্ত করিয়া-
ছেন । জাপান শনিবার জন্য ৩৭৫৫ এক
উচ্চতম বিচারালয় হইয়াছে । এই উলি যথায়
আরকির লক্ষণ । অন্য অন্য রাজ্যারা এ নতি
এই প্রতিব অনুসরণ করেন, তাহাদিগের
রাজ্যই এক মূল ভগ ।

নান নিউস সম্পাদক ভগলীন নরযাল
বিনয়ে বলিয়াছেন এতদেশীয় সুবিধা প্রাপ্ত
এক ইংলিষ্টার অন্য তাহাকে নিজেই বলি-
য়াছেন আমরা এনি এক পদ নিজে নি-
দ্যামাগে প্রমাণ পাওয়া যায় এই তথ্য
বহন এই অপরাধ উঠিয়াছে সগন চাকর
স্বরিদিগের এই মকদ্দমার সমিতিয় প্রমা-
প্রকাশ করা উচিত ।

৩-৭ ট্যাক্স দুজলবারি

লক্ষ্য বিখ্যাত - লক্ষ্য নিম্নলিখিত মামল
কোম্পানি মীলচপার ইংল্যান্ডে আনা
কাল করিয়াছেন প্রতি খণ্ড ৭ আনার দি
লোভ হইয়াছে । এবার টালপেদ সবল নী
একরদিগের মিলতায় করিয়া অবশ্য হ
ইবেন ।

লোভিত সমুদ্র দিগা যে ডেলিগ্রাম হই
তেছে, তবিয়ে হাউস অব কমন্স তাহা
বিগ্রাছেন তাহা অচ্যক বন ভারতবর্ষের
বাজর হইতে নিতে হইবে । এই সমস তা
ত্যাচারে কাহাব সাধা আশাশিয়ার তা, বন
অসমতি দূর করিবেন ।

গবর্ণর জেনেরল নিজে ডেলিগ্রামে সা
বাদ আনয়ন ও প্রেরণ বন্য প্রতি ব সব
৩০০০ টাকা পাইবেন । আমবা চহাব আ-
শ্যকত দেপিভেছি না ।

ভারতবর্ষের বেইলওয়ের প্রধান ইঞ্জিনি-
য়র গবর্ণমেন্টে লিখিয়াছেন আশাশি আশ্রয়-
রির পূর্বে বাণী পর্যন্ত রেইলওয়ে খোলা দু-
গাথা হইবে, কারণ কোম্পানির উপযুক্ত লক্ষ
টাচি নাই । কিন্তু গবর্ণর জেনেরল এ কথা
অগ্রাহ্য করিয়া তাহাদিগকে ডিসেম্বর মা-
সের মধ্যে বাণী পর্যন্ত ও তাহার পূর্বে তা-

এইরূপেই কয়েক দিনের মধ্যেই আর কত কাল খালি-
করিয়েছেন, তাই বলবার নহে।

ইউরোপীয় সেনাবলের বিদায় সন্মেলনের
অভাব হওয়াতে গবর্ণমেন্টে শপথ হইয়াছি-
লেন। সম্রাট সুনী বইতেছে ১২ ৮০০ পিণা
বিদায় আসিয়াছে।

সোমাই সেনাবলের এক জন এডজেন্টার
আগিসর দুই বৎসরের বিদায় লইয়া ইংলণ্ডে
গাউবার প্রার্থনা করিয়াছেন। প্রশান সেনা-
পতি সন্দেহ করিতেছেন ইউরোপীয় চিহ্নিত
সানিসরদিগের ন্যায় ইহাদিগের ছুটির সুখ
নিগত করা উচিত কিনা। বাজপুকদেরা অন্য
কালে যে কণ, পক্ষপাত করেন, ইংলণ্ড গমন
নতুন পক্ষপাত করিয়া লোককে ভরোৎসাহ
দেওয়া বিবেচ্য নহে।

উত্তিয়ান এম প্যারারে লিখিত হইয়াছে,
বর্তমান নানা সাতের বলিয়া দৃষ্ট হইয়া আদী
হইয়াছে, গবর্ণমেন্ট তাহাকে মুক্ত করিবার
অদেশ দিয়াছেন। এই ব্যক্তিকে পাথের ও কতি
কিছু কঠোর দিগা অদেশে প্রেরণ করা হইবে।

সপ্তম্বর এক খানি পত্রে লিখিত হইয়া-
ছে একপে পুখিলীতে সর্বস্বত্ব একপত্রে কোটি
লোক আছে। ইহাদিগের মধ্যে ৩০২৫ টি
এক ও ১১০০ প্রকার ধর্ম প্রচলিত আছে।
সপ্তম্বর প্রতি মধ্যমা ৩৩০০০০ চ'বিমাস জীবিত
পারে। দীর্ঘকাল বয়সে অল্পকাল লোক অগে-
৫০ দীর্ঘ জীবী ৫০ বৎসর পর্যন্ত জীলোকেরা
পুত্র সম্প্রদায় নবল থাকে। জীবস অপে

এই কালে অধিক জন্ম ও মৃত্যু হয়।
এক ৫৩ মধ্য ও বিদায় হয় তত বল-
ন ৩ হইয়া থাকে।

নামলাইট সম্পাদক বিরাটের পুলিশ অ-
ত্যাচার নাটকের দ্বিতীয় প্রকাশ করিয়াছে-
ন। যে দুই জন খানাদার একটি জীলোককে
মুদা'ন করাউয়া তাহার চুরবান্না করে, তাহার
জাজেটকে বলে, হরিন্দরাল নামক এক জন
জনপতির তত্ত্বাধীনে ছিলেন। কিন্তু এই
একটি পটভূমিতে বলিল হরিন্দরাল কিছুই
কানিতন না। তথাপি মাজিষ্ট্রেট তাহাকে
সেসিয়নে সমর্পণ করেন। হরিন্দরাল মুক্ত হই
রাছেন, কিন্তু তাহার কর্ম নিম্নাছে। একপ

ইজাউ রহস্যপ্রতিবার :

টাইমস অব ইণ্ডিয়ার এক ৩০ পত্র প্রে-
রক বলেন ভারবর্মেনীর জেদানগরে খ্রী-
সানদিগের বাস করা আর হইয়াছে। মুসল
মানদিগের একই সংখ্যায় কানিতাছে। ময়দার
খ্রীসানের শীত্র লোপ হইবে।

হরকরার যে পত্র প্রেরক বেহারের অহি-
কেন ঘটিত অত্যাচারের বিষয় লিখেন, কার্না
সহায় নামক এক জন কর্মচারী অসন্তুষ্ট হইয়া
তাহার নামে নালীস করিয়াছেন। তদ্রূপে বা-
জিষ্ট্রেট পত্র প্রেরকের আশীর্বাদ লইয়া তাহাকে
মুক্ত করিয়াছেন। লঙ্ সাহেবের ক'রাবাস
অবশি সকলোই মুদ্রাবস্তের স্বাধীনতা বিনাশ
সহায় জান করিতেছেন।

সত বৎসর আসাতের চা কোম্পানি ১১-
৬৭০০ মণ চা বিক্রয় করিয়াছেন। ব্যয় বাদে
তাঁহাদিগের ২,১২,৩০০ টাকা লাভ হইয়াছে।
অংশীদার শত্বে ১০ টাকা লাভ পাইবেন।
এই কোম্পানির অংশিদারের মধ্যে তিনতা-
গের এক ভাগ এডজেন্টার লোক।

পানিক সাগরস্থ মাকিয়ান ধীপে আ-
গের পর্তুগের উপভূতে মনুসং লোকের প্রাণ
বিনষ্ট হইয়াছে।

জিলীগোজট লম্পারন বলেন, সিধু নদের
নিম্নস্থ প্রবল অতি সহন প্রকৃতি হইতেছে।
১২০৫ ফিটের মধ্যে ১০২৮ ফিট প্রবল হইয়া-
ছে। এক বৎসরের মধ্যে বেশ হইবার সম্ভা-
না আছে।

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার ৩৩ বিল
অর্পণ করা হইবে। প্রথম কলিকাতার ধর্ম
বন্ধ করিবার বিল। অনেকে অসংবধান হ
রত্ননাতি করেন, তাহার ফলে তারা চতুঃপার্শ্ব
দ্বিত লোকের লই হয়। দ্বিতীয়, বেগাব থানা
নিষেধ করিবার বিল। এই বিলে প্রস্তাব করা
হইয়াছে যুদ্ধ প্রকৃতির সময় ব্যতিরেকে কা-
হাকেও বেগাব থানা হইবে না। বেগাব থানি
তাহাকে তৎপরায়িত জেনার হাকিয়া দিতে
হইবে। কাহাকেও ৫০ কোশের অধিক দূর
লইয়া যাওয়া হইবে না। তাহা করিলে খাওয়ান
দিগের সম্মতি লইতে হইবে, এবং এবং

হলে তাহারিগকে বিপণ তাড়া দিতে হইবে।
এক জন সিবিল কর্মচারী উপস্থিত থাকিয়া
গাওয়ানদিগের তাড়া দিবেন। এই আইন
নিষাধ আবশ্যক, কিন্তু ইহার খারাজ কাল
একপ বোধ হয় না।

কয়েক ডিপার্টমেন্টে হইতে নিম্ন লিখিত
নোট প্রকৃতি প্রচলিত হইয়াছে এবং এই ডি-
পার্টমেন্টের হস্তে নিম্ন লিখিত টাকা আছে:—

বিভাগ	মোট	অন্য	মোট
১. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
২. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
৩. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
৪. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
৫. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
৬. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
৭. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
৮. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
৯. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০
১০. ১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০	১৯০০ ০০০ ০০০

সেপ্টেম্বর গবর্ণর ২৩৫ জন প্রকল্পে দা-
ইবেন, তিনি এই সেপ্টেম্বর পর্যন্ত কলিকা-
তার প্রত্যাগমন করিবেন।

সম্রাচার প্রিন্সসানী পরে লগুন দ্বিত এক
ক জন হিন্দু লিখিয়াছেন কণাটের নবাবকে
তদীয় সিংহাসনে পুনঃ স্থাপিত করিবার জন্য
যাকেই প্রকৃতি ১৩টি নগরের লোকে সর
চারলস উড ও মহালভার নিকটে আবেদন
করিয়াছেন। অন্য অনেক নগরের লোকে এই
প্রকার করিবেন। নবাব আগুয়ার স্থাৎ রজা-
এক পুত্রকে লিখিয়া চতুর্দিকে প্রেরণ করা-
তে ইংলণ্ডীয় লোকেরা তাহার সহায়তা ক-
রিতেছেন। এদেশের লোকেরা অন্যতর অ-
ত্যাচার কর্তৃপক্ষের গোচর করেন না বলিয়া
বক্ত কই পান।

আমরা এক অভাবনীর স্থানে যুক্তিসিদ্ধ
মত চর্চন করিলাম। কেণ্ড অব ইণ্ডিয়া লিখি

রাছেন ২ প্রকল্পিগণ দুই ইউরোপীয়দিগকে ভারতবর্ষে বাস করিতে দিবার বিপদ গত কল্য সুপ্রিমকোর্টের এক হত্যার মোকদ্দমার দর্শন করা গিয়াছে । ২ সম্পাদক রডের কামের দণ্ড যুক্তিসিদ্ধ বলেন । এব্যক্তি যদি যুক্তি লাভ করে, তাহা হইলে ইউরোপীয়দিগের বিচার বন্ধ করাই কর্তব্য ।

উক্ত সম্পাদক প্রবণ করিয়াছেন বিখ্যাত হত্যাকারী হিলি বোম্বাই নগরে ধৃত হইয়াছে । সে এক আল নাম করিয়া উক্ত সেনা-দলে প্রবেশ করিতে গিয়াছিল ।

৩২এ জ্যৈষ্ঠ শুক্রবার ।

শীঘ্র সদর ও সুপ্রিমকোর্ট একত্রিত হইবে বলিয়া, যে সকল কাজ বাকি পড়িয়াছে তাহা সম্পাদন করিবার জন্য আর দুই জন অতিরিক্ত জজ নিয়োজিত হইবেন ।

কিনিক সম্পাদক প্রবণ করিয়াছেন হিলি করাচিতে ধৃত হইয়াছে । হিলি বা নানা সাহেব হয় ।

ইংলিসমান সম্পাদক একটি আশ্চর্য্য সংবাদ লিখিয়াছেন । তিনি বলেন হেই সেক্রেটারি গবর্ণমেন্টের পুরাতন কর্মচারিদিগকে হাড়াইয়া দিবার আজ্ঞা দিয়াছেন । তাহার কয়েক মাসের বেতন পুরকার স্বরূপ পাইবেন মাত্র ।

ভারতবর্ষের ভিন্ন ভিন্ন স্থানে যে ইউরোপীয় ও এতদেশীয় সেনাদল আছে, উক্ত সম্পাদক তাহার এক হিসাব দিয়াছেন :—

ইউরোপীয় ।	
বঙ্গদেশ প্রভৃতিতে	২২,৮৫০
মাদ্রাজে	১৩,৫৭৫
বোম্বাইয়ে	১২,৮০০
মোট	৪৮,২২৫

এতদেশীয় ।	
বঙ্গদেশ প্রভৃতিতে	১১,০০০
মাদ্রাজে	৩,০০০
বোম্বাইয়ে	৩,০০০
মোট	১৭,০০০

প্রধান প্রধান নগরে সেনাদিগকে এতদূরে রাখা হইতেছে যে সিপাহীদিগের আতঙ্ক ইউরোপীয়দিগের সংখ্যা অধিক । ৩ পি কয়েক ব্যক্তি পদে পদে বিদ্রোহ স্বপ্ন করিতেছেন ।

সিবুলিয়া পর্বতে এক জন ইউরোপীয় দ্বীলোক নিজস্বাধীকে পরদারগামী বলিয়া উহার নামে নালিশ করিয়াছেন ।

রসবাজারে ধর্ম্মদাস বুধোনাথায় ও ফে ব্রহ্মোজন ততীচাধ্যায় বিচার হইয়াছে । ফে ব্রহ্মোজনের ৫০০ টাকা জরিমানা ও ৬ মাস নির্যাস এবং ধর্ম্মদাসের এক মাস নির্যাস হইবে । ফে ব্রহ্মোজন ততীচাধ্যায় তাকরের ও সম্পাদক ।

৩রা আষাঢ় শনিবার ।

গবর্ণমেন্টে আজ্ঞা দিয়াছেন ইনকম ট্যাক্স ন শতকরা এক টাকা রাজস্ব প্রস্তুত প্রভৃতির জন্য বিনিয়োগিত হইবে । এই টাকা নো কালক এর মধ্যে পরিগণিত হইবে । এটীকী অবলম্বনীয় পণ্য

গবর্ণমেন্টে অর্চিহিত কর্মচারিদিগকে লেও সাহেবের প্রস্তাদানুসারে উক্ততর পদ দিবার আজ্ঞা দিয়াছেন তদ্বিত্ত সকল অফিস হইতে কর্মচারিগণের গুণাগুণের রিপোর্ট চাওয়া হইয়াছে । গবর্ণমেন্টে ক্রমে প্রস্তুত পণ্য আনিতেছেন ।

লেপটনেন্ট গবর্ণর শিখা কান্দোয় প্রদেশ অধ্যক্ষের অগ্রয়োণ ক্রমে কলিকাতা হিত্ত কিচচ অব বালেনজ বিদ্যালয়ে বাসিক ৭৫ টাকা আশ্রুকৃত্য প্রদান করিয়াছেন ।

নিম্নলিখিত মূল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ বিক্রীত হইতেছে ।

৪ টাকার মিকি	৭০ - ০
৪ টাকার কোম্পানির	২৩,৯০
৫ টাকার	১০,৫৫১-০৭
৫৪	১১,১১ - ৫

সুপ্রমকোর্ট ।

বাহাদুর শাহ ও অন্যান্য দুই ব্যক্তির একটি বারান্দার কতকগুলি আলফার অপহরণ কবান্তে তাহাদিগের ১৮ মাস নির্যাস হইয়াছে ।

ভিভিড হোসেন, সবডবেগ ও তোবাগান এক ভিন সাক্ষি চুরি কবান্তে পঞ্চম ও দ্বিতীয় ব্যক্তির সাত বৎসর দীপান্তর বাস ও তৃতীয়ের ১৮ মাস কানাবাসেন আদেশ হইয়াছে ।

গিফোর্ডের নাম ১০০ টাকার দুইগাছি বালা ২০০ ৫০০ টাকা চুরি কবান্তে তাহার কঠিন ২ বৎসর ৬ মাস কানাবাসেন আদেশ হইয়াছে ।

নন্দকিশোর রাই নামক এক ব্যক্তি তাপ-নায়েক মিথ্যা কবিতা আবকাবীর এক জন গোয়েন্দা বলিয়া পনিচয় দিয়া এক ছড়ির নিকটে পরস ও সুরা লওয়াতে তাহার ৩৬ পক্ষ মিথ্যা হইয়াছে ।

জন বড নামক যে ব্যক্তি উক্ত পক্ষি-কলে এক জন বেথপালকের গাংবধ কলে, তাহার কানী হটবাব আদেশ হইয়াছে ।

বীজু দত্ত নামক এক জন পুত্র তন চোর দুইটি পিতলের মোটা চুরি কানাবাছিল বলিয়া, তাহার ১৮ বৎসর দীপান্তর বাসেন আদেশ হইয়াছে ।

জন মচন্দ্র মির্জা লীল কবিতাছিল বলিয়া, তাহার ১৮ বৎসর দীপান্তর বাসেন আদেশ হইয়াছে ।

গোপালনাথ পণ্ডিত নামক এক ব্যক্তি কতকগুলি বোম্বাই অসহ, অপহরণ কবান্তে ১৮ মাস কঠিন নির্যাস ৬ মাস কানাবাসেন আদেশ হইয়াছে ।

গবর্ণমেন্টে বিভ্রাপন ।

বালেনজের সেক্রেটারি গবর্ণমেন্ট

আলেক্সান্দ্রসাবী নিয়োগ

৩২এ ৩২- মিল লিখিত বক্তৃতি ৮৩০
আকর ২ মাইনে ২ খাবা ১৮১২ অক্টোব ১০
আইনে ৩ ১৮১৮ অক্টোব ২৯ খাবা ১৮১৮
লবণে কন সুপারিন্টেন্ডেন্ট অফ
২২ন ।

৫৭এমের মাজিষ্ট্রেট ।

জুসুয়ার	৫
বাকরগজের	৫
যশোহরের	৫
২৪ পরগণার	৫
ভগলির	৫
মেনলীপুরের	৫
বালেনজের	৫
কটকের	৫
পূর্বীর	৫

৫৭এম ।

আহানাবাদে মাজিষ্ট্রেট ।

যশোহর ।

কেন্দ্রার	৫
পুসনাব	৫
কোটচাঁদ পুরের	৫
জোইগেদের	৫

মণ্ডির	ঐ
১৪ পরগণা।	
বাঁবালাভৈরব	ঐ
বাঁকুইশ্বর	ঐ
বলিদহাটেন	ঐ
জারনগুদাবাহের	ঐ
লাভকীরার	ঐ
কটক,	
জাজপুরের	ঐ
কেশারাপাড়ার	ঐ
শালেশ্বর।	
ভট্টকেব	ঐ
বাঁকরগঞ্জ।	
বাঁকুবিপুরের	ঐ
জিরাজপুরের	ঐ
মেদিনীপুর।	
শববেতার	ঐ
ভালুকেব	ঐ
মণ্ডলা।	
কং লালাজাজপুরের	ঐ
১৫ গ্রাম।	
নজবাঁজাধের	ঐ

२५ अम—रात्रि विमलांशु शोभा उममलकन
२६ रात्रि विमलांशु शोभा उममलकन
अम २५ रात्रि विमलांशु शोभा उममलकन

প্রেরিত ।

ক্রিয়ন্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

महामासुद ।

नादमय निःशब्द विषयः ।

কলেকটর ডইল যখন নারিক এক ভ্রমবাস্ত
মুখের উপর এক প্রাণে অসিদ্ধি-টি সাক্ষ্য-ট
হইয়া আসিয়াছে। তুতপূর্ণ নীল মেঘত
বিশ্ব ও টেলব সাহসের নারিক উচিত
নাম তুত নহেন। বিচার কালে সাধা-সুসা-
অপন বুদ্ধি পরিচালন করিতে কুট কখন
না। যিলা ও পরিস্থিতি হইয়া অসাধারণ উ-
ল্লাস। উচিত একদিন অসুখ-বাস্তবসম্মত অ-
বশন সাক্ষ্য। ঐচ্ছিকোপাসন। যথানিয়মে প্রাণ
এবং সত্যের কাহী। সত্যপন্যস্তে ব্রাহ্ম-
সত্য প্রধান মত ও নিষ্ঠাবাদি অবগত হইয়া
সত্যেতে প্রতিপন্ন করবেন।

শিখারীলাল শাহক এক জন মিসনরি এ
খ্রিস্ট আশ্রিত। কএকটি বিদ্যালয় সংস্থাপন
করিয়াছেন। মিসনারিরা। জাতদেশের যথার্থ
হিতাকাঙ্ক্ষী। এত জুজুয়া বলাবোলে দুর্ভাগ্য
মীলকরের সংখ্যা ক্রাস হইয়া যথার্থ লোক
চিঠিখোঁ মিসনারির সংখ্যা দিন দিন হ্রাস

পাইলে দেশের নেকত গ্রহণ কর; তাহা
 করুতব করা। অতঃপর; ব্রাহ্মদিগের সহিত
 উক্ত মিলনবি মহোদয় ধর্মবিধয়ে তর্ক বিতর্ক
 করিষেন একপা বোধ হইতেছে।

জানাবণের কুসন জাল। সত্তর আশিন
খ্রীষ্টাব্দ বার আশিনব্রহ্ম বন্দোপাধ্যায় মহাশয়
একটি অক্ষুত লোক। ইহার গুণাবলি লিখিতে
গেলে লেখনী অবসর হইত। পড়ে। ইনি এমনট
দীর্ঘ ও নূরু কাগ যে ইহাতে লেখিবামাত্র সত্ত
কণের সন্ধান কাণ্ড স্মৃতিপথে আরম্ভ হয়।
ইহার যেমন সুল পরীক্ষা, সুকীর্টিও তদন্তক।
১৮৮০ সালের সহিত গভীরাগ্নি বিষয়ে ইনি
একটি অস্বাভাবিক ঘটনা। যিনি দুর্ভাগ্যক্রমে পূর্বে
লোকমুখে ইহান গুণাবলি অবগত না হওয়াতে
একবার ইহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে যান, তিনি
আন দ্বিতীয় বার ইহার বাসস্থান নিকট দ্বিঃ, গ-
মন করেন না। কাছানির উপাধীন আগল,
গণক কেবল সর্বদা এই প্রকৃষ্ট চরিত্রময় মহা
কবিত্তে। তিনিতে পাঠি মধ্যে ১৮৮৫ ইনি
জাবার জল সাতকের নিকট লোকের দুর্ভাগ
করিয়া থাকেন। সেখান হইতে উল্লাস অবলম্বন
করিয়াই ইনি এখানে উক্ত গবেষণাক্রমে ই
হাছেন। বিদ্যা বিষয়ে ইহার অসাধারণ উৎ-
সাহ, কথায় কথায় সুলেব প্রতি অনায়াসে
সাক্ষাৎ প্রেরণ করিয়া থাকেন। আর ১৮৮৬ সিন-
য়েও একজন অসাধারণ লোক। সঙ্গীতক মহা-
শয়। কোন চিন্তাশক্তিতে লিখিত আছে যে ব্রা-
জনেও পরদারগমনপাণ লিখিত হইতেই বুঝি

তিন চারি দিবস যাত্রা এখানে আসছে
 গ্রীষ্ম কটোয়াছে। জাহাজের মধ্যে ১০ মাসের
 ৫০০ টি টিউন আছে। জাহাজের মধ্যে ৫০০ টি
 ১০০ টি টিউন আছে। জাহাজের মধ্যে ৫০০ টি

नमो भगवते वासुदेवाय ।

३२

श्रीयुक्त नमो भगवते वासुदेवाय

বহু:দেব ।

ସଂସ୍କୃତ ଭବତୁ ମଧ୍ୟ ନା ହେବି ଅନୁଜବ ।

‘‘ଅମୃତା କୁ’’ ଡିଏ ଅତି ସନୌହର ।

ਅਖਾੜਦ ਸ਼ੋਅ। ਤੀਨ ਨਿਕਾਟੋ ਪੰਜਾਨ ।

গোলাপ কুমুম তথা: সৌরভ বিহীন ।

বিস্তারিত মন্তব্য যদি প্রয়োজন হইল অধিকার করে
 'ডাঃ চট্টোপাধ্যায়' তিনি অগ্রবর্তী হইলেন।
 প্রকৃষ্ট জ্ঞানবোধে বাক্য ন। বহু শত শত লোক সম-
 বেদ হইয়া যে কর্ম করিতে অশক্ত, বিদ্যাও যে
 কর্ম সম্বন্ধে প্রকাশ করেন, একাকী মর্মেণ বলে

সহ্য। তাহা অবলীলা ক্রমে সম্পন্ন করিয়া থাকেন। যদি যুগেকের পাশ ছেদন করিয়া এ দেশীয় ব্যক্তিব। বিশুদ্ধ ধর্মের আশ্রয় গ্রহণ করেন, তবে পৃথিবীতে তাঁহারা অনভিনীতকাল মধ্যেই সম্ভ্রান্ত আত্মনিবেশে পরিণত হইতে পারেন। ততদিন তাঁহারা আপনাদিগের সহজ জীবনের উপভোগ অবহেলা করিয়া অশেষ অনিষ্টকর পৌত্তলিকতার শাসনে শাসিত হইবেন ততদিন তাঁহাদের উন্নতি সংস্থাপনা নাই। তাঁহারা আপনাদিগের প্রতি আবদ্ধ কাল এরূপ তরানক নিতর্য ব্যবহার করিবেন? পৌত্তলিকতা যে তাঁহাদের সকল উন্নতি হার রুদ্ধ করিয়া থাকিবে! হাব উন্মুক্ত না থাকিতে গৃহের অভ্যন্তরস্থ সত্তা যে এক কালে কলুষিত হইয়া পেলি, তাঁহারা কি তাহা দেখিয়াও দেখিবেন না? হার রুদ্ধ করিয়া আর কিছু কাল অচেতনে মিথ্যা থাকিলে তাঁহাদের জীবনশাশি এক ধারে বিশৃঙ্খল হিতে পড়িবে। সাধারণ লোকে জানালোক প্রাপ্ত হয় নাই, সুতরাং তাহাদিগের কুসংস্কারীকৃত ধর্ম অসম্ভব নহে, কিন্তু অত্যন্ত আক্ষেপের বিষয় এই যে এখনও কৃতবিদ্যা ব্যক্তিদ্বিগের মধ্যে অনেক পৌত্তলিকতার অনারতা দৃশ্যমান করিয়াও তাঁহাদের অধিকার রক্ষা করিতে বহুশীল চেষ্টা করিয়াও তাঁহারা হস্ত বনে করেন যে এখন বিদ্যোপার্জন করিতে তাঁহারা সক্ষম হইরাছেন তখন তাঁহাদের সকল বরই লাভ হইরাছে। তাঁহাদিগের এ বিষয় আশ্চর্য্য কত দিনে অন্তর্হিত হইবে। তাঁহারা সরল হইয়া একবার আপন আপন কাঙ্ক্ষাকে জিজ্ঞাসা করুন দেখি, তাঁহারা সকল অভাব হার হইরাছে কিনা - সেই আশা যথার্থ আপনাদের পরম পদ লাভ করিয়াছে কিনা। নিঃসন্দেহ বল। থাকিতে পারে তাঁহাদিগের আশা। কখনই ইচ্ছাতে হ'। বলিয়া সাগর দিবেন না। তাঁহারা যত দিন ধর্মভ্রাতা হইয়া থাকিবেন তত দিন তাঁহাদের মিলেবও বজল নাই, ততদিন তাঁহাদিগের স্বাধা এদেশেরও মঙ্গল সাধন হইবে। যদি আপনাদিগের ও দেশের উন্নতি দর্শনে অতিলাব থাকে তবে তাঁহারা মনের কুটিল ভাব সমস্ত হার করিয়া দিউন। লোকভর্য্য বিশৃঙ্খল দিয়া দেশের আশ্রয় গ্রহণ করুন, এবং যে যেহু দেশের সহ্যকে দেশের মঙ্গল বিধানে অগ্রসর হইয়াছেন তাঁহাদিগের পথে বিঘ্নরাশি সন্নিবিষ্ট না করিয়া তাঁহাদিগকে উৎসাহ ও সাহায্য প্রদান তৎপর হউন। তাহা হইলে তাঁহারা দেশের আশ্রয়ণী হইবেন, ধার্মিক জীবন নিকাট আশীর্বাদ লাভ করিবেন এবং দেশ

ਸੇਵਿਨੀ ਪੁਤ੍ਰ ।

সোমপ্রকাশ

“অবর্তনায় একতিহিতার পার্শ্বঃ প্রবর্তী প্রতিমহতী ন বীথতাঃ।”

৪ ভাগ,
৩০ পৃষ্ঠা।

সন ১২৬২। ১০

শ্রী ১৮৬২। ২৩ জুন

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

সোমপ্রকাশ।

১. ই আদ্যে সোমপ্রকাশ।

সাহাবাদের অধিকার সম্প্রদায় অত্যাচারের

চারের অনুসন্ধান ও তৎপণ।

আমাদিগের দুজন লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বীড়ন সাহেবের অধিকারদাল একটি শুভ কাণ্ড দিয়া আবদ্ধ হইল। ইহার পূর্বগত লেপ্টেনেন্ট গবর্নর গ্রান্ট সাহেবের চেয়ার মীলকরদিগের অত্যাচাররূপে ভগ্ন হইয়া দিত হইয়াছে। এখন অত্যাচার প্রকাশ হইয়াছে, তখন আজি হউক কালি হউক দশ দিন পরেই হউক অবশ্যই তাহাব প্রতীকার হউক। বীড়ন সাহেবের যত্নেও গবর্নর মেণ্টের অবিদিত পূর্ব (অন্যে অবিদিত নহে) একটি অত্যাচার প্রকাশ হইয়াছে সেই অত্যাচার সাহাবাদের অধিকার ঘটিত।

পাঠকবর্গ পূর্বেই শুনিয়াছেন সরকার সন্ন্যাস দাতা প্রথমতঃ এই অত্যাচারের বিষয় সাধারণের গোচর করেন, বীড়ন সাহেব তাহা দেখিয়াই উহার অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হন। অনুসন্ধান দ্বারা স্থির হইয়াছে, সরকার পত্রপ্রেরক যেকপ লিখিয়াছেন, তাহা অত্যন্ত ঠোটে কিন্তু অধিক নোংরা কৃষকদিগের নিকট হইতে আমলাগণ নিয়ায় পূর্বক যে অর্থ গ্রহণ করেন, তাহা মিথ্যা নহে। তিনি বলেন বৎসরে দেড় কোটি টাকার অধিকের ক্রয় করা হয়, কৃষকেরা ও তাহা যে মূল্য পায় তাহা হইতে বৎসর অনেক লক্ষ টাকা আমলা প্রকৃতি ঠকাইয়া লইয়া থাকে। এই টাকা যদি এইরূপে

কৃষকদিগকে না দিতে হয়, তাহা হইলে গবর্নমেন্ট এক্ষণে যে মূল্য অধিকের ক্রয় করিতেছেন, তাহা অপেক্ষা অল্প মূল্যে পাইতে পারেন। এক্ষণে প্রতি সের পাঁচ টাকার সওয়া হইতেছে, প্রবন্ধনা বদ্ধ হইলে প্রতি সের চারি টাকা আট আনার পাওরা যাইতে পারে। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বলেন সরকার পত্র প্রেরক লিখিয়াছেন, কৃষকদিগের দ্বারা বৎসরক অধিকের কৃষিকার্য করা ইয়া লওয়া হয়, কিন্তু তাহা বাস্তবিক নহে। এখানে আমাদিগের বক্তব্য এই, গবর্নমেন্ট স্বয়ং নীলকরদিগের ন্যায় বৎসরক অধিকের কৃষি কার্য করাইয়া লন না বটে, কিন্তু আমলা প্রকৃতির যখন তত প্রতীক ও অর্থ লোভ রূপিত হইবে এবং অধ্যক্ষদিগের তদৃশ তদ্ব্যবধান ও অন্যায় অর্থ গ্রহণপ্রবাস নিবারণ চেষ্টা নাহি, তখন কৃষকদিগের প্রতি বৎসরক হওয়া অসম্ভবিত নহে। তবে সে বৎসর প্রয়োগ প্রকাশ হউক আর না হউক সে স্বতন্ত্র কথা।

লেপ্টেনেন্ট গবর্নর এই অত্যাচারের যে স্বারাণ ও প্রতীকারের উপায় নির্ণয় করিয়াছেন, এখানে তাহারও উল্লেখ করা আবশ্যিক। আমলা প্রকৃতির বেতনের অল্প তাই উল্লিখিত অন্যায় অর্থ গ্রহণের কারণ। আমলাগণ চারি টাকা করিয়া বেতন পায়, কিন্তু এখন সরকারের সামান্য সজুর বেতন মাসিক হয় টাকা। এই কারণটি অনুমোদিত থাকিতে লেপ্টেনেন্ট গবর্নর প্রতি

কারের যে উপায় স্থির করিতেছেন, তাহা কোন ক্রমেই কলোপকারী হইবে না। তিনি বলেন আমলাগণ বাহাতে কৃষকদিগের নিকট হইতে অত্যাচার অর্থ গ্রহণ করিতে না পারে, অধ্যক্ষেরা সবিশেষ সতর্কতা সহকারে তদ্বিষয়ে সঙ্গী হইয়া রাখেন এবং কৃষকেরা আমলা প্রকৃতিতে দ্বার বন্ধ না করিয়া বাহাতে সাক্ষ্য সবল অধ্যক্ষদিগের নিকট হইতে দাবী গ্রহণ করে এই কণ চেষ্টা করা আবশ্যিক ভাষ্য হইলে প্রবন্ধনার অসম্ভাব্য হইবে সন্দেহ নাই। কিন্তু অল্প বেতনতর আমলাদিগের আধিপত্য থাকিতে এক কালে যে প্রবন্ধনা বদ্ধ হইবে ইহা কোনক্রমেই সম্ভবিত নহে। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর আমলাদিগের বিষয়ে লিখিয়াছেন, অল্প বেতনে অধিক আমলা রাখা রাখিয়া অধিক বেতনে অল্প আমলা রাখা বিধেয়। এখানে আমলাদিগের এই একটি নিজস্ব হইতেছে, লেপ্টেনেন্ট গবর্নর অধিক বেতন দিয়া যে আমলা রাখিবার প্রস্তাব করিতেছেন তাহারা বিকল্প আমলা এককবার অশিক্ষিত আমলাদিগকে কি অধিক বেতন দিয়া রাখা হইবে? গবর্নমেন্টের যদি আমলাগণ অত্যাচার নিবারণের বাস্তবিক চেষ্টা জাগ্রত থাকে, সুশিক্ষিত লোকের অন্বেষণ করুন। তাহাদিগের বেতনে যেমন কিঞ্চিৎ অধিক বাইবে তেমন অন্যদিকে লাভ হইবেক।

এই প্রসঙ্গে আমলাদিগের অতিশয় সবিচার কৌতুক জড়িত হইবে। যে কোন রূপে

ক'র'র। আমলায় সম্পর্কে যায় তাহা
গের উপরেই অত্যাচার হয়, গবর্নমেন্ট
৩ দিনের পর এইটা যুতন জানিতে পা
রলেন !! অতঃপর ১৩ এত দিন যুখে গো
দয়া ছিলেন !! তাৎপ্যে সম্বাদপত্র ছিল !!
এত উপকারকারী সম্বাদপত্রেরও মধ্যে ম
ধ্যে স্বাধীনতা হরণের চেষ্টা হইয়া থাকে

হরকরা পত্র হইতে এই উপকার লা
ভ হইয়াছে বলিয়া লেণ্টনন্ট গবর্নর তৎ
সম্পাদকের নিকটে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ ক
রিয়ান্নে। অপর, হরকরার পত্রপ্রেরক কা
লীসাহীর যে চূর্ণাম করেন, লেণ্টনন্ট
গবর্নর তাহা যথার্থ বলিয়া বিশ্বাস করেন
না। এই কালীসাহী হরকরার পত্র প্রেরকের
নামে মিথ্যাপত্রকারী বলিয়া অভিযো
গ করিয়াছেন। তত্বতা অন্যতর অধ্য

কিন্তু সাহেবের সহিত কালীসাহীর
সম্মিলন প্রণয় ছিল এবং কিন্ত সাহেব
যথাবিধি স্বকর্তব্য কর্ম সম্পন্ন করিতেন
না বলিয়া তাঁহাকে স্থানান্তরিত করা হই
তেছে। যদি একপং ইল, তবে কেন আর
হরকরার পত্র প্রেরকের নামে মোকদ্দমা
চলে? তাঁহার যত্নেই গবর্নমেন্ট উল্লিখিত
অত্যাচারের বিষয় জানিতে পারিয়াছেন।
যখন অন্য অন্য আমলার অত্যাচার বি
ষয়ে সন্দেহ রহিতেছে না এবং কালী সা
হীর সহিত কীলড সাহেবের ঘনিষ্ঠতার
বিষয় সপ্রমাণ হইয়াছে, বিশেষতঃ কীল
ডকে স্থানান্তরিত করা হইতেছে, তখন
যে কীলড ও কালীসাহী প্রকৃত হরক
রার পত্র প্রেরকের বাক্য সম্পূর্ণ অলীক,
তাহা কিরূপে প্রমাণ হইতে পারে?
যেখানে এক সন্দেহ, সেখানে দণ্ড বিধান
কোন ক্রমেই যুক্তি সিদ্ধ হয় না। এত
স্থলে দণ্ড বিধান হইলে আর কেহ অন্য
র অত্যাচারের বিষয় রাজপুরুষদিগের গো
চর করিতে সাহসী হইবে না। অন্যের
অত্যাচারের বিষয় অপ্রকাশিত থাকুক, গ
বর্নমেন্টের কখন একপং অতিশ্রদ্ধ নহে।

পূর্বাপর পর্যালোচনা করিয়া কোন ক
মেই আমাদিগের একপং বোধ হইতেছে
না যে কালীসাহী ও কীলডের বিষয়ে হব
কর'র পত্র প্রেরক যে কিছু লিখিয়াছেন,
সে অনুসার বিবেচ্য মূলক।

ইংলণ্ডের সার বাসোভার।

পাঠকবর্গের স্মরণ থাকিতে পারে
পূর্বে উল্লেখ করা গিয়াছে ইংলণ্ডের ২৮
সতা ভারতবর্ষের রাজস্ব হইতে লোভিত
সমুদ্রের টেলিগ্রাফ কোম্পানিকে দ্য দি
বার আত্মা করিয়াছেন। বিশেষ করিয়া
বলিয়া না দিলেও বিচক্ষণ ব্যক্তি নান্দ্রই
বুঝিতে পারিবেন লোভিত সমুদ্রের টেলি
গ্রাফ ইংলণ্ডেরই সম্বিশেষ উপকারের জন্য
হইয়াছে। মহাসভা কি হেতুবাদে এদে
শীয় রাজস্বের উপরে হস্তার্পণ করেন
তাঁহারা কি আমাদিগের অর্থসম্বন্ধ ও
অসম্বন্ধিত দায়ী? ইংলণ্ডের রাজস্বের
র ঋণের দায়ী হইলেন না। মহাসভা
দায়ী নহেন, তবে কি যুক্তিতে তাঁহারা
আমাদিগের বয়ের উপর হস্তার্পণ করেন?
তাঁহারা আমাদিগের অসম্বন্ধিত ১৪০০০ সেন
নার বেতন লইতেছেন, তাঁহাদিগের অনেক
কর্মচারিও আমাদিগের নিকটে হইতে
বেতন পাইতেছেন, তাহাও যথেষ্ট হইল
না! মহাসভা ও ইংলণ্ডের গবর্নমেন্ট এক
পং যথেষ্ট পূর্বক আমাদিগের টাকা ব্যয়
করিতে লাগিলেন।

আমরা এদেশের প্রতিনিধিস্বরূপ হ
ইয়া স্পষ্টাতিথানে ইহার প্রতিবাদ কবি
তেছি। সত্য বটে ভারতবর্ষ ইংলণ্ডের অ
ধীনস্থ; একপং কানাডা ও অস্ট্রেলিয়াও
ইংলণ্ডের প্রভুত্ব স্বীকার করে। কিন্তু
মহাসভা অথবা ইংলণ্ডের গবর্নমেন্ট কোন
কি তত্ত্ব গবর্নমেন্টের অসম্বন্ধিত তত্ত্ব
রাজস্ব ব্যয় করিতে পারেন? কত রেজি
স্ট্র ইংলণ্ডে থাকিয়া কানাডা বা অস্ট্রেলিয়া
অথবা রেপ'কলনি হইতে বেতন পাইতে

হে, যদি তাহা না হয় তবে ভারতবর্ষ কি
অন্য অন্যায় সহ্য করিবেন।

আমরা এককেশীয় ও ইউরোপীয়
একলকে অনুরোধ করিতেছি, তাঁহারা সর
চারলস উডের অনুমত মহীমূরের টাকার
নাম এই দানের প্রতিবাদ করুন। তাঁহারা
এর প্রদান করিতেছেন, এবিষয়ে মনোযোগ
দাও হইলে তাঁহাদিগের দমনবৎসর অন্তর
যুতন প্রকাশ করতঃ বহন করিতে হইবে
সন্দেহ নাই। তাঁহারা একত্রিত হইয়া কয়ে
ক বক্তৃতা ইংলণ্ডের মহাসভার প্রতি
নিধি করিবেন। কখন। যখন ইংলণ্ডীয়
গবর্নমেন্ট ও মহাসভা এদেশের রাজস্বের
র ও রাজস্বের উপরে হস্তার্পণ করিতেছেন,
তখন কখন আমাদিগের কয়েক জন প্রতি
নিধি থাক'মতঃ আবশ্যক। আজি যেন
আপ' টাকা দেওয়া হইতেছে, কিন্তু কোন
ব্যক্তি বলিতে পারেন যে পাবল্যাধিপতি
র সহিত যুদ্ধ উপস্থিত হইলে মহাসভা
তাঁহার সমুদ'র ব্যব আমাদিগকে দিবে
বলিবেন না। এই সময়ে সতর্কতা হইলে
শেষে পরিতাপ করিতে হইবে।

ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্ট আমাদিগের এ
প্রার্থনা অগ্রাহ্য করিতে পারিবেন না।
আমেরিকার এইকপ প্রার্থনা গ্রাহ্য না
করিয়া তদধিকার হইতে ন্যস্ত হইয়া
ছেন।

বিদ্যালয়

তিন প্রেসিডেন্সিতে তিনটি বিশ্ববি
দ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। তন্মধ্যে কলি
কাতা বিশ্ববিদ্যালয়ই সর্ব প্রাধান্য লাভ করি
য়াছে। প্রতি বৎসর উপাধিধারিদ্বিগের
সংখ্যা বৃদ্ধি হইতেছে। ইহা দ্বারা দেশে
র যে মহাপকার লাভ হইবে তাহা
বিলক্ষণ বোধ হইতেছে। কিন্তু এ বিশ্ব
বিদ্যালয়টিরও সর্ববয়ব পূর্ণতা প্রাপ্ত হয়
নাই। কয়েকটা বিষয়ের অসম্ভাব আছে।
সেই অসম্ভাবগুলি পরিপূরিত না হইলে

ইউরোপীয় বিশ্ববিদ্যালয়ের ন্যায় ইহা কলোপখারী ও লক্ষপ্রতিষ্ঠ হইবে না। বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রথমতঃ স্বতন্ত্র বাটী নাই। ইহার মহাসভা কেবল উপাধিই প্রদান করেন, কিন্তু ছাত্রদিগের শিক্ষা বিষয়ে সমাধিক সহায়তা করিতে পারেন না। ইউরোপ ও আমেরিকার বিশ্ববিদ্যালয়ের ন্যায় ইহার স্বতন্ত্র নিয়োজিত অধ্যাপক নাই। কলতঃ আমাদিগের এই বিশ্ববিদ্যালয় স্বার্থ বিধানর বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে না। এই অতাব গুলি দূর করিবার অভিপ্রায়ে সম্মতি হইবার মহা সভার অধিবেশন হয়। সভায় গণ্ড শনি কার আপনাদিগের মত ভারতবর্ষীয় গণের মতের গোচর করিয়াছেন। অতিশয়িত স্বাধীনতার বর প্রার্থনা করা হয় নাই বটে কিন্তু ক্রমে অতিশয়িত বিষয় গুলি সুসিক্ত হইবে তাহার সম্ভাবনা আছে।

সভা প্রথমতঃ বিশ্ববিদ্যালয়ের নিমিত্ত একটি স্বতন্ত্র বাটী প্রস্তুত করিবার অনুপ্রোধ করি ন হেন। ইহা বাজালি পণীতে সংস্থাপিত হইবে। ইহার নিমিত্ত প্রায় তিন বিঘা ভূমি লওয়া হইবে। এত ভূমি লইবার তাৎপৰ্য্য এই প্রয়োজন হইলে বাটী বৃদ্ধি করা বাইতে পারে। এই বাটীতে সভার অধিবেশন, উপদেশ দান, পরীক্ষা প্রভৃতি হইবে। কিন্তু বিশ্ববিদ্যালয়ের সাধারণ পরীক্ষা এই বাটীতে হইবে না। দ্বিতীয়তঃ প্রতি বৎসর যিনি বি. এ. জে. গির মধ্যে প্রথম হইবেন তাঁহাকে ৪০ টাকা মাসিক ছাত্রবৃত্তি দেওয়া হইবে। এম. এ. উপাধি পাইলে ৫০০ টাকা দেওয়া হইবে। ডাক্তার ডক, স্নাতক বিশপ প্রভৃতি কয়েক জন বিশ্ববিদ্যালয়ে অধ্যাপক নিয়োগের প্রস্তাব করেন। কিন্তু বীডন সাহেব, আরকিন সাহেব প্রভৃতি কয়েক জন ইহার বিরোধী হওয়াতে শেষে স্থির হইয়াছে, যদি এতদেশীয় কোন ধনবান ব্যক্তি অথবা

অধ্যাপক নিয়োগের বর দেন, গণপণ্ডিত তাহতে অতিবক্তব্যতাচরণ করিবে না। এই সমস্ত অধ্যাপক অন্য কোন বিদ্যালয়ে অধ্যাপনা করিতে পারিবেন না। বিশ্ববিদ্যালয়ের শাখা কালেক ও মহান্য বিদ্যালয়ের ছাত্রগণ নিয়মিত-বেতন দিয়া উক্ত দিগের উপদেশ গ্রহণ করিবেন। আপাততঃ পদার্থ বিদ্যা শিক্ষা দিবার নিমিত্ত এক জন অধ্যাপক নিয়োগের প্রস্তাব করা

সভা যে যে প্রার্থনা করিয়াছেন সে সমুদায় গুলি সম্মত। কিন্তু আমরা স্থগিত হইতেছি অধ্যাপক নিয়োগের বিষয়ে তাঁহাদিগের মত ভেদ হইয়াছে। স্বতন্ত্র অধ্যাপক নিয়োজিত না হইলে বিশ্ববিদ্যালয়ের যথোচিত দৌরব থাকে সম্ভাবিত নহে। অতঃ কোন বিদ্যালয়েই ধর্ম্মনীতির যথাপদ্ধতি শিক্ষা দেওয়া হইবে না। আপাততঃ অতঃ ধর্ম্মনীতির এক জন উপদেশক নিয়োজিত করা অভিশয় আবশ্যক। বিদ্যাবিস্তার বাতাতে কেবল বুদ্ধি বৃত্তির চালনা হয় একপু শিক্ষাই পাইতেছেন। অনেকে একপু শকা করিতেছেন ধর্ম্মনীতির অধ্যাপক নিয়োগ স্থগীকৃত হইলে মিসনরি সম্মাদানের অনাতব ব্যক্তি নিঃসন্দেহ তাৎপদে প্রতিষ্ঠিত হইবেন। ইহাতে এতদেশীয়েরা বিরক্ত হইতে পারেন। মিসনরি অথবা বাইবেলের নামে শক্তিত হওয়া বিবেচন নহে। বৃহৎ ধর্ম্মাবলম্বী করিবার উদ্দেশ্যে বাইবেলের অধ্যাপনা অন্যায় বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে। কিন্তু ধর্ম্মনীতি সংক্রান্ত শিক্ষা দিবার অভিপ্রায়ে বাইবেল হইতে কিছু গ্রহণ করিলে দোষ হইতে পারে না।

একণে এতদেশীয় ধর্ম্মী ব্যক্তিদ্বিগের নিকটে আমাদিগের অনুরোধ এই অনেকে নদায় ঘাট ও কানীতে মন্দির প্রভৃতিতে বিত্তর অর্থ ব্যয় করেন, কিন্তু একণে এক অধিবাসন মন্দির স্থাপন করিবার উপায়

হইয়াছে। এই সময়ে করিয়া অধিবাসন ইউরোপের অনেক দেশে বিদ্য বিদ্যে র যাবতীয় ব্যয় প্রদান দিন এই সোমপ্রকাশে ১৫ লক্ষ টাকা দানে ত হইয়াছে। এতদেশীয় কি এ বিষয়ে যত্নবান হইবে

শক্তি।
সম্মত।
বিশ্ববি
প্রাণে
নে
স্থি
কানি
কেরা

৫২

স্থপিত নলে হিন্দুধর্মে

নত দূর প্রভুত্ব।

এক জন ত্রাঙ্গ আপনার মনে ষাত প্রকাশ করিয়া আমাদিগের নিক এক ধানি পত্র প্রেরণ করিয়াছেন। যথা হাউনে একটি দৃষ্ট হইবে। পত্র পাঠ করিলে কেবল যে সাধুশীল সুশিক্ষিত দলের মনের তাব অবগত হওয়া যায় একপ নহে, একণে স্থপিত ন হিন্দুধর্ম্মের কত দূর প্রভুত্ব আছে, তাহ বিশেষরূপে জানিতে পারা যায়।

একণে অনেকে লৌকিক রক্ষায়ে বাজ। লৌকিক রক্ষা করিতে গিয়া ন্য পরতা বিসর্জন করিতে হইক, আপাদিগের যেকপ নংকার ও বিশ্বাস, তাহা বিপরীত আচরণ করিতে হইক এবং তাহিত জ্ঞানে জলাঞ্জলি দিতে হইক তাঁহারা কিছুতেই পরাভূত্ব নহেন। যঁ হারা এই সকলে জলাঞ্জলি দিয়া নটের ন্যায় ব্যবহার করিতে না পারেন, তাঁহাদিগেরই জ্ঞান বিপদ; তাহাদিগের কটোর পরিসীমা থাকে না। আমাদিগের সাধুশীল অকলটচিত্ত পত্রপ্রেরক এই ১৭৭ দে পড়িয়াছেন।

বৈর্য্যাবলম্বন ব্যক্তিরকে আপাততঃ এই বিপদ হইতে উদ্ধার হইবার উপায় নহে। যে কারণে একপ ঘটনা হইতে ছে, তাহিগর চিন্তা করিয়া বৈর্য্যাবলম্বন ২ রিজে হইবে। পত্রপ্রেরক স্বরংই কহি।

হেন, তাঁহার অসুখের
কারণ সামর্য্যও কহিতেছি,
ইংরাজ ভবিক কারণ। এ দে
শে বহু ঐ ধর্ম ও আচার ব্যব
সারিয়াছে, ইংরাজী শি
ক্সাই সম্পূর্ণ বিরোধিনী।
শিক্ষা করেন, তাহাদি
গের। সবিত্ত্বার্থে অজ্ঞতা ও অ
চার। নর প্রতি উপেক্ষা করে।
যখন তুটি বিরুদ্ধ বিষয়ের একত্র
সম্মিলিত হয় পক্ষেই অসুখিত হইবার
কথা। হ। যে পক্ষ হীনবল, তাহার
অধি। র কষ্ট। বাঁহারা এ পর্য্যন্ত এ দে
শে ইংরাজী শিক্ষা করিয়াছেন ও কহিতে
ছেন তাহারা তুটি কারণে অপর পক্ষের
অপেক্ষা হীনবল। এক, ইংরাজীতে সুশি
ক্ষিত ও অশিক্ষিত এ উভয়ের গণনা কবি
অশিক্ষিতের সংখ্যাই অধিক হইবে।
তীয়, যাহাতে বিশুদ্ধার্থে দৃঢ়তর বিশ্বা
সধর্মনীতিতে সবিশেষ অনুরাগ ও সৎ
কর্ম সাহসাদি জন্মে, তাহাশ শিক্ষা হই
তে না। তাহাশ শিক্ষা হইলে এই অসু
খ সা সুশিক্ষিত দলেই অশিক্ষিত দল দম
ন সমর্থ হইতেন।

কলতঃ উপরিগণিত তুটি কারণ বশতঃ
সুশিক্ষিত দল হীনবল হইয়াছেন। তীন
দলের সচরাচর যে গতি হইয়া থাকে, তা
হাই হইয়াছে। সুশিক্ষিতেরা অশিক্ষিত
দলের অনুগত হইয়া আছেন। কাজে কা
জুই সুশিক্ষিতদিগকে অশিক্ষিতের ন্যায়
ব্যবহার করিতে হইতেছে। যত দিন সুশি
ক্ষিতের সংখ্যা বৃদ্ধি অথবা উত্তীর্ণিত প্র
কার সুশিক্ষা না হইবে, তত দিন সুশি
ক্ষিত দলের লৌকিক কল পরিত্যাগের স
ম্ভাবনা কি।

এ দেশীয় নব্য সম্প্রদায়ের যেকোন
এক, তাহার বিপরীত কার্যের সহিত
সংঘর্ষ হইতেছে বলিয়া কেবল ধর্ম ও

আচার ব্যবহারাদি বিষয়ে কেন, রাজনীতি
সমক্ষেও বিলক্ষণ বিরুদ্ধতাব লক্ষিত
হইতেছে। ইংরাজী শিক্ষা কহিয়া দিতে
হে, বাজার নিকটে সকলেই সমান, গুণই
বিশেষকারী, বর্ণ অথবা জাতি ভেদ বিশেষ
কারী নহে। কিন্তু আমাদিগের রাজপুরুষ
দিগের নিয়তকাল এতদ্বিধ উচ্চ ব্যবহার
নয়নগোচর হয় না, কার্য কালে অনেকের
নিকট গুণভেদ উপস্থিত হইয়া বর্ণ
ভেদ আদৃত হয় আমরা দেখিতে পাই,
এতদর্শন অনেকেরই নিতান্ত অসম্মত হই
য়া থাকে। উপসংহার হলে আমাদিগের
বক্তব্য এই, যত দিন উচ্চাখ্যত বিষয়গুলির
দোষ সম্পূর্ণরূপে সংশোধিত হইয়া নব্য
সম্প্রদায়ের যাবতীয় বিষয়ে শিক্ষানুরূপ স
ম্মত না হইবে, তত দিন নব্য সম্প্রদায়ের
সম্পূর্ণরূপে সুখিত হইবার সম্ভাবনা নাই।
ততদিন নব্য সম্প্রদায়কে বিরুদ্ধ না হইয়া
কাল প্রতীক্ষা করিয়া যাহাতে এই গুলি
সম্পন্ন হয় দৃঢ়প্রতিজ্ঞতা সহকারে সেই
চেষ্টা করিতে হইবে। ইংরাজীশিক্ষা
আপাততঃ বিড়ম্বনা বোধ হইতেছে বটে,
কিন্তু পরিণামে অসুখময় ফল প্রসবকারি
নী হইবে সন্দেহ নাই।

বিবিধ সংবাদ ।

১০রা আষাঢ় সোমবার ।

লর্ড ক্যানিংয়ের অরণ্য প্রান্তর স্তম্ভের
নির্মিত টাকায় ৪০ ১০ টাকার সংখ্যক হইয়া
ছে। এ সম্বন্ধেই কি কেবল প্রস্তাবময় প্রতি
শ্রুতিতে পর্য্যবসিত হইবে?

টাকা প্রকাশে পুনরায় এক ব্যক্তি কাছা
দের চা করদিগের অত্যাচার হত্যাশি
বাহেন। অনন্তর ব্যক্তিকেও বলপূর্ব্বক কাজ
স্বইয়া লইবার প্রথা “ক্রীতজি কারীরা”
ববে পরিত্যাগ করিবেন।

আমরা গত বারে লিখিয়াছিলাম ইউ
রোপীয় মহলে ১৩টা হইতেছে, যেন পালকের
প্রাণ হত্যা রক্তের অশ্রুত প্রাণ হত্যা না হয়।
এবারে বিবিস। “ক্রীতজি কারীরা”

এই আবেদন কহিতেছেন, যে রক্তের
প্রাণ হত্যা না হইয়া হয় স্বাধীনতার বাসের নতুন
ব্যবস্থার কার্যবাসের “আবেদন” হয়। উক্ত
পত্রের সম্পাদক রক্তের সোম লক্ষ্য কবিতার নি
মিত্ত নলেন, যত টৈনিক পুস্তক, যেন পালকের
রা তর্য প্রদর্শন করাতেই রক্ত ক্রোধে অশ্রু
হইয়া উদ্ভাসিতের এক ব্যক্তির প্রাণ সংহর
করিয়াছে। “অন লোক কি ক্রোধেই রিপূর্ব
বন্দী হইত না, হইয়া অশ্রুচিহ্নে প্রাণি হত্যা
নয়।”

অত্যাচারী গোষ্ঠীর এক জন পত্রপ্রেরক
নাম সাহেব ৭ তাহার আচার বিষয়ে এই
কণ লিখিয়াছেন — “আমি (পত্রপ্রেরক)
১৩ ১৩ অক্টোবর ১৮৫৬ (নাম সাহেব
কে) লিখি, তখন তাহার বয়স প্রায় ২১ ব
সর, প্রায় ৫ ফীট ১১ ইঞ্চি লম্বা, গৌরব
বর্ণ, ন, পোশাক ন, গোল ও তীক্ষ্ণ চোখ
এবং তাহার কণ বিস্তৃত ফলতঃ নাম সাহেব
র মূর্ত্তি এমন যে ইচ্ছা কে যদি একসঙ্গে
ত্রি নাম সাহেবের মতো রাখা হয় তথাপি
তাঁহাকে ক্ষম্যাতো চিনিয়া লওয়া যায়। ১
হাব খাতাও এক জন প্রসিদ্ধ লোক। আমি
তাঁহার সহিত সর্বদাষ্ট বাস করিতাম, তাঁহা
সহিত কথোপকথন কালে তিনি প্রায়ই এই
বর্ণা কহিতেন যে গবর্ণমেন্ট তাহার আচার
প্রতি অন্যায় ব্যবহার করিয়াছেন এবং যে
ব্যক্তিকে পালিকামেন্টে আবেদন করিতে পা
ঠাইয়া দেওয়া হয়, সে ঠকাইয়াছে। ২ ফেলতা
উক্ত মর্মান্তিক করাতেই নাম সাহেব বিব্র
তে প্রাপ্ত হন।

নবীয়ার প্রসিদ্ধ হুসেন সাহেব রেজিষ্টার
বোর্ডে নিয়োজিত হওয়াতে হিন্দু পণ্ট্রিট
সম্পাদক এই অবসরে নবীয়ার প্রজ্ঞাদিগকে
তাঁহার নিকটে হস্তান্তর ও জননের অসু
রোধ করিয়াছেন। আমরাও এই অন্তরোধে
অগ্রনোদন করিতেছি।

এক ব্যক্তি রামপুর শোয়ালি হইতে
আমাদিগের নিকটে লিখিয়া পাঠাইয়াছেন,
“আজি কালি এখানে আশ্রয় বিবেচনার উপরে
পুলিশ বাটেলিয়ানদিগের দোরা। দেখিতে
ছি, উহার আশ্রয়ইয়া দুলায় না, দুলা
চাহিলে পক্ষ করিতে পার। ওয়াটসন
পুলিশ বা-

টেলিগ্রাম হইয়া উঠিয়াছে। * পুথিসের লোক
নিঃহইলে অস্ত্রের উপরে আর কে নৌয়াস্ত্র
করিবে।

উক্ত পত্রপ্রেরক আরো বলেন এ এখানকার
(রাধপুর-বোয়ালিয়ার) দুতন কালেক্টর
ঐযুত সরকার সাহেব পূর্বকার অনেক নি-
য়ম পরিবর্তন করিতেছেন। তিনি বিলিয়ার্ড
করে কালচাপন করেন না এবং বৃকক্ষমার ঘু-
য়াও আর পেয়ারেস দ্বারা লিখান না। কয়েক
জন দুহরি বিজায় লওয়াতে তাহাদিগের
কক্ষে পেয়ারেসের পরিচিত লোক না রাখিয়া
কুন্দের ছাত্রের আশ্রয় করেন। * ঐহুজি
করিমিগের পক্ষে টনি করেন।

হিন্দু পেট্রিওটের এক জন পত্রপ্রেরক
আসামের চা করতের এক অভ্যাসের বিষয়
লিখিয়াছেন তাহা অত্যাচারের বিষয়
লিখিয়াছেন তাহা অত্যাচারের বিষয়
লিখিয়াছেন তাহা অত্যাচারের বিষয়

কাছারিপুকুরের কুটির অধ্যক্ষ সাহেব দ্বা-
প্রাসাদে নামে এক জন দুহরিকে একদিন
বধু কথা কহিয়াছিলেন, পুনঃ পুনঃ এইরূপ ক-
থ্যেতে সে কহিল এপ্রকার কথা অন্যায়, যদি
কোন অপরাধ হইয়া থাকে চাঃ অধ্যক্ষকে জা-
ত করুন। সাহেব এবং কাছারী আরো কষ্ট ক-
হিলেন। দুহরি সত্য করিতে না পারিয়া অধ্য-
ক্ষকে জাত করিতে বাইতাহিলেন, সাহেবের
খিয়া রুপিত হইয়া ধবলা আনাড়ির বড়ি দ্বারা
এধর করেন এবং আপন কুতূহলের দ্বারা দুত
কারিয়া পুত্র অধ্যক্ষের নিগড়ে লটকা বান্দা
পানে বাইত। বান্দা কানে অধ্যক্ষকে কহিয়া
পুনরায় প্রত্যাগমন করিয়া সমস্ত রক্তনী গুদা
মে কঙ্ক করিতে রাখেন। পর দিন প্রাতঃকালে
কুঠীর সকল লোকের সম্মুখে আনিয়া ভুতলে
নিষ্কেশ করিয়া বের দান। পুটে প্রহার করি-
তে করিতে বের তর হইল। পরে এক চাকর
আনিয়া তত্বাদা এতাদৃশ প্রহার করিলেন
যে পুটে তত্বাদা স্থান রহিল না এবং বহুত
এত হইলেন। দুহরি এক বারে জ্ঞানশূন্য হই-
ল, সাহেব দুহরির মৃত্যু হইয়াছে জানিয়া কুখি-
শাঃ করিতে আত্মা দিলেন, কিন্তু তাহার প্রাণ
তখন বাতিরহর নাট, বরকলাজেরা অলসে
চন ও বাতাস করিতে করিতে অনেককণের

পর চক্ষু উদ্বীলন করিল। সাহেব বিচারের
হস্ত হইতে মুক্ত হইবার জন্য ১৫ জন দুহর এক
দ্বাদশ তাহাকে প্রেরণ করিলেন এবং তাহার
মৃত্যু করিল। স বগী সকল ইতস্ততঃ নি-
কেশ করিয়া তাহার পরিবারগণকে বহিষ্কৃত
করিয়া দিলেন।

শিব সাগরের ডেপুটি কমিসনর ইহা অব-
ণ করিয়া তাহাকে মুক্ত করিতে আত্মা দিয়া
আপন সংকারি ফোক সাহেবকে এবিষয়
অনুসন্ধান করিতে কহিলেন। ফোক সাহেব
তথায় উপস্থিত হইয়া আসাম কোম্পানির
অধ্যক্ষকে জিজ্ঞাসা করিলেন (ইনি একজন
অবৈত মক রাজিষ্ট্রেট) তিনি কহিলেন একি
ছুই নয়, দুহরি অজ্ঞতা প্রকাশ করিয়াছি-
লেন বলিয়া আপন শাস্তি প্রদত্ত হইয়াছে এবং
উহার বাকী আসামে একারণ তথায় প্রেরিত
হইয়াছে। ইহাও বখাধ বিনেচনা করিয়া আর
কোন অনুসন্ধান হইল না। পুলিশ দ্বারা বৃষ্টি
প্রাপ্ত হইয়া দুহরি ডেপুটি কমিসনরকে আ-
পন পিঠ দেখাইয়া সাহেবের নামে না'লি ক-
রিল। তাহার পিঠে এক বিস্ত চন্দ্র ছিল না।
সাহেব মোব খীকার করিয়া কহিলেন দুহরি
প্রথমে আমাকে প্রহার করে এবং আমি আ-
মর স্বকার্য উহাকে প্রহার করিয়াছি। পাঠকঃ
সাহেবের কি শাস্তি হইবে বিবেচনা করেন।
এতাদৃশ গুরুতর দোষে গুরুতর শাস্তি
সন্দেহ কি? বিচারপতি অনেক কণ আবিয়া
শির করিলেন এডেনীসদেব পিঠেব চ-
র্মের কতট মল হইবে তত্বদ্য সত্যেব
টাল জরিমান করিলেন।

৪ঠা আশ্বিন: বঙ্গলায়:

ভারত বঙ্গীয় গবর্নমেন্টে দ্বা দায় তরত ব-
ধের আশ্ব বাব ও লোক সংখ্যা নিয়ন্ত্রিত
জন্য এক সভা সংস্থাপন করিয়াছেন। গবর্ন-
মেন্টের ইচ্ছা এই যে কোন কোন স্থায়ী
সভা বিষয় বিশেষতঃ প্রাণ গ্রহণ করেন। এ-
সিয়াটিক সোসাইটি, বঙ্গি সভা প্রভৃতি এ-
বিষয়ে বিশেষ সহায়তা ক্রিতে পাবেন।

গবর্নমেন্টে আত্মা করিয়াছেন অবৈতবর্ষীয়
ও বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার বাবতীয় সভা
অনুসন্ধান (দ্বা দায়) উপাদি পাঠ্যে:

সকলকে তাহাদিগকে এই উপাধি দ্বারা পত্র-
দি লিখিতে হইবে।

আরাক.৫৭ মেইলের বাঙ্গালী আত্মা করিয়াছেন
যটকা দ্বারা থাকিত। তদ্বিত্ত তত্বদ্য বঙ্গি
দিগের কষ্ট হওয়াতে ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টে
বঙ্গদেশের প্রধান কমিসনরের অনুমোদন আ-
হা নর বটিক, রাধিয়ার আত্মা করিয়াছেন।

হরকরা সম্প্রদায় বলেন গবর্নমেন্টে অতি
শীঘ্র আর কয়েক ব্যক্তিকে নবীর তত্বাবধারক
পদে নিযুক্ত করিবেন। ইহা দ্বারা আরোহী-
দিগের সবিশেষ উপকার দর্শিবে। ১২

ইংলিসমান সম্প্রদায় বলেন রাজ্যের রে-
ইলওরের কার্য শীঘ্র সম্পূর্ণ হইবে। তদ্বিত্ত
তত্বদ্য নবীতে একখানি আলোর আত্মা ও
কয়েকজন আত্মাটিকে প্রেরণ করা হইবে।
কিন্তু আমরা শুনিতেছি পিরামিড পুল
সিয়াছে।

পুজার পূর্বে পূর্ব বাঙ্গালার রেইল
বাঙ্গালী শকট চর্চিতে পারে। আমরা
জুলাই মাসের প্রারম্ভে একখানি প-
শকট বাইবে।

আব। বীপের নিকটে বোম্বিয়ারা পু-
র্কার অত্যাচার করিতেছে, কয়েকখানি ওল-
দাজ ও ইংরাজী আত্মা তাহাদিগের দম-
নার্ণ গমন করিয়াছে।

কিনিক সম্প্রদায় বলেন প্রধানতন্ত্র
লত শীঘ্র স্থাপিত হইবে, ১৩। জুলাই অ-
কাব্য আরও হইবার সম্ভাবনা আছে।

উক্ত সম্প্রদায় নসিরাবাদ হইতে সংবাদ
প্রাপ্ত হইয়াছেন, সম্প্রতি নিম্নের নিকটে ক-
য়েকজন বহু ডাক হুটে ও একজন প্রহরীকে
আহত করিয়া পলায়ন করিয়াছে।

ইংলণ্ডের সুবিখ্যাত ভাস্কর উল্কেস ম-
ত্ব হইয়াছে। ইনি পূর্বে এক জন টহুদি
ছিলেন। কিন্তু খ্রীষ্টীয় ধর্ম অবলম্বন করিয়া
পৃথিবীর সকল স্থানে উক্ত ধর্ম ঘোষণা ক-
রেন। এজন্য তাহাকে অনেক কষ্ট পাঠিতে
হইয়াছিল। পৃথিবী খ্রীষ্টীয়ান মিসনরিসিগের
নিকটে অনেক বিষয়ে আগ্রহ।

বাঙ্গালী সম্প্রদায় বলেন বীরভূমের এক
জন ঐহুজিকারী লোক, ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট
তত্বদ্য এক জন উকীলকে ও এতদেন্দীয় সন

লোকালি দেওয়াতে উকীল তাঁহার নামে গবর্ণমেন্টে মামলা করেন। লেপটেনেন্ট গবর্ণর ডিবিয়ন কুমার বর্ডাকে ওয়েলসকে সম্প্রদায় করিয়াছেন।

গভার্নর হাউস ও কুর্টীরের নিকট হইয়াছে। কয়েক দিবস পূর্বে এক জনকে গ্রেপ্তার করা হইয়াছে। গত কল্যা একটা হাউস এক জনকে গ্রেপ্তার করিয়াছে।

গত কল্যা হাউস প্রেসিডেন্ট কুমার ঠাকুরের টি একটি বালককে মারিয়া হইয়া প্রাণত্যাগ রাখে।

এই আশাচ বৃদ্ধবার।

কিনিকের বরিসাংগের সংবাদ দাতা হেন, তথায় এক গ্রীষ্মকাল হইয়া গিয়াছে। জচন্দ্র রাব নামে এক জমিদারসংগত এক

নিরাশ্রিত। ত্রুমে তাহাকে আপন গিয়া বাপেন। সে রক্ষন করিয়া নিত। গাহার করিতে। পরে বাটীর লোকে লোমোগ করাতে তাহাকে স্থান তরে।

এ বেন্যার এক চাষারের সহিত হয়। বাবু তাহা জানিতে পারিয়া লোককে বহুত হত্যা করিয়াছেন। বাবু তে তাহা আপন দোষ স্বীকার করিয়াছেন। তাহা নল গুণপুত্র হইতেই বকবলের গ্রীষ্মকাল হইতে।

ইংলিসমানের, বটকের সংবাদদাতা লুকস সা নামে বিখ্যাত বিদ্যোদী

গবর্ণমেন্টের হস্তে মৃত্যু সমর্পণ করিয়াছে। এই ব্যক্তি প্রথম হাউসিংয়ের লে ছিল। পরে তাহা ভাঙ করিয়া অনেক সহচর সমি পাচারে পলায়ন করে। লোক সংলগ্ন হইয়া পুনরায় বিদ্যোদী গ একপে মিসনর সাহেবের অধ্যক্ষ হইয়াছেন। ১০০ টাকা বার্ষিক দিগেন ১০০ টির ১৫। তাহার জাতকে সেই ১৫০ টি ৩০০ হইবে।

একপে আবার গঙ্গা বাইতে ১৮ ম নামে মেজর বিতার চুরাকা হি হান গত হইয়াছেন। হিলি আগুন নাম পালিত হইয়া বট নামে এক সাহেবের বাড়িতে ছিল। হাকে কলিকাতার অনিয়ন করা হইয়াছে। সে সবট সাহেব তাহাকে স্থান দান করিয়াছিলেন বলিয়া হুত হইয়াছেন। তিনি

কহেন এবিষয় কিছুই জানেন না। একপে জামিন দিয়া হুত হইয়াছেন কিন্তু তাহা ১০ বিচার হইবে। বকবলা আতি শীঘ্র আরও হইবে।

হরকরা সম্পাদক কহেন কাছাড়ের অধ্যক্ষ গবর্ণমেন্টে লিখিয়াছেন এবার ও প্রদেশ হইতে মশ লক্ষ টাকার চা রপ্তানি হইবে এবং আর বংসর উহার খিগুণ হইবার সভাবনা মজুরের জন্য কষ্ট হইতেছে, অনেকে পলায়ন করিয়াছে। কিন্তু কেহ কাছাকে ধরিয়া আনিলে ৫ টাকা পুরস্কার পাইবে এই প্রচার করিয়া দেওয়াতে একপে অনেকে হুত হইয়া আসিতেছে। আমেরিকার দক্ষিণ বিভাগের তুল উৎপাদনকারিগিরের প্রথা অবলম্বন করিলে অধিক চা জন্মিতে পারে।

ইহু সম্পাদক আরো কহেন ভারত-বর্ষীয় গবর্ণমেন্ট নিম্নলিখিত তিনটি বাটী নির্মাণ জন্য ৫০ লক্ষ টাকা মজুর করিয়াছেন: রাইটার্সলিডিং (কোম্পানির বারিক) পুন নির্মাণ ৩৫,৫০০০০

পোষ্ট অফিস নির্মাণ জন্য ৮০০০০০

প্রেসিডেন্সি কালেক্ট নির্মাণ জন্য ৬৫০০০০

একপে ৫০,০০০০০ লাহোর জেনিকেল সম্পাদক কহেন তথায় তয়ানক কড হুতি হইয়া গিয়াছে। আর গ্রীষ্ম নিবন্ধন কোন কষ্ট নাই।

গত সোমবার লেপটেনেন্ট গবর্ণর মা জাসা কালেক্ট মর্দন করিতে গিয়াছিলেন। বিদ্যাবিধগে মুলমান দিগের ইংসক হুতি জন্য তিনি অতিশয় গল্পবান আছেন, তাহা খবর ব্যক্ত করিয়াছেন। হাউস কনন মুল মানিগিরের বিদ্যাত্যাসে মনোযোগ হওয়া বড সম্ভব কথা নহে। বীডন সাহেবের আগমন জন্য মাদ্রাসা কালেক্ট ও কলিকাতা উকুল ১ দিন মুল হুতিগাছিল। বীডন সাহেবের অন্যান্য নি মনোযোগ গবন করা কর্তব্য।

১৫ই আশাচ হুতসভাবার।

এই সভাগা ব্যক্তি কহা হইতে নাম: সা- মস বলিহা বড হুত, সে গত কল্যা কিবর হুতসভায়ে গঙ্গা ত্যাগ করিয়াছে। গবর্ণমেন্টে মিস ম. জ. গঙ্গাবে করণার তাহার হুতের কল্যা অধেষ্ট করিবেন সঙ্গসাংগে পাছে হইবে তাহাকে নিষ্পন্ন করা হইবে।

হইয়াছে, ডিরিগিট এই পক্ষ হইতেছে চা-রতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টকে কয়েক এত নীচ দাবেন না। সে ব্যক্তির কারাগারে রাখা কষ্ট ভোগ হওয়াতেই প্রাণ বিয়োগ হইয়াছে একথা সঙ্গসাংগকে ও ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টকে স্বীকার করিতে হইবে।

ইংলণ্ড হইতে এক একটা সৈন্য আনয়ন করিতে নিয়ম ব্যয় হয়। গবর্ণমেন্টে তদ্বিষয়ে মনস্ত করিয়াছেন যে সশস্ত্র সেনার কার্যের সমর্থ উত্তীর্ণ হইবে তাহার। যদি পুনর্বার সেনা দলে প্রবেশ করিতে চায় নিম্ন লিখিত টাকা পুরস্কার বরুণ দিয়া নিয়োজিত করা হইবে।

হুত আর্টিলেরি ১৩৬৮/৫
রয়াল ই ১২৫৮
ইন্ডিয়ান ১২৫৮
অখারোদী ১২৫৮
পদাতিক ১১২৫১৫
ইহা দারা অনেক বাহ সঙ্কেপ হইবে ও উত্তম সৈন্য পাওয়া যাইবে।

চারবি সাহেব এতিনিধি আফগানিস্তানে জেনরাল হইতেছেন। তিনি একপে ৩০০ টাকা পাইতেছেন তনডিরিগিট আর ৫০০ টাকা পাউলেন। বোম্বাইয়ের পোষ্ট নাটর জেনরল ১৫৮০ পেন্ডন পাইতেছেন ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে একপে তাহাকে ২০০০ টাকা দিবে। সিবিলা হিন্দুক কমিসন বার সঙ্কেপ করিয়াছিলেন একপে আবার সঙ্গ পুলে হুতি হইতে পিল।

হরকরা সম্পাদক কহেন এতদেশীয় প্রায় এক সহস্র লোক মেঘ পালকের হত্যাকারী র ডের ক্ষমায় শুদ্ধ হইয়াপৌষ গাণের মতিত আবেদন করিয়াছেন। আবেদন প্রথমতঃ নীডেন সাহেবের নিকটে প্রেরণ করা হইবে, কিন্তু হত্যা তাহার সীমার মধ্যে হয় নাই বলিয়া তাহা গবর্ণর জেনরলের নিকটে প্রেরণ করা হইয়াছে। সম্পাদক কহেন এতদেশীয়েরা এই আবেদনে স্বাক্ষর করাতে টংরা জিগির স হিত এতদেশীয়দিগের বিশেষ সম্ভাব জন্মিলে। ইউরোপীয়েরা যা হুত তাই করিলেও এদেশীয়েরা যদি কিছু না বলিয়া চুপ করিয়া থাকেন তাহা হইলেই সম্ভাব। এই সম্ভাব সঙ্গ হুত না বলিয়াই মধ্যে মধ্যে বিবাদ বাধে এতদেশীয় হুত এক সমস্ত ব্যক্তি স্বাক্ষর করিয়াছেন তাহার

১? ইউরোপীয়দিগের আকিসের কোম্পানী
রত?

সিহুল। হইতে একজন হরকরা পক্ষে সি-
ধরাছেন তদ্রূপ বলকিরর সেনারা নগরের
ততরে বহুত্ব চুড়িয়া থাকেন। কারণ

তদ্রূপ লোকেরা বেশ বুঝিতে পারে যে
মারী হইলে বলকিররেরা ও হাথিগকে
সংগত দণ্ড দিতে পারিবেন। এই সকল
কোম্পানীবিদ্রোহকে নিষেধ করিয়া আনে।

দিল্লীগেজেট সম্পাদক বলেন লাল। জ্যো-
তিঃ প্রসাদ প্রধান সেনাপতির আহ্বোদ্যে তাঁ-
র সহিত সাক্ষাৎ করিতে গিয়াছেন। তাঁ-
কে পুনর্বার কমিসরিএটের ভার দেওয়া হ-
বে। জ্যোতিঃ প্রসাদ এ কার্যের বিশেষ উ-
পযুক্ত।

মহোদ্য। গেজেট সম্পাদক বলেন সঙ্গ-
ত এক ব্যক্তি তুরিয়াবাদ গ্রাম দখল করিতে
গিয়াছিলেন এবং সময়ে সে দখল হইয়াছে।
সম্পাদক অনুমান করেন সে বিদ্রোহের এক
জন উদ্যোগী। ইহারাই দিনে বহু কর্ণন ক-

উক্ত সম্পাদক আরও বলেন পাটনার
তপূর্ক কমিসনার টেলর সাহেব (যিনি এক্ষণে
কলের কার্য করিতেছেন) তদ্রূপ প্রধান
ব্যাখ্যার দুর্য্যভ্যন্তর বিষয় গবর্ণমে-
ন্ট গোচর করিয়াছেন।

মাদেগড়ের তদ্রূপদিগের সহায়তার
ব্যবস্থায় ৩৩, ২১৮ টাকা চাঁদা হ-
ইতে। এখানেও চাঁদা করা কঠিন।

এবং ১৯ জন সিবিলাস হইবার
রীক্ষা দিবে। ৮ জন ছুড়ন সিবিলাস
বৃত্ত হইবেন। পরীক্ষার্থিদিগের অধিকাংশ
কত আদায় পরীক্ষা দিতেছেন। সংস্কৃত
গ্রন্থে ভারতবর্ষ ত্যাগ করিয়া ইউরোপে
গেলেন।

টাইনস ওব ইণ্ডিয়া ওজর টি ও সহারা-
য় তাহার সংবাদ পত্রের প্রস্তাব সকল অ-
দায় করিয়া মুক্তি করিতেছেন। কলিকা-
র দৈনিক সম্পাদকেরা একেবারে না করেন
না?

কারুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে আদীর
কি মহম্মদ খাঁ হিরাট আক্রমণ না করিয়া

কারুল হইবেন না। বোখারার রাজা তাঁহাকে
মুলতান জাহের সহিত সন্ধি করিতে অনু-
রোধ করেন, কিন্তু বখ আদীর তাহাতে অস-
ম্মত হইয়াছেন।

তদ্রূপনগরে অধ্যাপিও ওলাউটার খা-
তি হয় নাই। বিস্তর লোক প্রাণ ত্যাগ করি-
তেছে। আদারিগের বাবতীর নগরের মিউ-
নিসিপাল বন্দোবস্ত ভাল না হইলে এই
সকল অনিষ্ট সর্বদা ঘটবে।

সম্প্রতি বখা হইতে মুসলমানদিগের নি-
কটে যে গল্প আসিয়াছে তাহাতে তদ্রূপ ই-
মান বলেন গেব্রিএল দুত পৃথিবীতে চারিবার
আগমন করিবেন। প্রথম আসিবামাত্র রাজা
ও শাসন কর্তারা নিজ নিজ কবড়া হইতে
বঞ্চিত হইবেন। এবং সর্ব স্থানে অরাজক ও
বিশৃঙ্খলা হইবে। দ্বিতীয় বারে মন্তব্যদিগের
খাল্য তিস্ত বোধ হইবে। তৃতীয়বারে সতীত্ব
ধর্ম পৃথিবী হইতে অন্তর্ভুক্ত হইবে, সকলে
বর্ণেচ্ছাচারী হইবে এবং চতুর্থ বারে পৃথিবী
উৎসন্ন হইবে। মুসলমানদিগের গুণবিচার
অনেক বিলম্ব আছে।

১ই আষাঢ় শুক্রবার।

নানাসাহেবের কোমর বন্ধ ১৭০০০ টাকার
বিক্রীত হইয়াছে। সম্ভাব্য দ্রব্য বিক্রয় হইলে
বিস্তর টাকা লভ্য হইবার সম্ভাবনা আছে।
চুক্তিভিত্তি হেতু এই সম্ভাব্য প্রার্থ্য গেল।

বনিক সম্প্রদায় মাদেগড়ের অকর্মণ্য
মুক্তিকপোড়িত মজুরদিগের সহায়তার জন্য
চাঁদা গ্রহণ করিবার তিষ্ঠাপন করিয়াছেন।
এদেশীয় সকলের এবিধে সহায়তা করা
কঠিন।

জামালপুর পরগণা রেইলওয়ে পুলিশে।
তথায় পরীক্ষার জন্য আপাততঃ চর মাসের
নিমিত্ত একটি ডাকঘর হইয়াছে।

কিনিকের সম্মেলনের সংবাদমাতা ব-
লেন তদ্রূপ ডেপুটি কমিসনারের যত্নে বাবতীর
বিদ্রোহীসর্দার আত্ম সমর্পণ করিয়াছেন, এক
ব্যক্তিমাত্র অনাপিও ইংলণ্ডের অধী-
নতা স্বীকার করেন নাই। গবর্ণমেন্ট ডেপুটি
কমিসনারকে পুরস্কার দিবে। কথাপ্রসঙ্গ
ইহার কারণ।

সম্রাট হিন্দুস্থানী সম্পাদক পুনর্বার ক-
হিয়াছেন, সম্প্রতি বিদ্রোহের যে আশঙ্কা

হইয়াছে তাহার কোন মূল নাই। বখকারিট
প্রভৃতি তদার্ত সম্পাদকেরাও এক্ষণে শান্ত
হইয়াছেন।

ইণ্ডিয়ান রিকর্ডার সম্পাদক জন রডেক
কমার প্রতিবাদ করিয়াছেন। আদারিগের কথা
কহিয়াছিলেন তিনি তাহার পৌষকতা করিয়া
বলেন রডেক লীলী হইলে ভারতবর্ষ হইতে
উৎসন্ন হইবে। এদেশীয়দিগের প্রাণ বধ
করিত সাহসী হইবে না।

৮ই আষাঢ় শনিবার।

ইংলণ্ডের রাজ্যভিষেকের দিন বলি-
য়া গত কলা কয়েকটি ভোপ হইয়াছে।

সেনাপতি সাউদাস পুনর্বার অরুণ্ডিয়া
পার্শ্বতে গমন করিয়াছেন।

গবর্ণর জেনারেল জন রডেক কথা কু-
লেন না। তিনি বিবেচনা করিয়া স্থির করি-
য়াছেন যে কমার খোঁজ পাওয়া নহে। খোঁজ
হয় এইবার 'হঠাৎ হুজুর, সংখ্যা অল্প হই-
বে। সোমবার তাহার কীলী হইবে।

হরকরা সম্পাদক বলেন দুর্ভাগ্য। হিলিও-
দেবরুগতে দখল করিবার সংবাদ গবর্ণমেন্টের
নিকটে আসিলে নাই, কিন্তু তিনি যে ব্যক্তির
নিকটে সংবাদ পাইয়াছেন তাহা অসত্য হই-
বার সম্ভাবনা নাই।

হাওড়া হইতে এক জন ইউরোপীয়
নিক পত্রে লিখিয়াছেন ১৭ই জুন রাষ্ট্র
এক ব্যক্তি তাহার মালিকে এক ছুরিকা খা-
বধ করিয়াছে। খানা হইতে তাহার খাচা
অপ্য দুর খাজ, তথাপি ছুরিকারী দখল হয়
নাই। কি আক্ষেপের বিষয়! ক্রমশঃ সকলে-
রই জীবন ও সম্পত্তি বিপুলে পতিত হইতে
থাকিল। মালির "হঠাৎ ছুরিকাখাত" নয়ত?

যে যে স্থানে বঙ্গদেশীয় ব্যক্তির খানা
হইয়াছে, তথায় গবর্ণমেন্টের আর বতর
দেখুরি থাকিবে না।

ইংলিস্তান সম্পাদক বলেন গবর্ণরজেল
রুল প্রধান সেনাপতিকে কলিকাতার আসিয়ে
স্বাক্ষর করিয়াছেন। কারণ:

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ
বিক্রীত হইতেছে:—

৪ টাকার সিকা	২০৫০.২০
৪ টাকার কোম্পানির	২৩০০.০০
৫ টাকার ৫	১০০০.০০
৫৫ টাকার ৫	১১২১.১২

সুভদ্রা পত্রিকা

ইউনাইটেড এন্ট্রিস্—নাম

জানেন। যে শ একপে যে মতভাবন যুক্ত
-সকলকে সন্তুষ্ট তাহা অবশ্যই আছে। কি-
ং কিংবা অন্য কোন প্রকারে যুক্তি-
বোধ-সম্পন্ন করেই তাহা প্রমাণিত করেন। তা-
নাই এই প্রকারে যুক্তি-
প এবং অন্য কোন মতভাবন। কিন্তু এতলিত
আমর। এখানে সেই বিবরণ লিখতে প্রবৃত্ত এই
তাই।

'দে উত্তর টেনলাবলী, ছুরবাহিনী ওবজিনী
 বিদীর্ণ অরণ্যানী, সন্মুখা দুর্ভেদ্য দুর্ভ্রমণী
 নিবর্ণনীয় তমসীয়া পদার্থ সকল থাকি-
 য়ে গৌরব হয়, ডাহ। হইলে ই-
 ন্টেইন অপেক্ষা গৌরবান্বিত দেশ
 কোন অংশে আবৃত্তি পোচর
 হয় না। ইহা কেবল নিম্নগর্ভ গরিমাই উহার
 এক দিক। উহার ই'তরদিক
 অত্যন্ত উন্নত। ইহা বৎসর পূর্বে উহ।

বিড় আরণ্যে পরিভ্রমণ ছিল এবং তন্মতক
 সংস্কৃত ও তদ্ব্যপেক্ষাও কঠিনতর তন্মতক
 ভ্রমণের আবাস স্থান ছিল। কিন্তু এক্ষণে উহা
 কীর নগর ও জনপদে পরিণত হইয়াছে;
 পীর শকট ও বাণ্যীয় মোত উহার চতুর্দিকে
 গ করিতেছে, তাড়িত বার্তাবহ অক্ষর লি
 তাহুত মোতাকারো নিযুক্ত বহিয়াছে, এবং

ও সরস্বতী দেবী পদ্ম বসনীয় অত্যন্ত
২০৮ হাঃ পবিধান করিয়া সর্বত্র বিরাজমান।
আছেন। অতএব জে দেশের ইতিহাস অধ্যয়নে
খুঁজাবণ্ডাই সকলের ইচ্ছা অতিয়া থাকে, বিশেষ-
কৃত যখন কোন সম্ভদ্য বাচি তাড়ন ধন ও ক্রা
নাটোলোকসঙ্গর দেশ মধ্যে এক পি ম'ল্লগ্রাম।
প্রচলনের কথা শুনিতে ... তখন ... তাঁরা
কোকেই পবিসীগ থাকেন এ ... তাঁহার পু-
রোক্ত ইচ্ছাটিও নিতান্ত অনিবার্য হয়।
:ঠ।

দুইশত বৎসরের অধিক কাল গত হইল
সেই দেশে 'শিউরিট' নামে এক মনুষ্য
।। তাঁহাদের মতের প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া
যদি কোন কোন অংশে ভ্রম হয়। এই
কারণেই 'শিউরিট' নামের প্রতি প্রাচীন সম্রাট
দের লোকেরা অনেক অত্যাচার করিতেছেন।
যদিও এই 'শিউরিট' নামের মতের
ন ছিল অত্যাচার করে কখন কখন তাঁহাদের
তাহার বিপরীত আচরণ করিতে হইত। তা-
হা তাঁহারা একাধারেই স্বীয় সভ্যতাবাদী ধ-

চরের অস্থান করিয়া পরিভ্রমণ না। অতঃপর
 তাঁহার। এই স্থির করিলেন যে, যে ধর্মের
 আবাদিগণের দৃষ্টিতে বিশুদ্ধ আছে লোকভয়ে
 তাঁহার। পণ্ডিত আচরণ করা অপেক্ষ। দেশভা।
 ণ করাই সহজ অংশে উত্তম। তদনুসারে কা
 ক মহাশয়। স্বদেশে পরিভ্রাণ পূর্বক আ।

র বিজ্ঞান জানেনে আসিয়া; বলতি করিলেন : ক্রমে ক্রমে তাঁহাদিগের সজ্ঞান সজ্জতি জন্মিতে লাগিল ও সুতন-সুতন উপনিবেশিকেষণ সন-গম হইতে লাগিল। কলকাতা অঞ্চল মধ্যেই উপনিবেশিকেরা গণ্য হইয়া উঠিলেন। কিছু যদিও তাঁহাব। দেশ ভাঙি করিয়া ধর্ম বিষয়ে আধীন হইলেন বটে, কিন্তু ইংলণ্ডের অধিনা-নী বলিয়া অন্যান্য বিষয়ে তাঁহাদিগকে ইংল-ণ্ডের অধীন থাকিতে হইল। অমর্য তাঁহার। ইংলণ্ড দেশের অসহ অত্যাচাবে প্রণীড়িত হই-য়া ১৭৭৬ খৃঃ অকে ৪ঠা জুলাই " উপনিবেশি-কেন। ইংলণ্ডের অধীনতা পরিত্যাগ করিয়া স্বা-ধীনতা অবলম্বন করিল " এই বলিয়া ঘোষ-ণাপত্র প্রচার করিয়া দিলেন। ইংলণ্ডীয়দিগের সহিত ঘোবতব যুদ্ধ হইতে লাগিল। পঁচশে-ষে দীর্ঘ কালব্যাপী ভূমূল সংগ্রামের পূর্ব যহ-বীন ওয়াশিংটনের বীরত্ব ও মহায়া ক্রাফলিনে-ব যুদ্ধের প্রভাবে আমেরিকান বা যুদ্ধে জয়ী হইলেন ও ১৭৮৩ খৃঃ অকে ইংলণ্ড উহাদের স্বাধীনতা স্বীকান করিলেন।

যোষণাপত্র প্রচাৰ কৰিবৰ পূৰ্বে আমে-
ৰিকাৰ। ভিন্ন ভিন্ন ভেৰটী প্ৰদেশে বাস কৰি
আসিছিলে। পৰে এই ভেৰটী প্ৰদেশে মি-
লিত হইয়া যোষণাপত্ৰ প্ৰচাৰ কৰাতে এই জন-
ব নাম ইউনাইটেড এষ্টেট্‌স্ (মিলিত প্ৰদেশ)
হয়। কিন্তু উত্তৰোত্তৰ প্ৰদেশ-নাথান যদি হও-
য়াতে ইউনাইটেড এষ্টেট্‌স্ একপৰে অতি বহু
ৰাজ্য হইয়া উঠিযাছে। এখন উহাতে ৩৭টি
প্ৰদেশ ও চাৰিটি স্বতন্ত্ৰ প্ৰদেশ আছে। •

* (ଡିପ୍ଲୋମା) -

मेईन
मिड हॉमि जालन (२)
बर्जो
मानाहुमेईन (२)
' ४ पाईन' (२)
कान्टिको (२)

(४४५ कट्टी)

নিউ টাইম (১৭)
 গোল্ডফিল্ডস (১৮)
 ১। নিউ টাইম (১৭)
 ২। গোল্ডফিল্ডস (১৮)
 ৩। লাইফ (১৯)
 কলকাতা ডিফেন্স

[illegible]

(१०००)

- ১। ক্যাভিনিয় (২।)
- ২। উদ্ভর কেয়েলিনা ৬ ৩
- ৩। নকিম বেদে লিনা ২
- ৪। জলিচ ২২
- ৫। এলংসারী
- ৬। কোরিচ
(পশ্চিম ডাংগ)
- ৭। হাউচো
- ৮। জিহান
- ৯। ইলিনাংস
- ১০। মিকাই
- ১। কেসীকি
- ২। টেমিসি
- ৩। মিলিমিলী
- ৪। মোমিয়ারা
- ৫। টেকুমস
- ৬। আর্কবসন
- ৭। মিটগাং
- ৮। উটসকন গিন্ন
- ৯। আইএম
- ১০। ক্যানিকিমা
- ১। কানস
- ২। নিমেমেটা
- ৩। আরিগন

(५५५५ ५५५५)

●●●●●

নিউ বেকমি, ঢাকা।

उद्गमिन्

১. **বেদেত্রিকা**

। अथ चिह्नम् ।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

● 12 ●

মেকসিকোস্থিত করাশী সেনারা। উক্ত রা-
জধানী লইবার জন্য অরজিবানবর অধিকার
করিয়াছে। স্পেনীয় গবর্নমেন্ট সেনাপতি গ্রিমের
কার্যেব অল্পশোভন করিয়াছেন। করাশী নগর
সম্রাটের এই দুই সম্পূর্ণ মার্সিনিক বলি
ছেন

... , ହସେସେନ ।

প্রেরিত ।

খ্রীষ্টীয় সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয়গণ ।

অসহন দন সহ্য, হৃৎকণ্ঠে কানে ।

চিঃ নিমিঃ বীধাঃ থাকে, অক্ষয় পাপে ।

মহাশয়! আপনাদের সোমপ্রকাশ হৃৎকণ্ঠে-
লিত অনেক পরম আশ্রয় স্থল চটপটে সন্দেহ
নাহি। স্বতন্ত্র অন্তর্ভুক্ত না নিবারণ করিতে পারি
কউন যান নাহি হউন, তাহাকে মনোমুগ্ধ উদ্ভা-
সিত করিয়া দিয়া যেমন সোমপ্রকাশ হৃৎকণ্ঠে
উদ্ভাসিত হয়, সেইরূপ এ দেশীয় লোকেরা
এক শোচনীয় অবস্থায় নিপতিত হইলে যদিও
সোমপ্রকাশ হৃৎকণ্ঠে তাহার প্রতিবাদ নাহি
করাপি তথাপি কোনরূপে তাহাদের একান্ত
কষ্টকে আপনাদিগকে কৃত কৃত্য বোধ করিয়া
কেন। কি সোমপ্রকাশ আপনাদের মনোমুগ্ধ
অপনয়ন করিতে সমর্থ হইবেন? এমনও আ-
শা করি না। তথাপি যে তাহা আপনাদের প্রতি
পোষণ করিবার অভিলাষ করিয়াছে তাহার
কাহ্ন কি। কেবল মনোমুগ্ধ লাগে কন। এক
মাত্র উদ্দেশ্য ক্রমেই নহে। মহাশয়! যদি কোন
উপায় বলিয়া দিতে পারেন অবশ্যই কৃতজ্ঞতার
সিঁড়ি গ্রহণ করিব।

আমাদের বিপদের বিষয় প্রকাশ করিয়া সাধা-
রণে আপনাদের কাহ্ন করিয়া উঠিতে পারেন
ও, কিছু নিঃসঙ্গ চিত্তে বলিতে পারি। মহা-
শয়! সশস্ত্র আত্মা সকল কখনই আমায় প্রতি
সকরণ নাহি। থাকিতে পারিবেন না। লোক
সমূহ আমায় সহ্য বিপদ জানিবেন। হর
কেনই বা ইংল্যান্ডের এ দেশে আগমন করিয়া-
ছিলেন, কেনই বা তাহার ইংল্যান্ড বিদ্যালয়
সমস্ত স্থাপন করিলেন, কেনই বা তাহার এ
দেশের শুভ সাধন সংকল্প করিয়া কলিকাতার
শাসক বিদ্যা শিক্ষা প্রদানে প্রবৃত্ত হইলেন।
তাপিত: আমায় প্রতি কি আপনাদের আগ্রহ
শ্রেষ্ঠ ছিল না? কেননে অর্থ লাভনা। আপনাদের
অনেক সৎসঙ্গে পরামর্শ করিল আপনাই জানেন-
না। লক্ষ লোকের হইয়া যদি আপনি আমাকে
ইংল্যান্ড বিদ্যালয়ে প্রেরণ না করিতেন তবে
আমার স্বর্জনার সম্ভাবনা ছিল না। আমি যদি
সংস্কৃত অধ্যাপকদিগের চতুঃপাশে মধ্যে প্রবেশ
করিয়া অসহন দন সহ্য হৃৎকণ্ঠেই মনন সুপল
নিরুত করিয়া থাকিতাম, যদি তাহা-
দিগের জিন অনেকের আচার ব্যবহার ভুলই
আমায় দৃষ্ট পথে পতিত হইত, তাহা হইলে কি

পৌত্তলিকতার প্রতি আমার অবস্থান জন্মে
তাহা হইলে কি বিকৃত ধর্মের আশ্রয় গ্রহণ
কর্য আমি উন্নত হইত। বেড়াই, তাহা হইলে
কি ব্রাহ্ম ধর্ম আমার চিত্ত আকর্ষণে পড়ি হই-
তেন। পৌত্তলিকতায় হোরা আমার নিকটে
কেন এমন কবাল হৃৎকণ্ঠে ধারণ করিতেন, তা-
ন'বেদ মর্মে মার হীন না হইলে তা আমার মন
ভাঙ, পরিভ্রাণ করিতে অসমর্থ হইত না।
যে অতি নীচ ধর্ম, তাহার প্রতি ভোমাদেশ
এত নির্বাপন কেন? আমি সত্য ধর্ম অবলম্বন
করিয়াছি বলিয়া কি এত জব্বলি প্রদর্শন করিতে
হয়, যে ব্রাহ্ম ধর্ম আমি মনে করিয়াছিলাম
তোমার উপদেশ পালন করি। আপনাকে প-
ত্ন অবস্থা হইতে বিরক্ত করি। কিন্তু সোক
কয় আমায় মনে এমন দৃঢ়তরূপে বহুস্থল হ-
ইয়াছে, যে আমি তোমার আশ্রয় গ্রহণ করিয়া
স্বতন্ত্র মনোরম পূর্ণ করিতে পারিতেছি না।
তোমার প্রতি বধন এত উল্লাস্য করিতেছি
তখন আমার হৃৎকণ্ঠে হৃৎকণ্ঠে পীড়িত হইবেই
হিস আছে। 'হ মন! তুমি আপনাদের পক্ষে
আপনি কষ্টে প্রবৃত্ত করিয়া কেন বিপদগ্রস্ত
হইতেছ। নিশ্চয় জানিও যতদিন তুমি সরল
ভাবে সত্যের সহিত আপনাকে অত্যাচার করিবে,
ততদিন তোমার হৃৎকণ্ঠে বাপি কেহই মোচন করি-
তে পারিবে না।

অনেকে বলিয়া থাকেন যে বাহারা হৃৎকণ্ঠে
সত্যকে রক্ষা করেন এবং সামাজিক নিয়ম পরি-
পালনে বিরুদ্ধ হন না, তাহারাই একত চতুর।
বহাশয়! বলিতে কি তাহাদেরই বড় কুপা-
পাত জীব অতি অল্পই আছে। তাহাদিগের
মানস তুমি 'নিরুদ্ভি' প্রার্থনার বিলাস স্থান
জানিবেন। বধন হিতাহিত জানের কঠোর
অত্যাচার সকল অবলম্বন করি। কোন কিছু
উৎসবে তাহার প্রবৃত্ত হন, তখন অজ্ঞাত আ-
কর্ষণে আসিয়া কি তাহাদিগের হৃৎকণ্ঠে কত
বিকৃত করে না। ধর্মপিতা ব্রাহ্মদিগের
প্রতি কিছুতেই প্রকার উন্নত হইতেছে না, অথচ
বাহাদুরের তরু হৃৎকণ্ঠে ব্রাহ্মদিগের জন্ম হইক
নলিয়া তাহারা প্রতি দুর্হর্ষ আপনাদিগের চরণ
স্থলি তাহাদিগের নিরোদেশে অর্পণ করিয়া
আশীর্বাদ করিতেছে যেখান তাহারা কি হৃৎকণ্ঠে
একান্তে অসমর্থ নৃকেব ন্যায় অন্তরে অন্তরে
ভুলিয়া যাবে না? কতকগুলি আসল্য পরাধীন,
ধর্মজ্ঞানবিহীন, কলোদয়ের জটরাসল নির্ভা-
ণ করিবার জন্য আপনাদিগকে বিপুল অর্থ
ব্যয়ে বাধ্য দেখিয়া কি তাহারা মনে মনে কুহক

করেন না? মহাশয় যদি হৃৎকণ্ঠে বিদ্যার
হৃৎকণ্ঠে সত্য অন্বেষণে পৌত্তলিক
নাহি, তাহা হইলে তাহাদিগের
কি রূপ এই অবস্থায় আপনাকে দেখ
আমি ক্রটি করিতাম না। আমরা ব
হই, তবে সপুং মধ্যে কাহারো নির্ভে
অচতুর বলিয়া দিবার আবশ্যক করে
নামিদের কি স্বর্জনা ব্রাহ্ম সমাজে
হিউবী সাধুগণসমীপে গিয়াও শ
করিতে পারি না। বধন পথিক সত্য
সরল হৃৎকণ্ঠে সাধুগণ পরিবেষ্টিত হইয়া
আমাকে পরামর্শে সমাধান করি
হই, তখন সমস্ত পাইয়া অজ্ঞান
চিত্তের একমুখিতা জন্মাইয়া দে
সত্য কল, লাভে আপনাকে এক
লি দিতে হয়। আমায় লাভ করা
ক্রন্দন করিতে ইচ্ছা হইলেও এক
দিয়া জলধারা বিনির্গত হইয়া।
কপোলদেশে বহিয়া প্রোক্ষণ বিধি
ছে, কেবল উন্নতশিরা হইয়া উপ
নির্ভেষ্টিত হইয়াছেন, ইহা নিরী
কেবল আপনাকে দিবার দিতে
সাধুগণ সমিধান বহি, তখন আ
তাহাদিগের কুপাদৃষ্টি নিপতিত হই
বেগ সন্ধান করিতে অকস্মৎ হইয়া
বধন হইয়া পড়ি। আপনাদের হীনত
করিয়া ব্যাকুলিত হই। তাহা তাহা
সৌভাগ্য তাহার অধীনতা করি
ভিক্রম করিয়াছেন; কঠোর জ্ঞানের
পালন পূর্বক কল্যাণত আত্মপ্রদায়
রিতেছেন, দেশের সুখিত ও সুখকায়
কৃত করিতে ব্রহ্মলীল হইতেছেন; দেশের
মেধের ও বুদ্ধির সাবিত্রী হইয়াছেন, এবং
কে আপনাদিগের সহায় পাইয়াছেন।

মহাশয়! এই রূপ না, পৌত্তলিক
সঙ্গে থাকি। হৃৎকণ্ঠে উপলব্ধি করিতে পারি
ব্রাহ্মধর্মের সত্য দ্বারা শান্তিলাভে সমর্থ
নকি হলে পড়িয়া গ্রাম হারহিয়ার
হইয়াছে। শীত জীয়ে নকি হলে বন
কি পরম রমণীয় তাব ধারণ করি। দিব
নীর সন্ধি হলে প্রভাত ও প্রোদ্য কাল
কেনন চিত্তাহরণ করিয়া থাকে। কি
নকি হলে অবস্থিতি করিয়া আমরা কি
হইলাম। হে অসহন দন! আপন
মার সত্য লোকের তাব বিশোধন করি
বার এদি ' ' দৃষ্টি করুন। আপন

মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ
সম্পাদক মহাশয়েষু ।
সম্পাদক মহাশয় ! গত ১৮ টি জ্যৈষ্ঠ এই
মলিকাতার কলুটোলার নিবাসী একটা তত্ত্বলোক
বেশালয়ে অধিরা পামে উন্নয়ন হইয়া উপপত্তীর
মহিত্ত ভাষ্যের উপর নৃত্যকরিতে ছিলেন, নৃত্য
করিতে করিতে ডাহার উপপত্তী তাহাকে উপহাস
করিতেছিল তুমি আবার কেমন ভালবাস
হুনি যদি এই ভাদ হইতে লক্ষ্যদিয়া
নীচে পড়িতে পার তবে আমি তোমার চিব-
কালের দাসী হইতাম। থাকিব । বাবুজি একে মনে
মত আনন্দের পরিসীমা নাই, তাঁহাতে আশার

সোমপ্রকাশ

“সর্বস্বার্থে সর্বমিচ্ছায়াং যার্থিবঃ সৎজ্ঞানী স্মৃতিমহনী স হ্যযত্নাঃ”

৪ ভাগ ।
৩৩ সংখ্যা

সন ১২৬২ । ১৭ আষাঢ় । ইং ১৮৬২ । ৩০ জুন

মাসিক মূল্য ১ টাকা
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

সম্পাদকরূপে বিজ্ঞাপন ।

কলিকাতা। ভবানীপুর প্রভৃতির গ্রাহকগণ-
একে কখনো বাইতেছে বহুনাথ চক্রবর্তী নামে
যে একজন এত দিন আমাদিগের সরকারি ছি-
কন আমরা তাহাকে পরিচালিত করিয়াছি।
পত্রের আর কেহ তাহার নিবন্ধে কোন প্র-
সংস্করণ নাই।

বিজ্ঞাপন ।

আম “চেষ্টা কলিকাতা” সন ১২৬২
নং প্রস্তাবের নিমিত্ত (সংবাদ) প্রস্তুত
করা হইতে কলিকাতা মূল্য ১/০ আনা।
মাহার প্রস্তুত হই, তিনি আমের নিকটে
অথবা কলিকাতা প্রেসিডেন্সি কোর্টে মূল্য
পাট্টাইলে পাইবেন।

সংবাদ প্রকাশক।

৪ ইং ১৮৬২ সন ১০ ৬২।

ক্রীতদাস কামাধ দে

বিজ্ঞাপন ।

১২৬২ ইংল্যান্ড আইন। বাস্তবিক ক্রীত-
দাস প্রেসিডেন্সি কোর্টের বাস্তবিক স-
ংবাদ ক্রীতদাস বাস্তবিক কলিকাতা মহানগর
আদালত ও কলিকাতা কোর্টের আদালতের
আদালতের হস্তে, যে সকল গ্রন্থ প্রকাশিত
হইয়াছে এবং ভবিষ্যতে গাছ প্রকাশিত হই-
বে সে সকলের মূল্যাক্ষেপ ও বিক্রয়ের সম্পূর্ণ
কার্য আমাদিগের উপর অর্পণ করিয়াছেন।
সুতরাং উক্ত গ্রন্থ সকল প্রস্তুত হইলে
আমাদিগের প্রকাশের পাইবেন। নিম্ন লিখিত
উক্ত গ্রন্থ সকল বিক্রয়ার্থ প্রস্তুত আছে।
বিক্রয়ের মূল্য (১) কলিকাতা কলিকাতা

২৩

ইংল্যান্ডের ইতিহাস (১ রত) ...
কলিকাতা কোর্টের ইতিহাস (২ রত) ...
কলিকাতা কোর্টের ইতিহাস (৩ রত) ...
কলিকাতা কোর্টের ইতিহাস (৪ রত) ...

৩৩ প্রকাশ

বিজ্ঞাপন ।

বিজ্ঞাপন।

ক্রীতদাস কামাধ দে প্রণীত উক্ত নাতক
সংস্কৃত যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়া বিজ্ঞাপন প্রস্তুত
আছে। গ্রাহকগণ নিম্ন লিখিত টিকান
তবে করিলে পাইতে পারিবেন। মূল্য ১/০
আনা মাত্র।

কলিকাতা টেনেনিয়া, ১২৬২ নং ভবনে
সংস্কৃত যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়া ৮৬ নং
ভবনে ৩৩ প্রকাশের যন্ত্রে মুদ্রিত হইয়া
বাজার তি রোজারিও ৪৩ কোম্পানির লাই-
সেন্সি।

বর্ধমান রাধানগর ৩-সংস্কৃত উপাচার্য
ক্রীতদাস কামাধ দে প্রণীত নাতক

সোমপ্রকাশ ।

১২৬২ আষাঢ় সোমবার।

হাইকোর্ট।

এক দিনের পর হাই কোর্ট (উচ্চতম
বিচারালয়) স্থাপনের সনন্দ আসিয়াছে।
ইংল্যান্ডের এই সনন্দ পত্র কেট সেক্রে-
টারি দ্বারা প্রেরণ করিয়াছেন। ১২৬২
লাই অর্থাৎ ইহার কাব্য আরম্ভ হইবার
সম্ভাবনা আছে। সুপ্রিম কোর্টের বর্ধমান
বিচারপতিগণ, সদর আদালতের জজেরা,
হাই জজ বারিষ্টার ও বেন্স ও লুই আক

সন সাহেব বিচারপতি পদে মনোনী-
ত হইয়াছেন। বাবু রমাকৃষ্ণ দাস আরো
লাভ করিলে এতদেশীয় বিচারপতির
সম গ্রহণ করিবেন। সত্যাবিক বৎসর
ল, এ দেশে ইংরাজদিগের রাজত্ব
রাজ্য, এ পর্যন্ত অনেক বিষয়েই
যত্ন বেতনের বিষয়ে ইংরাজী ও এ
শীয় বলিয়া ভেদ করা হইতেছে। কল
উত্তরে মূল্য পদ, মূল্য কমতালী
মূল্য কমতালী হইলেও এ দেশীয়
বেতনগত বহু বৈলক্ষ্য হইয়া আসিয়াছে
কিন্তু সম্প্রতি ইংল্যান্ডের আমোদভুক্ত
পক্ষপাতমূলক এই অমর্যকারী
উল্লিখিত প্রধানতম আদালত হইতে
রিত করিয়াছেন। সত্য বৎসর
কাল পক্ষপাতমূলক ব্যবহার করিয়া
সত্য সমাজে নিম্নিত ও উপহাসিত
তে পারেন। আমরা উপরে যে অর্থে
বিবরণ উল্লেখ করিলাম, তাহা কেবল
দেশে উচ্চতম আদালত স্থাপনের সনন্দ
নয়, আমরা ইহাকে এই অর্থে এ দেশে
ইংরাজ আতির অগৌরবকর সনন্দ
ব্যবহারের উল্লিখিত সনন্দ বলিয়া গ-
ণনা করিব। এই আদালত সংস্থাপিত
হইল, এক্ষণে এ দেশে বিচার ও আইন
প্রভৃতিগত যে সমস্ত পক্ষপাত দোষ আ-
ছে, তাহা ক্রমে উন্মূলিত হইবে সন্দেহ
নাই। বাহা হউক, প্রকৃত বিষয়ে বক্তব্য
ইংরাজী ও এ দেশীয় উত্তরবিধ

রপতিই ভূলা বেতন পা
র প্রত্যেকে বৎসর বৎসর

করিয়া পাইবেন। আপাততঃ
ই নিশ্চয় হইবে, এক্ষণে বাহারা সু
। কোর্টের বিচারপতি পদে আছেন
রা সে বেতন পাইতেছেন, তাহাই পা
ন। কিন্তু তাহাদিগের উত্তরাধিকারীদি
এই ক্ষুদ্র নিয়মের পরাধীন হইতে
বৎসর নিয়ম দ্বিতীয় সুপ্রিম কো
র্ট বিচারপতিদিগকে ঘাইট (সর) ট
ব দেওয়া হইত, অতঃপর তাহা রহিত
বে। এই উপাধি দেওয়া না দেওয়া
লগ্নেও বরী হইত।

সর চার্লস উড আর এক বিষয়ে বি
ন মুরবর্তিতা প্রদর্শন করিয়াছেন। আ
রা তাহা বিচারালয় প্রধানতম বিচারালয়ে
রিক্টর ব্যতিরিক্ত অন্য কোর্ট ও কালতী
করিতে পারিবেন না। কিন্তু আমাদিগের
সংস্কার সুর হইয়াছে। সর আদাল
তর মর্মে উকীলগণ ও সুপ্রিম কোর্টের
রিক্টরের উত্তরেই এই বিচারালয়ে ও কাল
তী করিতে পারিবেন। আর, বাহারা পো
সেই কালেই বি, এল উপাধি লাভ
ইবেন তাহারা এবং উক্ত বিচারালয়ের যে
সকল আর্টী প্রতিনিধি (মোক্তার
কর্তব্য জোগাড় করিয়া দেওয়া) পরিভাগ
করিবেন, তাহারাও ও কালতী করিতে পা
রবেন।

উল্লিখিত প্রধানতম বিচারালয় যে
কিছু সংস্থাপিত হইতেছে, তাহাতে কা
র্য্যকর অসংখ্য জমির সত্ত্বাধীনা দেখা
বাইতেছে না। সকল জমির লোকই
বিচার আশ্রয়িত হইয়াছেন। সর
চার্লস পিকক, সর চার্লস জাকসন
ও সর মর্ডাট ওয়েলস ও দুই জন বারি
সর রাজপুরুষের ইউরোপীয়দিগের প্র
তিনিধি স্বরূপ আছেন। কেন্স, ট্রিবার প্র
তিনিধি বিলি জর্জ, হইতে আসিতেছেন,
এক প্রকার বার আমাদিগের প্রতিনিধি

কর্তৃক চম, ইহাদিগের কেই অনুপ
বৃত্ত হইত।

বিচারপতিরা মধ্যে মধ্যে মফসসনে
যাইবেন। পূর্বে ইউরোপীয় অপরাধি
গের মফসসনে বিচার হইত না। তাহা
এক নানা স্থান হইতে কলিকাতায় আনা
হইত। তাহাতে গবর্নমেন্টের বিস্তর কষ্ট
হইত, এবং যাহা দিগ কলিকাতায় হইত
সাক্ষ্য দিতে আসিতে হইত, তাহাদি
ক্ষতি ও কষ্টের পরিসীমা ছিল না।
এইরূপ এক এক জন বিচারপতি
স্থানে গিয়া ইংলণ্ডীয় আসাইজের
রকর্ডদিগের ন্যায় ইউরোপীয়দিগের
বিচার করিবেন। এতদ্বিষয়ে কেহ
যে গবর্নমেন্টের ব্যয় সুরক্ষিত হইবে
একপক্ষে, দূরস্থ পক্ষীয় সর লোকদি
গের সুপ্রিম কোর্টে আসিয়া সাক্ষ্য দিবার
বহুবিধ খরচা সম্প্রদায় যে বিচার
হইত, তাহার নিবারণ হইবে। এক্ষণে
বিচারপতিদিগের যথাবিধ নিজ নিজ ক
র্তব্য সম্পাদনই আমাদিগের প্রতীক্ষণীয়
হইয়াছে। অপর, মফসসলের বিচারালয়
সকল বহু দোষে দুর্বৃত্ত হইতেছে।
এগুলির উৎকর্ষ সাধন করা যেন তাহাদি
গের একটা প্রধান কর্তব্য কর্তব্য হয়। বিচা
রালয়ের উৎকর্ষ সাধিত হইলে ইউরোপী
য় ও এ দেশীয় ক্রিয়া যত্ন যত্ন আইন
করিবার আর প্রয়োজন হইবে না। গত
দিন এইরূপ না হইবে, তত দিন গবর্নমে
ন্ট আমাদিগের যত্ন হিতকর চেষ্টা করুন,
কর্তব্য হইতে পারিবেন না।

অগ্রস্ত কারাগার ও বন্দীগণ।

আমরা নীলপ্রধান প্রদেশের কৃষক
ও চাকোম্পানির মজুরগণের প্রতি অত্যা
চার প্রভৃতি বিষয় লইয়াই দাঙ আছি।
বহু নতুন অন্য অন্য জেলের কষ্টের বিষ
য় আমরা বিম্বিত হইয়া যাই। আমাদিগের
সমাজগত দোষ আমাদিগের সম্মুখে বি

কটকটে মুখ বিকার করিতেছে, কিন্তু সে
বিষয়েও আমাদিগের যথোচিত মনোনি
বেশ হইতেছে না। আইন ও রাজস্ব প্রভৃতি
বিষয় আমাদিগের প্রধানতম আন্দোলনের
বিষয় হইয়াছে। একদিক দিয়া এক জেলের
কাণ্ডের বিষয়ে আমরা নিত্যন্ত উৎসাহ
করিয়াছি। এই জেল কতভাণ্ডা ও দুর্ভাচার
বিস্ময় আমাকে ইহাদিগের বিষয় একবারও
চিন্তা করেন না। এই কারণে ইহার নি
ত্যন্ত উপেক্ষিত হইয়া যার পর মাঠ কট
পাইতেছে এবং ইহাদিগের চরিত্র সং
ধন ও কোম উপায় হইতেছে না। পা
ঠকগণ! জামরা এ প্রস্তাবে বন্দীগণের বি
ষয় উল্লেখ করিতেছি।

এক জন বিখ্যাত অগ্নি হিতৈষী কহি
য়াছেন, ১৯ পাশ্চাত্যের উৎকর্ষ নি
য়ম নচেৎ, মনোহৃত্তির করণ করিয়া ধর্ম
নীতির শিক্ষা ন দিলে পাপপ্রবৃত্তি কিছু
তেই দূরীভূত হয় না। অন্যায় কষ্ট, অপ
রিসীম যন্ত্রণা ও গুরুতর দণ্ড দান কারিলে
কোনী ব্যক্তি পাপকাষে অধিকতর দৃঢ়
প্রতিষ্ঠা হইয়া উঠে। সে মনকে ঐব নি
যাতন জান করে, বিচার পতি তাহার
নিকটে এক বন্দী প্রতীয়মান হন এবং সে
রাজাকে সম্মুখ ও কারাগারকে বসাইয়ের
লোকান বোধ করে। তাহার প্রেম সংবন করা
যে আইন গবর্নমেন্ট ও বিচার পতির উদ্দেশ্য,
সে তাহা বুঝে না। সে কি কারণ বুঝে
না। অকৃতকর্ম কি তাহার কাণে না, প্রণা
লী গোবাই তাহার কাণে। যত দিন এই
প্রণালী দোষ সংশোধিত না হইবে, তত
দিন কারাগার দোষ সংশোধনের স্থান না
হইবে। পশ্চিম পশ্চিমায় দৃঢ়প্রতিজ্ঞ
করিয়াছেন। থাকিবে, হসন ও অ
মেরিকা প্রভৃতি দেশে করেদিনিগকে কে
বল খাটাইয়া লওয়া হয় না, তাহার তাহা
দিগের মনোহৃত্তির উদ্ধৃত সাধনের প্রতি
দৃষ্টি রাখা হইয়া থাকে। এখানে সে রূপ
কিছু করা হয় না। কেবল বন্দীগণকে খাটাই

ইহা লওয়া হয়। যে অধিক বাড়িতে না পারে তাহাকে আমেরিকার জীভদায়ক অথবা চাকরির মজুরদিগের ন্যায় নিম্নতর প্রহার করণে ভোগ করিতে হয়। ইহাতেই কঠোর শেখাইল না, ইহার উপরে আবার অহাতির কট। পাঠকগণ শুনিয়া বিশ্বাসপন্ন হইবেন, তাহা না প্রত্যক্ষ হইলে পরমাখোরা কী পাইয়া থাকে। একে এই দুর্ভাগ্যের সময়, ইহারও সমুদায় তাহাদিগের ভোগ বাত হয় না। যে ব্যক্তি রক্ষণ করে, সে কিছু লয়, চাপরাসী ও মারোয়ারাও অনেক হুনে পুজা পাইয়া থাকেন। আমরা স্পষ্টাক্ষরে কহিতে পারি যে সকল কয়েদী গৃহ হইতে টাকা আনাইতে না পারে, তাহাদিগের এক বেলা অর্থ ভোজন মাত্র। তাহাদিগের নতুন, শয্যা প্রভৃতির ভাড়াই নাই। তদ্বিষয়, নিবৃত্ত প্রায় এক গৃহ মধ্যে বহুসংখ্য লোকের অনাহার প্রভৃতি পের এত কষ্ট, তাহাদিগের কি সুখি দেখি হইয়া পাপ, ক্রিয়া প্রভৃতি অধিকতর বল দী হইয়া সম্ভাবনা নয়। দুর্ভাগ্যই হউক আর ভয়াচারই হউক তাহাকে অনাহারে বাধিত দণ্ড করা কোন ক্রমেই যুক্তি সিদ্ধ হয় না।

এবিষয়ে গবর্নমেন্টের মনোযোগী হওয়া অবশ্য কর্তব্য। এদেশে যে প্রণালীতে কারাগৃহের কাছা নির্বাহ হইয়া থাকে তাহা অতি অসম্মত ও লজ্জাকর। যে গুল লোক, কয়েদীদিগকে নানা প্রকার শিষ্টাচার, শিখাইবার প্রণালী উদ্ভাবন করেন তাহাকে বন্দী, দণ্ড আদ্যদিগের গবর্নমেন্ট কয়েদীদিগকে শিষ্টাচার শিক্ষা দিবার জন্য অবলম্বন করিয়াছেন বটে কিন্তু কারা দ্বারা স্পষ্ট বোধ হয় কয়েদীদিগকে খাটাইয়া লওয়া যেওপ উদ্দেশ্য শিক্ষা দেওয়া সেওপ নহে। যাহা হউক আমরা নিম্ন লিখিত কয়েকটি প্রস্তাব করিতেছি, তদনুসরণ কর্তব্য।

১। কয়েদীকে এক স্থানে রাখা

না হয়। ইহা দ্বারা দুই অনিষ্ট ঘটতেছে এক, ভয় অভয়, ধার্মিক অধার্মিক, ভদ্র ও বদ্য একত্র থাকিতে পরস্পর সংসর্গে পরস্পরের স্বভাব দুর্ভিত হইয়া যায়। দ্বিতীয়, বলবান দুর্বল, দীক্ষ ও কুৎসিত রোগ প্রভৃতি ব্যক্তিদিগের পরস্পর সংসর্গে অনেকের চিরকালের মত স্বাস্থ্য ব্যাহত হইয়া যায়। অতএব ইহার সমুদায় করা আবশ্যিক।

২। বাহ্যতে কয়েদীদিগের চরিত্র দেখা সংশোধিত হই। তদ্বিষয়ে দৃষ্টি রাখা উচিত। তাহা না করিলে সহস্র দণ্ডবিধানের আইন পাপ নিবারণ করিতে সমর্থ হইবেন। পাপীরা কিঞ্চিৎ সতর্কতা ও অধিকতর খুঁজত শিখিবে এই মাত্র।

৩। বাহ্যর যে ব্যবসায় তাহাকে তাহাতে নিযুক্ত করা কর্তব্য। আমরা অনেক স্থানে দেখিয়াছি এক জন কৃত বিনা তত্ত্বলোককে হুকি ধমন করান হইতেছে। ইহা অতিশয় অন্যায় ও অনিষ্টকর।

৪। কয়েদীদিগকে পর্যাপ্ত খাদ্য মধ্যবিধ বস্ত্র ও শয্যা দেওয়া কর্তব্য। তাহাদিগকে নগদ পাসা না দিয়া চাউন ডাউন প্রভৃতি দেওয়া উচিত।

৫। একগণে যথার্থ ভয় ও কৃতবিদ্যা লোকেরা দারোগা প্রভৃতি পদ লইতে চাহেন না। তাহারা যাহাতে এই কথা কার্য কবেন তদ্বিষয়ে উৎসাহ দেওয়া কর্তব্য। পর্যাপ্ত বেতন ও তাবি উন্নত পদের আশা দিলে অনেকেরই অস্বাস্থ্য পূর্বক এই সকল পদ গ্রহণ করিবেন।

৬। উপযুক্ত দেখিয়া কয়েক জন সহকারী জেল ইন্সপেক্টর নিযুক্ত করা কর্তব্য। ইহারা কয়েদীদিগের তত্ত্বাবধান করিবেন।

এই গুলি করা নিতান্ত আবশ্যিক।

ই। ন্যায় সাধ্য নন্দেই নাই; কিন্তু লোক

দিগের চরিত্র সংশোধন ও পরস্পর মঙ্গল লইয়া যখন কথা হইতেছে তখন ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টের এই কার্য ব্যতীত হওয়া বিধেয় নহে।

নীল প্রধান এদেশের কল
নইয়া বিবাদ।

নীল প্রধান এদেশের মোলসোণ দ্বিগুণ হইবার আকার ভ দেখা নাই। গবর্নমেন্ট যে উপায় অবলম্বন করিতেছে এবং যে সমস্ত কয়চারিত্রিক প্রেরণ করিছেন, তাহারা এই বিবাদের শান্তি হয়, প সম্ভাবনা নাই। আমরা তাহা বিবাহিত জাকসন ও কায়েল সাহেব নীলকর ও জাদিগের পরস্পর আন্তরিকতা হউক বাহ্য সম্ভাব করিয়া দিবে। কিন্তু তাহাদিগের উভয়কেই অকৃতকাব্য দেখিতেছি। তাহারা যে উপায় অবলম্বন করিয়াছেন, তাহাতে নীলকর ও প্রমা উভয় পক্ষেই অনন্তোষ জন্মিয়াছে। নীলকরেরা যে মিল সাহেব কর লইতে চাহিয়াছিলেন জাকসন সাহেব তাহা অগ্রাহ্য করিয়াছেন, আবার প্রজারা পরগণার হারে যে কর দিতে মনো ছিল তাহাও অগ্রাহ্য করা হয় নাই। তিনি মধ্যে প্রভৃতি গড়ে ১১০ আনা, ৫০ আনা ও ১০ কর দাখ্য করিয়াছেন। তিনি বলে একগণে যাবতীয় দ্রব্য মহাশয় হওয়াতে প্রজার বিলক্ষণ লাভবান হইয়াছে, অতএব তাহারা কিঞ্চিৎ অধিক করনা বিবে কেন? এ স্থলে আমরা তাহাকে জিজ্ঞাসা করিতে পারি, ত্রি যের বেলায় মূল্য হুকি হইয়াছে, সেই প্রকার কি পরিপ্রমের মূল্য হুকি হয় নাই? কুবকেরা কিছু একাকী সমুদায় ফুনির কবি কার্য নির্বাহ করিতে পারে না; তাহাদিগকে মজুর খাটাইতে হয়, লাভলের ব্যয় আছে, গোমহিষাদির আহাৰ আছে, এ সকলের জন্য তাহাদিগকে কি পূর্বাপেক্ষা অধিক ব্যয় দিতে হইতেছে না? আর এই সকল ব্যয় তাহাদের মতি আদ্য দ্বিগুণ করিয়াছে।

লাভ থাকে, ভূমিধারীরই বা তাহাতে
উদ্ভিদগণের যত্নে কি ভূমির উর্বরতা গুণ
পাতিত হয়? তাহার কি প্রজাদিগকে
কায়ার উন্নতি সাধনের উপায় সকলে
জ্ঞান করেন? প্রজারা আপনাদিগের যত্নে
অভ্যাস বলে ভূমির যে কিছু উৎকর্ষ
ধন করিতে পারে, সেই মাত্র। যদি
ভূমির উর্বরতা গুণ বর্জন বিষয়ে জমীদারের
সিঁচায়া না রহিত, তবে জমীদার ও
পরগণ কি যুক্তির অনুসারে অধিকতর
প্রার্থী হইতে পারেন? বিশেষতঃ ভূমি
ধক শস্যশালিনী হইলেই অধিকতর ক
ণ্ডয়া হইবে একপনিয়ম করা অতিশয়
সমায় ও অনিষ্টকর। সে দিবস রাজা না
নসিংহ কি বলিয়াছিলেন? তাঁহাকে ভূমি
প্রভুতিব কৃষিকার্যে মনোনিবেশ করিতে ব
লাতে তিনি বলেন, পতিত ভূমিকে শস্যশা
লিনী বরা বড় হুঃসাধ্য নহে, কিন্তু তাহা
করিলে কি হইবে? আমাদিগের জমীদারির
কবরুজি হইবে এই মাত্র। এই কারণে লাভ
কানিও অযোগ্য প্রভুতি এদেশে চিরস্থায়ী
নো বন্দোবস্ত বরিবার সংকল্প করিয়াছি
নন। প্রজাদিগকেও কি সেই চিবে স্থায়ী
বন্দোবস্তের অংশগ্রহীতী করা বিধেয় নয়?
গহা করিলে কি ভূমির উর্বরতা গুণের
অধিক বৃদ্ধি হইবে না।

যখন জমীদারের চিরস্থায় একবিধ
কর দিঃ। যুক্ত হইতেছেন, তখন প্রজার
কি? তাহারা আরও পবিত্র
করে, এই কি তাহাদিগের অসংখ্য - তা
হার। ব্যাভ্র ত দুঃখাদির আবাসস্থান পতিত
ভূমি সকলে কৃষিকার্য করিয়া ও হইতে ভ
পয়াগু শস্য উৎপাদন কার্যেতে বিনয়
কি তাহাদিগের অর্থদণ্ড বহিতে পারে?
এবং যিহ নিয়ম পূর্বতন নবাবদিগের প্রদত্ত
আম তুরক ও পারস্য গবর্ণমেণ্টেবই উদ্ভা
ভূমি আমরা গবর্ণমেণ্টের নিকটে এত প্রার্থনা
করিতেছি, তাহার। জাকসন সাহেবেব আ
জ্ঞা রহিত করিয়া প্রার্থা পরগণার হিসাবে

কর ধাৰ্য্য করিতে বলুন। আমরা বরাবর
কহিঃ। আসিতেছি সমুদায় বন্দোবস্ত এক
বার করিপ করিঃ। ভূমির সীমা বন্ধ করা
নিঃসন্দেহ আবশ্যক। নেপোলিয়ন এই বলিয়া
গোঃ কবেন, তাঁহার কাডারীর অর্থাৎ
ভূমির স্বার্থ হিসাব থাকাতাই ফ্রান্সে মক
দমার অনেক হুস হইয়াছে। এদেশে সেই
প্রকার করানা কর কেন? বাখালীদিগকে
মোকদ্দম প্রিয় বলিয়া গালি দেওয়া হই
য়া থাকে: কিন্তু যখন ভূমির এই প্রকার
চুরবস্থা বাইল, তখন মকদ্দমা বাতিরেকে
কিভাবে ভূমির স্বার্থ অব্যাহত থাকিবে
পারে?

পরিশেষে আমাদিগের বক্তব্য এত,
এত বিবাদেব সমুদয় মীমাংসানা হওয়াতে
প্রজারা ক্রমশঃ উৎসন্ন হইতেছে। বহু
দিন অবধি নীল সম্বন্ধ লইয়া নীলকরদি
গের সহিত তাহাদিগের বিবাদ চলিতে
ছে, মকদ্দমায মকদ্দমায তাহার। অল্প বস্ত্র
ছ'ড়া হইয়াছে, সকল স্থানে সুন্দরকপ
শস্যও উৎপন্ন হয় নাই। ইহার উপরে
আবার কর লইয়া বিবাদ অব্যাহত
যন্ত্রণা দিতেছে। এত উপদ্রবে ক্ষুজ
আণী প্রজারা কতক্ষণ তিষ্ঠিতে পারে?
এই বিরোধের মীমাংসানা হওয়াতে পূর্ব
তন নীলসংক্রান্ত অত্যাচার পুনরাবৃত্ত
হইতেছে। শুনিতে পাওয়া হইতেছে,
অনেক স্থানের প্রজা নিঃসন্দেহ নিরুপায় হ
ইয়া সেই অনর্থকুল প্রাচীন নিয়মে দান
ন গ্রহণ করিতেছে। যে প্রাণীর উদ্ভুলনা
র্ধ এত কাণ্ড হইয়া গেল, এত অর্থ ব্যয়
হইল, বাবাল গবর্ণমেণ্টে মিসনবিনিগের
সহিত ঐক্যিকারিদিগের কোপ পতিত
হইলেন লজ সাহেবেবের করানাস হইল,
সিউনজাব সাহেব ভিরকৃত হইলেন, সেই
পদে পদে পুনরাবৃত্ত হইতে চলিল। উঃ পু
নরক্ত পদে বন্দোবস্তেব কৃষকরা দক্ষি
ন বাখালীর কীতদাসদিগের অপেক্ষা
সহ্যক সৌভাগ্যশালী হইবে না।

এডুকেশন কোমিশনের পুনঃ স্থাপন
প্রসঙ্গ।

এডুকেশন কোমিশন সভা উঠিয়া গি
যাছে। সভা যে সমস্ত কার্য করিতেন,
সে সমুদায় এক ব্যক্তির হস্তে ন্যস্ত হই
য়াছে। কান্দে যেকপ দেখা যাইতেছে,
গ্রাহ্যে এটা শিক্ষাসম্বন্ধে এ দেশের
সৌভাগ্য বিষয় না হইয়া দুর্ভাগ্যের বি
ষয় হইয়া উঠিয়াছে। এক্ষণে বিদ্যা শি
কার জন্য পূর্বাপেক্ষা অধিক টাকা দেও
য়া হইতেছে, প্রধান প্রধান লোকেরা বি
দ্যার উন্নতির জন্য যত্নবান হইয়াছেন,
অনেক বি. এ. বি. এল প্রভৃতি বাহির হ
ইয়াছেন, কিন্তু এডুকেশন ডিপার্টমেন্টে
কোন অগ্রসরশ্রম হইয়াছে। পূর্বে কো
মিশন সভায় তখনকে একত্র বসিয়া বিবে
চনা পূর্বক নানা প্রকার প্রণালীর উদ্ভা
বন করিতেন, কোন বিষয় উপস্থিত হইলে
তদন্তরূপে তাহাব গুণ দেখা বিচার
হইত, সুতরাং সে বিষয় কতব্য বলিয়া
স্থির হইত, তাহাতে সর্বাংশে দোষ সম্পর্ক
হইবার তাদৃশ সম্ভাবনা ছিল না। বিশে
ষতঃ পূর্বে কোমিশন সভা উপযুক্ত শিক্ষক
দিগের অনানুকুল পুঙ্খবহু হিতেন, শি
ক্ষকেরাও উৎসাহ ও আন্তরিক সহকারে
অপন আপন কথ্য সুন্দর রূপে বঙ্গময়
রিডেন। তৎকালে এই একটি বিশেষ গুণ
ছিল, কেহ ইচ্ছা করিলেই অনায়াসে শি
ক্ষকদিগের উপরে আপনার নীচ ভাবতির
চরিতার্থতঃ সম্পাদনে সমর্থ হইতেন না।
এক্ষণে এই দোষ ঘটিয়াছে, কোন শিক্ষক
প্রদানতম কথ্যচারিব অগ্রিয়কইলে তাহার
দত্ত কোন ক. থাকুক না তাহার নিস্তার
থাকে না। তাহাদিগের অন্য দিগে উপায়
না হয়, তাহাদিগের পক্ষেই পতিত পাবন
এডুকেশন ডিপার্টমেন্টে আসিছেন। সভ্যকে
কেহ এ ডিপার্টমেন্টে আসিতে চান না।
এই সকল দোষের প্রতীকারের উপায়
কি? আমরা সুনিয়মিত বীতন সাহেব
না কি পুনর্বার এডুকেশন কোমিশন স্থাপন

করিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। ইহাই এই সকল দোষের অতীকারের একমাত্র উপায়। ডিরেক্টর এই কৌশলের সেক্রেটারি হউন, ইনস্পেক্টরদিগকে ক্রমশঃ বিদ্যায় দেওয়া হউক, (তাহাদিগের দ্বারা এ পর্যন্ত বিশেষ কায্য ত দেখা যায় নাই) কয়েক জন সহকারী ইনস্পেক্টর থাকিলেই পঞ্জীগ্রন্থ বিদ্যালয়ের উন্নতি সাধন হইতে পারিবে। পরিশেষে বক্তব্য এই, এক ব্যক্তির হস্তে শিক্ষা সংক্রান্ত গুরুত্বার সমপণ করিয়া নিশ্চিত থাকি কোন ক্রমেই আমাদিগের অনুমোদিত নহে। কখন কখন একপ দেখা যায় যে, এক ব্যক্তির হস্তে সম্পূর্ণ কায্যভার থাকিলে কায্য যে রূপ সুন্দররূপে সম্পন্ন হয়, পাঁচ জনের হস্তে থাকিলে সেরূপ হয় না। সেই সেই জন পাঁচ ব্যক্তি প্রধান কর্ম কর্তার কায্য সম্পাদন পথের অন্তরায় বলিয়া পরিগণিত হই। ৭তম। কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখিলে দেখিতে পাওয়া যায়, উল্লিখিত গুণ ও ক্ষমতাবান ব্যক্তির কায্যকর্তৃত্ব পক্ষে অধিকান সুস্থিত নহে। আমরা ক্রমে ক্রমে শিক্ষা সংক্রান্ত কায্যের দুই জন ডিরেক্টরকে দেখিলাম। ইয়ত্ত সাহেবেব কায্যসম্পন্নতার পরিচয় দি, পাঠকগণ প্রবণ করুন। এডুকেশন ডিপার্টমেন্টের প্রধান অধ্যক্ষের কর্ম দৈনিকগ্রন্থীবাং। চেয়ারম্যান অথবা কম্পোজিটরের কর্ম নহে। কত। সকল আদেশ করিবে, তাহাও তাহা করিবে। শিক্ষা সংক্রান্ত প্রধান অধ্যক্ষের অনেকবিধ গুরুত্ব প্রণালীর উদ্ভাবন করিতে হইবে তাহা অনেকবিধ চিন্তা ও সময় সাধ্য। তন্মধ্যে কোন বিদ্যালয়ে শিক্ষক কম হইতেছে তাহার দৃষ্টাবধান করিতে হইবে। তৎকালে এই সমস্ত কায্য করিতে হইলে অনেক সময় অবশ্যক পক্ষে সক্ষম নাই। কিন্তু কুতপূর্ব নিরীক্টন ইয়ত্ত সাহেব উপরিস্থ কর্তৃপক্ষের একটো নিষেধাজ্ঞা ছিলেন, এডুকেশন ডিপার্টমেন্টে

র কায্য শেষ করিয়া তাঁহার অনেক সময় রাখিতে। না দেখিবা না শুনিয়া কেবল সরকারী কামজে থাকর করাই কি প্রধান অধ্যক্ষের কর্ম? প্রধান অধ্যক্ষ অসম্মত হইয়া যদি সুন্দররূপে কায্য নির্বাহ করিতে পারিতেন, তাহা হইলে মন্ত্রিসভা ও ব্যবস্থাপক সভা প্রভৃতি রাণিয়া রাজারা অকারণ ব্যয় প্রাপ্ত হইতেন না। রোমের প্রাচীন কালের র কাদিগের যে যে ব্যক্তি সেনেট সভাকে উপেক্ষা করিয়া কায্য করিয়াছিলেন, তাঁহারা এই প্রকার অপ্রিয় হইয়াছিলেন।

— ০ —

মুদ্রণ শুল্ক ও পত্রিকা

প্রতি

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে আভ্যন্তরীণ করিতেছি, নিম্নলিখিত গুরুত্ব পুস্তক ও পত্রিকা প্রাপ্ত হইয়াছে।

১। উত্তরব্রাহ্মণী সংস্কৃত, মহা কাব্য ভবভূতি প্রণীত। কালকাতা, ১৮৬৩। কালকাতার অধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত বিজয়চন্দ্র নাটক প্রণয়িত করিয়াছেন। এই কাব্যের অনেক অংশের অধ্যাপক শ্রীযুক্ত প্রমোদচন্দ্র তর্ক বাণীশ মহাশয় ইহার কালে জ্ঞানসী। ও তৎকাল শ্রবণ করিয়া দিয়াছেন। পূর্বের মুদ্রিত পত্রের চরিত্রের অনেক জ্ঞানের অর্থ বিশদরূপে কল্পনা করিতে না। তৎকালীন মহাশয়ের যত্ন ও পরিশ্রমে তখন মুদ্রিত প্রস্তাব সে দোষ পরিহার হইয়াছে। প্রস্তাব ফেব্রুয়ারি ১৮৬৩ খ্রিষ্টাব্দে প্রকাশিত হইয়াছে। ইহার মূল্য ১৮০০ নিকট হইয়াছে।

২। প্রাচীন গ্রন্থ। শ্রীযুক্ত বাবু চণ্ডীচরণ দে ইহার প্রণয়ন কর্তা। ইহা প্রস্তাবের প্রতিষ্ঠিত লিখিত হইয়াছে। ইহার বচন প্রণালী অতিসহজ। এতদ্বারা সহজে অনেক প্রাণির বিষয় জানিতে পারা যায়।

৩। চাকাবার্ড একাডেমিক। ইহা প্রকাশ হইতে আরম্ভ হইছে। শ্রীযুক্ত বাবু রামচন্দ্র ভৌমিক সম্পাদন কার্যে ত্রুটি হইয়াছেন।

৪। ভারতবর্ষীয় সত্যার টেমপ্লেট। অধিবেশনের বিবরণ।

— ০ —

দানপ্রাপ্তি।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে আমাদিগের বরিতছি, শ্রীমতী রাণী স্বর্নময়ী আমাদিগের প্রতিষ্ঠিত বিদ্যালয়ের সাহায্যার্থ ১০০ টাকা দান করিয়াছেন।

বিবিধ সংবাদ।

১০ই আষাঢ় সোমবার।

আমরা বরাবর বলিয়া আসিতেছি উত্তর পশ্চিমে বিদ্রোহ হইবে বলিয়া যে ভয় করা হইয়াছে তাহা অমূলক। আগরার সেনাপতি বিগেডিয়র ট্রোপ সেনাদিগকে সর্বদা অস্ত্রধারী রাখিয়াছিলেন, এবং গিরদ্বার অস্ত্রধারী সেনা লইয়া গিয়াছিলেন বলিয়া গবর্ণমেন্টে তাহাব নিকট উল্লিখিত চাঙ্কিয়াছেন।

কলকাতা-সম্পাদন লিখিয়াছেন। জুন ৭ ইং প্রায় ১০০০ লোক এলগিন জাভ ফলা করিলেন নত হই। এতদিন এতদেশীয় গুরুত্ব অপরাধ করিয়া সুপ্রিমকোর্টে যে যুক্ত হইয়াছে।

কিনিলের চাকাবর্তিত সংবাদ লাভ। লিখিত রূপে ভ্রান্ত্য প্রদায় কর্মচারি গুণ সর্গনা করিয়াছেন। চাকার জজ ও সারর রত মুখ্য, মাজিষ্ট্রেট জাভ, ও আমাদিগকে সর্বদা গালি দি। ৭। এবং সদরজলা ও গো বেচারী ৩ কোর্তায় কে বন্দবুস্তিতে পাবেন না। আবার এত ভেপুটি মাজিষ্ট্রেট আছেন, ইহা জানে, হইয়া বলিয়াছেন, এতদেশীয় কোন সাদা দুইপ্রহর বেলা বাকী রাখা দিলে তাহা জাভ প্রহর রাতি বুঝিয়া লইতে হইবে। ১। ইহাও তবে এক জন কর্ম নন। বাকী বাকী হইয়াছে।

এতদেশীয় সংবাদপত্রে ১৮৬৩ খ্রিষ্টাব্দে আবশ্যকতর বিষয়ে থাকা লিখিত হইয়াছে।

১৮

টাইগর অব ইন্ডিয়া নামক বনেন, শ্রুত
তবে তৎকালিক কবি কবিগণকে জ্ঞান
পুনিয়া বটলার কথা দিয়া যে অশ্রুত
নেন, তাহা তিনি বোধাই অশ্রুত নেন।
নরিয়াতেন। বনি উক্ত পদ্যগুলি তাহা

কিছু না বলেন, তাহা হইলে পারসীরা গিয়া করিয়া এখান ইংলণ্ডীয় বন্দীভাষ্য প্রেরণ করিবেন। পারসীরা অত্যন্ত কষ্টকর বর্ষীয় সত্বে, অবোধ্যার শাখা সত্বে ও রাজ্যের সমাজের সহিত এক বাক্য হইয়া কাণ্ড করুন।

হরকী ব্রহ্মচারী নামক যে হতভাগ্যকে নানা সাহেব বলিয়া দ্রুত করা হয় তাহার মৃত্যুর কারণ করনার দ্বারা দ্বিগুণ হইয়াছে। তাঁহার প্রজ্ঞাবের দ্বারে পীড়া হইয়াছিল। তিনি এত পীড়া বহনিসাবধি ভোগ করিতেছিলেন। এখানে ইহার উল্লেখ করা আবশ্যিক, যে পুলিশ কমিশনার ও ডায়নিষ্ট্র কর্মচারীগণ উক্ত পুরোহিত ও তাহার জাতীয় প্রতি বিশেষ রূপে যত্ন করিয়াছিলেন। তাঁহার জাতকে পাথের দিয়া করাটিতে পুনর্বার প্রেরণ করা হইতেছে।

আমেরিকার গবর্ণমেন্টে ক্রমশঃ জয় লাভ করিতেছেন। ক্রীতদাস রাখিবার নিয়ম উঠিয়া গিয়াছে। বহুসংখ্য দাস সেনাদলে প্রবেশ করিতেছে। গিয়ারিহি গিগের অধিক সংখ্য জাহাজ ও বিস্তৃত অস্ত্র প্রভৃতি গবর্ণমেন্টের হস্তগত হইয়াছে। তাহার সকলে ভীত হইয়াছে। বিচক্ষণ নগরের নিকটে যে যুদ্ধ হইবার সভাবনা আছে তাহাতে যদি জয় হয়, তাহা হইলেই বিদ্রোহ ক্রীতদাস রাখিবার প্রথার সত্ত্বিত নির্ধারিত হইবে সন্দেহ নাই। আমাদিগের এই প্রার্থনা।

বেডলিকট সাহেব উদ্ভূত। সাহেব বেষ প্রতি নিধি হইবেন। বারু কুদেব খুখাপাশ্যায় তাঁহার সহকারী হইবেন।

হুগলী জিলার ত্রাণকর বন্দীরা একটি যুদ্ধে বিধবা আপনার তিন সর্বার একটি পুত্রকে ত্যাগ করিয়া এক ব্যক্তির সহিত পলায়ন করিয়া বেশ্যা হয়, সে গৃহ হইতে অনেক দূর আনিয়াছিল, তাহার নামে নালিশ ও বিচার হইয়া তাহার দুই মাস মিয়াদ হইয়াছে। এই সকল দেখিয়া অনিয়া ও আমাদিগের দেশের লোকেরা বিধবা বিবাহের বিপক্ষতাচরণ করেন, কি আশ্চর্য।

১২ই আষাঢ় বুধবার।

টাইমস অব ইন্ডিয়া সাহসীকৃত সংবাদ।

গিগের প্রভাব তলি অনুবাসিত করিতেছেন। উক্ত জাহাজ অনেকগুলি সাপ্তাহিক গজ আ-
হে, এক বাসিও প্রাত্যহিক গজ নাই। সম্পাদক বলেন, এই সকল গজ বোম্বাইয়ের অনেক ইংরাজী গজ অপেক্ষা উৎকৃষ্ট কিন্তু তদন্ত হইতবিনোদ্য। দেশীবগরের বোম্বাই উৎসাহ লান করেন না। বহুদেশে এই দোষটি ক্রমশঃ তিরোহিত হইতেছে।

কিনিক সম্পাদক প্রস্তাব করিয়াছেন, লণ্ডনস্থিত টেম্পল বারের ন্যায় এখানেও একটি ব্যবস্থা বিদ্যালয় স্থাপন করা কর্তব্য। উক্ত প্রস্তাব। ইহা সুশিখ করিয়া ডুলিবার নিমিত্ত সকলের বসুধান হওয়া উচিত।

উক্ত সম্পাদক কলিকাতার পেটিমুরির লোব উল্লেখ করিয়া অল্লোকদিগকে জুরিপদে নিবৃত্ত করিতে কহিয়াছেন। তর লোক হইলে আকলাও প্রভৃতি জিরাজিকারীদিগের উপায় কি হইবে?

বহুদেশীয় প্রিন্টিং কোম্পানি অংশীদারগণকে ইনকম টাকার দ্বারা লতকরা ৭ টাকা লাভ দিয়াছেন। গত সাপ্তাহিক রিপোর্টে প্রকাশিত হইয়াছে হর মাসের মধ্যে ৭৫০১৩৮/৫ টাকার কর্ম হইয়াছে। দুইলক্ষ টাকার মূল ধনে এইলাভ সামান্য নহে।

আপারমের দ্রুতগিগের ইংলণ্ড ও ক্রীতদাস গমন হস্তান্ত পূর্বে পাঠকগণের গোচর করা হইয়াছে, তাহার লণ্ডনস্থিত দ্বিতীয় অদ্ভুত পদার্থ, শিশু প্রদর্শনী সত্বে, জাহাজ নির্মাণের ডক, চিকিৎসালয় প্রভৃতি দর্শন ও উত্তমরূপে পরীক্ষা করিয়াছেন। দ্রুতগিগের সহিত করে-
ক জন কর্মদায়ক আছেন তাহারা যে যে বিষয় দেখিয়াছেন তাহার চিত্র ৭ বিবরণ লিখিয়া লইয়াছেন। অনেক বিবরণে দ্রুতগিগের বিশেষ পারদর্শিতা প্রকাশ করিয়াছেন। তাহাদিগের সহিত যে একজন চিকিৎসক গিয়াছেন তিনি ব্যবসায়ের দ্বারা প্রভৃতি বিষয়ক যে মত প্রকাশ করিয়াছেন তাহাতে অনেক ইংরাজ চিকিৎসক নিম্নের জ্ঞান পরিচয় করেন। দ্রুতগিগের ক্রীতদাসের সমাজের দ্বারা হন। সম্রাট তাহাদিগকে স্বদেশে প্রতিগমনার্থ একখানি কাল্পীয় জাহাজ প্রদান করিয়াছেন। পাঠকবর্গ বোধ হয় তিনি কৌতুকাবিত্ত হইবেন, প্রধান দ্রুত সম্রা-

দের চিত্র দর্শন হইবারে দুইবারি জলদার বাধিয়াছিলেন।

তাঁহার সম্পাদক বলেন, আলিপুরে অনেক কুসুদি, গোদার প্রভৃতি জুরি হইয়াছে। ইহা দিগের কেহ কেহ নামও দাকর করিতে পারেন না এবং অধিক সংখ্য লোকের দ্বারা বানাই। আমাদিগের যেমন বিচারপতি কলঙ্ক বণ জুরি হইয়াছে।

সম্রাতি হরিশ্চন্দ্রের সত্বে তাহার বর্ষীয় সত্বে হইতেছে। লতকরা সুকিয়ার দ্বারা কালীপ্রসন্ন সিংহের প্রদত্ত ভূমিতে “ইরিশ সমাজ” নামক একটি বাসী করিবেন। ইহাতে একটি পুস্তকালয় হইবে। এই বাসীতে লর্ড কানিংহামের প্রস্তরময়ী প্রতিমূর্তি ও প্রিন্স সাহেবের চিত্রপট থাকিবে। লর্ড কানিংহামের অন্তর্গত অনেক টাকা অধিরাটে সেই টাকা হইতে প্রিন্স সাহেবের এক প্রস্তরময়ী প্রতিমূর্তি না হয় কেন?

গবর্ণমেন্টে সাধারণ আকিস নির্ধারিত অন্য ৩৫,৫০০০ টাকা দিয়াছেন। হুত পোষ্ট আকিসের অন্য ৮ লক্ষ ও প্রেসিডেন্সি ও অন্য অন্য কালেক্টর অন্য ৬,৫০,০০০ লক্ষ টাকা দেওয়া হইয়াছে। রাইটসবিহীনতা বধার্থই জয় করা হইয়াছে।

তারতবর্ষীয় রেইলওয়ে কোম্পানি তৃতীয় জেনির শকট পূর্কোপেক্ষ উত্তম করিয়াছে। তুর্প জেনির শকট করিবারও উদ্বেগীকৃত দিতেছেন। এই সময়ে দ্বিতীয় জেনির শকটের তাড়া কীয়াইয়া দেওয়া কর্তব্য।

মকমলাইট সম্পাদক বলেন, লাল জ্যোতিঃ প্রদান বলিয়াছেন বাহারি বিদ্রোহের আশঙ্কা করিতেছেন তাহাদিগের শকা অগুনক। তিনি বলিয়াছেন “এই সকল ঘটনার সভাবনা হইলে আমি পূর্বে জানিতে পারিব।” হুনতান্বেষ যুদ্ধ ও বিদ্রোহের পূর্বে লাল গবর্ণমেন্টকে সতর্ক করিয়া দিয়াছিলেন।

১৩ই আষাঢ় রহস্যতিবার।

সম্রাতি ইংলণ্ড হইতে ১০০০ ব্যক্তি নির্ভী জিলাও বীপে উপনিবেশ করিবার নিমিত্ত প্রেরিত হইয়াছে। আর কয়েক সহস্র শাজ বাইবে। উক্ত দ্বীপে শীত হইলে অ্যামেরিয়া হইবে। উপনিবেশের বিষয় বিবরণ ই

অধিকার। কিন্তু আবেগের বিষয় এই, উপ-
নিবেশকাবিদিগের আগমনে আধিবাসিদের
কষ্ট আরও হয়, পরিশেষে কোম কোম
স্থলে তাহাদিগের সমূলে উন্মূলক হইয়া
থাকে।

কাশ্মীর নিবাসী জাকর নামক এক ব্যক্তি
উক্ত রেসম প্রবর্ত করিতেছে। তাহার কে-
বল বিস্তর শুটিপোকা ও তুতগাছ আছে।
রেসম চীন দেশীয় রেসম অপেক্ষা উৎকৃষ্ট।
বিবিদ্যার উন্নতিকারিণী সত্য তাহাকে
ইক্সপোর্টের বেতাল দিয়াছেন। চেষ্টা করি-
ল এদেশেও রেসম উত্তম রূপে জন্মিতে
পারে, কিন্তু দুঃখের বিষয় এই আবাদিগের
মীদারেরা কেবল “কর ৩ লটরাই বাস্ত,
বিবিদ্যার উন্নতি তাহাদিগের পক্ষে” পা-
তাদের কাঠি বহা হইয়াছে।

বৌদ্ধাই গেজেট তত্ত্ব্য বাণিজ্যের আ-
র প্রমাণ স্বরূপ করিয়াছেন বণিকদিগের
দীর সংখ্যার অনেক হ্রাস হইয়াছে বখ :—

পূর্বতন	বর্তমান
হিন্দুর	২
মুসলম নের	৩
হিন্দুর	১৫
পারসীর	২৬
গজাল দেশীয় হিন্দুরা বৌদ্ধাইয়ের হিন্দু- দিগের অনুকরণ না করেন কেন?	

পঞ্চাবের রেইনওয়েতে এডোর (সি-
য়ের) অগ্র ১৫ হওয়াতে গবর্ণমেন্ট মোটের
এডো দিয়াছেন। উক্ত রেইনওয়ে ১৮১০
অবধি অক্টোবর মাসের মধ্যে সম্পূর্ণ হইবে।
এদেশে কাঠের এডো আশ্রয়িত হইয়া থাকে।
অতএব মোটের এডো ব্যবহার করা মঙ্গল হয়
নাই।

ইংলণ্ডীয় এক আনি নিবাসী সংগঠে
লিখিত হইয়াছে, পূর্বে এদেশে বাণী নিষেধ
বিদ্যায় নিষেধ অনুশীলন ছিল। তৎকালে
কোন কোন বিভাগ অঙ্গ হইয়া আশ্রিত হইত।
মেকপ ছিল না। রাজ, নাপদার, ইত্যাদি
সকলের কাজ পৃথক পৃথক ছিল। তাহা
কর্তব্যের পূর্বতন অবস্থায় অনুসন্ধান করিলে
অনেক বিষয়েই উৎকর্ষ লাভ হইবে।
চিরপরাধীনতাই ক্রমে সকল গ্রাম করি-
য়াছে।

বিচারপতিগণে বাণিজ্যের মিয়োগের
রোগ প্রবল হইয়া উঠিয়াছে। ইংলিসমানের
একজন পত্রপ্রেরক বলেন, তৎকালে একপে
বে মৃত্যু রেকর্ড আদালত হইতেছে, বাণিজ্যের
ব্যতিরিক্ত অন্য ব্যক্তি তত্ত্ব্য জজ, উকীল
প্রভৃতি হইতে পারিষদ না। গবর্ণমেন্ট যদি
একপ প্রতিজ্ঞা করি হইয়া থাকেন, তবে কি
অন্য এদেশে একটি ব্যবস্থা বিদ্যালয় স্থাপিত
না হয়? প্রতিযোগিতা থাকিলে এদেশীয়দি-
গকে কোন বিষয়েই বঞ্চিত থাকিতে হইবে
না।

মুলতান নগর ক্রমশঃ একটি বৃহৎ বন্দর হ-
ইতেছে। রেশুন টাইমস্ পত্র তত্ত্ব্য বাণি-
জ্যের নিম্ন লিখিত হিসাব প্রকাশিত হইয়া-
ছে:—

আমদানী	৮২,৩৬,০০০
রপ্তানী	৭৮,১২,০০০

মোট ১,৬০,৪৮,০০০
ইহার মধ্যে কাঠ ও শস্যের রপ্তানী অধি-
ক হইতেছে।

ঠাকুর শিববল সিংহ কিয়দ্বিঘস পূর্বে অ-
যোগ্য একজন অবৈতনিক সহকারী কমিস-
নার হইয়াছিলেন। সম্প্রতি ভারতবর্ষীয় গব-
র্ণমেন্ট তাহাকে অস্থায়ী বোম করিয়া পদ
চ্যুত করিয়াছেন।

ভাস্কর টমসন নামক একজন কিরিলি ও
আমদান নামক একজন হিন্দু চিত্রিত চিত্রক-
কের পদার্থী হইয়া মাত্র ৮ হইতে টাল
তে গিয়াছিলেন, কিন্তু গবর্ণমেন্ট বিপরীত
অন্যায় আজ্ঞা দেওয়াতে তাঁহা ভারতবর্ষে
প্রত্যাহরণ করেন। মাত্র জের গবর্ণমেন্ট তাঁ-
হাদিগকে বিনা পরীক্ষার সম্মানিত হইতে সন্ম-
জ্ঞ করিয়াছেন। ইহা অনুগ্রহ নহে।

করাচির জেল দারোগা কিনারলি ৫০০
টাকা তহবিল করিতে তাহার বিচার হইয়া
দেয় প্রমাণ হয়। জরিয়া এই বলিয়া তাহা-
র প্রতি কদম্ব অনুসন্ধান করেন যে তাহার
প্রশংসিত কর্মচারীরা পায় হিসাব পত্র হুটি
কবিতেন না বলিয়া তিনি মোক সত্বর কবি-
তে পারেন নাই। তদ্বিধিত তাহার এক বৎসর
শ্রম পরিচয় সহ কারাগারের আদেশ হই-
য়াছে। তবে চোরেরাও সন্নিতে পারে আ-

বাদিগের মোক কি? যাহা অসাবধান ছিল
আমরা মোক সত্বর করিতে পারি নাই।
হিন্দুজরিগণ একথা বলিলে ঐহিক দীর
দল লাকাইয়া উঠিতেন।

হায়দরাবাদের নবাবের মন্ত্রী সালারজ-
উল নগরের পুলিশ, দেওয়ানী ও কোজদারী
আদালতের সংশোধন করিয়াছেন। তিনি
বিদ্যা শিক্ষার জন্য এক সভা নিযুক্ত, একটি
চিত্রশালিকা ও একটি চিকিৎসা বিদ্যালয় স্থা-
পন করিয়াছেন। সালারজ ও সিনকর রাও
কোন ইউরোপীয় রাজার মন্ত্রী হইলে টালি
রাও ও পামবটনের ন্যায় বিখ্যাত হইতে
পারিতেন।

বাতলায় মিউনিসিপাল আইন প্রচলিত
হইয়াছে। ২৪ পরগণার হাজিরা টি লিওনার্ড
কিলবরণ, সিমার ও কাম্পারো সাহেবেরা
ও বাবু রামগোপাল ঘোষ এক সভা স্বরূপ
নিয়োজিত হইয়াছেন।

আমরা ভারিহাছিনাম, লার্ড কানিংগ্রাম
উপাচার্যের প্রদত্ত নানপ্রধান প্রদেশের কর
সংগ্রহ বিষয়ক প্রস্তাবের পাইয়া কাহা হইত
ন। সম্প্রতি প্রকাশিত হইয়াছে তত্ত্ব্য গব-
র্ণর জেনরল প্রাইমার্সের নিকট ‘অগাধ্য
তার’ এক কৈফিয়াত চাহেন প্রাইমার্স
তত্ত্ব্য লিপিবদ্ধ ত্রিনি ভারতবর্ষীয় গব-
র্ণমেন্টে প্রতি প্রকাশ করিয়া কোন
পত্র লিখেন নাই। উক্ত গবর্ণমেন্টে তাহা
বাহা বলিয়াছেন তিনি তাহা বর্ণনা করেন।
নিশ্চয়তঃ ৭০ মিলে উক্ত গবর্ণমেন্টের নতুন
‘অনকা’ হইয়াছে তথায় তিনি ভারতবর্ষীয়
গবর্ণমেন্টের আজ্ঞা সাংখ্যানে প্রতিপাদন
করিয়াছেন। তথাপি বঙ্গদেশবাসীরা লার্ড
কানিংগ্রামকে এক প্রস্তাবময়ী প্রতিমূর্তি ও রতন
দিগের উচ্চ কর্তাকে এক চিত্র পট দিলেন।

কড়াইয়ের মুঠের জন্য শিক্ত হইয়া ৩,
৫০০০ টাকা লক হইয়াছে, এক একটি আ-
কবরী বোম্ব ৫ টাকায় বিক্রীত হইয়াছে।
পাতিয়ালায় রাজা ও কাশীর এক জন অধিক
অধিকাংশ প্রবৃত্তি করিয়াছেন।

লেপ্টেনেন্ট গবর্ণর অন্য ডাকপুত্রে গমন
করিয়াছেন।

রাজ্য টাউন সম্প্রদায়ক বলেন হায়দ-
রাবাদের নবাবের বাণীতে প্রতিজ্ঞা হইত স-

হয় টাকার বরক ব্যয় হয়। তথাপি ন্যায়ের শরীর শীতল থাকে না কেন?

কেন? অব ইতিহাস বলেন, জন রত্নের কী-নী হওয়া অন্যায় হয় নাই। এতদেশীয় সংবাদ পত্র সকলে উক্ত ব্যক্তির বিষয়ে বাহা লিখিত হয় তাহাতে উক্ত সম্পাদক লিখিত-রেন "উহার (এতদেশীয় সম্পাদকের) যথার্থ পৌতলিকের ন্যায় কার্য্য করিয়াছেন। এতদেশীয়দিগকে কথার কথার হত্যা করা প্রতিরানের কার্য্য। সেই হত্যাকারীকে রূচা ইহার চেষ্টা করাও প্রতিরানের অলঙ্কার। পু-স্তক প্রণেতা যদি এই ব্যাখ্যা হয়, তবে পৌ-তলিক ধর্ম্মই তারতবর্ষে থাকুক।

১৪ই আষাঢ় শুক্রবার।

গবর্ণমেণ্টে উক্ত পশ্চিমাবঙ্গে চল লক্ষ টাকার পটসা প্রেরণ করিয়াছেন।

আমরা শুনিলাম জুলাই মাসের আরম্ভে বর্জ্জমানে একটি ওকালতী পরীক্ষা হইবে।

শুনা গেল হারদরাবাদের নবাবকে হুতন রান দিবার সময়ে তদ্রত্ন রেনিভেন্টে কপেল ডেবিডসন ও ৪ জন আফিসর জুতা ত্যাগ করিয়া সত্য বাওরাতে গবর্ণমেণ্টে কর্ণেলকে তৎসমা করিয়াছেন। কেব জুতা পায় দিয়া না গেলে তরকারি খায়। জুতা পায় দিয়া গেলে লিই হইতে কাহার বা ন ম কাটা হয়। কি পক্ষপাত।

মাস্তাজ টাইমস সম্পাদক করানী উপনি-বেশে কুলি লইয়া খাইবার পুনর্কায় প্রতিবাদ করিয়াছেন। এ বিষয়ের অগ্রসর ন না হয় কেন

কোচন কুবিয়ার পত্র লিখিত হইয়াছে, টিগু পুরের রাজা খীর রাজ্য মধ্যে গবর্ণমেণ্টে র হুতন নোট এচলনের আত্মা দিয়াছেন

ইতিহাস বিকর্ষার বখ, বই বলিয়াছেন নি-শ্ব বহিষ্কৃত প্রাণ। (নন রেগুসেন) অতিজ-মন। কমচারিগণ ভাল হইলে কতক সুখ হয়, নচেৎ এই প্রণালী দ্বারা লোকের কেবল ক্ষতি। আমরা কয়েক মাস পূর্বে ইহার প্রতি-ক করিয়াছিলাম।

উক্তপত্রের একজন পত্রপ্রেরক ডাকার বি-বা বিসার্জের উদ্যোগী ও প্রতিজ্ঞাপত্র বা পরকাবীলিগের কার্য্য বিবরণ জানিতে ইচ্ছু

হইয়া জিজ্ঞাস করিয়াছেন, ইহার এত আ-ত্ম করিয়া শেনে কি করিলেন? এদেশের লোকেরা এককল বিষয়ে বা করিয়া থাকেন। কলার বন্ধ হইবার ভয় বড়।

১৫ই আষাঢ় শনিবার।

আমরা শুনিয়া অতিশয় দুঃখিত হইলাম অন্য বেলা দশটার সময় মাতলা রেইলওয়ের পিরালির পুলের কিয়দংশ ভগ্ন হইয়া কতক গুলি হত ও আহত হইয়াছে। শুনা বাইতেছে হতের সংখ্যা দশ ও আহতের সংখ্যা তুড়ি। পিরালির পুল মাতলা রেইলওয়ে কোম্পানি-কে বাতিবাস্ত করিয়া তুলিয়াছে।

পাঠকবর্গ ইউরোপীয় সবাচারে দেখিবেন কাবুলের যুদ্ধে হস্তার্পণ করা লাভ পামরুটনের অপ্রাপ্ত নহে।

বোম্বাইয়ের অতিশয় বড় হইয়াছে।

কিনিসের আলোহাবাদের সংবাদমাতা বলেন তথ্য কয়েক ব্যক্তি অলঙ্কারের লোভে একটি বাসকের প্রাণ বধ করিয়াছে। এই অ-নিষ্ট প্রায়ই ঘটয়া থাকে, তথাপি এ দেশীয়ে-রা! সন্তানকে অলঙ্কার পরাইতে ছাড়েন না।

উক্ত সংবাদমাতা বলেন তদ্রত্ন গবর্ণ-মেণ্টের ছাপাখানার ব্যয় সংক্ষেপ করা হই-তেছে। যে সকল লিখ প্রাক্কর প্রভৃতিকে গব-র্ণমেণ্টে কলিকাতা হইতে লইয়া যান, উহাদি-গেব কি উপায় হইবে?

টাইমস অব ইতিহাস পাব্লিশার সংবাদম-তা বলেন, গিরাত নামক এক জন ইকিনিস-র কেবল অল। রা রেইলওয়ে শবট চালাইতে চেন। করানীসরাট ইহা চর্চন করিয়া অতিশয় আশ্চর্য্যিত হইয়াছেন। এখানে সামান্য পণ রেইলওয়ের ন্যায় গাড়ি চালাইতে পারিলে চর্চন লাভের সবিশেষ দক্ষিণ প্রকাশ পায়।

উক্তপত্রের লণ্ডনস্থিত সংবাদমাতা বলে-ন ইংলণ্ডে একশে সপ্তাহ ১১০০০ বলাচি-র টেমিক হইয়াছে। তারতবর্ষের বলচিয়েরে-রা কেবল সাধারণ সজাগার মন্য করিলেন।

অন্য পূর্ববঙ্গালার রেইলওয়েতে পরী-কায় বাম্পীর শবট রাণাঘাট পর্যন্ত বাইবে। বাম্পীর শবট দুইখানি, প্রথম প্রেন্সি গাড়ি ও এক খানি প্রবোয় গাড়ি গিয়াছে। কয়েক জন ইকিনি-র আরোহী ইয়া দিয়াছেন।

পুনার পূর্বেই সাধারণ বাইকে পারিষদে।

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্ণমেণ্টের কলম-বিক্রীত হইতেছে:—

৪টাকার সিলা	৩১ ১ ৩১১০
৪টাকার কোম্পানির	৩৩ ১ ৩৩১০
৫টাকার ৫	১১২ ১ ১১২৫
৫। টাকার ৫	১১৩ ১ ১১৩৫

ভুক্তকরী পত্রকা হইতে উদ্ধৃত।

গত বারের শেষ।

ইউনাইটেড এন্ট্রি স্—সুস—সুস।

দক্ষিণ ভারত। প্রদেশের একটা সভাতে কোন সময়ে এই প্রস্তাব হইয়া ছিল যে, দান-দিকে উত্তম রূপে আহারাদি প্রদান করিয়া অল্প পরিমাণে কর্তব্য করাইলে অধিক লাভ হয় না; অতঃপর আহার দিয়া দিবা রাত খাটাইয়া সাত আট বৎসরের মধ্যে উহাদের আত্মশুদ্ধিকরিতা দিলে অধিক লাভ হয়। সত্য মহাশয়েরা নানা প্রকার তর্ক বিতর্ক করিয়া পরিশেষে এই স্থির করিলেন যে, শেবকরই অপেক্ষাকৃত লাভজনক সুতরাং এই করাই পরিগ্রহীত হইয়াছে।

যে সমস্ত প্রদেশে তিনি ও ভূলা লজার, সে-খানকার দাসেরা প্রায় এতাহ ১৫। ১৬ বর্ষী কর্তব্য করিয়া থাকে। এবং সমস্ত বিশেষে তাহা-দ্বিগকে সমস্ত দিন ও সমস্ত রাত্রি কর্তব্য করিতে হয়। কলতা সুনিয়ান তির অন্য কোন প্রদে-শেই সমস্তের নিয়ম নাই। অন্যান্য প্রদেশের এতুয়া ইচ্ছা করিলে বতকণ দান হুত হইয়া ভূমিতে পতিত না হয়, ততকণ পর্যন্ত কর্তব্য করাইতে পারেন। সমস্ত সুনিয়ান নিয়ম এই যে, দিবা রাত্রির মধ্যে দাসকে ২৪। বর্ষী বিপ্রান করিতে দিতে হইবে।

যদি দাসের কোন প্রকার জাতি হইল তবে তাহাকে ততানক হুত জোগ করিতে হয়। কখন বা হুত রক্ত থাকিয়া কুলাইয়া রাখা হয়; ক-খন বা মগ্ন করিয়া কশাঘাত করা হয়, কখন বা উপুড় করিয়া কেলিয়া হুত পদ নৌজে বাজিয়া দোষী ব্যক্তির পুত্র কি জাতা কর্তব্য আহত করা-য় হয়; কখন বা ছুরিকা দ্বারা অঙ্গ চিরিয়া দে-ওয়া, কখন বা পিষ্টক দ্বারা গুলি দিয়া কখন বা ক্রোধাবিষ্ট বিভাল দ্বারা গাভ্র কত বিকৃত-করা, কখন উত্তপ্ত সৌহ দ্বারা গাভ্রে দাগ দেও-রা, ইত্যাদি অভাবনীয় ততানক শাস্তি দানদিগ-কে জোগ করিতে হয়। অল্প প্রত্যাহ তত। দত্ত উৎ-পাতিত, কর্তব্য হইয়া, ইত্যাদি ব্যাপার ত সর্বদাই

যাত্রা থাকে। গত বতী জীলোকেরও একটা শান্তি হইতে তাণ পাইবার বিবরণ নাই। জরাজীর্ণ লোকের মধ্যে মধ্যে বেগুন বিজাপন প্রকাশিত হইয়া থাকে, তাহার দুই একটি উদ্ধৃত করা যাইতেছে। পাঠকবর্গ তদ্বারা জানিবার সুবিধার বিবরণ সহজেই অবগত হইতে পারিবেন।

“আমার দাসী নাম—পলায়ন করিয়াছে। উহার কর্ণ ও গলদেশে কশাঘাতের, বিলকণ চিহ্ন আছে।”

“আমার তিন জন দাস পলায়ন করিয়াছে, এক জনের পৃষ্ঠদেশে কশাঘাতের বিলকণ চিহ্ন আছে, ও ও চিবুক বিলকণ কত।”

“আমার তিন জন দাস পলায়ন করিয়াছে। এক জনের কর্ণ নাই, এক জনের একটি চক্ষু নাই ও এক জনের হস্ত তল।”

উক্ত কারোমিনার একটি নিয়ম এই যে, দাসকে লেখা পড়া শিখাইলে কি কোন পুস্তক পড়িতে দিলে তত ব্যক্তির দুই শত ডালার অর্থ দিয়া ও কাছির কারাবাস হইয়া থাকে।

দাসদিগের অবস্থার বিষয়সম্বন্ধে অধিক লিখিবার স্থান নাই; অতএব এখানে একটি অত্যন্ত সোচনীয় বিষয়ের বর্ণনা করিয়া দিতেছি।

—এক ব্যক্তি সুসিমানা প্রদেশে গিয়া সচা-
বাচর লোকে বেগুন করিয়া থাকে, অনেক জন করিয়া চান কর্ণে প্রস্তুত হইলেন, বৎসর ২ বে-
রুপ উপার্জন হইত, তৎকালে উক্তব্যবসার দের
পরিণাম করিতেন। তিনি তৎকালে আর একটি
সাধারণ প্রথা অবলম্বন করিলেন—একটি কাষি
বংশোদ্ভব জীলোকের সহিত প্রণয় করিলেন।
দেশীয় নিয়মভূমারে তৎকাল ব্যক্তির সহিত
কাষিবংশ জাত কন্যার বিবাহ হইতে পারে না,
অতরাং আইন অনুসারে সেই কামিনী তাঁহার
বিবাহিত পত্নী স্বরূপ হইল। কিন্তু ন্যায় ও
যুক্তি মার্গ স্থান্যে তিনি তাঁহার সহধর্মিণী হি-
লেন। এই জীলোকটি যুক্তিগত, প্রবল, জ্ঞান
সম্পন্ন ও ধার্মিক ছিলেন। তাঁহার দুই জনে
পনম স্থানে বিংশতি বৎসর কাল তত্ত্বাবধিত
করিলেন। এই জীলোকটি বর্ণে কৃষ্ণবর্ণ বেশ
সাজগড় ছিল কি না, সন্দেহ, কিন্তু তাহার কাষি
বংশ হইতে উদ্ভব, অতরাং তাঁহার সমস্ত সন্ত
তদ্বারা দাস-স্বত্ব নাই ও যুক্তি পাইতে পারে
না, এই শব্দ করিয়া জীলোকটি স্বাধীনতা প্রা-
প্তির জন্য স্বামীকে সর্বত্র অগ্ররোধ করিতেন।
স্বামী আজি কাল করিয়া উদাস করিতেন।
অবশেষে তিনি কন্যা রাখিয়া দুই জনেই
মৃত্যু হইল। কন্যা তিনটি পুত্র সন্তান হইল।

একটির বয়স ১৫, একটির ১৭ ও একটির ১৮ বৎ-
সর। মৃত ব্যক্তির জাতা উহার দের পৈতৃক বিধ-
য়ের বন্দোবস্ত করিতে আইসেন। তিনি জাত-
কন্যাদির বিয়া যুক্তি দেখিয়া অত্যন্ত সন্তো-
ষ হইলেন এবং অতিরিক্ত কাল মধ্যে তাহাদিগকে
যথোপযুক্ত সমাজে লইয়া যাইবেন, এমন আশা
করিলেন। মৃত ব্যক্তির অত্যাচার ছিল। উক্ত
দিগের নিকট মৃত অধমণের পাবিত্র্য বিষয়ের
কর্ত্ত দিবার কীতি ছিল; অতরাং তিনি তাহাই
করিলেন। কোন উত্তর আনিয়া কহিল যে,
তিন সমুদায় বিষয়ের উল্লেখ করেন না—তিনি
নি দাসের প্রকৃত সংখ্যা প্রদান করেন নাই,
তাঁহার জাতকন্যাদির বান দিয়াছেন। এই কথা
শুনিয়া তিনি ব্রাহ্মত্বের ন্যায় স্তব্ধ হইয়া রহি-
লেন। অনন্তর তিনি সমুদায় উত্তরবর্ণের দ্বায়ে
গিয়া বিনীত ভাবে কর্ণা উল্লেখ করিবার চেষ্টা
করিতে লাগিলেন, কিন্তু সেই পাবিত্র্য স্তব্ধ ব্য-
ক্তির কহিল “আমরা এমন বহু মূল্য প্রথা
হাফিয়া দিতে পারি না।” তখন তিনি জাত-
কন্যা ওলির পরিবর্তে তাঁহার পনমের সমুদায়
সম্পত্তি দিতে চাহিলেন এবং বলিলেন “হা-
দিগ কন্যার কবিবার জন্য লোকে যত মূল্য
দিতে চাহিলে, আমি তদগুণে অধিক দিতে-
ছি আপনারা এই ওলিকে পরিভাগ করুন।”
তাঁহারা উত্তর করিল, “উহারা দাসত্ব তিন
জন্য কর্ণ বিশেষের উপযুক্ত, তাহাতে নিয়ো-
জিত করিলে বহুতর লাভ হইবে।” তখন
তিনি হতাশ হইয়া মনে মনে বিবেচনা করি-
লেন যে তাহাদিগকে অবস্থিত করা অপেক্ষা উহা-
দিগকে বিনাশ করাই ভাল। অবশেষে মাতৃক-
ন্যাদির অধুনা কি আছে তাহা তিনি হঠাৎ
তাঁহাদের সমক্ষে ব্যক্ত করিলেন। শুনিয়া
তাঁহাদের যে কি হইল তাহা জানি কি বলিব।
তিনি বলিয়াছেন যে কাশাকে শোক বন্ধে, কা-
শাকে আর্জনাৎ বলে তি পুর্বে তিনি তাহা
অবগতই ছিলেন না। তাঁহারা সেই অবধি আ-
হার নিজে পরিভাগ করিল এবং বিক্রয়ের
সময় পর্যন্ত এক হুতু ও পরস্পর চক্র অস্তরা-
ল হইল না। অবশেষে দুই অর্থলিয়স বিপ-
ণিতে তাঁহারা অত্যন্ত মূল্য অবস্থায় উদ্দেশ্য
সাধনাতে জীত হইয়াছে, এখন তাঁহারা কো-
থায় কেহই জানে না, কিন্তু এক দিন অবশ্যই
তাঁহারা পরস্পর সমীপে উপস্থিত হইয়া এই
পদ্যের শোণার সাক্ষ্য দিবে।”

যে যে প্রদেশে দাসব্যবসার প্রচলিত
আছে ও যে যে প্রদেশে প্রচলিত নাই তাহা

পুর্বেই উক্ত হইয়াছে। এক্ষণে সংক্ষেপে এই
বলা যাইতেছে যে উক্ত প্রদেশে দাসব্যবসার চ-
লিত নাই; দক্ষিণ প্রদেশে আছে। স্বাধীন প্রদেশ-
নে (উত্তর প্রদেশ) বসতি প্রায় ১২ ০৩৬১৭৩, দাস
প্রদেশের বসতি স্বাধীন ৮ ০৬২ ৪৭০, দাস ৩,২২
২,৩৫৪ জনদ্বারা ১২,০৬২,৩২৩। উক্ত প্রদেশ
পরিমাণকল ৬১২,৫২৭ বর্গ মাইল অর্থাৎ ইংল-
ও ওয়াশ একত্রিত হইলে মত ৮২৩৩৩ বর্গ
মাইল। এই ক.ণ এই দুই প্রদেশ পৃথক হইয়া পরস্পর
যুদ্ধ করিতেছে, উত্তর প্রদেশ প্রেসিডেন্ট লিন্‌ক-
লন, দক্ষিণ প্রদেশ প্রেসিডেন্ট ড্রেজিস। যুদ্ধের
কাণ নিম্নে প্রদর্শিত হইতেছে।

যদি এক দেশের মধ্যে পরস্পর তিন গণাধিক
দুই সম্প্রদায় থাকে তাহা হইলে সে রাজ্যে
কখনই স্বাধীনতা থাকে না। দক্ষিণ দেশের লোক
একজন দাসব্যবসার অগ্রবর্ত্ত যে এই প্রকার বিপ-
ন্নত কণ শুনা যায় অনন্য প্রমাণ হইয়া
উঠে। যদি এই প্রমাণটি ইংল্যান্ডে তাহার লিখ-
ত হইত আর যদ যতনক্রমে প্রমাণসম্বন্ধে
দক্ষিণ প্রদেশে উপস্থিত হইতেন তবে তাঁহার প্রাণ
সংসার হইত সন্দেহ নাই। দাস ব্যবসায়ের বি-
ক্রমে এক খানি প্রমাণ প্রকাশ করিতে চেষ্টা
যে দুর্গতি হইয়াছিল এখানে তাহা অবগত করা
কর্য। যে প্রমাণ একজন দাসব্যবসায়ের লোক, তিনি
অনেক বিবেচনা করিয়া দিব করিয়া হলেন যে
দাসব্যবসায় প্রচলিত থাকিতে দক্ষিণ প্রদেশের
জন্য অবনতি ঘটতেছে। তিনি উক্তরূপে প্র-
মাণ দর্শাইয়া ছিলেন প্রথম দক্ষিণ প্রদেশ
লোক। কৃত উক্ত অবস্থায় অবস্থিত ছিল, কিন্তু
কালসম্বন্ধে উক্ত প্রদেশে জীলোক হইয়াছে
আর দাস ব্যবসায় প্রচলিত থাকিতে দক্ষিণ প্রদেশ
জন্য জীলোক হইতেছে। দাস ব্যবসায়ের বিরুদ্ধে
প্রমাণ প্রচার করিতে দক্ষিণ প্রদেশে লোকেরা যে-
রূপে মহাসত্বা মধ্যেই অপমান করিয়া ছে-
লেন। যদি উক্ত দাসব্যবসায়ের বিরুদ্ধে কোন কথা
হে তবে তাহাকে এই বলা হয় তুমি একজন
দক্ষিণে গমন করিলে আর যথ। বঁচাইয়া কি
রিয়া আনিতে পারিবে না। এখানে উক্ত প্রমাণ
র লোকদিগের দাসব্যবসায়ের প্রতি আশঙ্কা
জন্য বিবেচনা। এখন এতী মৃত্যু প্রদেশে
মৃত্যু হয় তখন সেই মৃত্যু প্রদেশে দাসব্যবসায়
প্রচলিত হইবে কি না তাহা জানি। বিবরণ
নবোপ উপস্থিত হইয়া উঠে। মিত্র
মৃত্যু করিবার সময় বিবাদের ক্ষণাত
সেই অবধি দুই পক্ষ যোঁরতর বিবাদ হইতে-
ছিল। কখন বা এক পক্ষের অর্থ কখন বা

সোমপ্রকাশ

“স্বপ্নলীলা প্রজ্ঞানিহিনাং পার্থিবঃ স্বরস্বতী যুতিমহতী ন দাযমাং ।

নং. ৩৮।
১৩৩১ খ্রিঃ

সন ১২৬২। ২৪ জ্যৈষ্ঠ। ইং ১৮৬২। ৭ জুন।

দৈনিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক আশ্রয় ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

দামি - ডেপুটি কমিশনার অফ নরমাল
নামক পুস্তকের মিনি-বুক (অর্ধসহি) প্রস্তুত
করিয়া বিক্রয় করিয়াছি। মূল্য ১০। আনা।
সাহিত্য প্রয়োজন হইবে, তিনি আমার নিকট
গমন করিলে তাহা প্রেসিডেন্সি প্রেসে মূল্য
পাঠ্যক্রম পাঠ্যক্রম
বর্তমানপুর কলেজ।
৭ টি জা. ১৩ ১২৬২।

ক্রিষ্টোলে কল্যাণ দে

সোমপ্রকাশ।

১৪৪ আশ্বিন সোমবার।

গঙ্গার জুরি ও নরবলি।

কয়েক সপ্তাহ অবধি জঙ্গলীর নর
বলি প্রসঙ্গ লইয়া ভুলুল আন্দোলন হই
তেছে। ইংরাজী সম্পাদকদিগের অনে
কে বাস্তবিক বোধ করিয়া ইহাতে প্রত্যয়
করিয়াছেন। তৎসংক্রান্ত মকদ্দমা যাহারা
জুরি হইয়াছিলেন, তাহাদিগের প্রতি সোবা
রোপ করা হইয়াছে। কিন্তু বাস্তবিক এই
ঘটনা হইবার এবং জুরির বিচারে দোষ
থাকবার সম্ভাবনা আছে কিনা, তাহার বি
বেচনা করিয়া লোকের মনে যে অবধাভূত
সংস্কার জন্মিয়াছে, তাহার দূরীকরণ নিত্যা
ন্ত আবশ্যক। জঙ্গলী কলিকাতার অধিক
তর দূরবর্তী নহে। উহা গঙ্গারোত্তরে চন্দ্র
উপরে রহিয়াছে বলিলে হয়। বিশেষতঃ
ঠগী মাজিষ্ট্রেট ও ডাকঘর কমিসনার
জঙ্গলী ও বর্ধমান প্রভৃতিতে যে প্রত্যাপ প্র

কাশ করিয়াছেন, তাহা তত্বতা লোকেরা
আকিও বিশ্বাস কর নাই, বিশ্বাস হইবার
সম্ভাবনাও নাই। একপাশে আলি
কালি নরবলি দিবার ইচ্ছা ক্রমক্রমেও
কি কাহার মনের মধ্যে উদ্ভিত হওয়া
সম্ভাবিত হয়? বাহা হউক, একপাশে উহার
আনুপূর্বিক বৃত্তান্ত পাঠকগণের গোচর
করা হইতেছে পাঠকগণ! উহার তথ্য
তথ্য নির্ণয় করিবেন।

জাহানবাদের রামেশ্বরায় নামে এক
জন সন্তোষ বাস করে। উহার ক্রিষ্ণ ভূ
সম্পত্তি আছে। তুলক (যেমন আমা
দিগের কামীনার ও তালুকদারগণের স
চরাচর হইয়া থাকে) প্রতিবাসিগণের
সহিত তাহার সর্বদা বিবাদ বিসম্বাদ হইয়া
থাকে। সে নিজেও ভাল মানুষ নহে।
কয়েকবার তাহার নামে নালীশ হইয়াছিল,
তাহার দ্বারা গুরুতর পাপ জিয়ার অনুষ্ঠান
অসম্ভাবিত নয়। কিছু দিন হইল, কয়েক
ব্যক্তি একপদ্রামণী হইয়া বৈরসাধন ক
রিবার উদ্দেশে জঙ্গলীর ডাকঘর কমি
সনার নিকটে এই বলিয়া নালীশ করে যে
রামেশ্বর একটি বিংশতিবর্ষীয় যুবককে
আপনার প্রতিষ্ঠিত কালীর নিকটে নরবলি
দিয়া তাহার দেহ অর্ঘ্য দান করিয়া নিক্ষে
প করিয়াছে। কমিসনার তৎক্ষণাৎ তাহা
র বাটতে যাইয়া তাহাকে ধৃত করিয়া
সেসিরমে সন্দর্শন করেন। এক্ষণে ইহার
উল্লেখ করা আবশ্যক যে তাহার কালীর

নিকটে যুবকের হিরণ্য মস্তক গুটি হইয়া। রামে
শ্বরকে হুস্তরিয়া বলিয়া পূর্বে সন্তোষ সংস্কা
র জন্মিয়াছিল; একপাশে এই অপরাধ অবধ
ও তাহার দেহী গৃহে হিরণ্য মস্তক সন্দর্শন করিয়া
তাহাকে অপরাধী বলিয়া প্রমাণ করিল,
এবং জুরির নিকটে প্রেরণকারের অনুকূল
মকদ্দমার অবস্থা বর্ণন করিলেন।

রামেশ্বরের বিপক্ষে যাহারা সাক্ষ্য
দিতে আইসে, তন্মধ্যে যে ব্যক্তি প্রধান,
সে বলিল, এই জৈষ্ঠ অমাবস্যা আর
বাতি ৮।০ ঘটিকার সময়ে রামেশ্বর হির
শতিবর্ষীয় একটি যুবককে নরবলি দিয়াছে।
জুরিরা জিজ্ঞাসা করিলেন “কুমিলি কল্যা
রে জানিলে?” সাক্ষী বলিল “আমি ঘটকে
দর্শন করিয়াছি।” সে আরও কুমিলি, য
আমি দেখিয়াছি (১২০ হাত) দূরে সন্তোষ
হিলাস, দেখিয়াছি রামেশ্বর এক হস্তে যুব
ককে ধরিয়া অন্য হস্তে তাহার শিরশ্চ্যবন
করিয়াছে। কিন্তু জুরিরা পলিকা আমা
ইয়া দেখিলেন এই জৈষ্ঠ অমাবস্যা নহে।
অপর, অমাবস্যার রাত্রি, ষোড়শ অঙ্ক
কার, ১২০ হাত দূর হইতে সন্তোষ নিরী
ক্ষণ করা কি সম্ভাবিত হয়? সাক্ষী বলে,
রামেশ্বরের নিকটে প্রদীপ ছিল না।
বিশেষতঃ বিংশতি বর্ষীয় যুবককে রামেশ্বর
এক হস্তে ধরিয়া অন্য হস্তে বলি দিল! সে
মোলমোল অথবা আশ্রয়কার চেষ্টা করিল
না! ইহা কখন সম্ভাবিত হয় না। অপর, বলী
কৃত ব্যক্তির মস্তক গোলাকারে ও ঝকুয়ে

খার দিন দুটো হয়। এক হাতে ধরিয়া অন্য হাতে ভেদন করিলে সেখান হইবার সম্ভাবনা নাই। পক্ষান্তরে রামেশ্বরের পক্ষীয় সাক্ষীগণ বাল ওই জ্যেষ্ঠ সজ্জার সম্মত হইয়া আসে হর; সে খানী আনাইয়া অপনার অপর একটি সন্তান লইয়া নিজ গৃহে বসিয়া ছিল। তিন জন সাধনী এই কর করিয়াছে। তাহাদিগের জবানবন্দির কোন বৈলক্ষণ্য হয় নাই।

একপ হলে কোন জুরি এই ব্যক্তিকে অপরাধী বলিতে পারেন? জুরির কর্তব্য কর্ম কি? ইউরোপীয় প্রধান প্রধান ব্যবস্থাপকেরা বলিবাছেন "জুরির সাক্ষীগণের জবানবন্দির অনুসারে আশ্রয় প্রকাশ করিবে"। অপরাধী ব্যক্তি অপরাধ হইলে প্রকারে সপ্রমাণ হইতে পারে, এক, ধর্ম্মনীতি অনুসারে; দ্বিতীয়, আটমের অনুসারে। আইনের অনুসারে যে ব্যক্তির অপরাধ সপ্রমাণ না হয়, বিচারপতি কখন তাহার প্রাণ দণ্ড করিতে পারেন না! যদি এই নিয়ম উল্লংঘন, তাহা হইলে জগন্নির জুরিদিগের কি দোষ আছে? তাহারা কি এক ব্যক্তির পূর্ব কথার জুটরিয়ায় কথা শুনিয়া সত্যাকর প্রমাণ ব্যতিরেকে তাহার প্রাণ দণ্ডের বিধান যেমত দিতে পারেন? অর্থাৎ তাহাদিগের নিকটে রামেশ্বরের দোষ প্রমাণ করিতে সমর্থ হইয়াছে বলা হইয়াছে রামেশ্বরের কালীর নিকটে তিন মন্তক পাও খা যায়। তাহাও প্রমাণ কি? তাহার দ্বিতীয় মন্তক লইয়া তাহার বাকী নিকটে রাখিতে পারে না। সে সেদিক দিয়া ছিট। এ হলে ইহাও বিবেচনা করা আবশ্যিক। রামেশ্বরের বাকী গোপনে নরবলি দিয়াছে বলিয়া কথা হইতেছে, তখন তাহা প্রমাণ হইলে বড়োত্তম হইতে হইবে তাহা। সে কথা ছিল সন্দেহ নাই। যাহার একপ পক্ষীয় ছিল সে যে নরবলি দিয়া সেই দ্বিতীয় মন্তক কালীর নিকটে রাখিয়াছিল, অমো আশীর্বাদ করিয়াছে সেখান গেল, ইহা কোন কমেই

সম্ভাবিত নহে। এতদ্বারা স্পষ্ট প্রমাণ হইতেছে, তাহার বিপক্ষগণ হইতে তাহার অজ্ঞাতসারে এই কাণ্ড ঘটাইয়াছে সন্দেহ নাই। যে ব্যক্তি গোপনে মনুষ্য ইত্যাকপ রক্ত কাণ্ড করিতে পারিল, সে কি একটি মন্তক গোপন করিতে পারিত না বরিসালে একবার এই কাপ এক ব্যক্তির প্রাণ দণ্ড হয়। সে জমীদারকে ডাক করিবার জন্য স্বীয় কালীর শিরশ্ছেদন করিয়া হত্যাকারী বলিয়া ভূম্যধিকারীর নামে অপরাধ দেয়। আমরা শুনিয়াছি যুবকের স্বাভাবিক পীড়ার প্রস্তাব হয়, তৎপরে রামেশ্বরের বিপক্ষেরা তাহার মন্তক ছেদন করিয়া উল্লিখিত সাধনী বন্দিরে লইয়া রাখে। পীড়িত ব্যক্তির শব্দ শইয়া বিপক্ষকে ডাক করিবার কথা পূর্বে অনেক শুনা গিয়াছে। আর দিন বৎসর হইল চব্বিশ পরগণার মধ্যে এই রূপ একটি ঘটনা হয়। যাহারা জুরি হন ও অপনাদিগের কর্তব্য কর্ম বুঝেন, তাহারা ইহা জানিতে পারেন জুরির কার্য কেমন গুরুতর। বিচারপতি বসিতেছেন বলিবার যে তাহারা এক ব্যক্তির প্রাণ দণ্ডের আজ্ঞা দিবেন, একথা বলিবেন পরমেশ্বরের নিকটে কোন ব্যক্তি তাহাদিগের জন্য দায়ী হইবেন? পরিশেষে আমরা দিগের বক্তব্য এই যে একপ হলে জুরি দিগকে জগের বটবাক্য কথা অন্যায় সন্দেহ নাই। জুরিদিগেরও কর্তব্য তাহা। এবিষয়ের প্রতিবাদ করেন।

প্রধানতম বিচারালয়।

গত সোমবার অবধি সুপ্রীম ও সদর আদালতের একতা হইয়াছে। এই দিবসে বহিঃস্থিত গেজেট দ্বারা এই প্রধানতম বিচারালয় স্থাপন বার্তা সর্বত্র প্রচারিত হইয়াছে। মঙ্গলবার ১৪ জন বিচারপতি গণসম্মত হইয়া গিয়া যথাবিধি শপথ করিয়াছেন। বাবুরমাওসাদ রায় পীড়া বশতঃ প্রথমাবধি এই বিচারালয়ে প্রবেশ করি

তে পারিলেন না। আমরা প্রাথমিক লোকে নিকটে প্রবেশ করিয়াছি, ইংলণ্ডেরী এতদেশীয় বিচারপতি নিয়োগের তার গবর্নর জেনারেলের হস্তে দিয়াছেন। সর্বশেষ ১৫ জন বিচারপতি নিযুক্ত হইবেন। ইংলণ্ডেরীর যত দিন ইচ্ছা, বিচারপতিরা নিজ নিজ পদে প্রতিষ্ঠিত থাকিবেন।

যে নিয়মে বিচারালয় স্থাপিত হইবে এবং যে সকল ব্যক্তি উদ্ভেদ ও কালতি করিতে পারিবেন, তাহা আমরা পূর্বে লিখিয়াছি। আপাততঃ সদর ও সুপ্রিমকোর্টে এবং দুই বাটা আদালত, সেই উভয় স্থানেই বিচারপতিরা বিচারকার্য্য নির্বাহ করিবেন। কলিকাতার ও মকম্বলের ইউরোপীয় দিগের বিচার পূর্বের ন্যায় একজনও সুপ্রিমকোর্টে হইবে। যে সকল কাজ বাকী পাড়া যাহা সদর আদালত আপাততঃ তাহার নিজা ও আপীল প্রবেশ করিবেন। যত দিন একটি প্রথম বাটা প্রস্তুত না হয়, তত দিন এই কাপ কার্য্য চলিবে। ইউরোপীয় ও এতদেশীয় উভয় জাতিতেই এই ভাব ধি একবিধ দেওয়ানী ও কোজদারী আটমের অধীনস্থ হইয়াছে হইবে। এই সপ্ত উভয় জাতিতে এক বিচারালয়ের অধীনস্থ করা হইলেই ভাল হইত। এই বিষয়ের সুসিদ্ধি হেতু আমাদিগকে কাল প্রতীক্ষা করিতে হইবে সন্দেহ নাই। প্রধানতম বিচারালয় ইংলণ্ডেরী আটম অনুসারে দুই মাসব্যয়সিদিগের বিবাহ ও সম্পত্তির পরস্পরকে পরিত্যাগ প্রভৃতি বিষয়ের বিচারাদি করিবেন। যে সকল কোজদারী মকদমা প্রথমাবধি এই বিচারালয়ে হইবে, তাহার আর আপীল হইবে না। অধম বিচারালয়ে দণ্ড হইলেও যে মকদমা প্রথমতম বিচারালয়ের প্রায় হইবে, ইংলণ্ডেরীর প্রিবি কৌন্সিলে তাহার আপীল চলিবে। দেওয়ানী বিবরে যে হলে ১০,০০০ বশ হাজারের অধিক টাকার মকদমা হইবে, সে হলে আপীল চলিবে।

ব'র।মণ্ডের শাখা ভারতবর্ষীয় স'হ.
বরীনের মাস্তুল। নিবারণের চেষ্টায় আ
ছেন। তাঁহারারা যত দূর হইতে পারে হ'
হার। তাহা করিয়াছেন! কিন্তু ইহার বেগ
নিবারণে সমর্থ হন নাই। তাঁ'হার। এক
প্লুকার হস্তাশ হইয়া গবর্ণমেণ্টের নিকটে
আবেদন করিয়াছেন। লেপটেনন্ট গবর্ণর
আবেদন পাইয়া এবিষয়ে কমিসনরের রি
পোর্ট চাহিয়াছেন। গবর্ণমেণ্ট যে আজ্ঞা
দিবেন, তাহিবিয়ে সংশয় নাই; কিন্তু যত
লম্ব হইতেছে, ততই লোকের ব'ষ্ট অসহ
হইতেছে। এক্ষণে কমিসনর নিজের ঘা'ই
সংগ্রহ করুন। নু'স'হ' করিয়া এবিষয়ে সিদ্ধ

[illegible]

চারি বৎসরের নিমিত্ত এবং প্রিয়নাথ-গোষ্ঠীসদস্য
ও ইন্দ্রনাথ চক্রবর্তী ইহারই জমিদার হইলে
এক বৎসরের নিমিত্ত নিমিত্ত হইল। তৎপরে
গত ১১ বৈশাখ অবধি কেবল প্রিয়নাথ-
গোষ্ঠী ও বৈষ্ণবগোষ্ঠী ইহারাই হইত
হইত পাইবেন।

দক্ষিণ পশ্চিম বিভাগের বিদ্যালয় সমূহের
তত্ত্বাবধায়ক জি.বুজ বেনারি উদ্ভেদ্য মহোদয় আ-
মাদের এই বিদ্যালয়ের ছাত্রদের উৎসাহ
বর্দ্ধনার্থ এই বিদ্যালয়ের অধ্যাপক হইয়া
সকল শিক্ষার্থীকে মেডিকেল কলেজের বাসিন্দা
রূপে মানিক ৫ পাঠ টীকা করিয়া ছাত্র হইত
বিদ্যার অধ্যয়ন করিয়াছেন।

আপনার নিকট বিদ্যালয় সংক্রান্ত আর
সকল কথা নিবেদন করিয়াছি, আর একটি নি-
বেদন করিলেই হয়। আপনার অনেক
স্বপ্ন থাকিতে পারে যে বালা বিবাহের প্রতি
অনিষ্টকর প্রথা বিবেচনা করিয়া এখানকার
ইংরাজি সংস্কৃত বিদ্যালয়ে এই এক নিয়ম
চাওয়া যায় যে এখানে অধ্যয়ন করিতে ক-
রিতে বাহ্যিক বিবাহ হইবে, উত্তর দ্বারা কর্তন
করা হইবেক। সেই রূপে বাহ্যিক বিবাহ কাটা
হইবেক, নতুবা টীকা করিয়া না। কিন্তু তাহাকে
আর পুনর্বার ভাবিত করা হইবেক না। তাহা-
তেই অনেক এই নিয়ম বশত স্বীয় পুত্রের
বিবাহ হইবে। ইহা অত্যন্ত আশ্চর্যের
বিষয়। কিন্তু চারিদিক দলে ইহার ব্যতিক্রম ঘটি-
যাচ্ছে। সেজন্য হওয়াতে দুঃখিত হইয়াছি। এক্ষণে
রূপে পুত্রের কিসে বহুল হয় আমরা কি তাহা
এখন পণ্ডিত করি না? আমরা কি একবারও
চলু উদ্যোগ করিয়া দেখি না? বালাবিবাহ হ-
ইতে বালা সেখানে কত লভ্য অনিষ্ট হইতেছে।
আমরা কি তিন দেশীয় লোকদিগের নিকট
চিরকাল এই জন্য অন্য অন্য কারণের সহিত
উল্লেখ্যমান পাঠ্য পুস্তক ক্রয় করিয়া
সকলেই বালা বিবাহের উপর কোন দৃষ্টি-
তে দর্শন করিয়া এই সমস্যা সম্বন্ধে
কইতে এক বাবে ভিত্তি স্থাপন করি। চারি
জন ছাত্রের বিবাহ হওয়াতে অল্প অল্প
রাহি আশ্রয়স্থল প্রাপ্ত হইল। তাহা
কিন্তু পুনর্বার বিদ্যালয়ে নিকট ১২৩
১২৩, ১২৩, ১২৩, ১২৩, ১২৩, ১২৩, ১২৩, ১২৩
কিছু হইয়াছে।

ছাত্রগণ তোমাদের নিকট আসিয়া ১৩
কিছুই বক্তব্য নাই। তোমরা যেমন
অন্য অন্য সৎকারে বিদ্যালয় করিতেছ, সে-
কিছুতে থাক এবং ভুলবিসংসার দূরীকরণ

পাঠ্য ও রচনামূলক গ্রন্থাদি খানাদল
কলমের সমাবেশে পুনর্বার উদ্ধৃত কর
এবং আপনাদিগকে দৃষ্টান্ত দ্বারা পণ্ডিত কর।
বিদ্যালয়ের প্রথম সেশনে এই প্রণয়ন
এবং উদ্ধৃত প্রকরণে আরোহণ করিয়া কৃত-
বইবার অনেক দিল্লি আছে যেমন সর্বদা এই
কথাটি তোমাদের মনে আগ্রহ থাকে। ভাল
শিক্ষিত বলিয়া একজন মহাশয়ের ৩ জন
ব্যক্তি প্রণয়ন করিলে যেন শিখিত হইত
আপনার প্রকৃত আর্থ বিলুপ্ত হইত না। তা-
মাত্রই হই। অল্প প্রণয়ন বিষয় নচেৎ
কি নিম্ন তোমাদের অধ্যাপন। কার্য নির্বাহ
করিয়াছেন তিনিই তোমাদের আবেশ গুণের
কুসংস্কার করিয়াছেন এবং তোমাদের সফ-
লিতে সন্দেহ হইয়াছেন। তোমাদের ইহা অল্প
সেই প্রণয়ন বিষয় নচেৎ সে প্রণয়ন তোমাদের
কি নিম্ন শিক্ষক হইয়াছেন তিনি অতি উপযুক্ত
সাধুশীল ও সতর্ক।

প্রথম প্রণয়ন ছাত্রগণ তোমাদের নিকট
আমরা এখন এই মাত্র লক্ষ্য, দেখিও যেন
আমরা অপ্রণয়ন বাসে বিদ্যালয়ের
পত্রিকা প্রণয়িত হইত এবং আমায় লক্ষ্য
দয় আশা করি। ছাত্রগণ করিও
না। অন্যতে তোমাদের অধ্যয়ন করিতে হই
বে না। তোমাদের প্রধান শিক্ষক সমুদয়
কলমের এক এক করিয়া সমীচীন বিদ্যা
কুমির প্রবেশ পণ লক্ষ্যগত পণ্ডিত হও। জান
বান হইলেই সত্য সত্য তোমাদের আশ্রয়স্থল এবং
অন্য সকলের মঙ্গলকামী হইবে।

সভাপতি মহাশয় ও সমস্ত সভাপণ্ডিত
আপনাদের নিকট এই প্রার্থনা যে আপনাব
এই সভাপণ্ডিত উপর রেখ রাখিবেন, তাহা
ইহা হইয়া পণ্ডিত কার্যিক সর্গশক্তিমানের প্র-
সাদে প্রীতি হইতে থাকিবে।

রিপোর্ট পাঠ সমাপ্ত হইলে পর বিদ্যালয়
সময়ের প্রথম শিক্ষক জি.বুজ কলম
তত্ত্বাবধায়ক বি. এ. সভাপতি প্রকৃতির অত্যা-
ধিকারী পত্রিকার সময় ১৫ সকল প্রণয়
প্রণয় হইয়াছিল তদ্ব্যতীত একজন গুলি করেক
জন ছাত্রকে শিক্ষা করিলেন ও তাহারা
কি নিম্ন উদ্ধৃত পত্রিকা হইতে পাঠ
করিল। পরিশেষে কলমের বাবু ছাত্রদি-
গকে কলমগুলি সমুদয় দিলেন, সভা-
পতি মহাশয় এবং অন্য অন্য বক্তারা
প্রশংসাবাক্যে আশীর্বাদ করিতে লাগিলেন।

ছাত্রেরা পারিভোজিক পুস্তক গ্রন্থ হইল
পরে সভা ভঙ্গ হইল।

বিবিধ সংবাদ :

১১ই আশ্বিন সোমবার।

বীট নামক আর এক ব্যক্তি ৮—কো-
ম্পানির সাধারণ সম্পত্তি উদ্ধরণ করিতে
কোম্পানি তাহাকে কর্তৃক হইতে বহিষ্কৃত করি-
য়াছেন। রাজ্যের যত চোর ও অসৎ লোক
গিয়া কি তা কোম্পানির দলে প্রবেশ হইয়াছে?

গত বৎসর বঙ্গদেশে সর্বমুখ ৪৬১২ অ-
ন্য গো বীজেরীকা দেওয়ান হয়, ইহার মধ্যে
৩৪৭১ জনের চিকার কল দখল হইয়াছে। এক্ষণে
১২ জন চিকার আছেন।

আমরা শুনিয়া সবিশেষ দুঃখিত হইলাম
রাজ্যসভাব্যবস্থার পীড়ার উপশম না হইয়া
আরো বৃদ্ধি হইয়াছে তিনি এক্ষণে চোরদি-
গে অবস্থিত করিতেছেন। তাহার প্রধান-
তন বিচারালয়ে নিয়োগের সম্মত আসিয়াছে।
হবে বিবাহ সম্পন্ন নাই।

কিরিটন পূর্বে প্রধান সেনাপতি আ-
জা করিয়াছিলেন, ওলাউঠা হইলে সে স্থান
হইতে সেনাদিগকে অন্যস্থানে প্রেরণ করা হ-
ইবে। কিন্তু সম্প্রতি আদেশ হইয়াছে দুর্গ অ-
প্রাণ্য প্রকৃতি রক্ষক সৈনিকদিগের উপরে এ
আজ্ঞা বহিষ্কৃত।

উ নিম্নমান সম্প্রদায় বলেন, বাতালার
কয়েক ব্যক্তি এপ্রতি হইতে কল্যাণ উৎপাদন
করিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন। তদ্বিধিত বেবে
শিউ বোড়ে নিকটে একটা চর প্রাণন করা
হয়, কিন্তু সে প্রাণন এপ্রতি প্রাণন হই।
মাতালার একটি ব্যক্তি হইতেছে।

অবেশ্য। গোয়েটে সম্প্রদায় বলেন, তদন্ত
হসার (অগারোহী) সেনাদলের আশ্রয় ১২ জন
সৈন্য এক বৎসরের মধ্যে ১২ জন করিয়া
পলায়ন করিয়াছে। সম্প্রতি এক জন সৈনিক
পুত্র কানপুরের দিগে পলায়ন করিতেছিল
একজন লব্ধে এক জন স. গ. তাহাকে ধৃত ক-
রে। সে একটি বোচকা খুলিবার অধ্যয়ন ল-
ইয়া ৪৪৭ এক পিঙ্কল বাহির করিয়া প্রব্রী-
ক বধ করিয়া পলাইবার চেষ্টা পাঠ, কিন্তু এ-
ক জন আফিসর তাহাকে ধৃত করেন। সেনা-
দলে কি অন্য এক বিশেষণা ঘটিতেছে

নাগের প্রণিকের সম্পাদক বলেন আ-
মীর দৌলত মহম্মদ তাঁর কর্মসম্পাদককে
পদবিত্ত হইয়াছেন। হিরাটের সেনারা কয়েকটি
ভূগণ পরিভাগ করিয়া গলায়ন করিয়াছে। সু-
লতান জ্বান একপে নিজ রাজ্য রক্ষার্থ ব্যস্ত
হইয়াছেন। দৌলত মহম্মদের ৮৯ বৎসর বয়স
প্রায় হইয়াছে, তথাপি তাঁহার বল ও উৎসা-
হের হ্রাস হয় নাই। একপে এই প্রায় উল্লিখিত
কিছুতে পারে হিরাট পারস্যপ্রাধিকারের কর্তৃ-
প্রদত্ত প্রদেশ। দৌলত মহম্মদ তাহা আক্রমণ
করিলে নসিরুদ্দিন তাহাও সংহিত যুদ্ধ করি-
লেন কিনা?

পঞ্চম গবর্ণমেন্টে রাষ্ট্রীয় কাউন্সিলের
শিখর। মাজিষ্ট্রেটকে এ.এ.এ. মাসের মধ্যে
ফৌজদারি দেওয়ানী ও আদালতী আটন স-
মূহের পরীক্ষা নিতে কহিয়াছেন। এপর্যন্ত তা-
হা পূরণের মধ্যে কাউন্সিল কর্তৃক শিখিতে
কেন?

তদন্তত খাঁ নামক এক জন ভূতপূর্ব বি-
দ্বান ও হত্যাকাণ্ডের দুই হইয়াছেন। কাম্বী-
সর রাজ্যের উকীল তাহাকে ধরিয়া দিবে
কর করেন কিন্তু পুত্র করবার সময়ে সে
এমন সাহস পূর্বক যুদ্ধ করে যে বখতির তাহা-
কে বন্দী করিবার উপায় ত্বর ছিল না।

দিল্লীতে জেট সম্পাদক বলেন, খারের সু-
টে এ.এ.এ. মাসের মধ্যে সৈন্যাদিকে অংশ করিয়া দে-
ওয়া হইবে। এই মুঠে সব শুধু ১০ লক্ষ টাকা
পাওয়া হয়। আশ্চর্যের বিষয় এই, এই প্রবোধ
মধ্যে কয়েক ডোকা করানী টাকা ছিল।

টাইমস পত্র টিভিয়া খানসারের সৈনিক
কম্পানির এক রিপোর্ট প্রকাশ করিয়াছে
ন। অনেক রকম সিপাহী তথ্য বাস করিতে-
ছে। গবর্ণমেন্ট তাহাদিগকে অগ্রিম টাকা দিয়া
সৈন্যাদে প্ররোচিত করিয়াছেন। এই উপসি-
শের ফলঃ শ্রীহরি হইতেছে। জয়দ্বিয়ার
চুয়া, সীওতাল ও মহলপুরের বন্যাদিগকে
এই উৎসাহ না দেওয়া হয় কেন?

যে চারিজন ইউরোপীয় সৈন্য দল ভাগ
করিয়া বায়লে গলায়ন করিতেছিল, তাহা-
দিগের প্রত্যেকের কঠিন পরিশ্রম সব চারি বৎ-
সর কারাবাসের আদেশ হইয়াছে।

আগস্টে প্রায় কয়েক ব্যক্তি জেলখানায় নি-

স্বাক্ষর করি, তাহাদিগের বাবজীবন কা-
রাখানায় আদেশ হইয়াছে।

কিনিক সম্পাদক নিম্ন লিখিত ইউরোপী-
য় সমাচার প্রাপ্ত হইয়াছেন।

২০ই মে, নিউ ইয়র্ক। আমেরিকার গবর্ণ-
মেন্টের সেনারা পোর্টরিয়াকে পরাজিত হই-
য়াছে। জনরব এইকপ বিব্রোহীরা উক্ত নগর
অধিকার করিয়াছে। একটি মহাবুক হইবার
সত্যতা আছে।

২০ই মে সেনাপতি ব্যাকস পরাজিত হ-
ইয়াছেন। অনেক লোক হত হইয়াছে। তিনি
বঙ্গীনিয়া ও বেরিয়াতে গলায়ন করিয়াছেন।

বিব্রোহীরা পঞ্চাশাবসান হইয়াছে। ওয়াশিং-
টনের লোকেরা ভীত হওয়াতে তথ্য সেনা
প্রেরণ করা হইয়াছে। বাসটিমোরের লোক-
রা বিব্রোহীদিগের বিপক্ষতাচরণ করিতে-
ছেন। গবর্ণমেন্টের সেনারা মাজিষ্ট্রেটের নিক-
টে পরাজিত হইয়াছে। পটমাক পুনর্বার
অবরোধ করা হইয়াছে। কবি ও রিচমণ্ড-
র নিকটে যুদ্ধ হইবে বোধ হইতেছে।

২০ই জুন লণ্ডন। ভারতবর্ষের রণতরঙ্গ
কমাইয়া দেওয়া হইবে। সেনাপতি জনর্ডন
আমেরিকার গবর্ণমেন্টের সেনাদিগকে পরা-
জিত করিয়া মেক্সিকো উপত্যকায় উপস্থিত
হইয়াছেন। গবর্ণমেন্টের যুদ্ধতরঙ্গ নাচেন
নগর অধিকার করিয়াছে। এই দিবস দুই প্র-
হরের মধ্যে পুনর্বার টেলগ্রাফে নিম্নলি-
খিত সবার আশির্বাদঃ বিব্রোহীরা হঠাৎ
ওয়াশিংটন নগরের নিকটে আসিয়াছে। তত-
তা সকলে ভাবিত হইয়াছেন।

কিনিকের লক্ষণপুত্রের সংবাদ দাতা ব-
লেন, তাহা একজন ইউরোপীয় রেলওয়ে
কর্মচারী আত্মহত্যা করিয়াছে।

কিনিক পোর্ট ট্রাফিক অনিষ্টের প্রতিবাদ
করিয়াছেন। অনেক ইউরোপীয় জীলোক
টাক কর্তৃক কথিয়া সেখানে আপনাকে বিব্রোহী
দ্বী বসিয়া রিচমণ্ডিয়া মাজিলতে অব্যাহ-
তি পাইয়া থাকে। অতুলমান করিলে অনেক
কেন দ্বী কখনোই আছে।

২০ই আশ্বিন মঙ্গলবার।

গত কল্যাণ প্রদানতঃ বিচারালয়ের বিচার-
পতিদিগের সনক লাভের বিষয় অতিরিক্ত

গোয়েটে প্রকাশিত হইয়াছে। অন্য বিচার-
তারা গবর্ণমেন্টের দীর্ঘতম করিয়াছেন।

এবংসর কয়েক দ্বীপে একজন পলীক
হইবার কথা ছিল, কিন্তু সেখানে গবর্ণ-
মেন্ট করিয়াছেন, আগাধি আত্মহত্যা
পরীক্ষার হতম প্রাণী করিবেন, তদন্তকারী
পরীক্ষা হইবে, অতএব এবৎসর পরীক্ষা র-
হিত হইল। একটি হতম প্রাণী হওয়া ক-
তিময় আশ্চর্যক। বকবলের উকীলগণ কখন
আইন মাস আমের, ব্যবস্থা পদ্ধতির মূলতঃ
যুক্তি ও ইতিহাসের বিষয়ে তাহারা বিভ্রান্ত
জনকিত।

তদা গেল রেলওয়ের কর্মচারিদিগের
পোলন পাইবার নিয়ম হইয়াছে। এই ভিলা-
টমেন্টে যে বোধ্য লোক আসিবেন, এই তা-
হার একটি উপায় হইল।

সমাচার হিন্দুস্থানীর এক খানি অতিরিক্ত
পত্র প্রকাশিত হইয়াছে, সেখান দ্বারা এক
চামার আপনাকে গবর্ণমেন্টের চর বলিয়া প-
রিচয় দিয়া দ্বীপে দ্বীপে প্রায় সব করিতেছি-
ন। উক্ত পত্রিকাফলে জনরব উল্লিখিত হই-
কটি সহস্রতা জীলোক একজন ইউরোপীয়
ডেপুটি মাজিষ্ট্রেটকে মৃত্যু কালে এই কথা
বলে যে গবর্ণমেন্টে রাষ্ট্রীয় প্রায় সব না করি-
লে ইংল্যান্ডের রাজ্য থাকিবে না। সেখান
এই তথ্যে পাইয়া চারিদিনে অমরতায়
হইবার অতিপ্রাণে এই কথা করিতেছিল।
তাহার সাত বৎসর জীপাতর বাসের আশ্রয়
হইয়াছে। এই দুর্ভাগ্যের আরো প্রায় সব হওয়া
প্রতিত ছিল।

অন্য টেলিগ্রাফবোনে নিম্ন লিখিত সমা-
চার আসিয়াছে—

লণ্ডন ২০ই জুন। ওয়াশিংটন নগর
রক্ষার্থ সর্কট উপ হইয়াছে। বিব্রো-
হীরা নিকটে উপস্থিত হইয়াছে।

২০ই জুন। মার্চ পারমর্ডন ট্রান্সকিল্ড
মাজিষ্ট্রেটের আদেশে যে সংশোধন করেন,
তাহা মহালত্যা প্রাপ্ত করিয়াছেন।

পারিস ২০ই জুন। সরদ্বিয়ার গবর্ণমেন্টে
ব্যবহারী ইউরোপীয় গবর্ণমেন্টের নিকটে সে
লক্ষ্যে প্রায় দুই সেনাদিগের সুর্যবলারের
প্রতিবাদ করিয়া এক পত্র লিখিয়াছেন।

প্রকাশিত হইয়াছে।
এ বিষয়ে হস্তাক্ষর করিয়াছেন।

চাকার প্রকার সম্প্রদায় হইলেও জাল-
কারীদিগের আশঙ্কিত হইয়াছেন।
যদিও অনেক আশঙ্কিত হইলেও যথেষ্ট
বাকর-
পক্ষে অধিকাংশ জালকারীর বসতি।
বেখান-
কার জালকারীরা।
ভাটাইড তাঁহাদিগের
অন্তর্ভুক্ত।
আমি কি হইব?

একজন হইলেও দুই দুই নিবিলিমান পদের
পত্রিকা হইয়া ইংলণ্ডে গমন করিয়াছেন,
ইংলণ্ডের এক পত্র ইতিহাস দ্বারা প্রকা-
শিত হইয়াছে।
যদিও জানেন যে তাঁহারা ও
তাঁহারা তাঁহাদিগের প্রতি সন্নিবেশ
করিতেছেন।
আমাদিগের পরে যত্ন সহ
একটি হারন ও এটি সাহেব
কর্তৃক ক-
রিয়া তাঁহাদিগের জ্ঞানবিস্তার করিতেছেন।
তাঁহারা সিদ্ধিলাভে, ভারতবর্ষে ইংল-
জিগের সহিত ইংলণ্ডে ইংলজিগের
সৌন্দর্য্য নাই।
তথ্য কলমেই তাঁহাদিগের
সন্নিবেশ সম্বন্ধ করিয়া থাকেন এবং সক-
লেই ভারতবর্ষের জিগের জন্য ভারতবর্ষ পা-
সক করা হইবে।
তাঁহারা আরও সি-
দ্ধিলাভে একজন হইলেও
বহিঃস্থ দেশের
বহন চাহেন তাঁহা হইলে ইংলণ্ডে গমন কর-
ন।
আমরাও এই কথা সর্বদা বলিয়া থাকি।

আমরা পরিকল্পনা একটি বিজ্ঞাপন দে-
খিয়া আশঙ্কিত হইলাম,
যেহেতু চিকিৎসালয়ের এতদেশীয় রোগীদিগকে
স্বাধীন দেওয়া হয় না,
তদ্বিত্ত তাঁহাদিগের
অভিভাব কর্তৃক হয়।
করেক জন দেশহিতৈষী
করিষিত তাঁহা করিতেছেন।
তাঁহারা ২০০
টাকা মাত্র চাহেন।
ইহার নিমিত্ত সকলেরই
সেওয়া কর্তব্য।

১৯-এ আশ্বিন বুধবার।

জাতিগোষ্ঠীর কর্তৃত্ব বহুদিগের স-
হিত্যে গণ্য করা হইতে
১০,০০০ টাকা প্রেরণ করা হইয়াছে।
বো-
লাইয়ের লোকেরা ৫০,০০০ টাকা পাঠাইয়া
হইবে।

জাতিগোষ্ঠীর সর্বজনীন উক্ত আশা দ্বারা
করেক জন চিকিৎসক গ্রীক ডিপার্টমেন্টে
করেক, তাঁহারা সাধারণের চিকিৎসা ক-

রিতে পারিবেন।
যদিও চিকিৎসকের।
যদিও কেবল উপস্থিত করিয়া দেওয়া হইতেন?

চীনদেশে আশঙ্কিত হইয়া দিগের স-
হিত করণী ও ইংলজিগের যত্ন হইতেছে।
বোলাইয়ের একজন জমজমি হইয়াছে।
ভারতবর্ষ হইতে চীনদেশে সৈন্য প্রেরিত
হইবে।
চীনদেশে সৈন্য ভারতবর্ষের ন্যায়
ইংলজ অথবা কল্যাণদিগের হস্তগত হইবে
সন্দেহ নাই।

লোক সাহেব যে দিগে বঙ্গদেশীয় ব্যা-
কের হস্তে সাধারণ রাজস্ব ও মোট প্রা-
করিয়াছেন, তাহাতে সর চার্লস উক্ত বিবক্ত
হইয়া এক পত্র সিদ্ধিলাভে।
হেই সেক্রেটারি
বলেন, ব্যাককে অনেক লাভ দেওয়া হইয়া-
ছে, তাঁহারা লাভের আশা লইবেন, কিন্তু
কতি হইলে সরকারের হইবে।
আমরা পূর্বে
ইহার প্রতিবাদ করিয়াছিলাম।

শুনা হইতেছে, পূর্ববঙ্গালার রেল
ওয়েতে আগামি সপ্তাহ অবধি বানাকপুর
পর্যন্ত বাষ্পীয় শব্দ চলিবে।

ইংলিসমান সম্প্রদায় বলেন, লেপ্টনট
গবর্নর শিপি বিদ্যালয়ে ১০০০ টাকা দান
করিয়াছেন।

ইংলণ্ডে জনরব হইয়াছে লর্ডক্যানিং সর
চার্লস উক্তের পরিবর্তে ভারতবর্ষের সেক্রে-
টারি হইবেন।
কিছু দিন পরে হইলে ভাল-
হইবে।

পাঠকবর্গ সর জেমস ক্রমের নান শুনিয়া
থাকিবেন, এই ব্যক্তি বোর্ডিং স্কুলের সারা-
রাক রাজ্য প্রাপ্ত হইয়াছেন।
ইংলণ্ডেও তাঁ-
হাকে স্বাধীন রাজ্যবাসিনী স্বীকার করিয়াছে-
ন।
সর জেমস ক্রম নিজ প্রজাদিগকে
সত্য করিতেছেন।
সম্রাট তিনি একজন
মোহেট্রাকে পূর্ত করিয়াছেন।

বাল্যী সম্প্রদায় চাকার কিরিকি রেজি-
স্ট্রের অধ্যক্ষের দ্বারা অগ্ররোধ করি-
য়াছেন।
চাকার প্রকারে করেক বার এই প্রজা-
দিগের অধ্যক্ষের দ্বারা নিষিদ্ধ হইবে।
গব-
র্নমেন্ট কি নিষিদ্ধ এই "ডেপুটি বাগদি" সে-
না দল রাখিয়াছেন?

২-এ আশ্বিন বৃহস্পতিবার।

সম্রাট গোয়াল পাড়ার গা হস্ত উল-

লকে হিন্দু ও মুসলমান উভয় দল।
গিয়াছে।
এক ব্যক্তি হস্ত হইয়াছে।

বহুদিগের হস্তে কমিসনার বাউরিং সা-
হেব নিজ কর্তব্য কর সম্পাদন করিয়া সক-
লের প্রিয়পাত্র হইয়াছেন।
তাঁহার নিয়ো-
গের সময়ে অনেক অনেক প্রকার বিক্রম
করিয়াছিলেন।

পিনাও গণ্ড বৎসর ১,৬৮,১৭৪০৪ টাকা
র হব্য আমদানী ও ২,০৩,১৩,৬৫৭ রপ্তানী
হইয়াছে।
চীনদেশীয় অনেক বণিক থাকিতে
এই বন্দরটির জনসাধারণ উত্তীর্ণ হইতেছে।

পাঠকবর্গের স্মরণ থাকিতে পারে, গত
বৎসর মিসনরিরা বঙ্গদেশের কল্যাণদিগের অ-
বতার অগ্রসংস্থান করিবার জন্য এক কমিশন
নিয়োগের প্রস্তাব ও প্রার্থনা করেন।
যদি-
রান অবজরবরে সিদ্ধি হইয়াছে, এটি সা-
হেব কর্তৃক বেরাট শিখকে এই কার্যে নি-
য়োজিত করিবার সঙ্কল্প করেন।
কিন্তু উক্ত
কর্ণেলের মৃত্যু হওয়াতে তিনি উপযুক্ত লোক
নিরূপে মিসনরিদিগের প্রার্থনা গ্রাহ্য করিতে
সমর্থ হইয়াই বীতন সাহেব এবিষয়ে কি সি-
দ্ধ হইলেন? মিসনরিদিগের পুনর্বার আ-
বেদন করা কর্তব্য।

চীনদেশীয় বিদ্রোহদিগের সহিত ইংল-
জিগের পুনর্বার যুদ্ধ হইয়াছে।
এক জন
রপ্তানির অধিক ও আর এক জন লেপ্টনট
হস্ত হইয়াছেন।
তুই ঘটিকা যুদ্ধের পর বি-
দ্রোহীরা পলায়ন করে।

দিল্লী গেজেটে প্রকাশিত হইয়াছে, গুল-
তান আহমদ ডান রক্ত আধারকে বিদ্যা বৃদ্ধে
কাপাহার ত্যাগ করাইতে না পারিয়া ৮০০-
অতিরিক্ত সৈন্য লইয়া রণক্ষেত্রে উপস্থিত
হইয়াছেন।
অবিশেষে একটি যুদ্ধ হইবার বিল-
ম্ব সত্যবলা আছে।

লর্কী নগরে পুনর্বার ৪১৫০০ নগর টাকা
ও অলকার পাওয়া হইয়াছে।
অনেকে এক-
শে যুদ্ধ গমন করিতেছেন।
সকল নয়।

এখান লোকগণ বিবাহিত ইউরোপীয়
লেনাদিগের সংখ্যার এক হিসাব চাহিয়াছেন।
প্রতি বৎসর ১লা যে এই হিসাব দিতে হ-
ইবে।
ইংল্যান্ডের বিবাহ হয়, অনেক এই
অগ্ররোধ করিতেছেন, কিন্তু আশঙ্কিত হইয়া
এই একজন তাঁহাদিগের দ্বারা মেরা তার।

কোন

খাকিতে গিয়েছে

শে জীলোক প্রেরিত করিবার যে প্রস্তাব এই
হাছে, তাহা করিতে গিয়াছিল হয় না ?

মাজাজে হুজুরি হোট আদালত প্রাপ্ত
হইতেছে। ইহার মধ্যে পাচটির বিবরণটি
প্রধান নগর আদালতের জেনি হইতে মন্তব্য
হইবেন এক জন দ্বারা বারিষ্টার জিহাদটি
হইবেন। মাজাজ বারিষ্টার এখিৎ আদালতি
গের অপেক্ষা অধিকতর সৌভাগ্য শালী।

বোম্বাইনগরের গত বৎসর ১,২৩০ টি
মাতালের পুলিশ বিচারালয়ে বিচার হয়। আর
তববের সকল স্থানে সুরাপানের জিহাদি হই-
তেছে। ইহার জিহাদি ভারতবর্ষের জিহাদি
প্রধান জিহাদির সন্মত নাই।

সম্রাতি বোম্বাই নগরীর নগর জীল নত
অধীন মাজাজে টি বিগকে আইনে অনতিজ
নসিরা ও ওসনা করিয়াছেন। তাঁহানিগের ব-
খ্য অনেক নওবিধানের আইন বুঝেন না
এবং অধিকাংশ অসম। বাস্তবতঃ একব্যক্তির
তিনবার বিচার হয়, তিনবারই মাজাজে টি অ-
প্রচিভ কমতা চালন করেন। সিবিজিয়ার বিজা-
রণপতিগিগের বডমিন এই সংস্কার না জামি-
বে যে কোন করিগেই তাহাফিগকে হাকুইয়া
মেওরা কটবে ততদিন কারাফি নাথ্য আদালতি-
গের গামালত সকলের উৎসর্গ রাখন করেন ?

সিলাপুরের একখানি সংস্কার পত্রে একা-
শিত হইয়াছে করানীরা কোটিন গীনের
সম্রাটের নিকট হইতে আশ্রম দেখ ও
যুধের ব্যয়ে অন্য ৮৮ লক্ষ টাকা পা-
ইয়াছেন। করানী সেনাপতিরা সম্রা-
টের সৈন্যগিকে রূপসিকা দিবে। কলতা
সকল বিষয়েই করানী কর্তৃত্ব হইল। পূর্বে
আদালত করানি গিগের একটি উত্তম রাজ্য
রাগন হইল, ব্রহ্মদেশে তাহাফিগের কমতা
আছে, চীনদেশের তৎকালী নাই। একপে
আদালতিগের সম্রাটের কেবল সতর্ক থাকেন, সে
পোলিয়ন বোম্বল রাজ্য জিগের স্যার অসার
উপাসিবে স্থাপন করিগে না।

উৎপাদে প্রকাশ করে সিলাপুরে চ্যুত
ক্রীড়ার এত হুজি হইয়াছে যে তাহাফিগ হে-
তু উৎসাহে তাহাফিগ একসঙ্গে করিয়াছেন।
সিলাপুরে তাহাফিগেই রাখা অধিক। কলিকা-

তার চাকরদের বাকীরা কতক পালক তার
হইয়াছে। ও মাজাজে হুজুরি হোট আদালত

১৯৩৩ খ্রিঃ টেম্পল সাহেব মাজাজে এক
কলতার করিয়া আনতী অবসলকে এক নতুন
কলারোয়া বাহারের উপাধি প্রদান করিয়াছেন
ন। তদুপলক্ষে বাহারীর রাজ্য সংস্কার টেম্পল
ক কলিচারি নিমন্ত্রিত হন। টেম্পল সাহেব ব-
খ্য ভারতবর্ষের কলিগের হইয়া অবধি এত
কেন্দীর বিগের প্রিয় পাত্র হইয়াছেন। কিন্তু
তিনি কেবল এদেশীয় কলিগের প্রিয় পাত্র হই-
য়াছেন, ইংলিসরা তাহানি তাহার উপরে
চটিয়াছেন।

আমরা অনিরাহিলান ই.টি. টেম্পল সাহে
ব করাবর কঠন কালেক্টর থাকিবেন, মধ্যে ব-
খ্য জেনি বড তাহার বেডন হুজি হইবে এই
বাজ। গত কলেক্টর সেকেন্ডে তাহাকে রেখি
নিউ বোডের সেবর করা হইয়াছে। কলেক্ট
সাহেব তবীর পদে প্রতিষ্ঠিত হইবেন।

ইংলিসমানের হাফররাবানের সংবাদমাতা
বলেন তবীর্য একটি রাক্ষসকন্যা অহুচাবহার
কলুমতী হওয়াতে তাহাকে নদীতীরে এককুলী
রে রাখিয়া আসা হয়। তাহার পিতা ও আ-
জীববর্গ এই প্রতীকা করিতেছিলেন যে ন-
দীর স্রোত হুজি হইয়া তাহার প্রাণ বিনষ্ট হ-
ইবে, এমনত সময়ে প্রধান মন্ত্রী সালারজম তা-
হাকে উদ্ধার করিয়া তাহার পিতার হুলকা
লইয়াছেন। হিন্দুধর্মে এই সকল ঘোষ থাকা
তে হিন্দুধর্ম বিলোপের ন হইয়াছে।

কিনিক সম্পাদক এডমেন্ডোরগিগের সু-
রাগাম প্রেরিত নিবারণ করিবার অহুরোধ
করিয়াছেন। আদালতীর উপবন্ধে গবর্নর
জিগের সালসা থাকিলে নিবারণ হইবার সম্ভা-
বনা নাই।

একপ জনজড়ি কিলোজ সাহ ককিরের
বেশে বেগালে আসিতেছিলেন এবং সময়ে
করেক জন মতু তাহার প্রাণবধ করিয়াছেন।
বোম্ব হয়, কিলোজ সাহের ইচ্ছাবল্য অধিক
নক হইয়া থাকিলে, অসম্ভাব্য কলেক্টর জিগের
মধ্যে তিনি কি স্থানে হুজি হইতে পারতেন, তা-
হা হইতে হিরাই ও হিরাই হইতে সেনাপতি
আদালতের।
উল্লিখিত জন ইতিহাস সম্পাদক কিলোজ

হইয়াছেন এখাফিগের

আদালত করিয়াছেন।

সম্রাতি কানগুদের জিহাদে তাহাফিগের
হইয়াছে তাহার বাহারীর সলারি, তাহাফিগ
বিবরণ রাখ নাই হইয়াছে।

কেন্দী প্রাণিবত্যা বর নাই। কলিক
কলিক প্রাইভেটের উপরে একটি রাক্ষ-
সখাফে এই হুজি নাই হইয়াছে।
হাফর জলকরে কোম্পানি কলিকতাফিগের
কলিহইয়াছেন না কি ?

সেও বন ইতিহাস পাত্রে ইংলিসরা সলারি
জোর বিবিসিবিজিয়ার প্রকাশিত হইয়াছে।

আদালতী

রাক্ষসী

সলারি

ইহার প্রায় ভারতবর্ষ ১৯৩১-৩২-৩৩
আদালতের ভারতবর্ষে বাহারি সলারি ও
ইংলিসরা তাহাফিগের এক সলারি সলারি
অবধি ইংলিসরা তাহাফিগের একটি সলারি প্রদান
হইতে পারে না।

আদালতের সম্রাতি এক জন হাফররাব-
কলিকতাফিগ হইতে পদারন করিবার সময়ে হুজি
জন পুলিশ ইন্সপেক্টর ওলফের হুজি সলারি
করিয়াছেন। পরিবর্তন পুলিশ ইন্সপেক্টর সলারি
ক কলিক সাহের তাহাফিগ এক সলারি হা-
রা জামি করেন। এই সলারি সলারি হুজি
সেনাপতি ছিল। হিরাফিগের সলারি এক-
ইকন্য এই প্রাইভেটের প্রাইভেট সলারি
হইল। এই প্রাইভেটের এই প্রাইভেট, এক
সলারি সলারি। কলিকতাফিগের সলারি স-
লারি করিয়া থাকেন।

একপ কলিকতাফিগের সলারি সলারি
কলিকতাফিগের সলারি সলারি সলারি
কলিকতাফিগের সলারি সলারি সলারি
কলিকতাফিগের সলারি সলারি সলারি

১৯৩৩ আদালত সলারি

সলারি সলারি সলারি সলারি সলারি
সলারি সলারি সলারি সলারি সলারি
সলারি সলারি সলারি সলারি সলারি
সলারি সলারি সলারি সলারি সলারি

অবোধার ভারতবর্ষের সলারি একটি
সলারি সলারি করিয়াছেন। তাহারা তব-
সলারি সলারি সলারি সলারি সলারি

যে যে ব্যক্তি গবর্ণমেন্টের নাম করিয়া প্রদান করিতেছে, তাহারাই যুক্ত। এ আদায় এই যোগ্য পাইয়া দেওয়া হয়। উহার মধ্যে যাহা যাহা বাসের আদায় হইয়াছে।

হারদ্রাধারের নবায় ও তদন্ত করিয়া দেইয়া। নবায় পক্ষে তর্ক বিতর্ক করিয়া তদন্তের প্রথম প্রথম সম্পাদকগণ কে ও অব ইতিহাস অসমিষ্ট ও অর্থোক্তিক বা কোর অন্তর্ভুক্ত করেন নাই। কে ও অব ইতিহাস সম্পাদকের বেতন তাহ দেখিতে পাওয়া যায়, উনবিংশ শতাব্দী না হইলে তিনি বহুসংখ্যক ব্যক্তি করে করবান ধারণ করিয়া একেবারেই দখল করিতে প্রবৃত্ত হইতেন নাকি নাই।

ইংলিসমান সম্পাদক বঙ্গের পটিনার অজ ই, কাটোর সাহেব নিকে নাকিগের অসমবন্দী গ্রহণ করেন। আজ কালি ইহাও প্রকাশ্যে বিবরণ হইয়াছে।

এক জন কিলি তাহার দক্ষিণ এক জন ইটরোপীয় স্ট্রীলোকের দাক কাটরা দেওয়া-তে তাহাকে সেসিগনে সমর্পণ করা হইয়াছে। এই কুলাই সেসিগন খুসি হইয়া পাপ জিরা জমায়।

সিপপ্রেশন লক্ষ্য করিয়া এক খানি উক্ত দর্পণ প্রকাশ করিয়াছে। যে ব্যক্তি এই আশীর লক্ষ্য করিয়া তাহার সমস্ত দ্রব্য তাহার পুত্রক পুত্রক দৃষ্ট হয়। চাকরি-ভিত্তি অস্তরে নী-ইলে বাবতীর আদ প্রভৃতি ও অধিকল দেখা যায় বটে কিন্তু মধ্যভাগের এক পার্শ্ব হইতে পদ্যর বীন একটা অর্ধশরীর স্ফুটিত হইয়াছে, যদি দর্পণ লাঠী মধ্য তবৎ নী-ইয়া দর্পণে আঘাত করিতে বান, এই অর্ধশরীর স্ফুটনপার্থ হইতে বান পার্শ্বে আসিবে। আট দ্রব্য দূরে দূরিত কোন বৈলক্ষণ্য দর্শন হয় না।

২২এ আশ্বিন শনিবার।

স্বতন্ত্র বৎসর সিদ্ধ প্রদেশে ২,০০,০০০ টাকা আদায় হইয়াছে। পূর্ব বৎসর যথাক্রমে ২০,২৮,০০০ টাকা অধিক আদায় হইয়াছে। সিদ্ধেশ্বর ক্রমে স্বতন্ত্র গবর্ণমে-

ন্টের ভারবহন না হইয়া সাধারণ খন্যারের সহায়তা করিবে নাকি নাই।

ইংলিসমান সম্পাদক আসামের চাকর দিকে এই পরামর্শ বিতরণে যে তাহার ন-মিগের পর্যাণ্ড বেতন নেন এবং তাহাদি গের প্রতি অভ্যুতায় না করেন। গারে অধিক কোর আছে, তাহাই যে অভ্যুতায় করিতেছে, ইংলিসমান সম্পাদক বসিলে কি কইবে।

রিচার্ড জেন্স হজ নামে একজন ইটরোপীয় চারলস নেকিউ কোম্পানির দোকানে কর্ম করিত। এক জন পারদী উক্ত কোম্পানির দোকানে বিক্রয়ার্থ একটা অসুখী রাখিয়া বান। হজ তাহা আত্মসাৎ করিতে তাহার নামে পুলিশে মালীস হওয়াতে তাহাকে সে সিরনে সমর্পণ করা হইয়াছে।

সুপ্রিম কোর্টের সহকারী অধ্যাপক লল ব উনবিদ্য তদ্রূপ করিয়া পলায়ন করিয়াছে। ইব্যক্তির নামে প্রায়ই পুলিশে মালীস হইত। এই ব্যক্তি পূর্বে কলিকাতা স্কুলের প্রধান শিক্ষক পণ্ডা চাকর নখাল স্কুলের শিক্ষক হইয়াছিল। শিক্ষকের উপযুক্ত বটে।

আমরা অমানস্যা নামে এক খানি মাসিক পত্রিকা প্রাপ্ত হইয়াছি। ইহা র মূল্য দুই পয়সা মাত্র। অমানস্যা ভগবৎ যেমন আলোকনয় করে, ইহা কি সেটরূপ করিবে।

সির লিখিত মূল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ প্রাপ্ত হইতেছে।

৪ টাকার সিকা	২১১০। ২২৫০
৪ টাকার কোম্পানির	২৩০। ২০৩০
৫ টাকার	১০৪০। ১০৪৫০
৫ টাকার	১১২। ১১২৫০

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন।

২৩এ জুন—বেংগল ও আর, জে, ইলিস বীর কুমের বিদ্যারের হেজিউর হইবেন।

২৩এ জুন—উদুবেড়ার হুজুফ বাহু যত্ন-বাহু যুগোপাধায় ১৮৪২ অব্দের ১০ আইনের ১০০ খাতায়সারে হুগলী জেলার ডেপুটি কালেক্টরের কর্মতা পাইবেন। অপর বাহু যত্নবাহু যুগোপাধায় আরও বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভায় ১৮৪৮ অব্দের ৩ আইনের ১২ খাতা ১৮৪৯ অব্দের ১০ আইন সংক্রান্ত মোকদ্দমার আবেদন গ্রহণ করিতে পারিবেন।

সব আদালতের নরজন কেহউর মন্ত্রী ববি-মালের দাতব্য চিকিৎসালয়ের কার্য তার প্রাপ্ত হইবেন।

২৭এ জুন—সিদ্ধ লিখিত কর্মচারি। অসম-সহকারী কমিসনর হইবেন—

লেপুটেন্ট ডবলিউ, সি, এস, জাক, এবং জে, প্রোগবি।

২৮এ জুন—হুগলী প্রতিনিধি অগিরিত-মজ ই, জি, বাউ সাহেব উক্ত জেলায় কালেক্টরের কর্মতা প্রাপ্ত হইয়া আপীল অন্তি পাইবেন।

বাহু মাধবচন্দ্র চৌধুরী কিরীতবলের জম-পটিনার সমস্ত ভানী হইবেন।

৩০এ জুন—আসামের ডেপুটি কমিসনর-পেন টি, লাহ গোবালপাড়া বিভাগে পদ-প্রাপ্ত হইবেন।

আসামের অতিরিক্ত সহকারী-ডবলিউ, এচ, ব্রৌগলে। সমস্ত-জন্য নগরীর তার প্রাপ্ত হইবেন।

আসামের অতিরিক্ত সহকারী-এ, জেন সাহেব মজলিউ পলায়ন করিয়া-হইবেন।

পূর্ণিবার প্রধান সমস্ত আসাম-বাহু মো-চন্দ্র চৌধুরী উক্ত জেলার মালীস-রোলিউর হইবেন।

অনরেকল এচ, বি ডেবেরা উক্ত-কর্ম ব্যতিরিক্ত গবর্ণমেন্টের উকীল-নিম্নোক্তদের কার্য করিবেন।

১ম। কুলাই—উ, টি, টুঙ্গ সাহেব-বোর্ডের এক জন প্রতিনিধি সভা হইবেন।

জে, এ, কুফোর্ড সাহেব কলিকাতার প্রতি-নিধি কটন কাপড়ের হইবেন।

মূল্যপ্রাপ্তি।

আই. বি উইলসন সাহেব পাইব।

১২৬২ মোহাব্বি কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫ টাকা।

জিহুফ বাহু রান চন্দ্র তৌফিক চাক।

১২৬২ ভাদ্র পর্যন্ত কোং ৫ টাকা।

প মৌলভী বনাম কলিকাতা।

১২৬২ ইলাহাবদি কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫ টাকা।

প জিহুফ বিদ্যাকুসুম অধিবাস।

১২৬২ আশ্বিন অবধি অগ্রহায়ণ পর্যন্ত কোং ৫ টাকা।

এই পত্র কলিকাতার কলিক পূর্ব বাজার রেলওয়ের মৌলিপুত্র টেননের দক্ষিণ চাকিগোড়া গ্রামে জিহুফ বাহুরাধ বিদ্যাকুসুমের বাসিতে প্রতি সোমবার প্রাতে প্রকাশিত হয়।

সোমপ্রকাশ

"স্বপ্ননাং সত্যনিহিনাং পার্থিবঃ ভবন্তীতি স্মৃতিমহন্তী ন হীহবাং"

৪ ভাগ।
৩৫ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২। ৩১ আষাঢ়। ইং ১৮৬২। ১৪ জুলাই }

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

আমি - চেম্বার্স কন্ডিমেন্টস অব নলেজ - নামক পুস্তকের মিনিংবুক (অর্থবহি) প্রস্তুত করিয়া মুদ্রিত করিয়াছি। মূল্য ১০/০ আনা। তাহার প্রয়োজন হইবে, তিনি আমার নিকট অথবা কলিকাতা প্রেসিডেন্সি প্রেসে মূল্য পাঠাইলে পাঠিবেন।
সহরমপুর কালেক্ট।
২ জাম ৮ সন ১২৬২।

ক্রীতদাস কামাধ দে

বিজ্ঞাপন।

বঙ্গদেশে বহু কবিবর তাঁহাদের নামে এক মনোহর পদ্য গ্রন্থ প্রচারিত হইয়াছিল তাহা এইকণে মুদ্রাপ্রাপ্য হওয়াতে আমি উহা পুনর্মুদ্রিত করিয়া সাধারণ জনগণের গোচরার্থে প্রকাশ করিতেছি। মন্থন কাব্য অতি সুসঙ্গীত, ইহার বর্ণনা শুনিতে অথবা পাঠ করিলে সাত্ত্বিক চরিত্র হইতে হয়। মন্থন কাব্যে অনেক স্থান পরিভ্রম ও পরিবর্তিত হইয়াছে যে সকল স্থান অসংলগ্ন ও অপরিচিত ছিল, ঐ সকল স্থান, সংলগ্ন ও সংশোধিত করিয়া দিতে সাধ্য হইত প্রয়াস পাওয়াই। এই পুস্তক সান্নাধ্যিক তিন পৃষ্ঠা হইবেক। ইহার মূল্য ১০/০ টাকা, স্বাক্ষরকারিখ গ্রন্থ ১০। গ্রন্থে মন্থন প্রভৃতি মিনিংবুক আকিসে আশা নিকট অগ্রসংস্থান করিলে প্রাপ্ত হইবেন।

ক্রীতদাস কামাধ দে

সোমপ্রকাশ।

৩১ আষাঢ় সোমবার।

লাভ কানিওর মৃত্যু

পাঠকগণ! আজ সোমপ্রকাশ আপনাদিগকে একটি দারুণ শোক সম্বাদ প্রদা

ন করিতেছে। আমাদের মের, তত্ত্ব ও কৃতজ্ঞতার আশ্রয় পরম দয়ালব সেই মহানুভব লাভ কানিও আর ভূমণ্ডলে নাই। যিনি অসামান্য দয়া, দাক্ষিণ্য, ন্যায়পরতা ও সমপক্ষপাতিতাদি সঙ্গুণের আধার ছিলেন; যিনি বিদ্রোহ কালে বিপক্ষগণের কটু বচন বাতাহত হইয়াও অচলের মায় খাকিয়া অবিচলিত চিত্তে স্বকর্তব্য সাধন করিয়াছিলেন, যাহার জ্বর মনিরে ভারতবর্ষে উন্নতি সাধন চেষ্টা নিয়তকাল আগ্রহকর ছিল, যাহার যত্নে সেই উন্নতি বিধায়ক বিধি ও উপায় সকলও প্রবর্তিত হইয়াছিল, ইংলণ্ড হইলেও তাহা হইতে আমাদের ভাবিত লাভের আশা ছিল, তিনি এক্ষণে আর নাই। তিনি ১১ই জুন লণ্ডনে প্রাণত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহার বয়স ৬৬ হইয়াছিল। ভারতবর্ষে পরিচয় করিবার পূর্বে তাঁহার স্বাস্থ্য বিহত হইয়া যায়। পথে পীড়া বৃদ্ধি হয়। তিনি লণ্ডনে উপনীত হইয়া দুই চিত্তে আত্মীয় স্বজনদের সাফাৎকার লাভ মুখ অনুভব করিতে পারেন নাই। সাধারণে তাঁকে লইয়া আনন্দ মহোৎসব করিতেও পারে নাই।

হায়! মানুষের জীবন কি অশ্রুতম্বর!

মানুষের আশা কি অগ্নিক! এই আমরা আশা করিতেছিলাম। লাভ কানিও ভারতবর্ষে থাকিয়া আমাদের অনেক জ্ঞান সাধন করিয়াছেন, কিন্তু বিপক্ষগণের বিপাক্তার যে যে বিষয়ে কৃতকায়ে হইতে পা

রেন নাই, ইংলণ্ডে গিয়া তৎসম্পাদ রিখেন। সর চার্লস উডের পদে তাঁ প্রতিষ্ঠা? হইবে এই জমরব স্মৃতিয়া? কিংগের জন্মের সেই আশা অজুড় হইয়াছিল, কিন্তু মিলের মধ্যে সম্মুখ হইয়া গেল!

আত্মাত্মিক পরিচয়, চিন্তা ও উদ্যোগের অকাল মৃত্যুর কারণ হইয়া ভারতবর্ষে পদার্পণ করিয়া অধি এক দিন সঙ্কলন যাপন করিতে পারেন নাই। পরিশেষে স্বদেশে প্রতিগমন যবার সময়ে নিজ গুণবতী ভাষা বিবর্তিত হন।

লাভ কানিও ১৮১১ খৃঃ অব্দে ২ গ্রহণ করেন। সুবিখ্যাত অর্জু কাঁটার পিতা। তাঁহার সন্তানদি কি নাই। তাঁহার সম্পত্তি ও কুল সম্প্রদায়ের অধিকারী হন একপ কোন নিম্ন আত্মীয় নাই। অতঃপর তাঁহার নাম লো হইতে চলিল। কুলান্দর্শ হইতে তাহ নাম লুপ্ত হইতে পারে বটে, কিন্তু ইংলণ্ডের সমাজগণ ও ভারতবর্ষবাসিগণের জন্ম হইতে তাঁহার নাম কখন বিহত হইবে না।

ভারতবর্ষে যত উৎকৃষ্ট গুণসম্পন্ন গবর্ণর জেনারেল আসিয়াছেন, লাভ ও তাঁহাদিগের মধ্যে এক জন প্রধান। তাঁহার ও লাভ বোণ্টিকের নাম তাঁহা বীরকিংগের জন্মে পাষণ রেপার ন দীর্ঘকাল আগ্রহক থাকিবে সন্দেহ ন

अथोक्तं नवार्थः ७ द्वाभ्यामप्यस्य लक्षणम्

দলে ইংরাজদিগের উপাধি
ব্যবহার প্রস্তাব।

ফলে ভারতবর্ষে ব্রিটিশ জাতির একা
দ্র লাভ হইয়াছে। ভারতবর্ষে এখন
কাহারও স্বাধীনতা নাই। নেপালের
বাহাদুর ও হাইদরাবাদ-এর নিজাম
কে আপনাদিগকে স্বাধীন জ্ঞান করেন
কিন্তু তত্ত্ব পর্যন্তোচনা করিলে তাঁ
দের সে স্বাধীনতা নাম মাত্রে উহা
স জাতির অনুগ্রহের উপরে নির্ভর
করে। তাঁহারা আপনাদিগের এই
সম্পূর্ণরূপে বুদ্ধিতে মা পাক্কন, কিন্তু
এ ইউরোপীয়দিগের ই। অধিকৃত
। নিম্নতকাল এই বিষয়টি মনে উদ্ভিত
যাতে অজ্ঞাত রাজপুরুষের ইউরো
পদিগের মনের ভাব পরিবর্ত হইয়াছে।

তাব পরিবর্তের অনুসারি ব্যবহার প
বর্তেরও চেয়ে। জড়িত। এতদিন তাঁ
এদেশীয়দিগের চিরাচরিত আচার
ব্যবহার যথোচিত সম্মাননা করিয়া আ
সাহস, কিন্তু এখন সেই সম্মান প্রদর্শন
তান্ত্র অসহ্য হইয়া উঠিয়াছে। তাঁহাদি
র একগুণকার মনের কথা এই যে নবাব
রাজগণ আপনাদিগের পুরুষ পরম্পরাগ
আচার ব্যবহার অবিস্মরণ রাখিবর চেষ্টা
আহু হইয়া বা ইচ্ছা তাঁহাদিগেরই (ইউ
রোপীয়দিগের) ইচ্ছা মদ্রশ ব্যবহার করে
। একপ চেষ্টা হওয়া অসমর্থিত নহে।
কিন্তু প্রাধান্য লাভ হইলে মানুষের ম
নুষ্যত্ব এইরূপই হইয়া পড়ে।

একদিন ইংরাজেরা এদেশীয় লোকের ও
 অধিকারের বিরুদ্ধে স্থানে স্থানে খুলিয়া
 আস বসনে গিয়াছেন, কোন কণা হিংসা
 বা আতঙ্ক এমি কোমক্রমেই সহ্য হইতে
 পারা। ইংরাজদের রেসিডেন্ট কর্ণেল
 উইলসন, তত্ৰতা নিজামকে তাঁর নামক
 জাহাজে প্রদান করিবার সময়ে নিজ
 প্রাণের বিরুদ্ধে স্থানে স্থানে গিয়াছিলেন

বলিয়া কয়েক জন ইউরোপীয় তাঁহাকে
লইয়া হুড়াহুড়ি করিতেছেন। অনুধাবন
করিয়া দেখিলে এ বিষয়ে তাঁহার অল্প
মাত্র অপরাধ মাই। শত বৎসর কাল ব্রি
টিশ রাজপ্রতিনিধি। যেৰূপ ব্যবহার ক
রিয়া আসিতেছেন, তিনি তাহাই করিয়া
ছেন।

উপানং পরিচয়্যাগ করিয়া কর্ণেল ডে
বিভাগনের নিজামের দরবারে গমন প্রসঙ্গ
লইয়া যখন আন্দোলন উপস্থিত হইয়াছে,
তখন এ বিষয়ের মীমাংসা গবর্ণমেন্টের উ
পরেই নির্ভর করিতেছে। কিন্তু গবর্ণমেন্টে
র পক্ষে এ মীমাংসা সহজ নহে। এদেশী
মুসলিমের চিরন্তন আচার ব্যবহারের উ
ল্লন অথবা বিস্তৃত আচরণ করিয়া সক
লের বিবেচনায় ইংরাজ গবর্ণমেন্টের
প্রতিশ্রুতি নব। লাভ ডেলহাউসি এদেশী
মুসলিমের দস্তকাডি গ্রহণরীতির নিষেধ
করিয়া তারতবর্ষে বিজ্ঞোহবল্লি প্রচলিত
করিয়া যান। লাভকানিঙ সেই প্রাচীন
রীতি পুনঃ প্রতিষ্ঠিত করিয়া সকলের চি
ন্তের আশ্বাসন করিয়াছেন। একপ স্থলে
গবর্ণমেন্ট বেহানুসারে জুতা পরিচয়্যাগ ক
রিয়া দরবার গমন রীতি রহিত করিতে
পারেন না। তাহা করিলে এদেশীমুসলিমের
ক্রোধবিরাগ সন্নিবিষ্ট সম্পূর্ণ মস্তাবনা আছে।
ইহা বিবেচনা করাও আবশ্যক যে,
নবাব ও রাজগণ আপনাদিগের সত্য অ
পনারা রিক্তপদে উপবিষ্ট থাকিবেন
আর ইংরাজেরা সোপানবৎক হইয়া সত্য
গমন করিবেন ইহা দেখিলে অসম্ভব ম
নেত নাই। কেবল কেবল অসম্ভব এই
লাভ দোষ নয়, সত্য হইয়া উদগত আ
পনাদিগকে অপমানিত করিতে পা
রেন। বিশেষতঃ এদেশীমুসলিম ও রাজ
গণ যখন দেখিতে পান, ইংরাজ গবর্ণমে
ন্টের কৃত সত্য তাঁহাদিগকে জুতা খুলিয়া
দাইতে হয়, অথচ ইংরাজেরা সত্যহলে জু
তা পরিচয়্যাগি আপনাদিগের কাছীর দ্বা

হাজার হাজার লোকেরা নিরস্ত্র হইয়া পড়িয়া
হইয়াছে। অতীত যুদ্ধের ফলস্বরূপ দেশের
কাহারও বিপাক্ষণ নাই। এই কারণে নিরস্ত্র
ফাঁদে লিপ্ত হইয়াছেন।
একপক্ষের হস্তে হইয়াছে।
করা কথবা। ইংরাজেরা যাহার
কলিত। গভাক্ত। অতীত যুদ্ধের
নিজের চিরন্তন কাহারও
আপনাদিগের। কলিত।
চেষ্টা করেন। অতীত যুদ্ধের
ঘটিবার সম্ভাবনা।
পরিগণিত হইল।
ইউরোপীয়া
থার হলে গমন
না। অতএব
বাহুবাহার
করা আবশ্যিক
গবর্ণমেন্ট
বও রাজগণকে
আপন আপন
র আশ্রয় করেন
দিগের দরবার
কৃত। পরিয়া,
বাবহার হইলে
হইবার সম্ভাবনা
রক্ষা হইবে

হাইদরাবাদের প্রসঙ্গে আর একটি
যে কথা উঠিয়াছে, নিজাম তাঁর চিহ্ন লই
তে চাহেন নাই, রেসিডেন্টে তাঁহাকে অ
নেক লওয়াইয়া গ্রহণ করাইয়াছেন, নি
জাম অনিকা পূর্বক গ্রহণ করিয়াছেন, ত
দ্বিধকন তিনি চিহ্ন গ্রহণ কালে যথোচিত
তত্ত্ব প্রদর্শন করেন নাই । এবিষয়ে আমা
দিগের বক্তব্য এই, এখানে দাতা ও
হীতা উভয়েরই নির্বুদ্ধিতা প্রকাশ
হে । দাতার নির্বুদ্ধিতা এই, দাতা যখন
নিজামের সহিত আপনার নিজস্ব অধীন
প্রকার ন্যায় ব্যবহার না করিয়া মিত্র রা
জ্য ন্যায় ব্যবহার করেন, তখন তিনি

যে চিত্র আপনার অধীন প্রত্যেক প্রদেশ করিয়া তাহার স্বত্বান বর্ধন করিয়াছেন, তখন সেই চিত্র প্রদান করিয়া মিত্র রাজার সম্মান বর্ধন চেষ্টা করা বিধেয় হয় নাই। নিজামের নির্বুদ্ধিতা এই, তিনি আপনার ক্ষমতা বুঝিত না পারিয়া বুঝা অতিমান প্রযুক্ত আপনাকে স্বাধীন রাজার ম্যায় জ্ঞান করিয়া থাকেন।

যে সকল ব্যক্তি এই আন্দোলন উপস্থিত করিয়া কালকূট পরদের ম্যায় অনর্গল কটু বাক্য প্রয়োগ করিতেছেন, কেও অব ইণ্ডিয়া তাঁহাদিগের সেনানী। তাঁহাদিগের এইটা করা নিতান্ত বরকার হইয়াছে যে এ দেশে আর কাহার কোন বিষয়ে অণু মাত্র স্বাধীনতা অথবা প্রাধান্য না থাকে, সমুদায় ভারতবর্ষ মধ্যে তাঁহাদিগেরই কেবল এক মাত্র স্বাধীনতা ও প্রাধান্য হয় এবং গবর্ণমেন্ট যে যে নবাব ও রাজগণের সহিত অর্থ ও অন্য সম্বন্ধে যে বন্দোবস্ত করিয়াছেন তাহা তত করিয়া কাহাকে কিছু না দেন। এই সকল নবাব ও রাজারা সামান্য লোকের ম্যায় গবর্ণমেন্ট আফিসে রবিজন অথবা ডিক্রের সোপানক চরণ প্রহার সহ করিয়া চাকরী করিয়া জীবিকা নির্বাহ করেন, ইহা তাঁহাদিগের (কেও অব ইণ্ডিয়া প্রভৃতি) আন্তরিক ইচ্ছা। কিন্তু তাহারা গর্বাক্ত প্রযুক্ত বুঝিয়া উঠিতে পারিতেছেন না যে গবর্ণমেন্ট এখন যে রাজনীতির অনুসরণ করিতেছেন, তখনকই তাঁহাদিগের উত্তরোত্তর রাজ্যের জীর্জি হইতেছে। ইহার বিপরীত করিলে বিপরীত হইবে সন্দেহ নাই। প্রাচীন রোমের জীর্জির সময় কখন? যখন চতুর্দিকে তিন তিন স্বাধীন রাজ্য ছিল, সেই সময়ই কি জীর্জির সময় নয়? রোম যখন ক্রমে ক্রমে সকলকে নিজ অধীন প্রভার ম্যায় করিয়া তুলেন, সেই সময়েই কি তাহার জীর্জি হইতে আরম্ভ হয় না? প্রাক্তনের প্রতিযোগিতা কি ইংলণ্ডের উপ

নিমিত্ত নহে? যদি এমন দিন উপ হয়, পৃথিবীর মধ্যে ইংলণ্ড তিন স্বতন্ত্র রাজ্য না থাকে, তখন কি ইংলণ্ড কোতঃপূর্ব্য স্থিরপাদীর ন্যায়নির ম্যায় ক্রমে বিকৃত হইয়া বাইবে না? আমরা কেও অব ইণ্ডিয়ার বিষয়ে যে কথা কহিলাম, মুরশিদাবাদ ও হাইদরাবাদের নবাব ও টিপুসুলতানের বংশীধিগের প্রতি তাঁহার আক্রোশ বাক্যই তাহা প্রমাণ করিয়া দিবে।

বন্দোবস্তি ল্যাক

বন্দোবস্তি ল্যাকের অধ্যক্ষগণ তাঁহাদিগের বাৎসরিক রিপোর্ট প্রকাশ করিয়াছেন। ল্যাক এক্ষণে সাধারণ ধনাগার হওয়াতে তথায় সমুদায় ভারতবর্ষের টাকা জমা ও তথা হইতে সমুদায় ব্যয় হইতেছে। তাঁহাদিগের যেমন কাজ বাড়িয়াছে, তেমন তাঁহারা প্রমের অতিরিক্ত লাভ পাইতেছেন। এবার অংশীদার ইন কম টাক্স বাদে ১৪ টাকার শতকরা লাভ পাইয়াছেন। প্রত্যেক অংশ ৪০০০ অবধি ৮২০০ টাকার বিক্রীত হইতেছে।

আমরা পূর্বেই প্রতিবাদ করিয়াছিলাম, ল্যাককে অধিকতর ক্ষমতা ও লাভ দেওয়া হইতেছে। অধ্যক্ষগণ তাহা এক প্রকার স্বীকার করিয়াছেন। তৈজ রিতে যে ৪৩,৬০৬ টাকা আফিসের ব্যয় হইত, তাহা ল্যাককে দেওয়া হইয়াছে। তাঁহারা প্রত্যাহ সত নোট প্রচলিত করিতে পারিবেন, তাহাতে শতকরা ব্যয় আনা লাভ পাইবেন। গবর্ণমেন্টের তহবিলে যে নগদ টাকা থাকিবে, তাহা তাঁহারা যেচা পূর্বক গবর্ণমেন্টের কাগজ, রেইলওয়ের অংশ প্রভৃতিতে খাটাইয়া লাভ করিতে পারিবেন। গবর্ণমেন্ট সেই লাভের অংশী নহেন। কিন্তু যদি গবর্ণমেন্টের কাগজ কে কতি হয়, তাহা গবর্ণমেন্টেরই হইবে! নোটের নিমিত্ত যে ৭০ লক্ষ টাকা প্রতিকূ

লক্ষপ আছে তাহা তাঁহারা আপনাদিগের রিমেচমানুসারে খাটাইতে পারিবেন। নোট জাল ও চুরি প্রভৃতি হইয়া যে ক্ষতি হইবে, তাহা ল্যাকেরই হইবে। গবর্ণমেন্টের পক্ষ হই জন অধ্যক্ষ থাকিবেন, এক জন ইনস্পেক্টর মধ্যে মধ্যে তত্ত্বাবধান করিবেন।

ল্যাককে অনেক ক্ষমতা দেওয়া হইয়াছে। বিশেষতঃ অনেক বিষয়ে তাঁহাদিগের বিবেচনার উপরেই নির্ভর করা হইয়াছে। কোন ব্যক্তি বলিতে পারেন যে তাঁহারা এই ক্ষমতার অব্যবহিত্তি বিমিশ্রণ করিবেন না। সাধারণের অর্থ এই প্রকারে কয়েক জন সামান্য বণিকের হস্তে দিয়া তাঁহাদিগের ক্ষমতার সীমা বন্ধ করিয়া না দেওয়া অত্যন্ত অন্যায় হইয়াছে। নোটের সঙ্কট শতকরা বর আনা ল্যাককে দিবার যে কথা হইয়াছে, তাহাতে আর এ প্রতিবাদী নহি। উইলসন সাহেবের সর্বস্বল বিভাগ ও কমিসনর নিয়োগ হইলে ইহার চতুর্গুণ ব্যয় হইত। কিন্তু নোটের প্রতিকূলরূপ টাকা ও সাধারণের জমা টাকার উপর তাঁহাদিগকে অধীন ক্ষমতা দেওয়া বিধেয় হইতেছে না। ল্যাকের নগদ কেরা বলেন, গবর্ণমেন্টের জমা টাকা ব্যয় হইলে তাঁহারা ল্যাকের টাকা লইতে পারিবেন। সত্য, কিন্তু আপাততঃ সাধারণ টাকা খাটাইয়া ল্যাক অপরিমিত লাভ করিতে চলিলেন; লাভ তাঁহাদিগের, ক্ষতি সর্বসাধারণের। এই বন্দোবস্ত দ্বারা ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের দুর্জয়তা প্রকাশ হয় নাই। সর চার্লস উড তাঁহাদিগকে যে তিরস্কার করিয়াছেন এই নিমিত্ত তাহা অন্যায় হয় নাই। তিনি এক জন কিনাজিয়ার, তাঁহার মত লইয়া উক্ত নিগম করা উচিত ছিল। পাঁচ বৎসর পর্যন্ত ব্যয় সহিত এই বন্দোবস্ত থাকিবে। কয়েক জন বণিকের সুবিধার নিমিত্ত এত দিন সর্বসাধারণের ক্ষতি হওয়া না, যু

হইতেছে না, সর চার্লস উভয়ের মতের
অনুসরণ করাই কর্তব্য।

ইংলণ্ডীয় মহাসভার ভারতবর্ষীয়
প্রতিনিধি নিয়োগের
আবশ্যকতা।

বর্তমান সভ্যতায় সমস্তের রাজনীতিক
নিগের মত এই (এই মতই বিস্তৃত) যথ
ন যে দেশে ক্ষুদ্রতম কর নির্ধারণ করিতে
হইবে, তৎকালবাসিনীগের মতগ্রহণ না
করিয়া তাহা করা বিধের নহে এবং
সেই কর ব্যয় করিতে হইলে তাহা
দিগের অথবা তাঁহাদিগের প্রতিনিধিগ
ণের মত গ্রহণ নিতান্ত আবশ্যক। যে অব
ধি প্রতিনিধি দ্বারা শাসন প্রণালী সংস্থা
পনের রীতি প্রবর্তিত হইয়াছে, সেই অব
ধি এই নিয়ম হইয়া আসিতেছে। ইংল
ণ্ডে এই নিয়ম আছে; ইটালি তাহার অনু
সরণ করিয়াছেন; ক্রাশী সজাট অসীম
কমতাশালী হইয়াও এ বিষয়ে বতর ও
প্রজাদিগের মতনিরপেক্ষ হইয়া কাব্য
কারী নহেন; সজাট আলেকজান্ডার রুশী
য় এই প্রথা প্রবর্তিত করিতে উদ্যত
হইয়াছেন। আমেরিকার স্বাধীনতা লা
ভের ক্ষুদ্র কি? ইংলণ্ডীয় মহাসভা প্রজাতা
লোকদিগের অসম্মতিতে কর স্থাপনের
চেষ্টা করিতেই তদৃশ মহাসাজাজ্য হই
তে বঞ্চিত হইয়াছেন। আপনারা আপনা
দিগের অর্থের ব্যয় তাহা প্রাপ্ত হইলে কর
সভার কেবল যে সুখ স্বচ্ছন্দ হয় একপ
নহে, গবর্ণমেন্টেরও সবিশেষ কল্যাণ লাভ
হইয়া থাকে। যে দেশে এই নিয়ম আছে, তা
হার শাসন কর্ত্তা ও শাসিত উভয়েই পরস্পর
সম্ভাব সম্মান ও সৌভাগ্যশালী দৃষ্টি হইয়া
থাকেন। যে সমস্ত চিত্র দ্বারা সত্য ও
অসত্য কালের ভেদ করা হয় এই নি
য়মটি ভাঙা একটা প্রধান। অসত্য রাজ
স্বা কর নির্ধারণাদি কালে প্রজার সুখ স্ব
চ্ছন্দ, মনের ভাব ও ইচ্ছা প্রভৃতি কোন

বিষয়েরই অনুসন্ধান করেন না, তাঁহারা
আপনাদিগের স্বার্থ ও ইচ্ছার অনুসরণ
করিয়াই এই সকল কাব্য করিয়া থাকেন।
গুরুত্বের, সভ্যরাজগণ সেক্ষেপ করে
ন না।

আমরা উপরে সভ্য ও অসভ্য রাজ
গণের যে ব্যবহার ভেদের বিষয় উল্লেখ
করিলাম, ভারতবর্ষে কি তাহা অনুসারী
কাব্যানুষ্ঠান হইয়া থাকে? আমরা যে বর
দিয়া থাকি, তাহার বিষয়ে কি কিছু বলি
তে পারি? ব্যয়ের বিষয়ে কি আমাদের
হাত আছে? আমরা ভারতবর্ষবাসী, ভারত
বর্ষীয় গবর্ণমেন্টই যে কেবল যেচ্ছাক্রমে
ক্ষুদ্রবিধ কর স্থাপন ও তাহার ব্যয় সমা
ধান করেন একপ নহে; আমাদেরকে
অন্য এক গবর্ণমেন্টের ইচ্ছাপরাধীন হই
য়া চলিতে হয়। সে গবর্ণমেন্ট ইংলণ্ডই।
যত দিন আমরা ইচ্ছার প্রতিকার ক
রিতে না পারিব, তত দিন আমাদেরকে
কষ্ট সহ্য করিতে হইবে সন্দেহ নাই।
ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট ভারতবর্ষীয় গবর্ণমে
ন্টকে লোহিত সমুদ্রের টেলিগ্রাফ সম্বন্ধে
অর্থ দানের যে অনুমতি করেন, আমরা
পূর্বে তাহার প্রতিবাদ করিয়াছি, তাবি
ষাতে যাহাতে ভারতবর্ষের রাজস্ব ইংল
ণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের যেচ্ছানুসারে ব্যয়িত
না হয়, সে চেষ্টা করা আমাদের প্রধা
ন কর্ত্তব্য কর্ম। কিন্তু তাহার প্রকৃত উপায়
কি? ভারতবর্ষের কয়েক জন প্রতিনিধি
ইংলণ্ডীয় মহাসভায় প্রবেশ করিতে না
পারিলে সে উপায় হইবার সম্ভাবনা নাই।
আমাদিগের দেশের যাবতীয় গুরুতর ক
র্ত্তব্যকর্ত্তব্য ইংলণ্ডে স্থির হয়। কয়েক
জন অজ্ঞাত ব্যক্তি যে কথা বলেন,
মহাসভা তাহাতে 'হাঁ' দিয়া যান।
কিন্তু আমাদের যথার্থ প্রাধীন, যথার্থ
বল, অসহ্য অত্যাচার, সামাজিক হুমকি
ও দেশীয় লোকের মনের তাব প্রভৃতি বিষ
য়ের আর কিছু জানিতে পারেন না। ইহা অ

স্বকারণে লোভ নিবেদনের তুল্য হইতেছে।
মহাসভার ভারতবর্ষের কয়েক জন প্রতিনি
ধি থাকিলে অজ্ঞতা মুক্ত এই সকল
অনিষ্ট হইতে পারিবে না। প্রতিনিধি থা
কিলে ইংলণ্ডীয় মহাসভা ও গবর্ণমেন্ট
অনেক অন্যায় অপবাদ হইতে মুক্ত হই
তে পারিবে। ভারতবর্ষের মঙ্গলের ত ক
থাই নাই। যাবতীয় বিষয়ের যথাযথ অব
স্থা ইংলণ্ডে বর্ণিত হইলে এ দেশে আপে
ক্ষাকৃত অসংখ্য বিপুল লোকের মঙ্গল নাই।
ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট ও মহাসভা ভারতব
র্ষের প্রতি অন্যায় ব্যবহার করিতে অনু
রক্ত, এ কথা বলা আমাদেরকে অতি
শ্রোত নহে। তাঁহাদিগের সুবিচার জগতি
খ্যাত। আমরা তাহার প্রতিবাদী নহি।
তাঁহারা ভারতবর্ষের বিষয় ভালরূপ জানে
ন না বলিয়াই তাঁহাদিগের সম্মতিপ্রাপ্ত স
কল সমাক কলোপধারী হয় না। প্রতি
নিধি থাকিলে কেবল যে ভারতবর্ষের উ
ন্নতিপথ পরিষ্কৃত হইবে একপ নহে,
ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের অজ্ঞতা নিবন্ধন
যে সমস্ত আনন্দ ঘটিতেছে, তাহারও স
মাক নিবারণ হইবে। পরিশেষে আমরা
পুনর্বার স্বদেশীয়দিগকে এ বিষয়ে যত্ন
বান হইতে অনুরোধ করিতেছি। কায়ম
নোবাকো যত্ন করুন অবশ্যই অতীত লা
ভে সমর্থ হইবেন।

—৩৩—

লণ্ডন ২৫এ মে, ১৮৬২।—

প্রি। সম্পাদক। পূর্বে পত্র লণ্ডনের শিপ
বিন্যাস নিকেননসুদে ১লা মেয়র ব্যাপার
বংশাবান্যরূপে নিশিচয় করিয়াছি। অতীত
উক্ত অট্টালিকার দ্বিতীয় অংশ এবং
অতীত পদার্থ সংগৃহীত হইয়াছে। তদ্ব্য
কতিপয় বস্তুর সংক্ষেপ বর্ণন করিতেছি। অ
ট্টালিকাশিত সমুদ্রায় পদার্থের যথা বিহিত
বর্ণন করিতে গেলে বহুসংখ্য প্রকাণ্ড পুস্তক
লিখিতে হয়, অতএব আমি কেবল কয়েকটি
সামগ্রীর নামোল্লেখ মাত্র করিয়া সন্তুষ্ট হ
ইব।

অট্টালিকার স্থানান্তরিত ইংরেজ ও অন্যান্য জাতির মধ্যে সমস্ত বসতি বিলুপ্ত, এবং ইংরেজদের অধীনস্থতা সকল ইংরেজদের মধ্যেই ফুট হইয়াছে। নিম্ন দুই প্রকার : প্রথম সাধারণ শিল্প, ও দ্বিতীয়। প্রথম সাধারণ শিল্প জাত বস্ত্র জিহ্বা, (১) অসম্পন্ন সামগ্রী, যথা, খাত্ত্র, তুলা, পট্ট, উর্দা ইত্যাদি। (২) বস্ত্র জর্জর যে সকল কোমলের দ্বারা অসম্পন্ন সামগ্রী সকল মনুষ্যের ব্যবহারে আনয়ন করা যায়। এবং (৩) সম্পন্ন সামগ্রী, যথা গলকাব, বস্ত্র ইত্যাদি। চিত্র, প্রস্তরাদি নির্মিত প্রতিমূর্তি প্রভৃতি পদার্থকে সুশীল জাত বস্ত্র দ্বারা। মনুষ্যের নিকটতম উত্তম প্রকার শিল্প জাত বস্ত্র সংগ্রহীত হইয়াছে। প্রথম সাধারণ শিল্প ৩৬ প্রকারে বিভক্ত, ১৬০০০ দিল্লীয়া, ৫০০০ ইংরেজ, এবং ২০০০ ইংরেজদের অধীন জাতীয়, সর্বমুদ্র ২৩০০০ শিল্পের আগমনের নৈপুণ্য প্রদর্শন করিয়াছে। সুশীল জাত বস্ত্র মধ্যে ইংরেজেরা একমাত্র বস্ত্রের তত্ত্বগত ২০০০ পদার্থ প্রদর্শন করিয়াছেন। অবশিষ্ট যে সকল পদার্থ সংগ্রহীত হইয়াছে, তাহা বিদেশীয়।

প্রথম সাধারণ শিল্পের ১৮ প্রকারে খাত্ত্র ও আকরীকরণ। আকর হইতে করলা প্রভৃতি দ্রব্য সে কাপে সংগৃহীত হয়, তাহার কতিপয় প্রতিমূর্তি প্রদর্শিত হইয়াছে।

২য় প্রকারে রসায়নোপযোগী প্রভৃতি বিবিধ প্রকার। চিকিৎসা বিদ্যান্ধাবতীয় বস্ত্র উপযোগিতা ওভবাহে, এখানে তৎসমুদায় প্রদর্শিত।

৩য় প্রকারে খাদ্য সামগ্রী, সংরক্ষিত করা, পানীয়, ডায়াকুট প্রভৃতি।

৪র্থ প্রকারে শিল্প কার্যে ব্যবহার্য্য প্রাণি ও উদ্ভিদ জাত বস্ত্র, মজা, রসের প্রভৃতি।

৫ম, ৬ম, ৭ম, এবং ১০ম প্রকারে বিবিধ বাণ্যীয় বস্ত্রাদি। বস্ত্র বস্ত্র চিত্র, এসং কতক তুল চিত্র। রাষ্ট্রপতি মহারাজ শিল্পের অন্তর্গত কোমল প্রকাশ করিয়াছেন যে রেলওয়েতে এসম্প্রদায় টেনে জল লইবার জন্য খনিত হইবে না, আরবদেশে উর্দা যেমন স্বীয় উন্নয়ন হইতে জল আকর্ষণ করিয়া তৃষ্ণা শান্ত করে, উক্ত বস্ত্রও সেই রূপ করিবে। এতদ্ব্যতীত পূর্নাকারী বাণ্যীয় বস্ত্র প্রদর্শিত

হইয়াছে। তাহা চলিবার সময় পূর্ব নির্গত হইবে না। করালীশেরা দুইটি বস্ত্র প্রদর্শন করিয়াছেন, তাহাদের প্রত্যেকের বস ৩০ খোঁটের তুল। হুচী নির্মাণ, অকর নির্মাণ বস্ত্রাদি, তুলা চক প্রভৃতি অনেক বিধ প্রদর্শনীয় বস্ত্রের সংখ্যা করা দুকর। কৃষি বিদ্যা সংক্রান্ত কতকগুলি বস্ত্র সাতিশর উপকারী, কয়েক বস্ত্রাবধি কৃষি কার্যে বাণ্যীয় বস্ত্র নিয়োজিত হইয়াছে। যুদ্ধ বিদ্যার উপযোগী অস্ত্র শস্ত্র বিবিধ প্রকার। কয়েকটি প্রকারে তোপ প্রদর্শিত হইয়াছে।

১১ম, ১২ম, ১৩ম, এবং ১৪ম প্রকারে নানা বিধ বিদ্যা বিমূর্ত বস্ত্র, মুরলীকণ, অশ্বলীকণ, এক প্রকার চমৎকার বাঁহী বাহক বস্ত্র প্রভৃতি নানা বস্ত্র প্রদর্শিত হয়।

১৫ম প্রকারে কটগ্রাফ সম্পর্কিত বিবিধ বস্ত্র, মনুষ্যের আকৃতি সমান আলোকচিত্র সকল প্রদর্শিত হইয়াছে।

১৬ম, ও ১৭ম প্রকারে নানাবিধ ঘটক বস্ত্র। একবস্ত্রের কিরাইতে হটবে না। এমন ঘটক প্রদর্শিত হইয়াছে, কোন ঘটকার পৃথিবীর সমস্ত ক্রানের সমস্ত নিহিত রহিয়াছে।

তৃতীয় নির্মিত কারখানিতে পৃথিবীর উপকার হইবে সম্ভব নাই, উক্ত নানা প্রকার কারখানা একত্রিত হইয়াছে।

উৎকল বাহক এমন 'খল' 'মোট' প্রদর্শন করিয়াছেন, সে কেবল তাহা রত্নের কল্পিত পাবিবে না।

১৮ম প্রকারে নানা পদার্থ দ্বারা বস্ত্র, এবং ১৯ম প্রকারে বস্ত্র চিকিৎসা সংক্রান্ত নানা বস্ত্র।

২০ম প্রকারে ২১ম এবং ২২ম প্রকারে, তুল শণ, পট্ট, উর্দা, জাত ও নিশিত বস্ত্র, সকল এবং উপানয়ন প্রভৃতি চমৎকার দ্রব্য।

২৩ম প্রকারে গাফা সংক্রান্ত বস্ত্র সকল, পুস্তক গুণ্ডক অঙ্কচিত্রকে শিল্পা দ্বারা উপস্থাপন ইত্যাদি।

অন্যান্য প্রকারে মৌহ বস্ত্র সকল প্রদর্শিত হইয়াছে, তাহাদের সংখ্যা করিয়া উঠি। এমনতর অনাশ্রয় নাই।

ইংরেজদের অর্থ নানা দেশ হইতে নানা। আগত হইয়াছে। চীনদেশ হইতে

পট্টবস্ত্র, বস্ত্র, মৃদিকার দ্বারা প্রভৃতি। সিংহল দীপ হইতে কাকি, দারুচিনি, বৃক্ষাদি। বরীচ উপদীপ হইতে উৎকর্ষ শর্করা, ও কলাদি। অষ্ট্রেলিয়া হইতে জাতিকল, উর্দা বস্ত্র। গোপূর্ব প্রভৃতি এবং ১৮৪১ খাল অর্থ বিবর্তমান সময় পর্যন্ত ২১৭৩৫ মণ পরিমিত অর্থ ১০০০,০০০,০০০ টাকা মূল্যের বৈদ্য প্রকার হইতে সংগ্রহীত হইয়াছে, তাহার এক বর্গ মণ্ডিত প্রতি রূপ শস্ত্র আগত হইয়াছে। নিউ জর্জ হইতে ত্রিবিধ সংস্কৃত পরিবার নৌকা প্রভৃতি। আফ্রিকা ও আমেরিকার ইংরেজাধীন অংশ হইতে তাহাশ উপকর্ষ দ্রব্যাদি প্রেরিত হয় নাই।

অন্ততঃ এখানে কি তাহা দ্রব্য দ্রব্য করিয়াছেন, তাহা জানিবার নিমিত্ত আমাদের সাতিশ্র উপকৃত্য অন্তিম পাবে। অট্টালিকার নিম্নলিখিত মধ্যে ১০০০০ চকুর ফাঁট আমাদের দেশের শিল্প, নিয়োজিত হইয়াছে। প্রথমতঃ বস্ত্রের জাত বস্ত্র প্রদর্শিত হয়। তিল ও মধু বীজ, তৈল, একনির্গাস, তেজ বস্ত্র, ও কাষ্ঠাদি নানা দ্রব্য একত্রিত হইয়াছে। আসাম কাষ্ঠাদি জাহত, দারুচিনি, তেরাকুল গড়ওয়ান প্রভৃতি স্থানের চা অতিশয় প্রদর্শনীয় বলিয়া প্রদর্শিত হইয়াছে। সমুদায় প্রায় ৬০০০ প্রকার বস্ত্র আমাদের দেশকে প্রদর্শন করিতেছে। দিল্লী হইতে হস্তিনপুর উপর চিত্র সকল আগত হইয়াছে, তন্মধ্যে এক মন্দিরের অভ্যন্তর বিবরণ চিত্র অনেকগুলি মন আকর্ষণ করিতেছে। লক্ষ্মীনগরে যে সকল কটগ্রাফ গৃহীত হয়, তাহার কতিপয় বিচিত্র প্রতিকৃতি প্রদর্শিত হইয়াছে। কলিকাতার চিত্রণ কণ্ড, তদ্বিষয়ের চূড়ান্ত নৈপুণ্য প্রকাশ করিতেছে। কাশ্মীরের বস্ত্রোত্তর উপর পট্টকর্ম, ও দিল্লীর জাল অতি উৎকর্ষ। নানা প্রকার গালিচা ও তুলিচা, ও জীনগরের ও অন্যান্য স্থানের নানা সাতিশ্র মনোহর। গুজরাট ও পঞ্জাবের ককংগোরি অর্থ ২৭০০ নিহিত লৌহ কর্ম সকল প্রদর্শনা যোগ্য। পট্টবস্ত্র বিবিধ প্রকার এবং উৎকর্ষ, বারানসীর দ্রব্যের তুলনা নাই, তাহাদের মূল্যও সমৃদ্ধিত। পঞ্জাব, বীরাট, ও বরাহনগর (অলিপুর?) স্থিত কাবাগারের বস্ত্রোত্তর প্রদর্শিত হইয়াছে। নানা প্রকার

ইংলিসমান সম্প্রদায়ক লিখিয়াছেন মঙ্গা
তি খনিয়া, যা যে ৮ জন বিপ্লবীকে বধ করি
য়াছে তাহা শেখোক্ত ব্যক্তিগণের দে.মেই
খটিয়াছে। তাহারা সেনাকর্মের কতক রসদ
কটয়া খাইতেছিল। একটু নিরসের নিকটে
অল্প একছিন্ত করিয়া রাখিয়া তাহারা স্থান
করিতে গমন করে, এমন সময়ে বন্য জাতী
যেহা আসিয়া তাহাদিগের প্রাণ সংহার করি-
য়াছে। গায়োজাতীয় এত দল সস্ত্রাতি ত্রি-
দশ রাজার অধিবাসে প্রবেশ করিয়া অনেক
খানি গ্রাম দূষ্ট করিয়াছে। এই বন্যদিগকে
পার্কত হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দেশের মধ্যস্থ
লে অথবা কোন দীপে বাস করিতে দেওয়া
কষ্টসাধ্য।

গত শনিবারের গেজেটে প্রকাশিত হই-
রাতে ১২টি হুজুর, ৫টি আশাশুভ হইয়াছে।
সরকার সার আলী ও মুই জন বারিউর ইহার
বিচারপতি পদে নিযুক্ত হইয়াছেন। কয়েক
জন উপযুক্ত সরকারী আলাকে প্রথম জেগিহ করা
হইয়াছে। গবর্নমেন্ট সরকারী আলাকে বারি-
উর অপেক্ষা বিচক্ষণ বিচারপতি জ্ঞান করেন
ইহা বিশেষ আশাশুভের বিষয়।

জোসেফ কারবেরি ও তাঁহার ভগিনী
দেউলিয়া হউবার আশয়ে আশাশুভ উপস্থি-
ত হইয়াছেন। তাঁহাদিগের মাতা কয়েক বৎ-
সর পূর্বে দেউলিয়া হওয়ার পরে তাঁহার বহু
বিক্রয়ের কাব্য আশ্রয় করেন। এই সকল
দেউলিয়াদিগের অবস্থা বিশেষ রূপে অবগ-
ত হওয়া উচিত।

পূর্ববঙ্গের রেইলওয়ে এজেন্ট আ-
লিসব এক জন পাগলওয়াল। ১১ ৪ ১০ চরি
স্বাভাৱে তাঁহাকে সেসিয়ার সমর্পণ করা হ-
ইয়াছে।

বিশ্বনোবরজন পত্রিকার এক জন পত্রপ্রে-
মক বলেন আসন্নবছর খুব বরষাশীল একটি স্রী
লোক তিন বৎসর গুরুত্বপূর্ণ করিয়া সম্রাতি
মহাশয়িণী মাতা দুইটি সন্তান প্রসব করিয়া
প্রাণত্যাগ করিয়াছেন। চিকিৎসা শাস্ত্রের অসু-
মহাশয়ের উপযুক্ত বিষয় সম্পর্কে নাই।

২৪এ আখ্যায়িক মঙ্গলবার।

মহানীতির অসুখপাটী দেহুলা হই-
তে প্রযুক্ত কৈলাসচন্দ্র রাধ মহাশয় রক্তসমা-
জের বিষয় নিবিড় আশাশুভের নিকট পাচ
১৫ ৩০ নিম্ন লিখিত পত্র পাঠাইয়াছেন।

"সম্পাদক মহাশয় শীত আশাশুভ কন্যার
প্রাণত্যাগ করিয়া সম্পন্ন হইবেক। ওতুলপক্ষে
বহু ব্যয় করিতে হইবেক। কিন্তু স্বীয় আশ্রয়
কর্তব্য। গায়েশে সর্বাঙ্গে বকশানিধান
জগদীশ্বরের নিকট প্রার্থনা করা, এবং
স্বস্তি প্রার্থনা করিয়া দান করা অবশ্য কষ্টব্য
বিবেচনায় এই পত্রের ভিতরে ৫ পাচ টাকার
পোষ্টট্রান্স মঙ্গলবারের নিকট পাঠাইলাম।
মঙ্গলবার অস্ত্রগ্রহ প্রকাশ পূর্বক উক্ত টাকা
বিতরণে প্রয়োগ করিয়া পাঠাইয়া দিবেন।
সম্পাদক মহাশয় এই টাকা ব্যয়িত হইলে

১১ ৪ ১০ চরি

২৪এ মঙ্গল

২৪এ আখ্যায়িক

সাহস্র গুরুর এল ডেউ - ১৫ এক ১,১
হারোগা ১০,০০০ টাকা তহবিল তহবিল স্বাভাৱে
তাঁহাকে স্বাভাৱে দিয়া ১০,০০০ টাকার আশি
ম চাহা হয়। সে তাহা দিতে অক্ষম - ১৫
তাঁহাকে তহবিল তহবিল তহবিল ১০,০০০
করেন। তাহার নে পাগল হইয়া ১৫
তি তাহার স্রী গবর্নমেন্টের নিকটে
রা আবেদন করিয়াছে যে কারাগারে

তাঁহার প্রাণত্যাগ হইয়াছে। তহবিল তহবিল
সরকার পাগল বলেন এ বিষয় কথা। যাহা ক-
উক, আশাশুভের এই আশাশুভ বোধ হইতে-
ছে, এক জন জীবিতকারী ১০,০০০ টাকা বই
তাঁহাকে দাই, তহবিল তাঁহার মিয়াক হইল।

একদে একজন রাজগণের অপবাদ
লেখা একটি প্রথা হইল। উত্তরাতে অযোধ্যা
গেজেটে এক জন লিপিকার, অক্ষ বহাদুর
তারতবর্ষের গবর্নমেন্টের প্রতি অনাস্থা প্রকাশ
করিয়া বলিয়াছেন যে তিনি শীত অযোধ্যা
আক্রমণ করিবেন। অক্ষ বহাদুর ইউরোপীয়
দিগকে নেপালের বনে শীতর করিতে নিষে-
ধ করিয়াছিলেন, ইহাই কি একদা লিপিকার
করেন?

দিল্লী গেজেটের সংবাদদাতা বলেন, ম-
হাজির রণবীর সিংহ প্রজাপিগের উপর অ-
ত্যাচার করিতেছেন। তিনি নিজ
কাম্বীরের প্রায় সমস্ত বস্তু একচেটিয়া
করিয়াছেন। শালের তাকিরা তাঁহার জীত
লাভের নায়। রাজা সকল প্রকার উপর অ-
পরিমিত বৎ লইয়া থাকেন। তাঁহার রাজত্বের
শেষ দণ্ড উপস্থিত।

২৪এ আখ্যায়িক বুধবার

টাইমস অব ইন্ডিয়া সম্পাদক ক'বুল হই-
তে সংবাদ প্রাপ্ত হইয়াছেন, সম্রাতি মোস্তা
মহাশয়ের মকিত সুলতান আনের এক তহবিল
যুগ হইয়া গিয়াছে। ইহা কলকাতা জানা
বাস নাই।

মাস্তাজে যে সকল নোট প্রেরিত হইয়া-
ছে তহবিল তহবিল তহবিল না থাকিতে
তহবিল লোকেরা তাহা লইতে অসম্মত হই-
তে তাহা নেপালের পত্রিকা

২৪এ মঙ্গল

২৪এ মঙ্গল

২৪এ মঙ্গল

ব্যয়ের জন্য এক একজন লিপিকার
স্থাপন করিতেছেন। লিপিকার
করিবার এই একটি প্রধান কারণ
কিনিকের হগলীশিত স'বাসিন্দা
ন, তহবিল ইউরোপীয় টেননিক
নেপে প্রেরণ করা হইতেছে। বক তাহা

২১এ আখ্যায়িক বুধবার।

গত কল্য একদে একজন লিপিকার
টাকার অধিকেন বিক্রীত হইয়াছে।

	বাল	মোট
বেহার	১৩০৫	১৩,৫০,০০০
কাশ্মীর	১৩০৫	১৩,৫০,০০০

১৩০৫ নগরে সম্রাতি সুলতান মহাশয়
গের সহিত সুলতান সুলতানের একটি স্রী
হইয়া গিয়াছে। মালিকেরা একজন স্রী
নির্ধারিত করিয়াছিলেন কিন্তু মহাশয়ের
গাতে অসম্মত হইয়াছেন অনেক মালিক
রন করিয়াছেন। একদে একজন স্রী
তহবিল ১৩০৫ করিতে উক্ত স্রী
মানক ১৩০৫ করিতে উক্ত স্রী
ও বোধাই রন ১৩০৫ করিতে উক্ত স্রী
হরণ বিষয়ে

ইতিহাস এম্বারারে লিখিত হইয়াছে
করাশীরা লোহিত সমুদ্রে এক হাতিয়া করিয়া
ছে। সম্রাতির নিকটবর্তী একটি স্রী
গের হস্তগত হইয়াছে। সম্রাতি নেপোলিয়ন
বিখ্যাত কলবারের প্রণালীতে করাশী উপর
বেশ করিতেছেন।

অযোধ্যা গেজেট সম্পাদক বলেন, তহ-
বিল ১৩ গণিত অযোধ্যা সেনাদলের
গক ওলিয়ারা আশ্রয়তা করিবার চেষ্টা ক-
রেন। ওলি তাঁহার বাক কক দিয়া গমন বি-
রাছে। তাঁহার জীবন সংশয়। ইউরোপীয়
সেনাদলে অস্ত্রসজ্জা করিলে আশ্রয়তার
ন গোপনীয় কারণ বাহির হইতে পারে।

টাইমস অব ইন্ডিয়া মাস্তাজিত সং-
বদ বলায়, সর উইলিয়াম ডেবিসন নিজ-
পদ ত্যাগ করিতে ইচ্ছুক নছেন। তাঁহার অ-
নেক পরিবার এবং অল্প মাত্র সম্পত্তি
স্বাভাৱে ১৩০৫

১৩০৫ হইবে। ১৩০৫ ১৩০৫
১৩০৫ হইবে। ১৩০৫ ১৩০৫
১৩০৫ হইবে। ১৩০৫ ১৩০৫
১৩০৫ হইবে। ১৩০৫ ১৩০৫

অন্য কোন দোষবাই । তিনি কেবল
যে অসঙ্গ । এত রোগ ।

চরিতে আর্কট হইতে যে শস্য প্রেরি-
তাহার শুদ্ধ লগ্নেতে কর্তাসীশান
সঙ্গীতর উইলিয়ম জেমিসনের নিকটে তাহা-
প্রতিবাদ করেন । তিনি শুদ্ধতরে আক্ষেপ
প্রকাশ ও কথ্য প্রার্থনা করিয়া শুদ্ধ প্রত্যর্প
করিতে সম্মত হইয়াছেন । এইসকলের নি-
মিত্তই কি জেমিসন তিরস্কার খান ।

নিম্নলিখিত হুতন নোট এবং তাহার
প্রতিশ্রুতকরণ মগন টাকা ও রোপ্য প্রকৃতি
দাখিল ।

কলিকাতা ।	বোম্বাই	মাদ্রাস	মোট
প্রতিশ্রুত নোট	২,৪৩,০০০	১,৬০,০০০	৪,০৩,০০০
প্রতিশ্রুতকরণ টাকা	১,৩২,৬১১	৬৭,০০০	১,৯৯,৬১১
কমতিত রে.প	১২,০০০		১২,০০০
গবর্ণমেণ্টের বাণিজ্য	২৩,৬৮০		২৩,৬৮০

মাদ্রাজে নোট ও প্রতিশ্রুতকরণ টাকা
উত্তর সমান । এষ্ট কলিকাতায় চন্দ্র চারি
লোটির অধিক নোট প্রচলিত নহা গন্য
হইয়াছে ।

কলিকাতার নিকটে আত্মগমন সেন্যের সহিত
স্বলভান জানের একটী যুদ্ধ হইয়াছে । তাহা
তে দোস্ত মহম্মদ খাঁ পরাজিত হইয়াছেন ।
স্বলভানজানের সঙ্গি করিমখান জাহাঙ্গীর
নাহে ।

লন্ডন বাসিন্দা : আশ্বিন ১২৬৯

সময়ে গিলিসি গিলিসিজন কর্তৃক বাণিজ্য

চেট্টারবাই ভারতবর্ষের অন্যতম প্রধান

হ হে । ভারতবর্ষে কালকোরে ন্যায় নিয়ত
হুই এক জন লোক চাই ।

মাদ্রাজ কর্তৃমেই সাগেমের নিকটে কুই
মাইনের হুক রোপণ করিতেছেন । সীওতাল
পরগণার হুতন সিফোন । হুকের কি হটল ।
একজন জন প্রতি করেই রেজিমেই শীক সৈ-
ন্য পুনর্বার চীন দেশে প্রেরিত হইবে । বিদ্রো-
হিদিগকে দমন করা ইতার উদ্দেশ্য । শেনে
উপনাম লিখিত বানব দ্বারা বিদ্রোহীদের
হুকুমদার নিপতির ন্যায় উল্লিখিত বিবাদের
নিষ্পত্তি না হয় ।

কিনিক সম্প্রদায় বলেন ভারতবর্ষীয় গবন
মেটের প্রস্তাবমুতারা ঠেই মেটেরি
আজ্ঞা দিযাছেন, যে সকল সৈন্য সম্মত পূর্ণ
হইলে ইংলণ্ডে যাইতে চাহিবে তাহাদিগকে
অধিক টাকা দিয়া এঙ্গেলীর সেনাদলে রাখা
হইবে । হুতন সৈন্য আনিতে নিম্নব ব্যয়
হয়, প্রত্যেক ব্যক্তির প্রতি ২,০০০ টাকা প-
তে কিন্তু পুরাতন সৈনিকদিগকে রাখা হইলে
ত্রিবিধ উপকার হইবে । প্রথমতঃ পুরাতন
সৈনিক সৈন্য গণ্য হইবে, দ্বিতীয়তঃ হু-
তন সেনা আনিবার ব্যয় সংক্ষেপ হইবে, ত-
তীয়তঃ ভারতবর্ষের নামে যে ১৪,০০০ সৈন্য
ইংলণ্ডে আছে, তাহাদিগকে রাখিবার আর
প্রয়োজন করিবে না । শেষোক্ত টি আশাতি
গের আশাশ্রয় ।

সরকারী সম্প্রদায় বলেন বঙ্গ প্রদেশে ঘাটে
অনেক ইষ্টরোপীয় খালসী বিবক হইয়া
নৈকালে দ্রবন করে । পুলিশ কর্মচারিদিগের
এতদ্বিবারণ অবশ্য কর্তব্য । খালসীরা এক
প্রকার অস্বাভাবিক, তাহাদিগকে দমনে
রাখিলে তাহার ঠিক পাথে চলিবে কেন ।
অস্বাভাবিকের একজন সংবাদ চ-
তা হলেন, রাওসাহেবের ভৃত্যকানিতা প্র-
কাশ হইবে না । হেরাল্ড পত্রে রাওসাহেবের
যে প্রকার সাহস ও অব্যবসায়ের বিবরণ লি-
খিত হইয়াছে তাহাতে তিনি যে যুদ্ধের কথা

ম লক্ষ্যন আশ্বিন ১২৬৯

১২৬৯ ১২৬৯ ১২৬৯

১২৬৯ ১২৬৯ ১২৬৯

১২৬৯ ১২৬৯ ১২৬৯

পুলিশ কর্মচারিরা তাহাকে ধৃত করিবার অ-
ন্য চেষ্টা করাতে সে ভয়ঙ্কর আনিতে পা-
রে । একদা দুইজন চরের সহিত তাহার সা-
কাং হইলে সে বলিল আমি জানি তোমরা
আমাকে ধরিবার চেষ্টার আঁচ, অতএব তো-
মাদিগের প্রধানের নিকটে এই চিহ্ন লইয়া
যাও, এই কথা বলিয়া তাহাদিগকে তল-
বারের আঘাত দিল । সম্প্রতি একজন
কালেক্টরের বাগীতে বাইরা তাহার সহিত
রাজস্ব ও বিচার প্রকৃতি বিষয়ে অনেক কণ
কথোপকথন করে, কালেক্টর কতকক্ষণ পলে
তাহার নাম জিজ্ঞাসা করাতে সে বলিল আ-
মি শিখ্যাত ডাকটীড শকররাম সিংহ কালে
ইস উৎকর্ষ পদ্মোতে কৃত তিযা । এক বিবল
বার পিতল লটবার চেষ্টা করাতে শকররাম
বহিল সাক্ষর তোমার পিতল ই বেঙ্গল ট-
পর আছে, সাক্ষর তোমার বাইতে চাইতে
শকররাম আঁচ জোশ পথ বাহিন হই-
য়া গেল । আশ্রয় ইংলণ্ডীয় রনিগলভের গ-
প অবগত করিয়াছি । কিন্তু ভারতবর্ষে শকর
রাম রনিগ ভাঙের নিহত নহে ।

গবর্ণমেণ্টে আজ্ঞা করিয়াছেন যে লক
ওয়াকের ব্যক্তি জন যে টাকা আশ্রয়
তাহার অতিরিক্ত টাকা দেওয়া হইবে না ।
এক মাসের চেনের টাকা জন্য আসে দেওয়া
হইবে না । পারসিক ওয়াকের অপব্যয় নিবা-
রণ নিমিত্ত কি এই চেষ্টা হইতেছে ।

প্রত্যেকের নেপালের স বঙ্গ নাতা ব-
লেন, তিক্ত মেণে কদম্বন নাশা নেপালী-
র একদা ক্রকে বধ করাতে উত্তর রাখে যুদ্ধ
হইবার সম্ভাবনা হয় । কিন্তু তিক্তদের
মেই হত্যাকাষিদিগকে নেপালে প্রেরণ
কর্তে সেট অসম্ভব গিয়াছে ।

উক্ত সংবাদমাতা আবও বলেন মংর
জলদাতার আপনার দুই প্রকৃতি ইংলণ্ড
সামরিক বিদ্যালয়ে শিক্ষা দিবার অভিলাষ
করিয়া গবর্ণর জেনারেলের নিকটে আবেদন ক-
রেন । কিন্তু গবর্ণর জেনারেল এই বলিয়া তাহার
আবেদন প্রাহা করেন নাই যে বাহাদুর কেবল
ই লগ্নেশ্বরী সেনাদলে প্রবেশ করিবেন
তাহার দুই লক্ষের সৈন্য
সেই নেপাল সৈন্য
তর আশ্রয় প্রার্থনাকে ক্রমেই সমাধে

নিকটে প্রেরণ করুন কর্তৃপক্ষীসমূহ আক্রান্ত হইয়া উদ্ভিগকে নিজ সাময়িক বিলাসের প্রবেশ করিতে দিবেন। এ উদ্ভেদে সকল দিক রক্ষা হইয়াছে।

২৮ এ আশাট শুক্রবার।

সদ্য মার্চ কনিষ্ঠের যুগ্মত্ব ২১টি ভোপ হইয়াছে। বাবড়ীর টেননে এই প্রকার হইবে।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া এডমেনশীস টিফিন্টি কিংসকে কংগ্রেস প্রার্থনিক ইংলণ্ডের গবর্ণমেন্টের নামে ভাষ্য প্রদান বিচারালয়ে নালিশ করিতে কহিয়াছেন, মহাসভা যে আটম করেন, সে আটমের বহির্ভূত কাৰ্য্য করিলে বিচারপতির তাহা রহিত করিতে পারেন। হর্গমেন্টের অধ্যক্ষেরা উল্লিখিত বিষয়ে মহাসভার রক্ত সিরমের বিকল্প কার্য্য করিয়াছেন। যাহা হইক বিচারালয়ে ইহার প্রতিবাদ হইবে না। সংসদ শেষ অন্ত্যস্ত প্রবল।

হরকর সম্পাদক দুর্ভাগ্য হিলির কয়েক খনি প্রাণনা পত্র প্রকাশ করিয়াছেন। সে চীন দেশীয় যুদ্ধে সর্বিশেষ লাহস প্রকাশ বরাতে সর রবট মেশির তাহাকে এক জন সেনাপতি করিবার আহ্বোধ করেন। সম্পাদক কি উক্ত ঐতিহাসিকের আঁবন রকার চেড়া পাইতেছেন?

এক দানী বাবু অগচ্ছ যুথোপাধ্যায়ের বাণী হইতে প্রায় ২০০০ টাকার অলঙ্কার অগচ্ছ করিয়া তাহার উপপাত্তকে দেয়। তাহাদিগকে সেনিরনে সমর্পণ করা হইয়াছে।

উপস্থান বিকল্প বিবেচনা করেন এডমেনশীসদিগকে আনিষ্টাট সরজনের পদ হইতে বহিষ্কৃত করা অন্যাগ্ন হয় নাই। ইউরোপীয় ও ইণ্ডিয়ানেরা এডমেনশীস হিন্দু টি কিংসকদিগকে যদি আপনাদিগের পরিবারের টিকিৎসা করিতে না দেন, তদর্থে তাহাদিগের দেবা দেওয়া বাবু ন। স্বর্ধর্ম পুত পুরবারে অপবিত্র লোক গমন করিলে যদি সেই পবিত্র পরিবারের অপবিত্রতা হয়, তাহা হইলে ধর্মবল কি?

২৯ এ আশাট শনিবার।

উদ্ভিগের যুদ্ধ যুদ্ধের শেষ হইয়াছে। যুদ্ধপ্রভৃতি বন্যাকারী যে উৎপাত আর

ও করিয়াছিল, সম্পূর্ণ রূপে তাহার দাপ্তি হইয়াছে। অরুণ্ডার গোলমোখ কবে বাহিবে?

হরকর সম্পাদক বলেন মুরনিমাবাদের লাকিমের নামে বেকিটাকা প্রভৃত করিবার যে অপরাধ দেওয়া হয় তিনি তাহা হইতে মুক্ত হইয়াছেন। এই সুযোগ পাইরা যে ও অব ইণ্ডিয়ানবাদেরচরিত্রে সোম দিয়ারহিসেন মা-চীনদেশে সেনা প্রেরণ সংসার অন্ত্য নয়।

সম্রাট হিন্দুস্থানী সম্পাদক বলেন যে ও অব ইণ্ডিয়ান হারদরাবাদের নবাবের বিপক্ষে প্রভৃত সকল অব দুলাক বোধ হয়, নবাবের অবমাননা করা ও কর্ণেল ডেবিডসন কে গুরীভূত করিয়া ও ফ্রেডের কোন মিলে টারী বন্ধুকে তথায় প্রেরণ করা এই সৎ প্রস্তাব লিখিবার উদ্দেশ্য।

আমেরিকার যুদ্ধের ক্রমঃ শেষ হইয়া আসিতেছে। গবর্ণমেন্টের সেনারা বিজোহী দিগের রাবড়ীর প্রধান নগর অধিকার করিয়াছে। যুদ্ধ শীঘ্র শেষ হইলেই ভাল।

নিরলিখিত মূল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ বিক্রীত হইতেছে।

৫ টাকার সিকা	১১। — ১১।
৪ টাকার কোম্পানির	১৩। — ১৩।
৫ টাকার ঐ	১০৪। — ১০৪।
৫। টাকার ঐ	১১২। — ১১২।

১০ ই জুন পর্য্যন্তের ইউরোপীয় সম্রাট।

পোর্ট ব্রান্সারিত বিজোহী সেনাব সেনাপতি ব্যাকলুকে উইকেটের নগরে আক্রমণ করিয়া পটমাক নদী পাবে বেরিয়াও হরীতভূত করিয়াছে। ওয়াসিংটনের লোকেরা অভিশ্রু ভীত হইয়াছিলেন। সেনাপতি (লিঙ্কলন) যুদ্ধ সম্পর্কে রেইলওয়ে আগনার অধীনস্থ করেন; সেনা সংগৃহীত হওয়াতে সেনাপতি ব্যাকলে সব লাহাবোর জন্য সেনা প্রেরিত হয়। বিজোহীরা উইকেটে প্রত্যাগমন করিয়াছে।

সেনাপতি মাকডুয়াল ফ্রেডারিকসমর্প হইতে রিচমন্ডে গিয়ে অগ্রসর হইয়াছেন। সেনাপতি মাকিলান হাজবার কোর্ট হাউস হইয়াছেন এবং এক্ষণে তিনি সহস্র সৈন্যের সহিত ভ্রম্য ন. অধিনী পীচক্রোণ হুবে অবস্থিতি করিতেছেন।

বিনিসিপিভিত দাঁড়ান মার্ক কনিষ্ঠের হস্তগত হইয়াছে।

টানকিন্ড সাহেব তার সুযোগেই প্রস্তাব করেন তাহা অগ্রাহ হইয়াছে। ৩০ ই জুন তাহার পক্ষ ও ৩৩৭ জন তাহার বিরুদ্ধে ভোট দাখল করিয়াছেন। হরালপৌস সাহেব প্রস্তাব যে সংশোধন প্রস্তাব করিবার সকল বিধি, তাহা পরিভাগ করিয়াছেন।

ইটালীর মহাসভা এই অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন মজিসআদারের প্রতি উদ্বোধনের অধিবেশন দাখ। ইটালি রাষ্ট্রের অস্ত্রঅপেক্ষা যার অধিক চাইতেছে, কিন্তু আর হইবার আরেক উক্তন উপায় আছে; এবং পটুয়ার সোভেট আর যারের চিনায়ে সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছেন।

করাণী সেনারা মেক্সিকো নগরের কয়েক কোশ দূরে অবস্থিতি করিতেছে। একজন অধিভ্রম্য সেনাদলকে পরাজিত করা হইয়াছে, দুজন হইতে আরো অধিক সেনা প্রেরিত হইবে।

টাইরলে অনেক অষ্ট্রীয় সেনা সমবেত হইতেছে। অষ্ট্রীয় সেনাদলে আরো অধিক হ্র ত্রিগেড (১৮,০০০) সেনা প্রেরিত হইবে; ১লা জুলাই অনবরণে রাজকুমারী জালি সের সহিত তেনিৎ রাজকুমার পুইর বিবাহ হইবে।

বিলর দেশীয় রাজপ্রতিনিধি পার্লি হইতে সপ্তমে উপনীত হইয়াছেন।

১১ই জুন জাপান দেশীয় হস্তগত হইতে ভাগ করিয়াছেন।

সোমিত নদ্র ও তারকবীর টেনিও কোম্পানির মিল হাউস অব জার্সি দ্বিবার পঠিত হইয়াছে।

১৭ই জুন লাক্সেমবুর্গ হুজ হইয়াছে। রিচমন্ডে বিজোহীরা গবর্ণমেন্ট দ্বারা এক অংশকে আক্রমণ করিয়া অনেক কান্দা প্রাণ হস্তগত করে। পর দিবস পুর্নগীর আরক্ত হস্তগত বিজোহীরা পলাইরা জা দিগের পিড়ির মধ্যে আবদ্ধ হইয়াছে। গক্টের ৭০০০ সৈন্য হস্ত হইয়াছে।

বিজোহীরা করিছ ত্যাগ করিয়াছে। টি পিডে তাহারিগের রথভরি পরাজিত হই গবর্ণমেন্ট মেক্সিকো নগর অধিকার করিয়া সেনাপতি ব্যাকল সবাগত সেনাপতিগণ পুর্নগীর পটমাক নদী পার হইয়াছেন। গবর্ণমেন্টের সেনাপতি বটলর সিউ সের জীলোকদিগের মিন্দ্রাচক এক

পত্র প্রকাশ করিতে ইচ্ছাশীল নরসংস্রোকে
তঁাদার উপর প্রিয়তম হইয়াছেন।

করাসী মৈনোরা বরাবরই অকমিকার সেনা-
বিশেষ দিকটো পরীক্ষিত হইয়াছে। ক্রীড়া বহিতে
কুতব সেনা প্রেরিত হইতেছে।

করাসী বহিরাগত রাজা ও ইংলণ্ড আ-
বেদিকার ক্রীড়া সেনা প্রেরিত হইবেন, কিন্তু আদল
বনেন, করাসীকর কবিতাভ্রম আশাভ্রমঃ এ
ইচ্ছা করি।

পোপ রোম, মধ্যপ্রদেশ-পূর্বোক্তদিককে তাঁহার
রাজ্য করতঃ নিয়ন্ত্রিত। করিবার অসুযোগ কহি-
য়াছেন। পূর্বোক্তদের। তাহাতে সন্তত হইয়া এক
যোষণা পত্র প্রচার করিয়াছেন।

টিউরিংর মহানত্বা রাজাকে এক এড্বেস দিয়া
আছে। ইটালীর দিকেব রোমে উপবে
অধিকার আছে।

সন্তত জন প্রভি, করাসীর গবর্ণমেন্ট বলিয়া-
ছেন, পোলণ্ডের যে সকল লোক ইটালিতে
পলায়ন করিয়াছে, যদি তাহাদিগকে সেনারল
কুতব না করা হয় তাহা হইলে তাঁহার। বিস্তার
ইচ্ছাএলকে ইটালির রাজা বলিয়া স্বীকার
করবেন।

লর্ডপাওয়ার্ডন মহানত্বার সেনাপতি বটল-
নের যোষণার প্রতি দোষারোপ করিয়াছেন।

এমত জন প্রভি পোপ করাসী গবর্ণমেন্টকে
ইচ্ছাছেন তিনি ইটালির রাজার সহিত সন্ধি
রিবেন না।

কুতবের সহিত সরিবার লোকদিগের
বরাহ গোলযোগ উপস্থিত হইয়াছে।

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাজালা দেশীয় সেক্টরন্টে গবর্ণমেন্ট

আদেশাভ্যাসারী নিয়োগ।

১৭ জুন—সাহাবাদের প্রথম বিভাগের জায়ে-
৩ ডেপুটি কালেক্টর এল.ডি, আবদুল সাহেব
১ লর্ড, অধি নিয়ন্ত্রণ ব্যতিক্রম বকসার
২য় জালেনের কার্যেব আব পাইচা-

৩ এ জুন—এলিডেলি কালেক্টর গণি-
সহকারী অধ্যাপক জে. এল, রিজ সাহেব
কর্ম করিয়া ক্রিয়ামিনের জন্য উক্ত
কর জ্যোতিষ ও কুতববিহার প্রতিনিধি
কেবলকি নির্বাচ করিবেন।

কোমাইলাল দে ক্রিয়ামিনের জন্য প্রে-
ব কালেক্টর বর্জী শাস্ত্রের প্রতিনিধি
হইবেন।

নিয়মিত কর্তারীরা ৩০ মে ও ৩ ই জুন
সহকারী কমিশনরের পদে নিযুক্ত হইয়া পশ্চা
লিখিত স্থানে নিযুক্ত হইবেন।

সেপ্টেম্বর ১, ই কাহেল, মওরী।

“এ, এল, ক্রিয়ামিন পোপালগাড়া।

“এল. সুই, লক্ষীপুর।

এ, ডি, জোশ সাহেব ইটা প ও টেসনবি
প্রতিনিধি জুপারিটেন্ট হইবেন।

এচ, বেল সাহেব বশোহরের ছোট আদাল
তের প্রতিনিধি জজ হইবেন। অপব, তিনি
নাগুরা, লনিয়া, কোটচাঁদপুর ও নডালকন ছোট
আদালতের প্রতিনিধি হইবেন

জে, গোপাল সাহেব বজ্রেশ্বরী গবর্ণমেন্ট
প্রতিনিধি অণ্ডব সেক্রেটারি হইবেন।

এচ, এল, ডাল্লিয়ার সাহেব তাঁহার বর্তমান
কর্ম ভিন্ন মদীয়া বিভাগেব প্রতিনিধি কমিশন
রেব কর্ম করিবেন।

১লা জুলাই—গবর্ণর জেনরলের আত্মমতি
ক্রমে সেপ্টেম্বর ১৮-৬০ আক্টর ৪২ আইন
অনুসারে নিম্ন লিখিত স্থানে ছোট আদালত
সংস্থাপিত করিলেনঃ।

১ কুজব	৭ ম টোর
২ কদমপুর	৮ পাবনা
৩ সেরাজগঞ্জ	৯ হুগলী
৪ কুমারখালী	১০ চট্টগ্রাম
৫ কবিদপুর	মেদনোপুর
৬ বাসপুরবোয়ালিয়া	১২ কটক

উক্ত আইনেব ২ ধারানুসাবে উক্ত আদা-
লতের কমডাব বিষয় নিম্নে লিখিত হইলঃ।

কুজব—ইহা সদর কুনসেকের সীমা।

কদমপুর	এ
সেরাজগঞ্জ	এ
কুমারখালী	এ
কবিদপুর	এ
বাসপুরবোয়ালিয়া	এ
মোটর	এ
পাবনা	এ
হুগলী	এ
কটক	এ
মেদনোপুর	এ

১লা জুলাই—মৌলবী মহম্মদ বাকি কুজ-
বেব ছোট আদালতের জজ হইয়া উক্ত জেলায়
প্রধান সদর আমিনের কমডা পাইবেন।

বাহু পারীমোহন বন্দোপাধ্যায় সেরাজ-
গঞ্জের ছোট আদালতের জজ হইয়া পাবনা
জেলার প্রধান সদর আমিনের কমডা পাও
বেন।

বাহু মিশ্বর বিদ্যাস কুমারখালির ছোট-
আদালতের জজ হইয়া পাবনা জেলার প্রধান
সদর আমিনের কমডা পাইবেন।

বাহু উপেন্দ্রচন্দ্র মায়ার কবিদপুরের ছোট-
আদালতের জজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধান
সদর আমিনের কমডা পাইবেন।

বাহু আবদুল হুসেন বন্দোপাধ্যায় রাজশাহীর
ছোট আদালতের জজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধা-
ন সদর আমিনের কমডা পাইবেন।

ডবলিউ, ডবলিউ সিন্ধু সাহেব নাটোবেব
ছোট আদালতের জজ হইবেন।

ডবলিউ, রাইট সাহেব পাবনার ছোট আদা-
লতের জজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধান সদর
আমিনের কমডা পাইবেন।

বাহু গকানন বন্দোপাধ্যায় হুগলির ছোট
আদালতের জজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধান স-
দর আমিনের কমডা পাইবেন।

মৌলবী মসিক্কান মন্ডল কটকের ছোট
আদালতের জজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধান
সদর আমিনের কমডা পাইবেন।

বাহু কানীকর বাব চট্টগ্রামেব ছোট
আদালতের জজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধান সদর
আমিনের কমডা পাইবেন।

সি, ডি, সিন্ধু সাহেব মোহনাজাব ছোট
আদালতের জজ হইবেন।

বাহু কানীকর মিশ্বর কুমারখালীেব ছোট
আদালতের জজ হইয়া উক্ত জেলার প্রধান সদর
আমিনের কমডা পাইবেন।

২৭ জুন—কানসির অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট
জি সিন্ধু সাহেব কোজকাবি আইন ২৩ ধ-
বানুসাবে উক্ত জেলার প্রথম প্রেসিড অধীন
মাজিষ্ট্রেটের কমডা পাইবেন।

উক্ত বিভাগেব সহকারী বেগিনিউ সববি
য়ার ১লা জুলাই অবধি সংপূর্ণ সববেগাব
হইবেন।

৩০ জুন—বজ্রপুরের অস্ত্রপাতি বাকি বা-
লি প্রতিনিধি কুনসেক বাহু মহানন্দ রায়,
১৮-৬০ আক্টর ১৫০ ধার অনুসাবে উক্ত জেলায়
ডেপুটি কালেক্টরের কমডা পাইবেন।

১লা জুলাই—বাহু গোবিন্দ
পূর্ববর্তমানের প্রধান সদর আমিন হইবেন।
৩ই জুলাই—জে, কদমপুর

কেরিক ও কমিটির একজন সভ্য হইবেন।
সেপ্টেম্বর ১ ডবলিউ হুইট আইনে প্রথম
প্রেসিড সহকারী পুলিশ জুপারিটেন্ট হইবেন।

৭ই জুলাই—এক, এচ, শিলু সাহেব বরিশা-
জেলার সাধারণ বিদ্যা শিক্ষাকার্যের কমিটির
একজন সভ্য হইবেন।

প্রেরিত।

মানাবর জীবন সোমপ্রকাশ সম্পাদক
মহাশয় সমীপে।

মহাশয়। ভদ্রক ভূতলাদি খেলপে হেনস্তাদি
কতুতে আনাচারে দীর্ঘমিষ্টায় নিমিত্ত থাকে,
পদ্মানদীও ঐক্য এপর্বাত অসুখাবস্থায় ছিল।
কয়েক দিকস অতীত হইল চক্ষু উদ্বীলন করিয়া
অন্য ১০ টি মনুষ্য দ্বারা মুখ শোধন করিয়া লই-
লেন। ধীবরেরা পদ্মার বিবস্ত্র হইতে উক্ত ১০
জন মনুষ্যকে মুক্ত করিয়া, অস্ত্রা কুমারিকারী
জীবুত বায়ু শাসনকর চৌধুরী মহাশয়ের নি-
কট উপস্থিত করে। বারু ধীবরদিগকে পারি-
ভৌবিক অঙ্গণ বর্ষাকাল পর্যন্ত নিকরে পদ্মার
মৎস্য ধরিতে আদেশ করিয়াছেন। অন্যান্য
ধীবর ও কুমারিকারিগণও ইহা শুনিয়া অস্ত্র
বর্জ্য হইল।

অহি অস্ত্রবিহীন হইল। অস্ত্রা যেত পোড়া
নীলেন কঠিনে ডাকাইত পড়িয়াছিল। হারান।
১১১৫ টাকা অপহরণ করে। জাকর গল্পের
দারোগা জালিয়া ১২ জন ডাকাইতকে ধৃত
করিয়াছে। শুনিলাম কঠিনে ডাকাইতের হস্তেও
জাকি নষ্ট পাত হইয়াছে। ল'খু।

প্রায় ২৫ বৎসর পূর্বে ঢাকার কমিসনর সা-
হেব ও ফৌজদারি মাজির মকসল আসিয়া
মাজিরগঞ্জ ডিপুটি মাজিস্ট্রেটের দাপ্তরে কো-
থ করিতে গেলেন। বেধ ফরি ঢাকার মাজিস্ট্রেট
সাহেবও মকসল আসিয়াছেন। এক পাগলে
বন্ধ, মাঠ, সাও পাগলেব দেশ। ইতি
১৮৬২ ২:৪০।

ঐক্যবিশেষে মিত্র
তাবিলাপ

জীবুত সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয় সমীপে।

এই আবার বর্জমানের ব্রাহ্মসমাজের কার্য উ-
ত্তমরূপে নির্বাহ হইয়া গিয়াছে। বর্জমানের কা-
লেক্টর জীবুত এস. এস. হুগ সাহেব এই সভায় উ-
পস্থিত ছিলেন। এখানে জীবুত বায়ু মনস্ক-
মিত্র একটি ব্রহ্মসংগীত দ্বারা সভাসদগণকে মে-
হিত করিলেন। তৎপরে উপাসনাবস্তু হইল,
উপাসনাক্তে জীবুত বায়ু চন্দ্রশিখর বসু (বাংলা
উৎসাহে উক্ত সমাল স্থাপিত হয়) একটি গুল-
ত জলীয বস্ত্রত। করিলেন। তৎপরে মনস্ক
পুনর্বার একটি সংগীত করিলেন। পরে চন্দ্র বা-
য়ু গায়োধান পূর্বক হুগ সাহেবকে কয়েক খা-
নি ব্রহ্মসমাজের পুস্তক উপঢৌকন দিলেন।

সৌভাগ্য তাহা গ্রহণ করিয়া ধন্যবাদ প্রদান করি-
য়া মনস্ক করিলেন। এই সমাজ দর্শন করিয়া জি-
মি অত্যন্ত আনন্দিত হইয়াছেন।

মাতা ডাবডুড়ী কবে তোমার সন্তান
হিগের প্রতি করুণা কটাকপাত করিবে? কবে
সকলের মনে ব্রাহ্মধর্মের বীজ অঙ্কুরিত হই-
বেক? কবে সুসংবাদ সকল একবারেই উদ্ভব
হুগ। প্রীতি হইবে? মাতা কবেই বা আসিয়া এই
দাসত্ব মুখল হুগ করিবে এবং বাণিজ্য বসন্তে
লক্ষী ইহার ভাবপার্থ্য হুগজন করিতে
সমর্থ হইবে। সত্য ধর্মের জ্যোতির অতীবে
আশাদিগের এত চুরবহা হইয়াছে।
১২ই আষাঢ় ১২৬৯।

ঐক্যবিশেষে মিত্র

মানাবর জীবুত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
মহাশয় সমীপে।

সম্পাদক মহাশয়। এপ্রদেশীয় জনগণ প্রতি
অভ্যাচারিত হুগাত শুনিয়া থাকিবেন। অস্ত্রা নি-
মক সুপরিটেওটেব মনস্ক পদাভিকরণ ও
কতিপয় ধনলিপুস্ত্র হুগ গোয়েন্দা বসনাক্তরা
লে কিকিয়াত সবণ সুজাতি করিয়া নিরত
পথেই ভ্রমণ করে। সমস্ত পাইলে কোন ব্যক্তির
গুণে উক্ত সবণ গোপনে রাখিয়া সেই গুহ-
মীতে, অথবা কোন নিগমহার হুগা পণিকের
কব তৎসমর্পণ করিয়া সেই পণিককে সবণ
অপহরণ করানিয়া অপহরণ দিয়া। হুগরিয়া
ভাংগরিগের হানে কিকি ২ উৎকোচ লইয়া
ছাড়িয়া দেয়। আসবা চতুর্দিশ হইতে সর্জন ও
ইহুগ সমস্ত গ্রহণ করিয়া। একে কতিপয়
উৎকোচভাংগ অতিগোপনে অত নাগওয়ান
সবডিগেনেন তন প্রাপ্ত মাপসায়ণ
জীবুত মৌলবি দীন মহশয় হুগ বাহাতব
ডিপুটি মাজিস্ট্রেটের সাহচর্যে কতকাল অ-
র্থলোভে হুগ ডাকাইত মনস্কগণ হইয়া
উল্লিখিত উপক্রম হুগজার হইয়াছেন।

অধুনা কলকাতার কট প্রার্থনা যে, তি-
নি উৎকোচের উচ্চপাতিবিত্ত হইয়া জালিচার
দ্বারা আদালত প্রতিক্রিয়াধনে বস্ত্রবান হউন।
২৩এ জুন ১৮৬২

কালী

জীবুত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
মহাশয়ে।

আমাদের প্রধান সমর্থক সাহেবের

মানে উৎকোচ গ্রহণের অভিযোগ হুগজার
তিনি সন্দেহ ও ভাংগ অতিগোপন তিনি
কলকাতার কলকাত হুগজার মৌলবিদ্বার
এখনও বিচার হয় নাই, বিচারের আর কাল
বিচারের জীবুত কমিসনর সাহেবের প্রতি অ-
পিত হইয়াছে।

আমাদের জজ আদালতের সেরেডাকারের
মানে উৎকোচ গ্রহণের অভিযোগ হুগজার
অভিচারক জীবুত জজ সাহেব মোকদ্দমা তিন
দিন করিয়াছেন।

এক জন চাকর সাহেব নীলার খরিদ উপ-
লক্ষে অস্ত্রা সস্ত্র হুগজার কাহারিতে বাইরা
হুগজার অনেককটুতি ও একজন পোরাফার
গণাচুরণগ্রহণ করে, হুগজার সাহেব রা-
জকীর বিখ্যাস্তারে ভাংগ (২০০) হুগ পত
টাকা দণ্ড করেন, আমাদের জজ সাহেব ভাংগ-
ক হুগ করিয়াছেন। চাকর সাহেব ইংরেজ-
ক না?

তমতে পাই আমাদের জজ আদালতের
অভ্যচারক মহাশয় জাকি উৎকোচ গ্রহণ করেন,
যদি এ জনহুগটি সত্য হয় তবে তিনি, সুশিক্ষিত
সমাজকে অপবিত্র করিতেছেন। হুগার মোক্ত
মহরণ করুন। আসিয়া জীবুত মহাশয় জজ সা-
হেবের অহুগ্রে এক জন এচওপ্রভাণ জজ
মাজিস্ট্রেট পাইয়াছি। তিনি এক জন অশুর্ক
বিচারক। ভাংগ বিচার কার্য শুনিলে কে ক-
হুগজার হুগজার। তিনি এখন সুবিচারক যে
আজি যাব্যতি সস্ত্র, জালি তার প্রতি নিমন্ত,
বাংলাকে আজি কোন কণ্ডে নিমন্ত করিয়া অ-
নাগবে মগ্ন করিতেছেন, কালি আমায় বিদা
অপদাখে সেই ব্যক্তি ভাংগ দ্বারা হুগজার
মগ্ন হইতেছে।-বিচারালয়ে মোকদ্দমার নিমন্ত
বাদী, এমিয়ারী তিনি অন্য ব্যক্তির প্রবেশকরি-
বার সাধ্য কি? হুগের হুগের বসন্ত অ-
হুগী, এক জন সস্ত্র হুগজার, কোন কার্যোপ-
লক্ষে ভাংগ আকিসে গিয়াছিলেন, তখন
সাহেব মহাশয় ভাংগ এক টাকা জরিমানা ক-
রিয়াছেন। তিনি যে সকল আবেদন পত্র গ্রহণ
করেন, তখনো যে সকল দখখাখে, ভাংগ নি-
জে হুগ দিবার ক্ষমতা নাই তাহাতেও তিনি
ইহা হুগ হুগ প্রদান করেন, আর সেই দ-
খাখে মাজিস্ট্রেট সাহেবের টেবল দিখিয়া
ভাংগ হুগজার (সাহেব কি না তবে
আর এতে দোষ কি?) আমাদের মাজিস্ট্রেট
সাহেবও হুগজার শুনিবার প্রবেশ দাখ। হুগ-
হুগজার, হুগজার এবং অন্য কতিপয় মাজিস্ট্রেট

অসচ্চিত্তে চিত্তে সন্নিবিষ্ট থাকিয়া বসিয়া
 যাই। আমাদেব এই একই মাজিষ্ট্রেট সা-
 হেব এহার বিদ্যালয়কে বিলকণ পণ্ডিত তিন
 যখন এডমসনগীতে আসিয়াছিলেন, তখন
 লে কলেজের এক জন কর্মচারীকে খাতিয়া
 খানার খতিয়ান আখতি করিয়াছিলেন, তখন
 অতিশয় হইয়াছিলেন। এডমসন গণ সন্না
 অধিষ্ঠান পণ্ডিতের পুনরায় পাঠ্য আ-
 মাদেবের অধিষ্ঠানপত্রী, এনি 'আজাদি' হইয়া-
 ছেন যে অত্যন্ত আনন্দ ভরে অনঙ্গল নরন বু-
 ধন হইতে অঙ্গ বর্ণন করিতেছেন, অধিষ্ঠান
 আশিষ্টের অধিষ্ঠান পণ্ডিতের ও মাজিষ্ট্রেট সা-
 হেবের পুনরায় কার্য করিবাব যে একটি
 রোগ প্রকাশিত হইয়াছে তাহার পাঠ্য হইয়াছে আ-
 ব আমাদেব লীমা কোথায় তিনি এখন নিয়মিত
 সময়ে কাহারী করেন।

কস্যাচিৎ অধিষ্ঠান গণিনঃ।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাশয় সমীপে।

আপনি অবগত আছেন আর এক জন
 হইল আমাদেব এই স্থানে একটি ধর্মমন্দির
 ক্রান্ত ভিক্ষণসমিতি স্থাপিত হইয়াছে। এই ভি-
 ক্ষণসমিতির সব আশিষ্টাণ্ট সারজন শ্রীযুক্ত বা-
 বু নবীন চন্দ্র মিত্র মহাশয়ের মহাশয়ান হই।
 কালনা ও তদ্বিকটস্থ গ্রামের সর্বসাধারণের বি-
 শেষত, মীন মীন সোকেব অনিচ্ছায়া পকার
 লার হইতে। কিছু মহাশয়! হুগুনের বিবর
 এই যে, ইহার উত্তরোত্তর অধিক না হইয়া ক-
 মনা হুগু হইবার উপক্রম হইতেছে। যখন তা-
 ক্রাবধানা স্থাপিত হয়, একালে গ্রামের লো-
 কেরা কিছু কিছু সাহায্য করিবেন স্বীকার করি-
 য়াছিলেন, একালে তাহা নিষেধ গেল বাইয়া-
 রি পুজাব কবির টংক ও নাটিন গণ্ডে এই নিষে-
 ধ তাঁহারা সেই মঙ্গীকৃত টংক দিয়া অস্বীকার
 করিতেছেন। আর কেব কেব বলিয়া থাকে,
 আট আনা কিংবা এক টংক, বাহিরে গিয়া দি-
 তে পারি কিছু দিব না, কেন না বদীন
 তো আমাদেব বাজিৎ আশিষ্ট।
 চিকিৎসা করিবেন না, অপব্যয় কর। এই
 গ্রামস্থ বাহিরেরা তক সাহেবের ইংরেজি ও
 লা, বিদ্যালয়ের বাহাতে অনিষ্ট হয় তাহা
 চেটোর মত হইয়াছেন। উত্তপূর্বে এক জন
 তেপুটী মাজিষ্ট্রেট এতাপ বাব দেশী আমাদে
 ব মঙ্গল চেটী, নাপাইয়া প্রাকগম্য ও মিত্র
 বিদ্যালয়ের দিকে বিদ্যালয় স্থাপন করিবাব

নিমিত্ত শপথ করিয়াছিলেন। বিদ্যালয় স্থাপন করা
 অসম্ভব নিকট বসে, লাভের অতিশয় হয়।
 ভাল বটে কিন্তু পণ্ডিত পণ্ডিত করিয়া বীণ
 অতিশয় পুণ্যকর।

এতাপ বাবুর পরিচয় আমাদেব খাতিয়া
 এক জন সৌন্দর্য হাশির আসিয়াছেন। তিনি
 অসম্ভব কণ্ঠে বিলকণ পণ্ডিতের কিছু টংক
 দাতা ভাবেন না। তাঁহাকে দুই বাহানা হই-
 তে হইতে হইবেক। অথবা সবিনয়ে পরবর্তী
 এক এই অস্বীকার করিতেছি, তাঁহারা, যেন ও
 তাহা বাবুর মত মাজিষ্ট্রেট নিষেধ না করেন।
 কিছু দিন গত হইল আপনকার পরিচয়
 পাইয়াছিলাম যে কালনার গোসাই বাবুর
 পরিচয় নামে ছেলেটি শ্রীকৃষ্ণ বলহন কবিবার
 আগ্রহে তব সাহেবের মিসল বাজিতে আসিয়া
 ছিল। তবে তাহা আমি যে তথ্য চন্দ্রবস তাহা
 যে নামক বাবুটির হস্তে আহার করিয়া প্রত্যা-
 গমন করিয়াছে। আর অনুরব হইয়াছে যে গৌ-
 সাই কী - ৪৪। আসিয়াছেন সে অসম্ভব
 যে এই খালকে গোমস্তাক করাইয়া জাতি-
 তে তুলিবেন।

গ্রাম ৩ বর্ষ কাল এখানে সর্বের অতিশয়
 প্রচুরতা হয়। গত বর্ষাবের এক নবন যুগ
 প্রচুরতা হইয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে। এখানে
 এতাহ হইতে হইতেছে। পলায়ন জন ক্রমশঃ হ্রাস
 হইতেছে, পশ্চিমাঞ্চলের মৌক্য আমদানি
 তুলন কলাই তামাক এবং অন্যান্য ত্রব্য পুষ্ক।
 পোকা প্রভৃতি হইতেছে। হিচকে চোবের
 মল হ্রাস হইতেছে, বিশেষতঃ আজি কালি কী
 টাল চোবটা কিছু অধিক হইয়াছে। মহাশয় প
 লিখিব কি সংশোধন হইবে না? বাস্তব জম্ম
 বিধার জনা আজি কালি বাজিৎ হইতে বাহির হই-
 য়া ছাড়ব। আমাদেব চৌকী ও উনকমটেক
 দিতে দিতে প্রাণটি গেল।

এক পাঠক

মানাবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাশয়ে।

সর্বদা নিবেদন সম্পাদক মহাশয়! সংগ্রহিত
 গ্রন্থের প্রাণত্যাগ অসীত হওয়াতে আমি মথো
 মথো মথিতে আশ্রয় লইয়াছি। এই একট
 ৬০ লক্ষিকা - অমণ কবিতা, আসিয়াছি।
 হুগু হুগু পত্র লিখিব। প্রথমতঃ বেইলগু
 তাহা ১৩০ লক্ষিকাভোগ করিয়া আসিয়াছি তা-
 হা লিখিব প্রথম হইলাম। বেইলগু
 কথ্য বিদ্যা প্রতিপাদ্য দোষায় কব। বিশেষতঃ
 তাহা ১৩০ লক্ষিকাভোগ করিয়া আসিয়াছি তা-
 হা লিখিব প্রথম হইলাম। বেইলগু
 কথ্য বিদ্যা প্রতিপাদ্য দোষায় কব। বিশেষতঃ
 তাহা ১৩০ লক্ষিকাভোগ করিয়া আসিয়াছি তা-
 হা লিখিব প্রথম হইলাম। বেইলগু

প্রকাশ করে। প্রথমতঃ ক্রিয়াকর্ম মহাশয়
 টিকিট কর করিতে হয়। তাহার হস্তে পা-
 দিলে তিনি সুনির্ভর আশিষ্ট।
 পুষ্কিত তাহান পুষ্কিত। বিলকণ পণ্ডিত
 প্রাণত্যাগ এইকণ পণ্ডিত পাড়িতে উঠি।
 পণ্ডিত বিলকণ পণ্ডিত পাড়িতে উঠি।
 হুগু হুগু আদে ১৩ এক পাড়িতে উঠি।
 অধিক উঠিতে পারিবে না কিন্তু পণ্ডিত বাবা-
 জিয়া এক এক পাড়িতে ৩০। ৩৫ জন করিয়া পু-
 রিয়া ১৩০, তাহাতে অস্বীকার করিলে বিলকণ
 উত্তম মধ্যম দ্বিগুণাকেন, শুনিতে পাই আপত্তি
 করিলে সাহেবেরা বলেন বাহারী তত্ত্বলোক তা-
 হা ১৩০ উত্তর প্রাণের পাড়িতে ব'র কেন?

১৩০ মত মতল তত্ত্বলোকটি কি সমান মজি
 মত। আর বাহারী উত্তর প্রাণের পাড়িতে বাহ
 ১৩০। মজি বাহ নহ। মজি বাহিনী তাহা দিগে-
 ১৩০ এক এক মতল ও অধিকার আছে তা-
 ১৩০ দিগেব তাহাও নাই, বাহ ১৩০ একমটি বি-
 খাত তত্ত্বলোক ১৩০ নবীনচন্দ্র মিত্র তাহা
 কো ১৩০ পেই রেইলগুদেব পাড়িতে বাহিনে স্বী-
 কার করিতে নাই। তিনি বলিতেন ওখানকার
 কণ্ড ১৩০। সোকেব এতি অত্যন্ত অত্যাচার
 হস্তে আসি তাহা দেখিতে গাতিব না কিছু
 পায়। আনাত ওরূপ মত নহ কব। আমাদেব
 ১৩০ কব। দুই একটি দোষ বাহু কব।
 ১৩০ যত ১৩০ হুগু হুগু মতলপাড়ে
 ১৩০ তাহা কিংবা হুগু হুগু (যেমন চন্দ্র
 ১৩০ কব। তাহা কব। দোষব।

মূল্যপ্রাপ্তি।

১২৩৪ আ ৩ ৩ইতে ৭০ টাকার পত্র	কোং ১০
১২৩৫ বাব ১০০ টাকার পত্র	কোং ১০
১২৩৬ মঙ্গল পত্র	কোং ১০
১২৩৭ বাব ১০০ টাকার পত্র	কোং ১০
১২৩৮ ১৫ই আ ১০০ পত্র	কোং ১০
১২৩৯ অধিষ্ঠান মত	কোং ১০
১২৪০ টাকার অধিষ্ঠান কার্তিক পত্র	কোং ১০
১২৪১ অধিষ্ঠান মত	কোং ১০
১২৪২ টাকার অধিষ্ঠান কার্তিক পত্র	কোং ১০
১২৪৩ অধিষ্ঠান মত	কোং ১০
১২৪৪ টাকার অধিষ্ঠান কার্তিক পত্র	কোং ১০
১২৪৫ অধিষ্ঠান মত	কোং ১০
১২৪৬ টাকার অধিষ্ঠান কার্তিক পত্র	কোং ১০
১২৪৭ অধিষ্ঠান মত	কোং ১০
১২৪৮ টাকার অধিষ্ঠান কার্তিক পত্র	কোং ১০
১২৪৯ অধিষ্ঠান মত	কোং ১০

এই পত্র লিখিত হইয়াছে পুষ্কিত মতল
 ১৩০ মতল মতল ১৩০ মতল
 ১৩০ মতল মতল ১৩০ মতল
 ১৩০ মতল মতল ১৩০ মতল

সোমপ্রকাশ

“একজন মানুষের মতামতের পরিধি: সমস্ত মানুষের মতামতের মত।”

৪ ভাগ।
৩২ পৃষ্ঠা।

{ সন ১২৬২। ৬ আশ্বিন। ইং ১৮৬২। ২১ জুলাই }

মাসিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

২৩ দিন ইটল বজাতিয়া কবির ত্রাচরণ
৮/১ প্রণীত মধ্যকার্য নামে যে এক মনোহর
পদ্য গ্রন্থ প্রচারিত হইয়াছিল তাহা এইকালে
চুপাণ্য হওয়াতে আমি তাহা পুনর্প্রকাশিত
করি। সাধারণ জনগণের গোচরার্থে প্রকাশ
করিয়াছি। মধ্যকার্য অতি শুল্কিত ইহা
সমন্বিত করিলে অথবা পাঠ করিলে সন্তোষ
চমৎকৃত হইতে হয়। মধ্যকার্য অনেক
স্থান পরিভ্রমণ ও পরিব্রজিত হইয়াছে যে
সকল স্থান অসংখ্য ও অপরিমিত ছিল। এ
সকল স্থান, সংখ্যক সন্নিবেশিত করিয়া
দিয়ে সাধ্যমত প্রায়শ পাঁচশত। এই পুস্তক
স্থানান্তরিত দিন শত পৃষ্ঠ হইবেক। ইহা মূল্য
১৫০ টাকা, আশ্রয়করিত প্রতি ১০। গ্রন্থে
মহাশয়েরা সিংহ পেমটার আদিত আমার
নিকট আত্মসন্ধান করিলে প্রাপ্ত হইবেন।

ঐনবীনচন্দ্র দত্ত।

সোমপ্রকাশ।

৩ই আশ্বিন সোমবার।

ইনকম টাকার প্রতি আভ্যচার।

অর্থরূপে হওয়াতে প্রকাশের নিকট
হইতে কিছু কিছু লইয়া অসম্মতি দূর
করিবার উদ্দেশে গবর্ণমেন্ট এ দেশে ইন
কম টাকার প্রবর্তিত করিয়াছেন, কিন্তু কর্ম
চারিরা অতি লোভে উপন্যাসপ্রসিক্ত
বর্ণময় অণ্ড প্রসবকারিণী হংসীর প্রাণ
বধের ন্যায় একবারে প্রজাতির আরম্ভ
বিনাশের চেষ্টায় আছেন। আমরা পূর্বে
রাজকর্মচারিদিগের এই লুপ্তকার্য কয়েকটি
উদাহরণ প্রদর্শন করিয়াছি, সম্রাতি কুমার

শালি, পাবনা প্রভৃতির মহাজনগণ এতৎ
সংক্রান্ত যে এক বাণী পত্র পাঠাইয়াছেন
নিম্নে প্রকৃতি হইল, তাহা বর্ণন করিলে
পাঠকগণ আর একটি উৎকৃষ্ট উদাহরণ
প্রাপ্ত হইবেন।

মহাশয় জেলা মফসসব ও পাবনার অধীন
কুমারখালী প্রভৃতি স্থানের মহাজনগণ প্রথম
বৎসরে ইনকম টাকার বণন প্রাপ্ত হইলে
উদাহরণের যে যে লক্ষণ প্রাপ্ত হইল তাহা
কর্মচারিদিগের আর একত্র করিয়া উক্ত বৎসরে লিখিয়া
দিয়া আসেন। মহাজনগণের নিকট অর্পণ
করেন। তাহাতে পত্র অংশী ও অংশভাগী
কর্মচারিদিগের লাভের টাকার নামে না
বের কারবার তাহার নিজের যে বখাৰ আর
তাহাই লিখিত হয়। জেলার কালেক্টর সাহেব
এ রিটার্নের লিখিত আরের উপর কিছু কিছু
অতিরিক্ত খরচ আসেন। তাহাও প্রতি আ-
দায়ের তার অর্পণ করেন। মহাজনেরা তাহা
বৎসর আপনাদিগের প্রসিদ্ধি অর্জন হইতেছে
লিয়া অগতি উপাশন করিলে তাহা অগ্রাহ্য
হইয়া কালেক্টর সাহেবের নির্ধারিত টাকার
লক্ষ হইয়া তাহার স্টিকিট ও রসিদ পাও-
য়া হয়। দিনাজপুর ও কলিকাতা প্রভৃতি যে
যে স্থানে মহাজনগণের গদি আছে, তথাকার
আসেসরদিগের নিকট এই সকল স্টিকিট
ও রসিদ প্রেরণ করা হয়, কিন্তু কলিকাতার
আসেসর কলিকাতার বাণিজ্যের আর পাবনা
প্রভৃতি স্থানে প্রদানের প্রবণ হওয়া এই সক
ল আসেসরের দত্ত স্টিকিট ও রসিদ
অগ্রাহ্য করিয়া কেবল মহাজনগণের বাজার
সমূহের উপর দৃষ্টি করিয়া অন্যত্রকণে কা

তার নিকট ৫০০ কাহার নিকট ৭০০ কাহার
নিকট ১১০০ শত টাকা পর্যন্ত আদায় করিয়া
লইয়াছেন। ওদিকে দিনাজপুরের কালেক্টর
সাহেব মহাশয়ও তথায় প্রেরিত এই সকল
স্টিকিট ও রসিদ অগ্রাহ্য করিয়া উক্ত
স্থানের প্রতি মোকাবে ১০০ শত টাকা পল্লি
মাণে কাহার নিকট ২০০ কাহার নিকট ২৫০০
কাহার নিকট ৩০০০ হাজার টাকা বলা পূর্বক
আদায় করিয়াছেন। ইহার মধ্যে আরো কিছু
বিশেষ অভিচার আছে। যে সকল মহাজন
উল্লিখিত টাকা সহসা সংগ্রহ করিয়া দিতে
অসম্মত হইয়াছিলেন, তাহাও তাহাদের কাহার
৩০০০ হাজার টাকা টাকার খরচ হয়, তাহার
প্রতি শতে ১০ টাকা হিসাবে খরচ খরচ
৩৩০০ শত টাকা পাওরানা করিয়া ৩৩০০
শত বণী চাউল নীলামে বিক্রয় করিয়া
রাছেন। উক্ত চাউল পরিমাণে ৩০
বণ, খলিয়া ৩৩০০ শতট। বাহারের সমুদায়
বিনয়ের আর খরচ ৪০০। ৫০০ অথবা ৭০০
শত টাকা টাকার নির্ধারিত করা হয়,
তাহাও তাহাদের নিকট হইতে আর ৫০০
হাজার টাকা অন্যত্রকণে আদায় করিয়া
লওয়া হইয়াছে। বিশেষতঃ দিনাজপুরের
চাউলের বজা নীলাম করিয়া এই টাকা আদা-
য় করিতে, মহাজন লোকেরা নিভাত হত্যা
হইয়াছে। এক লক্ষ পচিশ হাজার টাকা আর
না হইলে ৫০০০ হাজার টাকা টাকার হইতে
পারে না। কিন্তু বাহার এক লক্ষ পচিশ হা-
জার টাকা বাড়ি মূলধন, তাহার নিকট হইতে
৫০০০ হাজার টাকা টাকার আদায় করিয়া ল-
ওয়া হইয়াছে, ইহার অপেক্ষা অন্যত্র আর
কি আছে? মহাজন কানুনগোর পদতি এই,

দেবদাসী ১০০ টাকা টাকা লইয়া ২০
সহস্র টাকাতে তাহার দুই লক্ষ টাকার সমস্ত
৩০। দেবদাসী এই সমস্তের উপরে দুইপাশ
করিয়া টাকা পাঠ্য করি। অত্যন্ত অস্বস্তি
বর্ণন সম্পন্ন নাই। এবং সর্বত্র পূর্ণ বৎসরের
গৃহী। টাকার পরিমাণে এবং নিজ পাঠ্য
কোন কোন ব্যক্তির নামে বিত্ত ও বিত্ত
পরিমাণে টাকা গ্রহণের নোটস দেওয়া হই-
য়াছে। গত বৎসরে মহাজন লোকের কাণ্ড
হওয়া দূরে থাকুক, বৎসর হইতে ৮ আনা
৮১০ আড়াই আনা করিয়া ক্ষতি হইয়াছে।
ইহাতেও যদি ঐক্য অন্যায় করিয়া টাকা
আদায় করা হয়, তাহ হইলে মহাজন বর্গ
অতিবাহিত হইলে সন্দেহ নাই।

কুমার খালি পান
প্রতিভা মহাজনগণ

মহাজনগণের স্থানে স্থানে যে যে কার
বার আছে, তাহারা সে সমুদায়ের আর
একত্র গণনা করিয়া ইনকম টাকার করমে
লিখিয়া দিয়াছিলেন, এই তাঁহাদিগের
অপরাধ! এই অপরাধে তাহাদিগের মূল
ধন পর্যন্ত ঘাইবার উপক্রম হইয়াছে।
তাঁহাদিগের রক্ষারও কোন উপায় নাই।
কি কালেই বা আসে সর্বত্র কেহই তাহা
দিগের বাক্যে বিশ্বাস করেন না। আমরা
যে পত্র খানি উপরে প্রকাশ করিলাম,
তাহাতে যে প্রকার অত্যাচারের কথা লি-
খিত হইয়াছে, কিছু দিন একপ হইলে
মহাজনগণ কতকাল বাসায় চালাইতে
পারিবেন? প্রধান পুরুষদিগের কর্তব্য,
হয়, মহাজনদিগের আবেদন অবগত করিয়া
তাঁহাদিগের প্রতি যে অত্যাচার হইতেছে,
তাঁহার বিচারণ করেন, নহু। এতকালে
ইনকম টাকার রহিত করেন। এককালে
ইনকম টাকার রহিত করাই প্রয়োজন।
কিন্তু পক্ষ মাত্র থাকিলে অত্যাচারের নি-
বৃত্তি হইবে না। আমাদিগের এই ক্ষে-
ত্রে হইতেছে, লেড সাহেব এই ক্ষেত্রে
আমাদের ইনকম টাকার উদ্ধার চেষ্টা
করিয়া নাহে। এরূপ বণিকগণের ও

অত্যাচার ব্যাপ্তি
এবং সুবিধা আছে
এক করিলেন।

চিহ্নিত চিহ্ন-সকল ও

সেই ৩০-২০

লার্ড মেকলি ১৮৮১

যে ব্যক্তি সর্বদা ১৮৮১ ইংলণ্ডের
অধীশ্বর চতুর্থ উইলিয়ামের দ্বারা
সভা ইংলণ্ডের ১৮৮১
বায়ের প্রকার ১৮৮১ পাইবার অধি-
কার দেন। ১৮৮১ ১৮৮১
শীর্ষদিক চিহ্নিত চিহ্নসকলের পদ
তবে অধিকার ১৮৮১ ১৮৮১
করে মৃতদেহ ১৮৮১ ১৮৮১
ল যে দুটি ভূত করা হয় একপ নহে, সি-
বিল সর্বদা প্রত্যাশীকার দান কর
দেশীদিগের দ্বারা একটি কল্যাণ দ্বারা উ-
ল্লিখিত বহিরাগত ও ১৮৮১ ১৮৮১
অধিকারের মধ্যে চিহ্নিত চিহ্নসকল পদ
লাভের অধিকারকেই আমরা প্রদান জ্ঞান
করিয়া থাকি। মান, সম্মান ও বেতন প্রকৃ-
তির বিষয় চিন্তা করিলে সিবিলিয়ান পদ
আমাদিগের অত্যন্ত আদরের সন্দেহ নাই,
কিন্তু উক্ত চিহ্নসকল পদ ইহা অপেক্ষা
কোপকারক। তারতবর্ষে রাজনীতিজ্ঞের এ-
ভাবে নাই। আইন বিষয়ে এতদেশীয় অধি-
কারণ অচিহ্নিত কর্মচারী সিবিলিয়ানদি-
গের অপেক্ষা নিকট নহেন। সভা ১৮৮১
বলিতে কি, আমাদিগের অনেক উপুটি
মাজিষ্ট্রেট ও সদর আলা। যেকপে কাজ
করিয়া লক্ষ প্রতিষ্ঠা ও লোকের বিশ্বাস
ভাঙন হইয়াছেন, অনেক সিবিলিয়ান সে-
কপ হইতে পারেন নাই। কিন্তু বিজ্ঞান
শাস্ত্রের বিষয়ে একপ নহে। তারতবর্ষে বি-
জ্ঞান শাস্ত্রের অধিকতার উন্নতি হয় নাই।
অত্যাচার চিহ্নসকল বিদ্যালয় সকলে অল্প
মাত্রই শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে। তারত
বর্ষের কোন স্থানে এডিনবর্গ অথবা পারি-
সেব ন্যায় চিহ্নসকল বিদ্যালয় অনুশীলন

হইতেছে। এ দেশের কয় জন চিকিৎসক
উদ্ভাবনী শক্তি প্রদর্শন করিয়া কোন মূ-
তনবিধ বিদ্যেয় আবিষ্কার করিয়াছেন।
বিজ্ঞানশাস্ত্র কোন বিষয়ে তাঁহাদিগের
নিঃসঙ্গী হইয়াছেন। এ দেশে প্রায়
তাঁহাদের সঙ্গী কোন জ্ঞান নাই, এ কথা
অস্বীকার করি। বিজ্ঞান শাস্ত্রের অধিকতার
অনুশীলন হইতেছে না, বলিয়াই এতদ্ভা-
গুণের ক্ষতি দেখা যাইতেছে না।

দেশীদিগের চিহ্নিত চিহ্নসকল
পদ লাভ পদ অল্প থাকিলে উক্ত পদ
লাভে শিক্ষা করিয়া চিহ্নসকল লাভ
শেষ দুইপদ হইলে, আমাদিগের এই
এক মর্মেই প্রাণ ছিল। কিন্তু সেখানে
প্রত্যাশীকারের নিষেধ হওয়াতে আমরা
নিঃসঙ্গ হইলাম ও লক্ষ্যহীন হইয়াছি।
এখন আমরা কেবল বিদ্যালয় হইয়া
ইংলণ্ডগমনার্থী হইলে না, উক্ত পদ,
অধিক মান ও অধিক বেতন লাভ লোভ
বিদ্যা শিক্ষার একটি প্রাণী দীক্ষার বি-
ভাব। কেবল বিদ্যার জন্য বিদ্যা শিক্ষা
করেন একপ লোক অতি দীন।

যে দিন ভারতবর্ষী। রাজকীয় সেনা
দল একত্রিত হয়, সেই দিনই আমাদিগের
উল্লিখিত অধিকার হইতে বঞ্চিত হইলেন
আমরা আরও হইয়াছে। তাহারা আমাদি-
গকে অধিক করিয়াছেন, তাহারা আমাদি-
গের শাণীরিক দোষকে উদ্ধার কারণরূপে
নির্দেশ করেন। কিন্তু অনেক প্রধান
চিকিৎসক ও বিষয়ে যে মত প্রদান ক-
রিয়াছেন, তাহারা উল্লিখিত বাক্যের অল্প
লক্ষ্য নাই প্রতিপাদিত হইয়াছে। শরী-
রগত অপটুতা যদি প্রতিবন্ধক না হইল,
তবে আর কি অন্য প্রতিবন্ধক? তবে কি
বর্ণভেদ প্রতিবন্ধক? ইংলণ্ডের শরীর যৌ-
না পত্র এ বিষয়ে আমাদিগের সহায়তা
করিতেছে। উহাতে যেত, পীত, রক্ত ও
লোহিত প্রভৃতি কোন বর্ণের কথা নাই।
তাল ইউরোপীয় দলে যেন না হইল, সি

পাহী দলে চিহ্নিত আসিষ্টাণ্ট গভ লাত
ন হয় কেন? এখন পর্যন্ত এক লক্ষ
ত্রিশ সত্তর সিপাহী আছে : তাহারাও
কেবল ভারতবর্ষে থাকিবে। এই দলে এত
দেশীয় দিগকে নিযুক্ত করিলে শেষ কি?
দলার জেলায় এ দেশীয়দিগকে সিবিল
সহকারী না করাই বা হয় কেন? ইউরো
পীয়দিগের কেহ কেহ এদেশীয় চিকিৎ
সকগণকে আপনাদিগের গারিবরের চি
কিৎসা কার্যে নিয়োজিত করিতে অস
ম্মত : ইহাতে পারেন বটে, কিন্তু তাহারা
সংখ্যান অধিক হইবেন না; যদিই বা অ
ধিক জন, জেদি অথবা সম্প্রদায় বিশেষের
কুসংস্কারের অনুরোধে এতদূর জাতিকে
এককালে একটা মহত্তর অধিকার হইতে
বঞ্চিত করা কোন ক্রমেই বিবেচ্য হয় না।
দণ্ডনীয় বিষয়ে ইউরোপীয়েরা মকদ্দম
আদালতের অধীনস্থ। তাহারা এই মুক্তি
তত্তবে বলুন না কেন যে এ দেশীয় যুন
সেকদিগের নিকটে তাহাদিগের বিচার
না হয়। গবর্ণমেন্ট কি ইউরোপীয়দিগের
কুসংস্কারকে প্রজ্ঞা দিবার উদ্দেশ্যে এ দে
শীয়দিগকে যুনসেকি পদ হইতে বঞ্চিত
করিবেন? আমরা চ্যুত হইলাম উত্তরীয়ান
রিকমর সম্প্রদায় ইউরোপীয়দিগের উল্লি
খিত কুসংস্কারের প্রজ্ঞা দিয়াছেন। যে
রাজনীতি জেদিবিশেষের কুসংস্কারের অনু
বোধ বন্ধ করে তাহা নির্দোষ ও প্রশং
সনীয় নহে। যে বিষয় বিশুদ্ধ রাজনীতির
অনুমোদিত, তাহা কখন বিশুদ্ধ ধর্মের
অননুমোদিত হয় না। তাহারা ধর্ম তেদ
প্রদর্শন করিয়া রাজনীতি বিষড়িত ও বি
কলিত করেন, তাহারা যথার্থ রাজনীতিজ্ঞ
নছেন। যিনি ভারতবর্ষের শুভাকাঙ্ক্ষী
এবং যিনি দেশীয়দিগের প্রতিনিধি বলি
য়া পরিচয় দিতে উৎসুক, তাহার এ সক
ল বিষয় বিবেচনা করিয়া লেখা কর্তব্য।
হিন্দুপেট্রিয়ট এই জম্মাই ভারতবর্ষীয়দি
গের প্রতিনিধি বলিয়া পরিগণিত ও আদ
রের পাত্র হইয়াছেন।

বোম্বাইয়ের পারসী ও হিন্দুরা উল্লি
খিত অধিকারের পুনরুত্থান বাসনায় পালি
য়ামেন্টে মহাসভায় আবেদন করিয়াছেন।
মন্ত্রাজ ও বঙ্গ দেশের লোকদিগেরও এ
বিষয়ে উৎসাহী থাকি বিবেচ্য নহে। এব
ধি বিষয়ের নিমিত্ত পালিয়ামেন্টে যে
আবেদন হয়, তাহাতে একটি মহতী ক্রটি
হইয়া থাকে। তিন প্রেসিডেন্সির এক
এিত হইয়া এই সকল আবেদন করা কর্ত
ব্য। তাহা হইলে আবেদনের ভাব গুরুতর
হয়। ভারতবর্ষীয় সভা কি কখন বোম্বাই ও
মাদ্রাজের সভাকে এ বিষয়ে পরামর্শ না
দেন : বর্তমান আবেদন দ্বাৰাতে এ দেশের
গাভতীয় প্রেসিডেন্সি হইতে যুগপৎ প্রেরি
ত হইল। ভারতবর্ষীয় সভা তদ্বিষয়ে সবি
শেষ গল্প বন্ধন। উল্লিখিত অধিকার সান্তে
র জন্য আমাদিগের যত দূর সাধ্য চেষ্টা
করা উচিত। যদি ভারতবর্ষের সমুদায়
লোকে একত্র হইয়া এ বিষয়ে প্রতিবাদ
করেন, ইংলণ্ডায় গবর্ণমেন্ট কোন ক্রমেই
আপনাদিগের অন্যায় ও অমর্থ যুনক আত্মা
অপরিবর্তিত রাখিতে সক্ষম হইবেন না।

পতিতভূমি বিক্রয়

এই বিষয়টি যেমন আমাদিগের অতীত
গবর্ণরজেনরলকে শেখাবস্তায় শ্রীযুক্তিকারি
দিগের প্রিয় পাত্র করিয়াছিল, তেমনি আ
বার যুগ্মত গবর্ণর জেনরলকে ঐ মহাপুরুষ
দিগের বিবেচ্য বিষয় করিয়া ভূমিতেছে।
লাড ক্যানিংয়ের সময়ে পতিত ভূমি বিক্রয়
প্রতিজ্ঞা সিদ্ধ প্রায় হইয়াছিল, শ্রীযুক্তিকারি
দিগের আনন্দের পরিদীপ্ত ছিল না।
কিন্তু লর্ড এলগিন হইতে তাহাদিগের
মনোরথ পূর্ণ হইবার ব্যাঘাত হইয়াছে।
শেখোক্ত লর্ড আপাততঃ পতিতভূমি বি
ক্রয় বন্ধ করিয়া দিয়াছেন, শ্রীযুক্তিকারি
দলের কোপ সীমাতীত কায় হইয়াছে। ভার
তবর্ষের ভূমিতে ইহাদিগের মিডান্ত লোক
দৃষ্টি পড়িয়াছে। ইহাদিগের অন্ত্যাবস্তু

সংগে লর্ড ক্যানিং পতিত ভূমি বিক্রয়ের
প্রতিজ্ঞা প্রকাশ করেন। যে দিবস লাড
এলগিন কলিকাতায় আসিবেন, সেই দৃত
শাসনকর্ত্তা এইবিষয়ের বিল ব্যবস্থাপক
সভায় অর্পণ করিয়া তাহা শীঘ্র বিধিবদ্ধ
হইবার অভিপ্রায় প্রকাশ করেন। এবিধ
য়ের শীঘ্র নিষ্পত্তি হয়, লাড ক্যানিংয়ের
একান্ত ইচ্ছা ছিল, কিন্তু নামা কারণে এ
বিষয় স্থগিত রহিয়াছে।

আমাদিগের ভূতপূর্ব শাসনকর্ত্তা পতি
তভূমি বিক্রয় করিবার যে আত্মা দেন,
শ্রীযুক্তিকারি দল ব্যতিরিক্ত অন্য সকলে
তাহাতে সম্পূর্ণ অনুমোদন করেন নাই।
পতিতভূমি বিক্রয় করিবার উদ্দেশ্য কেবল
কি গবর্ণমেন্টের ধনগার পরিপূর্ণ করা
অথবা ইহার অপেক্ষা আর কিছু অধিক
উদ্দেশ্য আছে। বন পূর্ণ ভূমি সকল
পরিষ্কার করিয়া ভারতবর্ষের শ্রীযুক্তি
সাধন করা কি মুখ্য উদ্দেশ্য নয়? যদি
তাহা হয়, তাহা হইলে লাড ক্যানিংয়ের
পতিতভূমি বিক্রয় করিবার আত্মা নিন্দো
বনহে। আট সাত্বে প্রকৃতি ভার
তবর্ষীয় ভূমির বিশেষত্ব ব্যক্তিয়া বলেন,
মালাক্কা, সুন্দরবন প্রভৃতির ভূমির ন্যায়
এই সকল ভূমি বিক্রয় করিবার সময়ে
ক্রেতাদিগকে এই প্রতিজ্ঞাপাশে বদ্ধ করি
য়া লওয়া কর্ত্তব্য যে, যিনি যে ভূমি লই
বেন, তাহাকে যত্নে বৎসরের মধ্যে কি
য়দংশ পরিষ্কৃত ও কথিত করিতে হইবে,
নচেৎ গবর্ণমেন্ট ভূমি বাজেআপ করিবেন,
“শ্রীযুক্তিকারীরা” ইহাতে সন্তুষ্ট ছিলেন
না এবং লাড ক্যানিংও তাহাদিগের প্রা
র্থনা পরিপূর্ণ করাই জেয়সাধন জ্ঞান ক
রেন। তাহারা মীল ও চা প্রভৃতির উৎপ
াদন কার্যে ব্রতী হন, তাহাদিগের যত্ন
ধন থাকে, তাহা এক্ষণে তাহার অবিদিত
নাই। তাহারা প্রথমে কিলিৎ টাকা কড়
করিয়া কাজ আরম্ভ করেন, শেষে
চাঁস প্রভৃতির উপরেই নির্ভর। আট

সাধে প্রভৃতির অনুমোদনক্রমে নিম্নলিখিত
প্রথা অবলম্বিত হইলে কেন্দ্রীয় প্রদেশে
অনেক টাকা সংগ্রহের আশংকা করে।
যাঁহারা সেই আশংকা অর্থ সংগ্রহ করি-
কাথো প্ররুদ্ধ হইতে পারেন, তাঁহাদিগের
দ্বারাই দেশের কল্যাণ হইবার সম্ভাবনা।
কিন্তু ঐরুক্তিকারিদলে তদুপ লোকের
সংখ্যা অল্প। সুতরাং গবর্ণর জেনারেলের
মন্ত্রিদলের মধ্যে এ বিষয়ে সর চার্লস
স্মিথ লুড এ. গিন এ বিষয়ে সর চার্লস
উডের মত গ্রহণ প্রতীক্ষা করিয়াছেন।
রাজপুরুষেরা তারতম্যে যে সমস্ত মুতন
মুতন বিধি নিবেদন করিয়াছেন তাহা তার
কেন্দ্রীয় প্রদেশে সাধারণ লক্ষ্য করি-
য়াছেন। ইহা, মন্ত্রিসভা এই অনুমোদন
করিয়া আসিতেছি। কিন্তু অত্রতা রাজ
পুরুষেরা সকল সময়ে এই নিয়মের অনু-
সারে কায়া করিতে পারেন না। তাঁহারা
কোন বিশেষের ভয়ে রাজনীতির অননুমো-
দিত অনেক কায়া করিয়া থাকেন। একপ-
ক্ষীয় সর চার্লস উডের হস্তাধীন তার
চলনের মতল কেতু সন্দেহ নাই। সর চার-
্লস উড বলেন, পলীগ্রাম মধ্যে যে সকল
পতিত ভূমি আছে, তাহা সাধারণের গো-
চারণের স্থান ও সাধারণ সম্পত্তি, অতএব
তাহা বিক্রয় করা বিধেয় হয় না। তাহারা
সাধারণের স্বত্ব হানি হইবার সম্ভাবনা।
পূর্বত প্রভৃতি স্থানে যে সকল বন পূর্ণ
ভূমি আছে, তাহাই বিক্রয়ের যোগ্য।
আমরাও এই বাক্যে অনুমোদন করি।
কলকাতা আমাদিগের অভিপ্রেত এই, পূর্বত
সর চার্লস উডের যে সকল ভূমি পতিত আছে,
তাঁহাই ঐরুক্তিকারিদিকে দেওয়া হয়
এবং তাহারা তাহা লইয়া কলিকাতা নগর
প্রদেশ। ঐরুক্তিকারিদিগের সচরাচর যে
কলিকাতা প্রদেশে পাওয়া যায়, তাহাদি
গের প্রদেশ, নগর ও জনপদে বাস করিতে

সকল স্থানে বাস

উক্ত প্রদেশে বাস করিতে। পূর্বতদিগের
অধিক এই, ঐরুক্তিকারিদিগের দোরাধ্য
তাহাদিগের বাস করা তার হইবে এবং
ঐরুক্তিকারিদিগের অনিষ্ট এই যে পূর্ব
বাসিদিগের সংসর্গে ঐরুক্তিকারিদিগের
শাখারিক ও মানসিক উত্তমদিব বলে
ক্রমশঃ হ্রাস হইয়া যাইবে।

নীল প্রদান প্রদেশের প্রজা

দিশের বই

এ হস্তান্তর দিগের কি কন্টের শেষ
হইবে না? হস্তান্তর হস্তান্তর ইহার
অন্যতর উৎসর্গ না হইলে বুঝি রাজপুরু-
ষেরা উহাদিগের বিবাদের মীমাংসা করি-
বেন না। উৎসর্গ হইতে প্রত্যাহা হইবে,
যেহেতু তাহারা চর্চল। নীল সংক্রান্ত
যত মকদ্দমা হইয়াছে ও হইতেছে, তাহাব
সমুদয়েই প্রায় বিচারপতিদিগের পক্ষ
পাতিত; ও অনতিদূর স্বাক্ষর প্রকাশ পা-
ইয়াছে। আমরা পূর্বে শুনিয়াছি, এমনও
শুনিতোছি কোন কোন ডেপুটি কালেক্টর
অন্যায় করিয়া ডিক্রি দিয়াছেন, কোন
কোন মজিস্ট্রেট সামান্য দোষে অথবা
বিনা দোষে কেবল নীলকরের কথায় অ-
নেক প্রজাকে কারারুদ্ধ করিয়াছেন। হেট
আদালতের বারিষ্টার বিচারপতিরা নী-
লকরদিগের গৃহদেবতা। তাঁহাদিগকে
পাইবার জন্য ঐরুক্তিকারীর দল অনেক
আত্মপাত করিয়াছিলেন। বারিষ্টারেরাও
অসন্তুষ্ট হইয়া তাঁহাদিগকে পূর্ণমনোরথ ক-
রিয়াছেন। সম্রাতি যশোহরের অস্ত্রাঙ্গাণ্ডি
জেনিহের প্রজারা তত্বতা হেট আদাল-
তের অল্প লিখাম সচিবের নামে এই
বলিয়া নালীশ করিয়াছে যে তিনি নীল
কর নিরাস সাহেবের কুঠিতে কাছারি ক-
রেন। মিয়ান সাহাব নামে নালীশ করেন,
তাহা সত্য হউক আর না হউক, বিচার-
পতি তাহারা বিপক্ষে আস্তা দেন। অধি-
কৃত প্রজা কয়েক নীলকরীতে গরম করি

তে পারে না; সুতরাং প্রায় একতরফা
ডিক্রি হইয়া থাকে। নীলকরদিগের ত-
ত্ত্বতা ও অসাময়িকতার জুটি নাই। তাঁহারা
সকলকে অপমানদিগের তত্ত্বতা দেখাইবাব
জন্য কয়েক জনের নামে নালীশ করেন,
তাহারা দাবন লইয়াছে, স্বীকার করিয়াছে।
পাঠকগণ! জানেন তাহারা কে? তাহারা
সকলেই নীলকরের লোক। তাহাদিগের
বিক্রমে ডিক্রি মাত্র হইয়াছে। কিন্তু তাহা
দুগকে কোন ক্ষতি প্রাপ্ত হইতে হয় নাই।
লিখাম কথায় কথায় লোকের জরিমানা
করেন। পাঠক বর্গের অঙ্গণ থাকিতে আসে,
যশোহরের সহকারী মাজিস্ট্রেটের গুণে ও
পুলিশ সেক্সাদিগের সহায়তায় মন্ত্রনামাধ
আচার্য্য নামক এক ব্যক্তির বাটীতে হয়টি
হস্তান্তর। এই ব্যক্তিকে নীলকরদিগের
চক্রান্তে ৩০০০ টাকা জরিমানা দিতে হই-
য়াছে। আচার্য্য নীল বপন করিতে দিতে
ছেন না, তাহাতেই প্রজারা দাবন লইয়া
করার ভয় বারতেছে নীলকরেরা এই
কথা বলিবার। বিচারপতি তাঁহারা করি-
মানা করেন। এই ব্যক্তি গবর্ণমেন্টের নিক-
টে আবেদন করিয়াছেন। যদি বিচার
এক কালে তারতম্য ত্যাগ না করিয়া থাকেন,
এ ব্যক্তির চুখের প্রতীকার হইবে।

বিচারপতি অর্থ অথবা প্রত্যর্ষের স-
হিত একত্র বাস করিলে একদেশীরেহা
তাঁহার কৃত বিচারে অবিশ্বাস করেন, ইহা
প্রধান পুরুষেরা জানেন না এমন নয়, ত-
থাপি যে তাঁহারা ইহার নিবারণ করিতে
ছেন না, ইহা অল্প বিশ্বাসের বিষয় নহে।
এই অবিশ্বাসের বিশিষ্ট কারণ আছে।
এবং অনেক শুনাইয়াছে নীলকরদিগের
খামা ও সাক্ষ্যের বিচারপতির মতিভ্রম ক-
রাইয়া দিয়াছে। লিখাম কি কার্যে
কুঠিতে কাছারি করেন? ইহাও কোন
ব্যক্তি তাঁহার পক্ষপাতিতা শঙ্কা না করিবে
না? আমরা নিশ্চয় বলিতে পারি অনেক নিক-
টে যে সকল নালীশ করিয়াছে তাহা সত্য

নাই। প্রজার নাম লস নাই। লস লস ইলে নীলকরেরা তাহা পাকা করিয়া লিখি ইয়া লইতেন সন্দেহ নাই, তাহার। সা মামা কাগজে বিনা রেজিষ্টারিতে করার পত্র লিখাইয়া লইবার পাত্র নহেন। যদি বল বিশ্বাস থাকিলে এই রূপ ঘটনা হওয়া অসম্ভাবিত নহে, নীলখতি গোলা যোগ হইয়া অবধি পরস্পরের সেবিধা ন নিয়াছে। ছিলই বা কি? একপ হলে মিনার প্রকৃতি যে সকল বলিল দ্বিভেদে ছেন, তাহা সহজে প্রমাণসিদ্ধ বিবেচনা করা কোন ক্রমেই ন্যায়ানুগত নহে। যে বিচারপতি ইহা বুঝিয়া উঠিতে না পারে ন, তাঁহাকে এই দণ্ডে বিচার দেওয়া কর্তব্য।

যশোহরে ত এই হইতেছে। নদীয়ার বিষয় হিন্দুপেট্রিয়েটে সবিশেষ বর্ণিত হইয়াছে। নদীয়ার এক জন খুড়ীয়ার ডেপুটি কালেক্টর সম্প্রতি অন্যায় করিয়া এক মো কদমার নীলকরের জয় করিয়া দিয়াছেন। যে প্রজার নামে নালীশ হয়, তাহার উপাধি গোদামী, কিন্তু নীলকরের বখাও বলি লে তাহা গোদামী লিখিত আছে। উক্ত প্রজা এই অন্যায় প্রজার প্রতিবাদ করি রা তদন্ত্য জজ লুই জাকসনসাহেবের নিকটে নালীশ করে। তিনি নথি চাহিয়াতে ডেপুটি কালেক্টর নলেন, তাহা ডাকে প্রেরিত হইয়াছে। কিন্তু তাহা ককনগরের জজ আদালতে পৌঁছে নাই। লুই জাকসনসাহেব গমন করিলেন এলফিনস্টন জাকসন সাহেব দেখিলেন নথি হারাইয়াছে। অনন্তর এই বিজ্ঞ বহুদশী বিচারপতি প্রজার বিরুদ্ধে ডিক্রী অপরিবর্তিত রাখিলেন ন। যখন প্রজা নীলকরের দলিল জাল বলিতেছে, তখন এই রূপ আলা দাম যে কতদূর অন্যায়, তাহা সকলে বুঝিতে পারিয়াছেন। দক্ষিণ কারোলি নার বিচারপতিরা বিচার করিবার সময়ে অধিকতর দায়িত্ব শক্তিসম্পন্ন সুরাপান

করিয়া থাকেন। আমাদিগের বিচারপতি রা বিচারকালে সুরাপান না করিয়াও সুরাপায়ীরা কায়া করেন।

একণে গবর্নমেন্টকে দুই একটা অনু রোধ করা উচিত। প্রথমতঃ লিবারকে এই দণ্ডে মিনারের নীলকুটি ত্যাগ করিতে ব লুন, তাহার বিরুদ্ধে যে আবেদন হইয়া ছে, উত্তমরূপে তাহার বিচার করা উচিত সাক্ষী দ্বারা যদি লিবারের পক্ষপাত সপ্র মাণ হয়, তাহা হইলে তাঁহাকে এই দণ্ডে পদচ্যুত করা কর্তব্য। খুড়ীয়ার ডেপুটি কা লেক্টর কে পাঠকগণ বোধ হয় বুঝিতে পা রিয়াছেন। ইনি যখন আসেসর ছিলেন তখন ইহার নামে উৎকোচ গ্রহণের নালী শ হয়। ইনি ধর্মবলে রক্ষা পাইয়াছেন। কিন্তু ইহার আতাকে কারাগারে যাইতে হ ইয়াছে। উক্ত সদৃশ সম্পন্ন ডেপুটি কা লেক্টর নথি ডাকে পাঠাইয়াছেন কি না; তাহা কাল দ্বারা পাঠান হইয়াছিল; সে কি প্রকারে হারাইয়াছে; কোথাব এবং কি প্রকারে হারাইল, এই সকল বিষয়ের সবিশেষ অনুসন্ধান করা অতিশয় আবশ্য ক। উল্লিখিত নথি অগ্নি ডাকে যাঘ নাই তঃ

পুস্তক প্রাপ্তি।

আমরা কতকটা সতর্কতা স্বীকার করি তেছি, এসম্প্রদে এক খনি সাজানো এক খনি ইংরাজী এই দুই খনি প্রতন পুস্তক প্রাপ্ত হইয়াছি। বাঙ্গল খনিব ন ব ভূগো লনবিচর। কয়টো সা গ্রন্থ কুলের অন্যতর পণ্ডিত অধ্যক্ষ রাজবন্দ তটোচাধ্য এতৎ প্রণয়ন করিয়াছেন। সালকদিগের পাঠার্থ ই হাতে সংক্ষেপে ভূগোল রহস্য লিখিত হই- য়াছে। ইহা প্রথম শিক্ষার্থিদিগের উপযোগী হইয়াছে। কটনগের দ্বিচরের অন্যতর মিস নরি রেবলেন্ট জন বেথুন সাহেব জগদীর লুটিয়া বাজারের এক সভায় যে বক্তৃতা করে ন, তাহাতে বিত্তীয় পুস্তক খানির কথা এই য়াছে। ইহার সারাংশ আমরা আগামী বারে পাঠকগণের গোচর করিব

লগুন ১৭ই জুন ১২৬৩।

প্রিয় সম্পাদক।

লগুন একপে এক অপরূপ ক.ব. ধারণ ক- রিয়াছে। প্রাচীন কবি ও পুরাতন লেখকেরা অযোধ্যা, মিনেবা, বাবিলন, মেক্সিস ও রো- মক পত্তন প্রভৃতি নগরকে মন্থা কুলের গো- রব স্বরূপ বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন। সেই মনঃ কপিত বর্ণনা সকল কেবল বর্তমান লগুনে স- সিয় হইতেছে। এই মহানগর মন্থা-কম- তার মতী কীর্তি। একপে ইহাকে একটা ক্ষু- দ্র পৃথিবী বলিলে হয়। পৃথিবীর সর্বাংশ হইতে সহস্র সহস্র লোক সমাগত হইয়াছে; ইউ- রোপ, আসিয়া, আফ্রিকা, এবং আমেরিকা যেন একটি আধিভরণিক কেন্দ্রে পরস্পর সা- কাং করিতেছে। মিসর দেশের অধিপতি, জাপান দেশীয় রাজদ্রুতগণ, তুর্ক, দৈতী প্রভৃতি দেশের বৃত্ত সকল, এবং রাজোপা- ধিকারী নানা দেশীয় বহুলত ব্যক্তি এখানে বিচরণ করিতেছেন। এখানকার অসংখ্য মনো- রমক বিষয় সকল মর্শ্বকদের নিঃসৃত অতিবৃদ্ধ হইয়াছে। অর্থজীবা, মনজীবা, নোকাজীবা, ক্রিকেট, বিলিয়ার্ড, চতুরন প্রভৃতি অপ্ৰবন্ধি- যামোদ সকল লোকসিগকে আকর্ষণ করি- তেছে। সার কাল উপহৃত হইলে নান- য়ানে গীত নৃত্য, ধর্ম সম্প্রদান প্রভৃতি বি- নিম লুখে লোক সকল পরিভ্রম হইতেছে। কীন্ প্রকৃতি অগাধিখ্যাত মটেরা এতদগতী- নমোহর নাট্যালার আপনাদের কাণ্ড ত- মত প্রকাশ করিতেছেন। একটা মিনি- অটোলিকা প্রতিদ্বন্দ্ব বহুসহস্র ব্যক্তিকে আ- কষণ করিতেছে। লাভ প্রহরের সাঙ্গা- যিদোৎসাহিনী সভা ও ইউরোপীয় সভা এই- তিন সভা এখানে উপবেশন করিতে অ- বিখ্যাত ব্যক্তি একত্রিত হইয়াছেন। রূপ চতুর্দিকে যে কত ব্যাপার উপা- তেছে, তাহার সংখ্যা করিয়া উঠ দুর্দ- বক্ত করা উচিত, স্বয়ং লগুনবাসী- স্বীকর করিতেছে যে লগুনে সর্বা- যর অভুল, অসুতপর্ক কখনো তাঁ- আমি বিশেষ মনোযোগের সহ- তবধি নিপলভ্য বহু সন্ধান- দিত সম্প্রতি এগজিকিউশনে গিয়া- নান্য দেশীয় প্রবোধ সহিত তুলনা

এক নিমিষ্ট, কোন প্রকারই অধীকার করিতে
পারিলেন না। ইহা অত্যন্ত আক্ষেপের বিষয়
। কিন্তু তাঁর শিষ্য বিন শিষ্যের, ছাত্রদের
এত কোন কোন ভাষা এখানি প্রেরিত হা
। টি ও পবিত্রে অনিশ্চয় করিয়া আসি নিম
। ম পবিত্রের কার্য সকল প্রেরিত হইয়াছে।
তাঁর বাণীরের শাল, যারানদীর কি খাব
। চ'বার বস্ত্রের উপলক্ষে এই প্রতিপ্রদ
। কবিতেছি মা। এসকল ব্যাপারে আমি
। যে প্রাচীন নৈমুখ্য জগৎ তাতে আছে। বস্তু
। চিহ্নটির বিবরণ বলিতেছি। ভাষািপনের
। কালীনাথের খোদিত করি না দেখে ইহা যদি
। নিম্নলিখিত রামায়ণ অর্থকারের খোদিত কর
। সন্দেহের স্তবিস্বের হুজুয় পাইয়া প্রাচীনত
। য় তবে সত্যের ব্যক্তিই অবশ্যই জোতপা
। দেও পাইলেন। আশ্রয় আশ্রয় কনক। প্রা
। যেনে নিত্যক অপটি। মিথ্যা পদ্য করা কাম
। জ্ঞান রীতি বাটী। বিষ্ণু অতি গাঢ়বিশেষ
। মায়া যথার্থ মন্তব্য প্রকাশ করিয়া খানি।
। তা হইল, যার আমানের সৌন্দর্য কাম নি
। কল ব্যক্তি বটমান বিলাস উপাধি ইহা
। অসমর্থ হুত লিখিত। কটোপ্রাঙ্গ প্রাঙ্গ
। ১৭ হোসন কবিতেন, তলে ভাষাতন
। ১৮ ৩৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩

সংখ্যা ৫৫০০০, প্রত্নতত্ত্ব মন্ডলিয়ার মনন গুণিত
হইতেছে, যেহেতু যেহেতু বস্তুবস্তুরা ৫৫ ৫৩
ন পদ্যায় করিতেছে, তখন বস্তুক নিম্নলিখিত
করিলে, তখন প্রাচীন কবিতার মনন স-
। যখন নাই। কনক হুনেট পোদোবা কেবল
। যোটি ও বাস অসমর্থ। ১৭ কাল যাপন
। বিতেছে। ১৮, ১৯, ২০, ২১, ২২, ২৩, ২৪, ২৫
। মত ভাষা হুনেট, ২৬, ২৭, ২৮, ২৯, ৩০, ৩১, ৩২, ৩৩, ৩৪, ৩৫
। মনন সত্য হুনেট। ৩৬, ৩৭, ৩৮, ৩৯, ৪০, ৪১, ৪২, ৪৩, ৪৪, ৪৫
। কোন সত্য হুনেট। ৪৬, ৪৭, ৪৮, ৪৯, ৫০, ৫১, ৫২, ৫৩, ৫৪, ৫৫

অনেক প্রসিদ্ধ লোক ও প্রসিদ্ধ খোদিত ভাষা
একত্রিত হইয়াছিল। কিন্তু কনক পূর্বাধি
যবা বাজিরা কোন খোদিত সর্গজগী হইলে ওই
বিষয় হইয়া বাজী বাজি, ড. টেল, কেহই মনে
করে নাই যে কনকটেকস, নামক এক অপ্র
সিদ্ধ ভাষা অন্যান্য সুবিধায় খোদিতের মনন
কতা করিতে পারিবে। বস্তুতঃ এই খোদিত স-
র্গজগী হইয়াছে। এক অপ্রাচীন বালক উ
। ২৬, ২৭, ২৮, ২৯, ৩০, ৩১, ৩২, ৩৩, ৩৪, ৩৫, ৩৬, ৩৭, ৩৮, ৩৯, ৪০, ৪১, ৪২, ৪৩, ৪৪, ৪৫
। ৪৬, ৪৭, ৪৮, ৪৯, ৫০, ৫১, ৫২, ৫৩, ৫৪, ৫৫, ৫৬, ৫৭, ৫৮, ৫৯, ৬০, ৬১, ৬২, ৬৩, ৬৪, ৬৫, ৬৬, ৬৭, ৬৮, ৬৯, ৭০, ৭১, ৭২, ৭৩, ৭৪, ৭৫, ৭৬, ৭৭, ৭৮, ৭৯, ৮০, ৮১, ৮২, ৮৩, ৮৪, ৮৫, ৮৬, ৮৭, ৮৮, ৮৯, ৯০, ৯১, ৯২, ৯৩, ৯৪, ৯৫, ৯৬, ৯৭, ৯৮, ৯৯, ১০০

১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

১৭ ১৮ ১৯ ২০ ২১ ২২ ২৩ ২৪ ২৫ ২৬ ২৭ ২৮ ২৯ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

[illegible]

পারিতে ই সকল মোকদ্দমা তিস্তিসি হইয়া
গির হই। এই ছোট আদালতে বুকের প্রায়
ভাঁহ নাই। সকল বিচার লয়ে এইরূপ হইলে
দেশের কত উন্নতি লাভ হয়, ন্যায়ালয়ের লো-
কেরা তাহা দেখিলি ত পারিতেছেন।

[illegible]

কং চলিতেছে। অত্রত্য ভক্ত কাহাণীরের যাই
ও উপদেশে অনেকেই বসন্তানার অমোচনার
সময়িক অধুনাঃ প্রকাশ করিতেছেন। প্রাচীন
নলের শিক্ষার জন্য তাঁহার প্রস্তাবিত নাইই
কুমটি খোঁজ লক্ষ্যপিত হইলে আনরা চির
ব্যথিত হইব।

৫। প্রত্যেকের প্রকার উত্তম নীল হইয়াছিল কিন্তু নিম্নোক্ত প্রকারের অতি-সম্প্রদায় বশতই হটক অথবা অন্যকোন ক্ষতি কারণ বশতই হটক একাদিক্রমে কয়েক দিন দণ্ডি হওয়াতে নীলের গাছ বিনাশোন্স হইয়াছে।

৩। চুরাঙ্গা মরল সাহেবের মোকদ্দমার
বস্তান্ত এই বশোহরের ঐযুক্ত রহম সাহেব
সংপ্রতি চুরাঙ্গাদিগের মধ্যে এক জনকে কাঁসি
ও ১১ জনকে বাঁধাজীবন জীর্ণান্তর এবং ২
জনকে দশবৎসর কবিতা কারারুদ্ধ করিবার
আদেশে করিয়াছেন। যে ব্যক্তির কাঁসের বি-
ধান হইয়াছে, সে ব্যক্তি এই প্রাচীর চৌকিয়ার।
কোন বিধগত বন্ধু মুখে ওনিসাম চুরাঙ্গা হিন্দ
সেইখাই বগরে দূত হইয়া খনলিয়ানকুদার অ-
র্পিত হইয়াছে। বহু দিন বস হইল তাহাকে
কামাকরে আনিয়া অন্য ২০ জন সিপাহি
প্রেত হইয়াছে। সেখা বাউবে বেতচর্কে
কতকি কি কাম ?

৭। যশোরের গঙ্গা দুর্ভাগ্যজনক আনীত হইত।
সংকট, ভাঙা হইতে অধিনায়ে এক বাঁদা স-
হানপত্র প্রচাৰিত হইবে। শুনা গেল কখন
গবে ও ঐক্য উপদ্রোহ হইতেছে।

৮। সম্মতি অত্রত্য ছোট আমানতের
 | দ্বিতীয় স্তরের বাসায় কমানত একটি চরি
 হইয়া গিয়াছে। আমানতের ডেপুটি সাহেব
 স্বয়ং দেওয়ান উপস্থিত হইয়া উহার কোর
 | হল চরিতার্থ করিয়াছেন। মহাপুর। নড়াই
 | আজি কালি এটি বড় ছোট কথা নয়

८.१ दान्ति इत्येत आद्यः ।

मन्मथः प्रियं वदति ।

১৭ই আশাঢ় অবধি দুই তিন দিন এ-
কতকগুলি রাজদৈন্য আসিবা অত্যন্ত
ও করে। যে দিগাহি ও আশাঢ়
দোকামিকে এক পরমা দেব, তাহাকে

তিনশত তর বসিতে হয় । ইহাতেই শিপাহিরা বাজারে কেমন দৌরাণ্য করে তাহা সকলে বুঝিতে পারিবেন । লোকানিহা অত্যাচারে যে-খিরা লোকান বন্ধ করিতে এখনকার লোক-দিগের আহার সামগ্রী ক্ষুণ্ণ হইয়াছে, সুখি লোকেরা বেগাব খরিবার করে ঘরের বাহির হয় না, কি ইতর, কি তর, যাহা মাঝেই থাকে নাতি ও প্রাণতরে সঞ্চিত । শিপাহিদিগের সমাজব্যাধি অথ সকলকে রাজপথে রাখিতে সাধারণের গমনাগমনেরও সবিশেষ ব্যাঘাত করে । এই দিবস বৈকালে এখনকার রাজবাটীর হস্তিগক হস্তিগ লইয়া বাইতেছিল । অথবাতির যতাব হস্তি দেখি লোক লোক করিয়া থাকে । এই হস্তিকে আনিতে দেখিয়া শিপাহিরা নিষেধ করে । হস্তিগক উপায়াত্তর না থাকিতে সেই পথে আসিতে লাগিল । তাহা দেখিয়া তিন চারি জন শিপাহি তদ্রুতি একটা বাঁশ লইয়া প্রথমতঃ হস্তিকে বিলক্ষণ প্রহার করিল । তাহার পর নাহকের কর্ণমূল ও মস্তকে এমন প্রহার করিল যে, সে হস্তী হইতে ভূমিতে পড়িয়া রক্ত বমন করিতে লাগিল । দেখা গেল তাহার মস্তকের একস্থান অত্যন্ত কড় হইয়াছে, তথাপি এই চুরাখারা প্রহার করিতে বিরত হয় নাই, হুতপ্রাণ হইলে ছাড়িয়া দেয় । শুনিতে পাই গবর্ণমেন্টে ইহাদিগকে শাস্তিরক্ষার জন্য রাখা হইলে কিন্তু আমাদের এখন এমন মন যে ইহারা গেলেই আপন শান্তি হয় ।

গত আধিনমাসে গুজার কয়েক দিন ব্যায়র লক্ষণ লোকের বাজি খর রাখাটী তার হইয়াছিল, সেই কঠোর উপর আবার কতকগুলি শিপাহি আসিয়া যংপরোনাস্তি দৌরাণ্য করিয়া গিয়াছে । পরে কীতকালে আবার এই লক্ষণ হয় । বোধ করি এখন এই কণ্ট হইতে চলিল ।

বিবিধ সংবাদ ।

৩১এ আবার সোমবার ।

বাকেরতের তত্ত্বাবধায় ময়ুরদিগের সহায়তায় অন্য উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে চীনা আরত হইয়াছে । তত্ত্বাবধায় লেপ্টনকে গবর্ণর ২০০ টাকা প্রেরণ করিয়াছেন ।

কয়েকজন প্রাণীকর্তার অন্ত্যস্তর নীল-

কর শিখ সাহেবের অসীমায় পলিভ্যাগ করিয়া অন্যত্র গমন করিয়াছে । তাহার ৩০০০ টাকা আর ছিল, তত্ত্বাবধায় কেবল ৩০০০ টাকা মাত্র কর আদায় হইতেছে । আরও বর হস্তি করিলে আর হস্তি হইবে ।

আলাহাবাদে জুরাচোরের মলমলি হইয়াছে । অনেক ইউরোপীয় বণিক বাহু আরম্ভের দেখায়া খরীদ নিকট হইতে টাকা কর্তৃক করিয়া খেবে প্রভাষণ করিতেছেন ।

মেলিয়ারদিগের বিচার করিবার সময়ে সর মর্ডাউ ওয়েলস স্পর্ধাতিথানে কহিয়াছেন বাহার। কেইলিয়া হয় তাহার। পুর্নতা নিবন্ধন আপনাদিগকে নিঃস্ব বলিয়া পরিচয় দেয়, অতএব ইহাদিগের বাসস্থানে গিয়া বিচার কর কর্তব্য । এই কথা না করিলে প্রতীক রেও সভাবনা নাই ।

পারিসনগরে লিফাফ নামক এক ব্যক্তি আছে, তাহার সর্পিণ নামে ৮ বুরুল লগা শূলাকার একটা পদার্থ আছে । কঠোরতার নিকটে একটা ত্রীলোবের ই প্রকার একটা শূল ছিল । এই শূল আদ্যাপিও পারিসন চিত্র শালিকার রহিয়াছে । যতালের কাণ্ড বলিয়া তাদৃশ বিশ্বাস কর নয়

কিনিক সম্পাদক অবশ্য করিয়াছেন, উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে অতঃপ একটা প্রধানতম বিচারালয় হইবে । সর চারলস আকসন টংলও গমন করিতেছেন, অতএব সর মর্ডাউ ওয়েলস তত্ত্বাবধায় প্রধান বিচারপতি হইবেন । সর মর্ডাউ ওয়েলস উত্তর পশ্চিমের বোগ্য বিচারপতি বটেন ।

বিদ্যালয়ের পরীক্ষার্থ যে বাচ্চালা পুস্তক নির্ধারিত হইয়াছে, উক্ত পত্রের এক জন পত্র প্রেরক তাহার মোলো-লেখ করিয়াছেন । বিশেষতঃ তিনি বলেন, এবৎসর যে প্রাণ নির্ধারিত করা হইয়াছে, তাহার। হাজগণের কিছু মাত্র উপকার নাই । বিদ্যালয়ের সভা সকলে কথর কাণ দেন না ।

উক্ত সম্পাদক বলেন, অত্রতা গবর্ণমেন্টে আর লবণ প্রস্তুত করিবেন না । আমদানী লবণে অধিক লাভ হইতেছে । তবে আর যথা ব্যয় কেন ?

সর চারলস উক্ত পারিয়ারকে মহাসভা-

র কহিয়াছেন, তারতবর্ষের উৎকর্ষ অর্থ কালে লেও সাহেব হিসাবে এক কো-তুলিয়াছেন । লেও সাহেবের তুলন হ আমরা যারা বাই ।

লাহোর জমিদারের এক জন পত্র প্রেরক লিখিয়াছেন, এক জন লেপ্টনকেই বাজি হইতে কিছু প্রাণ অগতঃ হওয়াতে তিনি তাহার খানসামার উপর সন্দেহ করেন । খানসামাকে এই চুরির বিষয় খোঁকার করাটীবার জন্য তিনি তাহাকে এক হুকে বন্ধন করিয়া এক শাখা দ্বারা প্রহার করেন । এক চণ্ডী প্রহার করিয়া সাহেবের আশ্রিত হওয়াতে আপনি এক চৌকিতে বসিয়া অন্য কৃত্যদিগকে প্রহার করিতে আদেশ দিলেন । খানসামা বরাবর আপনার নিন্দোষিতার কথা বলিয়া আসিতেছিল । এক জন তর লোক তদুপরে লেপ্টনকে নিরস্ত হইতে বলিলেন । কিন্তু তাহার কথা অগ্রাহ্য হওয়াতে তিনি এই বিদ্রোহে পুটি কমিসনরের গোচর করিলেন । ডেপুটি কমিসনরের আজ্ঞাক্রমে লেপ্টনকে হৃত ও কারা রুদ্ধ করা হইয়াছে, হতভাগা খানসা না চিকিৎসালয়ে আছে, তাহার ক্রুর বমন হইতেছে, তাহার জীবন সংশয় । এট লেপ্টনকে আমাদিগকে দারোগার গুণ বিদ্রুত করাটীলেন ।

টাইমস অণ ইতিয়া পরে বোণাটবের কয়েক জন তুলার বণিকের দুর্ভাগ্য বিষয় প্রকাশিত হইয়াছে । তাহার। পুর্বে এক মর শির করিয়া পরে তাহার পরিবর্তন করিতে অনেককে কতি প্রান্ত হইতে হইয়াছে । পুখি বী কি কেবল বন্ধনাই হল ?

অন্য প্রধানতম বিচারালয়ের ফৌজদারি সেশিয়ন আরম্ভ হইয়াছে । সর মর্ডাউ ওয়েলস বিচারপতি । এবার কয়েকটি গুরুতর মোকদ্দমা আছে ।

হুতপ্রাণের বিখ্যাত অফিসেনের বণিক হরমসলী রত্নমলী দেউলিয়া হইয়া নেকেও দীপে পলায়ন করিয়াছেন ।

হিন্দুপেট্রিট সম্পাদক বলেন সম্রাতি কয়েক জন অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট হরিণবাঙ্গী দর্শন করিয়া অসন্তুষ্ট হইয়াছেন । তাহার প্রণালীগত যে দোষ আছে, তাহা তাহার। শী-জ গবর্ণমেন্টের গোচর করিবেন । এই হতভা-

গ্যারিগের প্রতি প্রতিবেদন রূপা হুই করা উচিত।

উক্ত পত্রে একজন লিখিয়াছেন ফকংগ-রের মিসনরি ডাউসন একটি বালককে পদা-বাত করিয়াছিলেন বলিয়া বিদ্যালয়ের সব-দায় চাত্র "এরিবোল" দিয়া বিদ্যালয় ত্যাগ করিয়াছে। প্রস্তুত বালক মাজিষ্ট্রেটের নিক-টে নালিশ করে, মিসনরির দোষ প্রমাণ হইল তথাপি, মাজিষ্ট্রেট বালকটির ১০ টাকা জরি-মানা করিয়াছেন। এমন না হইলে মাজিষ্ট্রে-ট কি?

গংগা বনোজুল পত্রে জমীন্দার ও প্র-তিবেদনের পরস্পরের সহস্র সংক্রান্ত এক উ-ক্ত প্রস্তাব পাঠ করিয়া সন্তুষ্ট হইয়াছি। এই প্রকার প্রস্তাব আন্দোলিত হইলেই সংবাদ পত্রের উন্নতি হয়।

বঙ্গিমাল হইতে এক ব্যক্তি লিখিয়াছেন, তত্ত্বতা মাজিষ্ট্রেট প্রত্যহ আমলাদিগকে গালি দেন ও জরিমানা করেন। তত্ত্বতা সক-লেই ইচ্ছাতে সিদ্ধ হইয়াছেন। প্রমাণগ-তবে এই সকল অযোগ্য ব্যক্তির হাত এড়াই-বন।

১২ এ আশ্বিন মঙ্গলবার।

বেঙ্গল ইন্ডিয়ান মালবদেশীয় আফিসের ১৪০ টাকা মূল্যে নিষীদ্ধ হইয়াছে। এদিকে সর-চন্দ্রন উক্ত পালিয়াঘোটে বহিয়াছেন, তা-বতনও এক কোটি টাকা অকুলান, এদিকে আশাব অফিসের একপত টকা মূল্য কনি-য়া গেল সর্বস্বত্ব হইতে টাকা আগের উপ-ইন্ডিয়ান পুনরাব না প্রবর্তিত হয়।

নিম্নলিখিত সম্পাদক টেলিগ্রাফযোগে নিম্ন-লিখিত উদ্ভাবনী সমাচার প্রাপ্ত হইয়া-ছেন —

৮ শুন ১৪এ জুন। "হাউস অব কমন্সে" আসতবস হইতে তুল আনয়ন সংক্রান্ত তক-বিত্ত হইয়া গিয়াছে। গবর্ণমেন্টে তুল উ-পাদান বিষয়ে সমুদায় সুবিধা করিয়া দিবে। অসীকার করিয়াছেন।

লাড পামবর্ডন মহাসভার হইয়াছেন, ইংলণ্ড ও লন্ডনের পামবর্ডন সভার আদেশ, ৩-শি উক্ত ইচ্ছা এই ১৪এ জুন ১২৬২।

করেন। কারণ পারিলে গুরুতর বিষয়ের আ-কোণ হইতে পারে।

হারিসনবর্গ মগরে ক্রিকেট সহিত ক্রীড়াসনে-র যৌক্তিক হুই হইয়া গিয়াছে। উক্ত পক্ষীয় বিস্তার লোক প্রাণ ত্যাগ করিয়াছে। আকসম-গরে গলায়ন করেন। অতিশয় হুই হওয়াতে গবর্ণমেন্টের সেনাদল রচমণের নিকটে অগ্র-সর হইতে পারে নাই। ড'হারিগের সাহায্য-ার্থ যে সকল সৈন্য আ'সিতেছে, তাহারা ডা-হারিগের প্রতীক্ষা করিতেছে। তাহার পর চার্লস চৌন আক্রমণ করা হইবে। মেসিফে-অনেক ক্রীড়া করা হইয়াছে, ডিন কোটি-টাকার মোট ব্যয় করা হইয়াছে।

১১ রিস। ১১এ জুন। করানী সংবাদপত্রে প্রকাশিত হইয়াছে সেনাপতি করি দল সহস্র-সংসারী সৈন্যের সহিত মেসিফে দেশে-হাইতেছেন। ১ তবে কি ইংলণ্ডের সহিত-আলেক সৌভাগ্য বিচ্ছেদ সম্ভাবনা হইয়াছে?

মেটল বোলে নিম্ন লিখিত চীনদেশীয় সং-বাদ আসিয়াছে।

করমসজী রক্তমজী নামক পারদীদিগের-লাইস দেউলিয়া হইয়াছে। ৩৫ লক্ষ টাক-ডা'হারিগের ১০। যত দূর জানা গিয়াছে ডা'হারিগের কিছুই সম্পত্তি নাই। উপক নামক অফিসের জাহাজে অধ্যক্ষ অতিশয় দুর্ভ-ক্ত। প্রকাশ করিয়াছিলেন, ডিন ২.৫০০ সি-কুকের মুখ্য হইয়া রসি দেন অতঃপাছ ১১টি সিদ্ধক মাত্র পাওয়া গিয়াছে। উপ-বেস তাম্রকে জাহাজে ১০০০ হইয়াছে। রক্তমজী মোকদ্দোস্তিউ ১৮টি সি উপনিবেশ-পালন করিয়াছেন। অফিসের সর্বস্বত্ব হুই-নয়, মত্যা অব ও কমিয়াছে।

হা ও মাহেন সম্প্রতি দক্ষিণে গিয়াছেন, বীকার করিয়াছেন।

রেনেভিড বোড ১৪শুনবর্গে অফিসে-লিখিতেন আশ্বিন ১৪এ জুন ১২৬২। হুই বেকীত-হইবে না। হা'হারি জুই অফ এরিবার আবে-দন রেভিষ্টের করিবে। ডা' লওয়া হইবে, কিহ ইচ্ছায়া যেম একপ ভাবেন না, তাহারা-প্রার্থিত জুই পাটবন অসীকার করা হইল। প্রাণ প্রত্যাখ্য জাহাজে ১০০০ হইবে না, ১০০০ হইয়াছে। ১০০০ সিদ্ধক দেওয়া-হইবে। ১৪এ জুন ১২৬২।

হেন পর্তের উপরিহু করিয়াছেন। হুইবর্ডন প্রত্যাখ্য হুই বিস্তার করা। হা-পারে বটে কিন্তু এবিধের ডিবি লাই-কের প্রস্তাবের এক কালে অসম্ভাব্য হই-নাই। "এরিবোল" মল কি অসীকার-বলা যায় না।

নিম্নলিখিত পত্রের ভগলপুরের সংবাদমাল-বলেন, লেপ্টনকে গবর্ণর ভগলপুরের বিচার-লয়, কারাগার বিদ্যালয় প্রত্যাখ্য করি-য়া সন্তুষ্ট হইয়াছেন। ডিবি করমানা মলী-পর্যন্ত রেইলওয়ে দ্বারা গিয়াছিলেন। অতঃপা-লোকেরা তাহাকে এক অভিনন্দন পত্র দিও-রাহিয়াছিলেন কিন্তু কোন কারণ বশত তা-ওয়া হয় নাই। বাহা হুইক, ভগলপুর বীভন-সাহেবের কার্যের প্রথম দায়, তথায় তাহার-বিস্তার শুভাকাঙ্ক্ষী আছেন।

টাইবর অব ইন্ডিয়া একজন পত্র-ক্রেতা অব ইন্ডিয়া কর্ণেল ডেবিডস-ভাবের বিষয়ে লিখিয়াছেন যেখানে অস-ক অনেক অসীক কথা লিখিয়াছেন। দেশে একপে হুইলমানদিগের কোন-বোণ নাই। ইংলণ্ডের যৌবনা অস-সকলেই নিশ্চিত আছেন। কিন্তু কেউ-তান দেখিয়া তত্ত্বতা অনেক হুইলিয়া-তীত ও চিকিত হইয়াছেন। ডা'হারিগের-পত্রের আছে গবর্ণমেন্টের আদেশ-সারে কেও অব ইন্ডিয়া অনেক প্রস্তাব-লিখিত হয়। অবোধা লইবার পূর্বে এই-প্রকার করেকী বিষয় লিখিত হইয়াছিল। অতঃপা অনেক সন্দেহ করিতেছেন, চার-দরাবাদের নবাবকেও বা রাজ্য পরিত্যাগ-করিতে হয়। লার্ড কানিংয়ের এডিকুল প্র-স্তাব সকল দেখিয়াও কি কেও অব ইন্ডিয়া-বিষয়ে আজিও লোকের উল্লিখিত অব আ-চে? বাহা হুইক, কেও অব ইন্ডিয়া "কেও-এই নাম লইয়া ভারতবর্ষের অন্ত্যস্ত অপকার-করিতেছেন।

উক্ত পত্রের লক্ষ্যোদ্ভিত সংবাদমাল-বলেন, তত্ত্বতা বিচারকার্যের কমিসনর কা-বেল আপনার রিগেট মধ্যে ডা'হারিগের-অগ্রদূত হুইলিয়া লিখিয়াছিলেন-অনিশ্চয় ভারতবর্ষে ১২৬২।

জা নেন। কাশেল কেও অরুইতিয়া-

জন লেখক হইবার যোগ্য লোক।

ইংলিসমান সম্পাদক বলেন, আগরা যুব

প্রকৃতি দ্বারা ওলাউটার প্রাকৃতিক হই-

হ। ওলাউটা কি স্কুল অর্থাৎ অধিকার

ইয়া লইল?

ইটোরার বিরুদ্ধে সিংহ নামক একজন

ব্যক্তি হইয়াছে। রাজা বানসিংহ তাহার

আবাস হইয়া তাহাকে বৃত্ত করিয়াছেন। সে

আর ইংলণ্ডের রাজ্যে আসিতে পারি

বে না।

সম্রাটের সন্ন্যাসী ওয়েলস একজন আ

কিসের খানসাহাকে বিদ্রোহ দিবার সময়ে ব-

সিদ্ধাছেন 'আবিসরুদা' শুনিতে পাই যুবক আ-

কিসরদিগের হুজুরা তাহাদিগেরই ব্যবসায়

অপহরণ করে। এবার বেহুতা এই অপরাধে

বৃত্ত হইবে তাহাকে 'আদি নিঃসন্দেহ' হোণা

ভারিত করিব। সন্ন্যাসী ওয়েলস উত্তম

কর্ম দ্বারা করিয়াছেন। এই সঙ্গে আর একটা

বিষয় দ্বারা করিয়া রাজা আবশ্যিক। যুবক আ

কিসরদিগের দ্বারা কথার কথায় নরকত্যা

করে, তাহাদিগের ক্রিয় বিচার করিবেন?

ডাক্তার সম্পাদক বলেন, হুকের বাটার দুই

জন লম্বা দুটি অরু লইয়া বারাকপুরে গিয়া

হিল। দুই জন 'ঐরুজিকারী' তাহাদিগের

নিকট অরু ক্রয় করিবার ছল করিয়া তাহাতে

আয়োজন পূর্বক তাহাদিগকে এক পত্র দি-

য়া বলিল "অরু বাটার নাহেবের নিকটে বাই-

লে অরু যুলা ও ডোমদিগের বকসিস মি-

লিবে" হুজুরা এই কথা প্রদান করিল।

সহিসেরা নির্দিষ্ট স্থানে গিয়া প্রতারণা জা

নিতে পারিল। এই দুই পুত্র বৃত্ত হইয়াছে।

তাহাদিগের চল বৎসর কংগ্রেসের আদেশ

হইয়াছে।

৬ই আশ্বিন বুধবার।

যানভীর আকিস এক কংগ্রেস কর্মসূচ

বে কপনা হয়, কংগ্রেস তাহা হইতে নাক

খা বাইতেছে। পবলিক ওয়ার্ড ডিপার্টমেন্ট

প্রধান রাজকর্মচারিদিগের নিকট প্রতারণা

করিয়াছেন কোন আশিষ্টে কংগ্রেস

কর্তৃপক্ষ আশঙ্কিত।

মিলেটারি কিনাংক কার্জন

ফেন পেয়ারেরা যুবকদের সেনা সংক্রান্ত

বেতন, পেনসন প্রকৃতির চেক আডিটব ও

আর্কাউন্টকে সেনারদের সম্বন্ধিত প্রতীক

করিয়া আগরার তত্ত্ব স্থানীয় বনাগার হই

তে তাহাইয়া লইতে পারিবেন। তাহা হই

য়াছে। অনেক প্রকরণ কর্তৃক করা হইতে

হইত।

চীমদেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে নি

মোহীরা সম্রাট একটি যুদ্ধে অরু লাভ করি

য়াছে। কংগ্রেস ও ইংল্যান্ড সেনাগণ তাহা

দিগের শিবিরস্থায় এক প্রকার রক্ত বহির্ভা

হে। আমরা এক্ষণে বুঝিতে পারিবার কি

অন্য কর্মের রেজিস্ট্রেশন নীকসেনা চীন দেশে

প্রেরিত হইবে?

রাজ্য সাহেব করিয়াছেন, বিদ্রোহের আর

ভে নানা সাহেব তাহাকে বিদ্রোহের সেনাপতি

করেন। সেনাপতি কামেলক নানাংকে তথা

হইতে দুরীভূত করিলে রাজ্য সাহেব কংগ্রেস

কুলপীতে পলায়ন করিয়া সেনা সংগ্রহ বার

রা ডাতিয়াডোপির সহিত একত্র হন। কুল

পী ইংল্যান্ডদিগের অবদান হইলে তাহারা

গোয়ালিয়রে গমন করেন। তৎপরে মধ্য ভা

রতবর্ষে পলায়ন করেন। খাউসার নিকটে

তাতিয়া পরাজিত হইলে উত্তরে বিদ্রোহ

হয়। কামীর রাজা কিয়দিকল তাহাদিগের

সহিত ছিলেন কিন্তু গোয়ালিয়রের নিকটে

আহত হইয়া তিনি অন্যত্র গমন করেন।

সমস্ত সৈন্য দ্বারা ভিন্ন হইয়া গেলে রাজ্য সাহেব

সাহেব আত্ম সমর্পণ করিবার সম্মত করিয়া

ছিলেন, কিন্তু তাহার সহচরগণের অনুরোধে

তাহা করিতে পারেন নাই। তিনি নান্দ পরি

বর্ত করিয়া পলায়ে ও কংগ্রেসে অরু করেন।

শিলালকোটের ভীমরাও নামক এক ভৃত্য বাটা

বাইবার ছল করিয়া তাহাকে বৃত্ত করিয়া দেয়।

তিনি স্পষ্টাভিধানে করিয়াছেন কোন ইউরো

পীয় ভাটার হস্তে হত হন নাই।

শুনা গেল, করা পীবা কোচিন চীনে ছয়টি

হস্ত প্রদেশ প্রাপ্ত হইয়াছে। করাশীরা আ

আনিবার ক্রমে বঙ্গমূল হইয়া উঠিতেছে

তাকা নিউস সম্পাদক বলেন, ঐক্যের

সময় চীনা যাকে সাহেবের নামে বে উৎকোচ

উক্ত সম্পাদক লম্বার সাহেবের পরিবর্তে

বারু রাইকনিই যোগ্য নিয়োগ কর্তব্যে জিজ্ঞা

সা করিয়াছেন লম্বার সাহেব কিছু দিন

চাকার নর্মাল বিদ্যালয়ের অধ্যাপক ছিলেন,

তিনি কোথায় গিয়াছেন? লম্বার কিঞ্চিৎ

টাকা কর্তৃক করিয়া চন্দননগরের দিগে সরিয়া

গিয়াছেন।

২রা আশ্বিন বৃহস্পতিবার।

জিল্লা পাত্র প্রকাশিত হইয়াছে তিস্তা

ও কংগ্রেসের সর্বত্র সকল অগ্রগণ্য করা হই-

তেছে। কংগ্রেস জন কিরিকি ইহা করিতেছে-

ন। প্রধান প্রধান শ্রমের উচ্চতার পরিমাণ

নিম্নে সিদ্ধান্ত হইতেছে:-

এবং ২২,০০২ কিট

কেকে ২৮,২১৮ ই

কামলকর ২০,১১৩ ই

৪৪৮২৩ ই

চীনাপুত্র এক জন ইউরোপীয় সংগ্রহক

একটি ইউরোপীয় স্টেশনের সতীভরণ

করিয়াছে। এই যাত্রী এক জন নিবেলিয়ারের

ভারত পুত্র। সে প্রথমতঃ সেনাদলে একজন

সেপ্টেন-এ ছিল। চীনে সে এক ভ্রম বংশীয়

ব্যক্তিকে বিবাহ করে একটি কনকবালিকা

লাভী তথা তাহাদিগের সহিত আইসে।

সেপ্টেন-এ দ্বী যে দিবস তাতিয়া যুক্ত প্র

বেশ করেন, সে সেই দিবস এই ব্যক্তির দুর

বন্দ্য করিয়াছে। এই অংশে প্রায়ের ওরুতর

চল করা কষ্টসাধ্য।

বীহতের কল্যাণ কোম্পানির অংশীদার

শতকরা ৫ টাকা লাভ পাইয়াছেন। বরাকর

পব্যস্ত কয়েক মাইল চালাইয়া অধিক

ভর লাভ হইয়াছে। তাহা হইলে তাহাদিগকে এই

গবর্ণমেন্ট আদেশ করিয়াছেন, যার সং

ক্ষেপ তাতিয়া হইবে সে সর্ব কংগ্রেসকে চাড়া

ইয়া দেওয়া হইবে। তাহারা যদি ভয়মাস বেক

র থাকেন, তাহা হইলে তাহাদিগকে এই

য়ের বেতন পুরস্কার প্রদান দেওয়া হই-

তেছে নহে।

সিদ্ধান্তে বাঙ্গালীর আলোক হইতেছে

২২ই জুলাই তারিখ পুনানগরে যোগা

দেয়। স্থাপন কর্তৃক কাব্য আরম্ভ হ

যাবে। জামাদিশেণ ব্যবস্থাপন সভা এত

২২ই

সেবাশ্রমকাণ্ড

অল্প দিন হইল, এক জন ওলন্দাজ সা-
হাব বোম্বাই নিকটে এক জন বোম্বাই-
রাকে আক্রমণ করিয়া ৩০ জনকে বন্দীকৃত
করিয়াছে। বোম্বাইরার সশিবে সাহাব ও
অধ্যবসায় সহকারে যুদ্ধ করিয়াছিল। তাহা-
তে কয়েক জন ওলন্দাজ আকিসর হত হইয়া
ছেন। ওলন্দাজ ও ইংরাজেরা বিলিরা এই
চরভূমিগের দ্বারা আক্রান্ত হইল।

নব্ব জন ক্রাশীলভাণী ইন্দ্রা কাছো-
জিয়ার বিদ্রোহীদিগের প্রধান হইয়া শ্যামলে
শীর গবর্নমেন্টের বিরুদ্ধে যুদ্ধ আরম্ভ করিয়া-
ছে। এই যুদ্ধে ক্রাশীরা বা শেষে শ্যামলে-
শেও হস্তক্ষেপ করেন।

বোম্বাইয়ের এক জন হিন্দু বণিক প্রচার
করিয়া দিয়াছেন, যে ব্যক্তি ইংরাজিতে বেদ
সংক্রান্ত উৎকৃষ্ট গ্রন্থ লিখিতে পারিবেন,
তাহাকে ২০০০ টাকা পুরস্কার দিবেন। উক্ত
উইলিয়ম নিকোল কোম্পানির হস্তে এই টাকা
আছে। তাহা বিখ্যাত ভাস্কর হন লেখার পরী-
ক্ষা করিবেন।

সর চার্লস উড প্রধানতম বিচারালয়ের
বিচারপতিদিগের বেতন প্রকৃতি স্থির করি-
য়াছেন, অতঃপর প্রধান বিচারপতি প্রতি
বৎসর ৭২০০০ টাকা ও অন্য অন্য বিচারপতি
২০,০০০ টাকা পাইবেন। সিভিলিয়ান
বিচারপতিরা সিভিল সরবিসের নিয়মানুসারে
বিচার পাইবেন। সাধারণ কার্য্যালয়কে
ইহা দ্বারা বিচার দেওয়া হইবে। এক বৎ-
সরের অধিক অল্পপস্থিত থাকিলে কর্ম
হাইবে। প্রধান বিচারপতি তার বৎসরের
পর ১৮,০০০ টাকা বার্ষিক ভিত্তি পাইবেন,
কিন্তু তাহাকে অন্ততঃ এই তার বৎসরের
ইহা বৎসর প্রধান বিচারপতির কার্য
করিতে হইবে। অন্য অন্য বিচারপতিরা
নিরবিরত সময়ে পর অল্পক বেতন পেনসনের
র স্বরূপ পাইবেন। ইংলণ্ড হইতে যে প্রধান
বিচারপতি আসিবেন, তিনি ১০,০০০ ও অন্য
অন্য জন ৮০০০ টাকা পাইবেন।

বেতন কার্য্যালয় দ্বিগুণ লক্ষ্যে অল্পক বিদ্রো-
হকালে গবর্নমেন্ট কাগজ অল্পক লক্ষ্যে কর ক-
রেন, তাহাকে পূরণ করিয়া দিয়া হইয়াছে।

বাক্সের বিখ্যাত ক্রাশীরা মরেন

ক্রাশীরা ত্যাগ করিয়াছেন। যিনি বিচা-
রের পূর্বে মরেনকে বাইতে দেওয়া বাহার
পর বাই অন্য র হইয়াছে। মরেনের দুইজন
কুতা ক্রাশীরা ত্যাগ ও একজনের ক্রাশী হই-
য়াছে।

গবর্নমেন্টের তিন তিন অঙ্গাণ্ডে দ্বি-
লিত টাকা জমা আছে।

ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের	২,২৪,৪৫,০২৭
বঙ্গদেশীয়	১,৮২,০৫,৩৩২
উত্তর পশ্চিমাকলের	৩,০০,৭০,০২৩
পূর্বাংশের	৮০,০০,০০০
বোম্বাইয়ের	৩,২২,৫৮,৩২৫
বঙ্গ ভারতবর্ষের	৫৮,০০,০২২
দক্ষিণাত্যের	২৫,১১,০৬৭
মাদ্রাজের	৩,১৫,০০,৭০০
মোট টাকা	১৮,৪০,২৭,০৬৭

গত দ্বাদশ অঙ্গাণ্ডে এবার তহবিলে অধিক
টাকা আছে।

রসেল উইলিয়াম নামক এক জন ইংরা-
জ আপনাকে কয়েক রসেল বারি পরিচয়
করিয়া বোম্বাই ও মাদ্রাজের কয়েক ব্যক্তকে
১২০০ টাকার হস্তি জাল করিয়া দিয়া হইয়াছে,
এ ব্যক্তি ১৫ গণিত সেমারলের এক জন সে-
প্টেন্ট। ক্রমশঃ উক্তরের ইউরোপীয় মলেও
জালকারিতা প্রবর্তিত হইতেছে।

লাহোর ক্রমিকেল সম্পাদক বলেন অল্প
দিন হইল দোস্ত মহম্মদ তার পুত্র মহম্মদ সরি-
ফ জুলতানজানের এক জন সৈন্যকে পরাজি-
ত করিয়া কয়েকটি দুর্গ অধিকার করিয়াছেন।
এবার প্রধানতম বিচারালয়ের সেশিয়নে ক-
য়েকটি ব্যক্তিকাকে হত্যা খাওয়াইয়া তাহাদি-
গের অলঙ্কার অপহরণ করিবার নোংরা
হইয়াছে। সর মর্ডাউ ওয়েনস যাবতীর কো-
র্টী ব্যক্তিকে সাত বৎসর করিয়া দীপান্তরিত
করিয়া বলিয়াছেন, এবার আর কেহ একজন
করিলে তিনি গুরুতর দণ্ডবিধান করিবেন।
যাবতীর ক্রিয়াকর্ম ব্যক্তিকাকে রাশীকৃত হ-
ইয়াছে। গুরুতর বিধানকারী কয়েক ব্যক্তকে
নিবারণ করা উচিত।

আগামি শনিবার ভারতবর্ষীয় মাদ্রাজ
সভার অধিবেশন হইবে। প্রধানতম বিচার

সর মর্ডাউ মাদ্রাজ হইতে অধিবেশন
উদ্দেশ্যে। সভার এক উপস্থিত ব্যক্তিকাকে
লক্ষ্যেই ক্রিয়াকর্ম অধিক করিয়াছেন।

সিদ্ধান্তের দুইবিধার মাদ্রাজ মাদ্রাজ
বঙ্গ, উত্তর মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজের উদ্দেশ্যে কয়েকটি দুর্গ অধিকার
করিয়াছেন। মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ

কিম্বদন্তে মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ

মাদ্রাজের মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ

অবোধ্যগেজেট সম্পাদক বলেন কয়েক
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ

ইতিমধ্যে মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ

ইতিমধ্যে মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ
মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ মাদ্রাজ

৬. স্ৰীমত বা. গান্ধী, বিহাৰ, কলিকতা, ১৯৪৬
আনন্দী গান্ধী, কলিকতা।

উক্ত পত্র প্রেরণ করিতে পারিলে, কলিকাতা
আইনসন ব্যুরু কর্তৃক, বর্তমান আইন নবায়নে-
টের আর্থিক বিবেচনা করা কলসর অংশকা এ
বৎসর প্রিত, চতুর্থ, ইতিমধ্যেই আইন
কমিটিতে। ইতিমধ্যেই আইন এ আইন
আইনকে বিবেচনা করিতে পারিলে। বিবেচনা করিলে
কি হয়, নবায়নেটের প্রিন্টে প্রকাশিত চাই
কি না।

● 2010 年 10 月 1 日起实施

আব্বা! হুগলি হুগলির ইমাম বাড়ীর সমু-
খে বরের নাকি যে কাজার সবাই মিথিরা
হিসাব, তৎপ্রসঙ্গে এক ব্যক্তি হুগলি হইতে
মিথিরা পাঠাইয়াছেন, বিবাহের ব্যাঘাত হর-
ণি, বরপক্ষীর এক প্রধান ব্যক্তি রাজা উপ-
স্থিত আছেন। আপনি যে নাকিতে বরের
সঙ্গে পক্ষাৎ হইতেছিলেন, বরকে সেই
নাকিতে আয়োজন করাইয়া বিবাহ হলে পা-
ঠিয়া দেয় এবং আপনি নাকিতে টের নিক-
ট বাস। নাকিতে ট দারোগার উপরে রাজা
দিল্লরপের অনুমতি দেয়। দারোগা পর দিন
সকল লোক জন লইয়া ইমাম বাড়ীর সমুখে
উপস্থিত থাকেন। বর সমারোহ করিয়া প্র-
স্তাভিত করেন। নাকিতে টের কাছারিতে এই
বরের নালী হইয়াছে আজিও তাহার
কল্যাণ হর হাই।

এ পাত্র প্রেমের আদর্শ। বদলে, এক ব্যক্তি
শ্রম বর্ষা। একটি বাসিন্দাকে বদলে করি
দাছে। তাহার বদলে হইতেছে।

আমরা কালনা হইতে দুই খানি পাত্র পা
ইয়াছি, দুই খানিতেই যেনা গেল, তখন ব
কহারোহে বারইয়ারি পুজা হইয়া গিয়া
পাত্রেরেরের। উভয়েই আবেগ করিয়া
একেশীরেরা যদি এই রূপ অনর্থক অর্থ
ব্যয় না করিয়া কল্যাণকর কার্যে অর্থ ব্যয়
করেন, দেশের জীবন হয়। বাঁশরা বারই
য়ারি পুজার বড় তাঁহানিগের কি কল্যাণকর
কল্যাণকর কার্যের প্রভেদ করিবার
করেন। আহে ?

আবুদাওয়াদার যে সমস্ত লোক ঠাণ্ডা
কামানের লহর খাওয়া করিয়া বিদ্রোহ ঘটাইবার
চেষ্টা করিয়াছিল, তাহাঙ্গিণের মধ্যে অনেকে
কিন্তু কলিকাতা পাইরাছে। কয়েক জন বন্দিক
কামানের অধিদপ্তর উদ্যোগী ছিল। এক জনের
নাম ইয়াসীন ১৮৩০০ টাকা জরিমানা হইয়াছে।

सर्वप्रथम के आइसलैंडियर जॉर्ज नाव
 में हुकूमत एक ही हड्डात अंशान कर
 में ही हुकूम जाल अंशाना करि म, ई
 अंशाना अंशान अंशान, अंशान अंशान अंशान
 अंशान अंशान अंशान अंशान अंशान अंशान

কি আছে তার। ~~স্বাধীনতা~~ প্রকাশ করিতে
নহিল।

সিদ্ধিমান-শাস্ত্রে প্রকাশ করে সিদ্ধমেশ
হইতে অনেক ব্যাধির কাণ্ড রোগানী হইতে-
ক। শিশু মনের ভীরে যে সকল ইহং ইক
আছে, তাহারাই রেইলগরে প্রকৃতির সবিশেষ
সহায়তা হইতে পারে।

লাহোর কনিষ্টেবল সম্পাদক বলেন, জা.
বীরমোহন বহমান করা নগর আক্রমণ করি-
য়াছেন। খুলতান জািন নগর রক্ষক সেনা-
গণের সহায়তার জন্য সেনা প্রেরণ করেন নাই
কৃতরাং করা শীঘ্র শত্রুহস্তে পতিত হইবার
সম্ভাবনা।

তাকযোগে বাহাতে হ'ল প্রযুক্তি নিরা-
পদে আইনে একব্যক্তি তদ্বিবরক কার্যাত্মক
হইতেছেন। টাকার পরিমাণে কি মিলে দ্রুত
বিবেচনা করিয়া তাহার মানুল লওয়া হই
বে। তাকযোগে এখন রেজেষ্টরী করিয়া পত্র
প্রেরণ করিলেও নিরাপদ নাই।

কিনিক সম্প্রদায়ের সর বার্থেন শিককে,
বল দেশীয় অর্থ বিচারালয় সমূহের উন্নতি
সাধন করিতে অনুরোধ করিয়াছেন। আমলা
গণের পরিবর্তন না করিলে কিছুতেই আদালতি
গণের স্বকল্যেণ বিচারালয় সমূহের দোষ
সংশোধিত হইবে না।

४४। आर्य समाज ।

লেপ্টনাইট গর্ভাবস্থার সময় বাসের জন্য কলিকাতার শিক্ষাবিদ্যালয়ে এবং কয়েকটি বালিকা বিদ্যালয় ও অন্য অন্য বিদ্যালয়ে আর্থিক প্রদান করিয়াছেন।

বাঙ্গালার দক্ষিণ বিভাগের বিদ্যালয় সমূহের ইনিম্পেট্রির লক্ষ সাহেব মাসে ৩০০ টাকা পেন্সন পাইবেন। এই টাকা ভারতবর্ষে তাঁহাদের কোন প্রতিনিধির নিকটে দেওয়া হইবে।

শিবপুর ও হাৰ্ভাৰ নবপেয়, গালাৰ নব
কাৰেৰ অন্য গবৰ্ণমেণ্ট ১০০০ টকা দিয়া
ন। শিবপুরৰ জেকা কয়টি ঐচ্ছিক স্থান হই
তে যে নবপ আঁতৰে, শুদ্ধিৰিত কৰে
নতন গোলা হইবে।

বার্চ ও এড্রেল মাসে দিল্লীর সুভদ্রা বাস
সাহেব জন্ম ১৮০০ টাকা বায় ৮৩৭৭৭৭৭ গর্ব-
মেই এই বাসসাহেব করেক জন সুভ্যকে ছাড়া
ইয়া দিবেন এবং বাসসাহেব অগেজকৃত
কিঞ্চিৎ বাণীমতা দেওরা হইবে। কাংগেন
ডেবিস তাঁহার অনুবায়ক হইয়াছেন। ইহা
মণ্ডিতক অধিকতর লক্ষ্যে রাখা কর্তব্য।

ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টে আসা। বিদ্যমান
 তাঁহা হইতে আসা। ব্যক্তিগতকৈ স্থানীয় গবর্ন-
 মেন্ট কোন ক্ষতন প্রকার ব্যয়ের আসা। বিদ্যুৎ
 পাতিবলম্ভ।। কয়েকটি বিদ্যালয়ের ব্যয় হইতে
 হইত। কয়েকটি ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টে গবর্নমেন্ট

গবর্নমেন্টের নিকটে ইককিছুটা জাহিরাতে হবে।
শেষে কেবল আটাআটি নার হইবে।

যাজ্ঞাজ্ঞের কন্যে টাঙ্গুলারি পুজির এয়েগেলি
অপেক্ষা বড় উৎসব নহে। তত্ত্বাত্ম্য গবর্ণমেন্ট
র এয়েইকট সেক্রেটারি বখান মীলমিরিতে
বাইতেছিলেন, তৎকালে কয়েক জন মন্থ্য
জাহান এয্যামি মুঠে ও তাঁহাকে প্রহার করি-
য়াছে। মন্থ্যরা এখান পুরুষদিগের যে প্রযা
সামগ্রী হরণ করিতেছে, এ ভাল হইয়াছে,
বলি তাঁহাদিগের টেডন্য হইয়া, পুজির মোব
সংলোপিত হয় !

নিম্নলিখিত দ্রব্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ
বিক্রীত হইতেছে।

৪ টাকার নিকা	৩১৫ ৩১৫
৫ টাকার কোম্পানির	৩২।০ ৩২৫
৬ টাকার	১০৭।১-১০৮৫
৭ টাকার	১১১৫-১১১৫

চীন দেশে যে বণিক মেট'ল'র হইয়াছেন
তাহাযারা এখনকার মাঝাটাইল ব্যাক্স
জুটির অনেক কতি হওয়ার ভে কাগজের বা-
জার নগ্ন হইয়াছে ।

बलाशक्ति !

১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় ৭০ বৈশাখ পৰ্বান্ত কোং ১০
 " অশ্বিনপতি ঘোষাল বহরমপুর
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " ঈশানচন্দ্র দাস বহরমপুর
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " শ্যামধন সুপোপাধ্যায় বহরমপুর
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " ত্ৰৈলোক্যনাথ দে বহরমপুর
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " শ্যামাশ্রম সুপোপাধ্যায় রামপুর
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " রামজ্ঞানেন্দ্র সেন বহরমপুর
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় ৭০ বৈশাখ পৰ্বান্ত কোং ১০
 " ষোড়শচন্দ্র দাস কলিকাতা
 ১২৬৯ আষাঢ় অষাঢ় অগ্রহায়ণ পৰ্বান্ত কোং ৫
 " শিবকাম বন্দ্যোপাধ্যায় দেবগ্রাম
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " গোপালচন্দ্র গাল কলিকাতা
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " মহেন্দ্রনাথ দাস চৌধুরী নলকোড়া
 ১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অষাঢ় কাৰ্ত্তিক পৰ্বান্ত কোং ৫
 " মহেন্দ্র নাথায় গজিক বৈদ্যপুর
 ১২৬৯ আষাঢ় হইতে অগ্রহায়ণ পৰ্বান্ত কোং ৫

[illegible]

আমাদিগের শিক্ষা সংস্কার কার্যের অর্থ
কমিগের অবলম্বিত নীতি নিত্যকাল হুঁহুধ
আমাদিগের অনেক কার্যে ইহার পরিচা
পাওয়া গিয়াছে। অদ্য একটা উদাহরণ
প্রদর্শিত হইতেছে। বাঙ্গলার দক্ষিণ
ভাগের ইনস্পেক্টর উদ্ভে। সাহেব বিদ্যা
এবং কলাতে মেডেলিকট সাহেবকে তা
পদে অতিষ্ঠিত করা হইয়াছে। মেডেলিক
ভুক্ত বিদ্যায় পারদর্শী, তিনি শিক্ষা
সংস্কার কার্যের অতিষ্ঠ নহেন, বিশেষতঃ
কলা জ্ঞানেন না। অতএব তাঁহাকে ইনস্পেক্টর
র করা হইল। বাঙ্গলা না জানিলে এ কার্য
চলিতে পারে না। এ জন্য এক জনকে

যে কোন বাণিজ্য ইউক, অন্যকে বঞ্চিত করিয়া গবর্ণমেন্টের সহজে রাখা অত্যন্ত অব্যায় কর্তব্য সন্দেহ নাই। কিন্তু লবণ ও অহিকেন আমানিগের গবর্ণমেন্টের রাজস্বের প্রধান উপায় বলিয়া তাহা ত্যাগ করিতে পারিতেছেন না। গত বছর এক বছর মধ্যে লবণে নিম্ন লিখিত আয় হইয়াছে—

আমদানী লবণের শুল্ক	৩৭,৫০,০০০
গবর্ণমেন্টের লবণের মূল্য	১,৭৯,০০,০০০
মোট	২,১৬,৫০০০০
এক্সেন্সি ও ফুজির ব্যয়	৪৫,৫২২,৬৫
লাভ	২,২৭,৯০,৭৩৫

এক বছরমধ্যে ব্যবসায়ে প্রায় আড়াই

পাঁচ কোটি লাভ হইয়াছে। আমদানী লবণে এত টাকা লাভ হইবার সম্ভাবনা আছে কি না? ইহা পরীক্ষা হইলে রহিল। আমাদিগের কইমতদারের মাসিক বা বৈমাসিক হিসাব বহির হয় না? তাহা হইলে আমরা এক প্রকার সংশয় ত্যাগ করিতে পারিতাম।

নব্য সম্প্রদায় কিরূপে কাজ করিলে
এদেশের উন্নতি সাধনে সমর্থ
হইবেন?

হিন্দুগেট্রিয়ার্ট, ইণ্ডিয়ান কিল্ড, ইণ্ডিয়ান রিকর্ডার ও বাঙ্গালী, এই কয় খানি পত্র আমাদিগের ধর্ম ও সামাজিক আচার ব্যবহারাদির পরিবর্তন প্রসঙ্গ লইয়া কয়েক সপ্তাহ আন্দোলন করিতেছেন। তদুপরি করিয়া আমাদিগের হৃদয়ে উপরি উক্ত প্রশ্ন উদ্ভূত হইতেছে। প্রশ্নটি যেমন সহজ, ইহার মীমাংসাও তেমন সহজ নহে। যে সকল বিষয়ে প্রধান প্রধান ব্যক্তিগণ ও মতবৈধ দৃষ্ট হয়, এবিষয়টিও তাহার অন্তর্নিবিষ্ট। ইহার সমাধান বিপর্যয়ে একমত দর্শন সম্ভাবিত নহে। কেহ বলেন, আমাদিগের দেশে এক্ষণে যে সমস্ত আচার ব্যবহারাদি প্রচলিত দৃষ্ট হয়, সম্পূর্ণ রূপে এককালে তাহার উচ্ছেদ করিতে না পারিলে উন্নতি লাভ সম্ভব না হইবে; কেহ কেহ বলেন, উন্নতি রীতিতে অবিত্যাকারীর ন্যায় কার্য করিলে ইতি লাভ সুসাধ্য হইবে না। তাঁহাদিগের অভিপ্রেত এই, এককালে আমাদিগের প্রাচীন আচার ব্যবহারাদির পরিবর্তন না করিয়া উহার অনুমোদিত প্রথা অবলম্বন করিয়া ক্রমে-ক্রমে সংশোধন করিতে হইবে। কেহকেহ আমাদিগের প্রাচীন আচার ব্যবহারাদির মোহনী শক্তিতে একান্ত মুগ্ধ হইয়া উহার দোষ দেখিতে পারেন না, সুতরাং তাঁহারা উহার পরিবর্তন উত্তম বলিয়া মনে করেন।

পৃথিবীর মধ্যে ধর্ম, রাজনীতি, মানব প্রাণী ও সামাজিক নিয়মের বর্তমান অবস্থা ও পরিবর্তন দৃষ্ট হয়, সে সমুদায়ই প্রায় প্রথমাবস্থার এক বা তদধিক অলোক সামান্য প্রতিক্রিয়াসম্পন্ন শক্তি দ্বারা সংশ্লিষ্ট হইয়াছে। কিন্তু সে সকল ব্যক্তি মধ্যবিধ উপায় অবলম্বন করিয়া কৃতকাব্য হইতে পারেন নাই। তাঁহারা এক কালে তদানীন্তন জাতিসমূহ কুৎসিত প্রথা উন্মূলন চেষ্টা করিয়াই কৃতকৃত্য হইয়াছেন। প্রথমতঃ তাঁহাদিগের কেহই অনেক সংখ্যা অনুচর প্রাপ্ত হন নাই; অধ্যবসায় ও সাহস সহকারে কাব্য কবান্তে তাঁহারা ক্রমশঃ সচর ও অনুচর প্রাপ্ত হইয়া স্বদেশের প্রেরণসাধনে সমর্থ হন এবং পৃথিবীর অন্য অন্য লোকদিগের সংস্কারানুষ্ঠানের দৃষ্টান্ত স্থল হইয়া যান। লুথর, জন নক্স, কালবিন, উইকলিক, মচম্ব প্রভৃতি এই রূপে কাব্য করিয়া মর্ত্য পরিবর্তন সাধন করিয়াছেন। কিন্তু তাহদের গিনি যুবক কোন বিষয়ের পবিত্র চেষ্টা পাইয়াছেন, সাক্ষ্যের অসম্পত্তি প্রযুক্ত প্রায়ই তিনি মধ্যবিধ উপায়ের অবলম্বনে যত্নবান হইয়াছেন, সুতরাং তাহদের কৃতকাব্যতা লুপ্তে সমর্থ হন নাই। আমরা রামমোহন রাগবৈট উদাহরণ স্বরূপ গ্রহণ করিলাম। তাঁহার দ্বারা আমাদিগের দেশের যথেষ্ট উপকার হইয়াছে। একথা আমরা অস্বীকার করি না, কিন্তু তিনি আপনাব চিত্ত শুদ্ধি ও সংস্কারানুগুণ একটি বহু পথ করিয়া যা হইতে পারেন নাই। তিনি প্রাচীন বেদ বেদান্তাদিকে মূল পুস্তক করিয়া অপর মত সংস্থাপন করেন। কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখিলে তিনি বিঘ্ন জন্মে পতিত হইয়াছিলেন। তিনি মনে করিয়াছিলেন, প্রাচীন ও নব্য উভয় দলকেই কোমল ক্রমে আপনায় মতে লইয়া অতীত সাধন করিবেন। কিন্তু এক্ষণে যেকোন দেখা যাইতেছে, তাহাদের মত যথেষ্ট হইতেছে তাঁ

হার সেই অতীত পথ কটকটী হইয়াছে। প্রাচীন দল প্রাচীন আচার ব্যবহারাদি তাহাতে অবিলম্বে হইতেছে। আর, ইংরাজীতে মুশিকিত ব্যক্তিগণ আমাদিগের ন্যায় কালে ক্রমশঃ ক্রমশঃ পরিবর্তন করিতেছেন। বরং একটি অধিকারী হইলে, নব্য সম্প্রদায়ের কটকটী লোক তাহাকে আদর্শ করিয়া এ দেশের উন্নতি প্রতিবন্ধক হইয়াছেন। “কাল ও সমাজের অবস্থা বুঝি। চল। এইমত জীবাদিগের কাণ্ডের মূল মুক্তি হইয়াছে। কিন্তু আমরা কত কাল কালের প্রতীক্ষা করিয়া কাণ্ডের কাল কবে হইবে।

উপরে যেকোন কথিত হইল, তাহাতে অনেকে একপ অনুমান করিতে পারেন যে আমরা নব্য দলকে এই অনুমান করিতেছি যে তাঁহারা আমাদিগের মত কাল মত ব্যবহার আচার ব্যবহারাদির উচ্ছেদ করিয়া কৃতকাব্য আচার ব্যবহারাদি প্রতিষ্ঠা করেন। একপ অনুমান করা আমাদের অভিপ্রেত নহে। উক্ত দলই উক্ত ক্রমাধিকারের কাব্য সচল হইবে। বর্তমান সম্প্রদায়ের পরিবর্তন হইবে। সুতরাং রীতি ক্রমাধিকারের বার চেষ্টা পাওয়া যাইবে। কৃতকাব্য হইবে সেই সকল রীতি ক্রমাধিকারের না? পুরাতন হইলেই যে ক্রমাধিকার হইবে একপ মত। কিন্তু আমরা হইক, আমাদিগের বক্তব্য এই, নব্য আচার ব্যবহারাদির ক্রমাধিকার করিয়া তাহাদের চাহেন, অথবা যেকোন প্রকারে। এক বক্তব্য সন্দেহ আচার ব্যবহারাদির ক্রমাধিকার করিতে হইবে। করেন, তাহা হইবে। প্রাচীন পরিচালনা করুন, এবং সেই প্রাচীন বিষয়ের সংশোধন বিবর্তন করিয়া তাহাদের মত হইতেছে, অকপট মত। তাহা হইতে তাহাদের সংশোধন প্রাচীন

বদেশাহিরকণী হইল। সে-কল্পদারকে
 আর জীর্ণাবস্থার রাখিবার চেষ্টা করা
 রিবেদর হইতেই নহে। মন্যবল। কি সে
 চেষ্টা করিতেছে। হইল। কল্প জন ব্যক্তি এ
 কাশ্য রোগে আক্রান্ত হইলে ধর্ম ও সমাজ
 উভয় দোষেই অভিযানী হইয়াছেন। ইহা

মৌর্য পদক্ষেপ করিয়াছেন।
 তারা ব্রহ্মা ব্রহ্মা গোপনে অনেক হিন্দু
 রাজ্যের বিরুদ্ধ কাজ করিতে
 গিয়া একাধা রূপে স্বদেশের
 ক্ষতি করিতে কাহার সাহস
 মনে যে বিষয় বুঝিবিরুদ্ধ
 হিন্দু বণিয়া বুঝা যায়তাহে, কয়
 হিন্দু সমুলে উদ্ধুলন চেষ্টা করিতে

...বরাবর। নব্যাবলকে এইরূপে কাঁচা ক
 ...নুরোধ করিতেছি, তাঁহার এক
 ...করণ আছে। আত্মদানের দ
 ...তাঁহার কাব্যদ্বারা সংশোধন কবি
 ...কর তাঁহাদিগের উপরে পতিত হই
 ...হারা যদি কেবল প্রাচীন দলের
 ...অনুবোধন করিয়া যান কিরূপে
 ...হইবে? তাঁহারা যদি প্রাচীনদিগের
 ...না করিয়া অকপট ও সো
 ...চিত্তে উল্লিখিত প্রকারে কাব্য করেন
 ...সম্প্রদায় তাঁহাদিগের প্রতিবন্ধ
 ...করিবেন সন্দেহ নাই। তাঁহারা।

১১২ বাবহারাদিকে ঐক্য দিকে লইয়া
মিক্রোচার চেতা করুন, প্রাচীনবাসি সংশয়
বিহীন। সুকলকে উহার পূর্ব সীমায় রাখিবার
ধারণা না করাইবেন। এইরূপে উভয়তঃ আত্ম
আচার বাসীর হইলে যে যে আচার ব্যবহারাদি
বাসি হইয়া আছে, তাহা সংশোধিত হইবে
নিশ্চয়। পরে যাহা গুলি আদৃত ও পরিগৃহীত
হইয়াছে। এ দেশে আচার ব্যবহার ও ধর্ম
সংক্রান্ত অনেকগুলি অশুদ্ধি বন্ধ হইয়াছে।

কিন্তু সেই উদ্দেশ্যের এই একমাত্র উ
পায়ের পথিক পথিকেরই সেই উ

মূলন কারী কোথায় ? কাজ অঙ্গে অঙ্গে
হউক, তাহাতে ক্ষতি নাই । ক্রমশঃ সহকা
রীর মল বৃদ্ধি পাই, তাহা হইলেই কাণ্য
অগ্রসব হইবে । কিন্তু আত্মা দেখিতেছি,
সকলেই কেবলো গুণায়মান আছেন ; কা
জে কেহই হস্তক্ষেপ করিতেছেন না ।

তাঁহার। অজ্ঞ ও অসত্য সময়ের প্রচ-
 লিত মতের পরিবর্তনে সাহসী হইয়াছি-
 লেন, আমাদিগের নব্য সম্ভাব্য তাৎক্ষ-
 ণিক ন্যায় সময়ে • তিত নহেন । ইহারা
 এ বিষয়ে পরম ক্রোড়শাশালী । স্বদেশের
 সম্ভাব্য ব্যবহারাদি পরিবর্তনে প্রবৃত্ত হই-
 রা ইহাদিগকে কারাগারেও যাইতে হই-
 বে না, দারুণ প্রহারও সহ্য করিতে হইবে
 না । প্রাচীন মনের সহিষ্ণুতা শক্তি এক্ষণে
 বিলক্ষণ হ্রাস হইয়াছে, নব্য সম্ভাব্য স-
 মাজ ও গৃহ পরিত্যাগ না করিয়া বা করুন
 তাহতে তাঁহার। আর বড় কিছু বলেন না,
 স্বমতপরিত্যাগী সম্ভাব্যকে বিধপান করা
 ইরা হত্যা করেন, এমন পিতা ত আমাদি-
 গের জ্ঞান ও নয়নগোচর হইন নাই । বি-
 শেষতঃ ইংরাজী শিক্ষা ও ইংরাজ সংসর্গ
 নব্য মনের অনেক সহায়তা করিতেছে
 ইহাদিগের উদ্ভাবনী শক্তি বিনিয়োগ করি-
 বার আর প্রয়োজন নাই কেবল ক্রিষ্টি-
 উৎসাহ ও অধ্যবসায়ের সংযোগ হইলেই
 ইহারা অনায়াসে অতীত সাধন করিতে
 পারেন ।

উপসংহার কালে সংক্ষেপে আমরা
গের বক্তব্য এই, কৃষ্ণের প্রসিদ্ধ বিদ্য
যের দ্বারা আমরা এককালে বাবতীয় বিদ
য়ের বিদ্য বাস্তুজ্ঞী হই। তাদৃশ বিদ্য
কখন যেশের কলাপকারী হয় না।

বোনকে নাহেলে প্রত্যাহা :

হুগলীর ছুটিয়া বাকারের 'দুবা বা
 ৩ দিনের নভার,' তত্ত্বা মিসনারি জন,
 বোর্স্ট নাহেব যে উপদেশ প্রদান করিল
 মনরা পত বাবে তাহার উপস্থিতি

হিন্দব । বোম্বাই সাহেবের প্রস্তাবটি অতি
মনোহর হইয়াছে । দেশের নৈসর্গিক
বহা ও সমাজ প্রভৃতির মনুষ্যের চরিত্র
ও ধর্মাদির উপরে সম্পূর্ণ প্রভাব আছে,
তিনি ইহা এই প্রস্তাবে উত্তমরূপে প্রতি
পন্ন করিয়াছেন । পৃথিবীর লোকেরা এম
সত্য ধর্মাবলম্বী হয় না । কটলগের হাই
লাণ্ড ও এ দেশের মহারাজ প্রভৃতি ইহা
র দৃষ্টান্ত স্থল । পক্ষান্তরে, এশ্বর ও সম
স্ত জন্তু বানীরা ঈশ্বরের ও বিলাসপরা
য়ন হয় । বঙ্গ দেশ, কান্দ ও ইটালির কা
ম্পেনিয়া বিশেষ রূপে ইহা প্রমাণ করি
দিতেছে । বিস্তৃত শিক্ষা ও অত্যন্ত স্বাভা
বিকার বহুতর পরিবর্ত হইয়া থাকে । লাভ
বেকন অত্যন্তকে দ্বিতীয় স্বভাব বলিয়া
নির্দেশ করিয়াছেন । পৃথিবীর যে সময়ের
যে অবস্থা, ও যে সময়ে যে একরূপ উন্নতি
হয়, সেই সকল চর্চনা ও বিবেচনা করিয়া
লোকে ক্রমশঃ যদি সত্যতা গোপানে
আরোহণ করিবার চেষ্টা পায়, পূর্ব স্বভাব
দ্বারা বহু পরিবর্ত হয় সন্দেহ নাই ।

বেমান্ট সাহেব এদেশের বিদ্যালয়িকা
ও ধর্ম পরিবর্তের বিষয়ে যে মত প্রকাশ
করিয়াছেন, তাহাও প্রশংসনীয়। ধর্ম পরি
বর্তের বিষয়ে তিনি বলেন, " ভারতবর্ষ
ওটা ভীষণ প্রভূতি ধীপের দ্যাক্ষিণ্যে। এত
দেশীয়দিগের আত্মীয় প্রভৃতি, স্বতন্ত্র ধর্ম ও
স্বতন্ত্র আচার ব্যবহার প্রভৃতি আছে, সে
সমুদায় এক দিনে পরিবর্ত হইবার নয়।
কিন্তু তাহার পরিবর্তন চেষ্টা করা নিত্যা
ন আবশ্যিক। প্রসিদ্ধ সাগরের অনেক
দীপের লোকে এককালে খুঁট ধরাবল
করিয়াছে, যথার্থ; কিন্তু তাহাদিগের
পূর্বের কিছুই ছিল না। তাহার। যেমন
সহজে খুঁট ধর্ম অবলম্বন করিয়াছে, তৎ
পরিভ্রমণও তেমনি তাহাদিগের সহজ।
যাতায়াতকার, জাপান প্রভৃতি কি ইহার
উৎকৃষ্ট দৃষ্টান্তস্থল নহে? উল্লেখযোগ্য
একটি দৃষ্টান্ত এই যে, জাপানিগণের মধ্যে

দিক হইতে সন্ধ্যা হইতে পূর্ব পর্যন্ত
আমরা সকলেই একত্র হইয়া
একত্র হইয়া পূর্ব পর্যন্ত
সন্ধ্যা হইতে পূর্ব পর্যন্ত
একত্র হইয়া পূর্ব পর্যন্ত
সন্ধ্যা হইতে পূর্ব পর্যন্ত
একত্র হইয়া পূর্ব পর্যন্ত

বিবিধ সংবাদ।

৩ই আগস্ট সোমবার।

বোম্বাইনগরে দালমেন্দীর অধিকেনের
মাক ১৪০ টাকার বিক্রীত হইতেছে। গত
সন্ধ্যা অংশে ২০ টাকা মূল্য রাখি হইয়াছে।

পতন প্রাপ্ত অধ্যাপক বিহারী বসু
স্বপ্নরূপে স্বকর্তব্য কাব্য সম্পন্ন করিতে
ছেন। তাঁহারিগের দুই জন প্রতিমিথি সর্বদা
অনুসন্ধান করিতেছেন কে কোথায় পতন
প্রাপ্ত অধ্যাপক করে। তাঁহারা ইহার মধ্যে
৩০০ গাড়রানকে সারধান করিয়াছেন।

কারুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে, মোস্ত
নহমদ স্বয়ং করার সম্বন্ধে উল্লিখিত হইয়াছে
নামুলতান জান পুনর্বার সন্ধির প্রস্তাব
করেন। কিন্তু পুনর্বার তাঁহার প্রস্তাব অগ্রাহ্য
হইয়াছে। মুলতান জান পারস্যাদিগের
নিকটে এক দূত প্রেরণ করিয়াছেন।

বিশিষ্ট বিচার করেন তিনি জিরজিকা
রীর দলের অগ্রগণ্য হন, তাহার প্রধান কারণ
এই, এক মহামতি লাহোর জনিকেল গড়ে
লিখিয়াছেন, কোন ইউরোপীয় এতদেশীয়
কোন ভৃত্যকেও প্রহার করিলে গিউন
সাহেব (কলিকাতার প্রধান মাজিষ্ট্রেট)
তাঁহার দণ্ড করেন। এদেশে কত কগুলি
একগ ইউরোপীয় আছেন, তাঁহারা বেড়া
পূর্বক এদেশীয়দিগকে প্রহার ও বধ করেন,
কেন কিছু না বলে, এই তাঁহারিগের ইচ্ছা।
হিউন সাহেব এক্ষণি ইহার প্রতিবন্ধক বলি
য়াই তাঁহারিগের বন্ধ রোগ।

বকুল্লাইট প্রকাশ করিয়াছেন উত্তর প-
শ্চিমবঙ্গের সুপ্রসিদ্ধ বিহারী বসুকে বহু
টাকা আছে, তাহা কলিকাতার সর্বপ্রধান
সমাজিক কল্যাণ সমিতির নিকট হইতে
প্রাপ্ত হইয়াছে।

উত্তর পশ্চিমবঙ্গ বসেন উত্তর পশ্চিমবঙ্গ
লে যে উত্তর পশ্চিমবঙ্গ বসেন, তাহা
হারা একতাক হইবেন। বাহারী ভাবে
মাজিষ্ট্রেট গমনাগমন করিবেন, তাঁহারিগের
নিকট হইতে অধিক টাকা লওয়া ও তাঁহা
নিগে অধিক কষ্ট দেওয়া ইতি তাঁহারিগের
একতাক হইবার উদ্দেশ্য।

১. বেরোগারি খাঁর নিকটস্থ নদী উল্লিখিত
হইয়া এ স্থান তাহা বাহারি উপকরণ হই
রাছে।

কর্মীনাশ নদীর অত্যন্ত জল বহিষ্ণু ওয়া
তে তাহার উপস্থিত সেতুর একটি পিণ্ডা ভগ্ন
হইয়াছে।

পকাবেল লোকেরা হুতন মোট লটতে
সমর্থ নহে তথায় পতকরা ২৫ টাকা বাঁটা
দিয়া মোট তালাইতে হইতেছে।

সিঙ্গীগেজেট বসেন কোড নামক একজন
ইউরোপীয় পূর্বে খয়রাবাদে একজন শিক্ষক
ছিলেন। কোন অপরাধে পদচ্যুত হওয়াতে
তিনি কারুলে গমন করেন এবং হুম্মবেশে ত-
থায় অনেক স্থানে ভ্রমণ করেন। জেলাস্বামীর
তাঁহার হুম্মবেশ ও খুদীর খর্চ প্রকাশিত হওয়া
তে কয়েক জন তাঁহাকে প্রহার করে। এই
কলহ কালে তিনি এক জনকে বধ করেন।
তদ্রূপে শাসন কর্তা তাঁহাকে বধ করিয়া
পোসোয়ারে বিচারের জন্য প্রেরণ করিয়া-
ছেন।

পোসোয়ারে একগে ওলাউঠার কিং
শান্তি হইয়াছে।

সেপটম্বর মাসের ত্রিংশ ত্রিংশ তারিখে
কামর কলম প্রকৃতি প্রোণের কতকগুলি
নিবন্ধ প্রকাশ করিয়াছেন।

হাউস ওবলড মর্ড কামি-তর মৃত্যুতে
শোক প্রকাশ করিয়াছেন।

চর্চা বিসময়ের সেক্রেটারি টে, ইয়ার্ড সা-
হেব হিন্দু পেট্রিক্ট গড়ে লিখিয়াছেন তাইসন
সাহেব তাহার দিওয়ালরের একজন হীরাটক
লাখি হারেন নাই তাহাকে, মসৌমৌনী কবি-
বার-কন্যা তিনি পদখানি তাহার নাম
করিয়াছিলেন। বাহা কতক পদ্য লিখিয়া
বিসময়ের ১ মাজিষ্ট্রেটের কর্তব্যে
কলিকাতায় করিয়াছেন।

উত্তর পশ্চিমবঙ্গ
ককে ইনকর্পোরেশন
বার, মসৌমৌনী করিয়াছেন
এত ইচ্ছা হইবে।

১ ই আগস্ট
কিরিয়াসাবি টোমাসের
মৃত্যু হইয়াছে। সকল প্রকার
ইহাতে জাহাজবর্ষের জাহাজ
মৃত্যু হইবে। যেখান
লট কারিগের সত্য ও
সত্যকারি ইচ্ছা।

১. বাহারিগের ও কারুলবর্ষের
মি (কেনে জাহাজবর্ষের
মিগের বাহারিগের
হেন। তাঁহারা যে সকল
তথ্য হুতন মোট লটতে
যায় বিশেষ উদ্দেশ্য
হইতে লাহোর সত্যকার
কারে র প্রধান
এব অধিক সংবাদ
কিনিক বসেন নর

আবীরদিগের বাহারিগের
চাহিয়াছেন। তাঁহারিগের
টেই সেক্রেটারি
করিয়াছেন। উক্ত
রোপীয়দিগকে ইহার
অনুরোধ করিয়াছেন।
র আবেদন
এতদেশীয়েরা
না হন।

উক্তপক্ষে এক জন
করিয়াছেন। একজন
হেই আদালত
কেনে লাহোর
উক্ত সাহেব
এক বাহারি
করিয়াছেন।

উক্ত সাহেব
আদালত
করিয়াছেন।
করিয়াছেন।
করিয়াছেন।

হেতুকে আপনাদিগের সহকারী সজ্ঞাপিত
গত হইতে বিলাসে দিয়াছেন । জীবিতকারী
নাটকের ক্রমশঃ অভিনয় হইতে চলিল ।

টাইমস অব ইন্ডিয়া বলেন যে আইনগরে
একটি ইউরোপীয় স্ত্রীলোক সর্বদা সুরাপন
করিয়া তাহার খাদ্য সহিত বিবাহ করিত ।
একদা সে অত্যন্ত উত্তম হইয়া এক শি
তল বাগী অর্জিত্য করিয়াছে । নিয়মনিম্ন
ইউরোপীয় স্ত্রীলোকদিগের প্রায় এই মোহ
দেখা যায় ।

কুমারী মেল আগরার নিকটবর্তি স্থান সমু-
দ্রে নেকড়িয়া ব্যাঙ্গের অভিনয় উৎপাদ হই-
য়াছে । রাজিকালে ব্যাঙ্গের অনেক শিশু সন্তান
বাহ্যকোক্ত হইতে লইয়া গিয়াছে
গেজেট বলেন একটি স্ত্রীলোক আপন
শিশুকে রক্ষা করিবার জন্য তাহাকে খা টর
হিত বন্ধন করিয়া রাখেন । রাজিতে ক্রন্দন
কি অবশ্য করিয়া তিনি আগরিত হইয়া
খিলেন এক নেকড়িয়া তাহার সন্তানকে
সিঁড়িতে গোলযোগ করাতে ব্যাঙ্গ পলায়ন
করিল, কিন্তু শিশুটির আশ্রয় তাহা হই-
তে ।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন, উক্ত স্থানে
কতি সর্বোৎকৃষ্ট কটগ্রাক বস্ত্র লইয়া যাওয়া
হবে । এক বহিষ্কৃত তাহা উৎসাহ হইতে
নাহিঁতেছেন । পারিসের ন্যায় ভারতবর্ষেও
উগ্রাক হইতেছে ।

উক্তপত্র আরও বলেন আলাহাবাদ
জনার এক অসীমারের বাজিতে অনেক
জলুক ও তলয়ার পাওয়া গিয়াছে । তদ্রূপ
খাদ্যাদার ১০০০ টাকা উৎকোচ লইয়া অসীমার-
রূপে অস্ত্র রাখিতে দেন । অস্ত্র সকল ছুটির
মধ্যে লুণ্ঠিত ছিল । এক গাংলা তাহা বাহি-
র করিয়াছে । খাদ্যাদার ও অসীমার উভয়েরই
মৃত্যু হইয়াছে । নিরস্ত্র করিয়া বিদ্রোহ নিবা-
রণের চেষ্টা করা । অস্ত্রের গবর্ণমেণ্টে লুণ্ঠ-
নিত এই প্রকার করিয়াছিলেন, তথাপি
এই অস্ত্র গারিবালডি তদ্রূপে হুকুমিগের
সহায়তার অধীন সিংকে দ্রুত করেন ।

রেজুপাইটাইমস বলেন তথায় তদানক
কত হুকুমিতে একখানি জাহাজ নাবিক সহিত
সম্মত হইয়াছে ।

উক্ত পত্র আরও বলেন রক্তদেহে মৃত্যু
হতির হাস হইয়াছে । জাহা তাহার নিবারণ
খ বিলম্ব করিয়া হইয়াছেন ।

উক্ত পত্রে লিখিয়াছেন রেজুপে মৎস্য
কর হওয়াতে সকলে বিরক্ত হইয়াছে
আনাদিগের গবর্ণমেণ্টেও পলায়ন করিয়া
বীরমিগের অস্ত্র হইয়াছেন ।

উক্ত পত্র আরও বলিয়াছেন তদ্রূপ
ক কোনকেই হা জেটের প্রথম সত্কারী
দেখানী তহবিল তদ্রূপ করাতে তাহা
প্রধানতঃ দিটারিয়ে সর্বাংশ করা হইয়াছে
তর কি বেহারের জেলদারোগা মুক্ত হইয়া
ছেন । ইউরোপীয় ররা জনকল দোবে প্রায়
মৃত্যু পাশ না তলে রাখা কেন এত দূর দোষী
দিগকে আনিয়া সাধারণ খনাগার হইতে
ব্যত করা হয়

আমরা সমাচার হিন্দুস্থানী পত্রে একটি প্র-
স্তাব লক্ষ্য করিয়া বিশেষ আশিত হইলাম ।
ইংলিসমান অসৌখ্যের সত্যকে গালি দিয়াছি-
লেন বলিয়া সমাচার হিন্দুস্থানী তাহাকে পশু
প্রভৃতি শব্দ দ্বারা কষ্ট করিয়াছেন । আনাদি-
গের লণ্ডনস্থিত সংবাদ দাতা বলেন এই
সকল মর্শন করিয়া ইংলণ্ডের লোকে বিরক্ত
হন, বস্ত্রতা কষ্টকারী সহিত কষ্ট তাহী
হওয়া কোন মতেই উচিত নহে ।

ই অবশ্য বুঝায় ।

আমরা কতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার কবি-
তেছি ভারতবর্ষের সত্য " তৎকালের উপর
মানুল হওয়া বিবেচনা না এই নামের এক
পশু পুস্তক আনাদিগের নিকটে প্রেরণ করি-
য়াছেন । আনাদিগের তৃত্তপূর্ব লেগ্টনে
গবর্ণর ভারতবর্ষের গবর্ণমেণ্টের অপ্ররোধ
পরন্ত হইয়া তৎকালের উপরে কর গ্রহণ ক-
রিবার সক্ষম করিয়া ভারতবর্ষের সত্যকে এই
অপ্ররোধ করেন যে কর আনাদের এক
সমুদায় নির্জারিত করিয়া দেন । ভারতব-
র্ষের সত্য তাহার প্রত্যুত্তরে লেখেন এই কর
সংগ্রহের যে কোন উপায় অবলম্বন করা হইক
ত হা কোন ক্রমেই অত্যাচার নির্মুক্ত হইবে
না । বিশেষতঃ এই প্রকার চিরস্থায়ী বন্দোব-
স্তের প্রতি প্রতিশ্রুতি করা হইবে অপর বন্দোব-
স্তের ব্যয় অনেকা প্রায় দ্বিগুণ আর হয়

হলে এদেশে তৎকালের ন্যায় বিলাসের বস্ত্র
উপর কর লওয়া আবশ্যিক । বন্দোবস্তের
মোট সত্যের প্রতিনিয়তই যুক্তি অগণ ক-
ন করিয়া এই কর গ্রহণ করিয়া পরিচালিত করি-
য়াছেন । বন্দোবস্ত ভারতবর্ষের সত্যের নিকটে
এবিরে কণগ্রস্ত সন্দেহ নাই ।

অন্য পূর্ব বালালার রেইলওয়েতে রাণী
বাট পর্যন্ত বাসীর নকট চলিয়াছে । আগাধি
বুখার কুটিয়া পর্যন্ত হইবে । ১লা অক্টোবর
অবধি সাধারণে এই গাড়িতে আরোহণ করি-
তে পারিবেন সন্দেহ নাই ।

টাইমস অব ইন্ডিয়া পুনঃ মগরত ইন্স
প্রকাশ হইতে নিম্ন লিখিত হস্তান্তর
উক্ত করিয়াছেন । ইন্সপ্রকাশ বলেন পু-
রাতন মহারাষ্ট্রীয় রাজাদিগের দপ্তরে রাজকা-
বা, যুদ্ধ দৌতা প্রভৃতি কার্যসংক্রান্ত অনেক
বাগদ পত্র আছে । দোখাট গবর্ণমেণ্ট তাহা
বিনষ্ট করিতে আদেশ দিয়াছেন । আমরা
ইন্সপ্রকাশের সহিত এই অসত্য আচার
প্রতিবাদ করিতেছি ।

দিল্লীগেজেটের কার্যনিহিত সংবাদাতা
বলেন মুলতান জাতি ও সরদার সামন্ত
এই করা নগর রক্ষা করিবার জন্য তথায় উপ-
স্থিত হইয়াছেন । দোস্ত মহম্মদ হরাট পণ্ডিত
জয় করিবেন পণ করিয়াছেন ।

উক্ত পত্র প্রেরক আরও বলেন কতকগুলি
নি তুর্কমান হিরাটের নিকটবর্তি একখানি
গ্রাম লুণ্ঠ করিয়া অনেক স্ত্রীলোক ও পুরুষকে
ধৃত করিয়া লইয়া গিয়াছে । পারস্যদেশীয়
সেনাপতি নুরান বিরক্ত এই বন্য আত্মকে
কোরাসান হইতে নির্মূল করিয়া দেন, তথা-
পি তাহাদিগের দৌরাত্ম্য যায় না ।

রেজুপাইটাইমস বলেন রক্তদেহে শুবাক
ও পানের আবাদ করিলে বিস্তর লাভ হয় ।

কিনিক বলেন সম্রাট নেপোলিয়ন লণ্ডনস্থ
নিম্ন প্রেরণ যুৎ মর্শনার্থ লম্বন করিবেন ।

অসৌখ্য গেজেটের এক জন পত্র প্রের-
ক লিখেন পর্কটের নাজিটের একটি অ-
স্থত সজিটারের মৃত্যু প্রদর্শন করিয়াছেন ।
ইই ব্যক্তি এক বাগী তাহা লইয়াছিলেন
উহাদিগের যুৎ পারস্যদেশী থাকতে
জন যুৎ শিখ গবাক যুদিয়া আপনের পরিবার

1990

বোম্বাই সমিতিতে প্রবর্তিত বঙ্গীয়
বিভিন্ন শীত ইউরোপীয় একত্র হওয়া
একবার সুসজ্জিত হইয়া উইয়াছে হুই
হুয়া। এছাড়া ডায়াসিগের শিক্ষা জন্য
ইউরোপীয়। তদন্তক যথি সমস্তকার
সেবাগতি কারিগরি একটি মাতব্যাস
করিবেহে। বর্জন্যধারণের ও অবর্ণমে
করার কাহা চলিবে। এবেশে ইউরোপীয়
শিক্ষণ হইলে যে শীত বঙ্গীয় ইউরোপীয়
বঙ্গীয় হুই হইয়া এবেশের বহানিষ্ট
নে, তাহা একতারাষ্ট প্যার্ট প্রতীতবান
হেহে।

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

কেন্দ্রীয় ইতিহাস বিভাগ, কলকাতা
পণ্ডিত কৃষ্ণ বিহারী শর্মা, ইতিহাস বিভাগ, কলকাতা

দ্রিতে অন্তর্ভুক্ত করিয়াছেন। লাওহোলডাং সতী চাঁ করমিগের বড় বন্ধু নরেন বোধ হইতেছে।

উক্ত পত্র এতদেশীয় পুলিশ সংশোধন এই সঙ্গে বলিয়াছেন যে শুধু হিন্দুস্থানিগের ন্যায় বাজালীরা আঘাতের পরবর্ত্তে আঘাত না করিবেম ততদিন, পুলিশসংশোধনে তাঁ হামিগের কোন উপকার হইবে না। জনশঃ ইংলিশ বসনে পাটকেল বন্দোবস্ত হইতেছে।

গবর্ণমেণ্ট আজ্ঞা করিয়াছেন চাক ও মুর-সিদাবাদ ব্যতিরিক্ত সকলের আর সকল স্থানে গভবসেরে যে পরিমাণে ইনকমটাক্স লগু হইয়াছিল, তাহাই প্রচলিত থাকিবে, তাহার আর কোন পরিবর্ত্ত হইবে না। যদি একদম হয় এখন কোন আসেসর অন্যায় কর ধর্য্য, করিলে, প্রজাগণের উৎকণ্ঠ গবর্ণমেণ্টের গোচর করা কর্তব্য।

১০ই আশ্বিন শুক্রবার।

আমরা একটি অতি শোচনীয় ঘটনার সংবাদ প্রাপ্ত হইরাছি। ঐরামপুরের অন্তঃপাতি থানা হরিপালের অধীনস্থ চামাখরা টবু ঠপুর গ্রামের এক দরম প্রজি কলিকাতার কর্ম করে। তাহার স্ত্রী তাহার বাসগায়ে থাকিত। স্ত্রীলোকটি অতিশয় সুন্দরী ও অপবয়স্ক। তাহার ভাবন অভিভাবক ছিল না। তিনটি তরলজিহ্বা যুবা তাহাকে কুণখ গামিনী করিবার অনেক চেষ্টা পায়, কিন্তু কিছুতেই হৃতকাণ্য হইতে পারিল না। এক দিবস এই স্ত্রীলোক জান করিয়া রতন করিবার জন্য অপর এক বাড়িতে অগ্নি আনিতে গেল। সেই সুযোগে ঐ দুর্বৃত্ত যুবকেরা তাহার গৃহে গিয়া লুণ্ঠিত হইয়া গিয়াছিল। সে রত্ননাগারে অগ্নি রাখিয়া শয়ন গৃহে কোন প্রব্য আনিতে গেল। ঐ দুর্বৃত্তেরা এই অবসরে তাহাকে ধরিয়া ও তাহার মুখ বন্ধ করিয়া, চুরবন্দা করিল। এই অভ্যাচার কালেই তাহার প্রাণ বিরোধ হইল। যুবকেরা এই ঘটনা দেখিয়া ভীত হইয়া পলায়ন করিল। পরে তত্ত্বতা জব্দীদারের গমস্তা মণ্ডল ও চৌকিদারকে কিছু উৎকোচ দিয়া স্ত্রীলোকটির গলদেশে ছদ্ম মিথ্যা, সে ইচ্ছামতে প্রাণত্যাগ করিয়াছে, এই জনরব ছলিয়া দিল। হরিপা

লের দারোগা ও উদ্বাহনের কথা মাজিষ্ট্রেটের নিকটে রিপোর্ট করিলেন। চারি দিবসের পরে ঐ হৃত দেহ ঐরামপুরে আনীত হইল। কিছু দিন পরে প্রজি আগুন বাড়িতে আসিয়া তাহার স্ত্রীর মৃত্যুর প্রকৃত কারণ জানিতে পারিয়া ঐরামপুরের মাজিষ্ট্রেটের নিকটে নালিশ করিল। মাজিষ্ট্রেট ইংলিশরাষ্ট্র দারোগার উপর অগ্ৰসন্ধানের ভার দিলেন। ঐ দারোগার বয়ে সবুদার কাণ্ড প্রকাশিত হইয়াছে। হরিপালের দারোগা, গমস্তা মণ্ডল ও চৌকিদার দৃষ্ট হইয়াছে, দুর্বৃত্ত যুবক ত্রয় গলায়ন করিয়াছে। ঐ সম্বাদটি যদি সত্য হয়, পুলিশ রাখিয়া গবর্ণমেণ্টের রক্ষা ব্যয় খরচের প্রয়োজন কি?

কিনিকের বোয়ালিয়ার সংবাদদাতা বলেন, উক্ত নগর আর পজার গর্তস্থ হইল। সরকারী বাজী সকল ও ওয়াটসনের সুবিখ্যাত অট্টালিকা বিনষ্টপ্রায় হইয়াছে। তত্ত্বতা লাধারণ পুস্তকালয় ভগ্ন হইয়াছে। সর্বমুখ প্রায় ৪৫ লক্ষ টাকার সম্পত্তি নষ্ট হইতে বসিয়াছে। এত টাকার সম্পত্তি গেল, পূর্বে একটি বাঁধ দিবার চেষ্টা করিলে কি এ সকল রক্ষা হইত না?

ইংলিশমান বলেন, দমদমার সেনা নিবির থাকিবে কি না এই বিষয়ের বিবেচনার্থ এক কমিশন বসিয়াছে। সর হিউ রোজ এই স্থান ভ্রমণ করিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। বিদ্রোহ কালে দমদমার যে সকল বালিক নির্মিত হইয়াছে, তাহাতে দশ সহস্র সেনা বহুদমে থাকিতে পারে। গবর্ণমেণ্টের বিস্তরব্যয় হইয়াছে। দমদমা অসামান্যর স্থানও নহে। তবে কি কারণে তাহা ভ্রমণ করিবার চেষ্টা হইতেছে? গবর্ণমেণ্টের খবরদার কি শনি হইয়াছে?

উক্ত পত্র আরও বলেন, পূর্ব বঙ্গালার রেইলওয়ে টেসনের নিকটে একটি বাজার হইবে। গবর্ণমেণ্ট তদ্বিষয় আড়াই লক্ষ টাকা দিয়াছেন।

কলিকাতার সিভিলিয়ান হুইট কামর আসিয়া অত্যন্ত উৎসাহ করিতে করিতে ব্যক্তি পুলিশ কমিশনরের নিকটে এই বিষয় জানাই রাছেন। হুইট প্রেসিডেন্ট হইয়া

আবশ্যক না কি? পূর্ববঙ্গে কি সাক্ষী? হিন্দুগেট হুইট ম্যারিয়ার খতিয়ান এইখান কালেক্টরের মণি হারাইবার বিষয়ে কথা জাখি রাছেন, ইতিহাস রিকর্ডের তাহা সম্পূর্ণ প্রমাণ খোঁকার করেন নাই, এক বাঁধে অবশ্যক করেন নাই। তিনি বলেন হুইট কালেক্টর বাহু লীননাথ আচ্য (আমরা অবশ্যই বাহু চৌচরণ সিংহকে লক্ষ্য করিয়াছিলাম তাহা বিদ্রোহ নিকট কথা প্রাধান্য কাটি) তাহা দোষী হইতে পারেন না।

সেই হুইট সাধারণে প্রথমে রিকর্ডের মতের অনুমোদন করিবেন না। আমরা পুলিশ করিতেছি মণি হারাইবার কারণ জানি জান করা আবশ্যক।

উক্তসম্পাদক মিসরির ভাইসন সাহেব অপরাধ লম্ব করিবার চেষ্টা হইয়াছে। সি বে চেষ্টা করল পান প্রকার লম্ব করিবার চেষ্টা হইল চরণাখাত দারোগার দায়িত্ব করা যে মোদন হইল কোন প্রমাণ প্রমাণ করিতে পারিলাম না।

১১ই আশ্বিন শনিবার।

সদাচার হিন্দুস্থানী বলেন, অসামান্য এক বেগনের বাড়িতে ছয় জন লোক মৃত্যু করিয়া ২০০০ টাকার প্রব্য অপহরণ করিয়াছে। তাহারা অন্যান্যিও হৃত হইয়াছে। উক্ত পত্রে তিনটি ভক্ত্যাক্ষের বিষয় উল্লিখিত হইয়াছে। এক ব্যক্তি অপর এক ব্যক্তিকে ধরিয়া হৃত হইয়াছে। পজার নিকটস্থ এক জন মুলমান আপনায় স্ত্রীকে হৃত করিয়া হৃত হইয়াছে। হরমোবাই প্রভে এক জন পুলিশ কমিটাবল আত্মহত্যা করিয়াছে। অন্য এক হত্যা কি অন্য হইয়া থাকিবে? যদিপুর্বে গোলাকোচের লক্ষ্য করা হইয়াছে তাহা এক রেজিমেন্ট সিপাহী প্রেরিত হইয়াছে।

ইংলিশমান প্রথম করিয়াছেন বাহু কামে-প্রমোদন প্রভুর ব্যক্তিগতের পরীক্ষার উদ্ভাব হইয়া অসামান্য বিদ্যাবিদ্যালয়ের ভারতবর্ষীয় অধিনায়ক হইয়াছেন।

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্ণমেণ্টের বাণিজ্য বিক্রীত হইয়াছে।

১ টাকার সিকা ১১০—১১১০

৪ টাকার কোম্পানির ... ১০৪৫/০—১০৪৫/০
৫ টাকার ... ১০৪৫/০—১০৪৫/০
৬ টাকার ... ১০৪৫/০—১০৪৫/০

অন্যতম বিচারালয়ে কি, ও ইন্সপেক্টর

১৯ এ. জুলাই পরিবার।

গবর্নর জেনারেল লর্ডপতি : লর্ড লর্ডপতি-
র হারিস্টন, অ্যান্ডিন, এন্ড, বিটলউইলিয়াম,
ও কাউন্সিলে উপস্থিত ছিলেন।

প্রধানতম বিচারালয়ে কি, ও ইন্সপেক্টর
মাস্টার আদালত ১৮৫৯ অব্দের ৮ আইনের
কর্তৃক দ্বারা স্থাপিত বহিবার অভিযোগে
হারিস্টন সাহেব এক বিল অর্পণ করিলেন।
এই বিলের মর্ম এই, সুপ্রিম ও সদর কোর্ট
একত্রিত হইয়া প্রধানতম বিচারালয় হইয়াছে
কি না বসে অন্য সুপ্রিম কোর্টে অংশ পূর্বে
স্থাপিত হইয়াছে। সদরের অংশে ১০
সদর ৩০ টাকার ইন্সপেক্টর মাস্টার আ

দালত হইবে। ...
... হইতে তাহা ...
... বিচারালয়কে সদরের ন্যায় ইন্সপেক্টর
... কিংবা নকল যে কদম পূর্বে স
... আদালতে পারিত না, তাহাতে ইন্সপেক্টর
... লগিবে না। বিচারপতিরা ১৮৫৯ অব্দের
৮ আইন অনুসারে আপনাদিগের রায় আ
... লগিবে। একপে আপীলের কাল
... ৩০ দিবস দিরা আছে কিন্তু প্রধানতম-বিচার-
... করিবে। পূর্বে ইহার পরিবর্তন করিতে পা
... রিবন।

এ জুন পর্যন্তের ইউরোপীয় সমাচার।

১ গবর্নমেন্টের সেনারা ক্রমশঃ
... কবিতেছে। একটি যুদ্ধ হই-
... তাহার অগ্নি হইয়াছে ব-
... বিজ্ঞানীদিগের সভা-
... আদিরাছে।
... প্রকাশ করিয়াছেন,
... গতে ৩০০০ ক্রী-
... ১৮ ত গাদিগ-
... হাতিতা বি-
... করিতেছেন।

... নীতির কয়েক জন প্রতিনিধি সর
... উভের সহিত লাক্ষ্য করিয়া তত্বগর্ভে
... বস্তুর উঠাইয়া দিবার প্রাধিক
... কবিয়াছিলেন। সর চার্লস উড এই নলিয়া তা
... তাব উভব মান করিয়াছিলেন যে এ প্রাধিক
... গ্রাহ্য করা হইতে পারেনা, যেহেতুক তত্বগর্ভে
... এখনও এক কোটি টাকা আয়ের অবলান হই-
... রাছে।

ইটালির মতলভা তত্বতা বাজাকে এক অ-
... তিনতম পত্র প্রদান কবিয়া রোনকে ইটালিয়
... রাখানী করিবার অমুরোধ করেন। তাহা তা
... হাদিগের মতের অনুমোদন কবিয়াছেন।

সর চার্লস ওরইটের মেক্সিকো প্রবর্ণ
... মেটের সহিত এক সজ্জি হয়। কিন্তু তাহাতে
... পূর্বেকার এক সজ্জির উল্লেখ থাকিতে ইংলণ্ডের
... গবর্নমেন্ট তাহা গ্রাহ্য করিতে অসম্মত হই-
... রাছেন।

২১এ জুন আবল কানিঙকে ওয়েস্ট মিনটের
... আবি বাঁটিতে সমাধিত করা হইয়াছে।

সেনাপতি করে মেক্সিকো কানী সৈ-
... ন্যেব অধ্যক্ষ হইয়াছেন। কানীবা অনবজায়
... নগরে চট্টিয়া আসিয়া সহকারী সেনাপ জেনা প্র-
... ডীক করিতেছে। ১০,০০০ সহকারী সৈন্য, কে-
... হ কেবলমাত্র বসেন ১৫,০০০ সৈন্য প্রেরিত
... হইবে।

গ্রীক দেশীর নব্বি সশস্ত্র এক ঘোষণা পত্র ছা-
... রা একাশ করিয়াছেন তাহার। যথার্থ রাজনৈয়-
... নাসুসারে মানিক কার্য নিরীহ কবিবেন। বক-
... ক সেনা সংগ্রহ ও সশস্ত্র প্রতিনিধি মনে-
... নীত করিবার জন্য নীচ কয়েক খানি বিল অর্প-
... ন করা হইবে।

ক্যাপ্টেন অন্বরণ ও আর কয়েক জন ইংরা-
... জ আফিসকে আপনাদিগের সেনা বলের অ-
... ধ্যক্ষ করিবার জন্য চীন দেশীর গবর্নমেন্ট যে
... প্রস্তাব করিয়াছেন; ইংলণ্ডের গবর্নমেন্ট তাহা
... বিবেচনা করিতেছেন।

আমেরিকার গবর্নমেন্ট প্রকাশ করিয়াছেন
... সশস্ত্র রিচমণ্ডের নিকটে যে যুদ্ধ হইয়াছে তা-
... হতে ৫৭৩৯ জন মৃত, আহত ও অশূন্য হই-
... রাছে।

ইহা এক প্রকার নিশ্চয় হইয়াছে রুশীয়ার
... গবর্নমেন্ট বিটের ইমানিউএলকে ইটালির রা-
... জা বলিয়া স্বীকার করিবেন।

গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বালানাদেশীর লেপ্টেনেন্ট গবর্নরের
আদেশানুসারী নিয়োগ।

বাবু বেনীনাথ সোম মেননীপুরের ছোট
আদালতের কাজ হইয়া উক্ত জেলায় প্রধান স-
দর আমিনের কদমতা পাইবেন।

বাবু নবীনকৃষ্ণ পালিত মেহেরপুরের ছোট
আদালতের কাজ হইয়া নদীয়া জেলায় প্রধান
সদর আমিনের কদমতা পাইবেন।

নিম্ন লিখিত প্রধান সদর আমিনের। প্রথম
... প্রধান সদর আমিন হইবেন।

বাবু তারকনাথ সেন ২৪ পরগণা

বাবু জীনাথ বিদ্যাবাগীশ ব্রিহত

পূর্ব প্রদেশ বন্দোপাধ্যায় ত্রিপুরার প্রধান
সদর আমিন হইয়া উক্ত জেলায় প্রথম প্রেরিত
অধীন মাজিষ্ট্রেটের কদমতা পাইবেন।

বাবু কৈলাশচন্দ্র দে ২৪ পরগণার প্রধান
সদর আমিন হইয়া উক্ত জেলায় মাজিষ্ট্রেটের
সংগ কদমতা পাইবেন।

জে. ডবলিউ. গাভেব মাজিষ্ট্রেটের সদর আমিন
৩ সদর মুনসেফ হইবেন।

বাবু কৃষ্ণলাল বন্দোপাধ্যায় মুরসিদাবাদের
সদর আমিন ও সদর মুনসেফ হইবেন।

নিম্ন লিখিত মুনসেফের। প্রথম প্রেরিত
প্রিটি হইয়াছেন।

বাবু রসিকলাল ও বাবু গজাচরণ লবকব।

মৌলবী আলি আজিম বেহারের প্রধান
সদর আমিন হইবেন।

মৌলবী ইরাদত আলি সাহাবাদের প্রধান
সদর আমিন হইবেন।

বাবু ওবজা চটোপাধ্যায় পশ্চিম বর্ধমানের
প্রধান সদর আমিন হইবেন।

মৌলবী ইমদাদ আলি ব্রিহতের প্রধান স-
দর আমিন হইয়া উক্ত জেলায় প্রথম প্রেরিত
অধীন মাজিষ্ট্রেটের কদমতা পাইবেন।

মৌলবী ইএত হোসেন মংগের প্রধান স
দর আমিন হইবেন।

মৌলবী আনোদী আলি পূর্ব প্রদেশ প্রধান
সদর আমিন হইবে।

বাবু তাহারাকান্ত বিদ্যাসাগর বাবরগঞ্জের
প্রধান সদর আমিন হইবেন।

বাবু গজাচরণ সোম রঙ্গপুরের প্রধান সদর
আমিন হইয়া উক্ত জেলায় প্রথম প্রেরিত অধীন
মাজিষ্ট্রেটের কদমতা পাইবেন।

বাবু হরগৌরী বসু চট্টগ্রামের প্রধান সদর
আমিন হইবেন।

সোমপ্রকাশ

“মহানার্যের মঙ্গলসাধনায় যিনি যত্নবান, তাকেই মঙ্গলময়ী মনে হবে।”

৪ তারিখ।
৩৮ নং পৃষ্ঠা।

সন ১২৬৩। ২০ আশ্বিন। ইং ১৮৬২। ৪ আগস্ট

বার্ষিক দ্রাঘি ১ টাক।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাক।

বিজ্ঞাপন।

সকলকে সোমপ্রকাশ প্রেরণ
প্রেরণ নিয়ম।

অগ্রিম দ্রাঘি না পাঠিলে সকলকে সোম
প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইহার বার্ষিক
দ্রাঘি ডাক দ্রাঘি মতে ১০ এবং বার্ষিক
৪ টাকা নিশ্চিত আছে। ইহা দ্রাঘির দ্বারা
অগ্রিম দ্রাঘি প্রেরণ করা যায় না। সকলকে
যদি কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ প্রেরণের ইচ্ছা
হয়, তিনি অগ্রিম দ্রাঘি সহিত লিখিলেই
পাঠিতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

সম্প্রতি বাঙ্গালী নবীন বিজ্ঞানজ্ঞের হস্ত
নিগের নিমিত্ত ‘ইউন’ অবস্থি সোম ‘অগ্র
বাস্তব হইয়া’ ‘গোলোকের উপবেগিতা’
নামে এক খানি পুস্তক প্রকাশিত হইয়াছে।
১৮৬২ ২০ জুলাই।

ত্রিগোপালচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়

সোমপ্রকাশ।

১০৫ মাঘ সোমবার।

হায়! মানুষের স্বভাব কি
বিচিত্র হইয়াছে!

দীর্ঘ কালের অভ্যাস বশতঃ হটক,
অন্যদর্শনে নৈসর্গিক অসহিষ্ণুতা বশতঃ
হটক, আর সম্ভাবকতা কার্যভার গ্রহণ
বশতঃ হটক, অন্যদর্শন করিলেই

আমাদের চিত্ত নিত্য অশুভিত ও
অবিলম্বে তৎপ্রতীকারের উপায় অন্বেষণে
প্রবৃত্ত হয়। কিন্তু আমরা গর চিত্ত প্রথমে
পুরুষ উপায় গ্রহণে কোন ক্রমেই উৎসুক
হয় না। মানুষ জন্মপ্রাপ্তের আকর স্থল।
জন্ম প্রমাদ অথবা অজ্ঞতা বশতঃ মানুষের
অন্যদর্শন প্রবৃত্তি জন্মের অসম্ভাবনা নাই।
এই বিবেচনা করিয়া ন্যায়ান্যায় বুঝাইয়া
দিয়া জ্ঞান, প্রেম ও অজ্ঞ ব্যক্তিদিগকে
ন্যায়পথে প্রবর্তিত ও সাবধান করিয়া
দিবার নিমিত্তই আমাদের আর্থিক
চেষ্টা আছে। কিন্তু কোতের বিষয় এই,
অনেকের একপ কথায় স্বভাব দেখিতে
পাওয়া যায় যে তাহারা সেই সেই বাক্য
আশ্রয়ে সংশোধন চেষ্টা না পাঠিয়া
প্রবৃত্ত হইয়াছে। বৃত্তে বারিবিহীন একেপের
ন্যায় সত্যের প্রদীপ হইয়া উঠে।

অল্প দিন হইল আমরা সোমপ্রকাশ
দ্বারা অনুচিতকারী কয়েক ব্যক্তিকে সাব-
ধান করিবার চেষ্টা। পাঠিয়াছিলাম, আর
একদল অন্যদর্শনকে গোপনে সতর্ক
করিয়াছিলাম। কিন্তু উত্তর হলেই বিপ-
রীত কলকলিয়াছে। এক দল আমাদের
নামে অভিযোগ করিবার তরঙ্গদর্শন
করিয়াছেন, আর এক দল আমাদের
শারীরিক ও সামাজিক অনিষ্ট করিবার তর-
ঙ্গদর্শন করিয়াছেন। আমরা কর্তব্য কর্তব্য করি
রাহি বলিয়া যখন আমাদের চিত্ত আ-

মাদের কাষের অনুমোদন করিয়া
তখন আমরা কিছুতেই ভীত না
একপ কি ইচ্ছা করিয়া যখন বি-
লিখিয়া থাকে? অলীক ও অসু-
লিখিয়া আশ্রয়লেন পুণ্য করা বি-
প্রকাশের রোগ আছে। প্রবৃত্তি
বাক্য অশ্রুজ্ঞান সন্দেহ করে, কোন
কখন তাহাদের বহির্ভূত অথবা
বিষয়কে স্থানস্থান করে না। আমরা
কল বিষয় প্রমাণ করিয়া দিই
একপ সত্যক। আছে, তাহাই
ও কহিয়া থাকি। আমরা
রটনা অথবা সুখাতি নষ্ট করিয়া
উপার্জন করা সোমপ্রকাশ প্রকাশ
ফেলা নহে। যে কোনকপ অশ্রুজ্ঞান
ক, সাধ্যানুসারে করিবার চেষ্টা
প্রচারের প্রথম উদ্দেশ্য। সুতরাং
তে এই কাণ্ডটি হইবে বলিয়া বি-
ষ্ট সুভাবকে স্বাধীনতা প্রদান
নাই? পাঠকগণ! আজি সন্ধ্যা ৮
দিগকে কিছু জানাইয়া রাখিলাম,
প্রয়োজন হয়, পশ্চাৎ ইহার বি-
বিষয় জানিতে পারিবেন।

পরিশেষে তরঙ্গদর্শনকারিগণ
অতি আমাদের স্বভাব এই, তাঁ
লোকসমাজে অপনাদের অতি
রক্ষা করিবার নিমিত্ত যে উপায় ন-
রম জ্ঞান করিয়াছেন, তাহা পরি-

আমরা যুক্তকণ্ঠে কহিতেছি, তা
ন ক্রমেই কৃতকার্য হইতে পা
না। আমরা হিত উদ্দেশ্য করিয়া
নকে একটি সহজ উপায় কহিয়া
ই, তাহার আশ্রয় লইয়া
সহজে কৃতকার্যতা লাভে সমর্থ হই
। তাহার নিষ্ফল জানিবেন বিবেক
। আমরা তাহাদিগের অনিচ্ছাচরণে
শ্রদ্ধা রাখি।

মাক্কেটের তত্ত্বাবধায়ক ও তা
রতত্ত্বাবধায়ক।

চাচর দেখিতে পাওয়া যায় স্বার্থ
কেরা আপনাদিগের কণ্ঠকে পৃথি
তাগেয়া, কারণকণ্ঠে গণনা করে,
সময়ে তাহার। অন্ধ হইয়া থাকে,
দিগের কণ্ঠের সমর উপস্থিত হই
হার। যদি অতিমত আশ্রয় না পায়,
ইলেই তাহাদিগের ব্যাঘাত ও কো
রিসীমা থাকে না। আমরা মাক্কে
টতত্ত্বাবধায়ককে এই তাবাগল দেখি
যখন প্রচুর পরিমাণে আমেরিকা
দুনা আসিত, তখন তাহার। ভারত
বণের উদ্যোগী ছিলেন; ভারতব
। উৎপাদন চেষ্টা করিলে ভারতব
। গম দ্বার বিবৃত হইয়া আপনাদি
আয়োজিত হইবে, এ কথা তখন
দগের মনে উঠা হয় নাই। কিন্তু
কটোলি। রুদ্র ও তুলা দগ্ধ
এখন ভারতবর্ষের প্রতি তাহাদি
বৃদ্ধি নিপতিত হইয়াছে। তাহা এত
এ চেষ্টা পাইলে এখন তাহাদিগকে
। কাতর হইতে হইত না। স্বার্থসিদ্ধ
গোষ্ঠিন উপস্থিত না হইলে সচরাচর
র ফলম বিধে প্রতীতি জন্মিত, অ
ইকানীকন প্রতীতি দেখিয়া মাক্কেট
। তত্ত্বাবধায়ককে দুর্বৃত্ত কহা যাইত না;
। ইতিমধ্যে আমরা দুহিতও করিতেছি।
। গুর। মাক্কেট নিমিত্ত আশ্রয়িত চেষ্টা

করিতেছেন বরুন, তাহাতে বারন কি
তাঁহার। স্বার্থের নিমিত্ত যে আমাদিগের
অহিচ চেষ্টা করিতেছেন তাহাতেই দুঃখ
জন্মিতেছে। পাঠকবর্গের শ্রমণ থাকিতে
পারে, পূর্বে মাক্কেটের তত্ত্বাবধায়ক
তাঁহাদিগের প্রতিনিষীদ্ধ কলিকাতার
বণিক সম্প্রদায় মাক্কেটের। বস্ত্রের শুদ্ধ
কমাইবার চেষ্টা পান। লগনে কয়েক
জন তত্ত্বাবধায়ক সন্ন্যাস উত্তর
সহিত সাক্ষাৎ করিয়া বস্ত্রের আমদানী
কর উঠিয়া দিবার অনুরোধ করেন।
সন্ন্যাস উত্তর তত্ত্বাবধায়ক কহিয়াছেন,
আজিও ভারতবর্ষের ব্যয় অপেক্ষা আয়
অধিক হয় নাই, অধিক হইয়াছে বলিয়া
যে হিসাব দেওয়া হইয়াছে, সে ভ্রমমাত্র;
অতএব এমন অবস্থার মাসুল রহিত করা
সম্ভব নহে। অতএব তিনি বণিক গণের
প্রার্থনা পরিপূরণ করিতে অসমর্থ হইলেন।

হাউস অব কমন্সের মাক্কেটের প্রতি
নিধির প্রস্তাব ক্রমে তুল প্রসঙ্গ হইয়া বৎ
কালে তৎকালিক ব্রিটিশ, তৎকালেও সন্ন্যাস
লস উত্তর স্বার্থ রাজনীতিজ্ঞের ন্যায় প্রত্যা
স্তর দান করিয়াছেন। তিনি বলেন তত্ত্বাব
ধায়ক ভারতবর্ষ হইতে তুল আমদানীকাজী
হইয়াছেন, অতএব ভারতবর্ষের গণমণ্ডল
তাঁহাদিগের মনোরথ সিদ্ধির নিমিত্ত সবি
শেষ যত্নবান হইয়াছেন, তুলার সুবিধার
নিমিত্তই পলিক ওয়াকে বিস্তর ব্যয় করা
হইতেছে। কিন্তু তুলার জন্ম স্থান করা
অবিবেক।

আমরা তত্ত্বাবধায়কদিগের দুরাশা দর্শন
করিয়া বিস্ময়বিক্ত হইতেছি। তাঁহাদিগের
ক্ষতি হইতেছে বলিয়া কি আমাদিগের
গণমণ্ডল আয়ের একটি উৎকৃষ্ট উপায়
তাগ করিবেন? এই আর মেলেই তৎপূর
স্বার্থ আবার ক্ষতন আয়ের প্রয়োজন হই
বে সন্দেহ নাই। অপর, রাস্তা ঘাট
প্রভৃতির নিমিত্ত আমাদিগের নিকট হইতে
অত্যাচারের হেতু কৃত ক্ষতন কর এত

করিতে হইবে! তত্ত্বাবধায়ক। নিম্নলিখিত
বণিক। ব্যয় তুল। কহিবেন। ইহা কি
কার্য্য। স্বার্থপরতা। ইহা কি আপন।
দিগের কণ্ঠে দূর করিবার নিমিত্ত পরকে
কণ্ঠে দিবার চেষ্টা নয়? আমাদিগের গণ
মণ্ডল তাঁহাদিগের সুবিধার নিমিত্ত আমা
দিগের নিকট হইতে কর গ্রহণ না করিয়া
কি রাস্তা ঘাট প্রভৃতির নিমিত্ত ইংলণ্ড হ
ইতে টাকা আনিবেন? ভারতবর্ষের সম্পত্তি
ভারতবর্ষের গণমণ্ডলের সম্পত্তি, তাহাদি
গের। স্বতন্ত্র সম্পত্তি নাই। অতএব যদি তত্ত্ব
বায়গণের আত্মকল্যাণের ইচ্ছা থাকে, তাহা
হা। স্বয়ং কোম্পানি হইয়া রাস্তা ঘাট প্রভৃ
তি বিষয়ে ব্যয় করিয়া স্বার্থসাধন চেষ্টা
করুন। ভারতবর্ষে আমদানী কর গৃহীত
হওয়াতে তাহাদিগের ক্ষতি হইতেছে না।

সন্ন্যাস উত্তর উল্লিখিত তত্ত্বাব
গণের অসম্মত প্রার্থনার যে উত্তর দান
করিয়াছেন, তাহাতে একটি ত্রুটি ল
ক্ষিত হইতেছে। ভারতবর্ষের আর উৎ
কৃষ্ট হয় নাই, অতএব তিনি বস্ত্রের মাসুল
রহিত করিতে পারেন না, এইকণ উত্তর
না দিয়া এককালে তুল মুক্তি ধরিয়া তা
হার উত্তর দেওয়া উচিত ছিল। সে মুক্তি
এই, ইংলণ্ডের প্রাণি অথবা সম্প্রদায় বি
শেষের সুবিধার নিমিত্ত ভারতবর্ষের আর
পরিভ্রাণ করা বিধেয় নহে। ইংলণ্ড হইতে
আমদানী বস্ত্রের যে মাসুল লওয়া হইতেছে
অনুধান করিয়া দেখিলে এদেশীয়দিগের
স্বক্ষেই তাহা পতিত হইতেছে, অতএব সেই
মাসুল রহিত হইলে এ দেশেরই সুবিধা,
এ দেশীয়ের। মূলত বুলো বস্ত্র পাইবেন,
তথাপি যে আমরা এত আপত্তি করিতেছি,
তাঁহার কারণ এই, অসাক্ষাৎ কর রহিত হই
লেই আমাদিগের নিকট হইতে সাক্ষাৎ স
যত্ন কর গৃহীত হইবে সন্দেহ নাই, কিন্তু
সাক্ষাৎ সহজে নয় এত এ দেশের মিতা
স্ত বিবিক্ত, বিবেক অজিবার বিশেষ কারণ
এই, সাক্ষাৎ সহজে করে আত্মাত্মিক অজ্ঞা

हमारे लक्ष्य है कि हमें अपने देश के विकास में योगदान दे सकें।
हमारे लक्ष्य है कि हमें अपने देश के विकास में योगदान दे सकें।
हमारे लक्ष्य है कि हमें अपने देश के विकास में योगदान दे सकें।

অত্যাচার বিবরণ: এসেনীদ জমী-৭১

कर्म, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ।

• कर्मवदः किरिदमदयः । ३ •

যে রোগে প্রথম ইহঁরা উঠে অগ্রে ভাষ্য
বিবরণ করা হইল।

সম্প্রতি এদেশে ইউরোপীয়দিগের
অত্যাচার অত্যন্ত অবলম্বিত হইয়া উঠিয়াছে।
ইহাদিগের অত্যাচার চেষ্টাতেই সকলে বড়
সমস্যা হইতেছে। সুতরাং আমাদের দেশে
শেষে জরীদারদিগের পাণ্ডিত্য ও অত্যা
চারের প্রতি কোর বড় দুঃখিত করিতে
হইবে না। উহা এদেশে একপ্রকার আক্রমণ
হইয়া আছে। মহাঅসুখ অস্থানিত হইলে
কোন অসুখ তাহার মিকটে দীর্ঘি পার না।
অত্যাচার অসৎ ইউরোপীয়দিগের অত্যাচার
ক্রমে ক্রমে আর সকল অত্যাচারকে তাকি
রা কেনিতেছে। কিন্তু পাঠকগণ! এখন
অনুমান করিলেও না যে, এ দেশের পুরান
পান্ডিত্য (জরীদারেরা) সকলেই সাধুশীল
হইতেন।

এক ব্যক্তি বর্ষমানের এক জমিদারের
অত্যাচার হুজুর লিখিয়া আমানতের
নিকটে পাঠাইয়াছেন। আমরা উহা বখা
স্থানে প্রকাশ করিলাম। পাঠকগণ। আ
শনারা কি মনে করিতেছেন, সমুদায় বর্ষ
মান জিন্দার বখা করিতে এই একটি মাত্র
গণপুরুষ আবিষ্কৃত হইয়াছেন। তাহা
মহা। এই বখা করেই গণ পুরুষ কল
বে আছেন। সুতরাং সমুদায় বর্ষ মান
অত্যাচার একমুখের। এই বখা মাত্র
বিশ্ব অত্যাচার সমুদায় আশাশ্রিত।
যেহেতু একমুখের।

কিন্তু তাই তবুও এখন অনেক জমিদার
জমিদার, বৈদ্যরায় এই আইনের মতকে
স্বীকার করি। এজন্যকে হুগুয়ে পরিচালনা
আইনের বারু পত্র নাই গীতন করি। যা
কিন। তবে বিটনের মধ্যে এই হইয়াছে,
যাহা জমিদারেরা সর্বসমক্ষে প্রকাশ্য
করে। এজন্যকে প্রচার্যনি করিডেন,
এখন আর নোট। বড় করেন না।

জীবনধারণের মধ্যে আর একটি দা
হইয়াছে, তাঁহার। বড় পাকা লোক !
উকিল। কুকাব্য পরিণাম করিবার উদ্দেশ্যে
শেখারিহের বিদ্যালয় ও চিকিৎসালয় প্র
কৃতি স্থাপন করিয়া থাকেন। আমাদিগের
রংগমঠীন ঘরের একটি সম্ভার হইতে
তাঁহারিহের এই শিক্ষণী হইয়াছে। এই
সম্ভার পোপনে মা করেন, এমন কুকাব্য
মাই, পরস্পরগমন উৎকোচ গ্রহণ ও কু
করতা করিয়া পরের সর্বস্ব হরণ প্রকৃতি
কিছুতেই পরাধীন করেন, তাঁহাদিগের এই
সকল কুক্রিয়া জীর্ণ করিবার মহোদ্য
আছে। যে উদ্যোগ এই, গভীরান ও মানা
বলী গ্রহণ।

অধীনাগেরা কি চিরকাল অবিরোধিত
 তরুণে এইরূপ অশান্তির করিতে
 ইহার কি নিবারণের উপায় নাই? উপায়
 আছে। সে উপায় এই, অধাবসার সহকারে
 রাজপুরুষদিগের অনুসন্ধান করিয়া কু
 ষ্ট বাহির করিবার চেষ্টা। একই প্রকারে
 মধ্যম ও ক্ষুদ্রের জেনীকে বন্ধ। মধ্যম ও ক্ষু
 দ্র জেনীকে এক হাকি হইয়া অধীনাগদিগের
 বাবতীর বোধের বিষয় রাজপুরুষদিগের
 গোচর করিতে হইবে। অধীনাগদের সহ
 যোগ্য ব্যক্তিদেরকে রাজপুরুষেরা প্রথম প্রথম
 বা চরিত্রে পরিবেশ দিয়া কীভাবে দুর্বৃত্ত
 জ হইয়া আসিতেন তাহা দেখা। রাজপুরুষ
 হইরের সন্দেহ নাই। রাজপুরুষের পক্ষ
 দিগের কুচিন্তা হইয়াছে তাহা হইয়াছিল।
 নী অধীনাগেরা প্রথম প্রথম মিকটে পাই
 নাই। অধীনাগেরা প্রথম প্রথম মিকটে পাই

১৮৮৩
 ১৮৮৪
 ১৮৮৫
 ১৮৮৬
 ১৮৮৭
 ১৮৮৮
 ১৮৮৯
 ১৮৯০
 ১৮৯১
 ১৮৯২
 ১৮৯৩
 ১৮৯৪
 ১৮৯৫
 ১৮৯৬
 ১৮৯৭
 ১৮৯৮
 ১৮৯৯
 ১৯০০
 ১৯০১
 ১৯০২
 ১৯০৩
 ১৯০৪
 ১৯০৫
 ১৯০৬
 ১৯০৭
 ১৯০৮
 ১৯০৯
 ১৯১০
 ১৯১১
 ১৯১২
 ১৯১৩
 ১৯১৪
 ১৯১৫
 ১৯১৬
 ১৯১৭
 ১৯১৮
 ১৯১৯
 ১৯২০
 ১৯২১
 ১৯২২
 ১৯২৩
 ১৯২৪
 ১৯২৫
 ১৯২৬
 ১৯২৭
 ১৯২৮
 ১৯২৯
 ১৯৩০
 ১৯৩১
 ১৯৩২
 ১৯৩৩
 ১৯৩৪
 ১৯৩৫
 ১৯৩৬
 ১৯৩৭
 ১৯৩৮
 ১৯৩৯
 ১৯৪০
 ১৯৪১
 ১৯৪২
 ১৯৪৩
 ১৯৪৪
 ১৯৪৫
 ১৯৪৬
 ১৯৪৭
 ১৯৪৮
 ১৯৪৯
 ১৯৫০
 ১৯৫১
 ১৯৫২
 ১৯৫৩
 ১৯৫৪
 ১৯৫৫
 ১৯৫৬
 ১৯৫৭
 ১৯৫৮
 ১৯৫৯
 ১৯৬০
 ১৯৬১
 ১৯৬২
 ১৯৬৩
 ১৯৬৪
 ১৯৬৫
 ১৯৬৬
 ১৯৬৭
 ১৯৬৮
 ১৯৬৯
 ১৯৭০
 ১৯৭১
 ১৯৭২
 ১৯৭৩
 ১৯৭৪
 ১৯৭৫
 ১৯৭৬
 ১৯৭৭
 ১৯৭৮
 ১৯৭৯
 ১৯৮০
 ১৯৮১
 ১৯৮২
 ১৯৮৩
 ১৯৮৪
 ১৯৮৫
 ১৯৮৬
 ১৯৮৭
 ১৯৮৮
 ১৯৮৯
 ১৯৯০
 ১৯৯১
 ১৯৯২
 ১৯৯৩
 ১৯৯৪
 ১৯৯৫
 ১৯৯৬
 ১৯৯৭
 ১৯৯৮
 ১৯৯৯
 ২০০০
 ২০০১
 ২০০২
 ২০০৩
 ২০০৪
 ২০০৫
 ২০০৬
 ২০০৭
 ২০০৮
 ২০০৯
 ২০১০
 ২০১১
 ২০১২
 ২০১৩
 ২০১৪
 ২০১৫
 ২০১৬
 ২০১৭
 ২০১৮
 ২০১৯
 ২০২০
 ২০২১
 ২০২২
 ২০২৩
 ২০২৪
 ২০২৫
 ২০২৬
 ২০২৭
 ২০২৮
 ২০২৯
 ২০৩০

सहस्रसंख्या कार्यादि कोटिपर्यंत
सहस्रसंख्या सहस्रसंख्या सहस्रसंख्या

এবল ব্যক্তি যদি
য হর, সেই কৃত্ত ব্যক্তি
ইতে পারে। পরে
প্রদানের সহিত মিলিত
দে সমর্থ হয়।

আনানিগের গভীর কণ্ঠস্বর
এক অংশে যেমন সৌভাগ্যসানি
অপর অংশে তাঁহানিগের বিবিক
আছে । তাঁহানিকে জীবিত
ন্যায় অত্যাচারকারী ইহা
গর্ব হৃৎ করিয়া দেউ।

[illegible]

সদিগের মায়ার মরফনা ও বিলাসিতা
গের জীবিকা। সন্তানের পোকা ছাতির
রা. বাত / তল করা, সন্তানের আশ্রয়
ইত প্রীর আশ্রয় করিয়া দেখা, এই স
কল কাণ্ড দ্বারা এই উদ্ভিগের প্রভাবনা
প্রদর্শিত আছে।

কথা আরম্ভ। সে বেদের কথা কহি
তেছি, কিছু দিন হইল, এ প্রভাব
ক তাহার জী কামাবাদে আসিয়া
অবস্থিত করে এবং উক্ত তারিণীচরণ সর
কর। তাহার পরিজনগণকে আপনাদি
পর প্রভাব সিদ্ধি করিবার যোগ্য পাত্র

সিয়া উদ্ভিগের সহিত আনু
বন্ধ। তারিণীচরণের বিশ্বাস
নিমিত্ত বেদে নানা প্রকার কো
ত লাগিল। প্রভাবকের নিকট
ছিল, সে তারিণীচরণের নিকটে
রাখিল। এইরূপে বিশ্বাস পাত্র
গকদিন সে এই কথা কহিল যে
একপ কামতা আছে, সে কপার
না করিয়া দিতে পারে। ওদিগে
র জী তারিণীচরণের জীর নিকট
হাদিগের জাএং লক্ষী আছেন
ই লক্ষী তারিণীচরণের জীকে
ব।

দিবার ও কপার টাকা সোনা
দিন দ্বির হইল। নিম্নপিত
বদিনী তারিণীচরণের জীর
রা কহিল, সে লক্ষী আনিবে,
বস্ত্র পরিধান ও অলঙ্কার
ররা লক্ষী আনা হইবে না,
সকলকে সংযত ও ক্রতোপ
ধাতিতে হইবে। অনন্তর, তা
জী একখানি মৃত্তন বস্ত্র আ
পাশনার অঙ্গে ও কন্যার অঙ্গে
গার ছিল, তাহা খুলিয়া বেদি
ন। ও দিকে তারিণীচরণ কপা
গাইবার প্রভাব এবং লুপ্ত
হইয়া ১০০—১২৫ টাকা মুদ্রা

ইয়া আনিবেন। সারংকাল উপস্থিত হইলে
তারিণীচরণ জী ২১ খলি পুটলি বাধিয়া
লইয়া নির্দিষ্ট স্থানে গমন করিলেন, অতী
রকও তথায় আসিয়া উপস্থিত হইল।
কথা বার্তা হইতে লাগিল। এদিকে বেদি
নী মৃত্তন বস্ত্র ও তারিণীচরণের গৃহ হইতে
আনীত অলঙ্কার পরিধান করিয়া লক্ষী
লইয়া তারিণীচরণের গৃহাতিমুখে গমন
করি। কামরাবাদ মাতলা রেলওয়ের
ধারে। নিম্ন পথের উপরেই তারিণীচরণের
একখানি দোকান আছে। সেই দোকানে
আসিয়াই এই সকল কাণ্ড হইতোছিল,
এমন সময়ে পাতি আসিয়া উপস্থিত হইল।
সেই গোলযোগের সময় আপনাত মনোরণ
সিদ্ধির উত্তম অবসর বিবেচনা করিয়া প্র
ভাবক টাকা খুলি চাহিয়া লইল এবং
সেই গোলযোগে সরিয়া পড়িল। তারিণী
চরণ মনে করিলেন, যদি সে তাহার গৃহের
দিকে গিয়া থাকে, তাহাঁতাই সেই দিকে
গেলেন, গিয়া দেখিলেন, বেদে ও বেদিনী
নাই। একে হুত্ব বয়স, তাহাতে সমস্ত দিন
উপবাস, আশ্রয়, কতি, এবং জী ও
কন্যার বৈধব্য দশা হুত্বক রিত হুত্ব বর্শন
এই খুলি তারিণীচরণের হৃদয়ে শল্যের
ম্যার প্রভাব জমায়েতে লাগিল। সপরিবা
র হুত্ব হুত্ব করিতে লাগিলেন।

অতঃ, মোতাক্ক, অবিলম্বে, লম্ব
চৈতন্য ব্যক্তিগণকে এইরূপ প্রভাবনা ক
রিয়া প্রভাবকেরা যে কৃতকায্য হয়, তাহা
আমাদিগের বিশ্বাস্য হইতেছে না, বিশ্ব
রের বিশ্ব এই যে চুরী, জুরাচুরী, প্রভাবনা
প্রভৃতি প্রভাবের উৎপলনকারী নীতিসম্মত
অঙ্গস রাজ্যে অবস্থার মধ্যে জুরাজীর্বা
প্রভাবকেরা নির্ভর্যে প্রভাবনা করিয়া
কৃতকায্য হইতেছে অতঃ প্রভাবের
প্রভাব করিতেছেন। এই প্রভাবের
কান প্রভৃতি যে সকল, কতি, বিলাসিতা
বাস ও নিয়ত জীবিকা নাই, তাহাদিগের
বিষয়ে একটা বিশেষ আশ্রয় প্রভাব

সেই আইন দ্বারা এই নিয়ত করিতে হইবে
তাহারা নানা স্থান ভ্রমণ করিয়া নাই হইয়া
এক স্থানে দ্বির হইয়া থাকে এবং কৃতকায্য
প্রভাব হইয়া জীবিকা অর্জনের চেষ্টা
পার। তাহারা কৃতকায্য কায্যে রত হইলে
কেবল যে তাহাদিগেরই প্রয়োজন্য হইবে
একপ নহে, মনুষ্য মাতেরই কৃতকায্য হইবে
শের জীবিকা সাধন বিষয়ে সহায়তার আশ
শ্যকতা আছে, তাহাও সম্ভাবিত হইবে।

সচরাচর দেখিতে পাওয়া যায়, বেদে
ও কান প্রভৃতি এক এক উপায়ে প্রাণে
গিয়া মধ্যে মধ্যে বাস করে, কিছু দিন
থাকিয়া তথা হইতে প্রস্থান করে। একপ
বাসপ্রথা অভিশয় মন্দ। সেই সেই প্রাণে
র প্রতি তাহাদিগের যত্ন ও অনুরাগ থাকে
না, প্রাণের শুভই হউক আর অশুভই হ
উক, তাহাতে তাহাদিগের হৃদয়বিলাস নাই,
প্রাণের লোকেব সহিত আত্মীয়তা অথবা
সৌহার্দ্য হয় না। একপ অবস্থায় তাহাদি
গের হইতে সেই সেই প্রাণের অবস্থা হই
বার কি সমধিক সম্ভাবনা নাই। কোন কা
রণে যদি গ্রামবাসিদিগের সহিত তাহাদি
গের বিরোধ হয়, তাহারা নির্ধন ও নির্দয়
হইয়া দারুণ বৈরনির্বাতন করিতে পারে।
তাহাদিগের দ্বারা চৌর্য্য দস্যুতা প্রভৃ
তি কুক্রিয়ার অনুষ্ঠান অসম্ভাবিত ও বোধ
হইতেছে না। তাহারা নিষ্কর্মা মুক্তরাং
তাহাদিগের কৃকর্মে অধিকতর অনুরাগ অ
গিবারই বিলম্ব সম্ভাবনা। বিশেষতঃ প
কি বধের অভ্যাস দ্বারা তাহাদিগের বিল
কণ ধনু নিষ্কা হইয়া থাকে। বাহা হউক
পরিণেবে আমরা পুনরায় অনুরোধ
করি। গবর্ণমেন্ট একটা বিশেষ
হি। এই সকল ব্যক্তির নানা স্থান ভ্রমণ
নিষেধ করিয়া দি। আশ্রয়তা তারতক
যে প্রভাব পরিমাণে তুল উপায়ে
প্রভাবের প্রভাব, এই সকল ব্যক্তিকে
এই প্রভাব নিরোপিত করুন,

১৯। জুলাই ১৮৬২ অক্টোবর ১৪ই এপ্রিলে প্রকাশিত গেজেটের আজ্ঞা অনুসারে জেলাপটেন্ট নবীন ছোট ব্রাহ্মপুত্রেব নিম্ন লিখিত স্থানে ১৮৬১ অক্টোবর ৫ আইন (পুলিশ সংশোধনী আইন) প্রচলিত করিলেন।

জালাবিদগ, লোহারডালা, মালভূম ও সিংহভূম।

১৯। জুলাই—মেজর হাট প্রথম প্রেরিত ডেপুটি ইন্সপেক্টরের তার প্রাপ্ত হইলেন।

জেলাপটেন্ট, টি, এচ, লুইস তৃতীয় প্রেরিত জেলা সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইয়া জালাবিদগে অবস্থিত করিলেন।

ডবলিউ, সিং ডেবিস সাহেব লোহারডালা তৃতীয় প্রেরিত জেলা সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইলেন।

জেলাপটেন্ট এস এ, টি, জন সিংহভূমে দ্বিতীয় প্রেরিত জেলা সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইলেন।

ক্যাপ্টেন এ, ডবলিউ, পিয়ার্স দ্বিতীয় প্রেরিত ডেপুটি ইন্সপেক্টর জেনরল হইয়া বর্ধমান জেলা থাকিলেন।

প্রথম প্রেরিত ডেপুটি ইন্সপেক্টর জেনরল মেজর জে. আব. পিউ, পাটনা বিভাগের তার প্রাপ্ত হইলেন।

ক্যাপ্টেন, ডি, এচ, অসমবণ বর্ধমানের দ্বিতীয় প্রেরিত সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইলেন।

ক্যাপ্টেন ডবলিউ, টি, কেরান বীরভূম দ্বিতীয় জেলা সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইলেন।

ই জে সটলওয়াথ সাহেব হাঁহুত প্রথম প্রেরিত সহকারী সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইয়া উক্ত বিভাগের তার প্রাপ্ত হইলেন।

জেলাপটেন্ট, জে জনটন চম্পা প্রথম প্রেরিত সহকারী সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইয়া উক্ত জেলার তার প্রাপ্ত হইলেন।

প্রথম প্রেরিত সহকারী সুপারিন্টেন্ডেন্ট জে. এম, সিন্ধ উক্ত জেলার তার প্রাপ্ত হইলেন।

এফ, টি, জাটস সাহেব মুক্তার প্রথম প্রেরিত সহকারী সুপারিন্টেন্ডেন্ট হইয়া উক্ত জেলার তার প্রাপ্ত হইলেন।

১১ই জুলাই—ক্যাপ্টেন ডবলিউ মাকডোনাল্ড কিল্ডিনগেনে জনা কামরূপ সেনাদলে অধ্যক্ষ হইলেন।

১৫ই জুলাই—নিম্নলিখিত ডেপুটি ম্যাজিস্ট্রেটেরা ১৮৬৫ অক্টোবর ৯ আইনের ২৪১২ ও ১৮১৯ অক্টোবর ১০ আইন ও ১৮৬৮ অক্টোবর ২২ আইন অনুসারে নিম্ন লিখিত সুপারিন্টেন্ডেন্টের বিচারের ক্ষমতা পাইলেন।

মৌলবী আবদুল করিম বালেশ্বর

বাহু জগমোহন রায় কটক

বাহু মনসিংহ চন্দ্র কান পুরী

বাহু কান্তিচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় পুরী

১৭ই জুলাই—বীরভূমের সহকারী ম্যাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর এচ এল হারিসন সাহেব ১৮৬০ অক্টোবর ৩২ আইনের ৩৩ ধারা অনুসারে কেরান ক্ষমতা পাইলেন।

ডবলিউ ই ওলাড সাহেব মালভূমের সহকারী ম্যাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর হইয়া দ্বিতীয় প্রেরিত মালভূম ম্যাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা পাইলেন।

সি এ কেলি সাহেব বর্ধমানের সহকারী ম্যাজিস্ট্রেট ও কালেক্টর হইয়া দ্বিতীয় প্রেরিত মালভূম ম্যাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা পাইলেন।

১০ই জুলাই—এল চার্লস সাহেব বর্ধমান পূর্বে বিভাগের বিদ্যালয় সমূহের দ্বিতীয় ইন্সপেক্টর হইলেন।

জে. সি, মেডিকেল সাহেব বর্ধমান পূর্বে বিভাগের বিদ্যালয় সমূহের দ্বিতীয় ইন্সপেক্টর হইলেন এবং টি. ডি. সাহেবের বিদ্যালয় কালীন মধ্য বিভাগের তার প্রাপ্ত হইলেন।

১৬ই জুলাই—এল জাস্টিস সাহেব অসমবণ কাছেরি মদার সাহেব কামালপুরের তার প্রাপ্ত হইলেন।

প্রেরিত।

মুন্সেফ দি. পব. বেতন ৪৩ বহু কেন?

ক্রিষ্ণা সোমপ্রকাশসঙ্গীতক

মহাপ্রভু।

সংসদ ৩ মহাপ্রভু। বোধ হইল মহাপ্রভু স্বীকার করিলেন যে ডেপুটি ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের প্রাপ্ত মুন্সেফদিগের কর্ম কর্তন ও সম্বন্ধিক প্রবণতা, কিন্তু কি কারণে প্রথমোক্ত পদের বেতন প্রাপ্ত হইতে পারেন? টকা ও শেখোক্ত পদের এক ৩ টকা অবস্থান হইয়াছে, ইহা নির্দেশ করা আবার ন্যায় জগদ্বিধা দ্বিতীয় পক্ষে অতিক্রম করি। তাহা হইবে কর্তৃপক্ষীয়েরা ই প্রকাশ অসমবণ বিবেচনা করিয়াই কান্তিচন্দ্র ন. অধিকাংশ মুন্সেফকে মন আইনের বিধানমতে ডেপুটি কালেক্টর এবং কোন কোন স্থানের মুন্সেফকে ডেপুটি ম্যাজিস্ট্রেটের ক্ষমতা দিয়া ই একমুখীতা প্রাপ্ত ন্যায় উত্তর পদের কর্ম কর্তন হইতেছেন। ইহা হইবে কারণ কি তাহা হইতে পারিতেছি না। খেদের কথা অধিক কি কর্তন তাহা হইবে তৎকালীন কালের কর্ম কর্তন নিমিত্ত নিম্নুক্ত হইয়াছে, প্রথমোক্তের তাহারও দুই শত টকা বেতন পাইয়া থাকে। এক্ষণে এমন প্রাপ্ত উপস্থিত হইতে পারে যে অ-

ধিক বেতন হওক। বোধহয় কি পারি। তবে, তাহার দ্বারা প্রবর্তনকে সে পারি। তার পাইতেছেন, তাহাকে সেই পারি। তন দিতেছেন। ইহা একথা কত বড় অধিকার ও মনন ভিত্তিতেই পারি। উপরি উক্ত এসের প্রকৃতির বেতন হইয়াই পাইত এমনি পাওয়া পাইতেছে, তার এমনি মনে পড়িয়া গেলে যে আদর্শ রপরাগ রাজা পিতার অরণ হইয়া কত তার বিবরণে হইয়া মালভূম ম্যাজিস্ট্রেট অধিক ও অল্প উপাধীনকারী পুত্রের পোকা করিয়া তোলায় ইহা বিশেষ করি। কিন্তু তাহা হইবে, তাহাকে বিদ্যালয় কা পারি! অসমবণ বিদ্যালয় প্রকৃত হইবে, তাহা হইতামা মুন্সেফেরা বেতন বিবরণে এমন বি অবস্থার থাকিতে পারেন না, কারণ ইহা সহক ধরিলেও ইহা পাইত ও মালভূম। কাল কালে মালিক ভিত্তিতে মুন্সেফিতে আদায় হইয়া থাকে।

২২। গবর্নমেন্ট হস্তান্তর মুন্সেফ। একমুখী বিবেচনা করিয়াই কান্তিচন্দ্র তাহারও যে মৌলিক পরিপ্রভু করিয়া দ্বিতীয় হইলেন, সে পক্ষেও কান্তিচন্দ্র আদর্শ মুন্সেফের সংখ্যা অনুসারে মনের সংখ্যা তাহার মনোমতের প্রাপ্ত হইবেক। ইহা হইতে অনেক মুন্সেফ পোকা গা হইয়াও উচ্চপদ লাভ করিতে পারে মাল্য বিবেচনার দ্বিতীয় যে দ্বিতীয় সে সেই উচ্চপদ লাভ করিতে পারিবেক, ন্যায়সঙ্গত কথা বলিয়া। পরিপ্রভু হইবে না। কারণ উচ্চপদ পাইয়াও যে আছে এমন হলে কে তার অসমবণ এবং করিলেই তার কর্ম করি? পক্ষান্তরে মৌলিকদিগের মধ্যে তাহাকেও কি এসিডেন্টী কর্তন করিতে দেখিয়াই অধিকার মধ্যে তাহাকে তৎপদে থাকিয়া পদ কবিতা বাটী গমন করিতে দেখিয়াই তাহা না হইল, তবে এ হস্তান্তর বিবেচন ও পদস্থ বিবরণে নিম্নলিখিত মৌলিক অসমবণমেন্ট প্রেরিত মন সম্বন্ধে পাইবেক না।

৩২। ছোট আদালত সংসদ মুন্সেফ নিম্নলিখিত মোকদ্দমার মন সাহেবের নিম্নলিখিত আদালত আদালত ৩ টি এবং মোকদ্দমাসম্বন্ধে মুন্সেফেরা এমনি এ নিম্নলিখিত করিলে মন সাহেব আদালত অগ্রাধিকার নিম্নলিখিত করিলে তাহা

একটি বসন্ত
জান্না নাই

सम्पत्तिपदक महाभारतस्य ।

[illegible]

কিছুদিন হইল সোমপুকার নামক লিঙ্গগেও
কংলগু গমনের ডিমটী প্রসিদ্ধজনক লিঙ্গগেও
কর। শুধুধো ছিটায়টী (কতক লিঙ্গগেও কংলগু
গমনে বিলক্ষণ অসুস্থতাগ আছে কিন্তু অর্থসমুদয়
নিরুৎসাহে কৃতকার্য হইতে পারিতেছেন না) অর্থাৎ
লিঙ্গগেও গমনে গুণগ্রাহক। যেসকল ব্যক্তি অর্থ
বলে ইংলগু গমন বাসনা পূর্ণ করিতে পারিতে
ছেন না, তাঁহাদের অর্থ প্রাপ্তির উপায় কাব্যর
দিবাব একটি অবসর উপস্থিত হইয়াছে। সে এই
কিন্তু কালে যে টাকা, সংগৃহীত হইয়াছে, এম
নীতির কাণ্ডাত আঁব কিছু কিছু টাঁকা মিল
এক পাটমাহেবের অবদান সংগৃহীত টাকা
হইতে এক কনিয়া একটি কণ্ডকাবা হউক
একমাত্র প্রাপ্তিকৃত দ্রবিত্ব হইল ইংলগু বাইরে
আনল। ইংলগু, কণ্ড হইতে পাঁচাত্তর পাঁচের
ইংলগু বাইরে পাঁচাত্তর, সিবিলসার্ভিস প্রভৃতি
পাটমাহেবের কনিয়া পাটমাহেব। দেওর। হউক,
এক এক কনিয়া নিকট হইতে ইংলগু লে-
খাইয় লেখ। ইংলগু, এখন তাঁহাদের নি-
মিত্ত সেবা দে।

ব'দ লেনিড ও গ্রা'ই ক'হিয়মে বে'লক'ল স'ল।
 হ'ইসা'ছে তা'হ'ব প'রিব'র্ড ল'খা জ'ন'তি'য়'ত ল'ল,
 তা'হা হ'ইলে আ'ব এক'টী স'ত'ত' টাঁদ। বা'হির
 ক'ব স'ত'ত' ল'খা'ল।

महाभय मनीषि ।

१३५ ४५ ४६

७ : १ : ५२५, १११३।

मन्त्राश्रयिष्व ।

১. পূর্ব বঙ্গ প্রজাতন্ত্র প্রজাপত্র ১৯৭১
 ২. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ৩. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ৪. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ৫. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ৬. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ৭. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ৮. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ৯. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক
 ১০. ১৯৭১ সালের ১৯ জানুয়ারি তারিখের প্রজাপত্র কোঃ ৫৬/ক

[illegible]

টি মাজিষ্ট্রেটেরা অত্যাচার করিতেছেন, তখন মুনসেফদের কিছু না করা ভাল দেখায় না।

হিন্দু পোষ্ট্রিট বলেন, ভারতবর্ষের পেল-ওয়ে কোম্পানি ককল পুরের বেণওমের নি-মিত্ত দুই কোটি টাকা কর্তৃত্ব করিতেছেন। এ-তি অংশ ২০০ টাকা নিশ্চায়িত হইয়াছে। গবর্ণমেন্টে খণ্ড করা ৫, টাকা মূল পুখাইয়া দিবেন অধীকার করিয়াছেন।

উক্ত পত্র প্রবণ করিয়ছেন, ২৪ পরগণার প্রতি নিধি মাজিষ্ট্রেট ওয়ার্ড গাহেব তহত্যা প্রতি নিধি কালেক্টরের কার্যতর প্রাণ হও-রাতে গবর্ণমেন্টের নিকট একজন আইকে না-জিষ্ট্রেট চাহিয়াছিলেন কিন্তু গবর্ণমেন্টে উত্তর দিয়াছেন যে তাহার অধীনে একজন অতি উপযুক্ত ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট আছেন, তাঁকা-দ্বারা এই নির্দাহ হইবেক। লেপটনন্টে গ-বর্ণর কোলবি আবদুল লতিফকে লক্ষ্য করিয়া এই কথা কহিয়াছেন। আবদুল লতিফ এই উপযুক্ত নোকই বাটন।

উক্ত পত্র মেনিনদের হেট আদালতের ৫৮ লিঙ্গান সাহেবের অবিচারের পুনরাব প্রতি বাদ করিয়াছেন। এই জজ আদালতের বিপরীত কার্য করিয়া লোকের বাটীপ্রভৃতি স্থান নষ্ট সকল বিজয় করিতেছেন। প্রায় একশত প্রজা কেবল যে গো মহিলা লাক্স প্রভৃতি হইতে বঞ্চিত হইয়াছে এবং নষ্ট তাহা-দিগকে স্থান ত্যাগ করিতেও হইয়াছে। এই বিচারকের কাণ্ডের প্রতি যদি গবর্ণমেন্টে অবিলম্বে বিশেষ রূপে মনোযোগী না হন তাহা হইলে মহান অনর্থ ঘটবে সন্দেহ নাই।

পশ্চিমবঙ্গের এক জন পত্র প্রেরক কলিকা-তার, বাহুবাহারের লোকদিগের অগ্রাণান প্ররতি ও লাল্পটি দোষের উল্লেখ করিয়া আ-ক্ষেপ করিয়াছেন। তিনি বলেন রাজধানীর এ পল্লীতে সচরিত্র ও রুতবিন্য লোক প্রা-পাওয়া যায় না। রুতবিন্য ন হউক সচরিত্র লোক রাজধানীতে ক্রমশঃ বিরল হইয়া আ-সিচ্ছেন।

পাঠকগণের অরণ থাকিতে পারে লেপ-নট জাকস নামে যেব্যক্তি আপন খানমা-

কে চোর সন্দেহ করিয়া গাহে বাধিয়া ধর-ক অপর কৃত্য দ্বারা ওরুতর প্রহার করিয়া। হিগেন, কোর্ট মারসলে তাহার বিচার হইবে। কোর্ট মারসলে বিচারের অগ্রমতি হওয়াতে দুটি লাভ হইবে। এক, অপরাধকে সুপ্রিয় কোর্টে আনিতে গবর্ণমেন্টের অনেক ব্যয় হইত তাহা বাঁচিবে। দ্বিতীয়, কসাইটোলার মহোদয়েরা সেখানে বাইতে পরিবেন না।

কিনিক কহেন, আটজাক উইলসন সাহে-ব কলিকাতা পুলিশে কেরান সাহেবের প্রতি-নিধি হইবেন এবং বুলনয় সাহেবের অধ্যাপি-তি কাল পর্যন্ত কেরান সাহেব হোট আদা-লতে তাহার কাব্য নির্দাহ করিবেন।

লাহোর ক্রমিকেল সম্পাদক কহেন, করা-নগর দোস্তমহম্মদের হস্তে পড়ত হইয়াছে।

উক্ত সম্পাদক আরো কহেন, গোসোয়া-রে ওলাউঠার প্রাচুর্য ব হইয়াছে, ইউরো-পীয় সেনাদলকে ইতস্ততঃ ধেরণ করা হই-যাচ্ছে।

আইড গেজেট সম্পাদক বলেন, রেইল-ওয়ের গাড়িতে এক জন আফিসর এক জন জীলোককে অপমান করিয়াছে বলিয়া বে মন রন উঠিয়াছিল তাহা বিখ্য। এক জন গার্ড এই কর্ম করিয়াছিল তাহার শাস্তি হইয়াছে। তিনি এমন সফলিত ব্যক্তিকে নাচনী করিয়া গার্ডের পদ দিয়াছিলেন, তাহাকে অন্যবাদ দিতে হয়।

ডিক্সন নামে এক ব্যক্তি আর এক ব্য-ক্তিকে এক ইষ্টকদ্বারা চক্রে আঘাত করিয়া ছিল বলিয়া তাহার পুলিশে ৫০ টাকা জরি-মানা হইয়াছে। চকের মূল্য কি দুই টাকার অধিক নয়?

১৪ই আশ্বিন বঙ্গাব্দ।

উক্ত পশ্চিমবঙ্গের সংবাদ পত্রে প্রকাশ হ-ইয়াছে টুটি ডেড নামে এক জন ইউরো-পীয় রাওসাহেবের টকোল হইয়াছেন। অ-নেক তাঁহার উকাল হইতে চাছেন নাই, টুটি কোড উকাল হওয়াতে ঐরুখিকারী লনের কেহ কেহ তাহার উপর কুণিত হইয়াছেন। আত্মপক্ষ রক্ষার বতপ্রকার উপায় আছে, অপরাধী ব্যক্তিকে বিচার কালে সে সকল হইতে বঞ্চিত করা বিধেয় নয়, এ নিয়মটি

আমাদিগের ঐরুখিকারী কামের

আলাহাবাদ গেজেট বলেন, সাহেব অদ্যাপিও ঐরুখিক অদ্যাব্দে : : : : : দুটানে অবস্থিতি করিতেছেন। : : : : : সাহেব " নামে, ৩ পাইয়াছেন সন্দেহ কাম

কিনিক বলেন, উকিয়ার কদম : : : : : দুই রাক। বিবাদ করাতে তাহার গোলযোগ উপস্থিত হইয়াছে। ৪৩ পশ্চিম এডওয়ার্ড সেনাদল তাহার প্রেরিত হইয়াছে। এই সকল ক্ষম যুদ্ধে নিরস্তর ব্যয় হইতে লাগিল। কোন্ ব্যক্তি এত ব্যয় চিরকাল দিয়া : : : : : ঠিবেন। ত রুতমের ধনাগার কি অক্ষত।

গোহাইয়ের ব্যবস্থাপক সভা এই প্রজ্ঞা-ব করিয়াছেন যে ব্যক্তির প্রতি কঠিন পাকি-অমসহ কারাবাসের আদেশ হইবে তাহাকে : : : : : হুতর রূপে লৌহশৃঙ্খলে বদ্ধ রাখিতে : : : : : হইবে, একপ নিষেধ করা ব্যতীত অন্য : : : : : লে বদ্ধ রাখা আর না রাখার ভার মাজিষ্ট্রে- : : : : : ট দিগের উপরে দেওয়াই কর্তব্য। তাহার : : : : : বিবেচনা করিয়া বাহাকে অধিক অপরাধী : : : : : বোধ করিবেন তাহাকে শৃঙ্খলে বদ্ধ রাখিবেন।

টাইন্স অব ইন্ডিয়া বলেন জিয়াবু রে-বাজার জ্যোতির্কেন্দ্রা জন আগান : : : : : সাহেব ইংলণ্ডীয় রমাল সোসাইটি : : : : : কিবের বেডাল পাইয়াছেন। কিব : : : : : বিখ্যাত জ্যোতির্কেন্দ্রাঙ্গিরের : : : : : এক কণ্ড রাখা বাদ। টাইন্স সাহেব : : : : : হুতন আবিষ্কৃত্য করাতে এই বেডাল পাই- : : : : : য়াছেন। জিয়াবু রেব রাজার জ্যোতির্কেন্দ্রার : : : : : সবিষেব অগ্রাণ আছেন।

হুইটেড ওয়েল নামক এক জন কয়েদী : : : : : হরিণবাসী হইতে পলায়ন করে, উইলিয়ম : : : : : টুকলো তাহাকে ধুকাইয়া রাখে, তাহার : : : : : উত্তরে প্রধানতম বিচারালয়ের সেনিগনে : : : : : সমর্পিত হইয়াছে। এইনিমিত্ত আমাদিগের : : : : : শাস্তকারেরা পাপীর সংসর্গ করিতে নিষেধ : : : : : করিয়াছেন।

৬৬ টাকা নিউস বলেন, ২৪এ অগস্ট দুর্ভ- : : : : : হত্যাকারী হিলি বাপ্পীর জাহাজে কলিকা- : : : : : তার প্রেরিত হইয়াছে। টাকা নিউস : : : : : ভাগ্য নির্ভর হিলি, এইরূপ লিখিয়া : : : : : সম্মান রক্ষা করিয়াছেন। ঐরুখিকারী : : : : : নাম

রক্ষা করা কর্তব্য, সন্দেহ কি? কিন্তু চাকার নিউস
“এই গরুর লেজ খরিয়। অর্পে বাইতে চা
হিভেছেন না ত? ১১

উক্ত পত্র আরো বলেন তদ্রূপ অজ্ঞ আ
বর কৃষি গায়েব সম্প্রতি একাধীন হঠাৎ সদর
আলার বিচারালয় দর্শন করিতে যান। কাজ
ইউক না ইউক অজ্ঞের বে এমন সুমতি, ইহা
ও আকাদেব বিবরণ।

১৫ই আশ্বিন বুধবার।

বশোহরের অন্তঃপাতী রাহুলি হইতে
এক ব্যক্তি আমাদিগের নিকটে লিখিয়া পা
ঠাইয়াছেন, এই গ্রামবাসী জবীদার জীবুক
যারু হরিশঙ্কর রায় চৌধুরী তথায় একটি বা
লিকা বিদ্যালয় পুনঃ প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন।
আমরা জানি যে যে কাণ্ড দ্বারা অগ্রামের
সমিধেব উন্নতি হয়, সেই সেই কার্যে হরিশ
যারুর বিলম্বন বর ও তত্ত্বাবধান আছে।

মকমলের বিদ্যালয় সংক্রান্ত কয়েকখানি
পত্র আমাদিগের হস্তগত হইয়াছে। জানের
অপত্তা প্রযুক্ত সেগুলি প্রচারিত করিতে
পারিলাম না। সেই সকল পত্র পাঠ করিয়া
ভাৎপর্ধ্য পর্যালোচনা করিলে ইনস্পেক্টর ও
ডেপুটি ইনস্পেক্টরেরা তদ্বাবধান বিষয়ে নি
তান্ত প্রবাদ, ইহাই স্পষ্ট প্রতীয়মান হয়।
নিককেরা বিদ্যালয়ে বেকামত ব্যবহার ক
রেন। পাঠেবও নিয়ম নাই, সময়েরও নিয়ম
নাই। তদ্বাবধান না থাকিলে একপ হওয়া
অসম্ভাবিত নহে। অঙ্গ বেতন পান বলিয়া
কি ইনস্পেক্টর ও ডেপুটি ইনস্পেক্টরদিগের
কাজে গা লাগে না?

আমরা একখানি পত্র পাইয়াছি, তৎপা
ঠে জানা গেল, হাবড়া জিলার অন্তঃপাতী
বলুহাটি প্রভৃতি কয়েকটি গ্রামে সর্পাঘাতে
ময় ব্যক্তির প্রাণ বিয়োগ হইয়াছে। পল্লী
গ্রামের রাস্তা ঘাট তাল নদ বলিয়াই গ্রীষ্ম
ও বর্ষাকালে সর্প ভয় হয়। গ্রামস্থ প্রজা
চালা করিয়া যদি রাস্তা ঘাট পরিষ্কার রাখেন
অকালে কালহস্তে পতিত হইতে হয় না।

এত দিনের পর ভারতবর্ষীয় যুদ্ধ প্রা
দেশ সংখ্যা কামান হইতেছে। বোম্বাই গবর্ন
মেণ্ট সম্প্রতি অনেক অহাঙ্গ বিক্রম করিবার
আজ্ঞা দিয়াছেন। আপাততঃ ইহার দ্বারা

যার সংকেপ হইবে সন্দেহ নাই। কিন্তু জা
মরা দিয়া চক্ষে দেখিতেছি - ইংল্যান্ডে
ভারতবর্ষীয় সেনাদলের ৩ নায়ক যে সে দেশে
থাকিয়াই কয়েক খানি রাজকীয় প্রদত্ত
রতনবর্ণের খনাগার হইতে ব্যয় লইবে

আমাদিগের পুলিষের কি কখনই উন্নত
হইবে না? পোষ্ট মাস্টার জেনরল প্রকাশ
করিয়াছেন, বোম্বাই প্রেসিডেন্সি তক ও নগদ
নামক স্থানের মধ্যে তদ্রূপ ডাক হুট হই
য়াছে।

নিউ জিলাও হইতে সংবাদ আসিয়াছে
ওটেগোর স্বর্ণ খনির কাজ নীতাদিকা প্রযুক্ত
১৫ সময়ে ৩ দিনে নীতের প্রাদুর্ভাব হওয়া
ছে। বন্ধ হইয়াছে। তদ্রূপ আভিষ্কৃত
চুই আভিষ্কৃত হইয়া যুক্ত করিতেছে। নত
একপ সম্ভাবনা আছে, তদ্রূপ শাসন করা
ইহার সীমা সা করিয়া দিবে। যে সে প্রকা
বে ইউক, নিউ জিলাওর আদিম নিবাসী
গের লোণের কাল আসিয়াছে।

মাত্রাজ টাউনস বলেন সম্প্রতি কয়েকজন
দুর্ভ ব্যক্তি কইবার টেসনের নিকটে বেটল
ওলের উপর দোহ প্রভৃতি রাখিয়া আরোহী
দিগের পাল নাশের চেষ্টা পাঠিয়াছিল নিয়
মৌতগ; ক্রমে কোন বিপদ ঘটনা হয় নাই।
মধ্যে মধ্যে এই রূপ শুনা বাইতেছে, বেল
ওয়ে কোম্পানি দুরাচারিণকে শরিয়া গুল
নও বিধান করিয়া তাহাদিগকে অপব্য তুরেব
হস্তের আক্রমণ করিতেছেন না কেন?

করানীরা কোচিনটনে ক্রমশঃ সংগৃহ
হইতেছেন। আসামের রাজা তাহাদিগের
সহিত সন্ধি করিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন কবা
নী গবর্নমেণ্টের সহায়িত ব্যতিরেক তিন
কোন বিদেশীয় গবর্নমেণ্টের সহিত কোন
প্রকার সন্ধি বা সম্বন্ধ করিবেন না। ভারত
বর্ষীয় রাজারা হেষ্টিংস ও লর্ড ওয়েলেসলি
এই রূপ কোশলে পতিত হইয়া সামান্য
সীমারের ন্যায় হইয়াছেন।

আমাদিগের পাঠকবর্গ লঙ্কা সাহেবের
বিলাত যাত্রায় কথায় শুনিয়াছিলেন। তা
হার পর তাহার আর কোন কথা শুনিব না।
তিনি সম্প্রতি একজিটরহালের এক সভান
উপস্থিত হইয়া যথেষ্ট সম্মান লাভ কবি
য়াছেন। টংলগীর প্রধান ব্যক্তি স্পষ্টাকবে

কহিয়াছেন, তাহার অনাধ দণ্ড করা হইয়াছে,
একজন সহযোগ ব্যক্তি এই প্রস্তাব করিয়াছেন
যে তালভবর্ষে লর্ড কার্ণেলের প্রণীত অন্য
র নিষ্কাশারীর দণ্ড ঘটাই আইন প্রণীত
করা লঙ্কা সাহেব নীত নীলঘটিত এক পুস্তক
প্রকাশ করিবেন। নীলকরেরা যখন এক জন
মহাত্ম্য পুরোচিতকে কষ্ট দিয়াছেন, তখন
নত তাহাদিগের তুর্ভাগ্যে বীজ বপন করা
হইয়াছে।

উক্ত লঙ্কা সাহেব, কোন ব্যক্তি যত
দ্রুত ভগ্নীর পানি গ্রহণ করিতে পারেন না।
হাবড়াবর্ষে টংলগীর উপর এই গাউন
লর্ড না ববেচনা করিয়া এক জন আকিসব
এই প্রস্তাব বৈত কবান্তে কলিকাতার বিশপ
পাঠ্য দিয়াছেন তাহাতে কেহ এই রূপ
প্রস্তাব করেন, যখন শিখা ও হাতুলের
নন্যাকে নিবৃত্ত করা অসম্ভব হইতেছে,
তখন যত পল্লী ভূমিনীকে বিবাহ করিবার
নিয়ম করা তাহকের সন্দেহ নাই।

দানপুরের বিগেডিয়াস নাট্যশালার
এক স্ট্রীংগেন্স প্রতি কলচিত্ত ল্যবগায় যদি
শক্তিলেন বলিয়া, তাহাকে নিজ পদ ভাগ
করিতে হইয়াছে।

কলকাতা গেজেট বলেন পল্লী এক
শক্তি সেনার লটুয়া এক জন টংলজের
কাঁতে উৎপাত করা ত উক্ত টংলজ তাহা
বে বন কবিতা হই। কলকাতা কবাকল
আমরা সে প্রসঙ্গত ব্যক্তি স্থাপন কবিয়া
তাহার বন স্থাপন বন করিবার চেষ্টা কবান্তে
ভৃত্য তাহাকে বন করিয়াছে। বিচারে জানা
বাইবে।

১৬ই আশ্বিন রত্নপতি বান।

বোম্বাই গবর্নমেণ্টের নান্দেব (নিকট কু
মির) বন্দোবস্তের অন্য তদ্রূপ ব্যবস্থাপক
তদ্রূপ একবিল অর্পণ করিয়াছেন। কিন্তু অনে
ক লোক ইন্দ্র কাম্বুসনের প্রস্তাবের প্রতিবা
দী হইয়াছেন।

লাও হোল্ডার্স সভা বারিউরের নিক
টে পরামর্শ জিজ্ঞাসা করিয়াছেন, গবর্নমেণ্ট
পতিত ভূমি বিক্রয় করিবার আশা দিয়া
অগ্রিমের অন্য আগামী টাকা লইয়া তাহা
কিরাইয়া দিতেছেন। একপ ফুলে টাকা না ল
ইয়া গবর্নমেণ্টের নামে প্রতিজ্ঞা অজ্ঞের নালী

ন করা যায় কিনা? হ্যাঁ, যার, জীবনিকারীতি
গের নিমিত্ত অথের শূন্য আটনের অধুত
ধারা, সৃষ্টিহীন প্রকরণ অসমানে লাভ এল
গিন ও সর চারলস উত্তের ছয় মাস ফাঁদী
হইতে পারে।

বোম্বাইয়ের টোহান নামক এক সুসল
মান অংশন উপপত্তীর পুরুষাত্তরে আনন্দিত
অভ্যাস করিয়া তাহাকে ও তাহার দাসীকে
বধ করে। তাহার ফাঁদী হইয়াছে।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া বলেন, সিংহল
বিশিষ্ট দ্বিকমলী নগরের সম্মুখে আবা
নারক যে জাহাজ ইতিপূর্বে জলমগ্ন হইয়াছিল,
স্বাভাৱতঃ হঠাৎ ২৩-০০ টাকার মূল্য হ্রাস
হইয়াছে। আরও অধিক টাকা ইতিমধ্যে
প্রাপ্ত হইয়াছে।

কলিকাতার পুনর্বিভক্ত বালিকিয়ার সেনা ৮-
ল বাপন শিগ্রে ডালহৌসি সত্বে এক প্র-
স্তাব হইয়াছিল লাভ এলগিমের মনিমায়
সংস্কৃত হইয়া আছে। বালিকিয়ারদিগের তখনও
যে সাহস ও অধ্যবসায় ছিল এখনও তা
হাই আছে।

বোম্বাই গেজেট বলেন, নতুন প্রদেশের
সম্প্রদায় কলম দাস মূলতঃ উৎসাহ বর্ধ
নর্থ বোম্বাইয়ের সঙ্গ আলেফজার খাঁ
প্রতি এক সভা করেন। বালিকিয়ার আ-
নেক সম্প্রদায়ের মোকদ্দমায় সঙ্গ ও মহা-
রাজ যখনও তাঁর নিজস্ব বিষয় প্রসঙ্গ করি-
য়া আশ্রয় প্রকাশ করিয়াছেন। এবিষয়ে
বোম্বাই বাজালী বেশ অপেক্ষা বড় হইল।

বোম্বাই প্রেসিডেন্সির হুজুর জমিদার
সেইলওয়ে একটের আরোহী নগের কর্তব্য
মহা লইয়া অনেক গো লংগো হইয়া গিয়াছে।
এই ভা কোম্পানি প্রতি শকাব্দে ৫০ জনের
অধিক উত্তিতে চিবেন না হির করিয়াছেন।
আবোহী নগের সংখ্যা নির্দিষ্ট করা নিতান্ত
আবশ্যক। কিন্তু এখানকার রেলওয়ের মহা-
পুরুষেরা আরোহীর সুবিধা বুঝেন না।

ইংলিসমান অবগ করিয়াছেন, রাজ্য দিন
কর রা এক ভারতবর্ষীয় গন্যমানে ও সাধারণ
গে বিশেষ সম্মান করিতে বোম্বাইয়ের দা
আ কিঞ্চিৎ অসন্তুষ্ট হইয়াছেন। মহারাজ সি
দ্ধিয়া কি এত নির্দোষ যে গুপের যথোচিত
পুঙ্খকার দেখিয়া অসন্তুষ্ট হইবেন?

লার্ড কার্ণার বিংশতি লক্ষ টাকার সম্পত্তি
রাখিয়া গিয়াছেন। এই সম্ভার সম্পত্তি
উহার নিতীত ভাগিনেয় পাঠবেন।

বোম্বাইয়ের মোকো সর জেমস আটট
রামকে যে এক স্বর্ণ চাপ দিয়াছেন, তাহা
উপাত্তে দেওয়া হইয়াছে। ডিউক অব আর্গ
নি এক সত্য উত্থাকে ইহা প্রদান করেন।
সর জেমস আটটরাম আদ্যাপিও দুর্বল আ-
ছেন।

পারস্য দেশের মধ্য দিয়া ভারতবর্ষে
টেলিগ্রাফ কবিরার যে প্রস্তাব হয়, তদ্বিষয়ে
তত্ত্বতা রাজ্য অসম্মত হইয়াছেন। নসিকদিস
নিজে টেলিগ্রাফ করিবেন সক্ষম করিয়াছেন।

নিকমের রাজ্য ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের
নিকট দাখিলিতের পরস্বরূপ প্রতি ১০০০
২০০০ টাকা প্রাপ্ত হইতে। গত যুদ্ধে উক্ত
এই কর বন্ধ করা হয়। পর আবেদন অমু-
সারে মধ্য চাবলস উক্ত উত্থানে এই টাকা
পুনর্বার দিবার আশা দিয়াছেন। এদেশীয়
বাজা ও মণ্ডলিককে নিম্ন নিম্ন প্রাপ্য সময়
হইতে বাধিত করিয়া ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টে-
কে সকলের বিবেচনাক্রমে করা সর চাবলস
বিভিন্ন অভিপ্রায় নহে। এই নিমিত্তই জি
ককাদিনিকের ভাণ্ডার উপরে ৫০ আশ্রয়।

ইংলিসমান গত কল্য টেলিগ্রাফে সংবাদ
প্রাপ্ত হইয়াছেন রা ওসভেবের পাঁচটি বিষয়ে
সোম সম্মান ৩৩৭-৩৩ টাকার ফাঁদী হইবার
আজ্ঞা হইয়াছে।

১৭ই অক্টোবর প্রকাশ্য।

ইংলিসমান সম্প্রদায় বিখিয়াছিলেন
পাতিয়ালায় রাজ্য লক্ষিকার হইতে মাপন
দেশে পাতিগমন করিয়া এক সম্মান করিয়া
সম্মানকে করিয়াছেন যে গবর্নমেন্টের
সভা কোন নম্র মাত্র। হইতে য় পবিপূর্ণ।
এতদেশীয়দিগকে এতদেশীয় করিয়া সমস্ত
মন উৎসাহে লইয়া যাওয়াই এই সভার উদ্দেশ্য।
১৭ই অক্টোবর গবর্নর ইণ্ডি দেখিয়া শতল
জের কমিসনর ইণ্ডি বাখাধ্য অমুসন্ধান ক-
রিয়াছেন। ইহা কর্তব্যী পাতিয়ালায়
২৩ই অক্টোবর উক্ত দ্বারা এই কথা জিজ্ঞাসা
করিয়া পঠান। ২৩ই অক্টোবর করিয়াচ বৎসর
হইয়া এই উক্তর সেন বে ডিনি একগু কথা
কখন কখন নাই, একগু ভাবও উত্থার মনে

উদয় হয় নাই। জাহাজ মনে না হইতে, ইংলি-
সমানের মনে হইয়াছে। এই সকল গুপের
সম্পাদকট পয়নামে ভারতবর্ষে ইংলাজ রাজ্য
অথ লোপের কারণ হইবেন সম্ভব নাই।

ক্রিনিকের পাসিমের সংবাদ লজ্জা ক
হেন, লেপ্টেনেন্ট গবর্নর ২৩ই অক্টোবর উপ
স্থিত হইয়াছেন। প্রধান প্রধান লোকেরা
উহার আহ্বান বধ্যে আসিয়া সাক্ষাৎ করি-
তেছেন। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর কিছু কাজ করিতে
পারিবেন ত? না কেবল গবর্নমেন্টের কায়
করান সার হইবে?

উক্ত পত্র আরো কহেন যে ভাগলপুরে
এক বাসিন্দা ৭০ জনেরও অধিক লো-
কের সহিত জলমগ্ন হইয়াছে। কাহারো
প্রাণ রক্ষা হয় নাই। তরফর দুর্ঘটনা। এত
লোক লটতে কেওর। কয় কেন?

পুনঃ অব জরুর কহেন বোম্বাইয়ের সুসি-
মান নামে এক স্থানে এক ব্যক্তি বিজুর সং-
শঙ্ক প্রাণ ত্যাগ করিয়াছে। বিজুর দীর্ঘ
পুট ইচ্ছা ও প্রসঙ্গে দেখ ইক। ১৪ খটকা
পাঠ্য বস্তু ছিল। এই সময়ের মধ্যে এই ব্য-
ক্তি মৃত্যু হয়। অনেক কহিতেছে, এই বি-
জুরীকে সর্পে সংশয় করিয়াছিল। উক্ত প-
কিন প্রদেশে বিজুর উপস্থাপ অত্যন্ত অ-
ধিক।

লক্ষোনগরের ব্যাংক এক অম ইউরোপীয়
জাল ভাঙি জাহাজের চেঁচী পাইয়াছিল।
কিন্তু ব্যাংক তাহাকে ধরিয়া পুলিসে অর্পণ
করেন নাই। তত্ত্বতা গবর্নমেন্ট কর্তৃক চারিয়াও
ইহাতে চকু বুজিয়া আছেন। এতদেশীয় হই-
লে অবোধ্য গেজেট খন খন ছকার ছাতি-
তেন।

গ্রাহকগণের উৎসাহ দান বিরহে সক্ষম
সুজন পত্রিকা উত্তীরা বাইবার উপক্রম হই-
য়াছে। এই পত্রিকা যুগি গ্রাহকগণের নিকটে
উৎসাহিকা হইয়াছিলেন?

১৮ই অক্টোবর শনিবার।

আমরা অতিশয় দুঃখিত হইয়া লিখিতে
ছি, গভী কল্য বাবু রূপা প্রদান রা প্রাণত্যাগ
করিয়াছেন। স্বসম্পত্তিবাণ ভাস্কর ওয়ব
উত্থার জীবন যুগা বিশেষ হতান হইয়া তাহা
কে পরকাল চিন্তা করিতে বলেন। তৎকালে
হায়িওটন গাহেব প্রভৃতি অনেক সন্তোষ

কৌকতথ্য উপস্থিত ছিলেন। তাহা নিগবর
মিত্র ও রমাওসাহ বাবুর স্ত্রী জামিয়ার-বন্দিত
অতি হইয়াছেন। তাঁহার দুটিপুত্র আছে। বঙ্গ
দেশ একটা উপযুক্ত পুত্র হইলেন।

সংবাদ আসিয়াছে যে সাহেবের এমত
আর ব্যয় হিসাবে বখাওই ৩০লাফ টাকার হ-
ল হইয়াছে। চীনদেশীয় বুয়ের ব্যয় ও রেইল
ওয়ে সংক্রান্ত কতিপয়ে এই টাকা কম হইতে
ছে। চীন দেশীয় বুয়ের ব্যয় না ইংলণ্ডীয় গব-
র্ণমেন্ট দিবেন?

বিহারিলাল দত্ত নামে টেটাম্প আফিসের
এক জন কেরানী নব্বয় বয়সীয়া গোপনে টেট-
াম্প বিক্রয় করিত। সে সপ্রতি বৃত্ত হইয়া-
ছে। তাহার বাণী হইতে কয়েক খানি টেটাম্প
বাহির হইয়াছে।

আমরা শুনিলাম গবর্ণর জেনরল অষ্টোবর
মাস পর্যন্ত উত্তর পশ্চিমাক্ষেপে গমন করিবেন।
তিনি দুই বৎসর তথায় অবস্থিতি করিবেন।
আগরায় তাঁহার বাসস্থান করা হইতেছে।
ভারতবর্ষ পরিভ্রমণের অব্যবহিত পাবেই
লর্ড ডালহাউসি ও লর্ড কানিংগের যত্ন
ওরাজে লর্ড এলগিনের কলিকাতা থাকি-
তে কি সাহস হইতেছে না?

মিত্র লিখিত দ্বল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ
বিক্রয় হইতেছে।

১ টাকার সিকা . . .	২১-২১।০
৪ টাকার কোম্পানির	২২০০ - ২২।০০
টাকার ই	১০৪।০ - ১০৪।০
৫৪০ টাকার ই	১১০ - ১২।০

ভারতবর্ষে নিযুক্ত আর দ্বি-সোটি টা-
কা কর্ত্ত করা হইবে অতএব কাগজের সজ্জার,
নয়ন হইবার সজ্জাবন।

৩রা জুলাই পযা শ্রেণ টেটবোপোল সমাচার

১ লা জুলাই ইংলণ্ডের ১৮৭২ অব্দ-
ব অসবরণে চেসব বাজকসাব পুই-সি ১২
খাচ কার্য সম্পন্ন হইয়াছে।

ব্রিটমশে কলিকাতার সেনার এক
সৈন্য গণকে আক্রমণ করি। অনেক
ত-সংবাদে, তাহা পুণঃ অধিক
লাহায়া প্রাপ্ত হইয়াছে।

লক্ষ্মন সেনাপতি ক্রিফট ক সেনানিভেয়
আক্রমণ করিয়াছেন, তাঁহার সেনাদল পুনে
সেনাপতি সিলভস কে রিপাবলিক দুর্গে রাজ-
ই করিয়াছে।

এতদ্ব্যনয়ন যে উত্তরাংশের বৃত্ত কাষে
অধ্যাক্ত ততঃ গবর্ণমেন্টের নিকট অধিক টে-
নোব জনা লিখিবেন।

পশ্চিমাংশে গবর্ণমেন্টের সেনার ৫৫০০
কে বিবক হইয়া যেসকল ও করিষু এই উত্তর
খানে অবস্থিতি করিতেছে। বার্ষিক ৮০০০
সৈন্য সচ-সিঙ্গিলিগে আছে।

ইউনাইটেড স্টেটের মারভীয় প্রদেশ
তে মাস ৬ উঠিয়া দিবার ১৮ জুলাই ৭
এবং বিজ্ঞাপনগেব মাসগণকে বেলগুরু
করিবার আজ, হইয়াছে।

ক্রিস্টিয়ান গবর্ণমেন্ট নিকট সমাধাএলার টেট-
লিখ বাজা বাসার ব-সংকান ব-সংকান, তা-
হা প্রচার হইয়াছে। মেসি-সংকান স-সংকান
হা। জাতি কও। ১৮৭২, স-সংকান স-সংকান
পরা-সংকান হইয়াছে। স-সংকান স-সংকান
প্রাধি এইকণ ভাব প্রকাশ হইয়াছে।

ক্রিস্টিয়ান গবর্ণমেন্ট হইয়া আসিছে
ছে। প্রাধি প্রাধি ৬৭৭ ৭৭৭ ৭৭৭ ৭৭৭
নগরগে প্রাধি ৬৭৭ ৭৭৭ ৭৭৭ ৭৭৭

ইংলণ্ডের স-সংকান এক-সি-সংকান
ইউনাইটেড স্টেটের স-সংকান প্রাধি
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বাহালাদেশীয় সেনাদল স-সংকান
আদেশ, প্রসারী নিয়ম।

৮ই জুলাই—এ, মসিমাংস, ১৮৭২
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মিমক চৌকির প্রতিনিধি স-সংকান
মসিমাংস এচ, বি. ডেবরো স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

ই, জাফসন সাহেব মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

উইলিউবি, বকল মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

মসিমাংস সিবিল ও স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান
প্রাধি স-সংকান স-সংকান স-সংকান

। ताराक इक्ष्वाकान करिष्ये मागिष, इक्ष्वा-

বার অন্য বাহুরটি তখন নিকট গমন করিলেই সে শয়ন করিত। আশুন বৎসর যার দুইপান করাইবা থাকে। এইরূপ দুইপান করি। বৎসর একপে ৫৬ বাসের হইয়াছে। ইহা অল্প আশ-
র্যের বিষয় নহে।

২। **সিদ্ধান্ত পুরাণ**। কুমরা নামে এতদবধি পুস্তক দেখতা আছে। এখানকার অনেক কবি। থাকেন ইনি অতি এতাক কাগ্নৎ সেহতা। বাহা হউক, এতি পনি মঙ্গল বার এখানে অনেক লোকজনের (অধিকাংশ স্ত্রীলোকের) নবাবগ হইয়া থাকে, এবং অনেক অনেক একার মানস করিয়া বার (কাক ডালীর ব্যায়ে) বাহারি সিদ্ধ বনোবধ হর তাহাঙ্গিকে নবাধিবি সোপকরণ নৈবেদ্যাদি দ্বারা দেবীর পূজা ও পিণ্ডাভোগ প্রদান করিতে হয়। পিণ্ডাভোগ অতি আশ্চর্য কাণ্ড। তথাকার পুজক ব্রাহ্মণ ঠাকুর বখাশতব উত্তম অবস্থায় প্রস্তুত করিয়া কুশা। কুশী এইনাম গ্রহণ পূর্বক আ-
জান করিবার নিকটবর্তী বনমধ্য হইতে কয়েকটা কুশকার শূণাল আগমন করিয়া বহ-
জন লম্বকে সেই সমস্ত আহার করিয়া বার (এ কেবল জল প্রদানের নহিবা একাশ লম্বহ নাই) পরিশেষে তক্তবৃত্ত বহু-কলি বজমান কুকাবলি দ্বারা কিছু পড়িয়া থাকে এলাহ বলি দাত্তি পূর্বক গ্রহণ করিয়া আপনাকে চরিতা র্থ বোধ করিয়া থাকে। হা! অমরা কি সুনিবার কুসংকারাবিষ্ট ও অমায়। তার! কতদিনে, এ-
তখনো দিগের অত্যকরণে ইদৃশ নিকৃষ্ট কার্য নহুবার কুৎসিত ও হৃণাকর বলিয়া এতীরমান হইবে? কত দিনে তাহাদিগের অজ্ঞতানীর ম্য।
র জন ও কুসংকারাহর কদম্বকেতে সত্য ধর্মরূ-
প চক্রেদিত হইবে?

৩। বর্তমান বর্ষে মৃতদেহ স্তম্ভিকার মেঘের নাম পুঙ্কর, পুঙ্কর নাম প্রবণাধি কুবিজীবগণ ১. পুঙ্করে পুঙ্কর বারি" এই ভাবিয়া পড়িত ও স-
ম্বিধান হইয়াছিল পরন্তু সম্প্রতি প্রকৃত বারি বর্ষণ দেখিয়া, তাহাদিগের সে সংকার ভবগত হইয়াছে। একপে এতৎ এদেশে উত্তমকৃপ কৃ-
ষিকার্য চলিতেছে।

৪। অন্যান্য বৎসর অপেক্ষা এবং মঙ্গল, বঙ্গ-
খাতে অধিক লোকের মৃত্যু ঘটিতেছে, এই শো-
চনীর সংবাদ আরই অতিমূলে এটি হইতে-
ছে। অল্প দিবস হইল। সাওতা গ্রাম নিবাসী
রামমোহন চৌধুরী নামক এক ব্রাহ্মণের বাটতে
বলিয়া ৪ ম্র, তাহাতে অতি শোচনীয় ঘটনা ঘ-
টিয়া গিয়াছে। উক্ত চৌধুরী একটা
অল্পবয়স্ক পুত্রবধূর প্রাণ বিয়োগ হইয়াছে। অত্

বার, ২২-এ-বাংলা-বর্ষে পঞ্চমী-পূর্ণিমা নামক
পালী-বর্ষে সৎসোপ মন্তকে বহুভাষ্য চইয়া
প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছে, তিনি ২ ৩ ৪ ৫-
তথা ব্যক্তি হইবার সময় মংসা ধরিয়া এক
গমন করিতেছিল। পুণ্ড্রিম্বো এই আকর্ষণ হই-
য়া উঠে। কি ত্যামক কাণ্ড! আর ৩ ৫ইল
ই দিবস আরও দুই এক স্থানে এই উপ-
লোক হইয়া চইয়া গিয়াছে। এত ৪-৫
ম্র এই একটা জনমর উঠিয়াছে যে ৫-৬-৭-৮-৯-
বাক্য বলপূর্বক দার্জিলিং চইয়া ১০-১১-১২-
মহারাজকে আগুন রাজ্য মংসা লইয়া গিয়াছে
ন। এ এবাং মংসা অমূলক বোধ হইয়াছে
এ একার চমকিত কামণি।

পৃঃ ১৮৬২ : ৭ জুলাই
বীর ভূমি সিন্ধুগত হাঁড়ক

বাবা হুম
জিহু বন মোহন ভট্টাচার্য

জিহু বন মোহন ভট্টাচার্য

মহাশয় সমীপে।

মহাশয়! প্রায় এক পক্ষ অতীত হইল। আমি
জেল। বর্জমানের অজ্ঞানতা কোন এক মৃত্যু
অনিবার্য বাটতে গমন করিয়া, হলায়, বিগে-
ব অজ্ঞানদ্বারা কানিলান এ মেষ মংসা
বহু হইয়া "মহাশয়" "মহাশয়" নবাবগে মঙ্গল
এক স্ত্রীতে নিত্য আসক্ত হইয়া "হ" প-
কে হুইকৃত করিয়া দিয়াছেন, এবং অ-
বরস জুলিয়া মর্জাই সেই মংসাকে ও এটি চি-
তাইতেই কালকেপ করিতেছেন। মহাশয়! ব্য-
রে ইনি একজন একুত হিন্দুধর্মাবলম্বী-
লিখ বিখ্যাত কিন্তু এই স্ত্রীলোকের বাক্য এক ব্রাহ্মণ-
ব মন্তকে চর্মপাতকা প্রাণ হইয়া গিয়াছে।
লোকে কহে বাবু কি বড়! কি ময়াসু! মহাশয়
আপনার পাঠক গণের নিকট তাঁহার ভাষার
ও ময়াসুতার আবাকি পঠিত প্রদান কবি-
তেছি।

এক জন কবিগুরু ভক্ত সন্তান নৈনিক আরা-
রোপবোধী ভ্রাতৃমি কবিবার জনা এ প্রা-
মে বাতায়িত করিতেন পুতরা! প্রায়ত প্রায়
সকল ব্যক্তির স'হত তাঁহার সৌন্দর্য হইয়াছিল।
নৈব দুর্জিগাক বশত এক দিবস বাবু দেখিলে
ন যে এই ব্যক্তি তাঁহার উপপত্নীর বাটতে বসি-
য়া বসেছেন এবং মহাশয় বসনে এই পরিব-
ার মংসা সজিত কথা বার্তাও কহিতেছেন
এক দেখিয়া তিনি কোপ মন্ত্রণ করিতে লা-
গিল। এই ব্যক্তিকে মৃত কবিবার আজ্ঞা দেয়, পরে

জিহু আনিত হইল মংসা পোনাতি প্রাণ ও এক
ক নীচবক্তির দ্বারা তাঁহার মৃত্যু করা
গিয়া তাহাকে প্রাণ হইতে বহুকৃত করিয়া
আবার এক স্ত্রীকেও তৎসংক শত্রু
দিতাছে। এক দিবস বজানোবোধে এই স্ত্রীলোক
মংসা কবিবার আনাতা প্রায় বিধি জিন জন লো-
ক মমকে বাবু একজন ভক্তের এতি তাহাকে
বহুক কবিবার আজ্ঞা দেয়। তাহা সম্পাদিত
হইলে পর উক্তমূলে এই অবস্থাকে ভূমিতে মদন
চাইয়া তাহা আর লিখিতে লেখনী অক-
হইতেছে চর্মপাতকা প্রাণ হইল। সে অষ্ট-
তনা হইয়া পড়িল। মংসা মংসা! ইহা অ-
বোধ! এতৎ ও মংসা! আর কি হইতে পা-
রে! আবার নিকট পলিস কর্মচারীদ্বারা নাকি
শ্রমিত পাট গব মেটের উত্তম ধরেন হই, বসি-
লেন প্রকৃতি তাহাতে কানিলান এ জমিদারের
অজ্ঞানতা মংসা মংসা! জমিদার হইয়া প্রাণ তা-
গ কবিবার পলায়ন কর। ৫-৬-৭-৮-৯-১০-
ন মংসা! তবে বাবু মংসা! ও অর্থ ২-
নে পলিস কর্মচারীদ্বারা মংসা! অতিমূলে উপ-
করিয়া তাহাদিগের পুনরায় মংসা! কবি-
বনা চৌকির মংসা! কবিবার কবিবার মংসা!
তাহা এই পম্বা! ইহাতে যদি বাবুর চর্মপাত-
শ্রমিত হয় অধি লেখনীকে বিপ্রাশ দিব, অ-
বদ তাহা! মংসা! লেখনীকে পুনঃপ্রাণ করিতে
গাওঁয়া হইল। তাহা যে বাবু মংসা! বসি-
করিলেন তিনি প্রকৃত অদর্শিক, অনেক ইহা
এই মংসা! জামন।

জি
৫ জুলাই

মল্যপ্রাপ্তি।

জিহু বাবু ব্রজল'ন বাবু ক বাবু
১২৬২ ১০ই আশ্বিন হইতে ১১ই আশ্বিন। পম্বা
কোং ৫ টাক
কুমদন চৌধুরী গণিয়া
১- ১২ আশ্বিন হইতে পৌষ পর্যন্ত কোং ৫ টা
চক্রকাণ্ড মংসা মংসা! ইহা
১৩৬২ আশ্বিন হইতে অগ্রহায়ণ পর্যন্ত ৫ টা
হরপ্রায় বাবু পামনা
১২৬২ আশ্বিন হইতে পৌষ পর্যন্ত কোং ৫ টা
গোবিন্দচন্দ্র মংসা! মংসা!
১৩৬২ আশ্বিন হইতে ১০ আশ্বিন পর্যন্ত ১০ টা
গোবিন্দচন্দ্র মংসা! মংসা!
১৩৬২ আশ্বিন হইতে ১০ আশ্বিন পর্যন্ত ১০ টা

এই ১২ ব্রজল'ন বাবু ক বাবু
মংসা! মংসা! মংসা! মংসা! মংসা!
মংসা! মংসা! মংসা! মংসা! মংসা!

সোমপ্রকাশ

“ প্রবর্তনা প্রতিনিধি যথিঃ সাক্ষ্যঃ স্মৃতিসহী ন বীথনাঃ ”

{ সন ১২৬২। ২৭ আষাঢ়। ইং ১৮৬২। ১১ আগষ্ট

মাসিক মূল্য ১ টাকা
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন।

মকমলে সোমপ্রকাশ প্রের

পের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাইলে মকমলে সোমপ্রকাশ প্রেরণ করা যাবে না। তাঁহার বাসিন্দা মূল্য ডাকদাতার সন্ত ১০ এবং বাণ্যাসিক ১০ টাকা নিরূপিত আছে। তাঁর মাসের স্থান অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মকমলের যদি কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই পাইতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

সম্রাতি বাজার। নন্দীল বিজ্ঞান লয়ের হাত-দিগের নিমিত্ত ‘ইউস অব দি মোব’ অত্র বাসিত হইয়া ৫ গোলকের উপযোগিতা ৩ নামে এক খানি কুশ্র গ্রন্থ কলিকাতা ট্যান্ডো পু বস্ত্রে মুদ্রিত হইয়াছে। মূল্য ৫০ আনা। কলিকাতা।

১৮৬২। ২৩ জুলাই।

ঐগোপালচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়

বিজ্ঞাপন।

মঙ্গল কাব্য মুদ্রিত হইয়াছে, ইহার আকার ১২ পেজী করমাত্র ৩২৪ পৃষ্ঠা। মূল্য ১০ আশ্রয় কারীর প্রতি ১০ মাত্র। মকমল গ্রহণ-বিগল মূল্যের সহিত আরো এক আনা ডাক বাতুল দিখিল পে মার্চিস আপিলে, আমার নিকট পাইলে জুবিলিবে পুস্তক পাঠাইয়া দিব।

ঐনবীনচন্দ্র গুপ্ত।

বিজ্ঞাপন।

কর্মদেবী।

ঐযুক্ত রজনীত বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত উক্ত কাব্যের মুদ্রাক্ষর কার্য আর শেষ হইল, গুরুত্ব সহায়েরা ঐযুক্ত বাবু বাজেন্দ্রলাল মিত্র ঐযুক্ত এমবেশন গোহাট সম্পাদক সম্বন্ধে উক্ত ল বুক পোস্টটোর ঐযুক্ত সেফে টারি সাহেবের নিকট অনুরোধ করিবেন। মূল্য কংগ্রেসের বসটি ১ টাকা, কালিকো ১০।

বিজ্ঞাপন।

গত ২০ আষাঢ় সোমবার ঐযুক্ত বাবু দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশয়ের পিতার ঘোড়ার সাংসারিক প্রাকবাসরে যে এক সংসদ হইয়াছিল তাহার বিবরণ ক্ষুদ্র গ্রন্থে নিবন্ধ করিয়া তাহার দুই সহস্র খণ্ড বিতরণের জন্য তিনি কলিকাতা গ্রন্থ সমাজে অর্পণ করিয়াছেন, ইহার প্রয়োজন হয়, তিনি আশা করিতে প্রার্থনা করিলে প্রাপ্ত হইবেন ইতি।

ঐগোপালচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়

কলিকাতা গ্রন্থ সমাজের সম্পাদক

বিজ্ঞাপন।

মুখোন্দো ব্যাকরণ সেবনাগর অক্ষরে মুদ্রিত হইয়া পটলডালা শালেকের নিকটে হরিনন্দন ওর্কালকারের দোকানে বিক্রয় হইতেছে। মূল্য ৫০ আনা মাত্র।

সোমপ্রকাশ।

১১ আষাঢ় সোমবার।

সর চার্লস উড ও লেড সাহেব।

ভারতবর্ষের রাজস্ব সংঘটিত কাণ্ডে

তত্তা পড়িয়াছে, কখন যে ইহার সুবিধা হইবে, একপ সম্ভাবনা দেখা যাইতেছে না। এখনে ইহা অক্ষকারে আচ্ছন্ন ছিল। উইলসন সাহেব ইহাকে সেই অক্ষকার হইতে নির্মুক্ত করিবার চেষ্টা পান, কিন্তু তাঁহার কয়েকটি মোষ থাকাত্তে তিনি লক্ষ্যকপে কৃতকায্য হইতে পারেন নাই। লেড সাহেব ধীরে ধীরে কায করিয়া অনেক সুবিধা করিয়া আনিয়াছিলেন, কিন্তু সর চার্লস উড সর্বদ্বয় প্রত্যাখ্যান করিয়া তাঁহাকে বিরক্ত করিয়া তুলিয়াছেন। তিনি বিরক্ত হইয়া ধীরে পদ ত্যাগ করিয়াছেন। ইহা অক্ষকার কোত্তর বিষয়।

লেড সাহেব যে আর ব্যর গণনা করেন, তাহা হইতে ইংলণ্ডীয় ব্যর ৩১৭৩০ ৬০ টাকা ও রেলওয়ে সম্বন্ধে ৪৭৩৩২৪০ টাকা হাড়িয়া দেওয়া হয়। ইংলণ্ড হইতে এ দেশে যে টাকা আইলে, তাহার প্রতি টাকার হিসাব মত দুই সিলিং ধরিয়া লওয়া বিবেচন হয়, কিন্তু তাহা না লইয়া এক সিলিং মত পেন্স লওয়া হইয়াছিল, তাহাতে প্রতি টাকার আর হয় পর সা ক্ষতি হয়। লেড সাহেব হিসাব কালে একটি গণনা করেন নাই। বর্তমান বৎসর সম্বন্ধে ৫,৫০০০০০০ টাকা রেলওয়ে ব্যর হইবে। উল্লিখিত প্রকার বিনিময়ের হিসাবে আমাদিগকে ৪৫৮৩৩৩০ টাকা

কতি সহ করিতে হইতেছে. এক্ষণে
সাহেব ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের নিকট প্রাপ্ত
(চীনদেশীয় যুদ্ধ প্রকৃতি হইতে) টাকা বর্ড
মান বৎসরের আয়ের মধ্যে পরিগণ্য
সর চার্লস উড আদিকার অনুমান না
করিয়া নিম্ন লিখিত প্রকারে অনুমান দে
খাইয়াছেন—

রেলওয়ে	কতি	৪৫৮৩৩৩০
চীন দেশীয় যুদ্ধের প্রাপ্য		৪৫০০০০০
ইংলণ্ডীয় যুদ্ধ ডিপার্টমেন্টে		৭২৪৪৪৩
অন্য অন্য প্রকার		১৪২৮০০০
ভারতবর্ষীয় ধনাগার হইতে		
কর্জ ও তাহার সুদ		৬০০০০০

মোট ১১৬০৫৭৭৩

ইহার মধ্যে লেড সাহেবের হিসাবে যে
১৪২০২১০ টাকা উদ্ধৃত আছে তাহা বাদ
দিলে সর চার্লস উডের মতে ১০১৮৫
৫৭৩ টাকা অনুমান থাকে। সর চার
লস উড ইংলণ্ডের ব্যয়ের ৫৪১১৪৩২০
টাকার হিসাব পাঠান, লেড সাহেব সে হি
সাব প্রমাণ না করিয়া ৪২৬১২৮৬০ টাকা
ইংলণ্ডের ব্যয় স্থির করেন। ইহাই তাহার
সহিত লেড সাহেবের নিচ্ছেদ হইবার
কারণ। সর চার্লস উড গত বৎসর মৃত
ক আকিসের জন্য ২০ লক্ষ টাকা লইয়া
ছিলেন। সে সমুদার টাকা ব্যয় হয় নাই,
যুক্তি অনুসারে লেড সাহেব তাহা এ বৎ
সরের ইংলণ্ডের ব্যয় হইতে বাদ দিতে
পারেন, কারণ আকিসের জন্য এ বৎসর
আবার টাকা দিতে হইতেছে। সর চার
লস উড বক্তৃতা পথ ধরিয়া যেকোন হিসাব
করিয়াছিলেন, তাহার সত্যের উল্লেখ
করা বিকল। এই মাত্র বলিলেই পর্যাপ্ত
হইবে, তিনি বাদ ২০ দিয়া সমুদারে
৪২৬১২৮৬০ অনুমান দেখাইয়াছেন। লেড
সাহেব শিলা কাষে যে ১৪৬৪৫৩০ টাকা
অনুমান করেন, সর চার্লস উড তাহা রহি

ত করিব'র আজ্ঞা দিয়াছেন। এ আজ্ঞাটি
সর্বত্র প্রচলিত হইয়া আসিতেছে।

সর চার্লস উড কহে, যে নতুনভাবে
সংস্কৃত প্রকৃতি প্রকাশন করিয়া ফাঙ্ক হট
বাঞ্ছন একপ নহে, তাহার লেড সাহেব
যকে অসাধু গণ্য করিয়া হইয়াছে। প্র
মে ১৮৫৯৬০ আকের আয় ব্যয়ের এক
আনুমানিক হিসাব ও শেষে তাহার প্রকৃত
হিসাব হয়। লেড সাহেব পূর্বে ৩ হিসাব
অবলম্বন করিয়া আয় ব্যয় গণনা করিতে
ফেট সেক্রেটারি বলেন “যখন এক ব্যক্তি
র নিকটে প্রকৃত হিসাব রহিয়াছে, তখন
তাঁহার আনুমানিক হিসাবের উপন নির্ভর
করা অতিশয় অন্যায়। অতএব লেড সাহে
ব যে কোন কারণ প্রদর্শন করুন না কেন
তাহা আদরযোগ্য নহে। আমবা এক্ষণে
নিগূঢ় কথা বুঝিতে পারিলাম, তার সময়ে
যত ব্যয় সংক্ষেপ হউক না কেন, এক্ষণে
আমরা যত কর তার বহন করি না কেন,
আমাদিগের বিদ্যা শিক্ষা হউক, আর না
হউক তাহাতে সরচার্লস উড ৭ ইংলণ্ডী
র মজি সম্ভাব্যের কতি নাই, গ্লাডস্টোন
সাহেব মহাসভা দ্বারা আপনায় বজেট
প্রাচ্য করাইতে উপরিলেই কৃতার্থ হইলেন
আমরা হুখা হুখা ইংলণ্ড ১৪০০০
সৈন্যের বেতন দিতেছি। লেড সাহেব
এই অপব্যয় নিবারণ করিতে গিয়া
অপমানিত হইলেন। সর চার্লস উড
ইংলণ্ডের ব্যয়ের বিষয়ে যে হিসাব
প্রদান করিয়াছিলেন লেড সাহেব তাহা
বোঝে প্রমাণ করিয়া কাষ্য করেন নাই
বলিয়াই সর চার্লস উডের যত আক্ষেপ।
নাহা হউক, লেড সাহেব আত্মপক্ষ রক্ষা
করিয়াছেন, ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট কিয়প
মীমাংসা করেন আমরা সেই প্রতীক্ষা
করিয়া বহিলাম।

লেড সাহেব ইংলণ্ডের টাকা এ দে
শে তাহাইবার কতির বিষয়ে বলেন, রেল

বস্ত্র হয়, তদনুসারে ইংলণ্ড হইতে প্রেরিত
টাকায় দুই শিলিঙ ধরিয়া তা লইয়া এক
শিলিঙ মশ পেন্স ধরিয়া লইয়া
হয়, সেই নিমিত্ত তিনি তাহা গণনা ক
নাই। দ্বিতীয়, সর চার্লস উড বলে
চীন দেশের যুদ্ধকালে ভারতবর্ষীয় ধন
গার হইতে যে টাকা দেওয়া হয়; তাহা
সেই বৎসরের রায় বলিয়া গণিত হইয়া
ছিল, তাহা পরিশোধ করিয়া ইংলণ্ডীয়
গবর্ণমেন্ট যে টাকা দিয়াছেন, তাহা আ
বার আয় বলিয়া গণনা করা হইয়াছে,
ইহা অন্যায়। লেড সাহেব ইহার যে উক্ত
দান করিয়াছেন, তাহাত স্পষ্ট বোধ
গম্য হইতেছে না, প্রথমোক্ত বিষয়টির উক্ত
রও প্রতিবন্ধ হইতেছেন, যথার্থ বটে, কিন্তু
লেড সাহেবকে অমাননা করা অনুচিত
হইয়াছে। মানুষের অম হওয়া অনৈতিক
নহে। তিনি পদস্থ থাকিলে ভারতবর্ষের
রাজস্ব কাষ্যের অনেক সুবিধা হইত সন্দে
হন নাই।

মহান প. বর্জ।

প্রধান লোকেরা যত্নবান হইলে এ
দেশের গর্ভ ও আচারব্যবহারাদি কো
ষ সংশোধন হইতে কত দিন লাগে।
নিম্নে যে একখানি প্রেরিত পত্র প্রকটিত
হইল, পাঠকগণ। অতিমিবেশ সহকারে
পঠকরুন, এ নিতে পারিবেন, কত প
কি হইতে পারে। বলাবৎ, সত্যিও
একপ অবস্থা আছে যদি কেহ
এক পত্র ও আচার ব্যবহারাদি পরি
ত করা যায় তাহার অনুমাত্র অতিক্রম
করেন, তবে প্রণয়নট উপস্থিত হয়,
কি হইতে পারে।

একখণ্ডের জয়।

মহাপ্র. : সোমবারে প্রকাশিত ত্রিগুণ
বাহুগুণের চিত্রাণাখ্যায় বর্ণনামতে প্রে-

রিত পথে আপনকার পাঠকবর্গ অসংখ্য
আছেন যে আমাদিগের ভাষাত্তা বিদ্যালয়ের
রক্তাধার প্রধান শিক্ষক শ্রীযুক্ত পণ্ডিত
শ্রীযুক্ত চট্টোপাধ্যায় মহাশয়ের প্রাথমিক
যথেষ্ট তত্ত্ব থাকার জাতিভেদমূলক ব-
জ্ঞোপবীত পরিভ্যাগ করিয়াছেন এবং, ত-
জ্ঞান্য এই প্রামাণ্যী প্রাথমিকগণ তাঁহাকে স-
মাজ্যুত করিতে চেষ্টা পাইয়াছিলেন। যদিও
পূর্বনির্দেশ হইতে পারেন নাই বটে তথাপি
তাঁহার সহিত এক হকার ধুমপান করিতে
কেহ কেহ অসম্মত প্রকাশ করিতেন এবং
তাঁহার বাণীর কোন কর্ম উপলক্ষে ভোজন
মত প্রাণ নিমজ্জিত হইলে গোলযোগ হইবেক
ইহাও কহিতেন। সম্রাতি তাঁহার পুত্রের অ-
প্রশমন হইয়া গিয়াছে। সমুদায় প্রাথমিক
গণ প্রভৃতি তরলোক ভোজনাদিক ররা নি-
মজ্জিত করিয়াছিলেন। এখানে মণ্ডলি
শ্রীর প্রাচীন সম্প্রদায়ই আর সমুদায়, পরা
নিষ্ট চিত্তাকাত্তি ব্যক্তিরও অভাব নাই। মনে
মনে যাঁহার যাহা থাকুক, ঠিক কেহও কিছু
প্রকাশ করিলেন না। হে প্রাথমিকগণ! এই
শুভসংবাদ কি আশ্চর্যজনক মনে? ইহাতে কি
আমাদের সাহস বৃদ্ধি করিতেছে না? যাঁহার
ধর্ম হইতে শাস্ত্রের শাসনকে এবং শাস্ত্র হই-
তে বস্তুম ন ব্যবহারকে অধিকতর দানা করিয়া
থাকে আমরা কি তাহাদিগকে ভয় করিয়া
কতব্যান্তরানে বিরত থাকিব?

একান্ত বশব্দ শ্রীযুক্ত চট্টোপাধ্যায় বোম
ভাষাত্তা বিদ্যালয়ের দ্বিতীয় শিক্ষক।

প্রাথমিক যজ্ঞোপবীত পরিভ্যাগ করি-
লে এবং ত্রিসঙ্কল্প প্রাথমিককর্তব্য সম্ভাবন
নাদি না করিলে যাঁহার প্রাথমিক থাকে
না। যজ্ঞোপবীত ও যথাসম্ভব সঙ্কল্প
নাদি প্রাথমিকের জীবন স্বরূপ। তৎপরি-
তাগীর সহিত যজ্ঞোপবীতধারীরা সমা-
দিক নিয়মানুগারে একত্র সম্মিলিত করি-
য়াছেন, ইহাও জুল্য হিন্দুসমাজবিপ্লবকারী
পরিবর্তন আর কি আছে? ইহার জুল্য আ-
চারব্যবহারাদি পরিবর্তন দ্বিগুণে এদেশী
য়দিগের অনুমোদন জিন্নার উৎকর্ষ উদা-
হরণ আর কি হইতে পারে?

শ্রীযুক্ত বাবু হারাণচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের
পুত্র পদ হারা। আমাদিগের যেকোন সংস্কার
র অনিরাহিল, তদ্বারা স্পষ্ট বোধ হই-
তেছে, ভাষাত্তাবাসী জমীদার শ্রীযুক্ত
বাবু যজ্ঞেশ্বর সিংহের যত্নেই এই বাপা
রটী সম্পন্ন হইয়াছে। যদি এক জন প্রধা-
ন লোকের যত্নে এত দূর হইয়া উঠিল,
যাবতীর প্রধান ব্যক্তি এইরূপ যত্নবান
হইলে কোন্‌বিষয় সম্পন্ন না হয়? প্রধা-
ন ব্যক্তিদ্বিগের অবিকাংশের একপ প্র-
বৃত্তি নাই, সৎকিয়ানাহস নাই, সুশিক্ষা
ও অধাবসায় নাই, তাহাতেই আমরা
স্বদেশের দৈনন্দিন শ্রীযুক্তি দর্শনে বঞ্চিত
ও হতাশ হইতেছি। আমরা স্বদেশীর
প্রধান ব্যক্তিদ্বিগের অবিকাংশের চলিত
ধর্মে অকপট তত্ত্ব ও প্রজ্ঞা দেখিতেছি
না, চলিত ধর্মের নিষিদ্ধ কার্যের অনু-
ষ্ঠানে তাঁহাদিগকে পরাশ্রয় দেখিতেছি
না, অথচ তাঁহাদিগকে বিশুদ্ধ ধর্ম ও আ-
চার ব্যবহারাদির অবলম্বন অথবা ততোধিক
সংশোধনে যত্নবান দেখিতে পাই না, ইহা
আমাদিগের আত্মাত্তিক বিষয় ও ক্ষোভের
বিষয়।



মৃত বাবু রমাপ্রসাদ রায়।

বঙ্গদেশ আর একটি শোকবস্তুর আ-
ঘাত প্রাপ্ত হইলেন। আমরা গতবারে বাবু
রমাপ্রসাদ রায়ের শোকবহু মৃত্যু সমাধি
সংক্ষেপে পট্টকগণের গোচর করিয়াছি।
তিনি যেকোন শোক ছিলেন, তাহাতে সং-
ক্ষেপে তাঁহার মৃত্যু সম্বন্ধে লিখিয়া আমা-
দিগের চিত্তের তৃপ্তি ও দুঃখ নিহতি হই-
তেছে না। ১৮ই আবেদন শনিবার হাঁ-
হার হুত্ব সমাচার প্রবণ করিয়া কলিবা-
তায় তিনি স্তম্ভিত না হইয়াছেন একপ
লোক অতিবিরল। এক সপ্তাহ পূর্ব অবধি
আমরা তাঁহার জীবন বিষয়ে হতাশ হইয়াছি-
লাম, তথাপি যখন তাঁহার হুত্ব কথা আশা-
দিগের ক্ষতিগোচর হইল, অস্তঃকরণে

বিচলিত করিয়া তুলিল। আমরা কি-
দিন পূর্বে যে ব্যক্তিকে অবিকাংশের হুত্ব
উচ্চতম বিচারালয়ের বিচারক্যের আশা
নে আসীন দেখিবার বাসনা করিয়াছিলাম
যাঁহা হইতে বঙ্গদেশের রাজকীর বিজয়ের
সবিশেষ মৌরব লাভের আশা করিয়াছি-
লাম, নির্ভর হুত্ব তাঁহাকে লইয়া গেল।
আমরা মনোরথ পূর্ণ করিতে পারিলাম না।

বাবু রমাপ্রসাদ রায় রাজা রামমোহন
রায়ের কনিষ্ঠ পুত্র ছিলেন। তিনি ১২২৪
অব্দের ১২ই আবেদন জন্ম গ্রহণ করেন। ৪৫
বৎসর মাত্র তাঁহার বয়স্কর হইয়াছেন।
শিশুকালে তিনি পেরেটাল আকাডেমিতে
ও কয়েক বৎসর হিন্দুকালেজে অধ্যয়ন
করেন। রাজা রামমোহন রায় ইংলণ্ডে
গমন কালে রমাপ্রসাদকে তাঁহার (রমাপ্র-
সাদের) জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা বাবু রাধিকা
প্রসাদ রায় ও ব্যরকামাথ ঠাকুরের হস্তে
সমর্পণ করিয়া যান। ব্যরকামাথ ঠাকুরের
সবিশেষ সংসর্গ হওয়াতে অতি অল্পবয়সে
তাঁহার মনুষ্য পরীক্ষা করিবার ও সহজে
হ্রসবগাহ বিবরণ সকল বুঝিয়া লইবার সবি-
শেষ ক্ষমতা অধিরাহিল।

১৮৩৮ অব্দে তিনি তেপুজী কলেজের
পদ প্রাপ্ত হন, ১৮৪৫ অব্দ পর্যন্ত এই কর্ম
করিয়াছিলেন। এই সময়ে বাবু অক্ষয়কুমার
ঠাকুর সবার আদালতে ওকালতী করিয়া
যথেষ্ট খ্যাতি ও অর্থ উপার্জন করেন।
রমাপ্রসাদ বাবু তৎকর্তনে সবার ওকালতী
করিতে গেলেন। অক্ষয়কুমার বাবুর নিকটে
তাঁহার অনেক সাহায্য লাভ হইয়াছিল।
পরিশেষে তিনি স্বীয় পদ ত্যাগ করিলে
রমাপ্রসাদ গবর্ণমেন্টের প্রধান উত্তীর্ণ হই-
লেন। সেই অবধি তাঁহার গৌরব হ্রাস
হইতে লাগিল। লাডকানিও ও গ্রাউট
সাহেব তাঁহাকে সবিশেষ অনুগ্রহ ও স্নেহ
করিতেন। গত বৎসর গ্রাউট সাহেব তাঁহা-
কে নিপাল রিমাট্রান্সের পদে প্রতিষ্ঠিত
করেন। তিনি দক্ষতা সহকারে ৫৩৫

কিছু সম্পাদক করিয়াছিলেন। তিনি তাঁহার বুদ্ধিমত্তা ও সৌন্দর্য্যের দ্বারা সকলকেই আকর্ষণ করিয়াছিলেন।

তঁহার বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার সভাপতি পদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিলেন। এখানেও তিনি আপনাদের বুদ্ধিমত্তা ও সৌন্দর্য্যের দ্বারা পরিচয় দেন। তিনি তাঁহার সভার সভ্য রাজা দিনকর রাওকে সকল বিষয়ে পারদর্শিতা প্রকাশ করিতে পারেন নাই বটে কিন্তু তিনি তাঁহার রাজসভার সভ্য বড় নিকট ছিলেন না।

তিনি যত্নবশত আক্রান্ত হইয়া তিন মাস হাসপাতাল কর্তৃপক্ষ ছিলেন। প্রথমে আক্রান্ত হইয়া সিঁহুলিয়ার বাটীতে ছিলেন, পরে চিকিৎসার সুবিধার নিমিত্ত চৌর দিকে গিয়া অবস্থিতি করেন। তাঁহার চিকিৎসার যে চূড়ান্ত হইয়াছিল একথা বলা বাহুল্য, কিন্তু কাল এমনি ছুর্ত যে কি খনবল, কি লোক বল, কি চিকিৎসক বল, কিছুই তাঁহাকে নিশ্চয় করিতে সমর্থ হইল না।

আমরা রমাশ্রম বাবুর জন্মদি মরণান্ত বৃত্তান্ত বোঝা সংক্ষেপে বর্ণন করিলাম, তেমনি সংক্ষেপে তাঁহার স্বভাব ও চরিত্রাদির বিষয়ও কিছু বলা আবশ্যক। তিনি অতিশয় বুদ্ধিমান ছিলেন। তিনি কেবল এক বুদ্ধিবলেই এত দূর সম্মান, গৌরব, ও যথেষ্ট অর্থ (কেহ বলে ২০, কেহ বলে ৬০ লক্ষ টাকা) অর্জন করিয়াছিলেন। তাঁহার স্বভাব বিনোদ ও নম্র ছিল, এই গুণে কি ইন্দোনেশিয়া কি এশীয় অনেক প্রধান লোকের সঙ্গে তাঁহার সর্বশেষ আত্মীয়তা ও বন্ধুত্ব সম্পন্ন, কিন্তু তাঁহার স্বভাবগত একটা অনুকম্পা দোষ স্পষ্ট লক্ষিত হইত। এই অনুকম্পা দোষ নিবন্ধনই তাঁহার প্রকৃত নম্রতা, তেজস্বিতা প্রভৃতি কয়েকটা সদগুণের সমস্তাব ছিল। এই দোষ থাকাতাই তিনি

কোন কোন বিষয়ে সেরা সাধন করিয়া থাকিতে পারেন নাই। তিনি যে লোকের সম্মান, তাঁহার নিকটে বঙ্গদেশ কি অধিকতর প্রত্যাশার লাভের প্রত্যাশা করেন নাই? তাঁহার অসম্মান ও সংক্রিয়াসাহস ছিল না, একথা বলিবার যোগ্য হয় অসম্মান হইয়া। তাঁহার পিতা হিন্দু সমাজে খ্যাতি লাভ বাসনা পরিত্যাগ ও অন্য ক্ষতি স্বীকার করিয়াও স্বদেশের ধর্ম ও আচার ব্যবহারাদিগত দোষ সংশোধন চেষ্টা করিয়া ইহাকে উৎকৃষ্ট অবস্থায় লইবার চেষ্টা পাইয়াছিলেন; তিনি অসার, অপদার্থ ও অসত্যের নিন্দা ও কটু বাক্যে কণপাত না করিয়া অকুতোভয়ে যে সংক্রিয়ানুষ্ঠানের পথ প্রদর্শন করিয়া বান, রমাশ্রম তাঁহার পুত্র হইয়া কেবল এক সংক্রিয়াসহস বিরহে সেই পথের পথিক হইতে পারিলেন না। প্রকৃত তিনি সেই প্রাচীন পদ্ধতি তত্ত্ব পথের পথিক হইয়া বিশেষতঃ ব্যক্তিদিগের স্বার্থ পাত্র হইয়াছিলেন।

তাঁহার চরিত্র বিশুদ্ধ ছিল বলিয়া আমাদের সংস্কার নাই, সুতরাং বিশুদ্ধ চরিত্র লোক বলিয়া তিনি আমাদের তত্ত্বিজ্ঞানও ছিলেন না। তিনি যেকোন পদ্ধতি ছিলেন, তাঁহার যেকোন বুদ্ধিবৃত্তি, ক্ষমতা ও অর্থ সম্বন্ধি ছিল, তাহার সহিত যদি চরিত্রের বিশুদ্ধতা, স্বদেশানুরাগিতা ও স্বদেশবিরোধিতা থাকিত, তিনি যে কেবল আমাদের অবিমিশ্র শোকের পাত্র হইতেন একটা নহে, আমরা প্রধান পুরুষ গণনা কালে তাঁহাকে দ্বিতীয় পদ দানে উৎসাহী হইতাম না।

বড় লোকের চরিত্রাদির বিষয়ে লেখনী প্রয়োগ কর্তব্য হইয়া থাকে। স্বদেশীয় সম্পাদক করিয়া কৃতার্থত লাভ করা বড় সহজ নয়। পক্ষপাতাদি নানাবিধ দুর্নিবার কারণবশতঃ চিত্তবিনোদ জীবনের সমধিক সম্ভাবনা। আমরা ব'রু রমাশ্রম রাবের চরিত্রাদি

বিষয়ে এসব করিয়া অপকণাভিহুগে স্বদেশীয় সাধনে সমর্থ হইলাম কি না, এই চিন্তা করিতেছিলাম, (গতবারেও এই কারণে আমরা তাঁহার বিষয়ে কোন প্রস্তাব লিখিতে সাহসী হই নাই) এমন সময় ইণ্ডিয়ান রিকর্ডের আমাদিগের হস্ত গত হইল। আমরা কৌতুহলাক্রান্ত হইয়া আশ্রয় পুরস্কার রমাশ্রম রাবের হস্ত বিষয়ক প্রস্তাবটা অগ্রে পাঠ করিলাম। কিছু পাঠ করিয়া আমাদিগের হস্ত বিষয় উত্তর উপস্থিত হইল। হস্তের কারণ এই, রমাশ্রমের বিষয়ে আমরা গুরুত্ব অতি প্রায় প্রকাশ করিছি, ইণ্ডিয়ান রিকর্ড রও সেইরূপ করিয়াছেন। এতদ্বারা এক প্রকার প্রমাণ হইল যে রমাশ্রমের বিষয়ে আমাদিগের যে সংস্কার আছে, তাহা অসম্মানক নহে। বিবাদের কারণ এই, ইণ্ডিয়ান রিকর্ডের চিত্রের অনুদারতা বশতঃ হিন্দুপেট্রিয়ারেটের ভূতপূর্ব সম্পাদক হুত হরিশ্চন্দ্র মুখোপাধ্যায়ের স্বদেশ হইতে বিতাগনের অপলাপ করিয়াছেন। উক্ত পত্র ভিন্ন আর কেহ একথা কহেন না। আমরা যত দূর জানি, তাহাতে স্বতন্ত্রকণ্ঠে কহিতে পারি, এবিষয় তাঁহারে বাক্য কোন ক্রমেই প্রমাণ যোগ্য নহে।

একণে কি কি আমাদের নিত্য আবশ্যক।

তারতম্যনি একণে এক অভূতপূর্ব জীবনধারণ করিয়াছেন : একণে দিন দিন অনেক বিধ পরিবর্তন ঘনগোচর হইতেছে, তাঁহার সম্মানগণ একণে নানাবিধ শুভকল ভোগ করিতেছেন, কিন্তু আমাদের আজিও যাবতীয় আত্মনির্ভর আবশ্যক বস্তু লাভ হারা চরিত্রার্থতা লাভ হয় নাই। আমরা দূর হইতে সৌভাগ্যকীর্ণ দর্শন করিতেছি : সম্মুখে অনেকগুলি দুর্ভাগ্যের প্রতি বন্ধক রহিয়াছে। সে সকল অতিক্রম করিয়া তথায় গমন আপাততঃ অসাধ্য বো

হইতেছে বটে, কিন্তু যদি অধ্যয়ন করা হইয়া শুধায় গমন হইত। করা যায়, চেষ্টা সকল চাইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা আছে। হিরতর প্রায়, উৎসাহ ও অধ্যবসায়ের অঙ্গে কি কিছু প্রতিবন্ধকরূপে দণ্ডা হমান হইতে পারে? কাপুরুষেরাই আপনাদের আশঙ্কা করিয়া পরাধীন হয়।

অন্য কি চেষ্টা পাইয়া আমাদিগের প্রয়োজন সাধন করিয়া দিবে? আমরা কি অন্যর মুখ প্রতীক্ষা করিয়া রহিব? কখনই না। সে মঙ্গল বিস্তৃত ও হিরতর নহে। আপনাদিগের মঙ্গল-আপনারাই চেষ্টা করিয়া লইতে হইবে। আমরা যে জাতির অধিকারে বাস করিতেছি, তাঁহাদিগের দ্বারা অনেক সাহায্য লাভ হইতে পারে সন্দেহ নাই। তাঁহারা আমাদিগকে পথ প্রদর্শন করিতে পারেন; কোন কোন বিষয়ে তাঁহারা কাহা দ্বারাও আমাদিগের দৃষ্টান্ত দল হইয়াছে, কিন্তু তাঁহারা আমাদিগের যাবতীয় কল্যাণ সাধন করিতে পারেন না। ভারতবর্ষ একটি ক্ষুদ্রতর প্রদেশ নহে। সমুদায় দেশের উন্নতি সাধন বিদেশীয়দিগের দ্বারা সম্পাদিত হওয়া কোন ক্রমেই সম্ভাবিত নয়।

আপনার প্রয়োজন সাধন আপনারই কর্তব্য বলিয়া যখন হির হইল, তখন সেই প্রয়োজন সাধন বিষয়ে সাক্ষাৎ সমক্ষে কোন গুলি নিত্য আবশ্যক। তাহার বিবেচনা বিধেয় হইতেছে। কৃষি, শিল্প, বাণিজ্য পারী ও মানস উত্তরবিধ বল; এষ্ট পাঁচটি বিষয়ের প্রকৃতি সাধন সর্বত্র আবশ্যক।

প্রথম, কৃষি। এক্ষণে গবর্ণমেন্ট পতিত ভূমি বিক্রয় করিতেছেন। অনেক ইউরোপীয় সেই সকল ভূমি করিতে উদ্যত হইয়াছেন। ইউরোপীয়েরা এ দেশে কৃষিকাৰ্য্য করিয়া এ দেশীয় কৃষকদিগকে উৎকৃষ্ট কৃষিকাৰ্য্য প্রণালীর শিক্ষা দেন ইহা মঙ্গলের বিষয় সন্দেহ নাই। কিন্তু যদি

অনুধাবন করিয়া দেখা যায়, এ দেশের ভূমি যত এ দেশীয়দিগের অধীনে থাকি যা উৎকৃষ্ট প্রণালীতে তাহার কৃষিকাৰ্য্য সম্পাদিত হইবে, ততই অধিকতর মঙ্গলের বিষয়। ভারতবর্ষে কৃষকের অভাব নাই; কেবল কৃষিকাৰ্য্যের উৎকৃষ্ট প্রণালীরই অভাব; যদি এই দেশ উর্বর না হইত, তাহা হইলে বর্তমান কৃষকেরা অধিক শস্যও উৎপাদন করিতে সমর্থ হইত না। আমরা যদি কৃষিকাৰ্য্যের উৎকৃষ্ট প্রণালী শিক্ষা করিয়া দেশের অধিকাংশ ভূমি আপনারা কর্ষণ করিতে পারি, তাহা হইলে আমাদিগের যথার্থ সৌভাগ্য লাভ হয়। নতুবা ইউরোপীয়দিগের চা, নীল অথবা তুলা কেন্দ্রে কেবল মজুরী করিলে কৃষকদিগের এখনও যে দশা, তখনও সেই দশা থাকিবে। অপর, আমরা যদি আপনারা তুলা প্রভৃতির উৎপাদন বিষয়ে সমর্থ হই, আমাদিগের উপার ইংলণ্ডের নির্ভর করিতে হইবে সন্দেহ নাই। এক্ষণে হইলে কি আমাদিগের যুক্তিযুক্ত প্রার্থনা সকল এখনকার ন্যায় তখন অগ্রাহ্য হইবে; তখন কি আর অসার ও অপদার্থ বোধ করিয়া ইউরোপীয়েরা আমাদিগের প্রতি উপেক্ষা করিতে পারিবেন? এক্ষণে বহু দেশীয়দিগের নিকটে আমাদিগের জিজ্ঞাস্য এই, আমরা যদি আপনারাই ভূমির অধিকারী ও কৃষক এ উভয়ের কাৰ্য্য নির্বাহ করি, ইংলণ্ড আমাদিগের অধীন হইবেন; আর যদি নীলকণ প্রভৃতির মজুরী কার্য্যে সহায় করি, আমাদিগকে প্রত্যেক বার্ষিক ইউরোপীয়ের দাস হইতে হইবে, ভারতবর্ষীয়েরা এই দুই উপায়ের কোনটি অবলম্বন করিতে চাহেন? ১০৩

দ্বিতীয়, শিল্প। আমাদিগের শিল্প নৈপুণ্য বিলুপ্ত প্রায় হইয়াছে। ইংরাজ গবর্ণমেন্টই এই সোপের কারণ। ১৮১০ অব্দের সময়ে পূর্বে ঢাকা, বিক্রমপুর, বাগেশ্বর প্রভৃতি প্রদেশ সকল কসিক বস্ত্র ছিল। আমা

দিগের দেশের বস্ত্র ইউরোপীয়েরা আমাদিগের দেশে নীত হইত। কিন্তু ইংরাজেরা তাঁহা প্রভৃতির প্রাচুর্য ও মূল্য বর্ধন ইউরোপীয় ভাষায় বর্গের সুবিধা হইত। আইন হওয়াতে আমাদিগের দেশের বস্ত্রের মূল্য এক কালে সোপ পাইয়াছে। ইংরাজেরা রপ্তানী করা করে থাকুক, আমরা বস্ত্রের জন্যও পণ্য প্রস্তুত করিতে পারিতাম। সর্বদাই আমাদিগের গবর্ণমেন্ট ও আমরা অনেক ইউরোপীয়ের তবর্ষের অর্থগণের উপায় উদ্ভাবন এই কথা উল্লেখ করিয়া থাকেন। এই কথাটির অর্থ কি? ভারতবর্ষে প্রচুর তুলা উৎপন্ন ও বস্ত্র প্রভৃতি প্রস্তুত করিয়া পৃথিবীর সমুদায় খণ্ডে প্রেরণ করা কি ইহার মুখ্য অর্থ নয়? গবর্ণমেন্ট জমে ও কি কখন একগু ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন যেমত একটর মার এখানে বাসীরা তাঁহা ও অন্য বিধ বল হয়? আমরা ইংলণ্ডের উপর বস্ত্রের জন্য নির্ভর না করি। ইংলণ্ড আমাদিগের উপরে নির্ভর করিবে, গবর্ণমেন্ট কি কখন একগু কথা মুখে আনিয়াছেন? যদি তাহা না হইত, তবে আমাদিগের যথার্থ প্রকৃতি কোথায়? যত দিন একেদীয়েয়া শিল্পকাণ্ডে নিপুণ হইয়া এক্ষণে মানা বিধ প্রব্যাদি উৎপন্ন ও প্রস্তুত করিতে পারি, তবে অর্থগণের দ্বার উন্মুক্ত হইয়াছে, এক্ষণে রপ্তানী বাস্তব শাস্ত্র সাধন সম্ভব হইতে পারে না।

তৃতীয়, বাণিজ্য। এক্ষণে ভারতবর্ষে ১০ কোটি টাকার বাণিজ্য হইতেছে। কিন্তু ইহার কত অংশ আমাদিগের প্রায় সম্পাদিত হইতেছে? ভারতবর্ষ হইতে কত দ্রব্য জাহাজ বিদেশে বাণিজ্য করি কেমন করিয়া থাকে? বোম্বাইয়ের কয়েক জন পারসী ব্যক্তিকে ভারতবর্ষে যথার্থ বণিক কোথায়? পারসীরাও পৃথিবী সঞ্চয় অংশে বাণিজ্য করিতে গমন করেন না। আমাদিগের ব্যবসায়ীরা ইউ

প্রাণীরাশিগের নিকটে জন্ম দ্বারা করিয়া
অদেহীরাশিগের অধিক - জন্ম দ্বারা করিয়া
করেন। তাহাতে তাঁহা হস্তান্তর হয় এই
মতে। বিশেষ হইতে তাঁহা আশ্রিতে না
পারিলে দেশের যথার্থ ধর্ম হুঁকি হয় না।

বাণিজ্যিকবিদগণী জিজ্ঞাসি চেষ্টা কি আ
শ্রিতদের সিংহ আশ্রয়ক নয়? কলীয়ার
প্রথম পিটার প্রজাবিশেষকে বাণিজ্য বিষয়ে
সবিশেষ উৎসাহ দান করিতেন; তিনি
কিছু ভাষাবিশেষকে বিশেষে বাণিজ্য কামা
শিক্ষার্থ প্রেরণ করা হইত। এখানে কি
সেবন করা হইতেছে আমরা কি চির
কাল এইরূপ অবস্থার থাকিব? আমরা
কি আপনাদিগের নামা দেশে বাণিজ্য করিয়া
জন্মের ধর্ম ও পৌরব হুঁকি করিব না?
যে দেশে বাণিজ্যের সবিশেষ উন্নতি হয়,
তৎদেশীরাশিগের অতুল বল ও অতুল সা
হস হয়। আলেকজান্ডরকে টায়ারের স
মুখে ৮ মাস কাল সেনাসিবেশ করিয়া
থাকিতে হইয়াছিল। ডেরাসকে জয় ক
রিতে তাঁহার বহু কষ্ট না হইয়াছিল, এই
বন্দর গ্রহণ করিতে তৎপেক্ষা বহুতর অ
ধিক কষ্ট হয়। বাণিজ্যের দ্বারাই মেসরুল
গের লোকেরা স্পেনীয় বিদ্যার কিনিগের
হস্ত হইতে মুক্ত হইয়াছিল; বাণিজ্যের
বলেই ইংরাজেরা মহাগীর নেপোলিয়নের
পতন সাধন করিয়াছেন। তারতবর্ষের
বিত্তবী পুত্রদেরই যেন এই কথা স্মরণ
থাকে।

চতুর্থ, বুদ্ধিবল। যেকোন এক প্রজাতি
জিজ্ঞাসিত ও ব্যাখ্যাসাদি ব্যতিরেকে শা
রীরিক বল ও সাহসাদিবুদ্ধি সত্তাবিত
নয়, সেইরূপ সবিশেষ চালনা ব্যতিরেকে
বুদ্ধিবল হুঁকি সত্তাবনা নাই। বুদ্ধিবল
হুঁকির একমাত্র উপায় বিদ্যার সবিশেষ
সহ। এক্ষণে বিদ্যার অপেক্ষাকৃত
বুদ্ধিবল অনুশীলন হইতেছে, এ দেশীয়
শিক্ষণের সৈন্যগণ বুদ্ধিবলহুঁকিও হুঁকিগে
হইতেছে।

যেহেতু লোকের হস্ত, তাহাও ক্রমশঃ
সংশোধিত হইতেছে। উত্তরোত্তর উৎসাহ
শোধনের সহধিক সত্তাবনাও আছে।

পঞ্চম, শারীরিক বল হুঁকি। এই বিষ
য়টিকে এ দেশীয়রাশিগের অত্যন্ত অসমতি
আছে। সর্ব প্রকারে এ অসমতি দূর করা
নিজন্ত আশ্রয়ক। এ অসমতিটি যাবৎ
হুঁকিত না হইবে, তাবৎ এ দেশীয়েরা
প্রকৃত মহত্ত্বলাভে সমর্থ হইবেন না। শা
রীরিক বলহুঁকি ব্যতিরেকে সাহসাদি বুদ্ধি
সত্তাবিত নয়। যে জাতির সাহস নাই,
তাঁহার সত্তা বিভ্রাণ মাত্র। এই শারীরিক
বল হুঁকির উপায় করা অতিশয় আশ্রয়ক।
গবর্ণমেন্ট ও এ দেশীয় লোক উভয়েই
তবিশেষে যত্নবান হইতে হইবে। সে উপা
য় এই, গবর্ণমেন্টের নিজের বিদ্যালয়
উক, আর সাহায্য কৃত বিদ্যালয় উক,
সর্ব স্থলেরই বালকদিগের বাধ্যতাম
কার নিয়ম করিয়া দিয়া উপযুক্ত শিক্ষক
নিয়োগ করিতে হইবে; বিদ্যালয়ের অন্য
অন্য কাষের ন্যায় তাহারও হস্তাবধান ও
উৎসাহাদি দান করিতে হইবে; বালক
দিগের কৃতবিদ্যা হইয়া বিদ্যালয় হইতে
বাহির হইবার সময়ে কিছু দিন তাহা দি
গকে অত্র শিক্ষা দেওয়া কর্তব্য। বালকে
রা যদি এইরূপে শারীরিক বল সম্পন্ন,
কৃতবিদ্যা ও শিক্ষিত হন, তাহা হইলে আর
একটি সুতম শ্রী ধারণ করিবে সন্দেহ নাই।
এই চেষ্টা কখন নিফল হইবে না, করে
কটা মহৎ কল লাভ হইবে সন্দেহ নাই।
আপদ উপস্থিত হইলে এদেশীয়েরা কেবল
যে আশ্রয়কার সমর্থ হইবেন একমুখ নহে,
গবর্ণমেন্টেরও সবিশেষ সহায়তা করিতে
পারিবেন। বিশেষ লাভ এই, তখন আর
ইহারা ভীত, অসার ও অপদার্থ বান্ধা
উপেক্ষিত হইবেন না।

আমরা কলকাতার হইতে নিম্ন লিখিত
পত্র খানি প্রাপ্ত হইয়াছি। বক্তৃতাটি অ

ত্যন্ত শীঘ্র হইয়াছে বলিয়া তাহার বিবরণ
এবং কয়েক জন স্বাক্ষরকারির নাম মাত্র
একটি হইল।

পরম সন্মানান্বিত, জি. এ. সেন
প্রকাশ সন্মানান্বিত, জি. এ. সেন

নিম্ন লিখিত হইয়াছে। বক্তৃতা, আপ
নার জুবনোত্তর পট্টকাদি দ্বারা লাভ পূর্বক
দান লাভ করে এই আমার একান্ত বাসনা।—

সম্রাতি এক দিন জিজ্ঞাস্ত বাবু বাবত
হিড়ী, জিজ্ঞাস্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত ও জিজ্ঞাস্ত
বাবু দীনবন্ধু নিম্ন এই কয় বাক্যের সমবেত
হইয়া মৃত মহাত্মা হরিশ্চন্দ্র মুখোপাধ্যায়ের
শ্রদ্ধার্থ কলিকাতা নগরীতে প্রায়শ্চিন্ত
লিঙ্গ সাহায্য করণের মন্ত্রণা করেন। দীনবন্ধু
বাবুই প্রধান সম্পাদকের তার গ্রহণ করিয়া
অকপট বর সহকারে অত্রত্য মহারাজ বাহা
দুরের আদেশানুসারে এক সাতার অনুষ্ঠান
করেন। ২৬এ জুলাই শনিবার বেলা ৪ টার
সময় পবলিক লাইব্রেরিতে এই সত্তা সংস্থা
পিত হয়। কলকাতার বহুতর তর ব্যক্তি স
মাগত হইয়া এই সত্তা মণ্ডপ প্রতিষ্ঠা করিয়া
ছিলেন। জিজ্ঞাস্ত বাবু তারিণীচরণ ঘোষ মহা
শয় সত্তাগতি গদে ব্রতী হন। অনন্তর দীন
বন্ধু বাবু যে বক্তৃতা দ্বারা সমাগত সত্তাগণকে
আশ্রয় করিয়াছিলেন তাহা নিয়ে একটি করা
গেল।

“হরিশ বাবু ঘোষণা দেন হইতেই ছিলেন,
হরিশ বাবু ঘোষণা পুরোণকারী ছিলেন, হরিশ
বাবু ঘোষণা জুলেজ ছিলেন, হরিশ বাবু অদে
শের উন্নতি জন্য যে পরিচেষ্টা করিয়াছেন, হরিশ
বাবু রাজপুত্রদিগের যে সহায়তা করিয়াছেন,
তাঁহাতে তাঁহার শ্রদ্ধার্থ কোন চিহ্ন স্থাপন
করা না করা সমান, কারণ তিনি চিরজীবন,
তিনি প্রাণত্যাগী, তিনি জুলিয়ার যোগ্য মন,
তাঁহাকে জুলেজ তোলা যায় না। হরিশ বাবুর
শ্রদ্ধার্থ কোন অট্টালিকা প্রকৃত হউক বা না
হউক তিনি আমাদের অন্তঃকরণ অট্টালিকার
সত্তা বিরাজ করিতেছেন, হরিশ বাবুর শ্রদ্ধার্থ
কোন মন্দির প্রতিষ্ঠিত হউক বা না হউক, তিনি
আমাদের হৃদয় মন্দিরের ভার্য্য দেবতা হইয়া
আছেন, হরিশ বাবুর প্রতিভূক্তি কোন রাজপুত্র
স্থাপিত হউক বা হউক, তিনি আমাদের শ্রদ্ধা
পথে বৌদ্ধগণের মণ্ডপস্থান আছেন। কিং

আমি তারতর্ক্যে লিপ্ত হইয়াছি। আমি! হারিসনজি কিছুমান গ্রন্থের কথা করিতেছি। তিনি কেবল দৈনিকের ক্রমে আমাদের উপকার হইবে, তিনি আমাদের উপকারের কাছে তাঁ-
তার জীবন অতিবাহিত করিতেছেন। তিনি বিলম্ব করিতেছেন, সেই জন্যই আমরা এক জন ইংরেজকে লিখিয়া এই ব্যক্তি আমাদের মঙ্গল
কথা বলিতেছে তবে আমাদের তৎক্ষণাত কোন
বিচার না করিয়া কোন প্রমাণ না লইয়া কীসি
কিছু, তা বলি যে হারিসনজি সিচপা হবেন, তা-
বলে কি হারিসনজি বখাও কথা লিখিতে সক্ষ-
ম হইবেন, তিনি জানিতেন তাঁহার জীবন দিয়া
দেশের যদি কিছুকিছু উপকার হয় সেই তাঁর
বখাও। লাভ ক্যানিং মহোদয়, এই সময়ে হি-
স্ট্রিপেট্রিয়ার্ট সংবাদ পত্রকে অতিশয় আদর ক-
রিতেন, তিনি রাগান্বিত হন নাই, তাঁহার মহৎ
অভিযাত্রণ চকল হয় নাই। তিনি তাঁহার মহাত্ম-
ত্ব অগ্রিম কাউন্সিলের সত্যগণের পানান
বেরূপ শুনিতেন সেইরূপ হিষ্ট্রিপেট্রিয়ার্ট সংবাদ
পত্রের পরামর্শও শুনিতেন, তিনি তাঁহার সত্য-
র সত্য গণের দ্বারা বেরূপ উপকৃত হইয়াছিলে-
ন, সেইরূপ হারিসনজির হিষ্ট্রিপেট্রিয়ার্ট পত্রদ্বারা
উপকৃত হইয়াছিলেন। লাভ ক্যানিং প্রতীক
কথিয়া থাকিতেন হারিসনজি আগামি বারে কি
লেখেন। এক দিবস হিষ্ট্রিপেট্রিয়ার্ট পৌছবার
সময় অতীত হইয়া গেল হিষ্ট্রিপেট্রিয়ার্ট
না আসাতে লাভ ক্যানিং ব্যস্ত হইয়া তাঁহার
প্রাইভেট সেক্রেটারিকে বলিলেন এখন পর্য্যন্ত
হিষ্ট্রিপেট্রিয়ার্ট পাউলান না ইহার কারণ কি?
প্রাইভেট সেক্রেটারি এত কথা তৎক্ষণাত
হিষ্ট্রিপেট্রিয়ার্ট দ্বারা লেখিলেন এবং অধি-
কৃত হিষ্ট্রিপেট্রিয়ার্ট ক্যানিং মহোদয়ের হস্ত
গত হইল। সেদিন রা লাভ ক্যানিং সাহেবের
কক্ষ এবং আসানের চত্বর জেনো আসব অ-
সিয়া অপমৃত্যু হইতে বঞ্চিত হইয়াছে। হারিস-
নজি আমাদের দেশের কোনও কল্যাণে
আমরা কি তাঁর স্মরণ করিতে পারি? তিনি
কিছু অর্থদান করিতে পারিব না। সত্য হই-
ক! অর্থদান করিতে পারি কি না তা বলি
রা জিজ্ঞাসা কর। আমরা অনায়াসেই হারিস-
নজির নাম দ্বারা আমাদের প্রাণ প্রত্যক্ষ করিব
অন্যকার সত্য কথা শুনিবার জন্য আমরা
কিছু লোক আমন্ত্রিত হইলেন এবং উৎসাহ
প্রকাশ করিলে সত্য আগমন করিয়াছেন তা

যে উদ্দেশ্যে সত্য হইয়াছে তাহা প্রমাণ হইবে
তাঁহার সন্দেহ কি।
দীনবন্ধু বাবুর এই কথা কারুণ্যবানচিত
বক্তৃত্ত্ববশে সত্য হইবার লোক প্রমাণ
আর্থ ও সমাজ লোচন হইয়া উঠিলেন। অ-
নন্তর যত শক্তি অঙ্গসারে যিনি বাহ্য প্রদান
করিয়াছিলেন তাঁহাদিগের নাম নিম্নে নির্দিষ্ট
হইল।

মহারাজ শ্রীশচন্দ্র রায় বাহাদুর	১০০
বাবু তাবিদী প্রসাদ সেন	১০০
পূর্ণ প্রসাদ রায়	৫০
বামগোপাল মুখোপাধ্যায়	৫০
উম চরণ মুখোপাধ্যায়	৫০
বামগোপাল মিত্র	৫০
উমেশচন্দ্র মিত্র	৫০
দীনবন্ধু মিত্র	৩০
এলমী ও মণ্ডোপারের প্রমাণ	২৮
যমুনাধর রায়	২৫
মহেশচন্দ্র পাল	২৫
অতরাজবণ চট্টোপাধ্যায়	২৫
দ্বারকানাথ দে	২৫
কার্তিকচন্দ্র বাগ	২৫
ব্রজমহার মল্লিক	২৫
লালমোহন গোস্ব	২৫
গে পীমাধর বসু	১০
প্রভৃতি	
মোট	১০৪১/১০
কসাইং কৃষ্ণনগরবাসিনঃ	

বিবিধ সংবাদ।

২৭এ আশ্বিন সোমবার।

বোম্বাইয়ের ছোট আদালতের এতদ্দে-
শীয় বিচারপতি তত্ত্বতা প্রদান করি বিচারাল-
য়ে বাইতেছেন। আমরা শুনিলাম রমা প্রদান
বাবুর মৃত্যু হওয়াতে বড় হরচন্দ্র ঘোষ এখা-
নকার প্রধানতম বিচারালয়ে বিচারপতি
হইবেন। এই সম্বন্ধটা সত্য হইবে আশান্বিত
প্রার্থনীয়।
লণ্ডন হইতে প্রাপ্ত প্রায় ৩০০০ লোক গমন
করিয়া থাকেন। টিকিটে বিস্তর টাকা লাভ
হইতেছে। প্রদর্শনগৃহে একটি উত্তম আছে,
তাহা হইতে সর্বদা স্তম্ভ বাগি বিনির্গত
হয়, অনেক স্তম্ভদর্শনই সন্নিবেশ কোতুলি-
কাত হইয়াছেন। সন্ধ্যাট বেপোনিয়ন স্তম্ভ-
দর্শন হইয়া আসিতেছেন।
মাক্লেইয়ের একপে ২,৫০,০০০ বস্তা বাত
তুল্য আছে। তাহা অতি শীঘ্রই দ্রব্য প্রাপ্ত

হইবে সন্দেহ নাই। এবারকার মজুরবিরোধ
অন্যভাবে থাকিতে হইবে, নচেৎ আন্দোল-
কার যুদ্ধ বন্ধ করিতে হইবে। ইংলণ্ড ও ফ্রান্স
মধ্যবর্তী হইয়া যুদ্ধ উপায় দ্বারা অগ্নিসংযোগ
যুদ্ধের মীমাংসা করিয়া না দেন কেন?

ইংলিসমান গ্রন্থ করিয়াছেন, হারিসনজি
দেয় রেসিডেন্ট কর্নেল ডেভিডসনের মৃত্যু
হইয়াছে। কর্নেল ডেভিডসন এক জন উপায়
সাহিববিগ্রহিক ছিলেন। তিনি ন্যায় পথে জ-
লালি দিয়া ঐক্যিকারিদলের মনোরঞ্জন
করেন নাই বলিয়া এই দেশের প্রিয়পাত্র হইতে
পারেন নাই।

সিঙ্গু নদের স্তম্ভে পক্ষী সেনার কয়েক
শতকে ক্ষয় করাইয়া লওয়া হইতেছে।
এক জন নায়ক আর কয়েক জন সিপাহী
তাহাদিগকে ৫ কুলি ৮ প্রভৃতি যন্ত্রাচরণ
দ্বারা বিজয় করিতে নায়ককে অধ্যাপনে
নিয়োজিত ও সিপাহীদিগকে বঞ্চিত তির-
করিয়া হইয়াছে। সিঙ্গু নদের তর মা থাকি-
লে এদেশেরেরা ক্রুত দিন অনেক কুল-
পরিভ্রাণ করিতেন সন্দেহ নাই। বিজয়কা-
রীদিগের গুরু দণ্ড বিধান দ্বারা উ-
দ্যম নিবারণ।

কিনিকের আলাহাবাদস্থ সংবাদদাতা
বলেন, অতিশয় বৃষ্টি হওয়াতে যমুনা সেতু
নির্মাণ কার্য বন্ধ রহিয়াছে। তাঁহার ভিত্তি
বাত্ত বিলান হইয়াছে। এই সেতু হইলে
একফালে হাবড়া হইতে আগরা পর্য্যন্ত বা-
শীর শকট চািবে।

উক্ত পত্রের বোয়ালিয়ার সংবাদদাতা
বলেন, তত্ত্বতা রাজা বোম্বাইরায়ণ বায়ের
সম্পত্তি কোর্ট অব ওয়ার্ডের অধীনস্থ হইল।
রাজার ছুঁতপূর্ব দেওয়ান জমীদারীর সরস্বা
করিবেন কথা হইতেছে। যেন ওয়ার্ডসন
পুনর্বার এই জমীদারিতে প্রবেশ করিতে না
পারেন!

বালু সতের নিকটবর্তী কদমগাছি গ্রামের
বহুনাথ বন্দোপাধ্যায় নামক এক যুবক খ্রীষ্ট
ধর্ম অবলম্বন করিয়াছেন। এই বালকটি বারা-
নসতের বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিতেন, কিছু
দিন হইল এই বিদ্যালয়ের এক জন প্রতিনিধি
শিক্ষক হন। তাঁহার অধিক পড়া কথা হয়

নাই কিন্তু ও খুঁজি উঠে পড়েই কিছু জানেন না। যদি সমস্ত সত্য হয়, একটি খুঁজি হস্তির পানি গ্রহণের ইচ্ছাই তাঁহার হৃদয় ধরে ত্যাগের কারণ। ইং সত্য উইল না হ-উক অনেক যুবক অনতিদূর অবস্থাতেই খুঁজি-হাস হইয়া থাকেন, এতখানি অসত্য নহে। খি-সনসিয়া এখিনে চুটি রাখিবেন, নচেৎ তাঁ-গদিগের ধর্মের ও নরতিগোত্রের অবমান-না হইবে।

লাহোর জগিবেল বলেন, দেয়াগা যি খাঁয় যথেষ্ট হইয়াছে সেখানে লিফন তথিবা হইয়াছে। কিন্তু জঙ্গলাবনে অনেক গৃহাদি নষ্ট করিয়াছে।

দিল্লী গেজেট বলেন গোলাম নবী খাঁ নামক এক জন বিদ্রোহীর বিচার হইয়া পাঁচ বৎসর কারাবাসের সাজেশ হইয়াছে। এই ব্যক্তি জয় গানের নখের উল্লীল ছিলেন।

অযোধ্যা গেজেটে কানপুরের সংবাদ পাঠ্য বলেন, তখান একটি ইউরোপীয় বালি-কার পাণ্ডিত্যপূর্ণ হইয়া অনেক "সঙ্গীত ধর্ম" ব্যক্তি অনেক চোঁটা পান বালিকাটি "মতি সুলতানী" কিন্তু সে কাহাংও মনোনি-কসে নাই। পনিমের এক দিবস দুডাকালে প্রকাশিত হইল, এক জন লীখাকার সুলতান নামক সৈনিক পুরুষ তাহা প্রণয়ন করিয়া হইয়াছে। বালিকার পিতা খাতা তাহাকে প্রকাশ্যে অসুচিত নীচগামি প্রেম পারিগ্রাগ করিতে অস্বরোধ করেন কিন্তু সে কিছুতেই সন্তুষ্ট না হইয়া পরিশেষে প্রিয়জনের প্রতি পলায়ন করিয়া তাহাকে বিবাহ করিয়াছে। এক্ষণে তাহাকে বৃত্ত করা হইয়াছে। বালি-কাটির বয়সক্রম ১৫ বৎসর মাত্র। ততএব সে বয়ঃপ্রাপ্ত হয় নাই। দণ্ডবিধির অগ্র-সারে সৈনিক পুরুষের সাতবৎসর কারা-বাস হইতে পারে। সে এক্ষণে রুদ্ধ আছে এবং তাহার প্রথম বিচার তত্ত্বতা কানকোন-মেই আইন মাজে টের নিকটে হইতেছে। প্রেম কুল শীল মানে না, তারিফিত আশা-চিহ্নিত নহি। আশাচিহ্নিত চিত্ত। এই এ বালি-কাহে এইসকল উল্লীল করিয়া তাহার অনা-নীচ পতির সহিত বিচ্ছেদ করাইয়া যদি অন্য পাত্রের হস্তগত করা হয় ধর্ম্মাহুসারে এ-পা-তী হইবে কি না?

পরিদর্শক বলেন, বর্তমানকারের ১৯৫ নং বাসিন্দে বেকতি নামে এক জন সার্জন কাস করিত। এই ব্যক্তির নিকটে এক নাসের ডাঙা পাওয়া হইলে সে তাহা না দেখিয়াতে ডাঙা কে বাগী ত্যাগ করিতে হয়। সে বৈবনিধাত নাগী হইয়া মিউনিসিপাল কমিশনরদিগের নিকটে জানায় যে এই নগরী অত্যন্ত জীর্ণ হইয়াছে। তরিত ডাঙা তর করা হয়। বাগীর অধিকারী নালীল করাতে প্রধানতম বিচারালয় মিউনিসিপাল কমিশনরদিগকে ১০ টাকা ক্ষতিগ্রস্ত ও উত্তর পক্ষে মোক-দা ১৫ ব্যয় দিবার আশ্রয় করিয়াছেন। তাহা-দিগের নিজস্ব টাকা দিবার অঙ্গেন হইয়া-ছে ত? তাহান। কলিকাতা বাসিন্দাদের টাকা লইয়া যেন লাভ করেন না।

ঢাকা প্রকাশ্য এক জন পত্র প্রেরক নি-ম্বক চৌকিব লোকদিগের অত্যাচারের বিষয় লিখিয়াছেন। এই কর্মচারির বিশেষতঃ পোষাকের অত্যাচার করে। কয়েক বৎসর পূর্বে তাহার বাবাসতের চতুঃপার্শ্বস্থিত গ্রামে কয়লায় অত্যাচার করিত কিন্তু ক্র-কর। কয়েকবার নালীল ও মধ্যে মধ্যে অ-চর বন্দোবস্ত করিয়া তাহাদিগকে লাভ ক-রিয়াছে। পূর্বে বালাশায় এপ্রকার করিলে হয় না?

উক্ত পত্র অগ্ন করিয়াছেন কুমিলার অধ্যাপক হুসেনজিয়া নীলকুঠিতে এক ব্যক্তিকে মাতামঙ্গল গুণে বন্ধ রাখা হয়। সে কোন কোশলে পলায়ন করিয়া না-লীল করাতে কুঠির গমস্তা ও কয়েকজন খা-লাশীর এ-পত টাকা করিয়া মর্মান। এই-রাজে। এপ্রকার গুরুতর মেয়ের এই দণ্ড। নীলের জেলস ৫ আইন ৭৫ টপা যায়?

উক্ত পত্র আসা প্রান, যাউতেছে, ঢাকার চোরের। কোরাযবন দাবি গৃহস্থিগকে অট-চ-চন করা চুরি করিতে আরম্ভ করিয়াছে। তবে বিজ্ঞান চোব বল।

হিন্দুগণের ষট শিকাসংক্রান্ত ডিপাটিমে-টেব প্রতি গবর্নমেন্টের অননুমানতার বিষয় প্রসঙ্গ করিয়া অ-কপ করিয়াছেন। তারত-বর্নীল সঙ্গ ও এদেশীয়দিগের শিকার কারো-তাৎপন্ন বনোণো নহেন। তাহার বনোণো-নী হইলে এ ডিপাটিমেটের অনেক মো-সংশোধন হইতে পারে।

২১ এ প্রাক-বাক্য... বণিক সম্মেলন টেলিগ্রাফ... বিজি-মিত ইউরোপীয় সমাচার প্রাণ হইয়াছেন। লখন ১৭ ই জুলাই। টংগতীর দুর্গ সন্ধ্যা-দুতর করিবার বিন কখন হাউসের প্রাণ-হইয়াছে।

রুমোরের বিকট ইয়া নিউএসকে ইটালি-রান্না বলিয়া খোকার করিয়াছেন।

২২ চারলস উড লেড লীটহেবের আ-বয়ের হিসাবের প্রতি দোষারোপ করাতে তিনি খীর পদ ত্যাগ করিয়াছেন।

নিউইয়র্ক ১৭ই জুলাই। প্রিচমণ্ডের নিকটে কয়েকটি ভলকন বৃষ্ণ হইয়াছে। ২৬ এ জন-অবধি সাতদিন পর্যন্ত বৃষ্ণ হয়। এই বৃষ্ণের-শেষে মাকিসনকে পরাজিত হইয়া ৮৫ কোশ-পশ্চাদগমন করিতে হইয়াছে। তাহার কতক-বৃষ্ণবা ২৫ টি কানান ও অনেক সৈন্য বিধক-হতে পতিত হইয়াছে।

গবর্নমেন্টের সেনারা জেহস নদের দিকটে কামানের জাহাজের দ্বারা আক্রমণ করিয়া পশ্চাদগমন করিয়াছে।

সভাপতি লিফলন আর তিন লক্ষ সৈন্য-চাঞ্চিলাছেন। চারলসটনের আক্রমণ ত্যাগ-করা হইয়াছে।

কিনিস অবন করিয়াছেন বিরোজপাহ-যথার্থই হুলতান আনের শিগিরে অবস্থিত-করিতেছেন। ইহার পূর্বে বিরোজপাহ সোপা-লে হত হইয়াছেন শুনা গিয়াছিল। দুই শত-বৎসর পূর্বে ইংলণ্ডের লোকদিগের এই-বিশ্বাস ছিল, তাইনের দিকালের মনটি জীবন-আছে। বিরোজ সাহে সেই এক প্রকার বিদ্যা-ল হইবেন!!!

উক্ত পত্রের এক জন পত্র প্রেরক বলেন, ভাবতবর্ষে যেখান ধারে দ্রব্য বিক্রয়ের রীতি-আছে, একপ আর কোন স্থানে নাই। কলি-কাতার বাবতীয় ইউরোপীয় ও ফিরিঙ্গি বাহ্য-আক্রমণ দেয়াইবার নিমিত্ত কর্ত্ত করিয়া বড়-রাশতী করেন। এই অনিষ্ট নি-রূপার্থ পত্র-প্রেরক ধারে দ্রব্য বিক্রয়ের প্রথা উঠাইয়া-দিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। আপনি সাংখ্য-না হইয়া ধারের দোষ দিলে কি হইবে?

উক্ত পত্র উক্ত পক্ষিপালে চিত্র-বন্দোপের প্রতিবাদ করিয়াছেন।

মীট-এর পে-বার্টর কাণ্ডেন শ্রেণি-ন-বিটা-
রে-সাবী-হইয়া-প-লারন-ক-রিয়া-কেন। সেনা-
নলে-এক-থ-ব-ব-ব-লোকের-আ-বি-ভা-
দেখা-হাই-ভে-হে।

রেশম উইকিংস্‌র বার্ষিকীসময় একটি বড় বিদ্রোহের কথা জিহ্বাগ্রসিত। একজন সাধারণ কৃষকের ছেলের মতো তাহাকে চিকিৎসার প্রয়োজন করিবার আশা কর। সে তার অগ্রাহ্য করিয়া কয়েক জন সহচরের সহায়ত র্তা তিন জন আকিসরকে ধৃত ও রক্ত করে। তখন হইতে কয়েক জন ইউরোপীয় সেনা আগিয়া আকিসরদিগকে মুক্ত ও বিদ্রোহীদিগকে রক্ত করিয়াছে। এই সংবাদ শুনি বখার্ব হর দেখা বাইতেছে, কর্মচারিদিগের পরামর্শের উপরে একটি শাসন শৃঙ্খলা আছে তাহা ক্রমে ভঙ্গ হইতেছে।

কয়েকজন বিদ্রোহী ছটানের নিকটে ধৃত হইয়াছে। তাহারা মণিপুরের রাজা চক্রবর্তীদিগকে পশ্চাত করিতে আগিয়া আগনারা ধৃত হইয়াছে। আশ্রয় বোধকরি তাহারা চট্রানের বিদ্রোহী মিলাই।

শুনা গেল পঞ্চমী দাসী (রাসমণির কন্যা) শাইব পাড়ার বিদ্যালয়ের অন্য প্রতিমাসে ১২ টাকা ভাণ্ডা দিবেন অঙ্গীকার করিয়াছেন। এতী কর্মসূচী পঞ্চমী প্রভৃতি কয়েক জন স্ত্রী লোক বিদ্যা বিষয়ে সমিতিতে উৎসাহ দিতেছেন।

২৩শ জুলাই রক্তপাতিকার।

কামিনী সুবিখ্যাত বিদ্রোহী ও দস্যু গণের সিংহ হত হইয়াছে। কাপ্তেন গ্যান্ড হঠাৎ তাহাকে আক্রমণ করিয়া কয়েক জন সহচর সহিত বধ করিয়াছেন।

হায়দরাবাদের নবাব খাঁর রাজ্য চারাইবার উপক্রম করিতেছেন। তাহার বেগম ও দাদা পৌরস্বত্বের অন্য সন্তান চারার অধিকল রোপ্য প্রতিজ্ঞা করা হইয়াছে।

শাস্ত্রের জঙ্গ দক্ষিণে ১২শ চারের আক্রমণ দিয়াছেন।

মরিসসে একশে ৩, ৪, ৫০০ লোক আছে। টহার মধ্যে ২,২৫,০০০ ভারতবর্ষীয়। তাহার ৫০,০০০ মাত্র জঙ্গ গ্রহণ করিয়াছে। ফলতঃ উপনি বেলিকের সংখ্যাও অধিক।

এতর পশ্চিমাঞ্চল পঞ্চাশে গত বৎসরে মণিপুরে ১,০১,৭৫,০০০ টাকা শুল্ক স্বরূপ আদায় হইয়াছে। পূর্বে বৎসর অপেক্ষা ১৮ লক্ষ টাকা অধিক দেখা যাইতেছে। বে

ইলওয়েসে কত হইবে তাহা আবাদিগের জাতিতে স্থিতি

কাপ্তেন আলিস বোখাইনগরে ধৃত হইয়াছেন। যথেষ্ট দ্বারে তিনি পলাতক হইয়াছিলেন।

ইংলণ্ডের গবর্ণমেন্টে কিয়ৎ উপাধীপ সমুদ্রের রাজস্ব মর্মেতে অসম্মত হইয়াছেন। কালের এই এক সুযোগ।

কাট্টে টি আইন ক্রমশঃ অল্পে অল্পে প্রচলিত হইতেছে : ভারতবর্ষীয় বাসস্থাপক সভা শীঘ্র মধ্য ভারতবর্ষীয় পবলিক সার্কার রেইলওয়ের মজুরদিগের নিষিদ্ধ এই প্রকার একটি আইন করিবেন, সর্বসাধারণ দাঁত কেন ইহা সূচের অগ্রাণু দিগে দেখা যাইবে।

বোন বাকিল বলেন "ঐচ্ছিকারী ৩ মল ইউরোপীয় দোলা দ্বারের প্রধান সম্বারী নবদেব ২ চুরাখ ছিল মলিকাতায় আশ্রিত বার পুনে ৪ লক্ষ জন বাকিলের আবেদন করিয়াছেন তাহার প্রথম বিচার বেন ফলোভরে না হয়। কেন তা জানা যশোবন্তে হইলে অনেক অসম্মতীয় প্রমাণ পড়া বাটবে।

গত শুক্রবার শ্রীধামপুরের নিকটে ডাঙ্গা ইতি কবিসদস্যের অধীনস্থ এক খানি বাঙ্গালী মোকার বইলর ভাগিয়া মরিয়োসকের মৃত্যু হইয়াছে।

এক জন প্রতি প্রাক আ ওয়লস আ গামি শান্তকালে ভারতবর্ষ দর্শন করিতে আসিবেন। দাস কতবা সন্দেহ নাই।

শ্রীধামপুরের টেসন বর্ষের বাঙাল (এক জন ইংরাজ) ৩০০ টাকা লক্ষ্য ৩২০ টক তৎকাল কবিয়া পলায়ন করিয়া ভারতীয় ধৃত হইয়াছে। ঐচ্ছিকারীদিগের এক সংবাদ পত্র বলেন "উক্ত ম দিবেন ৮০ টাকা মাত্র বেতন দেওয়াতে সে এই কাব্য করিয়াছে। গতএক বেইলওয়ে কোম্পানিরই কোন বলিতে হইবে। ভারতবর্ষী বসিগের বেলাই "অসম্মত" "আলকারিত" প্রভৃতিবাহির হইয়া পড়ে।

বঙ্গদেশীয় ব্যাকের অধ্যক্ষেরা প্রচলিত পনের সেক্রেটারি ডিক্লিন সাহেবকে ১৫০০ মিলি পুরস্কার দিয়াছেন। এই পুরস্কার যোগ্য পাঞ্চে প্রাপ্ত হইয়াছে।

মাজাজ এখিদিগের বাসন, তাহাদেরই রাজার সমুদায় অলকারাদি প্রদর্শন করা হইবে। কেবল কয়েকটি হীরক রাখা হইতেছে। কেন? সে শুনি ভাল বলিয়া না কি? লইতে হইলে সকল লওয়া কর্তব্য। মর্মেতে অতিশয় মীচামরতা প্রকাশ হয়।

ইউনিয়ন কমেট মৃত্যু হইয়াছে। এই মতা ইউরোপীয় ও এডমেন্ডীয়দিগের সৌখিন্য বঙ্গদেশের জন্য হয়। কিন্তু সে অতীর্ষ সিদ্ধ হইল না। আবাদিগের জাত্যভিমান ও ইউরোপীয়দিগের অহংকার না কবিলে পরামর্শের মিসন হইবে না।

বকুলাইট গ্রহণ করিয়াছেন পোসোয়ারে সেনাপতি সর সিদ্দিকি কটন খীর পাদ ত্যাগ কবিত্তেছেন।

কাবুল হইতে সংবাদ আসিয়াছে আসীর মোস্তাফিজ হেরাটের ৭৫ কোশ দূরে অবস্থিতি করিতেছেন।

যেও অব ইতিয়া বলেন "এক দাস বাধীন ইলে বাঙালীরা সমুদায় মৃত্যু দেখিয়া এক কালে ধ্বংস হইবেন।" আবাদিগের বর্তমান ভীতবৃত্তি অবৈক্যতা ও কুসংস্কারের বিপর বিবেচনা করিলে একথা অসম্মত বোধ হয় না।

গত কল্য একদিকে গৃহে নিয়মিত আভিকেন বিক্রীত হইয়াছে—

সিদ্ধক	মূল্য
বেহ রের ১০-৫	১৫,৭৮ ২৫
কাশীর ১১০৫	১৫,২৫,৩০০
বোহারের অধিকেন গৃহ	১৫৭০১/৮
৫ কাশীর অধিকেন	২৩৪০৬০

বক্রীত হইয়াছে। তাখাপি সর চারলস উভ অকুলানের ভর করেন।

ডাক্তার হরণ ব্রহ্ম নামক একজন ইউরোপীয় ২৫০ টাকার নোট চুরি করিয়া তাহাতে জাল কাঙ্কর করাতে তাহাকে গেলিগনে সমর্পণ করা হইয়াছে।

২৪শ জুলাই শুক্রবার।
নিয়ন্ত্রিত আত্মতা ঘটনাটী কোন আত্মীয় বন্ধুর নিকট গ্রহণ করিয়া অতিশয় বিস্ময় প্রাপ্ত হইলাম। চক্রিশপনগণার অসুপাতী বখার্ব নামক পত্নীতে এক সংগোপন দ্বা

পরিদর্শকে লিখিত হইয়াছে কিছুদিন পূ-
র্বে বৈকব খাটার এক ডাকাইতি হয়, টালিগ
গকের দালোয়া হানিক খাঁ। ডাকাইতিদিকে
ধরিয়া যাতি হইতে ভালান করিয় দেয়, ইতি
পূর্বে তাহার এলাকার আর যে তিনটি ডা-
কাইতি হয় তাহারও ডাকাইতি দিগকে ধরিয়া
ছেন। অমরা হানিক খাঁর নন্দরা এশংস
নিতে পাউ।

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্ণমেন্টের কাগজ
বিক্রীত হইতেছে।

১০ টাকার নিকা	২১-২১১
৮ টাকার কোম্পানির	২-১১ ২৩১৬
নিম্নের	১০১৬-১০৩১৬
১০ টাকার	১১২-১১২৭

पौष्पाक्षयः । मिश्रलब्धितु इति दोगी
मन्त्रः ।

১৮ ই জুলাই : মেডু সাহেব সর চাবল
 উদ্দেশ্যে কুমিলে আসি বঙ্গবন্ধু বসি বন না। সর চাব-
 ল উক্ত ১৮ ই জুলাই ১৯৭১। স'বঙ্গ। এ দিন স'ব-
 স'বঙ্গ। এ দিন স'ব-

কৃষ্ণ ও রুদ্র। ইউরোপ ও অস্ট্রেলিয়া
 হাউজ কওন্সিল। বিশ্বকর্ষ-শক্তি। বৈশ্বিক
 স্বাধীনতা এক মাত্র কবিতা। সেবা-উন্নয়ন
 ম.স. কৃষ্ণ কৃষ্ণ। ও অস্ট্রেলিয়া উদ্যোগ-শক্তি
 পদার্থ-শক্তি হউ।

মেক্সিকোতে এক জন ইউরোপীয় বাণিজ্যিক
দেবদাসীকে ক্রয়ক্রিমের জন্য একটা নতুন
শাসন-পালী উইদেছে।

লাকেগায়াবের লোক-বগেন দিন দিন কমে
 গচ্ছিত হইতেছে যেই হেতু অল্প কিছু দিন
 মতঃ কালী কালঃ ।

পানিগত এক বন্ধুত্ব। কবিগণ যখন শ্রী মন্ড্র
টের নিম্নে কবচেতে ইচ্ছাশক্তি সকল জ্বালে
দিবস সন্ধ্যা জড়িত হয় 'আগে হান হই' হতে
শব্দ ২৫ প্রকৃতি। 'লার্ড পানবন্ধী' ৫ দ্বারা
ছন্দ, 'কিংগ বিজ্ঞান' মোকোবা কদা সি কী
গদ্যে থাকে ইংলিশ ভাষাভাষকে যাই
বলিবা 'মীনা' কবি, ওয়েন ন। 'সেনাপতি ম-
কলন' ২৩ সত্যই বচন-প্রব নিফট পরাজিত
হইয়াছেন।

নিউইয়র্ক টাইমস্‌ বাসনে যিনি বিশেষীর কো
নগরবাসিনেই আমেরিকা যুক্তরাষ্ট্রের
তাই, ইইলে কাগজ, নিগের ওয়ে অত্র দেওয়া
হইবে।

মালটি, ২২ জুলাই। সেনাপতি বাঃ কলন
বিশ্বভীতিপূর্ণ হস্তে অঃ সমর্থন করিয়াছেন।
২। বিশেষজ্ঞদ্বারা জ্ঞান যোগ্য নাই।

[illegible]

श्रीगुरुः शरणं गच्छामहे

अहं, जगत्, सु ।

বিষয়ে উন্নতি হইয়াছে, তাহা বিশেষরূপে নির্ণয়
করা যায়।

১৮৫৭ খৃষ্টাব্দে আমেরিক হইতে
খ্রীষ্ট বৈষ্ণব ও মালবিহারি দেবী কাল-
না গ্রামের বালিকাদিগের চিত্রকে মালিক
দ্বারা উত্তম করিয়া এবং কখন কখন
কে দশহুতে দুইটি করিয়া দিয়া
নির্দেশনায় রূপ আকার করিয়া তাঁর অর্থদ্বারা
ক'ত না হইয়। অধিকারের অল্প প্রাচ্যে কিছু
মিসনরীরাও ভিন্ন ভিন্ন বালিকা বিদ্যালয় স্থাপন
করেন। বালিকাদিগের মধ্যে। স্ত্রীনাথিক এত
শত, বিদ্যা লবধি স্থাপিত হওয়া পর্যন্ত অসং-
খ্য বালিকা বিদ্যালয়ের খুলল পাওয়া গেল।
তদ্বিধি দৈনিক কিছু কিছু প্রাক্তন
বাংলা এবং ইংলিশ একটা স্কুলে
সংস্থাপিত হইতে পারা গিয়া থাকে।
লেন পণ্ডিত প্রণীত বালিকা চারুচন্দ্র
আম দুইটির বোধোদয় অল্প ইংলিশ
লিখা থাকে। কিন্তু মহাপর দুগুণের বিষয় এট
য়ে সর্বসাধারণের মনোমত বালিকা
বিদ্যা ভাষা হইতেছে না। না হইবার নিম্ন-
লিখিত কারণেই।

১। কালনার লোকের বিদ্যাশিক্ষণে অসুখ-
 ২। নষ্ট চলিলেই হয় । বিশেষতঃ বালিকাদি
 ৩। যেরূপ পড়া শিক্ষালাভ, ইতি পণ্ডিত ভাষা-
 ৪। তরুণ চিত্তশক্তি বাহ্যেতেক কাহারও অতি-
 ৫। কালনা ।

[illegible]

৩। প্রাণাশ্রয় না হইলে বলা হইয়া থাকে।
৪। যখন কেবল কুমার আছে যে জীবাতি
বিস্তারিত। কনিজের সৌখ্য দিবা। ইত্যাদি।
৫। শিল্প শিখারী ও সচিবের শিল্পের কল
কাবে উপযুক্ত কল শিল্পের বস্ত্রের। ইত্যাদি।
এক পা

श्रीपुरु बाबू कानोकृष्णभक्त कलिकाठ।

১২৬২ জ্যৈষ্ঠ অবিষি কার্তিক পর্যাঙ্ক কোঃ ৫ টা কা
 ত্রিমতী ভূনেশ্বরী এত্ন বাসেশ্বর
 ১২৬৩ ১৫ ই অষাঢ় অশ্বি ১৫ ইপৌষ পর্যাঙ্ক ৫ টা
 সংসদ পত্রিকা গ্রহণ প্রসঙ্গক সভা হজপুর
 ১২৬৪ জ্যৈষ্ঠ অশ্বি পৌষ পর্যাঙ্ক কোঃ ৫ টা
 এন, এচ টিমসন সাহেব কৃষ্ণানগর
 ১২৬৫ জ্যৈষ্ঠ অবিষি পৌষ পর্যাঙ্ক কোঃ ৫ টা

এই ৯ত কলিকাতার দক্ষিণ পূর্ব দাউন। বেলারের
নাগপুর টোল নদী দক্ষিণ চাই-বিশেষ। এখানে জৈন
এবং বৈষ্ণব বিদ্যালয়ের দাউতে একটি সোমর
দেতে প্রায়শঃ ১৫।

সামপ্রকাশ

“মহর্ষাঃ দত্তনিহিতায় পার্থিবঃ সমস্মৃতি যুগ্মস্মৃতি ন হীযতাঃ।”

৪ ভাগ।
৪০ পৃষ্ঠা।

{ সন ১২৬২। ৩ ভাদ্র। ইং ১৮৬২। ১৮ আগষ্ট। }

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

মকমলে সোমপ্রকাশ প্রের-
ণের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাঠিলে মকমলে সোম-
প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইহার বার্ষিক
মূল্য ত্র্যমাসিক সময়ে ১০ এবং সাপ্তাহিক
৫ টাকা নিরূপিত আছে। মকমলের মূল্যে
অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মকমলের
যদি কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা
হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সঠিত পত্র লিখিলেই
পাইতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

মুকবোধল্যকরণ।

মুকবোধ লাকরণ দেবনাগর অক্ষরে
মুদ্রিত হইয়া পটল ডাঙা বালেচের নিকটে
কলিকাতা ত্র্যমাসিকের মোবানে বিক্রয়
হইতেছে। মূল্য ৫০ বার আনা।

বিজ্ঞাপন।

বাসবদত্তা।

০ মদনমোহন তর্কালঙ্কার কৃত পদ্ম বাস
বদত্তা আবশ্যক হইয়াছে। যিনি আমাকে
উদাহ এক ১০ সপ্তগ্রহ করিয়া দিতে পারিবেন
তাঁহাকে ৫ টাকা পারিতোষিক প্রদান করা
দাইবেক ইতি।

তাং ২৫ আশ্বিন
সন ১২৬২ সাল

জীরাঙ্গদাস সেন
সং বঙ্গব্রহ্মপুর

বিজ্ঞাপন।

বঙ্গদেশ সর্বস্বোত্তম গ্রন্থালয় ও সমাচার
এবং সাময়িক পত্রিকা পাঠ্য।

বাংলা হাওলাত করিয়া বাঙ্গলা গ্রন্থ
করিতে মানস করেন তাঁহারা নিম্ন লিখিত

নিয়ম সকলে সম্মত হইয়া আমাদিগের চাঁদা
পুস্তকে স্বাক্ষর করিলে পুস্তকাদি হাওলাত
দেওয়া বাটবেক।

১ম। গ্রন্থকালে প্রতি গ্রন্থে আট আনা
নার হিসাবে প্রতি মাসে চাঁদা দিতে হইবেক
এবং তাহা মাসের প্রথমে দিতে হইবেক,
এক মাসের স্থান মূল্য গ্রহণ করা বাটবে
ক না।

২য়। এক মাসের অধিক কোন কোন গ্রন্থ
রাখিলে তাঁহাকে তাহার মূল্য দিতে হই
বেক।

৩য়। যিনি যে গ্রন্থের পুস্তক লইয়া
বাটবেন, তাঁহা ১০ সেন্ট অমদার সেরত দি
তে হইবেক তাহার অনায়াস করিলে পুস্তকের
মূল্য দিতে হইবেক।

৪র্থ। অপরিচিত ব্যক্তিকে পুস্তকের মূল্য
জমা রাখিতে হইবে অথবা এক জন পরি-
চিত ব্যক্তিকে জামিন দিতে হইবেক। তাহা
হইলে তাঁহাকে পুস্তক হাওলাত দেওয়া বাট
বেক।

৫ম। সমাচার ও সাময়িক পত্রিকা সকল
আমাদিগের গ্রন্থালয়ে আসিয়া পাঠ করিলে
কোন মূল্যই লাগিবেক না।

৬ম। তদার

নিউ ইন্ডিয়ান লাইব্রেরি
কলেজ স্ট্রীট নং ৮৩।

সোমপ্রকাশ।

১০ ভাদ্র সোমবার।

মকমলের কোটী আদায় ৩, ২১০০০
ও প্রমাণ।

অ.মাদিগের রাজপুরুষেরা ভারতব

র্ষের হিত উদ্দেশ্য করিয়া যে সকল কাজ
করেন, তদ্বির্বাদক লোক মনোনীত করি
বার দোষে তাহার অধিকাংশ কলোপধারণ
হয় না। মকমলে ছোট আদালত স্থাপন
একটি মহোপকারক কার্য। মনোনীত
কিছু বিচারপতির দোষে তাহা অসমর্থ
কল প্রদর্শন করা দূরে থাকুক, অনেক স্থানে
বিষয় কল উৎপাদন করিতেছে
অন্য রসাকরোহিতোধিত্যসেবি ধর্মশাস্ত্র
যনং দুয়েন্ত বদনমুখি কার্য।
এই সমস্ত রমের আকর, ইহা হইতে
লাভ হইবে এই আশা করিয়া ইহার সেবা
করিলাম, যনং দুয়ে থাকুক, কার্যবারি
দুখ পরিপূরিত হইল।

যখন ব্যবস্থাপক সন্তান মকমলে
ট আদালত প্রতিষ্ঠার প্রথম লইয়া
কোলন কর, সেই সময়েই আমরা
হিলাম, যে সকল ব্যক্তি সমস্ত
কার্য করিয়া পরিপক ৩ লক্ষপ্রতি
গ্রাহেন, সেই সেই ব্যক্তিকেই
মান করা কর্তব্য, কিন্তু রাজপুরুষের
উন্নতির প্রতি অতিশয় তত্ত্বমান হও
যাতে সকল স্থলে আমাদিগের মনোনীত
বিচারপতি নিয়োগ হয় নাই, তাহাতেই এ
ক্ষেত্রে স্থানে স্থানে বহু অনর্থ ঘটিতেছে।
আমরা যে এক খানি প্রেরিত পত্র পাই
রাছি, তাহা আমাদিগের বক্তব্য সমর্থন
করিতেছে। সে খানি নিম্নে প্রকৃতি হইল।

মহাশয়! গ্রাউন্ডলাফ ও ক. মদনমোহন এক

তি মহাআদিগের নীল প্রধান প্রদেশের প্রজা

ক্রমে ২০। ২২ টি বিধবার বিবাহ হইয়াছে। কিন্তু কোন বিবাহেই একই সমারোহ ও একপ বহুগ্রামের সম্মতি ও বহু ভক্ত লোকের সম্মগ্ন হয় নাই। বরের নাম শ্রীযুত রামকৃষ্ণ পাঠক, বয়স ২১ বৎসর। এই ইহাঁর প্রথম বিবাহ। কন্যার নাম শ্রীমতী কাদম্বিনী দেবী, স্বীরপাই নিবাসী শ্রীযুত হারাধন চট্টোপাধ্যায়ের কন্যা। পাঁচ বৎসর বয়সে চন্দ্রকোনানিবাসী ৬ শীতারাম চৌধুরীর সতিত প্রথম বিবাহ হইয়া এই বৎসরেই বৈধব্য সম্বটে পড়া। এক্ষণে কাদম্বিনীর বয়সক্রমে ৯ নম্বর বৎসর মাত্র। বিবেচনা করিতে গেলে অদ্যাপি কাদম্বিনীর বিবাহের একুত্ত বয়স হয় নাই। এই বৎসরের মধ্যে বিবাহ বৈধব্য সম্বটন ও পুনরায় বিবাহ হইল।

গবর্ণমেন্টের অধীন মিসনরিজিগের

কাহ্নর বিদ্যালয়ে শিক্ষা

চয়।

ভাবতর্থাযদিগের সমাজ, ধর্ম, রাজ্য ও শাসন প্রণালী প্রভৃতি যে যে বিষয়ে নিরুদ্বিগ্ন ও সন্দেহভাজন হইয়া থাকে, সে সমুদায়গুলি এক কারণে পর্যাবসিত হইতে পারে; তাহা ভুবিভূত করিবারও এক মাত্র উপায় আছে। বিদ্যালয়িকার অভাবই আমাদিগের তাৎকালিক কারণ। আমাদিগের দেশের যে অংশে বিদ্যার সমধিক সমাদর হইয়াছে, সে স্থান হইতে কুলকার প্রভৃতি পলায়নোচ্ছ হইয়াছে। যে স্থলে তাহার সম্ভাব, সেই স্থলেই নানা দোষের প্রভুত্ব। যদি আমাদিগের কৃষকেরা লেখাপড়া জানিত, তাহা হইলে কি তাহারা প্রত্যেক ভূম্যধিকারী ও মীলকরের দাস হইয়া থাকিত? মধ্যম ও প্রথম জেগি যদি প্রকৃত কৃষিকার হইতেন, আমাদিগের সামাজিক দেশ কি আজিও এদেশকে একপ ছর হোয়াড় করিয়া রাখিতে পারিত? ইংলণ্ডীয় মহাসভা কি আমাদিগের বর্ধাৎ বহু

ও আধিকার দানে পরাধীন হইতে পারিতেন? কেবল এক বিদ্যালয়িকার অভাব কি আমাদিগের আনন্দ, ও সৎক্রিয়া সাহসাদি বিরহের প্রধান কারণ নহে? এদেশে যে অধিকাংশ লোকে যদি কৃতবিদ্যা হইতেন, আমরা কি কানাড়ার ও অন্তরে নিয়ার উপনিবেশকারিদিগের ন্যায় সৌভাগ্যশালী হইতে পারিতাম না?

আমাদিগের গবর্ণমেন্ট ও আমরা এ বিষয়ে কত দূর কৃতকাব্য হইয়াছি, এক্ষণে তদ্বিষয় বিবেচনা করা আবশ্যক। বোধ হয়, একথা সকলেই স্বীকার করিবেন, দেশের লোকে সমধিক যত্নশীল না হইলে কেবল গবর্ণমেন্টের চেষ্টায় দেশের সম্যক উন্নতি লাভ হয় না। বিদ্যালয়িকার বিষয়ে এদেশের লোকের তাদৃশ যত্ন ও অনুরাগ নাই, সুতরাং গবর্ণমেন্ট যা কিছু করেন, তাহাই পর্যাপ্ত জ্ঞান করিয়া থাকেন। কিন্তু প্রণালী অবলম্বন করিলে দেশ সাধারণ বাবতীর লোকের শিক্ষা কাব্য সুন্দর রূপে সম্পন্ন হয়, এবং ধর্মনীতির উন্নতি সাধনের উপায় বিধান ব্যতিরেকে যে শিক্ষাদান প্রণালী, তাহা পূর্ণ ও প্রশংসনীয় নয়, এ সকল চিন্তাস আমাদিগের ন্যায় গবর্ণমেন্ট ও ক্রেশ স্বীকারে বড় সম্মত হইলেন। ধর্মনীতির সমধিক চর্চা ও সৎ প্রণালী অনুসারে যে সুশিক্ষা হইতেছে, প্রধান গুরুত্বদিগের কোন কোন ব্যক্তি। মুখেও একথা কখন কখন শ্রুতিতে পাওয়া যায়।

বোম্বাইয়ের গবর্ণর সর ডার্টন গির্জার এক বিদ্যালয়ের পাবিতোষিক দান সময়ে ঘিরিয়াছেন, গবর্ণমেন্টের প্রতিষ্ঠিত বিদ্যালয়ের অপেক্ষা মিসনরিজিগের প্রতিষ্ঠিত বিদ্যালয়ে উত্তম শিক্ষা হইয়া থাকে। এই বোম্বের মীমাংসার্থী হইয়া সংবাদ পত্র মাজ চাইলে বিতরিত হইয়াছেন। এক দল গবর্ণমেন্টের অবলম্বিত শিক্ষা প্রণালীকে গেলইয়া বাইতেছেন, অপর দল মিসনরি

বিদ্যালয়ের শিক্ষা প্রণালীকে তাৎকালিক উপরে লইয়া বাইবার চেষ্টায় আছে। কিন্তু আমরা অমিল্যাবলির ন্যায় উক্ত উত্তরবিধ সম্ভাব্য শিক্ষা প্রণালীর একটরও উত্তম জ্ঞান পত প্রশংসাগানে উদ্বুদ্ধ নহি। যে শিক্ষা প্রণালী দ্বারা বুদ্ধিবৃত্তির অধিকতর মার্জনা হয়, সে অংশে গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের হাজরিগেরই প্রাধান্য নয়ন গোচর হইয়া থাকে। সাহিত্য, গণিত, ইতিহাস, বাস্তব শাস্ত্র, এ সমুদায় বিষয়ে গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের হাজরিয়া আর সকলকে পরাভব করিয়াছেন। প্রেসিডেন্সি কালেক্টরের সহিত অপর বিদ্যালয়ের ও তুলনাই হয় না। কিন্তু ধর্মনীতি সংক্রান্ত শিক্ষা প্রণালী প্রশংসিত হইলে আমরা গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের হাজরিগকে প্রাধান্য পদস্থানে উৎসাহী নহি। গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ে যে রূপে কার্য হইয়া থাকে, তাহাতে জ্ঞাত হাজরিগের এবিষয়ে নিরুদ্বিগ্ন হওয়া সম্ভব বৈত নয়। শিক্ষকগণ কেবল হাজরিগকে পরীক্ষাভীর্ণ করাইবারই চেষ্টা পান। হাজরিয়া ছুট হউক, আর ছুটরিজ হউক, দৈনিক পরীক্ষার সময়ে প্রশংসা লাভ করিলেই শিক্ষকেরা তাহার সমুদায় দোষ মার্জনা করেন। কর্তৃপক্ষেরও এই দৃষ্টিতে উৎসাহ দান করা হইয়া থাকে। অধিকসংখ্য হাজরি পরীক্ষার ভীর্ণ হইলেই তাহারা ছুট হন। এ অংশে মিসনরি বিদ্যালয়ও সমধিক সৌভাগ্যশালী নহেন। সেখানে বাইবল পাঠনার বটে, কিন্তু তাহা হাজরিগের চরিত্র সংশোধন বিষয়ে তাদৃশ উপযোগী হয় না। কোন হাজরিগে অথবা বিদ্যালয়ে কিন্তু পাঠরূপ করিল; বাইবলের উপদেশানুসারে লিখিল কি না, মিসনরি বিদ্যালয়ের অধ্যাপকরা অথবা শিক্ষকগণ কি এ সকলের অনুসন্ধান করিয়া থাকেন? এ সকলের অনুসন্ধান ব্যতিরেকে কি হাজরিগ ধর্মনীতিতে ব্যাপ্তি জন্মিবার অথবা চরিত্র

দোষ সংশোধিত হইবার সম্ভাবনা আছে : উক্ত বিদ্যালয়ের হিন্দু ছাত্রদিগের গৃহে বাইবেলের উপদেশানুসরণ আচরণ হওয়াও সম্ভাবিত নয়। তাহার বিদ্যালয়ে যে ধর্মের অনুসারী উপদেশ গ্রহণ করেন, গৃহে গিয়া তাহার বিপরীত ধর্মানুসারী আচরণ দেখেন। উক্ত বিদ্যালয়ের শিক্ষক গণেরও কেবল বাইবেল পাঠনাতে দৃষ্টি, তাহারা উপদেশানুসরণ আচরণ করিয়া না, সে বিষয়ে দৃষ্টি নাই। কেবল কি শুধু পক্ষীর ন্যায় শুটুকত বাইবেলের বাক্য শিখিলেই চরিতার্থতা লাভ হয়?

৫. এংলীতে শিক্ষা করিলে সম্পূর্ণ রূপে চরিতার্থতা লাভের সম্ভাবনা আছে, কি গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের কি মিসনারি বিদ্যালয়ের কোন বিদ্যালয়ের অধ্যাপক রাই তদনুসরণ করেন না। সে এংলী এই, বিদ্যালয়ের নিয়ম প্রণি হইতে আরম্ভ করিয়া প্রথম শ্রেণী পর্যন্ত ধর্মনীতি সংক্রান্ত উপদেশ জন্মের নিয়ম করিতে হইবে। হা যেরা গৃহ কি বিদ্যালয় কোথায় কি রূপে পরিচালিত করিল, শিক্ষকদিগের ভবিষ্যতের সবিশেষ অনুসন্ধান করা আবশ্যিক। পাঠ না হইলে শিক্ষকেরা এখন যেমন ছাত্রদিগের দণ্ডবিধান করেন, চরিত্র দোষ বর্ণন করিলে তখন তেমন দণ্ডবিধান করিবেন। বত দিন এই নিয়ম না হইতেছে তত দিন কি গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয় কি মিসনারি বিদ্যালয় কোনস্থানেরই শিক্ষা এংলী সাজ হইতেছে না। সকল বিষয়েরই বাল্য বধি অভ্যাস চাই, অভ্যাস বতিরেকে দৃঢ়তা জন্মে না। সে অভ্যাস কোথায়? বাহারা মিসনারি বিদ্যালয়ের অথবা গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের দুই চারি জন সচিবিত ছাত্রকে প্রমাণ স্বরূপ প্রদর্শন করিয়া তত্ত্ব বিদ্যালয়ের শিক্ষা এংলীর উৎকর্ষ ও অপকর্ষ প্রমাণ করিবার চেষ্টা পায়, তাহারাই সফল নহে। দুই চারি জনের সচিবিত ছাত্র শিক্ষা

গালীর উৎকর্ষ বা অপকর্ষ প্রমাণ হইবার সম্ভাবনা নাই।

চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত।

সর চার্লস উড একদিন ৩ টন অব কমন্সে কহিয়াছিলেন যদি চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত প্রথা ভারতবর্ষের সর্বদলে প্রবর্তিত করা যায়, ভারতবর্ষের যথার্থ মঙ্গল হইতে পারে। সর চার্লস উডের এবিধ উদার চেষ্টার সহায় গ্রহণ করিয়া দুটি কারণে আমাদের মধ্যে অকৃত্রিম আনন্দ জন্মিতেছে। এক, এই প্রথা প্রবর্তিত হইলে ভারতবর্ষের সবিশেষ শ্রীবৃদ্ধি হইবে। দ্বিতীয়, এই প্রথা প্রবর্তন যুক্তি ও ন্যায্যনুসারে নিতান্ত আবশ্যিক। এতদিনের পর এই প্রথার গুণ সর চার্লস উডের জন্মলাভ হইয়াছে। বঙ্গদেশে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত থাকিতে দেশের যে মহাপকার লাভ হইয়াছে, একথা অনেকেই স্বীকার করিয়া থাকেন। গত বৎসরের চুক্তির কালে অনেক প্রধান ব্যক্তি উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে উল্লিখিত প্রকার বন্দোবস্ত করিবার অনুরোধ করেন। মধ্যে মধ্যে মৃতন মৃতন বন্দোবস্তের নিয়ম থাকিলে কৃষক ও জমীদারের ভূমির প্রতি যথার্থ মারাত্মক না। করবৃদ্ধির ভয়ে অনেকে ভূমির শ্রীবৃদ্ধি সাধনে বিরূপ হয়।

আমরা চিরস্থায়ী বন্দোবস্তের সপক্ষতা করিতেছি বটে, কিন্তু আমরা বঙ্গদেশের বন্দোবস্তের সপক্ষ নহি। এবন্দোবস্তের একটি মহা দোষ আছে। এতদ্বারা জমীদারদিগেরই হস্তে অধিকতর ক্ষমতা দেওয়া হইয়াছে। কৃষকদিগের স্বত্ব ও অধিকারের বিষয়ে তাৎক্ষণিক যত্ন করা হয় নাই। পাঠকগণের স্মরণ থাকিতে পারে, আমরা পূর্বে একবার প্রমাণ করি যাজ্ঞানাম, কৃষকেরাই ভূমির যথার্থ অধিকারী। জমীদার ও রাজার কেবল করের সহিত সন্তুষ্ট। বঙ্গদেশের ভূমির যে

রূপ বন্দোবস্ত করা হইয়াছে, তাহাতে জমীদারদিগেরই ভূস্বামি স্বীকার করা হইয়াছে। লাভ কণ্ডালিস গবর্ণমেন্টকে ভূমির অধিকারী বলিয়া স্বীকার করেন নাই। অনুগ্রহ করিয়া দেখিলে নৈসর্গিক নিয়ম ও বিত্তক যুক্তির অনুসারে রাজা ভূমির প্রকৃত স্বামী নহেন। উক্ত লাভ কৃষকদিগকে উপেক্ষা করিয়া যদি জমীদারদিগের হস্তে সর্বস্ব প্রভুতা প্রদান না করিতেন, তিনি ভূমির প্রকৃত স্বামীর আবিষ্করণে সক্ষম হইয়াছিলেন, আমরা একথা যুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিতাম। তিনি যদি জমীদারদিগের হস্তে যথেষ্ট ক্ষমতা না দিয়া কৃষকদিগের সহিত সাক্ষাৎ সম্বন্ধে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করিতেন, নীল প্রধান প্রদেশের কৃষকদিগের দুঃসহ দুঃখ কি আমাদের চোখে দৃষ্টিগোচর হইত? নীলকরদিগের সহিত তত্ত্ব প্রভৃৎগণের কন্যচিত্ত বিবাহ লইয়া গবর্ণমেন্টকে এত কষ্ট পাইতে হইবে কেন এই বিবাদের মীমাংসার সাধারণের টাকাই বা নষ্ট হইবে কেন? কিন্তু সর চার্লস উড যে প্রকার বন্দোবস্তের সঙ্কল্প করিয়াছেন, তাহাতে এতদোষের পরিহার সম্ভাবনা আছে। তিনি জমীদারদিগকে অধ্যক্ষতা না করিয়া উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের কৃষকদিগের সহিত সাক্ষাৎ সম্বন্ধে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত করিবার মনো রূপ করিয়াছেন। এই বন্দোবস্ত এককালে সর্বত্র প্রবর্তিত করা হইবে না। সময়ে সময়ে যে সমস্ত বন্দোবস্ত হইয়াছে, তাহার নিয়মিত সময় উত্তীর্ণ হইলে বিবেচনা পূর্বক চিরস্থায়ীকরণে কর ধাওয়া করা হইবে। পূর্বকার নিয়মানুসারে সকল স্থলে কিছু এককালে বন্দোবস্ত হয় নাই, অতএব মৃতন বন্দোবস্ত সর্বত্র প্রচলিত হইতে আর ৩০ বৎসর লাগিবে।

সর চার্লস উডের প্রস্তাব পালিয়ার্মেন্ট সভার আদৃত ও প্রীত হইয়া বিবিধকর্তৃক নিম্ন লিখিত কয়েকটি মহান উপ

কর লাভ হইবে। এখন, জমিদারী ভূমি
হইলে ভাষ্যনিগের ভূমিতে সমস্ত জ
মিদারী; সুতরাং ভাষ্যনিগের ভূমিতে আপন
আপন ভূমির উন্নতি সাধন চেষ্টা করিবে।
দ্বিতীয়, ভাষ্যনিগের স্বাধীনতা ও সৌভা
গ্য লাভ। তৃতীয়, ভাষ্যনিগের স্বাধীনতা
ও সৌভাগ্য লাভ হইলেই তদ্ব্যবসায়
বয়ের বিশেষ প্রয়োজন হইবে। চতুর্থ,
একদম নীলকর জমিদারনিগের সন্তি ক্রম
কমিশনের নিত্য বিরোধ থাকিতে ভাষ্য
নিগের স্বাধীনতা গবর্ণমেন্টকে বাধ্য হইয়া যে
অর্থব্যয় ও কষ্টস্বীকার করিতে হইতেছে,
ভাষ্যনিগের অনেক লাভ হইবে। পঞ্চম, এ
কদম উল্লিখিত বিরোধমূলক ভারতবর্ষে
যে মিথ্যা প্রবন্ধনাদি প্রভৃতি প্রবাহিত হইয়া
হইতেছে, তাহা সম্পূর্ণরূপে না হইক, অ
নেক অংশে ক্রম হইবে। ষষ্ঠ, যদি মিথ্যা
প্রবন্ধনাদির স্থানতা ও তদ্ব্যবসায়
ক্রম হইয়া গবর্ণমেন্টের বিচারকাণ্ডে অর্থ
ব্যয় কমিয়া যায়, ভারতবর্ষের অর্থসঞ্চয়
হইবার আর একটি উপায় হইবে। কলকাতা
পর চার্লস উডের প্রস্তাবিত চিরস্থায়ী ব
ন্দোবস্ত প্রথা প্রবর্তিত হইলে ভারতবর্ষের
বাজনীতি, সমাজ, রাজস্ব প্রভৃতি বহুতর
বিষয়ে সর্বাপেক্ষা মঙ্গল লাভ হইবে সন্দেহ
নাই।

পরিশেষে ভাষ্যনিগের আর একটি
বক্তব্য আছে। উক্ত পশ্চিমাঞ্চল প্রভৃ
তি প্রদেশসকলে ত উল্লিখিত বন্দোবস্ত
হইতে চলিল, এখন বঙ্গদেশের উপায় কি?
বঙ্গদেশে বর্তমান বন্দোবস্ত থাকিলে ত
মঙ্গল নাই। কিন্তু অসম্ভব জমিদারদিগকে
ভূস্বামি হইতে বঞ্চিত করাও সাধ্যাত্ত
নয়। তাহা করিতে গেলে অত্যাচারের কার্য
কর হইবে। লাড' কর্ণওয়ালিস ১৭৩২ খ
সঙ্গে যে প্রথম বন্দোবস্ত করেন, তাহার পর
অনেক পরিবর্তন হইয়া গিয়াছে। অনেক
জমিদারী অনেকসংখ্য লোকের অনেকবার
বন্দোবস্ত হইয়াছে, তাহাতে অনেকের অনেক

অর্থব্যয় হইয়া গিয়াছে। এখন ভাষ্যনিগ
কে সেই সেই জমিদারী হইতে বঞ্চিত
করিতে গেলে অনেকের সর্বনাশ হইয়া
যাইবে। সত্য গবর্ণমেন্ট কি একপ করিতে
পারেন? তদ্বিষয়, গবর্ণমেন্টের প্রতিক্রিয়া
তদ্ব্যবসায় আর একটি অনর্থ ঘটবার
সম্ভাবনা। তবে গবর্ণমেন্টের কিছুপ
করা কর্তব্য? গবর্ণমেন্টের কর্তব্য এই, তাঁ
হারা জমিদারদিগকে লগুয়াইয়া ক্রমকমে
গের নিজ নিজ জোতের ভূমিতে অংশ লা
গে মৌরসীপাটী দেওয়া। জমিদারনিগে
র একান্তরূপে অসম্মত হইবার কারণ নাই।
এ বন্দোবস্ত করিলে ভাষ্যনিগের ভূমি
অপেক্ষাকৃত উন্নতি ও গুণ সম্পন্ন হইবে
সন্দেহ নাই। ভাষ্যনিগের ক্রমবর্ধন যদি
ভূমির উপরে নিজে কিছু করিবার ইচ্ছা
থাকে, পণ্ডিত ভূমি বিক্রয় হইবার প্রস্তাব
হইতেছে, তাহা ক্রম অথবা অগ্রগাম
ভূমির আবাদ করুন। মৌরসী বন্দোবস্ত
না থাকিলে প্রকারে ভূমিতে স্থায়িকর
কিছু করিতে চাহেনা। তাহার কারণ
এই; সেক্ষেত্রে কিছু করিলে জমিদারনিগের
চোখ টাটিয়া উঠে। আমরা এক দিন
স্বকর্ণে শুনিলাম, কোন জমিদারের এক
গমস্তাকে এক প্রকা কহিতেছে, “আমি
২০ বৎসর সে ভূমিতে বাস করিতেছি,
ত হাতে ২।৪ টা গাছ বসাইয়াছি বলিয়া
তোমরা খাজনা বাড়াইতে চাহিতেছ,
আমি যে আতলাত করিয়াছি তাহার কি
ছু মূল্য লাও উঠিয়া যাইব।”, জমিদার
দেরা সার্বপরতা বশতঃ ভাষ্যনিগের কষ্ট
ও হিতাহিত বুঝিতে পারেন না।

পুস্তক প্রাপ্তি।

আমরা হৃদয়ঙ্গব সহকারে বীকার করি
তেছি নিম্ন লিখিত পুস্তক গুলি ভাষ্যনিগের
হস্তগত হইয়াছে।

১। সাহিত্য মুকামলী। শান্তিপুর হইয়া
ছি বিদ্যালয়ের পণ্ডিত শ্রীযুক্ত অরুণোপাল
গোহাষি প্রণীত। সংস্কৃত সাহিত্যদর্শন হই-

তে ইহা বাঙ্গাল্য সংস্কৃত হইয়াছে।
২। রাধাকান্তের সংস্কৃত। শ্রীযুক্ত বাবু
কৃষ্ণচন্দ্র পাল রাধাকান্তের দ্বারা সংস্কৃত করিয়া
বাঙ্গাল্যে প্রণয়ন করিয়াছেন।

৩। ভাষ্যনিগের। সংস্কৃত প্রণয়। কলি
কাতা সংস্কৃত পাঠশালার অন্যতর অধ্যাপক
শ্রীযুক্ত বাবু তর্কর ইহা মুদ্রিত ও প্রচারিত
করিয়াছেন। ইহার মুদ্রক অংশ ও শব্দ সঙ্ক
লের ব্যাখ্যা করিয়া দেওয়া হইয়াছে।

৪। বঙ্গদেশের ইতিহাস। শ্রীযুক্ত বাবু
বিপ্রদাস ভাট্টা প্রণীত। প্রণয়ন করিয়াছেন।

৫। প্রচলিত ভাষ্যনিগের শাস্ত্র এবং মুক্তি
সম্বন্ধ কি না। ইহা হিতকর। শ্রীযুক্ত বাবু
তে মুদ্রিত ও প্রচারিত হইয়াছে। ভাষ্যনিগে
র শাস্ত্র ও মুক্তি সম্বন্ধ নহে, এতৎ প্রতিপাদ
নই এতৎ প্রচারের দ্বারা উদ্দেশ্য।

৬। বঙ্গদেশ কান্য। ভাষ্যনিগের দ্বারা প্রণীত।
শ্রীযুক্ত বাবু নবীনচন্দ্র দত্ত সংশোধন করিয়া
ইহা মুদ্রণকার্য সম্পন্ন করিয়াছেন।

প্রাপ্ত।

গুরুদ্বারা।

“দাদা কি কখন ছোড়া হয়?”

এই শিরোনাম দিয়া গত ১৩ ই আগস্টের
সোমপ্রকাশে গুরু মহাশয়দিগকে লিখিত
করিবার চেষ্টা বিষয়ক যে একটি প্রস্তাব প্রকা
শিত হইয়াছে, তদ্বিষয়ক সম্পূর্ণ সংবাদ প্র
কাশ করাই অসম্ভব। এ প্রস্তাবের দ্বারা উদ্দেশ্য
য। ভাষ্যনিগের ভূতপূর্ব লেপটেন্ট গবর্ণর
প্রাক সাহেব পাঠশালার গুরুমহাশয় ও ছাত্র
দিগকে পারিতোষিক দিবার জন্য কিছু
টাকা প্রদান করিয়া যান, কিন্তু শিক্ষা সংক্রান্ত
কার্যের অধ্যক্ষেরা বাহাতে ঐ টাকা দ্বারা
গুরুমহাশয়দিগকে লিখিত করিয়া লওয়া
হয়, তাহার চেষ্টা করিতেছেন। আর এক
বৎসর গত হইল, উক্ত সাহেব কতকগুলি
গুরু মহাশয়কে ৫ টাকা হুতি দিয়া হুগলী ন-
দীতে নৌপাঠাইয়াছিলেন এবং ভাষ্যনিগের
কৃতপাঠশালার ১২ টাকা বেতনে এক এক
মহাশয় ছাত্রকে নিযুক্ত করাইয়াছিল।
গবর্ণমেন্ট মনে করেন, উক্ত সাহেব এই

এখা অবলম্বন করিয়া কৃতকার্য হইরাছেন।
বিশ্ব এ রহস্য কাহার কাছে নিবেদন করি।

গত বৎসর উত্তীর্ণ হইলেও সার্বভৌম সরকার
কোন ডেপুটি ইনস্পেক্টরেরা গুরুত্ব
কার্যে প্রবৃত্ত হইলে, যেমন পল্টনের বেগারের
নিমিত্ত বহির্গত সিপাহীকে দেখিলে কলী-
লোক ভীত হয়, সেইরূপ গুরুত্বপূর্ণেরা
ভীত ও স্তম্ভিত হইল, অনেক স্থলে এওণ
অনুগ্রহ উদ্ভূত যে গবর্ণমেন্টে গুরু মহাশয় সি-
গকে লইয়া গিয়া কলী বা তারাবাদী পশুর
কার্যে নিয়োজিত করিবেন। সুতরাং আর
কোন ডেপুটি ইনস্পেক্টরই নন্দালে গুরু পা-
ঠাইতে সমর্থ হইলেন না কেবল বর্ডমানের
সুযোগ্য ডেপুটি বাবু অনেক বর করিয়া আর
৮.১০ টী গুরুকে নন্দালে প্রেরণ করিয়া প্রভুর
আজ্ঞা প্রতিপালন করেন। কিন্তু এক্ষণে সি-
গেরূপে অবগত হওয়া গিয়াছে যে এই সকল
গুরু মধ্য ২'১ জন ব্যক্তিকে আর কেহই
বাস্তবিক গুরু নহে, কাহারও পাঠশালা ছিল
না, ডেপুটি বাবু আলোচন, উচ্চাটন, বন্দী
করণ প্রভৃতি বহু প্রারাগ দ্বারা প্রানের স-
পর লোককে বন্দীভূত করিয়া এই কার্য সম্পা-
দন করিয়াছিলেন। ইহাই উত্তীর্ণ সাহেবের
কৃতার্থতা লাভ।

সংগ্রহিত উক্ত বিষয়ের জন্য যেরূপ প্রস্তাব
হইতেছে পাঠক বর্গ তাহাও অবগত হউন।
এবংসর গবর্ণমেন্টে উক্তরূপ কার্যের নিমিত্ত
ব্রিটিশ হাজার টাকা দিবার সংকল্প করিয়াছেন।
শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যের অধ্যক্ষেরা প্রস্তাব
করিতেছেন যে এই টাকা দ্বারা স্কুল, কলনগর
ও চাকার এক একটি নন্দা, বিদ্যালয় স্থাপি-
ত করা যাইবে। যাহার বাস্তবিক গুরুত্বপূর্ণ
ছিল বা বাহারা গুরুত্বপূর্ণ হইতে অসিদ্ধ
করে, তাহার ৫ টাকা প্রতিমাস এ নন্দালে আ-
দিয়া এক বৎসরের জন্য অধ্যয়ন করিবে,
বাহারা সার্ভিসকেট প্রাপ্তি পূর্বক বহির্গত
হইয়া গুরুত্বপূর্ণের কার্যে ব্যস্ত হইবে,
গবর্ণমেন্টে তাহাদিগকে মাসিক এক টাকা
প্রদান করিবেন। পাথের ব্যয় সনেত মাসিক
১.০০ শত টাকা বেতনে যে দুই জন সব ডে-
পুটি ইনস্পেক্টর নিযুক্ত হইবেন, তাহার ৫
একর পাঠশালায় তত্ত্বাবধান করিয়া যে সকল
প্রাপ্ত ও গুরুত্বপূর্ণদিগকে উক্তরূপ দেখিবেন

তাহাদিগকে মধ্যে মধ্যে কিছু পারিতোষিক
প্রদান করিবেন। এক্ষণে পাঠকবর্গ অনুরা-
সেই ব্যক্তিতে পারিতোষিক যে উত্তীর্ণ সাহেবের
কৃতার্থতা লাভের সহিত এই কার্যের কলের
কতদূর উত্তম থাকিবে।

কলতঃ এবিধে আমাদের গবর্ণমেন্টকে
তাড়ন দোষ দিতে পারা যায় না, কারণ তা-
হার টাকা দিতে নিতান্ত কাতর হইতেছেন
না, কিন্তু শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যের অধ্যক্ষেরা
বহুতর সর্বকর্ম প্রযুক্ত পাইয়া এই টাকা বাধা
দে ব্যর করিতেছেন। এইরূপ ও বর্ধক টাকা
নষ্ট করিবার দুর্ভাগ্যবশত সেদিনকার প্রস্তাবে
যে মেডলিকট সাহেবের ইনস্পেক্টর পদে
নিয়োগ এবং তাহার বাবালার অনতি-
জ্ঞতা প্রযুক্ত এক জন বাবালিকে তাহার
সহকারী করার বিষয় উল্লিখিত হইরাছে, তাহা
বোধ হয় ভাল হয় নাই, কারণ ইহা অগ্র-
হতঃসিদ্ধ বস্তুরা নষ্ট হইবে যে বাবা-
লিরা সহস্র দুখিনান ও সতর্ক রূতবিদ্য হই-
লেও ইনস্পেক্টর প্রভৃতি বড় বড় পদ কখনই
তাহাদিগকে দেওয়া হইবে না, স্বজাতি পালন
ধর্ম্মানুরোধে উহা ইউরোপীয়দিগকেই দিতে
হইবে, ইহা গবর্ণমেন্টের এক প্রকার স্থির
সংকল্প আছে দেখা যাইতেছে। যদি তাহাই
হয় তবে মেডলিকটকে ইনস্পেক্টরী দেওয়া
অন্যায় হইরাছে বলা যাইতে পারে না। কিন্তু
তদন্তে আশ্চর্য এবং তথের বিষয় এই যে
অপরূপ ইনস্পেক্টর সাহেবেরও বাবালার
পারদর্শিতা বিষয়ে মেডলিকটের তুল্যকর
হইবেন, কিন্তু গবর্ণমেন্ট অন্যান্য স্থানে ইন-
স্পেক্টরদিগের বাবলা জানার আবশ্যকতা
অনুভব করেন নাই, কেবল মেডলিকট সাহেব
বাবলা জানেন না সুতরাং তাহার সন্মুখ
সুনির্বাহ হইতে পারিবে না তাহারা এক জন
কৃতবিদ্য বাবালিকে তাহার সহকারী করিয়া
দিয়াছেন। যাহা হউক “যুক্তি ঠিক হইলেই
ভাল হয়, যদিই কোন কারণ বশতঃ তাহা না
হয় তবে উহার একটি লাভ লব্ধি করা
দেওয়া উচিত। ইহা যে এত দিনের পর
গবর্ণমেন্টের বোধ হইয়াছে সেও আমাদের
এক প্রকার শুভ সূচক বলিতে হইবে।

পরিণেপে আর একটি কথা লিখিয়া প্র-
স্তাব সমাপন করা যাইতেছে। গবর্ণমেন্টে আ-

বাদিগের নিযুক্তি মণীষ লোকদিগের বিদ্যাশি-
কার জন্য যে এত প্রয়াস পাইতেছেন তদন্ত-
না তাহাদিগের প্রতি আমরা সম্পূর্ণ কৃতজ্ঞ-
তা প্রকাশ করিতেছি। কিন্তু আমরা বাবালী,
আমরা এদের প্রকৃত বিশেষরূপ জানি,
আমরা নিষ্কর বলিতেছি, তাহার ৫ কার্য
সংসাধনের জন্য যে প্রথা অবলম্বন করিতে
ছেন তাহা কখনই কার্যকারিণী হইবে না। য-
দি এই ৫ টাকা উত্তম রূপে সংসাধন করিতে
তাহাদের বাস্তবিক অতিপ্রিয় থাকে তবে
উহার পূর্বোক্তিতে প্রস্তাব সকল পরিচ্যা-
গ করিয়া সাহায্যদান প্রধাতকেই সংসাধন
করুন অর্থাৎ এক্ষণে এই রূপ নিয়ম আছে
যে হাজি মত বেতন বাদে লোকের ৫ টাকা
দিবেন গবর্ণমেন্টে তত টাকা সাহায্য দিবেন,
হাজি মত বেতন লোকের, সব্বিকুলন রূপে
স্বীকৃতি হইবে না। গবর্ণমেন্ট এই নিয়ম
রহিত করিয়া হাজি মত বেতন বত হইবে তা-
হাট লোকের সব্বিকুলন বিবেচনা করিয়া ত-
ত টাকা সাহায্য দান করিতে আরম্ভ করুন।
এ বেতন সকল সময়ে সমান থাকে না থাকে
তদন্ত সম্পাদকদিগকে নির্দিষ্ট টাকা দিবার
অসীম করিয়া লউন। গুরুত্বপূর্ণদিগের
পাঠশালায় আর মর্জেন্ট ৫ টাকা বেতন উদ্ভি-
য়া থাকে, যদিও কোন স্থানে না উঠে তাহা
হইলে কিঞ্চিৎ চেষ্টা করিলেই ৫ টাকা করা
লইতে পারা যায়। যাহা হউক, যেখানে ৫
টাকা বেতন উঠে গবর্ণমেন্ট তথায় ৫ টাকা
সাহায্যদান করুন। ১০ টাকা এক জন উপা-
ধ্যায় রূপ নন্দাল চাকর বা নিকট কোন
সাহায্য কৃত বিদ্যালয়ের এক জন কৃতবিদ্য
হাজিকে পাঠশালায় নিযুক্ত করিয়া দেওয়া যা-
ইতে পারে। এই রূপ শিক্ষক প্রাপ্তির নিমিত্ত
অপর নন্দাল কুলে প্রয়োজন নাই, বর্ডমান ন-
ন্দাল মত কিঞ্চিৎ অধিক ব্যয় নিরূপণ করি-
য়া দিলেই হইতে পারিবে। কিন্তু এই সকল
কর সাহায্য কৃত বিদ্যালয়ের তত্ত্বাবধানের
জন্য যে সকল ডেপুটি ইনস্পেক্টর নিয়োজিত
থাকিবেন, তাহার ৫ সেই সেই প্রানের ২১
জন দুখিনান যুবককে নন্দালে পাঠাইতে চেষ্টা
করিবেন। কারণ গ্রামবাসী কোন ব্যক্তি আ-
পন প্রানে ১০ টাকা মাসিক পাইলে তাহার
একপ্রকার চলিতে পারে। এই সকল কার্য

সম্পন্ন করিবার নিমিত্ত ইংরেজী ও বাঙ্গালী-তে বিশেষ যুগপতিশালী এক জন বাঙ্গালিকে ইনস্পেক্টর নিযুক্ত করা মিথ্যাত্ত আশঙ্ক। বাঙ্গালি ভিন্ন ইংরেজী দ্বারা এ কার্য নি-রূপ করা কেবল আশঙ্ক ও সীমাপ্রাপ্ত মাত্র হইতে পারে।

লণ্ডন ৩ রা জুলাই ১৮৬২।—

ক্রিস্টিয়ানসন লণ্ডনের সমারোহের নি-শ্চিন্তা হ্রাসিত হয় নাই। পুঙ্খ পুঙ্খ লোক সকল অয়োদ্য হইয়া নানা স্থানে ভ্রমণ করিতেছে।

ইংলণ্ডের একদল লোক আছেন, যেতি-নিবন অসমর্থ নিকেতনের নিকটে পদক্ষেপ বাধু সেবন করিয়া থাকেন।

স্পেন রাজ্যের অধিবাসী এক জন প্রাসব করিয়াছেন।

এসিয়ার রাজপুত্রবধূ (বিক্রেতারিয়ার সু-কিতা) গর্তবতী হইয়াছেন।

ক্রিষ্টাল পালেসে বলানমারোতে হাও-লোৎসব পূর্ণাবসিত হইয়াছে। ৪০০০ গাধক একত্রিত হইয়া হাওলের রচিত কতিপয় গান করেন তাহাতে ১০০০ ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন।

গত ১৪ ই জুনে জাপান দেশীয় রাজ-দুতেরা হলাণ্ডের রটটার্জ নামক স্থানে উপ-স্থিত হন, তাহারা নিজ ভাষায় লিখিত বহু-তর পতাকা নিরীক্ষণ করিয়া চমৎকৃত হইয়া-ছিলেন, জাপানের সহিত হলাণ্ডের বহুদিনা-ধি বানিজ্য থাকতে অনেক জলাণ্ডের জাপান দেশীয় ভাষা অবগত আছেন।

স্পেন দেশে যুবক পেরেথ নামী এক তা-ড়কাবঃ রাক্ষসী বাস করিত, গত বিংশতি বর্ষ যাবৎ সে স্পেনের অন্তর্গত গালিসিয়া প্রদেশ-ের পক্ষে মহাতীতি স্বরূপ ছিল। কতকগুলি অশুচরের সহিত সে নানা স্থানে ভ্রমণ করিত, এবং কোন পথিক তাহার হস্তে পড়িলে আর জ্ঞান পাইত না। সে বৎসরোনা-তি নির্ভর ভয়াদা, এবং বহুকাল ব্যাপিয়া রাজ্যের ব্যবস্থাকে তুণ্যত্ব প্রদান করিতেছিল সংশ্রুতি সে মৃত হইয়াছে।

বিসম-দেশের অধিপতি এখানে নানা কু-

লীনের গৃহে আতিথ্য প্রদান করিতেছেন।

করাণীশ ব্যবস্থাপকসমাজে শরট বোটকা-দিত্র উপর টাক্স নইয়া এক গোলযোগ উপ-স্থিত হয়। উক্ত বিষয়ক বিল সংশোধিত হইয়া প্রায় হইয়াছে।

ওয়ালটিয়া রাজ্যের মন্ত্রিসমাজের সভা-পতি কাটার্গি সংশ্রুতি নিষ্পত্ত হইয়াছেন।

আমেরিকার ফের্ড ওক্স নামক স্থানে অল্প দিবস পূর্বে এক ১৫ বছর তাহাতে কনকেডরেইয়ের পক্ষে ৮২০ ভোট, ৩৬২৭ আহত, এবং ১২২২ জন শ্রুতি বিরুদ্ধে হইয়াছে। কনকেডরেইয়া প্রাপণে যুদ্ধ ক-রিতেছে।

আমি পূর্বকার এক পক্ষে মিথিয়াহিসাব যে খ্রীষ্টধর্মের রাজসিদ্ধ মতের বিরুদ্ধত প্রচার করিতে উক্তর উইলিয়াম এম এবং উইলসন সাহেবের নামে বর্ষ সমাজে অভি-যোগ উপস্থিত হয়। উক্ত বিষয় নইয়া এখানে মহান আলোচন হইয়াছিল। উইলিয়াম এম ও উইলসন উভয়েই ডক্টর অব ইংলণ্ডের পাদত্রি। তাহারা চর্চের মত প্রচারার্থ বেতন গ্রহণ করিতেছিলেন, অথচ তাহারা যথেষ্ট ধাপে বাইবলের ব্যাখ্যান করিয়াছেন। বিচার-দ্বারা উভয়ে নির্দোষ হইয়াছেন। অতএব বোধ হইতেছে যে ডক্টর অব ইংলণ্ডের মোহাই দিয়া একদল লোকে বিনা সমাজে যথেষ্ট মত অবলম্বন করিতে পারিবে। অনেক ইংরেজ যে এই রূপ অবস্থার অবস্থিত, তাহাতে স-ম্মত নাই।

কথিত হইয়াছে যে রুসিয়া ও এসিয়া অ-বিলম্বে ইটালির স্বাধীনতা প্রদান করিবেন। গারিবান্ডি কাপ্তোবা গীথে দীর্ঘ ভবনে প্র-তিগমন করিয়াছেন।

বেলজিয়ামের রাজা রোণ ভোগ করিতে ছিলেন, একদল দস্যব লাভ করিয়াছেন।

কানেকা প্রদেশে হাটির অভাব হেতু লোকে কষ্ট ভোগ করিতেছে।

ইউরুল নগরে ৫০০ শত যুদ্ধ ও পশু-শল্য হইয়াছে।

লিট্রির নিকটে যমুনা উত্তরণের নিমিত্ত মাকের্টের নগরে এক প্রকাণ্ড লৌহ সেতু নি-শ্চিত হইতেছে। তাহারা বাঙ্গালীর রথ ও সা-

নান্য যন্ত্রাদি গমন করিতে পারিবে। উক্তর বিলানের সংখ্যা ১২। প্রত্যেকে ২১৬ কীট দীর্ঘ। একীদশটি ভক্তের প্রসাধনের সহিত এই দীর্ঘতাকে একত্রিত করিলে, সেতুর দীর্ঘতা সর্বত্র এক পাদপ্রাপ্তের অতিরিক্ত হ-ইবে।

অবগতি হইল যে ভারতবর্ষ হইতে ১৮-৬১ শকে ১৩২৮ ব্যক্তি মরীচ উপস্থাপন গমন করিয়াছে। জীলোকের সংখ্যা শতকরা ৩৬।

আমেরিকার পিত্ত প্রদেশে এক ভূমিকম্প হইয়াছে।

মন্তেগ্রিণেরা যুদ্ধাকা পাখা দ্বারা যুদ্ধে বারম্বার পরাভব প্রদান করিয়াছে।

লণ্ডনের পথের জনতা নিবারণার্থ জুমির-বন্দ্য দিয়া রেলওয়ে প্রস্তুত হইতেছিল। উহা আগামী আগষ্ট মাসে খুলিবার কথা নির্ধারিত হয়। কিন্তু এক ভয়ানক দ্বাঘাত দ্বারা উক্ত ব্যাপার কিয়ৎকালের নিষিদ্ধ হ-গিত হইয়াছে। ক্রীট ভিন্ন নামক স্থানে কয়েক দিবস পূর্বে রেলওয়ের বাধ হইতে শব্দ নি-গত হয়। উহা অবশ্য মাত্র কার্যকরেরা জুমির নিরাজ্য হইতে পলায়ন করে, তখনকার এক ৮৫ কীট দীর্ঘ, ৩০ কীট উচ্চ, এবং ২০০ হস্ত দীর্ঘ ভিত্তি নহলে উপস্থিত হইয়া রেলও-য়ের উপর পতিত হইয়াছে, এবং জুমির অ-ভ্যন্তরস্থ বর্জের সর্বাংশ ভগ্ন এককালে পূর্ণ হইয়াছে।

অন্য কোন ভাষণ প্রয়োজনীয় সংবাদ উপলব্ধ হইতেছে না। আবারও ইংলণ্ডে অবস্থিতি শেষ হইয়া আসিয়াছে। অচিরেই এদেশ পরিত্যাগ করিয়া যমেনাতিমুখে যাত্রা করিব। কিন্তু তরসা করি, যে সোমপ্রকাশের লণ্ডনের পত্র বেন এই পর্যন্ত চিরকালের নি-বিত্ত শেষ না হয়। আমি নানা কাণ্ডে ব্যাপৃত থাকিয়া পাঁচ মাস যাবৎ আপনাকে পত্র নি-খিয়াছি। কোন ক্রমেই উচিত মত করিয়া লিখিতে পারি নাই। আমার লিপি সকল সুতরাং অশেষ দোষের আধার স্বরূপ হই-য়াছে। কিন্তু ইহা সম্পূর্ণ তরসাভোগ্য যে আমার অবস্থা বিবেচনা করিয়া আপনার সহায় পাঠকেরা আমাকে কমা করিবেন।

অবিবাহিত অন্য কোন শক্তি স্বাধীন অবস্থায়
লাভ করিয়া বখোচিলা স্থানে আপনাদি পাঠ
করেন আনন্দ হইবে। শৌকি কন্য পু
ত্রিত্যাগ করিয়া জন্মঃ অন্তঃকরণ লোক যে
ইংলণ্ডে আগমন করিবেন, তাহার সম্যক ল
কণ প্রতীত হইতেছে। এই দেশে আসি।
ইংরেজদের সহবাস করা ভারতবর্ষীয়দিগের
বলমোহিত। এক প্রধান উপায়। বাই দের
বয়স, অস্বাভাবিক, বাঁহাদের অর্থ সংগতি
আছে, বাঁহারা কৃতবিদ্য, তাঁহাদের অধিক
কিছু কম লোক কন্য পরিভ্যাগ করিয়া এই
মনোহর গম্বীরাজ্যতুল্য স্থানে জীবনের
কিরণকে কেন্দ্র করিয়া উঠিত। তত্ত্ব ব্যবহার করি-
লে অর্থঃ অতঃ ব্যবহার না করিলে ইং
রেজদের নিকটে আদরের ভাট্টা নাই। আমি
হামশবাসের মধ্যে অল্প চরিত্র লোক এক
লের সহিত থাকি করিয়াছি। জীবন যে অ-
সার পদার্থ নহে, তাহা উদ্বৃষ্ট চরিত্র সকল
অধ্যয়ন করিলে বিলম্ব প্রতীত হয়। আমি
‘অধোনাতিব্রুখে বাইতেছি, অধঃ অতি দু-
খে। ইংলণ্ড পরিভ্যাগ করিতেছি। বলিতে
কি, এখানকার দেশ যেমন শীতল, এখানকার
লে কের খাদ্য ততোধিক উষ্ণ। সচরিত্র
ব্যক্তির এদেশে আসিতে কোন ভয় নাই।
লোকাপবাদ তত্ত্ব কেবল আশ্বাসের বস্ত্র অন-
র্থের মূল। আপনি, সম্পাদক মহাশয়। আ-
মার সহিত একমত হউন আর না হউন,
আমাকে অবশ্য জিজ্ঞাসা করিতে বিবেচন যে
কত দিন আর প্রবৃত্ত ব্যক্তি বালকের, দুটি
বৃদ্ধ ব্যক্তি অন্ধের, গণ্ডিত ব্যক্তি দুর্ভেদ
পথ অবলম্বন করিয়া চলিবেন? একপ পথে
চলিয়া আশ্রয় দেবল চিরদিন পরাধীনতা
শৃঙ্খলে বদ্ধ আছি। অতএব শাসিতা পরি-
ভ্যাগ করিয়া আমাদিগের এককালে মনুষ্যের
ম্যাদ কাব্য করিতে প্রবৃত্ত হওয়া সর্বতোভাবে
উচিত ইতি।

ঐতিমিচাঁদ ওপ্পা,

গত ১লা ইংলণ্ডের দ্বিতীয়া দৃষ্টি
ভার বিবাহ সম্পাদিত হইয়াছে।

বিবিধ সংবাদ ।

২১এ জীবন সোমবার ।

ঐহটের তাইকে বাজির্টেট আসনা,

মোহন... (প্রত্যর্ধিনশকে কর্তব্য, যেন
সমস্ত সময়ে এহার পর্যন্তও কতিপা থাকেন
তাহাতে উক্ত লোকেরা তাহার নামে
পটনকে পবনদের নিকটে নালীশ কামরায়ে
জাঠে বাজির্টেট মিসিলিয়ান ও আবেদন
কারীরা তাব অনুরোধে রোমন কবন কেন।
ঐহটের সমস্ত আধীনকে উক্ত জ্ঞান
পদস্থ করিয়াছেন। সদব আধীন “জন্মের
অনেক গোপনীয় কথা প্রকাশ করিবার তত্ত্ব
প্রদর্শন করিয়াছেন। জ্ঞান তাইয়ের তাই না
কি?

উক্ত পক্ষিকালের এক খানি পত্রে বৃষ্ট
হইল কতক জন ক্রিষ্টান শিককত। কথের
প্রার্থনার তত্ত্ব সাধারণ শিকা কার্যের ডি
রেকটরের নিকটে আবেদন করেন। রিড সা-
হেব তাহাদিগের আবেদন গ্রাহ করেন নাই।
কিন্তু তাহার এই কারণ প্রদর্শন করেন যে
তাঁহাদিগের “সাধারণ পদ নাই” বো-
হর এ সম্বন্ধে সত্য নয়, সত্য হউলে এ-
খানকার অনেকে মারা যান।

২৪ পঞ্চমবার জ্ঞান মার্চের সাহেব (বিনি
কিউ দিনের জন্য প্রধানতম বিচারালয়ের বি-
চার পতি হইবেন কথা ছিল, পীড়া বশতঃ
দুই মাসের বিদায় লইয়া ইংলণ্ডে বাইতেছে-
ন। অধোপায় কাহেল সাহেব অথবা মেদি-
নীপুরের রসেল সাহেব তাহার পরিবর্তে নি-
য়োজিত হইবেন।

বায় রাখালখান হালদার (ইনি কিছু দিন
পূর্বে ইংলণ্ডে গমন করিয়াছিলেন) গত শ
নিবার ব্রম্বে প্রত্যগমন করিয়াছেন। ইনি
যোগ্য ব্যক্তি, ইহার একটা যোগ্য গীত লাভ
হইলেই আমাদিগের আত্মশ্রম আনন্দের বি-
ষয় হয়।

ইংলিসমান বলেন, প্রিন্স অব ওয়েলসের
এদেশে আগমন করা উচিত নহে, তাহা হই-
লে তাহার নেতৃত্ব ও রসেল সাহেব প্রভৃতি-
র ন্যায় সংস্কার হইবে। ই। ঐতিহাসিক-
দিগের কার্য প্রণালী সকলে জানিতে পারেন
সেটি ভাল নয়। সিংহ ব্যাজানি রাষ্ট্র ও অ-
জকারই ভাল বাসে।

চাকা প্রকাশ বলেন, উক্ত বিখ্যাত জ-
মীদার পোপস সাহেব একটি টীকা করিতে
ছেন। উক্ত কালেদের কয়েক জন রক্ত-

বিদ্যাহারকে সিবিলসার্জিনের পরীক্ষার্থে ইংল
ণ্ডে পাঠাইবার নিমিত্ত মূল ধন সংগ্রহ ক-
রাই ইহার উদ্দেশ্য। পোপস সাহেব চাকার
অনেক মূল্যবান পুস্তক সংগ্রহ করেন। উক্ত
লোকেরা এই টীকা তাহার সবিশেষ সহায়তা
করেন এই আশাভিগ্নের অনুরোধ।

উক্ত পত্র অর্থ করিয়াছেন কাছাড়ের ডু-
প্লি অরিপ আরও হইয়াছে। নীলগাম প্র
দেশের ভূমি সকল কবে করিপ পটবে?

হিন্দুপেট্রিট প্রধানতম বিচারালয়ের
একটি অন্য আচার প্রচিহ্ন করিয়াছে-
ন। সম্রাতি টেলর ও বর্গান সাহেব এক যো-
কদনার দ্বিত করিতেছেন, জনীদারের শায়েব
ও গম্বীরাজ্য বৌদসি পাঠ। প্রভে পারিছেন।
একপ মনুষ্য হইলে কেবল যে জনীদারেরাই
বিপদাগর হইবেন এমত নহে, তারতবর্ষে
জালকারিতা ও প্রবঞ্চনা প্রভৃতির অ-
একটি তার উদ্ঘাটন করিয়া দেওয়া হইবে।

শ্যাম দেশ হইতে চীনদেশ পর্যন্ত একটি
রেইলওয়ে করিবার প্রস্তাব হইতেছে।

বুয়ার বন্দরে কবেদিসিগের বিষয়ে
এক রিপোর্ট প্রকাশ হইয়াছে। একপে স-
কণ্ডক ২,২২২ কবেদিসি আছে। ইহার মধ্যে
১৮০৬ জন পুরুষ ও ১২৫ টি স্ত্রীলোক আছে
জীলোকেরা প্রায় বিবাহিত। অনেকে বিবা-
হ করিতে ইচ্ছা, বাহুরা বিবাহ করিয়াছে তা-
হার। স্বতন্ত্র বাস করিয়া স্বাধীন হইয়া জীব-
ন নির্বাহ করিতেছে। তথায় অধিকসংখ্য
স্ত্রীলোক প্রেরণ করা কর্তব্য। অনেকে কলি-
কাতা প্রভৃতিস্থানে অতি জঘন্য অবস্থায় কা-
লক্ষেপণ করিতেছে। তাহার পুনর্বার গৃহস্থ-
অমে প্রেরণ করিতে অভিলষী হইবে সন্দে-
হ নাই। কশীর গবর্ণমেন্ট মাকুরিয়ার উপনি-
বেশের লোক সংখ্যা রক্ষি করিবার এই উপা-
য় অবলম্বন করিয়াছেন?

টাইমস অব ইণ্ডিয়ার এক জন পত্র প্রের-
ক বলেন টমাস নামক এক ব্যক্তি ভারতব-
র্ষে বিদ্যালয় স্থাপন হুল করিয়া লণ্ডনে চ দা
করিতেছে। এই প্রবন্ধক এক বার না কারা
কৃত হইয়াছিল?

পুনা অবজারবর বলেন, আমেরিকার
কালেটের কতিপয়দের রেসিডেন্ট হইবেন।
কৃতপূর্ব রেসিডেন্ট উক্ত বসাবকে অপমা-

উদাহরণ

তে আলা বিজ্ঞানকে প্রদান করিয়া
কি হইবে তাহা বিচারিত হইবে।

প্রদানের
পাঠ করিতেন। প্রদানের কাজ আলাকে
কে প্রেরণ করেন। বালিকার ইচ্ছা
স্বলবন করিয়াছেন। এটিকে রাজা
দিগকে বসন্তে প্রেরণ করিয়া আলা
দিয়াছেন। এমন স্থলে গবর্নমেন্টের
যেন স্বীকৃত পদ প্রদান করা যাক
নিপোক্ত না হন।

গত পরিবার সন ১৯১৩ চলেসের আ-
ল কবে কিসার সাহেব তগলাস সাহেব ও
প্রিন্স কোর্টের অন্য অন্য কর্মচারির দোনে-
র বিষয় প্রকাশ করেন। কর্মচারিরা উৎকোচ
গ্রহণ করেন কি না তাহা এখনও প্রকাশ হয়
নাই। তগলাস সাহেব আসিলে তাহা জানা
বাটবে। কিন্তু অনেক সময় অবিজ্ঞানি-
গের কথা দিলে ও কর্ম হয় তাহা বিলম্ব স-
প্রমাণ হইয়াছে। গত সন ১৯১৩ চলেস উক-
ন বারো সাহেবকে জুজাবহারের নিমিত্ত ডি-
রকার করিয়াছেন। তিনি কিসারকে ৮০ টাকা
র দানে ১০০০ টাকা ব্যয় করান। উকিল দি-
গের পাওনা আর কিসে?

গবর্নমেন্টের ডির ডির মাগাবে নিম্ন লি-
খিত টাকা কলা আছে।

ডির ডির গবর্নমেন্টের	৪,৮৪,৪৮,৪২০
বঙ্গদেশীয়	২,০৫,২৬,৭৮০
উত্তর পশ্চিমবঙ্গের	৩,০৮,০৩,২১৬
পঞ্জাবের	১,১২,১৫,২৬৭
বোম্বাইয়ের	৩,৪০,০৮,৫০৮
মধ্যপ্রদেশের	৩১,০২,৮৭১
মাদ্রাসার	২০,২০,৭৪০
মাদ্রাজের	৩,০৭,৩২,৪৩৫

মোট ১২৬৫২২২২

নিম্ন লিখিত গবর্নমেন্টের মোট প্রচলিত
হইয়াছে।

কলিকাতা	২,৪০,০০,০০০
বোম্বাই	১,৫২,০০,০০০

উদাহরণ

মোট ১২৬৫২২২২

আমরা বঙ্গদেশের আত্মশ্রম জোঁকাম
হইতে একখানি প্রেরিত হইয়াছি। তা-
হাতে লিখিত হইয়াছে "উলিমান, পল্লীগ্রামে
হারোগার পর একবারেই উঠিয়া গেল। এই
কিন্তু পুলিস লইয়া এক এক জন ইন্সপেক্টর
নিযুক্ত হইলেন। তাহারই আত্মশ্রমে পুলি-
স সংক্রান্ত সমস্ত কার্য নির্বাহ হইবেক। কি-
ম্বা ব্যক্তি যে এখানে নিযুক্ত হইলেন আমরা
তাহারা কিছুই শির করিতে পারিতেছি না।
জোঁকামনিবাসী কোন আধুনিক ধর্মীয় পুস্তকে
পুস্তক পড়ের উপযুক্ত পাত্র মনোনীত করি-
য়া গবর্নমেন্টে একখানি আবেদন পত্র প্রে-
রিত হইয়াছে। আমরা শুনিয়া অবশিষ্ট কি-
ম্বা দুঃসহ দুঃখ অগ্রহণ করিতেছি লিখিয়া
কি জানাইব। তিনি যদি সক্রিয় সাধুশীল
অথবা কোন প্রকার সফল সম্পন্ন হইতেন
তাহা হইলে একথা কথা মুখে আসা হুনে পা-
কুক, অস্ত্র-করণেও স্থান প্রদান করিতাম না।
পত্র প্রেরকেরা এত সীত হইয়াছেন কেন?
গ্রামস্থেরা একব্যক্তি থাকিলে তাহারও অন্যান্য
করিয়া কুতকাব্য হইয়াব সম্ভাবনা নাই।

২০-অবশ্য মঙ্গলবার।

আমরা বঙ্গদেশের আত্মশ্রম জোঁকাম
হইতে একখানি প্রেরিত হইয়াছি। তা-
হাতে লিখিত হইয়াছে "উলিমান, পল্লীগ্রামে
হারোগার পর একবারেই উঠিয়া গেল। এই
কিন্তু পুলিস লইয়া এক এক জন ইন্সপেক্টর
নিযুক্ত হইলেন। তাহারই আত্মশ্রমে পুলি-
স সংক্রান্ত সমস্ত কার্য নির্বাহ হইবেক। কি-
ম্বা ব্যক্তি যে এখানে নিযুক্ত হইলেন আমরা
তাহারা কিছুই শির করিতে পারিতেছি না।
জোঁকামনিবাসী কোন আধুনিক ধর্মীয় পুস্তকে
পুস্তক পড়ের উপযুক্ত পাত্র মনোনীত করি-
য়া গবর্নমেন্টে একখানি আবেদন পত্র প্রে-
রিত হইয়াছে। আমরা শুনিয়া অবশিষ্ট কি-
ম্বা দুঃসহ দুঃখ অগ্রহণ করিতেছি লিখিয়া
কি জানাইব। তিনি যদি সক্রিয় সাধুশীল
অথবা কোন প্রকার সফল সম্পন্ন হইতেন
তাহা হইলে একথা কথা মুখে আসা হুনে পা-
কুক, অস্ত্র-করণেও স্থান প্রদান করিতাম না।
পত্র প্রেরকেরা এত সীত হইয়াছেন কেন?
গ্রামস্থেরা একব্যক্তি থাকিলে তাহারও অন্যান্য
করিয়া কুতকাব্য হইয়াব সম্ভাবনা নাই।

মঙ্গলবার হইলে, মিলাট হইতে এসা-
উঠা অন্তি হইয়াছে।

ইংলিসমানের এক জন পত্র প্রেরক লেড
সাহেবের হিসাবের এর প্রমাণ করিয়া বলি
রাছেন "তিনি (লেড সাহেব) মোহাপুর্কক
সমসাধারণকে জুলাই গবর্নমেন্টের কাগজের
মূল্য বনি করিয়াছেন। কোন বনিকসমাজ
আপনানিগের মূল্য বনি করিবার অভিপ্রা-
রে যদি বিখ্যা আর প্রকাশ করিতেন তাহা
হইলে কি আইন অনুসারে তাহা নিগের দ-

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

উদাহরণ

নিখের হস্তে প্রেরণ করিয়াছেন।

রাণীমহলের বাক্যসমূহ প্রচারিত হইয়াছে।

নিখেরাধিকারের প্রস্তাব প্রত্যাখ্যাত হইবে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

আমরা স্থাপিত হইলাম, বালাণী পত্র পু-
নর্বার রাজ্য বিখ্যাতের সপকড়া করিয়াছেন।

বোম্বাই নগরে মানব দেশের অধিকেনের
বাক ১৬০০ টাকার বিক্রীত হইয়াছে।

কিনিক অরণ ক রেয়াছেন, রাউলাও মণি
নাহের উত্তর পশ্চিম কলের প্রতিনিধি স্ব-
রূপ ভারতবর্ষের পত্নার অন্যতর সত্য হই-
বে।

উক্ত পত্র জ্ঞান হইয়াছেন, হারিসন সাহেব
শীঘ্র ইংলণ্ড হইতে প্রত্যাবর্তন করিয়া বঙ্গ
দেশের তেপুটি আর্ডিটর ও আর্কাইভার
কর্তব্য হইবেন।

পরিচালক বলেন গত ৩১ শ্রাবণমাসের
ঠেসনে। পূর্ব বাঙালার গেইলওয়ে এক
ব্যক্তি ছাড়ে টিন বসাইতেছিল এতদ সময়ে
সে ভূমিতে পতিত হয়। তদ্বিবে তদন্তে
মেডিকালকালেক্টর প্রেরণ করা হইল।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

করাটি	১,০০,০০০	৫,০০,০০০
হারদরাবাদ	২,৫০,০০০	২,২২,২২০
সিকারপুর	১২,৭৭,৫৫০	১৫,৫২,৩১০
উত্তর সিং	৩৩,৮৭০	১,১০,২৪৫
পারকর	১,০০,০০০	১,৫৫,০২০

মোট ২৩,৮৭ ১৩৫ ৩৩,৫০,৫৬০

খাল খনন প্রকৃতি দ্বারা তৃষ্ণিত পল্য
হুই হওয়াতে এই কয়টি হইয়াছে।

নীল গিরিতে চা আশ্রয় হইয়াছে। আ-
রাকালের চা গোন কোম অংশে আলাসের চা
অপেক্ষা উৎকৃষ্ট হইয়াছে আশাদিগের জ-
মীদারেরা চার চাষ করেন না কেন?

পুনা অবজারবর বলেন, ইংলণ্ড হইতে
রাজব বিবরের মন্ত্রী আনাতে অ আদিগের
কেবল কতি ওক্ট হইতেছে। উইলসন সাহেব
এক তরানক কর স্থাপন করিয়া গিয়াছেন সে
হ নাহেবও আশাদিগের কট চুর করিতে
পারিলেন না। একথা বক্ত মিথ্যা নয়।

গত সপ্তাহে টেলিগ্রাফে সংবাদ আইনে
আমেরিকার গবর্নমেন্টের এখান সেনাপতি
মাকিলন পরাজিত হইয়া আত্মসমর্পণ করি-
য়াছেন। কল্যা ইংলিসবান এক টেলিগ্রাফ পা-
ঠিয়াছেন, এ সংবাদ মিথ্যা। মাকিলন রিচ-
মন্ডে পুনর্বার অগ্রসর হইয়াছেন। সতাপতি
মিকলন তাঁহার শিবির দর্শন করিয়া সন্তুষ্ট
হইয়াছেন। প্রথমেই আশাদিগের এই সংবাদে
অবিশ্বাস হইয়াছিল। দেওলক সৈন্য সম-
ভিনাধারে এগণ্য কোন সেনাপতি আত্ম
সমর্পণ করেন নাই।

বহুবাজারের এক জন সন্তান হুজুর তাঁ-
হার বিধবা কন্যার বিবাহ দিবেন লক্ষ্য ক-
রিয়াছেন। আমরা কোন কারণ বশতঃ এক-
শে তাঁহার মনোমুখ্য করিলাম না। অনেক
হুজুর এখিনেই সন্তান প্রার্থনা করিয়াছেন।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সংবাদ প্রচারিত হইয়াছে।

সেবিত্রিকাণ ।

আজকে, রাজার কক্ষের ভিতর অসংখ্য ছাত্র ভর্তি। সেখানকার ইন্দ্র-
উর জেনারেলকে টেরকানিগকে ইউরোপীয়
কিৎস। লিখাইবার সবকিছু উপায় উদ্ভাবন করি-
তেছিলেন। এছাড়াও বীতন সাহেব তার
সহকারীগণকে "পণ্ডিত" করিয়েছেন। সব
উইলিয়াম ডেনিসন কবিতা-কবিতা পড়িয়ে
সব আনন্দ সুপার করিয়েছেন। আজি কালি
বুখনিগেরই বাহন ! !

ত্রিভুজের রাজার এক জন কুটুম্ব এক
ব্যক্তিকে হত্যা করিতে আসে। সেখানে
উহার বাহনীর কান্না-বাসের আত্মা হই-
রাছে। মধ্যাহ্নভোজের কান্না হইরাছে।
ত্রিভুজের রাজা অনেক বিষয়ে শাসনের
উৎকর্ষ সাধনে বিশেষ আগ্রহ প্রকাশ করি-
তেছেন।

ভারতবর্ষের বাবতীর রেলওয়ে কোম্পা-
নি সর্বসাধারণের সংবাদ টেলিগ্রামে পাঠা-
ইতে পারিবে। পূর্বে তাহার কেবল আপ-
নাসিগের সংবাদ পাঠাইতে পারিতেন।
অন্য অন্য সংবাদ গবর্ণমেন্টের টেলিগ্রামে
পাঠাইবার নিয়ম ছিল। গবর্ণমেন্ট ও রেল
ওয়ের কোম্পানির প্রত্যাশিত। হওয়াতে স-
র্বসাধারণ অঙ্গ ব্যয়ে সংবাদ পাঠাইতে
পারিবে তাহার উপায় হইল।

চীন দেশের বিদ্রোহে গবর্ণমেন্টে বখার্ব
হরণ করিতেছেন। এক রেজিমেন্টে বে-
চিকে প্রেরণ করা হইতেছে। সর্বত্র চারি
রেজিমেন্টে এতদেশীয় সেনা চীন দেশে গ-
মন করিবে। এই ব্যয় শেষে ভারতবর্ষের কত
পতিবে সম্ভব নাই।

৩১. ৩১. ৩১. ৩১. ৩১. ৩১. ৩১. ৩১. ৩১. ৩১.

ইণ্ডিয়ান বিদ্রোহ ভারতবর্ষের সর্ব
বিভিন্ন উদ্যোগের বিষয়ে আকোশ করিয়া-
ছেন। এ আকোশ নির্যাস নহে।

উক্ত পত্র বলেন, এক সন্তান জীলোক
ইংলণ্ড হইতে এক জন বাঙ্গালীকে বঙ্গ ভাষার
পত্র লিখিয়াছেন। লক্ষণী বখার্বিতি প্র-
চালাইয়াছেন। এবং অকর গুলি প্রাণ
চাপ র অকরের ন্যায়। সম্প্রদায় এতদেশীয়
রনদীদিগকে এই বিষয়টিতে চুড়িগণে রাখি-
য়া দেখা পাঠায় বনোবে প করিতে অগ্ররোধ
করিয়াছেন। রনদীদিগের অপেক্ষা উদাহারি
গের পিতা, জাতা ও স্বাধীক বলাই উচিত
হিল।

চীনদেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে বি-
দ্রোহীরা সাক্ষ্য হইতে পলায়ন করিয়াছে।
আপানে এক ব্যক্তি ইংল্যান্ড কলনকে বধ
করিবার চেষ্টা পায়। কিন্তু কবিতা হতকা
হইতে পাতের নাই অসংখ্য ব্যক্তিকে আহ-
ত করিয়া নিজে হত হইয়াছে। চীনদেশ

বাবু হুইয়াং অহিকেনের জাল প্রমাণ
করিয়াছেন। তাহার আট কলন বিদ্রোহীরা
হে। হতকা হইলে অসংখ্য কোল হতকা
হইয়াছে।

কলিফার বিটমিনিগন কলিমদের
এতদিনে। পর আগরিত হইয়াছেন।
কলিমের একজনকে গেজেটে উদাহার।
কলিম হিবার কারণে কলিফার হিবার
আপাততঃ পাত খাতি
গাতি হইবে। এখনই আরও হইবে না কি ?
বাক্য রাজার অল হিবার উপযুক্ত সময়
বটে।

সর হিউ রোজ কলিমের টিপার্টমেন্ট
সংশোধন করিবার অভিপ্রায়ে উক্ত টিপার্ট
মেন্টের প্রধান কলিমের টিপার্টমেন্ট ও সেনা
হলের কর্নেল প্রিন্সটনকে প্রেরণ করেন। এই
তুই কর্মচারী বিবাহ করিতে কলিমের টিপ-
আরল্ড প্রধান সেনাপতিকে গালি দেন।
তদ্বিষয়ে তাহার পরিবর্তে সেনার রাউটনকে
নিরোজিত করা হইয়াছে।

পলায়ন গবর্ণমেন্টে তমতা অবৈতনিক
বাজিটে টিমিগের কার্ভের এক টিপোট করি-
য়াছেন। বাজিটে টিপো বখানিয়মে কার্ভ
করিয়া গবর্ণমেন্টের সন্তোষ বর্জন করিয়াছে-
ন। কোল বিদ্রোহে আশামিগের ক্রটি আছে।
তথাপি আমরা ঈশ্বরিকারি হলের মন পাই
না।

বোম্বাইয়ের বাবু ইনকম টাক বাবু
অংশীদিগকে মতকরা ১ টাকা দিয়াছেন।
সর চারলস উড মেও সাহেবের বন্দো-
বস্তে বখার্বি ক্রম হইতে পারেন।

কোচিনে জোসেফ নামক এক জন বৃদ্ধ
ইউরোপীয় ধৃত হইয়াছে। উক্ত ব্যক্তি হও-
কতের অহিকেনের ক্রটি হইতে কয়েক সহস্র
টাকা চুরি করিয়া আনিয়াছিল। সে এক দিন
এক হোটলে সুরাপানে উদ্বৃত্ত হইয়া এক
বলিয়া ফেলেন। তাহাতেই তাহাকে ধৃত করা
হয়।

অতিশয় গতি হওয়াতে সিঙ্গু রেলওয়ে
ভর হইয়াছে।

কলিম বলেন, শিল অব ওয়েলস কোল
কারণ বশতঃ এবৎসর ভারতবর্ষে আশিক
পারিলেন না।

বোম্বাইয়ের "জুতা খুসিয়ার পোলমো-
গের" বিষয়ে যে কলিমের মন্তব্য হন, তাহার
বলিয়াছেন জুতা খোলা পারসীদিগের বিপ-
রীত। বিপরীত হইলে হয় কি, এদেশীয়ের
জুতা খুসিয়া ইংল্যান্ডের কাছে বাইবেল
আর ইংল্যান্ডের জুতা পরিয়া এদেশীয়
গের মন্তব্যে বাইবেল, এইম করাই
হইয়াছে।

১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.

১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.

১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.

১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.

১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.
১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১. ১৩১.

গবর্ণমেন্ট বিজ্ঞপন ।

বালগোন্দোয় লেপ্টেনেন্ট গবর্ণরের

আদেশনামার বিজ্ঞপন ।

২১। আজকাল—সেপ্টেম্বর ১১, ১৮৮১। উদা-
কট আশায়েন এক জন সহকারী কলিমের হ-
বন।

কট খালির হুদসেক মোসবী অহিকেনের
হ বাকরমকে ১৮-৮১ জুলাই ১৩ আশিনের
১০ খারাজমের ডেপুটি কলিমের হুদতা
হিবেন।

২২। আজকাল—সেপ্টেম্বর ১১, ১৮৮১। উদা-
কট আশায়েন এক জন সহকারী কলিমের হ-
বন।

২৩। আজকাল—সেপ্টেম্বর ১১, ১৮৮১। উদা-
কট আশায়েন এক জন সহকারী কলিমের হ-
বন।

২৪। আজকাল—সেপ্টেম্বর ১১, ১৮৮১। উদা-
কট আশায়েন এক জন সহকারী কলিমের হ-
বন।

২৫। আজকাল—সেপ্টেম্বর ১১, ১৮৮১। উদা-
কট আশায়েন এক জন সহকারী কলিমের হ-
বন।

২৬। আজকাল—সেপ্টেম্বর ১১, ১৮৮১। উদা-
কট আশায়েন এক জন সহকারী কলিমের হ-
বন।

বাহু মহিমচরণ পাল

বাহু রত্নজাল ঘোষ

বন্দোবস্ত

বাহু কালিকানন্দ

বি. এ. এ.

এস. চন্দ্রসিউ, বাহুচরণ সোহন

১৫ আশ্বিন—কি বিলাস সাজিয়ে দিলে নব তেপুটি অধিকেন এতকৈ হইবেক।

তবলিউ, এস. অরুণোদিত সাহেব সাহা-
বাহুর নব তেপুটি অধিকেন এতকৈ হইবেক।
কি, ব্রাহ্মণ সাহেব জিজ্ঞাসে নব তেপুটি অধি-
কেন এতকৈ হইবেক।

১৫ আশ্বিন—ই. টি. টেলর সাহেব পূর্ণিমা
সত্যর এক জন সত্য হইবেক।

পি. এ. ও. জী সাহেব মহম্মদসিংহের প্রতি-
নিধি জাইট বাড়িউট ও তেপুটি বাড়িউট
হইবেক।

বেদীপুত্রের তেপুটি বাড়িউট ও তেপুটি
কাশেমীর মৌলবী মহম্মদ আলি রত্নপুত্রের বহনী
হইল। এইকারণে কইনেন ২২ ধারাবাহারে বি-
ভীত জেগির অধীন বাড়িউটের কবত। পাই-
টবন। ইহা জাহা ভাঙার নদীর বিয়োগ রহি-
ত হইল।

১১ই আশ্বিন—বি. টি. টেলর সাহেব জি-
পুত্র বাড়িউট বাড়িউট ও তেপুটি কাশেমীর
হইবেক।

মৌলবী মহম্মদ মহম্মদ কিরকিবনের জ-
না হুজুরীর অতিরিক্ত এখান সত্য আলীন হই-
বেক।

প্রেরিত।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক
মহোদয় সম্মানার্থে।

আপনি জমিদারদিককে পুরানপানী বলি-
রাছেন! কি আশ্চর্য! দিন দিন কি কালিকাল
উপহিত হইল! ততলোকের আর খান খাণ্ডা
ভার। হুজুর ভূলা টাকার আধ মণ ছিল; এখন
৭ সের ৮ সের হইয়াছে, একপে বড়মাজুরের
ক কোন জুই নাই, বাহিল আপন আপন
জাহা ও খাডাকর নিকটে, তাহাও ইংরাজ বা-
হুর এক মণ আটন বাড়ির করিয়া উৎসব
করিয়া মিলাছেন। গ্রামের লোকেরা আমাদি-
ককে এখন আব তাদূন সম্মান করে না। কতক
জনা-সব্য তত্র একর হইয়াছে, তাহার না-
জাজিক করে, না পিতৃ বাত্ৰ আত্ম করে, আবা-
র আমাদিগের মেসাজিনা সময়ে নৃত্য নীতাদির
আলোচনা দেবিত। সৈবকর্মক তাহানিক বলি-
জা উপহাস করে। দিন দিন জেহ বিদ্যারই
উপহি জেহ। বাইডেহ, জেহ মত সত্য কি হ-
কি বিলাস কি নাযাজিক বিলাস কি রাজনীতি-
বিলাস জেহ হলেই উত্তরোত্তর অধিক আশুত
হইতেছে। এই বেধির তনয় মনে কবি
জামি, মহম্মদজাহাঙ্গীরকে আমাদেব বশে
বাহা। উত্তিত। সেই জন্য আর বৎসর পৌষ
কাবে আমি সাজিয়ে বহু করিয়া গ্রামে একটা
কুল করি। তহিহে আমাদিগকে লকনে প্রে-
সেট আঁকি জাহাঙ্গীর একটা মাদি মিলা জুলে-

১১ই আশ্বিন—বি. টি. টেলর সাহেব জি-
পুত্র বাড়িউট বাড়িউট ও তেপুটি কাশেমীর
হইবেক।

আমরা তোমাদের নিকট কি অগোপন করি-
রাহি? আমাদিগকে তোমরা পুরানপানী
বল? আমরা কি জুল করি নাই, আমরা কি
কিন্দ্রমসুরী করি নাই, না আমরা কি করি নাই,
জাহা, এখা গ্রামহ, ভিন্ন গ্রামহ, সকল পক্ষকে
সত্য করিতে চেঁচা পাই, তহু কাহারও প্রি-
পার হই না। কি কলর প্রতাব! বাহা হউক,
তোমরা সকলে একত্র মিলিয়া আমাদিগের
মিলা করিতে বসিয়াহ, আমরাও চেঁচা পাইব,
বাগাতে তোমাদিগের মর্দ চর্চ বহ। পুরান
পানী! কি? খাডক ও এখা লইয়া কাজ করিতে
হইলে, কাহার না সময়ে সময়ে দণ্ডবিধান ক-
রিতে হয়? সংসার ধর্ম করিতে গেলে, বিলাস
আশার বন্ধা করিতে গেলে, কাঁচন না কোন
সময়ে হই এক ধান। কাগজ প্রস্তুত করিয়া লই-
তে হয়। এখা অত্যন্ত দুর্ভেদ হইলে তাহাকে
কি উপায়ে শাপন করা বাইতে পারে? তাহাকে
নাশিলে হইবে না, তাহাকে চূর্ণের শুভাশে পু-
রিয়া রাখিলে হইবে না, তাহার গরু বাহুর ভাল
কোদাল ভিটাগাটা সমস্ত বিকর করিয়া লও,
কিহুতেই সে শাসিত হয় না। একপহলে তাহার
পরিবারের উপর দৌরাডা না করিলে সে শা-
সিত হয় না। তাহা বলিয়া কি আমরা নরুদাই
এইরূপ করি? তাহা নয়; মর্দাকিকের সময়
আছে; আর অল্প মতের সময় আছে। জুহা-
নী যে ব্যক্তি হয় তাহার সকল বিচার করিয়া ও
নাযধান হইয়া কাজ করিতে হয়। বিচারে কখন
কাহারও সন্তুষ্ট হয়, কাহারও বা গুরু হয়
হয়। আর এখার পরিবারদিব উপর জমিদার
হিগের দৌরাডোর কব। লইয়া তোমরা যে
আবেদন কর, সে নরুদর আলীক। পতকে হুই
পাতটা কখন ঘটে। আবার হিংস্র লোক অনেক
আছে; ইহাও ভিলুকে ভাল করিয়া জুলে
তোমরাই ১ বত মতের জুল। এই জুলি সোম-
প্রকাশ ভাগজ হাপাইডেহ, জুলি কোবার
আমাদিগের অনলহিত সোম জুর্গোৎসবদির
জুহাতি মিথিয়া আমাদিগের বন্দোবস্তি দিগ
দিগন্তর বাপী করিবে, তাহা না করিয়া কি
কতজনা জাজীক মিথা। বাক্য প্রয়োগ করিয়া
কেবল মিথ্যে ই বত আছে। পুরানপানী
জমিদার? কি আশ্চর্য! জাহা দুখিত্তির যে
অভোদন অকোচিনী সেবা বিনাশপূর্বক এক
রাজহুর করিয়া পাণহুর হইয়াছিলেন তাহা
কি জান না? না কোবারাশাহ মাদি না? জমি-
দারেরা সোম কহিতেছে, জুর্গোৎসব করিতেছে,
ব্রাহ্মণ তোজন করাইতেছে, দান ধান করি-
তেছে, বার্ষিক হুতি বিতেছে, এসহকার ধর্মী-
তানেও কি কখন নাযায এখাপীকর আসি-

পাপ তাহাধিগের পরীয়ে আঁজ করিতে
পারে? আপনাই জুহা আপন বাইতে নাই। ন-
মি কখন ও অকিকের বাগিতে পানের মূলা প-
ড়িত, তাহা হইলে জানিতে পারিতেন আমার
আলরে পাণ এবেশ করিবার পাণ পলম না।
জানি না আরোবেরা অজাতকি করে; কিন্তু
বাগীর ইশানকোণে যে মবরর প্রতিষ্ঠা করা
গিয়াছে ও ভজাখে বেতাগ্রং নাকায় তববতী
বিলাস করিতেছেন; আমি শত মরহতা। ও পত
জুলকাবিনীও সত্যি মত করিলেও আমার
বাগিতে পাপ এবেশ করিতে পারে না। কল
কি জানেন? সংসার বাহানার। কাহার পরীক,
কাহার পাপ, কাহার পূণ্য এ সকলই মিথা।
তবে বিলাস আশার থাকিলে শাসনের অন্য কত-
ক ওলা লোক জন রাখিতে হয়; মন জন প্রতি
পালন হয় সেও ভাল, আর খাজনাটা পতট।
আদার করে। তবে আপনি নিজ হুতে
শাসনকরা দোব। ডাকর বাকর কি করে, না
করে, তাহারও আমরা নরুদ। রাখিতে পা-
রি না। আপন আপন নাযসারিক ও ধর্ম কর্ত
লইয়াই নরুদ। রাখ।

তনিয়াহি আপনি না কি মহামতোপাধ্যায়
পণ্ডিত। পুরোহিতকে জিজ্ঞাসা কবাতে জানি-
তে পারিলাম আপনকার মাস কার্জ নাই।
এবংসর আপানী শাসনীর মহাপূজা সময়ে
ঈশ্বর মর্দন লাভ করব। পজের জাহা বত-
হুদ নাকায় হইতে পারে, তাহা মধ্যে মধ্যে
হইবে। কিন্তু আমাদিগের মিথা মিথ্যাবাদি
করিবেন না। ইতি

১৯ আশ্বিন ১২৬৯।

মূল্যপ্রাপ্তি।

শ্রীযুক্ত বাহু রাধানাথ রাও করিমপুর
১২৬৯। ১৫ই আশ্বিন হইতে ১৫ই পৌষ
পর্যন্ত ৫ কোং ৫ টাকা
" জিতলাল বিজ্ঞ জমিদার মানকর
১২৬৯ চৈত্র পর্যন্ত কোং ১০ ট
" অমৃতলাল মিত্র কলিকাতা
১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অর্থাৎ কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫ ট
" শামসুদ্দীন ডাউ বহরমপুর
১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অর্থাৎ কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫ ট
" বাহুনাথ চট্টোপাধ্যায় মদীরা
১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অর্থাৎ কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫ ট
" অতরচরণ রাও জিউ
১২৬৯ চৈত্র পর্যন্ত কোং ১০ ট
" রামকুমার বাপাড কলিকাতা
১২৬৯ জ্যৈষ্ঠ অর্থাৎ কার্তিক পর্যন্ত কোং ৫ ট
" জিহতী বামাজুলের দেবী পাবনা
১২৬৯ আশ্বিন অর্থাৎ অগ্রহায়ণ পর্যন্ত কোং ৫ ট

এই পত্র কলিকাতার বাকি পূর্ব মাতল। রেলওয়ের
সোনাপুর টেলনের মর্দন রাখিগোতা গ্রামে শ্রীযুক্ত
বাহুনাথ বিজ্ঞাভরণের বাড়িতে অতি সোমবার জায়ে
প্রকাশিত হয়।

সোমপ্রকাশ

“সর্বসমী মজতিহিনাথ মাধিবঃ সন্ততী স্ততিসহনী ন হীযতা।”

১ম পৃষ্ঠা।
৪১ পৃষ্ঠা।

সন ১২৬২। ১০ ভাদ্র। ইং ১৮৬২। ২৫ আগষ্ট।

সাপ্তিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অঙ্কিত ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

মকসলে সোমপ্রকাশ প্রের-
ণের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাইলে মকসলে সোম-
প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইহার বার্ষিক
মূল্য ডাকসহ মাসে ১৫ এবং বার্ষিক
২ টাকা নিশ্চিত আছে। ছয় মাসের স্থানে
অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মকসলের
একি যেম ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা
হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই
পাইতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

স্বত্ববোধব্যাকরণ।

স্বত্ববোধ ব্যাকরণ দেবনাগর অক্ষরে
প্রতিষ্ঠিত হইয়া পটলডাঙা কালেক্টরের নিকটে
২২২ নং ওল্ডলকারের দোকানে বিক্রয়
হইতেছে। মূল্য ১০ বাস আন

বিজ্ঞাপন।

বাসবদত্তা।

মদনমোহন তর্কালঙ্কার রচিত পত্র বাস
বদত্তা আবশ্যক হইয়াছে। যিনি আমাকে
উহার এক প্রত্নসংগ্রহ করিয়া দিতে পারিবেন
তাকে ২ টাকা পারিতোষিক প্রদান করা
হইবে।

১৮৬২ খ্রিঃ ২৭ আগষ্ট। জীরাধমার সেন
সন ১২৬২ চৈত্র ১০। গাং বহরমপুর

বিজ্ঞাপন।

১৮৬২ চৈত্র ১০। গাং বহরমপুর
এবং সার্বজনিক পত্রিক। পাঠগৃহ।
হারা বাওলাত করিয়াখাল। এই পাঠ

করিতে মানস করেন তাহার নিম্ন লিখিত
নিয়ম সকলে সম্মত হইয়া আমাদিগের টাং
পুস্তকে স্বাক্ষর করিলে পুস্তকাদি হাওলাত
কেন্দ্রী হইবেক।

১ম। গ্রাহকগণকে প্রতি গ্রন্থে আটমা
নার হিসাবে প্রতি মাসে টাং দিতে হইবেক,
এবং তাহা মাসের প্রথমে দিতে হইবেক,
এক মাসের স্থান মূল্য গ্রহণ করা পাইবে
ক না।

২য়। এক মাসের অধিক কেহ কোন গ্রন্থ
রাখিয়া তাহাকে তাহার মূল্য দিতে হই
বেক।

৩য়। যিনি যে অন্তরায় পুস্তক লইয়া
যাওয়াই, তাহা হইলে সেই অন্তরায় কেবল দি
তে হইবেক, তাহার অন্তরায় করিলে পুস্তকের
মূল্য দিতে হইবেক।

৪র্থ। অপরিচিত ব্যক্তিকে পুস্তকের মূল্য
জমা রাখিতে হইবে, অথবা এক জন পরি
চিত ব্যক্তিকে জামিন দিতে হইবেক, তাহা
হইলে তাহা ক পুস্তক হাওলাত কেন্দ্রী হই
বেক।

৫ম। সমাদার ও সমস্টিক পত্রিকা সকল
আমাদিগের গ্রন্থাগারে আনিয়া পাঠ করিতে
কোন মূল্যই লাগিবেক না।

গুণকরণ
নিউ টেম্পল ২ টাং
কলকাতা ৮ টাং

সোমপ্রকাশ।

১০৮ ভাঙ্গ (সে. বসার)।

জ্যোতিষিকারের নিয়ম বিধি।

প্রাধান্য।

তাপুটি মাকিট্রেট প্রিন্টার বাবু জগদীশ

চন্দ্র ঘোষাল (যিনি পূর্বে শান্তিপুরে ছি-
লেন, এক্ষণে বনগ্রামে আছেন) আমা-
দিগের মতজিজ্ঞাসু হইয়া আমাদিগের
নিকটে একখানি মুদ্রিত আবেদন পত্র ও
একটি আইনের পাণ্ডুলেখ্য পাঠাইয়া দি-
য়াছেন। আমাদিগের মত এই সোমপ্রকাশ
শে একটি হইল, পাঠকগণের সহিত তিনি
অনুগ্রহ করিয়া দর্শন করিবেন।

এ আবেদনের মর্ম এই, হিন্দুশাস্ত্রানু-
সারে স্বাধীন বিষয়ের বহুখা বিস্তারের
নিয়ম থাকিতে এদেশের প্রাচীন ও
নবীন ধর্মবিশ্বাস সকল ক্রমে ক্রমে অল্প প্রাণ
তাইয়াছে ও হইতেছে, অতএব উক্ত
কালে বাহাতে একপ না হয়, তাহার এক
টি উপায় করা কর্তব্য। সে উপায় এই,
স্বাধীন বিষয়ের ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র অংশ না হইয়া
জ্যোতিষ সমুদায় স্বাধীন বিষয়ের অধিকারী
হন।

একপ একটি নিয়ম হওয়া যে নিতান্ত
আবশ্যক, তাহা আমরা গত বৎসর
(১২৬৮ সালের) ১৫ই মার্চের সোমপ্র-
কাশে বিস্তারিতরূপে প্রতিপাদন করিয়া
ছি। পরিসরক ইহার প্রতিকূল পক্ষ
অবলম্বন করিতে এই বৎসর ২৯ই মার্চের
সোমপ্রকাশেও ইহার পুনরাবলম্বন হইল।
যাহারা সেই সেই পত্র কটিল হইতে বাস্তি
র করিয়া দেখিবার ক্রেশ খীং বে পরাইয়া
হইবেন, অথবা আমাদিগের দৃষ্টে সেই
সেই পত্র নাই, তাহাদিগের সুবিধার নিমি

১৫ই মার্চের মোমপ্রকাশের কিয়দংশ
এখন উদ্ধৃত করিয়া দেওয়া গেল।

এদেশে ভুল্যকপে বিবাহ বিধান ব্য-
তী ১৯২০ এত অনিষ্টের কারণ হইল,
এমন এত প্রখ্যাত উদাহরণ দিয়া এইকণ
নয় ১৭। উচিত যে, জ্যেষ্ঠ কান্টনরা

১৬ই মার্চের স্থাবর বিবাহ, অধি-
১৭ই মার্চের, কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৮ই
১৯ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২০ই
২১ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২২ই

২৩ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৪ই
২৫ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৬ই
২৭ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৮ই
২৯ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩০ই

৩১ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১ই
২ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩ই
৪ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৫ই
৫ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৬ই

৬ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৭ই
৭ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৮ই
৮ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৯ই
৯ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১০ই

১০ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১১ই
১১ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১২ই
১২ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৩ই
১৩ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৪ই

১৪ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৫ই
১৫ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৬ই
১৬ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৭ই
১৭ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৮ই

১৮ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৯ই
১৯ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২০ই
২০ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২১ই
২১ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২২ই

২২ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৩ই

প্রতি বিচার একটি প্রধান প্রতিষেধক
হইয়াছে। তাহার কারণোপাধিকার
কুসংস্কারিত আচার্য হইলেন মনে করিয়া
অন্য হইয়া পাঠ্য। অন্যসের বিচারিকা
দেখন দুইটি, কনিষ্ঠ বিচারিকা সেকণ নহে।
তাঁহারা অতি সহজেই কুক্রিয়, ব্যা-
প্য হইয়া উঠেন। অপর, তৃতীয় কনিষ্ঠ
মধ্যে বাহারা কেবল কনিষ্ঠ, কনিষ্ঠ
নিগমকেন্দ্র নামা প্রভুর অধীনস্থ হইয়া
নানা প্রকারে স্বতন্ত্র হইতে ও
নানা প্রকারে ভেদ করিতে হয়।

আমরা উপরে যে বিধি বিধানের কথা
কহিয়া তাহা বিধিবদ্ধ হইলে কেবল
যে দেশের নীতি ও কনিষ্ঠ বিচারিকগণে
র সংস্কারিত নিবারণ হইবে এবং
নহে, যখন নীতি কনিষ্ঠ নিবারণ। অত
এই দেশের সমান কনিষ্ঠ হইতে না প।

নিগম বিচারিকা হইলে হইবে।
১৮ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ১৯ই
১৯ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২০ই
২০ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২১ই

২১ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২২ই
২২ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৩ই
২৩ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৪ই
২৪ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৫ই

২৫ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৬ই
২৬ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৭ই
২৭ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৮ই
২৮ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৯ই

২৯ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩০ই
৩০ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩১ই
৩১ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩২ই
৩২ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩৩ই

৩৩ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩৪ই
৩৪ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩৫ই
৩৫ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩৬ই
৩৬ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩৭ই

৩৭ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ৩৮ই

কহিতেছেন। কিন্তু যে দেশের
লোকের জীবন কুসংস্কারিত

পূর্ণ হইয়া রহিয়াছে, তাহার
ন কর। আর না করা সমান।

ইন কনিষ্ঠ এদেশের নীতি
অনিষ্ট কনিষ্ঠে উৎসাহ
কে আশ্রয়িত (কনিষ্ঠ)

হইবে, তবে কাজ হইবে।
দেশের শাস্ত্রীয় নিয়ম লক্ষ্যে

বিবাহের, আইন একটি হইবে
পাঠের যে কণ সম্ভাবনা,
লও সেইকণ সম্ভাবনা।

কিন্তু, তাহা হইতে
যদিবার সম্ভাবনা আছে, এতলে তা হইবে
রও বিবেচনা করা আবশ্যিক।

শাস্ত্রীয়
নিয়ম লক্ষ্য করিলে কনিষ্ঠ
পরে। এক, যৌবনগেব শাস্ত্রীয়
এই, তাহা দিগত শাস্ত্রীয়

বায় জন্মবে। শাস্ত্রীয়
১৯ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২০ই
২০ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২১ই

২১ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২২ই
২২ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৩ই
২৩ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৪ই
২৪ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৫ই

২৫ই মার্চের কনিষ্ঠ কান্টনর অংশ ২৬ই

মরা দ্বিতীয় অনিষ্ট নিবারণের একটি উপায় কহিয়া দিচ্ছে, অনুসরণ করিলে কোন বিষয় জন্মিলে সম্ভাবনা থাকিবে না । এবিষয়ের নিমিত্ত একটি সভা করিয়া যাবতী সুনীলার ও তালুকদার প্রভৃতিকে তথায় নিমন্ত্রণ করা হউক, তাঁহারা সকলে একবাক্যে চেষ্টা এই আবেদন পত্র স্বাক্ষর করিয়া যথাসম্ভব সমস্ত অর্পণ করুন । এইরূপে কায্য পরিচালনা যদি উহা বিধিবদ্ধ করা হয়, গবর্ণমেন্ট আমাদিগের সামাজিক আচার ব্যবহারাদি বিষয়ে হস্তক্ষেপ করিয়া অনুচিত কার্য করিলেন বলিয়া লোকের বিদ্বেষ জন্মিবার যে আশঙ্কা করা হইয়াছে, তাহা সর্বত্রই নিরাকৃত হইবে । সকলের সম্মতি হইয়া কাজ করিলে তাহাতে বিদ্বেষ জন্মিত হইবে না । এতদ্বারা আর একটি উপকার লাভ হইবে । ইংলণ্ডের লোকেরা যাহার নলে রাজত্ব সম্বন্ধে স্বাধীনতা মান করিয়াছেন, গবর্ণমেন্টের প্রজার সম্মতি প্রাপ্ত পূর্বক কায্যানুষ্ঠান কপ সেই স্বতন্ত্রতায় আমাদিগের হস্তগত হইবে ।

দ্বিতীয়, প্রস্তাবিত পাণ্ডুলেখের এক প্রাণে লিখিত হইয়াছে, কোন ব্যক্তি তাহার পিতার মৃত্যুর পর যদি ধন্যত্বের অংশ গ্রহণ করে, সে আপনার পৈতৃক বিষয়ের অধিকার অধিকারী হইবে, অপব্যক্তি তাহার পিতার আশ্রিত পরিবারদিগের তত্ত্বাবধানে থাকিবে । এবিধ বিধিবিধান এ দেশীয় শাস্ত্র ও যুক্তির নিষেধ বিরুদ্ধ । হিন্দুশাস্ত্রানুসারে হিন্দুধর্মপরিভ্রমণী পৈতৃক ধনে অধিকার নাই । যুক্তি বিরোধ এই, যে ব্যক্তিকে পৈতৃক ধনে অধিকার দেওয়া হইল, সে সমুদায় ধনের অধিকারী না হয় কেন ? অন্য অন্য পরিবারের প্রাসাদাদান দিবার নিয়ম বিধান দ্বারা চরিতার্থতা লাভ হইতে পারে ।

তৃতীয়, প্রস্তাবিত আইনকে প্রতিকার করিয়া তাহার রেজিষ্টারী কী প্রভৃতির যে প্রস্তাব করা হইয়াছে, তাহাও যুক্তিসং

হইতেছে না । উহা দ্বারা অত্যাচারের আর একটি পথ সৃষ্টি করা হইবে ।

হাইকোর্টের জজদিগের দ্বারা
বাঙ্গলায় অনুবাদ করিবার
অবশ্যকতা ।

অতি অল্প দিন হইল, সদর ও সুপ্রিম কোর্ট একত্র হইয়া হাইকোর্ট নাম প্রাপ্ত হইয়াছে । এত দিন সদর আদালতে এই নিয়ম ছিল (আজিও উহার পরিবর্তন হয় নাই) জজেরা আপনাদিগের দ্বারা আপনারা ইংরাজীতে লিখিতেন, তাহাদিগের সেই দ্বারা উদ্ভূত অনুবাদিত হইয়া মকদ্দমের আদালতের গোচরার্থ স্থানে স্থানে প্রেরিত হইত । বাঙ্গলা বিচার প্রভৃতি সমুদায় প্রদেশেই এই নিয়ম ভুলক্রমে অনুসৃত হইত । কিন্তু অনুবাদন করিয়া দেখিলে এ নিয়মটা কোন ক্রমেই ব্যর্থমানুষ্য নহে । বাঙ্গলা দেশে বাঙ্গলা ভাষা চলিত, সেখানে উদ্ভূত ভাষায় রূঢ় অনুবাদ প্রেরণ । সে কি প্রকার যুক্তি : বাঙ্গলা একটি স্বতন্ত্র প্রদেশ নহে । ইংলণ্ডে চারি কোটি দশ লক্ষ লোকের বাস । সমুদায়ে উনচল্লিশটি জেলা আছে, তন্মধ্যে কেবল বিহার, পাটনা, ব্রহ্মপুত্র, তামিলপুর, দিল্লি, মাদ্রাস প্রদেশ এই কয়টি জেলায় হিন্দি ভাষা প্রচলিত আছে । উদ্ভূত ভাষা জজদিগের দ্বারা অনুবাদে চারি কোটি দশ লক্ষ লোকের কাজের সহজ ও সুবিধার নিমিত্ত হইয়া থাকে : প্রভৃতি উহা লোকের কষ্ট ও অর্থ ক্ষয় একটা প্রধান কারণ হইয়া উঠিয়াছে । এ দেশের লোকে উদ্ভূত ভাষা নেন না, তাহার এ দ্বারা সুবিধার প্রয়োজন হয়, তাহাকে তন্নিমিত্ত অর্থ ব্যয়, ক্রেশ ও অনোর অনুকূল্য করিতে হয় । অপর, গবর্ণমেন্ট ব্যয় করিয়া যে উদ্দেশ্য এই রূপের অনুবাদ মকদ্দমের সর্বত্র প্রেরণ করিয়া থাকেন, তাহারও ব্যর্থতা জন্ম

তেছে । যে ভাষা সকলেই বুঝে, ও যে কোন কাজ করিয়া সমর্থ হইতে পারে, অতীত কল লাভের সম্ভাবনা নাই ।

সদর আদালত ও শরীয়াত আদালত করিয়াছেন । ইহা এক্ষণে হাইকোর্টে পরিণত হইয়াছেন । আজিও কি উদ্ভূত ভাষা অবিদ্যাকারিতা দ্বিতীয় যুক্তিবিরুদ্ধ বিধির অপরিবর্তিত থাকিবে : সদর আদালতের বেহ পরিবর্তের সম্বন্ধ কি ইহার পরিবর্ত হইবে না । হাইকোর্ট এই বিষয়ের পরিবর্ত করিয়া বিস্তৃত বাঙ্গলা ভাষায় অনুবাদ প্রথা প্রবর্তিত করেন, সেই অনুরোধ করিবার নিমিত্তই অন্য আমরা এই প্রস্তাবনা করিয়াছি । হাইকোর্ট প্রতিষ্ঠিত হওয়ার পরে এ দেশের অনেকগুলি সৌভাগ্যলাভ হইয়াছে, আরো অধিক সৌভাগ্য লাভের সম্ভাবনা আছে । এই আদালতের এ দেশকে সর্বতোভাবে উন্নত করিয়া ফুলিবারই চেষ্টা ; কিন্তু যে দোষ গুলি এই চেষ্টার অন্তরায় হইয়া রহিয়াছে, তাহা সংশোধন ব্যক্তিরূপে উহা সকল হইবার সম্ভাবনা নাই ।

জজদিগের দ্বারা বিস্তৃত বাঙ্গলায় অনুবাদ করিবার প্রথা প্রবর্তিত হইলে দুটা মহোপকারলাভ হইবার সম্ভাবনা আছে : প্রথম, সহজে গবর্ণমেন্টের উদ্দেশ্য সাধন হইবে । এ দেশের সকলেই অনায়াসেই লিখিত অনুবাদ বোঝে সমর্থ হইবেন । দ্বিতীয়, উহা বাঙ্গলা ভাষায় জিজ্ঞাসা সাধনের একটি প্রধান উপায় হইবে । যে ভাষা আদালতের ভাষা হয়, অর্পকরী বলিয়া তৎসম্বন্ধে লোকের সম্মতিক্রম হইয়া থাকে । এই উদ্দেশ্যেই লাভ হাতিয়া এক শত এক বাঙ্গলা পাঠশালার প্রতিষ্ঠা ও এই প্রতিষ্ঠা করেন, যাহারা বাঙ্গলা ভাষা সুশিক্ষিত না হইবেন, তাহাদিগকে কর্ম দিবে না । কিন্তু উহা গবর্ণমেন্টের অন্য অন্য অনেক বিবিন্নী প্রতিষ্ঠার দ্বারা কল প্রসব করিবার পূর্বেই বিশীর্ণ হইয়া যায় । যে কোন উপায়ে হউক, বা

এ তাহার জীবিত সাধন যে পঞ্চমে
এ একটি কর্তব্য কর, বোধ হয়, তাহা
আমাদিগের রাজপুরুষদিগের অনেকেই
বীকার করিবেন। উইলিয়ম "দি কন্সট্রাক্টর"
ইংলণ্ডে ইংরাজী ভাষা বিলুপ্ত করিয়া
করাণী ভাষা প্রচলিত করিবার যে রূপ
চূর্ণমোক্ষ করিয়াছিলেন, আমাদিগের
রাজপুরুষদিগের মধ্যে সেইরূপ চূর্ণমো
ক্ষশালী কেহ আছে, একপ আমাদি
গের বোধগম্য হয় না, যদি থাকেন; তাঁ
হারা সংখ্যার নিত্য অপ সন্দেহ নাই।
একণে আদালতে যে ভাষা প্রচলিত আ
ছে, তাহা এক অদ্ভুত ভাষা। ডাক্তারী
উষধের ম্যায় একাধারে সমুদায় তাহাই
আছে। রসায়নের সহিত ঐ ভাষার সা
ম্যাক্রিয় করিলে বোধ হয় সমধিক সমস্ত
হয়। সংস্কৃত, আরবী, পারসী, বাঙ্গলা ও
ইংরাজী, ইহার যে ভাষা উহাতে দেখিতে
চাও তাহাই দেখিতে পাইবে। উহা যে
কেমন ভাষা, আমাদিগের রাজপুরুষেরা
যদি বুঝিতে চান, সংক্ষেপে এই মাত্র
বলিলেই পর্যাপ্ত হইবে, বহু অনুসন্ধান
করিয়াও সাত হাত দীর্ঘ এক খানি রূব
কারির মধ্য হইতে সাতটা সমাপিকা ক্রি
য়া বাহির করা ভার।

দেখ কেহ একথা কহিতে পারেন,
মুন্সের প্রকৃতি কয়েকটি প্রদেশে হিন্দী
প্রচলিত, অতএব কেবল বাঙ্গলা ভাষায়
রায় অনুবাদ করিবার নিয়ম করিলে তাহা
দিগের সুবিধা হইবে কেন? ইহার উত্তর
হলে আমাদিগের বক্তব্য এই, হিন্দী ভা
ষায় রায় অনুবাদ করিবার নিমিত্ত ২।১
ব্যক্তি নিয়োজিত হউন। কিন্তু ৩৯টি জে
লার মধ্যে মুন্সের প্রকৃতি সাতটির সুবি
ধার নিমিত্ত বক্তব্যটির অসুবিধা ক
বুঝি নিকি হয় না। সেই সাতটিতেও উক্ত
ভাষা চলিত নহে। এ স্থলে আর একটি
বক্তব্য এই, যদি হিন্দী ভাষা প্রবর্তিত
হয়, দেওয়ানগর অক্ষরে যেন তাহার অনু

বাদ প্রথা আদৃত করা হয়। এখন যে
উক্ত ভাষা লিখনে পারসী অক্ষর ব্যবহার
আছে, তাহা আদরণীয় নহে। পারসী
অক্ষরগুলি লিখন পঠনে সহজ নহে।
উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের কথা তুলিয়া কোন
আপত্তি করা এখানে যুক্তিসহ হইতেছে
না। আমরা উপরে যে হাইকোর্টের প্র
সঙ্গ করিলাম, ইহা বাঙ্গলা দেশেরই। উ
ত্তর পশ্চিমাঞ্চলে বর্ত্তমান হাইকোর্ট প্রতি
ষ্ঠিত হইবে, ইহা স্থির সিদ্ধান্ত আছে।
তাহা হইলে তথায় সে দেশীয় ভাষা প্রচ
লিত হইবে। সে অনুসারে এ হাইকোর্টে
বাঙ্গলা ভাষা প্রচলিত করিবার বন্দা জন্ম
তে পারে না।

—২৭—

ভারতবর্ষীয় রমণীগণের চরিত্র

মোচনের উপায় কি।

আমরা আজ একখানি প্রেরিত পত্র
পাঠকগণের গোচর করিতেছি। পাঠ করি
লে আমাদিগের ন্যায় পাঠকগণও পবন
প্রীতি লাভ করিবেন। ইহা এক জন বি
দ্যাবতী স্ত্রীলোকের লিখিত। বোধ হয়,
তাঁহাকে অনেকেই জানেন, আমরা তাঁহাকে
বিশেষ রূপে জানি। তাঁহার বাঙ্গলা লিখি
বার বিলক্ষণ ক্ষমতা আছে। অনেক পু
রুষে যেমন স্ত্রীলোকের নাম দিয়া আপ
নাদিগের লিখিত পত্র সমগ্র পত্র প্রচার
করিয়া থাকেন, ইহা সে রূপ নয়। ইহা
যথার্থই কোমল কর হইতে বিনির্গত
হইয়াছে।

যিনি এই পত্র লিখিয়াছেন, তাহার
স্বামী ও তাঁহার স্বামীর এক বন্ধু উত্তরে
মুন্সেরে গিয়াছিলেন। তথা হইতে তাঁহার
স্বামীর বন্ধু ঐ স্থানের বর্ণন করিয়া তাঁহাকে
এক পত্র লিখেন। প্রস্তাবিত পত্র খানি তা
হাওই প্রকৃত।

মহত্বঃ করণে—

মহাশয়ের সমগ্র লিপি খানি প্রাপ্ত
ইহা পরম্পরায়িত হইলাম। হায়! লিপি

খানি পাঠ করিতে করিতে যে ক্ষণ মনোপাত
হইল, তাহা আর কি লিখিব। মহাশয়! জা
নি না সে আনন্দাশ কি বিবাহাঙ্ক। আপ
নায় মুন্সেরে গিয়া নানা প্রকার রমণীয় পদ
সকল দর্শন করিয়া চব্বৎ ও অনিচ্ছনীয়
আনন্দলাভ করিতেছেন। শিব বাবু! আ
নন্দ! দেখিতে তো পাইতে না, মন্তব্যের এক
টা আশা থাকে, তাহাও আশার ভেদ নাই।
এ সকল বিষয়ের আশার মূলোচ্ছেদন আনন্দ
নেত্র কে করিয়ছে? ও! আর লেখনা
চলে না। আমরা এত পরাধীন যে আশা
যাহাকে বলে তাহাও কবিত্তে পারি না, ও
কেন কেন একটা বিষয়ের আশা করিয়া না
হই যেন তত্ত্ব হইতে কে নলিয়া উঠে
বলে। পদাধীন, চেষ্টা, এ প্রকার বহু বিধ
যেব আশাকে মনে স্থান দিও না, যে কেহ
এমন অসহন ক্রমে ক্রমিত হইয়া
হই পিতা। আমাদিগের শিক্ষাবদ্ধা কলি
য়া রাশিয়ার ভ্রমটি কি তত্ত্ব করিয়াছ। মাত
দুখি। তোমার এই তথ্যিনী চরিত্রটি
গের প্রতি মনো হইয়া কিম্বা নিম্নত স্থান
প্রদান কর, খামবা তথ্যের গিয়া আশ্রয়িত
করি, বহুলা আনন্দ করিয়া, নিত্য হই
তমস্ত হইয়াছে। পত্রম্ ন্যায়বান সঙ্গ
এ পত্রম্ ন্যায়বান সঙ্গ এ এসকল
বহুলা হইতে তথ্যের দ্বারা কর। পিতা! আ
মাদের নানব বহুলা তত্ত্ব করিতে পারেন,
এ পুণ্ড্রীতে তত্ত্ব মনো একটা মাই (আ
নন্দ হইয়া গিয়া সংসার) যদিও তুমি মনের
মনস্তা সমস্তই অবগত আছ তথাপি না
বলিয়া চুপ করিয়া থাকিতে পারি না, অতএব
তোমার নিকটে কিছু কাহ রোমন করিয়া
মনের বহুলাকে কিঞ্চিৎ লঘুত্ব করিবার মন
ও করিয়াছি, ইহা বাতীত আমাদিগের অন্য
উপায় নাই। পিতা! না হই তোমার কিমন
মুন্সকে নীচ প্রেরণ কর, আমাদিগকে এসকল
হইতে উদ্ধার করিবার উপায় তিনি তা
জানেন।

শিব বাবু! হায় বোধে অশ্রু বিস্তার
একটা কবিতা পাঠ করিয়াছিলাম, তাহার সর্ব
শেষে লিখিত হইয়াছে "অশ্রুের শেষ জা
করী করা" কবিতাটি প্রকৃত রচিত, যদি অ-

অশেষীয় কোন রমণী স্ফিট হইবে, তাহা হইলে তিনি অবশ্যই বলিতেন যে "তুমি খের খের এই হস্তাঙ্গা, মেয়ে নারীকে জগৎ গ্রহণ করিয়া, সমস্ত জগৎ এক এক বার ঘুরে ঘুরে যে পাকিতে শিখিয়াছিলান কেন, যদি পাকিতে না, পারিতাম তহা হইলে নানা প্রকার হস্তাঙ্গা জানিতেন ও পরিভাষা না, তাহা নারী হস্তাঙ্গা হইত না। মন একপ্রকার পশুর ন্যায় হইয়া থাকিত কোন কোন অশেষীয় করিতে পারিতাম না। কেন হইতে মুক্ত হইবার কক্ষ তাহা জানেন নাই কেনে কেন বলিয়া যোগ না, জ্ঞান তাহাদের পক্ষে কত সুখকর বিবেচনা করিয়া দেখুন! মন-মগ্ন। অশেষীয় নারী প্রাণী লোক শাস্ত্র কেবল জ্ঞান করে? এটি থাকে তব লিখিত, তাহা হইলে পাকিত হইতাম না। যদি কিছু প্রকৃত হইতে পারিত। আমনি লিখিতের অন্তর। "এই লিখিত কবিতা? কি প্রকার বিষয়। কবিতার, এম, জ্ঞানিত পারিতা কি স্বীয় কথার লিখিত হস্তাঙ্গা কবিতা পারিত না তাহা জানি। কবিতা উল্লেখ কেন সন্দেহে বিবেচনা করিয়া হইল। অতএব মন। এত উত্তর হইত না, বিবেচনা করিয়া দেখ এ বস্তু বা বস্তুবিন ভোগ করিত হইত। তব বিলাপ করিয়া কেন বস্তু বা বস্তু, তুমি কি জ্ঞান না যে যাহার নবট বিলাপ করিতেছে তিনি এই হস্তাঙ্গা জ্ঞানের পুঙ্কল জ্ঞান। তিনি তো হস্তাঙ্গা যে লিখিত হইতেন তাহা কি প্রকারে জানিত পারিলে? জ্ঞান হইলে তুমি যে যদি তাহার দ্বারা হস্তাঙ্গা হইতেন, তবে হস্তাঙ্গা গীত কেন এত করে ভোগ করিতে হইত না। তাহার দ্বারা হস্তাঙ্গা কেন? তাহাদের চাকরাপের দ্বারা, সত্যের কক্ষ জানারালে চলিয়া যাইতেছে। তাহারা আমাদের জ্ঞানকে চেষ্টা কেন করিবেন? যাহা হইল জ্ঞান তাহা লিখিয়া শিব বাবুকে কষ্ট হইল। মন মন নিভাঙ্গ অশেষীয় হস্তাঙ্গা এ প্রকার বস্তু একপ্রকার লিখিয়াছি। যাহা হইল, গীত বাহা জ্ঞান মোক কমা করিবেন। নিবেদন উক্তি।

মন ১২৩৯।

১ জ্ঞান।

বাস্তবিকতা :

এই পত্র প্রীলোকে লিখিয়াছেন বলি। রা আমরা এক কালে ভাব গলিয়া যাই নাই, আমাদিগের দেশের প্রীলোকে রা মুখ, সেই মুখ সত্যের এক জন বাসনা ভাবার স্বার্থ রীতির অনুসারে এক পত্র লিখিতে পারেন, এ ভাবিত ও গলাফ হই নাই, আমাদিগের এত সঙ্কট হইবার কারণ এই, এই সংকট পত্রমাধ্য অশেষীয় প্রীলোকে হস্তাঙ্গা ও পরাধীনতার বিষয় সবিস্তর লিখিত হইয়াছে।

"তারতবর্ষীয় রমণীগণের হস্তাঙ্গা" মোচনের উপায় কি? বলিয়া আমরা উপরে যে প্রস্তাব উপস্থাপন করিয়াছি, এতৎ পত্র জাতি তাহা ও উত্তর ও সিদ্ধান্ত করা হইয়াছে। বাহ্যিক কারণ প্রীলোকে বিদ্যা শিক্ষাই সেই উপায়। রমণীগণের বিদ্যা শিক্ষা হইলেই তাঁহারা আমাদিগের হস্তাঙ্গা বিষয় বুঝিয়া পাবিবেন, বুঝিতে পারিলেই তৎ প্রীলোকে বিষয় সবিশেষ চেষ্টা করিবেন। উল্লিখিত পত্র মধ্যে পত্র রচনা কারিণীর যেকোন মনের ভাব ব্যক্ত হইয়াছে, মুখিক প্রত্যবে যদি অধিকাংশ প্রীলোকে মনের ভাব এইরূপ হয়, আমরা কি আর আমাদিগকে সন্তুষ্ট শোচনীয় অবস্থার রাখিতে সন্ধ্যা হইবে? তখন তাহারা আমাদিগের হস্তাঙ্গা মোচনের উপায় আপনাই করিয়া হইত। পরিবেশ।

আমাদিগের প্রীলোকে যদি চির কাল অজ্ঞানতাকারে আচ্ছন্ন হইয়া থাকেন, আমরা যত আমাদিগের হস্তাঙ্গা করি না কেন, আমরা যত আমাদিগের উন্নতি সাধন চেষ্টা করি না কেন, আমরা যত আমাদিগের মুখ স্বাক্ষর করিয়া দিবার চেষ্টা করি না কেন, আমরা যত আমাদিগের স্বাধীনতা প্রদানের চেষ্টা করি না কেন, তাহারা কোন ক্রমেই মুখ হইবেন না, এতদ্বারা আমাদিগের সেই সেই স্বাধীনতা কেবল অশেষীয় লিখিত হইবে।

আমাদিগের প্রীলোকে

লে কেবল যে আমাদিগের, মুখ হইবে একপ মনে, ও পরম সৌভাগ্যশালিনী হইয়া ও আমাদিগের দেশের যে অতীত দুর্ভাগ্যের হস্তাঙ্গা না, আমাদিগের গণের মুখ হইবে তাহার একটি প্রথম ও জাতি সমস্ত আচার ব্যবহার আচার স্থল হইয়া থাকেন।

পাকিত হইল বিক্রম ও মন
চরলস উড।

কেন ক্রমে তারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টে সহিত টেটাসেক্টোরির একটি অশেষীয় হস্তাঙ্গা উল্লেখ। অত্যা গবর্ণমেন্টে কিছু কক্ষ করেন, সর চারলস উড সে সমস্তের প্রায় তম তম করিয়া বিবেচনা করেন, এবং প্রায় কিছু কিছু পরিবর্তন করিয়া থাকেন। কল্টাউবিল, তারতবর্ষীয় ব্যাঙ্কের সহিত বন্দোবস্ত, আর বাবের ফি সাব, এবং সম্প্রতি অগত পাকিত হুজি বিক্রম সংক্রান্ত আজ্ঞা ইহার প্রমাণ। সর চারলস উড এবিধ বাবহার করাতে তারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের স্বাধীনতা বাহ্যিক হইতেছে সন্দেহ নাই। স্বাধীনতার একপ বাবাহত কাকারও অতীত মনে। তারতবর্ষীয় সেই তারতবর্ষীয় শাসন ক্রিয়া সম্পন্ন হইয়াছে। একান্ত প্রার্থনীয়। মুক্তিও এই কথা বহিরা দিতেছে। কিন্তু অনুধাবন করিয়া দেখিলে তাহার এই হস্তাঙ্গা দুই একটি বিষয় ব্যতিরেকে আমাদিগের অনর্থের নিমিত্ত হইতেছে না। অধিকাংশ যাহা হইয়া দেখা যাইতেছে, তারতবর্ষীয় হস্তাঙ্গা তাহার উদ্দেশ্য। তিনি যে এইরূপে হস্তাঙ্গা করেন, তাহা করণ কি? নিরবস্থির প্রত্যক্ষ প্রদর্শন কি তাহা উদ্দেশ্য : তাহা হইতে তাহার কথাগুলি তারতবর্ষীয় বলাগক হইত না। আমাদিগের এত অজ্ঞানতা

রই অধিক প্রাপ্ত্যাব, অত্যা
ই প্রাপ্ত্যাব পরাধীন হয়ে
ন, সর চার্লস উড এইরূপ মনে

টের কাছের এত অনুসন্ধান করিয়া
। যাহা হউক, যৎপ্রসঙ্গে এই
উপস্থিত হয়েছিল, এক্ষণে তাহার
রণা করা যাইতেছে।

লুড কানিও ১৭ই অক্টোবর গাংটী
ভূমি এতি একর (৩ বিঘা) ২১০
টাকার হিসাবে বিক্রয় করিবার অনু
তি দেন (আমরা তৎকালে ইহার নি
মাবলি প্রকাশ করিয়াছিলাম, এক্ষণে
তাহার পুনরুন্মেষের প্রয়োজন নাই) সর
চার্লস উড এক্ষণে তাহার কয়েকটি বি
লো নিয়ম করিয়া দিতেছেন। তিনি বলেন
ন, পর্বতের উপরিস্থ, নদী তীরস্থ ও পুন্ড
রের ভূমির অনেক বৈলক্ষ্য আছে। সক
ল ভূমি একবিধ মূল্যে বিক্রীত হইতে
পারে না; যে ব্যক্তি প্রথমে আবেদন
করিবেন, তিনিই ভূমি পাইবেন এ নিয়
মও ন্যায়ানুগত নহে; আর লুড কানিও
আজ্ঞা করিয়াছিলেন কোন পতিত ভূমি
মুত্তন জেতার হস্তগত হইলে যদি তাহার
পর কেহ সেই ভূমিতে তাহার স্বত্ব আছে
বলিয়া আপত্তি করেন, তাহাকে এক বৎ
সরের মধ্যে আপন স্বত্ব সপ্রমাণ করিতে
হইবে, স্বত্ব প্রমাণ হইলেও তিনি
পুনঃপ্রাপ্ত হইবেন না, তাহাকে তাহার
মূল্য দেওয়া হইবে এইমাত্র। সর চার্লস
উড এই আজ্ঞা রহিত করিয়াছেন। তিনি
বলেন অন্য অন্য ভূমির ন্যায় এসকলেরও
স্বত্বান্ত্র মিথ্যার্থ ১২ বৎসর মিয়াদ দেওয়া
কর্তব্য; আর সেই ভূমিতে অপরের স্বত্ব
আছে এক্ষণে প্রমাণ হইলে ইচ্ছা হয় তিনি
মূল্য লইবেন নতুবা ভূমি লইবেন। সর
চার্লস উডের মতে লুড কানিওর উক্ত
আজ্ঞা প্রচলিত আইন ও যুক্তির বিরুদ্ধ।
সকল ভূমি বিক্রীত হইল; তিনি

মতীল করিয়া নিজ স্বত্ব প্রমাণ করিলেন,
তাহাকে মূল্য লইতে বলা হইল, কিন্তু
তিনি তাহাতে অসম্মত হইলেন, এক
মহলে বিচারপতি তাহার ভূমি পড়াপ
করিবার আজ্ঞা না দিয়া আর কি আশ্র
দিতে পারেন? সর চার্লস উড এইরূপ
এ বিদ্যে যে কথা গুলি কহিয়াছেন,
সকল ভূমি ভবিষ্যে সেক্ষণে বস্তু
নিষ্পত্তি হইরূপে ব্যক্তিগতভাবেই তাহা অথ
ও নীয় জ্ঞান করিবেন সন্দেহ নাই।

সেন্ট সেক্রেটারি আরো বলেন, সেন্ট
নকট গাংটীর সকল স্থানের ভূমির তার
তমা বিবেচনা করিয়া একটি মূল্যক
মূল্য স্থির করিয়া রাখিবেন। যে ব্যক্তি
প্রথমে ভূমির জন্য আবেদন করিবেন,
তাহাকে করিপেবসার প্রমাণ দিতে হইবে।
পরে নিকটবর্তী গ্রাম সত্ত্বের প্রকাশ
স্থানে এক সোয়ণা পত্র দেওয়া হইবে।
এইরূপে তিন মাস অতীত হইলে পর যদি
পলীগ্রামের কেহ কোন আপত্তি না ক
রেন, তাহা হইলে ভূমি নীলামে বিক্রীত
হইবে। নিকটবর্তী মূল্যে মূল্যে তাহা বি
ক্রীত হইবেন। প্রথম আবেদনকারী ব্যক্তি
নীলামে ক্রয় করিতে অপারগ হন, তাহা
হইলে যে ব্যক্তি ক্রয় করিবেন তিনি প্র
থম আবেদনকারির প্রদত্ত জমিদার
প্রদান করিবেন।

সর চার্লস উড আর এক স্থানে বলেন
যাহাতে অধিক সংখ্যা ইউরোপীয় এদেশে
বাস করেন, ইচ্ছা তাহার সম্পর্ক ইচ্ছা, কিন্তু
তিনি তন্নিমিত্ত দেশস্থ লোকের স্বত্বানি ক
রিতে অতিলাভী নহেন। "আসাম প্রভৃতি বন্য
ভাষী লিগের অর্পণ আপন পৈতৃক ভূমি
র উপর অতিশয় মায়া আছে, তাহাদিগের
ভূমি ইউরোপীয়দিগকে দেওয়া অন্যায়।
একপ স্থানে ইউরোপীয়দিগের বসতি হই
লে গবর্ণমেন্টের সহায়তা হওয়া দুরূহ থাকু
ক, তাহাদিগের নিমিত্ত অপরিমিত ব্য
য় কবিত্ত হইবে।" তিনি আরো এক স্থানে

লিখিয়াছেন "কবিত্ত সত্ত্ব বা কিলেই
গবর্ণমেন্টের স্বার্থ মঙ্গল।" শেণোক্ত বা
কাটা স্বর্ণময় অক্ষরে ভারতবর্ষীয় সত্ত্ব গু
ণের ভিত্তিতে লিখিয়া রাখাই বর্তব্য।

লুড কানিও লুড হোলডাস সত্ত্ব
মূল্যে পড়িয়া তাহাদিগের সন্তোষ সাধন
থ ৭ই অক্টোবরের আজ্ঞা প্রকাশ করে
ন। ভারতবর্ষীয়দিগের স্বার্থের প্রতি তৎ
কালে তদৃশ দৃষ্টি ছিল না। সর চার্লস
এ আজ্ঞা রহিত করিয়া উত্তম কার্য করিয়া
ছেন। ভারতবর্ষী। গবর্ণমেন্ট ব্যবস্থাপক
সত্ত্ব উক্ত বিধিবদ্ধ না করি ও সর চা
বলস উডের মত না লইয়া কাছা আরক্ত
করির ভুল করেন নাই। অল্প মূল্যে
ভূমি ক্রয় করিয়া তাহাতে আবার অধিক
মূল্যে বিক্রয় করিয়া ব্যবসায় করা অ
নেকের ইচ্ছা। সর চার্লস উড তাহা
বুঝিতে পারিয়াছেন। "তাহা ভারতবর্ষীয়
গবর্ণমেন্টকে প্রতিজ্ঞাতকারী ও অসম্পূ
বালিয়া গুলি দিয়াছিলেন, তাহারা পাসিত
ভূমি বিক্রয় সর চার্লস উডের অনুমো
দিত, এসব মূল্যগাও বোধ হয় তুচ্ছ হই
বে।" তাহাদিগের অসন্তোষ জন্মিবার
কারণ এই, সর চার্লস উড এদেশ
গের স্বার্থ উপেক্ষা করিয়া কেবল
দিগের স্বার্থ সন্ধান করেন নাই

বিবিধ সংবাদ।

১০ই ডি. সে.ম.প্রকাশ।

নড়াইল হইতে এক ব্যক্তি লিখিয়া পাঠা
ইয়াছেন, তদ্রূপে চোট আদালতের জজ
অনু বঙ্গ, অনাথ প্রভৃতির চুঃখ বিবরণ ও
সাধারণ নানার্থ একটি সতৃপায় বর্ননাব আশ
য়ে ২২ এ আবেদন এক সভা করিয়াছিলেন
একবিধ ও অন্যবিধ সাধারণ কল্যাণকর কার্যে
অর্থ ব্যয় করি ল কেবল যে অর্থ স্বার্থক হয়
একপ নহে, আপনাদিগের লেখা পড়া জ্ঞানও
সাধক হয়, অসার অপলার্থ মুখ্য বৃত্তিগে
পরে সমুদায় জীবনের উপার্জন ও বিদ্যা বি
সর্জন করা সুশিক্ষিত লিগের কর্তব্য নহ।

হাইও নামে এক জন ইউরোপীয় দিল্লী নামক টাকার হস্তি ২০০০ টাকা করিয়া জাহাজে এঁঠায়ে। সে খুঁজ হইয়াছে, আজি কালি ভাল কাঁচা কোম দল ভারি।

ইংলণ্ডীয় হাউস অফ কমন্স ও লর্ডসিঙ্গে র রাষ্ট্রকল পিতুল হুঁকার যে বাড়ি হয় তা ভারত লাভের জায় হইয়াছেন। কমন্সেরা কি আজিও লর্ডসিঙ্গের এত পিঠিয়া আছেন? এই নিমিত্ত কি আজিও তাহানিগের কখন এই নাম সূচিতেছে না?

নিম্ন প্রদর্শন গৃহে দর্শকদিগের সিকটে প্রত্যহ ৫২০০ টাকা উঠিতেছে অষ্টাদশ বা সপ্তদশ টকা থাকিলে আর ১০,০০০ টাকা উঠিবে সন্দেহ নাই। চিত্র ও নানা প্রকার কল, বিশেষতঃ বাঙ্গালী লোক প্রভৃতিতে দ্রাক্ষ প্রদান হইয়াছেন। ১৮৫১ অব্দে ইংলণ্ড মেম্বার বিনয়ে প্রাধান্য লাভ করিয়াছিলেন। প্রতিযোগিতার এই লাভ। কলিকাতার কবে নিম্ন প্রদর্শনের হস্তি হইবে? এ হস্তি হইলে যে একটি উন্নতির পথ হয়।

গবর্ণমেণ্টের অসুবিধায় যে সকল কলি প্রেরণ করিয়াছিলেন, তাহানিগের অনেকে বেতন না পাওয়া পলায়ন করিয়াছে। এই প্রদেশে একপ খটনা হইবার কোন নিশ্চয় কারণ আছে সন্দেহ নাই, তাহা আমরা আজিও জানি না পারি নাই?

লেন সাহেব অত্যন্ত পীড়িত হইয়াছেন। তাহার পলডাংগের নায় পীড়ার সম্মান ও নিয়োগ সকলে সুশীল হইবেন সন্দেহ নাই।

আসাম কোম্পানির গত সভায় থাকে, কাউন্স ওমনি সাহেবকে অধ্যক্ষ পদ হইতে বঞ্চিত করা হইয়াছে। অজ সাহেব (যিনি প্রথমতঃ থাকে ও কাটীরের নামে ডাকপেয় নামীয় করেন) ১৫০০ টাকা বেতনে এই কোম্পানির তত্ত্বাবধায়ক হইয়া জীহু ও কাহাকে বা উল্লেখ করেন। কোম্পানি ৩০ লক্ষ টাকার এক চার বাগিচা কয় করিবার প্রস্তাব করিতে অনেক অংশী প্রতিবাদ করিয়াছেন। অজ সাহেব যেমন পরিজন করিয়াছিলেন, তেমনি তাহার শীকার হইল ভাল, কিন্তু তাঁহাকে নিষ্পত্ত করা চা কোম্পানির পরামর্শসিদ্ধ কার্য হয় নাই।

হরকরা সংবাদ পাইয়াছেন রাও সাহেবে র কানী হইবার আদেশ হইয়াছে। কনল ব্রিষ্টলীকেও কমিসরিএটকমিসন হইতে হাকান হইয়াছে। উচিত কটন। তাহার কেবল স্বভাব, তিনি তৎপরের যোগ্য নছেন।

দিল্লীমেজেষ্ট বসেন, ফিরে জাহানের বে দুর্ভাগ্য হৈসন মার্টার ও তাহার সহচরেরা এক টি প্রীলোকের সত্য মর্মে করিয়াছিল আগার সেসিয়ন জজ তাহানিগের কলেক জনকে পাঁচ বৎসর ও অবশিষ্টকে দুই বৎসর মিয়ন দিয়াছেন। আমরা শুনিলাম হৈসন মার্টারের পাঁচ বৎসর হইয়াছে। একগে বলাৎকার রক্তাক্ত সভ্যতার আবাদিগের ক্ষতিগাচর হইয়া থাকে। অজিভেদিত্য কি সভ্যতার একটি সহচর ধর্ম।

উক্ত পত্র প্রবণ করিয়াছেন বাঙ্গালীতে ওলা উঠার প্রস্তুতি হইয়াছে।

আমরা আজাদিত হইয়া, হিন্দুপেট্ট-য়ট পেও অব ইতিয়ার লেন সাহেবের প্রাশংসার কারণ প্রসিদ্ধে পারিয়া লিখিয়াছেন “আমরা ভয়ভা করিয়া বড় দুই পারিয়াছি লেন সাহেবের বর্তমান বর্ষের চিন্তার মহারত করিয়াছি। কিন্তু আমরা দুঃখিত হইতেছি, তিনি গতবর্ষের ৫ কোটি টাকার অনুদান গোপন করিয়া অন্যান্য করিয়াছেন। বর্তমান পত্রে (অজ কারের পেট্ট-য়টে) আমরা ইহা উক্ত দোষারোপ করিয়াছি। তাহানিগের সকলেরই এই সিদ্ধান্ত করিয়া রাখা উচিত, কেও অব ইতিয়া প্রাশংসা অথবা নিম্না নত মূল্য জ্ঞানে করেন না।

এক জন হিন্দু উক্ত পত্রে লণ্ডন হইতে লিখিয়াছেন, বোম্বাই নগরের লোকেরা কণীটের নবাবের রাজ্য জিরিয়া দিবার যে আবেদন করিয়াছিলেন তাহিৎ লাত এলেন বরা কট ক্রি করিতে তত্ৰত্য লোকেরা তাঁহাকে কমা প্রার্থনা করিতে কহিয়াছেন। যিনি বা বহু আবাদিগের গবর্ণমেণ্টের উদ্যোগ করিয়া খেলা রোগ নাই।

লেন সাহেব সপ্রতি মর চার্লস উডের প্রস্তাবের স্বরূপ যে পুস্তক লিখিয়াছেন, তাহাতে তিনি তারতবর্ষের ধনাগারের জমি টাক প্রভৃতি জিরিয় লক্ষ প্রদর্শন করিয়া উপসংহার স্থলে কহিয়াছেন ৫ যদি আমার আ-

র সন্তোষের আবশ্যক থাকে তাহা হইবে, তাহা হইবে, তাহা হইবে, আমি খেঁচি তের না করিয়া কার্য করাবে বর্ষের বাবতীয় বুঝিমান লোক দীকার হেন যে তত্ৰত্য একজন রাজকার্যকার আমি নির্ভয়ে সাধুতা অবলম্বন পূর্ব করিয়াছি। আমি একথা বলিতে পাঁচবার পূর্বে কোন ক্ষতি এ প্রকার কার্যতে প যেন নাই, আমি বাহা করিয়াছি সত্যবিত বলিয়াও কহ যেন করেন ন লেন সাহেবের নিজের মুখে একথা তাহ নাইতেছে না।

টাকাপ্রকাশে বরিশাল হইতে এক জন খিরাচেন, তত্ৰত্য উকীল বাহু বিবেচন দার বয়ে তাঁহার বাগিতে রম্যপ্রদান বাবুর ন পার্শ্ব এক টানা হইয়াছে। ইহার মধ্যে ৮ টাকা উঠিয়াছে, রম্যপ্রদান বাবুর অর্থনৈতিক করা হইবে, সভা এখনও তাহা স্থি করেন নাই। এই টাকা তারতবর্ষের সভার কটে প্রেরিত হইক। হরিশ সমাজগৃহ নির্মিত হইলে তত্ৰত্যে রম্যপ্রদান বাবুর এক চিত্রিত প্রতিমূর্তি, আরও অধিক টাকা সংগ্রহিত হইলে তাঁহার প্রস্তর মূর্তি অর্থাৎ প্রতিমূর্তি করা কর্তব্য। হরিশ সমাজ গৃহকে আবাদিগের জাতি সাধারণ হৃত অর্থপার্শ্ব গৃহ করা কর্তব্য।

গবর্ণমেণ্টের ডকের দুপারিটেকা হইতে নিয়র বাইস সাহেবের কর্ম আবশ্যক হইতে হওয়াতে গবর্ণমেণ্টে ব্যয় সংকল্প হইবে এক কালে ৪০০০ টাকা পুরস্কার দিয় তাহাকে বিদায় দেন। কিন্তু এটিকে আবার ডকের কর্তৃপক্ষ অপর এক জন ইকিনিয়রে জন্য গবর্ণমেণ্টে লেখেন। তারতবর্ষের গবর্ণমেণ্টের মেরিগ সেক্রেটারি তাহানিগের পে মফতা করেন। একগে গবর্ণমেণ্টে জিজ্ঞাসা করিয়াছেন যদি এক জন ইকিনিয়রের বখ প্রয়োজন, তবে বাইসকে পদচ্যুত করা হই কেন? বাইস সাহেব একগে কিছু নকীতি করি সমুহের কার্য করিতেছেন। এটি আবার গবর্ণমেণ্টে তাহাকে পুরস্কা টাকা প্রদর্শন করিতে বলিয়াছেন কার জল কোথায় যবে

করিয়া তাহার অধ্যক্ষ্য প্রা-
হেন । তাহার অনুরোধ প্রাপ্ত করা

। দিনকর রাও তারতবর্ষের শাসন
সংক্রান্ত এক খাতি, কুর-পুস্তক মুদ্রিত
হল । হিন্দু পত্র বলেন, ডাঃ ৫০ কা
গুণ । দিনকর রাও প্রস্তাব করিয়াছেন,
জান্য টেন্ডার লক্ষ্য বিক্রয় করা উচিত
হয় । দিনকর রাও বাহা বলেন, ডাঃ
৫ পুস্তক গ্রহণ ও গ্রহণ করা কর্তব্য । তাঁ
নার রাজনীতিগত গবর্নর জেনারেলের
র অনুরোধ নাই ।

কুর-পুস্তক ইতিহাস তারতবর্ষের রাজস্ব
ও অপব্যয় করিবার বিষয়ে ক্রোধ প্র-
ণে মোহিতসময়ের টেন্ডার প্রাপ্য
র টেন্ডার প্রাপ্য হুতন তারতবর্ষের বা-
হ্য যে অন্যান্য ব্যয় হয় তাহার প্রতিবাদ
রা লিখিয়াছেন “ ইংলণ্ডীয় ব্যয়ে আমা-
র (তারতবর্ষের) রাজস্বের চতুর্থাংশ
প্রাপ্ত হইতেছে । আমরা যথা সময়ে যথা
ই ও তর তর হিসাব চাহি যাহা দ্বারা আ-
জানিতে পারিব, কিপ্রকারে প্রতিবৎসর
কোটি টাকা ব্যয়িত হয় । মহাসভার কো-
র্ডিওর হইয়া হয় না । যে ব্যবস্থাপক সভা
আমাদিগের উপর শতকরা চারিটাকা
টাক ধার্য্য করিয়াছেন, তাহারও কো-
র্ডিওর হইতেছে না, এই অবধি আমাদি-
গের খোল এই হইবে “ ইংলণ্ডের ব্যয়
আর তারতবর্ষের টেন্ডারটাক উঠাই-

৩ আমরা সর্বদা এ বিষয়ে আমাদি-
গের লোক ক এই সকল অপব্যয় নিবা-
রিত করিতে অগ্রসর করিয়াছি, কি
আমাদিগের কোন ক্রমেই নিষাৎ হইতে

১০ পত্র বলেন সরু রাস্তা বইগড়া
সরু সোনার কনাইরা ও অন্য অন্য প্র-
৫২ লক্ষ টাকা প্রাপ্ত হইয়াছেন কিন্তু তার
র গবর্নর আশানামিগের প্রাপ্য শত
১০ টাকা লইলে এখনও পত্রাবের ২০ ল-
ক্ষ অধিক থাকে । আমরা বাস্তব করি
করিতে পারি না । আমরা বাস্তব করি
করিতে পারি না ।

প্রকাশিত হইয়াছে, তিনকটি ভাড়াটাকে
তার রক্ষিত বেন্যা প্রাপ্য বখ করিয়া
হে । এ ভাড়াটায় দুই বিক্রয় করিয়া ৫০০ টাকা
আনিয়াছিল । তাহারই মোতে তাহাকে ঐ
বৈদ্যিণী ও তাহার আর এক উপপতি দুই জন
বখ করে । তাহার উভয়ে সেসিয়নে গমন
পরি হইয়াছে । বেন্যার পাণের আশয়, ঐ
দ্বানে পুলিশের সন্নিবেশ দৃষ্টি থাকে না কেন ?
১৫ তার শুক্রবার ।

তারতবর্ষের রেইলওয়ে কোম্পানি প্রকা-
শ করিয়াছেন, গতবার জল ও স্রোত রক্ষিত
রাতে তাঁহারা রাতি বোগে পায়াপারের ব-
ন্দীরা জাহাজ চালাইবেন না । তবে দুই নাই
রেইলওয়েই প্রাপ্য ব ছিল ।

রমাংশের ব্যয় হুতন হওয়াতে কানি
অর্থনীতির কণের আর একজন সেফটাইরি মনো-
নীত করিবার জন্য অন্য তারতবর্ষের সভা
গৃহে এক সভা হইবে ।

হরকরা প্রাপ্য করিয়াছেন কলিকাতার
ইউরোপীয় নাট্যশালা হইবে । আমা-
দিগের ও কথার ক.জ. কি ?

পত্রাবের দুই লেফটেনেন্ট জাকনের বিচা-
র মূলতানের সামরিক বিচারালয়ে হইতেছে ।
আমরা দেখিব কোন দ্বানে পরিচালিত হয় ।

শিপপ্রেরণী সভার পুরস্কার দেওয়া
হইয়াছে । আর ২৫০০০ ব্যক্তি দ্রব্য প্রদর্শন
করিয়াছেন । ৬১৫ ব্যক্তি মেডাল পাইয়াছেন ।
ইংলিষ্ট জিগের মধ্যে ৩২৮ জন ইংলণ্ডের
প্রজা ৩২৭ জন বিদেশীয় । ব্যয় ৩২৭ জন
দে এডমন্টস্টন ঐবধ প্রভৃতির প্রদর্শন জন্য
দুটি মেডাল পাইতেছেন ।

কিনিক এক জন পত্রপ্রেরকের পত্রের
বিষয়ে লিখিয়াছেন “ পূর্বে ট.কা লইয়া কিছুই
না দেওয়া এ দেশের লোকের স্বভাব । ” ঠিক
কথা । এই মোমেই এক পুরুষে দান লইলে
তিন পুরুষে লিখিত পার না । এই কারণেই
কর্জ ও দান প্রভৃতি শব্দ কখন এদেশের
লোকের অভিগোচর হয় নাই । সুশাসক
আর দুটি দুঃস্বভাবের কথা কহিতে ছুনিয়া-
গিয়াছেন । এক, কোন জাহাজের কব রক্ষি ক-
রিলে এদেশের রাশোপনে তাহার প্রাপ্য সং-
হার করে এবং বিবাহ করিয়া বলে বিবাহ
কর নাই ।

৮ই ভাদ্র শনিবার ।

ত্রিবাঙ্কুরের রাজার বখরের আশানামা-
রে একখানি হুত হইয়াছে । এক জন কুড়ের
উপরে তাহার এই সন্মেল হয় যে তাহার সহি
ত তাহার জীর এসক্তি হইয়াছে । অতএস
তিনি দুই জন দুর্ভুক্ত দ্বারা তাহার বখ সম্পা-
দন করেন । বিচার হইয়া তাহার ২০ বৎসর
কারাবাসের আদেশ হইয়াছে । ত্রিবাঙ্কুরের
রাজা বখার রাজস্বের অগ্রসরণ করিয়াছেন ।
কিনিক বলেন দিল্লীর দুই-হুইতে হুত
সেনাপতি উইলসনের ১,০১,১০০ টাকা প্রাপ্য
দ্বির হইয়াছে । এই টাকা তাহার পরিবারকে
দেওয়া হইবে সন্দেহ নাই ।

উক্ত পত্র ২৫নং, দুই বাসের মধ্যে লিখ-
পুলের লবণে ২০ লক্ষ টাকা ওল উলিয়াছে ।
২০ এ আগষ্ট ১,২৪,০০০ টাকা আদায় হয় ।
এ প্রকার শুদ্ধ আদায় হইলে লবণের গো-
কান উঠাইয়া দিলে ক্ষতি হইবে না ।

নিম্ন লিখিত মূল্যে গবর্নরেন্টের কাগজ
বিক্রীত হইতেছে ।

৪ টাকার সিকা	১১০/-—১১১/-
৪ টাকার কোম্পানির	১৩৫/-—১৩৬/-
৫ টাকার	১০৫/-—১০৬/-
৫ টাকার	১১১/-—১১২/-

গবর্নরেন্ট বিজ্ঞাপন ।

বাদালিঙ্গনীর লেপ্টেনেন্ট গবর্নরের
আদেশানুসারে নিয়োগ ।

১১ই আগষ্ট — লোহার জাহাজের সচকারী
কমিশনার লেপ্টেনেন্ট আর. সি. মণি প্রথম প্রে-
মি অধীন মাজিষ্ট্রেটের কমতা প্রাপ্ত হই-
বেন ।

১২ই আগষ্ট — এচ. সি. আর. সি. রা-
সল সাহেব কিরিশিবনের জন্য মওলানাহের জার
পাইয়া দ্বিতীয় জেপির অধীন মাজিষ্ট্রেটের কম-
তা পাইবেন ।

টি. শিখ সাহেব মজিয়ার মাজিষ্ট্রেট ও কা-
লেটরের সচকারী হইয়া দ্বিতীয় জেপির অধীন
মাজিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন ।

জে. এস. আর. মজিয়ার মাজিষ্ট্রেটের সাধা-
রণ বিজ্ঞাপন । কমিশনারের এক জন সভা হই-
বেন ।

এ. জা. সাহেব ১৮৬৩ জুনের ১ তারিখ অফ-
ফিসে কলিকাতার এজিট্রি নিম্ন লিখিত ব-
ইবেন । কা সাহেব উক্ত আফিসের ১ খানার
অফিসে পত্র দিতে পারিবেন ।

পূর্বের ইউরোপবঙ্গে অতি
 রাখে কীলী হইত। সেই নিষ্ঠুর
 কর্তৃত্ব হইয়া একবার কাকার
 আচলিত হইয়াছে। কিন্তু বহি
 সেই অকাল হুত্বাই হইল
 কারে ইদানীতন আইন
 বলিয়া পরিগণিত হইতে প
 অকাল হুত্বা অপেকা কী
 ছিল, তাহা হইলে ইহ কা

[illegible]

সোমপ্রকাশ

“স্বর্গমর্ত্যে প্রজ্ঞানিবিদ্যায় পার্থিবঃ স্বরাজ্যে মুনিব্রহ্মণী ন বীজিনী।”

৪ ভাগ।
৪২ সংখ্যা।

সম ১২৬২। ১৭ ভাদ্র। ইং ১৮৬২। ১ সেপ্টেম্বর

মাসিক প্রকাশ
বার্ষিক আয় ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন।

মফসসে সোমপ্রকাশ প্রেরণের নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাইলে মফসসে সোম প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইহার বার্ষিক মূল্য ডাকমাসুল সনেত ১০ এবং ৫ টাকা নিষ্কাশিত আছে। হইল মাসের স্থানে অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না। মফসসের এদি কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা হইল, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিমেন্টে পাইতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

বিবি মেয়র।

বিবি মেয়র এ কৌশলদিগকে আদর্শ প্রদর্শন, বাহার্য্য কটোগ্রাফিতে আপনাদিগের ক্রী ও কন্যাতির প্রতিমূর্ত্তি করিবার ইচ্ছা করেন, তাহার্য্য তাহাকে সমাদ দিলে তিনি অতি উৎকৃষ্ট ও সুন্দররূপে তাহা করিয়া দিবেন। ১৮ কর্কের (লালসিয়াকার) পূর্ব দিকে তাহার্য্য কার্য্যালয়, তাহার্য্য অঙ্গসম্মান করিবার সবিশেষ জানিতে পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

বালিকা স্কুলে লেটিং গ্রন্থালয় ও সমাচার এবং সাময়িক পত্রিক পাঠ্যগ্রন্থ।

বাহার্য্য হাওলাত করিয়া বালিকা গ্রন্থ পাঠ করিতে মানস করেন তাহার্য্য নিম্ন লিখিত নিয়ম সকলে সম্মত হইয়া আমাদিগের টাঙ্গা পুস্তকে আশ্রয় করিলে পুস্তকাদি হাওলাত দেওয়া বাইবেক।

১ ব। গ্রন্থকলপকে প্রতি গ্রন্থে আটকা নার হিসাবের প্রতি বার্ষিক টাঙ্গা দিতে হইবেক,

এবং তাহা মাসের প্রথমে দিতে হইবেক, এক মাসের স্থান দুই গ্রহণ করা বাইবেক না।

২য়। এক মাসের অধিক কেহ কোন গ্রন্থ রাখিলে তাহাকে তাহার মূল্য দিতে হইবেক।

৩য়। যিনি যে অবস্থার পুস্তক লইয়া যাইল, তাহাতে সেই অবস্থার কেহও দিতে চাইবেক তাহার অন্যথা করিলে পুস্তকের মূল্য দিতে হইবেক।

৪য়। পরিচিত ব্যক্তিকে পুস্তকের মূল্য জমা দাপিতে হইবে, অথবা এক জন পরিচিত ব্যক্তিকে জামিন দিতে হইবেক। তাহা হইলে তাহা পুস্তক হাওলাত দেওয়া বাইবেক।

৫য়। সমাচার ও সাময়িক পত্রিকা সকল আমাদিগের গ্রন্থালয়ে আসিয়া পাঠ করিলে কোন মূল্যই লাগিবেক না।

গুণ গ্রন্থ

নিউ টেম্পল লাইব্রেরি
কলেজ ষ্ট্রীট নং ৮৬।

সোমপ্রকাশ।

১১ ভাদ্র সোমবার।

— — —

হাজরতি

পাঁচ বৎসর অতীত হইল, উক্ত। সাহেব লিফারি বালকদিগের উৎসাহ বর্ধনার্থ আদর্শ, ইংরাজী বাছালা ও বাছালা বিদ্যালয়ের পরীক্ষার্থী, হাজরতিগকে করেকটা হাজরতি দিবার ও সেই হাজরতি প্রাণ ব্যক্তিগকে বিদ্যা বোধের বর্গমেষ্ট বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিতে দিবা

র প্রস্তাব করেন। এ প্রস্তাব সন্মত হইল। ইহার কতক ফল হইল। পরীক্ষার বিদ্যালয়ে আর লোকের সন্ধানেরাই পাঠ্যগ্রন্থ তাহার্য্য অর্থবিরহে লীফারি অধ্যয়ন করিতে পত্র করা হইল। বিদ্যালয় হওয়াতে অনেকের উপকার হইল। সন্মত হইল। কিন্তু কিছু বিদ্যালয় দোষে ইহা কার্যকরকর হইল না। তৎকৃত প্রস্তাবানুসারে চারি বৎসর মাত্র হাজরতি প্রাণ

ওদিকে একগুণে আর বার্ষিক প্রোগ্রস বর্গমেষ্ট বিদ্যালয়ে মরহুম করিয়া গেবে বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রবেশীক দিবার নিয়ম হইয়াছে। দ্বিতীয় বিদ্যালয় সকলেও মাত্র বৎসর না করিয়া পরীক্ষা দিবার উপায় রূপ স্থলে নিত্য পক্ষে মতে মাত্র পাঠ না করিলে কোম্ব হাজ প্রা পরীক্ষা দিতে সমর্থ হয় না। কিন্তু চারি বৎসর উৎসাহে পাঁচ বৎসর বেতনে পাঠ করিতে পার। তাহাতে ক হলে এই দোষ ঘটে, অনেকের বিরহে অন্ত্য প্রবেশিকা পরীক্ষা পূর্বে বিদ্যালয় পরিত্যাগ করিতে সূতরাং তাহাদিগের শিক্ষারও ক্ষতি। চারি পাঁচ বৎসর মাত্র অধ্যয়ন সুশিক্ষাভ্যাসের সম্ভাবনা বিদ্যালয়ের সময়ে তাহার্য্য তাহা হইল

লেণ্ড্ সাহেবের কৃত্ত আর ব্যয় সংক্রান্ত হিসাব, সর্‌চার্লস্ উডের তত্ত্বাবধায়ক পত্র ও মহাসভায় বক্তৃতা ও লেণ্ড্ সাহেবের আত্মপক্ষ সমর্থন, এ সমুদায় লম্ব সাধারণের গোচর হইয়াছে। অপক্ষপাতী নিঃস্বার্থ বক্তিতা। এ বিষয়ে কি অতিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন? লেণ্ড্ সাহেবে রবেজম হইয়াছে, হিরচিত্ত কোন বক্তিতা স্বীকার করিবেন? রেইলওয়ে ঘটিত ইংলণ্ডীয় শিল্প ও এদেশীয় টাকার বিক্রয় এবং চীন দেশীয় যুদ্ধের টাকার হিসাব লইয়াই বিবাহ হইতেছে। লেণ্ড্ সাহেব সম্প্রতি আত্মপক্ষ রক্ষার্থ যে প্রেরিত প্রস্তাবটা টাইমস পত্রে প্রকাশ করিয়াছেন, তাহাতে লিখিত হইয়াছে প্রতিবৎসর পড়ে ৬ কোটি টাকা রেইলওয়ের অন্য ব্যয় হইয়া থাকে। সেই ব্যয় মুলধন হইতে হইবারই কথা, রাজস্ব হইতে হটবার কথা নাই। যখন একপ হইল, তখন ৬ কোটি টাকাই রেলওয়ের বাস্তবিক ব্যয় বলিয়া ধরিয়া লইতে হইবে, তাহার মধ্য হইতে ৫০ লক্ষ টাকা রাজস্ব ক্ষতি বলিয়া গণনা করা সম্ভব হইতে পারে না। কেবল নিয়ম ধরিয়া বিবেচনা করিলে লেণ্ড্ সাহেবের কথা অস্বপ্নীয় বলিয়া বোধ হয় বটে, কিন্তু কাজে তাহা কোথায় হইতেছে? সর্‌চার্লস্ উড প্রতি টাকার দুইপেনি ক্ষতি স্বীকার করিয়া রেইলওয়ের তম্য টাকা কর্ত্ত করেন। সে টাকা কিছু নগদ ভারতবর্ষে প্রেরণ করা হয় না। তাহা ইংলণ্ডের ব্যয়ের জন্য রাখিয়া সর্‌চার্লস্ উড ভারতবর্ষে উহার বিল প্রেরণ করেন। সেই টাকা সাধারণ রাজস্ব হইতে দেওয়া হয়। এক্ষণে তিনি সাড়ে পাঁচকোটি টাকা লইয়া হয় কোটি টাকার রসিদ দিতেছেন, আমাদিগকে সম্পূর্ণ হয় কোটি টাকা দিতে হইতেছে, তাহার সুদের ত কথাই নাই, তাহলে অবশিষ্ট অর্ধেকোটি রাজস্ব হইতে না হইয়া আর কোথা হইতে বিহার সম্ভাব্য?

নি অত্যন্ত সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছেন।
কিন্তু এখানেও তিনি সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছেন।
হইতেছে। তিনি যদি দুই মিনিটের
খা। দুই মিনিট দুই মিনিটের বিরাম
হয়। তাহা হইলে অবশ্যই আমাদিগের
লাভ হইবে। এখানে আমাদিগের বক্তব্য
সু। আর আর সন্তোষ প্রকাশ করিয়া কাব্য
করা বিবেচনা করি। তাহা হইলে উৎসাহে
নির্ভর করিয়াই ইন্দীন্দ্র সত্য গণনা
মাঝেই করিয়া হইয়াছেন। অবশ্যই গণনা
না করিয়া করিয়া যদি সমস্ত হয়, তাহা
হইলে রেইলওয়ের সুদের স্বল্প একাল
পথ্যক বস্তু হয় হইয়াছে, তাহা জমা টাকা
কার মধ্যে পরিগণিত করা হয় কেন।
রেইলওয়ে সম্পূর্ণ হইলে তিন তিন কো
ম্পানি ক্রয়ঃ অংশদ্বয়ের সুদের টাকা
ত প্রত্যর্পণ করিবেন। একপে কাব্য করা
জাতিদেয় দ্বারা অনুযিত মতে। সর ওয়াল
পোল হইতেই এখন এই জাতির স্তি
হয়। কসত লেভ সাহেব ও তাঁহার অঙ্ক
সহকারীরা যে কল বসুনা কেন, রেইলওয়ে
র বিনিময় প্রতি অত্র্য গবর্ণমেন্টের ক্ষতি
হইতেছে সন্দেহ নাই। তাঁহার কেবল তর্ক
শক্তি প্রদর্শন করা হইতেছে, কিন্তু সে ত
কর গুরুত্ব ও সারবত্তা নাই। একপে আ
পক্ষ রক্ষার চেষ্টা না করিয়া তিনি যদি
স্বার্থের সাহস পূর্বক বলিতেন যে তা
এ প্রকার ক্ষতি সহ্য করিবেন
সরে প্রতি টাকার দুই মিনিট
হবেন, তাহা হইলে তাঁহার যথার্থ
সমীর কাব্য করা হইত। বিনিময়ে
ক্ষতি হয় না বলিয়া হিসাবের মারিপেচ
করা কেবল তর্কশাস্ত্রের আশ্রয় মাত্র।
চীনদেশের মুক্ত কালে অত্র্য গবর্ণ
মেন্ট সৈন্যাদির ব্যয়ার্থ ইংলণ্ডীয় গবর্ণমে
টকে কল স্বরূপ যে টাকা চীন ইংলণ্ডীয়
গবর্ণমেন্ট তাহা পরিশোধ করিয়াছেন।
লেভ সাহেব সেই টাকা আর মধ্যে গণনা
করেন। সর চারলস উড ইহার প্রতিবাদ

করিয়াছেন। আর সাহেব একতরফ
সাহস করিলে ইহা একতরফ আর
পরিগণিত হইতে পারে না। ইহা কল পরি
শোধ মাত্র। তবে এবৎসর এই অবশেষ আ
গম হইল, বলিয়া ইহাকে যদি আর মধ্যে
গণনা করা হয়। তাহা হইলে, তাহাতে কিছু
বিশেষ ক্ষতি হইতেছে না। ইহা আর
বলিয়াই হউক, অথবা কল আদায় বলি
য়াই হউক, এ উভয়ের অন্যতর বা বলিবা
পরিগণিত হউক, তাহাতে ইতিমধ্যে নাই,
তাহা গণনার বীজিতে মাত্র।
ব্যরবাদে টাকা উত্তর হইয়াছে একথা
লেভ সাহেব ব্যরব্যর কহিতেছেন। তিনি
বাঁকা সঞ্চার করিবার নিমিত্ত জমা টাকা
(কাসবালান) প্রদর্শন করিতেছেন। কিন্তু
সর চারলস উড কহিতেছেন লুটপ্রাপ্ত টা
কাও নানা প্রকার কণ্ডের টাকা একতরফ
হওয়াতেই জমা টাকার হ্রাস হইয়াছে।
ধনাগার অধিক টাকা থাকিলেই যে আর,
ব্যয় অপেক্ষা অধিক হইল একথা স্বীকার
করা যাইতে পারে না। কি লেভ সাহেব
কি সর চারলস উড কেই উল্লিখিত জমা
টাকার সর্বস্তর বৃত্তান্ত প্রকাশ করেন
নাই। একপে ধনাগারে ১৯ কোটি টাকা
জমা দৃষ্ট হইতেছে। অতএব এ বিষয়ে
সর চারলস উডের প্রতিবাদ করিয়া লেভ
সাহেবের উল্লিখিত জমা টাকার কারণ
নিদেশ করা আবশ্যিক।
আমরা পূর্বেও কহিয়াছিলাম পুনরায়ও
কহিতেছি, লেভ সাহেবের ভ্রম হইয়াছে
সন্দেহ নাই। কিন্তু তা বলিয়া তিনি উপে
ক্ষার যোগ্য নহেন। ভ্রমশূন্য লোক
কোথায়। তিনি ভারতবর্ষের এক জন যত্ন
বশীল ছিলেন। কট্রাক্ট বিল প্রভৃতি
দুই একটি বিষয়ে তিনি মীলকর প্রভৃতির
সহায়তা করেন যত। কিন্তু যাহাতে ইংলণ্ড
র দায়ঃসংক্ষেপ, বিদ্যালিক্ষার উন্নতি ও অন্য
অন্য প্রকারে এ দেশের উন্নতি হয়, ইহা
তাঁহার আন্তরিক ইচ্ছা ছিল। এদেশীয় ও

ইউরোপীয়দিগের সম্মুখে পেশ করিয়া
হয়, তবিলে তিনি প্রত্যাহা করিয়া
করেন। তাঁহার একটা বিশেষ গুণ এই
তিনি উইলসন সাহেবের আর এক গুণ
নহেন। তিনি বিজ্ঞ লোকের সম্মুখে
প্রকাশ করিয়া কাব্য করেন। এ প্রকার
কই একপে আবশ্যিক। কলতঃ ইহা
জান আমাদিগের দ্বাৰায় বিল
হে সন্দেহ নাই। তবে তাহাকে যদি
পত্র দিয়া সর চারলস উডের
করাও আমাদিগের অভিপ্রেত নাই।
গবর্নিক ওয়ার্ক টিপাইয়ে
ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্ট সাহেবের পূর্ব
লিক ওয়ার্ক সাহেবের দ্বারা প্রকাশ করি
য়াছেন। এখানে ৩৬৭৭ লক্ষ টাকার কল
হয়, কিন্তু আর ২০৭৭ লক্ষ টাকার
সর্বস্তর ৩৮৮ লক্ষ টাকা ব্যয়
কমটাকের শ্রম করা এক টাকা ই
ধরা হয় নাই, তাহা ধরিলে
লক্ষ অধিক হয় যেখানে ও যে
যত টাকা দেওয়া হইয়াছে, তাহা
লিখিত হইল।
সাহসার
বোয়াই
বন্দোব
উত্তর পশ্চিম
পঞ্জাব
অযোধ্য
মধ্য ভারতবর্ষ
হায়দরাবাদ
ব্রহ্মদেশ
সিঙ্গাপুর প্রভৃতি
অন্য অন্য
রেইলওয়ে
ইলেকট্রিক টেলিগ্রাফ
পোর্ট আকিস
জমা
মোট টাকা ৩৮৮ লক্ষ

ইহার মধ্যে সেবারের মূল্য ৩৬.০০ টাকা, কৃষি উন্নতি নিমিত্ত (খাল খনন প্রভৃতির জন্য) ৩৬.০০, ১৩২ টাকা এবং রপ্যাদি প্রকারের জন্ম ১,০১,৪৭,৮০০ টাকা হইয়াছে।

একী টাকা রাজপথ প্রভৃতিতে ব্যয়িত

গবর্ণমেন্টের যে সমস্ত আর ব্যয় হিসাব প্রস্তুত হইয়া থাকে, তন্মধ্যে আগের বিবরণে বর্ণনাকৃত সেই অধিক টাকা দেখা যায়, কিন্তু ব্যয়ের বেলা সে কম হয়। উপরের হিসাব বর্ণন করিলেই সকলের জ্ঞান সুস্পষ্ট হইয়া যাইবে। এক্ষণে গড়ে প্রতি বৎসরকে লওরে প্রাপ্ত ১২ কোটি টাকা ব্যয় হইতেছে। ইহার মধ্যে আর ভারি কে ১ সাধারণ রাজস্ব হইতে দেওয়া

বীর মধ্যে কোন গবর্ণমেন্ট এত এ বিষয়ে ব্যয় করতে পারেন কেন ইহার অনুবন্ধী কল লাভ অনেক দূরে আছে। কি পরিমাণে ল ভোগে আমরা সমর্থ হইব, তার নিশ্চয় ও নিঃসন্দেহ হইতে পারি

তে না। রাজপথ প্রভৃতি প্রস্তুত হইলে এসে পরসম্পর্কে উন্নতি হইবে, এই মধুর ধনি কেবল অন্তর্ভুক্তি ন্যায় কর্তার আনন্দ উপাদান করিতেছে। এই কল বিষয়ে প্রাক্কোষ হইতে যে পরিমাণ ব্যয় হইতেছে, আমরা যে তদন্ত কলভোগী হইব, তাহারও সম্ভাবনা দেখা যাইতেছে না। ইহার অধিকতরই হোক ও কলভোগীদের উন্নয়ন হইতেছে। এক্ষণে যে কলভোগী প্রথা হইয়াছে, আম বা ম্পর্ক করে কহিতে পারি, তাহাতে লাভ হওয়া দূরে থাকুক, এ

কি কার্যও সুচারু রূপে সম্পন্ন হয় না। কলভোগী দিবার আর এই এই তেমন আপনা রা অধিকার লাভ, আর জিজ্ঞাস্য সাধ ব্য

কর।" কোথায় যেখানে কলভোগী সেই থানেই আর দেখিতে পাওয়া যায়, উপ

মুস এনিছ " এই জরীচোরেন লবণ ও শুক বিক্রয়ের কাজ " ঘটনা হইতে। যাহা র হাত দিয়া কলভোগী ব্যক্তি কল ভোগী

নে করেন, তাঁহার মিত হইল, কলভোগী

রেন্ড মিত আছেই। কলভোগী কলভোগী

মাণ দিয়া টাকা লাভ লইয়া বি বি হই

না হইতে সেই কলভোগী মেরামত কবাইবার

নিমিত্ত আবার কলভোগী অধোগ করিতে

হয়। যাহার হাত দিয়া এই কাপ কাজ

হয়, তাহারও ক্ষতি নাই, কলভোগীরও

ক্ষতি নাই, ক্ষতি কেবল গবর্ণমেন্টের। গ

বর্ণমেন্টের ক্ষতি হইলেই আমাদিগের

ক্ষতি। এই রূপে যে অকারণ ক্ষতি কর

হইতেছে, তাহার দায়ী কে? আরই শুনি

তে পাওয়া হয়, অনেক ওবরসিয়ার বিনা

গী করিয়া কলভোগী লইয়া থাকেন। এই স

কল কারণে আমরা জিন করিয়া অনুরোধ

করিতেছি গবর্ণমেন্ট এক কমিসন নিযুক্ত

করিয়া পবলিহ ওয়ার্কের ব্যয় এবং ওবর

সিয়ার ও ইঞ্জিনিয়ারদিগের কাব্য প্রণালী

র পরীক্ষা করুন। গবর্ণমেন্ট আর কত

কাল আমাদিগের শোণিত দিয়া ঐ সকল

ধূর্তকে পরিবর্তিত করিবেন।

—•—

অমুংসাহ দিরা চড়ক উঠাই:

দিবার আজ।

সর চারলস উড এই আজ্ঞা কবির পা

ঠাইয়াছেন যে, তারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট কল

চারিদিগকে কহিয়া দেন, তাহার অনু

সাহ দিরা চড়ক উঠাইয়া দিবার চেষ্টা পা

ন, কিন্তু কোন রূপে যেন এদেশীয়দিগের

ধর্মে হস্তক্ষেপ না করেন। সর চারলস

উডের এআর একটা যথার্থ রাজনীতিজ্ঞের

কাণ্ড করা হইয়াছে। প্রজার সুখ দুঃখ

সম্বন্ধে উদ্ভাসিত হইয়া কেবল আপনাদের

সুখ স্বচ্ছন্দে উপায় অধোগ করিয়া কাল

তিপাত করা রাজার অথবা রাজপ্রতিনিধি

প্রধান পুরুষের কর্তব্য কর নয়। প্রজার

কোন কোন অংশে কল আছে, আর সেই

সেই কলকেই মূল কারণ বা বি পুঙ্খানু

পুঙ্খানু তাহার সুখ অধোগ করিয়া

সম্বন্ধেই চেষ্টা করা আবশ্য কভব্য।

কলভোগী চেষ্টা করিতে দিয়া প্রজামণ্ডকে

বৃত্তর রেশনামের নিয়ন্ত্রিত করে দিয়া

হয় না। অধুনা কলভোগী বৃত্তর

থবা রাজপুত্রিদিগেরই সেই কলভোগ

আপাত কারণ হইয়া থাকেন।

কারের বিরোধী হইয়া উঠে।

করিতে গেলে তাহাতে পুঙ্খানু

লাভ সম্ভাবনা থাকিলেও পুঙ্খানু এইরূপ

ঘটনা হয়।

এ দেশে যত পুঙ্খানু জন্ম বাবহার

প্রচলিত আছে, চড়ক ভাঙার মধ্যে একটি

প্রধান। অনুধাবন করিয়া দেখিলে সকল

বিষয়েরই প্রায় আংশিক দোষ ও আংশিক

গুণ দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু অমুংসাহ

বিস্তর ভাবিয়া দেখিলেন, চূর্তাধ্য ক্রমে

চড়কের এক অংশেও একটা গুণ দেখিতে

পাইলেন না। নৃত্য, গীত, বাদ্য প্রভৃতি

ইহার অঙ্গ প্রত্যঙ্গ সমুদায়ই অপকৃত।

বাদ্য এমন মধুর যে কিঞ্চিৎ অধিক কাল

অবগ করিলে কর্ণ বধির হইয়া যায়, উ

হাকে প্রকৃতি করিবার নিমিত্ত চিকিৎসা

করিবার প্রয়োজন হইয়া উঠে। নৃত্য দে

খিলে কেবল যে মৃগা অথবা একগ

উহা অলীকতা দোষ দ্বারা একান্ত দুর্ভিত,

উহা কোম ক্রমে কাহারও বি

গের দর্শনযোগ্য নহে। গীত,

দোর অনুবন্ধ। এতদিন, স্বাক্ষর

ক করা ও কাপ খাওয়া প্রভৃতি কলভোগ

নৃশংস ও বীভৎস কাণ্ড আছে।

কলভোগ এ উৎসবটি অসত্য কালোচিত,

আমাদিগের দেশের সুখ নীচ লোকেরা

ইহার স্বতী। ইহা যে ইন্দীকন কালে

অধিকতর অনর্থের নিবাস হইবে, এ কথা

বলা বাহুল্য। ইহা যত শীঘ্র এ দেশ হই

তে অধিকৃত হয়, ততই সকলের ক্ষি

এই অসত্য নিষ্ঠুর ব্যবহারের উন্নয়ন

অধিকাংশ স্থানে আকিসরদিগের ঘোষাই
টে। অতএব তখন কোরাটর হইলকে সা-
রিক বিচারালয়ে অনয়ন কর্তব্য।

দিলীগেজেট বলেন লাল্য জ্যোতিঃ প্রসা-
। অতিশয় পীড়িত হইরাছেন। তিনি কানী-
ত আছেন।

উক্তপত্রের এক জন পত্র প্রেরক বলেন,
দিলীতে দুই জন ইউরোপীয় সৈনিক পুরুষ
এক জন সহচর ইউরোপীয় ও এক জন রজক
কে বধ করাত্তে সাধারণ বিচারালয়ে তাহা-
দিগের বিচার হইতেছে। লেপ্ টেনন্ট জার্ন
নয় কি হইল?

মাজাজের ব্যবস্থাপক সত্কার সত্য মোর
হিত সাহেব তদ্রূপ বিচারালয়ের বিচার প-
ত্র পদত্যাগ করিয়াছেন। মোরহেত সাহেব
উপযুক্ত লোক, সর হেনরি ওয়াতে র দুই হ-
ইলে তিনি কয়েক মাস প্রতিনিধি শাসন কর্তা
ছিলেন। মাজাজের লোকেরা তাহার উপরে
সন্তুষ্ট। বোধ হয় তিনি কর্তৃপক্ষের প্রিয়পাত্র
নহেন তাহা হইলে তাহার একটি উপযুক্ত
পদ লাভ হইত।

গত শুক্রবার অর্থাৎ বোম্বাইয়ের প্রধান
তম বিচারালয়ের কার্য আরম্ভ হইরাছে।

কিনিক প্রবণ করিয়াছেন কমিকাতার আ-
রম্ভ রহৎ পরঃপ্রাণী কোন কাজের হইল না।
উহার তাড়কর্তা কার্ক সাহেব ও মিউনিসিপল
কমিসনরেরা ইহাকে যে কেবল বিভ্রান্ত অ-
কর্মণ্য জ্ঞান করিয়াছেন একপ মতে, ইহা তা-
রা নিকটবর্তি বাটী সকলেরও অনিষ্ট হইবার
সম্ভাবনা হইরাছে। আমরা পূর্বেই এ আশ-
ঙ্কা করিয়াছিলাম। সাধাবণের টাকা বেতনা
ব্যয়িত হইল, এগন ইহার দায়ী কে?

উক্ত পত্রের চাকর সংবাদ দাতা বলেন
তদ্রূপ আইকে বাজিটেট সত্তায়ে বহু অধিক
জিন দিবস কাহারিতে আইসেন, এবং দুই
এক ঘণ্টা থাকিয়া প্রস্থান করেন। সেরেস্তাদার
সর্ব্ব সর্বা হইরাছেন। আইকে বাজিটেট সি-
মিলিয়ান ত? কাহারিতে দুই এক ঘণ্টা সে
হত্যার পদখুলি পড়ে সেও বখেটে।

তাকাপ্রকাশের এক জন পত্রপ্রেরক বলেন
করিক পুরের ছোট আকিসদের তখন অজ-
করু উপেক্ষা করা নাহি হইতে

নামিবার সময়ে বঁত মোরালী দধি দুধ ও ধী-
বরেরা বৎস্য লইয়া এবং বেশ্যারা মণ্ডারমান
থাকিয়া মজলচরণ করিয়াছে, পরদিবস অজে-
র অতিপ্রায় সুসারে বেশ্যারা তাহার কদাচ
বাটীয়া কিছু কিছু দক্ষিণা আনিয়াছে। অজের
সঙ্গে কয়েক জন গায়ক ও তাঁত মাচে
করিক পুরের ছোট কপাল, তাঁত এমন জঞ্জাল
পাটয়াছেন।

উক্ত পত্রপ্রেরক লিখিয়াছেন পোকে নামক
এক জন নীলকর তদ্রূপ কৌজদারর না
জিবেব নামে মিথ্যা নালিশ করাত্তে তাহার
২৮০ টাকা করিমানা হইরাছে। ইউরোপীয়ে
র বেলা জরিমানা এতদেয় হইলে তির্যাক
হইত।

১২ই ভাদ্র বুধবার।

পূর্বে ঠাকুরিগের হস্তে পতিত হইয়া উ-
ক্ত পশ্চিমাঞ্চলগামী পথিকেরা হস্ত সর্ব্ব
হইতেন। এক্ষণে এই দুরাঙ্গাদিগের দমন হও-
রাতে উভারা আর একটি নতুন উপায় উদ্ভাবন
করিয়াছে। যখন কোন মেলা বা তীর্থে বাত্রি-
রা গমন করে, তৎকালে প্রায় বাবতীয় সরা-
ইরে ২০ জন মুন্সরী স্ত্রীলোক দেখিতে পা-
ওয়া যায়। তাহারা কোন ট্যাক তারি তরলে
প্রিয় যুবকে দেখিলে নানা ছলে তাহাব স-
হিত আলাপ ও কাম করে। কেহ বা তীর্থে
বাইতে ছিলাম হঠাৎ খাবীর সজ হারাটগাছি
বলিয়া ছল করিয়া যুবা পথিকের সতর্কতা হয়।
পথিবধ্যে এ কথা সেকথা হটলা তরলেজিরে
রা যে তাহার প্রায় পাশে বসে হয়, একথা
কহা বাহুল্য। এইরূপে প্রেমাস্পদ হইরা
শেষে সেই পাণ্ডুরসীরা পথিককে একপ দ্রব্য
ভোজন করার যে সে ভোজনাতে ঘোরতর
মিষ্টান্ন আকিড় হই, প্রাতঃকালে আগন্তিক
হইরা দেখে এ প্রণতিনীর স সহিত ট্যাকের
টাকা অদ্ব্য হইরাছে। এই ভুতন ধূর্ততা
নিহারণার্থ পুলিশের তখন সতর্কতা আব-
শ্যক।

বারাসতের অঙ্গ্যপাতি কাঠালিয়া গ্রামে
এক ব্রাহ্মণের বাটীতে একটি ডাক উত্তি হই-
য়া গিয়াছে। মন্ত্রুরা বাটী মধ্যে প্রবিষ্ট হইলে
গৃহ স্বামী ব্রাহ্মণ এক বিচালির গাদার মধ্যে
লুকাইত হয়। অন্যর কহারা তাহার স্ত্রীকে

বিক্রয় করিয়া ছুরবন্দা করিতে উদ্যত হইল।
তখন তিনি আর দুকাইয়া থাকিতে না পা-
রিয়া সম্মুখবর্তি এক খানি বরগা লইয়া মিক
টবর্তি বাটীয়া পাককে প্রবেশে বস করিলেন।
তাহার পর যে দুই জন তাহার স্ত্রীর ছুরক
করিতেছিল, তাহাদিগেরও প্রাণ সংহার
করিলেন। সর্ব্বশুদ্ধ তিন জন হস্ত ও চারি জন
আহত হইলে দস্যুরা পলায়ন করিল। তাহা
দিগের কয়েক জন ধৃত হইয়াছে। আমদা
শুনিয়া আত্মা দিত হইলাম, ব্রাহ্মণকে পু-
দেওয়া হইবে।

টাইমুন অব টেভিয়ার এক জন পত্র প্রে-
ক বলেন, নীল গিরির চা আন্দলের চা আ-
কা উৎকর্ষ হইরাছে।

গত ছয় মাসের মধ্যে সর্ব্বশুদ্ধ ১২৫০
জন মজুর বরিসসে গমন করিয়াছে। টাইব
মধ্যে ৩১৩ জন গবর্নমেন্টের ও ৯৩৭ জন
অপনাঙ্গিগের বাসে গমন করে। তাহা
গের মজুরী বন্নিবার নিয়মিত সময় উদ্ভী-
হইলে তাহাদিগকে আরতবর্ণে পুনঃ প্রের-
কদিবার উপায় করিবার জন্য সর চারক, উ-
২,৫০,০০০ টাকা কোন এক কক্ষে জমা করি-
তে কহিয়াছেন। অনেক মজুর বেত্বাপদক
তথ্য বাস করিতেছে। দেখানো তবে বোধ
হয় নীলকর ও চাকর নাট।

আত্মাদিগের দেশে ফুলসংখ্যারের আ-
স্তিঃ প্রাপ্ত্যাবধি থাকাত্তে যে কত জনই
টিতেছে, পুনা অবজরবরের এক জন পত্র
প্রেরক তাহার একটি চুটী প্রেরণন করি-
ছেন। কারকী প্রানের এক কল বিজ্ঞান কারিগ-
রীলোককে এক দিন এক কেউটে সাপে দ-
শন করে। কয়েক জন আকিসর তাহাকে সৈ-
নিক চিকিৎসালয়ে বাইতে বলেন। কিন্তু অন্য
অন্য সকলে তাহাকে এক গণেশের মন্দিরে
বাইরা মত পাঠ করিতে বলিল। সে তাহাই
করিল। কিন্তু ১৫ মিনিটের মধ্যে তাহার
মৃত্যু হইল। এই সকল কুসংস্কার ছুর হইয়া
এক মাত্র উপায় আছে—বিদ্যা।

উক্ত পত্র প্রেরক আরও বলেন, দুই মূখ
বিশিষ্ট সর্প আছে বলিয়া বিশ্ব সংস্কার আছে
তাহা। তিনি নিজে পরীক্ষা করিয়া
দেখিয়াছেন যে বিকটি মূখের সর্প বোধ হয়,

তারা বাস্তবিকভাবেই বিচার করে। অতীতের ভুলত্রুটি সবার কাছে কিছু মনে পড়ে।

আমরা প্রাথমিক বিচারালয়ের সেনিক্সে আনুষ্ঠান করেছি। এবার অপরই বক্তৃতা আছে। আনুষ্ঠানিক নাম অপরাধের শিষ্ট মধ্যে দেখতেছি না। বোধ হয় আগামী সেশনে তাহার বিচার হইবে।

ডাক্তার স্টিউল বটম, সেন্টমন্টে গবর্নর আইন টে বাইবার নবম এক বারি ডিম খটকার অন্য ডাক্তার বাবিরাহিসেন। তিনি শুভ্রতা টি কিংসালয় ও বারিক চর্চন করিয়া আইনটে গিয়াছেন। আগামী এই পত্র পাঠে আশ্চর্য হইলেন, বীভল সাহেব অনেক গুহ হইয়াছেন।

ইংলিসমানের লণ্ডনস্থিত সাংবাদিকতা বসেন লিপ্সপ্রদর্শনী সভা তারতর্ক্যের নিমিত্ত নিম্ন লিখিত বেতাল ও প্রমাণ পত্র দিয়াছেন :—

বেতাল	প্রমাণ পত্র
বঙ্গদেশ..... ৩৩.....	২৬
উত্তর পশ্চিমবঙ্গ..... ১২.....	২
পঞ্জাব..... ৮.....	৫
অম্বোখা..... ৩.....	১
সিঙ্গাপুর..... ১৪.....	৭
সাবীম প্রদেশ..... ৩.....	৬
মাস্তাজ..... ২২.....	১৪
করগ প্রদেশ..... ৩.....	২
মহীশর..... ৭.....	২
কচ..... ১.....	৩
অন্য অন্য..... ১১.....	১০
বোখাট..... ১৪.....	৭

মোট ১০৪ ২৫
বঙ্গদেশই তারতর্ক্যের সকল স্থান অপেক্ষা প্রশাসন হইতেছেন, তথাপি, পত্রপ্রেরক প্রাকপ বরিয়াছেন এতদেশীয় সমুদায় বস্ত্র ভাল করিয়া পরীক্ষা করা হয় নাই। লিপ্স প্রদর্শন সময়ে ইংল্যান্ডের উপস্থিত ছিলেন না যত বিদেশীয় রাজকুমার ও সন্ত্রাস্ত্রলোক আসিয়াছিলেন, তাহারিদের আবাসস্থান নিম্নোক্ত করা অথবা অন্য কোন প্রকার অত্যা-

সি না করিতে রাজার নিশা হইতেছে। তিনি নিজে গৃহে বসিয়া না পারিলে, তখন অন্য কতজন রাজকুমারদের আদর করেন তাই কেন?

১৩ই জুন রত্নপতিবার।
গবর্নর জেনারেল অদ. মুদের হইতে কলি কাতার প্রত্যগমন করিয়াছেন।
পূর্ববঙ্গের ট্রেইলওয়ে ২৩ এ সেপ্টেম্বর মাস্তাজকা পর্বত খুলিবে এবং ১লা অক্টোবর কুটিয়া পর্যন্ত খুলিবে, কথা হইতেছে।
ফেরারি আরবি এপ্রেল পর্যন্ত ইনকম ট্যাক্স ও ইন্টাঙ্গে নিম্ন লিখিত টাকা আদায় হইয়াছে।

মোট টাকা	মাস্তাজকা	পঞ্জাব	অম্বোখা	সিঙ্গাপুর	সাবীম প্রদেশ	মাস্তাজ	করগ প্রদেশ	মহীশর	কচ	অন্য অন্য	বোখাট
৩২,১৫,৭২৬	১০,৩৭,৪০৬	৫,৩৩,৫২৬	৩,৪৮,৭২৬	১৪,৩৩,৫২৬	৩,৪৮,৭২৬	২২,৩৩,৫২৬	৩,৩৩,৫২৬	৭,৩৩,৫২৬	১,৩৩,৫২৬	১১,৩৩,৫২৬	১৪,৩৩,৫২৬

একশে সর্বমুখ ৩৩,৮৩,৫১০ মণ খাজে লগন করা হইয়াছে। ইহার মধ্যে লিবরপুল হইতে ৩০,০৫,১২৪ মণ আসিয়াছে। কাল সিংহল দীপ ও লেঙ্গা প্রভৃতি স্থান হইতে বাকী লগন আসিয়াছে। গবর্নমেন্ট একশে নিকিষে লগনের এক চেটিয়া ত্যাগ করিতে পারেন। তবে শুভকর্মে বিলম্ব কেন?

লর্ড হামিলটন, মামবরি, গ্রানবিল ও সর চার্লস উক্ত লর্ড কানিডের একটি প্রস্তাব মনী প্রতিশ্রুতি কবিবার উদ্দেশে এক মিছিলে প্রকাশ করিয়া সর্বসাধারণের নিকটে টালা প্রার্থনা করিয়াছেন।

লন্ডনগরস্থ নবাব ইকুবার্টকোলা আসিয়া ক্রান্তে কয়েক মাস পূর্বে তাহার ৫০,০০০ টাকা জরিমানা হয়। গবর্নমেন্ট একশে, অজি করিয়াছেন তিনি আর নবাব উপাধি ধারণ ক-

রিতে ও তৎপরেই সর্বসাধারণের নিকটে প্রকাশ করিয়াছেন। তখন হইয়াছে যে তিনি ইচ্ছা করিয়া না করিয়া তাহার প্রথম বক্তৃতা শুধু হয়।

গবর্নমেন্ট আশা করিয়াছেন, গবর্নর কর্তৃক পরিমাণ আর ই কার সঠিক হইবে না। পোকারেরা ইকার প্রাচীর যথা অধিক পাইবেন। ইহার পর কখন গবর্নর গরল বাহির করিবেন। আরম্ভক হইবে, তখন কালিটেরা লাঠি টাকা পর্বত সাহসে সোল আনা দিতে পারিবেন।

সর চার্লস উক্ত আশা করিয়াছেন গবর্নর মেটের কর্তৃত্ববিধির কর্তব্য তাহার চক্ৰ পূজার বিরুদ্ধে গাই দিয়া অর্থাৎ তাহার উঠাইয়া দিবার চেষ্টা করেন, একবারে তাহার প্রকাশ্য রূপে খবরের উপর হস্তক্ষেপ করিতে পারেন না বটে কিন্তু ইহা বাহ্যতে প্রকাশ্য দ্বারা সে চেষ্টার খোঁজ করিয়া। অবশ্য কর্তব্য নব্বই নাই।

গত বর্ষে সিঙ্গাপুরে ১৭,৪৫,০০০ টাকা আর ৩১,৩,০-৫৪০ টাকা ব্যয় হইয়াছে। এই আড়াই লক্ষ টাকা বঙ্গবন্ধুকেই মোহন করিয়া গড়া হইয়াছে, আরো হইবে।

সিঙ্গাপুরের দিগপুত্র গ্রাম জনপ্রিয় দ্বারা এক কালে উৎসব হইয়াছে। এখিলে রায়পুর বোরালিয়া ঘাইকে নসিরাহে।

অমৃত নরের মোকদ্দমায় সার্কটের কর্তৃক মিলের সহায়তার জন্য ৩,৫০০ টাকা দান করিয়াছেন। ২০০ টাকার ইতিমধ্যে লভ্যবল আছে।

ইংলণ্ডের প্রেসিডেন্ট মার্স কর্তৃক মুখোপাধ্যায়ের আশীল অগ্রাহ্য করিয়াছেন। তাহার টাকাকে গবর্নর জেনারেলের নিকটে করা প্রার্থনা করিতে বলিয়াছেন। তাহার আশীল শুধু নিতান্ত নিকল হয় নাই। তিনি একশে গবর্নর জেনারেলের নিকটে আবেদন করিয়া কথা পাইতে পাবিবেন বোধ হইতেছে।

২১এ আগষ্ট কানপুরের মাজিষ্ট্রেটের কারারি সম্মুখে রাওসাহেবের দাঁশী হইয়াছে। তিনি প্রাণত্যাগ কালেও আপনা উদ্ধতা ও কাপুরুষতা প্রকাশ করেন নাই তিনি মৃত্যুকালেও বলিয়াছেন তাহার আত-

স্বাধীন কোন ইউরোপীয়ের সঙ্গে যোগ দিতে
হয় নাই। অনেক ইউরোপীয় “স্বাধীনলোক”
ও “স্বাধীন” স্বাধীনলোক জাতি হিসেবে গিয়া-
ছিলেন।

স্বাধীনলোকের স্বাধীনতার আন্দোল-
সারে হুইট প্রেরণের এক প্রকার প্রকাশ
করিয়াছেন। পুঙ্খ-বেশন বড় ইচ্ছা। তত
টাকার হুইট প্রেরণের খরচা হুইটে পা-
ওয়া বাইত একপে আর তাহা হইবে না।
পাঁচ টাকার অধিক একপে টাকা পণ্যের
কতিপয় প্রেরণ হইবে। ইহাতে পণ্যের
এক টাকার হিসাবে বাঁটা লাগিবে। এই
লিপি দিবার জন্য বন্দোবস্ত সর্বশেষ ৫৫টি
আকিন হইবে। ইহারারা সর্বসাধারণের ক-
তিও বণিকদিগের সুবিধা করা হইল।

আমরা কিয়দিকস পূর্বে প্রথম কথিত
চিনার হানাপুরের সেনাপতি রিগেডিয়ার
বর্ণা কোন জীলোককে অপমান করাতে তাঁ-
হাকে পদচ্যুত করিতে হইয়াছে। ইংলিস
মান তাঁহার বিচারিত হওয়া প্রকাশ করি-
য়াছেন। হুইট রিগেডিয়ারের সহিত তত্ত্ব
কর্মে উইলসনদের জীৱ বিশেষ প্রণয় হি-
ল। এমন কি রিগেডিয়ার সর্বদা তাঁহার বাটী
তে অবস্থিত করিতেন ও তাঁহাকে নানা
প্রকার উপঢৌকন দিতেন। বিবিও নিজ বা-
নীর সহিত গমন না করিয়া রিগেডিয়ারের
সকটে ভ্রমণ করিতেন। একদা কর্নেল হার-
জিলিও গমন করাতে বিবি অতি দুঃখ বহন
পরিধান করিয়া এক নাট্য আলাপ আগমন
করেন। তাঁহার বক্তৃতা বর্ণা নিয়মে আরম্ভ
না থাকাতে রিগেডিয়ার তাঁহাকে নিমজ্ঞ ব-
লেন। পর দিবস রিগেডিয়ার বিবি নিকটে
কথা প্রার্থনা করেন। বিবি সেইপত্রের উত্তর
প্রদান দিখেন যে তিনি তাঁহার উপরে কুপিত
হইয়াছেন। কিন্তু একজন যুবক আকিনস তা-
হাকে বিরক্ত হইয়া রিগেডিয়ারের “ব” কর্নে-
ল নিকটে প্রেরণ করেন। কর্নেল এখন
রিগেডিয়ার নিকটে তাহা প্রেরণ করাতে সর-
সি রোজ রিগেডিয়াকে পদচ্যুত করিয়া-
ছেন। রিগেডিয়ার কেবলমাত্র ডিউকের নি-
য়মে অবস্থান করিয়াছেন। সেখানে প্রত্য-
ক্ষভাবে আকিনস কর্তৃক হইতেছে। সে দি-

বস সিবলা পুঙ্খ-বেশন আকিনস “ভূম-
কর্মে, একটি জীলোকের সুখস্বপ্ন করাতে
জীলোকের স্বাধীনতা। প্রধান সেনাপতিকে
আনাইয়া ছিলেন। এসকল দুর্ব্যবহার সেনা-
দলের সন্তোষ আকিনস দিগের মধ্যে হুইট হ-
ওয়া সুখের বিষয়।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন সন্তোষিত ত-
থায় একটি সুন্দর জনসত্ত হইয়াছিল। এখা-
নে করদিন বখিয়া একটি প্রমোদ উঠিতেছে।

কুণ্ড অব ইন্ডিয়া হায়দরাবাদের নবাব
কে হাকিয়া মহারাজ হোলকারকে খরিয়াছে-
ন। বড় তল, যেন সকলেই জানিতে পারেন
কুণ্ড আবাদিগের কেনন কুণ্ড।

উক্ত পত্র বলেন কুলা উপাধি ও “তা-
রতবর্ষী” ডাউসিগের অস উঠাইবার তিনটি
উৎসর্গ উপাধি আছে। ইংলণ্ডীয় মূলধন কু-
লা পরিচূত করিবার কু ও কাউন্সিল আইন
আমরা আর একটি উপাধি হল, সেটা ইহা
অপেক্ষা উৎসর্গ, তারতবর্ষীদিগকে পেট
তাড়ার খাটাইয়া লইবর চেঁচা।

উক্ত পত্র আরও বলেন কুণ্ড অব ইন্ডিয়া
রায় সম্পাদকের পরিবর্তন হইবে বলিয়া যে
কথা উঠিয়াছে তাহা অলৌকিক। সর্বদা সত্য
হয় অনেকের ইচ্ছা।

আমরা রায়টস কুণ্ড একটি প্রস্তাব দে-
খিয়া অতিশয় মুগ্ধিত হইলাম। একটি জী-
লোক তাঁহার কুলীন স্বাধীকে লিখিয়াছেন ব-
দি তিনি তাঁহার নিকটে না আইসেন তাহা
হইলে তিনি (জীলোক) অন্য এক যুবকের
সহিত প্রণয় করিবেন। এই কি শিকার হল?
তাহা হইলে জীলিকা বহু করিয়া দেওয়াই
কর্তব্য। সম্পাদকের প্রতি আমাদিগের বক্ত-
ব্য এই, কুণ্ডিত কৌলীন্য প্রথা উঠিয়া যায়,
আমাদিগের একান্ত ইচ্ছা। কিন্তু এই রূপ অ-
সংবিবরণকে আদর্শ করিয়া সেই চেঁচা করা
যে কতদূর অন্যায় তাহা সম্পাদক আপনার
লিখিত প্রস্তাবের পুনরায় পাঠ করিয়া এক
বার দ্রুতিতে বিবেচনা করিয়া দেখিবেন।

১৫ই তার শুক্রবার।

লর্ডোব্রিড ১৮ গণিত ইংরেজের অধীরা-
হি বলের একজন সকাফার বাহাতে সেনা-
দের অসংখ্য অশ্ব একত্রে কথা কহাতে

তাঁহার দুই বৎসর বিদায় হইয়াছে। একদিন
স্বাধীন ব্যক্তিসিগের বক্তৃতা কর্তৃক কতিপয় ক-
লাই উচিত।

রাজ্যকর্মী ইন্স সম্পাদকের নামে অক-
রূপপদমালিনী বলিয়া বালিন হইয়াছে।
এক অকরূপপদমালিনী তেপুটি সাক্ষিই ১০ ক-
রেক অস বাসিষ্ঠের অর্থ হইয়াছেন। বলিকা-
তার বাতাস রাজ্যকর্মী গিয়াছে।

কোচিন কুরিয়ার বলেন জিবাকুরে এত
দিন জীৱমান রাখিবার প্রথা ছিল। তত্ত্ব
রাজ্য সম্প্রতি তাহা উঠাইয়া দিয়াছেন। সু-
ক্ত দালেন। একপে বিদ্যামিকা করিয়া আপ-
ন আপন অবস্থার উন্নতি সাধন করিতেছে।
অনেকে খুঁজি খুঁজি অবলম্বন করিয়াছে।
ক্রিষ্টিয়ানের রাজ্য অনেক দিনেরই উন্নয়ন বা-
বহার সর্বদা শুনা বাইতেছে।

সর বাটল কুরিয়ার প্রচারকনার্থ সবিশেষ
চেঁচাবান হইয়াছেন। বোম্বাই গেজেটে কিয়-
দিবস পূর্বে কতিপয়রার রেসিডেন্ট মেজর
বারের বিরুদ্ধে একটি প্রস্তাব লিখিত হওয়া।
তে তিনি তৎকালীন রেসিডেন্টকে পদচ্যুত
করেন। আবার সাঁটে বিবি প্রকৃতি বার-
র সহায়তা করাতে শাসনকর্তা তাঁহাকে হুত
ন পদে প্রতিষ্ঠিত করিতে সম্মত হইয়াছেন।
এখানে কাজ করিয়া সর বাটল কুরিয়ার শেষে
যেন দুই কুল হারান না।

বেকার নামক ব্যক্তি এক জন নীলকরের
টাকা চুরি করে, তাহার সেসিরনে দুই বৎসর
বিদায় হইয়াছে।

বিবি কিউ জরাল্ড আপন বেহারার না-
মে এই বলিয়া নালিশ করেন যে সে রাতি
যোগে তাঁহার গৃহস্থে প্রবেশ করিয়া তাঁহার
সতীত্ব নানের চর্চা পায়। উক্ত বেহারার চা-
রি হাস মিহান হইয়াছে।

১৫ই তার শনিবার।

বণিক সম্প্রদায় লেও সাহেবকে অতিশয়
ন পত্র প্রদান করিবার যে সঙ্কপ করিয়াছি-
লেন তাহা হইতে কান্ত হইয়াছেন। গত
কল্য এক টেলিগ্রাম আসিয়াছে “লেও সা-
হেব ও সরকার ল উত্তর পরম্পর সত্য হই-
য়াছে। লেও সাহেব তারতবর্ষে প্রত্যগমন
করিতেছেন। ৩.এ স্বাধীন সত্য হয়, আমা-
দিগের স্বাধীন।

• टाकार सिका	२११—२१५
• टाकार कोल्हानिब	२२५—२३०
• टाकार	२४१—२४५
• टाकार	२५१—२५२

একটন করিয়াছেন। ভাষান্তে বোধ হয় তিনিও
তাহার মতে বিশেষ অনুমোদন করেন।
কসত্তা পিতৃ ভক্তি একাংশে যে কি হোম আছে
আমি স্বাঃ। লিখচনা করিতে পরিলক্ষ্য না।

সোমপ্রকাশ

পূর্ব পূর্বসূরী মঙ্গলসিদ্ধিলাভার্থে: ধর্মমতী মুনিমহনী ম স্বীকৃতি

৪ ভাগ ।
৪ নং খণ্ড ।

{ সন ১২৬৩ : ২৪ ভাদ্র । ইং ১৮৬২ : ৮ সেপ্টেম্বর }

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন ।

মকদ্দমে সোমপ্রকাশের
গুরু নিয়ম ।

অগ্রিম মূল্য না পাউলে মকদ্দমে সোম-
প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না । উক্ত বার্ষিক
মূল্য ভাকমানস্ক সমেত ১০ এবং মাসিক
৬ টাকা নিরূপিত আছে । কয় মাসের স্থানে
অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না । মকদ্দমের
যদি কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা
হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই
পাউতে পারিবেন ।

বিজ্ঞাপন ।

বিবি দেবব

বিবি দেবব ও দেশীয়দিগকে জানাই
করেন যে হারা মাস্টারশিপে আপনাদি-
গের স্বাধীনতা ও কল্যাণের প্রতিশ্রুতি নিবারণ ইচ্ছা
করেন, উক্ত হারা উক্তকে সপাদ দিলে তিনি
অতি উচ্চ ও সন্মানের সহিত তাহা করিয়া
দিবেন । উক্ত কল্যাণ (মালিকের) পক্ষ
দ্বারা হারা ও সপাদ, তাহা অগ্রসম্মান
করিতে সর্বশেষ জানিও পারিবেন ।

সোমপ্রকাশ ।

২০০ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ ৮ ৯ ১০ ১১ ১২

দেশীয় উকীল ও মোক্তারগণ ।

পার্সিয়ানসকল সত্য ইংলণ্ডের চতু-
র্থ জর্জেস ট্রী কারোলাউনের বাতচ-
র মোক্তার গণন বিচার হয় । মকদ্দম
লাভ প্রাপ্ত হইয়া উক্ত পক্ষ সন্মত করেন
তৎকালে তিনি বহিরাগত ছিলেন । আমার
মক্কেলের জন্য যদি রক্ষণার্থে চেষ্টা

করিতে হয়, তাহাও আমি করিব । এই
বাংলা উকীল ও মক্কেলের পরস্পরের
সে কিসকপ সম্বন্ধ, তাহা স্পষ্ট প্রতীয়মান
হইতেছে । কোন গোপনীয় কথাই উকীলে
র নিকটে অবস্থ থাকে না । এক জন হ
তাকারী তাহার উকীল কিলিগকে বলিয়া
ছিল “ আমি কত্যা করিয়াছি যথার্থ ; তথা-
পি আগনি আমার রক্ষার্থ যথোচিত চেষ্টা
করিবেন । ” উকীল ও মক্কেলের পরস্প-
রের কিসকপ বিশ্বাস থাকে । আবশ্যক, এত
দ্বারা স্পষ্ট সন্মত হইতেছে বটে, কিন্তু
উকীলের কর্তব্য নয় যে তিনি আপনার
মক্কেলকে সন্দেহ জানিয়াও ধর্মনীতির
বিপরীতকারী হইয়া তাহাকে নিষেধ
বলিয়া বিচারপতির সম্মুখে পরিচয়
দেন ।

উকীলদিগের কর্তব্য এই, তাহারা
অধি প্রত্যর্থের সন্ধি লেখা দি যে
সমস্ত প্রমাণ থাকে, তাহা যথাযথ
বিচারপতির সম্মুখে উপস্থিত করিবেন
এবং অধি প্রত্যর্থের সন্ধি শুধি বি-
শদ করিব । বিচারপতিগকে বুঝাইয়া
দিবেন । নানা প্রকার মিশ্র সাক্ষ্যই মক-
দ্দম বিবৃত করিয়া তুলিবার কথাই
নাহ । উক্ত হারা একপ বিবৃত ব্যবহার
করিয়া লোক স্থিতির বিষম বিষ উপস্থিত
হয় । লোক স্থিতি ও বাস্তবিক কি দেখা
কে বিচারপতির হস্তে সমর্পণ করিতে
বহিষ্ঠেছে না । কলকাতা উকীলের কর্তব্য
এই তিনি, মক্কেলকে রক্ষা করিবার নিমিত্ত

মাস্তানুসারে যথোচিত চেষ্টা করিবেন
কিন্তু কখনও ধর্মনীতির প্রতিকূলতা
করা উচিত নয় । তিনি যখন
র কথা অবগত করিবেন বটে, কিন্তু কোন
ক্রমেই পাপের প্রায়শ্চিত্ত দিবেন না ।
ও উকীলের নিকটে তাহা বৈ-
কর্য আছে, এইক অধিক তাহা নিষিদ্ধ
তাহা কখনও বিশ্বাস হওয়া
ইউরোপীয় উকীলেরা প্রায়ই এই নিয়ম
নিয়ম প্রতি পালন করিয়া থাকেন
ওর টেম্পলবারের ইতিহাস
তত্ত্ব ব্যারিষ্টারদিগের সমস্ত
পরামর্শের সর্বশেষ পারি-
য়ায় ।

উকীলদিগের যে গুণসম্বন্ধে
তাব বিষয় আমরা উপরে উল্লেখ করি-
এ দেশের উকীলদিগের তাহা আছে
না । সত্য কথা বলিতে কি কতিপয়
ব্যক্তির একেশের উকীলদিগের উপ-
সাধু বলিয়া আমাদিগের তত্ত্ব মাই-
কীলের কাছে যাওয়া আমাদিগের পক্ষে
রোগীর বিষ ভোজনের ন্যায় হইয়াছে
কি জন্য লোকে তাহা দিগের প্রতি
অন্ধা সম্পন্ন নহেন ইহা কি বাবসা-
দোষ : ন হতাবগত কোন দোষ আছে
বাবসাের অথবা হতাবের দোষ হই
ইংলণ্ডের উকীলেরাও সচরিত্র বলিয়া
প্রতিষ্ঠিত হইতেছেন না । একটা বিশেষ নিয়-
মোবই একপ ঘটনা হইছে । সে দেশ এ
এ দেশের উকীল : মকদ্দমা

মোমপ্রকাশ !

বাদালতে বক্তৃতা করিয়া অর্ধি এত
রূপক সমর্থন এই উত্তর দাখিল করিয়া
কেন। ইংলণ্ডে বক্তৃত্ত্ব ক্ষমতা নোংরা
হয়। আটর্নীর মকদ্দমার কোণাকুণ্ড ও বা
রীকরের। বিচার কালে অর্ধি প্রত্যর্ধির
পক্ষ সমর্থন করেন। এই কারণেই বারি
উন্নতিগের চরিত্র দোষ অভিযার সত্যাবনা
অপ।

বিশেষতঃ টেম্পলবারের আর একটি
উক্তির বিষয় আছে। যে বারিউর ব্যবসায়
সম্প্রদায়িক অর্থবা সমাজ সম্বন্ধে হটক,
এ নীতিমূলক কাজ করেন, তাঁহাকে
উক্তির বারিউর প্রেমি হইতে বহি
কৃত হইয়া দেওয়া হয়। সম্প্রতি এডুইন
জেনারেল প্রমিত দোষ স্পষ্ট হওয়াতে
ইংলণ্ডের বিচারালয় ত্যাগ করি
য়াছেন। বারিউরদিগকে মকদ্দমার
করিতে হয় না বলিয়াই লাড
উইল, সর টমাস ডেনম'র, লাড

জেমস কারলেট, ও আড
ম বিংশ শতাব্দীতে এবং
লাড কোক প্রভৃতি বারি
বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়া

শর উকীলদিগের অসচ্চরিত্রতা
একটি প্রধান কারণ আছে। আ
দালতে যত উকীল দেখিতে
হানি, অধিকাংশই ভাল লেখা
নোংরা না, কেবল আইন পরীক্ষা
উকীল হইয়াছেন। সুতরাং তাঁহা
র অধীনীতিতে দৃঢ়তর ভক্তি থাকা
হইবে। আদালতে গিয়া প্রদত্ত
কর্তব্য যে প্রচুরতর দৃঢ় হয়, উনি
অসচ্চরিত্র উকীল ও মোক্তারবা
রীকরের প্রধান কারণ। যে কাদের
অসচ্চরিত্র হইয়াছে। ধূর্তত, তাঁহাদিগের
কিন্যা ও ব্যবসায়; সাক্ষিদিগকে
কিন্যা তালিমী করা গুণপনা এবং
সাক্ষিদিগের সাক্ষ্য এবং নির্দোষ ও

ধনী সকল পাইলে নানা হল কো
শল ও তর প্রদর্শন দ্বারা তাহার অর্থ
দোহন করা তাহাদিগের পৌরব। এই
মহামতিবাই আমলা মহাপুরুষদিগের
উপার্জন দ্বারা। সত্য বটে মতো মতো

এক জন সং মোক্তারও দেখিতে
পাওয়া যায়। কিন্তু তাঁহারা মরুভূমির
মধ্য দ্বিত দুই একখানি কুঠি ভূমির ন্যায়।
তদ্বারা বালুকাময় প্রান্তরের ভয়ঙ্কর
তারই অধিকতর বৃদ্ধি হয়। ফলতঃ অজ
উকীল ও মোক্তারদিগের দোষে আমাদি
গের দেশের মহত্তর অনিষ্ট ঘটিতেছে।
ইহারা কিঞ্চিৎ স্বার্থের লোভে কলহ অন
লে আত্মত্যাগ মানের ন্যায় লোকের মকদ্দমা
প্রবৃদ্ধি সঞ্চিত করিয়া দেয়। কখন কখন
শুনিতে পাওয়া যায়, উল্লিখিত ধূর্তেরা
বাদী ও প্রতিবাদী উভয়ের নিকট হইতেই
অর্থ সংগ্রহ করিয়া থাকে। এ অনিষ্টের
নিবারণ না হইলে দেশোদ্ধার নাই।

একদম এতদ্বিবারণের উপায় নির্দি
শিত হইতেছে। ইংলণ্ডের টেম্পল বারের
ন্যায় উকীলদিগের একটি সভা করা এবং
উকীলদিগের কেবল আইনজ্ঞতার পরীক্ষা
না হইয়া বাহ্যতে বিদ্যা বুদ্ধি ও সচ্চরিত্র
তাদি জানিতে পারা যায় একপ পরীক্ষা
প্রণেয় নিয়ম করা হউক। এই সভায়
বিচার হইয়া তাহাদিগের চরিত্র দোষ প্রমা
ন হইবে, তাহারা বহিষ্কৃত হইবেন। উকী
লদিগের একটি স্বতন্ত্র সম্প্রদায় এবং মক
দ্দমা গুচাইয়া দিবার নিমিত্ত আটর্নীর
একটি স্বতন্ত্র সম্প্রদায় হউক। আটর্নীর
একপ বিবেচনা করিবেন না যে আটর্নীর
মতো মকদ্দমা সাজাইয়া দিতেই থাকিবেন
না, একথা বলা আমাদিগের অভিপ্রায়।
নিষেধ ও প্রদর্শনের অনুসার কেওয়া তাঁ
হাদিগের ও একটি প্রধান কর্তব্য কর্তব্য
হইবে। যখনই দেশের বিচারালয় হইতে
যে মোক্তারগণের আশ্রয় দুর করা আবশ্য
তা হইয়াছিল, তখনই প্রেমি ও কালতি পণ্ডী

কার উত্তীর্ণ হইবেন, তাঁহারা তিন আর
কেহ মোক্তারি করিতে পারিবেন না।
উকীলদিগের ন্যায় কোন মোক্তারের অর্থ
কমা বিদিত হইলে তাঁহাকেও গুচাইয়া আ
দালত হইতে বহিষ্কৃত করিতে হইবে।

আর একটি বিষয় এসব না করিয়া
এ প্রস্তাবের উপ সংহার করা বিবেচ্য হইতে
হে না। কিঞ্চিৎ অধিক বেতনে সচ্চরিত্র
লোক নিয়োজিত করিয়া আমলাগণের উৎ
কোচ প্রণয়ন করা করিলে আদালতের
সম্পূর্ণ কর্তব্য সংশোধিত হইবে না। দুই
বৎসরের মধ্যে আমরা অনেক গুলি মহাপ
পরিবর্তন দর্শন করিলাম, কিন্তু উল্লিখিত
বিষয়টি যে আজিও অপরিবর্তিত রহিয়া
ছে, তাহাতে কেবল যে দেশের চূর্ণাম ও
অনিষ্ট হইতেছে একপ নহে উহা এদেশের
র অধিকার একটি প্রধান অন্তরায় বলিয়া
পরিগণিত হইতেছে।

নীল প্রদর্শন প্রদেয়।

এদেশীয়েরা এখন কি করিতেছেন।
হিন্দু পেট্রিয়ার নীলপ্রদান প্রদেশের
সংবাদদাতা কোথায় গেলেন - এ সময়ে
এ জাদিগের বক্তৃতা কোথায় আছেন তাঁ
হাদিগের যে কোন উচ্চ বাচা শুনিতে পা
ওয়া যাইতেছে না। তাঁহারা কি তাবিয়া
ছেন, নীলঘটিত গোলযোগের শেষ হইয়া
ছে - প্রত্যারা কি অত্যাচারের হস্ত হইতে
মুক্ত হইয়াছে - যাঁহারা একপ দ্বির কবি
য়া নির্দোষ আছেন, তাঁহারা ভ্রম পতিত
হইয়াছেন নহেন নাই। পুনর্বার সকলের
বক্তৃতা করি হওয়া কর্তব্য। অত্যাচারের ক্র
মশঃ বৃদ্ধি হইতেছে।

এক জন মোমপ্রকাশ গ্রাহক পাবনা
হইতে লিখিয়াছেন, "এদেশের নীল
করদিগের সহিত প্রজাগণের বিবাদে
ব মীমাংসা হয় নাই, এখনও সময়ে
সময়ে বিবাদ বিসম্বাদ খুল অর্থমের লোভ
পাওয়া গিয়া থাকে, সম্প্রতি তাঁহাদিগের

কুটির সাহেবের ন্যায় অবিদ্যমানতার দ্বি-
বাদ হইয়াছিল। তাঁহার মত লওয়া হয়
না। আর এক জন.

সামর্যকালের মূল্য বিবেচনা করিয়া
আমরা পত্র দ্বারা এই বিষয়টি তাঁহার গোচর
করি। তাহাতে তিনি বিমল করিয়া, আমা
দিগের নিকটে এই বিলম্বের এই কারণ নি
খিয়াছেন, তিনি এক নীল কুটিতে (আ
মরা আপাততঃ পত্র প্রেরণিতা ও নীল কু
টির নাম প্রকাশ করিলাম না, তাহার কার
ণ এই এবিধে তাঁহার মত লওয়া হয়
নাই) কর্তব্য করিতেন। তাঁহার
জ্ঞান ও প্রজ্ঞা আছে। তাঁহার প্রজ্ঞা
নীল বপন করে নাই বলিয়া কুটির কর্তব্য
কর্তব্য সাহেব তাঁহার নামে নানা প্রকার
মিথ্যা নালিশ করিয়া তাঁহাকে বৎসরো
নাশি কষ্ট দেন। তাঁহার কারাবাস দুর্দশা
পরিচয় হইয়াছে। তিনি রাজসাহির জে
ল নিকটে আপীল করিয়া কোন কোন বি
ষয়ে বিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন বটে, কিন্তু
সম্পূর্ণ ভাবে তাঁহার আপত্তির শাস্তি হয়
নাই। নিজ পত্রের শেষে তিনি লিখিয়াছেন
“নীলদ পত্রের বর্ণনায় যদি কোন মহাত্মার
সন্দেহ থাকে, তবে বারেক এ প্রবেশে আগ
মন করিয়া নীলকরের অভ্যাস ও বিচার
প্রণালী ও অঙ্গদের অবস্থা কখনকাল অবলো
কন করিলেই বর্ণিত পুস্তকের একটি কথার
প্রতিও অবিশ্বাস করিবার অধিকার কারণ
থাকিবে না।” এই সকল দেখিয়া শুনিয়া
কি বোধ হয়, রাজ পুরুষের ইউরোপীয়ে
না এদেশের জীবিত করিতে অথবা এদে
শ সহ্য করিতে আসিয়াছেন? নীলকরে
র এখান আবার জাকসন সাহেবের সহা
বতা প্রাপ্ত হইয়াছেন।

জাকসন সাহেব আইনের সম্পূর্ণ বিপ
রীতভাবী হইয়া প্রজাদিগের কর্তব্য হুঁকি
করিতেছেন। ১৮৫৯ অব্দে ১০ আইন
অনুসারে কর্তব্য হুঁকির বিজ্ঞাপন পূর্বে দেওয়া
ও সেই বিজ্ঞাপন দেওয়া হইয়াছে।

জাকসন সাহেব তাঁহার আদেশ
সম্বন্ধে নীলকর তা-১। কিছুই করত
নাই। একদা তাঁহাদিগের কথার উপরে
নির্ভর করিয়াই জাকসন সাহেব কর্তব্য হুঁকি
আজ্ঞা দিতেছেন। ডেপুটি কালেক্টর
জাকসন সাহেব হইয়াছেন। প্রজারা সকলে
প্রধানতঃ বিচারালয়ে আপীল করিয়াছে,
একদা সর বার্নের গিকক বাহা করেন।
কিন্তু প্রজারা সর্বস্বত্ব হইল। বাঁহারা তা
হাদিগকে দৈনিক অমলীবী করিবার ইচ্ছা
করেন, তাহাদিগের মনোরথ পূর্ণ হইবার
বিলম্ব সম্ভাবনা হইয়াছে। আমাদিগের
আরো আত্মত্বিক হুঁকির হইতেছে, যে বন
দেশীয় গবর্নমেন্ট এবিধে উদাসীন রহি
য়াছেন। হুঁকন লেপটমেন্ট গবর্নমেন্ট
বিলম্ব প্রকাশ করিয়া যেমন জীবিতকারী
বলের অনুরাগ লাভ চেষ্টা করিয়াছিলেন,
প্রজাদিগকে নীলকর মুখে সমর্পণ করিয়া
কি সেইরূপ অনুরাগ লাভের চেষ্টা আ
ছেন? যদি তাঁহার সেই অতিশয় হয়,
তাহা হুঁকনসিদ্ধি সম্ভব নাই। প্রজাকে
উৎসন্ন করিয়া কোন রাজা অথবা রাজ
প্রতিনিধি কখন প্রতিষ্ঠা তাঁজেন করেন
নাই। বার্বকালিক ইতিহাস এবিধে সাক্ষ্য
প্রদান করিতেছে। লাভ কানিও ভারত
ভূমিকে নির্দোষ শোভিত দ্বারা প্রাবিত ক
রিয়া জীবিতকারীদিগের সম্ভাব সাধন
চেষ্টা না করিয়া প্রজা ব্রহ্ম করিয়াছিলে
ন, তাহাতে তিনি প্রতিষ্ঠা তাঁজেন কি অপ্রতি
ষ্ঠা তাঁজেন হইয়াছিলেন, সেই জীবিতকারি
রাই কি শেষে সেই লাভ কানিওর অংশ
পাঠে উত্তম জন নাই? কোন জীবিতকারী
কি প্রান্ত সাহেবের ন্যায়পরতার অপল
পে সাহসী হইতে পারেন? জাকসন সা
হেব সে কুখ্যাত করিয়াছেন তাহা ন্যায়
সিদ্ধ কি না বনদেশীয় গবর্নমেন্ট আত্ম
বোকেট জেনরলের মত হইয়া অমায়িক
দ্বিগ্ন করিতে পারেন।

পরিশেষে বনদেশীয় গবর্নমেন্টকে

আর একটি কথা জিজ্ঞাস্য।
প্রজাদের উপলক্ষ্যে করা
হে না। জাকসন ও কার্ভার সাহেব
রিপোর্টের কি হইল? তাহা কি প্রকাশ
মধ্যে থাকিয়া কীট বিজ্ঞানী করিয়া
তাহা কি জমা আনিও প্রকাশিত করিতে
না? বীভন সাহেব কি তবে কয়েকটি ভিডি
চকে খুলি মুক্তি নিবেশন করিয়া সকলকে
ভুলাইয়া রাখিবেন? আর কি প্রজাদি
গের কষ্টের বিষয় বিস্তৃত করিয়া
আমরা এত দিন তাবিরাহিলায় রিপোর্ট
প্রকাশিত হইবে? কিন্তু কৈ তাহা হইল
না। যদি আর কিছু কাল না হয়, সমস্ত
একবার হইয়া সেই রিপোর্ট প্রকাশ করা
আবশ্যক।

হাজরাবাজার

মনুস্মৃতিই আর বার্ষিক। বার্ষিক
রতা বর্জমান সভ্যতা ও সামাজিক ব্যাপা
রের একটি প্রধান অনুষ্ঠান। এই বৈষ্ণব
বার্ষিক ব্যক্তিকে কর্তব্য করিয়া আমাদি
গের বিষয় জ্ঞেয়। সচরাচর প্রজা
ব্যক্তিকেই বার্ষিকসাধনা দ্বিগ্ন জিজ্ঞাস্য
অবলম্বন করিতে দেখা যায়। কিন্তু বর্ত
সেই সেই ব্যক্তির সেই সেই বার্ষিক
বার্ষিক পত্রের অন্তর্ভুক্ত করিয়া হয়, তাহা
কেহ তাহার প্রতিবাদ করে না? কিন্তু বা
ন বার্ষিকতা সর্বসাধারণের অন্তর্ভুক্ত
হেতু হইয়া উঠে; যখন বার্ষিক ব্যক্তি
আপন অধীকৃত সাধনা নির্দেশ ও নির্দ
হ ব্যক্তিকে উৎসন্ন করিয়া চেষ্টা পায়
যখন সেই চেষ্টা সাধারণের বিজ্ঞ সাধন
দেশের পৌরস্বত্ব ও সমিতির অবলম্বন
হল করিয়া করা হয়, তখনই বার্ষিকতা
একটি সুশাসন হইয়া থাকে, তখনই তত্ত
লোক সাহেবই তাহার প্রতিবাদ করা ক
র্তব্য। কয়েক দাসাবধি কয়েক জন আর
ভিন্ন একটি বার্ষিক অঙ্গ চেষ্টা কর্তব্য
করিয়া আমাদিগের অভ্যাসে অভ্যাস

রাহে। ইহাদিগের ইচ্ছা এই, রাজ্যের সমুদায় রাজ্য প্রকৃত হইল, বংশীহাদিগের রাজ্য লইয়া শ্রীহৃদিক। নামধারিদিগকে বিভাগ করিয়া দেওয়া হইল। ভারতবর্ষের শ্রীহৃদিক এই শব্দটি ইহাদিগের সর্বশেষ সহায়তা করিতেছে।

পাঠকগণের অন্তর থাকিতে পারে যে, ও অব ইতিয়া কয়েক মাস অবধি হায়দরাবাদে কর্ণেল ডেবিডসনের চরিত্রের প্রতি ঘোষণা করিয়া আসিতেছিলেন, তিনি উপরিহৃত কর্তৃপক্ষের কোপোদ্দীপন করিবার চেষ্টার প্রতি করেন নাই। তিনি বলেন, তৎকাল মদ্য মৃত্যু সমান চির বস হইতে করিয়া লইয়াছেন; এবং কর্ণেল ডেবিডসন ভূতলে উপবিষ্ট হইয়া ইংরাজ জাতির অবমাননা করিয়াছেন। যদিও কর্ণেল ডেবিডসনের বন্ধুগণ এবং তিনি নিজে ভ্রাতৃত্বকালে স্পষ্টাক্ষরে কহিয়াছেন, এ সকল মিথ্যা কথা, তথাপি উক্ত মহান তিরা বিরত হন নাই। জুনিয়র তদানীন্তন প্রধান সেনাপতি লাড গ্রাণবিলকে প্রথমতঃ হুগলি দেন, শেষে তাঁহার হত্যার পর তাঁকে নির্দোষ বলিয়া জানিতে পারেন।

তাঁহার অতিশয় পরিচাপ হয়, কিন্তু নামধারিগের শ্রীহৃদিকারিদলের সে স্বভাব নহে। যে কারণে শ্রীহৃদিকারিরা কর্ণেল ডেবিডসনের ও হায়দরাবাদের নিজানের উপরে এত কুপিত, তাহা এক্ষণে আমরা জানিতে পারিবাঁচি। তাহা এই—

ওরিয়েণ্টে ফোর্স এতদ্দেশীয় রাজগণকে দাসত্ব শৃঙ্খলে বদ্ধ করিয়া রাখিবার জন্য সর্বসিভিয়ারি আলাদা পদে স্থিতি করে। ইহার ফল তাৎপর্য্য এই, যে যে রাজা প্রকৃত একপ সম্রাট হইবে, তাঁহার রাজ্যে কয়েক সহস্র সৈন্য থাকিবে, ইংরাজ সৈন্যগণ তাহার অধিনায়কত্ব করিবেন, ইহাদিগের বেতনের জন্য সেই শতাংশ আদায় রাজ্যের কিয়ৎংশ হাড়িয়া দিবেন। এই সকল সৈন্য থাকিতে রাজা বহিঃশত্রুর

উপদ্রব হইতে মুক্ত হইলেন বটে কিন্তু উহার আদায় প্রকৃত নহল। নিজামের রাজ্যের পুরাতন প্রদেশ এই নিমিত্ত হাড়িয়া দেওয়া হইয়াছে। তাঁহার সহিত এই বন্দোবস্ত থাকে যে সেনাগণের বেতন প্রভৃতি দিয়া টোকা উত্তম থাকিবে, তাহা তাঁহাকে প্রত্যাশ করা হইবে। বন্দোবস্ত মাস হইল, যখন মধ্যাহ্নভবে স্বতন্ত্র কমিসনার নিযুক্ত করিবার প্রস্তাব হয়, তৎকালে টেম্পল সাহেব নিজামের নিকটে প্রস্তাব করেন, বেরারের উত্তম টোকা নিজামকে না দিয়া দেশের শ্রীহৃদিক মুক্তকণ্ঠে পড়িতে বাধ্য করা হইবে, এবং পূর্বে যেমন এই প্রদেশ রেসিডেন্টের হস্তে ছিল সেদপ না থাকিয়া স্বতন্ত্র কর্তৃত্বের অধীন হইবে। কলতঃ টেম্পল সাহেবের প্রকারান্তরে এই কথা বলা হইল যে বেরার প্রদেশটিকে তিনি তাঁহার মৃত্যু কমিসনারের অধুগত করিতে অভিলষী হইয়াছেন। নিজাম ইহাতে অসম্মতি প্রকাশ করিলেন।

বেরার মহারাষ্ট্রীয়দিগের নিকট হইতে অনেক কষ্টে লওয়া হয়; ইহা তাঁহার পৈতৃক রাজ্য; এতৎ পরিচয় গ কবিলে তাঁহাকে কেন্দ্র প্রভাগের নিকটে নয় অন্য অন্য রাজগণের নিকটেও স্থগিত ও নিষিদ্ধ হইতে হয়। এই সকল বিবেচনা করিয়া তিনি তাহা পরিচায় করিতে সম্মত হইলেন না। পাঠকগণ! শ্রীহৃদিকারিদিগের কি অদ্ভুত দৃষ্টিভঙ্গি দেখুন! তাঁহার পর গবর্নমেন্টকে বলা হইল, বেরারে ব্যাপোপযুক্ত আয় হইবে, সাধারণ খরচাদি হইতে অনেক টোকা দিতে হয়। কিন্তু অনুসন্ধান দ্বারা প্রকাশিত হইল, তথ্য প্রায়শঃ একটি টোকা আসি ইহা থাকে। বায় বাজে করে কলতঃ টোকা উত্তম হইবে। এ দিকে সোলাপুর বিনিয় করিয়া গবর্নমেন্ট নিজামের নিকট হইতে গোদাখরীর উত্তম

কিছু আদায় লইয়াছেন। বেরারের উত্তম টোকা গোদাখরীর গর্ত হৃদিকারিবার নিমিত্ত নিম্নোক্ত হইল, ইহা টেম্পল সাহেব তাঁহার কয়েক জন শ্রীহৃদিকারি সহায় হইল। কিন্তু এখন আর বলপূর্বক তাহা লওয়া সম্ভাবিত নয়। লাড ক্যানিং বল প্রকাশের ফল অতীত করিয়া গিয়াছেন। বিশেষতঃ কর্ণেল ডেবিডসন নিজামকে মনঃপীড়া দিতে অসম্মত হন, তাঁহার অনুরোধ অনুসারে গবর্নমেন্ট টেম্পল সাহেবের প্রস্তাব গ্রহণ করিলেন না। একে জন্য কর্ণেল ডেবিডসন ক্রেও অব ইতিয়ার দলের অধিনায়ক হইলেন। ইতিমধ্যে নিজামের ঠাঁয় চির প্রহণে অসম্মতিকপ সুযোগ উপস্থিত হইল। আর কি? জমনি নিজামকে বিশ্বাসঘাতক, বিদ্রোহী প্রভৃতি উপাধি প্রদান করা হইল। কর্ণেল ডেবিডসন অসার অপদাণ্ড ও দীর কঠোর কার্য উপেক্ষাকরী প্রভৃতি বিশেষণ দ্বারা নির্দেশিত হইতে লাগিলেন। তাঁহার পূর্বের সাহস পৌরুষ প্রভৃতি সমুদায় গুণ বিফল হইল।

ইহার অপেক্ষা স্বার্থপরতা আর কি আছে? এক রাজ্য পৈতৃক রাজ্য পরিচয় করিতে অসম্মত হওয়াতে শ্রীহৃদিকারি দলের অতীর্ষ সিক হইল না। ইহার ফল; অপরাধ আর কি হইতে পারে? রেসিডেন্ট বল পূর্বক তাহা লইলেন না, অতএব পদচ্যুতিকপ দণ্ড বিধান হইল। কি কেবল তাঁহার অপরাধের পরিচয় হওয়া সম্ভাবিত হয়? শ্রীহৃদিকারিদলের কি অদ্ভুত স্বভাব। কর্ণেল ডেবিডসন যদি বহু পূর্বক নিজামের রাজ্য লইতেন, এবং তাহা লক বিদ্রোহ ঘটিল, তাহা হইলে তিনি “স্বদেশের পৌরুষবর্জন, সাধারণের তি ও কর্তব্য কর্ম সুন্দর কপে সাধন কবিয়াছেন বলিয়া তাঁহার প্রাণসার সীমা থাকিত না, তিনি অন্যায় করিয়া এক চরিত্রকে রাজ্যের সর্বস্বান্ত করিয়া মনঃপীড়া

না বলিয়া অতিশয় স্নেহ। আমরা একদে ইহাবিশেষের আভিধান বুঝিতে পারিলাম। রক্ষা হুজির নিমিত্ত অমায় ও আত্মচার করিলে তাহা ইহাবিশেষের নিকটে কর্তব্য কণ্ড বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে।

দাখিলদার কুলীন বৈদিক খেণীর
পরিবর্তন কলসংগ্রহ প্রথা
কি না?

এই বিষয়ে প্রকৃত আনন্দচন্দ্র বৈদিক নারীশ্রী একটা প্রস্তাব লিখিয়াছেন। এস্তা পি পাঠ করিয়া আমাদিগের হৃদয়ে যুগ প্রবর্তন ও অসামান্য উত্তরই উপস্থিত হইল। আমাদিগের বিষয় এই, তিনি কতক অংশে চিত্রকল সৎকারের বন্ধন ক্ষুদ্র করিয়া একদা কল কুলসংগ্রহত কুশলিত প্রথার দোষোপশোধ ও তৎপরিবর্তন চেষ্টায় সাহসবান হইয়াছেন। অন্য কলসংগ্রহ বিষয় এই, চিত্রকল কুলসংগ্রহের প্রাচুর্য্য তাহার স্বকরকরকে সম্পূর্ণরূপে পরিত্যাগ করে নাই। শাস্ত্র ও যুক্তি অনুসারে কুল সংগ্রহের যত কুল পরিবর্তন করিবার সম্ভাবনা আছে, এক কুলসংগ্রহ প্রতাবে তিনি কত কুল বাইতে পারেন নাই।

আমরা পূর্বে একবার উল্লিখিত বৈদিক জেণীর কুলসংগ্রহের বিষয় প্রসঙ্গ করিয়াছিলাম, বোধ হয় পাঠকগণের স্মরণ থাকিবে। এই জেণীর জেণ গণ্ডে গণ্ডে সংগ্রহ হইয়া থাকে। সচরাচর অশৌচোত্তে (কন্যা জন্মের একমাস পরে) বাগ্‌দান কিয়া জিহাজ কর। তিনি আপন কন্যার জন্মের পরে কতক হিসেব মতে দানদান করিতে না পারিলে কন্যার জীবন কৌলীন্য হইবার শঙ্কা আছে। একদা বৈদিক ঠা করিয়া কন্যার নিদ্রাও আরও উত্তর। কন্যার জীবন কৌলীন্য হইতেই সমস্ত কলসংগ্রহ প্রথা। দাখিলে যে যে অনিষ্ট ঘটিত তাহার আভিধান করিয়া প্রথার পরিবর্তন প্রয়োজন নাই, সু

কিমান ব্যক্তিমাতেই তা। অন্যায়সে বুঝিতে পারিতেছেন। ইটা একটা নিয়ম বাগ্‌দান প্রথা। এদেশে বাগ্‌দান চলিত থাকতে শরীর, সমাজ ও রাজনীতি সংক্রান্ত যে যে অনিষ্ট ঘটিতেছে, বৈদিক বিশেষ বাগ্‌দান প্রথার সে সকলগুলি আছে। বিস্তারিত করিয়া সে সকলের উল্লেখ করা অন্য আমাদিগের অতিশ্রেত নহে।

একদে প্রকৃত বিষয়ের অনুসরণ করা বাইতেছে। একদে যেকোন প্রথা প্রচলিতে আছে, বৈদিকবাগ্‌দান তাহার পরিবর্তন করিয়া এই করিতে চাহিতেছেন যে এখন যেমন অশৌচোত্তে বাগ্‌দান হয় সেকণ না হইয়া তিন বৎসরের পর সাত বৎসরের মধ্যে বাকদান হইবে। তিনি যে যুক্তির অনুসারী হইয়া এইরূপ নিয়ম কবিত্তে চাহিতেছেন সে এই—

আমাদিগের কুলসংগ্রহ প্রথা একদে যে বংশে নিশ্চায়িত হইয়া থাকে, যদি তাহার কোন অংশ অসংগত থাকে বিকৃত রূপে পরিণত হইয়াছে কিবা কুলসংগ্রহ হইয়া উঠিয়াছে এমত বোধ হয়, তবে অশৌচোত্তে করিতে হইবে যে সে অংশ পরিবর্তন করিয়া বিশুদ্ধ ও শাস্ত্র সম্মত করা কর্তব্য। অতএব কন্যা পাঞ্জের কত বয়সে ও নিবাহের কত দিন পূর্বে বাগ্‌দান করা কর্তব্য তদ্বিষয়ে শাস্ত্রে বি নিয়ম আছে, তাহাই অনুসন্ধান করা বিধেয়। তাহাতে কন্যার প্রমাণ অশৌচোত্তে প্রাপ্ত হইয়া যায়, বধা,

আজ্ঞাপ্রদত্ত চূড়াকরণ বস্ত্র নয়া বিপাক তে।
সকলঃ শৌচঃ তবৎসর সর্ব বয়সে নিত্যমঃ।
ততোবাগ্‌ দানপথ্যঃ বাবদেকতঃ সর্ব হি।
অতঃ পরঃ প্রবন্ধান্নঃ প্রিভাঃ নিতি নিত্যমঃ।
বাকপ্রদানে ততে তত্র জেণকোত্তরতঃ।
সিঃ স্য চ ততোঃ কন্যার কলঃ জেণ হি।
এক দিন অবাধ চূড়া কাল পর্যন্ত কন্যা বয়সে সধ্যঃ শৌচ ইহা সর্ব বয়সেই বিজ্ঞা সামান্য বিধি। আর চূড়া অবাধ বাগ্‌দান পূর্ব্বত একই মাত্র অশৌচ। বাগ্‌দান অবাধ অর্থাৎ সংগ্রহান পর্যন্ত জিহাজ, ইহা

নিষিদ্ধ। এই বাগ্‌দানের পর জিহাজ হইয়া শিউকল ও বরকল উভয়ই ও বধা। আর সংগ্রহানের পর কেবল চূড়া ও বধা অশৌচ হয়।

বধিও এতলে বাগ্‌দানের কাল পাঠ করে নিরুপিত নাই, তথাপি চূড়াকাল ও কাল কাল নির্ণীত হইলেই তাহার বধা যে বাগ্‌দানের কাল তাহা সুকল্যাণ মিত হইলে। অতএব চূড়া কাল নির্ণয়ে বহু স্নেহেন বধা,

চূড়াকরণ বিজ্ঞাভীনাং সর্বোর্বানের পর্যন্ত প্রথমতঃ তৃতীয়ে বা কর্তব্যঃ।

তা
অথা, অমজিকা তু কার্যেয়ং জীণা

সংস্কারার্থঃ শরীরস্য বধাকালঃ বধা
সাম্প্রদেয়ঃ ও কজির ইত্যন্য সকলের
নিধান হেতু পর্যন্তঃ এখন বধে বা তৃত
চূড়া কর্তব্য কর্তব্য। আর জীদিগের
সংস্কারার্থ পুঙ্খোক্ত বধাকাল ও বধা
মগ্র জিয়া কল্যাণ অমগ্রক সম্পন্ন করিতেক

আগন্তবের বচন বধা,
অবাধত্ব তীরে বধে চূড়াকরণবিধি
অনন্তর তৃতীর বধে চূড়া করণ কৈরেক
চূড়া কার্গো তৃতীয়াং সর্ব চূড়াকরণতঃ
চূড়া কর্তব্য তৃতীর বধেই সর্ব চূড়া জিহাজ
বস্ত্র কাল।

এই সকল বচনে তিন বৎসর পর্যন্ত
কাল নির্ণীত হইয়াছে এবং বিবাহের
সম্মতিতে অজিরসের বচনে নিরুপিত
বধা।

অষ্টমী তবৎসর শৌচী সর্ববধা তু যোতিঃ
সময়ে কর্তব্য। যোক্তা অতঃ পরঃ সর্ব
তৎসরঃ সর্বসরে প্রাতঃ সময়ে কন্যা বট
প্রমোদন্য। প্রমোদন ন দোষঃ কালদোষত
তথা, সপ্তমঃ সর্বসরঃ বিবাহঃ ও

১৩২৭
কালি
কর্য্য। অশৌচে রাজস্রাব্যঃ পর্যন্তকিতঃ
অষ্টমীর কন্যাদানে গোবীন্দান,
মর্দে গোবীন্দান সময়ে কন্যাদানের
ইহা পরে রাজস্রাব্যঃ অতএব স
সম্যাক হইলেই বরপূর্ব্বক কন্যাদান করি
তখন আর কালদোষ হইবেক না আ

[illegible]

১৬ বোম্বাই মহাশক্তি বিবর্তিত মন্ডল
উক্ত উদ্ভিদা শিবিলায় বিদ্যমান
কাল পূর্ব হুইনগার আইন

আবদাখানি ডাখান
সরকার একই কালে
কাজের কারিগর

1950年10月1日

সোমপ্রকাশ

प्रवर्तना प्रकटिहिताय पार्थिवः सार्वभौमः महर्षि नमः

१) मन १२७२११ आश्विन। ई. १९२१ १० मंगल १०
 २) गान्धारी १ टाका
 ३) बाबिक अग्रिम १० कटा

‘५५’ ५५ !

मन्थानां कृता नदा' १ २७३ १८,

ଆହୁ ପ୍ରତି ଆବୃତ୍ତିକ ଶିଳ୍ପର ଉଦ୍ୟମ ମାନ ୨
ଶିଳ୍ପ କାର୍ଯ୍ୟ

স্বাধীনতা সংগ্রামের সময়

१-५० अक्षर :

[illegible]

विंशत्यंशः ।

वि. ५, अश्वत्थ ।

নামি যেহেতু এ দেশীয়দিগকে জ'নাতে-
ভেরেন, ব'ভারা কটোপ্রাচিত আপনামি
গেব দ্রা ম বন্যাদির আতিথ্যে কহি'র ইচ্ছা
করেন, উ'ভারা তাহাকে সনাদ দিলে 'উ'নি
অতি উৎকর্ষে ও সন্মানের সহিত তাহা কবির
ভিয়েন! ফচ কর্কের (লালগিরজার) পূর্ব
কি'র উ'ভার কাফালয়, শুধার গ'রুদান
- রলে সবিশেষ আনন্দে পাবিবেন।

विष्णुपुत्रः ।

মাসিক রূপে কলীরাধিপতি "পিটনের
জীবন রসাতল পুস্তকের স্বল্প আনি বিক্রয়
বহিঃ ইচ্ছুক আছি। এই পুস্তকের প্রথম
সংস্করণের ১০০০ খণ্ডের মধ্যে ৫০ খণ্ড মাত্র
আজিও রহিয়াছে। ইহা কলিকাতার
১৭৯ ও নবাবজের নানা বিদ্যালয়ে ব্যবহৃত
হইয়াছে। তিনি ইচ্ছুক হইলে কলিকাতা

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

निष्कर्षः ।

ମାତ୍ର ବିଶିଷ୍ଟତା ଗ୍ରହଣ

५७ नः नालय्य ई तः ।

[illegible]

ଅନୁମୋଦିତ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ନାମ

ମହାଶୟନୀ ଓ ଶ୍ରୀମତୀଙ୍କ ଶ୍ରୀମତୀଙ୍କ

ਅਕਾਲੀ ਸਿੱਖੀ ਸਾਹਿਬ ਬੁਲਿਤ

दीर्घवर्णवर्णः ५। अक्षरः ३।

ଶୈବଜ୍ଞାନିକମ୍ପ୍ରାଣୀ

ବିନାୟକଙ୍କ ଅଧିକାରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ମହାଶୟ

बशांतांरुजोष भक्त्याकाशायाय

कृष्ण दत्त निवास

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

विष्णुमन ।

[illegible]

অ'মরা মধ্যে মধ্যে শুনিতে পাই কলি-
কাত, ভবানীপুর প্রভৃতি স্থানের গ্রাহকগণ
নিয়মিত কাগজ পান না, সরকারেরা আল-
দা করেন, অতএব উ'হাদিগকে জানাই বাই-
তেছে, যিনি কাগজ না পাইবেন, তিনি -
কলক' অ'হাদিগকে জানাইবেন । সম্ভাব-
কের নামে কলিকাতা সংক'ত কার্যালয় দ্বি-
না দ্বারা চিঠি পাঠাইলেই আমরা পাইব ।

विद्याभवन ।

ট. ও বাং. ও ইংরেজী অর্থের সহিত
বাংলাদেশী নামক পুস্তক চলিত ও বহুতর অ-
চলিত কথার ব্যবহার ৩৭ পৃষ্ঠে মুদ্রিত
হইয়াছে, তাহা যেটুকু ইংরেজী ছাঁজগণের
পক্ষে অধিক কাঙ্ক্ষণীয়, মুদ্রা ১০০ ছয় আনা
মাত্র। কলিকাতা নিউ ইন্ডিয়ান লাইব্রেরি
কালেক্টর হুইটলিও ২৭ ভবনে কিংবা আমতা-
তলা পুণ্ড্রেশ্বরদাস ঘাটে ১২ নং ভবনে অথবা
নিম্নস্থানে কোর সৰু দৃশ্য প্রেরণ করিলে সফল
পুস্তক প্রাপ্ত হইবেন।

श्रीन शुभासु मा' ५

ਸਾ: ਬੋਧ, ਭੁਕਤ।

உதவி, உதவி

विज्ञापन ।

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

ମନ : ୧୫ ୫୨ ୫.୩

আমরা উপরে পদেখি যে বিদেশ
উন্নয়ন অর্থাৎ উন্নতির জন্যে
কিছু বিদেশীরাগিরের অভাৱ
অনেকের ভাবের মধ্যে উদ্ভাসিত। কে
এক প্রতীকার হয় না। প্রতীকার এই
কিছু মহান্ প্রচিন্তনকে আছে এক, যি
আমরা অভ্যাস করিলে জ্ঞানদ্বিগে
অধিকার বিষয়ে তৎসমসাময়িক বিচার
নিগের ন্যায়পরতা আর ক্ষুণ্ণি পায় না।
দ্বিতীয়, এদেশীয় যে সকল ব্যক্তি বিচার
পাল পদে অধিষ্ঠিত আছেন, তাঁহাদের
অগ্রে সাহেবের মওদমা উপস্থিত হয়
প্রাথ তাহার পরাজয় হয় না। রেলওয়ে
হুতি ইউরোপীয় কর্মচারীরা ইহার উদাহরণ
হয়। আমরা অনেক বার প্রবণ করিয়াছি
রেলওয়ে সাহেবের। এদেশীয় দিগের এ
তি বাহার পদে নাই অভ্যাস করিয়াছে
কিন্তু অভিযুক্ত হইয়া আদালতে উপস্থিত
হইয়া মাগি অমনি অব্যাহতি পাইয়াছেন।
কখন কখন এমন ঘটনাও হয়, বাহার উপস্থিত
সাহেব অভ্যাস করিলেন তাহার
র হওয়া দূরে কিছুকি তাহাকে আদালত
দালতের দণ্ড লইতে হয়। সেট দণ্ড
কালে ধর্ম ও ন্যায়পরতা অধিক
কর্তৃকে পরিচালন করিয়া দূরে
রে। এইরূপ ব্যবহারের একটি কারণ আছে
এদেশীয় বিচারকের। সাহেবদিগকে রা
পাইতে চাওয়া হয়। সাহেবের। কুপিল হই
রা পাইতে চাওয়া হয়। সাহেবের। কুপিল হই

এক জনের প্রতি অন্যায় করিলে অধর্ম হয়। ব'র ভয়ের ভিত্তি মূল কতাবনা। কিন্তু মূলক এই প্রভাবটি উপস্থিত হইয়াছে, স্বাভাবিক প্রকৃতি প্রেরিত পত্রে তাহা বর্ণন করিবেন। পত্রপ্রেরকের নিকট হইতে খোঁটাগাড়ির পয়সা লওয়া হইয়াছে, ইহা সামান্য কো-তুকাবহ অত্যাচার নহে। এক্ষণে আমা-দগের জিজ্ঞাসা এই, এ পয়সা গুলি কে-পায় মা'এব : না কমিদার ?

মকসলের আদালতে যে রূপে কাজ হয়।

আজি আমরা মকসলের জজ, মাজি-স্ট্রেট ও ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট প্রভৃতিকে ধীরে নিখিত বি'দ্যা গুলি উপহার দিলাম।

১। মাজির হাজিরার করণ ন জীর দুই পক্ষে দুই টাকা ও আসামীর হাজিরার করণ ১০ আনা লন।

২। আসামীর জামীন দিবার অস্থমতি হইলে তাহার নিকট হইতে নাজীর খতবরা ১০০ টাকা লইয়া থাকেন।

৩। দরখাস্তের সকল লইতে গেলে পে-কার ১০ আনা লন।

৪। এজহার দিতে গেলে ১০ আনা দিতে হয়।

৫। দলিল কেবল লইতে গেলে পেকার ১ টাকা না লইয়া কিরাইয়, কেন না।

৬। পেরাকার সেয়ার জমা দিতে গেলে এক আনা অধিক দিতে হয়।

৭। মোক্তার নামা জরুরি করিতে হ-ইলে পেকার ১০ আনা লইয়া থাকেন।

৮। কাটকতা সকল লইতে গেলে পেকার প্রতি নকলে কি, কিয় অধিক ১ টাকা লইয়া থাকেন।

৯। বাহারী সাকীর জমান বন্দী লন, তা-হার প্রতি সাকির নিকট হইতে ১০ আনা করিয়া লন।

১০। পেকারের কিয় লইবার আদরে হইবে তাহা মোক্তার অনুমান করে।

আমরা এই উপস্থিতিতে দিলাম, যে মকসল জজ, মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট

য়ে এরূপ করিবেন। কিন্তু অগণ্য দু-স্ত্রির হাতে ভিন্নপন্থীর হউপাতিত স্বকণী কলের ন্যায় ইহার চূড়ন হইবে নাকোহ নাই। যখন কেহ কাহাকে কো-ন উপহার দিবে, তখন তাহার একটা উদ্দেশ্য সাধন চেষ্টা থাকে। উপহার এহীতা উপহার নাহ, ব'সই মনোরথ পূর্ণ করিবার সাধ্যানুরূপ চেষ্টার ক্রটি করেন না। এই বিশ্বজনীন ব্যবহার বর্ণনে সা-হসী হইয়া আমরাও একটা সঙ্ক'প করিয়া উচ্চাখিত বিষয়গুলি ন্যায়পর প্রকাশিতকী কর্তব্যকারী জজ ও মাজিষ্ট্রেট প্রভৃতির অ-গ্রে উপস্থিত করিলাম। আমাদিগের সঙ্ক-প এই, এ অনিষ্ট গুলির নিবারণ হয়। তাহা হইলেই আমরা চরিতার্থ হইব।

বগুহের হউক আর অন্যগুহের হউক, সমপক্ষপাতে অন্যায় ও অত্যাচা-র নিবারণার্থই ধর্মাদিকরণ প্রতিষ্ঠিত হ-ইয়াছে। ন্যায়কারী রাজা ও রাজপ্রতিনিধিগণ অন্যায় নিবারণকালে আত্ম পর বিবেচনা করেন না।

বহুনি বাকুর বশী ন মহান।
ধর্ম ইত্যের নিয়ন্তকারণ।
ওদপদিষ্টেই নিপো ততঃপি বা
নিবত্তি যতেন সধর্মবিম্ববঃ ॥

রাজা হইলেই ক্রোধ লোকাদি পরি-ভাগ করিয়া বিদ্যা পক্ষপাতে স্বকর্তব্য সম্পাদন করিতে হইবে, এই বিবেচনা করিয়াই সেই রাজা চূষোদন কি পুত্র কি শত্রু কি ব'রোচরণ করিতেন তাহারই বহু বিধান করিতেন।

রাজা চূষোদন অন্য অন্য অংশ অ-ত্যাচারী হুরায়া বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিলেন। কিন্তু তিনি যখন প্রজা পালন করতেন সাধ্যানুসারে শত্রু ও শত্রু উভয়েরই স্বাভা-চার তুল্য কর্তব্য নিবারণ করিতেন, ব'রিত-বাদিত হইয়াছেন, তখন যে ইদারীকন সঙ্ক-প জজ ও মাজিষ্ট্রেটের দ্বারা আমা-দগের

অবশ্য কর্তব্য একথা বলা বা-আমরা উপরে আদালত সম্বন্ধে বিবয়ের উল্লেখ করিয়াছি, তাহার টি ন্যায়সিদ্ধ? কোম আইনে লিখি-বে নাজীর, পেকার প্রভৃতি বাকী ও বীর নিকট হইতে টাকা লইবেন?

এ সকল টাকা কি গবর্ণমেণ্টের কৈ-তুফ হইবে? জজ ও মাজিষ্ট্রেটেরা ব'রিত আ-ন আদালতের এমন প্রবৃত্তি প্রবিক-অন্যায় নিবারণে সমর্থ হইতেছেন না, ব'রিত যে তাহার প্রবৃত্তি অত্যাচারী ও অন্যায়ের বখাধ প্রাকব'রিতসারে নিবারণ ক-রিতেছেন, তাহাতে কিরূপ প্রভাব হই-বে? তাহারাই বিবেচনা করিয়া দেখুন না কেন, অধি প্রভাবিতরা সম্প-বাদে সবিচার লাভে সমর্থ হইবে যদিহাই আমা-দগের অনুকূল আইনের সৃষ্টি হইত। কিন্তু আমাদিগের অবৈধ স্বার্থ প্রবণ সন্নি-বারিত থাকিলে আইনের যে উদ্দেশ্য সি-দ্ধ হইবার সম্ভাবনা কি? পরিপোষ্য আমা-দিগের অনুরোধ এই, বিজ্ঞানসম্মত সন্নি-শেষ অনুসন্ধান করিয়া সেখানে তাহারি-র আদালতে উচ্চাখিত অন্যায় প্রোধ প্রবাহিত হইতেছে তাহারা অধি তাহার জানিতে পারেন তাহা করিয়া কোম অধি-লভে তদনিবারণ চেষ্টার প্রবৃত্তি হইবে।

সকলকেই জানাই।

সকল রাষ্ট্রের শাসক ও কলমে এনে-শীলসিদ্ধকে জরি মাদা-বিচারের, ব'রিত অধিকার প্রকাশ করেন, তখন আমা-দগের আদালতের দ্বারা চেষ্টার আমরা ব-বীর আমদ-অপাতী মূলক একটা উৎকর্ষ-সম্পন্ন লাভ করিলাম। কিন্তু কোমের-বিচার এই, জরি মনোবীত করিবার দোটে-আমরা উহার কলতোমী হইতেছি না-হইয়া অধি প্রভাবিত থাকিলে কেবল ও-পরিচার লাভের সম্পূর্ণ প্রত্যাশা থাকে।

লক্ষণ। ইংলও প্রকৃতি প্রাণের
প এ প্রথা অব্যাহত হয়, তদ্বিধি
করিলে উহা যে স্বাধীনতার একটি ল
তাহা স্পষ্ট প্রতীক্ষমান হইবে। ইংল
অধীশ্বর জন্মের মিকট হইতে তত
জন্মদারেরা যখন বলপূর্বক মানন
দী নামে সম্মান লন, তৎকালে কুরি
বিচারপ্রথা অব্যাহত করিবার কথা
বিশেষ করিয়া লিখিয়া লওয়া হইয়াছিল।
ফ্রান্সের বিপ্লবকালেও তথ্য উহা অব
্যাহত হয়। সম্রাট স্বাধীনতা লাভচেষ্টাই
টলিখিত সন্দেহ। এ চেষ্টার মূল।

আমাদিগের ৭ জুরি হইবার যোগ্য
লোক নাই একপ নয়, কেবল মকদ্দমার বি
চারপতিগণের মধ্যে সেই যোগ্য লোক
নাই হইতেছে না। তাঁহাদিগের কার্য ও
ব্যবহার দেখিয়া স্পষ্ট বোধ হয়, তাঁহারা জু
রি প্রথার বিষয়বিশেষ। এ প্রথাটি মকদ্দম
হইতে রহিত হয়, তাঁহাদিগের ইহা অন
তীত নয়, একথা বলিলে বোধ হয় অতুলিত
বোধ হয় না। আমরা কয়েক জন পূর্বে অ
বণ করিয়াছিলাম ২৪ পরগণার কয়েক জন
মুন্সি ও জুরির পদ আশ্রয় হইয়াছে। অর্থা
তঃ হুগলীর জন্ম জুরি নিয়োগ বিধির এক
টি অদ্ভুত ব্যবহার আরম্ভ করিয়াছেন। উক্ত
জন্ম স্বাধীনগকে জুরি পদে মনোনীত ক
রিতেছেন, তন্মধ্যে মুন্সি, গোয়াল প্রকৃতি
কোর্ট আতিরহি আর অদর্শন নাই। মুন্সি
জন্ম অত্যন্ত মকদ্দমায় এক এক জন জুরি
নিয়োগিত করেন। মুন্সি খেলার রীতি
তে জুরি বাচনী হইয়া থাকে। স্বাভাবিক প্র
থার মনোনীত না হন, তাঁহাদিগকে
জুরি পাঠ দিন উপস্থিত থাকিতে হয়।
আমাদিগের উপদেশনের স্থান নাই। তাঁহা
দিগের প্রতি প্রত্যাশিত সম্মান করাও হয়
না। আমরা যে মকদ্দমায় যেকোন নিম্নাতি
বিচার আদিগণের জুরি তিনি জুরিদিগের
কর্তব্যের পূর্বেই জন্ম প্রকাশ করেন।

জুরি প্রথা নিম্নোক্ত ৩
বর্ষ করীমানা হইতেছে। ৩
জুরি হইতে মকদ্দমা ন্যে
মসীতে বচি না নহ অনেক স্থানে এই
পদ বচিতেছে। একপ ব্যবহারের কাল
কি এক কারণ আমাদিগের পক্ষে
প্রতিভাত হইতেছে। সে এই - মিথি
রান বিচারপতিরা আপনারা সার্বস্বত্ব হই
তে চাহেন, তাঁহাদিগের যে মত, তন্মুসা
রে বিচার হয়, ইহাই তাঁহাদিগের অভি
প্রেত। জুরিরা সকল সময়ে তাঁহাদিগের
মতে মত দেন না। সুতরাং জুরি প্রথা তাঁ
হাদিগের বিধিই না হইবে কেন? এই
কারণেই বোধ হয়, তাঁহারা সুশিক্ষিত
যোগ্য ও অপকপত্তী লোকদিগকে জু
রির পদে মনোনীত করিতে অস্বীকারী
নহেন। অযোগ্য লোক নিয়োগ দ্বারা ক
মে জুরিপ্রথা সকলের অবজ্ঞাত হইয়া
উঠিয়া গেলেই তাঁহাদিগের কর্তব্য যায়।

যেকোন কার্য করিলে অতীত নিম্ন
হইবার সম্ভাবনা আছে, এক্ষণে তাহা নি
শ্চয় হইতেছে। এতদেশসাধারণো
জুরিপ্রথা এই মুহূর্ত্ত অব্যাহত হইয়াছে।
মুহূর্ত্ত বলিয়া আশিও সকলে ইহার মর্ম
গ্রহে সমর্থ হন নাই। বিশেষতঃ অনেকের
একপ বোধ আছে, তাহাতে সাক্ষাৎ সম
ক্ষেপে সর্ব সম্বন্ধ না থাকে, তাহাতে মানু
রোগ প্রকৃতি জন্ম না। যখন ইংলও জুরি
প্রথা প্রথম অব্যাহত হয়, তখনও এইরূপ
বটনা হইয়াছিল। আমাদিগের
উপরে জুরি নিয়োগের তদ্বিধি প্রতি হইবে
তাঁহাদিগের কর্তব্য, তাঁহারা সুশিক্ষিত
স্ববোধ অনুরক্ত ও উৎসাহসম্মান লোক
দেখিয়াই তৎপদে নিয়োগিত করিবার চেষ্টা
করেন। এক্ষণে সকল সম্পন্ন লোক
অধিক মিলিত হন, তাহা আমরা স্বীকার
করি না। কিন্তু নিয়োগিত দ্বারা যদি বি
বেচনা পূর্বক কার্য করেন, তবে সমস্ত

মকদ্দমায় কি জন্ম মুহূর্ত্ত মুহূর্ত্ত
নিয়োগিত করা হইতেছে? মকদ্দমার
এ প্রতি মাসে এক এক বার সেসিযনের
বসিতেছে। এক দণ্ড জরি দ্বারা কি এক
সেসিযনের মকদ্দমার বিচার চলেন।
অত্যন্ত মকদ্দমায় ৭ জন করিয়া জুরি ক
রিলে এত জরি কোথায় পাওয়া যাইবে?
পারিশেষে বিশেষ করিয়া আর একটা
কথার উল্লেখ না করিয়া এ বিষয়ের উপসং
হার করা বিশেষ হইতেছে না। বিচার
পতিরা যেন কোনরূপে জুরিদিগের জুরি
মাননা না করেন। জুরি প্রথা যখন জুরি
উদ্বোধন স্বাধীনতা ও অপূর্ব একটি বস্তু
লাভ সম্বন্ধ রহিয়াছে, তখন জুরি অব
মাননা হইলেই জুরিদিগের অবমাননা
হইবে। আমরা স্পষ্টাক্ষরে কহিতেছি,
তারতম্য পুনঃ পুনঃ সে অপমান সম্বন্ধ
রিবেন না।

বিভাজ্য নিম্নর আশ্রয় মুহূর্ত্ত
সাম্প্রতিকতা।

গত বারে মিথ্যাসাক্ষ্য এই শিরোনাম
দ্বারা যে প্রস্তাব লিখিত হয়, পাঠকগণ
তাহা পাঠ করিয়াছেন সন্দেহ নাই এবং
আমাদিগের দেশের বিধবাদিগের দুর্দশা
রও একটি উদাহরণ প্রাপ্ত হইয়াছেন। এ
দেশে সতী জীর আদর্শ স্বরূপ অনেক
বিধবা আছেন, আমরা মুক্ত কণ্ঠে একথা
স্বীকার করি, কিন্তু এদেশের বিধবাগণ কে
রূপ অসহ্য বস্ত্রাভাষ্য করিতেছেন এক
তাঁহাদিগের জ্বরাকাল যে রূপ পাতক
অজ্ঞান অন্ধকারে আবদ্ধ হইয়া আছে
তাহাতে সকলেই যে সংশোধিত হইয়া
সং পঞ্চমমানে সমর্থ হইবে ইহা কোন
ক্রমেই সম্ভাবিত নহে। অনেকসংখ্য বিধ
বা অসহ্য প্রয়োচণার বিমোহিত ৩২
জুরি যেন যোগে সমর্থ হইয়া আপন
স্বাধীনতা প্রাপ্ত হন। তাহারা

হইল।
 প্রাচীনকালে
 তুঙ্গ
 এক
 ২
 ৩
 ৪
 ৫
 ৬
 ৭
 ৮
 ৯
 ১০
 ১১
 ১২
 ১৩
 ১৪
 ১৫
 ১৬
 ১৭
 ১৮
 ১৯
 ২০
 ২১
 ২২
 ২৩
 ২৪
 ২৫
 ২৬
 ২৭
 ২৮
 ২৯
 ৩০
 ৩১
 ৩২
 ৩৩
 ৩৪
 ৩৫
 ৩৬
 ৩৭
 ৩৮
 ৩৯
 ৪০
 ৪১
 ৪২
 ৪৩
 ৪৪
 ৪৫
 ৪৬
 ৪৭
 ৪৮
 ৪৯
 ৫০
 ৫১
 ৫২
 ৫৩
 ৫৪
 ৫৫
 ৫৬
 ৫৭
 ৫৮
 ৫৯
 ৬০
 ৬১
 ৬২
 ৬৩
 ৬৪
 ৬৫
 ৬৬
 ৬৭
 ৬৮
 ৬৯
 ৭০
 ৭১
 ৭২
 ৭৩
 ৭৪
 ৭৫
 ৭৬
 ৭৭
 ৭৮
 ৭৯
 ৮০
 ৮১
 ৮২
 ৮৩
 ৮৪
 ৮৫
 ৮৬
 ৮৭
 ৮৮
 ৮৯
 ৯০
 ৯১
 ৯২
 ৯৩
 ৯৪
 ৯৫
 ৯৬
 ৯৭
 ৯৮
 ৯৯
 ১০০

করি। আত্মীয় স্বজনসহ কি করে।
ওঁ, হাদিগের কুসংস্কার কি কামান।
দিন দিন কল্যাণের যে উদ্যোগের
ন করিতেছে, তাঁহার জাহা-সুখেরে পারি-
তেছেন না। এক নিক লোকের রাজনিয়ম
ও সমাজের অবস্থা ছিল, আজিকার সেই
কল আছে, এই আবিষ্কার উদ্যোগ উদ্যোগ
হইয়া আছে। কিন্তু তাঁহার যদি এক
বার সদস্যবিশেষক চক্রে উদ্যোগ করিয়া
চতুর্দিক নিরীক্ষণ করেন, দেখিতে পাই-
বেন, পূর্বকার সমাজের বিবরণই আজিকার
উপরিহৃত হইয়াছে : সার্বভৌম আর সে-
অবস্থা নাই ; সে রাজনিয়ম নাই ; সে বি-
চার নাই ; সে পুলিশ নাই ; সার্বভৌম
র সে ভাবও নাই। পূর্বে রাজনিয়মভ-
বে সমস্ত দোষ ছিল, তাহা কখনো সংশ-
্লিষ্ট হইতেছে ; পূর্বে বিচারকর্তারা সে-
কালীন ব্যবহার করিতেন, এখন সমাজ
কপে না হউক, তাহার অনেক বিচারণ
হইয়াছে ; উপরিহৃত কর্তৃপক্ষের নিকটে
তিরক্ত হইতে হইবে, এখন ওঁ, হাদিগের
মনে একটা একটা কথা জন্মিয়াছে। পূর্বে
পুলিস থাকিত ছিল না, পুলিশ কর্তা
রীয়া কুর্কক বিচারণ চেত। দুই বাতুক
তাহার মন তা করিয়া তাহার বিলক্ষণ
স্বীকৃতি করিয়া কনিয়াছিল, এখন তাহা

[illegible]

অতএব এক্ষণে আত্মবিগের বাস্তবতা
এই, যাবৎ বিধবা বিবাহ প্রচলিত না হয়,
তাবৎ জন হত্যা নিগারনের আর একটি

The page contains extremely poor quality, low-contrast scan artifacts that appear as horizontal bands across the entire document. No legible text or figures can be discerned from this image.

संस्कृत-संस्कृत-संस्कृत

কাজের বড় কাজ। সরকারি কাজের
 ডেপুটি, কনস্টেবল, ইন্সপেক্টর, ইত্যাদি
 কা-ও পুত্রকে গুলি আঁধারিতের কাজে
 রাখে।

[illegible]

ଶିଳ୍ପ ଗାୟକାର ସୂଚକାର ଏକପ୍ରକାର ଗି
 ହୁଏତାହୁଏ । ଗାୟକାର ଗାୟକାର କାବା,
 ବିଷ ବିଷାକାର କାବା, ବାବା, ବାବା ଏବଂ
 ଗାୟକାର ଗାୟକାର, ଗାୟକାର ଗାୟକାର
 ଗାୟକାର ଗାୟକାର ଗାୟକାର ଗାୟକାର
 ଗାୟକାର ଗାୟକାର ଗାୟକାର ଗାୟକାର
 ଗାୟକାର ଗାୟକାର ଗାୟକାର ଗାୟକାର

অন্যত্র দ্রষ্টব্য। অথবা নবম
 দ্বিতীয় আশাশ্রিতের বিশেষণ স্বয়ংস্বর হ.
 ন্যাসীকর্য যতি শিবিজবদ্ব ও উৎপন্ন্য। ন
 তৎকাল্য হউতে পারিবে। অথবা ন
 তৎকাল্য যতিঃ ন্য-অর্থ ৩ ন্যে।

[illegible]

উক্ত পত্র দ্বিতীয় কঠিতে সংবাদ পাইয়া
হেন কথায় লালী চীনদেশে সেবা সংগ্রহ
করিয়া স্বীয় রাজ্য পুনরধিকার করিতে আ-
নিতেছেন। ততদনন্তর ও পরেও লালী সং-

শ্রীমতী সত্যজিৎ দেবী
শ্রীমতী সত্যজিৎ দেবী
এক সত্যজিৎ দেবী
সত্যজিৎ দেবী

কলিকাতার নগরিকের দেহাভ্যন্তর ইত্যাদি
 র শিষ্ট হইয়াছে, নীতকাল সম্বিহিত হইতেন
 তাহার। এ সম্বন্ধেই বলা যাইতে পারে । নগর
 এক নগর হইয়া, নগরিকেরা হইলে, পরিচয়
 জ্ঞানির বিষয়, শির হইয়াছে । চারজন, এক
 কোম্পানি, প্রতি বৎসর ২০০ টাকার এক পাতি
 দিবে । নগরিকেরা হইলে, নগর, নগর
 কাগজে, উত্তর যন্ত্রক হইতে পাতিদেব
 তিনিই জ্ঞান, পাতিদেব । পুরকারই জ্ঞান
 বাহাই কথ, জ্ঞানের জ্ঞানই কথিকের
 নগর জ্ঞান, নগর বাইবে নগর বাই ।

কিনিক প্রবন্ধ করিয়াছেন মন সাধন পি-
কক প্রকাশকম বিহারীচন্দ্রের বিহারীপত্রিকায়-
র নিয়োগ ও স্থানান্তরকরণের কাল বহুতর
একটি করিয়াই দেখাইয়াছেন। এজন্য বঙ্গ-
দেশীয় সর্বসম্প্রদায়িক সম্বন্ধ উহার অনেক
তর বিতর্ক হইয়াছে। এত সৌভাগ্য কেন ?

[illegible][illegible]

এই আখির সকলবার।
সোবাই বাণীর কোম্পানির অধ্যক্ষ-
গের পুত্রতার করেকটি বিশেষ উদাহরণ এ
কাশিত হইয়াছে। বাহার হস্তে করলার তার
ছিল, তিনি এক করল। দুই বার কোম্পানির
নামে কবা দিরা টাকা গইয়াছেন। তদ্বার
দায়ক কোম্পানির টাকা গইরা ব্যাঙ্কের অংশ
নিজে কব করিয়া লাভ আননি গইয়াছেন
কতিপ বেলা তাহা কোম্পানির নামে করত
লিখিয়াছেন। আখির তিনর দায়ক এক জন
দায়নী অংশী এই সকল দুর্ভাগ্য বাহির করি-
য়াছেন। এই কোম্পানি উত্তরা বাইতেছে,
অকণে এই প্রক হইতেছে খুঁচ অধ্যক্ষ দি-
গর নামে কোম্পানিতে সালীন হইবে কি
না? খুঁচেরা কই কণ প্রচারনা করিয়া সা-
ক কবিগণের অংশে হস্তা হইতেছে।

দিল্লী গেজেটে বলেন আমীর মোহাম্মদ
 আল খান। সম্প্রতি কয়েক জন মুক্ত সৈন্য
 বা সুলতান আমাকে আত্মসমর্পণ করিতে
 অস্বীকার করেন। কিন্তু সুলতান তাঁহা
 কে অসম্মত হইরাছেন। আমীরের শিষ্য
 খান এবং সুলতান হইরাছে। কয়েক জন
 কমান্ডার মুক্ত পারস্য দেশে গিয়াছেন।

A black and white photograph showing a large, dense crowd of people gathered outdoors. The crowd is seen from a high angle, filling the lower two-thirds of the frame. In the background, there are trees and a building with a prominent tower or spire. The upper third of the image is mostly white, possibly due to overexposure or a bright sky.

[illegible]

१. संविधान
 २. संविधान
 ३. संविधान
 ४. संविधान
 ५. संविधान
 ६. संविधान
 ७. संविधान
 ८. संविधान
 ९. संविधान
 १०. संविधान

পারিতোষিক পত্রের ইচ্ছা করিলে এক সাতিক পত্র
 বিচার করা করিতে বা পারিতোষিক পত্রের
 পাঠ করিতে হইবে। যে বিবরণ সাধারণ বিচারে
 পাঠ করিয়া একত্র মিশ্রিত করা
 হইবে তাহা আলাদা করা করিতে হইবে। মিশ্রিত
 পত্রের ইচ্ছা করিলে :

বিজ্ঞান কারিগরী জীবন সহিত যোগ কবির, বি. ব.
ডেভিডসনের নামে কয়েক খানি জাল পত্র ক
হিরা ও এক সন্ম টাকার এক জাল হাতি ভাড়া।

গত বর্ষে সিংহল ২১৭, ১৫, ১২, ৯৭০ টাকায়

শ্রীক শিবেশ্বর সচিবতঃ কোম্পানির মুখ্য হস্ত। বি
কমান শিবেশ্বর সচিবতঃ সাহসেন্দ্র সচিবতঃ মুখ্য করি

গড় বর্ষে গিংশন ১৫,১৯,২৭০ টাকায়

ভারতবর্ষের সভা, ভারত প্রতিনিধি
গবর্ণমেন্টে এক অভিযোগ করিয়াছেন
যে এই বিজ্ঞাপন কর্তৃক প্রদত্ত স্থির করি-
নিমিত্ত করিম-এর নিষেধ করিবার অনুরোধ
করা হয়। সভা ভারত বঙ্গের এই ব্যয়
করা নিষেধনিষিদ্ধ কণ্ড হইতে না
করাই রাখা হইতে দেওয়া কর্তব্য।
এই অভিযোগ মীমাংসার প্রদর্শনে যে অ-
বস্থা করিবার অভিযোগ করিয়াছেন, তাহার
এই অভিযোগের বিষয়ে অধ্যাপিক
প্রতিনিধি করিয়াছেন না, ইহাতে আমরা
স্বাভাবিক ভাবে ভারতবর্ষের সভা বন্ধ হইয়া
এই অভিযোগের দোষিরা সভা আছে, ভর-
হইল।
ইতিহাস রিকর্ডের বাঙ্গালী জাতির শারী-
রিক সভা ও ভীষণতা বিষয় প্রসঙ্গ করিয়া
করিয়াছেন। এদেশীয়দিগকে বলিষ্ঠের
এই অভিযোগ করিবার অনুরোধ করিয়াছেন।
এদেশীয়দিগের যদি অন্তত বলিষ্ঠের বল
হইত তাহা হইত, তাহারা যে ইউরোপী-
য়দিগকে আবেশ করিবে একশ বোধ হয় না।
ইতিহাসের যে কথার কথার এদেশীয়দি-
গকে অপমান করে।
চীনের হইতে সংবাদ আসিয়াছে বি-
জয়ীরা গুমরাইর যুদ্ধ আরম্ভ করিয়াছে।
জাপানিগের চারিটি ক্ষুদ্র দ্বীপ ইংরাজদিগের
হস্তগত হইয়াছে। একজন হত্যার ক্রাশী
স্বপ্নভঙ্গির অধ্যক্ষ আসিতেছেন। শিক্তিনিষিদ্ধ
করাই দূর না হইয়াছে। হইয়া লাল প্রত্যা-
শিত হইতেছেন।
এক সম্রাটের গবর্ণর জেনারেলের নিকটে
আবেদন করিয়াছেন যে তিনি পবলিক
ক সংক্রান্ত অশ্রমত সত্বে টাকার দিবার
করা করেন। তাহাভবগীয়া সভা শিক্ষা সং-
ক্রান্ত জান বঙ্গের প্রতিনিধি বহিয়া আবেদন
করেন কেন? এদেশীয়দিগের অসম্মান
করা কি উক্ত সভা বও চা পিয়াছে।
ইংল্যান্ড বঙ্গের, যোগপুত্রের প্রাক-
তত্ত্বাদিগের সিন্ডিকেটকে জুতা লইয়া প্রে-
ম করিতে আসা দিয়াছেন। এদেশীয়দিগের
কোন এই সময়ে প্রতিজ্ঞা করিতেছেন না যে
কোন এই সময়ে প্রতিজ্ঞা করিতেছেন না যে
কোন এই সময়ে প্রতিজ্ঞা করিতেছেন না।

উক্ত পক্ষ আশুও বঙ্গের গবর্ণমেন্টে একপ
আজ্ঞা করিবে। এদেশীয়দিগের কোন বাজা অ-
ধিক লোক জন লইয়া ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্টে
কেন সীমানা আসিতে পারিবেন না।
হরকরা সিখিরাছেন লর্ড এলগিন এই কথা
হুকুম বর্ধকালে বেচার বঙ্গের না শাইরা
আপাততঃ বাজায়ে বাইবেন।
বেলগ্রাম ও খাজোয়ারের মধ্যে টেলি-
গ্রাফ বন্ধ হইয়াছে এগর ইউরোপীয় সমাচার
আসিতে বিলম্ব হইয়াছে।
জোসেফ রবার্টসন দুই জন মুসলমান ও
তাকে বেতন না দিয়া ছাড়াইয়া দেন। তাহা-
রা বেতন লইতে আসিয়াতে সাংসেবেদ সহিত
তাহাদিগের বিবাদ হয়। তিনি তাহাদিগকে
ভরমিত্ত বাটার ভিতর আসিতে বলেন।
কিন্তু তাহারা প্রহারের ভয়ে তাহা না করা
তে সাংসেব তাহাদিগের নামে পুলিশে নালীপ
করেন। অবৈতনিক মাজিষ্ট্রেট হত্যাদিগের
দুই টাকা করিয়া জরিমানা করিয়াছেন।
অবশ্য! কুমীরের সঙ্গে বাদ বহিরা জলে নাস
করা হয় না।
এই মাখিন পনিবার।
এবংসর বিজয়ানন্দমীত্রতা লইয়া মহাশয়
যোগ উপস্থিত হইয়াছে। কতকগুলি কথা-
পকে কহিতেছেন। নবমীপূজার বিসম্মন
হইবে আর কতকগুলি কহিতেছেন, পরদিন।
এই বিষয়ের মীমাংসার জীয়াত রাজা রাণীকা
ত দেব বাহাদুর আপন আলগে ২৪৫ তার
এক সভা করেন। সভাভঙ্গ অনেক অধ্যাপক
উপস্থিত ছিলেন। তাহারা প্রায় সকলেই এক
বাক্য হইয়া পূর্জদিন বিসম্মন বাবতা দিয়াছেন।
কট টি বিসম্মন কেন বিসম্মন প্রায় স-
কর দিসম্মন হয় না। এবিষয়ে কে সেইক-
প মতটাই হইয়াছে তাহাতে আনন্দের বিষ-
বাপর নতি। আমাদিগের বিসম্মনের বিষয় এই,
উল্লিখিত অধ্যাপকগণের মধ্যে কেহ কেহ
এ বিষয়ের পূর্বে যে ব্যক্তি দিয়াছিলেন, পরে
আপন। তাহার বিপরীত বাবতা দেন। অধিক
পূর্বে যে কহিতেই এই দুপ হয়। এটা সাক্ষ্যনে
ও কট লক্ষ্য বটে।
ফিলিপ অধ্যক্ষ করিয়াছেন, বাবু রমাণী
এদের পক্ষে বাবু শমসুদীন পণ্ডিত বঙ্গের

অধ্যাপিক পক্ষের জন সভ্য হইবেন।
অধ্যাপিক পক্ষের জন সভ্য হইবেন।
সেপের কাহাকে বিচারাগে পক্ষে নিয়োজিত
করা হইল না।
কোমাইয়ের ব্যবস্থাপক পক্ষের জন সভ্য
ডিকা ও অন অন্যান্য প্রকৃতি পক্ষের জন সভ্য
রা ভারি করিয়া দেয়, তাহাদিগের পক্ষে
বিল করিয়াছেন।
নিয়মিত মূল্য গবর্ণমেন্টে পক্ষের জন সভ্য
কীত হইতেছে।
৪ টাকার সিকা
৪ টাকার কোম্পানি
৫ টাকার সিকা
৫ টাকার কোম্পানি
ইউরোপীয় সমাচার।
টেলিগ্রাফের আশু।
যখন ২০। সেপ্টেম্বর। গরিব নতি
মিত ১০। তাহা হইয়া গবর্ডার সচিব সহিত
হইয়াছেন। অধ্যাপিক পক্ষের বিবাদ হইবে।
প্রায় ৩০। সেপ্টেম্বর। সেপ্টেম্বর বাজার
বী আলকজাপ্তানান সচিত বিবাহের লক্ষ্যে
দেয় প্রচলন কাহা দেওয়া হইয়াছে। আগার
বসন্তকালে বিবাহ হইবে।
নিউয়র্ক ২৫। আগস্ট। মাকিমল হারিস
বাট হইতে গমন করিয়া সেনাপতি পোপের
সচিত ১০। লিত হইয়াছেন। পোপ বনবসাইয়ের
আগ্রহ লক্ষ্য রাণীজনক লক্ষী উত্তর পারে
অবস্থিত করিতেছেন। নিয়োজিত লক্ষ্য পা-
রে আছে। এবং তাহারা ৭। কোম্পানি পর্যন্ত কা-
মান পাতিয়াছে। বিজয়ীরা অনেক বার নদী
পার হইবার চেষ্টা পাতি কিন্তু কৃতকার্য হইতে
পারেন না।
বিজয়ীরা রিচমন্ড হইতে গরডনস্‌বিলের
দিকে বারজিনিয়া উপত্যকার প্রবেশ করিয়া-
ছে। তাহারা ওয়ারেটন হইয়া গবর্ণমেন্টের
সেনাপতির পক্ষাতে আসিতে চেষ্টা করিতে
ছে। উত্তর দলে একটি ঘোড়া পুত্ৰ হইবার বিল-
ক্ষণ সক্ষম না।
বিজয়ীরা কেটকি নাম স্থানে প্রবেশ ক-
রিতেছেন। অগ্রসর হইয়া বাটন রোজ হস্তগত
করিয়াছে।
গবর্ণমেন্টের সেনাপলে অধ্যক্ষ সেনা অ-
সিত হইবে। ১০। সেপ্টেম্বর অধ্যক্ষ জিনিয়া-
কিমিগকে টেলিগ্রাফ পক্ষে সংগ্রহ করা আশু
হইয়াছে।

সেই দিনেই তিনি মৃত্যুবরণ করেন।
 তাঁর মৃত্যুতে দেশের লোকেরা
 অত্যন্ত শোক পান।
 ৩ ই সেপ্টেম্বর—সি. বি. গারেট সাহেব
 ২৪ পরগনার এডমিনিস্ট্রিয়েট।
 ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।
 ডবলিউ. এস. শিবসাহেব নীতাল পর-
 গনার সরকারী কামিনার হইবেন।
 ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর জে.
 কুস সাহেব নম্বুর বিভাগের ভার গ্রহণ করিয়া
 তৎপল্লুর ও পূর্ণিয়ার মাজিস্ট্রেটের সম্পূর্ণ
 কামতা গ্রহণ করিবেন।
 ৬ ই সেপ্টেম্বর—বাহু হুদাকাত হুদা-
 পাখার বাখাতির মিমক চৌকির জুগরিটেওটে
 হইবেন।
 আর, সি. সেরার সাহেব তুলুয়ার এডমিনি-
 স্ট্রেশন চৌকি জুগরিটেওটে হইবেন।
 ৮ ই সেপ্টেম্বর—সি. এ. বরাক সাহেব
 চট্টগ্রামের এডমিনিস্ট্রিয়েট মাজিস্ট্রেট ও
 ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।
 ডবলিউ. সি. ইন্স সন্নমসিৎহের এডি-
 নিস্ট্রিয়েট মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর
 হইবেন।
 গোলাঘাটের সতর আশিন বাহু বরমাধ
 রাহ আপনার কার্য ব্যক্তি রক্ত সহকারী কামিন-
 নর ও ডেপুটি কালেক্টরের কামতা পাইবেন।

প্রেরিত।

**ত্রিযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাশয়
 সমীপে।**

আমি কলিকাতা হইতে আসিয়াই সময়ে
 "গোপালগঞ্জ" নামক যে একটি গাট আছে,
 (এ গাটটি বাণী নামনিব) ডাকার রাস্তাতে
 নোকা বাধিয়াছিলাম, কিছু পরে দেখিলাম যে
 একজন মুসলমান আসিয়া খুটানাজী বলিল,
 "তোমার নোকা হইতে পাঁচ পরমা আদার করি-
 তেছে, কখন আদার নোকাতেও আসিয়া উপ-
 গ-
 ১০ হইল, পরমা দাঁড় বলাতে আমি জিজ্ঞাসা

কি বিবরণ শুনিলাম? জানিলাম যে
 কলিকাতা গিয়াছিল, বা-
 য়িগটে বইয়া বসিয়া
 জোকা বাধিয়াই খুটানাজী খিড হইয়াছে, তা-
 হার আদার জিজ্ঞাসা কি? এই বলিয়াই নোকা
 উঠিয়া আসিয়াছিল, আমি তৎক্ষণাৎ পরমা
 খুটানাজী হিটা জোকা বন্ধ করিয়া দিলাম,
 সে গাটের এক কোণ একিকে ডাকিলে যে
 নোকা আছে সেমুহুর হইতেই এরূপ আদার
 করিতে আসিল।

আমি তৎক্ষণাৎ সাহেবের নিকটে বইয়া জিজ্ঞাসা
 করিলাম মহাশয়! এখানে নোকা রাখিলে
 পরমা লুন কেন? সাহেব বলিলেন নম্বর বাহুর
 হুকুম মতে আদার আদার করি, তুমি তাহার
 কি চাও আমি বলিলাম যে এই পরমা দার। এ-
 খানে কি করি হইবে? তৎক্ষণে সাহেব বলিলেন
 যে নম্বর বাহুর নিকটে জিজ্ঞাসা করিও, অধিক
 জাণ্ডা করিলে সেইমত হইবে, আদার আদার
 বলিলেন যে এবেটা আর নকল লোককে বিদ-
 জিয়া দিবে।

পরে তামিলাম এই সাহেবের নাম তৎক্ষণাৎ
 ঘোষ, যে হুলসমান গরল, আদার করে তাহার
 নাম কনরী।

সম্পাদক মহাশয়!-আমি জানি না যে এই
 একবার খুটানাজী পরমা কোন্ আইন ও রাস্তা
 নিয়মমতে আদার হইতেছে, আদার তাহা আদার
 হইয়া কি হয়।

বিশেষ একটি এই যেখানাম যে রাস্তাতে জা
 বিদ্য না থাকিলে সর্বত্র চরি হয়, এক খানাম
 নোকাতে এই রাস্তাতে ডাঙা হইয়াছিল।

ঈশ্বরদ্বারা যে

**ত্রিযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
 মহোদয়ে।**

ডাইনে কোলে পো. সনগণ।
 এতুকেল ডিপার্টমেন্টে কি তরফর হানুই
 হইয়া উঠিয়াছে। এই ডিপার্টমেন্ট হতে কোন
 কোন কর্মচারির চরিত্রের বিবরণ সরণ করিলে
 হস্ত পদাধি সকল উপর মধ্যে এবিট হয়, বা-
 শক্তি স্তম্ভিত হয় এবং ইহার প্রতি এত হুণা করে
 যে ইহার জিনীমা বিরাগ আর চণ্ডিতে ইচ্ছা
 হয় না। হার! গবর্ণমেন্ট মনে করিতেছেন যে
 তাঁহার চতুর্ভুকে যে বিদ্যাবীন নিকোণ কনি-
 তেছেন, তাহা কে অসুতনয় কল উপর হইবে,
 কিন্তু তাঁহারের অনবধানতা মোটে তাহা হইতে

যেকিলক বিবরণ কল
 এক বার-আহলকাল মতামতের
 বিবরণ লক্ষ্য করিয়া এই কলকাল
 জে. তিনি এই ডিপার্টমেন্টে
 কর্মচারী মতামত, তিনি, এতুকেল
 হইতে অসুতন ২০০, টাকার
 অসুতন ৫০ টি বিদ্যামতের
 জোর জোহর উপর অধিকার
 নবাবজার চরিত্রের বিবরণ
 বনীক হুণা-সম, ও
 প্রকাশিত হইতেছে। তিনি
 কোথাও উল্লেখ, কোথাও
 বাস্তবিক হইয়া বিবরণ
 কপট মাজিরের নামা
 কেন, অধ্য
 না, কিন্তু তিনি
 চরিত্র হুণিত করিতে
 কোন্ রূপে কমা
 ব্যাকসুদেরের
 ন যে
 হুই টাকার
 মনের
 অবলম্বিত
 আমদান
 ম। উক্ত
 রূপেই
 বাসার
 ইউরেবের
 হেন না।
 তাঁহার
 বচন
 প্রদর্শন
 পাড়া
 মেখে
 আর
 বাসার
 কাকী
 দিবার
 কাশ
 পাঠকগণ!

আমার উত্তরটি
 দেখি
 মগ।
 তিনি
 কলতা
 মর
 মর

मयस्यैव मन्त्रनिर्दिष्टाश्च यजुर्वेदः अथर्ववेदो मुनिप्रवृत्तौ न प्रतीयते ॥

प्राचिन कृतम् १
प्राचीन प्राचीन २

১৯৭৬ সালের ২৩ মে, আওয়ামী লীগের
 ১৯৭৬ সালের ২৩ মে, আওয়ামী লীগের

সর্বদা স্বদেশী নান্দাল বিদ্যালয়ের অধিনায়ক
দ্বিগুণ পরীক্ষা পূর্ণপূরুষ উচ্চ বিদ্যালয়
বলে গৃহীত হইবে। পুস্তিকার দ্বিগুণ বাজার
মূল্য। প্রকাশক বিক্রি, অক্ষ ও ভূগোল।
ইতি।

তার ২৪ই সেপ্টেম্বর ১৮৮২।

বাঙ্গালার মধ্যবিভাগস্থ বিদ্যালয়
সমূহের অধিনায়ক এটিং
ইন্সপেক্টর।

সোমপ্রকাশ।

২০৫ আদিব সোমবার।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার ক-
রিতেছি, জোড়াসাঁকোর এসিক দাতা
শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসন্ন
সিংহ সোমপ্রকাশের উন্নতির নিমিত্ত ২০০
টাকা দান করিয়াছেন।

—•—

আমরা সানন্দচিত্তে প্রকাশ করি-
তেছি, বিদ্যালয়গামী শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র
বেগম বাণীশ দত্ত প্রভৃৎ হইয়া পুজার
অব্যাহত পূর্বে আমাদিগের গ্রামের বি-
দ্যালয়ের পরীক্ষা গ্রহণ করিয়া সন্তোষ
প্রকাশ্যে চল্লিশটি পারিতোষিক দান ক-
করিয়াছেন। পারিতোষিক দান কালে
অনেকে উপস্থিত ছিলেন। হরিনাভির
শ্রীযুক্ত বাবু নবীনচন্দ্র ঘোষ ও বাসক দি-
গের উৎসাহ বর্ধনার্থ তৎকালে কিঞ্চিৎ
দান করিয়াছিলেন। ইহাতে হাত ও পণ্ডি-
ত উভয়েরই সনিশ্চয় উৎসাহ বৃদ্ধি হই-
য়াছে।

—•—

১২৬৯ সালের মত দুর্গোৎসবের আ-
রম্ভ হইল। এবারে কতকগুলি
অধ্যাপক অভিনয়সং বাবদার করিয়াছে-
ন। তাহারা এক যুগ্মতম রূপ ধল গ্রহণ
করিয়া কতকগুলি লোককে এক দিনে
আনন্দে মগ্ন করিয়াছেন। কিন্তু অধি-
কৃত্যসংক্রান্ত অধিনায়কের নিমিত্ত দুর্গোৎস-
ব সমস্তই হইল। তাহার উক্ত অধ্যাপক
সংক্রান্ত কথা বিবর্তিত হইল না।

না হইলে সর্ব
ত ও অকালজন্ম হইতে হইত।

দুর্গোৎসবের কৃত্য হিন্দু জাতির মহা-
মহোৎসব। হিন্দু জাতির মহা-
তদনুষ্ঠানে মহাকল লাভ লিখিয়াছেন।
কিন্তু বাবতীর হিন্দু এ উৎসবভোগী নহেন।
বেহার প্রদেশ পার হইলে দুর্গাপ্রতিমার
সহিত বড় সন্মর্শন হয় না। যে যে স্থানে
বেদের ও একেশ্বরবাদের প্রাচুর্য্য,
সেই সেই স্থানে প্রায় প্রতিমার অদর্শন।
বাঙ্গালিরাই কেবল এই উৎসবভোগী এক
চেটিয়া করিয়া লইয়াছেন। ইহাদিগের
এক চেটিয়া করিয়া লওয়া বিন্যয়ের বিষয়
নহে। ইহারা যেমন পারীক্ষিক বীর্ষ্য
ও সাহসে হীন, মানসিক সাহসে ভীতিময়
একাত্মক। সুতরাং ইহারা কী কালে
সেই অধিকার পরমেশ্বরের সাক্ষ্য আরা-
ধনার সাহসী হইতে পারেন না।

এই বিশ্বজনীন মহানন্দের সময়ে
আমরাই কেবল বিশুদ্ধ ব্রাহ্মদিগের সহিত
মিরামন্ডে কালক্ষেপ করিলাম। দুর্গোৎস-
ব কালের অন্ন দান, বস্ত্র দান, ও অন্য-
বিধ দান এবং পূজা প্রণালী, এ সমস্ত
বিষয়ের চিন্তা যে যে সময়ে আমাদিগের
হৃদয় প্রবেশে বঞ্চিত হইয়াছে, সেই সেই
সময়েই আমরা নিতান্ত অন্তর্বিষ্ট হইয়াছি।
আমাদিগের দেশের লোকেরা সেই সর্ব নি-
রুতা, সর্ব অর্থ চিন্তার পরম পদার্থের আরা-
ধনার পরাধ্ব হইয়া অকিঞ্চিৎকর নিষ্কির
চেতনহীন জড় পদার্থের পূজা করিয়া
আপনাদিগের অসারতা ও কৃত্রিমতার
পরিচয় প্রদান করিতেছেন, ইহা দেখিয়া
চিন্তের সুখানুভব সত্তাবনা কি? এই ম-
সের ১৫। ১৬। ১৭ই এই তিন দিন বা-
জা দেশের অনেক অর্থ তরীভূত হইয়া-
ছে। অসংখ্য পরিষ্রম লোকে এই তিন দিন
উপর পুরিয়া সামান্য দ্রব্য ভোজন করিয়া
পরম কীর্তি লাভ করিয়াছেন, একথা আম-
রা জানি।

করিয়া দেখা যায়।
লাভ অতি সামান্য।
ইহে সন্তোষ নাই। পর
উপকারে উপকার
রূপে যে অসংখ্য
যদি হিন্দুর
করা হয়।
উপকার ভোগে অ
আশীর্বাদ দ্বারা ব্যা
না। যে কার্য দ্বারা
উপকার লাভ সত্তা
অধিকতর পুণ্য সফ
সবকালীন দানে
দোষ এহ, লোকের
সমাদেব বঞ্চিত হই
প্রভৃতি সমুদায় সফ
লুপ্ত হইয়া যায়।

জ্যো

এতৎ ২৫ তিথ্য

ত পত্র আমাদিগে
স্থানে একটি হ
ধিকার প্রস্তাব জ
ত হইয়াছেন, পা
কোপ চিত্র দর্শন

১। পরে

সকল পুত্রই সম
দায় বিষয়ের অ
লে তাহা হইতে
স্তাব নৈসর্গিক
পিতার পুত্রগে
হার সে নিতর
তদ্বিষয়ে অনি
বাহিতো তাহা
যে কোন কালে
ফুল পান্থ, শু
ন হইয়া ফুল
না ফুল হই

ক্রিয়-অনোহুতি ছদ্ম-
 স্ত্রি আছে, সে সকলকে
 নিরজিত করিয়া তুমি।
 গেল সকল, সমগ্রে ঘটি-
 । তাহারিগর প্রকোপ
 রে অনেক বিষম ঘটনা
 র্থ সম্পত্তিরই সম্মাননা
 কার্য আছে, সেই শূন্য।
 ৷ সকলের নিকটেই তা-
 দির, তাহারই কথা অগ্রে
 বণ করে। ঐশ্বর্য বান বা-
 ন বিদ্বান ও বুদ্ধিমান হন,
 শন সর্গ-ধীন উন্নতি লা-
 বন। আছে। এক জন সহ
 'ছেন,

। আ নী দেবদাস পঞ্চমঃ ।
 ॥ তত্র বাসং ন কারয়েৎ ॥
 ২ অর্থাৎ পণ্ডিত, রাজা,
 ঐ পাঁচ জন যে স্থানে আ
 । বাস করা কর্তব্য নহে ।
 । র আশ্রয় ধর্মবান লোক
 ৭২২ ৬৩ ৬৪ না । আমা-
 ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০
 । সুঃ সুঃ অংশে ।
 ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০
 ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০
 ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

দ্বিত্যবের
 করিয়া দে
 বহু আংশে
 তুমি স
 রগত হই
 প্রাণকে
 , এক ঘে
 ক্রমে বা
 , এ দে
 , যে উ
 স্থাব হই
 তে পারি

সে জমীদারী বিনষ্ট হইবার নীলাম প্রকৃ-
তি যে সমস্ত উপদ্রব আছে কাজে কা-
জেই তাহার নিবারণ হইবা উঠিবে। শেষে
হুহু জমীদারী সকল দেবোত্তর ভূমির
যায় অধিকারী ও অবিক্রয়ের হইবে সম্ভ-
ব নাই।

পত্র প্রেরক লিখিয়াছেন, " পিতার চাৰি বা পাঁচ পুত্রের মধ্যে এক ব্যক্তি পিতৃদত্ত সমুদায় জমীদারীর অধিকারী হইয়া মুখ সফলকৈ কালক্ৰতিপাত করিবে। মগর কয়েকটি কথক্ৰিঃ শ্রুতির ন্যায় হাততোলা বৃত্তিতে গী হইয়া চিরজীবন হেঁচ কাটাইবে, ইহা ন্যায় ও যুক্তি মঙ্গল নহে । " জমীদারীর অংশ না পাইলেই হাততোলা খাইতে হয়, পত্র প্রেরক কি উপে একপ সিদ্ধান্ত করিলেন : এ দেশের কল লোকই কি জমীদারীর অংশ পাই-
 ১ থাকেন ? জমীদারীর অংশ ব্যতিরিক্ত ক অর্থানবের উপারাস্তর নাই ? জমীদা-
 ২ র বিভাগ নিয়ম রহিত হইলে আর এ-
 ৩ টি মহোপকাব লাভ হইবে, পত্র প্রের-
 ৪ তাহা অনুত্তব করেন নাই । জমীদারী
 ৫ তিগের নিয়ম এ দেশের অধিকসংখ্যা
 ৬ গণকন্ম ও দান্য হাদ্যম প্রভৃতির কা-
 ৭ । আত্মস আত্মস বিরোধ করিয়া কত
 ৮ জমীদারের মর এংকালে উৎসন্ন হইয়া
 ৯ য়াছে । অ্যেচ্ছাদিকার নিঃস হইলে এ
 ১০ হপাতের অনারাসে শান্তি হইবে ।

২। পাত্র প্রেরক হলেন, এ দেশে বা-
ত। বিবাহের আতিশয় প্রচলিত আছে,
যা দূশ বিবাহে পাত্র প্রথম পুত্রের নির্বাণ।
৫ হস্তবুদ্ধি হইবারই সম্ভাবনা, সুতরাং তা
৬ পুত্রের হস্তে হস্তে জমীদারী পতিত
৭ লে বহুল অনর্থ ঘটিবে অনেক মাই।
৮ ইর উত্তর লান হলে আত্মবিশ্বাসের অবি-
৯ ক জন্ম মাই, এ দেশে বাল্য বিবাহ বে-
১০ চি কাল একাধিপত্য করিবে, পাত্র প্রের-
১১ দে। একপ সিদ্ধান্ত করিয়া রাখা সুকিস-
১২

বাল্যবিবাহ নিষেধী দেখা বাইতেছে।
 বাল্যবিবাহই যে পুত্রের নির্বৃত্তি
 হতবুদ্ধিতার একমাত্র কারণ, তাহা আমরা
 স্বীকার করি না। যখন বৃহৎ জমিদারী
 কোন রূপে অন্য পরিবারের হস্তগত না
 হয়, সেই চেষ্টা হইতেছে, তখন ধর্মীর
 প্রথম পুত্রের নির্বৃত্তি ও অকরণ্যতা
 হেতু

वि. ३.

अथ

৭৯

८८

॥

'93

15

f

3

11

13

9 8

41

2

1

1

1

1

4

1



1



52

2 12

• 13

71

● ●

4

যদি একটি বিশেষ কারণ বশতঃ সবি-
বেহ সম্পন্ন হন। যেহেতু স্বভাব এই
কম্পন অথবা নিশ্বাস ব্যক্তিক্রমেও মহা
উৎসাহ বলিয়া বোধ করাইয়া দেয়,
তাহা হলে নিশ্বাস ব্যক্তির হৃদয়েই বিব-
রের কর্তব্য তার পতিত হইবার সত্য
কথা।

১৪

আমার চা কোম্পানির সভাপতি
মাকে সাহেব।

মুকের বেশত্বা সমাধান, ধর্মোপদে-
ষীয় অধ্যয়ন, বিচারকর্তার প্রধান
কর্তব্য বলিয়া দেওয়ার লক্ষ্যে গুরুত্বপূর্ণ
এক কুজিয়াকারির আশ্রয়সাধন। প্রতিপা-
ক, এ গুলি কেবল অসমর্থ নয়, নিতান্ত
উপকারক। আমার চা কোম্পানির সভা-
পতি মাকে সাহেবের বিষয়ে সম্ভ্রান্তি এই
উপস্থাপন কর কাণ্ড ঘটাইয়াছে। পাঠকগণের
আগে থাকিতে পারে, আমরা ২। ৩ বার
মিথি রাখিলাম, মাকে ও কার্টার সাহেবের
সম্মুখে তিনটি বিষয়ের অভিযোগ উপস্থিত
হয়। এক, এই দুই ব্যক্তি উক্ত কোম্পানির
অধিকারীরা আপনাদিগের ক্ষেত্রে কাজ ক-
রাইয়া লইয়াছেন। দ্বিতীয়, উহার উক্ত
কোম্পানির চার বীজ লইয়া নিজ ক্ষেত্রে
ব্যবহার করিয়াছেন। তৃতীয়, উহার কো-
ম্পানির কাগজ পত্র কৃত্রিম করিয়াছেন।

এই বিষয়ের অনুসন্ধানার্থ এক কমি-
টি নিয়োজিত হন। তাঁহারা যে রিপোর্ট
করেন, তাহা মাকে সাহেবের অনুকূল হয়
নাই। সেই হেতু মাকে সাহেব আত্মপক্ষ
সমর্থন করিয়া উত্তর প্রচার করিয়াছেন।

সেই উত্তর জালি এ হলে সংক্ষেপে উক্ত
কমিটিতে পাঠকগণ তাহা দর্শন কবি-
বোধ করিয়াছেন। সুবিধে পারিলে, তাহা
মাকে সাহেবের নিবেদিত। কেমন প্র-
কাশ করিয়াছে।

মাকে সাহেব প্রমাণাদি-বাগের এই

উত্তর দিয়াছেন, তিনি যে সকল মজুরকে
যে সময়ে নিজ ক্ষেত্রে নিয়োজিত করে-
ন, আমার চা কোম্পানির তৎকালে তা-
হাতে প্রয়োজন ছিল না; তাহারা অনি-
য়োজিত থাকিলে হয় পসারন করিত নতু-
বা কোম্পানিকে তাহাদিগের নিমিত্ত ক্ষতি-
গ্রস্ত হইতে হইত। তিনি মজুর লইয়া বরং
কোম্পানির উপকার করিয়াছেন। এ হলে
আমাদিগের জিজ্ঞাসা এই, মজুর যদি
কোম্পানির প্রয়োজন ছিল না, কোম্পানি
নিয়োজিত লোক তাহাদিগকে সংগ্রহ ক-
রিয়া তথায় আনয়ন করিল কেন? প্রয়োজন
আছে কি না মাকে একথা কাণ্ডে জিজ্ঞা-
সা করিয়াছিলেন। কাহার নিকট হইতে
বা অনুমতি লইয়াছিলেন? কলতঃ জন্ম-
র কর্তব্য হইয়া বরং ব্যবসায়ী হইলে
আরই এইকপ ঘটনা হইয়া থাকে।

২। দ্বিতীয় অভিযোগের এই উত্তর
প্রদত্ত হইয়াছে, মাকে চার বীজের জন্য
প্রার্থনা করিয়াছিলেন, এবং তাহাকে এ
চার বীজ বিক্রয় করিতে কোম্পানির লা-
ভ হইয়াছে। বেদ। ত্রুটিকে যেমন
তোমরা ও তোমরা, হ্যা ও হোতা, কাব্য
ও কর্তা বলিয়া শুধু করিয়া থাকেন, মা-
কের বিষয়েও সেইকপ ঘটাইয়াছে। মাকে
বরং আবেদন করিয়াছিলেন, আবার তি
য়েইয়ের আসনে উপবিষ্ট হইয়া সেই আ-
বেদন গ্রাহ্য করিয়াছিলেন।

কলতঃ মাকে সাহেবকে চার বীজ বি-
ক্রয় করা কর্তব্য কি না, যৎকালে এই বি-
বেচনা হয়, তৎকালে তিরেইর সভার
মাকে, কার্টার ও এক জন সেক্রেটারিয়ার
উপস্থিত ছিলেন। মাকে এইকপ সভার
মত লইয়া কি সাহসে চার বীজ ক্রয় করি-
লেন? কি কারণে তিনি স্থির করিলেন যে
তাঁহাকে চার বীজ বিক্রয় করিবার বিষয়ে
কোম্পানির মত হইয়াছে? তিনি ও কা-
র্টার এই দুই জনেই কি কোম্পানির
কর্তব্যে মত লইয়াছেন?

তিরেইর তৎকালে
তা বলিয়া তাঁহার
ধের হইতে পারে না
সত্য আশ্রয় করা তাঁ
বশতঃ কোম্পানির চার
বার এখা না একপ
বিষয়ের নিষ্পত্তি করা যে
নুগত হয় নাই। বিতরণ ক-
রীতি এই, তাহারা এই
অধ্যক্ষ সভার উপস্থি-
ত মত কোন মতই দেয় ন
কোম্পানির চার বীজ।
আছে, তখন তদ্বিষয়ে
লাভ জ্ঞান সম্ভাবনা কি?

৩। মাকে সাহেব
বিষয়ে বলেন কোম্পা-
কৃত্রিম করা হয় নাই, এ
ব্যতিক্রম ঘটাইয়াছে। মা-
কন তত্ত্ব লোক, তিনি যে
পক্ষ পত্র কৃত্রিম করিয়াছে
আমাদিগের নিতান্ত দুই
তবে কেবল ২। ৪ টা
২৫বের পরিমাণে ১২৫ ই
নিয়ম ব্যতিক্রম ঘটাইয়াছে

পতিত জরি কি

গত হই
কাতে আ
করিতে প
র্শন করি
বেশের
শস্যোৎপ

ধারণের
নিতান্ত
দুর হই
পায় তা
কর্তব্য

সেইসময় শ্রী

[illegible]

নেকে পাতিত ভূমি ক্রয় করিয়া তৎক্ষণাৎ
৭১২ টাকা অপেক্ষাকৃত অধিক মূল্যে বি-
ক্রয় করিয়া অধিক লাভ করিবার চেষ্টা
করিবেন সন্দেহ নাই। ফলতঃ ইহা অনেক
কেন্দ্র দাবদাব স্থল হইয়া উঠিবে। তাহাতে
দেশের কি ইষ্টলাভ হইবে -

ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଶାସନ ।

অনেকে আত্মদ্বিগতকে বজ্রাঙ্গী প্রাণের
 গুণ দোষ বিচারে অনুৎসুক দেখিয়া অস-
 ম্ভাব প্রকাশ করিয়া গায়েন। আত্মদ্বি-
 গ্তে ও গুণ দোষ বিচারের অনিচ্ছা নাই
 কিন্তু তত্ত্বব্যবস্থাদিগণের সর্বদা সময়ে
 আত্ম মনোবস্তু পূর্ণ হইয়াছে জানিয়া।
 একদা, একদেহী, একমাত্র হইয়া অত্যা-
 নন্দ্য, চুস্তন চুস্তন পুস্তক হইতে
 ছে বটে, কিন্তু আত্মদ্বিগত হইয়া
 গিয়া দৃষ্ট হয়। সেসময়ে বাক্য, বাণী, হে
 ন্যাক ন্যারিদা হইলে এতদ্বিগত আত্মা
 পূর্ণ হইয়া পূর্ণ আত্মা হইয়া বসন হই-
 চর হইয়া থাকে। আত্মদ্বিগত হইয়া
 সত্য হইয়া হইয়া হইয়া হইয়া হইয়া
 হইয়া হইয়া হইয়া হইয়া হইয়া হইয়া

[illegible]

থাকে, তাহার অধিকাংশই অস-
 পকার্য, তাহার গুণ দোষ বিচারে
 জমে না। তবে যে সকল গ্রন্থে
 গুণও দৃষ্ট হয়, বিশিষ্ট কারণে
 আমরা প্রায়ই তাহার গুণ দোষ
 পরীক্ষা করি না।

সম্প্রতি দুই খণ্ডে প্রকাশিত
মালিগের হস্তগত - টি. ১৫ । ২
ডাকার গুণ দোষ বিচারে ও কৃত
প্রকর নাম প্র. দর্শন. দ্বিতীয়
দীপ্ত শতক । স্ব. দর্শন প্রকাশক
কোমল কর্মকার ।

উক স হেন প্রথম গ্রন্থ বিশিষ্ট
অচলিত করিবার সঙ্কল্প করিয়াছেন
তবে স্বভাবের বর্ণনাই অধিক। যেহেতু
তাই আশে বিস্তৃত বর্ণনা করেন। প্রথম
কবিতা দেবীর বর্ণনা করিয়াছেন। ইহা
স্বয়ং ধর্মরাজের সত্যের ইচ্ছা
ইহা আছে। আম দিগের ইন্দ্রনীল
গণ প্রায়ই একটি সুখিত প্রণালী
বল করিয়া থাকেন। যাবতীয় বাক্য
ব্যক্তি বিশেষের তীব্র চরিত্র অথ
নামক নামকরণের বিষয়
খিত হইয়া থাকে। অনেকে
প্রথম অবগত হইবার জন্য
ন, কাব্যের স্বয়ং দেবী অলঙ্কার
স্বয়ং দিগের তাদৃশ দৃষ্টি থাকে
করে কটাক্ষ পত্র পাঠ করিয়া
কটাক্ষ করে; সেই অর্থাৎ
এই বিস্তৃত কাব্যে এ দোষ দৃষ্ট হইয়া
হয়। কাব্য খানির রচনাও নন্দ হয়
কর। মধ্যে অন্য অন্য গ্রন্থের
ভাব গৃহীত হইয়াছে বটে, কিন্তু
এই ভাবও স. বৈশিষ্ট্য হইয়াছে।
এই ইহা হইতে উদ্ধৃত বাক্য
দর্শন করুন।

୫ ଛାତ୍ରଙ୍କର ଶ୍ରଦ୍ଧାଂଜି ଲେଖନ :
 ଶ୍ରୀ ରାମଚନ୍ଦ୍ର, ପ୍ରଫୁଲ୍ଲ ଚାନ୍ଦିନୀ,
 ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଲକ୍ଷ୍ମଣ, ନୀଳମାଳା ।

নেও সাহেবের অন্তিমিত দুলা অপেক্ষা ৩৬
টাকা অধিক বেঞ্চ। বাউন্ডেছে, তথাপি কি
বিদ্যা শিক্ষা সংক্রান্ত দান বহু থাকিলে ?

খিনিক প্রবণ করিয়াছেন পর তে তরিক
জালিতে দেওয়াহেবের কপে আসিতে চাহে-
ন। তাহা হইলে ইউরোপীয় বেহালায় শুষ্ক
রূপে উঠিয়া যাইবে।

মিল্লীগেজেটের কাবুলি শিল্প সংস্কার সভা
 নিখিয়াছেন, তাহার দোষ সহ্য করি। দুট
 প্রতিজ্ঞা কালে হেরাটি আক্রমণ করিয়াছেন।
 যে একটি দ্বার খোল ছিল তাহাও নষ্ট হই
 যাইছে। অতীতের শিল্পের খাদ্য এবং মিল
 আদর হইয়াছে। মূল চান জানের কোন প্রয়ো
 গ্যতা সহ্যতা করিতেছেন না।

[illegible][illegible]

১৯৩৩ সালে জাতিসংঘের
১৯৩৩ সালে জাতিসংঘের
১৯৩৩ সালে জাতিসংঘের
১৯৩৩ সালে জাতিসংঘের
১৯৩৩ সালে জাতিসংঘের

১৪. ১৭ শতাব্দীতে বঙ্গদেশে নানান উপাধি
ক'র জাতিতে চাইবে। শ্রী-গন বা দুই-
শো শতাব্দীতে উৎপন্ন হইয়াছে বলা হইলেন।
যে দেশে যোগ, ল' নিয়োগ হইলেই আ-
কার হয়।

८३ काश्चित् मलजवाद् ।

সেনাপতির আশ্রিতদের আর একটি
 গুণ প্রকাশ হইয়াছে। স্বদেশবাসীদের
 নৈক সেনাপতি নামানের খোঁজ সকল অব্য-
 বহার্য বলিয়া স্ব সাধন্য যুগে নীলাম ক-
 রেন। তাহারা ও তাঁহাদের বন্ধুগণ প্রা-
 ক্তি প্রাপ্ত করিয়া থাকেন। যে সকল

অকর্মণ্য হাতিয়া ২।৪ টাকায় বিক্রীত হই
 যাহা, যোড় দৌড়ে আহার্য ১০০০। ২০০
 টাকা উৎসার্জন করিয়াছে। সেনাদলে এই স
 কল দুর্জয়বহার করে নিবান্নিত হইবে।

কিন্তু বলেন গবর্ণমেন্টের চাপরাশী ও
 ভূতি ভূতগণ স্থানান্তরে বাইরের সময়ে যে
 জাতা পাইয়া থাকে এখন জ্বাধি কে কত
 পাইবে তাহার একটী নিয়ম স্থির করা হইবে
 কাকিণাতো আর কর্ছের এ-রো বন্দ হই
 তেছে গবর্ণমেন্ট ভূতিদায়ের টিপেণ্ট চাহি-
 য়াছেন । ভূতিদের অবশিষ্ট টাকা ঐ স্থানে
 দেওয়া হইক না কেন ।

ইংলিসমানেও এক জন লক্ষ্যস্থ জাহাজ
দাড়া করেন । এক জন কক্সস্বী শিপ প্রদর্শন
দেখ বরষ প্রভৃৎ করিয়া এক অল্প কল
কারুঘাতেন অতি ও জন দান অধঃ বা
শীর্ণি কলে বহব প্রভৃত হতেছে । দুর্বান
কল অপেক। ইংরেজ নতুন অধিক হউ-
তেছে ।

১. তেউলিয়া জায়াগতে আটনী পিন্ন
 মন দুই জন মতেলেক নিকটে টাকা লইয়া
 মোনকদমার সম্মুখে উপস্থিত হন নাই বলিয়া
 সর মত টেংগেলস উত্তার চরিত্রের প্রতি
 দোষারোপ করিয়া বহুলচরণকে টাকা
 গ্রহণ করিয়া লইয়া গেলেন। এই সকল ব্যাপার
 লক্ষ্য করিয়া খান ব্রহ্মাচারী কর্তৃক মোক্তার
 ও উকীলদিগের চরিত্রের তত্ত্বাবধান জন্য
 স্পেশালজারদ নামীয় একজন সত্য কবিবাহু বিবরণ
 লিখাই কথ্য করেন।

গান্ধি ইতিহাসে ব্রাহ্মণ্য যোগ্য হিউম
নায়েবের মতবাদ গান্ধিগাছে। হিউম
নায়েব এক জন বিদ্বান ও এদেশের হিত
কামী ছিলেন।

খোদাইয়ের দায় ২০/৫ সত্যিকার সেলিয়ন
বন্ধ ২৫/৫/৫৫।

तत्रेऽप्यादिना वृथयाऽसु ।

১. বোম্বাইয়ের কোর্ট আদালতকে এই ক্ষমতা দেওয়া হইয়াছে যে ঐ আদালত ১০০০ টা পর্যন্তের মোকদ্দমা করিতে পারিবে। এই বিষয়ের বিল উক্তব্য ব্যবস্থাপক সভার বিধিগত হইয়াছে। হেট আদালতের বর্তমান

গত কল্যাণ প্রদানকর বিচারপতির বৈত
 দারি সেমিরান বসিরাহে : কর্ণা নাহেব দি
 চারপতি । প্রতিবাসে সেমিরান হুদায়ে
 এবার অপই মোকদ্দা আছে ।

বলন্তির সেনাবলের বিরুদ্ধে আশ্রয়।
যত প্রকাশ করিয়াছিল। যাহা হইল, তাহা
হাতে অগ্রসর হইতে না করিয়া। সশস্ত্র
করিয়াছেন। সশস্ত্র করিয়া
দেখিবেন, যতদিন এদেশের
বল ও সাহসের হ্রাস না হইবে, তত
রোগীর দলে সন্ধান নাই।

বাইগিন নগর ক্রমশঃ নতুন গড়ে উঠে
ছে। কোটিল কুন্ডার পুনর্নির্মাণ অবিলম্বে
কেন প্রকাশ করিয়াছেন। গবর্ণমেন্টের ডা
র রক্ষার ফেট। করিয়া বদি কতকটা ইহার
সত্যতা না থাকে তবে যথা টাকা চাই কই ব
ন কেন।

१० हे आदिन वरुणप्रियम् ।

পূনার বাবড়ীর শস্য অধিনূনা হইয়াছে।
তজ্জন্ত ইউরেণীয় ও এতদেশীয় সকল দ্বি-
ন করিয়াছেন বণিকেরা এক ব্যক্তি হইয় শস্য।

1990年12月15日

ইহার পুল তইরাহে । তাহা দিন
কেন ককর্ণক ২। তইরাহে চা-
রি বার তাহারায় শত শত লোককে
বা স্পীয়া শকটো ওর হইতেছে ।

কটোই নি পুনর্বার আকোশন
হইতেছে । এইবিষয় করিবান আশা
করা ন

র চারলংলগেবরীয়া আ ও ও
পবর্ন কে লিখিয়াছেন রাজী
বরীয়া পর ও রাজ্যগণের প্রচ
দেখিয়াখের সময়েও সন্তোষ
করিয়া শুকনার আলবাইরে ম-
কনিওচক পায়ের উল্লেক করা
হইবে ।

আমরই পলা গ-২৫৪ বাকলা
শালার পি-২৫ প্রকাশ পদীকাম
খল শুক আশ হইয়াছি
ই-২৫৪ পদী

গতম করিয়া
একোইন মকলতিভাষা
পূর্বস্থান পাপাধ্যায় ও
ন্যায়গণভানন
প্রশংসনীয় ন

কবিবলী :

জ্ঞান ও মেহা
রি । রবারি
ত হইল ।

এক । আশ
পাশবা নাউ
নিয়মভন যে নি

এ
১০ ৫ ৫৫৫

৫

৫ ৫ ৫

৫ ৫ ৫

৫ ৫ ৫

একরা যুক্তিসিদ্ধ হন
যে ঘোষণা করা য

৫৫ । প্রত্যেক লাট এক বন্দে ও এক সী-
বার ন্যায় হইবে । যে লাট কোন নদী বা সা-
গর পার্শ্ববর্তি হইবে, তাহাও ওইলাই সেট
নদী বা সাগর পার্শ্ব কোন প্রদেশেই কৃষি
প্রভুর অধিকার অধিক হইবে না । পূর্বে
কৃষি আরম্ভ সীমাবদ্ধ না হইলে তাহা
জমিদার আবেদন অনুসারে তাহাও ওইলাই
নদী বা সাগর পার্শ্ব হইবে তাহা নিশ্চয় হইবে
না । তাহাতে কৃষি দস্যব চিন্তিত পলায়ন
উপা যুক্ত মাত অরণ হইবে । জমিদার পর
যদি সেবা বাস যে তাহা নিশ্চয় তাহাও ওইলাই
বিক (অর্থাৎ ১০০০০ টাকার) অধিক হইয়াছে
তাহা হইতে উই ৫০০০ টাকার অধিক হইবে না
হইতে হইবে না ।

৫৬ । প্রতি কৃষি কল কনিয়ার ১০০
২০০০০ কালেক্টরের নিকটে দিয়া
এক প্রত্যেক আবেদন
বিবেচনা হইবে--

১। যাহা ও কৃষির কলি ।
২। কল কৃষির নিমিত্তে কৃষি ও পীবা, কল
কলপে লিখি হইবে ।

৫৭ । কালেক্টর যদি আনিতে প্রেরণ পো-
ষিত কৃষি দ্বিতীয় ও তৃতীয় নিয়ম ১০০০
বিক্রয়ার্থ আবেদন পলা হইলে তাহাও
দান ও সীমা নিশ্চয় হইবে, তাহা ওইলাই
তিনি কোন বিশেষ বিবরণ তাহা পায়
প্রেরণ একত্রে আভাই টিকা ১০০০ প্রাত
বিল ১০০০ বিক্রয় দ্বিতীয় প্রেরণ করিয়া
এক ১০ কালেক্টর, জেলায় ১০০০
যানী কর্মচারি, ও ১০০০০০ আশংসনীয়
খানার হইলান হইবে ।

৫৮ । কোনও হইল কৃষি আবেদন ১০০০০
মধ্যে কৃষি কালেক্টরের কাছ দিয়া ১০০০০
হইবে । কালেক্টর আবেদন বোধ করিলে যথা
নিয়মে দস্যব দিয়া কিছু দিনের মধ্যে
কল পাইতে পাই প্রেরণ ।

৫৯ । নিম্নোক্ত বিবরণ যদি কেহ কৃষি
১০০০০ কল কনিয়ার কল এক শ না
হইলে তাহাও হইলে তাহা প্রকাশ্য নীলামে বি-
ক্রয় হইবে । কিন্তু কোন স্থানে প্রতি বিঘা
১০০০ আশংসনীয় বিক্রয় হইবে না ।
আবেদন : দেব, প্রথম আ

বেদনকারির নিকটে এই স্থান মূল্যে বিক্রয়
করা হইবে ।

৬০ । কৃষির দ্য পর দস্যব ও তাহার
করিণ প্রভৃতির ১০০০০০ করিয়া মিলে কা
লেটর ক্রেতাকে এক মূল্য দিবেন (এই ম
লিগ নীজ রেখিণিউ বোড দ্বারা প্রকাশিত
হইবে) ইহা দ্বারা এই কৃষি তাহাকে পুত্র
পৌত্রাদিক্রমে নিকর ভোগ করিতে দেওয়া
হইবে । কিন্তু তাহা পি ক্রেতাকে বাবতীয় সু-
তন সাধারণ দ্ব দিতে হইবেক । এবং যদি
কোন কৃষির উপর গবর্ণমেন্টের অধবা অন্য
কোন ব্যক্তির পাতলা থাকে তাহা হইলে নি-
বেদন জনা উপযুক্ত বিচার মতে নালী হ-
তে পারিবে ।

৬১ । নীলামের পূর্বে ১০০০০০ যদি কেহ কৃ-
ষি উপর দ্য প্রেরণ করেন, তাহা যদি কাল
১০০০০০ বিবরণ দান অনুসৃত দেব দস্যব তাহা
১০০০০০ বিক্রয় হইতে পারিবে ।

৬২ । কালেক্টরের ১০০০০০ প্রকাশ্য
৬৩ । কালেক্টর ১০০০০০ তাহা হইলে না
১০০০০০ প্রকাশ্য প্রকাশ্য আবেদন সেট
১০০০০০ কালেক্টরের গোচর প্রেরণ করিতে
১০০০০০ আবেদন তাহাও হইলে ক্রেতা
১০০০০০ নিকটে প্রকাশ্য করিতে পারি-
বে ।

৬৪ । কমিসনর কালেক্টরকে আবেদন
অনুগ্রহ অধবা সূচি ১০০০০০ প্রকাশ্য
১০০০০০ আবেদন দিতে পারিবে । পরেও
১০০০০০ টিকা করেন আবেদনের জন্য
১০০০০০ প্রেরণে পারিবে । যদি কমিসনর
১০০০০০ প্রকাশ্য কৃষি দস্যব পোন ব্যক্তির
১০০০০০ আছে, তাহা হইলে ক্রেতার অধি-
১০০০০০ টিকা বাজে আবেদন হইবে ।

৬৫ । কৃষি প্রাণ হইলে এতাদেশে বা-
১০০০০০ আবেদন নীমা নিবন্ধন জনা
১০০০০০ পাকা পিপে অধবা অন্য কোন
১০০০০০ স্থাপন করিতে হইবে ।

৬৬ । প্রথম আবেদনকারির পরিবার
১০০০০০ কোন ব্যক্তি কৃষি কল করেন তাহা
১০০০০০ পূর্বোক্ত ব্যক্তি করিয়া কৃষির অন্য
১০০০০০ অধবা করিয়াছিলেন তাহা তাহাকে
১০০০০০ দিয়া হইবে ।

१५५५
 १५५६
 १५५७

新文化运动

महाराष्ट्र : १५/५/५५

একটি ডেপুটি ম্যাজিস্ট্রেটের কাছারি ও
খাম, এবং একটি ডাকঘর আছে, একটি ইনকম
ট্যাক্স আফিসের কাছারি ছিল, লক্ষ্যে তাহা

সের অত্যাধিক একত্রে বিচার কার্য্য অতি অগ্র-
 স্তত্ব নৃকমধ্যে নিম্পন্ন হইতেছে । যার অতি
 সংকীর্ণ বলিয়া বোধি এই বিচারি সকলকে আদা-
 লত বরের বাহিরে দণ্ডায়মান থাকিতে হয়,
 এ সুবিধা হ্রাসকরণার্থ্য এসেব পান্দিব এসে
 অতি সুবিধা ও বিস্তৃত এক প্রান্তর মধ্যে
 কয়েকটি শূন্য অট্টালিকা নির্মিত হইতেছে,
 দুইতিন ঘণ্টার মধ্যেই নির্মাণ কার্য্য সমা-
 প্ত হইবে । এ প্রস্তাবের নাম ও উদ্দেশ্য
 বিস্তর করে, আহার্য্য বা পানীয় দ্রব্য অল্প
 মূল্য মতে, উচ্চ মূল্য-মিলেও মিলিত হইবে ।
 দেশের লোক অত্যন্ত ধর্ম্ম ও কপট, নিজ হি-
 তের নিমিত্তকর্ম্মে না পারে এমন কুর্খ নাহি
 স্বার্থের অনুপ্রোধে কাহারও প্রাণ বধ করিতেও
 সৈধ্য করে না । পরোপকার ও সরল ব্যবহার
 কাহাকে কহে তাহা ইহার। এককালে জানে
 না, অকারণে লোকের নিম্মাশ্রয় ও পানি কর
 ইহা দিগেব আভাবিক সংস্কার । এখানে কেহ
 কাহার স্ত্রী আতি করে না, মীচ জাতীর লোক
 অত্যন্ত অবাধা ও অবিদিত, ধনী ব্যক্তির অর্থ
 গুম্ব, ব্যর্থকৃত ও ধর্ম্ম জ্ঞান বর্জিত । এখানে স-
 ম্প্রতি একটা দাওবা চিকিৎসা সন ও গবর্নমেন্ট
 সাহায্য প্রাপ্ত একটা ইংলান্ডী বিদ্যালয় ছোট
 আদালতের সমস্ত পরোপকার, বিদ্যাহারী
 বিজ্ঞান বাহু স্বাক্ষরার্থ্য এসে বাহুরের এ-
 কান্ত হয়ে ও সাহায্যে স-সম্প্রতি হইতেছে ।
 ইনি অতি বদমান এবং সাধারণ বিতর্ক বা-
 পারে উহার সংপর্কোনাতি উৎসাহ ও অনুপ্রাণ
 বিচার কংসে, ও ইহার যথেষ্ট স্ত্রী আতি, ধর্ম্ম
 প্রাচীন হইতেছেন তথাপি লোকের ন্যায় প-
 বিজ্ঞানী । এ দেশের সৌভাগ্য বলিতে হইবে
 যদি ইহার আর কিছু দিন এখানে থকা হয়
 এখানে ইহা উল্লেখ না করিয়া ফলিত থাকিতে
 পারিলাম না । যে এখানে ফিলিপাস মারোগ
 বাহু পার্শ্বভীতবণ বক্যোপাধায় ও এডালের
 জমিদার মহাশয়দিগেব মোকদ্দম বাহু দেবনা-
 বারন রায় মহাশয়ের। উপনি উচ্চ বিদ্যালয় ও
 চিকিৎসালয় স্থাপনার নিমিত্ত যথেষ্ট প্রদ
 আয়স অধিকার করিয়াছেন এ বাহাতে চির
 ধর্ম্মীয় হইতাকার নিমিত্ত শরীর, মন ও অর্থ
 নিয়, উপকার করিতেছেন । এ দেশের সর্ব
 সাধনে এই মহাত্মবহিঃপর যোগ্য অসাধারণ
 ও উদ্যোগ দেখিতেছি তাহাতে অল্পকাল
 মধ্যে দেশের অবস্থা উন্নতির নিমিত্ত সম্ভাব্য
 এখানকার তেপুসী সাক্ষিরাই একজন সাহেব
 ইনি ইতিপূর্বে এক জন মীলকর ছিলেন কি

କେନ୍ଦ୍ର ସଂସଦ, ପ୍ରତିନିଧି
 ହାସି ମହାଶୟ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ
 ଆଧିକାରୀ କେନ୍ଦ୍ର, କିନ୍ତୁ
 କିନ୍ତୁ କେନ୍ଦ୍ର କେନ୍ଦ୍ର
 ଏବଂ କିନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ
 କିନ୍ତୁ କେନ୍ଦ୍ର କିନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ
 କିନ୍ତୁ କେନ୍ଦ୍ର କିନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ
 କିନ୍ତୁ କେନ୍ଦ୍ର କିନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ

ब्रह्म नमोऽस्तु

১৯৩১ সালের
 খ্রিষ্টাব্দে
 মৃত্যু। এ বছর
 লক্ষ্যমণি বর্মা
 গুণগ্রাহ্য ভা
 ক্রম (২) ক
 মের হস্তে
 বাক্যবদ্ধ না
 ভাষা বন্ধনে
 বন্ধ মহাশয়
 হইয়াছে, এ
 পরিভুক্ত হই
 এক কবিতা
 উক্ত কবিতা
 এই মত প্রা
 প্রকাশিত

(१) यह
कलकत्ता में
केन्द्रीय विद्या
पीठ है ।

(५) गङ्गा
साधन साधना
देव साधन
साधन साधना
विदुषः साधना
साधन साधना

1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 26

SECRET

সোমপ্রকাশ

“মহানীলা মজলিসিহু কবিঃ বরসতী সুনিনহনী ন শীঘ্রাং।”

সন ১২৬৩। ৪ কার্তিক। ইং ১৮৬২। ২০ অক্টোবর।

সাপ্তাহিক মূল্য ১ টাকা
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন।

হলে সোমপ্রকাশের

পের নিয়ম।

মূল্য না পাইলে বন্ধনুলে সোম-

প্রকাশ করা যায় না। ইহার বার্ষিক

মূল্য সমস্ত ১০ এবং বার্ষিক

লিখিত আছে। হর মাসের স্থানে

এর গ্রহণ করা যায় না। বন্ধনুলের

ব্যক্তিগত সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা

নি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই

পাঠিবেন।

বিজ্ঞাপন।

আগামী ২৮শে ও ২৯শে অক্টোবর

বুধ ও বৃহস্পতিবার কলিকাতা

হলে প্রবেশাধিকারের পরীক্ষা হইতে

সম্প্রতি ১০ টী ছাত্রবৃন্দ খালি থাকত।

১০ টা খালি ছাত্রবৃন্দ সভাবনা আছে।

২০ রকিগ্রাহিছাত্রকেপে অথবা প্রতি

ইয়াও ওয়াং পাঠ করিতে আভ্যাস

ন তাঁহার উক্ত দিন নিবস বেনা

বি সমস্ত কলিকাতা মহাল ক্রাস (চি

ক্রোডের ৬৪ নং ভবনে) উপস্থিত

। বীহাদিগের বয়সক্রম ১৬ ২২সরের স্থান

রা বিদ্যালয়ে প্রবিষ্ট হইতে পারিবেন

ইচ্ছা কেহ আপনার সিদ্ধা ও চবিত্ত

কে প্রার্থনা পত্র পাঠিয়া থাকেন তবে

এইয়া আসিবেন। পত্রাভিগিত নিয়ম

নের পরীক্ষা গ্রহণ করা যাইবেক।

কিয়ম উপক্রমণিলা

সুত নিবন।

গোলা মসজিদ ও সামিচি নিবন।

বাল্যলার ইতিহাস গ্রন্থ ও দ্বিতীয়ভাগ।

অন্য বহুপ্রাচীন ও সামান্য ভাগ্যে পর্যন্ত।

কে, জি, যেজিহু

বাল্যলার মধ্য নিচাগের ছন্দ ইনস্পেক্টর

১০ই সেপ্টেম্বর

সন ১৮৬২ খাল

নিউ ইণ্ডিয়ান লাইব্রেরি

৮৬ নং কলেক্ট্রীট।

পানও দফন।

ক্রীপ্তক বার মাসমান নুশেপাখ্যার মহা-

শর গোলাল নিত্যানন্দ প্রভুর ৬৪ এবং ৭৮-

রিত বৈক্য বসন্ত সমস্ত নিবন সংগ্রহ ক-

বিয়া গোলাল সাধু ভাষায় গল্পে বনো ও ব্রহ্ম

ত করিয়া পাঠকগণের নব এক খানি অতি

নব পুস্তক বিক্রয়নে আমানিগের প্রতি তা-

র গণ করিয়াছেন। আনন্ড উহার অমো-

পায় পাঠ বসন্ত সমস্ত নিবন সে প্রতুর্কী

কি সন অধিকন প্রিখিয়াছেন বচনাব নিমিত্ত

১০০ বিয়ম ৬১১ প্রিখ করেন নত অথচ

নতনাও অধিকরণ ৬১১ বোণ করি এট

পুস্তক প্রমিষ্টক্রম সাহিত্য প্রেই প্রয়ো-

জনীয়, বিশেষতঃ বৈক্যবর্ণনাবলি মহান

গণের অতি বাধ্যক এবং প্রকণকরা

নিত্যও উচিত মেহেতু বহুমানসময়ের

বৈক্যবর্ণনামগণ আনেকেই কীর প্রার্থে বর্ধে

বক্রিত পুস্তকের মূল্য ৬ বারো আনা বাক্স।

শুভ প্রার্থ

বিজ্ঞাপন।

আগামী ২৮ শে ও ২৯ শে অক্টোবর

১২ই ও ১৩ই কার্তিক মঙ্গল ও বুধবার হই-

কিয়ম হরলো মঙ্গল বিদ্যালয়ের

নিগের পরীক্ষা পর্যাপ্তর উক্ত বিদ্যালয়

বনে প্রীত হইবে। পরীক্ষার বিষয়

ভাষা ব্যাকরণ কিকিৎ অক ও কুগোল

ইতি।

তাৎ ২০ শে সেপ্টেম্বর ১৮৬২।

বাল্যলার মধ্যবিভাগস্থ বিদ্যালয়

সমূহে অধিক এটি

ইনস্পেক্টর।

বিজ্ঞাপন।

নিউ ইণ্ডিয়ান লাইব্রেরি

৮৬ নং কলেক্ট্রীট।

বাল্যলার উপাচার্য ক্রীপ্তক

৬৪ বৈদ্যবর্ণনাবলি তাঁহার দ্বারা প্রকণিত

সমস্ত বিক্রয়ের সম্পূর্ণ ভার আমানিগের

পার অর্পণ করিয়াছেন, অতএব প্রার্থক

উক্ত গ্রন্থ সকল আমানিগের নিকট

রিলে প্রাপ্ত হইবেন ইতি।

প্রকাশিত পুস্তকের নাম।

বৈদ্যবর্ণনাবলি তৃতীয়বার ব্রহ্ম

পঞ্চমশী দ্বিতীয়বার ব্রহ্ম

ক্রীপ্তবর্ণনাবলি মূল্য ৬০ ও ভাষা

এটক্র বিক্রয় প্রেই

বৈদ্যবর্ণনাবলি অধিকরণ প্রতি সংখ্যা

মহাতারতীর পুস্তকলোপাখ্যায়

হর উপনিষদ

সামবেদীয় সঙ্গীত প্রযোগ

বৈদ্যবর্ণনাবলি শারীরিক জ্ঞানের

৫।

সোমপ্রকাশ ।

৪ঠা কার্তিক সোমবার ।

মারীতর ।

বিধাতার হুতির এই কি নিয়ম যে
নিষেধ হইয়া সুখে কালযাপন করি-
তে পারিবে না? আমরা প্রায়ই দেখিতে
পাইতেছি, এক একটি ভয় তাঁহার পিক-
নে লাগিয়া আছে। বঙ্গদেশীয়েরা এত
দিন বসু ভক্তরাতির ভনে নিঃশব্দ কতক
ছিলেন। সে ভয়টি যেমন কিছু কমিয়া
আসিয়াছে, তেমন ওদিকে মারীতর কা-
ড়িয়া উঠিয়াছে। এটি ও জনগণ বিশে-
ষের মারীতরের কথা প্রায়ই অমানিগের
অভিগোচর হইয়া থাকে। বারাসত প্র-
ভৃতি কয়েকটি এম এমের বাস্তবুনি হইয়া
উঠিয়াছে বলিলে হয়। আর জনগণ বহু-
দূর স্বাধিকার বিস্তার করিতেছে। পাণ্ডু-
রায় সমিহিত এম এমের কতক
কম পাঠকগণ তাহা দৃষ্টে অনিয়াছেন,
ওদিকে নদীয়া জিলার অন্তর্গত দেবগ্রাম
একটি ম. বসুখ্য গ্রামে অত্যন্ত মারী-
তর হইয়াছে। এত মারীতর সংক্রান্ত এক
খানি প্রেরিত পত্র পাঠকগণ যথাস্থানে
বর্ণন করিবেন।

মধ্যে মধ্যে দেখিতে পাওয়া যায়, মা-
রীতর উপস্থিত হইলে তৎকালে কোন
কোন স্থানে আপাততঃ তৎপ্রতীকারের
কিছু কিছু চেষ্টা হইয়া থাকে কিন্তু তাহা
সম্যক কল্যাণসাধক হয় না। বিশেষতঃ
তাহার তাবি মারীতর। বঙ্গদেশে কোন
কমতা নাই। বাহ্যেতে ওদিকে ওদিকে
না হয়, সেই সেই উৎসাহ বদলে কবাই
সর্বতোভাবে কর্তব্য। মারীতর কতক
জাত অনেক গুলি কারণ আছে। সর্বা-
শেষ অনুসন্ধান করিয়া অজ্ঞাত বসু ক-
লির আবিষ্কার এবং জাত ক-
লির কারণ চেষ্টা করিলে মারীতর
শান্তি হইবার সম্ভাবনা। তাহা হইলে
মারীতর ও দেশের লোকের

উভয়েরই সাধন হওয়া উচিত,
অন্যথা কুভারতা লাভ সম্ভাবনা নাই।
এ অংশে গবর্ণমেন্টের আর যে অংশে
দেশের লোকের বসু আবশ্যিক, তাহার
উল্লেখ করিয়া বসিতেছি।

বসাবসান সময়েই আর পাণ্ডু-
রায় বিকারাদির সাতিশর প্রাদুর্ভাব হয়।
ইহার কারণ নিত্যই দুর্বল নহে। অনেক
ক গ্রামে দেখিতে পাওয়া যায়, গ্রামের ও
পরিষ্কৃত রাস্তা, ঘাট ও সরোবরদি মাঠ।
চতুর্দিক বনে ও জলে পরিপূর্ণ হয়। লতা
পাতা প্রভৃতি পচিয়া উঠে। গবর্ণমেন্টের
দলের ভয়ে অধিক দূরে গমন করে না।
রখা ও গৃহেব পাখেরই অঙ্গুলি। মলম-
ল করে। পক্ষ সকল কক্ষমে ও দুর্গ-
প্রায় পরিপূর্ণ থাকে, গমন কালে কচা
হইতে অতি অসহ্যকর কুৎসিত বায়ু নিঃ-
সৃত হয়, তাহার আশ্রয়মাগ্রেই কচিৎক
সাতিশর রোগ ও বিকার জন্মে। এ সম-
কারণে পীড়া না হইলে বোঝা যায়।
নে তাহার প্রতীকার ও তাহার উপায়
নাই। অনেক গুলি সুচিকিৎসক নষ্ট,
বাচার চিকিৎসা করিয়া কেবল, তাহাদ
নিতান্ত অনাক্রম্য, তাহাদিগের দ্বারা পী-
ড়ার শান্তি প্রাপ্ত দূর থাকে। তাহারা
বুড়ি হয়।

উপরে পীড়ার যে কারণ গুলি বর্ণিত
হইল, গ্রামের লোকের ও রাজকর্মচারি-
বিগের যদি সর্বশেষ যত্ন থাকে, তাহাঁত
নিরাকরণ হুঁসখা হয় না। গ্রামের প্রচি-
গৃহস্থ যদি যথাসম্ভবি ব্যবস্থা টিচিতে কিছু
কিছু দান করিয়া গ্রামে রখা সর্বোত্তমদির
উৎকর্ষ সম্পাদন চেষ্টা করেন, তাহা সত-
জেই সম্পন্ন হইয়া উঠে। কিন্তু অমানিগের
দেশের লোকের এমনি কুসংস্কার যে সে
চেষ্টা দূরে থাকুক, অন্যত্র নিকট হইতে
বসু হুঁসখা, নিঃসৃত, বসু ও রখা, রখা ব্যয়
করেন। তাহা হইলে, অতঃপর তাঁ-
হারা এই কুসংস্কার পরিভ্রম্য করিয়া গা-

মের রাস্তা, ঘাট ও পুষ্করিণী প্র-
শস্ত ও পরিষ্কৃত করিবার এবং ক-
প্রভৃতি কাটিয়া পরিষ্কার করিবার
পাউন এবং বাহ্যেতে গ্রামের মধ্যে
চিকিৎসক ও উত্তম ঔষধ গুলি ও
হন, তাহারও চেষ্টা করুন।

গবর্ণমেন্টের কর্তব্য এই,
দ্বিগ কর্মচারিদিগের প্রতি দু-
কই আত্মা প্রদান করেন
মধ্যে সে স্থানে বসু ও অঙ্গুল
তাঁহার কাটা হইবে। বসু এবং
প্রভৃতি অপরিষ্কৃত দূর্ক হইলে
তাহা পরিষ্কৃত করান। রখা কচি
সংকর কিসার নিমিত্ত গবর্ণমে-
ন্ট প্রদান করিতেছেন তাহা এবং
পীড়ার দ্বারা উৎপন্ন হইলে
কারণ বিনিয়োজিত করা কর্তব্য।
এক বসু গুলিসকল চিকিৎসক
তেসমি কর্তব্য যোগে তাঁহারা যদি এই
কারণ অনুসন্ধান করেন, তাহা হইলে
তাহাদের সম্ভাবনা। বিশেষ, গবর্ণমে-
ন্টের প্রদান দ্বারা চিকিৎসার
তাঁহার সংস্থা রূপিত করিতে হইবে।
হুঁসখা লোকের নিত্যই নিত্য
সেই সেই স্থানেই হুঁসখা চিকিৎসা
গুলি প্রতিষ্ঠিত করিতে হইবে। তাহাঁত
গবর্ণমেন্টের সাহায্য দান করিয়া চিকিৎসা
প্রতিষ্ঠিত করিবার যে বিধি আছে তাহা
পরিবর্তন করিতে হইবে। তাহাঁত আর
অধি দিবার নিয়মেই চিকিৎসার
জিত করা হইবে, থাকে। এমনিম পদবি
করিয়া গবর্ণমেন্ট অধি দার গ্রহণ ক-
এবং এই দার গ্রহণ করিয়া গ্রামস্থ
কের সঙ্গে আপাততঃ নিষেধ করা
চতুর্থ, যখন সে স্থানে মারীতর উপ-
হইবে, মেডিকেল কমিসন নিয়োগ
তাহার সিদ্ধান্ত নির্ণয় করিয়া তৎপ্রতীক
চেষ্টা করা আবশ্যিক।

ମହାଦେବଙ୍କ ଅବସ୍ଥା ଏହି ତାହା ।
 ବିଦ୍ୟାବେଦ, ଶାସ୍ତ୍ରାଦିଗୁଣ ସୁଦ୍ଧା ବିଦ୍ୟମାନ ।

[illegible]

১। **স্বল্প** **মুদ্রা** **অর্থ** **অর্থ** **অর্থ**
অর্থ **অর্থ** **অর্থ** **অর্থ** **অর্থ**

করিয়া যে পদ নিম্নস্বরূপ হয়, একজান্না তাহার অনেক জানা যাইতে পারিবে।

২। শ্রীযুক্ত রমামাধব ষোড়শীত এক খানি কৃত্রিম। ইহাতে প্রায়শঃ যে সু-তনবিশিষ্ট আঁক করিয়াছেন, তাহার সপ-
কথা কহা হইয়াছে।

৩। হতম পৈচ। ইহাতে অসামান্যের
রক্তের বর্তমান অবস্থা সন্নিহিত বর্ণিত
হইতেছে।

৪। কলুটোলা ব্রাহ্ম সমাজের বিতীর্ণ
পুস্তকসমূহের সত্যতা

৫। ব্রাহ্মত্ব। উপরি উক্ত সমাজ
দ্বিতীয় হইতে উদ্ধৃত করিয়া ইহা
প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন।

বিবিধ সংবাদ।

২৪এ আখিন বৃহস্পতি বার।

আটটার পেশারের এক জন পত্র প্রেরক
বলেন সঙ্গত ক্ষেত্রি নগর পল্লী আলি
হাঙ্গল। তাহার প্রাপ্ত হইলে শ্রীযুক্ত
আটটার। সেই সময়ের অতিশয় গ্রীষ্ম হইয়া
ছিল।

৩০। পেশা ভারতবর্ষের এইসঙ্গে কো-
অর্থাৎ ২০ ইনবেক্স জাতিপুত্র লব্ধ রেইলও-
য়ে খুলিবেন।

বিত্তনিসিদ্ধান্ত করিয়াসম্মিলনের এতদিনের
পর চৈতন্য হইয়াছে। কলিকাতাবাসীর বা-
হ্যে ভাল অলপান ৩০০০ উপায় উদ্ভাবন পূর্ণ
ক গবর্ণ মেণ্টের নিকটে উপস্থাপিত করিয়াছেন।

বাজারের চোরেতা ক্রমশঃ অধিক সঙ্খ-
লী হইতেছে। কয়েক মাস পূর্বে তাহার ত-
ত্ত্বা প্রধান বিচারপতি ও গবর্ণরের এই-
কৈ পেন্ডেটোরি অর্থ অপহরণ করিয়া গেল।
সম্প্রতি সন্ন উইলিয়ম ডেলিসনের নিজের
২০ টাকা জমা ও একটি বন্ধু হুজি গিয়াছে।

অসমবাসিন্দারোগের এই একটি উদ্ভব

২৪এ আখিন শুক্রবার।

আলাহাবাদে গেলস্ট বলেন কিছু কিছু হইত
এক জন মুসলমান এক জন ইটালোপার
সৈনিক পুরুষের মধ্যে দুই দ্বিধা অপমান করি

কোন ব্যক্তি বলিবেন প্রাচীনগিরের মধ্যে অ-
ধিক সংখ্যক তরলোক আছেন? কয়েক টি-
টলি বলিয়াছেন কলিকাতার এই কলিসন বলিবার
সময়ে মেজর ফিটজারাল্ড প্রধান সেনা পতি
র নিম্না কলিয়াছিলেন উক্ত কলিসনের অধ্যক্ষ
বলেন সে কথা মিথ্যা।

কাগজের আলিসের বিচার আরম্ভ হইয়া-
ছে। তিনি ৪২,০০০ টাকা তহবিল করিয়াছেন
বলিয়া তাঁহার অপবাদ দেওয়া হইয়াছে

সর বাণেশ্বর পিকক সেনিসন প্রভৃতির
এই আত্ম করিয়াছেন তাহার প্রধান ৩০০
চাবালরে রাইয়ের ইংলিশ ও বাণেশ্বর দুই
প্রকার নকল পাঠাইয়াছেন। সেনিসন তাঁর
মতে ক্রমশঃ ইংলিশ ও বাণেশ্বর কবাই
ইহার উদ্দেশ্য।

২৪এ আখিন শনিবার।

বহীষত্ব রেকর্ডার বলেন সম্প্রতি এতদ-
কিরে কয়েক জন বন্য উৎপাত করিয়াছেন
কিন্তু পুলিশের সঙ্গে তাহার নিবারণ হইয়াছে
মোদাবতীর বাদে কার্য নাগপুরের কলিসন
রের হস্তে দেওয়া হইবে।

উক্ত পত্র আরও বলেন সর বাটল
রের আতা তত্ত্বা প্রধানগণ বিচারালয়ে
বিচার পতির পদ ত্যাগ করিবেন।

বোম্বাই স্টেটে রিভিউ প্রবণ করিয়াছেন
স্পেনের রাজী মাতরিকুগারে সিদ্ধান্ত
ন করিবার জন্য এক কমিসন নিযুক্ত করিয়া
হইতেছে।

২৪এ আখিন সোমবার।

নীল গিরিয়ার বলেন লার্ড এলগিন খ্রীস্ট
উত্কাবুগে হইবেন। তথা হইতে তিনি স-
র উইলিয়ম ডেলিসনের সহিত প্রবন্ধের গম-
ন করিবেন।

ওরাকোপ সাহেব ১৮ ১১ ১২ অব্দের পুলি-
স বিপেট প্রকাশ করিয়াছেন, লেগটনাল্ট গ-
বর্ণর তাহার কার্য ক্ষমতার সন্তুষ্টি হইয়াছেন।
বক্তা ওরাকোপ সাহেব কমিসনের হওয়া অ-
বধি কলিকাতার পুলিশের অনেক উন্নতি হই-
য়াছে।

আলাহাবাদে গেলস্ট বলেন কিছু কিছু হইত
এক জন মুসলমান এক জন ইটালোপার
সৈনিক পুরুষের মধ্যে দুই দ্বিধা অপমান করি

হাছিল ত হার এক বৎসর মেয়াদ হই
কিন্তু লালিহান পুরের মেজর নিকটে
ন করিয়া সে যুক্ত হয়। তদনন্তর প্রধান
পতি মেজর উপর বিরুদ্ধ হইয়া লাত
নকে তাহা জানাইয়াছেন। মুসলমান
কোন গুরুতর দোষ করে নাই যে তাহ
ক বৎসর মেয়াদ হইতে পারে।

বিবিধান নারী এক বারাননা পুলমন
ক এক জন দ্বি-বিক্রি অতিশয় ভাল বা
পুলমন কিছুদিন তাহার প্রতি অত্যাচার
সম্প্রতি সে বিবাহ করিবে শুনিয়া বিবিধান
নিব পান করিলে। বিব পান করিয়া তাহার
পর সন্ন হয় এবং এদিন তাহার আভিবা-
গণকে বলে, তদনন্তর তাহাকে চিকিৎসা
য়ে লইয়া বাওয়া হয় কিন্তু দুই ঘটিকার মধ্যে
তাহার মৃত্যু হইতেছে।

কিনিক প্রবণ করিয়াছেন স্পেনের
বালি লক করিয়া প্রধানগণ বিচার
জন একটি স্বতন্ত্র শাস্তি প্রদত্ত করা হইবে।

২৪এ আখিন শুক্রবার।
বালি লক করিয়া প্রধানগণ বিচার
জন একটি স্বতন্ত্র শাস্তি প্রদত্ত করা হইবে।
২৪এ আখিন শুক্রবার।
বালি লক করিয়া প্রধানগণ বিচার
জন একটি স্বতন্ত্র শাস্তি প্রদত্ত করা হইবে।

সম্প্রতি বিব্রুলে অতিশয়
বালি ও অনেক লোকের প্রাণ হইয়াছে
একটি বালিকা ও সমস্ত জনের প্রাণ রক্ষা
রিতে গিয়া প্রাণ ত্যাগ করিয়াছে।

২৪এ আখিন শনিবার।

কিনিক বলেন শমর সৈন্য সাহেব
টোবরে উৎসব হইতে দ্বিতীয়
ইনি যুক্ত রিচি সাহেবের কর্মে মিলিত
হইবেন।

উক্ত পত্র বলেন চন্দন নগরের
এক জীকোকে প্রাণ নষ্ট করিয়া
করিয়াছেন। কলিকাতার
খুত করিবার নিমিত্ত কলিকাতা পুলিশ
জারিকেই দিগিয়া ছিলেন, ওরাকোপ সা-
হা দিগকে খুত করিয়া প্রেরণ করিয়াছে

দিল্লীগোমেট কলেজ একজন
দিল্লীর বাসিন্দার মৃত্যু হইয়াছে।

বয়স্ক ১০ বৎসর হইয়াছিল। বামলাহকে
থরেন হইতে বহিষ্কৃত করিতে বনোজুংগেই
প্রাণত্যাগ করিয়াছেন।

মাজার টাইমস কছেন লাক্সেমবার্গের
মন্ত্রকমিশনের সাহায্যার্থ বোম্বাইয়ে ২ লক্ষ
টাকা আদায় হইয়াছে।

উক্ত পত্র আরো কছেন কাঙ্গারার সার-
জন ডটল সাহেবের প্রভাবে তথায় ১৪ টি
ক্রীলোক এসব কয়লাবার দিয়াই শিক্ষিত
হইয়া পদার্থ দিয়াছে। ইহাখা খৃষ্টধর্মাবলম্বী,
২২তম ডাক্তরের মন্ত্ররোধে যত দিন টহাবের
সমাপ্ত ন, হয় গবর্ণমেন্ট ইংলিশের
সঙ্গে ৩ জনকে মধ্যে মধ্যে ২০০ টাকা করিয়া
দিবেন আত্মা করিয়াছেন। এখানেও
এইকথা সাইটিংয়ে লিখা দেওয়া কর্তব্য।
তাহাদের মর্খতা নিবন্ধন আরেকের প্রাণ
নাশ হইয়া থাকে।

সিঠেন নামে এক খানি জাহাজের চোং
ফাটরা এসজন আলি নামে এক ব্যক্তির
প্রাণ বিসর্জন হইয়াছে আর ৩ জন এখন
চিকিৎসালয়ে অবস্থিতি করিতেছে।

৩১এ আখিন বুখবার।

মাজার টাইমস রেকণের সংবা-
দ মাজার নিকট লবণ করিয়াছেন সেখা পুলি-
সের অধ্যক্ষ কোপ্টেন্ট মেজর সাহেবের
নামে পুলিশ সেনারা এই বলিয়া অভিযোগ
করিয়াছে যে তাহারা লবণ মাসের বেতন প্রা-
প্ত হইয়াছে। তদ্বিষয় অন্যান্য টাকারও হিসাব
বর্ণনা দিয়া থাকে। তিনি পুত হইয়াছেন
দ্বারা বিচার হইবে।

খসিয়ারা এখনও কাঁচ হইয়াছে, পুনরা-
র উৎপাদ করিতে একপ সতাবনা আছে
তাহারা কহে তাহাদের রাজ্য ছাড়িয়া না দি-
লে তাহারা কাত হইবে না। রাজ্য একবার
লইলে কি আর দেওয়া যায়।

কিনিকের একজন সংবাদ দাতা কছেন
মধ্য ভারত বনের অধিনায়ক টেম্পল সাহেবের
বয়ে তথাকার সর্পিণ্ডে উল্লিখিত হইতেছে।
তিনি রাজ্যে যতি প্রভৃতির উৎকর্ষ সাধনে সবি-
শেষ বনোজুংগে হইয়াছেন। সৎ লোকের এ-
কথা শুনি।

মাজার টাইমসের সংবাদ দাতা কছেন

মাজার এক তথাকার ক' হইয়া গিয়াছে
অধমত করে ক' দিন তদ্বিষয় হইয়া ছিল,
পরে প্রচণ্ড ঝটিকা হইয়া গিয়া ও যাহা দি
হইয়াছে এবং অনেক মৃত্যু ও পতন হইয়া হ-
ইয়া গিয়াছে।

উক্ত পত্র আরো কছেন প্রধানতঃ বিচা-
রালয়ে আর দুই জন অধমত কিছু দিনের অ-
ন্য নিযুক্ত করিবার অত্যাশঙ্ক কবিয়া প্রধান
বিচার পতি গবর্ণমেন্টে দিগিয়াছেন।

টাইমস আর ইতিহাস কছেন অহরন হোসে
ন নামে এক ব্যক্তি বিবোধ কালে ২ জন ইউ-
রোপীয়কে খুঁত কবিয়া লখনৌয়ের বেগমের
র সঙ্গে সমর্পণ কবিয়াছিল, বেগম তাহাদের
জীবন নাশ করেন, অহরন হোসেন আপন নাম
ম পরিবর্তন করিয়া নিযুক্ত হোসেন নাম গ্রহণ
করিয়া নিজামের অধীনে এক তামুক দারের
নিকট কর্ম প্রাপ্ত হইয়া অবস্থিতি করিতে

নিজামের অন্তরঙ্গি লইয়া কাগেন
কোয়ার এবিষয় অনুসন্ধান করিতে গিয়াছিলে
ন কিন্তু সে ব্যক্তি এই সমাচার পাইয়া প্রস্থান
করে তাহার খুঁত ও স্ত্রী খুঁত হয়, পচাৎ অ-
নেক অনুসন্ধানের পর সে ব্যক্তি ও খুঁত হই-
য়াছে অতি শীঘ্র বিচার হইবে।

ওয়ারলাও নিউস পত্র হইল ইংলণ্ডে
এক কাগলের ক'রখানায় আগুন লাগিয়া অ-
নেক কতি হইয়াছে। প্রায় ১০০০ টাকার
সামগ্রী অগ্নিসং হইয়া গিয়াছে।

অপর এক জন ক্রীলোক আপন ২ টি
সিত সন্তান লইয়া আপন ইচ্ছায় জলমগ্ন হই-
য়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে। প্রথমতঃ সন্তান দুটি-
কে জলে নিক্ষেপ করে পরে আপনি গিয়া
পড়ে, সকলেরই মৃত্যু হইয়াছে। কারণ অনুস-
ন্ধান করিয়া স্থির হইয়াছে যে এই ক্রীলোকের
দ্বারা তাহাকে অভিশপ্ত কই সিত সেই স্থানে
সে প্রাণত্যাগ করিয়াছে। এইকণ দুসংস-
দ অনেক আছে।

আর একটী ক্রীলোক তাহারা প্রাণত্যা-
গ করিয়াছে। তাহার দ্বারা তাহাকে কয়েক
দিন আহাির দেয়া নাই। সে কখন দুঃখপ্রাপ্ত হ-
ইয়া এক ব্যক্তি তাহাকে আপন বাড়িতে ল-
ইয়া তার কিছু তাহার প্রাণ রক্ষা করিতে স-
মর্থ হইয়া নাই।

৩১এ আখিন বুখবার।

হরকরা কছেন যে সর দেহন আউটরা
অত্যন্ত পীড়িত হইয়া ব্রাহ্মণী অবস্থিতি ক-
রিতেছেন।

আলাহাবাদ গেজেট কছেন ১৪ই অক্টোবর
অলিগড় হইতে হাটাস গবর্ণমেন্ট এক খাখা
রেইলওয়ে খুলিবে।

কুণ্ড অব ইতিহাস কছেন বেঙ্গাল
সাহায্যার্থ মৌলভিমে ৩০৪৫০ এবং
৩১৫০ টাকা সংগ্রহীত হইয়াছে।

হরকরা কছেন বোম্বাইয়ের দুর্ভিক্ষ ৭, ৮
সর কর্তৃক অটলতে অবস্থিতি করিয়া
নেক মৃত্যু হইয়াছেন।

কুণ্ড কছেন কোচিনে বনরেন অশে
খিওন হই হইয়াছে।

আলাহাবাদ গেজেট কছেন সাহাবা
এক জন দুসংসদ এক ইউরোপীয় সেনার
মুখে গুলি লাগিয়া দিগাহিল বনিয়া টেম-
নিক মাজিউট তাহাকে ১ বৎসরের শাস্তি
করাবাসের আজ। দিগাহিলের মৃত্যু তথ-
কার এক সাহেবের আত্মা রক্ষিত করিয়া
ছেন। প্রধান সেমপতি ইংলণ্ড করিয়া
গবর্ণর সাহেবকে দিগাহিলের মৃত্যু
বের এতাদৃশ চক্রি আর উপর হই দিগাহিল
রেন। টেমিকিদের মৃত্যু হইয়াছে।
মতাজা আবদার হই। মৃত্যু হই এ সেমপ
হইতে পারে না।

১৪ই কার্তিক বুখবার।

কিনিক কছেন, বহিষ্কৃত লাক্সেমবার্গের
গবর্ণমেন্টের নিকটে এই বলিয়া আবেদন করি-
য়াছেন যে গরুর গাভির প্রাণেরাণের বেগল
এক বার গোলমোজ করিয়াছিল, পুনরায় সে-
কণ করিতে না পারে এবং একটা উপায় করা
কর্তব্য। আলাহাবাদের সাংসারিক ব্যাপারে কার
কি অবস্থিতি আছে, গবর্ণমেন্ট তাহাও কি
অধ্যয়ন দিবে? এক গাভি কোল দিগাহিল
লেই, তাহা প্রাণেরাণের গরু হইয়া

আউটরা পেপার কছেন দুই বৎসর বয়সে-
র একটি বালক ক্রাচিতে জলমগ্ন হইয়াছিল,
তাহার মাতা তাহাকে রক্ষা করিবার জন্য
আপনি জলে কল দিয়া পতিত হইয়া, দুই
প্রাণ নাশ হইয়াছে।

শ্রীশ অশোকবাহু বিবাহ-
কর্তা বচন অবলম্বন করিয়া
রাপসাদ বচন পর্যায
বান কাল এই সিদ্ধান্ত করি-
ত এই সকল বচনের অর্থ ও
অনুসন্ধান করিয়া দেখিয়া
পাই একপ বোধ হইতেছে না যে
মায়র অব্যবহিত পরেই বাগদা
ল আরম্ভ হইয়া মাত বচন
বে। বচনে কহিতেছে, জমাবনি
হিত কন। মদনে সদা সৌচ, চু
যত দিন বাগদান না হয়, তত
কাল অশোচ, বাগদানের পর বি
বাহ পিতৃপুত্র ও পুত্রপুত্র উভয়
প্রবাহ অশোচ। এই বচনগুলি
পুত্রবৈব্র আরম্ভ ও অবসান এই
কোন কালেই নিষ্পন্ন হইতেছে না।
বচনে বচন শব্দ দুইটি থাকিতেছে,
এই দুটি ছিল, চুড়ার অনেক পরে
স্বতঃ, বোধ কর সকলেই যদি
বহির্ভূত পথেই বাগদান করে, এ
দুইটি বিধান বিফল হইয়া যায়।

১৪। কন্যার পৌত্র নবমাত্র হইলে
নাহা, প্রাতঃ। অতঃ পরে
সম্বন্ধের পাপ প্রাপ্ত নাহা হইবে।
১৫। প্রাতঃ।

অবলম্বন করিয়া
বাক্যে যে কন্যার
সীমা করিয়াছেন
তোহে না। অতঃ
তিন। কন্যার
মধ্যে, অতঃ
বচন কন্যা
বচন বচন
বচন কন্যা
বচন

বচন বাগদানের সীমা বচন না
সকল বচন অতিশয় করিয়া, ২। ম ও ন-
মে তাওরা বহিতে পাবে না, ৩। ম
বচন একপ নিষেধক বচন, বহিতে পারে-
ন, এখনি বিবাহের বোধ হইয়া যাউবে,
তাঁহার কৃত সিদ্ধান্তকে অস্বীকার করিয়া
নিরোধার্থ করিয়া লইবে। ৪। ম, করিয়া
শুক গালি দিয়া তাঁহার উদ্ভট মতাবলম্বন
কি, পোকলে পরাধীন হইয়াই বচন
ল শাপ ও গালি দিয়া কন্যা হইয়া চেষ্টা
পাইতেন।

দ্বিতীয়, বেদান্তবর্ণীশ লিখিয়াছেন
বিক্রী পাত্র কন্যার বাগদান করা
হইলে, ১। কেবল কৃতদার নিষেধ
হইবে। ২। বিবাহ আনন্দের বোধান্তর
নিবর্তে এই প্রমাণ করিয়াছিলেন। অন্য
অন্য, প্রবীর লোকের কৃতদার পাত্র
যে কন্যার কন্যা, তখন তাহা কি অসিদ্ধ
ও অধর্ষ্য হইতেছে? বৈদিক জ্ঞেয় ম-
ধোও নি, কৃতদার পরে কন্যাদান প্রথা
নাই। কৃতদার পাত্র কন্যাদান নিষেধক
বচন উক্ত কবি; আশাশ্রিত্যে নিষেধক
করাই বেদান্তবর্ণীশের উচিত ছিল। তি-
নি তাহা করিয়া কেবল বাচক কথা
লইয়া গেলোনাহা করিতেছেন।

পাঠকগণ আপনাতঃ বিবেচন করিয়া
দেখুন, কৃতদার পাত্র কন্যাদান যদি
১। ম ও ২। ম হইলে তত লোক
প্রবীর বচন বিবাহ করিয়াছে, তাহা অ-
স্বীকার হইয়াছে। অস্বীকার বিবাহ সিদ্ধ
না। অসিদ্ধ বিবাহ দাতব্যসম্বন্ধে ধনাধি-
কারী হয় না। সেই সেই বিবাহোৎসব
সম্বন্ধিগণের উত্তর বিকল্পকমপ্রাপ্ত ধন
যে সে তবে লইতে পারে। প্রাপ্ত
বচন পুত্র কন্যার অথবা পুত্র প্রাপ্ত ক-
ন্যার পাণি গ্রহণ করে, কিবা কেহ স্বপোজে
বিবাহ করে, সেই সেই বিবাহোৎসব স-
ম্বন্ধে কি পৈতৃক ধনের অধিকার হই-
বে? কলক: এবিধে বেদান্তবর্ণীশের

অমিয়াকে, কৃতদার পাত্র কন্যাদান
বোধ করা। আশাশ্রিত্যের অতিশয় বোধ
হইয়া পাত্র কন্যাদান অসিদ্ধ হইবে
এই মাত্র।

বেদান্তবর্ণীশ ৪। ম আশ্রিত্যে যে কে-
বিত পাত্র আশাশ্রিত্যে বিবাহে পাঠাইয়া
দেন, তাহাও এই দুই বিধানের উত্তর যে
ওয়া হইয়াছে কি না, তাহাও জানিয়া
উক্ত ১। ম ও ২। ম বচনের অর্থ
হইবে।

মায়র শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশমঙ্গলক
মঙ্গল্য সমীপে।

শ্রীযুক্ত বাগদান বিদ্যাভরণ যে দক্ষিণাত্য
কুলীন বৈদিক জ্ঞেয় কন্যার কন্যার আ-
নন্দের প্রবাহিতবিশেষ সাধনের অনেক কবি
ইল। একদে দক্ষিণাত্য কন্যা আশ্রিত্যে বৈ-
দিক জ্ঞেয় কন্যার জ্ঞেয় প্রবাহিত কুল
মঙ্গল্য অথবা পরবর্ত্ত করা উচিত কি না? উ-
দ্বিগত প্রবাহ পুত্রকাতারে প্রচার করিয়া
তাহার তাৎপর্যটি কেবল কুলীন বৈদিক
উপরে পাঠে, কি কুলীন মৌলিক বাগদান
গারিণ বৈদিক জ্ঞেয় মায়র উপরে পাঠে
ইহাও প্রথমেই কুলীন লোক বিশেষণ, তাহা
মধ্য কুলীন লোক বিশেষণ, এবং শেষে
লোক বিশেষণ থাকতে উপক্রম, উপক্রম
অতঃ পরে অশোচনা করিয়া অতি দক্ষিণাত্য
কি প্রবাহিত পাত্র যে উক্ত কেবল কুলীন
ক কন্যা বাহ্যিকের কুল সঙ্গ প্রথা
অতঃ, তাহা দিগেরই উপরে পাঠে
মৌলিক কি বাগদান বাহ্যিকের উক্ত প্রথা
চলিত নাই, তাহা দিগের উপরে পাঠে
অতঃ কুলীন বৈদিক জ্ঞেয় (১) কৃতদার পাত্র
বাগদান নিষেধ প্রতিপাদন দেখিয়াও ২৪ তার
বিবাহের সোমপ্রকাশের ১১৮ পত্রের দ্বিতীয়
অঙ্কে যে বিদ্যাভরণের তাহাতে অস্বীকার ও
বৈদিক জ্ঞেয় (২) মধ্যোক্ত কি কৃতদার পাত্র

(১) কোন্ বচন কন্যা কোন্ চুক্তি
এইরূপ ধরিয়া লিখি হি যে দক্ষিণাত্য
কুলীন বৈদিক জ্ঞেয় কৃতদার পাত্র কন্যার
বাগদান করিতে পারিবেন না? বেদান্ত
বর্ণীশ যদি সেই বচনটি উদ্ধৃত করিয়া
দেখ, আমরা পরমোৎকৃত হইব।

(২) বচন ও মৌলিকতা কি বৈদিক জ্ঞে-
য় লোক? আশাশ্রিত্যের লেখায় কি কুলীন এই
বৈদিক জ্ঞেয় লোকের বিশেষণ ছিল? ২৪
আশাশ্রিত্যের লেখা কিরূপে সম্প্রসৃত হইল?

হল না, কেবল তাঁহার সম্মানার্থে কেবল
নৈশ্চর্য্য করা হইল।

সকলে মনের ভাব দীর্ঘকাল গোপন
করিয়া রাখিতে পারেন না। তাহার পর
তিনি এক প্রেরিত পাঠাইলেন, তাহাতে
তাঁহার মনের সমুদায় ভাব উন্মোচিত হইল।
উহার কৃত্য কখন প্রেরিত
পত্র সোমপ্রকাশে কখন প্রকাশ হয়
নাই। এই খবর পাইয়া আমরা ভাবিলাম,

বেদান্তবাগীশ হইয়াছেন, তিনি কোন
ধরনের নিজ পত্রের গুণদোষ বুঝিতে
পারেন নাই, কিন্তু আমরা যদি তাহা প্র-
কাশ করি, তাহাকে সালে অবজ্ঞা
করিবেন, তিনি বেঙ্গল পদস্থ, তাহাকে
লোকের নিকটে অপ্রতিভ করা আমা-
দিগের কর্তব্য নয়। এই ভাবিয়া আমরা
সেই প্রেরিত পত্র প্রকাশ করিলাম না।
কিন্তু বৈরনির্বাসিত অবস্থি বেদান্তবাগী-
শের জ্বরকে একান্ত কলুষিত ও হিতাতি-
যোহী হইয়া করিয়া ছুটিয়াছে, সুতরাং
তিনি আমাদিগের অন্তর্ভুক্তির ভাব বু-
ঝিতে না পারিয়া সর্বত্র বলিয়া বেড়াইতে
লাগিলেন, তিনি ঐ টা আখিনের প্রেরিত
পত্রে মূল বিষয়ের উত্তর দান করিয়াছেন,
অনিয়া তাহা প্রকাশ না করিয়া অন্যায় কর্তব্য
করিয়াছি। এই সমাদর্শী আমাদিগের প্রতি
পক্ষ প্রেরিত হইলে প্রথমে এই ভাবিয়া আ-
মরা উপেক্ষা করিলাম না, বেদান্তবাগীশ
জীবিতমাত্রের উপাচয় হইয়া আপনাদিগের
প্রেরিত পত্রে যে কথা লিখেন নাই, তাহা

হইয়াছেন বলিয়া সর্বত্র বলিয়া বেড়াই-
তে, ইহা কোন ক্রমেই সম্ভবিত নহে,
যদিও তাহারা আমাদিগকে সম্মান
করেন, তাহারা একে আর কহিতেছে।
কিন্তু বৈরনির্বাসিত অবস্থি কলুটোলা ব্রাহ্মস-
মাজের সর্বপ্রধান মুক্ত বাবু ঠাকুরদাস
আমাদিগের নিকটে উল্লিখিত বিষয়
সম্বন্ধে এই পত্র পাঠাইয়া দেন, তাহা
হিসাবগণ ও যৎপ-

রোমাঞ্চি হইয়াছে। বেদান্তবাগীশ
সভা সভাই আমাদিগের অকাব্য নিন্দা
করিয়া বেড়াইতেছেন। সে ৭ টা খবর
নিম্নে একত্রিত হইল।

সমস্কার পূর্বক বিবেচন।

গত ২৮ আখিনের সোমপ্রকাশ লিখিত
হইয়াছে যে আপনি জীবিতমাত্র বেদান্ত
বাগীশ মহাশয় যে প্রেরিত পত্র ৭ টা প্রেরণ
করিয়াছেন তাহা আমরা যে লিখিয়াছি, তাহা
৩০ই, তাহাও তাহাও কোথাও ৭ টা প্রকাশ
তে আপনি তাহা সোমপ্রকাশে প্রকাশ
নাই, কিন্তু বেদান্তবাগীশ মহাশয় কৃত্য কখন
প্রকাশ করিতেছেন সে বিদ্যাভূষণের নিকটে
আমরা যে ছুটি বিষয়ে এত ভেদ হইতেছে
তাহা আমরা প্রেরিত পত্রে উল্লিখিত আছে।
একটি হলে আমরা তাহার কথা বিবাস করি-
ব। জাত্যক বিষয় সত্ত্বে অসম্মানেই বা প্রেরণ
ন কি। যদি তাহা প্রেরিত করা আপনাদিগের
শ্রেয়স্কর হয়, তাহা সোমপ্রকাশে প্রকাশ করিব,
আমাদিগের সর্বপ্রধান কর্তব্য আপনাদিগের
আশ্রয়, যেন বেদান্তবাগীশ মহাশয় বলেন, আ-
মাদিগের ছুটি মাত্র বিষয়ে সতর্কতা প্রকাশ,
বাগদানের কাল বিবরণ, দ্বিতীয় কৃত্য ৩ পাত্রে
বাগদানের নিবেদন বিষয়ে ৫৭ পাত্রে এই ছুটি বিষ-
য়েরই বিশদীকরণ উল্লিখিত আছে।

তার ১ কার্তিক ১২৬৩ সন। কলুটোলা।

ঐচ্ছিকমাত্র সেন

আপনাদিগের নিকটে কলুটোলা, ৫ নং সোমপ্রকাশ
দ্বিতীয় সাত্ত্বিক বক্তৃতা এবং তৃতীয় প্রেরিত
পত্র পাঠাইতেছি অতঃপর পূর্বক প্রেরণ করিবেন

ঐচ্ছিকমাত্র সেন

কলুটোলা ব্রাহ্ম সমাজের সর্বপ্রধান
যে ছুটি বিষয়ে বেদান্তবাগীশের সহিত
আমাদিগের মত ভেদ হইয়াছে, ঠাকুরদা-
স বাবুর পত্রই তাহা কহিয়া দিতেছে।
“প্রথম, বাগদানের কাল বিবরণ, দ্বিতী-
য়, কৃত্য ৩ পাত্রে বাগদানের নিবেদন বিষয়ে,
এই ছুটি বিষয়ে আমাদিগের পত্র-
লেখক সতর্কতা প্রকাশ করিয়াছেন, পাঠকগণের অসুবিধা
তাহা পুনরাবৃত্তি হইতেছে। বেদান্ত-
বাগীশ নিজ পুস্তকে এই নিষেধ করিয়া
ছিলেন-যদি তিন বৎসর পর্যন্ত বাগদানের

ও আট বৎসর পর্যন্ত বাগদানের
বিবাহ কাল পাঠে বিলম্বিত
তিন বৎসরের পর সাত বৎসর
কমার বাগদানের কাল পাঠে বি-
লম্বিত আর কোন সমস্যা রহিল
যদি এই সিদ্ধান্ত অনুমোদন
২৪ই তারিখের সোমপ্রকাশে লিখি।
“বেদান্তবাগীশ আজ্ঞা করিয়া
কন্যা বিপদ্যতে, ইত্যাদি শাস্ত্র
করিয়া তিন বৎসরের পর সাত
পর্যন্ত বাগদানের কাল সিদ্ধান্ত
চেষ্টা পাইয়াছেন, কিন্তু অনুধাবন
দেখিলে এ চেষ্টা সুসঙ্গত হইতে
চূড়ার পরই বাগদান করিতে হইবে
সংস্কার করিতেছে না। তা-
অনিষ্টের নিবারণ চেষ্টা হইয়া
ইচ্ছা করিয়া সে অনিষ্টে পড়া
বিবাহের তুই এক মাস পূর্বে ব-
নের নিষেধ করিলে শাস্ত্র ও যুক্তি উ-
অবাহিত থাকে, অথচ একটা বিষয়
উক্ত শাস্ত্র, লোক, ও যুক্তিবি-
হীন হইতে যুক্তি লাভ হয়।

বেদান্তবাগীশের উচিত হি

তিনি আমাদিগের এই সিদ্ধান্তকে
বচন ও সৎ যুক্তি দ্বারা অপসিদ্ধান্ত
প্রতিপন্ন করিয়া দেন, নতুবা এই সিদ্ধান্ত
সংসিদ্ধ করিয়া
দ্বিতীয় পুস্তক ১১০-১১
ত্রিণী চেষ্টা আরও ব-
বর এই, তিনি এত
না, কেবল রে. যপন-
কন চেষ্টার প্রবৃত্তি হ-
ঠকগণ মধ্যস্থ হইয়া
কার সিদ্ধান্ত সম্বন্ধে
আজ্ঞা করিয়া দিয়াছেন
পত্র: পৌরহত্যের জ-
তত্ত্ববিদ্যার পণ্ডিত
আজ্ঞা করিয়া দিয়াছেন
আজ্ঞা করিয়া দিয়াছেন

“ प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्श्विभः सन्त्यनो आत्मवहता न हीयतां

वार्षिक शुल्क १ टैक
वार्षिक अतिरिक्त १० टैक

५६३ निषेध !

অগ্রিম মূল্য না পাউলে নব্বলে সোম
 প্রকাশ প্রেরণ করা যায় না। ইত্যাদি ব্যক্তি
 দ্বারা প্রকাশিত সপ্তাহ ১০ এবং বাৎসরিক
 ৫ টাকা নিৰূপিত আছে। ছয় মাসের মধ্যে
 অগ্রিম মূল্য গ্রহণ করা যায় না। নব্বলে
 যদি কোন ব্যক্তির সোমপ্রকাশ গ্রহণের ইচ্ছা
 হয়, তিনি অগ্রিম মূল্য সহিত পত্র লিখিলেই
 পাঠিতে পারিবেন।

ଆହକମଣେର ଅଞ୍ଚି ।

গ্রাহকগণকে জ্ঞান বাইতেছে, আবার
মঙ্গল অতীত যুগেতে অনেকের প্রবৃত্তি সো-
বপ্রকাশের-মূল্য বিশেষবিত্ত হইয়াছে, কাস্টিক
নাশ অতীত হইলেও অনেকের মূল্য শেষ
ইহঁদে, অতঃপর তাঁহারা দর। করিয়া মূল্য পা-
ঠাইয়া যেন। উক্ত মূল্য কলিকাতা সংস্কৃত
বিশ্ববিদ্যালয়ে আনানিগের নামে পাঠাইলেই আ-
মরা বিক্রি করে ও নীতি লাভব।

১৭ ক্রীষ্ণা চৌবিশি ১

सुखदा गुरु गुरु ।

স্বাধীনতা সঙ্গার কাণ্ড আরম্ভ হইবার
আর দক বিলাহ মাই ১৫ই মার্চের শুক বারিহা
দেখিলে স্বাধীনতা সঙ্গার আর উদ্‌ঘাটিত হইবে
কিন্তু স্বাধীনতা সঙ্গার কাণ্ডারওঁর দিন
১৫ মার্চ হিসেবের অধিকার
কোন হইতে পারে না উদ্‌ঘাটন

হালক মজার সজিওই আশাশুনের অনেক দিন সাফাও হয় নাও। অনেক দিন হটক, আমবা কোন দিনেরই প্রার্থনা ছাড়া, তাঁহাঙ্গি-গণের নিরঙ্কুস তরঙ্গ, হই। অনেক দিন, বজ্রাধ কনিদা তাঁহাঙ্গিগণের চিত্তের পশু-মানুষ প্রদর্শিত হইয়াছে। এখন যদি আমরা কোন বিষয়ে প্রার্থনা জানাই, তাঁহারা অবিকৃতচিত্তে আশাশুনের খুঁইতা সহ্য করিবেন সন্দেহ নাই। অন্যএস আমবা বিনীতভাবে নিম্ন লিখিত করেকটা বিষয় তাঁহাঙ্গিগণের গোচর করিতে হি। তাঁহারা স্বয়ং বিষয়ে উদ্যোগীয়া অবলম্বন না করেন।

এখন, প্রধানতঃ আদালতে সর বারেন্স
শিক্ষক প্রভৃতি বিচার পতিগণ ছিল সার্ভেবর
খাজনা হুজির মকদমার যে সীমান্সা করিয়া
ছেন, তাহা নীচ প্রধান একেশেব বিবাদানল
নির্ভাণের কল্পণ না তইয়া আরো তাহা প্র
আলিত করিয়া হুকিবে : তাহার শাস্তির উ
পায় কি ? সরকার্যেব সভা বাইরেকে সে উ
পায় করিবার অনেকের ক্ষমতা নাই . পূর্ব স্ব
বস্থাপক সভা ১০ আইন রূপ একটি বিকলাজ
সম্মান প্রদান করিয়া গিয়াছেন : সেই মোমে
অনেক অনর্থ ঘটতেছে . স্ববস্থাপক সভা
না করিলে সে সম্মানের দোষ আর কে
সংশোধন করিবে ? এই আইনের এক
বারার আচে, বাহারী সীমকাল কোন
কাজ হুজির বাসিত লোক করিয়াছেন, বাহার
সিদের হুজির ক-স্যাং
শস্যের হুজির-হুজিয়ারি কণ করেমলি কার্য
করিলে বিচার হুজির অফিসারী বাহার
কইকে করিবে . সর বারেন্স শিক্ষক এই
কাজ অফিসার করিয়া, প্রধান বাহারী

করিয়া দিওণ করা ভার, যেখানে
ওণ করিলেন। তাহাই তাহার মতে
বৃত্তির অন্তসারী। এইরূপে বাহার
পুষ্টি, তদন্তসারে বহি বিস্তার বৃত্তির
হয়, তাহা হইলে ত প্রকারে বৃত্তি
পক সত্যর একই নীতি। মিথি
দেওয়া উচিত। আশাধিকের
মূল, বৃত্ত্যধিকণ বে করেব
আছে, তাহা রহিত করা
ত এ দেশের লোকে
বিষ কর লব্ধে
লেবার পর
আবার বে
তুখিতে
গের নিকট
তাঁহারা
বলা বাহুল্য।
সত্যচার
ইনের
হয়, প্রকার
দিগের
তাঁহা
বিভীত,
হইতে
উপনিষৎ
দেশ্য,
লোকপ
অভিধি
বাধি
সক
বাও
কোন

SECRET

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

‘নেও নেও’ এরা দুই দিকে দৌঁড়ের
 যা কিছু বেরন সম্ভব। পিছু পিছু উঠে
 যাবি স্বপ্নের সীত।

[illegible]

বহুতী য 'হারত' " ইংরেজী-বিশ্বকোষ
 দেখুন, তাহারিগের যেন মন নিরুদ্ভুত
 হের উদয় হয় আর যদি তাহার। অসীম
 শ্রীকৃষ্ণের তাহারিগের সেই ভাবোচ্ছাস
 কোন কথা পারি তবে সেই পুরাতন কথা
 কখনো কেমন আগ্রহের সঞ্চিত গ্রন্থ
 মন মনকে ধারণ করে। ঐ রূপ আমার
 কেমন পুরাতন সংস্কৃত ভাষার উপর
 অনিশ্চয়ী প্রেহ ও যত্ন আছে তাই
 হারিগের কেন, মনোহারী তারতম্য
 মনোহর প্রতি শব্দগাতী করে।

আপনি বলিয়াছেন পৌত্তলিকদিগের মতন
নকল করিল। 'ক' মহিলার জ্যোতিষ্য বৃষ্টিতে পা
'নিস' ন। 'প্রাক' ন' যটী ন' হিল বটে বহু দিন
"প্রাক" "বক" থাকিবে ভর্তমান পিতৃপ্রাক
শকত ব্যক্তি হইবে, নতুবা ভিন্ন অভিধান
নষ্ট করিতে হয়। ভিন্ন অভিধান নষ্ট করা
ব্রাহ্মদিগের লক্ষ্য নহে তাঁহারা পশ্চিমাভিনা
নৈ নহেন, কথা যে সে স্থান হইতে পাইয়া
ব'চ'ব'দন ভাষা ব্যক্তি করিতে পারিলেনই হই-
ল, যে কোন প্রকার হইত উৎকর্ষের মতিনা
ব'চ'ব'দন করিতে পারিলেই তাঁহাদের মতন
আপা পূর্ণ হইল, 'ন'স'র'র ভাষ্য কাথো বিশ্ব-
বকে অবস্থিত পাবিলেনই তাঁহাদের জীবন চরিত্র
ভাষ্য হইল।

The page contains extremely faint, illegible text, likely bleed-through from the reverse side or a very poor quality scan. No specific words or phrases can be discerned.

[illegible]

১৮
 ১৯
 ২০
 ২১
 ২২
 ২৩
 ২৪
 ২৫
 ২৬
 ২৭
 ২৮
 ২৯
 ৩০
 ৩১
 ৩২
 ৩৩
 ৩৪
 ৩৫
 ৩৬
 ৩৭
 ৩৮
 ৩৯
 ৪০
 ৪১
 ৪২
 ৪৩
 ৪৪
 ৪৫
 ৪৬
 ৪৭
 ৪৮
 ৪৯
 ৫০
 ৫১
 ৫২
 ৫৩
 ৫৪
 ৫৫
 ৫৬
 ৫৭
 ৫৮
 ৫৯
 ৬০
 ৬১
 ৬২
 ৬৩
 ৬৪
 ৬৫
 ৬৬
 ৬৭
 ৬৮
 ৬৯
 ৭০
 ৭১
 ৭২
 ৭৩
 ৭৪
 ৭৫
 ৭৬
 ৭৭
 ৭৮
 ৭৯
 ৮০
 ৮১
 ৮২
 ৮৩
 ৮৪
 ৮৫
 ৮৬
 ৮৭
 ৮৮
 ৮৯
 ৯০
 ৯১
 ৯২
 ৯৩
 ৯৪
 ৯৫
 ৯৬
 ৯৭
 ৯৮
 ৯৯
 ১০০

(১) পত্রস্বাক্ষর। অধিকাংশ প্রতীকিত পত্রের
 (২) পত্র প্রাপ্তির তারিখ।

188

॥ बलिदान करी ॥
॥ देव भादव नारी ॥

शेख भादसुन बाई
पुत्र कर्मा नान

হুম, সেটা ব্যবহার
কিছুদিনের মধ্যে

ব্রাহ্মইতে পারে

निविश्राहिनाम,

गौड कन्या भवन
लीम टेबलियु

কেন্দ্র :
শাখা : কলকাতা

দাসুবাগীশকে
কোণে পরিচালনা

করুন, এবং হু
কাজ আরম্ভ করি

সকালের অন্ত
বিলে আমরা

अथ कश्चिन्नः

है।

一、

विष्णुः शिवः ब्रह्मा

ଅତି ନିମ୍ନ

স্বস্তি দিন দিন

যেই এমনি বাধা
হে যে একের

চিহ্ন দ্বারা ১ সে

इति च हरेण, के
नौकिल वासुवि

बाल विभाग
असम-प्रदेश

44-1554-101-10

— १११ —

স্বদেশের স্বার্থে ও বিদ্বেষ, এ সম্বন্ধে উ-
ক্ত কবিগণ নিজ পুস্তকে বিনা সম্বন্ধে আট

ডায়েরী
 কুংসিত কল নাথ প্রথা

সেখানেই কোক উপস্থিত নাই, সেখানেই এর-
সেবার দ্বারা কীট নিহিত হয়। কি দৃষ্টি

১৯৩৩ খ্রিঃ ১৯৩৩ খ্রিঃ
 ১৯৩৩ খ্রিঃ ১৯৩৩ খ্রিঃ

কল্যাণ চন্দ্রের চৌকির
কাল্পনিক চিত্র

১৭ আশীশ। যত হুন

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

১৯৬৩ খ্রিঃ ২০ জানুয়ারী তারিখের সভায় বক্তব্য রাখেন।

করবে এম দায় ভাগী হতে হইবে। এতল বে-

কিন্তু এটা কথা স্মরণ রাখা আবশ্যিক
যা যে বিনামূলীতে উঠাইয়া দেওয়া একেবারে
সম্ভব নয়। তাই এই কাজীকে কিছু

इति दत्ता विद्या उपाधि. विद्या
शिक्षण. ग

৪ এই লেখাটি অনাদিগণের জ্ঞান
 হৃদয়স্থে নিমিত্ত বহুতঃ। বেনারস

কেন্দ্রীয় বাজি বসিয়া লব পড়ি।
— — — — — কোন ক্রমেই জাহান

मि. कलम १० (न मीमा-
न) मीमांसा उक्तं नहिः म

অবস্থা। প্রাথমিক জ্যোতিষ কুর্ষে ক্রিয়মান
 বাহির। মোকদ্দম। প্রকৃতি প্রদেয় দারীক
 উপস্থিত হইয়াছে। বিবাহাদি অ. দারিগে
 হুদেয়। বিবাহ দারিগে। অ. দারিগে
 কালেক্ত পরাভাব। অ. দারিগে। তদ্রূপে
 দারিগে। দারিগে। দারিগে। অ. দারিগে
 দারিগে। দারিগে। দারিগে। অ. দারিগে
 দারিগে। দারিগে। দারিগে। অ. দারিগে

附錄 1

[illegible]

কিঞ্চিৎ কষ্টেই কীর্ত্তবীর্য সত্যের অটল
 ক্রমে গবর্ণমেণ্টে বারানসী জেল-অফিসার
 হইয়া সকলের পৌকিত্য লাভ করিলেন। তাহার
 ১৮৩৬ চিকিৎসক পদে অধিষ্ঠিত করিবার
 হইলেন।

হিন্দীপেয়েট করেন: ব্যক্তিগোষ্ঠাবে অতি
কড় ও প্রতি হইয়া গিয়াছে। এত রহি মণ
অনেক দাস কুশিয়া গিয়াছিল। অনেক
তি হইয়াছে। এবারে দশার অনুগ্রহ কোথঃ
করবে।

আপনারা যখন যে-কোনও কথের তথাকথিত
প্রমাণ কিছুকিছু দেখে নম্রতা বাকী আছে তাহা
স্বাভাবিক ভাবে আস্তাই হইয়াছে।

ইংলিস্‌বাসী কয়েক মেডিক্যাল কলেজের
 শিক্ষার্থীরা কলেজের বৈদ্যকল ছাত্রদের ইংলিস্‌তে
 ইংলিস্‌কে, উর্দুকে, অন্যর: অংশক।
 চিকিৎসা বিজ্ঞান পাইবেন। উৎসাহ
 ১৭ এ উৎসাহ উৎসাহ অংশকর কর: ইং-

পারিতোষকে দুই হইল, রাণ সাহেবকে
দুই করিয়া দিবে। পরিতোষকে তাঁহাকে
৫০ টাকা পারিতোষিক দিবে। কহিয়াছি-
লেন, 'কর পারিতোষকে সেই মুন্সেফ এক জায়-
গির দেওয়া দ্বিত্ব হইয়াছে, এটা সকলের প-
ক্ষেই সুবিধার পরামর্শ।

କେ.ଟି.ସି.ଏ. ନିକେନ ନାମକ ସାମଗ୍ରୀର ମାର୍ଜାର୍ଦ୍ଧ
 ବଜାରରେ ୧୦୦ ଟଙ୍କା ମାତ୍ରରେ ବିକ୍ରୟ ।

পেট্রি বক্সে ফলন গণন এবং কোষ্ঠ ভর লোক
নিবন্ধনকারে এবং ত্যাগ করিয়াছে।

কিন্তু সবার আরো কহেন নাহিলাভো দুর্ভি-
 লেহাভ্যেত সন্ন বার্টল প্রিয় সাতেন সকল
 প্রিয়তম প্রিয়তম প্রিয়তম প্রিয়তম প্রিয়তম

ଉତ୍କଳ ବିଜୟ ଲଘୁକବି ଡକ୍ଟର ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ

বড়বড়ের লোক যা পড় বইবড়। আরও
 বড় বড়ের লোক যা পড় বইবড়। আরও
 বড়বড়ের লোক যা পড় বইবড়।

अकाले विरि विविध भूतानां अहिदन्त
विजय हो गये ।

एम.बी.ए. १०८८२६५ टोका
 बाबासाहेब १०८८३०० जी

গেটি স্টে কলেজ, ক্যামব্রিজ, ইংল্যান্ড। নতুন
কলারাজ্যের মহাদান ও রাজ্যের উন্নতি ও
ইতিহাস।

উক্ত পত্র আবেদন প্রদর্শন করণেরই বদলে
শে বিদ্যালয়িকার কক্ষ প্রদর্শন বনের অপেক্ষা
এবার ১৭৫০২১ টাকা অধিক দিয়াছেন। সে
সংবেষ বে টাকার অন্য নিমিত্তাভিলেপন এন
গবুলার গ্রাহ্য হয় নাই। কিন্তু গবুলার সাহেব
কহিয়াছেন যে উল্লিখিত টাকা ব্যতিগত
বাকি আর অধিক টাকা আবশ্যিক হয় তাহাও
দেওয়া হইবেক। শিকার সংক্রান্ত ব্যয় সংকে
প করা কোন ক্রমেই চিন্তের নয়।

हे कात्तिक मकरवाह ।

কিনিক কনে নগবান্ন ভেনরল উদয়
 ক্রিম প্রবেশে বাটবেদ বলিয়া। ইসন পদার্থে
 আগ্রাস প্রকৃত থাকিতে "সুপ্ত" "কঠিন"
 হয় ।

ઉત્કળ બલ આપણે મારવા શોધતા નથી
 વિશેષ બદલ - નીચેના કોઈક બાબતો
 મને ખબર નથી - આ બધું આપણે જાણવું
 જોઈએ - ઉત્કળ બલ આપણે જાણવું

উল্লিখ পত্রের প্রেক্ষিতে আবেদনকারী সচিব, ক
ক সভার সভাপতি হইতে ইচ্ছা করিলে। তাহা হইলে
৮ নং দফায় সভাকার্য পরিচালনা করা যাইবে।

নামের বলা হইবে যে, যাহার নামের দ্বারা কোন
কাজও গণ্য না হইবে—এই বাক্যটিকেই "নামের
কিবেম"। অর্থাৎ নামের দ্বারা কোন কাজও

[illegible]

পত্নী

শ্রীমতী সত্যজিৎ দেবী

1. The first step in the process is to identify the problem or issue that needs to be addressed. This involves gathering information and understanding the context of the problem.

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

[illegible][illegible][illegible]

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

[illegible]

100-443887-100

100-443887-100



THE

[illegible]

এক ছুট অত্যাচার করিতে পারে। যাহা
কৃত্রিম কৰ্ম্ম অধিক কি বলিব, আশাশ্রয়
সপার ও হেলে পর পৰীত কাড়িয়া লইয়া
ওড়াতে আশ্রয় আশ্রয় ও চাল বাস করিতে
পাইতেছি না। যদি এক দিনের নিষিদ্ধ কাচার
ফেলে পর তাড়া করিব। আশ্রয় চাল করিতে
বাহি তাড়াও তাড়াও কাড়িয়া লইয়া যাব। এই
ফেলুন আশ্রয় এই সমস্ত বিষয়ের নিষিদ্ধ পৰ্য
যেক্টে করখান্ড কনিয়ামিল'ম, তাহ'র উত্তর
আশ্রয়। " যাহা করখান্ডের চুৰক ও গব
পেসেটের উত্তর পাঠ করিয়া দেখিলার যে নী
তি জিলায় কবিসর সাভেবের উপর তাহ'র
কর তাহ'র আশ্রয় ও বিচারের তার মত।

হেঁদে,
 পেরেইয়া গিয়াছি তাঁরা, পরিত
 হিব হইয়াছে। শুনা খাইতেছে
 বিজ্ঞান পণ্ডিতেরা হইলে,
 জ্ঞান কুরিগাহেন।

২২—মেক্সিকান সম্রাটের প্রদত্ত
 নো. কনকিডাটোর টোরে পটিনার কর
 পলায়ন কলিফোর্নিয়া। টেমটিকি হ
 তার প. গু. মেল. মেক্সিকোর
 প্রভে।

১. কলকাতা পট্টাশাক পার হইয়া
 ২. কলকাতা হইয়াছেন মেরিলা
 ৩. কলকাতা হইয়া গিয়াছে, ক
 ৪. কলকাতা হইয়া, ভরলিলা
 ৫. কলকাতা হইয়া, ভরলিলা
 ৬. কলকাতা হইয়া, ভরলিলা
 ৭. কলকাতা হইয়া, ভরলিলা
 ৮. কলকাতা হইয়া, ভরলিলা
 ৯. কলকাতা হইয়া, ভরলিলা
 ১০. কলকাতা হইয়া, ভরলিলা

गद्यरत्नेके विहारी

बाबाजीदेवीजी महाराज के महाराज

‘‘দেশান্তবাসী’’ নিষেগ ৬৩৩

८ भाग-१६--मिह लि. बंध वाणिज्यिक

সিংহে আধারণ বিদ্যাশিক্ষা করিয়া যে
বন, বায়ু কালীচরণ ঘোষ ও
বাবু।

[illegible]

সহকারী সচিব (সি.সি.সি.)

(The page contains extremely faint, illegible text, likely bleed-through from the reverse side.)

[illegible][illegible]

১। বিবেচনা করিয়া
২। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
৩। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
৪। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
৫। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
৬। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
৭। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
৮। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
৯। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ
১০। প্রকৃত মূল্য নির্ধারণ

[illegible][illegible]

:- 724 :-

SECRET

•

शुद्धिप्राप्तिके लिये

1970-1971

তদন্তে অসামান্যের কারণ একটা বস্তু-
 হইল। ব্যক্তিগত। পক্ষি যাহা নিজ
 পরিভাগ করে, একইকালে তাহাদের
 কোন উপায় বিধান করা হয় নাই।
 তাঁহা প্রাণীজগতের মধ্যে তাহার স
 ন ব্যক্তিকার দোষে নিপু হইয়াছিল।
 তাহাদের কি তাহার কারণ পোষণ তাহা
 জানেন? যে স্থানে ইহাদের প্রবর্তনা
 হয়, ব্যক্তিগত। হইল, সে স্থানে

এই প্রসঙ্গে বিধবাবিধবের বিবাহের
আবশ্যিকতার কিছু বক্তব্য আছে। তাহা-
রা কাহারো পত্নী নয়, এই বিবেচনা করি-
য়া ব্যবস্থাপকপণ তাহার। ব্যক্তিগত বিবাহ-
ইতে সঞ্চার ব্যবস্থা করণ নাই। কিন্তু
ভাবাবিধবের ব্যক্তিগত মূলকও বক্তব্য অ-
ন্য আশ্রিত হইত, তাহা : আশ্রিত এক-
বার শুধুকে দেখিয়াছি, এক বিধবায় বা-
তিচার মূলক এক ব্যক্তির প্রাপ্যতা ও
হয়, ব্যক্তিগত জীবনের বাস হইয়াছে। বা-
তিচারিণী, বিধবায় বাসি হইত, বিধবায় বাস
এবং প্রাপ্যতা : বিধবায় বাসি হইত, তাহা
হয়, তাহা প্রাপ্যতা হইত, তাহা : তাহা
নুষ্ঠান হইত, বিধবায় বাসি হইত, তাহা
হইত, তাহা : তাহা

[illegible]

पत्रिका

१ : हे नाशिक लाहौर

[illegible]

১৭-১৮ মে ১৯৭১ খ্রিঃ

A black and white photograph showing a large, dense crowd of people gathered outdoors. The individuals are mostly seen from the back or side, looking towards the right side of the frame. The crowd is composed of people of various ages and appears to be of diverse ethnicities. In the background, there are trees and a building, suggesting an urban or park setting. The overall atmosphere seems to be one of a significant public gathering or protest.

১৮৮৩ খ্রিষ্টাব্দে ইংল্যান্ড - এটা পত্রিকা
 মহিষ গাভী পালের মাঝে, ৭৭৭ হইয়াছে
 কী পত্র হইতে ইটা কের দাড়া ও গোপালপুর
 মন্দির করিতে মা পানি। বিবর্তন হই
 পোরে বিবর্তন। এমত জনকতি তিনি
 ইতি হইতে অত্যন্ত মন করিবেন মা। অতি
 ১৮৮৩ খ্রিষ্টাব্দে ইংল্যান্ড -

এই পত্র কলিকাতার পূর্বে যাতন। রেলওয়েস মো-
কাসপুর টোমানেস ডব্লিগ চাকরিপাতারি ঈদারতান-খ
মিহািখুযনের কালিডা জটি মোদবীর প্রকালিত হয়

64

“ भवर्षतां प्रकृतिविज्ञानं चार्थिभ्यः संरक्षती मुनिमहती न हंयतां । ”

बुद्धिमान बुद्धिमान
बुद्धिमान बुद्धिमान

કુલ: સચિદ પદ્મ ભાષિનજી

। हानिद अहं जलसु कौय

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

(continued)

শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা

[illegible]

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

“ प्रदर्शनात् प्रकृतिहिताय पार्थिवः खरं सती युतिनवती न होयता । ”

वर्गिक वृत्त
वर्गिक वृत्त

ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ
ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ

টার সন্মত অত্রা চৌনহালে এক বৃহত্তী
সভা হইয়া গিয়াছে । সমস্ত উদ্দেশ্য লা
কেসারের সাহায্য-দান । মিলেটারি,
মিডিল ডিভিশন, বহির্ প্রকৃতি সর্ববিধ
ইউরোপীয় ও দেশীয় হিন্দু, মুসলমান
গরনী প্রকৃতি মানা জাতীয় লোক সভা
জলে ই-অধিক ছিলেন । গবর্নর জেনরল ও

সেন্টমেন্ট গবর্নরও আসন
সভাকে অলঙ্কৃত করিয়াছি
প্রধান লোক গমন করাতেই
পাড়া হইয়াছিল, একপ মতে,
বিধ রক্ষিত বসন ও কৃত্রিম
জড়িত হইয়াছিল ।

ধনে সভার উদ্দেশ্য ব্যক্ত
পহার পর ক্রমে ক্রমে লাভ
উভিক্ত আর্টি ও ডক সাহেব
দ্বি বক্তৃতা করেন । সভায়

বারি পের করা ও বদান্যতাপ্রতির
সকল কুরাই সেই সেই বক্তৃতার মুখ্য
উদ্দেশ্য । সে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইয়াছে ।
সকলই মনে তৎকালে লাভেরারের
বিপাপ ব্যক্তিরের হৃদয়ে হৃদয় বোধ
ও তৎপরিণামের ইচ্ছা জন্মে । সক-
লেই বক্তৃতা শ্রবণ করিয়া উজ্জীবিত ও
উৎসাহিত হন । লাভ এলগিন বক্তৃতা
কালে ই অনুরোধ করেন কেউকর পশ্চি
মাকলে ছুড়িক সময়ে যে ধন সঞ্চিত হই-
য়াছিল, তাহার অবশিষ্ট যে টাকা আছে,
তাহা লক্ষসারের পাঠাইয়া দেও । হয় ।

অর্থী তাঁহার বহি ধারণ করিয়া ধন
অন্তর্য্য এতাব এবং সেই ধন র
করিত করিয়া ব্যক্তিকে মনোনীত করিয়া
রের পর সভা তত কর হ-
ইল ।

ঠকগণের গোচর করিয়াছি । সর চারলস
উডকে পদচ্যুত করা “ক্রিয়াকারি মনে-
র ” একান্ত পণ হইয়াছে । কলতঃ এই মল
তাঁহাকে “ পেট্রাকেও , করিয়া তুলিয়া-
ছেন । উহাদিগের বাক্যে বিশ্বাস করিয়া
ইংলণ্ডের অনেক প্রধান লোকেরও এই
কপ সংস্কার হইয়াছে যে ভারতবর্ষে কি
ইউরোপীয় কি এ দেশীয় সকল লোকে
রই সর চারলস উডের কার্যের প্রতি আ-
তান্তিক বিরোধ জন্মিয়াছে । একপ সংস্কার
অধিবাস একটা বিশিষ্ট কারণও আছে ।
চারলস উড বহীসুরের রাজকুমারদিগকে
৫০ লক্ষ টাকা দিলে পর এ দেশীয়েরা
ক্রিয়াকারি মলপ্রভাবিত হইয়া চৌনহা-
লের সভার একমত্রে এই কার্যের যে
প্রতিবাদ করেন, চতুর শিরে মনি ক্রিয়াকারি
মল একপে তাহাই এ দেশীয়দিগের
বিরোধ লক্ষণ বলিয়া এমাণ দিয়া গা-
কেন ।

যাহা হউক, ইংলণ্ডের প্রধান ব্যক্তি
দিগের উল্লিখিত অমূলক সংস্কার থাক
তাল হইতেছে না । তাহাতে ভারতবর্ষের
সর্বশেষ অনিষ্ট ঘটনার সম্ভাবনা আছে ।
যাহাতে এই সংস্কারটি দূরীভূত হয়, একপ
চেষ্টা করা অতিশয় আবশ্যক । ভারতব-
র্ষের সমুদায় প্রেসিডেন্সির লোকে এই
সময়ে একবাক্য হইয়া সর চারলস উডকে
অবিলম্বে এক খানি অভিনন্দনপত্র প্রদা-
ন করুন । তাহা হইলেই এ দেশের লো-
কেরা উক্ত সেক্রেটারির প্রতি অনুরক্ত
কি বিরুদ্ধ ইংলণ্ডীয়েরা অনায়াসে বুঝি-
তে পারিবেন ।

সর চারলস উড এ দেশীয়দিগের ক-
তকটা প্রদর্শন ও অভিনন্দন পত্র লাভে
র যোগ্য পাত্র সন্দেহ নাই । ভারতবর্ষী-
য়েরা যে অনায়াসে ভারতীয় ব্যবস্থাপক স-
ভার প্রস্তাবের হইয়াছেন, সে কাহার
অনুরোধে ? ইহাও সে অনায়াসে প্রকাশ

লেন, তাহার অনুকূল কারণ কে : কোন
ব্যক্তি যত্নবান হইয়া এতদেশীয়দিগকে
বহু অনর্থমূল কষ্টাতি বিল হইতে রক্ষা
করিতেছেন : এদেশীয় পদচ্যুত রাজগণ ও
প্রধান ব্যক্তিদ্বিগের আর্থিক পূরণ করিয়া
মনোকেত দূর করা প্রধান উদ্দেশ্য কাহার :
নীলকব বিবাদ বালে কোন ব্যক্তি প্র-
দ্বিগের বহুতাকরিয়াছিলেন ? ভারতবর্ষের
সর্বশেষে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত হয়, এ আশ্চ-
র্য্যক ইচ্ছাটি কার : পতিত ভূমি বিক্রয় স-
হায়ে এ দেশীয়দিগের সহজে স্বত্বলোপ ও
অনিষ্ট হইবার যে সম্ভাবনা হইয়াছিল,
কে বা তদ্বিবাণ করিয়াছেন : এক সর চা-
রলস উডের নাম নির্দেশ করিলেই এই
প্রশ্নগুলির সমুদায় হইবে সন্দেহ নাই ।
যে ব্যক্তি এ দেশের এমন দ্বৈতবী, তিনি
কি অভিনন্দন পত্র লাভের যোগ্য পাত্র
নহেন -

সর চারলস উড ও কট্টী টি বিল

যে ব্যক্তি মুরপানাদিকপ অন্যত্র
বাসনে আসক্ত হয়, গুরুজনের গজমাদি
কারণ বলতঃ তাহার তৎপরিচয় চেষ্টা
জড়িলে সে যেমন এককালে হস্তাগ্রে সম-
র্থ না হইয়া একবার এ মাদক দ্রব্য সেবন
একবার ও মাদক দ্রব্য সেবন করিয়া অ-
হিরচিত্ততা প্রদর্শন করে, কষ্টাতি বিল
নইয়া ভারতীয় কতকগুলি ইউরোপী-
য়ের সেটকপ দ্বা। ঘটনাতে । এই বিল
তাঁহাদিগের বাসন বন্ধন হইয়াছে । ই-
হারা কোনকপেই উহার মোহনী শক্তি
বিস্তৃত হইতে পারিতেছেন না । সর চা-
রলস উড বীভন সাহেবের
কষ্টাতি বিল অগ্রাহ্য করিলেন, মিচি না-
হেব তাহাকে তৎকালে বেগুনী সংজ্ঞাত
করিয়া ব্যবস্থাপক সভার উপস্থিত করি-
লেন, কিন্তু তাহাও সর চারলস উডের
শাসিত অঙ্গের মধ্যে পতিত হইয়াছে ।
তিনি কখনো মুক্তি পাননি ।

সর চারলস উডের একখানি অভিন-
ন্দন

সর চারলস উডের

উক্ত সমিতির কার্যে যেহেতু
বহুলাংশে অসহযোগিতার পোহা
হল। ইহাচার। অতীত। হওয়া
দিল হইবে। অতীত। দিল। অতীত।
সাধারণ কার্যের উন্নতি হইবে।

ଅଫିସ୍ ୨୭୫ ଆର୍ଟିକ୍ଲ ୧୩ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ।

[illegible]

কবিতা বিদ্যোতীর্ণ। অতিশয়
হিংস্র। করিবার পোষণ। ক-
নিকটে একটি বৃক্ষ হুঙ্কারে
বাঁধ নাই।

১০. পরানী সজ্জিত হইলে
 পুনেমেলা পৰিচালনা করা. জ. ত.
 মন্ত্রী, চইয়াছেন। লক্ষ্য হই
 করিতেছেন। এমিলিয়ার সভা
 তহবাত সাধারণ লোকসকল
 রাজ্যে রাজ্যের নিয়ম কাল ক.

স্ববর্ণমোহন বি

आवनाए १२ मी०

आश्विन शुक्ल, विद्वत् ।

[illegible][illegible]

THE

২৩এ বাস্তবিক শনিবার ।
 প্রকল্পের একটি বিশালত্ব হইয়াছে । ইহা
 তে ইষ্টপ্রাণীও ও কিরিত্ত বালককে প্রাণ
 । পর্বতের তরিত্ত ১,২০০ টাক।

আজিওর কটিকেল-বলেম, অশ্রুধারিতের ব
ধে-সহ-স্বাভাৱি-ধৰ্ম-গান-হি-এক-স্বাভাৱি-কল্পিত
কল্পিত-অন-অভিযন্তিক-মাজিটে-টেক-খেল-
ত-মিলে-ম-বহু-মোখী-মোপট-মোটি-গহ-ম-এ
সমস্ত-কাল-বাসেন-না।

নিম্নলিখ বসেন প্রধানতম বিচারালয়ের
আপিল আদালতের (পূর্বতন সদরের) উ-
কীতলালাকেসারেরের সহায়তার জন্য দুই
মহর টাকা অধিক চাহ, করিয়াছেন।

নিম্ন লিখিত স্থানো বনৰ্ণবেটের কাগজ
বিক্রীত হইতেছে।

१. इकाय निका	१२—२०१
२. इकाय निका	२०—२०५
३. इकाय निका	२०६—२०८
४. इकाय निका	२१२—२२१

वायव्यः प्राक् गच्छति ।

ଡିଜିଟାଲ ମାଟ୍ରିକ୍ ଏକକର ଉପରେ ଡିଜିଟାଲ ମିଥମାଟିକ୍ସ
 ଉପରେ ଆଧାର କରି ଡିଜିଟାଲ ।

সিলেট কবিতা বিষয় জেনারেল ডিভিশনক
পের কণ্ঠ উঠিয়া। কাক্য বহা বোনা পাত্রে সিন-
তন কবিতার বিশেষ যে বিশেষ-কর্তব্যে বহ-
বোনা সিলেটনাট্য বহা কাক্য। জলপ কব-
নেন।

কিন্তু অল্প-একদিন এ-এ-সিদ্ধান্তের ক-
 ত্রিণের দ্বিগুণ মিলেই কমিটি যে-দ্বিগুণ করিয়া
 হেঁচ-কা-আ-আ-আ-আ-আ-আ-আ-আ-
 করিলেন।

हृदयेन कथयन्ति किं किं कथयन्ति किं
कथयन्ति किं कथयन्ति किं कथयन्ति किं
कथयन्ति किं कथयन्ति किं कथयन्ति किं

ଶୁଦ୍ଧ ମନେ ଆମର ବିଚାରାଳୟରୁ ନିମ୍ନ ମାମଲା
 କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାପାଇଁ — ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍. ଶାସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ
 ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍. ମୋକଦ୍ଦମା ଆମରୁ ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍.
 ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍. ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍. ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍.
 ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍. ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍. ଡି.ଏମ୍.ଏସ୍.ଏସ୍.

[illegible]

এই বোম্বাই-ভারতের প্রথম বৈদেশিক
সেতল লাইনে ভারতের এক-মাত্র বৈদেশিক
সেতল লাইনের প্রথম বৈদেশিক

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

[illegible]

2010年10月25日
 星期一
 晴
 10月25日
 星期一
 晴
 10月25日
 星期一
 晴

●●●●●

एवम् हिमालयस्य अन्तर्गतं हिमालय काठमा
ह्यन्तर्गतं बर्मा देशः आसीत् इति चेत्, त-
दा हिमालयस्य अन्तर्गतं हिमालय इति चेत् ।

● 中国书画函授大学肇庆分校

২.০০ টাকা প্রদান করিতাহেন :

ହରିନିବାନ ବଳିକ, ଫେରାହାରି ବାଲିକା-
ଏକ ବାଳିକାହାରି ବାଳିକା, ବାଳିକା, ବାଳିକା
ବାଳିକା ବାଳିକା ବାଳିକା ବାଳିକା, ବାଳିକା
ବାଳିକା ବାଳିକା ବାଳିକା ବାଳିକା, ବାଳିକା
ବାଳିକା ବାଳିକା ବାଳିକା ବାଳିକା, ବାଳିକା

উক্ত পত্র প্রাপ্তির পরই এইচ. এ. এ. পত্র
 প্রাপ্ত হইয়াছে। এই পত্র প্রাপ্তির পরই
 হিন্দু, যে পত্র প্রাপ্ত হইয়াছে। এই পত্র
 প্রাপ্ত হইয়াছে। এই পত্র প্রাপ্ত হইয়াছে।

১০০০ পত্র প্রাপ্ত করিয়াছেন। আনুভবিক
 উপদেশেই বিজ্ঞান বিষয়ে রাজপুত্র পণ্ডিত কর্তৃক
 প্রাপ্তি। আনুভবিক ১০০০ টাকা হস্তি দ্বারা
 প্রাপ্ত। ১০০০ টাকা হস্তি দ্বারা

संस्कृत-विभाग के छात्रों के लिए

~~CONFIDENTIAL~~

অব্যয়মর্থ এই প্রথম উপস্থিত করা
হইয়াছে, সে এই—পঞ্চ জুলাই তাইসে হি-
সুপেরিওরেটর আদামহ সহকারী ন্যাভা লি-
ব্রাহিনেন, রিভমডেল নামে এক জন
সহকারী চাকর কন্সটারী আপদার অধী-
নহ এক সুহরিকে এক দিবস আত্মনিক প্র-
হার করে এবং এই দিবস তাহাকে এক গু-
সানের মধ্যে বদ্ধ করিয়া রাখে । পঞ্চ ২
সুপেরিওরেটর রিভমডেলের সম্মতি ক্রমে
পর দিবস তাহাকে বাবতীর মজুরের সম-
ক্ষেপে আনিয়ন করা হইল এবং এক গাছ
মোটা বেত আনিয়া তাহাকে প্রহার করি-
তে আরম্ভ করা হইল । কিন্তু কখন পরে
বেত আনিয়া গেল । কখনো একটা
কোড়া লাগিয়া হইল । তাহার বিষম দুঃসক
এহনে সুহরি অটোমন্য হই । পড়িল ।
রিভমডেল নামে করিল, সুহরির প্রাণ বি-
প্রোগ হইয়াছে । তাহার সুকসেহ সমাহিত
করিবার অনুমতি হইল । কিন্তু কখনো
পরে দেখা গেল, তাহার প্রাণ বিপ্রোগ হয়
নাই । ক্রমে টেচমন্য হইয়া সুহরি কিন্তু
সুহ হইলে তাহাকে আসাম কোম্পানির
জমীদারী হইতে বঞ্চিত করিয়া দেওয়া
হইল সুহরিকে তাহার নিজ বাসস্থানে
আনিয়া দেওয়া হইল । সুহরির জমী ছিল,
কিন্তু তাহা তাহার জমীদারী হইতে বঞ্চিত

একজন লোকের নাম 'কালীদাস'। তিনি গায়ে
 তে 'নবম' বসে 'কালী' ছিলেন। 'কালী' কালী
 হাতে 'বালী' কালী কালী কালী কালী কালী
 ন 'কালী' কালী কালী কালী কালী কালী
 কালী কালী কালী কালী কালী কালী
 কালী কালী কালী কালী কালী কালী

জিল্লার পোলাইয়া কাপড়ের দোকান দাঁড়
 যলেন, যেখানে কিছুকিছু কাপড়ের দোকান
 দোকান দোকানকে অতিশয় বিরক্ত করিতেছে।
 এক্ষণে দেশদ্বারের দাঁড়া বিস্তারিত নৈয়া নৈয়া
 উদ্বাণী পদার্থ আনিয়াছেন। একটা জনক
 তি কর্তৃক নৈয়া গুলি আনিয়া আনিতেছে।
 খোদ মামের দাঁড়ের দাঁড়া দাঁড়া...
 নৈয়া দাঁড় দাঁড় দাঁড় দাঁড় দাঁড়
 দাঁড় দাঁড় দাঁড় দাঁড় দাঁড় দাঁড়

উক্ত সংবাদগুলি শুধু তাই নয়, যখনই
নিউ র বিচারে, এই ইতিহাসে, এবং এই
সংস্করণে, এবং এই ইতিহাসে, এবং এই
বার সত্যের কথা জানিয়ে দিচ্ছি। এই
রকতি যে, যেই ইতিহাসে, এবং এই
পাঠ্যিক ইতিহাসে, এবং এই
বিষয়ে, এবং এই
কণ কণিক। এবং এই
এই ইতিহাসে, এবং এই
এই ইতিহাসে, এবং এই
এই ইতিহাসে, এবং এই
এই ইতিহাসে, এবং এই
এই ইতিহাসে, এবং এই
এই ইতিহাসে, এবং এই

[illegible]

ভেদে খারিটের জন্মেই এমনি কি বসিয়েছেন :
 ১. খারিটের জন্মেই এমনি কি বসিয়েছেন :
 ২. খারিটের জন্মেই এমনি কি বসিয়েছেন :
 ৩. খারিটের জন্মেই এমনি কি বসিয়েছেন :

বাহু দুসময় বড়ো, নবুলাহ পানিগারই
 কখনে কখনে বসি। বর্ম অবলম্বন করিলেন।
 আশয়ে বাহু গির্জাচত্বর দড়, গায়ে বরচক্ষু দড়
 হুগাখিলাহে কুশিমান বটোয়াছিলেন, সম্রাতি
 দ্বিগু গোবিন্দচন্দ্র দড় উল্ল বর্ম অবলম্বন ক-
 রিয়াছেন। আসবাবা কুশিমাছি, কর্তাটবল ২
 দড়ের বিখ্যাত ছিল। উক্ত বাহুগিরের এটি দেশ
 চক ঘোষ।

[illegible]

१. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 २. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 ३. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 ४. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 ५. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 ६. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 ७. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 ८. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 ९. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।
 १०. विद्यया ऽपि विमुक्तयेत ।

1. The first step in the process is to identify the problem. This involves gathering information about the situation and the people involved.

2. The second step is to analyze the problem. This involves breaking the problem down into smaller parts and identifying the causes.

3. The third step is to develop a plan. This involves deciding on the best way to solve the problem and setting goals.

4. The fourth step is to implement the plan. This involves putting the plan into action and monitoring progress.

5. The fifth step is to evaluate the results. This involves assessing the effectiveness of the solution and making adjustments if necessary.

[illegible]

ইতেদে	ডি ৬
লোকের বি	১০০০ হাজার
সেই বিরামে	৬ কলিঙ্গ

উন্নয়ন কর্মসূচি
মাসিক
রিপোর্ট বা
উন্নয়ন কর্মসূচি
কর্মসূচি বা

নির্যোজিত	দাম্পত্যনির্ভর
পোট প্রোফিট	হিয়ারা ক্যামক
সংকেপ কটি	গতিগের কবি

১০০০
 ১০০০
 ১০০০
 ১০০০

[illegible]

मिस्त्रि गंगाधर गंगुल

১৯৩৬
 ১৯৩৭
 ১৯৩৮
 ১৯৩৯

100-443887-100



সোমপ্রকাশ

সর্বস্বামী সত্যসিদ্ধিলাভ প্রার্থিতঃ স্বরক্ষণী কুশিলাহনী ন বীজাং ।

৫ ভাগ :- ২০ { সন ১২৬৩ । ৩ অগ্রহায়ণ । ইং ১৮৮২ । ১৭ নবেম্বর }

বাসিক হুদা
সারিক আফিম :-

বিজ্ঞাপন ।

গ্রাহকগণের প্রতি ।

গ্রাহকগণকে জ্ঞান বাইতেছে, অধিক
অতীত কালেতে অনেকের প্রদত্ত
প্রবাসের মূল্য বিশেষিত হইয়াছে, কাঙ্ক্ষিত
সমস্ত হইলেও অনেকের মূল্য বেশ
উচ্চ হইয়াছে। ইহা করিয়া মূল্য পা-
ওয়া কেম । উচ্চ মূল্য কলিকাতা সংস্কৃত
লোক আশা করেন না। পাঠকগণের
মিষ্টিয়ে ও শীঘ্র পাইব ।

বিজ্ঞাপন ।

চাণ্ডীপোতা দিবসী জীবন্ত রক্তনিধির
সংস্কার পুত্র জীবন্ত কালীকুমাৰ সিংহ অগ্র-
কাল হইয়াছে । ইহার বর্ষ পৌর বয়স
২২ বৎসর, মক্ষিণদিগের জুলপির নিকট
একটি ছোট আনন্দি আছে । যদিও কেহ
উচ্চ লক্ষণাকান্ত ব্যক্তির আশ্রয়লাভ করিয়া
সোমপ্রকাশ সম্পাদকের নিকট সৎ বাস দিতে
পারেন, তাহাকে ২৫ টাকা পুরস্কার দেওয়া
হইবে ।

সোমপ্রকাশ ।

৩ অগ্রহায়ণ, সোমবার

অসম জগদীশ্বরকে ধন্যবাদ দিবার
এবং পাঠকগণের নিকটে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ
করিবার দিন উপস্থিত হইয়াছে । জগদী-
শ্বরের রূপা ও পাঠকগণের উৎসাহ দানে
খুঁট ও পরিবর্তিত হইয়া সোমপ্রকাশ
যদি পাঁচ বৎসরের হইল । আমরা অসম
বর্ষে ইহা আর ৩০ উন্নতি প্রকৃতির

বিষয় অবগত হইবার নিমিত্ত নিজস্ব উৎ-
সুক দেখিতে পাই । পাঠকগণের সেই
কৌতুহল বিনোদন করাও আমাদের
অবশ্য কর্তব্য । অগ্রগণ্য সম্পাদকের
সবিশেষ ধন্য নাই । আর অধিক হটক,
আর অস্পষ্ট হটক, সম্পাদক সাধ্যানুসারে
পরিচয় করিয়া যাবজীবন সোমপ্রকাশ
প্রচারণরূপ অসীমত ব্রত প্রতিপালন
করিবেন, এই তাঁহার প্রতিজ্ঞা । অতএব
আমাদের বিষয় জানিয়া পাঠকগণের বিশে-
ষ ইচ্ছালাভ নাই । তবে তাহ বা এই মাত্র
জানিয়া রাখুন, বত আর রুচি হইবে, ততই
ইহার জীবন্তী তাঁহাদিগের নয়নগোচর
হইবে । বাস্তব বিষয়ে বক্তব্য এই, সোম-
প্রকাশের নিজস্ব ও নৈমিত্তিক বাণ নিজস্ব
অস্পষ্ট নহে । গ্রাহকগণের রূপায় সকল
তাহা চলিয়া বাইতেছে । বোধ হয়, এবি-
ষে কোন বাঙ্গালী সম্পাদক সোমপ্রকাশের
না। সৌভাগ্যশালী ন। এখানে গ্রাহক
গণের একটি গুণের বিগল বিশেষ করিয়া
উল্লেখ করিয়া মৌলবানান করা বিধেয়
হইতেছে না । সোমপ্রকাশের গ্রাহকদিগের
আর কেহই মূল্যদানে কাড়িয়া, রূপগত
অথবা ঐশ্বর্য্যীয় প্রদর্শন করেন না । এ
স্থলে অসম একটি গুণেরও উল্লেখ করা
আবশ্যক, তাহারা একবার গ্রাহক হন,
তাঁহারা আর ইহাকে আর পরিত্যাগ ক-
রেন না ।

উন্নতি বিষয়ের বিচারকর্তা আমরা
নহি, সম্পাদক অপকপাতী পাঠকগণই

তাহার বর্ষা বিচারকর্তা, তাহাদিগের
বিষয়ের বিচয়ের অধিকারও আছে ।
আমরা এই মাত্র বলিতে পারি, সোম
প্রকাশ যেমত কীটের মাত্র, ক
হংসী ও বাবিনীকিতের উন্নতি, গিহের
মাত্র উন্নতি ও উন্নতি নহে । সোম
সকল নিলক্ষণ বসিত ও সুকল, সোমদিগের
লক্ষিত হইতেছে । ইহা যেমত, সোম
পদাধিত হইবে, তাহার সম্পূর্ণ আশা
রাহে । পাঠকগণ যদি উন্নতি
বীকার করিতে চাহেন, আর একটি
তিলকণ এই, অনেক ইহার উন্নতি
করিয়া উন্নতি হইয়াছেন । ইহা
সর্বদাই দোষানুসন্ধান করিয়া থাকে ।
তাঁহারা যে অভিপ্রায়ে দোষ সন্ধান
তাহা মহোপকারের নিমিত্ত হইতে
ছে । ইহা কৃতজ্ঞচিত্ত হইয়া সেই সম
দোষের যত সংশোধন চেষ্টা করিতেছে
ততই ইহার উন্নতিলাভ হইতেছে । অসম
উন্নতি লক্ষণ এই, সোমপ্রকাশে ধন্য
বিষয়ে যে অভিপ্রায় প্রকাশ করা হয়, তাহ
বিশুদ্ধ যুক্তির অনুসারেই ব্যক্ত করা হই
য়া থাকে, তাহাতে ব্যক্তি, সম্প্রদায় অথবা
জাতিবিশেষের অনুরোধ বা মুখোপদেশ
নাই । তাহাতে অনেক সোমপ্রকাশের
উপর দার পর নাই কুপিত হইয়াছেন
ইহা আমাদের হইলে কখন লোকে
কোণে পতিত হইত না । লোকে কো
উন্নতির লক্ষণ, ইহা অসমিষ্ট বাক্য নহে

করে। ইহা শুধু কতকগুলি ইউরোপীয়কে
৫টি টাকা। ইহাও কেবল মাত্র পয়সা
খাপি তাহাদিগের। অল্পই হইতেছে। সোম-
এই কাল লগুনই করিয়াছে। একবার
সর চাহিলেন এবং ইন্ডিয়ান মিরবের
ও খণ্ডে পছন্দ দাতা সে দিন লিখিবাছেন,
নৈসর্গিক ইউরোপীয়ের ও লগুনই ইউরো-
পীয়ের হইবে বৈশিষ্ট্য লক্ষিত হয়। এ দেশে
যেহা আইসেন, তাহার অধিকাংশ ভারত
ইহাও পদার্থ করিয়াই নিত্য জুয়া
রা। ইহা ব্যবহার করিয়া থাকে। এদেশ-
চাষী লোকের এতি তাহাদিগের গরিত
যাও ও কত ব্যবহার দেখিয়া যুগা জন্মে।
আজ, ইউরোপেও ইহার সম্পূর্ণ বৈ-
হার উৎপাদন হয়। উক্ত ইউরো-
পীয়জাতি অমারিক তাব; শাও প্রকৃতি
ব্যবহার করিয়া অত্যন্ত
একটি আর্জ হইয়া যায়।
ইহাও বিপরীত তাব দর্শনের কারণ
ইউরোপেও কি স্বর্গ ধাম? মনুষ্য-
চর নিকট প্রভৃতি সকল কি তাহা হই-
অভিহিত হইয়াছে? তাহার কি কেবল
নৈসর্গিক ও অমারিক তাবের স্রোত
বাহিত হইতেছে? বিধাতা অন্য অন্য
দেশের লোককেই কি কেবল নৈসর্গিক
ব্যবহারের অধিকারী করিয়াছেন
ইহা গিকে তাহার অংশ ভাগী করেন
ইহা তাহাদিগের প্রয়োগে দ্বিতীয়া চ-
হুইয়া যায় কি নিম্ন বিধাতা যদি তাহা
কি একে এইরূপ দেবদত্তা বরিয়া দৃষ্টি ক-
রা থাকেন, তাহা হইলে পদার্থ মাত্র
হারা অন্যবিধ ব্যবহার হইবে কেন?
এইভাবে কি এতদ্ভিন্ন দেশে ও বস্তু
মহিমা যায় এমন কোন পুত্র পদার্থ আছে
যেহাও মাত্র ইউরোপীয়দিগের স্বত-
পরিবার হইয়া যায়?

কেহ কেহ ইহার এই কারণ নিম্ন
করেন, ইউরোপেও যত অপকৃষ্ট ও
লোক ভারতবর্ষে আইসে, তাহা দি-

গের সহিত এদেশীয় লোকের সূচা সংসর্গ
হয়, তাহারা ইহাও নিজ স্বতাব গোপন
করিয়া রাখিতে পারে না। তাহাতেই ইউ-
রোপীয়দিগের জ্ঞানস্বত্ব সচরাচর আশা-
দিগের নয়ন পৌঁছন হইয়া থাকে। এই
বাক্যে যথার্থ স্বীকারে আমরা সন্তুষ্ট
নহি। এদেশে ভ্রমলোক আইসেন না এ
কণ নয়, ইউরোপেও অত্যন্ত নাই এমনও
নয়। উল্লিখিত বিপরীত তাব দর্শন করি
বার একটি বিশিষ্ট কারণ আছে। এদেশী-
য়দিগের দোষই সেই কারণ।

ইউরোপেও বিশেষতঃ ইংলণ্ডে যা-
ধীনতা রক্ষণের নিত্য বিরাম্য। এতি-
বেশীরা পরস্পরকে আশ্রয় রূপে সৃষ্ট স্বা-
ধীন জীব বলিয়া জানি করিয়া থাকেন। সু-
তরাং কাহারও উপরে কাহার অসমত প্রভু-
ত্ব করিয়া উঠা নাই। কেহ সে ইচ্ছা করি-
লেও তাহা তাহার অতিক্রম পাইয়া
থাকে, কাজে কাজেই ইচ্ছা-নিরুপ করিয়া
রাখিতে হয়। এখানে সেক্ষণ হয় না। ইউ-
রোপীয়েরা বিশেষতঃ ইংলণ্ডীয়েরা এদেশে
উপস্থিত হইলেই তাহাদিগের অধিকরণে
এদেশীয়দিগকে নিকৃষ্ট ও অধীন প্রজা এবং
অপমানাদিগকে প্রধন ও প্রভু বলিয়া এক-
ত্রি বিজাতীয় অভিমান জন্মে। এদেশীয়ে-
রাও আপনাদিগের পদ ও গৌরব বিন্দিত
হইয়া অন্যথা কথ্য ও আচরণ দ্বারা সেই
অভিমান বহির্ভুক্ত প্রকাশিত করিয়া দেন।
যেবে এই কল হই, ইউরোপীয়েরা জুয়া
হইয়া উঠেন, এদেশীয়দিগকে সেই দো-
ষা সন্ধ্যা করিতে হয়।

ইউরোপীয়দিগের প্রধান ও প্রভু ব-
লিয়া অভিমান জন্ম হয় এবং তাহাদিগের
অগ্র এদেশীয়দিগের নীচ আচরণ করি-
বার কতকটা কারণ আছে। ইউরোপীয়
দিগের পক্ষে কারণ এই— ইংলণ্ডীয়েরা
মনে করেন, তাহারা রাজ্য জাতীয়, ভারতবর্ষ
ও তাহাদিগের অধীন এবং ভারতবর্ষীয়েরা
তাহাদিগের অধীন।

সের মার থাকিবে, এতদ্বারা গালি দিন
আর প্রহার কর, তাহারা বিরুদ্ধ করি-
তে পারিলে না; বিরুদ্ধ করিলেই অনর্থ।
অত্যাচার প্রণালীর দোষে সেই অন-
র্থের সমস্ত মিথ্যার হয় না, সুতরাং উক্ত-
রোক্ত তাহাদিগের দোষ ও প্রজাতি
হইতে থাকে। ইংলণ্ডীয়দিগের মনে এই
রূপে যে অভিমান বর্ত্তিত হয়, অন্য অন্য
ইউরোপীয়ের মনে তাহা সংক্রামিত হইয়া
থাকে।

এ দেশীয়েরা ইউরোপীয়ের অগ্র সে-
নীন আচরণ করেন, তাহার দুই কারণ
ইহাদিগের ভীততা ও কাপুরুষতা। যেহে-
তু ইহা ও পেটুলন পরিধান দেখিলেই ই-
হারা দেব জ্ঞান করেন। দেবতা স্মৃতি হই-
লে আর নিস্তার নাই, এই ভাবিয়া সনি-
শেষ আনুগত্য দ্বারা তাহাদিগের চিত্তকে
সন্তোষিত রাখিবার আশ্রয় চের। পান।
অপমানই হউক, আর লজ্জাই হউক,
তাহাতে উত্তর করা নাই। সাহেবেবা রা-
জার জাতি, তাহাদিগের কৃত অপমানের
পরিণাম চেষ্টা করিয়াও ইংলণ্ডে সন্তা-
বনা নাই। একে ত আপনারা। হীনবল ও
কীংদেহ, তাহাতে আবার রাজপুরুষেরা
উহাদিগের পক্ষ, কি করিতে গিয়া কোন
বিপদে পড়িব, অগ্র এই চিন্তাই উপ-
স্থিত হয়। সুতরাং ভয়ানক হইয়া প্র-
তীকার চেষ্টায় প্রবৃত্তি জন্মে না।

এদেশীয়েরা কি এইরূপে ইউরোপীয়-
দিগের প্রজাতি করিয়া নিত্য কাপু-
রুষের ন্যায় চিরকাল উহাদিগের অত্যা-
চার সহ্য করিবেন? ইহার কি প্রতীকারের
উপায় নাই? জাতীয় বদলে জাতীয় ইটের
বদলে ইট, ও মুসলিম বদলে মুসলিম কি সেই
একত উপায় নয়? যদি ইহার স্বাধীনতা
ও স্বাধীনতা চেষ্টা সেই একত উপায়ের
অবলম্বনে সার্থক হয় না, রাজ্যের উদা-
চিত্ত অধঃপতন হইয়া কীল হ্রাস করি-
বার প্রয়োজন হইবে, রাজ্য জাতীয় ইটের

রাজপুত্র হইল, আর রাজপুত্র হইল, আর
ইন, মুক্তি ও স্বাধীনতা দিওঁ নাকি? সত্যম,
অত্যাচার করিয়া কি? কে? কখন? হু-
জিলাতী করিয়া দিওঁ। সকলোই হু-
পদোচিত মান ও সৌরভ আছে। এত-
র নিকটে রাজ্যের স্বপদোচিত স্বপ্নাননা
লাভ করিল, রাজ্যের নিকটেও এত-
দোচিত স্বপ্নাননা ভেদনি দাখ্য। যিনি হ-
উন অত্যাচার করিবার বিষয়ে কাহারও
অধিকার ও ক্ষমতা নাই।

অধিকতর ক্ষেত্রে বিধি এই, এনে-
শীরেরা ইউরোপীয়দিগের এত-
করিয়া এত-করিয়া, ডুলিয়াছেন যে পদ,
মান, সম্মান ও গুণ প্রকৃতি সর্বাপেক্ষে ক্ষেত্রে
এদেশীয় কোন ব্যক্তি কোন সামান্য
ইউরোপীয়কে প্রণাম করিলেও সে
গর্বপ্রসূত প্রতিক্রিয়া করে না, কিন্তু
এদেশীয় নিত্য নমস্কার হইতে বিরত হয়
না। একবার যে ব্যক্তি প্রতি প্রণাম করিল
না, তাহাকে আর প্রণাম করা কেন? ই-
উরোপীয়কে প্রণাম করিলে কি স্বর্গসো-
পান সংঘটন করা হয়? তেমনি অত-
বাস্তবিকি প্রণামের যোগ্য? সে যদি প্র-
ণাম না করিলে কুপিত হয়, তাহার সংস-
র্গে প্রয়োজন কি? জিতেঞ্জির আলমখান
উল্লেখ ও অধ্যবসায়মান ব্যক্তির জী-
বিবা বার সর্বত্রই উল্লেখ আছে। তজি-
মিত্র এত শক্তি ও ক্ষমতা কেন?

রিচি সাহেবের কট্টাঙ্গীল ও
(সর চার্লস উড)

সর চার্লস উড ভারতবর্ষীয় কৃষক-
গকে ব্রিটিশ সাম্রাজ্যের সৌরভের সজ্জিত হই-
বার রক্ষা করিলেন। বীজের সাজ্জিতের স-
টেটে বিল ও রিচি সাহেবের করার ক-
ষের বিল বিধিবদ্ধ হইল, এই আত্মনিয়-
তিনি রাজস্বীভিক্ত্য বিষয়ে পূর্ণ প্রাণী-
প্রদর্শন করিয়াছেন। বীজের সাহেবের
বিল হুজিলাতী পরিচালন করিয়া থাকেন।

অত্যাচার করিয়া কোন সামান্য
ইউরোপীয়কে প্রণাম করিলেও সে
গর্বপ্রসূত প্রতিক্রিয়া করে না, কিন্তু
এদেশীয় নিত্য নমস্কার হইতে বিরত হয়
না। একবার যে ব্যক্তি প্রতি প্রণাম করিল
না, তাহাকে আর প্রণাম করা কেন? ই-
উরোপীয়কে প্রণাম করিলে কি স্বর্গসো-
পান সংঘটন করা হয়? তেমনি অত-
বাস্তবিকি প্রণামের যোগ্য? সে যদি প্র-
ণাম না করিলে কুপিত হয়, তাহার সংস-
র্গে প্রয়োজন কি? জিতেঞ্জির আলমখান
উল্লেখ ও অধ্যবসায়মান ব্যক্তির জী-
বিবা বার সর্বত্রই উল্লেখ আছে। তজি-
মিত্র এত শক্তি ও ক্ষমতা কেন?

সর চার্লস উড লর্ডাকরেই এই
বলিয়া ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টকে অনুযোগ
করিয়াছেন যে শীতকর ও প্রজাপণের বি-
বাদ হইবার পর অধিষ্ঠিতা হারা প্রথমোক্ত
অত্যাচারকারিগণের সহায়তা ও অনো-
রজন করিবার নিমিত্ত বিশেষ আইন করি-
বার চেষ্টা পাইয়াছেন। রিচি সাহেবের
প্রস্তাব বিধিবদ্ধ হইলে সর্ববিধ প্রতিজ্ঞা
ভঙ্গেরই দণ্ড হইবার সম্ভাবনা, কোন ব্য-
ক্তির পরিচালনা নাই। এইরূপে আরও
করিয়া সর চার্লস উড লিখিয়াছেন “যদি
এই বিলের মূল দুটি ন্যায়সিদ্ধ হইত, তাহা
হইলে ইহা ইংলও ও অন্য অন্য দেশেও
প্রচারিত করা অনায়াস হইত না। কিন্তু
আমি কোন দেশের প্রাধিকার সংগ্রহে ও
একর আইন বেধিতে পাই না।”

তিনি আরো বলেন ব্যবস্থাপক
সভার যাবতীর সভ্যেরও এ বিলের
বিষয়ে একমত হইত হয় না কেহ কেহ
ইহাকে কুবিধাত জ্ঞায়, কেহ বা কেবল বদ-
দেশ, কেহ বা বাণিজ্য জবোর বিষয়ে এত
নিষ্ঠ-করিবার অনুরোধ করিয়াছেন। ইহা
বিধিবদ্ধ হইলে যে সে বিচারালয় যে
কোন ব্যক্তিকে এতিকাচককারী বলিয়া
হয় তাহা অধিষ্ঠিত হইবে, ইহাও পদোচিত
হইবে। কোন ব্যক্তি যদি ইহা পদোচিত
করে। তবে ব্যক্তি যদি ইহা পদোচিত

রিচি সাহেবের কট্টাঙ্গীল ও
(সর চার্লস উড)
সর চার্লস উড ভারতবর্ষীয় কৃষক-
গকে ব্রিটিশ সাম্রাজ্যের সৌরভের সজ্জিত হই-
বার রক্ষা করিলেন। বীজের সাজ্জিতের স-
টেটে বিল ও রিচি সাহেবের করার ক-
ষের বিল বিধিবদ্ধ হইল, এই আত্মনিয়-
তিনি রাজস্বীভিক্ত্য বিষয়ে পূর্ণ প্রাণী-
প্রদর্শন করিয়াছেন। বীজের সাহেবের
বিল হুজিলাতী পরিচালন করিয়া থাকেন।

এতাবিত আইনের নিষিদ্ধ অধিকার
গের এসবে তিনি করিয়াছেন, “যদি
খিত হইয়াছে, করার জন্য নিষিদ্ধ
যে কতি হইয়াছে, অথবা যে অধিকার
সম্ভাবনা ছিল, তাহা পূরণ করিয়া দিবে
হইবে। কথ্য কর, এক ব্যক্তি পূর্ণ নিষি-
দিয়ে ১০০ টাকার মূল্য, সে-স্বত্ব দিবে
পারিল না। তুল্য পাইলে অধিকতর
লাভ হইত; এখন হলে কেবল
১০০ টাকার মূল্য হইবে; তাহা হ-
ইলে অধিকতর অধিকার দিবে, ও অন্য দেশে
ব্যক্তিগণ অধিকার জানিতে হইবে
ইহা প্রায় না হইবার ব্যাপার তবে ১০০
মূল্য, যিনি মূল কমিষনের বিচারালয়ে
করিয়া করিয়া বলিয়াছেন, অত্যাচার নিষি-
করিয়া করার পদ নিষিদ্ধ। অত্যাচার

কই তাঁহারকক্ষিকে এক বার দুই
গাব হয়, দিয়া চিরকাল খাটাইয়া লন,
হইবে না র অধ্যাক্ষি হয় না।

বেদন বিস্তৃত হুজি একশন করি-
ইতে মনুল উত্ত প্রভাবিত বিলকে
তালি করিয়াছেন এবং তারতবধীর
শাস্ত্রীয় এককে তাহা রহিত করিবার
বীর হইয়াছেন। তিনি বলেন “বাণিজ্য
করিবার পক্ষের সুবিধার জন্য বিশেষ
করিয়া আর পক্ষকে ক্ষতিগ্রস্ত
করিবার অন্যায়; উত্তর পক্ষেই
কিন্তু আইন অনুসারে আপন আপন
পক্ষের উন্নতি চেষ্টা না করিলে বাণি-
জ্যিক হয় না। যাহাতে শীঘ্র বিচার
যা সম্পন্ন হয়, সেই রূপ আদালত খা-
লেই যথেষ্ট; কোন পক্ষের স্বাধীনতা
লাপ চেষ্টা যুক্তিসিদ্ধ নহে।”

পরিহার্য সম্পদের বালকতা।

উক্ত সম্পাদক আজিও আমাদিগের
দিকের উত্তর দিলেন না, তিনি আমাদি-
গের প্রতি যে নোয়ারোপ করিয়াছিলেন,
বাজিও তাহা সপ্রমাণ করিলেন না। তিনি
বৈ উক্ত ও অবিদ্যাকারী হইয়া অকা-
ণ বিবেচনা করিতে আমাদিগের মনে যে
কাত ও কোপ জন্মিয়াছিল, তাঁহার ইদা
বীকন তীকতা ও অব্যক্ততা দেখিয়া তাহা
মাগনা হইতেই দূরীভূত হইতেছে। তিনি
জিহ্বাক্ত বারু কালীএসর সিংহের ঘোষাই
দিয়া কৌশল কমে আমাদিগকে, মিথ্যা-
বর্ষী করিবার চেষ্টা পাটয়াছেন, কিন্তু
কই বারু স্পষ্ট করেই তাহাকে মিথ্যাবাদী
করিয়াছেন। কালীএসর বারু এই কার্তিক
আমাদিগের নিকটে এত উচিত এক খানি
বক্তা পাঠাইয়াছেন। আমরা এতদিন পরি-
শিকের উক্ত, কটাকার তাহা প্রকাশ
করি নাই। কিন্তু যাহা হানে তাহা একটি
কি, পাঠকগণ! যুক্তি কেস স্বীকার করিয়া
কিয়ার পাঠ

আমরা পূর্বাঙ্গের সমস্ত পর্বাতোচনা ক-
রিয়া দেখিলাম, পরিদর্শক সম্পাদকের নি-
তান্ত বালকতা প্রকাশ করা হইয়াছে। বাল-
কের উপরে প্রৌঢ়ের জোখ করা অবিধেয়,
এই বিবেচনা করিয়া আমরা আপনা হই-
তেই তাঁহার অপরাধক্ষমা করিলাম। তিনি
যে কিরূপ অনিষ্টসাধনে উদ্যত হইয়াছিলে-
ন, বালকতা এযুক্ত তাহা বুঝিতে পারে।
নাই। যাহাতে আমাদিগের দেশের লো-
কের জ্ঞানপ্রমাদ ও অসংবিধ দোষ সংশোধিত
হইয়া তাঁহার সংপর্ষের পথিক হন, আমরা
প্রার্থনা এই চেষ্টা পাঠাইয়াছি, কিন্তু আমরা
যদি মিথ্যা প্রবন্ধন দি- বন বুদ্ধিত হই, কে
আর আমাদিগের উপ- বাক্য প্রবণ ও
প্রবণ করিয়া তদনুসার হুত হইবেন।

আমরা আশা করিতে পারি, অনেক সময়ে যু-
ক্তার ও অত্যাচারের সি-
দ্ধ হইতে হয়। বাল্যাবস্থায় পু-
রুষের অত্যাচার, কে-
কেন একপ-
পতিত হইলে
তীর ও বিদ্যা-
হিত হইল। কিন্তু যদি অনুধাবন করিয়া
দেখা যায়, কেশ শ্রমজীবির স্তম্ভিত মুণ্ড-
কে বিধর্মী জ্ঞান করাই সমস্ত হয়। যুক্তি
কেন শ্রমজীবির সপক্ষতা করিতেছে।
কলনীশ্বর যখন পুরুষকে কেশ ও শ্রমজ
প্রদান করিয়াছেন, তখন তৎকারণ যুক্তি
বিরুদ্ধ কার্য নহে। শোভা সম্পাদন হউ-
ক, আর অন্য কিছু হউক, তাহার একটা
উদ্দেশ্য আছে। তৎকারণ না করিলে সে
উদ্দেশ্য সিদ্ধির ব্যাঘাত জন্মে। প্রাথমিক
ইংরাজী জ্ঞাতা পাত্র ও পিরাম গার হইয়া,
এই অপরাধে তাহাকে “মৃত্যু” বলা হয়
কিন্তু সে যদি জিজ্ঞাসা করে, ইংরাজী
জ্ঞানপাত্র ও পিরাম গার দেওয়াই কি

মৃত্যুর পাত্রের অর্থ? তাহা হইলে তাহাকে
অনর্থ উপস্থিত হয়। ইলিন যদি মিস্টার
বলিয়া বিশ্বরচনাকৌশল এবং ইংরেজ
অনন্ত শক্তি ও অনন্ত মহিমার বিবরণ চিত্রা
ও তাঁহার গুণ দীর্ঘন করে, আর সন্মোহ-
রতীরে অথবা মিস্টার মধ্য, মণ্ডারমান
ও মুক্তিজনগন হইয়া এক বার ক্ষুতর প-
তিত ও একবার তথা হইতে উদ্ধিত হই-
য়া নমাজ না করে, গোঁড়া মুলমানের
এখনই তাহাকে নাস্তিক বলিয়া তাহার
সহিত আলাপ পরিভাগ করিবেন। কিন্তু
যদি মেরির প্রতিবুদ্ধি গৃহে না থাকে,
এণ্ড প্রভৃতি এখনই তাহাকে ধর্ম্মঘট
বলিয়া হুগা ও নিন্দা করিবে। জর্জের যদি
জনসংস্কার ক্রিয়া না হয়, তাহার সহচরে-
রা এখনই তাহাকে চির নির্যাসামী বলিয়া
হির করিয়া রাখিবে। তাহাব অরূপট
ইংরেজতত্ত্ব সহচরদিগের মতে তদুচ্চরণে
সমর্থ হইবে না। কলিকাতা ব্রাহ্ম সনাতন
র আচার্যের পিতৃ ভ্রাতৃ প্রসঙ্গে, আর্থনা
ভারী আশ্রয় উন্নতি হয় না, এইত উপযোগে
লেখাতে আমাদিগের বিষয়েও একপ
ঘটনা হইয়াছে।

আমরা পরস্পর শুনিলাম, উল্লিখিত প্র-
স্তাবটা বাহির হইবা মাত্র কতকগুলি ব্রাহ্ম
এককালে কে ধৈর্য্যবীর হইয়া উঠিলেন।
রোষাবেশ বশত; তাঁহার আমাদিগের
এযুক্ত প্রার্থনা ও উপাসনা এ উত্তর শ-
বের তেজ প্রেহণ সমর্থ হইলেন না। তা-
হারা এখন কখনই আমাদিগকে উপাসনার
অস্বীকারকারী নাস্তিক বলিয়া হির করি-
লেন। কিন্তু ক্রোধাবেশ শান্তি হইলে
যখন তাঁহার অতিনিবেশ পূর্বক প্রস্তাবটা
পাঠ করিলেন, তাহাদিগের জ্ঞান দূরীভূত
হইল। স্তম্ভ ও আতঙ্ক পাত্র দেখা যাইতে
ছে, এখনও প্রার্থনা প্রতিষ্ঠা বাক্যটির তাৎ-
পর্য্য অনেকেই কল্যাণকর মনে নাই।
তাঁহার ক্রোধ করিয়াছেন, আমরা ব্রাহ্ম
জিজ্ঞাসা করি, তাহা কি পরিচয় করিবার

উপদেশ দিতেছি। আমাদেরিগের সে উদ্দেশ্য নহে। প্রার্থনা দ্বারা আত্মার উন্নতি হয় কি না, সেই বিচার উপস্থিত হইয়াছে। যদি কেহ আত্মার, বস, সাহস, ও উৎসাহের নিমিত্ত প্রার্থনা করিতে চাহেন করুন, তাহাতে আপত্তি নাই। কিন্তু প্রার্থনা দ্বারা আত্মার উন্নতি অথবা জগতের শ্রীলক্ষ্মী লাভ সম্ভাবনা নাই; আমরা পূর্বে এ কথা, কহিয়াছিলাম, এখনও কহিতেছি।

কঠোরপ্রাণী হইয়া, একপ দৃঢ়তার দ্বারা কালে বরং আত্মার ও জগতের অনুন্নতিবই সম্ভাবনা। সমুদায় শীতাত্তবাকি হইয়া সৎপ্রহ পূর্বক বস্ত্রবস্ত্রের উপর উদ্ভাসিত না করিয়া যদি এইরূপ প্রার্থনা করিয়া দিচ্ছিত হইত "হে করুণাময়! আমাকে এই দুঃসহ শীত যন্ত্রণা হইতে রক্ষা কর" তাহা হইলে কি বস্ত্রের হ্রাস হইত? মানুষ যদি গৃহ নির্মাণ চেষ্টা করিয়া শীত গ্রীষ্ম ও বর্ষার উপদ্রব হইতে আত্মরক্ষার চেষ্টা না পাইয়া নিরন্তর ঈশ্বরের প্রার্থনা-গম্য হইত, একপ উৎকৃষ্ট অট্টালিকা সকল দি আমাদেরিগের নয়ন গোচর হইত "জগদীশ্বর! আমাকে কঠোর মধ্য কালিতে লইয়া যাও" এই প্রার্থনা করিলে যদি মানুষের প্রার্থনা পূর্ণ হইত, কখন বেলওয়ার হ্রাস হইত না।

আত্মার ও জগতের উন্নতির কারণ স্বতন্ত্র, প্রার্থনা সে কারণ নহে। প্রার্থনা সে কারণ হইলে স্বর্ষ, মীচপ্রকৃতি, ও ক্রুর জন্ম ব্যক্তিরিগেরও আত্মার উন্নতি হইত। ক্রুরজন্মের ধর্মস্বত্ব স্বর্ষ লোকে কিরূপ প্রার্থনা করে? "শত্রু বিপাক হইয়া আমান একবার ও একবার হইক" এই কি তাহার প্রার্থনার নয়? সেই বিস প্রার্থনা পূর্ণ হইবার কি সম্ভাবনা আছে? প্রার্থনা দ্বারা আত্মার উন্নতি হয় না, বরং উহা দ্বারা আত্মার উন্নতি অনুন্নতি জন্ম বহিতে পারে। বাহ্য আত্মা উন্নত না হইয়া, অন্তরঙ্গ মন হইত

তাহার মুখ হইতে কি কখন একপ প্রার্থনা নির্গত হয়? কলতঃ যেনপ বিচার করা গেল, তদ্বারা স্পষ্ট প্রতিপন্ন হইতেছে, প্রার্থনা আত্মার উন্নতি সাধিকা নয়, উন্নতির অনুশাসিকা।

অচিরিত কর্মচারিগের
প্রতি অনুরোধ আজ্ঞা।

প্রথমে স্বর্ষ বিনাশের সমাদ পাইয়া অর্ধ বিনষ্ট হইয়াছে এই সমাদ প্রতি গোচর হইলে যেনপ মনের তাব হয়, বৃহৎ স্পতি বারের গবর্ণমেন্ট গেজেটে প্রচারিত সর চারলস উডের আজ্ঞা অবগত করিয়া পদচূড়িত অচিরিত কর্মচারিগের মনে সেইরূপ ভাবের উদয় হইবে। গবর্ণমেন্ট আফিসের দ্বার সংক্ষেপ হওয়াতে অনেক কর্মচারী পদচূড়িত হইয়াছেন। তারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের প্রস্তাব ক্রমে সর চারলস আজ্ঞা দিরছেন, বর্ষাদিগের ২০ বৎসর কর্ম করা হইয়াছে, তাহার অপারগতা বিঘ্নে চিকিৎসকের সর্টিকিকেট দিন আর না দিন প্রার্থনা করিলেই পেন্সন পাইবেন।

আমাদিগের এ বৈবেদ্যবানী
শেব অসম্মতি।

আমরা মধ্যস্থ মানিয়া বেদান্ত মনীশের সহিত বিবাদের মীমাংসা যে প্রস্তাব করিয়াছিলাম, তাহা দ্বিগুণে আপনার বহু ব্যাখ্যা দিয়া তিনি আমাদিগের নিকটে এক পত্র পাঠাইয়াছিলেন, তাহা প্রকাশ যোগ্য বোধ না হওয়াতে প্রকাশ কবিলাম না। বেদান্তবানীশ আমাদিগের মানিত মধ্যস্থের প্রতি মীমাংসা তার সমর্থন করিতে সম্মত হন নাই। তিনি বলেন, প্রস্তাবিত মধ্যস্থিগের মধ্যে তিন ব্যক্তি তিন জাতীয় লোক, তাহার বৈদিক জাতীয় জন্ম-সম্বন্ধ সংক্রান্ত সন্ধিগত বৃত্তান্ত অবগত নহেন। দ্বিতীয়, মধ্যস্থের আমাদিগের প্রার্থনা এই দুই প্রাণীকেই সন্তোষ

কিষ্কিৎকর বলিয়া প্রতীত। বুদ্ধিমান লোকে যে বিঘ্নের সম্মত নহেন, তাঁহা বাসে সম্মানে প্রবৃত্ত হইলে তাহা। থবা বুদ্ধিতে পারেন না, ইহা সুখাম। আমরা জানিতাম, বুদ্ধিমান হই অবিঘ্ন নাই। বাগদানের এঞ্জেল কোন্টী? এবং কৃতদার পাতে দান প্রতিবিম্ব কি না? এই দুই মীমাংসার্বই মধ্যস্থ মানা হইতেছে। হেরা শাস্ত্র ও যুক্তি অনুসারে তাহার চার বরিয়া মীমাংসা করিয়া দিবে জেনীবেশেবের ব্যবহার জ্ঞান না। লে শাস্ত্রজ ব্যক্তির তাহা দ্বিগুণে অসমর্থ হইবেন, এবং বাগবিন্যাস কি রূপে না সিদ্ধ হইতেছে? এ যুক্তিতে তিন তিন জাতীয় তিন তিন ব্যবস্থাপক আবশ্যক হয়। এদেশে কি জেনীবেশেবের ব্যবস্থাপক বিশেষ নিকপিত আছেন? যুক্তি ও শাস্ত্র এ উভয়ই টিকি জেনীবেশ অনুগত নহে।

দ্বিতীয় আপত্তির বিধি চিন্তা করিয়া আমরা নিত্য বিস্ময়গত হইতেছি। মধ্যস্থের আমাদিগের সহিত অসম্মতি। জন্ম পক্ষে পক্ষপাত করেন, বেদান্ত-বাগীশ এই পক্ষ করিয়াছেন, এ পক্ষ কিরূপে মনোমধ্যে উদ্ভিত হইল? জন্ম বাকুপ্রয়োগ দ্বারা মধ্যস্থিগের কেবল অসম্মতি করা হইয়াছে। সমুদায় ব্যক্তির উপরেও যদি কোন বিঘ্নের মধ্যস্থতা তার সমর্থন হয়, তাহা হইলে তাহার মনে পক্ষপাত অবস্থি ক্রমে না, আর তাহা দ্বিগুণে আপনার মধ্যস্থিগের তাহা দ্বিগুণে অসমর্থ হইবে, ইহা কি সম্ভাবিত হয়? বিশেষতঃ তাহারিগের কৃত মীমাংসা সোম-প্রকাশে প্রকাশিত হইবার কথা আছে। অবশ্যক মীমাংসা প্রচারিত হইলে বিদ্বাদিগের মুখাতি হইবে? বেদান্তবানী

গর হৃদয়ে তাহার প্রাণ-
 জ্বালাতন কি তন্নিবারণে সমর্থ

বোগীশ বৈদিক জ্ঞানীর মধ্যস্থ
হু গ্রহণের প্রস্তাব করিয়াছেন,
যাহারা বিশুদ্ধ যুক্তির অনুসারে
বিচারে পারণ, তাঁহারা যে জ্ঞে-
উন, তাঁহাদিগকে মধ্যস্থ পদে বরণ
র বিষয়ে আমাদের আশঙ্কি না-
এবিষয়ে আমাদের এই মাত্র বক্ত-
দায়রা যে চারি ব্যক্তিকে মধ্যস্থ পদে
নিষেধ করিয়াছিলাম, তাঁহাদিগের স-
ম্পত্তি লোক চাই, আর কোম আ-
তাই।

पुस्तकपालिका ।

আমরা হৃদয়তা সহকারে বীকার করি
ছি, নিম্ন লিখিত পুস্তকগুলি আশ্রয়-
'হ।

১। কো'আনারী গাইডের এখন ভাগ।

গারফথুরের তেপুটি বাড়িতেই এ তেপুটি
মালেকের জীবন্ত বাবু পান্সীমোহন বন্দ্যো-
পাধ্যায় উহার লঙ্কন করিরাছেন। ইহাতে

অন্য অম্য বিশেষ বিশেষ আইন
এবং কলিকাতা ও আগরার নগর আদাল-
তের নরকুলার প্রভৃতি সমিতিতে বইয়াছে।
কলিকাতা ডিম্বোৎপাদী কোম্পানি ইহা
বৃদ্ধি ও প্রচারিত করিয়াছেন।

২। কুব্জিণী উপাখ্যান.

ইহা অসুস্থ ব্যক্তি কলসংখ্য। : : : : :
 প্রণীত। গুরুত্বপূর্ণ গোষ্ঠীর মধ্যে এতদুভয়
 প্রচারণা কার্য সম্পন্ন করিয়াছেন উহার মূল্য
 হ্রস্ব আনা অবধারিত হইয়াছে। উহাতে
 ও পক্ষ উভয়ই আছে। গণ্য তাপেক্ষা পক্ষ
 গুলি কিঞ্চিৎ মিষ্ট হইয়াছে। গদ্যের এই
 কটা বিশেষ দোষ ঘটিয়াছে অনেক দুর্বল
 ক প্রকাশ্য ব্যবহার ও অন্তর্ভুক্ত হই-
 য়াছে। সংস্কৃত লিপিগণ ব্যংগন না হইয়া
 হইত মন প্রকাশ্য হইত। পাঠ্যে প্রায়ই এই
 হইয়া থাকে।

୩. ସୁଜନାମା :

ইহা সংস্কৃত গ্রন্থ। চানক্যি-নীতিশাস্ত্রের
ব্যাখ্যা-নিরূপণ। ইহার রচনা করিয়া-
ছেন। ইহাতে নন্দবংশের নন্দ-বংশের
শোকবংশ কয়েকটি স্থল কথিত আছে। শি-
বো-বংশের অষ্টম জাতির উদ্ভব কথিত আছে।
শোক-বংশের বহু বংশ কথিত আছে। এখন সংস্কৃত
গ্রন্থ লিখিয়া কৃত্যার্থী লোক সন্তুষ্ট নহে।

६ । अभिप्रेक्षण ।

শ্রীযুক্ত যজ্ঞেন্দ্রনাথ কল্যাণী শ্রীমন্তঃগবতের
অন্তর্গত মনিহরনের উপাখ্যান ভাগ ইহাতে
সম্বলন করিয়াছেন, ইহা গোষ্ঠীসংক্ষেপে হৃদিত
ও প্রচারিত হইয়াছে। মূল্য তিন আনা
নিৰূপিত নষ্ট হইল।

६ । नायक मदन ।

শ্রীযুক্ত বাবু রামলাল মুখোপাধ্যায় এই গ্রন্থ খানি প্রেসিডেন্সি প্রেসে মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়াছেন। ইহাতে গৌরান ও নিত্যমানবের সজ্জিত জীবন চরিত্র এবং মেধা, নৈতিক ও কর্মীতত্ত্ব, প্রভৃতির বিস্তারিত লিখিত হইয়াছে। আমবা গ্রন্থকারহৃত বিজ্ঞাপনের কিয়দংশ উদ্ধৃত করিয়া, দিলান, পাঠকগণ তদ্বারা গ্রন্থ গ্রন্থনের উদ্দেশ্য বুঝিতে পারিবেন। সে এইঃ—

“একপে এদেশে বৈষ্ণব ধর্ম দ্বারা যে কত
প্রকার অনিষ্ট ঘটিতেছে বোধ হয় তাহা সক-
লেই অবগত আছেন। নিত্যানন্দ এই ধর্মের
প্রবর্তকিত। তিনি গৌরানন্দের একজন পরম ব-
ন্ধু ছিলেন। সার্ব্বত্রি শতাব্দী অতীত হইল এই
ধর্ম প্রচলিত হইয়াছে। ইহার বড় জীর্ণ হই-
তেছে, ততই দেশের অনিষ্ট ঘটিতেছে। তাহার
কারণ এই, অধিকাংশ ইন্দ্রিয়পারায়ণ জ্ঞান ও
সমাজিক্যত ব্যক্তিরাই আপন আপন বাসনা চ-
রিতার্থের নিমিত্ত ইহার আশ্রয় লইতে আগ্রহ
হয়। তাহার। “পরিণাম করা বৈষ্ণবধর্মের বি-
লুপ্ত কর” এই বাক্যটা ভাবিতে পরামর্শ দেন
এবং তিস্যার দ্বারা জীবিকা নির্বাহ করে। উচ-
কার দ্বারা অনাচারে জীবিকা নির্বাহ হয় ক-
লিয়া। তাহাদের অসচ্ছিত্তা থাকে না। সুতরাং কি-
সে সকলের দিকট সন্দেহ হইবে, কিনে তাহা-
দের মূল চরম করিব এবং কি প্রকারেই বা তাহা-
বিগকে প্রত্যাখ্যাত করিয়া আপন সমাজের দিক
করিব এই সিদ্ধান্ত লভ্য হইবে থাকে এবং যখন
তীক্ষ্ণ ও মনোহারাণির দৌর্বল্যকে লক্ষ্য করিয়া
অভিমান প্রবর্তিত হয়।

৩১০ বৎসর অতীত হইল, গৌরাজ নদী
দীপে অগ্নিবিজ্ঞের উরসে ও নদী দেবীর
গর্ভে অগ্নি প্রসঙ্গ করেন। তিনি অতিশয় বি
শুদ্ধচিত্ত ও ধর্মপারায়ণ ছিলেন। তাঁহাকে
অলোক সামান্য গুণ সম্পন্ন দেখিয়া অনেক
নারায়ণের অবতার বোধ করিয়া তাঁহার অ
সত্য হয়। দেশ বখন অজ্ঞান অন্ধতমসে আ
চ্ছন্ন থাকে, তখন কোন অসামান্য লোককে
একপ জ্ঞান করা অসম্ভাবিত নয়। আমরা
জিন্ন জিন্ন দেশে বহু অবতারের কথা শুনিতে
পাই, এইরূপে সে সমুদায়ের হাটি হইয়াছে।
গৌরাজ সান্তিনয় বিষ্ণু পরায়ণ ছিলেন। তাঁ
হার সমস্ত অর্থই বৈষ্ণব সম্প্রদায়ের প্রাচুর্য
ব্যয়। প্রাথমিক বৈষ্ণব; বিষ্ণু চরিত ও
বথার্ধ পার্শ্বিক ছিলেন। কিন্তু অনিচ্ছাসংখ্য
মুর্থ লোকে এই সম্প্রদায়প্রবর্ত হওয়ারও এ
কণে তাঁহার অতিশয় অধন্য মশা উপস্থিত
হইয়াছে। যে সম্প্রদায় হউক, তথ্যে অধিক
সংখ্য কৃতবিদ্যালোক না থাকিলে কখনই
তাঁহার গৌরব ও উন্নতি হয় না। শ্রী ধর্মের
এত উন্নতি হইয়াছে কেন? ইউরোপ খণ্ডের
বিদ্যাপ্রভাবই কি তাঁহার অসাধারণ কারণ
নয়? ধর্ম মুর্থ লোকের হস্তে পতিত হইলে যে
তাঁহার অধোগতি হয়, তাহা বয়ে অপরাজিত
নয় নাই। আমরা সচরাচর দেখিতে পাই,
‘মসর রজা কোন কোন পরীক্ষার ব্যবস্তার
মুর্থ ইত্যর লোককে শ্রী ধর্মাবলম্বী করিয়া
ছেন। কিন্তু তাঁহাদের হইতে শ্রী ধর্মের
উন্নতি চুরে খাটুক, কেবল অধমামনাই হই
তেছে। মুর্থ ইউরোপীয়েরাও ইহার একটা
অসামান্য দৃষ্টান্ত বহল।

অপর, সুলতানের অধীনের প্রকৃত দত্ত
 বিত্ত ছিল না। ইহাও এই সুলতানের অণ
 করের একটি প্রধান কারণ। পৌরাজ সংসারে
 বিত্ত হইয়া দত্ত গ্রহণ করেন। দ্বী হইয়া
 খর্বের অনুভূতি করা উহার অনুভূতি
 ছিল না। উহার অনেক অনুভূতি ও তৎপরের
 পার্থক্য হইয়াছিলেন। ইহা অনুভব করিয়া
 দেখা যায়, ইহাই এই সুলতানের দাবতীর
 অনুভূতি হইয়াছিল।

বিশ্ব মঙ্গলার্থ ধর্মের প্রতি প্রতিষ্ঠা। সেই
ধর্ম যে আমাদিগকে ইহিক সুখে বঞ্চিত
করিয়া প্রতি লোপ প্রদান প্রবর্তিত করিবে,
তাহা কোন ক্রমেই অগ্রহণের অযোগ্য
নহে। বর্তমান সময়ে বাস্তবিক পুরুষ সংসা-
র বিরক্ত হইয়া পৌরোহিত্য ন্যায় যদি দ্বার
পারিত্যক্ত হইয়া পরিত্যক্ত না করেন, অগ্রহণ
বরেন্দ্ৰ হইবে কি অশকাল মধ্যে বিশেষণ প্রাপ্ত
হইবে না? এতদ্বারা স্পষ্ট প্রতীক্ষমান হইতে-
৮, সংসার ধর্মের জলাঞ্জলি দিয়া বৈরাগ্য
প্রবল হইয়া ইহাদের প্রতিষ্ঠিত নহে। তা-
হার অনতিশ্রুত কার্য করিয়া বাস্তবিক হ-
র্গত লাভের সম্ভাবনা কি? বৈরাগ্যের যত
দূর সংসার পরিত্যক্ত হইতে লাগিল, ততই
ই মনে সম্মতীতির বন্ধন প্রবল হইতে লাগিল।
এক প্রকারে অগ্রহণ থাকিয়া বিশুদ্ধ সাংসা-
রিক সুখ ভোগ দূরে গেল, তবু আচার প্রবেশ
নয়নি। পশু ব্যবহারও ঐ সম্প্রদায়ের অনেক
কর দুর্ব্যবহারের নিকটে লক্ষ্য পাইতে লা-
গিল। আধিক্য মধ্যে এই হইল, অনেক
কম্পাটব লিখা কবিলেন। প্রকৃত ধর্মের
নথ্য গোপন আসবর্ষ হইয়া বিকৃত ধর্ম প্র-
তিষ্ঠিত করিলেন যে এতদ্বারা যখনই হয় তাহা
প্রতিষ্ঠিত প্রসিদ্ধ কথা। রোমান কাথলিক
এও যৎকালে পাপনি মনে পরিণত প্রতিবেশ
এই পাপিষ্ঠা ছিলেন, ইংলণ্ড এতদ্বারা তাহা
বিশুদ্ধ হইয়া বাস্তবিক উপস্থিত হইয়াছিল।
এইদলে উপপত্তী রাখা ঐ মনের প্রায় স্পষ্ট
প্রতিষ্ঠা হইয়া উঠিয়াছিল।

কিন্তু পাপের দমনকার ঈশ্বর সম্প্রদায়
হইতে এ দেশের যে যে সমিতি প্রতিষ্ঠিত
করিয়া বর্ণন করিয়াছেন, আমরা যত দূর
এই সম্প্রদায়ের কহিতে পারি, তাহার এক
ধর্ম অধ্যাক্ষ নহে।

প্রকৃত বিত্ত প্রদানের গুণ কোন বিষয়ে আ-
মাদিগকে বঞ্চিত এই, অনেক স্থলে একক
এই অর্থ লক্ষিত হইল। তাহাছাড়া প্রচুর
অনেক গুলি প্রমাণাদি প্রতিষ্ঠা। রচনা উ-
পত্তী না হইত, নীতি ও বাস্তব। ভাষার রীতি
কম হয় নাট।

প্রাপ্ত।

বেধুন সোসাইটি।

কম মঙ্গল নয়নের আশ্রয় লে থাকি-

রা সুসজ্জিত বেশ সুবার পুনবার বেধুন
সোসাইটি আমাদিগের সম্মুখে উপস্থিত
হইয়াছেন। প্রায় দুইশত অনেক বিবস পুর
দেশে থাকিলে যেমন বহু বাস্তব তাহার
বর্ণনার্য্য বাস্তব হইল, এবং তিনি উপস্থিত হ-
ইলে প্রতি বিস্ময়িত নেত্র তাহাকে আ-
লিঙ্গন করিতে প্রাধান্য চন, কলিকাতা বা
সিরা। বেধুন সোসাইটির নির্মিত এত দিন
সেইরূপ উৎকর্ষিত ছিলেন এবং গত দুইশত
তিবার তাহাকে বর্ণন করিয়া নয়নের হতা-
বর্তা লাভ করিয়াছেন। এত সত্য, কাহারও
অপ্রীতি ভাজন নহেন। গবর্নর জেনারেলের
প্রকাশ সত্য তাহাকে তুচ্ছ জ্ঞান করেন নাই,
বহুদেশের ব্যবস্থাপকেরাও অবজ্ঞা করেন
নাই; কানী, মহারাষ্ট্র, ও কলিকাতার রাজা
রাও তাহার সম্মান বর্ধনে প্রতি করেন নাট,
বিসময়িয়া তাহাকে পার্শ্ব ও অপরিচিত বলি-
য়া স্থাপন করেন নাট। সংবাদ পত্র সম্পাদকে-
রাও তাহাকে অপ্রীতিকর বলিয়া হেয়জ্ঞান
করেন নাই, অন্য অন্য লোকের ত কথাই
নাই।

রাজি ১১০ ঘটিকার সময় সত্য কাণ্ড আ-
রম্ভ হইল। সত্য নিয়মিত কর্ম সমাপন হই-
লে ভাস্কর নন্দ্যান চিবস একটি বক্তৃতা ক-
রিলেন। শাসনিক বাস্তব বিধান শাস্ত্রের প্রা-
ধান্য প্রতিপাদন করাই বক্তৃতার মুখ্য উ-
দ্দেশ্য। চিবস আমাদিগকে হুতন কিছু
লিখা দিতে পারেন নাট বটে কিন্তু যুক্ত
কঠোরীকার করিতে হইবে যে অনেক গুলি
মহোপকারি বিশ্ব আমাদিগের স্মৃতিগোপ-
প্রতিষ্ঠিত করিয়া দিয়াছেন। তিনি বলেন, পরি-
দ্রব্য থাকে, নির্মল বায়ু সেবন করা এবং নি-
র্মল জল পান করাই আমাদিগের শারীরিক
সুস্থ থাকিবার প্রধান উপায়। কিন্তু কলিকাতা
যেমন অপরিস্রব হইয়াছে, ইহার জল
বায়ু ও ভেদনি মন্দ হইয়াছে। জল লবণাক্ত
হওয়াতে যত, উদরের পীড়া, কানী প্রভৃতি
রোগ কলিকাতার মুক্তিমান হইয়া বিদ্রোহ
করিতেছে। বায়ু দুর্গন্ধ পলাণের সহিত মি-
শ্রিত হইয়া নাসা রক্তে প্রবেশ করিয়া পী-
ড়ার দ্বার উল্কাটিত করিয়া দিতেছে। কলি-
কাতাতে যত জলাশয় আছে, তাহার এক-

টিতেও উৎকর্ষিত জল পাওয়া যায় না।

লবণাক্ত জল অন্তরে অন্তরে

কোন প্রকারীতে পতিত হয়, কোথাও
পুকুরীতে বা দুর্গন্ধ বর্জিত জল পাওয়া
পড়ে। পানীয় জলের জন্য যত্ন করা
খয়ন করা কর্তব্য এবং সেই পুকুরীতে
হাতে বিস্তারি বাঁধ দিয়া রক্তির জল আসিয়া
পতিত হয় এবং উপায় করা। আশঙ্ক্য
তৎপরে তিনি বলেন এই সকল বিষয়ে কিছু
নিমিত্ত কমিসনরসিগের ন্যায় কলিকাতা
বাসিন্সিগেরও সম্পূর্ণরূপে দায়বোধী হওয়া
উচিত। কলিকাতাবাসীরা যদি কার্য্য অগ্র-
সম্মান করিয়া কার্য্যে প্রবৃত্ত হন, তাহা হইতে
সামান্য ব্যাকার সাংগর্ভ্য তাহাদিগের স্বাস্থ্য
ভন্ন হইবে সম্ভব নাই। তাহারা বিবেচনা ক-
রিতা দেখুন কলিকাতার মধ্যে কয়লায় দারী-
তর কি নির্মিত উপস্থিত হয়? ইংলণ্ডেই বা
এত অল্প সংখ্য লোকের সুস্থ হয় কেন?
কোন রোগে কত লোক প্রাণত্যাগ করে
তাঁহারা প্রথমে ইহার নির্ণয় করুন, তাহার
পর তত্ত্বাবধানের উপায় অবলম্বন করিবেন।

ভাস্কর চিবসের প্রস্তাব পঠি সমাপন হ-
ইলে পর রাজা কালীচন্দ্র বাহাদুর এবং
রাজা দিনকর রাও প্রস্তাব লেখককে সম্মান
প্রদান করিলেন। পশ্চাৎ বহুকালীচন্দ্র বাহাদুর
চিবসের সঙ্গততা করিয়া এই একটি অধিক
কথা বলিলেন যে বাস্তবিক প্রতি অবলম্বন
আমাদিগের আশোপার্জনের, একটি প্রমাণ
অগ্রহণ হইয়াছে। তিনি এই বাস্তবিক বিজ্ঞান
শাস্ত্রীয় প্রমাণ দ্বারা সকলের বিস্ময় প্রদান
করিতা দিলেন। তাহার পর রেনডেল জা-
বিস্টারী মেডিক সাহেবের অগ্ররোধের বর্ণ-
বর্তী হইয়া এতৎ সম্বন্ধে কিছু কিছু কবিলেন।
শেষে ডক সাহেব এক সুকীর্ত্ত বক্তৃতা করিয়া
সমাপ্ত করিলেন। তাহার গত সেসনের
কলকাতার সমিতি এ বক্তৃতার বক্তৃতা ইত্যর বি-
শেষ নাট। হুতনের মধ্যে কেবল এই মা-
ত্ৰনা মেল আকাশ প্রদীপে বাস্তব দেহে
অধিক টাকা ব্যয় হইয়া থাকে।

বিবিধ সংবাদ।

২৫ কার্তিক সোমবার।

আমরা গতবারে লিখিয়াছিলাম,

বচস্ব মিত্র পেন্সন লওয়াতে ওয়াইন শিখ
... দে নিযুক্ত হইয়াছেন, কিন্তু সবিধেব অ-
... জানা জালা গেল, আজিও তুংপদে
... নির্ণীত হয় নাই। একে গবর্নমেন্টে নি-
... সংক্রান্ত কার্যে অঙ্গমাত্র দিয়াছেন, তাহা
... অযোগ্য লোক নিয়োগ দ্বারা অ-
... হইত না হয়।

ওয়াই সার্ভেট রিবিউর সম্পাদক মাকলি
... ১০০০ টাকা মাসিক বেতনে হরকরার
... হইতেছেন। মাকলি গালিলান ক
... ডেপুটি সেক্রেটারী জ্যেষ্ঠ সেক্রেটারী বোধ
... এই বারে ইংলিসমানকে হারি মানিতে
... হইবে।

১লা ডিসেম্বর লেডি এলগিনকে সুএজ হ-
... জাতিবার জন্য কেরোল নামক বাঙ্গীর
... প্রেরিত হইবে।

১লা জুনিয়ান প্রধানতম বিচারালয়
... কহিয়াছেন এক মাসের মধ্যে যে উকী
... আটটি খাম আপীল অগ্রাহ্য হইবে, তা
... আর তথায় ওকালতী করিতে দেওয়া
... হইবে না। সর বাবুস শিখক আপীলের সং
... বমাইবার ও এতদেশীয় উকীলদিগকে
... করিবার চেষ্টা আছেন।

লণ্ডন টাইমস লাড কানিওর জুনি সং-
... আচার প্রতিবাদ করিয়া বন্দিয়াছেন
... ওয়ার্ড কোম্পানির সময়ের বোধ্য রাজনী
... তিগ্ৰিগে প্রাঙ্গণীয় রাজনীতির, 'সংখক
... তার ভবনে আশামিগের রাজনীতির এক
... পাবক কবা হইতেছে। ১২ এদিকে
... ব'টস দ্বারা খোঁসত পরিবর্ত করিয়া
... লিখাছেন, সব এখন উভয় জুনি সংক্রান্ত
... আচার তারতম্যের ব'ট উপকার করিবে।
... র্ড ক'মিউ, সর বাবুস দি ও বাগ-
... মঙ্গলতি বীতা দেও তৎপাল
... বিবরণীর মনোরঞ্জন করাই তাৎপাদি
... প্রধান কর্তব্য বিবেচনা। শিখাছিলেন।

ইঞ্জিনিয়ার যিস্তে লিখিত হইয়াছে, বক্তা
... রাজার দারজিলিও বাকীর সন তৎপাল
... ন্যায় এক প্রকার স্থিতি হইয়া
... তাহা কিংবদন্তি কলিকাতা
... রসায়নবি পণ্ডিতগণের নিকটে প্রেরণ
... হইবে।

অযোধ্যাগেজেট বলেন, উগ্রতা গোল
... সেনাদলের এক জন সার্ভেজেন্ট এক
... অপরাধে রুদ্ধ হইয়াছিল। সে সার্ভেজিগের
... অজ্ঞাতসারে এক কুপে ... প্রাণত্যাগ
... করিয়াছে। নরহত্যা, আত্মহত্যা, দাত্তকীর্ষী,
... প্রধানের প্রতি অবাধ্যতা প্রভৃতি বহুবিধ
... মোন একদে সেনাদলে প্রচুর পরিমাণে প্রবিষ্ট
... হইয়াছে। ইহার মূল সংশোধন আবশ্যক।

উক্ত পত্র আরও বলেন, সিক্কর কবিসনর
... বোধ্য করিয়াছেন, যে ব্যক্তি পদপাল নষ্ট
... করিবার অব্যভিচিন্ত উপায় উদ্ভাবন কবি
... বেন, তাঁহাকে ১০,০০০ টাকা পুণ্ডায় দেও
... হইবে।

টাইমস কব টাওয়ার বলেন, হরিদ্র
... নামে নানা সাক্ষ্যে। এম জন অশ্রুত হামদ
... রাহায়ে পুত হইয়াছে হিটোরের সফায়েরা
... একে একে সকলেই পুত হইতেছেন।

আমরা কয়েক সপ্তাহ অবধি চ কান দেশ
... হিতৈষিনী সভার কথা শুনিয়া আসিতেছি,
... চাকানিটস সে দিবস বলিয়াছিলেন 'আমর
... পরিভাগ করিয়া সভা অধিক সাজ বসিতে
... ছেন। কিন্তু চাকাপ্রকাশে সভার বিবরণ পাঠ
... করিয়া বিস্ময়াগত হইয়াছি, সভার বেবল
... আড়ম্বর দার সত্তেরা বড চলাইয়াছেন।
... বাতাল দেশে সংক্রিয়াসাতগপ্রবেশের অনেক
... বিলম্ব আছে।

২৬এ কার্তিক মঙ্গলবার।

গত কল্যা ইংলওকরীয় জ্যেষ্ঠ পুত্র
... প্রাপ্তি উপলক্ষে যে ১৩ হয় তাতে
... বক্তৃতা কের সনাগম হইয়াছিল।

গত কল্যা নিমিত্ত অধিকার বিক্রীত
... হইয়াছে।

	বাক্স	মোট টাকা
সেহরোর	১৩০০	১৮, ১৫০০
কাশীর	১১০০	১৫, ৮০, ৫০০

জরুরী হোসেন নামক এক জন ভুত
... পুর্ন নিদ্রোদী ও হত্যা করী পুত হইয়াছে।

চিলিগেজেট বলেন, জরুরী হইতে অ-
... ক হলা ... হইবে প্রেরিত হইবে -

... লাভ হইলে ... প্রাপ্ত হইয়া
... লা উপাদান করিবে, তাহারিগের নিমিত্ত
... না ... এইরূপ কোন উপায় আ

বলম্বন করিবার আবশ্যকতা নাই। বাহার
... বহুবিধ নিরা রূপক দিগকে দাসবং খাটা
... ইয়া লইতে চায় তাহারিগেরই কষ্টে বিন
... আবশ্যক।

উক্ত পত্র হেরাট হেইতে সংবাদ পাওয়া
... ছেন এক জন প রূপ্য যুতের বয়ে দোস্ত মহম্ম
... দেব সহিত সুলতান কানের সঙ্গি হইয়াছে।

উক্ত পত্র আরও করিয়াছেন, ভারতবর্ষীয়
... গবর্নমেন্টে সিন্ধু নদীর স্তম্ভ করিতে যে নি
... লেখ করেন, সে আচার পরিবর্ত করিয়াছেন।
... শীঘ্র তথায় ক'রা আরও হইবে।

এক জন মাটিব হইতে মিনিয়াতন, এ
... ক ব্যগ্র তথায় দুই তিনটি বালক ও সাকি
... তার প্রাণ নষ্ট করিয়াছে।

২৭এ কার্তিক বুধবার।

আগামি সোমবার ভারতবর্ষীয় রেলওং
... গাটনা পূর্ণাঙ্গ খুলিবে। আপাততঃ এটি নিম্ন
... কর হইয়াছে আরোহিগকে এককালে ত
... খান লইয়া যাওয়া হইবে না, এক দিবস দু
... সেরে খানিতে হইবে।

এই শনিবার পূর্ণাঙ্গাংগ বেটন ও
... বৃষ্টিপাত্যে খুলিবে। এতরূপলক্ষে এক
... তোজ হইবে।

আশাচাৰ্যদ গেজেট বলেন ভারতবর্ষীয়
... রেইলওং কোম্পানি বহুদূর গামী আরো
... হীনিগের সুবিধার জন্য একপাশে ছতন
... লকট করিবেন তাহা মধ্যে লয়া পাইবে।
... আমোদক্যে রেইলওং দপটে ই প্রা
... লয়া আছে।

উক্ত নিউজের চক্রান্তেন প্রেদি ...
... দারা জানা হইতেছে বক্তাও সাক্ষ্যে
... প্রত্যর্ষ একটি ও এক পুত্রকালয় ৫৬০০, ই
... হার জন্য ২,৫০০ টাকা সংগৃহীত হইয়াছে।
... বাটটি সমর আটে কবা কর্তব্য, নতুন রিক্ট
... ন হেবেব খাটর ন্যায় কোন পক্ষিগণ উপ
... র করিলে সবিধেব উপকার দ ...
... তা হইক এবিসরেই চক্রান্তের ...
... চাকার সমাজের অপেক্ষা তাহা ...
... করিতে হই।

কিনিলে এক করানী পত্র উক্ত ...
... তাহাতে কহিতেছে সেনাপতি গা ...
... পাইয়া হইয়া বখন, তারিখা ...

রুদ্র ছিলেন, তৎকালে রাজা বিষ্ণু উমানিউ
এল একদিকটা তাঁহার মণি হস্ত। করিতে
গিয়াছিলেন। ইহা বিস্ময়ের মতে। রাজা ও
গরিবালদির পরস্পর প্রথম আছে। রৌম
মইবার বিষয়ে রাজা ও নেনাপতি উভ-
য়েই মত সমান এবং উভয়েই মন্ত্রণী
গম্মাটের উপর নিরুক্ত। এইমিতিক গারিবা-
লডি ইটালী গম্মাটের কর্তৃক নিশী উভ হ
ইয়া ও বাজার উপর অসহ্যে প্রকাশ করেন
নাই।

উক্ত পদ চান্দর বালক মতে ঘটত জুয়া
চুবির প্রকৃত দৃষ্টান্ত প্রকাশ করিয়াছেন। এই
ব্যক্তি বিবি ডেবিত্তননের নাম করিয়া নবাব
উস্তাদার উল্লেখের নিকটে হইতে একল।
টাকা এবং নবাব সান্দারকে প্রত্যুত ক
বিহার অন্য টাকা দেন বলিয়া যে জনস ক
তাহা বিখ্য। মরে একজন প্রাজ্ঞাচী মিত্তি
ক মন্ত্রণীদের বাজার অন্যতম বন্দারী।
এইদে তাহাও বৈশিষ্ট্য গব।মেই তাহাকে নি
মাত্রেব হস্তে বিচারার্থ প্রদান করিত হেন।
এক লক্ষের মধ্যে ৪০,০০০ পাওয়া গিয়াছে।

২০৭ কার্তিক চন্দ্রাব্দ।

আনরা দুঃখিত হইল ম. টাণ্ডান এম্পা-
হার সম্বন্ধে এ উক্তিরা যাউতেছে।

গোবিন্দগরে চাবি জল উত্তরোপায় চি-
কিংসক তত্ত্বতা গবর্ণমেণ্টের নিকটে এই ব-
লিয়া পাঠান হইল যেমন শাসনক কম্পাউন্টার ও
প্রশংসাপত্র হীন বৃত্তিকাল বালেকের দ্বারা
চিকিৎসা বাগে প্রাপ্ত হইয়াছে জ্ঞানস
নিষ্টে খটিতেছে অতএব ঐকান্তিক চিকিৎসা
করিতে নিষেধ করা নহে। মর বাটল
গান তদন্তের নতিমত, যদি ঐ সকল চি-
কিৎসকের কোন বিশেষ কোন প্রকাশিত হইত
তাহা হইলে তিনি ব্যবস্থার নিবেদন করি-
তে পারিতেন। কিন্তু যখন তেমা বাইতেছে,
তাহাঙ্গিরের দ্বারা মণি মোদের অনেক
টাকায় হইতেছে, উপর তাহাঙ্গিরের ব্যবস
বল করিয়া দিয়া কয়েকজন চিকিৎসক
ব্যবসায়িক হইয়া কলিকাতার নগর
ত হইতেছে না। মর বাটল দ্বারা মোদের
গারিদিগের মর ভাব বুঝিতে হইয়াছে।

মালিকের পুলকম্ভাচারিরা উক্ত
বাসতে তত্ত্বতা মালিকের গোয়েন্দা
প্রদার দিব্য ঘোষণা করিয়া উক্ত
মালিকের হস্ত করিবার আজ্ঞা প্রদায়
যাহারা বৃত্ত হইবে, তাহাঙ্গিরের ১০০ টাকা
অর্থদণ্ড ও ছয় মাস বন্দী হইবে।

হরকরা বলেন, আট্টার মণি এক মণি
মণি জাহাজ জাহাজ হইলে কস ও বনটিসন
নাথক দুই জন জাহাজে মণি আনয় ও
মালিকদিগকে রক্ষা করিতে গেলেও গবর্ণর

তাহাঙ্গিরের উপর অতিশয় সন্তোষ প্রকাশ
করিয়াছেন।

বোম্বাইয়ের ৮ ব্যক্তি একটি স্রীলোককে
ডাইন জ্ঞান করিয়া তাহার নাসিকা ছেদন
করাতে তাহাঙ্গিরের ৫০২ বৎসর করিয়া
মেয়াদ হইয়াছে। যথ্যতা কি বিদ্যমান?

দক্ষিণ হেরাল্ড বলেন মহাবাজ সিদ্দিকা
আগামিপুরিয়ার ৮ ক্রান্তি তোলন করা-
ইবেন

নিয়মিত হুতন নোট প্রচলিত হই-
তেছে

১৯৭৭	১৯৭৮	১৯৭৯	১৯৮০	১৯৮১	১৯৮২	১৯৮৩	১৯৮৪	১৯৮৫	১৯৮৬	১৯৮৭	১৯৮৮	১৯৮৯	১৯৯০	১৯৯১	১৯৯২	১৯৯৩	১৯৯৪	১৯৯৫	১৯৯৬	১৯৯৭	১৯৯৮	১৯৯৯	২০০০	২০০১	২০০২	২০০৩	২০০৪	২০০৫	২০০৬	২০০৭	২০০৮	২০০৯	২০১০	২০১১	২০১২	২০১৩	২০১৪	২০১৫	২০১৬	২০১৭	২০১৮	২০১৯	২০২০	২০২১	২০২২	২০২৩	২০২৪	২০২৫	২০২৬	২০২৭	২০২৮	২০২৯	২০৩০	২০৩১	২০৩২	২০৩৩	২০৩৪	২০৩৫	২০৩৬	২০৩৭	২০৩৮	২০৩৯	২০৪০	২০৪১	২০৪২	২০৪৩	২০৪৪	২০৪৫	২০৪৬	২০৪৭	২০৪৮	২০৪৯	২০৫০	২০৫১	২০৫২	২০৫৩	২০৫৪	২০৫৫	২০৫৬	২০৫৭	২০৫৮	২০৫৯	২০৬০	২০৬১	২০৬২	২০৬৩	২০৬৪	২০৬৫	২০৬৬	২০৬৭	২০৬৮	২০৬৯	২০৭০	২০৭১	২০৭২	২০৭৩	২০৭৪	২০৭৫	২০৭৬	২০৭৭	২০৭৮	২০৭৯	২০৮০	২০৮১	২০৮২	২০৮৩	২০৮৪	২০৮৫	২০৮৬	২০৮৭	২০৮৮	২০৮৯	২০৯০	২০৯১	২০৯২	২০৯৩	২০৯৪	২০৯৫	২০৯৬	২০৯৭	২০৯৮	২০৯৯	২১০০	২১০১	২১০২	২১০৩	২১০৪	২১০৫	২১০৬	২১০৭	২১০৮	২১০৯	২১১০	২১১১	২১১২	২১১৩	২১১৪	২১১৫	২১১৬	২১১৭	২১১৮	২১১৯	২১২০	২১২১	২১২২	২১২৩	২১২৪	২১২৫	২১২৬	২১২৭	২১২৮	২১২৯	২১৩০	২১৩১	২১৩২	২১৩৩	২১৩৪	২১৩৫	২১৩৬	২১৩৭	২১৩৮	২১৩৯	২১৪০	২১৪১	২১৪২	২১৪৩	২১৪৪	২১৪৫	২১৪৬	২১৪৭	২১৪৮	২১৪৯	২১৫০	২১৫১	২১৫২	২১৫৩	২১৫৪	২১৫৫	২১৫৬	২১৫৭	২১৫৮	২১৫৯	২১৬০	২১৬১	২১৬২	২১৬৩	২১৬৪	২১৬৫	২১৬৬	২১৬৭	২১৬৮	২১৬৯	২১৭০	২১৭১	২১৭২	২১৭৩	২১৭৪	২১৭৫	২১৭৬	২১৭৭	২১৭৮	২১৭৯	২১৮০	২১৮১	২১৮২	২১৮৩	২১৮৪	২১৮৫	২১৮৬	২১৮৭	২১৮৮	২১৮৯	২১৯০	২১৯১	২১৯২	২১৯৩	২১৯৪	২১৯৫	২১৯৬	২১৯৭	২১৯৮	২১৯৯	২২০০	২২০১	২২০২	২২০৩	২২০৪	২২০৫	২২০৬	২২০৭	২২০৮	২২০৯	২২১০	২২১১	২২১২	২২১৩	২২১৪	২২১৫	২২১৬	২২১৭	২২১৮	২২১৯	২২২০	২২২১	২২২২	২২২৩	২২২৪	২২২৫	২২২৬	২২২৭	২২২৮	২২২৯	২২৩০	২২৩১	২২৩২	২২৩৩	২২৩৪	২২৩৫	২২৩৬	২২৩৭	২২৩৮	২২৩৯	২২৪০	২২৪১	২২৪২	২২৪৩	২২৪৪	২২৪৫	২২৪৬	২২৪৭	২২৪৮	২২৪৯	২২৫০	২২৫১	২২৫২	২২৫৩	২২৫৪	২২৫৫	২২৫৬	২২৫৭	২২৫৮	২২৫৯	২২৬০	২২৬১	২২৬২	২২৬৩	২২৬৪	২২৬৫	২২৬৬	২২৬৭	২২৬৮	২২৬৯	২২৭০	২২৭১	২২৭২	২২৭৩	২২৭৪	২২৭৫	২২৭৬	২২৭৭	২২৭৮	২২৭৯	২২৮০	২২৮১	২২৮২	২২৮৩	২২৮৪	২২৮৫	২২৮৬	২২৮৭	২২৮৮	২২৮৯	২২৯০	২২৯১	২২৯২	২২৯৩	২২৯৪	২২৯৫	২২৯৬	২২৯৭	২২৯৮	২২৯৯	২৩০০	২৩০১	২৩০২	২৩০৩	২৩০৪	২৩০৫	২৩০৬	২৩০৭	২৩০৮	২৩০৯	২৩১০	২৩১১	২৩১২	২৩১৩	২৩১৪	২৩১৫	২৩১৬	২৩১৭	২৩১৮	২৩১৯	২৩২০	২৩২১	২৩২২	২৩২৩	২৩২৪	২৩২৫	২৩২৬	২৩২৭	২৩২৮	২৩২৯	২৩৩০	২৩৩১	২৩৩২	২৩৩৩	২৩৩৪	২৩৩৫	২৩৩৬	২৩৩৭	২৩৩৮	২৩৩৯	২৩৪০	২৩৪১	২৩৪২	২৩৪৩	২৩৪৪	২৩৪৫	২৩৪৬	২৩৪৭	২৩৪৮	২৩৪৯	২৩৫০	২৩৫১	২৩৫২	২৩৫৩	২৩৫৪	২৩৫৫	২৩৫৬	২৩৫৭	২৩৫৮	২৩৫৯	২৩৬০	২৩৬১	২৩৬২	২৩৬৩	২৩৬৪	২৩৬৫	২৩৬৬	২৩৬৭	২৩৬৮	২৩৬৯	২৩৭০	২৩৭১	২৩৭২	২৩৭৩	২৩৭৪	২৩৭৫	২৩৭৬	২৩৭৭	২৩৭৮	২৩৭৯	২৩৮০	২৩৮১	২৩৮২	২৩৮৩	২৩৮৪	২৩৮৫	২৩৮৬	২৩৮৭	২৩৮৮	২৩৮৯	২৩৯০	২৩৯১	২৩৯২	২৩৯৩	২৩৯৪	২৩৯৫	২৩৯৬	২৩৯৭	২৩৯৮	২৩৯৯	২৪০০	২৪০১	২৪০২	২৪০৩	২৪০৪	২৪০৫	২৪০৬	২৪০৭	২৪০৮	২৪০৯	২৪১০	২৪১১	২৪১২	২৪১৩	২৪১৪	২৪১৫	২৪১৬	২৪১৭	২৪১৮	২৪১৯	২৪২০	২৪২১	২৪২২	২৪২৩	২৪২৪	২৪২৫	২৪২৬	২৪২৭	২৪২৮	২৪২৯	২৪৩০	২৪৩১	২৪৩২	২৪৩৩	২৪৩৪	২৪৩৫	২৪৩৬	২৪৩৭	২৪৩৮	২৪৩৯	২৪৪০	২৪৪১	২৪৪২	২৪৪৩	২৪৪৪	২৪৪৫	২৪৪৬	২৪৪৭	২৪৪৮	২৪৪৯	২৪৫০	২৪৫১	২৪৫২	২৪৫৩	২৪৫৪	২৪৫৫	২৪৫৬	২৪৫৭	২৪৫৮	২৪৫৯	২৪৬০	২৪৬১	২৪৬২	২৪৬৩	২৪৬৪	২৪৬৫	২৪৬৬	২৪৬৭	২৪৬৮	২৪৬৯	২৪৭০	২৪৭১	২৪৭২	২৪৭৩	২৪৭৪	২৪৭৫	২৪৭৬	২৪৭৭	২৪৭৮	২৪৭৯	২৪৮০	২৪৮১	২৪৮২	২৪৮৩	২৪৮৪	২৪৮৫	২৪৮৬	২৪৮৭	২৪৮৮	২৪৮৯	২৪৯০	২৪৯১	২৪৯২	২৪৯৩	২৪৯৪	২৪৯৫	২৪৯৬	২৪৯৭	২৪৯৮	২৪৯৯	২৫০০	২৫০১	২৫০২	২৫০৩	২৫০৪	২৫০৫	২৫০৬	২৫০৭	২৫০৮	২৫০৯	২৫১০	২৫১১	২৫১২	২৫১৩	২৫১৪	২৫১৫	২৫১৬	২৫১৭	২৫১৮	২৫১৯	২৫২০	২৫২১	২৫২২	২৫২৩	২৫২৪	২৫২৫	২৫২৬	২৫২৭	২৫২৮	২৫২৯	২৫৩০	২৫৩১	২৫৩২	২৫৩৩	২৫৩৪	২৫৩৫	২৫৩৬	২৫৩৭	২৫৩৮	২৫৩৯	২৫৪০	২৫৪১	২৫৪২	২৫৪৩	২৫৪৪	২৫৪৫	২৫৪৬	২৫৪৭	২৫৪৮	২৫৪৯	২৫৫০	২৫৫১	২৫৫২	২৫৫৩	২৫৫৪	২৫৫৫	২৫৫৬	২৫৫৭	২৫৫৮	২৫৫৯	২৫৬০	২৫৬১	২৫৬২	২৫৬৩	২৫৬৪	২৫৬৫	২৫৬৬	২৫৬৭	২৫৬৮	২৫৬৯	২৫৭০	২৫৭১	২৫৭২	২৫৭৩	২৫৭৪	২৫৭৫	২৫৭৬	২৫৭৭	২৫৭৮	২৫৭৯	২৫৮০	২৫৮১	২৫৮২	২৫৮৩	২৫৮৪	২৫৮৫	২৫৮৬	২৫৮৭	২৫৮৮	২৫৮৯	২৫৯০	২৫৯১	২৫৯২	২৫৯৩	২৫৯৪	২৫৯৫	২৫৯৬	২৫৯৭	২৫৯৮	২৫৯৯	২৬০০	২৬০১	২৬০২	২৬০৩	২৬০৪	২৬০৫	২৬০৬	২৬০৭	২৬০৮	২৬০৯	২৬১০	২৬১১	২৬১২	২৬১৩	২৬১৪	২৬১৫	২৬১৬	২৬১৭	২৬১৮	২৬১৯	২৬২০	২৬২১	২৬২২	২৬২৩	২৬২৪	২৬২৫	২৬২৬	২৬২৭	২৬২৮	২৬২৯	২৬৩০	২৬৩১	২৬৩২	২৬৩৩	২৬৩৪	২৬৩৫	২৬৩৬	২৬৩৭	২৬৩৮	২৬৩৯	২৬৪০	২৬৪১	২৬৪২	২৬৪৩	২৬৪৪	২৬৪৫	২৬৪৬	২৬৪৭	২৬৪৮	২৬৪৯	২৬৫০	২৬৫১	২৬৫২	২৬৫৩	২৬৫৪	২৬৫৫	২৬৫৬	২৬৫৭	২৬৫৮	২৬৫৯	২৬৬০	২৬৬১	২৬৬২	২৬৬৩	২৬৬৪	২৬৬৫	২৬৬৬	২৬৬৭	২৬৬৮	২৬৬৯	২৬৭০	২৬৭১	২৬৭২	২৬৭৩	২৬৭৪	২৬৭৫	২৬৭৬	২৬৭৭	২৬৭৮	২৬৭৯	২৬৮০	২৬৮১	২৬৮২	২৬৮৩	২৬৮৪	২৬৮৫	২৬৮৬	২৬৮৭	২৬৮৮	২৬৮৯	২৬৯০	২৬৯১	২৬৯২	২৬৯৩	২৬৯৪	২৬৯৫	২৬৯৬	২৬৯৭	২৬৯৮	২৬৯৯	২৭০০	২৭০১	২৭০২	২৭০৩	২৭০৪	২৭০৫	২৭০৬	২৭০৭	২৭০৮	২৭০৯	২৭১০	২৭১১	২৭১২	২৭১৩	২৭১৪	২৭১৫	২৭১৬	২৭১৭	২৭১৮	২৭১৯	২৭২০	২৭২১	২৭২২	২৭২৩	২৭২৪	২৭২৫	২৭২৬	২৭২৭	২৭২৮	২৭২৯	২৭৩০	২৭৩১	২৭৩২	২৭৩৩	২৭৩৪	২৭৩৫	২৭৩৬	২৭৩৭	২৭৩৮	২৭৩৯	২৭৪০	২৭৪১	২৭৪২	২৭৪৩	২৭৪৪	২৭৪৫	২৭৪৬	২৭৪৭	২৭৪৮	২৭৪৯	২৭৫০	২৭৫১	২৭৫২	২৭৫৩	২৭৫৪	২৭৫৫	২৭৫৬	২৭৫৭	২৭৫৮	২৭৫৯	২৭৬০	২৭৬১	২৭৬২	২৭৬৩	২৭৬৪	২৭৬৫	২৭৬৬	২৭৬৭	২৭৬৮	২৭৬৯	২৭৭০	২৭৭১	২৭৭২	২৭৭৩	২৭৭৪	২৭৭৫	২৭৭৬	২৭৭৭	২৭৭৮	২৭৭৯	২৭৮০	২৭৮১	২৭৮২	২৭৮৩	২৭৮৪	২৭৮৫	২৭৮৬	২৭৮৭	২৭৮৮	২৭৮৯	২৭৯০	২৭৯১	২৭৯২	২৭৯৩	২৭৯৪	২৭৯৫	২৭৯৬	২৭৯৭	২৭৯৮	২৭৯৯	২৮০০	২৮০১	২৮০২	২৮০৩	২৮০৪	২৮০৫	২৮০৬	২৮০৭	২৮০৮	২৮০৯	২৮১০	২৮১১	২৮১২	২৮১৩	২৮১৪	২৮১৫	২৮১৬	২৮১৭	২৮১৮	২৮১৯	২৮২০	২৮২১	২৮২২	২৮২৩	২৮২৪	২৮২৫	২৮২৬	২৮২৭	২৮২৮	২৮২৯	২৮৩০	২৮৩১	২৮৩২	২৮৩৩	২৮৩৪	২৮৩৫	২৮৩৬	২৮৩৭	২৮৩৮	২৮৩৯	২৮৪০	২৮৪১	২৮৪২	২৮৪৩	২৮৪৪	২৮৪৫	২৮৪৬	২৮৪৭	২৮৪৮	২৮৪৯	২৮৫০	২৮৫১	২৮৫২	২৮৫৩	২৮৫৪	২৮৫৫	২৮৫৬	২৮৫৭	২৮৫৮	২৮৫৯	২৮৬০	২৮৬১	২৮৬২	২৮৬৩	২৮৬৪	২৮৬৫	২৮৬৬	২৮৬৭	২৮৬৮	২৮৬৯	২৮৭০	২৮৭১	২৮৭২	২৮৭৩	২৮৭৪	২৮৭৫	২৮৭৬	২৮৭৭	২৮৭৮	২৮৭৯	২৮৮০	২৮৮১	২৮৮২	২৮৮৩	২৮৮৪	২৮৮৫	২৮৮৬	২৮৮৭	২৮৮৮	২৮৮৯	২৮৯০	২৮৯১	২৮৯২	২৮৯৩	২৮৯৪	২৮৯৫	২৮৯৬	২৮৯৭	২৮৯৮	২৮৯৯	২৯০০	২৯০১	২৯০২	২৯০৩	২৯০৪	২৯০৫	২৯০৬	২৯০৭	২৯০৮	২৯০৯	২৯১০	২৯১১	২৯১২	২৯১৩	২৯১৪	২৯১৫	২৯১৬	২৯১৭	২৯১৮	২৯১৯	২৯২০	২৯২১	২৯২২	২৯২৩	২৯২৪	২৯২৫	২৯২৬	২৯২৭	২৯২৮	২
------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	---

গীচরণ ও গিরিধারী এক শত টাকা
খানি নোট চুরি করাতে তাহাদিগের
সর বেয়াদ হইয়াছে।

গার্লান্দ মাল এক বেশ্যার কয়েক খানি
র অগরণ করাতে তাহাকে তিন বৎ-
সর গার্লান্দে থাকিতে হইবে।

হরিদাস নামক এক ব্যক্তি এক জনের বাড়ী
এক ঘেঁড়াত্তে তাহার ১১ বৎসর বীপা
বাসের আদেশ হইয়াছে।

দাম নামক এক ব্যক্তি কতকগুলি মলকান
কমিয়ার নকর নামক অপর এক ব্যক্তিকে
তিনিমিত্ত প্রথম বক্তির এক বৎসর ও
তীরের তিন বৎসর বেয়াদ হইয়াছে।

আনন্দ দাস এক ছড়া দোনার নেন চুরি
করিয়া বেণীনাথব চৌধুরীকে দেয়। তিনিমিত্ত
তাহার ৭ বৎসর বীপান্তর বাসের ও বেণীনা-
থবের এক বৎসর কারাবাসের আজ্ঞা হই-
য়াছে।

মদনমনি শাহা নেতায়ি মলিক ও খেদা
একখানি কাঁচপি মদনল চুরি করাতে
তাহাদিগের দুই বৎসর বেয়াদ হইয়াছে।

দীননাথ সেন ১০০ টা কার নোট চুরি ক-
রাইল বলিয়া তাহার দুই বৎসর বেয়াদ
হইয়াছে।

ইউরোপীয় সমাচার।

নোবেম্বর ১৩ই অক্টোবর।

অনেক পাদরী ও বোবন পক্ষীরেরা রাজা
বিক্রম ইয়ানিউয়েল বিক্রম বড়বড় করিয়া
ধৃত হইয়াছে। যে সকল কাগজ পত্র পুলিশদ্বারা
ধৃত হইয়াছে তাহারা বোম্বের গবর্নমেন্টের
কোষ সন্ধান হইয়াছে।

নোবেম্বর ১০ই অক্টোবর।

মাকিলন গটমাক নদীতে এক সেতু করিয়া
লরপার ফেব্রিতে গাব হইবার চেষ্টা আছেন।
কিন্তোহীরা যুদ্ধে বিবৃত হইয়া তাহার প্রতিরোধ
করিবার চেষ্টা একত্রিত হইয়াছে।

মিউকাননে মাদ্রোণ সাহেব বলিয়াছেন
বিক্রোহী সভাপতি ডেবিস সেনা ও রণতরঙ্গ
নংগ্রহ করিয়াছেন, অতএব তিনি শীঘ্র আ-
রী হইবেন। একজন জনপ্রতি ই লর্ডের গবর্ন-
মেন্ট শীঘ্র দক্ষিণ প্রদেশকে স্থায়ী বলিয়া
বীকার করিবেন।

নোবেম্বর ১৮ই অক্টোবর—আমেরিকা ও ইটালি-
বিষয় বিবেচনার্থ এক বিশেষ বক্তৃতা হয়।

২৫ই অক্টোবর—৮ই কেন্টিতে ভয়ানক যুদ্ধ
হইয়াছে। বিক্রোহীরা অনেক হত ও পলায়িত
হইয়াছে। গবর্নমেন্টের ৩০০০ লোক হত হইয়া-
ছে। বিক্রোহীরা পটমাক পার হইয়া চেমস'বর্গ
অধিকার করিয়াছে। গবর্নমেন্ট কাতি উপনিবে-
শের প্রজাতি ভাগ করিয়াছেন। বিক্রোহিদগের
তি পক্ষীয় সমাজ জীবিতগের রাজ্য বিষয়
ক বলিয়াছেন যে তিনি বঙ্গপূর্বক দেশ ল-

ক তুলার বস্ত্র। ইউরোপে বিক্রোহী প্রবণ
বেন।

নোবেম্বর ১৭ই অক্টোবর। মিউইবকে সাধারণ
লোকদিগের এক সভা হইয়া গিয়াছে। সভাপ-
তি লিঙ্কনের ঘোষণা পত্রের প্রতি দোষা-বা-
প কর হইয়াছে। বিক্রোহীরা পেনসিল চেন-
য়ার বড় রেইলওয়ে নষ্ট করিয়াছে।

নোবেম্বর ২৭ই অক্টোবর—ডি. ল্যাটোর অবগণ
বোম্বে, টালিরাও বাবলিন ও সার্ভেস টিউ-
নিং দুই হইয়াছেন। বাটেজি ইটালীর মজি-
ব'দর মধ্যে রহিলেন।

গারিবল্ডি অনেক স্থান হইয়াছেন। এওসে
বিক্রোহ হইয়াছে। ইহাতে মহা দন্দ আশঙ্ক
কর হইয়াছে।

নোবেম্বর ১৮ই অক্টোবর—বুবেমেল পদত্যাগ
করিয়াছেন। ডুহেন জিলেস তদীয় পদে নিযুক্ত
হইয়াছেন। কোল্ড ও পাবিসিগিলের পদ ত্যা-
গের সম্ভাবনা।

প্রদীর গবর্নমেন্ট পুনর্জীব আর বায়ব
হিসাবে পরিবর্তন করিয়াছেন। মহাসভা তা
অগ্রাহ্য করাতে রাজা সভা বন্ধ করিয়াছেন।
গারিবল্ডি অল্পে অল্পে আবেগ্য হইতেছেন।
তিনি সূত্র হইলে ইংলণ্ড দর্শন করিবেন।

বিক্রোহীরা করিহেব নিকটে গবর্নমেন্ট সে-
নাদিগকে আক্রমণ করে, কিন্তু দুই দিবস তরান
ক যুদ্ধের পর পলায়িত হইয়াছে। যাবতেন হে-
তে সম্রাট গারিবল্ডির বিরুদ্ধে এক সভা হইয়া
ভয়ানক রাজা হওয়াতে গবর্নমেন্ট লণ্ডন ও ম-
হানগরের প্রকাশ্য স্থানে সভা করিতে নিবেদ
করিয়াছেন।

গবর্নমেন্ট বিজ্ঞাপন।

বালুগানেশ্বর লেপ্টেনেন্ট গবর্নর

আদেশপ্রসারী নিয়োগ।

৩রা নবেম্বর। নিম্নলিখিত কর্মচারীরা
আপনি আপন জেলার ফেরিক ও কবিত্র মো-
র হইবেন।

যেহর এ. এড. প'টর্ন, পাটন'ন পুলিহেব
ভিক্রিক সুপারিটেণ্ট হইবে

কাল্পেন রিবার টিহেডের
কাল্পেন, সিংহাই সাহাবাদের
কাল্পেন সি. ডি. এস. ক'র্ক, বেচারেন
লেপ্টেনেন্ট আর. এম. সিমার সাহাবাদের সহকা-
রী পুলিহ সুপারিটেণ্ট।

৪ঠা নবেম্বর। সালকীয়ার বুদ্ধের বাবু ন-
কোতম মলিক বজ্রেশ্বর বাবদাপক সভার ৬
আইন অনুসারে হাওদার ডেপুটি কালেক্টরের
কমন্ড পাইবেন

৫ই নবেম্বর। যতদিন ডাক্তর জুনা আসি-
বেন ততদিন সব ডাকিটালী সরজন বাবু ছার-
ক. নাথ ভট্টাচার্য ভগলপুরের বিলরেজারেন
চিকিৎসার ভার পাইবেন।

৬ই নবেম্বর। আর. জে. কটনাচর বেহারের
সিবিল ও সেনিয়ার জজ হইবেন কিন্তু যতদিন

অনাকান আজ্ঞা না হয় রাজসাহীর প্রতিনিধি
ক'মিসনর থাকিবেন।

পাটনার প্রতিনিধি সিবিল ও সেনিয়ার জজ
ই.এফ. ল্যাটোর সাহেব তথায় স'প' সিবিল ও
সেনিয়ার জজ হইবেন।

এ.আর. টমসন সাহেব হাওদার মাজি ইট
ও কালেক্টর হইবেন। কিন্তু যতদিন অন্য কো-
ন আজ্ঞা না হয় নলিয়ার প্রতিনিধি সিবিল ও
সেনিয়ার জজ থাকিবেন।

এম.সি.জাউল সাহেব রাজসাহীতে প্রথম
প্রমোদ মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন কিন্তু
যতদিন অন্য কোন আজ্ঞা না হয় সাহাবাদের
প্রতিনিধি সিবিল ও সেনিয়ার জজ থাকিবেন।

জে.আ.স. মদপ্রাট সাহেব রাজসাহীর প্রতিনি-
ধি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর থাকিবেন।

এচ.সি. সদরলগ্ন র'জসাহীর প্রতিনিধি জা-
ইট মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

বাবু দ্বিগম্বর বিখাস মদ'সদাবা দব ছে ট
আজালভের প্রতিনিধি জজ হইয়া উক্ত জেলা-
র সদর আদালত কমতা পাইবেন।

পাটনার ছোট আদালতের জজ ডবলিউ,
নাইট সাহেব নিজ কর্মচারীত কুনার খানব
এ প্রতিনিধি জজ হইবেন।

বেববেগ আর সু. গু. মদমদাব পুবে'হিও হই-
বেন।

বেববেগ ডবলিউ এয়ারট গের্কাটির পু-
রো'হিও হইবেন।

প্রদীর প্রতিনিধি সিবিল আর্সিষ্টেট লব-
জম'পি,এক, বিলু সাহেব বজ্রহানে সম্প'র্ক পদস্থ
হইবেন। ময়মন সিংহের প্রতিনিধি সিবিল
আ মদ'ট লরজন আর. বানবলি সাহেব তথায়
স'প'র্ক পদস্থ হইবেন।

গের আর্সিষ্টেট মরজন বাবু অরদাওণ কা-
ল'গরি বদিস'দের দাতা চিকিৎসাল. প্রব ভার
পাইবেন।

১লা নবেম্বর—লেপ্টেনেন্ট এক হেগালন
পত জাল্লু বিমা'সন লা অব'ব কামরুপ দে
জিহেটের প্রতিনিধি ১১৬৮৩০ হইয়াছেন।

আলামেদ অক্সপোর্ট বেসেটের প্রতিনিধি
মহাকাবী কমিসনর এ. সি. সাহেব সাহেব সদর
আমিনের কমন্ড পাইয়াছেন।

বালেশ্বরের প্রতিনিধি ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট
ও ডেপুটি কালেক্টর মোল্লী গোলাম সফদর
নিজ ক'মন্ড নিউগেটের বিচারের কমন্ড প্র-
দ হইয়াছেন।

৭ই নবেম্বর—মেসর আর'এল টমসন ১ গ
বিভ বজ্রেশ্বর পুল লব সেনাদলের অধ্যক্ষ হই-
য়াছেন।

পাটনার ২৭ নবেম্বর ডেপুটি ইমি স্ট্রিক জে-
নসন ২৭ নবেম্বর ডেপুটি ভগলপুরের ডে-
নসন হইবেন।

হো বজ্রেশ্বর প্রথম প্রমোদ-
স্ট্রেট হইবেন।

নোব ২৭ নবেম্বর। বিজীর জেবীর সাহাবারী
পুলিহ সুপারিটেণ্ট লেপ্টেনেন্ট ওয়েদারল
সাহাবাদের বঙ্গী হইয়াছেন।

“ प्रवर्शतां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्यती श्रुतिमहतो न हीनतां । ”

ਸਾਹਿਤ ਅਧਿਐਸ਼ ੧੦

এই বিবর্ত লঙ্ঘন। সমাচার পত্র
 পত্র মহলে উৎসাহ আন্দোলন
 করেছিল। অনেক উক্ত বস্তু
 পত্র একদিকে উৎসাহ করিয়া
 বিবেচন। উৎসাহ মানবিক

আমরা কখনো কখনো ভেতর হলে
সেই অলীক বাক্যে ভীত হইবেন, এত
অসার নহেন। বিপক্ষগণ ত্রিটিস জাতির
নিকটে খন্দোস্ত স্বরূপ। তাহাদিগের না
বহু অগ্রবল, না আছে শিক্ষা নৈপুণ্য।
। আছে সেনাপতি; তাহারা কতক্ষণ ত্রিটি-
স গবর্নমেন্টের সহিত প্রতিযোগিতা করি-
তে সমর্থ হইবে?

গবর্নমেন্ট অনুমোদিত অসংপরা-
মর্ষিদিগের বাক্যে একটি জাতিকে যে উ-
জ্জ্বল করেন, ইহা কোন ক্রমেই আমাদি-
গের অনুমোদিত নহে। তাহারা আত্মপৌ-
রুষ করিয়া উল্লিখিত বন্যজাতীয়দি-
গকে আংশিক স্বাধীনতা এতদন পূর্বক বা-
গতে বিবাদের শেষ করিতে পারেন, সেই
কর্তব্য করুন। তাহাতে তাহাদিগের মহ-
ত্বের বৃদ্ধি বিনা কুসংস্কার হইবে না। যদি তা-
দিগের একপ শক্তি থাকে যে বন্য জাতী-
রা সময়ে সময়ে ত্রিটিস অধিকার মধ্যে
বিস্তৃত হইয়া উপদ্রব করিবে, রাজ্যের
স্বাধীনতার নিয়মিত সৈন্য রাখিয়া নি-
লই সে শক্তি দূরীভূত হইতে পারে। অ-
মের রাজ্য অধিকার করিয়া স্বাধিকার
করিয়া এবং অন্য অন্য জাতির উজ্জ্বল
কর্তব্য করা বিস্তৃত রাজনীতির অনুমোদিত
নহে। এতৎ কার্য বা ১২তম অর্থ
হইয়া থাকে। ত্রিটিস গবর্নমেন্ট বহু
জাতীয় প্রাণ প্রাপ্ত হইয়াছেন। এই
জাতীয় রাজনীতির অনুগামী হইয়া
কর্তব্য করিয়াছিলেন বসিয়া
তাহারা সফল হইতে পারিতেন

এতৎ সংক্রান্ত যে আইন আছে, তাহা ভ-
গ্নিরণ বিষয়ে প্রযোজ্য হয় না। এতদ্বি-
ক্ষন চতুর্দিক হইতে কর্তব্য ও আর্ড বিলাপ
ও আবেদনহীন সক্রিয় জাতি গোচর হইয়া
পাকে। রাজপুরুষেরা এত যে অনামনক,
তথাপি এই কর্তব্যহীন জাতাদিগের জাতি
পথের উদ্বোধনকারী হইয়াছে। গত ১৫ই
নবেম্বরের বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভায় এই
কথা উত্থাপিত হইয়া শ্রী আইন সংশোধন
পূর্বক একটি মতন আইনের পাণ্ডুলেখ্য
করা হইয়াছে এবং এই পাণ্ডুলেখ্য সিলেক্ট
কমিটির বিবেচনার্থ সমর্পিত হইয়াছে।
অভ্যবোকেট জেনরল, বাবু প্রমথকুমার
ঠাকুর, মৌলবী আবদুল মতীক এবং আ-
লেন সাহেব ইহারা সিলেক্ট কমিটির অ-
ন্তর্নিবেশিত হইয়াছেন। আলেন সাহেব
এই আইনের প্রস্তাবকর্তা। প্রস্তাবিত
আইনের তৃতীয় ধারায় এই বিধান করা
হইয়াছে যে কর্তব্যচারী আইনের বিরুদ্ধ
ব্যবহার করিবেন, তাহার ২০০ টাকা অ-
থবা দুই মাস কারাবাস মণ্ড হইবে। বি-
জোহানি কালে মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টরা-
দি দ্বারা বঙ্গপূর্বক শকটাদির আহরণ প্র-
স্তাবিত আইনের অননুমোদনীয় নহে।

সৈনিক পুরুষেরা মকদ্দমে যে প্রকার
অত্যাচার করে, তাহা তাহার অবিকলিত
নাই। তাহার পরিচয় প্রদানার্থ অধিকতর
প্রয়াস পাইতে হয় না। গোয়ার পল্টন
আগিতেছে সুনির্নে প্রায়ের লোকেরা গৃহ-
দ্বার রুদ্ধ করে এবং দোকানী দোকান
বন্ধ করিয়া পলায়নপর হয়। ইহাই এই
অত্যাচারের উৎকর্ষ পরিচায়ক। বাবু
প্রমথকুমার ঠাকুরও ইহার বিষয় সম্ভার
গোচর করিয়াছেন। সৈন্য মধ্যে এই নি-
য়ম আছে, সৈন্যের যাত্রাকালে কোয়ার্টার
মুঠের ও তাহার কয়েকজন অনুচর সঙ্গে
যান। যে দিবস যে স্থানে হাউস হইবে,
তিনি তাহা কয়েকজন করিয়া ইহাদের প্র-
শ্নবোধের দ্বারা জানা যায়। এই শর্ত

সংগ্রহ করেন। সেই সংগ্রহ কালজী অ-
ত্যাচার হইবার একটি প্রথম কাল। কো-
য়ার্টার মার্টরের অনুচরেরা এই সময়ের
প্রতিভাকে সুন্দররূপে চরিতার্থ করিয়া
লন। তাহাদিগের তদানীন্তন ব্যবহার এ-
মনি মনোহর যে তাহার প্রশংসা করিয়া
শেষ করা যায় না। বোধ কর, তাহাদিগের
শকট প্রয়োজন হইয়াছে, তাহারা জমিতে
বগাধী হইয়া বহির্গত হইল; কিন্তু কু-
দেখিল, কয়েকখানি শূন্য শকট ও কয়ে-
খানি প্রাপ্য শকট যাইতেছে; সেই
পূর্ণ শকটের দিকেই সর্বপ্রথমে তাহাদিগের
দৃষ্টি নিপতিত হইবে; তদবগোধ্য হই তা-
হারা নিতান্ত বাগ্রমণা হইবে; শূন্য শকট
চলিয়া গেল গেল, তাহাতে তাহাদিগের
জ্ঞান নাই। পূর্ণ শকট রুদ্ধ হইলে তাহারা
মিরা দাতার হইয়া তাহাদিগের শরণাগত
হয়, এবং তাহাদিগের প্রসাদন ও প্রীতি
সম্পাদনের যে উপায় আছে, তাহা করিয়া
মুক্তি লাভ করে। প্রীজনপূর্ণ শকট দৃষ্টি
পথে পতিত হইলে উক্ত অনুচরদিগের
আজ্ঞাধীন পরিমিত থাকে না। উল-
্লেখ্য তাহাদিগের রসরস প্রভৃতি ও অর্থ
লোভ উভয়েরই চরিতার্থতা হয়।

কোয়ার্টার মার্টরের অনুচরদিগের
গুণ ত এই বর্ণিত হইল, তাহার পর
প্রকৃত সৈনিক পুরুষেরা আছেন। তাহারা
শিষ্কারবদ্ধ আপদের ন্যায়। স্বপ্নমাত্র
কাল স্বাধীনতা লাভ হইলে তাহারা দীর্ঘ
কালের বিরুদ্ধ অনোরথ পূর্ণ করিয়া লয়।
তৎকালে প্রজাগণের ধন, মান ও প্রাণ
রক্ষা সংশয় হল হইয়া উঠে। পাঠকগণ
একপ বিবেচনা করিবেন না যে বাহাতে
সৈনিকদিগের অত্যাচার নিবারিত হয়,
আকিসরদিগের মে চেষ্ঠা নাই, সে চেষ্ঠা
বিলক্ষণ আছে। সৈন্য সংক্রান্ত আইন ও
সংসদীয় প্রকৃত অত্যাচার কঠিন। আকি-
সরদিগের চেষ্ঠা হইলে অত্যাচারকারী
সৈনিকদিগের চেষ্ঠা নাই। কিন্তু অত্যা-

সৈনিক পুরুষের অত্যাচার করিবার
উপায়।
সৈন্যের যাত্রা
আহরণার্থ
অত্যাচার করে।

আমরা হুগ্ধিত হইয়া একাশ করিয়া
পাতিয়ালায় মহারাজ নরেন্দ্র সিং
পরিভ্রমণ করিয়াছেন । তাঁহার কাল
সম্বন্ধরবতী হইয়াছিল, তিনি তা
আমিতে পারিয়াছিলেন । এই
পূর্বেই ভাঙ্গতবধীর ব্যবস্থা
তে অবসর গ্রহণ করেন । কি
তিনি আশ্রয় করিয়াছেন ।

৭.৫০। করেন নাই। নরেন্দ্র সিংহ ১৮৪৫
 ৮.৫০। নরেন্দ্র সিংহাসনে আরোহণ করেন। এই
 ১০ বৎসর কাল তিনি খীর রাজ্য সুন্দর
 ১১.৫০। করিয়াছিলেন। কুম্ভকার তাঁ-
 ১২.৫০। হার সৈন্যবর্গ। অন্য অন্য রাজার ন্যায়
 ১৩.৫০। প্রায়শ্চেষ্টে সম্পূর্ণরূপে স্বপুত্র
 ১৪.৫০। রাধিকে পারে নাই। অপর দিন
 ১৫.৫০। হইল, তিনি ভ্রাতৃ বিধবানিগের আংশিক
 ১৬.৫০। কষ্ট নির্যাসের উপরিক যে আজ্ঞা প্রদান
 ১৭.৫০। করিয়াছিলেন, তদ্বারা তাঁহার চিত্তের উ-
 ১৮.৫০। দারভাবের পরিচয় পাওয়া গিয়াছে
 ১৯.৫০। ১৮৫৭ অব্দের বিদ্রোহ কালে তিনি নিজ
 ২০.৫০। রাজ্যকে শান্তভাবে রাখিয়া গবর্ণমেন্টের
 ২১.৫০। যে সহায়তা করিয়াছিলেন, তদ্বারা তাঁহার
 ২২.৫০। রাজনীতিজ্ঞতা ও প্রভুত্বের সবিশেষ প-
 ২৩.৫০। রিচয় হইয়াছে। তিনি অতিশয় বলবান ও
 ২৪.৫০। ছিলেন। সাধুতা ও সরলতা তাঁহার
 ২৫.৫০। সুসিদ্ধ গুণ ছিল। তাঁহার একটি পুত্র
 ২৬.৫০। হইল। তাঁহার বয়স চতুর্দশ বর্ষ।
 ২৭.৫০। কুম্ভারাজ নরেন্দ্র সিংহ তারতবর্ষীয় বা-
 ২৮.৫০। র্মপক সভার সভ্য পদে প্রতিষ্ঠিত হি-
 ২৯.৫০। ন। তাঁহার হৃদয় হওয়াতে তৎপদ শূন্য
 ৩০.৫০। হইল। এক্ষণে কোন ব্যক্তি তৎস্থানে নি-
 ৩১.৫০। যুক্ত হইবেন? এই প্রশ্নের সমাধান
 ৩২.৫০। প্রাপ্ত হইয়াছে। কেহ কেহ রাজা মান-
 ৩৩.৫০। কেহ কেহ কপূরতলার রাজাকে
 ৩৪.৫০। নির্বাচিত হইল। কিন্তু আমাদের মন
 ৩৫.৫০। মানসংগে প্রতি পক্ষপাতী হই-
 ৩৬.৫০। ন। কপূর রাজ্য এক ইষ্ট
 ৩৭.৫০। হইলে কুম্ভার পক্ষপাত করিয়াছেন।
 ৩৮.৫০। তবে তাঁহার অন্য জমিদার বনিয়া
 ৩৯.৫০। দের বিবাস হইয়াছে। একপক্ষের
 ৪০.৫০। পক্ষপাত সভ্য পদ প্রাপ্ত হইলে
 ৪১.৫০। কপূর রাজ্যকে সপ্রায় দ্বিভিত্ত
 ৪২.৫০। করিবেন না।
 ৪৩.৫০। অপর দিকের আর একটি প্র-
 ৪৪.৫০। শ্ন, তাহা এই যে, প্রস্তাবের অপ্রা-
 ৪৫.৫০। প্ত্য নহে। এই অবস্থায় উ-
 ৪৬.৫০। দ্বিতীয় বা- দেশের এক জন

প্রতিনিধি গ্রহণ করা অতিশয় আবশ্যক।
 এতদ্বারা কেবল যে বাঙ্গলা দেশের চিত্ত
 রঞ্জন ও জীতি সম্পাদন করা হইবে এ-
 কপক্ষে, ইহা এই প্রদেশের আন্তরিক
 ভাব অবগত হইবার এবং অনেকবিধ
 শ্রেয়ঃ সাধনের দ্বার স্বকপ হইবে। সভা
 হলে যখন যে প্রদেশের সুভাষিত সি-
 ধান প্রস্তাব উপস্থিত হয়, তৎপ্রদেশীয়
 প্রতিনিধিরা কি অন্তত পরিচর ও স্তম-
 সস্থিধানের প্রাণ পণ চেষ্টা পান না?
 দুই একপক্ষ চেষ্টা ব্যতিরেকে কি সমা-
 কপে ইচ্ছালাভ সম্ভবনা আছে? ইংলণ্ড
 প্রভৃতি স্থানে প্রতি জিলার প্রতিনিধি
 গ্রহণ রীতি প্রবর্তিত হইয়াছে কেন? বা-
 ঙলা দেশীয়েরা তারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক
 সভাকে আত্মীয় ভাবে দর্শন না করিয়া
 উদাসীন ভাবে দর্শন করেন, ইহা কোন
 ক্রমে প্রার্থনীয় নহে। কিন্তু যদি প্র-
 তিধি গৃহীত না হইল, ঐ সভার প্রতি এ-
 প্রদেশের আত্মীয়ভাবমান জগিবার সম্ভা-
 বনা কি? এ স্থলে আর একটি চিন্তা ক-
 রাও আবশ্যক। তারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক
 সভা এক্ষণে গবর্ণর জেনারেলের নিম্ন সভা
 বলিয়া গণিত ও সমানিত হইয়া থাকে।
 এখন উহার উপরে গবর্ণর জেনারেলের
 সর্বতোমুখী প্রভুতা আছে। উহার এই
 অবস্থাই কি চিরকাল সমান থাকিবে?
 ক্রমে যখন উহার উপরে তারতবর্ষীয়দিগের
 প্রভুতা ও আত্মীয়ভাবমান জগিয়া তারতব-
 র্ষীয় ব্যবস্থাপক সভা এই নামটি অধ-
 হইবে, তখনও কি বাঙ্গলা দেশ বঞ্চিত
 থাকিবে? বাঙ্গলা দেশ কি তারতবর্ষের
 অংশ নহে? এই সময়ে তাহার স্বত্বপাত
 না হইলে তৎকালে কি অপর তারতব-
 র্ষীয়েরা বঙ্গ দেশকে উদাসীন দৃষ্টিতে
 দর্শন করিবেন না? এখান পুরুষেরা বঙ্গ
 দেশের প্রতি এক নিরমুগ্ধ হইয়াছেন
 কেন? এখানে যোগ্য প্রতিনিধি মিলে না
 বলিয়া কি উদাসীনতার সহকারে জগিয়া
 হইয়া থাকে।

হে? না, বঙ্গ দেশে বর্ণমণ্ডলের কোন
 স্নাত নাই, ইহা বেবল উপাত্ত স্বকপ হই-
 রা আছে, এই বিবেচনা করিয়া তাঁহারাইহার
 উপরে বিরক্ত হইয়াছেন? কিন্তু আমরা
 স্পষ্টাক্ষরে কহিতে পারি, তারতবর্ষের
 অন্য অন্য স্থানে বঙ্গ দেশের ন্যায় যোগ্য
 প্রতিনিধি স্নাত সহজ নহে। বঙ্গ দেশ
 গবর্ণমেন্টের উপকারী কি না, তাহা বঙ্গ
 আত্মীয়দিগের অধিক ব্যক্ত নাই, এষ্টমাত্র
 বলিলেই পর্যাপ্ত হইতে পারে, যখন তা-
 রতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের বাধিত আর না-
 রতবর্ষ একাশিত হয়, তৎকালে বঙ্গদেশের
 আর সর্বোপরি প্রধান পক্ষে দেশীপায়ান
 হইয়া থাকে।

—

তারতবর্ষীয় প্রতিনিধি
 বেলভগ্ন।

গবর্ণর চড়া পড়তে এখন আনু-
 বৃত্ত জাহাজ কলিকাতায় আসিতে পারে
 না। এক শত বৎসর পূর্বে রণতরির মা-
 ধাক ওয়াটসন ক্রাউবের সহায়তায় হই-
 রা চন্দন মগর পর্যন্ত বড় বড় যুদ্ধ-
 জাহাজ গিয়াছিল। মির কাশিমের
 সময়ে মধ্যবিধ সওদাগরী জাহাজ মুর্সি-
 দাবাদ পর্যন্ত গিয়াছে। কিন্তু এখন বর্ষ-
 কাগেও সামান্য বাষ্পীয় জাহাজ চড়ায়
 আটকিয়া যায়। এই কারণে, বারাক-
 হেড লগুনের যেকপ কলিকাতার একপ
 একটি বাহির বন্দর আবশ্যক হইয়া উঠে
 মাতলাকে সেই বন্দর পরিবার ও তথা
 হইতে রেলওয়ে দ্বারা লব্ধ সামগ্রী আনি-
 বার প্রস্তাব হইয়া রেলওয়ের কার্য অব-
 স্ত হয়। এই কার্য প্রায় শেষ হইয়া আসি-
 য়াছে। শুনা বাইতেছে, এই অনুযায়ি
 মাসে মাতলা পর্যন্ত গাড়ি চলিবে। এ-
 দিকে জাহাজের অধিক আশ্রয়ী দেখি-
 রা গবর্ণমেন্ট কলিকাতা হইতে তারতবর্ষ-
 বন্দর পর্যন্ত একটি স্বতন্ত্র রেলওয়ে প্রস্তুত
 করিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। এই বিষয়ে

আমরা ২৮এ কাঠকের চাকারপ্রকাশ দেখিয়া যার পর নাই মুগ্ধ হইলাম। এই পত্র বঁহাজিগের সম্পত্তি, তাহার নিত্যকর্ম কাপুরুষোচিত ব্যবহার করিয়াছেন। পূর্বতন সম্প্রদায়িক তত্ত্ব্য দেশহিতৈষী সত্যি, স্বাধীন হত্যাত বনি করিয়াছিলেন। স্বাধীনতা ও স্বাধীন নব্য সম্প্রদায়ের কয়েক ব্যক্তির অসম্মত ব্যবহারের বিষয় লিখিত হইরাছিল। এই অপরাধে অধ্যক্ষেরা তাহাকে দণ্ডিত করিয়াছেন। সম্প্রদায় কি বিধা? কখন লিখিয়া ছিলেন? চাকারপ্রকাশ আচার্যগণের ন্যায় আচার্যের পূর্বে আচার্য্য ই ন্যায় পাঠ্য হিলাম, কেমন চাকারপ্রকাশে লিখিত রীতি প্রকাশ হইয়াছে? আমরা তাহা প্রকাশ করি নাই। অধ্যক্ষেরা তাহাকে অন্তরোণে অধ্যা আচার্য্যের অন্তরোণে যখন আচার্য্য পাঠ্য আচার্য্য হইয়াছে, তখন চাকারপ্রকাশ হইতে যে উপায় লইয়াছেন তাহা হইয়াছিল, তখনই যে আমরা প্রকাশ হইলাম। অধ্যক্ষেরা বিলাপ করিয়াছে যেমন দেশে দেশের ও কানী

- **সেতনের পুর আশিষ্টার সেট**
 কালিকো গবেষণ সনাত্তে তপার আত্মা নে

লযোগ উপাধিত হইবার পরে
 হিন্দু ও মুসলমান ধর্মকে বিচারিত
 হইয়াছে। ধর্মকে এইরূপে বিচার
 তাহার শিখা এক জন শিক্ষক, কখনো তা
 কার পাঠের অত্যন্তকতা করা হইয়াছে। ত
 হ্যতা অধিক তাহাকে বইতে ও করিয়া দিতে
 অসম্মত হইয়াছেন। বহিস্কারে এই প্রকার
 এক বেজার প্রহণ হইয়াছে পায় মাই।
 সেজন্য প্রকৃতির ন্যায় বিচারের প্রকৃতি
 দ্বারা প্রবর্তিত হইবার এখন অনেক বিচার
 আছে।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

অন্যথা। ধর্মকেই বস্তুত, গুণা'ভূত ২।
গণিত সেনাবলের দুই জন আফিসের এক
জীমোককক ডায়ায়, প্রাচীর, গড়নে কল, একর
কররাছে। এক ব্যক্তি বস্তুত, কতি চরিত্রা
করিতেছিল, প্রাচীর, অপর গণিত এক বস্তুত
লটনা প্রাচীর কার্য করে। এই নিমিত্ত করে
তা মোকেরা ডায়াফিরকে ডাকতে আতি
লিতে পারে নাই। ডায়ায়, এনেলে, ইটরো
পীর উপনিবেশের সপকতা করত, ডায়ায়
এই সকল দেখিয়া গরিলাম বিবেচনা করিয়া
দেখুন, এনেলে, ইটরোপীর উপনিবেশ হইলে
এনেলের কিংল দুইয়। বটিলে। এই দুই দুয়া
তা হাইকোর্টে আনীত হইয়াছে।

লাহোর ক্রমিকেন 'বঙ্গেন', হস্তাকারী
লেপ্টন-ই অকসনের 'সামরিক' বিজ্ঞানসমূহ
টিং হইবে। যোদ্ধাইয়ের 'একজন' ব্যক্তি
তাঁর পক্ষ সমর্থন করিবেন। তাহাঁই যে সকল
লক্ষ্য তাহার 'আজীবন' হইবে 'বঙ্গেন'-
য়ার প্রাণ বৎ বিধে 'সাহস' করে, তাহারি-
গকে সাক্ষ্যদেয় 'আজীবন' করা হইবে।
আমরা দেখিল 'সামরিক' বিজ্ঞানসমূহ 'বঙ্গেন'
কমাইটোয়ার 'সাহস' বিজ্ঞান কি না।

শ্রবণের জন্য এই ভেবে গিয়াছে পানকার
উপান্যস্তিত্তি যে সাধারণ কুসিদ্ধি। এক
জন পানকারী কত দৌক এক দিনে কত পারে
দিয়া বিচারালয়ে দান সে দিই তাহাকে কোন
কথা কহা হয় নাই, কেবলমাত্র তাহাকে এক
চৌকী দেওয়া হয়। পর দিবস জন্ম তাঁর কে
বুড়া, ভাগ্য কুসিদ্ধি অসিদ্ধি লক্ষ্যে, তাহাতে
উত্তরে অনেকের দান প্রণয় হয়।

[illegible]

সিনিয়র জগদগুরু মহোদয়ের সংবাদদাতা বলেন, তদন্তে একজন অধীকার করেকটি পরামর্শ প্রদান করিয়া কর্তৃক কর্তৃক চেষ্টা পান। প্রচার্য পূর্বতম যৌথন রাজ্যসিঙ্গের নন্দ প্রকৃতি বা হ্রস্ব করে। সর্ব প্রায় ২-লক্ষ টাকার দাবিতে মালীক হইয়াছিল। তদন্তে প্রথম সমস্ত আদান এমিনয়ের বিচার করিয়া অধীকারের প্রার্থনা অগ্রাহ্য করিয়াছেন। মালীক পক্ষপাতী বিচারকসিঙ্গের নিকটে কিন্তু অনেক সময়ে নন্দ প্রকৃতি বা হ্রস্ব করে।

১ই অগ্রহায়ণ বৃহস্পতিবার ৪
রুমীর নবাবসেই টেলিগটসর্ব হইতে
শিক্ষিত পৰ্য্যন্ত এক টেলিগ্রাফ কর্তৃত্ব করেন ।
এদিকে টিহারান পৰ্য্যন্ত আর এক টেলিগ্রাফ
হইয়াছে । আত্মনির্ভর পারুল দেশীয় টে-
লিগ্রাফ গজ কঙ্কণ তার অবলম্বন করিয়া-
ছেন ।

অনওয়ার ৩ মাকোরারের মালিক। এ-
ভ্যে এক মাকোরারের মালিকদের সাহায্য
২০০ টাকা দিরাছেন। গবর্ণর ছেনরল পুনর্দা
২০০ টাকা দিরাছেন। এই সকল লইয়া ক-
লিকাতার বন্দিক সন্ত্রাসের জন্য শুধ ১০
১০,০০০ টাকা প্রেরণ করিতে সর্ব্ব হই-
রাছেন। উক্ত পুস্তিকাকলের মুক্তিদের অব-
শিষ্ট ৫ টাকা আছে, তাহার প্রায় ২০০
মাত্র টাকা ইহা পূর্ব্বান প্রতিপাদিত হইতে
হে, এই যেহু কথা হইতে প্রাক্তন টাকা
প্রেরিত হইবে ৩।

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]

১। বঙ্গদেশের রেলসেটের গণনা করিয়া
দেই প্রকার মত হইয়াছে। একটি সাহেব
এই অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন
যে সোনাপুর হইতে বাকুনা রেলওয়ের
এক শাখা বাহির করিয়া কুশি, অথবা
ময়নগুহারবর পর্যন্ত এই রাস্তা লইয়া যা-
ওয়া হয়। সোনাপুর হইয়া ময়নগুহারবর
পর্যন্ত রেলওয়ে করিলে ১৮ কোশ প-
থ অধিক দূর হয় না, আর কুশি পযা-
ন্ত করিলে ২২ কোশ হয়। বীডন সাহেব
এই সাহেবের প্রস্তাবে অনুমোদন না
দিয়া কলিকাতা হইতে এককালে ডায়-
মণ্ডগুহারবর পর্যন্ত একটি যত্ন রাস্তা করি-
য়া প্রস্তাব করিয়াছেন। কলিকাতা হই-
তে ডায়মণ্ডগুহারবর ২৪ কোশ মাত্র। সো-
নাপুর হইয়া বাইতে গেলে ১৮ কোশ
। বীডন সাহেবের প্রস্তাব গৃহীত হই-
লে ১৮ কোশ পথ কমিয়া যায়। এক্ষণে
এই উভাবিধ প্রস্তাবের গুণ দোষ বিবে-
চিত হইতেছে।

আমাদিগের মতে সোনাপুর হইয়া কু-
শি পর্যন্ত রেলওয়ে করিবার প্রস্তাবটিই
সমধিক যুক্তিসঙ্গত হইতেছে। এ দিকে
যেমন পথ কিছু অধিক হয়, তেমন এ দিকে
লাভ অধিক হইবে। এই নিকেই অধি-
ক লোকের বশিষ্ঠ। লোক সকল নিত্য
নিরম ও নহে। আরোহী ও অন্য অন্য
বাণিজ্য জ্বা, উভয়েরই প্রাচুর্য হইবার
দিলক্ষ্য সম্ভাবনা আছে। অতীতকালে, কলি-
কাতা হইতে সরল রেলের এককালে ডায়-
মণ্ডগুহারবর রাস্তা করিলে নিঃসংশয় এ লাভ
লাভ হইবে। সেক্ষণে রেলওয়েতে গমনা
এমন করিবার যোগ্য লোক অধিক নাই।
অপর, কুশিতে বঙ্গদেশ হইলে তথায় বড়
এক জাহাজ আনিতে পারিবে, ডায়মণ্ডগু-
হারবরে সেজন্য হইবে না। সেখানে জাহাজ
না।

আমরা আরও জানিলাম যে বঙ্গদেশে
পূর্ব বাঙ্গলার রেলওয়ে করিয়া

করিবেন। দুইটি বাহ্যিক পথ শুধা করি-
বার প্রস্তাব প্রাচুর্য হইয়াছে এবং তদর্থ
ইঞ্জিনিয়ার প্রকৃতি নিয়োজিত হইয়াছেন।
যশোহর হইয়া করিমপুর পর্যন্ত শাখা প্র-
স্তাব করিবার যে প্রস্তাব হয়, তাহা কি
হইল? কুশিয়ার সম্মুখে চড়া পড়িয়াছে
তাকা ও আসামের বাণিজ্য করিমপুর
ও যশোহর দ্বিরাই করিতে হইবে। এ
দিকে শাখা না করিলে রেলওয়ে কোম্পা-
নির লাভ হইবে না। কলিকাতার বার
আনা তমাক ও শুড় বারাসত হইতে না
হইলে। যশোহর হইতে খানা, তমাক, শুড়
সর্বপ প্রভৃতি নানাবিধ জ্বের আমদানী
হয়। যদি ঢাকার বাণিজ্য পূর্বের নায
জলপথে হইতে থাকে এং সেকেনে
গরুর গাড়িতে করিয়া বারাসত ও যশো-
হরের জ্বের আমদানী হয়, তাহা হইলে
পূর্ব বাঙ্গলার রেলওয়ে কোম্পানি কি
কেবল রাজসাহী, নদীয়া ও পাবনার জ্ব-
ব্য লাভ করিতে পারিবেন?

পরিদর্শকের সম্পাদক পরিবর্ত ও
কলেবর রক্ষি।

এই অগ্রহায়ণ মাসের প্রথম দিনাবধি
পরিদর্শকের সম্পাদক পরিবর্ত ও কলে-
বর রক্ষি হইয়াছে। এ ছুটিই আমাদিগের
আনন্দের হেতু হইয়াছে। পরিদর্শক দৈ-
নিক পত্র। পাঠকগণ দৈনিক পত্র দ্বারা
বহু বিষয় অবগত হইবার বাসনা করেন।
কিন্তু এত দিও উহার যেকোন ক্ষুদ্র অবয়ব
ছিল, তাহাতে আমাদিগের মনোরথ পূর্ণ
হইবার সম্ভাবনা ছিল না। এখন উহার
আকার বৃদ্ধি হইয়াছে। এখন আত্মা অ-
নেক বিষয় উহাতে সমাবেশিত হইবে।
দ্বিতীয় আমাদিগের বিষয় এই, প্রকৃত বার
কালীএসময় নিম্নে সম্পাদক্য তার প্রাচুর্য
করিয়াছেন। বঙ্গদেশের উদ্ভিদ কুশি
তাহার পরিদর্শক পরিবর্ত ও কলেবর
তিনি লোকসাহী হইবেন। পরিদর্শকের আ-

য়ের স্থানিতা দর্শন করিলে তিনি
মোৎসাহ হইবেন, সে সম্ভাবনা
বৃদ্ধাকার পত্রের নিত্য কাব্য সমা-
প্তি সাধ্য নয়, কল্যাণের কল্যাণ
হার তৎসম্পাদন সামর্থ্যও আছে।
প্রথমাবধি কয়েক দানি পরিদর্শক
নিবেশ পূর্বক পাঠ করিলাম। যে যে
কাব লিখিত হইয়াছে, এর জাহাজ
দ্বার গুলি অতিশয় ছন্দ প্রাচুর্য হইয়াছে।
সমাদানির বিষয়ে আমরা কিছু কুশি
তৃপ্ত আছি। এবিধে সাপ্তাহিক পত্রের
ন্যায় পরিদর্শক যে পত্রোচ্চিৎ প্রাচুর্য
ইহা আমাদিগের অতিশ্রুত নহে। সম্পাদ-
ক মকমলে ও হাইকোর্ট প্রভৃতি স্থানে
সমাদ সংগ্রহার্থ লোক নিয়োজিত করুন।
এই আমাদিগের বিশেষ অনুরোধ। এখন
দ্বিবার পরিদর্শকের প্রথম প্রস্তাব
কিয়ৎকাল উদ্ধৃত করিয়া দিলাম, সম্পাদ-
সেইটা প্ররণ করিয়া কাব্য করেন,
আমাদিগের বাসনা। তাহা হইলে যে
যে আমরা পরিভোব লাভ করিব এ
নয়, বঙ্গদেশের দুখও উদ্ধৃত হইবে।

“ভাঙ্গদেশের অধিকাংশ লোক সু-
পত্রের ভাঙ্গ সমাদর করেন না, অতএ-
বার কলোপাধ্যকতার বিষয়ও অবগত
ন। বাহারা টংরাঙ্গী, জাহাজ প্রাচুর্য
করিয়াছেন, তাহাদিগকে কলিকাতা
পাঠে আগ্রহাচিন্তার প্রকাশ করিতে
থায় বটে, কিন্তু ইংরাজী পত্র পাঠেই
দিগের সম্পূর্ণ উৎসাহ নিমিত্ত হইল।
এই না পাইলেও আমাদিগের বাসনা
পাঠ করিতে কলি করেন না। অতএ-
এই যে বাঙ্গালী সংবাদ পত্রের অধি-
অমার ও অমর্যাদা, কেবল ইংরাজী
হইতে এক প্রকার পুস্তক সমাদর
করিয়া কাব্য পুস্তক করিয়া থাকেন, সে
বঙ্গদেশে সংবাদ পত্র কোন একখানি
পত্রের বিষয়বস্তু অনুবাদ না
কলিকাতা হইয়া কেবল পাঠক
মকমলে বাগুত আছেন। ইংরাজ

নী নহে একপ বাজালা সংবাদ পত্র
 বিশেষতঃ ইংরাজি পত্রের বড় দূর
 সংগ্রহ ও বতরুত সুবিধা হয়, বাজালা
 তত দূর সংবাদ সংগ্রহ ও সুবিধা হই
 পাৰ নাই, ইংরাজি ভাষাভিজ্ঞ অধি
 ব্যক্তিই উক্ত কার্যে বাজালা সংবাদ
 টো আদুপ আস্থা প্রদর্শন করেন না ।
 : উহা উৎসাহ সম্পূর্ণ জন কারণ বা
 দেশের নীতি, আচার, ব্যবহার
 সাদৃশ্যই ইংরাজ ভাষি হইতে সম্পূর্ণ বিতি
 হ, ইংরাজেরা কোন বস্তু বা ব্যাপারকে বিভা
 ত্ব দৃশ্যের অথবা আদর্শের বিবেচনা করেন,
 তদন্ত তাহা দেশ ও অবস্থা ভেদে তাহার
 সম্পূর্ণ বিপরীত বিবেচনা করিয়া থাকি । বি-
 শেষতঃ অমুক ভাষাক অমুক স্থানে অসিদ্ধ হই
 অুক দিন অমুক ভাষাক কলিকাতা পরিভা
 গ করিয়া ইংলণ্ডে গমন করিবে ইংরাজী
 পত্রে এই সমস্ত পাঠ করিয়া ইংরাজের
 দার হয় বটে কিন্তু তাহাতে বাজালির
 পকার হইতে পারে ? যজ্ঞতঃ বাজালা
 বাজালির উপযোগী যত উত্তম উত্তম দি
 প্রকাশিত হয়, ইংরাজি পত্রে তত দূর
 পাশা করা হইতে পারে না । ইংরাজেরা
 লিপিগের ন্যায় বাজালির নীতি নীতি
 বৃত্তি অবগত নহেন সুতরাং লেখিত
 আলি সম্পাদক বাজালিদিগের মন বত
 আবর্জিত করিয়া সংপর্ণ স্থাপন করি
 দারেন ইংরাজেরা তত নীতি পারিয়া
 না । বিশেষতঃ যে ভাষা সাধারণের
 মা হইতে পারে, সেই ভাষাতেই সং-
 দ্র প্রচার করা উচিত, কারণ কোরি এ
 তকর প্রস্তাব উপস্থিত করিলে সাধারণ
 হা অবিলম্বে প্রত্যুত্তর করিয়া লেখ গুণ
 করিতে পারেন । অতঃ পরে বস্তুতঃ যে
 ধানি বাজালা পত্র প্রচার হইতেছে
 সংবাদপত্রেরই অনন্য বস্তু সুতরাং
 ইংরাজ পত্রের উপযোগী সমুদায়
 প্রকাশিত হওয়া দুশট হইয়া পড়ে ।
 ইহা জানিয়া এই পরিচর্যকের কলে-
 জিয়ান । বাজালিদিগের উপ
 ইংরাজি ভাষার অন্যান্য বস্তু বাজালা
 কলিকাতা উচিত না তাৎ ও উহা-
 ইংরাজি

বাংলা সাহিত্যের অনায়াসেই কথিত হইবে, বাহাতে সেই সকল কারণ সম্পূর্ণরূপে অপরিত্রা হয়, তদ্বিষয়ে সন্নিবেশ বহুবান হইবে। আমরা প্রতিজ্ঞা করিতেছি যে, জ্ঞান পূর্বক সত্য পথ হইতে বিচ্যুতি হইবে না, বাহাতে কোন বিনয়ের সন্নিবেশ নহে, তদ্বিষয়ে সন্নিবেশ বহুবান হইবে। যদিও পৃথিবীর কোন মনুষ্যই পক্ষপাতের হাত এড়াইতে পারেন না তথাপি আমরা অস্বীকার করিতেছি যে, জ্ঞান পূর্বক বহন পক্ষপাত দোষে লিপ্ত হইবে না। বাহাতে দেশের কলঙ্কার দ্বারা নিরাসিত হইতে হইলে নিম্নলিখিত কথার, দেশের জীবন সাধন, অজ্ঞানতার হাত-গলবে জ্ঞানের প্রদান করা, পরোপকার ও প্রজাপীড়ক হইতে দীর্ঘকালের দোষাভাষা নিবারণ এই সমস্ত কার্যই আমাদের প্রধান উদ্দেশ্য। আমরা পাঠকদিগের নিকট নিতান্ত অপরিচিত নহি, আমরা নিশ্চয় হইতে বাঙালি সাহিত্যের যার পর নাই সেবা করি। তেহি পরন্তু তাহাতে কত দূর কৃতকার্য হইয়াছি তাহা বলিতে পারি না। তবে এক্ষণে এই যাত্রা প্রত্যাহা করা বাইতে পারে যে যত পি দেশহিতৈষী মহাপুরুষ আমাদের সাহায্য ও উৎসাহ প্রদান করেন, তাহা হইলে আমাদের অস্বীকৃত সিদ্ধ হইতে অধিক কাল বিলম্ব হইবে না। ৮

ଅର୍ଥ ।

জগৎ জেনারেল অর্জুন দাসের
 মনের পশ্চিমবিক্রমণ এবং শিলা-
 বতী মন্দির পূর্বাঙ্গিকতা
 লোকদিগের চক্ষুশ।

দায়োদার নহু বে কিকণ ভরহর ডাণ। তবে-
কেই পিহিত জায়েন। রেলওয়ের সকাল জনা
ইহার পূর্কপাথে দূরত্ব বান হইয়াছে, পশ্চিম
পাথে একেবারেই বাকি শুয়া। মধ্যে মধ্যে যদিও
কোন কোন স্থানে বান ছিল, পাছে রেলওয়ের
বাড়ের ব্যাক্ত হই একনা গবর্ণমেন্টের সো-
কেয়া ডাণ। একেবারেই নিহুল করিয়াছে।
নীলাবতীও বড় শান্ত নহী নহে, ইকক পশ্চিম
পাথে গবর্ণমেন্ট বিকলপন্থে বাকি করিয়াছে-
ন, কিন্তু পূর্কপাথে কিছুই নাই। সুতরাং এই
উল্লেখ করা নহী সো-কেয়া বাকি করিয়া
ক দুইটন, তাই

त मेव लो निश्चिते कोनः प्राणि भवत्येव नः ।

এই সমাধর্ষী হানতী বর্ষাকালে প্রায় জলপূর্ণ
হইয়া থাকে। ইহাতে প্রায় কোন জলপান্য হই
বার সম্ভাবনা নাই। অতি সামান্য বন্য। হইলেও
ইহা প্রাণিত হইয়া যায়। বর্ষ। চারিমান প্রায়
কেবল কাঠারও বর্ষাতে জলযান ভিন্ন গভীরত
কবিতোপাবে না। এখানেকার অধিকাংশ
বংশাদিশল্যপাতাবে প্রাণত্যাগ করে, অবশিষ্ট
যাহা থাকে তাহাও কেবল কোন সময়ের প্রাণ
নষ্টীজলে প্রাণ করিয়া লয়। সমুদ্রাধিগমনও
কণ অবস্থা হইয়া থাকে। এখানে শস্য না হও
য়াব আর কি পরিচয় প্রদান করিব, প্রায় কোন
গৃহ ভূগর্ভস্থ আত্মদ্রিত নহে। প্রতিবৎসর ব-
র্ষাতে প্রায় সকলকেই আপন আপন বাস্তু্য
হই এক হস্ত উৎপন্ন। কৃতন গৃহ নির্মাণ ক-
বিতোপাবে। তাহাও কেবল শস্য ও তালপা-
দ্য। আত্মদ্রিত। যদিও কোন কোন সময়ে এ-
কার কাঠারূপে ধান্য বাতিরিক্ত অন্যান্য কোন
রূপ পশু/পাদন করে, তাহাও তর্কিত জন্ম
দায়ক। সমুদ্র আত্মদ্রিত করিয়া লয়। এ-
খানকার উৎপাদন করে, তাহাও তাহাতে
কিন-পও প্রাপ্ত হয় না। কবীদায়ের প্রাণ-
গের শিবে শত, পঁচ শত, চারি আত্ম দিকি-
কবিতা রাধিয়াছেন, কৃতন তাহা দিগের সেই
সমুদ্র পরিজন থাকি চীকার আত্মদ্রিত উপলব-
হ্য না। এখানে তবাবির আইন স্থান পান না।
এই সকল কারণে প্রকার/একেরই হস্ত, নহই
ত: পড়িয়াছে। তথাপি অধীদায়ের তাহা দিগে
হুভূম না। বাবুরা একসকালে মীলকরণের
সকলই হইয়া পড়িয়াছেন।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

নকাইলের ছোট্ট সাদা গাভের অল বাবু অত
 যাকুমার দত্ত।) বহুক্ষণেরোগীরাও কইবা বাস
 যোগে। সংস্করণ করিয়াছেন, নাবু জাতি উপ
 যুক্ত ব্যক্তি ছিলেন। বঙ্গোবসরের জাকাইতি
 কমিসনরের মেয়েজাদার বাবু নাং যাকুমার চক্র
 বর্তী উৎসাহে গ্রহণ অপরূপে অতিযুক্ত হ-
 ইয়া গেলে অল সাংস্বেক চিঠিরে সমর্পিত
 হইয়াছেন। বঙ্গোবসর জেলার অন্তর্গত ত্রিকো
 হারী বাসার পুলিশ সাদাগার উৎসাহে গ্রহণ
 অপরূপে সমগ্রাণ হওয়ার তি- মেজের সাংস
 য জাকাকে পত্র, ত করিয়া ২০০ টাকা অর্থসং
 । হরবাস করাবাসের আদেশ দিয়াছেন।
 সোনে সেনে যে ইনি পুরাতন পাণী বক্ত দিন
 ধর্ম জ্ঞান সূত্র অনিচ্ছিত সোনা উক্ত গুহ
 প্রাণ হইবে উক্তমিন এইরূপ ঘটনা হইবে
 সন্দেহ নাই।

ককগজ হইতে টাঁকপুর পর্যন্ত একটি প্র
বল্ল লম্বা প্রসারিত হইয়াছে। শকটাসি ও লোক
জন, গমনাগমনের বিলম্বণ সুবিধা হইবে। পূ
র্বপার্শ্বে ককগজের অশ্রম। ও বাঁকিন গণের
স্থানের বাটী ও কাকারদের লবিদের ইত্যাদি
মি. পূর্ব অক্ষীয় হিলাব, একই কোম খিলের
পশ্চিম দিক দিয়া মিথিলাব বা, কাকগজ পথে

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

[illegible]

निदिध म० वा० १

२ इ मन्त्र-सूत्र-प्रमाण-संग्रह ।

সেই 'নন্দম'দন কয়েক ব্যক্তি
 রাসমতর ত্রেপুটি নারায়ণের সেবেস্ত্রনা
 রের ক্ষমলে অভ্যাসের যুক্ত এক প্রেরিত
 পদ বহিষ্ট করিয়াছেন। আমরা বিশ্বস্ত লোক
 মুখে শুনি - ন. ত্রেপুটি মাজিষ্ট্রেট নিজেও
 কদ নাহেন। নাম এ্য একজনও এক বাসেন
 স্থানে নিম্নাং ২৪ নং, কেহ টেন-ধনা আ-
 বেদন করিলে বিচার লব হইতে দুরীভূত হন,
 আর তার হস্তের কাণ্ডা, খাট প্রভৃতি নকলই
 নিম্না ত্রয়াদানে নাই হইল। 'অভ্যাস-
 রিক কি' 'তবে' আরণ্য বস্ত্রবাস সক্ষম
 করিয়াছেন। উভয়ে সাধন প্রভৃতি বাসন-
 'তবে' ভাল জানেন। ত্রেপুটি মাজিষ্ট্রেট এই
 বেলা সতঃ হইল, নতঃ দেখিবেন ও বহন
 বাধ আছে.

• সম্প্রতি মণ্ডলীনগরে " ওয়ার্ল্ডস য়ে
 মার ১। গুণিবীষ মেলা । নামে যে এক মেলা ।
 হয় তাহাতে লাক্ষ্যস্বারসে মজুবদিগের
 অন্য ১২০০ টার মাত্র ইতিমধ্যে । বজারসে
 লক্ষ্যক্রিয়া ইং। ত চির প্রদীপ আছে ।

গবর্ণমেণ্টে ও সাধারণে সেমিনারের বি-
বাহের জন্য যথেষ্ট ব্যস্ত হইয়াছেন। নানা-
ক্রে একটি বালিকা বিদ্যালয় স্থাপিত হইয়া
ছে। তদ্ব্যতীত তালিম ব. অবিবাহিত সৈনিকদি-
গকে শিক্ষা দিবার উদ্দেশ্যে ইংলণ্ডে আসন জীলোক-
ভিলে চরিত্র শেখনার একটি সভা হইয়া-
ছে। অন্যান্য অশচ ক্রমশঃ রূপ জীলোকদি-
গকে ইংলণ্ডের নানা উপনিবেশে প্রেরণ
করা এই সভার উদ্দেশ্য। তাহারা কিরূপ
ভারতবর্ষস্থিত রাজকীয় ইউরোপীয় সেমি-
নারের প্রতি সাধারণের
সেমিনারের প্রতিনিধিত্ব
উপায়।

নবমীর জেনারেল অফিসে, বিজয়
 —— দ্য স্টার নাম করে
 "ভারতীয় সেনা" প্রত্যেকের কাছে

এক এক শব্দ টাকা পুরাতন
এট বার বোধ হয় হোটেল
এক "বাব্বা" কোম্পানি
দিল্লী গেজেট কলকাতা
কলকাতা ন্যায়িক হাইকোর্ট প্রেসিডেন্ট
প্রবিন্স অনেক গুলি
কলকাতা : গরু বিক্রি রোজ
একটোর অসংখ্য : অর্থ বিভাগ
উচ্চ পত্রের ফাইল
আবগানিটের চরিত্রের
নৃসিং প্রদর্শন করিরাছেন
অভ্যুদয়ে সম্বন্ধ করা
আবগানিটের মোস্তাফিজ
সত্যমের) কবিতা পুত্র
করিয়া রাধিবার লক্ষ্য
তিনি হর আদীরকে পত্র
কলকাতা : উচ্চ
অকারণ হত হইত
নেকেশ, ফাইল
ভেদে

১৯৩১ ইংলিষ্ট ১৫ই আগস্ট
 নদী তীরে একটা ঘর
 তিনোটে বহুসংখ্যক লোক
 বিশেষ গোলমেলে বসে
 তাকাতো হিন্দু ধর্ম
 আরাধনা করিতে

চাক-একাত্তরের গমচ্যুত
 গম-সমর্থন করিয়া এক গম
 একাত্তরের মুক্তি, করিয়াছে
 কান কান তাল হার মাই । মকর
 তৈমিনী সত্যকে মুক্তিই চিন্তিয়াছে
 হৃদয় হৃদয়ই মিলিয়াছে
 বে-একাত্তর হৃদয়কে রাখে
 হইতেছে । সত্যটি তুলিতে
 এক হইক-চিন্তার এক গম
 হইতেছে । ইহাতে রান
 ব-করা হইতেছে । হৃদয়
 একাত্তরের উপর
 আনন্দ । আনন্দিত হইতে
 রান বেইন-এ
 কান তাল
 গমচ্যুত

[illegible]

সকল লোকের সহায়ত। করিয়া আসিতে
ছেন, অগত উত্তর বিকাশ সামর্থ্য নিবারণে যত
দান। যে দানই অথবা ইংরাজের উঠাইয়া দি
য়াছেন। তিনি বলেন বর্তমান ইংরাজ জাতি
একদম সাদৃশ্যে মঙ্গল জানু করেন না। তা
নহুং। নীচকরেরা কখনকিঞ্চিৎকৈ লালস্ব অথচ
বহু কথিবাব চেই। পাইয়া। কতকাৰ্য্য হইবে
নন।

রাকপুতলাস্থিত কালবানের রাজা নাথ-
সারারের নতুননির্মাণের সহায়তার জন্য ১০০
০০০ টাকা প্রদান করিয়াছেন। এতদন্যায়
যনীনাথেরই এবিধের বিস্তর টাকা দিতেছেন।

কমিউন বলেন, হুতন অইকেন জাদ
ইকান যথেষ্ট অকম্পা কইরাছে 'আপাতত'
, অইকেন পরমিট গুদ'মে রাখা কইবে। হুতন
গুদান অনেক ব্যয়ে নির্মিত হয়। ব'লি কট-
ক, লুইজ' দিস'র প্রথাকৈ খন্য'দ, কই
নাম না যাউতে লাউতে তা'লি ঠিক খাই-
য়াছে।

উক্ত পত্র দেখিয়া কয়েক মাসের মধ্যে আইদার-
হান, বেশ দক্ষিত কৃতপূর্ব্ব পত্রী ৬২
৪ খানাপুর শাহের দ্বারা হইয়াছে
বংশের গোঁড় হইতেই শেষ হইয়াছে
পাতিয়া এত কষ্ট দেখিয়া যে অন্যায়
নীতি গ্রহণ হইয়াছে তাহা অবিকার
যেহা অবশ্যই স্বীকার করিবেন।

ডাকা মিউনিসিপ্যালিটি কমিশনারের কার্যালয়
বলেম, কলকাতার বিদ্যোদীপ প্রায় ১০০
লোক লইয়া ১০ দিনের মধ্যে এক দুর্গ
নির্মাণ করিতেছে। ১০ জন সিপাহী তথায়
প্রেরিত হইয়াছে।

প্রত্যেকন একজনীয় বিধানসভায় নংক
 শু একজন উৎকর্ষ প্রত্যেক নিমিত্ত শেষ করিয়া
 গেল এই দিন প্রথম নিমিত্তসময় প্রত্যেক
 নংক নাম পরিচয় করা হয়েছিল তখন তাঁ
 হাঁহাওয়া সহকারী বাসিন্দা হইয়া উপস্থিত
 হইল গণ সভায় বসিও নহে। অতঃপর এই
 প্রকাবে সমস্ত সমস্তসময় করিয়া।

১। অক্ষাংশের এক জন পাত্র প্রত্যেক বাল্য
 ন, কালীপাত্রে গ্রামে হিন্দু ধর্ম দ্বারা ও আক-
 শ্মন ১০৫৮ স. উক্তির এক মত। তাহা হইলে
 ২৩। ২৩ পত্রের পর অক্ষাংশের বাকী...
 ২৪। ২৪

সঙ্গে লাগিয়া কলিকাতার ধর্মসভা, ...
 হয় নাই - তবে ... কেন :

२० ई अग्रहादन बुधवार ।

[illegible]

বোম্বাই সাটে রিভিউ বলেন, ত.তা
তুলার কমিসনরেরা গণ্যপতি, তুলার শ্রমী-
করিয়া দেখিয়াছেন, তুলার প্রায় নিক
জাজাল থাকে। তুলার জাজাল করিয়া
বলিয়া একজন ব্যবসায়ীর দুই মাস মিয়াদ
ও তাঁহার সবুজ তুলার দখল করা হইয়াছে। তু-
লার কৃদ্ধিগতা নিবারণ অবশ্যকর্তব্য মনেহ
নাই। সেই উদ্দেশে ব্যবসায়ীর হেয়ার দেও
য়াও হইয়াছে কিন্তু পর বটম বিয়ার কো-
মিসনের আহ্বানে রিভিউ তুলার দখল করিলেন

উক্ত পত্র একত্রী কৌতুকবহু গ্রন্থ করিয়া
 পুস্তক । গোলক হাস্য ভেদপাল নামে একজন
 বখিৰ মিকল কোম্পানির জাহাজে বসাইটিতে
 ইক পাঠাইডেন । কিন্তু গোলাপদে জাহাজের
 মধ্যে নিয়মাবলি টাকার সিদ্ধি কোম্পানিকে ঠ.
 ক না জাহাজে জাহাজ জাহাজ নামে নালী
 করিতে উদ্দেশ্যে গেল । কিন্তু শেষে গোলক
 হাস্য নামে উক্তের বসাইটিয়ের জাহাজে ২০০০
 টাকা দিয়াই কৌতুকবহু করিতে মুক্ত হইয়াছে
 হ । এ জাহাজের নাম কৌতুকবহু ।

[illegible]

SECRET

বাধা হউক, আমরা যেমতীকর করিলাম, ইনকম ট্যাক্স বটত মিনিট প্রচার করিয়া তাঁহার কীর্তি কলঙ্কিত হইয়াছে। কিন্তু তিনি যে সেই কাল কালনে সন্মত হইবেন, তাহার প্রমাণ কি? তাঁহার অস্বাক্ষরিত স্বাধীনবৃত্তি। কার্যকালে তাঁহার স্বাধীনতা বৃত্তিই বলবতী হয়। তদ্বিবন্ধন উত্তরপক্ষের সহিত পুনরায় অসৌহার্দ্য সম্ভাবনা নাই।

কলতা, উপরি বর্ণিত কার্যের লৈর একটিও আমাদিগের হৃদয়ঙ্গম হইতেছে না। আমাদিগের এই বোধ হইতেছে, তিনি অসামান্য প্রতিভাশালী সম্পন্ন লোক; তাঁহার অসাধারণ উদ্ভাবনী শক্তি ও ভারতবর্ষের কল্যাণ সাধনের আন্তরিক ইচ্ছা ও চেষ্টা আছে। তাঁহার সেই শক্তি ইচ্ছা ও চেষ্টা সকল ও পূর্ণ করিবার প্রকৃত স্থান ভারতবর্ষ। তদ্ব্যতীত হইয়া তিনি এ দেশে আগমন করিতেছেন।

সর চার্লস ট্রিভিলিয়ানের নিরোগ ভারতবর্ষীয়দিগের মৌতগোর বিষয় সম্বন্ধে নাই। যেহেতু ভারতবর্ষীয়দিগের কেন, সকল জেগিই অজ্ঞান হইবেন। বুদ্ধি, বিদ্যা, কার্যক্ষমতা, ভারতবর্ষের অর্থসাহায্য ও রাজনীতিজ্ঞতা বিষয়ে সর চার্লস ট্রিভিলিয়ান ভারতবর্ষস্থিত কোন কৰ্মচারির নিকট নহেন। তিনি মাত্রাজে পনের মাসের অধিক ছিলেন না, তাহার মধ্যে তাহার অনেকবিধ উৎকর্ষ সাধিত হয়। ইনাম ভূমির বন্দোবস্ত, গোদাবরীর খরচ বৃদ্ধি, বিচার প্রণালীর উৎকর্ষ, বিদ্যা শিক্ষা, অগ্নি পরিষ্কৃত রাখা প্রভৃতি করে যত্ন বিধানে তিনি বিশেষরূপে বশেষলাভ করিয়াছেন। এতদেশীয় জমিদার ও সম্রাট প্রভৃতির পক্ষ হইয়া তাঁহার একাধিক বার প্রত্যাগমন করিয়াছেন। ইনকম ট্যাক্স প্রবর্তিত হইলে

সিদ্ধ পুরুষের ন্যায় তিনি যে ব্যাকার উপনাম করিয়া যান, তাহা পূর্ণ হইয়াছে। এই ইচ্ছিত কর নিবন্ধন বিজ্ঞোহ ঘটনা হয় নাই, যখন বাট কিছু সকল জেগী হইতে বিরক্ত হইয়াছেন। আসেসরেরা যে রূপ অত্যাচার করেন, বিজ্ঞোহ শাস্তির অব্যবহিত উত্তর কাল বলিয়াই পুনরায় বিজ্ঞোহাধি প্রকলিত হয় নাই।

সর সারলস ট্রিভিলিয়ান এ দেশে ইউরোপীয় উপনিবেশের এক জন প্রধান সপক্ষ, কিন্তু এ দেশীয়েরা ইউরোপীয়দিগের দাস হইয়া থাকেন, অথবা উৎসাহ হইয়া যান, ইহা তাঁহার অভিপ্রায় নহে। সে অভিপ্রায় হই—কিঞ্চিৎ কষ্টে বিলে যুগে অধর্মান ক। ইউরোপীয় যুগ ধন বিনিয়োগ দ্বারা ভারতবর্ষের উন্নতি সাধন সম্ভাবনা আছে বলিয়াই তিনি উপনিবেশে সপক্ষতা করিয়া থাকেন। তাঁহার এতদ্বিষয়ক মত প্রমাণক কি না, সে বহুতর কথা। কিন্তু তাঁহার উদ্দেশ্য অসৎ নহে, যখন, ইউর, জীবজিকাতিবা তাঁহার নিকাট যথোচিত সাহায্য প্রাপ্ত হইবেন সন্দেহ নাই। কিন্তু লেও সাহেবের মত তিনি নীলীরসে সন্মত করিবেন না। ভারতবর্ষের জীবজিকা ও ভারতবর্ষীয়দিগের কল্যাণ সাধন তাঁহার প্রধান উদ্দেশ্য। বোধ হয় ইনকম ট্যাক্স যে স্থান হইতে আসিয়া ভারতবর্ষে আদিতান করিয়াছিলেন, চার্লস ট্রিভিলিয়ানের গুণাগুণে তাহা কে সেই কল্যাণেই আশ্রয় করিতে হইবে। আগামি এপ্রেল মাসের বজ্রটেক পদ আর আগরা তাহ কে দেখিতে পাইবেন। বাধা হউক, কাষোর কি হইবে। যে উইলসন সাহেবের কাষোর অভিযান করিতে গিয়া তিনি পক্ষপাত হইয়াছিলেন তিনি সেই উইলসনের কক্ষ নিযুক্ত হইলেন। যে কর রহিত করিবার জন্য তিনি পূর্বে প্রাণপণে চেষ্টা পাইয়াছেন, এ কক্ষে সেই কর উঠাইয়া দেওয়ার তাঁহারই

৫
৬
৭
৮
৯
১০
১১
১২
১৩
১৪
১৫
১৬
১৭
১৮
১৯
২০
২১
২২
২৩
২৪
২৫
২৬
২৭
২৮
২৯
৩০
৩১
৩২
৩৩
৩৪
৩৫
৩৬
৩৭
৩৮
৩৯
৪০
৪১
৪২
৪৩
৪৪
৪৫
৪৬
৪৭
৪৮
৪৯
৫০
৫১
৫২
৫৩
৫৪
৫৫
৫৬
৫৭
৫৮
৫৯
৬০
৬১
৬২
৬৩
৬৪
৬৫
৬৬
৬৭
৬৮
৬৯
৭০
৭১
৭২
৭৩
৭৪
৭৫
৭৬
৭৭
৭৮
৭৯
৮০
৮১
৮২
৮৩
৮৪
৮৫
৮৬
৮৭
৮৮
৮৯
৯০
৯১
৯২
৯৩
৯৪
৯৫
৯৬
৯৭
৯৮
৯৯
১০০

একবার মাটিতে টেটের নিকটে তাহাঙ্গিকে
কইয়া দিইবে । ইহাও তথ্য তাহাঙ্গি

১. গের গন্তব্য স্থান, কাল, বেতন প্রভৃতির
বিষয় স্পষ্ট করিয়া বুঝাইয়া দিতে হইবে ।
এ সকল সুবিধা তাহার অসম্মত হইলে
তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে না । তা-
২. হার গের মাটিতে কুলিদিগের রেজি-
স্টার গিয়া তাহার এক নকল নিজে
থিবে । আর এক খানি কণ্ট্রোলারকে
দিবে ।

২৬

পরে তাহাতে কুলিদিগের হার
কই না হয়, তুর্জো উপায় লিখ
করা হইয়াছে । আর্ডারটি সাগ্রহ
কার্য্যে সঠিক নিয়ম অনুসরণ
লোক দিবে ।

৩. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে ।
এই কয়েকটি কথা জিজ্ঞাস্য করিবে-
পথে সে কোন কই পাইয়াছে কিনা । সে
নিজের গন্তব্য স্থান ও কর্তব্য কার্য্য প্রভৃ-
তির বিষয় ভাল কপে অবগত হইয়াছে
কিনা । তখনও যদি কেহ 'মহ হর'
তাহাঙ্গকে কণ্ট্রোলারের বাগে নি-
৪. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৫. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৬. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৭. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৮. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৯. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১০. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি

প্রতিজ্ঞা পত্রের তাৎপর্য্য ও অর্থ
নিহিত থাকে বুঝাইয়া দেওয়া হইলে

১১. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১২. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১৩. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১৪. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১৫. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১৬. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১৭. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১৮. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
১৯. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
২০. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি

সংবাদ দিবে । তাহাঙ্গি অবিলম্বে কুলিদি-
গকে তাহাঙ্গিগণ্য স্বাক্ষর বাস স্থান
দিবে । যদি তিনি বিলম্ব করেন, তাহাঙ্গি
কণ্ট্রোলার দ্বারা তাহাঙ্গিকে বাস দিওনা
করা হইবে । তাহাঙ্গি আদায় ক-
রা হইবে ।

এই বিলটি অনেক অংশে প্রশংসনীয়-
হইয়াছে সন্দেহ নাই । কিন্তু তাহা
২৭. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
২৮. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
২৯. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩০. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩১. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩২. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩৩. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩৪. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩৫. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩৬. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩৭. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩৮. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৩৯. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'
৪০. 'ন সুন্দর দেখের ন্যায়'

আর একটি বিষয় বিস্তৃত বুদ্ধি ও বাস্তব
শীলতার নিতান্ত বিপরীত দৃষ্টি হইতেছে
শব্দগোষ্ঠে বলেন, তাহাঙ্গি স্বাধীন বাসিন্দা
ও স্বাধীন পরিচালকের বিধানে হইয়া
৪১. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪২. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪৩. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪৪. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪৫. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪৬. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪৭. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪৮. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৪৯. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি
৫০. তাহাঙ্গিকে কইয়া দিওনা হইবে । তাহাঙ্গি

সোমপ্রকাশ

সর্বস্বত্বাধীন প্রকাশিত। যাহা যাহা।

৫ ভাগ।

৩ সংখ্যা।

সন ১২৬২। ১৭ অগ্রহায়ণ। ইং ১৮৬২। ১ ডিসেম্বর

বাঙ্গালি
বার্ষিক

বিজ্ঞাপন।

গ্রাহকগণের প্রতি।

গ্রাহকগণকে জানান যাইতেছে। কালিক
ধন অতীত ইত্যাদিতে অনেকের প্রদত্ত গো
মসকালের মূল্য। মিঃশেবিভ হটমার্কে, অগ্রাণ
মণ মাস অতীত হটমার্কে অনেকের মূল্য শেষ
হইবে, অতএব তাঁহারা দ্রুত করিয়া মূল্য পা
ঠাইয়া দেন। উক্ত মূল্য কলিকাতা সংস্কৃত
কালেন্ডে আনানিগের নামে পাঠাইলেই আ
মরা নিকিয়ে এ পৌত্র পাইব।

সোমপ্রকাশ।

১৮৬২ সালের সোমবার।

সে কল হইলে কি রেলওয়ের পানী

রা নিস্তার পাটত।

অল্প রোগ যেমন অন্য অন্য বহু রো
গের আশ্রয়, পবলিক ওয়ার্ক বিশেষতঃ
রেলওয়ে ডিপার্টমেন্টে তেমনি বহু দোষের
আশ্রয় স্থান হইয়াছে। এখানে ধর্ম ও ধর্ম
নীতি অসম্পূর্ণ হইয়া একান্ত মর্মান্তিক
আধিপত্য করিতেছেন। সামান্য চৌক
অবধি করিয়া কুতন্ত্রণা পূর্ণিত হইয়া
যাবতীর পাতকেরই এ ডিপার্টমেন্টের প্রতি
সবিশেষ অনুগ্রহ আছে। অধিকতর ক্ষেত্র
ও বিশেষ বিবরণ এই, গচরাচর দেখিতে
পাওয়া যায়, এই ডিপার্টমেন্টের প্রধান পা
পীরা ধর্ম ও ধর্মনীতিসম্পন্ন কলিকাতা দ্বারা
আক্রমণ হইয়া বিশেষরূপে আপনাদিগের
অন্য অনুরক্তির চরিতার্থ করিয়া থাকে,
কেহ তাহাদিগের কার্যের প্রতি সংশয়ও
করিতে পারে না।

রেলওয়ে কর্মচারিদিগের আচরণ ও
ব্যবহার রক্তাক্ত সত্য অসত্যের প্রতি
পূর্ণ প্রতিবেদন হইয়া থাকে। আমরা আরই
কুনিতে পাই, অল্প কয়েক মাসের
অল্প তারিখে রেলওয়েতে প্রবেশ করি
যাইলেন, এই অল্প কালের মধ্যে এত
টাকা সংগ্রহ করিয়া কর্ম পরিত্যাগ করি
লেন। উল্লিখিত ডিপার্টমেন্টে অর্থ লুপ
হরণ করিয়া জীবন বিলম্বিত। এক
উপায়ও আছে। এক গুণে জিহ্বা
লিখিয়া দিলেও কেহ সহসা ধরিতে পারেন
না, ধরিবেই বা কে? উল্লিখিত কর্মচারিদিগের
সম্পত্তি, তাঁহারা কখন চক্ষে দেখেন না;
কর্মচারিদিগের উপরেই নির্ভর। প্রধান
কর্মচারী যদি কুতন্ত্রণা দোষে দূষিত হই
লেন, তাহা হইলে কথাই নাই।

কুতন্ত্রণার ন্যায় আর একটি দোষের
সম্বন্ধ আছে। তাহা হইতেই হইয়া থাকে।
রেলওয়ে কর্মচারিদিগের অনেকের কার্য
ও ব্যবহার দ্বারা বোধ হয়, তাঁহারা গণ
মেন্টে সন্তোষীকৃত করেন না। তাঁহারা
বয়সে অনুগ্রহ ও নিগ্রহ কর্তা। এক জন
সামান্য অপরাধ করিয়াছে, হয় ত তাহার
গুরুতর দণ্ড করিলেন, কেহ বা গুরুতর
অপরাধ করিয়া সামান্য দণ্ড দিইয়া
পাইল। অতীত ব্যক্তির এই বিপরীত
পতি, কর্মচারিদিগের করিয়া ও আর কুতন্ত্রণা
লাভ হয় না। রেলওয়ে কর্মচারিদিগের অ
ধিকতর কল্যাণ হইতেছে। অতএব তৎক
র্মচারিদিগের দণ্ড বিধান অসম্পূর্ণ। রেল

ওয়ের কোন অধিকার
না হইক, অথবা
আনুগত্য। কি নিবন্ধ
ট্রেট ও মার্জিনেট
যোগ করেন না।
রিজিগের নিকটে
খাই বিকল হইলে
যখন যখন অপরাধ
ল, তখন গণমেন্টে
কৈ? রেলওয়ে
কৈ? এক গুণে
বয়সে দণ্ড বিধান
দ্বিতীয়তঃ, যে ব্যক্তি
হইয়া গণমেন্টে
করিল, সে ব্যক্তি
রাধে অপরাধী
আদালতে তাহার
কিছু যে কারণে
পাইল, তখন
লাভ হইল।
বয়সে
বয়সে বা অন্য
রেলওয়ে
কেন? এক গুণে
করিতে পারেন। ইহা
রণ আছে, তদা
রেলওয়েতে হোট
খিক, হোট মো
কর্ম করিতে
কাংশ হইয়া
নিকটে অধিকার

এক সপ্তপাখীম
রে। সুতরাং তাহা
বিস্তৃত ব্যবহারের
পারে না। দ্বিতীয়,
পূর্ব বিশেষতঃ ইতিহাস
বুঝণ বড় হয় না।
তিন। যদি অসমত্যা
ইতেন, শিক্ষা পাই
অসমত্যা রাখা। যদি
তেন, অসমত্যা রাখা।
করিয়াছে, তাহার
বেতন ছিল, পশ্চাৎ
টাকা হইয়াছিল, কিন্তু
৫০০০ টাকা ব্যয় করি
অসমত্যা তাহার বিধ
করাইছে হইত সন্দেহ
গবর্ণমেণ্টের অধিকার
র জাহাজেরা নিত্য

অসমত্যাগের ডাকবীজ
পাঠাই। রেলওয়ে কো
অসমত্যাগের কৰ্মচারি
কৰ্মসম্পাদী প্রবর্তিত
ধর্ম কৰ্মচারি এতি অ
অনুরাগ কেন? তা
ই কেহ সন্দেহ করে কি
কপে সময় অতিবাহিত
সবিশেষ অনুসন্ধান
অনেক নিবারণ হই

সিমানের ভারতবর্ষে

সিমানের সোমপ্রকাশ

সিমানের সোমপ্রকাশ

সিমানের সোমপ্রকাশ

সিমানের সোমপ্রকাশ

সিমানের সোমপ্রকাশ

সিমানের সোমপ্রকাশ

সিমানের সোমপ্রকাশ

যতঃ বর্তমান মন্ত্রিসভার
সময়ে ভারতবর্ষে আগমন
করিবেন, বোধ হয় অসমত্যা
করিবেন। অতএব ইহার ভারতবর্ষে
সমাচার প্রতিগোচর হইলে পাঠকগণের
চিত্ত চমৎকৃত হইবে সন্দেহ কি? কিছু
দিন পূর্বে মাস্ত্রাজ টাইমস্ লিখিয়াছিলে
ন, সন্ন চার্লস ট্রিবিয়ান লেখ সাচে
বের বর্ষে নিযুক্ত হইয়াছেন। আমরা
তৎকালে একবার বিবাস করি নাই।
বিস্তৃত সোমবার যে টেলিগ্রাম আসি
য়াছে, তাহাতে তাঁহার নিয়োগ-বিষয়ে
আর আশাশ্রিতের অসমত্যা সংশয় নাই।

যে মন্ত্রিবর্গ তাঁহাকে পদচ্যুত করি
য়াছিলেন, তিনি তাঁহাদিগের অধীনেই
আবার কৰ্ম স্বীকার করিলেন কেন?
অনেকে ইহা বুঝিতে পারিতেছেন না।
ইহা বুঝাও সহজ নহে। সচরাচর
তোকে যে যে কারণে রাজকৰ্ম স্বীকার
করে, তাঁহার তাহার কিছুই অসমত্যা
নাই? ধন, মান ও পদ গৌরব এ সমুদ
য়ই আছে। তিনি অসমত্যা ধনিলোকে
সন্মান এবং মেকলের পুস্তক প্রভৃতি সম্প
ত্তি অধিকারী হইয়াছেন। কেহ কেহ
কহিতেছেন, মাস্ত্রাজের গবর্ণরী কালে তিনি
উইলসন প্রবর্তিত টাক্সের বিরোধী হইয়া
যে মিনিট লিখিয়া প্রচারিত করেন, তৎক
রা তাঁহার অবিদ্যাকারিতার পরিচয় হই
য়া তাঁহার কীর্তিতে যে কলঙ্ক সঞ্চিত
হইয়াছে, তৎকালে করিবার উদ্দেশ্যেই তিনি
পুনরায় ভারতবর্ষে আগমন করিতেছেন।
কিন্তু এ কারণেই আশাশ্রিতের অসমত্যা
তোকে হইতেছে না। প্রথমতঃ মিনিট
প্রচার করা আশাশ্রিতের মতে তাঁহার বো
য়ের নিমিত্ত হয় নাই। তিনি এক জন ভা
রতবর্ষের দ্বিতীয় কৰ্মচারী। কাৰ্য্য
যা তাহার ভারতবর্ষের অসমত্যা হইবার সন্ভা
বনা আছে, যতঃ পরক্যে যোগে হইত, তৎ
কালেই চেষ্টা। তাঁহার অসমত্যা কৰ্ম

তিনি মিনিট প্রচারকেই তৎকালীন
উৎকৃষ্ট উপায় বলিয়া কল্পনা করিয়া
ছিলেন। তিনি ইনকম টাক্স প্রবর্তিত
না করিয়া ব্যয় সংকল্পে তাঁহা আশা
সমতা বিধানের পরামর্শ দিয়াছিলেন।
এই পরামর্শের অনুসরণ করিয়া কাৰ্য্য
অনুষ্ঠিত হইলে যদি আয় ২০০ লক্ষ
ধান সন্ভাবনা না থাকিত, তাহা হইলে
তিনি দোষী হইতেন সন্দেহ নাই। কিন্তু
যখন অসমত্যা সেই ব্যয় সংকল্প
কপ উপায় অবলম্বন করিয়া আয় ব্যয়ের
সমতা বিধান করিতে হইয়াছে, তখন তাঁ
হাকে দুষিত করা ন্যায্য হইতেছে না।
তৎকালে হবনোটি টাকার অসমত্যা ছিল,
ইনকম টাক্স কি তৎপূর্বে সমর্থ হইয়া
ছিল? এ হলে আর এটি বিয়োগেরও বি
বেচনা করা আবশ্যক। চার্লস ট্রিবি
য়ান তৎকালে প্রতিবাদী হন, তৎকালে
ইনকম টাক্স প্রবর্তন বিধিবদ্ধ হয় নাই।
এ প্রবর্তন বিধিবদ্ধ করা কৰ্ত্তব্য কি না,
তাঁহার বিচার হইতেছিল। রাজপুত্রের
ইনকম টাক্স প্রবর্তনের এতি পক্ষপাত
নিবন্ধন অসমত্যা হই। যদি উপকার ও অ
পকার গণনা করিয়া উহা বিধিবদ্ধ করিবার
অভিলাষ করিতেন, কখনই উহা বিধিবদ্ধ
হইত না। চার্লস ট্রিবিয়ান তাঁহাদি
গের কৃতজ্ঞতাত্মক হইতেন সন্দেহ
নাই। এতদূশ হলে ইনকম টাক্স বিধি
বিধারী রাজপুত্রের দোষী না হইত।
তিনি বিধানে দোষী হইতে পারেন।
অনেকে এই বলিয়া তাঁহার এতি দোষ
প্রমাণ করেন যে যখন সকল প্রধান রাজ
পুত্রের একতায় হইয়া একই কাজ করিতে
ছিলেন, তখন বিধিবদ্ধ বাণী হইয়া তাঁহার
তৎকালীন চেষ্ঠাকৰ্ম বিবেচনায় নাই।
ইহার উত্তর হলে আশাশ্রিতের বক্তব্য এই,
সকলে বুঝিতে না পারিয়া যদি একই অ
ন্যায় কাজ করেন, তিনি বুঝিতে পারেন,
সকলে বুঝিতে না পারিয়া যদি একই অ
ন্যায় কাজ করেন, তিনি বুঝিতে পারেন,
সকলে বুঝিতে না পারিয়া যদি একই অ
ন্যায় কাজ করেন, তিনি বুঝিতে পারেন,

মতে, মীল উৎসব হইল কেন? হিন্দু
সাধারণ প্রতি ব্যক্তিতে খাট আনা দিতে
চাহিয়াও কৃতকাৰ্য হইলেন না কেন?
পনিজমের এক জন বেতন ও বিজ্ঞপ্তি
জব্বার এক প্রকার স্থলা নির্ধারণ ক-
রিয়া রাখাই অন্যান্য। এক্ষণে প্রতি বৎ-
সর উৎসবের জব্বার স্থলা হুজি হই-
তেছে। দুই বৎসর পূর্বে যে মজুরকে প্র-
ত্যেক হয় পরসার খাটান হইয়াছে, সে
এক্ষণে প্রতি দিন চারি আনা উপার্জন
করিতেছে। এক্ষণে স্থলা ও নির্বোধ
ব্যক্তির জন্য কোন ব্যক্তি পাঁচ বৎসরের
জনা একবিধ বেতনে বন্ধ থাকিতে অ-
ভিলাষী হইবে? শেবে মীলকরদিগের
ম্যার ঘটনা হইবে সন্দেহ নাই। ক্রমশঃ
নিম্ন শ্রেণীর লোকেরা আইন ও আদালত
ও সুজ্ঞায়ুক্ত কার্য বুঝিতে পারিতেছে।
কুলিরা যতদিন নিত্যকৃত্য হুজ থাকিবে, তত-
দিনই চাকরদিগের লাভ, কিন্তু তাহাদি-
গের দীর্ঘকাল বিমুক্ততা দর্শন সন্তোষিত
নহে। সন্তোষিত হইলেও কি তাহাদিগকে
ক্ষতিগ্রস্ত করা গবর্নমেন্টের কর্তব্য? এক
জন বুদ্ধিমান মজুর দুই জন অজ্ঞ মজুরের
কাজ করিতে পারে। বেতনের নিয়ম এক
বিধ থাকিলে আসাম প্রভৃতি স্থানে বুদ্ধি-
মান মজুরের গমন সন্তোষিত কি? আমা-
দিগের মতে কর্ম স্থানে অবস্থানের কাল
নিয়ম করা বিশেষ নহে এবং যে বৎসর
যেকোন ব্যক্তির হইবে, তদনুসারে মজুর
দিগের বেতন নির্ণয় করা কর্তব্য। এই নি-
য়ম স্থান না হইলে উচিত প্রস্তাবিত বি-
লের সন্তোষিত ও সন্তোষিত হইবার সন্তোষিত
নাই।

আসিও উত্তরোত্তর এদেশীয়-
দিগের অধ্যাক্রমণে কাল বৃদ্ধিতে
পারেন নাই।

২৭এ নবেম্বরের ১৯১৭ অব ইতিহাস
রাজা দিনকর রাওর ভারতবর্ষীয় গব-

র্নমেন্টকে সহ পরামর্শ দান এই নি-
রোনারের একটি প্রকারে দেখিয়া, আমা-
দিগের অন্তঃকরণে ক্রোধ ও বিদ্বেষ-
য়ের উদয় হইল। আজ্ঞা করিয়া কা-
র্য এই, রাজা দিনকর রাও একজন অ-
সাধারণ বুদ্ধিমান ও ভারতবর্ষীয় গবর্নমেন্টের
হিউজী। হিউজী বুদ্ধিমান ব্যক্তির
রাডোব দিটার্গ গবর্নমেন্টকে যেকোন প-
রামর্শ দেওয়া উচিত, রাজা দিনকর রাও
সেই প্রকার পরামর্শ দিয়াছেন। তিনি
বলেন “এক শতাব্দী পূর্বে এদেশীয় রাজ-
গণ লোক রক্ষণ করিয়া প্রজা পালন ক-
রিয়াছিলেন। বিশেষতঃ আকবরের প্রতি
সকলে বিশেষ সম্মতি ছিল। আকবর জু-
মির রাজ্য সংজ্ঞাত উৎকর্ষ বন্দোবস্ত
করিয়াছিলেন; অন্যবিধ কর, কন্ডাইয়া
দিয়াছিলেন; এবং পঞ্চাইত প্রথা প্রব-
র্তিত করিয়া শাসন কার্য নির্বাহ করি-
ন। কিন্তু তাহার উত্তরাধিকারিগণ ত
দর্শিত পথের পথিক না হওয়াতে
রা অসম্মতি হইল; অসম্মতি হইয়া
রাজদিগকে রাজ্যচ্যুত আশাম কা
ইন্ডিয়াদিগের শাসন প্রণালী প্রজা
অগ্রীতিকর মনে। ইহাদিগের রাজ্য
ক্রম বন্দোবস্ত উত্তম; সমুদয়
মণ্ড দানের রীতি উৎকর্ষ; কালেক্ট
কুল প্রভৃতি অনেক হইয়াছে; রেলওয়ে
নির্মাণ ও খাদ্যাদি যতন করা হইয়াছে;
এবং ইহাদিগের তিজ্ঞা অধিপালন বি-
শেষ দৃঢ়তা আছে। যে যে কারণে এদেশ-
ীয়দিগের ব্রিটিশ গবর্নমেন্টের প্রতি
অসন্তোষ জন্মিয়াছে, দিনকর রাও তাহার
কয়েকটিও উল্লেখ করিয়াছেন। সে ক-
য়েকটি এই—ইনকমট্যাক্স, প্রজা
অগ্রজ তত্ত্ব উত্তরবিধ লোকের
হইতেই স্থলা যোগে অগ্র প্রব এবং অন-
বহিত হইয়া দিন দিন আইন পরিবর্তন।
বিশ্বের বিধ এই, জাতিদিগের
দেশের নির্বোধ ও সামান্য লোকেরাও

সংবাদ বিবরণে মনোহর লেখনী এককালি বিজ্ঞা-
ন করিয়াছে, অপুরাও কোন অসামান্য ব্যা-
পার উপস্থিত নাই, তথাপি সন্নিহিত নগর
ও গরী হইতে গাছা কিছু সংগ্রহ করিয়াছি,
তাহা অবলম্বে প্রেরণ না করিয়া কান্ড
খাতিতে পারিলেন না, যেহেতু স্থানীয় পতি-
য়াছে, কি জানি আমার কোন পার্শ্ব অমঙ্গল
পটিয়াছে একপ মংশ মহাশয়ের মনে উদয়
হয়, কহা আলস্যপরতন্ত্র হইয়া মহাশয়ের
পাঠকবর্গকে এদেশীয় কোন কৌতুকজনক বা
হিতকর ব্যাপারের জ্ঞানলাভ হইতে বঞ্চিত
রাখিয়াছি মনে করেন, সেই আশঙ্কায়
কানি অনময়ে লেখনী ধারণ করিলাম। এবং
পর অন্যান্য দেশের প্রতি বন্দরাজের যে
কপ দৃষ্টি, এদেশের প্রতিও তদ্রূপ, বন্দরাজ,
অন্ত ও বিকারাদি প্রিয়বস্তুগণকে সহায়
করিয়া মনোবাহুল্য পূর্ণ করিতেছেন, নিজ
কোট চাদপুর যদিও তাহার দৃষ্টিপথে পতিত
হইয়াছে কিন্তু পার্শ্ববর্তিপল্লীনামুখে তাহার
পর দূর। গত দুইমাসের মধ্যে কত পরি-
য়ে হার খার হইয়াছে, কত রজনী অনা-
ইয়াছে, কত পতি আশাধিকারপ প্রতি
মনের শান্তিসহ বিসর্জন দিয়াছে, কত
র ক্রোক গুণ্য হইয়াছে, কত পিতার
প্র আশা ও অবলম্বন উদ্ধির হইয়াছে,
র আশ্রয় নাই। মহাশয়! দৌলতগঞ্জ
ানপুর ও বজরাপুত্র গ্রামে নিরন্তর হাছা-
কার কানি অভিযোগের হইতেছে। মৃত্যু গৃহস্থের
ঘারে ঘারে ভ্রমণ করিতেছে, সকল গৃহেই তা-
হার ষোড়শোপচারে অতিথি সৎকার হইতে
ছে, তথাপি তাহার রকোদর পূর্ণ ও অঠরানল
নিবৃত্তি হইতেছে না।

গত বুধবার রজনী বিজয়র সময়ে এরা-
নের এক ক্রোশ অন্ধরে তৈরুদী নদীতে এক
পানি ক্রুর তরী জলমগ্ন হইয়া একটি ত্রীলোক
পাশে প্রাপ্ত হইয়াছে। ঐ তরীতে কোন ভ্রম
লোকের পরিবার বাইতেছিল। ৩ টি কুলক-
মিনী ৩ টি ২। ৩ বর্ষব্যবক শিশু দুইজন দুলা
গুরুতরভাবে ছিল। পোস্তদারীর অবিদ্যুৎ-
কারিতা লোপনিবন্ধন পোস্ত জলমগ্ন হয়।
জলমগ্ন হইবারাত্রি উল্লিখিত শিশুদ্বিগের
সর্বাঙ্গের মৃৎপিণ্ডের ন্যায় মনোভলশায়ী হই-

বার বিলকণ সন্ধান হিন কিছু ভাগ্যক্রমে
তাহাদের প্রাপক, হইয়াছে, তাহাদের জ-
ননা অপত্যস্নেহে মুগ্ধ হইয়া আপন খাঁকনের
মনতা পরিত্যাগ করিয়া খালকগুলিকে বন্ধ-
স্থলে স্থাপন করিয়া কেবল পদসঞ্চালনের
দ্বারা সন্তরণ দিয়া নিরাপদে কুলে উপস্থিত
হয়েন। কয়েক দিবস অতীত হইল খালকুল্যা-
নিবাস কালীকুমার নরকার নামে এদেশের
একজন প্রসিদ্ধ আলম্ব্যবসারী অখানকার জিপু-
গী ২. এষ্টের কর্তৃক ধৃত হইয়া বশোহরের দেশে
অঙ্গ গাছেবের বিচারে সমপিত হয়। জজ সা-
হেব তাহার ৭ বৎসর কারাবাসের আদেশ দিয়া
ছেন। এখানে একপ জনপ্রতি যে দুকৃতাকালী
কুমার বিত্তর লোকের সর্বনাশ করিয়াছে এবং
ঐ কপ নীচরতি অবলম্বন করিয়া জীবিকা নি-
বাহ করিত একথাও বিখ্যাত নহে কিন্তু উপস্থি-
ত বিবরণে সে দণ্ডার্থ হয় না। তাহার
বহিত অভিযোগের বিষয় শ্রুততা ছিল, সেই
ন্যবস্ত্রে তাহাকে বিপাকে কেল ইয়াছে। যে
একল কৃত্রিম মোহন, কুলিকা, মস্যাখার প্রভৃতি
দ্রব্য তাহার গৃহ হইতে বাহির করা হয় ও বা-
হার বলে তাহার কারাবাসের আদেশ হইয়া
ছে, সে সমুদয় তাহার নিজের নহে, নিজের
হইলে সে বিলকণ সাধনান করিয়া রাখিত,
বহির্জাতীক গোহৃহের কোন প্রকাশ্য স্থানে
রক্ষা বদ্ধ করিয়া সুলাইয়া রাখিত না। তাহ-
র বিপাক বেরলিগতনমানসে সেই সকল ব-
জাদি কোশল ক্রমে পূর্বাংকুই তথায় রাখিয়া
আসিয়া ডেপুটী মাজিস্ট্রেটের নিকট তাহার
নামে অভিযোগ করে। গত ২২ তাহাকে
সঙ্গে লইয়া গিয়া ঐ সকল দ্রব্যাদি দেখাটীয়া
দেয়। যে স্ত্রী হটক অপরাধীর শাস্তি হও-
য়াই অজ্ঞাদের বিবরণ। গত পরব রজনী-
যোগে এক জন মিথ্যাবাদি চরের বাক্যে বি-
শ্বাস করিয়া ডেপুটী অপর এক জন আলম্ব্য-
দায়ীর অন্তসম্মানে গমন করিয়াছিলেন।
তথা হইতে একটি ক্ষুদ্র মোহর একটি নকল
ও একটি জীর্ণ পেন আদ্রিয়াছেন। এই তিন-
টি দ্রব্য তাহার কণ্ঠমণ্ডলের কোণে এক
বুড়ির ভিতর ছিল, শুনিতেছি এমতকি
অতি তহলোক, কোন কালে ইহার একপ
আখ্যাতিক নাই, তাহার এক জন প্রতিকার



大 學 學 報

[illegible]

উক্ত পক্ষ বরিসাদে হইতে সাধার শাইয়া
ফেন, তত্ত্বাত্ত কৌশলারির দাখির, আন্তি এ-
ফ্রাবে আগল কুত্বাকে আগল আনিছে, গাঠা-
ইয়, দেওয়াছে সে এক বোকার শাইয়া দেখি
ল ১৪ জন মোক নিয়া খাইয়েছে, বোকার
খোলে কিন্তু অল্প রবিরাহে, সে দাখিরকে
লব্বাল দেওয়াছে তিনি প্রাংকশাং পুন্ডিসের
লোভবিশ্বকে লবে শাইয়া-ভাংসিগকে কবী
করিয়াছেন বরিসাদে আন্তি এ অনেক “বিশ্ব
ভর বাব” আছেন।

পার্লিসে এক ব্যক্তি এক প্রকার ছদ্ম
 মর্পণের আবিষ্কার করিয়াছেন। তাহা ন
 শূণ্যে ঘরিয়। যুদ্ধভাষ্যান করিলে গলার নলী
 ও ছাদরের কিরকংশ দেখিতে পাওয়া যায়,
 নিখাস প্রধাসের সময়ে সে গুলির স্থান পরি
 বর্ত্ত হইয়া উত্তর দেখায়।

মহীতমের রেকর্ডের বাংলাদেশের আফিসর
 দিগের মুকরির আফিসরের প্রতিবাদ করিরা
 ছেন। তখন একটি নটিয়ানা আছে এই
 মহাভক্তিরা তখন বাইরা তখনপান, মারসী
 এবং অসকার। কামিনীদিগের অধ
 ণ করেন। এসকল পুণ্য না থাকিলে আফি
 রের শোকা হইবে কেন ?

আমরা শুমিলাম গবর্নমেন্ট মিন্টাল হের
 টেসনে মৃত্যু ও ভোজ দ্বিবার বিধরে বড় সম-
 ত রয়েছে। রৌলপুরে কোম্পানি কলিতেছেন
 এবিধরে ১০,০০০ টাকা ব্যয় হইবে। গবর্নমেন্ট
 ৪০০০ ই কার অধিক দিতে চাহিতেছেন না।
 আপাততঃ পূর্ব হালানার রে. ওরে কোম্পা-
 নির টাকা অধিক করিয়া গবর্নমেন্টের
 এ অর্নক। অন্যায় আছে

১৩ই অক্টোবর ১৯৭৭ খ্রিঃ

এই বারে কলম্বিয়া আমেরিকার যুদ্ধ শেষ
হয়। যুদ্ধের উত্তর-বিক্রমে প্রবেশ করি
যাচ্ছিল। এক বই আছে। তাহা দিগের অ-
র্থ ও যুদ্ধের উত্তরেরই অপ্রাকৃত বই আছে।

निष्कर्षन कीक-मिन-मिन

করাদেও বিদ্রোহীরা। রক্তক্ষিপ্তাশয়
হইরাছে। আবাদিগের আশীর্বাদ এই দুইভর
সহিত যেন হাসভেরও শেষ হয়।

দুপাল্লের বেগম সপ্রাতি ইউরোপীয় ও
 এতদেশীয় অনেক সম্রাট লোককে এক ভো-
 জ দিরাইছেন। রাণীর সন্তান তাঁর অধিবাস
 সাহসবানদিগ দিবেন, এই ভোজ যেহেতু।
 কোজের সময়ে তিনি সগরিবারে তথায় উপ-
 স্থিত ছিলেন। বেগম কি কেবল বাহ্য আকর্ষণ
 দ্বারা প্রতিপত্তি লাভ চেষ্টায় আছেন? নিজ
 রাষ্ট্রের আভ্যন্তরীণ উন্নতি সাধন দ্বারা অ-
 বিলম্বন বশোপীভবের পাইতেছেন কি
 না?

যাত্রাকেন্দ্র এক খানি সংবাদ পত্রে দুই
হইল বেলোরের পক্ষত গন্ধারে ৪৮ জন কয়েকী
কাজ করিতেছিল, হঠাৎ তাহারা এহরী
দিগের সম্মুখ কাড়িয়া লইয়া পলায়ন করিল
ছিল। পলায়মান ৩৭ জন ব্যক্তির মধ্যে
৩ জন পুনর্কায় খুদ হইয়াছে। পুলিশ এহরী
তাহাদিগকে ধৃত করিবার বখোচিস্ত চেষ্টা :
নাই বলিয়া তাহাদিগের দুইবৎসর করিয়া
বন্দী হইয়াছে। পুলিশের। হুলাহুটি বাড়িরে-
কেন্দ্র কোন দুর্ঘটনা হয় না। কর্মচারী
পুলিশ কি করেন দেখা যাইবে।

রূপজিৎ সিংহ অমৃতসরের বিখ্যাত দী
ঘির নিকটে এক মন্দির করিয়া যান। তদ্রূপ
লে কের এইরূপ সংস্কার আছে, যে দীঘিতে
স্নান করিলে কুষ্ঠ আরোগ্য হয়। কখনও তথা
র অনেক কুষ্ঠরোগী সমবেত হইয়াছে।
ইহাতে পক্ষীর গর্ভন্যেতে এই মন্দিরটি এক
আকর্ষণীয় করিবার মানসে মাসে ১০ টাকা
দিবেন সংস্কার করিয়াছেন। সর রবার্ট
মর্কেগম্বারি প্রবংশনীর সম্মত নাই।

সম্প্রতি সমষ্টি আলোকজগৎর আভা
দ্বিরাহেন, কশীয়। রাজ্যের বিচারপতিমি-
নের পুলিশের উপরে কসত। থাকিবে না।
ভারতবর্ষে এইরূপ চেষ্টা হইতেছে। কশী-
রাতে কি ভারতবর্ষের ন্যায় পুলিশসম্পর্কে
উৎকোচ প্রোত প্রবাহিত আছে, লিখ
কোন দেশের ?

कमल मोहरक जालीसो मोहरक जालीसो

平

ॐ विष्णवे नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वायव्य भाग में ८५५ मीटर
 विनाश नहीं हो रहा है
 एकदम गर्म हो रहा है

কে। সে ক্রিয়াকর্ম গৌণ। কিন্তু
 কটে এক আদর্শ জগৎকে
 ন্যাবিকল্পিতকে বহু করিয়া
 ন্যাবক যেইন আদর্শ জগৎ
 লবন হইতে। সে ক্রিয়াকর্ম
 ই, কিন্তু ক্রিয়াকর্ম যেইন
 পুণ্যের জগৎ এক আদর্শ
 আদর্শের আদর্শ।

বোম্বাই প্রদেশের
 মাসিক একজন ইংলিশ
 মন নিবন্ধন করিয়া
 মন করিয়া ১০,০০০ টাক
 ছেন। ইহাতে ২০০ রোগা
 হইবে। মন বাটন করিয়া
 মিনা চিকিৎসামন নিবন্ধন
 দিয়া ছেন।

বাক্যলোরে বেড়াই নত মনেন অকস্মাৎ
নাট্য পালায় দুইজন অকস্মাৎ এখান
পড়িঃ বিরুদ্ধে কোন কথা মনেন অক
জন অকস্মাৎ তাঁহাঃ মনেন নায়ে নর কি
অকস্মাৎ গর মনেন । অকস্মাৎ
অকস্মাৎ কিঃ মনেন অকস্মাৎ
নর কিঃ মনেন কিঃ অকস্মাৎ
অকস্মাৎ মনেন অকস্মাৎ

२४ वैशाख १९५५

গা' সোনিয়ার টা'পাতলার একটি
 ব্যবহারইরাকে । জিনাথ ঘোষ ও এ.
 ব্যক্তি দ্বা'পান করিয়া এক বেশ্যাসঙ্গে
 করে । জিনাথ নরক, তথাঃ ধনাত্মক
 জাহা'র হঠাৎ তরতা একা
 কালিকাত ধরিয়া অ.পনার
 চরিতা করে । কালিকাত
 আরও ব. " বাবুরা " এই
 অন্যতরকটি বেশ্যাকে ।

संस्कृत-भाषा-विभागः

১। (১) অসম্ভবতঃ সত্যবাদী। অসম্ভব
 ২। বৃহৎসাহিত্যে যে বিবরণ প্রাপ্য তাহা তাহা
 ৩। হুসাইন বা থাকিলে, সত্যবাদী হইবে।
 ৪। সে আশ্রয় কিরূপে পাইলেন? তাহাও
 ৫। কি হইল? একথাও সত্যবাদী প্রকাশ করিয়া
 ৬। সত্য হইয়া থাকিবে। সত্যবাদী আশ্রয়
 ৭। পুত্রের আশ্রয় চাহে; অসম্ভব আশ্রয়
 ৮। আশ্রয় না উদ্ধারই হইবে কিরূপে?
 ৯। তাহার বোধ হয়, সে? অসম্ভবের কথা
 ১০। আশ্রয় না হইলে? অসম্ভবের কথা
 ১১। যে হইল? অসম্ভবের কথা
 ১২। হুসাইনকে সত্য পুত্র করিবে? অসম্ভবের কথা
 ১৩। বাব অসম্ভবের সত্যবাদী
 ১৪। হইতে থাকে; অসম্ভবের কথা
 ১৫। অসম্ভবের কথা
 ১৬। অসম্ভবের কথা
 ১৭। অসম্ভবের কথা
 ১৮। অসম্ভবের কথা
 ১৯। অসম্ভবের কথা
 ২০। অসম্ভবের কথা
 ২১। অসম্ভবের কথা
 ২২। অসম্ভবের কথা
 ২৩। অসম্ভবের কথা
 ২৪। অসম্ভবের কথা
 ২৫। অসম্ভবের কথা
 ২৬। অসম্ভবের কথা
 ২৭। অসম্ভবের কথা
 ২৮। অসম্ভবের কথা
 ২৯। অসম্ভবের কথা
 ৩০। অসম্ভবের কথা
 ৩১। অসম্ভবের কথা
 ৩২। অসম্ভবের কথা
 ৩৩। অসম্ভবের কথা
 ৩৪। অসম্ভবের কথা
 ৩৫। অসম্ভবের কথা
 ৩৬। অসম্ভবের কথা
 ৩৭। অসম্ভবের কথা
 ৩৮। অসম্ভবের কথা
 ৩৯। অসম্ভবের কথা
 ৪০। অসম্ভবের কথা
 ৪১। অসম্ভবের কথা
 ৪২। অসম্ভবের কথা
 ৪৩। অসম্ভবের কথা
 ৪৪। অসম্ভবের কথা
 ৪৫। অসম্ভবের কথা
 ৪৬। অসম্ভবের কথা
 ৪৭। অসম্ভবের কথা
 ৪৮। অসম্ভবের কথা
 ৪৯। অসম্ভবের কথা
 ৫০। অসম্ভবের কথা
 ৫১। অসম্ভবের কথা
 ৫২। অসম্ভবের কথা
 ৫৩। অসম্ভবের কথা
 ৫৪। অসম্ভবের কথা
 ৫৫। অসম্ভবের কথা
 ৫৬। অসম্ভবের কথা
 ৫৭। অসম্ভবের কথা
 ৫৮। অসম্ভবের কথা
 ৫৯। অসম্ভবের কথা
 ৬০। অসম্ভবের কথা
 ৬১। অসম্ভবের কথা
 ৬২। অসম্ভবের কথা
 ৬৩। অসম্ভবের কথা
 ৬৪। অসম্ভবের কথা
 ৬৫। অসম্ভবের কথা
 ৬৬। অসম্ভবের কথা
 ৬৭। অসম্ভবের কথা
 ৬৮। অসম্ভবের কথা
 ৬৯। অসম্ভবের কথা
 ৭০। অসম্ভবের কথা
 ৭১। অসম্ভবের কথা
 ৭২। অসম্ভবের কথা
 ৭৩। অসম্ভবের কথা
 ৭৪। অসম্ভবের কথা
 ৭৫। অসম্ভবের কথা
 ৭৬। অসম্ভবের কথা
 ৭৭। অসম্ভবের কথা
 ৭৮। অসম্ভবের কথা
 ৭৯। অসম্ভবের কথা
 ৮০। অসম্ভবের কথা
 ৮১। অসম্ভবের কথা
 ৮২। অসম্ভবের কথা
 ৮৩। অসম্ভবের কথা
 ৮৪। অসম্ভবের কথা
 ৮৫। অসম্ভবের কথা
 ৮৬। অসম্ভবের কথা
 ৮৭। অসম্ভবের কথা
 ৮৮। অসম্ভবের কথা
 ৮৯। অসম্ভবের কথা
 ৯০। অসম্ভবের কথা
 ৯১। অসম্ভবের কথা
 ৯২। অসম্ভবের কথা
 ৯৩। অসম্ভবের কথা
 ৯৪। অসম্ভবের কথা
 ৯৫। অসম্ভবের কথা
 ৯৬। অসম্ভবের কথা
 ৯৭। অসম্ভবের কথা
 ৯৮। অসম্ভবের কথা
 ৯৯। অসম্ভবের কথা
 ১০০। অসম্ভবের কথা

১০৫
 ১০৬
 ১০৭
 ১০৮
 ১০৯
 ১১০
 ১১১
 ১১২
 ১১৩
 ১১৪
 ১১৫
 ১১৬
 ১১৭
 ১১৮
 ১১৯
 ১২০
 ১২১
 ১২২
 ১২৩
 ১২৪
 ১২৫
 ১২৬
 ১২৭
 ১২৮
 ১২৯
 ১৩০
 ১৩১
 ১৩২
 ১৩৩
 ১৩৪
 ১৩৫
 ১৩৬
 ১৩৭
 ১৩৮
 ১৩৯
 ১৪০
 ১৪১
 ১৪২
 ১৪৩
 ১৪৪
 ১৪৫
 ১৪৬
 ১৪৭
 ১৪৮
 ১৪৯
 ১৫০
 ১৫১
 ১৫২
 ১৫৩
 ১৫৪
 ১৫৫
 ১৫৬
 ১৫৭
 ১৫৮
 ১৫৯
 ১৬০
 ১৬১
 ১৬২
 ১৬৩
 ১৬৪
 ১৬৫
 ১৬৬
 ১৬৭
 ১৬৮
 ১৬৯
 ১৭০
 ১৭১
 ১৭২
 ১৭৩
 ১৭৪
 ১৭৫
 ১৭৬
 ১৭৭
 ১৭৮
 ১৭৯
 ১৮০
 ১৮১
 ১৮২
 ১৮৩
 ১৮৪
 ১৮৫
 ১৮৬
 ১৮৭
 ১৮৮
 ১৮৯
 ১৯০
 ১৯১
 ১৯২
 ১৯৩
 ১৯৪
 ১৯৫
 ১৯৬
 ১৯৭
 ১৯৮
 ১৯৯
 ২০০

[illegible]

“ प्रवर्त्ततां प्रकृतिदिताश्च पार्थिवः सरस्वती मुक्तिमहतो न हीयतां ।

म. नि. क. मू. १ टा
वार्षिक ख. म. १० टा

ঐতিহাসিক কারিগরদের দায়িত্ব অর্ধাংশ মে
সাহসী প্রকল্প অব ইতিহাস স্মরণে ইংরেজ
ভাষা পত্র "বাহুনিপকে ইতিহাসিক কারিগর"

इहं श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

নিম্নে করিয়াছেন এবং লেখিত
বাণীর কিয়দংশ উদ্ধৃত
লাভে দেখাইয়াছেন । এখন
কোন ক অবলম্বন করিবেন
সবস উরে কাষ্য প্রণালী প্রতি
এই আশা । তাঁহার কাষ্যের প্রতি
র তার বর্ষাদিগের স্বার্থ পরি
রিয়া ই হ্রিকারিদলের স্বার্থ স
মানুসে, এ ছুইই এক কথা । অত
বহু উত্তর বিপক্ষতা করিতে
রাজ্যের বিপক্ষতা করা হইবে ।
ই হ্রিকারিদলের সপক্ষতা না
খি গালি খাইতে হইবে । তাঁ
বেন, এদেশীয়েরা আজিও
পত্তি লাভ করিতে পারেন
ইহাদিগের কর্তব্যাকর্তব্য
আজিও অকৃতজ্ঞতা ইহাদি
ইতে দুরীভূত হয় নাই, ইহা
২৪এ অগ্রহায়ণ ১২৬২ মানুসের মত
হন, তাহার ই বিপক্ষতাচরণ করি
২৪। বাহা হউক, বাবুরা এই গালির
পর চার্লস উত্তর বিপক্ষতাচরণ
। স্বয়ং ভূমির অনিষ্ট সাধনে প্রবৃত্ত
ন, ইহা কোন ক্রমেই সম্ভাবিত নহে ।
কেহ কেহ বলেন, এখন যেমন হেঁট
ফটারির তার তবর্ষের কাষ্য সর্বত্র
তা আছে, এরূপ না থাকিয়া যদি ই
অপত্তা হয় তারতবর্ষের সবিশেষ
ল হইতে পারে । সেও সাহেব সেই
বি কল্যাণ লাভের প্রমাণ হলে লাই
জ ও ইনকমটাক্টের কিয়দংশ পরিত্যা
কে উদ্বাহরণ স্বরূপ নির্দেশ করিয়াছে
। তারতবর্ষের গবর্ণমেন্টের যত স্বাধীনতা
। ততই তারতবর্ষীয়দিগের কল্যাণ
লাভের সম্ভাবনা, আমরা বহুবার একথা
করিয়াছি । কিন্তু এহলে আমরা
একটি বক্তব্য আছে, যেখানে জীৱিক
কারিদলের সহিত এদেশীয়দিগের স্বার্থ
এক রূপ হইবে, সেই স্থানেই সেই কল্যাণ

লাভ হইতে পারে । কিন্তু পরস্পরের স্বার্থ
ভেদ হলে ইহা না হইবে । ইহা একটি স্বাভাবিক
সম্পূর্ণ সম্ভাবনা । ইহা নিয়ে প্রাচ্য
কারিদলের মতই হইবে । ইহা গবর্ণমেন্টের
নিকটে সমর্পিত হইবে । সেই মহ
প্রচারের প্রবল যত্ন হইবে । সে যত্ন
ইংরাজী সমাচার পত্র । ইহা পুরুষদিগের
অনেকে এদেশীয়দিগের মত অস্বা
করেন না । অনেকের একপ সম্ভাবনাও
আছে যে এদেশীয়দিগের একটি সমাচার
মত নাই (এটি সামান্য মূর্খতার কথা নহে,
আমরা দেখিতে পাইতেছি এই সমাচার
মতের উপরে সমাজের অনেক গুণাগুণ
নির্ভর করিতেছে) তাহা বা জীৱিক কারি
দলের মতানুসারে চলিবেন সন্দেহ
নাই । তাহা হইলে এদেশীয়দিগের ইচ্ছা
লাভ ও স্বাধ সিদ্ধির সম্ভাবনা কি
যে মত যখন প্রবল হয়, তখন
তার কাষ্য হইয়া থাকে, ইহা চিরপ্রসিদ্ধ
আছে । ইংলণ্ডে অধীশ্বর সপ্তম হেনরি
র সময়ে এমসন ও ডডলি নামে দুই
জন কর্মচারী রাজানুমোদিত হইয়া একা
পীড়ন করিয়া অর্থ সংগ্রহ করে । একা
রা তাহাদিগের উপরে খড়্গহস্ত ছিল,
অর্ডন হেনরির রাজত্ব হইলে তাহাদিগের
দণ্ডবিধান চেষ্টা হয় । কিন্তু পীড়নকারী
বলিয়া তাহাদিগের নামে অভিযোগ করি
য়া তাহাদ্বয় কৃত্যর্থতা লাভের সম্ভাবনা না
থাকতে এই বলিয়া কম্পিত অভিযোগ
করা হইল যে তাহারা সপ্তম হেনরির হত্যার
পর অর্ডন হেনরির আশ্রয়স্থান করিয়া
স্বহস্তে রাজ্যভার গ্রহণ করিবার চেষ্টা পাই
য়াছিল । এই অভিযোগের বিচার হইয়া
তাহাদিগের দণ্ড হয় । জুরিরাও তাহাদি
গের দণ্ড হওয়া সকলের অভিমত দেখিয়া
ঐ কম্পিত দোষে তাহাদিগকে অপরাধী
করিয়াছিলেন । আজিও তারতবর্ষে যে
ইউরোপীয় অপরাধীর যথাবিধি দণ্ড হয়
না, তাহা হইতে কারণ এই । ইউরোপীয়ের

পাছে অসম্মত হন, গবর্ণমেন্ট এই ভয়
করেন । অতএব যাবৎ এদেশীয়দিগের
মত ইউরোপীয়দিগের তুল্য ভাবে আ
দৃত না হইতেছে, তাবৎ হেঁট সেক্রেট
রির ক্ষমতার দ্বাৰা করিবার চেষ্টা তদ্র
দায়ক নহে ।

সমস্ত অস্ত্র কামেনে ও বি এ উপাধি
লাভের পরীক্ষা গ্রহণ রীতি
প্রবর্তিত করা উচিত ।

সম্প্রতি ১৮৬১ । ৬১ অক্টোবর এডুকে
শন রিপোর্ট প্রচারিত হইয়াছে । পাঠক
গণ ইহার স্কুল মধ্য প্রস্তাবান্তরে চর্চন
করবেন । ইহা আটকিন্সন সাহেবের দ্বি
তীয় বর্ষের কাষ্যের বিবরণ । এই ছুই বর্ষ
সময়ের মধ্যে আমবা তাহার নিকটে অনেক
বিধ ইচ্ছা কল লাভের প্রত্যাশা করিয়া
ছিলাম । কিন্তু অনেক বিষয়ে পূর্ণমনো
রথ হইতে পারি নাই । তবে তাঁহার বি
ষয়ে এককালে হতাশ হওয়াও হয় নাই ।
বোধ হয়, তিনি দীর্ঘকাল আর আমাদিগ
কে কোন প্রকাশের অবসর প্রদান করি
বেন না । অদ্য আমরা এই এসে তাহা
কে ছুই একটি সম্পরামর্শ দানে প্রবৃত্ত
হইলাম ।

বঙ্গদেশে যত বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত
হউক, যে পর্যন্ত এতদেশীয় বিদ্যার্শিগ
ণের মনে বিজ্ঞান, নীতি, ধর্মনীতি, পদার্থ
বিদ্যা ও বার্তাশাস্ত্র প্রভৃতি দৃঢ়তরূপে
বদ্ধনুল না হইবে, সে পর্যন্ত একুত কল্যা
ণ লাভ সম্ভাবনা নাই । সামান্য লেখা
পড়া শিখিয়া বিশেষ ইচ্ছা লাভ সম্ভাবিত
নহে, বরং তাহা অনিষ্টেরই হেতু হয় ।
এক জন সংস্কৃত কবি লিখিয়াছেন—

অজ্ঞঃ কুখ্যারামাঃ
কুখ্যতরামারামায়ে বিশেষজ্ঞা ।
জানসবদ্বিজ্ঞানমঃ
অজ্ঞাপি নরং ন বুদ্ধয়তি ।

কুখ্যতরামারামায়ে বিশেষজ্ঞা
কুখ্যতরামারামায়ে বিশেষজ্ঞা
কুখ্যতরামারামায়ে বিশেষজ্ঞা

সহকর্ম; কিন্তু যে ব্যক্তি যৎকিঞ্চিৎ জানে, ত্রুটি ও ভ্রান্তির মনোরঞ্জন করিতে পারেন না।

পোপ ও এক স্থানে এই ভাবে লিখি-
য়াছেন:

অস্পৃক্তান অনর্থের কারণ, পোপেরি-
য়ান নির্বাক জল পথ্যাপ্ত পরিমাণে পান না
করিলে উদ্ভাব জন্মে।

কলতঃ অস্পৃক্ত বস্তুরাই ভারতবর্ষের
উন্নতি লাভের প্রধান অন্তরায় হইয়াছে।
ভারতবর্ষবাসী অধিকাংশ লোকের অস্প
জ্ঞতা নিবন্ধন যে অনিষ্ট ঘটিতেছে, আম-
রা অশুভ তাহা অনুভব করিতেছি। তবে
অস্পৃক্ত হইতে এতদধিক গবর্ণমেন্টের কিছু
উপকার লাভ হইল বটে। কেরানিগিরি
প্রভৃতি কয়েকটি কর্ম অনায়াসে চলিয়া
যাইতেছিল। কিন্তু এক্ষণে যুদ্ধাভ্যন্তর
সময়িক প্রাকৃতিক হওয়াতে সে উপকা-
র ক্রমে হ্রাস হইয়া আসিতেছে।

একণে বিবেচনা করা কর্তব্য এ দে-
শে বিজ্ঞান শাস্ত্রাদির সমধিক প্রাকৃতিক
হইবার উপায় কি? প্রথমতঃ এতদেশীয়-
দিগের যত্ন, অর্থ সাহায্য দান, এবং গবর্ণ
মেন্টের আনুকূল্য। যাহারা বঙ্গদে-
শকে উত্তমরূপে জানেন, তাহারা অন-
য়াসে বুঝিতে পারিবেন, এদেশীয়েরা
আজিও এতাদৃশ ক্ষমতাপন্ন হন নাই যে
এসমূহ বৃহৎ কার্যে হস্তার্পণ করিয়া স
ম্পূর্ণরূপে কৃতকার্য হইয়া উঠেন। গত ৩০
বৎসরের মধ্যে অনেক বিপর্যয় হইয়াছে,
একথা আমরা অস্বীকার করি না। গবর্ণ
মেন্ট অনেককে সুশিক্ষিত করিয়াছেন;
অনেকে গবর্ণমেন্টের এমানে বিজ্ঞানাদি
শাস্ত্রের সবিশেষ বুৎপন্ন হইয়াছেন। তার
তববৎকে অজ্ঞানোদ্ধার হইতে উদ্ধার করি-
বার অনেকের ইচ্ছা ও চেষ্টা জন্মিয়াছে।
অনেকে সেই চেষ্টানুসঙ্গ কার্যও আরম্ভ
করিয়াছেন। কিন্তু যাহাদিগের সাহায্য
হারা সবিশেষ উপকার হইবার সম্ভাবনা

আছে, সেই চেষ্টাকারিদিগের মধ্যে
ভাদ্রশ খনী লোকের সংখ্যা অতি অল্প।
ইহানীহুম ধনিদিগের অনেকে বিদ্যা-
লয় প্রতিষ্ঠাকে একটি আসবাবের মধ্যে
বোধ করেন। কলতঃ এ দেশীয়েরা আ-
জিও বহুব্যয়সাধ্য বিজ্ঞান শাস্ত্রা-
দির অনুশীলনার্থ বিদ্যালয়াদি প্রতিষ্ঠায়
সমর্থ হন নাই। গবর্ণমেন্ট প্রতিষ্ঠিত ভা-
দ্রশ বিদ্যালয়ের সংখ্যাও অধিক নয়।
যে দুই একটি প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, অস্প
কাল মধ্যে তাহাতে আশাধিক কলতঃ
হইয়াছে। এই সময়ে আনাদিগের বিজ্ঞ-
তম ইয়ত সাহেবের কথা স্মৃতিপথে উদ্ভি-
ত হইল। ইয়ত সাহেব তিন বৎসর পূর্বে
স.উ. কলিকাতা ট্রিষ্টে বসিয়া লিখিয়াছি-
লেন, গবর্ণমেন্ট যদি এক্ষণে শিক্ষাদান কা-
র্যে পরাধীন হন, কতি হইবে না, বাঙ্গা-
লিয়া এক্ষণে বিদ্যার রসজ্ঞ হইয়াছেন
এবং তাহার কলোপধারিতা বুঝিতে পারি-
য়াছেন, তাহারা এক্ষণে অন্য সাহায্য নির-
পেক্ষ হইয়া স্বয়ং শিক্ষাকার্যে দীক্ষিত
হইতে পারিবেন। বোধ হয়, ইয়ত সাহেব
ক্রমেও কখন চৌরঙ্গির সীমা অতিক্রম
করিয়া সীমান্তজন দোষে দূষিত হন নাই
এ দেশে বিজ্ঞানাদি শাস্ত্রের সমধিক অনু-
শীলন না হওয়াতে এ দেশের কত অনি-
ষ্ট ও গবর্ণমেন্টের কত ক্ষতি হইতেছে,
যাহারা মকমল পরীক্ষা করিয়া দেখিয়া-
ছেন, তাহারাই বুঝিতে পারিয়াছেন।
আমরা বাহ্যিকরূপে যে যে বিষয়ের শিক্ষা
দান প্রস্তাব করিতেছি, কলিকাতা প্রেসিডে-
ন্সি কলেজ কেবল এক উদৃষ্টবোধী আছে।
গবর্ণমেন্টের অর্থের অসঙ্গতি নিবন্ধন হ-
উক, অথবা শিক্ষাকার্যের কর্মচারিদি-
গের অনবধানতা বশত হউক, অথবা কে-
য়েকটি মকমল বিদ্যালয়ের প্রেসিডেন্সি কা-
লেজের সমকক্ষতা লাভার্থ উদ্যোগ হইয়া
হিল, তাহাদিগের উদ্যোগ বৃদ্ধি করা
হইয়াছে। তাহা হইলে বঙ্গদেশের সুজি-

জিতে সেইগুলি সুসরভ হইবে।
ত হয়, এই শকার তাহা সাহেবের
বৎসরটো তাহার ফুলের এক শাখায়
অ.যাও করিয়া থাকেন। তাহা
বার স্থান নাই, মকমলে কালেক্টর
একটা প্রেসিডেন্সি কলেজ
হিস্তাকালেজকে স্মরণ
উত্তেজনা করিয়াছিল,
অগ্রবর্তি হওন

দিয়া দাও। পাঠকগণ :
করিয়া ১৮৫৪ অব্দ পয়
কলকাতার ও হগলী কলেজ
বা ছিল, একবার মর্শন
১৮৫০ অব্দে ২ জন প্রথম
পান, তদ্বধ্যে ডাকার ৪ জন
২ জন, হগলীর এক জন
কলেজ ২ জন। ১৮৫১ অব্দে
ডাকার ২ জন, হগলীর ২ জন
৪ জন এবং হিন্দু কলেজের
হুজি পাইয়াছিলেন ১৮
মধ্যে ডাকার ২ জন, হগলীর
হগলীর ৪ জন এবং হিন্দু কলেজের
জন পরীক্ষাতে হুজি পাইয়াছিলেন
১৮৫৩। ৫৪ অব্দে ১ জন, ডাকার
৪ জন, এবং কলিকাতার ১ জন
১৪ জন হুজি পাইয়াছেন।
এতদ্বারা প্রমাণিত হইতেছে, যে
বঙ্গের কলেজগুলি কোন কালে হিন্দু
কলেজের নিকট ছিল না। তবে এখন
বিদ্যালয়, কলেজ, ইতিবাচক, হুজি
কেন। গবর্ণমেন্টের অর্থ ও উপকার
ইহার কারণ হবে। গবর্ণমেন্ট যেন এরূপ
কর্মের অসঙ্গতি কল কারণ ও মর্শন
করিয়াছিলেন, এখন সে পথও রুদ্ধ হই
য়াছে।

১৮৬০। ৬১ অব্দে তাই বঙ্গদেশে গ-
বর্ণমেন্টের ১৩ কোটি টাকা লাভ হইয়াছে।
তদ্বধ্যে শিক্ষা কার্যে কেবল ৮ লক্ষ টাকা
ব্যয়িত হইয়াছে। হিন্দু করিয়া দেখি-

সোমপ্রকাশ ।

ব্যক্তিতে) দশ আনা পড়ি
না। ইংলণ্ডেরা কেবল এত যে সভা,
সেখানেও মেন্টকে প্রতি ছাত্র
১৮০ দিতে । বঙ্গদেশীয় গবর্ণমেন্ট
নিয়মবিধয়ে কৃপণতা করিতেছেন

আমর ষেতে পারিতেছি না।

ইসে গবর্ণমেন্ট কি তা

ন করেন না ? এক্ষণে

দ্র বিদ্যালয় হইয়াছে।

যায়ে রিয়া অনেক ছাত্র প্রবে

হইতেছে কিন্তু তাহাদিগের

কতজন মাত্র সার হইতেছে।

কতরে শি কালেজে অধ্যয়ন ক

রিয়।। কলিকাতায় অবস্থিতি

হইতের বাবতীয় ব্যয় নির্বাহ

ভালি কালেজে অধ্যয়ন

কালেজে সহজ নহে। যদি

কালেজ থাকিত, তাহা

ই সকল কালেজে

৫০

১৮০ ইত্য।

নিরোধ এই, তাহে চাকর

১৮০ বহরমপুর প্রভৃতি স্থানে বি এ উপা

১৮০ পতীকা দানপ্রথা প্রবর্তিত হয়, তাই

১৮০ রসাহেব তদ্বিষয়ে যত্নবান হন।

১৮০ তাহাদিগের বক্তব্য শেষ রহিল, আ

১৮০ বায়ে আমরা পুনরায় এবিষয়ে হস্তক্ষেপ

১৮০ করিব।

১৮০ কলিকাতা দেশীয় হিন্দুরা এত অলস,

১৮০ শীঘ্রবল ও হীনসাহস কেন ?

১৮০ স্বর্ধ বৈদ্যকে যে কোন রোগের নি-নি

১৮০ দিচ্ছাসা কর " গাভপিতৃ-কের বৈবম্য "

১৮০ ই এক মাত্র উত্তর অবণ করিবে, আম

১৮০ ১৩ ভেমসি একেশীয়দিগের আলস্য ও

১৮০ শীঘ্রবীয়াতাদিকে এক মাত্র কারণে পণ্য

১৮০ সিত করি। এর কারণ—দেশের দেবা

১৮০ দেশের দেবই হইল এক মাত্র কারণ হইত,

১৮০ এই বক্তব্যে বাসি, কলিকাতার হিন্দুদি

গের মায় অলস শীঘ্রবল ও হীনসাহস
হইতেন সন্দেহ নাই।

কাম্বুজেশ্বর যেকোন দেশের উপরে নির্ভর

করিয়া থাকেন, সেই দেশ আমরা কেবল এক

দেশের দোষকে কারণ রূপে নির্ণয় করিয়া

নিশ্চিত না হইয়া যদি অন্য অন্য কারণের

অন্বেষণে প্রবৃত্ত হই, বালা বিবাহ, অসার

জব্য তক্ষণ, সুলভ জীবিকা, প্রমত্ত অন

ভ্যাস প্রভৃতি অনেকগুলি কারণ আমাদের

গের বুদ্ধিপথে আবির্ভূত হইয়া সন্দেহ

নাই। অন্য বাল্যবিবাহাদির ওসব বরা

আমাদিগের অতিশ্রুত নাই, প্রমত্ত অন

ভ্যাস, প্রবলের অত্যাচার, পরাধীনতা,

ও যে সে সকল কারণে পরাধীনতা এই

করিতে পারি।

১৮০ শারীরিক গণবিজ্ঞান অভ্যাস

১৮০ শরীরিক গণবিজ্ঞান অভ্যাস

১৮০ কখন বল,

১৮০ ও উচ্চতা

১৮০ হইয়াছে।

১৮০ শারীরিক প্রমত্ত মহান বৈদ্য উপস্থিত হইয়া

১৮০ হে। পূর্বে যনু প্রভৃতি প্রাচীন রাজগণের

১৮০ অধিকার কালে

১৮০ প্রথা প্রবর্তিত হয়।

১৮০ যাই সেই

১৮০ তৎকালে

১৮০ বাবসায় ও কাব্য

১৮০ আপন আপন ব্যব

১৮০ সকল বণকেই বাল্যা

১৮০ করিতে হইত।

১৮০ সের রীতি ছিল বটে, কিন্তু স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র

১৮০ বর্ণের স্বতন্ত্র ব্যবসায় নিকপিত থাকিতে

১৮০ শারীরিক বল বীয়াদি বিবয়ে বহুতর ই

১৮০ তর বিশেষ দৃষ্ট হইত। অন্য কোন বর্ণই

১৮০ তদ্বিষয়ে কত্নির বর্ণের তুল্য ছিল না।

১৮০ কজিয়েরা শৈশবাবধি অন্ন ও ব্যায়ামাদি

১৮০ শিকার কালক্ষেপ করিত, সুতরাং অন্য

১৮০ বাবতীয় বর্ণের অপেক্ষা তাহাদিগের বল,

১৮০ বীয়া, উচ্চতা ও সাহসাদি গুণের উৎক

১৮০ র্ব লাভ হইত।

একধে কর্তব্যই হিন্দু জাতির ব্যবসা

রাদি বিভাগ বিম্বব প্রাপ্ত হইয়াছে। কিন্তু

১৮০ ভারতবর্ষের অন্য কোন অংশ বাঙ্গলাদে

১৮০ শের ন্যায় অসৌভাগ্যশালী নহে। অন্য

১৮০ অংশের হিন্দুদিগের ব্যবসায় বিচার নাই।

১৮০ উত্তর পশ্চিম অঞ্চলে গমন কর, এই বি

১৮০ ম্বব স্পষ্ট নবনগোচর হইবে। বজন, যা

১৮০ জন, অধ্যয়ন, অধ্যাপন, দান, ও প্রতি

১৮০ এই এই ছয়টি যে ব্রাহ্মণ জাতির কর্তব্য

১৮০ বর্ধ বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছিল, একধে

১৮০ সেই জাতি বহুতে লাগল ধরিয়া ক্ষেত্র

১৮০ কর্ণ করিতেছে ; দৌবারিকতা প্রভৃতি

১৮০ অতি নিকট কর্তব্য তাহাদিগের অনাদৃত

১৮০ ও অবলম্বিত নহে। যাহারা কর্ণ বহনা

১৮০ দি করিয়া থাকে, তাহাদিগের অগুণা

১৮০ হইতেই প্রমত্তাস হইয়া উঠে। এই সকল

১৮০ দেশে এমনি একটি রীতি হইয়া উঠিয়াছে,

১৮০ যাহারা অন্ন সাধ্য কার্যে ব্যায়াম্যমাণ না

১৮০ হয়, তাহারাও শারীরিক বল বীয়াদির

১৮০ অর্জন ও বর্জন চেতায় পরাধীন নহে।

১৮০ হিন্দুহানীর জাববানেরাই ইহার প্রমাণ

১৮০ হল।

১৮০ বঙ্গদেশে ইহার সম্পূর্ণ বৈপরীত্য ল

১৮০ ক্ষিত হইতেছে। এদেশের কোন জেগীরই

১৮০ প্রায় প্রকৃত রূপ প্রমত্তাস নাই। এদে

১৮০ শের উচ্চ জেগীর লোক ব্রাহ্মণ ও কাষক।

১৮০ যাহাতে শারীরিক বল বীয়াদির বৃদ্ধি হয়,

১৮০ তাহাদিগের তাদৃশ অন্ন সম্পর্ক নাই।

১৮০ অত্রতা ব্রাহ্মণ জাতির জীবিকা যেকোন

১৮০ সুলভ, তাহাদিগের ঘনা কদাচিত্ত যে

১৮০ অলচালনা হয়, তাহাই অস্বস্ত। এই জা

১৮০ তিকে স্বজীবিকার আকরণার্থ প্রয়াসমান

১৮০ হইতে হয় না। অন্য অন্য জেগীর উপরেই

১৮০ ইহাদিগের জীবিকা অর্জনের জার। অন্য

১৮০ অন্য জেগী ইহাদিগকে পৌরোহিত্য কার্যে

১৮০ বরণ করিয়াছেন। ইহারা তাহাদিগের

১৮০ পরলোকপ্রয়োজন সাধন করিয়া দেন,

১৮০ তাহারাও তদ্বিনিময়ে ইহাদিগের ঐহিক

১৮০ প্রয়োজন সাধন করেন। পরম্পরের এম

১৮০ নিঃপ্রাণী কর্তব্যব্যবস্থা তাব হইয়াছে, যে

"মেসেজারিস ইন্ডিয়া" নামক পত্রিকা
 দ্বারা জাহাজ কোম্পানির বাণিজ্যের
 রক্ত দিবসে করাসী বঙ্গের সংস্থা
 কাব্য কারক মনুর কোম্পানি
 দশ বৎসর পূর্বে কালের যে
 বিদ্যা ছিল, এক্ষণে তাহার সেতু শুধে
 দিক বুদ্ধি হইয়াছে। ইউরোপ, আমেরিকা,
 ভারতবর্ষ বিশেষতঃ চীন, জাপান
 সা বণিকেরা ইংরাজ বণিকেরা
 কোন কোন স্থলে এই অধিকার
 রতেন। যে স্থানে বণিক বৎসর
 নিজে বৎসরই বসে। ছিল।
 এক্ষণে বঙ্গ ও গৌড় প্রাচীর বিবরে—
 বিলাসক্রমের ভাবাই নাই। - ইংলণ্ডের
 সরকার নাই। ২৫ অধিক পক্ষ
 নহে। যে দেশে দশ বৎসর পূর্বে
 কোম্পানি রেই-ও-হিল, তারা
 লৌহন ২০০ ০০০ পুস্তিক হইয়া
 পরিণামে যে লক্ষ কোম্পানি
 স্প্যানি, দুই হাজার

। तद्वदर्थे मे सकल

काय, जिनाधा वि दवचना करिवाहि दमन

যুগ হইতেছেন ? কোন ব্যক্তি দাবরী

আমাদের অর্থ-শক্তি নগীতে খীচ খাতি
কমিয়ে দেওয়া গিয়া। একটি বুঝী
কমিয়ে দেওয়া গিয়া। অর্থাৎ
কমিয়ে দেওয়া গিয়া। এক

... ..

ନି:ସର୍ଗ:ବିକ୍ରମ:ସ୍ତୁତ: ୫ ଭୋଗ: ୬

२७०१२ वायुदेवता देवदेवता कायदेवता हूँ ३ वायुदेवता

विष्णुकायस्य चान्न नास्ति चेन्न ।

১৫ই নবেম্বর—ডব্লিউ, জে. জালেন সাহেব ১৮৬০ অব্দের ৩২ আইন অনুসারে কলিকাতার এক জন বিশেষ কমিশনার হইবেন।

ই, জে. স্টল ওয়ার্থ সাহেব বাঁকুড়ার সাধারণ বিদ্যালয় কমিটির এক জন সভ্য হইবেন।

মিস লিভিংস্টন সাহেব বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার ১৮৬২ অব্দের ৬ আইনের ১০৪ ধারানুসারে কমতা পাইবেনঃ—

বাবু নবীমজুমদার খোঁস। বাজা, ঢাকা।

বাবু রামকুমার পাল চৌধুরি। বাজিউপুর ময়মনসিংহ।

এডমন্ডসন চিকিৎসক সারদাপ্রসাদ গুপ্ত জিহটের দাতব্য চিকিৎসালয়ের ভার গ্রহণ হইবেন।

এডমন্ডসন চিকিৎসক নীতল সিংহ নবগ্রামের দাতব্য চিকিৎসালয়ের ভার গ্রহণ হইবেন।

১৫ই নবেম্বর—এচ.আর. বাতুল সাহেব মেদনীপুরের প্রতিমিথি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

টি.ই. রেবেন্স সাহেব সাহরনের জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন; কিন্তু দুই দিন বেতন বিবরণ না আইসেন ততদিন হুকুম পালিশ নীমার এডমন্ডসন তার গ্রহণ হইবেন।

এ.বি. ককন সাহেব ঢাকার প্রতিমিথি জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

ডি. এ. হমপ্রি সাহেব চট্টগ্রামের সাধারণ বিদ্যালয় কমিটির সেক্রেটারি হইবেন।

আসামের মিসলিভিত কর্মচারীরা ১৮৫৪ অব্দের ১০ আইনের ১ ধারানুসারে কমতা পাইবেন।

সহকারী কমিশনার

সেপ্টেনাট ই.এ. কয়েল গোয়ালপাড়া।

সেপ্টেনাট ডব্লিউ, সি.এস. ক্লাক নবগ্রাম। এ.এন. ফিলিপস দুবং।

জে.প্রিন্সি—শিবসাগর।

এন.লইস—দিকুগড়।

অতিরিক্ত সহকারী কমিশনার বাবু গুণাতি রায় বড়ুয়া গোয়ালপাড়া।

অতিরিক্ত সহকারী কমিশনার এচ. ফোন্স সাহেব শিবসাগর।

পিকাপুরের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বাবু প্রসাদ সাহেব মেদনীপুরের সেশিয়নে সমপূর্ণ করিব। র মোকদমার প্রথম বিচার করিতে পাইবেন।

৭ই নবেম্বর—জে.পি. গ্রান্ট সাহেব লবনের চৌকির প্রতিমিথি কলেক্টর হইরা ১৮৩৮ অব্দের ১২ আইনের ৩৩ ধারানুসারে কমতা পাইবেন। ছোটমাগপুরের সহকারী কমিশনার সেপ্টেনাট আর.সি. মনি পালামাউ বিভাগের ভারপাইওয়ান জি.টুটের সম্পূর্ণ কমতা পাইবেন।

সেপ্টেনাট ই.এ. ফিলিপস ছোটমাগপুরের একজন সহকারী কমিশনার হইবেন।

প্রেরিত

খ্রীষ্টীয় সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাশয় সমীপেষু।

এত দিনের পর আমাদেব গ্রামের উত্তরোত্তর জিহতি ও উন্নতি সাধন হইবেক তাহার পূর্বসংকল্প নির্ভর হইতেছে, বলা কিয়দিন গত হইল আশি মহাশয়ের পত্রিকায় লিখিয়াছিলাম যে এখানকার চৌকিদারেরা আর চৌকিতে আইসেন না, কিন্তু পুলিশ অফিসেটো অগারিন্ টেগেণ্ট রোজ সাহেবের উত্থাপনাবধি এখানকার চৌকিদারেরা ও অন্যান্য পুলিশ সংক্রান্ত কর্মচারীরা, খীর, খীর, কার্য সকল সুচারুরূপে সম্পন্ন করিতেছেন।

কিছু দিন গত হইল মাজিষ্ট্রেট হুগ সাহেব এখানে আসিয়াছিলেন, এবং আসিয়া এখানকার দায়িত্ব। ডপ্পেলারিৎ হুগ সাহেব অংগত হইরা অতিশয় কোমল প্রকাশ পূর্বক তৎসংলগ্ন এক সভা করিয়া এবং আপনিতে ঐ সভার সভাপতি হইরা বক্তার শীঘ্র ডাক্তরখানার খবচ পত্র সুচারুরূপে চলে তাহার বিশেষ রূপ উপায় করিয়া গিয়াছেন।

এখানকার রাস্তা ঘাটের বৈকি আওহাল, এবং বর্ষাকালে এপলী হইতে অন্য গলীতে গমনা গমন করিতে হইলে বৈকি ফেল ভোগ করিতে হয় তাহা মহাশয়কে আমি বর্ষাকালের প্রারম্ভেই অবগত করাইয়াছিলাম। কিন্তু বর্ষাপর্যন্ত আবির্ভাব করিয়া যে অনতি বিলম্বই রাস্তা ঘাটের দুঃখ হইতে উদ্ধার হইতে পারিব, কারণ এখানকার অনাচারি মাজিষ্ট্রেট সার্স এবং উল্লিখিত অগারিন্ টেগেণ্ট রোজ এই দুই মহাশয় রাস্তা ঘেরাওত করিবাব জন্য অত্যন্ত যত্নবান হইয়াছেন। মহাশয়, এখানকার জীর্ণ রাস্তার সংস্কার হউক বা না হউক ইহার আন্দোলন হওয়াতেই আমরা পরিতোষ প্রাপ্ত হইরাছি, যেমন লোকে বলিয়া থাকেন, “যে

কুটি রাস্তা হউক বা না হউক তাহা ভাল।

একপে এখানে নীতের অতিশয় চাইয়াছে বটে তথাপি অতিরিক্ত অধিকারি হইয়াছে নাই। বরং হুজি হইতেছে, এবং মধ্যে মধ্যে একটা একটা রাস্তা এখান প্রাপ্ত করিতেছে।

২৭শে নবেম্বর হুজিয়ার এখানকার জি.জি. মিলন সংক্রান্ত বিদ্যালয়ের ছাত্রদের সাংস্কারিক পরীক্ষা হইবেক, এবং এরূপ জয়যুব হইয়াছে যে, ডাক্তর ডকা সাহেব ঐ পরীক্ষা কর্তৃক সমাধা করিবেন। মহাশয়, এই সমস্তই যদি সভা হয় তাহা হইলেই আমাদেব সাতিশয় আনন্দের বিষয়।

৬ সাহেবের পরিবারে এখানে এক কুতন ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট আসিয়াছেন, আমরা ভবসা করি ইনি প্রতাপ বাবুর মতম বিখ্যাত কাব্যে সমস্ত ব্যয় না করিয়া প্রাণান্তিগেব মঙ্গল চেট। পাইবেন সম্ভব নাই।

বালনা।
২৬শে নবেম্বর। ১৮৬২ } এক পাঠক

মূল্যপ্রাপ্তি।

খ্রীষ্টীয় বাবু হরমোবিন্দ বন্দ্যোপাধ্যায় মাজিষ্ট্রানপুর। ১২৬২। ১৫ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০। ১৫ অগ্রহায়ণ পর্যন্ত কোং ১০ টাকা।
খ্রীষ্টীয় বাবু রাম গোপাল রিম : মন্দিরা। ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কাঙ্ক্ষিক পর্যন্ত ১০ ট।
“ টমস রুজবল্ড ডগগান কোলা। ১২৬২ আবার হইতে অগ্রহায়ণ পর্যন্ত। কোং ৫ টাকা।
খ্রীষ্টীয় বাবু তারকনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বাসডিয়া। ১২৬২ পৌষ হইতে জ্যৈষ্ঠ পর্যন্ত কোং ৫ টাকা।
খ্রীষ্টীয় বাবু রাম মোচন খোব কুমারগব। ১২৬২ আগষ্ট হইতে ৬৩ জুলাই পর্যন্ত ১০ ট।
খ্রীষ্টীয় বাবু হরলাল সাহা কুমারগব। ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কাঙ্ক্ষিক পর্যন্ত। কোং ১০ টাকা।
“ মুল্লী বজলে আলী দালোয়া রজপুর। ১২৬২ আবার হইতে ৭০ জ্যৈষ্ঠ পর্যন্ত। ১০ ট।
খ্রীষ্টীয় বাবু দুর্গাচরণ গুপ্ত মিউনিসিপাল সাইবেরি। কোং ১০ টাকা।
খ্রীষ্টীয় বাবু চারুচন্দ্র খোব মিলুসীরা। ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কাঙ্ক্ষিক পর্যন্ত। কোং ১০ ট।
খ্রীষ্টীয় বাবু বিপিন বিহারী ভাট্টা হাবড়া। ১২৬২ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ বৈশাখ পর্যন্ত।

এই পত্র কলিকাতার মার্শাল ফিল্ডের হুজি বিনোদচন্দ্রের কর্তব্যে

সোমপ্রকাশ ১৪৪ অগ্রহায়ণ ১২৬২।

বিজ্ঞাপন ১

সকল সাধারণের জ্ঞাতার্থে জানান আইতেছে যে ঐশ বহাল ডিহি ৫৫ গ্রামের স্বাধীন নিয়ের লিখিত হোলডিংস
 আশন আশন জেয়ার বাকী আদায় না করায় সন ১৮৩৫ সালের ৮ আইন ক্রমে সন ১৮৬২ সালের ১০ নীজার
 ১২৬২ সালের ২৬ অগ্রহায়ণ বুধবার মোকাম আলিপুরের ডেপুটি বালেউরি কাছারিতে নিলাম বিক্রয় হইবেক যে
 ঐরিক করিতে মানস রাখে তাহার ঐ তারিখে হাজির হইয়া নিলাম ডাক করিতে পারে আর প্রকাশ থাকে যে ঐ
 নিলাম ঐরিক করিতেক তৎক্ষণাৎ শতকরা ১৫ টাকার হিসাবে শাসিন করিয়া অবশিষ্ট পণ নিলামের তারিখ হইবে
 দিন দুই প্রহরের সময় বাখিল করিতে হইবেক।

ডিবিজান নম্বর	ডিবিজান নম্বর	ডিবিজান নম্বর	বাঁকি দায়ের নাম	সালিসি করা	মোট বাঁকি পরিমাণ	ডিবিজান নম্বর	ডিবিজান নম্বর	ডিবিজান নম্বর	বাঁকি দায়ের নাম	সালিসি করা	মোট বাঁকি পরিমাণ
১	২	১২৫	রমানাথ বসাক	১৮০	১৮০	৬	৬	১০	মমোহর দাস।	৬০	৬০
৬	৩	৫৭	গোবিন্দচন্দ্র বড়াল	৮৬	৮৬	৬	৫	৩	মজীন্দী আহম্মদ।	২৮১/২	২৮১
৬	৪	১২০	মধুসূদন হালদার	১/৯	১/৯	৬	১২	১২৫	জগদ্বোহন মলোপাধ্যায়	২৫০	২৫০
৬	৬	১৮১	মণিরঞ্জন সরকার	২১০/৯	২১০/৯	৬	৬	১৪০	ঐ	৩৫০	৩৫০
৬	১২	১১০	মধুসূদন হালদার	৩১০/৯	৮/৬	৬	১২	১৬১	মধুসূদন হালদার	১/৬	১/৬
৬	১৩	১২	মহেশ্বর হালদার	১৮/৩	১/৯	৪	৬	১১৩	সেখ মণিরঞ্জন।	৩৫৮	৩৫৮
৬	১৪	৩	৬রাধাকান্ত ঠাকুরসেবাৎ বংশীধর মিত্র হিরালাল মজুমদার	১৩৮/৩	১৩৮/৩	৬	৬	২৪৪/১৫	বিবি বদীয়েনেহা।	২/৬	২/৬
৬	১৫	১৫	ঐ	২/৯	২/৯	৬	বি	১২১	মধু বানসালী।	৫৮/৯	৫৮/৯
৬	১৬	১৬	ঐ	৪/৬	৪/৬	৬	৬	১৪৩	নীতাম্বর চন্দ।	১/৬	১/৬
৬	১৭	২১	ঐ	৩০/৯	৩০/৯	৬	৬	১৬৮	চিত্তামণি দাসী।	১৫৮/৯	১৫৮/৯
৬	১৮	৪৪	ঐ	২১৬	২১৬	৬	৬	১৬৯	জামির মিত্র।	৫৮/৬	৫৮/৬
৬	১৯	৪৬	ঐ	৫৮/৩	৫৮/৩	৬	ডি.	১২	বলাইচাঁদ বাব।	১১৮/৯	১১৮/৯
৬	২০	৫২	ঐ	২/৩	২/৩	৬	ই.	১৬৫	আমলচন্দ্র মনসীং	৪৮৫	৪৮৫
৬	২১	৬১	৬রাধাকান্ত ঠাকুরসেবাৎ বংশীধর মিত্র হিরালাল মজুমদার	৫১৮/৩	৫১৮/৩	৬	এক.	১৬	মধু বানসালী।	৩৮০	৩৮০
৬	২২	১১৬	হিরালাল মজুমদার	১৮/৬	১৮/৬	৪	জি.	১	মজীন্দীরা দেবীদীং	৫৮৮/২	৫৮৮/২
৬	২৩	৮৬	রাধাকান্ত মিত্র	২১৮/১০	২১৮/১০	৬	৬	১৩১	মহেশ্বরদাস বাব।	৪৮৮/৯	৪৮৮/৯
৬	২৪	৯১	জগদ্বোহন পরামণীক	৪১৮/৬	৪১৮/৬	৬	৬	১৩৭	ঐ	৪৮২	৪৮২
৬	২৫	৪২	বিশ্বনাথ মজুমদার	১২৮৮/৭	১২৮৮/৭	৬	৬	১৪১	ঐ	২৮১৯	২৮১৯
৬	২৬	১১৩	জগদ্বোহন দাসী	৩৭১৮/৪	৩৭১৮/৪	৬	৬	৫০	কালীনাথ মজুমদার।	১১/১০	১১/১০
৬	২৭	২৭	মধুসূদন হালদার।	৮০	৮০	৬	৬	১৫৬	রায় বৈকুণ্ঠ দাস চৌধুরি	৮১০	৮১০
৬	২৮	৩২	ঐ	৮৯	৮৯	৬	৬	২৩	সেখ পুষ্টি মজুমদার।	৮৪	৮৪
৬	২৯	৪৩	হরিশচন্দ্র দাসগুপ্ত।	২	২	৬	৬	১১৯	বিবি আমির।	৮/৬	৮/৬
৬	৩০	৪৮	মতিলা প্যারী	৩২১/৬	৩২১/৬	৬	৬	১২৪	বিবি কোএনা ডস্য. জ মিঞাজান বানসালী।	৮৯	৮৯

নং	নাম	পরিমাণ	তারিখ	নং	নাম	পরিমাণ	তারিখ
১	কালীমোহন সরকার।	১/৭	১৮৭২	১	ইকুবলত কাঞ্চাল।	১৮/৬	১৮৭২
২	বিবি পরমা।	৩৬	৩৮	২	পাতিত কর্মকার।	২/৭	২৭
৩	রামধন মিত্র।	২/৩	২/৩০	৩	বিশ্বমই দেব্যা ও	১৮/৮	১৮/৮
৪	কালিনাথ দত্ত।	৬/১০	১৮/৮	৪	কালিকমল বন্দ্যোপাধ্যায়		
৫	ঐ	১৮/৫	২৬/১০	৫	দুর্গাপতি ভট্টাচার্য্য দিৎ	২৬/৮	২৬/৮
৬	মুনসী কজলেরহমান	২৮/৬	২৮/৬	৬	ঐ	৪৮/৮	৪৮/৮
৭	মুনসী গোলাম রহমান।	৩৬/৯	৩৬/৯	৭	ঐ	১৮/১০	১৮/১০
৮	ডগান ঘোষ।	১৬/৮	১৬/৮	৮	ঐ	১৮/২	১৮/২
৯	কালীমোহন সরকার।	১৮/৮	১৮/৮	৯	কুকমোহন মিত্র।	১৮/১০	১৮/১০
১০	মহু বঁ।	২৮/৬	২৮/৬	১০	৬শ্রীধর ঠাকুরের সেবাত	৭৬/৮	৭৬/৮
১১	প্রসন্নকুমার দে।	১৮	১৮/৩	১১	কাশীকান্ত চট্টো দিৎ		
১২	কান্তকরণ বহু।	৪৬/৬	১৬/৮	১২	রাধানাথ বহু ও বহু	১৭/১১	১৭/১১
১৩	মধুসূদন হালদার।	৮/১০	১৮/১০	১৩	গোবিন্দ পাল।		
১৪	কুকপ্রসাদ বহু।	২৮/৮	২৮/৮	১৪	কালচাঁদ মণ্ডল দিৎ	৫৬/২	৫৬/২
১৫	বৈষ্ণবচন্দ্র রায়।	৮/১০	৮/১০	১৫	কুকপ্রসাদ বহু।	১৮/৩	১৮/৩
১৬	মনীন্দ্রকীর্ষন সরকার	৮/১০	৮/১০	১৬	কাশীনাথ ঘোষাল।	৮/৩	৮/৩
১৭	ইন্দ্রচন্দ্র বহু।	৮/১১	৮/১১	১৭	ছোট মিত্তারিণী দেবী	৩/১২	৩/১২
১৮	এলাউজা।	৮/১১	৮/১১	১৮	জগদ্বন্দ্ব চক্রবর্তি দিৎ	৮/৩	৮/৩
১৯	সেখ জোনাথ আলী।	৪৮/১০	৪৮/১০	১৯	জগদ্বন্দ্ব চক্রবর্তি নাবা	১৮/১০	১৮/১০
২০	সেখ জোবান আলী।	১৮/১১	১৮/১১	২০	মণের অসি ও খোদ রা		
২১	মধুসূদন হালদার।	৩/৭	৩/৭	২১	কুমার চক্রবর্তি ও দিগবর		
২২	রমানাথ ঘটক।	৩/১০	৩/১০	২২	বন্দ্যোপাধ্যায়।		
২৩	ঐ	২৮/৬	২৮/৬	২৩	রামসারারণ মুখোপাধ্যায়	২৮/১১	২৮/১১
২৪	ঐ	৪৮/১০	৪৮/১০	২৪	ঐ	৮/৮	৮/৮
২৫	ঐ	৮	৮	২৫	রামকুমার চক্রবর্তি দিৎ	৮/৭	৮/৭
২৬	কুকপ্রসাদ বহু।	১৮/১১	১৮/১১	২৬	হাজি আব্দুল আলী।	৮/১০	৮/১০
২৭	মহু বঁ।	১৮/১০	১৮/১০	২৭	কুবল মোহন দত্ত।	৩/৮	৩/৮
২৮	সৈয়দ গোলাম আলী।	২৮/৮	২৮/৮	২৮	বৈষ্ণবচন্দ্র পাল।	২৮/১১	২৮/১১

সোমপ্রকাশ

সর্বস্বত্ব সংরক্ষিত। যাহা যাহা প্রকাশিত হইবে তাহা সর্বস্বত্ব সংরক্ষিত।

৫ ভাগ।
৫ সংখ্যা।

সন ১২৬২। ১ পৌষ। ইং ১৮৬২। ১৫ ডিসেম্বর

মাসিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

গ্রাহকগণের প্রতি।

গ্রাহকগণকে জানান যাইতেছে, কার্তিক মাস অতীত হওয়াতে অনেকের প্রদত্ত সোমপ্রকাশের মূল্য নিঃশেষিত হইয়াছে, অগ্রহা-
রণ মাস অতীত হইলেও অনেকের মূল্য শেষ হইবে, অতএব তাহার দ্বারা করিয়া মূল্য পা-
ঠাইয়া দেন। উক্ত মূল্য কলিকাতা সংক-
ত কালেজে আদালতের মাঝে পাঠাইলেই আ-
মরা নির্বিক্রে ও শীঘ্র পাঠিব।

—

বিজ্ঞাপন।

আমি কাব্য নির্মিত মানে একখানি অল-
কার গ্রন্থ বাসনা তাহার প্রথম পূর্বক মুদ্রি-
ত ও প্রচারিত করিয়াছি। মূল্য ১ টাকা।
কলিকাতা হুজাপুর বিদ্যালয় যথেষ্ট অর্থ
সংক-ত কালেজে প্রদত্ত গিরীশচন্দ্র বিদ্যা-
বদ্র মহাশয়ের নিকটে অগ্রসংস্থান করিলে পা-
ঠিবেন।

প্রিয়ালমোহন তত্তাচার্য।

বিজ্ঞাপন।

এই মাসে নিম্নলিখিত পুস্তক গুলি বি-
ক্রয় হইতেছে।
মেঘনাদ বধকাব্য ১ম ভাগ মূল্য ১।০
২য় ভাগ ১।০
প্রিয়ালমোহন তত্তাচার্য ২য় ভাগ ১।০
বীরভদ্র কাব্য ১।০
কৃষ্ণকুমারী নাটক ১।০
পদ্মাবতী নাটক ১।০
উক্ত সকলকে মূল্যের ১/২ ২য় ভাগ মুদ্রিত

একেই কি বলে সত্যতা। ২য় ভাগ মুদ্রিত ১।০
শশিধর নাটকের ইংরাজী অনূদান ১।০
গীতাংগ ১।০
বাসবদত্তা ১।০
সাহিত্য বৃত্তাবলী ১।০
ভূগোল স্তর ১।০
আকৃষ্ণ বানচিত্র ১।০
প্রথম পাঠ ১।০
প্রাণিবৃত্তান্ত ১।০
গোলককে উপযোগিতা ১।০
উনকমটাকের আচর ১।০
ইংলিশ বঙ্গালয় ১।০

নং ১৮২ বঙ্গবাজার মোড়
প্রিন্টার চন্দ্র সেন কাং

—

বিজ্ঞাপন।

আমার প্রণীত ভারতবর্ষের ইতিহাস
বাহার প্রকাশিত হইবে, আমার নিকট মূল্য
১।০০ আনা দ্বারা পাঠাইলে অথবা হুজাপুর
প্রসেস অগ্রসংস্থান করিলে পাঠিবেন।

প্রিয়ালমোহন তত্তাচার্য।

বিজ্ঞাপন।

সর্বসাধারণের গোপনীয় প্রকাশ করা
যাইতেছে যে কলিকাতা গবর্ণমেন্ট ও গব-
র্ণমেন্ট সাহায্যকৃত এবং অপর বঙ্গবিদ্যালয়
দ্বারা বালকগণের উৎসাহার্থ গবর্ণমেন্টে
বার্ষিক যে একটি অর্থনৈতিক হাজিরা প্রদান
করিয়াছেন তাহার ২০শে, ৩০শে ও ৩১শে
ডিসেম্বর মোর, মঙ্গল, বুধবার কলিকাতার
মধ্যস্থিত স্কুলে এই সকল হাজিরাগুলির
পরীক্ষা হইবে। ১১ বৎসরের অধিকবয়স্ক

বালকের উক্ত পরীক্ষায় গৃহীত হইবেক।
কলিকাতা হাজিরা বাসনা পাঠাইলে
তার বালকগণ উক্ত পরীক্ষা দিতে পারিবেন
কেবল তাহারিগের সচরাচর এবং কলিক-
তা এক বা একাধিক পাঠশালায় অধ্যয়ন
করিতে পারিবেন।
যদি কোন অধ্যয়নের বিধান যোগ্য প্র-
দত্ত হইতে না পারিলে তাহার পরী-
ক্ষা দিতে পারিবেন না।
যে বালক উক্ত লিখিত এবং পুস্তক
অপারগ হইবে তাহাকে অধ্যয়ন বিধা-
পরীক্ষায় গ্রহণ করা যাইবে না।

যে যে বালক পরীক্ষাভাগ হইয়া এই
কল হাজিরা পাইবে তাহার হাজিরা
অন্য গবর্ণমেন্ট স্কুলে বিনা বেতনে পাঠ
সর পাঠ করিতে পারিবেন।

কলিকাতা
১৮৬২ সাল
১১ ডিসেম্বর

বিজ্ঞাপন।

সর্বসাধারণকে জানান যাইতেছে যে
যার মাতুলপুত্র ৬ নীলকণ্ঠ সেনের মৃত-
পত্নী তাহার কোন উত্তরাধিকারী না থাকা
তাহার শ্রীমান ও আমার মাতুলপুত্র
৬ তারার সেন মহাশয়ের দান সম্পত্তি
ব্যবস্থাসমূহে আমার অধিকার হইতেছে
আমি এক্ষণে পত্রগণে হাজিরা প্রদান
প্রদত্ত আমার মাতুলপুত্র ৬ তারার
বাকী পুত্রগণ ও বাকী ৬ তারার
মাতুলপুত্র ৬ তারার উক্ত গ্রামনিবা-
সী বালকগণের ১১ বৎসরের অধিকবয়স্ক
বালককে বিজ্ঞান কলেজ ১১ অগ্রহাষণ বিজ্ঞ

সোমপ্রকাশ।

১৯৩৮ খ্রিঃ, চিহ্নিত। আর উক্ত
কর্ম... অধীরা বিমাতার সহিত
... যিঃ যে যে সাক্ষি আবার মাতা-
... এমারত ও ইষ্টকামি কর্তৃক করিয়াছেন
... আমায় অজ্ঞাতে তুমি খানাপুর করিয়া
... করিয়াছেন তাঁহাঙ্গিক বা তাঁহা
... দিগের ওয়াংসানকে সেট সেট বিবরণে দা'ব
... কাকে বা আমায় ওয়াংসানকে আউনা
... দা'ব পাইয়া দিতে হইলেন। প্রথমতঃ উক্ত
... ৬ নীলকণ্ঠ নেনব বিমাতার কোন
... অধিকার নাই, দ্বিতীয়তঃ অধীরা জীলোদের
... বিবরণের অধিকার নাই অতএব তাঁ
... বিবরণ করা নিতান্ত অসিদ্ধ।

ক্রীষ্ণকামাধ বায়

১৯৩৮ সাল

১২ গরিফা

১৭ আগ্রহাষণ হিন্দু, শংকর পণ্ডিত।

সোমপ্রকাশ।

১লা পৌষ ১৩৩৭।

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভা একটি

অব্যবস্থাপক কালীন কনিষ্ঠ।

অতিভাণ্ডসম্পন্ন ব্যক্তি, নিগের লেখ
... হইতে সমস্ত সময়ে যে সমস্ত
... বাঁকা বিনিমিত হয়, কোন ক্ষেত্রে ও
... কালে কল্যাণে তাহার অণুভূত
... হয় না। বরং কখন কখন অধিক
... ও দুই হইতে থাকে। পোপ কহিয়া
... আমায় বিজ্ঞানভিমানী হইয়া যেমন
... পুরুষদিগকে নির্দোষ বোধ করিতে
... আমায় ও নেতৃত্ব একপ বিজ্ঞ
... ভিত্তিমণী হইয়া আমায় গুরু নির্দোষ
... করিবে। ১) সন্যাসপক সভায়
... মধ্যে এতদূর... ২) সন্যাসপক সভায়
... হইতে উদাহরণ... ৩) এক
... ব্যবস্থাপক সভায়... ৪) এক
... বিভিন্ন প্রকার... ৫) এক
... বার্ষিক বোধে যে ব্যবস্থা
... তছেন, আর এক জন তা...
... বহিত করিতেছেন। ৬) দিন
... আমাদিগের কৃতপূর্ব...
... প্রাপ্ত সাহেব সভাপতির আ-

সনে উপস্থিত হইয়া এই আইন করিবার
... করিয়াছিলেন যে এক অধীরা ক-
... ব্যক্তি, যোম যদি কোন গ্রামে
... উপস্থিত হয়, সেই অপরাধে গ্রামের
... ব্যক্তি... হইবে। এক্ষণে বী-
... সাহেব সভাপতির আসনে আসান
... হইয়া এই প্রস্তাবটি রহিত করিলেন। প্রাপ্ত
... সাহেব যে কি কারণে ও কি যুক্তিতে এ
... অন্যায় বিধি বিধানের প্রস্তাব করি-
... রাখিলেন, এখন সে চিন্তায় আর ওয়েজ
... নাই। ব্যবস্থাপক সভা অকীর্তি হইতে
... এবং বঙ্গদেশীয়েরা অন্যায় দণ্ড হইতে
... মুক্তি পাইলেন, এই সৌভাগ্যে দিব্য।

বি, এ, উপাধি পরীক্ষা

আমরা পুনরায় এ বিষয়ে হস্তক্ষেপ
... করিলাম। জগলী, কৃষ্ণনগর প্রভৃতি ক-
... লেজে বি, এ, উপাধি লাভার্থিদিগের পা-
... ঠোপযোগি পুস্তক পাঠনার রীতি প্রবর্তিত
... হইলে অনতিদীর্ঘকাল মধ্যে এসকল বিদ্যা-
... লয়েব সর্বেশেব উন্নতি হইয়া উঠিবে সন্দে-
... হ নাই। প্রেসিডেন্সি কলেজের বর্তমান
... ইতিহাস'ব্যাপক প্রযুক্ত ই. বি. ক. উএল
... সাহেবের সন্থা সুপণ্ডিত, সচ্চরিত্র, ধীর
... ওকৃতি, দয়াবান্ ধার্মিক ব্যক্তিবা যদি
... অধ্যাপক পদে নিয়োজিত হন, কোন ব্যক্তি
... তত্ত্বাব্দিদ্যালয়ের অীর্জি নিবারণ করিয়া
... রাখিতে সমর্থ হইবে। অধ্যাপকদিগের
... গুণেই বাহ্যলক্ষে হাতদিগের বিদ্যা ও
... চরিত্র শিক্ষা প্রভৃতি যাবতীর সকল অ-
... র্জিত হয়। আমরা প্রাচুর ভূমিতে
... পাই, অধ্যাপক ও তত্ত্বাবধায়ক উভয়ে
... মিলিয়া অনেক বিদ্যালয়কে উন্নত দি-
... তেছেন। একপ হওয়া বিচিত্র নহে। ব্যা-
... খিষ্ট কেবল সাংক্রামিক নয়, গুণগোচর ও
... ক্রমিক হইয়া থাকে।

এ জগৎবেরা যদি ব্যয়ের কথা কুলিয়া
... এ বিষয়ে উদাসিন্য প্রদর্শন করেন, তাহা
... হইতেছেন। গবর্ণমেন্ট শিক্ষা সঙ্কল্প

দে অতঃপর বান কীর্ষন... সঙ্কল্প
... এ আক্ষেপ করিয়া থাকেন। অন্য কথা
... কি, শিক্ষা কাযের প্রধানতম অধ্যক্ষ
... কিসন সাহেবও যে দিন ১৮৬০। ৩১ অ-
... কের শিক্ষা সংক্রান্ত রিপোর্ট মধ্যে এ বি-
... বয়ের প্রসঙ্গ করিয়া আক্ষেপ করিয়াছেন।
... তিনি বলেন, ১৮৫৯। ৩০ অবধি কেবল
... এই এক বঙ্গদেশে ১৩ কোটি টাকা আয় ও
... ৮ লক্ষ মাত্র ব্যয় হইয়াছে। এ আয়ের জ-
... রোদশ অংশও (এক কোটি) যদি
... শিক্ষাকাযে প্রদত্ত হয়, সন্থার তর-
... তব্ব কি কুতর্প হয় না? গবর্ণমে-
... ন্টের এ বিধরে হস্ত সঙ্কোচ করা
... কি ন্যায় সিদ্ধ হইতেছে? যদি কেহ একপ
... প্রস্তাব প্রস্তাব করেন, এত শের তাবি সর্বা
... দীন মঙ্গল লাভের মূল কারণ কি? চীনদে
... শীতল তর সঙ্কটযে এক গৃহস্থকে পুহ
... পৌত্র, কন্যা, কন্যা, পুত্রবধু প্রভৃতি বহুতর
... পরিবার পরিবেষ্টিত হইয়া সুখে কালতি
... পাঠ করিতে দেখিয়া বিস্ময়াবিষ্ট হইয়া
... জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, তোমাকে তির
... স্বভাব অনেকবিধ পরিজন পরিবেষ্টিত
... দেখিতেছি, অপর তুমি এপ সঙ্কল্পে কাল
... হরণে মগ্ন হইতেছ, ইহার বীজ কি-
... গৃহস্থ উত্তর দিবে, সঙ্কল্পে সঙ্কল্পে
... সঙ্কল্পে; আমরাও সেইরূপ উক্ত প্রস্তাব
... উত্তর দানহলে শিক্ষা শিক্ষা শিক্ষা দিন
... ব্যয় উচ্চারণ করিব।

শিক্ষা সংক্রান্ত ব্যয় সংক্ষেপ দ্বারাও
... প্রস্তাবিত বিষয়ে ব্যয়ের আনুকূল্য হইবার
... সর্বেশেব সম্ভাবনা আছে। শিক্ষা কাযে
... প্রদত্ত অর্থের অধিকাংশ তত্ত্বাবধায়ক ও
... অধ্যক্ষদিগের উদরসাৎ হইয়া থাকে।
... তাঁহাদিগের সংখ্যা ও বেতন স্থান করিয়া
... সেই উক্ত অর্থ যদি শিক্ষক ও অধ্যাপক
... দিগের বিধয়ে বিনিয়োগিত করা হয়, কে
... যে আমাদিগের প্রস্তাবিত বিষয় সুসি-
... হয় একপ নয়, শিক্ষা সংক্রান্ত উপাতি
... মেটেরও একটি মহোপকার লাভ হইতে

১। এই ডিপার্টমেন্টে একটি বিপরীত
 দিকের অনুষ্ঠান হইতেছে। সামান্য
 বেতনে সামান্য পোকে (অল্প বেতনে
 ভাল লোক পাওয়া যায়বে কেন) শিক্ষক
 পদে নিয়োজিত করিয়া অধিক টাকা
 ব্যয় করিয়া তত্ত্বাবধান ক্রিয়া সম্পাদন করা
 হইতেছে। যাহা এই ব্যবস্থার প্রবর্তন
 কর্তা, তাঁহারা মহাজনে পতিত হইয়াছেন।
 তাঁহারা মনে করেন, তত্ত্বাবধানই শিক্ষা
 সংক্রান্ত ডিপার্টমেন্টের জীবন রূপ।
 বাস্তবিক তাহা নহে। উৎকৃষ্ট শিক্ষক নি-
 যোগই ইহার জীবন। শিক্ষকগণ দোষ
 থাকিলে তত্ত্বাবধায়কেরা তাহার কত সং-
 শোধন করিবেন? সে দোষের সংশোধন
 চেষ্টা করিয়া যে সম্পূর্ণ রূপে রক্তকাষ
 হওয়া যায় না, অনুদিন তাহার অসংখ্য
 প্রমাণও পাওয়া যাইতেছে। কিন্তু উৎ-
 কৃষ্ট শিক্ষক ও অধ্যাপক নিয়োগের প্রথা
 যদি অবর্তিত হয়, তত্ত্বাবধানের বড় অ-
 পেক্ষা থাকে না। তাঁহাদের জন্যে এক
 বিশুদ্ধতার স্বাক্ষরশীল তত্ত্বাবধায়ক (অপকৃ-
 ষ্ট শিক্ষকের দ্বন্দ্বের উদ্দেশ্য তত্ত্বাবধায়কের
 প্রায় আধিপত্য থাকে না) আছেন, তিনি
 নিম্নত কাল সম্বন্ধিত ও অবহিত হইয়া
 তাঁহাদিগকে কর্তব্য সাধনে প্রেরণ করিতে
 ছেন। বাহিরের তত্ত্বাবধায়কদিগের সেক্ষপ
 কাষ্য করা ইহার ক্ষমতা নাই। তাঁহারা দুরে
 থাকেন, সর্বদা তত্ত্বাবধান করিতে পারেন
 না, সকলেই আবার স্বাক্ষর রূপে কাষ্য দর্শন
 করিবার ক্ষমতাও নাই। এই সকল কাষ-
 যেই ঘটরাচর দেখিতে পাওয়া যায়, যে
 সকল শিক্ষকের আশ্রয় তত্ত্বাবধায়কের
 তত্ত্বাবধান নাই, তাঁহারা অবসর পাইলে
 মায়ের কর্তব্য সাধনে অপরাধে থাকেন না।
 এতদ্বিধ, ভারতবর্ষের টাকার কত ই-ল-
 ও, কত অকারণ ও অসমস্ত মুদ্রা, কতক
 অসমস্ত বেতন সামান্য, কতক চোর কর্তৃক
 চোরিগণের উদ্দেশ্যে, কতক অসামান্য সৈ-
 নিকদিগের কর্তৃত্বাধীনতায় হইয়া

থাকে। এই সকল অসমস্ত ও অপব্যয়
 নিবৃত্ত হইলে কি রাজপুরুষেরা ভাবত
 বধীশদিগের শিক্ষা কাষ্যে দানকালে
 মুক্ত হইতে পারেন না? ইহাদিগের
 বিদ্যালয়িকার অনুরোধে যথোচিত চেষ্টা
 পাইয়া সেই সেই অপব্যয় নিবারণ কি
 বিধেবন? রাজপুরুষেরা ভারত ভূমিকে
 কামদ্বারা বোধ করিয়া নিবৃত্ত অর্থ কোচন
 করিতেছেন, কিন্তু ইহা সন্তানগণ অজান
 অজ্ঞতনসে মগ্ন হইয়া বিস্ময় হইতেছেন,
 ইহা অত্যন্ত ক্ষোভের বিষয়। এই প্রসঙ্গে
 সংস্কৃত আরবী ও লাতিন প্রভৃতির বিষয়ে
 বি, এ, পরীক্ষার সম্বন্ধে কিছু বক্তব্য আছে।
 এক্ষণে ইংরাজীভারতবার পরীক্ষার কলা
 কল বিবেচনা কালে বাঙ্গালা প্রভৃতি চলিত
 ভাষা এবং সংস্কৃত প্রভৃতি অচলিত ভাষা
 উভয়ই তুল্যরূপে সমাদৃত হইয়া থাকে।
 কিন্তু যদি অনুধাবন করিয়া দেখা যায়
 চলিত ও অচলিত উভয়, বহু ভাষার তুল্য
 সমাদর বিধেয় হইতেছে না। অচলিত
 ভাষার ব্যুৎপত্তি লাভ যেন পণ্ডিত
 ও কটকাধা, চলিত ভাষার সেক্ষপ হওয়া
 কোনক্রমেই সম্ভাবিত নহে। অতএব উক্ত
 উভয় ভাষার পরীক্ষাদিগের কলাংশে
 অমানুষ্য পুরস্কার দেওয়া কর্তব্য। সেই
 পুরস্কার দানের দুটি উপায় আছে। এক
 যে সময়ে পরীক্ষা হয়, পরীক্ষকেরা
 চলিত বাঙ্গলাদি ভাষার লিখিত প্রশ্নে
 উত্তরের সহিত অচলিত সংস্কৃতাদি
 ভাষার লিখিত উত্তর তুল্যতুল্য বলিয়া
 গণনা না করেন। উদাহ. প্রশ্নঃ
 দ্বারা আমাদিগের বক্তব্যটি সমধিক পরি-
 ক্ষুণ্ণ রূপে পাঠকগণের হৃদয়ঙ্গম করিয়া
 দেওয়া যাইতেছে। বোধ করুন, একজন
 বাঙ্গাল। ভাষার আর এক জন সংস্কৃত ভা-
 ষায় পরীক্ষা দিতে গেলেন। পরীক্ষক উক্ত
 পরীক্ষার্থিকে পাঁচ পাঁচটা করিয়া প্রশ্ন
 দিলেন। উত্তরেই প্রশ্নগুলির উত্তর
 দিলেন। পরীক্ষক প্রতি প্রশ্নে

নয়র করিয়া দিয়া প্রত্যেককে পা-
 রিয়া নব্ব্ব দিলেন। পরীক্ষক
 তুল্য তুল্য করিয়া যদি সংস্কৃত
 দিগণ নব্ব্ব দেন, এবং সেই
 অন্য অন্য বিষয়ে কতিপয়
 তাহা পূরণ করিবার নিয়ম করা
 হইলেই সংস্কৃত পরীক্ষা
 হইল।

দ্বিতীয় পুংকারদান চাকরী
 করুন, এককর্মপ্রার্থী হইয়া
 উপস্থিত হইয়াছেন। দুই
 পাখিধারী। কিন্তু উহাদিগের
 বাঙ্গালার আর একজন সংস্কৃত
 জ্ঞান হইয়াছিলেন। একপা
 জ্ঞানকে কথ্য দেওয়াই উচিত। অ-
 তির বিষয়েও এই নিয়মের অনু-
 ষ্ঠ।

আরও বহু বক্তব্য
 বার আশ্রয়
 বাণিজ্য ও ব্যবহার কাষ্যে
 মুদ্রা ও মোট প্রমাণ

প্রমাণ। এতদ্ব্যতীত
 দ্রব্য দ্বারা তাহার তুল্য
 থাকে, তাহার সংখ্যা, তারিখ
 অথবা আকার নির্ণয় করা
 পণ করা হয় না। অনেক
 প্রকার মুদ্রা অচলিত
 একর মুদ্রার সকল
 না। এই ভারতবর্ষে
 লিখিত আছে, কিন্তু ইহার
 অনেক সময়ে অনেক
 এক একেই হইতে
 মুদ্রা লইয়া যাইবার
 এক প্রকার কঠিন উপস্থিত
 দুই মুদ্রার সর্বশেষ উপযোগিতা
 কিন্তু ভারতবর্ষে সেই
 যাই। তাহা অচলিত
 থাক

কালিকর্ণীয়া ও অষ্ট্রেলিয়ার স্বর্ণ খনি
দ্বিতীয় হইবার পর অবধি এক ইংলণ্ডে
তিব্বতের নগ্ন কোটি টাকার স্বর্ণ আ
নিত হইছে। ফ্রান্স ও আমেরিকায় ইহা অ
পেক্ষা অধিক স্থান নহে। প্রতি বৎসর
পূর্ণের পরিমাণ বৃদ্ধি হইতেছে। অনেক
শ্রমসাধ্য হইয়া এই আশঙ্কা করিয়াছিল
যে, শেষে স্বর্ণ অসমুখ্য ও হতদর হই
বে কিন্তু এক্ষণে এ আশঙ্কা অমূলক বলি
য়া প্রতিপন্ন হইয়াছে। বিংশতি বৎসর
পূর্বে স্বর্ণ সংখ্যা স্বর্ণ মুদ্রা ছিল,
এই বৎসর তিন কোটি করিয়া
হইতেছে। এক আমেরিকার গৃহ
জ্ঞান তথ্য হইতে ইউরোপে প্রায়
এই টাকার স্বর্ণ মুদ্রা আসিয়াছে।
যদি বণিক ও সর্বসাধারণের
না হইত, তাহা হইলে কি ইহা
চলিত হইত? উইলসন সাহেব
বর্ষে স্বর্ণ মুদ্রা প্রচলনের যে প্রমাণ
দেখান, তাহার এই হল : এক্ষণে
প্রায় দুই কোটি টাকার পিনি, প.উ.
রাশী ক্রয় প্রভৃতি এক্ষণে আশ্রিত
কিন্তু দুর্ভাগ্যবশত তাহা একেবারে
গরদিগের চৌধ্য ও উদরদৌল্য
করিতেছে।

মোট চালাইবার সময়ে বণিক সমস্ত
টাকার পর্যন্ত মোট করিবার আ
শ করেন, কিন্তু মোট সর্বত্র প্রচলিত
না, গবর্ণমেন্টের ক্ষতি হইবে, এই
করিয়া লেভ সাহেব তাহা প্রচলিত
কেন্দ্র হইলেন না। কিন্তু স্ব. মুদ্রার
প্রচলনা নাই, কি র জাণী কি মক
সকল স্থানে ইহা প্রচলিত হইবে
র প্রচার বিষয়ের বেবল একটি
পত্র প্রচারিত আছে। তরত তর
ক হইছে। সুসঙ্গতি বলিয়া ভাব
। প্রচলিত হইবে সেই সংস্কারানুসঙ্গ
এই ভাষা দিগের সঙ্গিত অসঙ্গ
হ। তাহার

জন না করিয়া ইহার এক রুতিও গ্রহণ
করেন না। স্বর্ণ মুদ্রা প্রচলিত হইলে তাহা
বিশেষতঃ বণিকেরা তাহা ত্বরিতরিত
বে লইবেন। পরসার হিসাবে টাকা, অ
থবা টাকার হিসাবে নোটের ন্যায় তাহা
গৃহীত হইবে না। অতএব গবর্ণমেন্টের
প্রতিপত্তি স্বর্ণ মুদ্রার মূল্য নিকট করা
অথবা তাহাতে খাদ দেওয়া সম্ভাব্য
হইবে না। কুটিনিয়ন, স্কটল্যান্ডি
লিয়ান প্রভৃতি কয়েকজন ভূপতি মুদ্রার
খাদ দিয়া শেষে ক্ষতি ও অপমান প্রাপ্ত
হইয়াছিলেন। ফ্রান্সে ইটক প্রচলনে আমাদি
গের বক্তব্য এই, প্রধান প্রধান বণিকদিগকে
ডাকাইয়া কত মুদ্রার স্বর্ণে মোহর প্রভৃতি
প্রস্তুত করা কষ্টব্য ইহা নিকপণ করিয়া
স্বর্ণ মুদ্রা প্রচলিত করা উচিত। ঠিক যদি
১৬ টাকার স্বর্ণে মোহর হয়, তাহা লইয়া
১৬ টাকা দিতে কে অসম্মত হইবেন?
বাঁটার ভয় করা অন্যায়। টাকারও কি
বাঁটা লাগেনা? বিত্তস্বর্ণের মুদ্রা হইলেও
যদি বাঁটা লাগে, তাহাতে ক্ষতি কি? টা
কার ন্যায় ইহারও দু আনি পর্যন্ত করা
কর্তব্য। ইহা দ্বারা যে বিশেষ উপকার
লাভ হইবে, তাহার বর্ণন করা বাহুল্য।
একণে গড়ে প্রত্যেক ভারতবর্ষীয় শ্রীলো
কের গড়ে ৫০ টাকার স্বর্ণ আছে। স্বর্ণ
মুদ্রা প্রচলিত হইলে অলঙ্কারের প্রতি
ক্রমে এ দেশীয়দিগের উদাসীন্য হইবে,
দেশের ধনবৃদ্ধি হইবে, এবং গবর্ণমেন্টেরও
বিলক্ষণ সুবিধা হইবে।

১০। দাক্ষিণাত্য কুলীম টেমিক
শ্রমী পুনর্ভার।

২। ৩ মাস ব্যয়ক্রমে কালে পুত্রের
এবং অশৌচান্তে কন্ডার বাগদান ও
এই শ্রমীর উন্নতির একটি প্রধান প্রতি
বন্ধক হইয়াছে। শ্রীযুক্ত আমদচন্দ্র বে
দান্তবাগীশ সেই মুক্তি ও শান্তির
অমর প্রচার পরিবর্তন দেখান।

হইয়া এই শ্রমীর মহোপকার সাধনে
বৃত্ত হইয়াছেন, কিন্তু তাঁহার আশা
ভ্রম হওয়াতে সেই চেষ্টা সকল হইয়া
সত্তাবনা দেখা দাড়াইতেছে না। সেই ভ্রম
সংশোধিত হইবে যদি এই শ্রমীর উপকার
সাধিত হয়। এই আশায় আমরা পুনঃ পুনঃ
এ বিষয়ের আন্দোলনে প্রবৃত্ত হইতে
ছি। পাঠকগণ আমাদিগের এ অপরাধ
গ্রহণ করিবেন না।

৩। অগ্রহারণেব সোমপ্রকাশে মধ্য
স্থ মানিবার বিষয়ে যে প্রতিশ্রুতি প্রকাশ
করা হয়, বেদান্তবাগীশ তদনুযায়ী হইয়া
৩০এ অগ্রহারণ গ্রহস্পতি বাব আমাদিগে
র নিকট এক পর প্রেরণ করেন। তাহা
তে দুই হইল, বৈদিক শ্রমীর ২৬ ব্যক্তি
র নাম লিখিত হইয়াছে। বেদান্তবাগীশ
উহার মধ্য হইতে মনোনীত করিয়া মীমাং
সক নিকপণ করিতে কহিয়াছেন। আম
রা প্রথমে যে কয় মহোপাধায়কে মধ্যস্থ
মনোনীত করিয়াছিলম, তাঁহারা বেদান্ত
বাগীশের মনোনীত হন নাই। অতএব
আমরা আর মনোনীত করিবার ভার গ্রহণ
করিতে অভিলাষী নহি, এ ভার বেদান্ত
বাগীশের উপরেই সমর্পণ করিলাম।
তিনি যাহাকে ইচ্ছা মনোনীত করিয়া এবং
কোন দিন কোন স্থানে সজা হইয়া এবিধ
র বিচার হইবে তাহা দ্বিগ করিয়া পূর্বে
পর লিখিবেন, আমরা সেই দিন সেই
স্থানে উপস্থিত হইব। কিন্তু এখানে এক
টা কথা উল্লেখ করা নিতান্ত আবশ্যিক
হইতেছে। উপস্থিত বিষয়ে স্মৃতিশাস্ত্র
লইয়া বিচার উপস্থিত। যাহাদিগের সেই
স্মৃতি শাস্ত্রে পাণ্ডিত্য ও তাহার মর্মগ্রহে
সামর্থ্য আছে, তাহা মধ্যস্থ যেন মনোনী
ত করা হয়। আমরা বেদান্তবাগীশকে বৈ
দিক শ্রমীর বাগদান বিষয়ে ৫৭ পৃষ্ঠা
লবন করিতে কহিয়াছিলাম, তদনুসারে
তাহার ক্ষমতা এই স্মৃতি শাস্ত্রের মর্মগ্রহে
তাহার অধিকার

—কিন্তু, কখনো কখনো হইতে পারে যে
কোনও এক পক্ষের ইচ্ছা হইলে, বোধ করি তা
হা পূরণের জন্য যত্ন হইতে পারে। সে পর
এই—

স্বামীজী মহাশয় :

অতীত সৌম্যকান্দ, সৌম্যকান্দ পত্রিকাতে
বেদান্তবোধী মহাশয়ের লিখিত বিচারার্থ
বোধে যে প্রবন্ধ প্রকটিত হইয়াছে, সে অত্য
ন্ত-স্বাক্ষর বিবেচনার অতিপার্যন্ত শাস্ত্রার্থ
প্রকটনে প্রবৃত্ত হইল। মহাশয়! অতীত প্র
কাশিত সৌম্যকান্দ অসম্মত বিচারে তাহা
প্রকাশে লিখিত করিলেন সন্দেহ নাই।
বেদান্তবোধী মহাশয়ের লিখিত স্মৃতি-শা
স্ত্রের বিচার উপস্থিত বিচার আমরা দুই
ভাই ভাই। বীহারী এই স্মৃতি-শাস্ত্রের
সংস্করণে অসম্মত করিলেন মহাশয়।
আমরাও তাহা দেখে, তাহাদের সম্মত বালা-
ন কালের জন্য এ স্মৃতি-শাস্ত্রের জন্য
বদা অবশ্যই হইয়াছে।—এই বদা বিচারের
কালব্যয়ক হয় এবং আত্মবল হু-
বদ কন্যা বিপর্য্যে ইত্যাদি শাস্ত্রও বদা
বাল্যকালব্যয়ক হয়, তবে বেদান্তবোধী
মহাশয়ের বাক্য বিচার হইতে পারে কি
সেই শাস্ত্র, স্মৃতি ও বাবদ্য এই ত্রিভুজ বি
বোধী হইতে পারে। হায় কি আশ্চর্য!
প্রাচীন পণ্ডিতজনগণের বিবেকে এবং
পরম্পরা প্রভে এবং স্মৃতি-শাস্ত্রের
অধিকারি প্রভে কটাক পাত না করিয়া
বেদান্তবোধী মহাশয় এই অসম্মত বিচার
উপস্থিত করিয়াছেন, অতএব পরম্পরা সেই
সকল শাস্ত্র, বিচারে প্রকট করিলেন স্মৃতি
পাত করিলেন।

আত্মবল, হু-বদ, ইত্যাদি (১) বদ
মহাশয়! পরম্পরা স্মৃতি-শাস্ত্রের
অতএব অসম্মত বালা-ন কালের জন্য
বদা অবশ্যই হইয়াছে।—এই বদা বিচারের
কালব্যয়ক হয় এবং আত্মবল হু-
বদ কন্যা বিপর্য্যে ইত্যাদি শাস্ত্রও বদা
বাল্যকালব্যয়ক হয়, তবে বেদান্তবোধী
মহাশয়ের বাক্য বিচার হইতে পারে কি
সেই শাস্ত্র, স্মৃতি ও বাবদ্য এই ত্রিভুজ বি
বোধী হইতে পারে। হায় কি আশ্চর্য!
প্রাচীন পণ্ডিতজনগণের বিবেকে এবং
পরম্পরা প্রভে এবং স্মৃতি-শাস্ত্রের
অধিকারি প্রভে কটাক পাত না করিয়া
বেদান্তবোধী মহাশয় এই অসম্মত বিচার
উপস্থিত করিয়াছেন, অতএব পরম্পরা সেই
সকল শাস্ত্র, বিচারে প্রকট করিলেন স্মৃতি
পাত করিলেন।

(১) ইত্যাদি বদা মহাশয়! পরম্পরা
স্মৃতি-শাস্ত্রের অতএব অসম্মত বালা-
ন কালের জন্য বদা অবশ্যই হইয়াছে।—
এই বদা বিচারের কালব্যয়ক হয় এবং
আত্মবল হু-বদ কন্যা বিপর্য্যে ইত্যাদি
শাস্ত্রও বদা বাল্যকালব্যয়ক হয়, তবে
বেদান্তবোধী মহাশয়ের বাক্য বিচার
হইতে পারে কি সেই শাস্ত্র, স্মৃতি ও
বাবদ্য এই ত্রিভুজ বিবোধী হইতে পারে।

সৌম্যকান্দ পত্রিকাতে বি.
বীহারী, অতএব অসম্মত বালা-
ন কালের জন্য বদা অবশ্যই হইয়াছে।—
এই বদা বিচারের কালব্যয়ক হয় এবং
আত্মবল হু-বদ কন্যা বিপর্য্যে ইত্যাদি
শাস্ত্রও বদা বাল্যকালব্যয়ক হয়, তবে
বেদান্তবোধী মহাশয়ের বাক্য বিচার
হইতে পারে কি সেই শাস্ত্র, স্মৃতি ও
বাবদ্য এই ত্রিভুজ বিবোধী হইতে পারে।

আত্মবল, হু-বদ, ইত্যাদি (১) বদ
মহাশয়! পরম্পরা স্মৃতি-শাস্ত্রের
অতএব অসম্মত বালা-ন কালের জন্য
বদা অবশ্যই হইয়াছে।—এই বদা বিচারের
কালব্যয়ক হয় এবং আত্মবল হু-
বদ কন্যা বিপর্য্যে ইত্যাদি শাস্ত্রও বদা
বাল্যকালব্যয়ক হয়, তবে বেদান্তবোধী
মহাশয়ের বাক্য বিচার হইতে পারে কি
সেই শাস্ত্র, স্মৃতি ও বাবদ্য এই ত্রিভুজ বি
বোধী হইতে পারে। হায় কি আশ্চর্য!
প্রাচীন পণ্ডিতজনগণের বিবেকে এবং
পরম্পরা প্রভে এবং স্মৃতি-শাস্ত্রের
অধিকারি প্রভে কটাক পাত না করিয়া
বেদান্তবোধী মহাশয় এই অসম্মত বিচার
উপস্থিত করিয়াছেন, অতএব পরম্পরা সেই
সকল শাস্ত্র, বিচারে প্রকট করিলেন স্মৃতি
পাত করিলেন।

সৌম্যকান্দ পত্রিকাতে বি.
বীহারী, অতএব অসম্মত বালা-
ন কালের জন্য বদা অবশ্যই হইয়াছে।—
এই বদা বিচারের কালব্যয়ক হয় এবং
আত্মবল হু-বদ কন্যা বিপর্য্যে ইত্যাদি
শাস্ত্রও বদা বাল্যকালব্যয়ক হয়, তবে
বেদান্তবোধী মহাশয়ের বাক্য বিচার
হইতে পারে কি সেই শাস্ত্র, স্মৃতি ও
বাবদ্য এই ত্রিভুজ বিবোধী হইতে পারে।

10-10-68

[illegible][illegible]

১. বাণেশ্বর মহাশয় ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ২. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ৩. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ৪. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ৫. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ৬. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ৭. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ৮. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ৯. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে
 ১০. বাণেশ্বর ১৯৩১ খ্রিস্টাব্দে

[illegible]

কিন্তু, তখনই যে বিদ্রোহে রাজ্য সিংহাসনে
 পড়িয়াছিল সে ভাঙাতি এক ব্যক্তি কে
 পুনরায় রাজ্য আশবার দ্রীকে এক কুঠার
 কুণ্ডলভেদ করিয়াছে, এবিষয় এ বিদ্রোহী
 কবি জানিতেন। সুমিত্রা বাণী এইভাবেই
 প্রাচীন বাংলার কিংকে, রাজার, কবিগণ ।

হিউস্টন না। তারতর্ক্য ব্যতিরিক্ত অন্য কোন দেশে পাতিবৃত্তের একপ সত্তার উদ্বোধন পাওয়া যায় না।

কল্যাণ বেল। দুই প্রহরের সময়ে একটি বহু প্রাণীক চাঁপাতলায় স্বীকৃতি হল আশিত্যে গিয়া। অলম্বন হইয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে। তারো পক্ষা গেল হালসির বাগানে এক কো-রুর একটি বাসিগাহ আসে ফেলা ছিল। কোরুর এক জেলেকে সেই বাসিগাহ তুলিয়া দিতে কহে : জেলেকে কল্যাণ বেল। যেমন বাসিগাহটি তুলিবে অল্পনি পাঁচটি মুনিরা তাহার হাতের উপর গতিত হয়। চাত আটকিয়া বাওয়াতে উঠিতে না পারিয়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে।

আমরা তালার লাভ এলগিনের গ মত্যাগের হু হু অলোক, তিনি আগাধি কে করারি মানে। এর পক্ষিমাফলে গমন করি-বেম

ইউর প্রবাহন বুধবার

খত কল্যাণ। দিভনি কটন কলিকাতার উ গাতিত হইয়াছে। বৃণতরির অধ্যক্ষ সুর জে মন হোণ অজ্ঞানবানী হইতে খাত্রা করিয়া ন।

বহুলাইউ অগ্রহাণ করেন, ত্রু নও সাহেব একবন্দোব সাহেবের কণ্ঠে নিযুক্ত।

৫৫৮।

উক্ত পত্র বলেন, ৭২ গণিত ইউরোপীয় সেন্সরদের তে নামে এক জন সৈনিক এক জন সচিবকে বধ করিয়া গলায়ন করে। এক বণিক তাহানে খব্রিবার চেটী করাতে সে তাঁ হাকে তুলি করে, বণিক তাহাতে বিশেষ আশ্বাস প্রা। ন। হইয়া অপর আর এক ব্য-ক্তির সাহায্যে তাহাকে ২ ত করিয়াছে। এই হতভাগ্য বণিকের মিরাতে কীণী হইবে।

নিম্ন বিবৃতি গতিত দুই ৮-৭ নিমিত্ত দক হইয়াছে।

আসাব	১১.২৮
সাহাব	৫.২৫
হজিলি	২.২৫
আসাব	১১.২৮
সাহাব	৫.২৫
হজিলি	২.২৫

বইরাহে কল্যাণ। ইতিহাসকারিদল পতিত-স্থিতি ২ বসিয়া ভীতকর করিতে চাহেন না।

উৎসাহিতল যতন তত্বত। সন্ধানধারণের আবেশন ক্রমে লেপ ইন্ডে সন্ধান চানার ইন-কম টাক এক কানে ৫.০.০.০ টাকা ব্যাখ্য করি-য়াছেন।

সম্রাতি বেলিয়া। বাটার একটি বাটী তঃ ইতিহাস কয়েক ব্যক্তিগ প্রাণ বিনষ্ট হইয়াছে। ইহারা সকলেই পরিদ্র বহুর।

গত লেনিয়নের শেষে প্রাণে মৃত্যু। উ প্রবলনকে বসিয়াছেন, মাঝিট্ট টেরা অতি সাহায্য সাহায্য মোকদ্দমা। লেনিয়নে প্রেরণ করিয়া তুরিয়ার কার্য বাতান। তাহাদিগের বিরুদ্ধে এসকল মকদ্দমার নিষ্পত্তি করা কর্তব্য। মৃত মৃত্যুকে তুলেন। তাহাদিগের মতে অত মোদন করিয়া প্রধান বিচারপতি ও লেপট মকে গবর্নরের নিকটে তাহাদিগের পত্র প্রেরণ করিয়াছেন। সকলেই আপন আপন কঠোর হস্ত হইতে মুক্তি লাভের চেষ্টা করে।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া। জবণ করিয়াছেন মর বাবেস পিকক আর একটি করতলি সং-ক্রান্ত উক্তকল্যায় বে মত প্রকাশ করিয়াছেন তাহা ছিল সবটিক মোকদ্দমা কালীন প্রকা-শিত মতের সম্পূর্ণ বিপরীত। কিন্তু অল্পসরণ করিয়া কার্য না করিলে একর্ণ - ডাইনগ্রাফ রোগীর প্রকাশ থাকাই থাকে।

তারতর্ক্য হইতে ক্রমশঃ অধিক পরি-হারে তুল। নিবরণুলে বাইতেছে। এ মকদ্দম ১০,০০,০০০ বস্তা গিয়াছে, আগাধি বর্ধে-অধিক বাইবার সভাকলা আছে। এই তুল। এ দেশে প্রাণিয়া এতবান্দেই ব্যস্ততা কাজ ক-রিয়া উৎসাহকবর্ধের কি সমস্যা হইবে।

৫৫৮।

দ্বিতীয়দেবোই বলেন, দ্বিতীয় ইতিহাস প্রা-চীর তদ করা হইবে। অতঃপর এই অসামান্য-চিত কাগ্যপ্রত্নতত্ত্বের কার্য-প্রতিবেদ পাঠিত-হি না। গবর্নরকে কি নির্দেশ করা করা করে-ন? যদি তাহার সভাকলা থাকে বাটী ও প্রা-চীর তদ করিয়া তত্ত্বিগণ সন্ধানতঃ মাই-বরং তাহার হস্তিহই সভাকলা।

উক্ত পত্র আরো বলেন সুর দ্বিতীয়দেবো

স্মৃতি গোষ্ঠানিরের স্বাধীনপন্থিত্যের সহিত গৃহীত হইয়াছেন।

হিল ন গানের একজন পত্র প্রেরক বলেন, নিম্ন মনের প্রবল কর্তৃক উচিত কি না গবর্নর-কে প্রতিবাদের এক রিপোর্ট প্রাধিকারিত। যেক-র রবর্টমেন ও কর্ণেল টেলরের রিপোর্টের উপ-রে এই কার্য বিতর করিতেছে। যখন সুকল আরও হয় তৎকালে কি গবর্নরকে আত্ম হি-লেন?

সম্রাতি বোম্বাই নগরে ভয়ানক বড় ও ২০ বর্ষীক পর্যন্ত বৃষ্টি হইয়া গিয়াছে।

বোম্বাইয়ের বে মকল সিবিজিয়ার, পলী-কোডী হইতে পারেন নাই, গবর্নরকে তা-হাদিগকে ব্যবস্থাবিদগণের উপদেশ প্রদণ করিবার অনুমতি দিয়াছেন। সিবিজিয়ারেরা মাঠে মারা বান কেন?

একখানি ইংরাজী পত্রে হুই চটল, ১৮২২ সালে তারতর্ক্য বর্ধের নামা অংশ হইতে বকে-সে ২০,০০,০০০ বস্তা তুল। আইসে। তখন স-মুদায় তারতর্ক্য ১,১০,০০,০০০ বস্তা তুল। হইত। এতি বস্তার চারি বণ তুল। থাকিত? একপে তুলার চাব অংশ হইবার একটি প্র-ধান কারণ আছে। মাকেটের বস্তা সর্বত্র হু-ইত ও দেশীয় বস্তা অস্বীকৃত হইয়াছে, মা-কেটের আয়ার তারতর্ক্য হইতে না লইয়। আমেরিকা হইতে অধিকারক তুল। আমদান করেন।

টাইমস অব ইণ্ডিয়া। আমেরিকাত্তি প্রা-শিত সংবাদবাতা বলেন, মিলনের পাল। হুই-কের খাল কল সাংখ্যাত্ত কি না, তত্ত্বিগের সন্নিহিত হইয়া একজন উৎসাহ ইতি নিবরণকে তত্ত্বিগের রিপোর্ট করিতে বসিয়াছেন। যোম হয়, উৎসাহে বাইয়া পাল। এই সংখ্যার জ-জিগাহে। কেন্দ্রিকরানী নয় সন্ধান ইটালী-র ইতি নিবরণ বসিয়াছেন অতিব্রতকে কট খাল খনন সন্ধান হইতে পারিবে। উৎসাহেরা অস্বীকৃত্যের করে কলানী কোম্পানিকে বস্তা দিয়াছেন।

কোম্পানি ইতিহাস বলেন দ্বিতীয়দেবো মকল-বীর মকল হইতে কলানী কোম্পানীকে উপ-নিবেশে কল। প্রবলন দ্বিতীয় উৎসাহ প্রা-শিত।

জরুরী করিবে না। রাজা উৎকর্ষ উপাধি
অবলম্বন করিয়াছেন।

গবর্ণমেন্টের ডির ডির খবরাগারে নিম্ন
লিখিত টাকা প্রমাণ আছে:—

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের	৫,৭০,২২,০৬০
বঙ্গদেশীয়	১,৮০,০০,০০০
উত্তর প্রদেশীয়	২,০০,০০,০০০
পঞ্জাবের	৮,০০,০০,০০০
বোম্বাইয়ের	২,০০,০০,০০০
মধ্যপ্রদেশের	৫০,০০,০০০
দাক্ষিণাত্যের	১২,০০,০০০
মাদ্রাজের	২,০০,০০,০০০
মোট টাকা	১৫,০০,০০,০০০

ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট কর্তৃক দানার্থী প্র-
তিমানে ৫০ লক্ষ করিয়া লইতেছেন। সম্প্রতি
তথাক্রমে গুল ত্রুটিতে লক্ষ্য করিয়া গি-
রাছে। ইহাতেই বোধ হইতেছে হঠাৎ ১০
কোটি হইতে ১৫ কোটি হইয়াছে। বাণী হইক
গবর্ণমেন্টের টাকার কার্য প্রদর্শন করা
সম্ভব।

কেন্দ্রীয় ইতিহাস বলেন ইউল সাহেব
হাসানাবাদের সাক্ষিবিধি হইয়াছেন।

উক্ত পত্র আরও বলেন আগ্রার সমস্ত
জমিদারী গাজিপুরের জমিদার উপাধি অস্বীকার
ন প্রকাশ করিয়াছেন। এই কি সত্য? এতদে-
লীল সমাজ কি এই দুর্বৃত্ত পিণ্ডিতের বিচার
পত্ৰে নিষ্ঠুরতা সহ করিবেন?

২৮-এ অগ্রহায়ণ শুক্রবার।

সর বাণেশ পিক আপীল সংক্রান্ত কা-
র্য ত্যাগ করিয়া সোমবার অধি অন্য কার্য
করিবেন। সর চার্লস জাকসন আপীল সং-
ক্রান্ত কার্যে বাইতেছেন।

পুনা অবজ্ঞা বর বলেন "আজি-
কার নিম্ন আছে কোন যুবক বত দিন পর্যন্ত
যুদ্ধে অগ্রসর হইতে না পারে তত
দিন তাহার বিবাহ অথবা তাহাকে হস্ত
লিয়া গণ্য করা হয় না। ইহা বেলালের
প্রতি কি এ নিয়ম থাকে না? যারা খরা বাকী
লিখিত ও কনসার বহির্ভূত। কিন্তু আ-
মরা প্রকাশ করিতেছি, যেতদিন পর্যন্ত নব্য
বাকালী এক বিখ্যাত মোকদমা উপস্থিত
করা হইল, মিথ্যা সাক্ষী ও নিম্ন

অর্থেক মিথ্যা বলিয়া বাস্তব বিচারালয়ে
ও আপীল আদালত গণ্য হইয়া
আমলাদিগকে উৎকোচ দিয়া নিম্নে কিঞ্চিৎ
লইতে না পারিলেন, ততদিন তাহাকে বিবাহ
করিতে দেওয়া হইত। কিন্তু মিথ্যা করি-
য়া বকদামার অবস্থা কখনো অধিকারী
এতদিন বাকালীদিগের হস্তগত ছিল বর্ধা
বটে পুনা অবজ্ঞা বর মিথ্যা বলেন নাট,
কিন্তু আরও ক'রো বাকালী আসিয়া বা
আজিগের তুলাদিগের সতিত এ অধিকারী
করণ করিয়া, লইয়াছেন। পুনা অবজ্ঞা বর
নীলকমিনেব বিদ্যোৎপাদিত পামবা
সত্য কি মিথ্যা? এতদিন জানিতে পারিবেন
পুনা অবজ্ঞা বর ওকণ প্রত্যাবনা করিয়া
যদি এক প্রস্তাব কবিতেন যে বাকালীরা
যাবৎ যখন যখন তাহদের ও ছায়াব ন্যায় আ-
সগত্যাগি যারা বিচারপতিদিগকে তুলাই-
তে না পারিবেন, তখন বিবাহ করিতে
পারিবেন না, তাহা হইলে তিনি নিঃসন্দেহ
খ্যাতি পাইবেন।

৫৭

গতকাল সৌনহালে একটা ভোজ ও সভা
হইয়া গিয়াছে। প্রায় হুশত ব্যক্তি তথায়
উপস্থিত ছিলেন। সাক্ষরারের বক্তৃতি-
গের সহায়তার জন্য এই ভোজ হয় নির্মিত
ব্যক্তির প্রত্যেকে ২৫ টাকা দিয়াছেন।
স্পেন ও উইলসনের ভোটের হাতে তাহারা
বিনা ঘরে আহারীয় দ্রব্য পাইয়াছেন।

কোট নগর হইতে একজন বিনিক
পত্রে লিখিয়াছেন নিম্ন বহির্ভূত প্রদেশেও
কানটোল্লি পুনি হইতেছে। এদিকে বঙ্গ-
দেশে হাবড়া পর্যন্ত উক্ত পুলি হইয়াছে।

উক্ত পত্রপ্রেরক স ও বলেন কোটনা
গণতন্ত্র রাজ্য বাস্তবতার সহিত বিবাহ
হওয়াতে উত্তরে গবর্ণমেন্টের নিকটে আবে-
দন করিয়াছেন। আপনাদিগের গৃহ বিবাহ
আপনারা নিষিদ্ধ করিয়া লওয়াই হইয়া
কল, তাহা পালিলে যান, মধ্যাহ্ন ও দ্বি-
তা প্রভৃতি সমস্ত রক্ষা হয়, তাহা না পারি-
লে পরস্পর বিবাহ করিয়া উপসর্গ হইয়া এই
উপায় অবলম্বন করা কল নহে।

টাইমস অব ইন্ডিয়া কলিকাতায় লিখিত
বার মাজা বলেন রাজা নিম্নের রাও পরি-
ক

স সহকারে ইংলী অধ্যয়ন করিয়া
ছেন। রাজা এখনে বাকী ন্যায় ও রাজ্য
তিব্বতি পুস্তক পাঠ করিতেছেন।

বাস্তব টাইমস বলেন, সম্প্রতি
বাকালী (ইবার) সকলেই অধিকারী
পরি উপলক্ষে রাণ্ডে বাকালীরা পুনি
নিবিব ও নগরদিগের গমন করিতে তাহাদিগের
সহিত অন্য অন্য প্রাণী বোম্বাই
হইয়াছে। কিন্তু ভারতবর্ষ ডির অধ্যয়ন
প্রাণী একে একে মেরা প্রাণ বিবাহ করিয়া
বঙ্গদেশে কেবল একটা কুলান আছে। সর্ব-
ধারণে শুনিয়া বিশ্বাস করাইবেন পাঁচু রাণ্ডে
কোন হিন্দু বামনা বামাইরা বাইলেই তত
বঙ্গদেশের রাজ্য করিয়া।

বেমুন সোসাইটিতে গতকাল বারু কিলে
রীচীল দিও আ ১০০ ক্রীলোকগণের
অবস্থার বিষয়ে এক ব পাঠ করিয়াছেন
প্রত্যেকের কাল উত্তীর্ণ হইয়া কার্যের কার্য
কর আসিবে।

২৯ অগ্রহায়ণ শনিবার।

কিনিক বলেন, ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট
আগ্রবদেশ হইতে ২৫ টি উত্তর অর্থ আদায়
র অন্য কাগজে কুপার ৩০ একজন অর্থ ডিক্রি-
সকল প্রেরণ করিয়াছেন। এই সকল অর্থের
অন্য গবর্ণমেন্ট ৫৭,০০০ টাকা প্রদান করিয়া
ছেন। এই অবস্থার প্রদেশে উৎকর্ষ অর্থ
উৎপাদন করা এই ডেটার মুখ্য উদ্দেশ্য।
এদেশের লোককে বলবান করবার উদ্দেশ্য
হইতেছে।

বাস্তব টাইমস বলেন, ভারত আভি-
নির্দেশের জেনারেলের উপর সকলে বিরক্ত
হওয়াতে উক্ত পত্র উত্তীর্ণ হইবে। অন্যথা
কণম উত্তীর্ণ গিয়া বঙ্গ-ব্যয় সংক্ষেপ হই-
তাই বলিলে বিবরণ।

সম্প্রতি বাস্তবের প্রাণিতম বিচারাল-
য়ের দেবদেবের কার্যারম্ভে সর ১০০ লক্ষ
বাকালীরা এবার অধিকারের মধ্যে পনে-
ক কলি কর্তৃক পণ্ডি অগ্রহীত হই-
য়াছে। ৫০০ জন লোক আছে। এক
বেমুন ও তাহার উপপতি ৭০ এক ব্য-
ক্তিকে বধ করিয়া তাহার ঘৃণা হইয়া
রাখে। এক বনিক এক ডিক্রে টাকা

এই পত্র কলিকাতার শর্কর-মালতী হেলথের মৌ-
মাখুরে বসেন। তিনি জাতিগত ডাক্তারদের মাঝে
বিলাহুদার মতো একটি মৌ-মাখুরের একজন।

সোমপ্রব

“সর্বসম্মত প্রতিনিধিত্বের যোগ্যতা: প্রকৃতি সৃষ্টিকর্তার ন হইল।”

৫ ভাগ ।
৬ সংখ্যা ।

সন ১২৬৩ । ৮ পৌষ । ইং ১৮৬২ । ২২ ডিসেম্বর

১০ পৃষ্ঠা ১০ টাকা
১০ পৃষ্ঠা ১০ টাকা

বিজ্ঞাপন ।

আমি কাব্য নির্মাণে একখানি অলংকার গ্রন্থ বঙ্গলা ভাষায় প্রথম পুস্তক মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়াছি । মূল্য ১ টাকা । কলিকাতা মুদ্রাপুর বিদ্যালয়ের বস্ত্রে অথবা সংকৃত কালেজে জীবিত গিরীশচন্দ্র বিদ্যার মহাশয়ের নিকটে অর্জনা করিলে ৭১ ইবেন ।

জীলালমোহন ভট্টাচার্য্য ।

বিজ্ঞাপন ।

এই বহালয়ে নিম্নলিখিত পুস্তকগুলি বিক্রয় প্রাণিত আছে ।

মেঘনাদ বধকাব্য ১ম ভাগ সঙ্গীত মূল্য	১।০
২য় ভাগ	১।০
ভিলোভাসম্ভব কাব্য ২য় বার মুদ্রিত	৫।০
বীরভদ্রা কাব্য	১০।০
রুক্মকুমারী নাটক	২।০
পদ্মাবতী নাটক	৫০।০
বৃদ্ধ সালিকের খাচের রোঁ ২য় বার মুদ্রিত	৭।০
একেই কি বলে সত্যতা ২য় বার মুদ্রিত	১।০
শশিভা নাটকের ইংরাজী অনুবাদ	২।০
সীতাহরণ	১।০
বাসবদত্তা	১।০
সাহিত্য সূক্তাবলী	১।০
সুখোদয়	৭।০
আক্ষিপা মানচিত্র	১।০
প্রথম পাঠ	১।০
প্রাণিহৃদয়	১।০
গোলাকর উপযোগিতা	১।০
ইন্দ্রকুমারের আইন	৫।০
উদ্যোগের প্রকরণ	১।০
১২ ১৩ বঙ্গবাজার রোড	

জীলালমোহন ভট্টাচার্য্য

বিজ্ঞাপন ।

সর্বসাধারণের গোচরার্থে প্রকাশ করা যাউক যে কলিকাতার গবর্ণমেন্ট ও গবর্ণমেন্ট সাহায্যে এবং অপর বঙ্গবিদ্যালয় সমূহের বালকগণের উৎসাহার্থে গবর্ণমেন্ট বার্ষিক যে মরটি অটোমটিক ছাত্রাভি প্রদান করিয়াছেন আগামি ২২শ, ৩০শে ও ৩১শে ডিসেম্বর সোম, বঙ্গলা, বুধবারে কলিকাতার ন্যাশনাল স্কুলে এই সকল ছাত্রাভিগণের পরীক্ষা হইবেক । ১৩ বৎসরের অধিকবয়স্ক বালকেরা উক্ত পরীক্ষায় গৃহীত হইবেক না ।

কলিকাতার বাবতীর বাঙ্গালা পাঠশালার বালকগণ উক্ত পরীক্ষা দিতে পারিবে । কেবল তাহাঙ্গিণের সচরিত্রের এবং কলিকাতার এক বা একাধিক পাঠশালায় অস্থান হইয়া বাস কাল অধ্যয়নের বিশ্বাসযোগ্য প্রমাণ দ্বারা সিতে না পারিবে তাহারা পরীক্ষা দিতে পারিবে না ।

যে বালক প্রাপ্ত লিখনে এবং পুস্তক পাঠে অপারগ হইবে তাহাকে অন্যান্য বিষয়ের পরীক্ষায় গ্রহণ করা যাইবে না ।

যে যে বালক পরীক্ষোত্তীর্ণ হইয়া এই সকল ছাত্রাভি পাইবে তাহারা হিন্দুকুলে বা অন্য গবর্ণমেন্ট স্কুলে বিনা বেতনে পাঠ বৎসর পাঠ করিতে পারিবে ।

কলিকাতা
১৮৬২ সাল
১১ ডিসেম্বর

বিজ্ঞাপন ।

সর্বসাধারণের গোচরার্থে প্রকাশ করা যাউক যে কলিকাতার গবর্ণমেন্ট ও গবর্ণমেন্ট সাহায্যে এবং অপর বঙ্গবিদ্যালয় সমূহের বালকগণের উৎসাহার্থে গবর্ণমেন্ট বার্ষিক যে মরটি অটোমটিক ছাত্রাভি প্রদান করিয়াছেন আগামি ২২শ, ৩০শে ও ৩১শে ডিসেম্বর সোম, বঙ্গলা, বুধবারে কলিকাতার ন্যাশনাল স্কুলে এই সকল ছাত্রাভিগণের পরীক্ষা হইবেক । ১৩ বৎসরের অধিকবয়স্ক বালকেরা উক্ত পরীক্ষায় গৃহীত হইবেক না ।

পর তাহার কোন ইচ্ছা থাকিলে তাহার পিতামহ ও আচার্য্য কাহারও নিকটে গিয়া পেমেন্ট হাউসের খসড়া দিয়া কাহারও নিকটে আবার আধিকার করিতে পারিবে ।

আমি একদে পন্নগণে কলিকাতায় প্রবেশিত আবার প্রত্যেকের করা হইবে ।

যদি পুস্তকী ও মূল্য ২৫ টাকা হইলে ২ ডিসেম্বর উক্ত প্রাপ্তি, বা বোধ্যাঙ্গ বন্দোবস্ত করিতে পারিবে ২০ আগস্ট ১৮৬২ কলিকাতা স্কুলে প্রাপ্তি ।

৬ মীলক সেলের মূল্য ১০ টাকা সাংকলন করিয়া যে ৮ টাকা প্রাপ্তি হইবে তাহা সম্পত্তি প্রাপ্ত হইবে ।

এবং আমার অজ্ঞাতে তাহা প্রাপ্ত হইবে ।

আজসং করিয়াছেন তাহাঙ্গিণের ওরাঙ্গিনাংকে সেই সেই প্রাপ্তি আমাকে দিয়াছেন তাহাঙ্গিণের ওরাঙ্গিনাংকে দিতে হইবে ।

সং ১২৬৩ সাল ১২ পৌষ ১৩

জীলালমোহন ভট্টাচার্য্য

সন ১২৬৩ সাল ১২ পৌষ ১৩

১৩ পৌষ ১৩

কলিকাতার জীলালমোহন ভট্টাচার্য্য নামে যে পুস্তক প্রাপ্ত হইবে তাহাঙ্গিণের ওরাঙ্গিনাংকে দিতে হইবে ।

যদি পুস্তকী ও মূল্য ২৫ টাকা হইলে ২ ডিসেম্বর উক্ত প্রাপ্তি, বা বোধ্যাঙ্গ বন্দোবস্ত করিতে পারিবে ২০ আগস্ট ১৮৬২ কলিকাতা স্কুলে প্রাপ্তি ।

কলিকাতা কোম্পানির বিক-
টে আবেদন করিলে সবিলে
পারিবেন

সোমপ্রব

৮ই পৌষ সোমপ্রব চন্দ্রকুমার তর্ক
প্রেরিত যে ব্যবস্থা ১লা পৌষের
প্রকাশে প্রকাশিত হয়, তাহা জান
কল্পে যেহেতু বাণীশ তৎসময়ে একখানি
প্রেরিত পত্র আমাদিগের নিকটে প্রেরণ
করিয়াছেন, তাহা যথাযথিতি ও সংক্ষেপে
লিখিত হওয়াতে অঙ্গরপূর্বক গৃহীত ও
গণ্যহুতেন প্রস্তুতিত হইল। তৎকালে, ও
রূপা বা বৈজ্ঞান্য না করিয়া যথাযথ উৎ-
কর্ষ ক রিয়া প্রস্তুতকার সংসার হেতু করে
হাজাতিগের অনুপ্রোথ।

৮ই পৌষ সোমপ্রব মেলা ১০মিতি
আমের নিম্ন লিখিত পত্র খানি আমা
হস্তগত হইয়াছে। পত্র পাঠ করিয়া
র নাই বিস্ময় হইয়াছি। আম
কিছুকালী সেই বিস্ময়স ভোগ করিব,
কিছুকালী হই না, পাঠকগণও তাহার
আশঙ্কী হইবেন এবং তাহাদিগের হস্তে
। বন্দোবস্ত করিবার তার আছে,
ও দেখুন, ফেরন কীর্তি অর্জন
হইলেন। সে পত্র এই—

হাশিয়েবু।

বাগাশি শনিবারে পূজাপ্রসঙ্গে আমা-
। বিদ্যালয় এক ম স চারিদিনেব জন্য
ইবে, এবং আশি ও নিজস্বাতিতে বাইব।
। বা আশি সোমবার হইতে আমা
। সোমবারে বেহরপুরে না পাঠাইয়া

গাহি গড়ের পাড়া।

বন, তাহা হইলে

বৈদ্যন ইতি।

বিহার।

আম .। আরো একখানি সংক্ষিপ্ত পত্র
প্রকাশ করিলাম। যদি এতৎপত্র
কথ্য অনুষ্ঠিত হয়, তবেকের অ-
। দুই হইলে পত্র এই—

সম্পাদক মহাশয়। পূর্ববাঙ্গলার রেলওয়ে
কোম্পানির যে একখানি মোব হুট ইটল, তৎ
যে প্রধান একখানি অন্য উল্লিখিত হইতেছে,
তাঁহারা অবগত হইয়া সংশোধন করুন।
যে সমুদায় টিকিট মুদ্রাক্রিত হইয়াছে সে সমুদায়
রই ইংরেজি ভাষায় মুদ্রায় সাধারণের বো-
ধন্য নহে, সবসে সবসে টিকিট বিলি যতটা
রিয়া দুয়ের ইটেসনের মাসুল লইয়া নিমটে-
র ইটেসনের টিকিট দিয়া ইংরেজি ভাষায়
অনতিজ লোকদিগকে বকনা করিয়া আপ
নারা বিলকণ লাভ করিতেছেন। প্রকৃত
লোকেরা তৎকাল্য অগম্যনিত হইয়া দ্বিগুণ
মাসুল দিয়া জ্ঞান পাইতেছে। ইহাকেই
বলে নারে কতি দিয়া বুবে পার। একপে
কোম্পানির উচিত, তাঁহারা টিকিট ইংরেজি ও
বাঙ্গলা দুই ভাষাতেই মুদ্রিত করেন।

তোম আরোহী কুমার খানী

পত্র প্রেরক যে লিখিয়াছেন, এক ই-
টেসনের মাসুল লইয়া অন্য ইটেসনের
টিকিট দেওয়া হয়, একথা অবধারণ নহে।
আমরা সর্বদা রেলওয়েতে গমনাগমন ক
রিয়া থাকি। আরই দেখিতে পাই, ইং-
রাজী গনভিত্ত আয়োজীরা, কোন্ ই-
টেসন হইতে কোন্ ইটেসন পর্যন্ত টিকি
ট পাইলেন, আমাদিগকে টিকিট দেখাই
য়া জানিয়া লইয়া থাকেন। টিকিটে যে
গোলযোগ হয়, তাহা ও ইহা হইয়া পাক
সংগ্রহণ হইতেছে। তবে তাহা প্রেরক কর
চারিদিগের প্রতি যে প্রবন্ধন প্রকাশ্য
করিয়াছেন, আমরা তাহাও

জন অধ্য

সাধারণ প্রবন্ধক

নারী বৃত্ত নহে।

লোকের

জিহ্বা

হইয়া থাকে। বাহা হউক, পত্রপ্রেরক
ইংরাজী ও বাঙ্গলা উভয় ভাষায় টিকিট
মুদ্রিত করিবার যে পরামর্শ দিয়াছেন,
তাহা উৎকৃষ্ট সাধন নাই। রেলওয়ে
কোম্পানিদিগের এ পরামর্শের অনুসরণ
করা অবশ্য কর্তব্য।

মকবলের বিচার কর্তৃদিগের কাব্য ও

চরিত্র মর্শনার্থ তত্ত্বাবধানক নি-

গোগের আশঙ্কতা।

অন্য আমরা আরো দুই খানি পত্র এই
স্থলে প্রকাশ করিলাম। প্রধান পুরুষেরা
অতিবিশেষপূর্বক পাঠ করুন, দেখিতে পাই
বেন যে সমস্ত বিচারকর্তা সচরিত্র, ধীর-
কৃতি ও যথাবিধি স্বকর্তব্য সম্পাদন করিতে
ছেন, তাঁহারা প্রজাগণের কেমন অনুরা-
তাজন হইতেছেন, আর যাঁহারা ইহার
বিপরীতমতাব ও বিপরীতকারী হইতে-
ছেন, লোকে তাঁহাদিগের প্রতি কিরূপ
বিরাগ প্রকাশ করিতেছে। প্রজারা প্রা-
ত্বিবাকদিগকে যোগ্য গবর্ণমেন্টের যোগ্য
প্রতিনিধি জ্ঞান করিয়া তাঁহাদিগের হস্তে
ধন, শ্রাণ ও মান সমুদায় সমর্পণ করিয়া
নিশ্চিত হইয়াছেন। কিন্তু প্রাতিব্বাকেরা
যদি কোথা দিগিরপূর একান্ত পরতন্ত্র হইয়া
তাঁহাদিগের সেই সেই অমূল্য পদার্থের
রক্ষণে ব্যগ্রমনা না হইয়া তাহার হস্তা হন,
প্রজাগণের বিরাগ তাজননা হইবেন কেন?
অনুধাবন করিয়া দেখিলে এই বিরাগ
কোথায় পর্যাবসিত হইতেছে বলিয়া প্র-
তীয়মান হইবে? আর, প্রাতিব্বাকেরা
উদ্ভ্রাতাদি কারণ বশতঃ প্রজার প্রতি অ-
ন্যায় করিলে তৎকালিত প্রজা প্রত্যাগীহ
বা কে হইবেন? গবর্ণমেন্ট কি সেই বি-
রাগ ও প্রজাবিরোধী নহেন? সাম্রাজ্য
ক্রমে ক্রমে অত্যন্ত দুঃস্থ হইয়া পড়িয়াছে,
অন্য সব সচরিত্র ও উপযুক্ত প্রতিনিধি
যদি মিলিত হইয়া সত্যবিক্রম হয়, একথা

“ইহাও জয়ের অবাবিহিত পরে এক মন্তব্য
 দায় বণিক এই দেশের মরুভূমিতে হত
 হইলে পর উহার অন্যতর বণিকের সাতা
 গজমীতে উপনীত হইয়া এই বিশ্ব সুলতান
 মাযুদের গোচর করিয়া বিস্তর বিলাপ ক-
 রিলেন । মাযুদ বলিলেন, রাজ্যের তত দূরে
 শাস্ত্রিকা করা তাঁহার সাধ্যায়ত্ত নয় ।
 তাহাতে ত্রীলোকটী নিঃশব্দ চিত্তে এই
 উত্তর দিলেন, “তুমি যে দেশ শাসন
 করিবার ক্ষমতা নাই এবং বিচার দিবসে
 তোমাকে যাকার রক্ষণাবেক্ষণ কাযের
 জবাব দিতে হইবে, সে দেশ গ্রহণ কর
 কেন :”

স্থানে স্থানে বিচার পতির দোষে যে
 অবিচার হইতেছে, তন্নিবারণের দুটি উপা-
 য় আছে । প্রথম, প্রতিবাক নিয়োগ
 কালে সজরিত ও উপযুক্ত পাত্র দেখিয়া
 নিয়োজিত করা ; দ্বিতীয়, নিয়োজিত ব্য-
 ক্তিগণের কাব্য ও চরিত্রের তত্ত্বাবধান
 রীতি অবলম্বিত করা । এই দুটি উপায়েরই
 অবলম্বনে যত্নবান হওয়া উচিত । কিন্তু
 প্রথমটির অবলম্বন নিরতকাল সাধ্যায়ত্ত
 হইতেছে না । পরীক্ষা লইয়া প্রতিবাক
 নিয়োগের রীতি আছে । কিন্তু সচরাচর
 দেখিতে পাওয়া যাইতেছে, বিদ্যারই
 কেবল পরীক্ষা হইয়া থাকে, চরিত্রের প-
 রীক্ষা লওয়া হয় না । সুতরাং যাহাদিগের
 চরিত্র গত দোষ থাকে, কাব্য দানে তাহা
 প্রকাশ হইয়া পড়ে । চরিত্র পরীক্ষার
 নিয়মও সহজ নহে । দ্বিতীয় উপায়ের বি-
 শয়ে আমাদিগের কয়েকটি বক্তব্য আছে ।
 প্রথম, যাহারা তত্ত্বাবধান ক্রিয়ায় নিয়ো-
 জিত হইবেন, তাহাদিগকে অনন্যস ও
 পক্ষপাতহীন চিত্তকে সহচর করিয়া চতু-
 র্কিক জ্ঞান পূর্বক সর্ব স্থানের বিচারালয়
 ক্রম করিতে হইবে । তাঁহারা যে যে বি-
 চার পতির কাব্য ও চরিত্রগত দোষের
 বিষয়ে বিশিষ্ট জ্ঞান লাভের প্রথমে

তাহাদিগকে সাবধান করিয়া দিবেন
 কিন্তু তাঁহারা সাবধান না হইয়া যুক্তি দ্বিতী-
 য় দ্বারা একপ করেন, তাহাদিগকে জ্ঞান-
 ক্রান্ত করিতে হইবে এবং তাহাদিগের
 নাম অরুণার্ক বহিতে একথা লিখিত হই-
 বে; উক্তপত্র প্রদান কালে উহার গণনা করা
 হইবে । তাহাতেও না শুধরিয়া উঠিলে
 তাহারা পদচূত হইবেন । পত্র হয় এই—
 মহাশয় ! রাজা ও প্রজাতে রক্ষা রক্ষ
 কল্প এবং বর্জ্য বর্জকল্প সদয় আছে । তদন্থে
 বর্জন পেশা রক্ষণই শ্রেয়ঃ । কারণ রক্ষণাত-
 বে সজ্ঞানগণও অসং বাহ্যরূপায়ণ হইতে
 পারেন । শাস্ত্রে কথিত আছে -

প্রজাং সংরক্ষতি মূপঃ সা বর্জয়তি পার্শ্বিণঃ ।
 বর্জনায়ক্ষণং শ্রেয়স্তদভাবে সতপাণঃ ॥

রাজা প্রজাকে রক্ষা করেন, প্রজা তাঁহা-
 কে বর্জিত করেন । কিন্তু বর্জন অপেক্ষা রক্ষণ
 জের কারণ রক্ষণাতাবে সৎ ও অসৎ হই-
 বা যায় :

সেই রক্ষণ নানা প্রকারে উক্ত হইয়াছে ।
 নবর নামক গ্রন্থে লিখিত আছে—
 উৎখাতান প্রতিরোপয়ন কৃত্তান্তিঃ শি-
 হন শিহন বর্জয়ন ।

প্রোতুজান নমহন নতান সতদয়ন, বিগেময়ন
 সততান
 তীরান কটকিনোবহিঃশয়নঃ শানন যু-
 সেচয়,
 যালাকার ইব প্রোতুগিপোবাজা চির-
 মক্ষতি

সেজন : পর - পুনরায়
 বোপণ, ম, বক্ষণ, চরন, বালকের
 বর্জন উক্ত রক্ষণ নীতি, নত মন্তক রক্ষণ
 র উগ্রধন এবং গবাপর জড়িত রক্ষণ বিচিনী
 করণ, তীক্ষ্ণকর যুক্ত বক্ষণ বাক্ষরণ ও
 শান রক্ষণ ব্যৱহার সেনে করিয়া অকীয়
 উক্ত নর - ব সঙ্গাদন করে, সেই রূপ
 (ম লাকারের প্রায়) প্রয়োগবিপুল রাজা
 চিরকাল স্থল ভোগ করিবেন ।

আমরা বক্তব্যে কহিতে, যে বর্জন
 গবর্ণমেন্টে দুই সচিবাত্মক প্রেরণ করিয়া
 রাজ্যকারের নাই এতদ্ব্যতীত উপদেষ্টা রক্ষ-
 কল্প -

যত্নবান হইয়াছেন ।
 ও অধিক আরো সত্বে,
 বিচার মন্তব্য না
 খরতর কিম্বা হিব
 অতিশয় মন্তব্য নহে
 মও বিখ্যাত যাবত
 জনীতির ন্যায়িত
 মেটের তথ্যসময়ের
 কলহান হইয়াছে
 গ্রহণাবধি বাস্তবিক
 ন অনেক অংশে সূরী
 ত্রীলোকদিগের পর
 আদান প্রদান (যাহার
 দায় আর গত্যন্তর
 গীতনের সমক্ষে উ-
 হইয়াছে : তিনিও
 র সবিচার করিয়া
 মহাত্মা প্রোতের মূল
 মালার ন্যায় সর্ব জন
 হে । ইহার শুভাগন
 দস্ত্যাতার ঘটনা হয়
 মান সন্তানের দিন
 এই মহাত্মা কল্যাণ
 তথ্যে কালপতিপাত
 করি তাদৃশ কাণ ই-
 ন । প্রজাপ্রয়োজন
 নিয়োগ হই হই
 প্রয়োজন ও
 মহাশয়কে
 আমিনী পদ
 ধান মাল্য
 কাকী করি
 ও বিপুল
 বিস্তারিত
 ২২ দিনের
 না
 জ্যৈষ্ঠ জ্যৈষ্ঠ নিবাসি
 জ্যৈষ্ঠ মেত্র-৭২
 জ্যৈষ্ঠ
 পদ্যসং
 জ্যৈষ্ঠ জ্যৈষ্ঠ
 বনসি
 ১, অমাদিগে
 ম, এই কল
 ১, এই কল
 ১, ১, ১, ১
 ১, ১, ১, ১

৩১. রীতি নীতি, বিচার প্রণালী বিষয়ে নি-
ম্নত জনভিত্তিক, তেঁতী পাখীর ম্যার মান-
ল বার নিকট ইংল্যান্ডে ইংল্যান্ডে বোধ
৩২. ইনি ইংল্যান্ডে ইংল্যান্ডে ইংল্যান্ডে ইংল্যান্ডে
৩৩. বাহা ইউক আমল. শোহাবারো হই
৩৪. রাহে।

৩৫. কোন এক বেতাল প্রণালী

৩৬. এবং তামিলা প্রকৃতি

৩৭. প্রত্যেক কার্য সুখভর্য করিয়া

৩৮. নানা প্রকারে সজায্য করিয়া

৩৯. সুখধরন এক সত্য হইয়া

৪০. কি কো এই প্রকার সমান

৪১. প্রতিভা তাহার দক্ষিণ হস্ত

৪২. হন পরা কারণে বিশেষ প্রয়ো-

৪৩. গন। এই সম্মুখীন হইতে ইচ্ছা

৪৪. ত্রিক হইয়া ত্রি, তাতে আবার

৪৫. জ্ঞান. ৬৬. লক্ষ্য কেন? আমাদের ময়া

৪৬. থাকেন. ৬৭. হই বাহিরা প্রচারজন

৪৭. লি বি কে বাহিরা পাঠাইয়া এদেশকে

৪৮. এরূপন মর গুলি

৪৯. ট ও কি গেলেন।

৫০. তার মিনের আইন

৫১. ৫২. অত্যা নো ইচ্ছা সত্যবনা আ-

৫২. গাউ প. কা গ্রহণ করি

৫৩. ৫৪. প্রায়ই ৫ সাহে

৫৪. ৫৫. আলো এমার এ

৫৫. ৫৬. বা পরিলভ্য হই

৫৬. ৫৭. রি কো কর এত

৫৭. ৫৮. র করিতে গারেবেন,

৫৮. ৫৯. ধিতে না পারি ৬০. তাহার

৫৯. ৬০. পারি হইবে ৬১

৬০. ৬১. কতিপয় দিবস ইংল

৬১. ৬২. ইচ্ছা হইতে রাজা

৬২. ৬৩. ইচ্ছা হইতে রাজা

৬৩. ৬৪. ইচ্ছা হইতে রাজা

৬৪. ৬৫. ইচ্ছা হইতে রাজা

ইহার স্বাধীনতা বিস্তারিত হইয়াছি-
লাম। সুতরাং স্বতন্ত্র কালে আসন হই-
তে উত্তীর্ণ হইতে পারিবে না; গবর্নর
জেনারেল যেহেতু যখন তখন ও যে
খানে সেখানে সত্য করিতে পারিবে।
তাঁহার অনুমতি ব্যতিরেকে, কেহ কোন
বিল সভায় অর্পণ করিতে সমর্থ হইবে
না; ইত্যাদি নিয়ম দর্শন করিয়া অত্যা-
বাস্যপক সভাকে স্বাধীন বলিয়া জ্ঞান
করেন, একপক্ষমত লোক অতি বির-
ল। বাহা ইউক, আমরা ভবিষ্যৎহিলাম,
প্রথম প্রথম যেকপ ইউক, উক্ত সভা
ক্রমে স্বাধীনতা লাভে সমর্থ হইবেন।
কিন্তু কোন্‌র বিষয় এই, ক্রমে পবানী-
নতাই জিহ্বা নখনগোচর হইতেছে
লার্ড এলগিন সেদিনের সভায় যে বক্তৃতা
করেন, সভার স্বতন্ত্রতা লাভ এসব দূরে
থাকুক, এতদ্যত অবমাননা করাই হইয়া-
ছে। তিনি বলেন “সভার সেশিয়ন
অর্থাৎ নিয়মিত সময়ে অধিবেশন হয়,
পার্লিয়ার্মেন্ট মহাসভার একপক্ষ অতিপ্রেক্ষ
নহে। গবর্নর জেনারেল যেহেতু ক্রমে সভা
গণকে সভায় আনয়ন করিবে এট
সত্য। অবৈতনিক সভা গ্রহণ বিষয়েও
মহাসভা কোন স্পর্ক নিয়ম করেন নাই
* * * * * কোন বিল সভায় অর্পণ করি-
বার পূর্বে তাহা গে. টে প্রকাশ করিবার
ক্ষমতা কেবল গবর্নর জেনারেলেরই
আছে।

বাহিরের সভা গ্রহণ যদি পার্লিয়ার্মেন্ট
সভার অধিক না হইল, তাঁহাদি-
গের যদি কোন ক্ষমতাই না রহিল, “ব্য-
বস্থাপক সভায় বাহিরের সভা গ্রহণ করা
হইয়াছে” বলিয়া একটি অক্ষর কুশিয়ার
২৪ জন কি? সভাগণ আপন আপন
স্বাধীনতা বিশুদ্ধ জল বায়ু পরিচ্ছন্ন ক
১১ জনিকার কুশিত জল বায়ু, কেবল
১২ জনিকার বা কেন? এই সভার স্বাধীনতা

বাহিরের সভা গ্রহণ যদি পার্লিয়ার্মেন্ট
সভার অধিক না হইল, তাঁহাদি-
গের যদি কোন ক্ষমতাই না রহিল, “ব্য-
বস্থাপক সভায় বাহিরের সভা গ্রহণ করা
হইয়াছে” বলিয়া একটি অক্ষর কুশিয়ার
২৪ জন কি? সভাগণ আপন আপন
স্বাধীনতা বিশুদ্ধ জল বায়ু পরিচ্ছন্ন ক
১১ জনিকার কুশিত জল বায়ু, কেবল
১২ জনিকার বা কেন? এই সভার স্বাধীনতা

গবর্নর, অতিপ্রেক্ষ; আমরা অধিক
তর হইলাম যে মেইন সাহেব মন্ত্রী
লার্ড এলগিন উক্ত প্রকার বক্তৃ-
তার অবমাননা করিলেন।

মেইন সাহেব নিজস্ব আইনের কি ব্যাখ্যা
করিয়াছেন, তিনি কি এ বিষয়ে বিখ্যাত
অতিন সাহেবের অর্থই যথার্থ বলিয়া
গ্রহণ করেন নাই? অতিন সাহেব বলেন
“আইন শব্দে এই বুঝাব - যাঁহাকে অথ
বা যাঁহাদিগকে লোকে দেশের রাজস্ব
তা দিয়াছেন, তাঁহারা যে বিধি, আজ্ঞা
এবং বাহা প্রচলিত হইবার যোগ্য বোধ
করিবেন, তাহার নাম আইন।” খুব বেনে
লেব সদৃশ রাজনীতিক ব্যক্তি ও তাঁহার
দৃষ্টান্তের অনুসারী হইয়া যাবতীয় করাণী
ব্যবহারাজীব এই অর্থের অনুমোদন ও
সমাদর করিয়াছেন।

আইন শব্দের যদি একেপক্ষ ব্যাখ্যা
হইল, একপক্ষ বিচার্য এই, ইংলণ্ডের
ভারতবর্ষের রাজস্বভার অধিকারিণী হ
ইয়াছেন। তিনি আবার আর এক জনকে
আপনার প্রতিনিধি করিয়া ভারতবর্ষের
গবর্নরগণে প্রতিনিধিত্ব করিয়াছেন। কিন্তু
সেই প্রতিনিধিত্ব ব্যক্তি শাসন
কর্তৃক ও ব্যবস্থাপক উত্তর কাব্য
সমর্থ না হইয়াতে ব্যবস্থা প্রণয়নার স্বতন্ত্র
প্রতিনিধির প্রয়োজন হইয়াছে। অতএব
যখন স্বতন্ত্র প্রতিনিধি করা হইল, তখন
তাকে অপর প্রতিনিধি নিতান্ত পরা-
ধীন করিয়া দেওয়া হইতেছে কেন? একপক্ষ
করিয়া কেবল যে যুক্তির বিপরীত আচ-
রণ করা হইতেছে একপক্ষ নহে, ব্যবস্থাপক
সভার উন্নতি পথে কষ্টক বিরোধিত হই
তেছে। ব্যবস্থাপক সভার উন্নতি লাভের
প্রকৃত উপায় কি? সে উপায় এই সভাকে
স্বাধীনতা প্রদান। বাহিরের সভাগণকে
যেহেতু গ্রহণ করা হইয়াছে, তেঁহাদি-
গের স্বাধীনতা হইয়াছে, তাঁহাদের
স্বাধীনতা হইতে হইতে

১. তখন উল্লিখিত প্রস্তাব বিধিবদ্ধ করি-
- পরে প্রস্তাব কারিগরদের কর্তব্য এই
যদি কলিকাতার সর্ব স্থানে মটর
চালন করেন এবং আরোহী ও শক-
- পূর্ণক কিছু দিন নিয়ম পালন কর-
- দা।

২. আমাদের মতবিরোধী এই
প্রস্তাবটি প্রত্যাখ্যান করিয়াছে
কিন্তু আমরা কোন ব্যক্তির এ
প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান করিয়াছি। উক্ত প্রস্তাব বিধি
বদ্ধ হইলে আমরা য অত্যাচার ঘট-
- নাই। যদি প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান করা হয়
তবে আমরা সর্বদা প্রস্তাব গ্রহণ কর-
- বেন। কিন্তু উক্ত প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান
করা হইলে আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৩. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৪. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৫. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৬. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৭. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৮. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৯. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১০. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।

১১. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১২. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১৩. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১৪. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১৫. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১৬. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১৭. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১৮. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১৯. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
২০. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।

প্রস্তাবটি উপস্থাপন করা গিয়াছে। এই প্রস্তাবটি
কিন্তু প্রস্তাবটি প্রত্যাখ্যান করা গিয়াছে।
পালকির তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণ যদি যুক্তিসি-
দ্ধ হইল, মুক্তিলাভের তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণ করা
ন। হইতেছে কেন? প্রস্তাব ও পালকি বাত-
- শিগের আপেক্ষিক মুক্তিলাভের সঠিক অ-
- ধিকসংখ্যা লোকের সম্পর্ক হয়। উহা দিগে
র তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণ হইলে অধিক লোকের
সুবিধা হইবে। ফলতঃ যুক্তি দ্বিতীয় প্রস্তাবই
সমান রহিতকৃত। প্রস্তাব ও বেতারা
দিগের আপেক্ষিক মুক্তিলাভ অধিক
নহে। এই প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান ও মীমাংসা
অমর পণ্ডিতে নিম্ন সিদ্ধ হইলে পর
রাইয়ত কেও পত্র আম দিগের চরিত্র হ-
- ইল। আমরা প্রস্তাব ও পালকি তত্ত্বা সং-
- ক্রান্ত প্রস্তাবের পিছনে প্রত্যাখ্যান উ-
- স্ক চিত্তে অত্যাচারের পূর্বক পাঠ করি-
- তে আবদ্ধ করিয়াছি। প্রত্যাখ্যান প্রত্যাখ্যান
সম্পর্ক সাধারণ ভ্রমে পতিত হন নাই।
কিন্তু আমাদের প্রত্যাখ্যান উল্লিখিত প্রস্তাব
পের প্রতিবাদ করিয়াছেন।

১. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
২. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৩. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৪. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৫. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৬. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৭. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৮. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
৯. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
১০. আমরা প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।

গত অধিবেশন দিবসে নিম্নলিখিত প্রস্তাবটি
প্রতি সাহেবের কর্তৃত্ব বিলম্ব বিধানে
রিপোর্ট প্রদান করিয়া তৎপরিচয়গত
অনুরোধ করেন। সভাপতি তৎপরিচয়গত
করিয়াছেন। মেইন, বীডন, হারিংটন,
আর, বন ও কটাই সাহেব রিপোর্ট প্রদান
করেন। তাঁহারা প্রথমতঃ এবিলের প্রস্তাব
সর চারলস উডের অসম্মতির কথা উল্লেখ
করিয়া বলিলেন "কোন দেশের ব্যবস্থা
সংগ্রহে অবশিষ্ট নিয়মকে স্থান প্রদান করে
ন নাহি।" এখানে ইহা বক্তব্য বীডন সাহেব
এর মত পরিবর্তন হইয়াছে। যদি আমরা
সত্য হয় মেইন সাহেব দেওয়ানী অপ-
- বাধে কোর্টারীদণ্ডবিধানের একজন
প্রধান বিপক্ষ এই সোমপ্রকাশে এবি-
- ধ্যের বক্তব্য প্রকাশিত হইয়াছে। পুনরায়
ইহার বাতিল সাহেব উল্লেখ করা অনাবশ্যক।

মেডিক্যাল কলেজের সাক্ষাৎকার
তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণ

আমরা শুনিয়াছি যে, তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণ
মেডিক্যাল কলেজের একটি নিত্য অনুষ্ঠিত
কর ঘটনা হইয়াছে। বক্তব্য তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণ
ম. দিগের ও তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণের ব্যবস্থা
(স্থানান্তরিত প্রস্তাব) উল্লিখিত প্রস্তাব
নথী নীচের সাহেবের অসম্মতির অন-
- বৃত্ত হইয়া কার্যে প্রয়োগ করিয়াছেন।
অমর প্রামাণ্য প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
টীসের বক্তব্য প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
তাবিক বিলম্ব প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
কিন্তু কোন কোন প্রস্তাব উল্লিখিত
প্রতি প্রত্যাখ্যান প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
কিন্তু প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।
প্রত্যাখ্যান করিয়াছি।

যদি না বহিঃস্থ হাঙ্গামার মান বিরাগ বহিঃস্থ প্রদূষিত হইতেছিল, সম্প্রতি একটি ঘটনা রূপ বায়ু সহযোগে হওয়াতে সেই অগ্নি উদ্ভিগ্ন হইয়া প্রকলিত হইয়া উঠিয়াছে। সে ঘটনাটি এই—

বাঙ্গলা ক্রমের হাঙ্গামা তত্ত্বা নিয়ন্ত্রণ মানুসারে প্রতিদিন প্রাতঃকালে পণ্যার ক্রমে চিকিৎসালয়ে উপস্থিত হন। ডাক্তারেরা যে ঔষধ ও পথ্য ব্যবস্থা করেন, তাহা তাহা মর্শন ও অবগণ কবিঃ। স্বল্পে রোগিনিগকে ঔষধ সেবন করাইয়া থাকেন। হাঙ্গামাকে কৃতকর্ম্য করাটো এ নিয়মেই উদ্দেশ্য, ইহা প্রশংসনীয় মনে হয় না। কিন্তু ক্ষেত্রের বিষয় এই, কতকগুলি অবিদ্যাকারী অভিমানমত্ত ডাক্তার এই উদ্দেশ্যটি বিস্মৃত হইয়া মনে করেন, গবর্ণমেন্ট হাঙ্গামাকে তাঁহাদিগের ও রোগিনিগের পরিচর্যার্থ নিয়োজিত করিয়াছেন। যাহা হউক এক দিবস বনমালী চট্টোপাধ্যায় নামে এক হাঙ্গা আপনার কর্তব্য করিতে যান। এই দিবস তত্ত্বা এক পরিচারকের সহিত তাহার বিরোধ হয়। তিনি চলিয়া আইসে এই পরিচারক বৈরনিষাভনাধী হইয়া কয়েক ঘণ্টা কুইনাইনের একটি মেডিকেল করিয়া প্রথম ইংরাজী ক্রসের এক যুবকের নিকটে গিয়া কহিল, বনমালী চুরী করিয়া লইবার উদ্দেশ্যে এই কুইনাইন প্রস্তুত করিয়াছিল, লইয়া যাইতে পারে নাই। যুবক জিজ্ঞাসা করিলেন “তুমি কুইনাইন সহিত তাহাকে ধরিলে না কেন?” পরিচারক সন্তুষ্ট হিতে পারিল না। অনন্তর সে সেক সাহেবের নিকটে গিয়া এই কথা কহিল। সেকও চীফসের ন্যায় বাঙ্গলা ক্রসের প্রতি ঐত ও প্রসন্ন নহেন পরিচারকের কথাই তাঁহার বেদজ্ঞান হইল। তিনি বনমালীকে চোর দ্বির করিয়া প্রিন্সিপালের নিকটে রিপোর্ট করিলেন। “হাঙ্গামেহবাসু!” প্রিন্সিপাল বিশেষ অনুসন্ধান না করিয়া এককদমটি পুলিশে

পাঠাইয়া দিলেন। পুলিশ উক্ত পরিচারক ও সেকের বাক্য বনমালীর দশ দিমের কারাবাস দণ্ড করিলেন। প্রিন্সিপাল যদি বিশেষ অনুসন্ধান করতেন বনমালী কখনই দোষী হইতেন না। তিনি তাহা না করিয়া যখন এক কুস্তরখানী পরিচারকের বাক্যে এক জন ভদ্র লোককে বিনা পরাধে কারা প্রদত্ত করিলেন, তখন কাহার কি চূর্ণনা ঘটে, এই শঙ্কা করিয়া এবং ব্যবহার অপমান হইতেছে, তাহার এতীকার হইতেছে না, এই ভাবিয়া বাঙ্গলা ক্রসের অপর হাঙ্গামা এক বাক্যে কালেক পত্রভাগ করিয়াছেন।

আমরা অনুসন্ধান করিয়া জানিলাম, এ যথার্থ বৃত্তান্ত। এই বৃত্তান্ত অবগণ করিয়া আমাদিগের কোম রূপেই বনমালীকে অপরাধী বলিয়া বোধ হইতেছে না। বনমালীর কুইনাইন চুরী করা যদি অতি প্রোত হইত, তিনি পুরিয়া প্রস্তুত করিয়া ফেলিয়া আসিতেন কেন? পরিচারকেরা তাহাকে সেই পুরিয়া সহিত ধরিল না কেন? কেবল এক সন্দেহের উপরে নির্ভর করিয়া বনমালীর দণ্ডবিধান করা হইয়াছে অতএব আমরা পুলিশের উপরেও সন্দেহ হইলাম না। বনমালী যদি বাস্তবিকই চুরী করিবার অভিপ্রায়ে কুইনাইনের পুরিয়া বাধিয়া থাকেন, এবং বিস্মৃতি ক্রমে অথবা সুযোগ না হওয়াতে তাহা কালেজে ফেলিয়া আসিয়া থাকেন, তাহা হইলেও যখন পুলিশ বিশিষ্ট প্রমাণ পাইলেন না, তখন কেবল এক সন্দেহের উপর নির্ভর করিয়া দণ্ড বিধান আইন অনুসারে ন্যায়ানুগত হইতে পারে না। বনমালী যে নিদোষ, তাহার অপর প্রমাণ এই, সে চোর হইলে ১০ হাজ তাহার ছাফে ছাফী হইয়া কখনই কালেক পত্র ভাগ করিতেন না। অল্প লোকের কথা দূরে থাকুক, চোরের সহিত চোরও সহ ছাফসুখতা প্রকাশ করিয়া; করিবার ই

চ্ছা থাকিলেও বাহিরে প্রকাশ করিতে পারে না।

যাহা হউক, আমরা উপরে পুনরাবহিত হই, বনমালীর দণ্ডটা হাঙ্গামিগের কালেক পত্র ভাগ নিমিত্ত মাত্র। চীফসের অন্তর্ভুক্ত র বাস্তবিক কারণ। এক্ষণে মেডিকেল কালেকের প্রধান একদিন একটী কমিটি করিয়াছিলেন। বাধ্য বলিয়া সমুদায় হাঙ্গামা নামে তাঁহাদিগের অবধারিত হইয়াছে।

মর্শা চীফস ও হাঙ্গামা উভয়ের কাছ হই আমাদিগের নিকটে প্রেরিত হইয়া প্রতীক্ষমান হইতেছে। আমরা এই প্রকরীণ ব্যবহার দেখিতে পাই, সিংগিলেরা হাঙ্গামাকে পূত্র নির্দেশে মর্শন করেন, কিন্তু চীফস তাঁহাদিগের জ্ঞান করিতেছেন। কোন্‌ প্রমাণে ধার্য কবে কোন্‌ হাঙ্গামে পুলিশে গিয়াছেন? চীফস যে হাঙ্গামাকে মর্শন করেন, ইহাই তাহার প্রমাণ প্রমাণ। হাঙ্গামা বালক, তাহার সমুদায় কর্তব্যাকর্তব্য বোধে সমস্ত পদে পদে তাহাদিগের অপরাধ সম্ভাবনা আছে। পুলিশ কেবলমাত্র তাহাকে কি সেই দোষ সংশোধনের জন্য মর্শন নাই? প্রিন্সিপাল পুলিশের পুরিয়া যদি সত্য অপরাধ হাঙ্গামা কর্তৃক বিধান অথবা ন্যায় কর্তব্য করেন, অপর হাঙ্গামা কি সেই বৃত্তান্ত মর্শন করিয়া আপন আপন দোষ সংশোধন করিয়া করেন না? তত্ত্ব প্রিন্সিপালেরা কি করেন? কোন বালক অল্প বুদ্ধিমান ও যুক্ত বুদ্ধিতে না পারিয়া কোন অপকর্ম করিলে তাহার প্রথমে হিতমর্শন উপদেশ দিয়া তাহাকে সাবধান করিয়া দণ্ড তাহাকে সাবধান না হইলে অর্থদণ্ড অথবা মর্শন করেন, কিন্তু আমাদিগের হাঙ্গামা প্রকৃতি, দয়ালুত্ব, হিতমর্শন চীফস সাহেব মূর্তনবিধ প্রণালী অবলম্বন করিয়া

হেঁ। আমরা শুনিয়াছি, চীৎস সাহেব
৮১ দিনে "হারামজাদ, চোর ও
হিংস্র" দি অরণ মধুর মূলনিত বাক্য
রা. বাস জন করিয়া থাকেন! যদি এ
ত্যাগ হয়, তাহার তুল্য অপকৃষ্ট
হা ক প্রিন্সিপালের মধ্যে যেহ
যাইছে। আমাদিগের ত একপ বোধ হয়
না। হা "চোর ও কুলি" তাহার এ
সংকার কোথা হইতে জন্মিল? দুই এক
জন হাজের চৌর্য দেখিয়া কি তাহার এই
সংকার জন্মিয়াছে? তাহা হইলে ত তাহা
র অস্তিত্ব অতিশয় উদার ও বুদ্ধি নিতা
কু জীব বলিতে হইবে!! এদেশের যে স
কল গাঁও ২৪ জন ইউরোপীয়কে অসং
খ্যেণ বাবতীর ইউরোপীয়কে অসংখ
লিয়াহির করিয়া রাখিয়াছেন, চীৎস তা
হাদিকে কি বোধ করেন? বালা ক্রাসের
হা "চীৎস" রও স্বভাবগত দোষ নাই,
একথা আমরা কহিতেছি না। কিন্তু আমরা
যত দূর জানি সঙ্গীতকরে কহিতে প রি
উহাদিগের অনেকেরই চরিত্র উৎকৃষ্ট
এবং অনেকেরই তত্ত্ব গ্রহে অগ্রগ্ৰহণ করি
য়াছেন, তবে পিতা মাতার অসঙ্গতি প্রযু
ক্ত জাল কপে লেখা পড়া শিখিতে পারে
ন নাই, তাই বালা ক্রাসে প্রবর্তিত হইয়া
ছেন।

হাজিদিগের প্রতি আমাদিগের বক্তব্য
এই, তাহার কালেজ পরিত্যাগ করিয়া
হিঁক কৰ করিয়াছেন। চীৎসের অসম্ভাব
প্রিন্সিপালি উহাদিগের অসঙ্গ হইয়াছিল,
তাঁহার কালেজে থাকিয়া উপবে জানাই
লেন নাই কেন? তাঁহার কি এই শঙ্কা কর
নাহিলেন যে উপরের কর্তৃপক্ষ প্রিন্সিপা
লের বিরোধী বলিয়া তাঁহাদিগের আবে
দন অগ্রাহ্য করিবেন? সেটা তাঁহাদিগের
জ্ঞাতি। প্রিন্সিপালি হউন, আর যিনি হউন,
আজি কালি কেহ বা ইহা কহিয়া
পায় পাইতে পারেন না? ইহার ন উপ
র কর্তৃপক্ষের বিচার দ্বারা সত্য উহা

টিত আছে। মায়া প্রার্থনার তাহাতে প্রবে
শ দ্রুত নহে। অসম্ভাব্য ও অসম্ভাব্যকে
সহচর করিয়া কার্যে প্রবৃত্ত হইলে সক
লেই কৃতার্থ হইতে পারেন সন্দেহ
নাই।

ইহাব চরম ফল কি হইবে, জানিবার
নিমিত্ত পাঠকগণ উৎসুক হইবেন সন্দেহ
নাই কিন্তু এখন নিশ্চয় করিয়া ক'ন কথা
বলা আমাদিগের সাধ্যাত্ত নহে। এক্ষণে
মুদ্রায় বিবরণ লেণ্টনটগবর্নরের বিবেচন'র
উপর নির্ভর করিতেছে। শুনাগেল হাজেরা
আপনাদিগের কালেজ পরিত্যাগের বিষয়
জানাইয়া প্রিন্সিপালের নিকটে যে আবে
দন করেন তাহা লেণ্টনটগবর্নরের নিক
টে প্রেরিত হইয়াছে এবং তাহাতে এই
রূপ লিখিত হইয়াছে, হাজেরা এক জন
চোরের, সহিত সমদুঃখতা ও অব্যাহত,
প্রকাশ করিতেছে, অতএব তাহাদিগের
নাম কাটিয়া দেওয়া গেল। এত লোকে
কালেজ পরিত্যাগ করে কেন? ইহার স
বিশেষ অনুসন্ধান না লইয়া লেণ্টনট
গবর্নর কেবল যে চীৎসের বাক্য প্রমাণে
বালা ক্রাসের বাবতীয় হাজের নাম
কাটিয়া দিতে কহিবেন এবং যত দিন
কুতন ক্রাস না হয়, ততদিন অধ্যাপক
দিগকে বসাইয়া বেতুন দিবেন, ইহা
কোন ক্রমেই গ্রহণ্য নহে হইতেছে না। যদি
তিনি অন্যায় অনুরোধবশবর্তী হইয়া
প্রিন্সিপালের মানরক্ষার্থ হাজিদিগের নাম
কর্তনের অনুমতি দেন, অত্যন্ত অন্যায় করা
হইবে। এ বিষয়ে মূল দোষী প্রিন্সিপাল,
হাজেরা নহেন। যিনি মূল দোষী, তিনি
দিনান্তে অব্যাহতি পাইয়া বিরাজ করি
বেন, আর সেই মূল দোষীর দোষ যাহা
দিগকে অনুচিত কার্যে প্রবর্তিত করিল
তাঁহা বা দণ্ডিত হইবেন, ইহা কি কখন
স্বাভাবিক হয়? আমাদিগের মতে উত্তরই
দণ্ডনীয়। লেণ্টনটগবর্নর উত্তরকে
বাস সাবধান করিয়া দিয়া এ বিষয়ের

মাংসা করিয়া দেন, এই আমাদিগের
জিজ্ঞাসিত। তাহা না করি: যদি এই ১৫০
জের নাম কাটিয়া দেওয়া হয়, বালা
দেশের একটি মহতী ক্ষতি হইবে। উহা
রা শিখিত হইলে বালা দেশের কুচি
কিৎস' কষ্টের অনেক নিবারণ হইবে
সন্দেহ নাই। আমাদিগের যেকপ অতি
লাব, বালা ক্রাসের হাজেরা তদনুরূপ
শুশিক্ষিত না হউন, উহারা যেকপ শিক্ষা
পাইতেছেন, তাহাতে বালা দেশের
অনেক উপকার লাভ হইতেছে। উপকর
হইতেছে বলিয়াই আমরা মধ্যে মধ্যে এই
ক্রাসের উৎকর্ষ সম্পাদনার্থ গবর্নরেন্ট,
কালেজের কর্তৃপক্ষ এবং শিক্ষকগণকে
উত্তেজনা কবিয়া থাকি।

পরিশেষে আর একটি কথার উল্লেখ
করিয়া প্রস্তাবের উপসংহার করা যাইতে
ছে। পরম্পরা শুনা গেল, এই ঘটনার
পর অবধি নাথান চীৎস অনেক শিষ্ট
হইয়াছেন।

বিধবাবিবাহ।

গত ৩০ অগ্রহায়ণ রবিবারে জাহানাবা
দের সমিতি হাজীপুর গ্রামে মহা সমারে হে
একটি বিধবাবিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে। জীবন্ত
রাজারাম যুগোপাধ্যায় বর, বরের স্বজ্ঞেয়
২৪ বৎসর, এই তাহার প্রথম বিবাহ। কন্যার
নাম জীবন্তী তরঙ্গিনী দেবী। ৭ সাত বৎসর
বয়সে তরঙ্গিনীর প্রথম বিবাহ ৩৮ আট
বৎসর বয়সে বৈধব্য সম্বলিত হয় এক্ষণে
উহার বয়সক্রম ১০ দশ বৎসর মাত্র।
জিলাবাকুড়ার অন্তঃপতী পার্শ্বতীপুর নিবা
সী বঙ্গব্রাহ্মণ চৌধুরীর সহিত তরঙ্গিনীর প্র
থম বিবাহ হইয়াছিল।

বিধবাবিবাহ নিরূপণ হইয়াছে, উৎপাত
গিয়াছে, মনে করিয়া বাঁহারা উল্লসিত হই
য়াছিলেন, অদ্যতনীর সখাদ উহাদিগের
দিসংস্কর, আর বাঁহারা ভয়ংকর হইয়া
ছিলেন, উহাদিগের উল্লাসকর হইবে সন্দেহ
নাই। পরীক্ষার ফল কষ্টকর বিবাহ
সম্পন্ন হইয়াছে, তাহা শুনিয়া বাঁহারা

কিন্তু এইরূপেই উভয়েই তৎকালে আর আশা-
কিমেই লক্ষ্য রাখিতেছে না। বিদ্যাসাগর
রূপেই প্রসিদ্ধি অর্জন করেন, তিনি অনেক
সেই বিবাহবিবাহকে পিতামাতার ও বধুবরের
ইচ্ছা প্রযুক্তি ও প্রাথমিক বিবাহের ন্যায়
সমারোহ সম্পাদিত দেখিয়া চরিতার্থ হইবেন
সন্দেহ নাই।

বিবিধ সংবাদ।

১ম পৌষ সেবার।

উৎসাহী দিল্লীপ্রদেশী সত্বে তৎকালে
যাতে আক্ষেপের বিষয় এই যে বেল। ১৮৭১
অবধের নেলার ন্যায় নরকপ্রকারে উৎসাহ হয়
নাই।

নদীর একজন নীলকর এক প্রজাকে
বলপূর্বক ওদামে বন্ধ করেন। ক্রমশঃ তৎকালে
ইউরোপীয় ডেপুটি ম্যাজিস্ট্রেটের নিকটে না
লীল কবে। নীলকরও তাহাকে চোর বলিয়া
অভিযোগ করে। জিজ্ঞাসিকারিসহায় অসার
মালীল অগ্রাহ্য করিয়া তাহাকে বিচার দেন।
সে সেসিয়ন অবধের নিকটে মালীল করিতে
তৎকালে তুলন করেন। ডেপুটি তাহাতে
অসম্মত হওয়াতে প্রথমস্তম বিচারালয়ের
নিকটে এবিষয় জানান হয়। প্রথম বিচার
পতি তাহার পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ করেন।
কিন্তু বীতশ্রদ্ধাভাব তাহা না করিয়া ডেপুটি
ম্যাজিস্ট্রেটের বেতন ও কনতার হ্রাস করিয়া-
ছেন। আবার দুইবার পরে তাহার বে পূর্ন-
মত বেতন হইবে একব. বলা বাহুল্য।

আমরা আশঙ্কিত হইলাম, ভারতবর্ষীয়
গণপ্রজন্মের গণ্য গণ্য করিবার নিমিত্ত
যত্নবান হইয়াছেন। ইহাফলে দুটি লাভ হইবে,
এক, ভারতবর্ষে প্রজাতন্ত্র প্রচার পতিত হই-
লে ভারতবর্ষের জনতা অধিক অথবা অল্প
মানিত হইয়া যে দেশের অনিষ্ট হইতে-
ছিল তাহার রক্ষা হইবে; দ্বিতীয়, গণ্য বে
চড়া পড়িয়াছে, তাহার উদ্ধার হইবে।
৩. গণ্যবের ডেপুটিমেন্টের মৃত্যু হইয়াছে।
এই বিষয়সম্বন্ধে রাজা শীকদ্বাদীনতা উ-
নয় করিয়াছেন।

আমরা জানি যে দেশের বালক, এতকাল

এইমাত্র সাহসে পদত্যাগ করিবার সময়ে কয়েক
জন মেয়েটারি ও ছোট আঁচালতের অজ্ঞের
বেতন হ্রাস করিবার প্রস্তাব করিয়া গিয়াছেন।
অন্যেই অল্প বাধে নুনেকেরা হাততালি
পাতিয়া করেন, উদ্ভব পুষ্টিয়া খাইতে
পান না কিন্তু কেহই তাহাদিগের দাব
করেন না।

উক্ত পত্র মাসের বিশেষতঃ শ্রী জাতির
অজ্ঞাচাকসের একটি উদাহরণ দিয়াছেন।
এক ব্যক্তি (ইউরোপীয়) এক যু.তীর পাণি
প্রদর্শন করিয়া তাহার পিতা মাতাকে এবিষ-
য় জানান। তাহার তাহার প্রস্তাবে সম্মত
হয়, কিন্তু কন্যাটি তৎকালে অনিচ্ছুক ছিল।
প্রার্থী কিছু দিন এই পরিবার মধ্যে বাস করত
ক্রমশঃ কন্যাসীর এমত প্রিয় পাত্র হইলেন যে
সম্প্রতি ইহা তাহার পিতা মাতার মত প-
রিবর্তিত হওয়াতে মাতৃক নারিক। যত ত্যাগ ক-
রিয়া গলায়ন করিয়াছে। কোটসিং প্রথা
আর পিতা মাতার প্রভুত্ব উভয়ের একত
সমাবেশ হওয়া কঠিন।

অন্যোধ্যগেজেট বলেন, বাবার বিখ্যাত
মৃত্যু সম্প্রদায় লিখিত হইয়াছে। এই ভাষা-
ইত বিংশতি বৎসর পর্যন্ত উক্ত প্রদেশের
আর পক্ষপাতি হইয়াছিল। সে সম্রাট নগর
নিকটে নিহিত ছিল, এমত সময়ে কয়েক জন
ব্রাহ্মণ তাহাকে খরিয়াছেন।

দিল্লীগেজেট পাতিয়ালায় রাজার মৃত্যুর
বিষয়ে হিন্দুস্থানি ভাষায় নিঃসিদ্ধ হওয়াত
এক পত্র প্রকাশ করেন, রাজা মৃত্যুকালীন লাভ
শত-কয়েককে দত্ত এক শত গজ ও
দুইসহস্র টাকা ও অনেক ঘিটার বিতরণ
করিয়াছিলেন। দুই পাতি চন্দন কাঠ তিন
মণ যত ৯ পাচমণ নারিকেল দ্বারা শব দাহ
হয়। গঙ্গার রাজার তৎকালে গলে দুই শত
জোতা শত তাকদাগকে দেওয়া হয়। তাহা-
র মৃত্যুতে সকলে একপ দ্বাশিত হইয়াছিলেন
সে কেহ তিন নিবস রক্ষন করেন নাই। এই
কয়েক দিবস বাবুদার দোকান বন্ধ ছিল।
বিচারালয় ও সরকারী কার্যসমস্ত সা-
বিত বন্ধ হয়। রাজা মৃত্যু লিখিত যে কথার
প্রমাণিত হইল তাহা এতদ্বারা প্রমাণ
পাইতেছে। আবারিগেজেট অন্য এক প্রমাণ
দেখান

কি এই কথার সত্যতা

মাজিস্ট্রেট হইল

বিলিয়ান ৪ টা ডিসেম্বর

হাটেন। আবারিগেজেট

তবর্ষে আসিবেন। আবারিগেজেট

সবিশেষ সমারোহ ও আবারিগেজেট

বিবার উদ্যোগ করিয়াছেন।

বিশ্বপেট্রিট বাত হইতে

হেন সম্রাট রেলওয়ে সংক্রান্ত

হইয়াছে। কয়েক খানি

আমিরাছে, অন্য কোন

পত্র, মাদ্রাস ও দুপুরের

রেলওয়ে বসিয়া গিয়াছে।

উক্ত পত্র আসার হইতে

হাটেন, এক জন সহকারী

মুলমান বরজীকে একটা

বলেন, মদনী তাহাকে

কর তাহাকে এমন প্রহার

খা কাটিয়া রক্ত বাহির

কিয়া গিয়াছে মালীল করিতে

টাকা জরিমানা হইয়াছে।

অপরূপ সে যে অধিক

এই তাহার কাণ্ড।

কিন্তু বলেন, মুলেকা

মাজিরের বেতন হ্রাস

পনারিগের বেতন হ্রাস

তে বলদেশীয় মদনীকে

পের মত চাহিয়াছেন।

ন, সেসেতাদারের ৩০

কা বেতন ধার্য করা

৫০ টাকার মূল বেতন

নিবে না। তাহা হইলেই

হুটি এদিক ওদিক

আর কিছুদেন না

উক্ত পত্র এক জন

মাজিস্ট্রেট হইল

মাজি চারিট

হইতেছে।

মাজি মিরার অবশ্য

মাজি মিরার অবশ্য

মাজি মিরার অবশ্য

মাজি মিরার অবশ্য

মাজি মিরার অবশ্য

মাজি মিরার অবশ্য

মাজি মিরার অবশ্য

৩০ জন। সম্রাট নিজস্বায়ে প্রতি বৎসর এত
কমই করতেন যদিও কালে বিদ্যাপিকা
স্বাধীনতা জন্য লইয়া গিয়াছেন, কেবল এই
দ্বিধা করিয়া থাকিবে যে হাজেরা নিভাত
কেন্দ্রের বৎসর গবর্ণমেন্টের কর্তব্য করিবেন।
করায় সম্রাট অনেক বিষয়ে আদালতগের প্র
শংস ও সম্মান ভাজন হইয়াছেন। আদাল-
তগের মনোমুখ এই, ইংলণ্ডীয় ও ভারতবর্ষীয়
গবর্ণমেন্টে তাঁহার দৃষ্টান্তের অনুগামী হউয়া
প্রতিবৎসর কর্তব্যকরকে ইংলণ্ডে বিদ্যাপিকা-
র প্রেরণ করেন।

উক্ত পত্রের বোধদীপ্তরূপ সংবাদ দাতা
বলেন, সম্রাট তত্ত্বা হুইজন জমীদার পর-
স্পর দাঙ্গা করাতে কর্তব্য ব্যক্তি আহত
হইয়াছে। জমীদারেরা একতাব অদ্যাপিও
ত্যাগ করিলেন না।

বারাসতে এক "ভাট"চারের পুত্র" সত-
কী দ্বারা একটি লম্বা বধ করাতে তাহার এক
বৎসর বেগান হইয়াছে। ভাটচার্য্যবধক সত-
কী বাহির করিতে না পারিয়া এক ছুরি দ্বারা
তাঁহা বাহির করাতে গুরুটির মৃত্যু হয়।

আমরা শুনিতে হইয়া প্রকাশ করিতেছি
উক্ত দ্বানের গীতাক্ষিপা অদ্যাপিও বাক
নাই। এক্ষণে বিস্তর লোকের মৃত্যু হইতেছে,
বাঁহারা জমাদ্বারে দুই বৎসর অন্তঃকণ করিয়া
আসিতেছেন তাঁহারা এক্ষণে কিঞ্চিৎ ছাড়া
খিল্যে প্রাণ ত্যাগ করিতেছেন। পুরুষগণ
পক্ষে সব দাঙ্গা ও ক্ষেপণ আরম্ভ হইয়াছে।
গবর্ণমেন্ট অদ্যাপিও কতিপয় নিযুক্ত অথবা
ক্রম প্রেরণ করিলেন না।

২২ই পৌষ - - - - -

সম্রাটের গবর্ণমেন্টের সেক্রেটারি ল-
সিংহের সহিত বীর কপের তার পুনঃ গ্রহণ
করাতে লোকেরা সাহেব বোর্ডে গিয়াছে

কেন্দ্রের কোন কোন পক্ষে একাশিত
হইয়াছে। আর বোম্বাই দাস ভেদপালের
ভায়ে অনেক বন্ধি-অঙ্গ বলিয়া অধিকতর
দীক্ষা আদ্যে প্রেরণ করিয়া থাকেন। ইহা
তে হুজুর বন্ধি-সম্রাটের বোধনা করিয়া
লিখিলেন যদি কোন বন্ধি-একজন-
হয় তাহা হইলে তাহাকে উৎসাহ দিও

সম্রাট ও অঙ্গ অঙ্গ বান্ধিয়া সত। হইতে
বহিষ্কৃত করা হইবে

দ্বিতীয় গেজেট বৎসর পঞ্চাশে আর কত
কগুলি কোর্ট আদালত স্থাপিত হইবে।

উক্ত পত্র আরও বৎসর পাতিবানার
মতন রাজা বহেজ সিংহ প্রাণ বরফ মন
বলিয়া কর্তব্যকর প্রতিনিধির মতে দামন
ভার দেওয়া হইবে। অপর, মতজর (সংল
জের) কবিসনর প্রিন্সেপ সাহেব একজন
প্রতিনিধি হইবেন। বালক রাজার বিদ্যা
শিক্ষার জন্য একজন উপযুক্ত ইংরাজকে
নিযুক্ত করা কর্তব্য।

কিনিক অর্থন করিয়াছেন গবর্ণমেন্টে
কলিকাতার রণতরির এক আভা করিতেছে
ন, বোম্বাই হইতে অর্ধেক জাহাজ এখানে আ-
সিবে। তরিত্ত্ব বিদ্যাপুত্রের ডক পরিষ্কৃত
করা হইতেছে। একপ জনপ্রতি রণতরির
অধ্যক্ষ সর জেমস হোপ এবিষয়ের নিষিদ্ধই
কলিকাতার আলিয়াভিলেন।

শীত মাতলা পর্যন্ত রেইলওয়ে খুলিবে।
গিরাতির সেতু প্রায় প্রস্তুত হইল। বিনা
হইতে কর্তব্যখানি জাহাজ এবার এককালে
মাতলা আসিতেছে।

কাখীরেব রাজা সুরার উপরে অধিকতর
কর লইতেছেন। পান দোশ নিবারণই তাঁহার
অভিপ্রের্ত। আদালতগের মতে এ উৎকর্ষ উপ-
পায় নহে। সুরার দুলা অধিক হইলে মাতা
লোয়া বাবার চাউল বিক্রয় করিয়াও সুরা
ক্রয় করিবে। দ্রোণ, বহ্মাভাষির মায়, সও
দ্বারা উহার নিবারণ চেষ্টা বিধেয়।

৩রা পৌষ বুধবার।

২২এ ডিসেম্বর জাখী পর্যন্ত রেইলওয়ে
খুলিবে কিনা হইতেছে।

চীমরেন হইতে সংলগ্ন আসিয়াছে বা-
তীয় সত্তাও লোক-সেবতা মনর হইতে মগ-
রিবারে প্রেরণ করিতেছেন। বিদ্যোহর লক্ষ্মী
সত্তাও। শিকিনে কোন গোলযোগ নাই।
মতমতী নাক বে পাননী অধিকতর জাহাজ
করিয়াছিল, তাহার জন্য বৎসর বেগান হই-
য়াছে।

আদালতগের একজন ইংরেজ পিতা
কেন্দ্রের কাখীরেব রাজা কর্তব্যকর

কেন্দ্রীয়কে বধ করিয়াছিল। সাময়িক বিচার।
লয়ে অবিচার প্রায় হয় না। কিন্তু সেক্টরটি
জান্দানের কি হইল?

প্রধান সেনাপতি এক্ষণে নান। স্থানে
অর্থ করিয়া সেনাদিগের অবস্থা দৃশন করি-
তেছেন। তিনি শীঘ্র কাখীরেব গমন করি-
বেন।

পরিদর্শক সম্পাদক বলেন, সেক্টরটি
কালেজের বাজ লা তাহার প্রথম অধ্যাপক
পক্ষে প্রবৃত্ত কলিকাতার ভাটচার্য্য, দ্বিতীয় পক্ষে
রাজকুমার বন্দোপাধ্যায় নিয়োজিত হইয়া-
ছেন। আমরা এ কথা করিয়াছিলাম তাহা
স্মরণ হইল

৪ঠা পৌষ বৃহস্পতিবার

আত্মসত্তি বাসের আরম্ভে আলিগড় প-
গাত রেইলওয়ে খুলিবে। আর ২২এ ফ্রোণ
হইলে আলাহাবাদ অর্থন দ্বিতীয় পর্যন্ত রেই
লওয়ে হয়। যদি ১-৬৩ সেক্টর পর্যন্ত
বনুনার সেতু প্রস্তুত হয়, আগামি পূজার সম-
য়ে অনেকে হরদ্বার টিকিট লইয়া দ্বিতীতে
নামিতে পারিবেন।

সেক্টরটি বাকলিন বিক্রয়কর্তা নাক
এক জন হুত পূর্ব বিদ্যোহী ও হত্যাকা-
রিকে খারওরারে ধৃত করিয়াছেন। এ ব্য-
ক্তি বানসন সাহেবকে বধ করিয়াছিল

মহারাজার ইচ্ছাপ্রকাশ বলেন, এক জন
ব্রাহ্মণ ইংলণ্ডে গিয়াছেন। এবিধ দৃষ্টান্ত
নিভাত আশঙ্ক।

পুনঃ অবজারবর বলেন ডেনিড সাত্তর
নাক যে ইচ্ছা পুনঃ একটী চিকিৎসালয়
করিতেছেন, তিনি একটি ইচ্ছাশিল্পের
জন্য ৫০০০ টাকা দিয়াছেন।

মাজাজ টাইমস বলেন, সানোলের লো-
কেরা একটি উপায়ে করিবার জন্য এক কো-
ম্পানি করিবেন। বঙ্গদেশীয়দিগের একজন
প্রতিনিধি নাই কেন?

মাজাজের অপরকটি সেলাই করিবার কল
আসিয়াছে। তাহার দীক্ষা জাখী প্রতিনিধি কো-
ম্পানি হইয়া থাকে। আদ্যে প্রেরণ হইয়াছে
কিন্তু সাক্ষর হইয়াছে, তাহার মতন

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. THE STATE OF TEXAS, County of EL PASO, do hereby certify that JOSEPH A. GARCIA is the duly qualified and authorized representative of the EL PASO COUNTY in the SEVENTH DISTRICT of the SEVENTH CONGRESS of the UNITED STATES OF AMERICA.

। न। कश्चिन्नां प्रदा २५००। अन्तर्गत १०००।

হইবে। রাজস্বকর্তার সম্পাদক বলিলেন, তিনি বাহা মিথিয়াছেন যে বহুবার সভা কিন্তু তিনি যে জেনারেল কথা বলিয়াছেন তাহাও মাকলিন সাহেবকে প্রশংসা করেন নাই। চাই

কটনগুণে একটি জীলোক। মিথিয়ার জন্য আদিকার জেনারেলের প্রেরণ। তেজিলেন। কিন্তু বিবিবিদ্যালয়ের মহাসভা তাঁহাকে বহিষ্কৃত করিয়াছেন। এ জীলোকটি হইতে একটি সামাজিক প্রেরণ তাহার মীমাংসার আবশ্যকতা হইতে। প্রায় এই, জীলোকেরা মিথিয়া মিথিলে জীলোকের সবিশেষ উপকার সাধনে সমর্থ হইবেন কি না? পীড়ার কালে জীলোকদিগকে লজ্জা পরিত্যাগ করিয়া পুরুষ চিকিৎসকের হস্তে শরীর সমর্পণ করিতে হয় জীলোক চিকিৎসক হইলে সে লজ্জা পাইতে হইবে না।

৬ই পৌষ শনিবার।

গবর্ণমেন্টে আগিয়া হইতে করেক জন মিলিকিত দুরজিকে আলিপুরে আনিবার জন্য সেনাদিগের বস্ত্রের ভ্রাসাবধারককে ৪০০ টাকা দিয়াছেন।

যে সকল পলায়ী সেনা চীনদেশে হত হয় এবং বাহারা তত্ত্ব্য কারাগার হইতে মুক্ত হইয়া আসিয়াছে তাহাদিগের পরিচয় গণের সাহায্যার্থ ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্টে পলায় গবর্ণমেন্টকে ১,২০,০০০ টাকা দিতে সম্মত হইছেন।

ডাক্তার ফোলিয়রের মৃত্যু হওয়ার পরে ডাক্তার ইউয়াট মেডিকল কলেজে তৎপরে প্রতিক্রিয়া হইবেন।

মোমোজিৎস ডেপুটি মন্ত্রী বিষয় লইয়া কলকাতা অধিকতর গোলযোগ উপস্থিত হইতেছে। বোম্বাই গেজেটের সম্পাদকের সিকট এক ব্যক্তি ১০০ টাকা প্রদান করিয়া কলকাতা দিয়াছেন ইংরাজ ও প্রভুজেনারেল বাবতীয় বণিক ডাক্তার ডেপুটি অধিক টাকা দিয়া তাহা টাকা মিথিয়াই লেন। তিনি বলিয়াছেন, আগানি এইল তাহাও যে সকল টাকার বাক আনিবে তাহা মুসলিমই দেওয়া হইবে,

হালান তাগেজ বাগেজ অধিক টাকা আছে যদি ইংলান্ড হয় তাহাই হইবে তিনি তত্ত্ব্য বণিক সম্প্রদায়ের সিকট এক টাকা প্রেরণ এবং তাহা লাইকসারের সাহায্যার্থ প্রেরিত হইবে। বণিক সম্প্রদায় যদি আপনাদিগের মোমকালন করিতে চাহেন এক কণ বা অসামান্য আদ্যোব কালন করুন।

কিনিকল পত্র বলেন, লর্ড এগগিন সরবারের পুরে এতদেশীয় বাঙা ও লকারদিগকে পত্র প্রেরণ করিয়াছেন। ডাক্তারী অঙ্গ সহচর লইয়া আইসেন, গবর্ণর জেনারেলের এই উদ্দেশ্য।

ভারতবর্ষের ব্যবস্থাপক সভা।

৩রা পৌষ বুধবার
সিলেটে কমিটি সভার কার্য এগালী সংশোধন করিবার বিষয়ে রিপোর্ট করিয়াছেন। সভাপতি তাহা অর্পণ করিবার প্রস্তাব করিয়া বলিলেন, এতদ্বারা স্বতন্ত্র আদীনতা প্রতি হত ফেল করা চাইতেছে না। রিপোর্ট অনুসারে এগালী দিরা হইল।

মেইন সাহেব করার তদ্ব্য বিলের প্রতি সিলেটে কমিটি রিপোর্ট প্রদান করিলেন। তিনি আরও প্রদানত্ব বিচারালয়ে উইলসন প্রচলন লইবার বিধি ১৮৬৩ অক্টোবর ৩১এ জুলাই পর্যন্ত মিথিয়ার জন্য এক বিল অর্পণ করিলেন। মিথিয়ার মিলাপুর প্রতিক্রিয়া নিউমিলিটারি অফিস মনোনীত করিবার বিস্তারিত প্রস্তাব

হারিংটন সার্জেণ্ট জেনারেল খুদীরানদিগের বিবাহ ও আদীন আইন সংশোধন বিষয়ক দুই বিল অর্পণ করিলেন।

ইউরোপীয় সমাচার।

লন্ডন ১৮ই এবেয়ার। প্রায় সব ওয়েলসের দিবসে বাবতীয় আফিসর উচ্চ পদ পাইয়াছেন। করানী গবর্ণমেন্ট আনেককার যুদ্ধ হয় বাগ কাল বন্ধ করিয়াছে এবং করে ন ইংলও ও রণীয়া তাহা অপ্রাধিকার্য হইবে। আনেককার নামান্য লোকদিগের কনভার্সিট হইয়াছে। নিউ ইয়র্ক প্রদেশ হইতে লাক্সার লোকদিগের পক্ষ ১৯ জন ও ১২ জন মাত্র প্রায় প্রতিক্রিয়া মনোনীত হইয়াছেন। কলকাতা লোকের একাধিক হস্তান্তর মিথিয়ার লোক লোকদিগের পক্ষ ১৯ জন ও ১২ জন মাত্র

হইয়াছেন। ইংলও রণী উইলসন প্রদান।

লন্ডন ২৫ই নবেম্বর। মাকলিন-পল্লী হইয়াছেন ও বরগন ইউরোপীয় পক্ষে নিযুক্ত হইয়াছেন। ইংলও লোকের আশ্রয় উৎসাহিত হইয়াছেন। গবর্ণমেন্টের সেনারা অদ্যাপিও অগ্রসর হইতেছে। বিজ্ঞানীরা মনোনীত হইতে প্রথম করিয়াছে। রাজস্বের আনকৃত প্রদান রাজা মনোনীত হইবেন, ইংলও অনেক নিশ্চিত জ্ঞান করিতেছেন।

গবর্ণমেন্টে বিজ্ঞাপন।

বাকল দেশীয় লেগেটন গবর্ণরের আদেশানুসারী নিয়োগ।

১৭ই নবেম্বর—জে, এচ, রাভেল, সাহাবা-দেহর আফিট মাকিট্ট ও কালেক্টর হইবেন। তিনি এই প্রদেশে মাকিট্ট ও ডেপুটি কালেক্টরের কনভার্সিট পাইবেন। কিন্তু যত দিন অন্য হুকুম না হয় ততদিন এই প্রদেশে জাইট মাকিট্ট ও ডেপুটি কালেক্টরের কার্য নির্বাহ করিবেন।

২রা ডিসেম্বর—বারানভের ডেপুটি মাকিট্ট ও ডেপুটি কালেক্টর বাহু সতরচরণ মলিক চাকিশপারগুপ্তার সতরচরণে বদলী হইয়াছেন এবং তিনি, কলিকাতার ডেপুটি কালেক্টরের কনভার্সিট পাইয়াছেন।

১০ই ডিসেম্বর—সি, সি, মিথলস বীভুদের আফিট মাকিট্ট ও কালেক্টর হইবেন এবং কোমদারি আইনের (১৮৬১ অক্টোবর ৩৫ আইন) ২২ ধারানুসারে এই প্রদেশে দ্বিতীয় জেনারেল অধীন মাকিট্টের কনভার্সিট পাইবেন।

জে, ওয়েলসার মাকিট্টের আফিট মাকিট্ট ও কালেক্টর হইবেন এবং কোমদারি আইনের (১৮৬১ অক্টোবর ২৫ আইন) ২২ ধারানুসারে দ্বিতীয় জেনারেল অধীন মাকিট্টের কনভার্সিট পাইবেন।

সাহাবাদের প্রতিক্রিয়া ডেপুটি মাকিট্ট ও ডেপুটি কালেক্টর বাহু হরনাথী সিংহ কোমদারি আইনের (১৮৬১ অক্টোবর ২৫ আইন) ২২ ধারানুসারে এই প্রদেশে প্রথম জেনারেল অধীন মাকিট্টের কনভার্সিট পাইবেন।

সি, ওয়েলস বরগনের প্রতিক্রিয়া মেডিকেল অফিসর হইবেন।

১০ই ডিসেম্বর—এস, বি, মিথলস বাকিশপারগুপ্তার আফিট মাকিট্ট ও কালেক্টর হইবেন এবং কোমদারি আইনের (১৮৬১ অক্টোবর ৩৫ আইন) ২২ ধারানুসারে

৯ আইন অনুসারে ত্রিপুরা, জিঃউ. বনমসিংহ চাক, ভগলপুর ও বাথরগঞ্জ ডেপুটি কালেক্টরের সম্পূর্ণ ক্ষমতা প্রাপ্ত হইবেন।

জে. এক. এন. ওয়াইট এম. ডি. চট্টগ্রামের সিভিল এজেন্টের সরজম হইবেন।

ডাক্তার জে. টুবার্ট এম. ডি. মেডিকেল কালেক্টর এন.টি.মি. ফিজিওলজিক্যাল কন্সাল্টেন্ট এন.টি.মি. জলজি এই সকল বিষয়ে প্রতিনিধি অধিক হইবেন।

চন্দ্রাবন ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মৌলবী আজাদ উল হক বাকরগঞ্জ বদলি হইয়াছেন। তিনি ঐ এদেশে মাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষমতাসমূহ কার্য্য করিবেন।

বাকরগঞ্জের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বাবু প্রতাপচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় চন্দ্রাবনে বদলি হইয়াছেন। তিনি ঐ এদেশে কোজদারী আইনের (১৮৬১ অক্টোবর ২৫ আইন) ২২ ধারানুসারে ঐ এদেশে প্রথম জেণ্ডার সর্ভিসেন্ট মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা পাইবেন।

ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মৌলবী দুলীল উদ্দীন আজাদ বনখার সর্ভিসেন্টের ভার প্রাপ্ত হইয়াছেন। তিনি নদীয়ার মাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষমতা পাইবেন।

বালেশ্বরের আসেসর ও ডেপুটি কালেক্টর বাবু অটলবিহারী পাল ৮ মেম্বের ১৮৭৩ অক্টোবর ৯ আইন অনুসারে ডেপুটি কালেক্টর হইবেন।

ফিরোজপুরের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মৌলবী আবদুল গফার হাজিরা বদলি হইয়াছেন এবং ফৌজদারী আইনের ২২ ধারানুসারে ঐ এদেশে প্রথম জেণ্ডার সর্ভিসেন্ট মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা প্রাপ্ত হইয়াছেন।

পাবনার ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর বাবু পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় বাকরগঞ্জে বদলি হইয়াছেন। তিনি ঐ এদেশে মাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষমতা পাইবেন।

নগোরার ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মৌলবী ওয়ালিক উদ্দীন পানেন বদলি হইয়াছেন। তিনি ঐ এদেশে কোজদারী আইনের ২২ ধারানুসারে প্রথম জেণ্ডার সর্ভিসেন্ট মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতাসমূহ কার্য্য করিবেন।

সি. এক. মর্টেনস চাকরপাড়া মাজিষ্ট্রেট জন্ম ২৩৫ অক্টোবর জালিপুর জেলের অপবিত্রিত্বের পর প্রাপ্ত হইয়াছেন।

৩রা ডিসেম্বর—নিম্নলিখিত ব্যক্তিরা বাক

ডাক্তার, মিউনিসিপাল কমিটির সভ্য হইবেন—

বর্জমানের কমিসনর সত্যপতি।

হার্ডহার মাজিষ্ট্রেট ও সিভিল এজেন্টের সরজম, জাপান জাপান পদ পূরার।

পি. ডি. নিবন; জি. এইচ. গ্রিন, নিকল মাকিনকল, জম. টুবার্ট, উইলিয়াম টুকার্ট, জ. র. এম. বর্নিস, জে. এম. মেলী ও এবেল সাহেবেরা, এবং বাবু বাকরগঞ্জ বদলি, গোপালচন্দ্র চৌধুরী, ও কে.এ.গাহন সিং।

৮ই ডিসেম্বর—বাক কালীনাথ পাণ্ডিত ১৬ই নবেম্বর অবধি ডিসেম্বর আসেসর হইয়াছেন।

১২ই ডিসেম্বর—নিম্নলিখিত ব্যক্তিরা ১৮৫৬ অক্টোবর ২০ আইন অনুসারে বাকসাহী বিভাগের মিউনিসিপাল কমিটির সভ্য হইবেন—

রুবিন্দ্র বাসু।

গব. ২ জেনারেল এজেন্ট. রাজা এসম না-রায়ণ দেব; নবাব সৈয়দ আলি আলি খাঁ; জি. ডবলিউ উলিয়াম সাহেব, বাবু ধরশাল সিংহ চুগড, এইচ.সি. ককস সাহেব ও জি. এসমার খাঁর পদাধীনে বাকসাহী বিভাগ।

বাকরগঞ্জ।

বাবু পলিন বিজয়ী সেন।

উক্ত স্থানের প্রতিনিধি সেনাপতি খাঁর পদাধীনে।

জজীপুর।

এ.এম. টুবার্ট, এস.এম. ডার্কিন সাহেবেরা, বাবু বদলাল সিং, মৃত্যুঞ্জয় চক্রবর্তী, জে. সি. গেন্ডস সাহেব খাঁর পদাধীনে সেক্রেটারি।

এচ. টি. বসু ও বাবু দেবীদাস অহল মণ্ডল।

রামপুর বোয়ালিয়া।

বাবু নারায়ণ এসম সেন।

মহেশপুর নতুন সুপারিসিডিম বাকরগঞ্জ।

পাবনা।

হোট অ'দালতের জজ, বাবু গোবিন্দাবরণ বাবু, কালচাঁদ অধিকারী, রামচন্দ্র পাণ্ডা; গুরুপ্রসাদ সাহা, ব্রজনাথ সাহা ও হরনাথ সাহা।

কুমারখালী।

হোট অ'দালতের জজ পি. প্রোভেন সাহেব, বাবু কৈবর্তচন্দ্র মজুমদার; বংশীধর সেন; মদনমোহন মজুমদার।

সেরাজগঞ্জ।

হোট অ'দালতের জজ আর. এচ. হালি সাহেব, বাবু মালতী ও মলিনমোহন এই দুই কোর্স জালি গত ২৪ই সেপ্টেম্বর অবধি হইয়াছে।

মাজিষ্ট্রেট।

হোট অ'দালতের জজ, বাবু জমিদার খাঁর চৌধুরী মনোহর আলি খাঁ।

নিম্নলিখিত কর্মচারীরা আপন আপন এসকাল মধ্যে খাঁর খাঁর পদাধীনে সেক্রেটারি সত্য হইবেন—

কমিসনর; একসিকুটিব ইঞ্জিনিয়ার ও ইঞ্জিনিয়ার সর্ভিস; মাজিষ্ট্রেট খাঁর পদাধীনে সত্য হইবেন।

১০ই ডিসেম্বর—এ. এ. মাজিষ্ট্রেট সাহেব কটক সাহেব সিভিল এজেন্টের সরজম হইবেন।

মদীয়ার প্রতিনিধি ডেপুটি কালেক্টর বাবু গোপালচন্দ্র সেন বাকসাহী বিভাগে বদলি হইয়াছেন। অতিরিক্ত কমিসনরের অধীনে কর্ম করিবেন এবং কোজদারী আইনের ২২ ধারানুসারে জি. প্রোভেন অধীন মাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা প্রাপ্ত হইবেন।

১২ই ডিসেম্বর—জে. সি. সাহেব মাজিষ্ট্রেটের প্রতিনিধি সত্য ডেপুটি অধিকারী হইবেন।

১৩ই ডিসেম্বর—ই. এচ. মালিষ্টন পুরের বাকসাহী সর্ভিসেন্টের সেক্রেটারি হইবেন।

জে. সি. ভজসন ও তবজি, লিকেন্স সাহেবেরা; বনমসিংহের কোর্সের কমিটির সভ্য হইবেন।

নিম্নলিখিত জজ সেক্রেটারি কর্মচারীদের অধীনে চাকরী করিবার হাতের ডিক্রিটসালার চাইবার সভার সভ্য হইবেন।

বর্জমানের মাজিষ্ট্রেট সভাপতি।

বর্জমানের সিভিল এজেন্টের সরজম।

বাবু চন্দ্রাবনচন্দ্র রায়; হকেলাল, পাণ্ডিত, কৈবর্তচন্দ্র বিদ্যাসাগর, বাবু জিন্নাহ চট্টোপাধ্যায়, ও কোমারনাথ সেন। চাকরী করিবার লয়ের প্রধান শিক্ষক, বাবু নারায়ণসাহা রায় সভ্য ও সেক্রেটারি।

বেহারের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মৌলবী আবদুল আজিম কিছু দিনের নিমিত্ত বাকসাহী জেলার লীবা নির্দেশের জন্য সরবে ডিপার্টমেন্টে বদলি হইয়া ১৮২২ অক্টোবর ৭ আইন ও ১৮২২ অক্টোবর ৯ আইন অনুসারে হাজারিবাগ, মোহাবজালা, সিংডুম, বীরভূম ও হাজিরা কালেক্টরের সম্পূর্ণ ক্ষমতা পাইবেন।

১৬ই ডিসেম্বর—ভাগলপুর বিভাগ ও নীচ জালি পুরগণার জি. সি. কমিসনর এ. এ. মাজিষ্ট্রেট, সি. বি. উক্ত স্থানের সম্পূর্ণ কমিসনর হইবেন।

পত্রপ্রেরকের প্রতি।

আমরা সন্নিবেশ অঙ্গসজ্জা না করিয়া
পাণ্ডার রামস্বয়ম্বর রায়ের পত্র প্রকাশ করি
এ পত্রিকাতে।

কান্নির অন্তঃপাতী গোপীনাথ পুত্র পর-
গনা পট্টা মেহিনী আলি খাঁর সহিত নবাব
স্বস্তিদের বে বিবাহ দাঁড়া ও তৎক্ষণাত্ অত-
চাব হইতেছে অতঃপাতি প্রেরিত পত্র এমনি
অনুগ্রহ করিয়া ও করণ্য তামার লিখিত হইত
হইতে যে তাহা কোন ক্রমেই প্রকাশ যোগ্য
নো হইল না।

দ্বিতীয় কান্নির পত্র প্রকাশ করিলে
অপর পত্র প্রেরকের সহিত কেবল বিবাহ
সন্ধি হইবে।

পৌত্তলিক ধর্মাবলম্বী কোন এক ব্রাহ্মকে
প্রকাশ করিয়া ব্রাহ্মধর্মকে গালি দিয়াছেন। এই
পত্র তাহার পর পরিভ্রান্ত হইল। সোমপ্রকাশ
কর্তৃক ও বৈবরণিষ্ঠান বন্ধ নহে।

এনপকারী চাপরাশীর নামে উপরে এক
ক নি আবেদন করিল কেবল তাহার নর আর
কহার অব্যাহত দাঁড়াল লইবার রোগ থাকে,
তাহার প্রতীকার হইবে।

ক্যাচিং জরসোতি ৩ স্বাক্ষরিত পত্র প্র-
কাশ করিয়াছেন না। ইহাতে ইনকমটাকল সংগ্র-
হকারের অভিযাচারের কথা লিখিত আছে। এ
পুরাণ সমাদ।

রোসনা নিবাসির পত্র অত্যন্তদীর্ঘ বলিয়া
পরিভ্রান্ত হইল।

প্রেরিত

সামান্য ঐযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
মহাশয় সমীপে।

গত শারদীর পূর্বার অবকাশে নানা স্থানে
জন্ম করিয়া পশ্চাৎ জেল, নদীয়াব অন্তঃপাতি
উল্লা প্রায়ের মহাবারী কনিষ্ঠ ছাত্রেরা দেখিতে
গিয়াছিলেন। মহাবারী কনিষ্ঠ ভাগীরথীর উত্তর
ভক্তির পত্র পত্র গ্রাম লোক শূনা ও বলাহত
হইয়াছে। যে অল্প বয়স্ক লোক আছে, তাহারা
যদি ভীত করিয়াছে। এই সকল শোকারত বা-
পার মেহনীর বধীর উত্তর হইল। তখন
আমার শোকসিদ্ধি উত্তর হইল। উঠিল।
এমনি আতি হৃদয় ৩। ৬ উত্তর পূর্বে
ইহা যে ভীত ও আশঙ্কিত হইল, ততক্ষণে

তাঁহার বিলম্ব এমনি পাইলাম অতঃপাতি
যদি এক প্রকার নিশ্চয় করিলাম পূর্ক ইগারে
লিখিত সত্য বা পত্র সত্য হইলে তাহা
হইল। রাজপুত্রের লক্ষণ দেখিয়া বোধ
হইল পূর্ক ইহা। অতি পরিচয় দান ছিল।
কিন্তু এক্ষণে চতুর্দিক জল পূর্ণ হইয়াছে।
হৃৎ হৃৎ বীণা সকল পড়িত হইতেছে কোন
স্থানে দুই চারি জন বসিয়া বসিয়া আছে। অ-
পরাধ আরো আরো করিলে ফল কুত কুত
বালক বালিকাদের জীভার উন্নয় দেখিতে
পাওয়া যায় তাহা এই গ্রামের জুয়াপি দেখিতে
পাইলাম না। তাহাতে মনঃস্থ হইতে লা-
গিল। এক স্থানে আর ৫০/ বিধা পরিভ্রান্ত এক-
টা ঘেরা স্থানের দখল হইতে কোন প্রাচীন
মহাশয়ালী ব্যক্তির পুত্র, তম অর্ন্ত লোকের ভি-
দ্বল ইহঁদের কোলাহল দেখিলেই কোলাহল কর্তৃক
উৎপাদিত হইতেছে। তাহার স্থান স্থানে অ-
তুল্য নবর পত্রের প্রতি পূর্ক সত্যের প-
ত্র হইতেছে। এই বীর্য ভিত্তিরূপের চিত্র
ও অবশিষ্ট অংশ সকল দেখিয়া আমি বলিয়া
পড়িলাম। অবশেষে চতুর্থ সত্য করিতে না পা-
রিয়া মাথার হাত দিয়া ক্রন্দন করিতে লা-
গিল। এমত সময়ে কোন ভক্ত সন্তান আমাকে
ক্রন্দনের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন। আমার
প্রত্যুত্তর প্রবেশে তিনি আমাকে “সুখ হইবা-
রই বিষয় বটে, কান্নিবারই বিষয় বটে” বলিয়া
বলিতে সাধুমান প্রশ্ন করিয়া আমার পরিচয়
জিজ্ঞাসা করিলে তাহার সহিত আলাপ হইল।
দেখিলাম তাহার শরীর স্বাভাবিক শরীর হই-
রাছে। পদ ও বাহ্যিক শরীর, উত্তর শরীর ও মুখ
মণ্ডল কালপিরিতে আচ্ছন্ন হইয়াছে। তাহার
মিষ্ট গ্রামের পুত্র সৌভাগ্যের ও বর্তমান
সুখবতার অনেক কথা শুনিলাম। শুনিয়া আ-
মার হৃদয় বিদীর্ণ হইতে লাগিল। এই রূপে
বেলা একটা অবধি সজ্ঞা পর্যন্ত গ্রামের লোক
পূর্ক ও উত্তর ভাগ বর্ণন করিয়া পূর্ক ভাগে
উত্তর হইলাম। পূর্ক ভাগের এক স্থানে কিছু
দূর দূর হইল। চতুর্দিকে অটালিকা, ভ-
রসা ভাগ দিয়া একাধা ভাঙা। চারিদিকে বৈ-
কুণ্যের লোক গদ্য গদ্য করিতেছে। দেখিয়া
কিছু সন্তান হইল। জিজ্ঞাসা দ্বারা জ্ঞাত হইলাম
যে বীর্যের স্বামী এক্ষণে গ্রামের মধ্যে প্রস্থান
ধর্মী। তাহার কনিষ্ঠারী, বিবাহ, বিবাহ অনেক
আছে। শুনিলাম সেই বীর্য হইতে ৩৬ জন
লোক মহাশয়কে বিবাহ হইয়াছেন। এই বীর্য
পরিভ্রান্ত করিয়া কিছু দূর হইয়াছে।

করিতে করিতে পথি মধ্যে দেখিলাম কতক-
গুলি ভক্ত সন্তান কোন সন্তান খনন করিতেছে,
না। আমিলাম বেগে দিবস দুইন মধ্যে একটা
উত্তরালর স্থাপন করিবার উদ্দেশে তাঁহারা এক
সভা করিবেন। আমি শুনিয়া তাঁহানিকে
কহিলাম যে এত দিন এখানে উত্তরালর হয় নাই
কেন? তাঁহারা কহিলেন, এত দিনের বিপদ
এমনি ভয়ানক ছিল ও ভয়ানক আমবা আপন
আপন লইয়া এই বাস্ত ছিলাম, যে উত্তরালর
কি এক জন করিবার তাহাই। চিকিৎসা ক-
রাইবার অবকাশ কাল পাওয়া যায় নাই। এক-
ধে মহাবারী রূপ প্রবল ছাত্রাশ্রমের কিছু শক্তি
হইয়াছে, তাহাতেই আমরা গ্রামের মহাশয়
এত দিনের পর উদ্যোগী হইতেছি। অতঃপাতি
তাঁহারা আমবা পশ্চিম জিজ্ঞাসা করিয়া আমবা
ন করিলে আমি তাঁহাদের সঙ্গে সেই সভা-
য় গমন করিলাম। উক্ত গ্রামের মহাশয়
সেইদিনের বাসিন্দা এই সভা হইল। মহাশয়
শায়কিণের নাম আমবা পূর্ক শুনা ছিল।
আমবা সেই পরিবারের কোন কোন মহাশয়ের
সহিত আলাপ হওয়ার অভিপ্রায় আশঙ্কিত
হইলাম।

সভার পর ৭ ঘণ্টার সময় সভা আরম্ভ হই-
ল। কোন এক ভক্ত সন্তান প্রথমে সভাসদ বা-
লিধিগকে সম্বোধন করিয়া সভার উদ্দেশ্য ব-
লিয়া এক বক্তৃতা করিলেন তৎপরে গ্রামের পূ-
র্কবাহ ও বর্তমান অবস্থা বিষয়ে এক সুদীর্ঘ
পত্র পাঠ করিলেন। তৎপরে আপন এক
ব্যক্তি এক বক্তৃতা করিলেন। অবশেষে সভার
কার্যের বিবরণ ও নিরূপণ লিপি বন্ধ হই-
লে পর রাতি ৮ ঘটিকার সময় সভা ভঙ্গ হইল।
এই সভার কার্য দেখিয়া আমার মনে অত্যন্ত
আশ্চর্যের সঞ্চার হইল। ইহাতে যে সকল দু-
ক উপস্থিত ছিলেন তাঁহারা আপনাদের স-
ভার সুস্থিত করিতে পারিলে গ্রামের পরোপ-
কার হইবেক।

আমি যে সকল মহাশয়ের সহিত সভার নি-
রাহিলাম তাঁহারা আমাকে মহাশয়ের সহিত
সে রাতি তাঁহাদের সঙ্গে বাসিতে লইয়া গেলেন,
এবং আমার আর্থনা ক্রমে উক্ত বক্তৃতা আ-
মাকে আনিয়া দিলে আমি তাহার এক প্রতি
লিপি লইলাম। আমার এই জন্ম ভ্রাতা মহা-
শয়ের অঙ্গুল্য সন্ধান পক্ষে একাধিত হইলে
পশ্চাৎ মহাশয়ের মিত্র এই বক্তৃতা পাইয়া
আমবা পাঠ করিয়া মহাশয় অবশেষে ক-
হিলেন, মহাশয় আমবা উক্ত গ্রামের যে প্র-

কার প্রবন্ধ। (১) বিচারে তাঁহা আবার কোনমতে
নিষ্পত্তি পেরে উঠিতে পারে না। তাহা কর
মহাপ্রসন্ন অতঃপর পূর্বক আদি এই গল্পে যদি
শেষ করিয়া আদালতের উদ্দেশ্যে করিয়া
হইত।

১৫ই অগ্রহায়ণ
১২৩২

পবিত্র

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাপ্রসন্ন সঙ্গীতেশ্বর ।

সকলদের ছোটআলাপিত।

বেখানে বেখানে এই অভিনব বিচারালয়
স্থাপিত হইয়াছে, আর সে সমুদায়েরই দোষের
কথা শুনিতে পাওয়া যায়। ইহার ভিত্তি কারণ
আছে। এক, বিচারপতিগণের নীতি নীতি নি-
শ্চয় করিবার প্রবল ইচ্ছা, দ্বিতীয়, বিচারপতি-
গণের ক্ষেত্রে অনেক কার্যের তার সমর্পিত হই-
য়াছে, প্রতিদিনের অপরিমিত পরিমাণে তাঁ-
হাদের চিত্তের বিরতাবস্থা তিবোভাব হইয়া
গেল, তৃতীয়, অতিরিক্ত বিচারে নিকট কল্পে
নিষ্পত্তির প্রত্যাশা করা, বাইকে পারে ১৩ গা-
পি যে সে বিচারপতিই অধিকাংশ সমিতি
একটি আদালতের প্রতিষ্ঠা প্রতিষ্ঠা হয়, তাঁ-
হাদের অধিকাংশই ধর্মাবলম্বী হওয়া পায়।
কিন্তু ছোট আদালতের কৃত নিষ্পত্তি উ-
পরে আপীল না থাকিতে অনেকের বিচার-
পতি এখানে বড় একটা মনোযোগী হইয়া
নয়। অন্য একজনকে নিষ্পত্তি দিবার ইচ্ছা
মাত্রাধিকার একটা বিশেষ কারণ আছে,
তাঁহাদের কৃত বিচার উক্ত আদালত অপার
খতিষ্ট হইলে প্রতিষ্ঠা লাভ ও পদ বৃদ্ধি হইয়া
পায়ে, তৃতীয় যে দিগে জল পড়ে সে দিগে
ছাতি ধরিতে হয়। এখানে নীতি নীতি বহু সংখ্য
সকলকার নিষ্পত্তি করা, পারিলেই জল
কোটের বিষয়ে এক প্রকার প্রসঙ্গ পাতি হইয়া

কে, তবে কে আর তত পরামর্শ করে। হায়
সেই অজানবন্দী বিচারপতি ইহা কি বিবেচনা
করেন না, যে, যেটি আদালতের পক্ষিত বাস্তব
গণের স্বার্থ, কর্তব্য, বিধাতা ভিত্তি, তাহা দিগের
আব উপায় নাই।

যাহা হউক, পরবর্তমানের অবস্থায় একটি
সুপার করা আবশ্যিক, আদালতের বিচারের
বিষয়ে কালে সেই ১৩ গা পি পি পি পি পি পি পি

বিচার করিলে সত্যের অগোপন হইবার
বড় সম্ভাবনা থাকে না।

সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাপ্রসন্ন ।

বর্তমান পৌষের সোমপ্রকাশে সুমার-
খালি নিবাসি শ্রীযুক্ত জয়কুমার তর্কবাগীশ তা-
উচারণ মহাপ্রসন্ন বাগ্‌দান কাল প্রভৃতির নির্ণ-
য় বিষয়ক বিচারে এরূপ দেখিয়া, আমি পরি-
ভোব লাভ করিলাম। আবার অতিলাব ছিল,
কোন প্রধান আর্ড অধ্যাপক অবস্থায় প্রবৃত্ত হ-
ইয়া তত করিয়া বিচার পূর্বক সোমপ্রকাশে
করিয়া দিলে, আমি ১৩ গা পি পি পি পি পি পি
হইয়া থাকে তাহা হইয়াছে। তর্কবাগীশ
মহাপ্রসন্ন লিপি কোশ দেখিয়া তাঁহাকে সব
ও প্রাচীন উক্ত আদি পারদর্শী প্রধান আর্ড অ-
ধ্যাপক বলিয়া বোধ হইল, অতএব তাঁহার নিক
ট উক্ত বিষয়ের কোন কোন অংশের প্রশ্ন করি-
য়া হইয়া করিতে অতিলাব করি। আমান
মান ১৩ সকল প্রশ্ন শুনি একেবারে লিপি-
লে বাহুল্য জন্ম পাইছে সোমপ্রকাশ সম্পাদক
ও তাঁহার গ্রাহকগণ বিরক্ত হইলেন, এই ক্ষেত্রে
সমস্ত সমস্ত অল্প অল্প লিখিয়া, তখন এক একটি
অংশের প্রশ্ন করিতে প্রবৃত্ত হইলাম, তর্কবা-
গীশ মহাপ্রসন্ন যেন কৃপাপূর্বক তাহার উত্তর
দিয়া প্রার্থনা পূর্ণ করেন। তিনি, তিন বর্ষের
পর বিচার কালের পূর্বপর্যন্ত বাগ্‌দানের কাল
(১) লিপিরূপে নির্দেশ করিতে আবার এই বি-
ষয়টি নিষ্পত্তি হইয়াছে, অতএব তদ্বিষয়ে
আব কোন প্রশ্ন নাই। কিন্তু তর্কবাগীশ মহাপ্রসন্ন
জয়কুমারের পূর্ব কালকে যে বিচারের কাল
(২) তিব কল্পনা লিখিয়াছেন, তদ্বিষয়ে আমা-
র সন্দেহ হইয়াছে না; কারণ, সেটি অত্যন্ত
পূর্বকাল কিংবা অত্যন্ত পূর্বকাল। যদি কতক
অর্ধ এই গল্পটি লিখিয়া বহু কতক পূর্বকালকে
বিচারকাল বলিয়া বিচার করি, তাহা হইলে

(১) — ১৩ গা পৌষের সোমপ্রকাশে ৫৩
পৃষ্ঠার ২ পৃষ্ঠে শ্রীযুক্ত জয়কুমার তর্কবাগীশের
পক্ষে লিখিত আছে, “তদ্বিষয়ে পবন বিচার
কাল পূর্বক বিহিত” বাগ্‌দান কর্তব্যমিতি
দ্বিতীয়, “বাগ্‌দান সালে চিত্তাকালোবিধি
নিবাহ প্রাক্কাল পর্যন্ত” “চুড়াকালো
পর্যন্ত বিচারকালপর্যন্ত বাগ্‌দান বিহিত
বিচারকাল”।

(১) — ১৩ গা পৌষের সোমপ্রকাশে ৫৩
পৃষ্ঠার ২ পৃষ্ঠে শ্রীযুক্ত জয়কুমার তর্কবাগীশের
পক্ষে লিখিত আছে, “তদ্বিষয়ে পবন বিচার
কাল পূর্বক বিহিত” বাগ্‌দান কর্তব্যমিতি
দ্বিতীয়, “বাগ্‌দান সালে চিত্তাকালোবিধি
নিবাহ প্রাক্কাল পর্যন্ত” “চুড়াকালো
পর্যন্ত বিচারকালপর্যন্ত বাগ্‌দান বিহিত
বিচারকাল”।

সকলকমার সমস্ত বহুপ্রসন্ন করিয়া, এই
কতক কর না, ততএব তদ্বিষয়ে বিচারের
নির্ণয় হইবে। অতএব বিচারকাল, কল্পিত
দ্বিতীয় পক্ষে কল্পিত কতক করিয়া, কল্পিত
কতক করিয়া বলিয়া নির্দেশ করিয়া

এই ১৩ গা পৌষের বিচারকাল নির্দেশ করিয়া
এবং লেখাটিকে অ. ১৩-কল্প হইল, অতএব
ইহাতে সোমপ্রকাশ সম্পাদক বা তাঁহার
গণের বিরক্তির কোন আশঙ্কা নাই।

১৩ পৌষ চন্দ্রাবর্তের ১৭৮৩।
শ্রীমানদায়ক বেদান্তবাসী ।

— ৫ —

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাপ্রসন্ন সঙ্গীতেশ্বর ।

(১) বিগত ১৩ই কার্তিকের সোমপ্রকাশে
জয়কুমারের বেতন বৃদ্ধি বিষয়ে একটি প্রস্তাব
দেখিয়া তদ্বিষয়ে কিছু লিখিতে ইচ্ছা হইল।
জয়কুমারের বেতন বৃদ্ধি এক প্রকার বৃত্তি
প্রত্যাশার মাত্র হইয়াছে হউক, তাহা দিগের
কাল কর্তৃপক্ষের এবং বিধানে স্থান পায় না।
এইক্ষেপে কতক কালের মধ্যে তাহা দিগের
পায়ে নষ্ট হইয়াছে। কাল হইয়াছে
তিয়াছে। আদালতের পূর্বকিছু তেওঁ দিগের
বিষয়ের প্রাচীন সাধের দিগের কালে দিগের
কার মাত্র জয়কুমার আদালতের আদালত
আদালত বেতন বৃদ্ধি করিতে গিয়া মানিক
কাল দিগের দিগের করিয়া গিয়াছেন।
সমস্ত মানে ২৫টি মোকদ্দমা নিষ্পত্তি করিবার
বিধি ছিল অথচ এতোক আদালতে দশ টকা
মজুরি খাতি ছিল, এইক্ষেপে গড়ে এতোক মহ-
কুমার এক শত মোকদ্দমার কন নিষ্পত্তি হই-
না। এক্ষেপে কি ৪ টাকার সেই পরত বহু
হইতে পারে?

জয়কুমার আদালতে তদ্বিধি থাকার কথা
নীতিমত পাইবার আবশ্যক তাহাতে স্থানকরে
এক হটক তৈলের আবশ্যক এই হিসাবে দশ
আদালত তৈলের কন হইতে পারে না। কাহার
যত পরিকার জন্ম মেঘরকেও এক টকা দিতে
হয়। কালী কলমে ১০ আদালত হয়, নই
নাথ হুতা ও লাভ, প্রভৃতি ১০ আদালত এবং
কাগজ ৬ টাকার কমে কোন মতেই হয় না ই-
হার অতিরিক্ত দত্তর বাধ্য হই গড়া আদালতের
বিনিময় বিধান, ১০০ টকা দিবার পরত আছে

(১) এই ১০০ টকা দিবার পরত আছে
তাঁহা সত্য হইলে কলমের দিগের

11/23/98 10:00 AM 11/23/98 10:00 AM

मन्त्रालय, प्रजासिद्धान्त, विज्ञान, चरित्र, मुक्तिपथ, चेतना

ਸਰਕਾਰੀ

मार्चिक शुद्ध २० तारीख।
मार्चिक शुद्ध २० तारीख।

করিমপুর জিলার অধঃপাতি গাওঁকন্ডার
মহম্মদপুর নামে যে গাওঁনি, তাহাঁক ইচ্ছা
তাঁহা দরগাহনি সেওয়া অথবা বিক্রয় করা
যাইবে। বাঁহার সেই তাহাঁক দরগাহনি লুই
বার। অথবা ত্বর করিয়া ইচ্ছা আছে, তিনি
কলিকাতার আর্ড'ন বিনের কো-অপারেশনি
টে আবেদন করিলে সন্নিবেহ হুদাহ আশিত
পারিবে।

• এই বৌদ্ধ সেনাপতি ।

আমরা আশ্রয় সহকারে পাঠকগণের
 'চর করিতেছি, জীবন বাবু শ্রুত
 পণ্ডিত প্রধামতন বিচারালয়ের অন্যতর
 বিচারপতির পদে অতিবিক্রম হইয়াছেন।
 রমা প্রসাদ বাবুর কৃপা হইতে এ দেশীয়
 অপর ব্যক্তির স্বরাস তৎপদ লাভ কেবল
 যে মিলনসাধ্য হইয়াছিল একপুত্রের সঙ্গে
 হইল ও হইয়া উঠিয়াছিল। একুণে আমা
 দিগের সে সঙ্গীই হইল।

ব্যবস্থাপক সভায় এ দেশীয় শ্রমিকের
অবেশাধিকার লাভের জন্য এ পদটিও
এ দেশের সৌভাগ্য হুতবে। কুরিরা বিলে
ত। এ হুটি কিয়দাই ইংরাজ নবর্ণমেণ্ট
তারুণ্যবীর্ণ শ্রমিকের পরীক্ষা স্থান হইবে।
উক্ত নবর্ণমেণ্ট এক একবার পরীক্ষার উ
ত্তীর্ণ হইয়াছেন, এক্ষণে এ-দেশীয়েরা প
দার্থ লাভের সম্ভাবনার হইলেন। নবর্ণমে
ণ্ট পরীক্ষার এই উদ্দেশ্য আশাচক পর্যায়ে

[illegible]

...ଏକମୁଦ୍ରାବିମେଷ ପତ୍ରୀକା ଏହି କେନ୍ଦ୍ର
ସଂସ୍କୃତ ସାହସ୍ରାମୟ ଓ ଶାସ୍ତ୍ରୋପଦେଶ ସଂଗ୍ରହାଳୟ

অতিথিত ইহঁরাছেন, তাঁহারা যদি স্বকৃত
সহকারী স্বাধিনিধি স্বকৃত, সম্পাদক করি
য়া প্রধান পুরুষদিগের চিত্র রক্ষণ করি
তে পারেন, কেবল যে "অ-দেবী"দিগের
কল্যাণ হার উলটিত হইবে, এমত নহে
বাঁহারা তাঁহাদিগকে কত পদে অতিথি
কল্পিয়াছেন, তাঁহাদিগেরও ছবি উলটি
হইবে। ইঁহারাও যে পুরুষের উলটি হই
বে, কবচাপক লভ, স্বাধিনিধিও এ-দে
বীদিগের কার্যসম্পন্ন হারা এক পুরুষ
তাঁহা রক্ষণ হইরাহে।

সমাহার পত্রের সম্বন্ধই জীবন বন্ধন ।
কিন্তু সেই সম্বন্ধই অসীম হয়, জীব-
নের অঙ্গবৎ হয় সম্বন্ধই । সম্বন্ধ-
দাতা ও পত্রপ্রেরকের দোষে সম্বন্ধে সম্বন্ধের
সংকল পত্রেরই সেই অঙ্গবৎ প্রতিমোহন
হইয়া থাকে । কিন্তু তদবর্তন-সম্বন্ধবন্ধি-
গের অভ্যাস কোতকর হয় । এখন বলে
সম্বাদ দাতা ও পত্রপ্রেরকদ্বিগের বিশেষ
রূপে ব্যবধান হওয়া আবশ্যিক । সে দিন
সোমপ্রকাশের এক জন পত্র প্রেরক কোটী
টাকায় কইতে জীবন্ত রানু অতঃপর
বন্ধের অঙ্গবৎ সম্বাহার লিখিয়াছিলেন ।
আমরা তৎকালেই এ সম্বাদে বিশ্বাস
করিয়াছিলাম । পত্রাং প্রবুলজ্ঞান করিয়া
আমিলাই সম্বাদটা মিথ্যা । অস্বাভাবিক
কিছুকাল পত্রপ্রেরকের বাক্যে অস্বাভাবিক
কিছুকাল আমিলাই অস্বাভাবিক-সম্বাদ হয় ।

এই তাহারা কেবল সত্যকে প্রচার করি-
য়াছিলেন। আমরা যদি এই সত্যকে বিশ্বাস
করিতাম, আর ঘটনাসী সত্যিকার হইত,
পত্র প্রেরক আপনাকে ক্ষমাবানিত বোধ
করিয়া কুপিত হইতেন সন্দেহ নাই। তাহা
হউক, তাহারা উত্তর কালে সাবধান হইল
এই আশাধিগের অনুরোধ। তাহারা যে
গৃহে বসিয়া আরব্যোপমাণের মূর্তি
ভূত সত্য রচনা করেন না, তাহা
রা বিলম্ব করিল। তাহারা কখনও
অথবা ব্যক্তি বিশেষের গৃহে না, কেবল
কোন কথা লেখেন না বস্তুকি বস্তু
তাহারা লোক গৃহে কোন সত্য অবশ্য
রিবেন, সত্য দাঁড়া কিম্বা লোক, তাহারা
হাকো বিশ্বাস করা যায় কি না, এই সকল
বিবেচনা করিয়া বেন কাজ করেন। আম-
রা পত্র প্রেরক দিগকে এই সাবধান করি-
তেছি তাহারা এই, দুর্ভাগ্যেরা সহ্য
খে বাদান করিয়া বসিয়া আছে। তাহারা
কুপিত বোধের আরোপ করিয়াও উক্ত
লোকের মান ও জেরকর কার্যের বিষয়
করিবার চেষ্টার কট করে না, আর যদি
তাহারা একটু গুরু পার, তাহা হইলে কি
আর নিজের রাখে? মহাকবি কালিদাস
অতি সংক্ষেপে খেলের স্বভাব পুঙ্খবশে
বর্ণন করিয়াছেন।—

অলোকসামান্যকচিত্ত্যহেতুকঃ

বিশিষ্ট মনাকরিতঃ মহাকবিঃ।

মহাত্মারা কি কারণে কিম্বা বাহ্যিক
কারণে, খেলেরা তাহা দুরিতে না পারিয়া
তাহাদিগের অলোকসামান্য চরিত্রের
বিবরণ করিয়া থাকে। মহাকবি তারকি ক-
হিয়াছেন।—

কুশিলাপি নিরাগতঃ হৃতোম

কুশিলাপি ন হৃতোমঃ হৃতোমঃ।

পুরুষাণামবসংসারঃ

কিম্বা হ্যপি সত্যমবসংসারঃ।

অতঃ পরে তাহারা কালে এক দুঃসাহসী
অবস্থায় পৌঁছিয়া, মনে মনে কহিতেছেন,
যদি আমি, নিরাশ্রয়, আমার তর কি,

আমরা পুঙ্খবশে সত্যকে প্রচার করি-

আমরা পুঙ্খবশে সত্যকে প্রচার করি-
য়াছিলাম। আমরা যদি এই সত্যকে বিশ্বাস
করিতাম, আর ঘটনাসী সত্যিকার হইত,
পত্র প্রেরক আপনাকে ক্ষমাবানিত বোধ
করিয়া কুপিত হইতেন সন্দেহ নাই। তাহা
হউক, তাহারা উত্তর কালে সাবধান হইল
এই আশাধিগের অনুরোধ। তাহারা যে
গৃহে বসিয়া আরব্যোপমাণের মূর্তি
ভূত সত্য রচনা করেন না, তাহা
রা বিলম্ব করিল। তাহারা কখনও
অথবা ব্যক্তি বিশেষের গৃহে না, কেবল
কোন কথা লেখেন না বস্তুকি বস্তু
তাহারা লোক গৃহে কোন সত্য অবশ্য
রিবেন, সত্য দাঁড়া কিম্বা লোক, তাহারা
হাকো বিশ্বাস করা যায় কি না, এই সকল
বিবেচনা করিয়া বেন কাজ করেন। আম-
রা পত্র প্রেরক দিগকে এই সাবধান করি-
তেছি তাহারা এই, দুর্ভাগ্যেরা সহ্য
খে বাদান করিয়া বসিয়া আছে। তাহারা
কুপিত বোধের আরোপ করিয়াও উক্ত
লোকের মান ও জেরকর কার্যের বিষয়
করিবার চেষ্টার কট করে না, আর যদি
তাহারা একটু গুরু পার, তাহা হইলে কি
আর নিজের রাখে? মহাকবি কালিদাস
অতি সংক্ষেপে খেলের স্বভাব পুঙ্খবশে
বর্ণন করিয়াছেন।—

সম্প্রতি আমরা "প্রেস নীতি" ও
সত্যের এক সমাচার পত্র "তারতবর্ষের
আশা পাসন" এই নিয়োনামাধিত একটি
প্রস্তাব পাঠ করিয়া অপমানিত। প্রস্তাব
হইল। লেখক ইহাতে উল্লেখের যে যে
কর্তব্য ও তারতবর্ষের যে যে অবশ্যক
তাহা উক্ত রূপে বর্ণন করিয়াছেন। করে
ক ইংসর-মাত্র হইল, এদেশে ব্রেইলওয়ে,
মাত্র, কল প্রভৃতি হইতে আরম্ভ হইয়া
ছে। তিনি বলেন, ইহার পূর্বে "যদি
আমরা তারতবর্ষ হইতে বহিষ্কৃত হইতাম,
তাহা হইলে আশাধিগের অসংখ্য
প্রাকৃত না। পূর্বে যদিও আশাধিগের
হৃদয়ে তারতবর্ষের ইচ্ছাধনের ইচ্ছা ছিল
বটে কিন্তু আশাধিগের উপার রাজনীতির
অনুসরণীতি ছিল না। আমরা এক দিন
কেবল আশাধিগের প্রিয়তম, লাভের আ-
শারই তারতবর্ষ পাসন করিয়া আসিয়া
ছি। আমরা এমনি আশার "জিলাহ" যে
তারতবর্ষের দিগকে তাহাদিগের স্বদেশ
পাসন সংক্রান্ত কার্য ও প্রস্তাব প্রদান
পার

হাদিগের অসংখ্য সমাধান আশাধিগের
কপ অতি প্রতীতি, উত্তম সাধন সেবক
ছিল না।

১৮৫৭ খ্রিস্টাব্দে আশাধিগের
যেমন আশাধিগেরা, তেমনই সহ্য
করিয়াছে। পূর্বে আমরা
তারতবর্ষের বাক্য প্রবাহ করি নাই;
কখনও অতিপদ, এমনি "হইয়া
আমরা তাহার সাধু রূপের আ-
শাধিগেরা হই নাই। বিদ্যোদয় ইংরা
আমাদের চৈতন্যের করিয়া
ছিল। তারতবর্ষের দিগকে সূচা করা
পূর্বে তারতবর্ষের ছিল না। এই কলঙ্কার
পূর্বে হইয়া পত্র, অধি গবর্ণমেন্ট
ব্যক্তি দিগের মানবর্ধনে বহুশীল
হইয়াছেন; এদেশের দিগকে ব্যবস্থাপক
আমাদের এদেশের দিগের দানে সম্মত হইয়া-
ছেন এবং গবর্ণমেন্ট অধীনস্থ রাজ্য-
গের রাজ্য লইয়া স্বরাজ্য স্থাপি করিবার
ইচ্ছা পরিত্যাগ করিয়াছেন। তাহাপি আ-
মরা একটা কলঙ্কার দেখিতেছি, তারতব-
র্ষে আজিও একটা এক দল আছে, তা
হারা সর্বদা এদেশের দিগের অপমান
করিবার চেষ্টার করিতেছেন এবং আশাধি-
গের দেশের রাজ্য, নবাব ও সত্যক ব্যক্তি
দিগকে এবং জেদীর কলঙ্ক করিবার
চেষ্টার করিতেছেন। "তারতবর্ষের জিহ্বা"
এই প্রকার তাহাদিগের প্রকৃত ভাব গো-
পনে রাখিবার এবং উল্লেখ "জিহ্বা"র
স্বভাব হইয়াছে। তাহাদিগের অন্তঃক-
রণের প্রকৃত ভাব কি? পাঠকগণ জানি-
তে পারিবেন উল্লেখ হইতে পারেন। আ-
মরা ইহা মনে রাখিবার সর্বপ্রথম বস্তু
ও একজন উপযুক্ত রাজনীতিজ্ঞের বাক্য
ইচ্ছা করিয়া তাহা পাঠকগণের প্রবর্তন
করিয়া দিতেছি। বর্তমানে "অসংখ্য জে-
দীর বিদিত জাতিগণেরা ও অপমান
করিয়া তাহারা সর্বদা বিদিত করিয়া

চীন ৪৪, রাশিয়া, আইন ও আচার ব্যবহার বিধিবদ্ধ ও পরিবর্তিত করিবার চেষ্টা। পায়। আমেরিকার সীমা বিপন্ন ও করা, সাধারণকে দারিদ্র্যরূপে মিলিত ও করা রাজ্য ও সমাজ ব্যক্তিগতক আধিপত্যিত করা এই সকল বিষয়েই তাহা সত্যত যত্নবান হয়। যে সকল বিষয় বা ব্যক্তি দ্বারা তাহাদিগের অত্যাচার বিবরণের সত্যতা থাকে, তাহা উল্লেখ করা তাহাদিগের একান্ত অভিপ্রেতি।

আমাদিগের ঐতিহাসিকারিদের কি এইরূপ চেতনায়? তাহারা কি এতদেশীয় রাজস্বকে পক্ষপাত করিবার ও সমাজ ব্যক্তিগতক অধম্যনিত করিবার প্রথম উদ্যোগী নহেন? যে সকল রাজারা পক্ষপাত হইয়াছেন, তাহাদিগের নাম পর্যন্ত লোপ করা কি তাহাদিগের অভিপ্রেতি নয়? আমাদিগের দেশীয় আত্মগুরু ক্রেতার লিখিত সুরক্ষাবাদ ও হারকরাবাদের নবাবের বিরোধী প্রস্তাবগুলি পাঠ করিলে জানিতে পারিবেন।

উল্লিখিত প্রস্তাব লেখক অযোধ্যার ভাবতবর্ষীয় সত্য প্রকাশ্য করিয়া তত্ক্ষণাত লুক্কায়িতগের হস্তে কোন কোন ক্ষমতা দিবার প্রস্তাব করিয়াছেন এবং তৎপ্রসঙ্গে লিখিয়াছেন "এই সকল লোককে আমরা পূর্বে অপমান করিয়া তাহাদিগের নাম পর্যন্ত লোপ করিবার চেষ্টা পাইয়াছিলাম তথাপি ১৮৫৭ অব্দের ত্যাক্ষিক বিদ্রোহ উপস্থিত হইলে যখন আমরা ক্ষমতাহীন ও উপায়হীন হইয়া হতভম প্রায় হইয়াছিলাম, এই জেগীর মধ্য হইতেই আমরা বিপুল বহু ও সহকারী পাইয়াছিলাম।" পাতিয়ালার রাজা ইহার দুর্ভাগ্য হল, তথাপি এতদেশীয় ইংরাজী পক্ষে তাহাকে বিশ্বাসঘাতক পর্যন্ত বলা হইয়াছে। অন্যত্র প্রস্তাব লেখক মর চার্লস উডবে অযোধ্যার ও অন্য অন্য স্থানে চিরস্থায়ী রাজস্বের প্রস্তাব করিবার অনুরোধ

লৈবে লিখিয়াছেন "অযোধ্যার

তালুকদারেরা বেকপ শুরু হইয়া সকলে রত্নবিত্ত করিতেছেন তদ্বারা বহু বহু জাতিগত পক্ষপাত প্রদর্শিত হয় নাই বটে, তথাপি কৃষিকার ও রাজস্বের ক্ষমতার পরিচয় পাওয়া গিয়াছে। তাহারা যে সকল বিষয়ে তর্ক করিতেছেন, তাহা কেবল অযোধ্যার নহে, সমুদায় ভাষ্য-মের লুক্কায়িত যখন এই সত্য প্রকাশ্যে কার্য সম্পাদিত হইতেছে, তখন আমবা স্পষ্টাক্ষরে কহিতে পারি, ভাবতবর্ষীয় উচ্চ জেগীর লোকদিগের এক সত্য করিয়া শাসন ও আইন বিষয়ে পরামর্শ লওয়া কর্তব্য। ভাবতবর্ষীয়দিগকে শাসনকার্যের অংশ ভোগী করিবার আমাদিগের যে ইচ্ছা আছে, তাহা আমরা এই উপায় দ্বারা সম্পাদন করিতে সমর্থ হইব।

উল্লিখিত প্রস্তাবলেখককে ধন্যবাদ দিয়া এই প্রস্তাবের উপসংহার ক হইতেছে। এদেশে একটি জাতি সাধারণ সত্য করিবার সময় উপস্থিত হই যাচ্ছে। আমরা বারবার ইহার প্রস্তাব করিয়াছি। আমাদিগের নৃপের বিষয় এই, যখন আমাদিগের ভাবতবর্ষীয় সত্য নিশ্চিত আছেন, এবিষয় ইংলণ্ডে আলোচিত হইতেছে। যত দিন ইহা না হইতেছে, তত দিন আমাদিগের স্বাধীন স্বাধীনতা ও স্বাধীন উন্নতি হইতেছে না। সকল বিষয়েই গণমন্ডলের স্বাধীনতার উপর নির্ভর করিয়া থাকিলে কেবল আমাদিগের অলস ও নিরীহ স্বভাবের পরিচয় দেওয়া হয় এই মাত্র। চেষ্টা না করিয়া কোন দেশের মঙ্গল হইয়া থাকে? ইংলণ্ড ও ইটালীর দিকে দৃষ্টিপাত করিলেই আমাদিগের নাকটি স্পষ্ট প্রত্যক্ষ হইবে। আমাদিগের দেশের লোকেরা কি এখনও এই মহাভীতি সাধনে পরাধীন থাকিবেন?

ভারতবর্ষীয় সত্য প্রকাশ্য

আমরা এবার ভাবতবর্ষীয় সত্যকে এত অতিভূত দেখিতেছি কারণ কি? ইহা হইয়াছে যে আমরা এখন সত্য প্রকাশ্যে পাইতেছি না কেন? লাণ্ডোল্ডের মত লোকেরা কি তাহার পরীক্ষা করিয়া লস করিয়া পরিশেষে নিশ্চিন্ত হইয়া উলিয়াছে? বহুবল হইল, সমাজ অধিবেশন বার্তা অথবা কার্য বিবরণ প্রাদেশিকের প্রতিপত্তিবিধি হয় নাই। সমাজ একগুণ অনেকগুলি ক্ষমতাবলীর জমিদার প্রবেশ করিয়াছেন, তাহাই কি সমাজ একগুণ ভাবপরিবর্তনের কারণ? না আর কোন নিগূঢ় কারণ আছে? জনরবে শুনিতে পাওয়া যায়, সত্য পূর্বের ন্যায় কেবল জমিদারদিগের মনোরঞ্জন করিবেন সন্দেহ করিয়াছেন, একগুণ জমিদারদিগের স্বার্থহানিকর কোন বিষয় উপস্থিত নাই, সত্যও নিশ্চিত হইয়া আছেন; তালুক বিষয় উপস্থিত হইলেই সত্য নিশ্চয় হইতে উপস্থিত হইবেন এবং স্বদেশীয় সিংহের ন্যায় হুতন বল প্রাপ্ত হইয়া অসীম সাহস সহকারে যুদ্ধিতে আরম্ভ করিবেন। ইহাই কি প্রকৃত কারণ?

যাহা হউক, আমরা সত্য পূর্বের ন্যায় তেজস্বিতা ও উৎসাহবলিতা দেখিতে পাইতেছি না। এখন কি তাহার উৎসাহ ও তেজঃ প্রকাশের বিষয় উপস্থিত নাই? অনেক আছে। সত্য কেবল নিশ্চয় প্রকাশ্যে দেখিতে ও জানিতে পারিতে পারেন না। ভাবতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সত্য বিস্তার অধিবেশন হইয়া গেল, তথাপি তথায় বাতলা দেশের প্রতিনিধি গৃহীত হইলেন না, ভাবতবর্ষীয় সত্য কি তাহার প্রতিবাদ করিয়াছেন? সব বার্গেন পিকার ছিল সাহেব গঠিত কর নতুন মকদ্দমার যে নিশ্চিন্ত হইয়াছেন সত্য কি তাহার প্রতিবাদ কর আমাদিগের দেশে বিষয়

বলিয়া বিবেচনা করিতেছেন না? উহা
হয়, কি একটি সাধারণ যুক্তির অনুসরণ
ব্যাখ্যা ও তথ্যসকল অধিকসংখ্য লোকে
র প্রতি সত্য্যচার হইবার পথ নির্ধারিত
কর নাই? প্রায় তিন দশক হইল, বারা
সাহেব প্রভৃতি স্থানে মারীতম হইয়াছে।
বিনা চিকিৎসায় অসংখ্য লোকের প্রাণ
বিষাগ ও অব্যবস্থাপিত পীড়া ক্রমে হইতেছে।
ভারতবর্ষের সভা কি অকপট চিন্তে তাহার
র অতীকার চেষ্টা পাইয়াছেন? সভা প্র
থমে গবর্ণমেন্টকে উত্তেজিত করিয়াছিল। সে
ন যথার্থ বাট কিংবা গবর্ণমেন্ট বমিসন
নিয়োজিত করিয়া স্থানীয়দের নিদান
নির্ণয় করিবেন স্বীকার করিয়াও যখন
মৌনাবলম্বন করিলেন, তখন কি সভা এই
বিষয় তাঁহাদিগকে অংশ কনাইয়া দিয়া
ছেন? মাদ্রাসের তত্ত্বাবধায়ক সন্ত্রাস
সাহেবের সহযোগিতা ভারতবর্ষের চিঠিবর্ষী
কেট সেক্রেটারি মরচার্লস উডকে অ
নয় করিয়া অপদস্থ করিবার যথোচিত
চেষ্টা পাইতেছেন, ভারতবর্ষের সভা কি
তাঁহার সহায়তা করিবার চেষ্টা পাইয়া
ছেন? আমরা তাঁহর কার্যের গুণানুবাহ
করিয়া ও তাহা অতিনন্দনপত্র প্রেরণ
করিবার প্রস্তাব করিয়াছিলাম, সভা কি
তখন সম্মত করিতেছেন?

এ দেশের অনেক লোকের মনে
নেক গুণি ও সৎসঙ্গের
ইংলণ্ডে গিয়া দিন। এই পরীক্ষা
দেওয়া হইত। এই কার্য
এ অনেক যোগ্য ও সৎসঙ্গের
ত দেখিতে পাওয়া যায়। এ দেশ
দুটি পরীক্ষা প্রদান করিয়া
একটি মহোপকার লাভ হয়।
ভারতবর্ষের সভা কি অতিনন্দন
পত্র প্রেরণ করিয়াছেন? তখন
ক যদি ভারতবর্ষের প্রতিটি
দেশ, গ. ভারতবর্ষের সভা, ভারত
কতা, ও প্রার্থনা সকল ও অন্যান্য

র গোচর করিয়া তাঁহর সাধন চেষ্টা করেন
মত ইটী লাভ হয় সন্দেহ নাই। ভারত
বর্ষের সভা কি ইংলণ্ডে তাদৃশ অতিনিধি
প্রেরণের যথোচিত চেষ্টা পাইয়াছেন?
বিচারিক ও আমলাদিগের দোষে যে মহি
চাকর্য্যাকর হইতেছে, ভারতবর্ষের সভা
যত্ন ও অধ্যবসায় করিতেছে কি ভবিষ্যৎ
সমর্থ হন না? অধ্যবসায়ের নিকটে সকল
কই নত হইতে হয়, সভা ইহা জানেন স
ন্দেহ নাই। বাহা ইউক, সভা সকলকে নিজ
স্বয়ং নোদ করিতেছেন, আর আর আমরা
তাঁহাকে অধিক বিরক্ত করি না।

সহস্রবুখান।

কি কৃষি, কি বাণিজ্য, কি রাজনীতি,
কি ধর্ম, কি আচার ব্যবহার যে কোন বি
ষয়ের উৎকর্ষ সাধনের ইচ্ছা করিবে, পাঁচ
জনে মিলিয়া না করিবে। কখনই তাহার
বাঞ্ছানুকরণ উৎকর্ষ লাভ হইবে না। ইউ
রোপ ও আমেরিকা প্রভৃতি স্থানে যে এত
শীঘ্র উন্নতি হইতেছে, পাঁচ জনে মিলিয়া
কাজ করা তাহার একটি প্রধান কারণ।
এই এই ধর্মের লোকেরা একটি সামান্য
কাজ করিতে হইলেও এক সভা অথবা
এক কোম্পানি না করিয়া তাহাতে হস্ত
ক্ষেপ করেন না। অধিক লোক একত্র হ
কার্য্য করিলে যে তাহার উন্নতির স
বিশেষ উন্নতি লাভ হইবে, তাহা অনেক
জ্ঞানসম্মত করিয়া দিবার নিমিত্ত অধিকতর
প্রয়াস পাইতে হয় না। এক হস্তী যে শু
কৃত্তর দ্রব্য স্থানান্তরিত করিতে অসমর্থ
হয় একটাকে তৎকায়ে নিয়োজিত
করিলে তাহা অন্যায়সেই এ সম্বন্ধে হই
বা থাকে। এক কার্য্যে অধিক লোক
কৃষি, বিদ্যা, যত্ন ও পরিশ্রম বিনিয়োজিত
হইলে স্বপকাল মধ্যে তাহার উৎকর্ষ সা
ধিত না হইবে কেন?

পাঁচ জনে মিলিয়া কাজ করিবার স্বী
কৃষ্ণ এ দেশে ছিল না, একজন নয়, এ

খনও নাই এমন নয়, কিন্তু এক দিন কোথা
গড়ার সমগ্রিক অনুশীলন না থাকিলে
উহা বিস্তৃত যুক্তি ও বিস্তৃত সাধন
সামগ্রী হইয়া সমগ্র কলোপ
নাই। প্রজাতিতে সচরাচর
বা, গ্রাম সাধারণ
হইলে গ্রামবাসির একত্র হইয়া কর্তব্য
কর্ম স্থির করেন; কাহকে সমাজ্য
করিতে হইলে অথবা সমগ্র করিয়া সমগ্র
অ সমগ্র গ্রহণ করিতে হইলে পাঁচ জনে
একত্র হন, কিন্তু সকলে একত্র হইয়া
গ্রামের কৃষি বাণিজ্যাদি উন্নতি বিধান
নী সভা করা অথবা অন্যবিধ প্রেরণসাধন
চেষ্টা করা সে সকল নাই। বৈধ রাজনী
তি সমগ্র ভারতবর্ষের সভা এবং ধর্ম স
মগ্র জাতিসমাজ এই দুটি সভা হওয়াতে
এ দেশের কত উপকার হইতেছে। একজন
কৃষি ও বাণিজ্য সংক্রান্ত সভা ও সমগ্রায়
করিয়া যদি কাজ করা যায়, এ দেশের
মহোপকার লাভ হইতে পারে। অত
বাণিজ্য সংক্রান্ত সভা ও সমগ্রায়
করিবার প্রস্তাব করাই আমাদিগের অভি
প্রায়

এক দিবস দুটি কৃতবিদ্যা ব্যক্তির স
হিত আমাদিগের এ বিষয়ে অনেক কথ
পঞ্চন হয়। তাঁহাদিগের এ বিষয়ে বিচ
কণ অনুরোধ দুই হইল। তাঁহারা বলেন,
বাবু রামগোপাল ঘোষের সদৃশ কার্য্যকর
ব্যক্তিত্ব উৎসাহী ও অধ্যাক্ষ হইয়া যদি
এ বিষয়ে প্ররোচন হন, নিঃসংশয় অর্থাৎ
সিদ্ধি হইতে পারে। এখন অনেকে ইহা
সম্মত হইয়াছেন। ১০০ টাকা
একটি অংশ করিলে অনেক অর্থী প
ওয়া যাইবে। যে প্রণালীতে কাজ
করিতে হইবে, তাহারও কথা হইল। স
মগ্র হইলে পর যে সকল কৃতবিদ্যা
ব্যক্তি কাব্যকক, চরিত্রিক ও অধ্যবসায়
শীল বলিয়া লক্ষ্য করিতে হইয়াছেন, স-
মগ্র আমাদিগের প্রতিমিথি করিয়া কৃষ্ণ

জর্জনি ও আমেরিকা প্রভৃতি স্থানে প্রেরণ করিবে। একপে কার্য আরম্ভ হইলে অনেকবিধ উপকার লাভের সম্ভাবনা আছে। সেই সেই দেশের সহিত সন্ধিগত সন্দর্ভ হইলে পর পরস্পর বাধা বাধকতা হইয়া উঠিবে; এ দেশে যে যে বিদ্যে জ্ঞান প্রকৃষ্ট সংস্কারের প্রাচুর্য্য আছে, ক্রমে তা হার হ্রাস হইয়া আসিবে, লোকের উৎসাহ শক্তি নষ্ট হইয়া উঠিবে এবং এতদ্ব্যতীত ক্রমে জাহাজ চালাইবার শিক্ষা ও কল প্রভৃতির এ দেশে আনয়ন নির্বাণ ও চালানাদির শিক্ষা কার্য সহজে সম্পাদিত হইয়া উঠিবে। অর্থ লাভের ত কথাই নাই। যাঁহাদিগের অর্থ সম্বল আছে, তাঁহারা এত দিন নিরীক ভাবে কোম্পানির কাগজের সুখ ভোগ করিয়া দেশের যে দুর্ভিক্ষ করিয়াছেন, তাহার আর কথা নাই। কিন্তু এখন আর এইরূপে দুর্ভিক্ষ করা উচিত হইতেছে না। তাঁহারা অতঃপর এবিধ কার্যে হস্তক্ষেপ করিয়া অর্থের সহিত আপনাদিগের সাহস উৎসাহ বল বীজ্য বিক্রমাদির বৃদ্ধি করুন। আমরা অন্য এবিধে সহায় বৃত্তব্য শেষ করিতে পারিলাম না।

মোগলবংশ লোপ।

মোগলরা এই ভারতবর্ষে বহুকাল প্রায় প্রতাপ সহকারে রাজত্ব করিয়াছিলেন। এই বংশে শৌর্য্য বীজ্য শালী অসামান্য কন্যাসম্পন্ন করেক ব্যক্তি জন্ম গ্রহণ করেন, তাহাদিগের গুণেই এই বংশের সর্বশেষ ইতি হইয়াছিল। কিন্তু একদিক দৃষ্টির একটা মুখ্য দোষ এই, কন্যাসম্পন্ন ব্যক্তিদিগের সংসর্গে রাজত্ব যেমন উজ্জ্বল হইয়া উঠেন, তেমনি তাহাদিগের বিলাস হইলেই হীনপ্রভ হইয়া পড়েন। অসম্পন্ন রাজাদিগের কাপুরুষতা নিবন্ধন এই বংশের ক্রমে হীন দশা উপস্থিত হয়। এদেশে ইংল্যান্ডেরা লক্ষপ্রতিষ্ঠ হইলে পর এই বংশের রাজত্ব কেবল নাম থাকে বসিত হয়। ১৮৫৭ অব্দে বিদ্রোহ ও হানি ওত বাহাদুর সাহেবের মৃত্যু হওয়াতে সেই রাজ

মাত্র রাজত্বের সহিত রাজবংশেরও লোপ হইয়াছে। আমরা অন্য এই বংশের সংক্ষিপ্ত ইতিবাস পাঠকগণের গোচর করিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

মোগল (১) রাজবংশের আদিম ব্যক্তির নাম বাবর। তিনি সুবিখ্যাত টাইমুর ও অকিস খাঁর বংশোদ্ভব। তিনি অভিলষণ শৌর্য্য শালী, সাহসিক ও অকুচকিত ছিলেন। তাঁহার নাম প্রকার দশা বিপর্য্য হয়। কিন্তু তাঁহার অসামান্য মূরহ ও মনোবল এই দুই গুণ থাকতে তিনি কখন কোন অবস্থাতেই তদ্রোহ ও বিঘ্ননা হইতেন না। কখন বহুসংখ্য সেনার অধিপতি হইয়া সুবিস্তৃত রাজ্যে অধিপত্য করিতেন, কখন বা অসামান্য বদনে দারিদ্র্য দশার কঠোর ক্রম সহ্য করিতেন। তিনি বারবার মানা কষ্ট ভোগ করিয়া পরিশেষে দিল্লীর সিংহাসনে অধিষ্ঠিত হইলেন। রাজ্যের অর্জন, বর্জন, ও রক্ষণ কার্যে তাঁহার বল, বীজ্য, ও অগ্ন্যবসারাদি বাবতীর গুণ বিনিয়োজিত হইয়াছিল। বহুদিগের প্রতি তিনি সন্তুষ্ট ও প্রেমবান ছিলেন। বহুসংখ্য কষ্ট ভোগ কালেও কখন তাঁহার দশা ও বাৎসল্য ভাবের অসামান্য হ্রাসতা দৃষ্ট হয় নাই। তাঁহার দৌলের মধ্যে এই ছিল। তিনি সুরাশ্রয় ছিলেন। কিন্তু মদ্য পান করিয়া ইন্দ্রিয়দমন সুরাপানদিগের মাঝ তিনি উন্নত হইতেন না। তিনি মদীতটে, তরুণুলে বা অন্য কোন সুবাস্য স্থানে প্রিয় সুস্বাদু খাদ্য ভোগ করিয়া সুরাপান করিয়া আনন্দ ভোগ করিতেন। তিনি নিজ হস্তে আগুন জী বন বৃত্তান্ত লিখিত, বান তাঁহার রচনা ললিত ও মনোহর। সার্বভৌম জীতি কালে তাঁহার সর্বশেষ বর ছিল। তাঁহার সর্বাধিকার কালে অনেক নাপী কৃপ তড়াগাদি খনন করা হয়। ৩৮ বৎসর রাজত্ব করিয়া তিনি মৃত্যু মুখে পতিত হইলেন।

বাবর মনবলীলা সম্বরণ করিলে পর তাঁ-

(১) ভারতবর্ষবাসি। তাৎপার্য্য ভাষিত হইলে উক্ত বংশের বাবতীর মূলমতানকে মোগল এই শব্দ দ্বারা নির্দেশ করিয়া থাকেন। বাবরের জন্মদায়ী মোগলজাতির ছিলেন বলিয়া বোধ হয় বাবরকে মোগল বলা হইত।

হার পুত্র হুমায়ুন আত্মপক্ষের সহিত দিল্লী দেশ আসনের ভার সম্বরণ করিয়া সিংহাসনে আরোহণ করিলেন। তাঁহার রাজত্ব প্রায় ৩০ বৎসর পর্য্যন্ত হইয়াছিল। শেষে রাজ্যচ্যুত হইলেন। তৎকালে অনেক কষ্ট ভোগ করিতে হইয়াছিল। কষ্টের সময়ে জনকিয়্যাত আশ্রয় গ্রহণ হয়। ১৬ বৎসর পরে তিনি পুনর্বার দিল্লীর সিংহাসনে আরোহণ হইলেন। কিন্তু পুনর্বার তিনি অধিক দিন কাটিতেন ছিলেন না। তাঁহার মৃত্যুকালে রাজ্য অধিক প্রসাধন ছিল। তিনি ২৬ বৎসর রাজত্ব করেন। এই কাল মধ্যে প্রায় ১৬ বৎসর রাজ্যচ্যুত হইয়া থাকেন। বহুবার মৃত্যুর পরে জীবিত ও প্রীতির স গর হয়, হুমায়ুনের আত্মা বিশেষ গুণ ছিল না, বরং কোন কোন বিষয়ে তিনি আপনাত্মক মানসিক দুর্বলতার পরিচয় দিয়াছিলেন।

হুমায়ুনের মৃত্যুর পর তাঁহার পুত্র জাহাঙ্গীর সিংহাসনে আরোহণ হইলেন। তাঁহার বহুসংখ্য কন্যা-পুত্র জন্মগ্রহণ করিয়াছিল। হুমায়ুন তাঁহার সন্তানদের মধ্যে হতে রাজ্যের বাবতীর কার্য ভার পণ্ডিত হইল। অষ্টাদশ বৎসর রাজত্ব কালে জাহাঙ্গীর বহুসংখ্য কার্য নির্বাহ করিতে সক্ষম হইলেন। রাজ্যের পালনভার গ্রহণ করিয়াই তাহাকে রাজত্ব বর্জন পাজায়েলার দিল্লী জেলার পুনরধিকারকরণ, পত্র প্রেরণ ও সর্বাঙ্গ সুশৃঙ্খলা স্থাপন ইত্যাদি সুকৃত্য-ভাণ্ডে ব্যাপ্ত হইতে হইল। তিনি নিজ সুকৃত্য-ভাণ্ডে বনভা ও দুর্গপরিদর্শনতা গুণে ক্রমে ক্রমে লব্ধ অধিকার করিয়া উঠিলেন। কিন্তু তিনি জীবনাবসান পর্য্যন্ত নিঃশঙ্ক, নিরাপন্ন ও সুস্থিত হইতে পারেন নাই। কখন অবাধ্য ও খনলোৎপাদন পুত্রদিগের সহিত যুদ্ধ, কখন রাজবিদ্বেষিদিগের সহিত যুদ্ধ, কখন বা পুরাবিহিত রাজ্যের পুনরুদ্ধার ইত্যাদি কার্যে জীবনের অধিকাংশ কাল তাহাকে কেপণ ব্যস্ত হইয়াছিল। তিনি প্রভাগের শেষকালে প্রায় অসুস্থতানে উন্নত হইলেন না। মৃত্যু হইতে অবলম্বিত হইলেই তিনি তদ্বিষয়ে সন্মত হইতেন। তিনি যে উপায়ে নিশ্চিত

হিলেন, তাঁহা নিজে পদোপযোগি
পদিগের হিতকর কার্যের অনুষ্ঠান না
হা বলস হইয়া থাকে মন্তব্য নহে ।
রাজ্যবিধির অধিকার কালে খর্দ্যক্রিয়া
হে যে সমস্ত কর নিৰূপিত হইয়াছিল
হা তিহিঃস্থিত করিলেন । তিনি অতিশয়
শক্তিশালী ছিলেন । তিনি কোন খর্দ্যের বি-
বেচনা অথবা ক্ষমা করিলেন না । তিনি একে
পরবাদী ছিলেন । বিস্তৃত খর্দ্য অবলম্বন করা
তে তাঁহার প্রতি দীর্ঘা দৃষ্টান্তের। অত্যন্ত
বিরক্ত হইয়াছিল । পরবার্ষিক তত্ত্বাবধানের দায়
বরের স্খা একমুখ বলবতী ছিল । তৎপূর্ণ
সুখভোগার্থ তিনি আর সমস্ত ক্রিয় আগর
করিতে পারিতেন না কি হিন্দু কি মুসলমান, কি
খৃষ্টীয়ান সকল খর্দ্যের আলোচনা করিত । তিনি
তাঁহার দায় ত্যাগ গ্রহণ করিতেন । সারিত্য ও
বিজ্ঞানাদি শাস্ত্রের আলোচনা বিষয়েও তাঁ-
হার অনুরাগের স্থানতা ছিল না । সংস্কৃত
হইতে কবিতা কবিতা, দর্শন, বীজগণিতাদি
পারসীক ভাষার অনুরাগিতা হয় । গ্রীক ও
ইংরাজী ভাষা হইতেও প্রয়োজনীয় বি-
বরে তিনি ব্যবহৃত ছিলেন । এই সকল বিষয়ে
কেনি ও আবদুল করিম নামে দুই সহোদর
তাঁহার সবিশেষ সহায়তা করেন । বিস্তৃত খ-
র্দ্যের ভাবগ্রহণে তিনি কেবল সমর্থ হইয়া
ছিলেন, তৎপূর্ণ কার্যের অনুষ্ঠানেও তিনি
উদ্যমী ছিলেন না । তিনি মুসলমান খর্দ্য
নির্দিষ্ট কতিপয় অর্থোক্তিক খর্দ্য ক্রিয়ার
বিলোপ সাধনের চেষ্টা পাইয়াছিলেন । হিন্দু
খর্দ্যবিধির সমস্তে স্বাধীন স্বাধিকার
স্বাধীন এবং অপব্যবসে জীপের বিবাহ
নিষেধ করেন । বিধবাসিগকে পুনর্বার বিবাহ
করিতে অস্বীকার করেন । স্থানের বিষয় এই
যে তাঁহার এই সকল শুভ চেষ্টা তাঁহার শরী-
রেই শেষ লক্ষ্যে বিনাশ প্রাপ্ত হইয়া যায় ।
তিনি ক্রিষ্টিয়ান ধর্মে বিদ্যমান উপায়
এবং ক্রিষ্টিয়ান ধর্মের লোকের সমস্ত কল-
হ হইতে মুক্ত করার চেষ্টা করিতে পা-
রিতেন না । তাঁহার মনোভাব
অন্যে ক্রিষ্টিয়ান ধর্মের হইতে সন্দেহ নাই ।
মুসলমান হইয়াও তিনি যোগ্য হিন্দুসিগকে
উচ্চতর ও উত্তম পদ দানে পরাক্রম ছিলেন

না । তাঁহার একমুখতা তাই না হইলে তিহ
জাতীর প্রচার কি কখন সুখ সাধন হয় ?
সংগ্রাম হলেও তাঁহার মনঃকল মেত্র বাস্ত
তরে অবনত হইত । বৎসরে বৎসরগকে
গোলাব করিবার প্রথা তিনি রহিত করেন ।
দাহাতে দুর্গ অট্টালিকাদি নির্মাণ ক্রিয়ার উৎ-
কর্ষ হয়, তাহাও তাঁহার সবিশেষ দুষ্টি ছিল ।
আকবর রাজত্ব সংক্রান্ত বিষয়ের গোপ
সংশোধনের যে তিনি উদ্যম অবলম্বন করি-
য়াছিলেন, তাহারা তাঁহার প্রতিভাশালিতা,
উদ্যোগশীলতা ও কার্যদক্ষতার সবিশেষ
পরিচয় পাওয়া বাইতেছে । সে এই—
প্রথম । রাজ্যের সমস্ত ভূমির বখাৰ পরি-
দান ।
দ্বিতীয় । কোন ক্ষেত্রে কত শস্য উৎপাদ
হয় ও সেই শস্যের কত অংশ রাজাকে দেও-
রা উচিত, তাহার নিয়ম ।
তৃতীয় । রাজার প্রাপ্য শস্যের মূল্য নি-
য়ম ।
চতুর্থ । প্রাণী ও নৈমিকদিগের বেতন
মানের রীতি খট্ট বেসমস্ত দোষ ছিল, আ-
কবর তাহারও সংশোধন বিষয়ে উদ্যমী ছি-
লেন না । তিনি যে যে কার্যের অনুষ্ঠান করি-
তেন, তাহার ক্ষমতায়ই তাঁহার দায়িত্বের
সবিশেষ পরিচয় হইত, কিন্তু একটা বিষয়ের
বিষয়ে এই যে কোন কোন অপরাধে তাঁহার
অধিকার কালে হস্তগত হইতেন তাহা
বিধি উল্লিখিত হয় নাই ।
আকবর এইরূপ নানাবিধ কার্যে মনোযোগী
হইয়া আর ৫০ বৎসর কাল রাজ্য ভোগ করি-
য়া মানবজাতি সশ্রম করেন । তাঁহার ৩৭
বৎসরের বিষয় পর্যালোচনা করিলে স্পষ্ট প্র-
তীয়মান হইবে যে তাঁহার সমস্ত কৃপা শুধু
শুধু সচরাচর জন গ্রহণ করেন না । তিনি
বিলম্ব সুখী ও বলবান ছিলেন । তাঁহার অ-
নুষ্ঠানও নানাবিধ সহজত্রে সুবিধিত ছিল ।
তিনি ইঞ্জিনিয়ার ছিলেন না । অতিশয় প-
রিশ্রমী ছিলেন । তিনি তিন বর্ষ রাজ্য নিহা-
য়াই পদত্যাগ হইতেন । তিনি কখন কখন
পদত্যাগ ১৫ । ২০ ক্রোশ পথ একদিনের মধ্যে
চলিতেন অথবা ১০ ক্রোশ পথ দুই দি-
ন বসে গমন করিয়াছিলেন । তিনি অতিশয়
দাড়া ছিলেন ।
শেষ কথা এই যে হইবে ।

মুতন পুস্তক ও পত্রিকা ।

আমরা কতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার করি
তেছি, নিম্ন লিখিত দুইখানি পুস্তক ও এক
খানি পত্রিকা আমাদের চক্ষুগত হইয়াছে ।
১ । সাধুতাবা সুবোধ ব্যাকরণ । জীবন্ত
বাংলা বিকৃচরণ নন্দী ইহার প্রণয়নকর্তা ।
গ্রন্থকার পরিচয় পূর্বক অনেক বিষয় ইহাতে
সমাবেশিত করিয়াছেন । বাংলা ভাষার
যে সমস্ত ক্রিয়াগদ্যাদি ব্যবহৃত হইয়া থাকে,
তাঁহার রূপ ও লক্ষণাদি দৃষ্ট হইয়াছে । অ-
পর বাংলা ভাষা সংস্কৃত হইতে গ্রন্থগত হ-
ইয়াছে, ইহাতে অনেক অদিকৃত সংস্কৃত
শব্দ ব্যবহৃত হয় ; সংস্কৃত ব্যাকরণ না জা-
নিলে তাঁহার সাধন প্রক্রিয়া জানা যায় না,
এই বিবেচনা করিয়া সুবোধ ব্যাকরণকার
সুদৃঢ়বোধের অনেক প্রশংসা করিয়া দি-
রাছেন । এই ব্যাকরণের অনেক স্থান আমা-
দিগের মতে পরিবর্তনীয় ও পরিভাষা
যোগ্য হইল । গ্রন্থকার এক স্থানে লিখিয়াছেন
“ শুদ্ধ বর্তমান এবং সুত সামান্য বর্তমান
কালে আর কী বিভক্তি হয় । বলা, তিনি খা-
ইতেছেন, আমি লিখিতেছি, তুমি দেখিতেছ,
আমি এইমাত্র আসিতেছি । ” এই রূপ ক-
য়েকটি ভুল ও উদাহরণ আছে । বাংলা ব্যা-
করণে এ কেন ?
২ । পদার্থ তত্ত্ব । ইহা ইংরাজী অস্ত্র-
বাদ । জিলা হুগলির “সংস্পৃশ্যতা বংশবান্ধী
নিবান্ধী জীবন্ত বাবু দ্বারকানাথ দাস অনুবাদ
কর্তা । ইহাতে অনেকগুলি উপকারী বিষয়
সন্নিবেশিত হইয়াছে । রচনা নিতান্ত নির্দোষ
না হইক, নীরস ও কলঙ্ক হয় নাই । আমরা
কয়েকটি বিষয় অতিশয় পূর্বক পাঠ করি-
লাম, কোন কোন বিষয় অসম্পূর্ণ ও কোন
কোন বিষয় ইহাতে সন্নিবেশিত অযোগ্য
বলিয়া বোধ হইল । প্রথমে “পদার্থ ১” এই
শিরোনাম দিয়া একটি প্রস্তাব লিখিত হই-
য়াছে, তাহা আরো কিছু বিস্তারিত করিয়া
লেখা আবশ্যক ছিল । বৌদ্ধধর্মের বলিয়া যে
প্রস্তাবটি লিখিত হইয়াছে, তাহাতে পদার্থ
কীকিছু কথা অর্থ ও অন্য কথা বাংলা ভাষায়
উদাহৃত হইয়াছে তাহাও পূর্ণ ভাবে বি-
বরণের দ্বারা প্রকাশিত হইবে ।

পদার্থ তত্ত্ব প্রদর্শন উপযোগী বলিয়া বোধ হইতেছে না।

৩। ১২১০ সালের হুতন পত্রিকা। ইহা সেশার্স কোম্পানির যন্ত্রে প্রস্তুতকরণে মুদ্রিত হইয়াছে। বালী নিবাসী ঐশ্বর্য ঐচ্ছক বিদ্যানিধি এই পত্রিকা প্রণয়ন করিয়াছেন। জামরা জানি জ্যোতিষশাস্ত্রে ঐচ্ছক বিলম্ব ব্যাপ্তি আছে।

বিবিধ সংবাদ।

৮ই পৌষ সোমবার।

অব্যোখ্যার ভারতবর্ষীয় সভা বারু কলিকাতার সুখোপাধ্যায়কে এক মেডাল পুরস্কার দিয়াছেন। সভাপতি রাজা দিগ্বিজয় সিংহ একান্তরূপে স্বীকার করিয়াছেন, উক্ত বারু অব্যোখ্যার দ্বারা অবাধি তাম্বুলকারেরা টংরাজ শাসনপ্রণালীর বিষয় অবগত হইয়াছেন। ভারতবর্ষের সমাজ সংস্কার ও বাস্তবীকরণ ঘটতে উৎসাহ বৃদ্ধি হইতেছে ইবে সন্দেহ নাই। কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই, বঙ্গদেশীয়েরা নিজ নিজ জমি স্থানে উন্নীত কাম্যকরতা প্রদর্শনে সম্যক সতর্ক হইতেছেন না।

বোম্বাইয়ের প্রধানতম বিচারালয় এক জন পারসী গ্রাণ্ড জুরীকে ইংরাজী ভাষা জানেন না বলিয়া বহিষ্কৃত করিয়াছেন। এক জন ব্যক্তিও বলেন উক্ত পারসী ইংরাজী জানেন এবং অনেক স্থলে এই ভাষায় বক্তৃতা করিয়াছেন, উক্ত পারসী ব্যক্তি বাস্তবিকই ইংরাজী না জানেন এমন হয় না জানিয়া তাহাকে জুরী করা হইল কেন? আবার অপমান করা হইল কেন?

আমরা দেখিতেছি সরু বর্ডার ওয়েলস, আকিস, ৩ হুতন সিভিলিয়ানেরা অকারণ বর্ণগ্রস্ত হইয়া আপনারা কষ্ট পান ও অন্যের অসুখ করেন বলিয়া ঐ রীতির যে প্রতিবাদ করিয়াছিলেন, তাহার ফল হইতেছে মকদ্দমা হইতে বসেন, প্রধান সেনাপতি অধ্যক্ষী সেনাপতির আকিসসিগকে জানাইয়াছেন, বিধি আওতায় আভিযুক্ত ব্যত করিবে, তাহা হইলে সেনাপতি আর থাকিতে দেওয়া হইবে না। পর দিওরাজ্য স্বাধীন আভি-

সরের কলম এক হিসাব চাহিয়াছেন, তখনো মহাজনসিগের বাকর থাকিবে। অনেককে বিপদে পতিত হইতে হইবে সন্দেহ নাই।

অন্য কানী পর্যন্ত রেইলওয়ে খুলিয়াছে। কলিকাতা অবধি করিয়াছেন মাস্ত্রাভের বনিক সম্প্রদায় বহু দিনের উপলক্ষে আগন্তু বাণিজ্য কাণ্ড সা তদিন সফল রাখিবেন। কলিকাতার কোরাণীরাও চারিদিন পাইতেছেন।

বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভা কলিকাতার মিউনিসিপাল বিল রহিত করিয়া হুতন আর এক বিল করিতেছেন। কলিকাতা বলেন তাহা রা এক জন বেয়র (পূর্বতম সহর কোতোরা-লেন ন্যায়) সহকারী বেয়র ও প্রতি বিভাগে এক এক জন বৈজ্ঞানিক কমিশনার হইবার প্রস্তাব করিয়াছেন। কলিকাতার ভাগ্যে এত হওয়া সম্ভব। সভা নৌকা রেজিষ্টার করিবার বিলও জ্ঞাপন করিয়াছেন।

লাহোর ক্রমিকেল অবধি করিয়াছেন, ভারতবর্ষীয় রেইলওয়ে কোম্পানি দিল্লী দিয়া না করিয়া মিরাট দিয়া রেইলওয়ে করিবার সঙ্কল্প করিতেছেন। বোম্বাই এ জনরব বিখ্যাত, যখন আলীগড় পর্যন্ত রেইল বসিয়াছে তখন তাহা তুলিয়া পুনর্বার মিরাটে লইবার কারণ কি?

আলাহাবাদ গেজেট বিখ্যাত দস্যু রাম নামাজ সিংহের সাহসিকতার দুটি উদাহরণ দিয়াছেন। সম্প্রতি পুলিশের ইনস্পেক্টর রামনাথের এক জন সহচরকে ধৃত করেন। তাহাকে এক জন পুলিশ সেনার অধীনে গাঁজিপুরে প্রেরণ করা হয়। রামনাথ এইমত বার পাইয়া সহচরকে মুক্ত করিবার জন্য এক লক্ষী উপত্যকার তাহাতিগকে আক্রমণ করিয়া আপন অতীর্ষ সিদ্ধ করিয়াছেন। এক দিবস এই দস্যু কলিকাতার বেশে এক গাধে বসিয়াছিল, এমন সময়ে একজন পথিক একটা চাঁটু চড়িয়া বাইতে বাইতে তাহাকে সেন্দেব করিলেন। হুজুরী ককির তাহাকে অথ হইতে অবতরণ পূর্বক সেন্দেব করিতে বসিল। পথিক তাহা কড়াতে রামনাথের জিজ্ঞাসা করিল, জোয়ার কোথায় কি? পথিক বলিলেন টাকা + রামনাথের কামা চড়িয়াতে ডিল্লি বলিলেন ককিরের অর্ধের প্রয়োজন

কি? তখন হুজুরী ককির আপনায় গরিষ্ঠ মিল। পথিক বিস্ময়াবিষ্ট হইয়া ফেলিয়া আন লইয়া পলায়ন করিল। পশ্চিমাকলে আজিও অনেক রক্তিমই রবরায় বেনে।

উক্ত পত্র বলেন, সম্প্রতি কামপুরের কটে রক্তা টেপনে এক জন চতুর্বিধ লম্বী শকটে বৃত্ত হইয়াছে। রাজিঃ সকলে চরবি দিতেছিল, বাণী ব্যক্তি সকলে গলাইয়া গেল, এক ব্যক্তি হুত সে গলাইল না, ইতিমধ্যে গাফী রক্ত সে চাপা পড়িয়া আপত্ত্যাপ করিয়া মিচীগেজেটের লক্ষ্যবিত্ত সংবাদ বলেন যে দুই দুই আকিসের কইল একটি প্রীলোকের উপর পতন হইল করে, তাহাতিগের রেজিষ্টার লক্ষ্যে।

তানাতরিত হইয়াছে, কিন্তু তাহার কলম আছে। অব্যোখ্যার কলিমের গবর্ণমেন্টে জিজ্ঞাসা করিয়াছেন মকদ্দমে অবাধ প্রাথমিক বিচারালয়ে কোথায়? ইহাতিগের দিও হইবে সাময়িক বিচারালয় তাহাতিগের উপরুক্ত বিচার দান।

হিন্দুপেট্রিট বলেন, ইতের সাতের কলম সাহেবের পরিবর্তে বঙ্গদেশীয় ব্যবস্থাপক সভায় প্রবেশ করিবেন।

উক্ত পত্র আরও বলেন বেঙ্গল কলিমের বাসিন্দা বিদ্যালয়ের বাসিন্দার সংখ্যা কলিকাতা হইবে এবং গবর্ণমেন্ট উক্ত বিদ্যালয় ইষ্টাইলেন বলিয়া যে জনরব হইয়াছিল তাহা সম্পূর্ণ বিখ্যাত। গতবর্ষে ১৯ টি বাসিন্দা ছিল, এবার ১৫

১৫। একজন বলেন একজন বেন্ধ্যা একটি পলীগ্রামে বিদ্যালয়ের সহায়তার জন্য ৩০০ টাকা প্রদান করিয়াছে অথচ তত্ত্বা কলীগ্রাম এক পারস্যে বেন নাই। ইহার কলিমের আশা আপনাই প্রকাশিত হইতেছে।

১৬। একজন এক জন সংবাদ দাতা কলিম, বঙ্গদেশের অন্তঃপাতী করেকী প্রদেশে জামক আর হইতেছে। একটা প্রাচীর প্রাচীর একজন লোক কয়েক দিবসের মধ্যে প্রাচীর করিয়াছে। গবর্ণমেন্টে কমিশনও বসাই।

না, ঐযৎও মিলেন না। ভারতবর্ষীয়
কি নিরাবাইতেছেন? তাঁহারা যদ্যেদীর্ঘ
র অন্তর্য্যগ ভাষন হইবার আর কি সু-
গ পাইবেন?

১৫ই পৌষ বঙ্গাব্দ।

পূনা অবজ্ঞার বসন, বোম্বাইয়ের রে-
ফট হইতে সর্বদা প্রযোজ্য হুগি বার
হুগি রেইলওয়ে কোম্পানি গবর্ণ-
মেন্ট ত্যাগ করিয়া আপনারা পুলিশ
নয়ুত করিছেন। এমি গবর্ণমেন্টের
র সন্দেহ নাই। কোন্ দিম আসামের
গকে লাঠি ধরিয়া খসিয়াদিগকে দুর্নী-
রিতে বাইতে হয়।

গপুরে = মধ্যভারতবর্ষীয় টাইমস্
একখানি সপ্তাহিক ইংরাজী সংবাদ
পত্র হইতে আরও হইয়াছে। প্রকাশ-
না ভারতবর্ষের উন্নতি হুগিগোচর হই-
তেছে।

অব্যবস্থাপ্রভেদে বসেন, আসগর
জলী, নামক একজন সুতপ্ত বিদ্যোদী লোক
গেরে ধৃত হইয়াছে। এই ব্যক্তির তিন
জন সহচরের সহিত লিটল নামক একজন
ইউরোপীয় কেরাণীর পরিচারককে বধ করি-
ছিল।

এত দিনের পর কলিকাতার লক্ষ্য
কোম্পানির শেষ হইল। টালা সাহেবের স-
বরে ইহা যাবতীয় নীলামকারী কোম্পানি
অপেক্ষা প্রধান ছিল। অধ্যক্ষ ও কর্মচারি-
দিগের দোষে কয়েক বৎসরব্যধি ইহা লক্ষ্য
কমিয়া আসিতেছিল। গত কল্যাণ যাবত
কেরাণী ও সরকারকে হাতিয়া দেওয়া হই-
য়াছে। প্রাক্তন মাত্র হিসাব পরিচার দরি-
বাহু নিষিদ্ধ আছেন। কোম্পানির মোড়-
গোড় বিক্রয় তাহারিগের খণ নাই। শুনা
বাইতেছে বাহু মোবিলিটার সেন, হীরালাল
নীল ও জালালজাদি প্রমাদ পুনর্বার ই কার্য
আরম্ভ করিবেন। আসরা এবিষয়ে তাঁহা-
গেরে অনুমোদন করি না, তাঁহারা এ চেড়া
ত্যাগ করিয়া একটি বঙ্গ প্রভুতকারী কোম্পা-
নি করুন। তাহা হইলেই সমস্ত এদেশের
সমস্ত উন্নতি হইবে।

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট অপ্রত্যাশিত মানস

বাঙ্গালী জাহাজের নবোদ্যোগ ১২০০৪
প্রদান করিয়াছেন। গবর্ণমেন্টের এতকণ
কার্য্যই অনেক। আস আস জাহাজ বিক্রয়
করিয়া গবর্ণমেন্টের একপে পাচা জাহাজে তালি
দিয়া ইচ্ছা টাকা নষ্ট করিতেছেন।

গেজেটে কয়েকখানি পত্র প্রকাশিত হই-
য়াছে। চট্টগ্রামের সিভিল আর্টিষ্টের সত্যজন
ডাক্তার বিটমস ও নিমকের সহকারী সুপারি-
টেণ্ডেন্ট ক্রম সাহেব তত্ত্ব্য প্রতিনিধি কনি
সনকে নিষিদ্ধাছেন, চট্টগ্রাম প্রদেশে উত্তম
কাকি ও চা ইন্ডিতে পারে। তপায় কয়েক
খানি চার কেজ হইয়াছে। এক কেজের চা
এমন উত্তম যে লণ্ডনের একজন বিখ্যাত ব-
নিক বলেন, তাহা ভারতবর্ষীয় যাবতীয় চার
অপেক্ষা উত্তম। পর্কতের মধ্যে অনেক স্থানে
চা আপনি কমিয়া থাকে। ডাক্তার বিটমস
আরও বলেন, তথায় অন্য আরাকট নামে
এক প্রকার মূল আছে, তাহার উত্তম কাপ-
কের মাক হইতে পারে।

কিনিক বলেন লেপ্টেনেন্ট গবর্ণর বোডের
অনুমোদন না পুনিয়া ইষ্টাশন আফিসের খা
তাকির বেতন ২৩০ হইতে ৩০০ টাকা করি-
য়াছেন। বীডন সাহেব বলেন, এখন খাতা-
কে অধিকতর টাকা ভাণীন দিতে ও গুরুতর
কার্য্যের দায়ী হইতে হইতেছে, তখন তাঁহার
বেতন হুগি না করা অন্যায়। বর্ষ বিচার!

উক্ত পত্র আরও বলেন, ভারতবর্ষীয়
গবর্ণমেন্ট আজা দিয়াছেন গবর্ণমেন্টের বত
হাতি খাদ্য আছে তাহা উত্তীয়া বাইবে।
গবর্ণমেন্ট বাজার হইতে হাতি ক্রয় করিবেন।
বত মেদী হাতি আছে সে সমুদায় বিক্রয়
করা হইবে। হাতি খাদ্য বত ম্যু হয়, তম
সুখপ লাভ হয় না। আসরা আসি চট্টগ্রামের
খাদ্য গবর্ণমেন্টকে কতিপয় করিতে হয়,
অন্য চট্টগ্রাম ও ইহাতে প্রধান হাতি খাদ্য
আছে। একচেজিয়া সত্যজ্ঞান সন্তুর্ন বিদ্যোদী।

অন্যকার টেলিগ্রাফ লংঘন আনিয়াছে,
ইটালির মন্ত্রিবর্গ কর্ম স্থাপন করিয়াছেন।
কলতা রাটেজি প্রধান বড়ী হওয়া অবধি
ইটালীয় গবর্ণমেন্টে কমান্ডের কককতি দি-
তিতার কার্য্য করিয়াছেন। কেবল রাষ্ট্র
দোষে বিদ্যোদ হইয়াছে। এই বিদ্যোদ

বিদ্যোদ বিদ্যোদ হইয়াছেন। কেবল যেমন
ছিলেন তাঁহার তুল্য লোক একপে ইউরোপে
নাই। সম্রাট নেপোলিয়ন নিজে বলিয়াছেন
= ইউরোপের মধ্যে বত লোক আছে তাহা-
র মধ্যে আমি কেবলকে তর করি = কেবলের
হুগির পর আরন্টিকেসাল ইটালির সম্মান
অব্যাহত রাখিয়াছিলেন, ক্রাণী বতবলে
তাঁহাকে পদ ত্যাগ করিতে হয়। কিন্তু এখন
সমুদায় ইটালির লোক ও রাজা একদিগে
হইয়াছেন, তখন রাটেজি আর শাসন করিতে
পারেন না।

আর একটি মুখের সম্মান এই গারিবাল-
ডির কত স্থান হইতে এক জন ক্রাণী চিকিৎ-
সক একটি গুলি বাতির করিয়াছেন। সেনাপ-
তি শীত শীত হইতেছেন। ওয়েলিংটন
বলিয়াছিলেন, এক নেপোলিয়ন চলিশ লক্ষ
উত্তম সেনার তুল্য, সেই প্রকার এক গারি-
বালডি অষ্ট্রীয় গবর্ণমেন্টের তর ও ইটালি
সাহসের কারণ হইয়াছেন।

১৫ই পৌষ বুধবার।

মাজার গবর্ণমেন্ট গ্রিবাৎসের রাজ্যে
প্রতিশ্রুত সম্মানের সহকারে গ্রহণ করিয়াছেন।
হিন্দু, মুসলমান ও ইউরোপীয় সকল জাতি
একত্র হইয়া তুল্যরূপে রাজার ঘণ্টাচিত লক্ষ্য
ননা করেন। শাসন কর্তা সর উইলিয়ম ডেভি-
সন আর মাজারের প্রধান প্রধান লোকদি-
গকে রাজার পরিচিত করিয়া দিয়াছেন।
জাতিদের যেমন কলিকাতার প্রবল, এমন
কোথাও নহে।

আগামি শুক্রবার ইতেন বাগানে একটি
ব্যোমধান উঠিবে। ডিন নামে এক ব্যক্তি তা-
হাতে আরোহণ করিবেন আরও শু-
নিলাব, বেঘুনের অধ্যক্ষ জনর্ডনের ক্রী এখন
উঠিবেন।

অন্যকার গেজেটে ঘৃষ্ট হইল, বাহু কে-
বল চট্টগ্রামের পুনর্বার বঙ্গদেশীয়, সহ-
কারী সিভিল পে মার্ভের, কয়েক আর গ্রহণ
করিয়াছেন। কলদে, উত্তর পাটনা ও পক-
কের সিভিল পে মার্ভের পদ পূন্য হইলেই
তিনি ই পদ পূরুইবেন।

মাজারের মধ্য গারি পাল্কীর বিলো-
ক সমুদায় করিয়া কোন্ কোন্ আদেশ

স্বাধীন করিয়াছেন। তাহার বিচারিকপন্থা
কমিসনরদের দ্বারা হইতে যেহেতু
তারাইকার আত্মীয় করিয়াছেন। যদি বি-
য়ের বিষয়ে সত্যকর আসত। তারতরুর স-
ত্যকর তবে দুই আশি কালি নিরা তক হইরা-
হে, বোধ হয় এখনও যুগের যৌর আছে। ন-
তুবা গাতি গাতি করি তাহা নির্ণয় বিষয়ে বত
কিলেন কেন?

হোমসিউসে লার্ড রসেলের একখানি
পত্র প্রকাশিত হইয়াছে। তাহাতে বৃত্ত হইল
করাণী সরাট এই প্রস্তাব করিয়াছিলেন, "।
পাতক: মধ্যস্থ হইয়া হয় মাস কালের
আমেরিকার যুদ্ধ বন্ধ করিবার চেষ্টা কর।
লার্ড রসেল উত্তরে বলিয়াছেন, "।
উত্তর বিভাগের বলকর ও অন্তরাগের ২।
হয় নাট, এখন মধ্যস্থ মানিবার প্রস্তাবে ফল
দর্শনে না। আরও কিছু দিন বিলম্ব করিয়া
প্রস্তাব করা কর্তব্য। করাণী গবর্নমেন্ট টেট
আহাৎ বটত বিধানে ইংলণ্ডের বে সহায়তা
করেন, তদ্বিস্ত ইংলণ্ডের গবর্নমেন্টের নি-
কটে খন্যবাদ পাইয়াছেন। কখনো গবর্নমেন্ট
বলিয়াছেন ইংলণ্ড ও ক্যান মধ্যস্থ হইলে তা-
হার সহকারী হইতে পারে, কিন্তু সে সময়
আইসে নাই। আমেরিকাবাসিরা দেখুন
ইংলণ্ডের গবর্নমেন্টে কখনো কখনো ইয়া কার্য
করেন না। যাহা হউক, করাণী সরাট এই
সাহিত্যবিদ্যাকৃত্যাদি পামরদের নিবর্তন
পরাজিত হইয়াছেন।

কলার ত্রিভুজ যুগের নিম্নে বাবিরারি
টেসনে মালের গাতি আশিরা সিগাছে। বি-
শেষ ব্রহ্মা প্রকাশিত হয় নাই। এক জন
কিট গাতি রাত্রি সাতক আত্মার সময় না
আসিয়া সাতক তিনটার সময় আসিয়াছে।
এই নকট দ্বারা অতঃপূর্বে আনা হইয়া-
ছে। একপে তারতববীয় কোম্পানির রেইল
ওয়েতে এসকল দুর্ভটনা এত ঘটতেছে
কেন?

১১ই পৌষ সম্প্রতিবার।

দিল্লীগেজেট বলেন, লেপ্টেনেন্ট জাকসন
র বিচার আদালত হইয়াছে। কোবল মানব
একজন বোম্বাইয়ের বারিষ্টার উত্তম পক্ষ
সমর্থন করিতেছেন। দুই জন বিবিজি সাকী
বলিয়াছেন তাহার। দানসামার প্রধা দর্শন
করিয়া জেপুটি কমিসনরকে সংযাম দেন।
কিরদিসের জন্য বিচার বন্ধ রাখিয়াছে।

এক জন ইউরোপীয় করাটিতে সুরা
চুরি করিয়া কিছু টাকা। পলায়ন করিয়া
রাজপুতনার গল্প করে। তথায় সে আপ-
নাকে লগুনকিত। ইনটেট্টে লগুন নিউ-
সের এক জন সংবাদদাতা ও চিত্রকর ব-
লিয়া পরিচয় দেয়। ওদিকের অনেক ইউ-

রোপীয় কর্মসোকে তাহাকে সম্মান করেন,
এবং কোর্সে কোর্সে কিছু টাকাও দিরাছেন।
পরে হঠাৎ করাটি হইতে তাহাকে বন্দী করি
বাঁটা পরওয়ারি আসিয়াছে। সে আউয়ার পে
পর সম্পাদককে এই বলিয়া পত্র লিখিয়াছে
এবং হালক। পরেই করিয়া বতরুর পারেন
সহায়তা করিবেন। আমি বাহাতে নির্দোষী
হই এ চেই। আপনাকে করিতে হইবে। ১০০০
বাহাতে আবার বোম্বাইয়ের প্রধানতর বি-
চারালয়ে বিচার কর আমি সে চেই। করিব,
কায় আমি নিশ্চয় আমি তত্ত্ব্য জুরি আ-
না। দেবী বসি। ১১ই পৌষ সরা
টার পত্র। ১। দোণী ইউরোপীয়দি-
গের সহায়তা করেন এবং জুরিও তাহা
দিগকে বৃত্ত করিয়া দিয়ার চেই। করেন, ইহা
কেবল যে ইউরোপীয়দিগের প্রাপকিতা
প্রবর্তি হইবার কারণ একজন নহে, এতদুলক
এদেশীয়দিগেরও এই সংকার জুরিয়াছে যে
রাজপুতরো পক্ষপাত নিবন্ধন ইউরোপী
য়দিগের দণ্ড বিধান করেন না।

মধ্যলটিট বলেন, অযোধ্যার কমিশনার
উইলকিন্স সাহেবের উত্তরপশ্চিমাঞ্চলের
শাসন কর্তৃত্ব পর পাইবার সম্পূর্ণ সন্ধান।

অবে ধ্যা গেজেট বলেন অসগার আলি
নামক বিদ্রোহী ও হত্যাকারী এত দিন বে।
সাহ মফুলের বাটীর দেওয়ান ছিল। এজন্য
বেগা "ককিরং ১১৩২ হইয়াছে। তিনি
এত প্রকার পোককে কি অন্য আপন
বাঁটেতে রাখিয়াছিলেন। সদর মরোগাকেও
এনিমিত্ত বরণ। ত্যাগ করিতে হইবে।

মধ্যস্থ টাইলস বলেন "একজন টি-
লিয়ানসন সমালর ২। এন সাধন-
পথালরে নকাসনারোই হইবে। ১৭।
মান করা হইয়াছে তাহাতে ইংলণ্ডের
লাও এলগিন, সব উইলিয়ম ডেনিসন, ত্রিবা
কুরের রাজা, কণাটের নবাব ও সব চারলস
টু বিলিয়ানের নাম লেখা ও তাহাদিগের প্র-
শংসা করা হইয়াছে। সব চারলস টু বিলি-
য়ান মাজা হইল। ও এতদেশীয় সর্কসাধ-
বণের মধ্যস্থ পাত্র।

ফিনকল বলেন গত মঙ্গলবার নিমন্তলার
কজন মনী ব্যক্তির বাটীর সম্মুখস্থ মরুমায়
একটি খাল পাওয়া যায়। তাহা খোলাতে এক
ঘা পুত্রের মৃত দেহ বাহির হইয়াছে। সে
কে, ও কোন্ ব্যক্তি তাহাকে বধ করিয়াছে
তাহার অনুসন্ধান হয় নাট। পুলিশ কর্মচারী
গ্রিগ সাহেব হত্যাকারীকে ধৃত করিবার বি-
শেষ চেষ্টা করিতেছেন।

উক্ত পত্র ইংলণ্ডীয় একখানি কাগজ হ-
ইতে একটি কিসাব উদ্ধৃত করিয়া বলিয়াছেন।
এবং সর তত্ত্ব্য সংবাদ পত্রের নিমিত্ত অ

সেকারড অসপ ইয়াং করিক
টাইলস প্রকৃতি সকল প্রদেশের প্রকৃতি
হইয়াছে। পুর ও যৌর বিলাস।
সং. ম. পত্রের প্রাথমিক জরিপ হয়। তার
কণ নাই বলিয়া প্রাক অসপ হইতে
যথার্থ, চিকিৎসক উত্তম ও মধ্যস্থ
সম্পাদক প্রকৃতি সকল ব্যবহারি হই।
কটা মরুময়ের সময় আছে। একজন
কার যুগ ও গ্রীষ্মের মরুময় হই।
তবে প্রাক কলিল কেন?

১২ই পৌষ শুক্রবার।

গত রাত্রিতে কম্বোলায় বাবু কেজু
হন মলিক আপনার হাথ হইতে এক মকাম
র পড়িয়া মৃতপ্রায় হইয়াছেন। চিকিৎসক
রা কহিতেছেন তাহার জীকর সংসার।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন, মাদ্রাস
র ২০০০ মৃতদেহ সৈন্য প্রেরিত হইবে।

উক্ত পত্র আরও বলেন, তথায় একজন
ইউরোপীয় টেনিসের কণী হইয়া গিয়াছে।

উক্ত পত্র আরও আনা গেল মধ্যস্থ
তথায় একটি সেতু ভগ্ন হইয়া। ব্যক্তি কণ ও
কয়েক জন মরুময় হইতে আহত হইয়াছে।

চাকা নিউ- বলেন সম্প্রতি চিরাগুজি
কয়েক জন সকার মেজর হইয়ের সহিত সা-
কাং করিয়া মধ্য প্রদেশ পরিভ্রমণ করিবার
কথা বলিয়াছেন। বত পীক এ দুই দুর্ভট
শেষ হয়, ততই জাল।

১৩ই পৌষ শনিবার।

গত শুক্রবার অপরায় পাট খটকার
মরে ইডেন বাগানে বিলাপিত মরুরে জিলা কা-
বেব তাহার পুত্র ও মাদ্রাস বেরিয়ার বোম
বানে আকাশমার্গে উভত হইয়াছিলেন
মধ্যস্থ ক্রমঃ পূর্ণ মজিলা ভাগে পত্র
১ চৌরকির ত্রিকট মধ্যস্থ পত্র
হইয়াছে।

দিল্লীগেজেট বলেন, মরুময়
কালে গবর্নমেন্টে কতিপয় হইয়াছেন।
১৩০০ মণ বীজ বিক্রয়ের চেষ্টা হয়, কিন্তু কে-
বল ৪০০ মণ বিক্রয় হইয়াছে। কানীয়ে
মজারাজ উহা জব্দ করিয়াছেন। ১৩ মণের
মূল্য ১০৪ ১/২।

উক্ত স গাঢ়ক আবেদ বকে ট লকে-
বরীর দুইজন আকিসর জালির
গিয়াছিলেন। সিদ্ধিরার লোকে তাহাদিক
কে বন্দী করিয়াছেন। তাহার। -
কিতরে কাহারও বাটীর অসমতি নাই।
এতদুলক বেং ১। একটি তুলাও উপা-
ত হইতে পারে।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন মাদ্রাস
ও মাইলস সের ও কুইলান নামে
বলি মরুময় পানী মারিতে গিয়াছিল।

১৯৪৭ খ্রিঃ ১০/১১/৪৭

তদ্বিধি বি, জি, টেলিগ্রাফ সার্কেল বর্তমান
জাইন্ট ম্যাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কমিশনার হইবেন,
কিন্তু কলিকাতা জেলা-সেশন আফিস না হয়, বাঙ্গা
লার প্রতিনিধি ম্যাজিষ্ট্রেট ও কমিশনার হই-
কিবেন ।

যতদিন বেঙ্গল-বোর্ড ডেপুটি ম্যাজিষ্ট্রেট ও ডে-
পুটি কমিশনার মৌলবী আমান আলী সাহেব নিম্ন
কর্তৃত্বের অধীনস্থ থাকিবেন, ততদিন
অধীনা যতদিন অন্য কোন আফিস না হয়, মৌল
বী প্রতিনিধি ম্যাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কমিশনার
ও ১৮৬৩ অব্দে ৯ আইন অনুসারে তথ্য প্রা-
তিমুখি ডেপুটি ম্যাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কমিশনার
থাকিবেন এবং কোর্টের আইনের ২২ ধারায়
সঙ্গে প্রথম প্রণীত অধীন ম্যাজিষ্ট্রেটের ক্ষমতা
পাইবেন ।

১লা ডিসেম্বর—ই কোর্টের সাহেব বঙ্গদে
শের পুলিশের এক জন প্রথম প্রণীত সহকারী
ডায়েরীক হইবেন ।

২৫এ নবেম্বর—বায়ু সপ্তদশাধ পক্ষ ৮লা
এবং ডেপুটি ম্যাজিষ্ট্রেট হইবেন ।

১৫ ডিসেম্বর—নিম্ন লিখিত কর্মচারীরা
একজন বেঙ্গল-মেন্টে (বাবাহ) দুইবার গমন ক-
র । ১. ২. ৩. কর্ম করিবেন—

কামের ডে ই এল উইলসন ।

কোম্পাউন্ড মাইলস সাহেব ।

ডবলিউ জি মেটলিও ।

ই মল্লিক ।

১২এ ডিসেম্বর—জি, বি, বার্টেট সাহেব
কিন্তু দ্বিতীয় জন ২৪ পরগণার জাইন্ট ম্যাজি-
ষ্ট্রেট ও ডেপুটি কমিশনার থাকিবেন ।

২৫এ ডেপুটি ম্যাজিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কা-
মিশনার ই, এক, প্রাক্টিক্যাল লিঙ্গন মনসিংহকে
বঙ্গদে হইয়া তথ্য ম্যাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষম-
তা পাইবেন ।

২৫এ ডি, জি, ডাক্টর আপন বঙ্গদে
শের ডেপুটি কমিশনার হইয়া ১৯ পরগণার
ডেপুটি ম্যাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষমতা পাইবেন ।

প্রেরিত

ঐচ্ছিক সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহানন্দ সমীপেয় ।

১৯ পরগণার সত্বে বারের প্রেরিত পত্র
খান আপেক্ষাকৃত সাধারণতঃ সহিত সুচিত
ন হইয়াছে অত্যাধিক সুখ হইয়াছে । একটি
মানে আমার অর্থ একবারে পরিবর্তন হইয়া
গিয়াছে । ১৭ আগস্টের সোমপ্রকাশে ৩৬
২০৭ ৪১, ৪২ এবং ৪৩ পৃষ্ঠায় লিখিত হই-
য়াছে, “ প্রাক্টিক্যাল লিঙ্গন মনসিংহকে
বঙ্গদে হইয়া তথ্য ম্যাজিষ্ট্রেটের সম্পূর্ণ ক্ষম-
তা পাইবেন । ” এতদ্বারা উক্ত লিঙ্গন মনসিংহ
প্রাক্টিক্যাল লিঙ্গন মনসিংহকে পাইবেন ।
এই যে লিঙ্গন মনসিংহকে পাইবেন ।

(১) ইংল্যান্ডের অর্থমন্ত্রী মিস্টার হাট্টিংসন, তাঁ-
নিগের অর্থমন্ত্রী হইয়াছেন ।

ইংল্যান্ডের অর্থমন্ত্রী মিস্টার হাট্টিংসন, তাঁ-
নিগের অর্থমন্ত্রী হইয়াছেন ।

“ প্রেরিত ” প্রেরণ সাধারণতঃ বেগুণ হইয়া
প্রার্থনা প্রেরণ নহে । সাধারণ উপাসনার একটি
অঙ্গ মাত্র । ইহার অর্থ ন্যূনতঃ । আপন বলি-
সাহেব “ ইহার আশা মঙ্গল ভাবে প্রেরণ কর
একটি প্রার্থনা (আধ্যাতিক হইল) ” দ্বারা
নীলকর মনসিংহ পি পি ব্যক্তির আশ্রয় করাই
ইচ্ছা হইবে না ” । কিন্তু প্রেরণ প্রার্থনা বহি-
রাগত হইতে পারে যে প্রকাশ পাইতেছে যে
তাহার নিজ কুর্কর্মের প্রতিফল উপভোগ হইতে
ছে ও তাহার পিতৃভাগ্যের জন্য সে সন্তোষিত
হইয়াছে । পাণ্ডের প্রতিফল উপভোগ না হইলে
পাপ হইতে মুক্তি পাইবার জন্য, আত্মাকে ম-
ঙ্গলভাবে সম্পন্ন করিবার জন্য প্রার্থনা আবার
আধ্যাতিক কি প্রকারে হইবে ? যাহা বহন কোন
মন্তব্যের কোন একটি পাণ্ডের প্রতিফল উপ-
ভোগ হইয়াছে তখন ইহা বলা যায় না যে সে
ইহা হইতে মুক্তি পাইতে চেষ্টা করিতেছে ।
কিন্তু আবার সে পরীক্ষাতে দেখেছে যে
পাণ্ডের সহিত বহু দিবস পর্যন্ত মনঃসংক-
তে তাহার আশ্রয় বাল্য অনেক বার হই-
য়াছে । এবং যখন আপনাকে মুক্তি দেওয়া হয়
তখন তাহারই সেই আশ্রয় মনঃসংকতে তাহার
বহন নিকটে প্রার্থনা বার । সে বহন আপনাকে
মুক্তি দেয় । ইহারই পরগণার ২৪ (প্রার্থনা
করা অর্থই পরগণার ২৪) সেই পরগণার
২৪এ প্রার্থনা একটি বহন আশ্রয় হইয়াছে
আশ্রয়টি হইয়াছে কোমল ও নরম এবং
চেষ্টা ও উৎসাহকে (৩) শতগুণ হইতে পারে ।

(২) আবার প্রার্থনা কলিকাতা, এখনও
কলিকাতা কলিকাতা হইয়াছে ও তৎপরিণাম
একটি আশ্রয় প্রদানসাধন, প্রার্থনা নহে ।
ভাল হইলে একটি কথা জিজ্ঞাসা করা যাইতে
ছে, “ যাহা করুন এক ব্যক্তি প্রার্থনা পত্র হইয়া
হইয়া কেবল ৩. ৪. ৫. ৬. ৭. ৮. ৯. ১০. ১১. ১২. ১৩. ১৪. ১৫. ১৬. ১৭. ১৮. ১৯. ২০. ২১. ২২. ২৩. ২৪. ২৫. ২৬. ২৭. ২৮. ২৯. ৩০. ৩১. ৩২. ৩৩. ৩৪. ৩৫. ৩৬. ৩৭. ৩৮. ৩৯. ৪০. ৪১. ৪২. ৪৩. ৪৪. ৪৫. ৪৬. ৪৭. ৪৮. ৪৯. ৫০. ৫১. ৫২. ৫৩. ৫৪. ৫৫. ৫৬. ৫৭. ৫৮. ৫৯. ৬০. ৬১. ৬২. ৬৩. ৬৪. ৬৫. ৬৬. ৬৭. ৬৮. ৬৯. ৭০. ৭১. ৭২. ৭৩. ৭৪. ৭৫. ৭৬. ৭৭. ৭৮. ৭৯. ৮০. ৮১. ৮২. ৮৩. ৮৪. ৮৫. ৮৬. ৮৭. ৮৮. ৮৯. ৯০. ৯১. ৯২. ৯৩. ৯৪. ৯৫. ৯৬. ৯৭. ৯৮. ৯৯. ১০০. ”

(৩) চৌধুরী ও দ্বিধাধারীরা আর প্রা-
র্থনা নিষিদ্ধ কর নহে ; প্রার্থনা হইলে পাপ
নহে, একবার কেহ কহে নাই, তদ্বারা বহি-
রাগত উৎসাহ হইয়াছে তাহা বলা যাইতে পারে,
তিন প্রার্থনা হইয়াছে আপন কি ? কিন্তু আবার

তখন আপনাকে ইচ্ছার হাতিয়ার
এক প্রকার আশ্রয় ও গভীর আশ্রয়
করিতে পারে । কিন্তু আশ্রয় বহি-
রাগত পরীক্ষার দ্বারা, তাহা বলা যাইতে পারে
নাকারীরা যে নীতি উপভোগ করিতে পারে
আবার বিধান হয় না ।
হইয়া কেবল প্রার্থনার
তাহার বহন আশ্রয়িক
তে বহন পাইতে পারে ।
ইহা, কলিকাতা হইবে । কলিকাতা হইবে
হাতিয়ার ইচ্ছার হাতিয়ার হইতে পারে
প্রার্থনা বাক্যের অর্থমন্ত্রী আশ্রয় হইতে পারে
উচিত হইলে তবে আর প্রার্থনা
কোমল হইয়া আর আপনাকে
বেঙ্গল ও ইচ্ছার হাতিয়ার প্রার্থনা
কলিকাতা হইবে আশ্রয়িক (৩) প্রার্থনা
ইচ্ছার নিকটে তাহা আরই হইবে
বহন অর্থমন্ত্রী, ইচ্ছার নিকটে
আর সমান । যেমন কোমল ইচ্ছার হাতিয়ার
মন আইনে সেই প্রার্থনা পাইতে পারে
হইলেই হইবে ও ইচ্ছার আশ্রয় হইতে পারে
টিত হইয়া প্রার্থনা বাক্য প্রার্থনা হইতে পারে
হইতে পারে । প্রার্থনার (আপনাকে)
হইতে পারে ; ততক্ষণে ততক্ষণে ইচ্ছার
সহিত প্রার্থনা প্রার্থনার অর্থমন্ত্রী
না এসকল হইতে পারে । প্রার্থনার
আপনাকে এবং বলিতেছেন যে
প্রার্থনা করা হইতে পারে । কোন প্রার্থনা
হাতিয়ার । কিন্তু ইচ্ছার হাতিয়ার
না, মনঃসংকতে এবং আশ্রয়
যেহেতু ততক্ষণে আপনাকে
পাকড়া করেন কি না ? প্রার্থনা, ইচ্ছার

পূর্বেও কলিকাতা, এখনও
উদ্দেশ্যে প্রার্থনা করা যায়, তাহা
কলিকাতা হইয়াছে বহন আশ্রয়
কি ইচ্ছার হাতিয়ার হইতে পারে ?
আশ্রয় তিন, কি আরের আশ্রয়
হাতিয়ার ? প্রার্থনার ও প্রার্থনার
তখন কলিকাতা হইতে পারে ।

(৪) প্রার্থনা ইচ্ছার হাতিয়ার ।
জানাজনক তাহা বলা যাইতে পারে ।
তখন উদ্দেশ্যে ইচ্ছার হাতিয়ার
হাতিয়ার হইতে পারে, আশ্রয়
মনঃসংকতে আশ্রয় হইতে পারে
কলিকাতা, ইচ্ছার হাতিয়ার
বার আশ্রয় আশ্রয় হইতে পারে ।
আশ্রয় হইতে পারে তাহা বলা যাইতে পারে
জানাজনক তাহা বলা যাইতে পারে
হাতিয়ার হইতে পারে ।

[illegible]

সেইটোম জনসম্মুখ হইলে পার্শ্ব বাতাস বহুকিমে
ক্রন্দন করিল, তখন সেই পরম বাতাস কি আ-
বাদের ক্রন্দন জনিত। আবার কুখ্য। শান্তিক-
রিবেন না? নিজ বলে পালকে অস্তিত্ব করিতে
জনসম্মুখ হইলে তাহাতে কি সহ্যরতা করিবেন
না? সেই পরম বাতাসকে সন্দেহের জন্য লাল-
ব্রিত হইলে তিনি কি সন্দেহ দিবেন না? একপ
বাতাস বাতাস। বলিতে ইচ্ছা। করেন, বলুন, কি
নাথু সন্দেহ ইচ্ছা। একবার তাহাতেও পারেন না,
বাতাস কেড়ে উঠি ইচ্ছা। জন্য শিশু হস্ত আলারি-
ত করিলে মাতা। কি তাহাকে কোড়ে গ্রহণ
করিবেন না, ইচ্ছা। অপেক্ষা অন্তরতা আর কি
আছে? কিন্তু আবার দেখ, বতকণ পূর মাতার
নিকটে বাইতে না অস্তিত্ব করে, ততক্ষণ
তিনি যদি তাহাকে দেখেব সহিতও কোড়ে
লন, সে তখনও মাতা। নৈব কুঞ্চিত পারেন না,
মাতার কোড়ে গিয়া সুখী হইতে পারেন না,
ক্রন্দনই করিতে থাকে। ইচ্ছা। সেই জন্য এমন
সময় দেখিল। আনাদিপকে গ্রহণ করেন, যখন
আনাদিপের হৃদয় মলিন কামনাতে পূর্ণ না
থাকে, যখন অসুতবাসি আনাদিপের হৃদয়ে স্থান
পাইতে পারে, যখন তাঁহাকে পাইবার জন্য
আনাদিপের অস্তিত্ব বোধ ও আশ্রয় উদ্ভব হই-
তে থাকে। তাঁহার। আশ্রয় আশ্রয় করিলে
সে আশ্রয় আশ্রয় হয় না বলেন, তাঁহার। আশ্র-
য়। বিনোদী হইয়। তর্ক করেন, তাঁহার। সহ্যবাহ
পরিবর্ত করিতে চাহেন। তাঁহার। ইচ্ছারের কর-
ণ। উপর দোষারোপ করেন। আশ্রয়। যে উ-
পাসনার একটি অঙ্গ ইচ্ছা। হারায়ে ইচ্ছারের সহিত
আনাদিপের সমীচতা। তর সহ্যবাহ হয়। আশ্রয়।
আকাশের আতীত ইচ্ছারকে নিকটস্থ করিল।
দেয়। অন্তরে যে সকল আত্মবিক্রম। আশ্রয়
তাহা। সত্য প্রথম তর্ক হারাও অসম্ভব হইবার
নহে। তর্কহীন পরাভিত হইতে পারি কিন্তু আ-
বীর সময় আশ্রয়। নিজ প্রভু বিস্তার করিতে।
কোন এক ভাষা।

[illegible]

— ६३ —

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

1. 1940-1941

[illegible]

রিয়াছেন, তাঁহাবিহীনও কলকাতার নাম
ব্রহ্মে নিয়ে দেখিত হইতেন—

১। বহু

২। বিলাস

৩। গীতগোবিন্দ

৪। বহু

৫। চিত্রকলা ইত্যাদি

এই সকল বিষয়েই তিনি অত্যন্ত আগ্রহী ও
আগ্রহী ছিলেন। এবার মেডেল
পরীক্ষা করেন নাই। পূর্ণ ও আন্ত
র্য্য এক নীচে গেল কেন? যে যে
কালি ও ক্রিস্টিভিটে প্রতিযোগিতা
হইত সেই হলেই আমরা বাঙ্গালিদি
গের নাম লক্ষ্য করিতে দেখিতে পাই
এবং তখনই মনে পড়ে যে ইহার বিপ
ল কারণ কি? এক মাত্র পক্ষপাত
কারণেই ইহার কোন কারণ আছে আশা
করেন, একপ বোধ হইতেছে না। বাহা
উক, প্রিন্সিপালদিগের একপ পক্ষপাত
বাক্য অত্যন্ত অসঙ্গতের কারণ সন্দেহ
নাই। যে যে স্থল পক্ষপাতের উল্লেখ
হইতেছে ইহা হইতেছে। সে সে স্থানে
পক্ষপাত বর্ণন, অন্য কোতের বিবরণ
সন্দেহ নাই।

৬। লাভ পানরইন ও মাক্‌টের

৭। বনিক সমাজ

৮। চলিত ভাষায় যে কতকগুলি প্রসিদ্ধ
ব্যক্তি আছেন, তাঁহারা — যাদের জীব
নকাল হয়, অন্য কোন উপায় দ্বারা সেরূপ
কিছু হয় না যেমন বৃন্দাবন ভট্টাচার্য্য বাহা
এই একটি প্রসিদ্ধ ব্যক্তি আছে।
ইহা হইয়া অনেক সময়ে অনার্য্যসে আগ
বাহিনীর কল্যাণে নিগূঢ় অভিপ্রায় সক
ল রূপে প্রকাশ করিয়া
দেওয়া প্রস্তুতি মাক্‌ট
রের বনিক সমাজ — বের এসব
লইয়া যে প্রবেশন — ইহাও বহু প্র
ধান সমাজ লাভ পানরইন ও মাক্‌টের

দান করেন, তাহা ও তাহার কল পাঠক
গণের হৃদয়ঙ্গম করিয়া দিবার নিমিত্ত আ
মরা অন্যান্য বিষয়াদি দা করিয়া উক্ত
প্রসিদ্ধ ব্যক্তিদের জীবন কাহিনী দিতেছি,
পাঠকগণ কল বুঝিয়া লউন। অল্প দিন
হইল, মাক্‌টের বনিক সমাজের লাভ
পানরইনের সহিত সংলাপ করিয়া এক
আবেদন পত্র প্রকাশ পূর্বক সর চার্লস
উডের কাছের প্রতি দোষারোপ ও তার
তবর্ষের শাসন প্রণালী পরিবর্তের অমু
রোধ করেন। আবেদনকারিরা আবেদন
মধ্যে একদেশীয়দিগের মঙ্গল ও তারতম্য
বের উল্লেখ এই ক্রমিকা করিয়া পতিত
কুমি বিক্রয় ও তৎসম্বন্ধে এই বলিয়া লাভ
কানিডের আজ্ঞার প্রার্থনা ও সর চার্লস
উডের নিন্দা করিয়াছেন যে লাভ কানি
ডের আজ্ঞা সর্ব সাধারণের প্রিয় ও সর
চার্লস উডের কৃত তৎপরিবর্তন সকলের
আগ্রহ হইয়াছে। তাহার পর কল
বিলের কথা জুলিয়া বলা হইয়াছে যে
এই বিল রহিত করিতে সর চার্লস উডের
“অন্যায়কারিতা, অসঙ্গতকারিতা, ও নি
রুক্তি প্রকাশ হইয়াছে।” এতাবস্থায়
নর একথাও কহা হইয়াছে যে হেঁট
সেক্রেটারি তারতম্যের প্রথম শাসনক
র্তার কাছের সতত হস্তক্ষেপ করিয়া গবর্নর
জেনরলকে দেখীর লোকের নিকটে অল
মত ও কোর করিয়া জুলিয়াছেন। অতএব
তারতম্যের সাধারণ বিবরণ ব্যক্তিরকে
সামান্য বিবরণে হেঁট সেক্রেটারি ও তাঁহা
র সতত হস্তক্ষেপ করা অসঙ্গত হইতেছে না।
পরে ক্রমে তাঁহাবিহীন দার্পণের উল্
লেখ হইয়া উঠিল। তাঁহারা সমস্ত বর
নাই করিলেন, সর চার্লস উডের বৈর
তারতম্য হইতে জুলিয়া আসিতেছেন, না
এবং তাঁহারা ইহাও প্রকাশ করিতেছেন
উপযুক্ত কর্তৃকারিতা — পক্ষপাত করিতে
হইয়াছে।

৯। দান করিয়াছেন, তাহাও
হিত হইয়া অল্প ও প্রবেশ করিয়া তিনি
এইভাবে উক্ত বিবরণে যে প্রাণবাহিনীর
এই আবেদন দ্বারা সর চার্লস উডের
নামে অভিযোগ করাই উদ্দেশ্য, কিন্তু
আমি বিলাসন রূপে অবগত আছি, সর
চার্লস উড এক জন উপযুক্ত লোক,
তিনি এ বিষয়ের সত্যোৎকর্ষ উত্তর দানে
সমর্থ হইবেন সন্দেহ নাই। তাহার পর
তিনি তারতম্যের শাসন কাহা সম্পূর্ণরূপে
গবর্নর জেনরলের ও তৎসম্বন্ধে কর্তৃকারি
দিগের হস্তক্ষেপ করিয়া দিবার প্রসঙ্গ করি
য়া করিলেন “যদিও (মাক্‌টের)
বনিক সমাজের ইহা উক্তম রূপে বলিয়া
বোধ হইয়া থাকে, কিন্তু ইহাও প্রায়
কেহ ও মহাসভা ইহার অনুমোদন করে
ন না। সুতরাং কোম্পানি বাণিজ্য বিধ
য়ে অধিকতর বাস্তবায়িত, তাঁহাবিহীন
সামান্য বাণিজ্যের জীবিতের পরাধীন হ
ইয়াছিল, সুতরাং, তাঁহারা সামান্য বিবরণে
হস্তক্ষেপ করিতে পারিতেন না।” একদে
খার সেকপ নাই, অতএব এখন আর উল
ল একথা আদর্শীয় হইতে পারে না।
বৃদ্ধ মন্ত্রী আরো বলেন, “আমি দেখিতে
পাই, আপনারা নিবরণুল হইতে জুল
প্রকৃতি স্থানে বিক্রয়স্থ জুল প্রেরণ করি
তেছেন, তথাপি কি জন্য আপনারা জুল
পাইলেন না বলিয়া যে হীংকার করিতে
ছেন তাহা বুঝিতে পারিতেছি না।”
আমরা লক্ষ্য রাখা করিতে পারি
অত্যা জীবিতকারিতার অনুরোধ ও
লোক সাধারণের যত্নে এই আবেদন করা
হইয়াছে। লাভ পানরইন ৫৫ বৎসর
বয়স প্রায় কাছের বনিক, অসঙ্গত। তিনি
কখনো নর ও অসঙ্গত করিয়া বৃদ্ধ
দান কর করেন নাই। তিনি, কাছের ও
বৃদ্ধ করিতেছেন। তিনি, একজন প্রসিদ্ধ
ও প্রসিদ্ধ, অসঙ্গত সামান্য বিবরণ। অতএব
তিনি অসঙ্গতের বনিক সমাজের বনিক

সহস্র শতাব্দীর মধ্যেই! অগণন
রক্ত অধিক শতাব্দী হইবে এই মাত্র কে
বল ইহার কল একপ মর, রেলওয়েদ্বারা
এ যে উল্লসিত লাভের সম্ভাবনা আছে,
যে যে গ্রামের নিকট দিয়া সেই সেই
শাখা যাইবে, নিঃসংশয় সেই সেই গ্রামের
সেই সেই উপকার লাভ হইবে। আমাদি
গের দেশের লোকেরা এবিধ মহোপ
কারক বিষয়ে প্রকৃতি বিধান না করিয়া
শান্তি ও উল্লসিত রহিয়াছেন কেন? সমুদ্র
সমুদ্র বাস্তবিকভাবে একটি প্রধান প্রতি
পদ্য বিধর। এতদ্বারা জনতের অশেষ
বিধ স্বলান লাভ হইয়া থাকে।

আমাদিগের দেশের লোকেরাও আ
রম্ভে এই মহোপকারক বিষয়ে উদ্যম
ন ও অননুরক্ত রহিয়াছেন, অতএব ইহার
কারণানুসন্ধানে কৌতুকাবিস্তৃতি হইবেম মনে
কর। কেহ কেহ এই কারণ নির্দেশ করে
ন যে উদ্ভিগের স্বাধীনতা বিষয়ে দুঃখ
নাই, চরিত্রগত লোভ থাকিতে কেহ কাহা
কে বিশ্বাস করেন না, বিশ্বস্ত লোক প্রাণ
যাও দুঃখ। কিন্তু এ কারণ আমাদিগের
মনোবলিত নহই যদি কেহ কাহাকে বি
শ্বাস না করিতেন, এতদিন ও রক্তবর্ষে কখন
বাবসা চলিত না। এদেশে একটি প্র
সিদ্ধ কথাই আছে, ক্ষুদ্র ব্যবসায়িগণের
যদি যা প্রভাবনা করুন, মহাজনেরা ক
খন পনসার চকুখান্দে অবলম্বন করি
লেন না। বিশেষতঃ ইন্দীকুন রক্তবি
দামালর মধ্যে অতএব বিশ্বস্ত লোক পাও
না যায়।

আমাদিগের অনুসৃত কারণ এই,
এদেশীয়েরা সাধারণতঃ কায়ো
নাম্য সমুদ্র সমুদ্রের সমুদ্র মতেন।
উদ্যমতঃ মাংসভোগকে ইহার উৎকৃষ্ট
লীক ও অধিকারের আদর দুই হন। ইহার
প্রাণ যদি উদ্ভিগের স্বাধীনতা হইত, তা
হলে কখন স্বাধীন হইতেন না।

মৌলিকশাস্ত্র
গতবারের শেষ।

আমাদিগের দুঃখের পর তাঁহার পুত্র সেল
ব সিংহাসনে আরোহণ করিয়া আহাঙ্গীর
(অর্থাৎ কুবের বিজয়ী) উপাধি গ্রহণ করিলেন।
তিনি পিতার বোধ্য পুত্র হইতে পারেন
নাই। রাজ্যের আরম্ভ কালে তিনি বেকরে
কর প্রমাণ হিতকরকার্যে হস্তক্ষেপ করেন,
তাহা তাঁহার পুত্র সম্রাট দ্বারা সম্পাদিত
হওয়া সম্ভাবিত নহে বলিলে অস্বীকার
না। কতিপয় বিরক্তিকর গুরু, গৃহস্থদিগের
বাগিতে রাজপুরুষদিগের বলপূর্বক বাস, ব
নিরাপত্তা এবং নাসাকর্ষিত্বের দণ্ড এস
বস্তু তিনি এককালে হুত করিলেন। তিনি
প্রজাতিগণকে দলিয়া পান করিতে নিবেদন ক
রিলেন বটে কিন্তু স্বয়ং অতিশয় দুঃখিত
ছিলেন। গোপনে প্রধান প্রধান রাজপুরুষ
দিগের সক্তি দুঃখ পান করিয়া আবেদন ক
রিতেন। যদি কেহ সেই আবেদন ঘটত কোন
কথা প্রকাশ করিত, তাহা হইলে তিনি দণ্ড
হুতেন। লোকে ইচ্ছামত রাজসাক্ষ্যকার
লাভ করিয়া আপন দুঃখ প্রকাশ করিতে
পারিতেন এই উদ্দেশ্যে তিনি নিজ আবাস গৃহে
কর্তৃকগুলি দুঃখের ঘটনা এক শৃঙ্খল বন্ধন
করিয়া শৃঙ্খলের অপর প্রান্ত প্রাসাদের বহি
র্ভাগে ঝরাটরা দিলেন। বাতাস বখন প্রয়ো
জন উপস্থিত হইত, সে সেই শৃঙ্খল নাড়িয়া
ঘটাকনি করিত, সম্রাট জানিতে পারিতেন
যে কোন আবেদনকরী তাঁহার সাক্ষ্যকার
লাভার্থ আসিয়াছে। তিনি স্বয়ং পিতার স
হিত বিবাহ করিয়াছিলেন, বন্ধন নামে তাঁ
হার পুত্র তাঁহার সহিত বিবাহ করিতে
প্রস্তুত করেন নাই। রাজ্যান্তিমের কিছু
দিন পরে, তিনি নানা কৌশলে বিখ্যাত হর
আহানের পাণিগ্রহণ করিলেন। হরআহান
অতিশয় সুকুমারী ও গুণবতী ছিলেন। স
ম্রাটের সহিত বিবাহের পর তাঁহার হরআহান
(কুবেরজ্যোতি) এই উপাধি লাভ হয়।
সম্রাটের উপরে তাঁহার বিশেষ প্রভাব ছিল।
সম্রাটের মাথের সজ্জা তাঁহার দ্বারা
সুসজ্জিত হইল। অপরদিকে তাঁহার
বিলম্বন পরা রক্তন লক্ষিত হইল। তাঁহার

সহিত পরামর্শ না করিয়া কোন কার্য
করিতেন না। তাঁহার দ্বারা
কীরের স্বতন্ত্রতা ও স্বাধীনতা
অনেক শান্তি হয়। তাঁহারই
ইয়া আহাঙ্গীর এই বিবরণ
এ নিম্নত্ব দ্বারা বাড়িয়ে অন্য
অন্য দ্বারা বল্য পান করিলেন।
তার সমুদ্রবিধি, দ্বারা, সমুদ্র
দ্বারা সম্পাদিত হয়। তিনি
উৎকৃষ্ট পরিচর পরিধানের দ্বারা
করেন। কেহ কেহ অপরদিকে
তে কেহ কেহ বলেন তাঁহার
তারতর্ঘ্যে গোলাপ আঁকরের

আহাঙ্গীরের রাজত্ব কালে
সবিশেষ অসুখীকর হইয়াছিল।
যে করেন, তিনি এক দিন
চৌকর স্বরূপ একখান হুনি ও
দ্বিগাহিলেন। অতঃপর দিন
ও বান দুই বয়সে প্রভাব
গুলি ছিল ও শব্দ প্রভাব
শালন কালে তাহাও
হার আরম্ভ ও বিধি
রাজত্ব কালে পুত্র
কিন্তু তাঁহার রূপ
পাওয়া যায় না। তাঁহার
তাহার অন্যতর পুত্র
গ্রামে জর লাভ করিতে
সাক্ষ্যকার (কুবেরজ্যোতি)
করেন। সাক্ষ্যকার
বিষয় ছিল। তাঁহার
নামিয়া অধিকা
সহিত দুই পরামর্শ
লেন। এই
হাঙ্গীর, সাক্ষ্যকার
প্রাণে ২৩ বছর
আহাঙ্গীরের রাজত্ব
নামে প্রভাব
নির্ধারিত
২৪ বছর
করেন। অতঃপর
লক্ষ্য আঁক
তার দ্বারা

শ্রুত হওয়াতে তিনি তাঁহার প্রাণ সংহারের আশা মিলেন। তাঁহার রাজ্যাভিষেকের প্রথম সাংসারিক দিবসে উৎসব কার্যে প্রায় সাত্টি কোটি টাকা ব্যয়কৃত হয়। প্রায় ৩০ বৎসর রাজ্য শাসনের পর সাজাহান উৎকট রোগাক্রান্ত হইলেন। তাঁহার চারি পুত্র ছিল, আরও কয়েক আপনাতঃ হৃদিত্যাগে ও সাহস বশে পিতা ও তিন ভ্রাতা জীবিত থাকিতে ও হোমসে আত্মত্যাগ করিলেন। পিতাকে হার আশ্রয়স্থলস্থে রাখ করিয়া রাখিলেন। হৃদযন্ত্রাণী কোষ্ঠ আতাকে রূপে প্রাক্তন করিলেন এবং কনিষ্ঠ ভ্রাতাকে গঙ্গার তীরে নিক্ষেপ করিয়া দিলেন। দ্বিতীয় ভ্রাতা বঙ্গদেশে গিয়াছিল। সাজাহান রাজ্যচ্যুত হইয়া সাত বৎসর জীবিত ছিলেন। তৎপরে আরও কয়েক ভ্রাতার প্রাণ ত্যাগ ও সবাইর প্রাণত্যাগে প্রাণ ত্যাগ করিয়াছিলেন। তাঁহার রাজ্যশাসনকালে ভা-বতকুমারী হইয়া সোমপ্রকাশ হইয়াছিল, না কোন মূল্যমান সঙ্গীতের সহরে তাঁহা নথি রাখিয়া গিয়াছিল। তিনি তিনই রাজ্যের সহিত কয়েকবার সংগ্রামে গিয়া হইয়াছিলেন কিন্তু তাঁহার নিজ রাজ্যে প্রায় কখন শান্তি রক্ষা ব্যাঘাত হয় নাই। তিনি ব্যসনাক্রান্ত ছিলেন বটে, কিন্তু শিষ্টাচারে ও চরিত্রবলে অবহিত ছিলেন না। তিনি বহু কখন প্রাণ নিশীড়ন করেন নাই। সাজাহানের রাজ্যে সবুজসম্পন্ন সম্রাট তারতবর্ষে হইত। সুপ্রসিদ্ধ বরুণসন দ্বারা তাঁহার সম্রাটের বসন পরিচর হইত। উক্ত সম্রাটের বহুলা ধীরকমনি মুক্তদ্বারা নি-র্মিত হয়। নির্মাণের ব্যয় ১৫ লক্ষ টাকা। এইকিছুর দ্বারা হস্তাধি নির্মাণে প্রায় অর্ধ বৎসর সময় লাগে। তিনি দিল্লীতে একটি হুতন নগর নির্মাণ করিয়াছিলেন। প্রাচীন নগর অপেক্ষা তাঁহার রাজ্যপ্রাচীর মসিদ ও রাজ পথাদি সুসজ্জিত উৎকৃষ্ট। সম্রাটের মঙ্গলার্থে তাঁহার প্রায়শীত দ্বিতীয় সম্রাটের জন্য আগ্রাধরে এক অল্পমসিদ নির্মিত হয়। লোকের ভাষায় এ ভাস্কর্য্য গালদা নামে। তাহা হইলেও অপেক্ষা হইত। এইকিছুর ইতিহাস কি আদির-

কল্পিত নহনমোহন হয় না। সাজাহান রাজ্যের পৌরস্বত্ব নিমিত্ত অনেক অর্থ ব্যয় করিয়াছিলেন। তিনি বহু রাজ্য চ্যুত করেছিলেন তাঁহার খনাগারে বাট-লক, কেহনলেন তাঁহার চরু ও নগর টাকা ছিল। তদ্বিধা, মুক্তা, খলাকার প্রভৃতি অসংখ্য বহুলা ব্যবহার্য্য বস্তুসমূহ সংগ্রহিত হইয়াছিল। সাজাহানের অধিকতর প্রাণসার বিবরণ এই যে তিনি এক অর্থ সংগ্রহ করিয়া বান, কিন্তু কেহ তাঁহার উপরে প্রাণাণীক-নের দোষারোপ করেন নাই। তিনি হুতন বিধ করেনও হুতন করেন নাই। কেবল নি-র্মিত রাজ্য হইতে এই অর্থ সংগ্রহ হয়। এইরূপ রাজ্য ও রাজ্যই প্রাণীর সন্দেহ নাই।

আরও কয়েক সিংহাসনে আকর হইয়া হলে ও কোমলে আত্মরূপের জীবন নাপ করিলেন। মহারাষ্ট্রীয় ও রমঃপুত্রদিগের সহিত যুদ্ধে তাঁহার বহুকাল অভিযান্ত্রিক হয়। মূল্যমানেরা তাঁহাকে মহান আকর অপেক্ষাও শ্রেষ্ঠ বলিয়া জান করেন। তিনি শিশু কার্যের ও বিদ্যাভিষয়ের উৎসাহ দাতা হি-লেন। তাঁহার অধিকার কালে অনেক বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হয়। বিচার কার্যে তাঁহার পক্ষপাত ছিল না। প্রত্যহ প্রাত্যহ্নে গাভোধান করিয়া তিনি প্রায় চারিভাগ বেলায় মধ্যে সত্যাপণে আসীন হইতেন। তাঁহার সকল প্রমাই বাট-তে পারিত। তিনি সকলেরই অভিযোগ গ্রহণ করিতেন। কোন দরিদ্র ব্যক্তি বিচারার্থী হইয়া সত্য আসিয়া যতকণ আশ্রয় থাকি-ত, ততকণ কর্ম করিলে সে বাহা উপার্জন কবিতোপারিত সম্রাট তাঁহাকে তদুপযুক্ত অর্থ দিয়া বিচার করিতেন। তিনি বিলম্ব দাতা ছিলেন। তিনি বেহুল অধ্যবসায়শীল তাঁ-করুছি কার্যদক্ষ ঠিকশালী সাহসী প্র-ত্যাপনমতি তদ্বিমান ও পারিত্রিকী ছিলেন। সেইরূপ যদি তাঁহার সম্রাটের উৎকৃষ্ট প্রশ-তন হইতেন, তাহা হইলে বখাওঁ তিনি একজন প্রাণসারী সম্রাট হইতেন সন্দেহ নাই। কিন্তু কোমল বিবরণেই, তাঁহার কয়েক-টি বিশেষ ভাব ছিল। তিনি মুক্ত ও কণ্ঠ-তন ছিলেন। তাঁহার আর্থিক সামগ্রিক মুক্ত-নতা হইত। তিনি কখনও

সুখ সম্পাদনে অসমর্থ হইয়াছিলেন। একজন-বে, মোখল রাজ্য বিবর্ত হইবার সূত্রপাত করি-য়া বান। তিনি অত্যন্ত গৌরব মূল্যমান হি-লেন। হিন্দুধর্মের প্রতি তাঁহার অতিশয় বিদ্বেষ ছিল। অমান্য সম্রাটের ন্যায় তিনি তাঁহাদিগকে সম্রাট ও উৎকণ দেন নাই। আকর তাঁহাদিগের নিকট হইতে বেহুল-গ্রহণ রহিত করিয়া বান, তিনি পুনরায় গ্রহণ করিতে আরম্ভ করেন। তিনি আমদানি ও রপ্তানি দ্রব্যাদির উপরও মূল্যমানদিগের অ-পেক্ষা হিন্দুধর্মের নিকট হইতে অধিক বহু-গ্রহণের আদেশ দেন। হিন্দুধর্মের পৌর-লিক উপাদান কালে রাজ্য আত্মরূপের বিল-করিলেন। এট সম্রাট কারণে রমঃপুত্র ও হা-হারাজিরে তাঁহার প্রতি অতিরিক্ত বিদ্বেষ-হইত। তাঁহার বিরুদ্ধে আত্মরূপ করিলেন। তিনি কাহাকেও বিশ্বাস করিতেন না। কেহ তাঁহার সেনাপতিগণ তাঁহার প্রতি বি-রুদ্ধ হইত। বখাওঁ আপন আপন কর্ম কর-্ম নিশ্চালন করিতেন না। এই দোষেই তিনি কাহারও প্রীতিলাভে সমর্থ হন নাই। প্রত্যহ-ণ তাঁহার আত্মরূপ ছিল। সাহসী হইয়া একজন দীর্ঘজীবী বসন হইতে প্রায় কাহাকে বে-খিতে পাওঁয়া যায় না। তাঁহার রাজ্য কা-লের শেষভাগে তাঁহার অর্ধের একজন অস-লতি হইয়াছিল যে তিনি রীতিমত সেনাপ-তির বেতন দানে অপরূপ হইয়াছিলেন। সাজাহানকে যে রূপে তিনি বাক্যচ্যুত করেন পাছে তাঁহার পুত্রেরাও তাঁহাকে সেইরূপ চরিত্রাভিহিত করে এই আশঙ্কা তাঁহার সম্রাটের সদা আগ্রহ ছিল। এই প্রকার বস্তুপা-লোকে "পাণের কল" বলে। বাহা হইলে এইরূপে ৫০ বৎসর রাজত্বের পর তিনি দেহ-পারিত্যাগ করিলেন। তিনি আলমগীর উপা-ধি গ্রহণ করিয়াছিলেন। এই সম্রাট কাহা-র জন্য বোধ হয় মূল্যমানেরা তাঁহাকে আ-কর অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ জান করে।

পুস্তকপ্রাপ্তি

আমরা হুজুরজাদা সরকারে প্রার্থনা করি-তেছি। যিনি মিশিও হুজুরজাদা সরকারে পুস্তক-প্রাপ্তি আশা করিয়াছেন।

১। সিবিজিরা নিবাসী জীবুজ বাবু কো-
গেজমাথ চট্টোপাধ্যায়ের কত বাকস্বত্ব
তা। গত ১১ই ডিসেম্বর বে বেবুন সনাক্ত হয়,
জীবুজ বাবু কিশোরীচাঁদ নিজ ভাহাতে এ
দেশীয় প্রীতিকা ঘটত একটি প্রস্তাব পাঠ
করেন, তৎপক্ষে অনেক বাকস্বত্ব হয়, এ
বাকস্বত্ব তাহার অন্যতর। যোগেশ বাবু
সনাক্তিও ও সুন্দর বাকস্বত্ব করিয়াছেন।
তিনি বিবিধ উত্তেজনাবাক্যে এতদ্বিধে
দেশীয়দিগের উৎসাহ বর্ধন চেষ্টা পাইরা-
ছেন কিন্তু বাকস্বত্বের অসুৎসাহ দ্বারা ইহা
গের ফল এমনি শীতল হইয়া গিয়াছে যে
অপা উত্তেজনা বাক্যে উক হইবার সম্ভাবনা
নাই।

২। ঢাকা পোগস বিদ্যালয়ের পণ্ডিত
জীবুজ বাবুচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় প্রণীত ভারত
প্রবন্ধ। হিন্দু মুসলমান ও ইংরাজদিগের
শাসন কালে ভারতবর্ষের বেকপ অংশ ছিল
ও হইয়াছে, ইহাতে তাহার বর্ণন করা হই-
য়াছে। এ প্রবন্ধটিও ঢাকার পাখা বেবুন স
নাক্তে পণ্ডিত হয়। প্রবন্ধ রচয়িতা সংক্ষেপে
সুন্দরভাবে হিন্দু, মুসলমান ও ইংরাজদিগের
অধিকার কালের ভারতব্যাপ্তি। বৈশ্বকণ্য
প্রদর্শন করিয়াছেন। রচয়িতাও সুরল হই
বাহে।

বিবিধ সংবাদ।

১৫ই পৌষ সোমবার।

মির্জাগেজেট বলেন, ডিফিত আসিষ্টাট
সরকারের আপনাদিগের বেতন হ্রাস নিষি-
ত গবর্নমেন্টে পুনরায় আবেদন করিয়াছেন।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন, গবর্নমেন্টে
উক্ত পশ্চিমবঙ্গের খাল বন্ধ করিতে তাহার
রক্ষাকর্মের অভ্যন্তর অসুবিধা ঘটাইয়াছে।
গ্রামকালে তত্ত্বাত্ত্ব মোকদ্দিমের অতিশয় জন
বহু হয়। তাহার রেলওয়ে হওয়াতে গবর্নমেন্টের
খাল পুলের প্রতি আর পূর্ববৎ বহু
দূর হইতেছে না। কেবল এক রেলওয়ের উৎ
সায়ে রক্ষাকর্মের উপেক্ষা করিলে চলিবে
কেন।

সংবাদিক হিন্দুগণী বলেন, অসোখার
প্রধান কামিনীর উইলফ্রিড নাহর করিয়া

লেপ্টেনেন্ট গবর্নরের পরে আর হইবেন। তি-
নি এই পক্ষে নিযুক্ত হইলে তত্ত্বাত্ত্ব মোকদ্দি-
মের আকালের পরিসীমা থাকিবে না। উপ
যুক্ত মোক উপযুক্ত পদ পাইলেই ভাল হয়।

মির্জাগেজেট বলেন, পাতিয়ালা রাজপু-
ত্র হত্যার প্রাণবন্ধ না হইবেন তত দিন
গবর্নমেন্ট হইতে নিযুক্ত এক জন ইন্টারপী-
য়ের হস্তে তাহার সমস্ত নিবন্ধের তত্ত্বাবধান
তার সমর্পিত থাকিবে। সেই নিয়োগটি বেন
তাঁহার বনকরেন আর একটি আরবধূপ না
হয়।

লক্ষ্যে প্রদেশের অন্তঃ পাতী বোধপুরের
এক জন সন্তান ডালুকারের পরলোক প্রা-
প্তি হইলে তাহার স্ত্রী সহগননের উদ্যোগ ক-
রেন। পুলিশ কর্মচারীরা তাঁহাকে হত্যাকাণ্ড
হইতে দেন নাই।

সোলাপুর হইতে তারমরাবার পর্যন্ত
হুতন রেলওয়ে হইবার নিষিদ্ধ ভূমি অরীপ
করা হইয়াছে।

গত শনিবার ই এচ মসিংটন সাহেব
বিলাত হইতে প্রত্যগমন পূর্বক তাহার নিজ
কার্য্যতার গ্রহণ করিয়াছেন। ইন্ডেন সাহেবও
তাঁহার পূর্বকর্ত্তে গিয়াছেন।

হরকরা সম্পাদক বলেন, বকসনের এক
জন অচিহ্নিত সদর আমীন আপন কর্ম বধা
বিধি সম্পাদন করিয়া পেনসন লইয়া ছিলেন,
পেনসনের টাকার তাঁহার পরিবার তরণ পো-
ষ না হওয়ার গবর্নমেন্টে আবেদন করেন।
গবর্নর তাঁহাকে অন্য এক বকসন কোর্টের উ-
কীলের পর প্রদান করিয়াছেন। এই সুযোগ
পাইয়া অপর পেনসনখারীরা গবর্নমেন্টে আবে-
দন করিতেছেন। এই ত রোগ।

শ্রীমতী বাইতেছে এডমোনির সন্তান
ব্যক্তিত্ব বাবু জয়রাম সুখোপাধ্যায়কে হত্য
করিবার উদ্দেশে লেপ্টেনেন্ট গবর্নরের নিকট
আবেদন করিবার চেষ্টার আছেন। এখন
চেষ্টা সফল হইবারও সম্ভাবনা আছে।

হিন্দুগেজেট বলেন, এক জন গবর্নমেন্টে
কর্মচারী এই প্রস্তাব করিয়াছেন, হিন্দু
নাতে শব্দ বাহ না হইয়া বাবু বাবুদের কোম
বাটে হয়, হিন্দুদের পর্যন্ত বন্ধ হইয়া, তাঁহা
হইয়া হিন্দুদের কোমের অভ্যন্তর অসু-
বিধা ঘটাইবে।

উক্ত সম্পাদক আরো বলেন, হিন্দুদের
র হুতপূর্বক জন বাবু কানীপুর, হিন্দুদের
বাবু নবীনরাম পানিত্ত হিন্দু হইয়াছেন।
নীলকর মহামতিরা ইহার প্রতিবাদ প্রদান
ন। গবর্নমেন্টের উচিত ছিল তাহার এক জন
নীলকরসহায় জনকে পাঠাইয়া দিত।

ঢাকা প্রদেশের খুলনার সংবাদ দ্বারা জানা
ন, তত্ত্বাত্ত্ব কতকগুলি চর্ম্মচারী ছিল।
রোগদ্বারা গোহত্যা করিতে আরম্ভ করিয়া-
ছে, এক জন মৃত হইয়াছে, অপরজনকে
লে অন্যান্য পাণীয়াসহ ও মৃত হইতে পারেন।
গবর্নমেন্টের এ বিধে ক্রিমিনাল জারিসমিতির
হত্যাকারিদিগের বিরুদ্ধে কার্য্যক্রম
কর্ত্তব্য। আমরা মনে করি, গবর্নমেন্ট
অবন করিয়া থাকি। এ সমস্যাটি
মল নয় ত ?

১৬ই পৌষ মঙ্গলবার।
শাগরপ্রদেশে দিনদিন ভাড়াহিন্দুর অতিশয়
প্রচুর হইতেছে। ভাড়াহিন্দুরা সুখাদির
অন্যভাবে অবস্থিতি করে। মধ্যে মধ্যে
হিংসিত হইয়া পশ্চিমদিগের বখাসবৎ
হরণ পূর্বক বনভূমিতে প্রবেশ করে।
লোকের বিরোধিপ্রধান দেবীবিহু হিন্দুদি-
গের অধ্যক্ষ। পুলিশ কর্মচারীরা ভাড়াহি-
নকে হৃত করিবার জন্য বিস্তর চেষ্টা করিতে-
ছেন কিন্তু হত্যাকাণ্ড হইতে সার্বিকভাবে
না।

শ্রীমতী অবজারবর বলেন, সোলাপুর, বেলাগা
ও খাবওয়ারে বোম্বাই ব্যাঙ্কের শাখা
চাপিত হইবার কম্পনা আছে।

পরিদর্শকে হুই হুই, কলিকাতা ও অন্যা-
ন্য শ্রমের নদীতে স্নানিকালে বেলকল জা-
হাজ ও নৌকা থাকিবে না গমনাগমন করি-
বে তাহার প্রস্তাবনা আসে না দিনে
নাথিকদিগের এক এক শত টাকা জরিমানা
হইবে।

উক্ত পক্ষ আরও বলেন, বে জীবুজ অ-
সোখার পাতিয়ালা পিতার হত্যারিন্দু
এক জন ছিল পাতিয়ালা পরিভ্রাম, ইহা
বাহু কখনো শ্রম ও হবিয়াত ত্যাগ
করি হিন্দুদিগের চিরপ্রতিদ্বন্দ্বিতা
জিহা একজন দিবসে জীবুজ বাবু দেবেদার
এক জন হিন্দুদিগের (মৃত) হত্যাকারি

২২ শনিবার ১৩ই আগস্ট ১৯০৬ খ্রিঃ
কাজাখানি টিমস্ট্রেংথে অভিযান পাকিস্তান ও
খানদার জেনারেল কমান্ডে পাকিস্তান জেনারেল
জাহাঙ্গীর আলী ও জাহাঙ্গীর আলী
করিমসহ। ১৩ই আগস্ট ১৯০৬ খ্রিঃ
জাহাঙ্গীর আলী কমান্ডে পাকিস্তান জেনারেল
জাহাঙ্গীর আলী ও জাহাঙ্গীর আলী
করিমসহ। ১৩ই আগস্ট ১৯০৬ খ্রিঃ

সম্রাট বেহার ও কাশী হাতে বিস্তর অ-
ধিকেনের কিস্তি আসিয়াছে। বোর্ডের স-
ভ্যরা ও সেক্রেটারি তাহা মর্শন করিয়া প্র-
বংশা করিয়াছেন। সমুদায় চীনে প্রেরিত
হইবে। চীন দেশ কেবল এক আফিনে উৎ-
সন্ন হইল।

সেবা প্রকাশ :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

টি বসেন, কলিকাতা হাই
কোর্ট থেকে ২০ বছরীয় পিয়ারে
মার্কিটে বিস্তৃত লোক তথ্য
শ্রী শ্রী সত্য সাহেব ভিনটার ম
এছাড়া রেইনওয়ে খোলা ও প্র.
কাশীতে প্রায় ১০ জন লোক
। ১০ বছরের মধ্যে তথ্য এত
দ্রুত হয় না।

আলো বলেন, সমুদ্রের গোল
পিও বায়ু নাই : স্বর্গের কেন্দ্রে
স্বাক্ষরিত বাক্য : নিখরিত

‘‘ହେଉଛି କଂପ୍ୟୁଟର ମାଧ୍ୟମରେ କଲେକ୍ଟିଭ,’’

শাখী দুই জন ইংরাজ আ-
বদ্ধ করিয়া। নগরের চতুর্দিকে
হিল, তাহা নিগের মধ্যে যে ব্যক্তি
দাঁকে দশবাসর আর কয়েক জনের
সম্মত করিয়া নিগের হইয়াছে। বজা-
করার এই কার্য দ্বারা নিজ মণ্ডল
হইয়াছে।

[illegible]

নেত্রর পোণ নামক চারুভকর্ষীমূললেয়
একজন আকিস্বর এমলি নামে একটি অবিদ্যা
শিষ্টা যুবতীকে বর্ষ কয়েক দিব নলিগা আ
শনার গৃহ লটনা: নিদ্রা প্রথমে অক্লান্ত
করাইয়া তাহার সঞ্চিত গুণবতান বস্ত্রে, আর
উত্তরে কাঁয়েকবারে দেগা: ম. ন. ১. ১.
র গর্ত ও একটি মূল্যবান বস্তু ৩০
কয়েক দিবস উলঙ্ঘের ন্যায় হটবার
তি ডাকায় শিষ্টা নলিগা বর্ণিত
গের মত তের হওয়াতে মূল্য বৃদ্ধি
পন্ন হইবে। ইংলণ্ডের সর্বসাধারণ
বিশেষতঃ চন্দ্র নেত্রের দ্বারা এই কথ্য হই
১ একটি নেত্রালয়ে পোণব।

‘सुखाचार्य’ ।

[illegible][illegible][illegible]

গবর্নমেন্টের সেনাপতি। দ'আন কক নম পাঁচ
হট্টে হন পাতের, এই উল্লিখিত বিজ্ঞাপিত নমের
সংক্রান্তিৎ কানাম সসাইটাই। গবর্নমেন্টের
সেনাপতি। ফাল-মোথে আছে। সেনাপতি টোম
করাল জাকসন কিক দিক্তেছেন সসাইটাই জাতি।
যায় নাই। নিম্নসংগত নিকটস্থ পোলিগুপ্তে
সুক হইবার সঙ্গ সঙ্গারিত। এক লোকের
অধিক গবর্নমেন্ট সেনা পণ্ডিত হইতেছে।
নিকটস্থ গিলার দসংগত পায় সকল দিবস
সংগত গবর্নমেন্ট নাসের নাসাই বিজ্ঞাপিত
পীচ ও সুক ৭৫,০০০ মোসকর নাসাই
হট্টে

[illegible]

सं. ५००० दि. १०/११/१९५०

[illegible]

লগ্নম ওয়াতিসেবর। পরসংসাইক তুর্যবেষ্টম
 জাগ করিয়। যেতারিৎসবর্গকে সুক্লর মূলদ্বান
 করিতে মনস্থ করিয়াছেন। সুক্ল হইব'র'মুদ্রা-
 বনা আছে। ক্ষেত্র'দিকসংগ' ও রিচব'ওর
 মধ্যে বিস্তারিতমিথের যে প্রধান'সেব'কম আছে
 তাহার। বিকব'র' নব'র আক্রমণ করিবার উদ্যো-
 গ করিতেছে। মাকিলম নিউই'র'ক'গ'র' ক'স-
 য়। অতিশয় মনোদরে গৃহীত হইয়াছেন। উত্ত-
 মোগীর মূলদ্বান'ম'র। রিচন:ও বিস্তারিতমি-
 থের বিস্তর কাগজ (গ'ব'মেট) জর করিতেছেন,
 নিউই'র'কে এমনত ম প্রাপ্তি সতাপ্তি ভোগ
 দশ লক্ষ বস্তা তুল বি র করিতে চা'কিয়াছেন,
 ঐসের যাত্ৰীর লোক পা'জু'বার আল'ক'ভের
 সি হ'গন গা'স্ত বিব'য় অ'গ্রহ সহকারে সম্মতি
 দিয়াছেন। রাটেজ মস্ত্রি সম্প্রদ'র সদ ভাগ
 করিয়াছেন। তুলার মজু'র'ম'গে' ছা'ধ'ন'বার-
 ৭ থ ম'ক'টেরে সভা হইয়াছে। ১০ লক্ষ টা'বা-
 ১০ হইয়াছে। ২৪ জন লোক যাত্ৰেন দাস্ত'ন
 মো'র'ম'কে তরফর প্রচার ক'ব'তে পুত হই-
 'ছে। বত ব্যক্তি ব্য'কের কালে লিখ্ত ছিল
 ১. সমুদায় বিচ'স'ার্থ সমর্পণ করা হইয়াছে।
 ২. ক্ষতি এই রূপ। যে ক'রাণী মনা'র'র ১৭
 স'চার'ার্থ চক্ষু' হইয়াছে। মারস অ'ধ'র
 ৩. হইয়া। বিস্তর কা'গ'জেন ক'দি' হইয়াছে।
 ৪. তরত'ম'র' সেনা'দাল'র মে'র'র'র'র'র'র'র'র'র'
 ল'ক'তে ব্যা'তি'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'
 হইয়াছে। জুর'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'
 ব'ল'িয়াছেন। ম'চ'স'ক'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'
 ম'ক'ট' আ'গ'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'
 হইয়াছে। রা'জ'ক'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'
 প'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'
 লি'খ'ত'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'র'

কান হব্বার্ড জল সেচন ও খাল খননকারী,
মিস্ত্রির লোক বাসাব (ট্রাইয়র) ,
মাইল বেইলডরে।
মঃ স্যারিওব জল সেচন ও খাল খননকারী
ফেফাফা।

शब्दार्थ के विज्ञापन ।

স্বাভাৱিক অৱস্থাত প্ৰতি বছৰে

ଆମେନାହୁମାସି ନିୟମ ।

২০শ ডিসেম্বর। মোজাবত, জার মুফোর
হাফিজ আবদুল করিম কোভাদি আটনের ২২
সাতাফাং উক্ত ঠিকানা প্রথম জেলার অধীন
বাতিয়াইটস কমন্ডা গার্ডের হেল।

२. कर्म फलानुसार । कर्मफल, अह, अवेमि
मार्गकर्म फलानुसार नष्टनाशो भविष्यते इत्येव । न-
नुकूलकर्म फलानुसार नष्टनाशो भविष्यते इत्येव । न-
नुकूलकर्म फलानुसार नष्टनाशो भविष्यते इत्येव । न-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विनाश के रूप में विनाश।
 वाकि: ३३ नो. ११ विनाश।

দরহির করায় বিপর্যয়, ব
অনা, তামাক পাচ আদি সে
সের, যুগেন তাউস চারিগ

ଆମର ଏ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ହିଁ ଓ ମନେ ରଖିବା
କରି ନିଅନ୍ତୁ । ସେଥିରେ କୌଣସି ଅପରାଧ
ଆମାଦେଇ ଡେଲୁଟ ବାବୁ ଓ କର୍ମ

[illegible]

শ্রীযুক্ত সোমেন্দ্রনাথ ঠাকুর

সোমপ্রকাশে ১০ বিহুপাঠের
পেটেকোটেইর জল বায়ু অত্যা ক্রম
নাম পাঠ করিত। আমবা জরি বিহু

१. संस्कृत भाषा २. संस्कृत साहित्य ३. संस्कृत व्याकरण
 ४. संस्कृत दर्शन ५. संस्कृत इतिहास ६. संस्कृत भूगोल
 ७. संस्कृत अर्थशास्त्र ८. संस्कृत चिकित्सा ९. संस्कृत कला
 १०. संस्कृत शिल्प ११. संस्कृत वास्तुशास्त्र १२. संस्कृत गणित
 १३. संस्कृत खगोल १४. संस्कृत ज्योतिष १५. संस्कृत धर्मशास्त्र
 १६. संस्कृत न्यायशास्त्र १७. संस्कृत राजनीति १८. संस्कृत अर्थशास्त्र
 १९. संस्कृत समाजशास्त्र २०. संस्कृत साहित्य

কিন্তু এটা বইতেও অনেক ত্রুটি আছে।

अन्य: आशावा, जो कहे कहें, अन
आदेश हूँ, नहे कहें, जो कहें, नहे कहें।

[illegible]

पानमाल (२) : पानमाल चिकित्सा शास्त्र

ଅନିମିତ୍ତ, ବଡ଼ବଡ଼ମାନଙ୍କର ମୃତ୍ୟୁ ହେଉଥିବା
 ଖବର ମିଳୁଥିଲା । ସହର ଶାନ୍ତ ନଥିଲା । ସମସ୍ତଙ୍କ ମନ
 ଖୁସି ନଥିଲା । ଶାନ୍ତି ନଥିଲା । ଶାନ୍ତି ନଥିଲା । ଶାନ୍ତି ନଥିଲା ।

१. कृष्ण नरक गतिविधि।
 २. चित्तवृत्ति : विमलानन्द
 ३. कृष्ण नरक गतिविधि।
 ४. चित्तवृत्ति : विमलानन्द

জাতিসংঘের আর্থিক সহায়তা ও
 উন্নয়ন কর্মসূচি। নিম্নোক্ত বিবরণে এই
 প্রকল্পের কার্যক্রম বর্ণনা করা হয়েছে।

(१) आर कः न वगधुवोदेव इति ज्ञात्वा

કચ્છના કાશિયાપુર, ૧

1981

... ..

विषय सूची

“प्रवर्तनी प्रवर्तित्वात् प्रवर्तितः कदाचित् सुनिश्चितः न भवति ।”

সন ১২৬২। ২২ পৌষ। ইং ১৮৬৩। ১২ জানুয়ারি।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

করিনপুর জিলার অধঃপাতী বাটকোয়ারি
করিনপুর নামে যে পাহাড়ি ভাঙ্গুক আছে,
তা করিনপুরি লোকেরা অথবা বিজয় করা
ইবে। বঁহার সেই ভাঙ্গুক করিনপুরি লই
র অথবা কর করিনপুর ইচ্ছা আছে, তিনি
সকালের আভাসে ক্রিমের কোম্পানির নিক-
আবেদন করিলে নবিশেষ করিনপুরি
রিবেশ।

২৩৯ সৌদ সোমবার ।

ଦେବ ଅନୁମୋଦିତ ହୁଏ, ଆତିଥୀୟକ ମିତ୍ର
 ହୁଏତେ ମାତ୍ର

যে অবধি সোমপ্রকাশের দ্বাৰিক এক ও
অগ্নিম বাৰ্ষিক কৰ টাক মূল্য করা হয়
নাহে, সে অবধি মকমলের আদকখানের
মিকট হইতে ডাক মামুল গ্রহণ পাৰিষদ
করা গিয়াছে। সেক্ষণ কহিব্যায় তাৎপৰ্য
এই, কলিকাতার সহিত মকমলের বন্ধন
লক্ষ্য আছে। মগরবাদিরা সোমপ্রকাশ
মিলা আমেক বিষয় অবগত হইলে লাভের
তাহিল এখানে লাভাএকার মকমল
আছে, আমেকের অবস্থাও ভাল। কিন্তু
মকমল বাণিজ্যের এ সকল সুবিধা আই
কর্তৃপক্ষের কেবল এক সন্যাস পত্রের উপ
র নির্ভর, সকলের অবস্থাও ভাল নয় যে
অধিক ব্যয় করিয়া সন্যাস পত্র গ্রহণ করি
ন। এই সকল বিবেচনা করিয়া আমরা
নিষিদ্ধ নিয়ম অবলম্বন করি। এখানে
আমাদিগের সে নিয়ম ব্যতিক্রম করিয়া
মকমলবাদী অশক্ত সোমপ্রকাশ পাঠিক বি
গকে সেই লাভ ভোগে বঞ্চিত করিব্যায়
ইচ্ছা নাই। তবে আমাদিগের ইচ্ছা এই
যাঁহারা সমর্থ হইবেম, তাঁহারা যদি ইচ্ছা
পূৰ্বক স্বতন্ত্র ডাক মামুল দেন, আমরা
আর এক কল্পনা হুজি করিয়া পাৰিষদের
সহিত আমাদিগের চিত্র প্রকাশনা
করিতে পারি। আমরা কহিলাম পূৰ্বক
হকগমকে কহিতে পারি। আমরা
নেল বলিয়া তাঁহাদিগের মকমল
হইবে না। নিম্নের পক্ষে আমরা

করিয়েছি, বীহায়া নকল, ...
 মোর হুল, ...
 ...
 ...

१७. ४. कतिपयका मूल्य प्रमाणित नभएको
प्रकारको कृषि उत्पादन

100-443887-100

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

15

12-11-68

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

...मार्गदर्शक-समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

14-00000

1997

100-443887-100

[illegible][illegible]

সত্যের বে সিন্ধু তব
ভাষার আর একটি
ইবা হিন্দুপেট্রিট কল
নিগের কৃত করেবটি
কল্পিত। সত্যের কল
ভবি দেখা কল

[illegible]

এজারিগারে আসা ঘনমে আসন
আনতে আসন করিবার তাহারিগারে যে
কমতা ছিল, ১০ আইন তাহা কুহু করি
বাহে মটে, কিছু ইহা কর হুজির বিকরে
শুই বিধি না দেওয়াতে এজারা আসা
চার হুজির হুজিরে পারিবেতে না ।

অন্যদিকে অসংখ্য বিধে আত্মশিক্ষণের
 প্রয়োজন। প্রত্যেক সাহসেব প্রজাতিদেরকে দীর্ঘ
 জীবন দান। বিধার যে প্রস্তাব করিয়া
 ছেন, তাহা আত্মশিক্ষণের অনুমোদিত ম-
 ত। অতএব প্রত্যেক প্রজাতিতে প্রজাতি জু-
 গিত প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি হইয়া। আত্ম-
 শিক্ষণের মত। প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি উৎক-
 ট। প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি
 প্রতি আত্মশিক্ষণের মত। প্রজাতি প্রজাতি
 প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি প্রজাতি

[illegible][illegible]

কেন্দ্রের সারসংক্ষেপ আওতায় পরিকল্পিত আওতায়
বড়ের লম্বাওতাও রাজ্য আওতায় এবং উদ্বি-
গিতের হস্তেই অবশেষে বিবর্ত আওতায়।
উদ্বিগত হস্তের আওতায় এককালের পাত্র উদ্বিগত
নাহি রাজ্যগতবিত্ত হইবে। অবশেষে রাজ্য
আওতায় ২০ অবশেষে রাজ্যের করিয়াহিবে। উদ-
বিত্ত রাজ্যের কালে রাজ্য অবশেষে রাজ্য উদ্বিগত
নাই নতুন নতুন কালে রাজ্যের উদ্বিগত রাজ্য
হইতাহি। রাজ্যের রাজ্যের রাজ্যের রাজ্যের
নাই ও অবশেষ ও বিলাসপত্রের হিবে।

[illegible]

श्री १०८ श्री गणेशाय नमः । श्री १०८ श्री गणेशाय नमः । श्री १०८ श्री गणेशाय नमः ।

विषय-सूची

সোমপ্রকাশ

[illegible]

১. উদ্ভিদ জীবনের দুইটা বড় পর্যায়কাল
বসন্ত (গ্রীষ্ম) পাতার অঙ্কিত (স্ট্রোক) ব
হইয়াছে। কিন্তু সব আনিটাই সরসন না
যাওয়াতে একজন ব্যক্তি যেহেতুইয়ের উপরে
টিকিৎসার ভার পড়িত হইয়াছে। ঐতিহ্য
টিকিৎসা হইতেছে না। অসুস্থ কালি টিকিৎ-
সা নয়। স্বাস্থ্য পর্যায়েকের অন্তর্ভুক্ত ভার

“ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

শুনা গেল বোম্বাইয়ের প্রতিমিষি আর-
 দিন নাহের ব্যবস্থাপক সভা ডাঙা করিয়া
 উক্ত নগরের প্রাধানতম বিচারালয়ের অন্য-
 তর জজ হইতেছেন। আরও দিন নাহের
 অনেক বিস্তরে এডভোকেটের মধ্যে প্রিয়পাত্র
 হইয়াছেন। তাঁহার ব্যবস্থাপক সভা পরিচাল-
 না আধাদিগের ক্ষোভের বিষয়।

गठ कन्य निगुनिधित ठाकार महिकेन
एकदशधृष्टे रिचोत हईवाहः—

ক্রমিক	প্রাতিমিত্তক	মোটটাকা
বেলাদেয়া ১৩২০	১১৭১৫০/১০	২৫,৪১,৭২৮
শাশী ১৩১০	১২,৩৪১৫	১৮,৪২,৮০৫

সিবিগিয়ারা নৈরাশ্র সন্ন্যাসীরাও উভেড় নি
কটে বেঁচে আবেদন করিষ্ঠা ছিলেন তবিয়ে
দাম্পত্য কালে কতকাঁচাইতে পালেন নাই
তাহার বয়েক জামা নাই সকল হইরাছে
উপায়া একদল বাৎসরিক ৬০০ টাকা পেন্সন
পাইতে পারিঁরেন। পেন্সন পাউরায় সমা
পূর্ণমতই রুজিল।

সরকারসমূহ উক্ত আন্তর্জাতিক রূপান্তরিত
উদ্দেশ্যে দিবস আয়োজন পাঠাইয়াছেন। তা
কিসক ও না বিবেচনা সেজন্য পাঠাইবেন। এখানে
উক্ত বলা আবশ্যিক পূর্বতন কোম্পানির সে
একজন আফিসারদিগের প্রতি যে প্রকার
অবিচার করি। এইগোছে, এবিষয়ে সেজন্য এই
উদ্দেশ্যে না, সকলেই যথেষ্ট ক্ষতি পাইয়াছেন।

সত্যিকি বাহ্যিকের নিকটে জেনম নামক
 যে বাণীর কাছাকাছি তার হইয়াছে, তাহাতে
 লেভি একদিন আসিতেছিলেন। তাঁহার ক

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

কিন্তু বলাইতে পারি যে, এই সকল কথাই
সকলকে বুঝায়। এক জন কবি

१. अनादि-कालात् । एक कालक इत्यर्थः ।
 २. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 ३. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 ४. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 ५. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 ६. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 ७. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 ८. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 ९. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।
 १०. अनादि-कालात् । अनादि कालात् ।

১. বাজার চাইবু ম বলেন ততক্ষণ চৌধুরান
সর চারুল টি বিলিয়ানের প্রতি কৃতজ্ঞতা
একানার্থ সম্রাতি যে মতা হয়, তাহাতে বা-
জার শ্রেণির লোকে আগ্রহাভিনয় সহকারে
উৎসাহিত হইয়াছিলেন। সকলেই পূর্বনে শা-
সন কর্তার প্রতি মিত্রা ও তত্ব প্রকাশ করি-
য়াছেন। উক্ত নগরে কখন একগ মতা হয়
নাই তাহাও মিত্রাই বলা চাইবে। থাকে, তা
নতবর্ষোরদিগের কৃতজ্ঞতা নাই।

করুণা বলেন লাটের সাহেবের জুতা
হলোতে সাহাবাদের মালিষ্ট্রেট ও কালেক্টর
কবরোম সাহেব -৪ পরগণার কাল হইলেন ।
ডাইট সাহেব পুনর্বার ২৪ পরগণার কালেক-
টরের পদ পাইলেন ।

আলহাবাদ গেজেট বলেন রাজ্যের
প্রধান-সমাপতি সব দেশ-স গ্রাউন্ট উন্নয়ন-
নিমিত্তে অর্থ করিতে আসিবেন যাতে
সমাপতি ও গবর্ণর কোনরূপ যখন এক স্থানে
অবস্থিত হইবে তখন তাহার কোন গোপনীয়
অর্থ থাকবে

লক্ষ্যের ইচ্ছাশীল সীমান্তেরা ভীর
 দুই শিক্ষা কলিন্দ অত্যাগ্রে এক সভা ক
 রিয়াছেন। উচিত। ২০৭

মদীন্দ্রের পাল নাথক এক ব্যক্তি বামা
নাথী এক বেঙ্গার বাজিতে যথো যথো গমন
করিত। মধ্যাহ্নে সে তাহাকে এক কিনি পাইয়া
তাহার যত বাঁধিয়া আর ২ টাকা লইয়া
গলায়ন করিতেছিল কিন্তু তখকার প্রতিবা
সিবা তাহাকে পরিত্যক্ত। পুলিশে দিয়াছে উক্ত
ব্যক্তিকে সেদিনেই সমীক্ষণ করা হইয়াছে
এই প্রকার সংবাদ সংবাদে জানিতে পাওয়া যায়
কিন্তু এই দুষ্করিত ব্যক্তিদিগের প্রতি কঠোর
দণ্ডবিধান না করা হইবে কেন ?

আমরা সকলকে সোঁতে পাই, ইউরোপীয়

Figure 1. The effect of the concentration of the inhibitor on the rate of polymerization of the monomer.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
 कथं प्रकृत्यात्मा कथं कथं प्रकृत्यात्मा
 प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा
 प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा
 प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा
 प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा कथं प्रकृत्यात्मा

काठमाडौं, २०७३

১৯৪৭-৪৮ : ইংল্যান্ডের কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়, ইংল্যান্ড
 ১৯৪৮-৪৯ : কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়, ইংল্যান্ড
 ১৯৪৯-৫০ : কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়, ইংল্যান্ড

[illegible]

সেনাপতির সেনাপতি হইবার কথার
পাত্র। স্বত্বীভি বিবরে তাঁহার বিবরণ
আছে। তাঁহার সেনাপতির মতের

শোভিত হয়, তদ্বিপর্যয় ভিন্নি-
বিশৃংখলিত হইল।

কিরিলা অঙ্গনত হইয়াছেন

কমল প্রভৃতি দ্বারা পরিচালিত হয়।

যদিও বর্তমান কালে কমল প্রভৃতি

ইংলেণ্ডে সম্রাটিক একটা কুহক আবিষ্কার হইল
কয়েকটা ছাতি ও একটা শিরাস।

ডেভি নিউটন পাত্রে পুষ্টি-সমৃদ্ধ খাদ্য
নিউ কালডে একটু ক্যালোরি-সমৃদ্ধ খাদ্য
মলিয়া উদ্ভিদে কয়েকটি পুষ্টি-সমৃদ্ধ খাদ্য

নত্যাভি ইত্যাদি প্রধান বিদ্যাবলি

१३३३
 १३३३
 १३३३

কাজেই এইভাবে । দিনগুলোর ২০-৩০
দিনগুলোই সত্য বঙ্গের কাজের সময়।

১২.২ সংস্করণের যুবকর্তৃক "সংস্করণ"
চালানো হইতে নিষিদ্ধ হইবে যদি এতদ্বারা

বঙ্গদেশের বাহ্যিক ও ভাষাসিক শ্রিষ্ঠ
একজন গাইরাইজ। অংগীরা পতকরা ইচ্ছা
উপায় বহিষ্কৃত ২২ ইচ্ছা গাইরাইজ।

[illegible][illegible]

দিল্লীতে জী 'সফার জার্নাল' প্রভৃতি বহিঃস্থে
সমবে ছুটি ও উপসমবে পাঁচটি বিভাগের
উদাহরণ। পড়ে প্রত্যাহ ১৬০ টি বাণিজ্যিক বিভাগ-
ের উপস্থিত হয়। 'সফার' নামের একমুখে 'সি' এবং
সংজ্ঞা আধিকার।

বোম্বাই প্রতিষ্ঠানের এক জন সম্মানস্বামীর
বক্তব্য, উক্ত প্রেসিডেন্সির রেইলওয়ের ইউরো
পীয় শিল্পী ও মকদ্দমা বিচারে অসামান্য ও
স্বাধীনতা করিয়া কাটায়। সম্রাতি হই জন মক্
দ বিবরণ মন্তব্য করিতে এক জন গুরুতর ভাণে
আহত হইয়াছে। রেইলওয়ের একি মন্তব্য করা

কিন্তু বলেন অষ্টপুত্রের রাজ্য আপনায়
বিধাত মন্ত্রীপতিঃ শিবস্বিনয়ক মনে আইল।
কিনিকাতর আলিতেছেন, তিনি রাজধানীতে
উপনীত হইলেন পুত্রের পর্বর ভেনরলে, করবা
বে উপস্থিত হইবেন। রাজসীবা ভবৌ 'মহো ক-
'লকাত। কর্ণক কবির' সাগর ক'র্কী শিবির। বান
ইত' অঃধনী।

নিম্নলিখিত সম্মান জনি হোক আর ইতিয়া
হটেতে সত্তরা পেলঃ—

পশ্চাৎস্থিত হাটের এল, এ, উদ্যোগ
পল্লীকোষের হস্তক্ষেপ—

ଅବସରଦେବୀ ସଚ୍ଚିଦେବୀ

১২ নিউজিক্যাল	৭	২৬
হুগলী	০	১১
আ	০	৮
কুকনবর	১	৩
বহরমপুর	০	১
আবরা	০	২
কলকাতা হুইনজকালি	০	১
ডাউন	০	৪
নেটলাইন বিজ্ঞান	১	১
সংস্কৃত শাস্ত্র	১	২
নিবন্ধ ইতিহাস	১	২
কাণ্ডী	০	৬
ডবল ডাবল	০	৮
স্টেট সেক্রেটারি	২	১
বিজ্ঞান	০	৩
কাণ্ডী	০	৬

মেসিকাজ ৩
 বিলাক ২
 মধ্য বিলাক
 উক্ত লোকেরা যাহা করেন তাহা নষ্ট করিয়া
 তাহা লোকেরা যাহা করেন তাহা নষ্ট করিয়া
 তাহা লোকেরা যাহা করেন তাহা নষ্ট করিয়া
 তাহা লোকেরা যাহা করেন তাহা নষ্ট করিয়া

গোমিক্স লব্ধ গুনিএটল কোম্পানি অংশি-
কিভাবে যা টাকা লাভ নিরাহেন । তাঁহানিগের
মত লক্ষ্য, এত অনেক বাজোব নাই । সুতরাং
আজাই কোটি ৬ লাভ তিন কোটি টাকা
লাভ আছে । বৎসবে তাঁহানিগের ২,২২,০০০
২৬০ টাকা লাভ হয়, যার মধ্যে তাঁহানিগের
গাংহরিক । ১৫ ৯১ ০৪০ টাকা থাকে । যে ক্ষতি
ব বাণিজ্য আছে তাহানিগের গাংহি কিছুই
সত্ত্ব ব নহয় ।

কলিকাতার গবর্ণমেন্ট ইংল্যান্ড ও ফরাসী বিবে-
ক সহিত চীন মন্ত্রীদের মহারাজা করিতেছেন।
উক্তপত্র ইচ্ছাক্রমে হয় লাভ' গ্রাণ বিল
অথবা লাভ' আবণিল সরকারসমীতির কৰ্ত্তে
নিযুক্ত হন। কারণ "ভাণ্ডারিগের তত হুজি
নাই অতএব ভাণ্ডার' ভাবতবর্ষের গবর্ণমেন্টের
(আর্ডাং সেইসঙ্গে ঐরাজ্যকারী মন্ত্রের) পরা
ধর্মে চলবেন.,। আশাও ও তাই বলি, মন-
চারলসওও আমাদিগের মঙ্গলক্ষ্য-অর্জনে
তত হুজিতে পাবেন সেই ও বহু মৌরু।

২৩এ পৌষ শুক্রব
 রাজ্যায় ও তরিকটবষ্টি ৭
 তি অভ্যাস হষ্টি হইরাছে ।
 কর্দ্দন হইরাছে যে শকটোড়ির ৭
 ন, নহুদের কুল স্থানে স্থানে
 এহং এক স্থানে টেলিগ্রাফের
 গিরাছে ।

মাঝাঝগবর্নমেন্ট ডাকডা পঞ্চমদলের পঞ্চম
 সের অর্থদান কি সুবিধার জন্য ৩৬৭৪ টাকা
 নিশা দেহন।

টাইবুল অব ইন্ডিয়া হস্তকারী লণ্ডনস্থ লংব্রী
 দাতা ব্রহ্ম সর্বদা সাহেবের বিষয়ে লিখিয়া
 'হেন, এই সূতন গদে (হস্তকারী কার্য ল-
 ন্দ্রাধানে) তিনি অকোত্তি কল্প কীর্তিরাহেন ।
 তাঁহার এবেশে জন অখট তাঁহার মায়র এক
 দেশীয়দিগের শিক্ষাকারী আন বাই । অ-
 মাদিগের মতে তাঁহার সগুন লোকেরা লন্দ্রা-
 মকের কার্য ভাগ করিলে ভাল হয়, এ কার্য
 করিতে হইলে ইহার তাঁর অন্যের হস্ত নেও
 রা কর্তব্য, অতিশয় সুখের বিষয় যে
 বন্দার ইউরোপীয় অগেলক। খিদিদিরা এক
 দেশীয়দিগকে অধিক বাসি দিয়া থাকেন ।
 ' তাঁহার বাহার বহু কথাইত আছে ।

সকলেরই নিকটস্থই আছে। কলিকাতায়
বিদ্যালয়স্থ এইটো টীকাগান পড়তে যে ছাত্র
এয়ে এইটো আছে এইটো খুঁজি নিগত করি
ন।। সকলের দুইটি ছিট রেইলওয়েস্থ
টের দ্বারা ইহার সব কলগনা জাপানি

কিন্তু তাঁহা অসম্ভব। অসম্ভব হইলেও
কিন্তু তাঁহা অসম্ভব। অসম্ভব হইলেও
কিন্তু তাঁহা অসম্ভব। অসম্ভব হইলেও

উক্ত গল্প এক খানি পান্না প্রকাশিত
হয়ে। অতীত। আন। বাইরে।
মেরী আপন প্রাণাধিককে তারিফ
করিয়া করিয়া দীন হুজা হা-
করিতে উৎসাহ দিতেছেন।
র কারোয় নদী এই বিস্তার
বুলিতে গল্প মিথ্যে
এনেছে কুনি কর করিতে
রিয়াছেন। তারিফ কর
হইয়া উঠে এই ভর হইতেছে।

२१॥ लोचन नमिषात्

জাহাঙ্গীর জমিদারকে প্রাণন বজায় রাখিয়া
 রাজ্য রক্ষা করিয়া ইংল্যান্ডে গমন
 লেন কন্যার পাণি প্রদান করিয়াছেন। অতঃপর
 তরু বংশে টিবাতিয়িক লোকের হইতে প্রাপ্ত
 পণ্যবোঝাইয়া জাহাজের মাধ্যমে
 কলিকাতা পৌঁছাইয়াছে। কোম্পানি
 ব্যক্তি করিয়াছেন। ইহার মাধ্যমে
 প্রাপ্ত পণ্যের মাধ্যমে, বহুবিধ
 জিনিস বাজারে পরিণত হইয়াছে।
 সিংহের দ্বারা প্রাপ্ত হইয়াছে।
 যোগীর দ্বারা প্রাপ্ত হইয়াছে।
 বৈষ্ণব হইয়াছে।

[illegible]

ইতিহাসের সন্ধান।

[illegible]

নিবন্ধগুলি প্রাচীন ক্রিয়াকার। ইংলও ও ফ্রান্স
লোকটি পান্ডার ভাষায় লিখিত। বর্তমান ওকে জাঃনন
নিবন্ধগুলি পাঠ্যক্রমের অন্তর্ভুক্ত করা হয়েছে বলে উল্লেখ
করা হয়েছে। নিবন্ধগুলি বর্তমান ওকে জাঃনন
লিখিত। ইংলও ও ফ্রান্স

କାର୍ଯ୍ୟବର୍ଦ୍ଧନ, କଳାକାଳକ ମତା ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

जिज्ञासुः अकृतिः पुनित्यत्र विज ।

মিলাপুর একটি স্থানের দ্বি-মসজিদ
কমিসনার হাউস কমন্ড কিছু অধিক দিন বাধি-
বার বিষয়ে যে দিন বইরাছে তিনি তাই সভার
অর্পণ করিলেন।

স্বদেশসেবায়
 'পরিবেশ সেরে জাতিতে স্থিতি'
 'মেইন সাহেবের আদর্শ'
 'পিতৃপুত্র' হইল

४। वायव्यभाषक मता ।

১.৬ শৌখিন জীবনযাত্রা ।

ইভের কাছে চলিত ভাষায় এক কুড়ন
বিল হতেছে, ইকাদা। আইত'নিক মাজ-
ইটের। অগরের শোক। হুজির উপরে কুর্স
করিতে পারিবেন।

नाउल न पुनक आवाँर कविवाँर मिल बिधि-
बद्ध हईल ।

শব্দার্থকোষ বিজ্ঞাপন।

বসন্তদিনে তখন লিখি আ। গমিউ নাহেব জঁহুণ-
 দিত গমিউবেন ততদিনে এট এন বিবীদ নাহেব
 আ। নাহেব জঁহুণিহাণ তনিসনর, বাজিগেব ।

ବିଜାପୁର ଡେପୁଟି ନାଗପୁର ଡେପୁଟି
 ଡି. ଲେଙ୍କେର ଡି. ଲେଙ୍କେର

महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई

১৩. পুণ্ড্রিক প্রভৃতিতে কণ্ট-বাঁজি-
 তেপুটি কানেক্টর বোঁলারী মাঝে মাঝে
 কণ্ট-বাঁজি হইয়াছে। কিন্তু এই প্রভৃতিতে
 কানেক্টর বোঁলারী (১৮-১৯) ২০
 ২২ খণ্ড-বাঁজি-
 কানেক্টর বোঁলারী (১৮-১৯) ২০
 ২২ খণ্ড-বাঁজি-

৩রা আকরাবি—চাকরার প্রতিদ্বন্দ্বিতা—
জুট ই জি কুটার সাহেব ১৮-৩৫ অক্টোবর ২
আইনের ২৭ ধারামতে নিষকট্টকিরত্বপরিষেও
কৌর জুটিসমাজ কলিতা এণ্ড কটরাহেব।

এক দিকটায় সাধের সাহ'বাদের বাকি-
টেটে ও বাংলা টের হইবে। কিন্তু বর্তমান অবস্থা
হুসুম না কর ওত্থিত ও প্রবেশে নিবিল ও সে-
সম ক্রম থাকিবে।

রাজসাহীরা এই ভিত্তি থাকিতেই ও কাল-
কীর এক, নি. মনপ্রাণের সাহেব এখন জীবিত মা-
কিতেই ও কালকীর হইবে।

ମୂଲ୍ୟ ୩ ଡଗଳମୁଦ୍ରା ଆମିଷାଣୀ କୁମାରୀ-
ଶାନ୍ତି କେ. ଅନନ୍ତନାଥ ଆମାଦ୍ୟର କାର୍ଯ୍ୟକ
କାରୀମୁଦ୍ରା ବାଣୀ ଦେଖାଯେନା ।

পুলিন ভলকীপুত্ৰেৰ অসিঙাওঁ অপায়িত্যোণী
ভবলিউ জাতীই সাহেব ভগলপুত্ৰে বদলি হই-
বাহেন ।

৫ ই জাফলবাণি—বেঙ্গলী পুন্ডের আফ্রিকানী
বাজিলেট ও কলেজের জি. ই. থাকিলেন সাঃ
১৮-৩৫ আফ্রিকানী ২ খানাত্তমানে বি-
সকটোঁর উপরিলেটোঁর কলডা পাইয়েন।

সাঁউতাল পত্নমহার আশিকট্ট কবিসমন
এতবলিট কসারেট সাংহেব ২৮৬০ অক্টোবর ৩২
আইন অফিসার রাজমহল বিভাগের আফিসিফ
আংসের ও ডেপুটি কালেক্টরের পদ প্রাপ্ত
হইবে।

প্রেরিত

শ্রীমতঃ সোমেন্দ্রনাথসহায়ক

মতেন্দ্রনাথ বসু ।

ସହାୟ ! ଏখানে କରଡ଼ାକୁଳାରି ପୁରୀର ବ-
 ହାସିତ ବସ୍ତ୍ରାଢ଼େ ଶ୍ରୀର ଆଦେଶେ ନିଜର ମାତ
 କରିଥିଲେ । ମାତ୍ରାମୟ ନିରୀବ ଏକାମ୍ର ଆ-
 ତାତନରୁପକୃତ ସେ ମକଳ ଚୌରାଢ଼ା ସଦୃଶ ସଦୃଶ
 ମନ କରିବା ଏହାର ଆଦି କାହାର ନାମକ ଶବ୍ଦକ ମୋ-
 ତର ହୁଏନ । ମକଳେଇ ମହାଶ୍ରୀ ଏକା ଏକା ଶିଖଣ୍ଡୀ
 ମହାଶ୍ରୀ ମହାଶ୍ରୀ ଏକାକେ ଏକାକେ ନିଜର ବି-

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

একাদশ কণ্ঠস্বর প্রদত্তী প্রদত্তী

সম্পাদক সচিব

গত ৮ই পৌষের সোমপ্রকাশে প্রকাশিত পত্রিকাতে বিবাহ কাল নির্ধারণের বিষয়ে

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

কুমারখালি নিবাসি

৩৩

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহোদয় সমীপে

আজ্ঞার নিমিত্তে, কতিপয় পত্রিকা প্রকাশের

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

অতঃপর বিবাহ কাল কিপ্রকারে নির্ধারিত হইবে।

সোমপ্রকাশ

“স্বসীমতা সত্যনিষ্ঠিতমঃ পার্থিবঃ স্বরক্ষণী সুরিন্দ্রনী ন স্বীযতা।”

৫ ডাঃ।
১০ম বর্ষ।

{ সন ১২৬৩। ৭ই মাঘ। ইং ১৮৬৩। ১২ জানুয়ারি }

দৈনিক
বারিক

বিজ্ঞাপন।

মুদ্রারক্ষণ।

১৮৬৪র এক্টনের নিমিত্ত মুদ্রারক্ষণ পুনঃ শোধিত হইয়া কলিকাতা মুদ্রাপুর বি-
লয়ার বন্ধে ১ টাকা মূল্যে বিক্রয় হইতেছে।
বিদেশীয় গ্রাহকগণ তথ্য বা সংকৃত কা-
লেজে ইঞ্জিনিয়ারিং বিদ্যালয়ের নিকট পো-
ষ্টেজ ও মূল্য পাঠাইলেন পাইবেন। প্রত্যেক
পাঠি খানার ওজন এক সের।

ইঞ্জিনিয়ারিং স্কুল।

বিজ্ঞাপন।

বাসবন্দা।

কবিবর ৬ মনমোহন তর্কালঙ্কার প্রণীত
পদ্যময় উক্ত উৎকর্ষ কাব্য অতি উত্তমরূপে
পুনঃ মুদ্রিত করা হইতেছে, অতি প্রেক্ষণিত
হইবেক স্বাভাব্য আবশ্যক হয় তিনি স্বীয় নাম
দাম স্বাক্ষর পুস্তক বহরমপুর নিবাসী জ্যেষ্ঠ
বাবু রামকান্ত সেনের নিকট মূল্য সহ পত্র মি-
থিলে পুস্তক ১০০র প্রাপ্ত হইবেন। মূল্য ১ এক
টাকা মাত্র। বিদেশীয় গ্রাহকগণ পুস্তক ভাঙে
প্রেরণ কারণ মাসুলের অন্য ৭০ জনা অতি
দিক্ পাঠাইবেন ইতি।

তাৎ ৩রা মাঘ। ১২৬৩ সন।

ঈরামঙ্গল সেন

বহরমপুর

বিজ্ঞাপন।

বিচার পদ্ধতি।

ইংলণ্ড প্রভৃতি দেশের প্রধান প্রধান
বিচারালয়ের বিচার পদ্ধতি দৃষ্টে যে সকল
বিচার পদ্ধতি প্রচলিত হইয়াছে, বিশেষতঃ

মহামান্য জে ডবলিউ স্মিথ সাহেবের প্রণীত
যে বিচার পদ্ধতি প্রধান প্রধান আদালতের
ব্যবহারার্থ ইংরাজী ভাষায় বিস্তারিত হইয়া
নিকশিত হইয়াছে, তাহা হইতে এ প্রবে-
শের ব্যবহার উপযোগী ও প্রয়োজনীয় এবং
ব্যবহার বিচারের নিয়ম বোধ গম্য হয়, এমনত
বিবিধ বিধান ভাঙার ডেপুটি কালেক্টর জ্যেষ্ঠ
বাবু ব্রজমোহন দত্ত ও অন্যান্য ব্যক্তিগণ ক-
র্তৃক মঙ্গল বদ ভাষায় অনুবাদিত হইয়া
জ্যেষ্ঠ বাবু গৌরমোহন দত্ত ও জ্যেষ্ঠ বাবু
দুর্গাকান্ত চক্রবর্তী কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে,
গ্রাহকগণ কাষাদিগের প্রহালনে তত্ত্ব করি-
লে প্রাপ্ত হইবেন মূল্য ১ এক টাকা মাত্র।

গুণ রামর্ষ

নিউ ইণ্ডিয়ান লাইব্রেরী

১২ই জানুয়ারি ১৮৬৩

বিজ্ঞাপন।

করিনপুর জিলার অধ্যাপক বাটকেয়ারি
মহম্মদপুর নামে যে পত্রনি তাহুক আছে,
তাহা মরণপত্রনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা
বাটবে। বাহাব নেই তাহুক মরণপত্রনি লই-
বার অঙ্গণ ত্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি
কলিকাতায় আর্ডার ফিনার কোম্পানির নিক-
টে আবেদন করিলে সবিশেষ রক্ষা জানিতে
পারিজে।

সোমপ্রকাশ।

৭ই মাঘ সোমবার।

১৮৬৩ অব্দে ১৩ আইন।

সে দিবস বাঙ্গলা দেশের স্যেপেটমেন্ট
গবর্ণর আজ্ঞা করিয়াছেন তাবড়া, রাজসা-

হী, মুরসিহাবাদ, কাছাড়, সাগর, দারজিলিং, মর্দীয়া, বনোহরে ১৮৬৩ অব্দে ১৩ আইন
লিত হইবে। এই আইনে এই বিধি
কোন মকুর যদি করায় তাহা
দারী আদালতে মকুরা
বও ও নিয়ম হইবে। এই আইন
গবর্ণমেন্টের এই বিধি প্রকাশিত
উদ্দেশ্যে, কি, বলিয়া না দিয়া
মকলে হুজিতে পারিবে
বিল তারতবার্য গবর্ণমেন্টের
বেবের প্রিয় পুত্র, তাহা
হওয়াতে গবর্ণমেন্ট ১৩ আইনকে
লইতেছেন। উক্ত আইন
জেনারেল এই আইন চলিবে
মর্দীয়া ও মর্দীয়া
সাহেবের মঙ্গল রক্ষা করিবে
বলা বাহুল্য।

করেক ১৮৬৩ অব্দে
বাইতেছে। ইংলণ্ডের
মকুরকে মকুরের অবস্থা
পত্র করিব
পত্র তেঁ। পাইতেছেন। ইংলণ্ডে
যদি এবেই আতিসাধা। সত্য
দেবীরদিগের স্বাভাবিক
অথবা রাজনীতি সংক্রান্ত
প্রকাশ হয়। অমনি মহাপুরুষেরা
বসেন, তা চবে ইংলণ্ডের
পারে না; কিন্তু কাপি হোল্ড, ই
প্রভৃতি ভূমিসংক্রান্ত যে সমস্ত বন্দোব
এক মল মাজের ভূমাদিকারিতা

জনকে যে ছুটি ক্ষতিতে পাওয়া যায়, অ
মীনারের গম্ভীর প্রকৃতির ঘোবই তাহার
অধিকাংশের কারণ করে না। ভারত
বের কুবকেরা অসংখ্যে নীলকরদিগের
বিরোধী হইয়াছে; তাহারা বহুকাল অস-
হ অত্যাচার সহ করিয়া শেষে নীলকর স
স্বার্থক পরিত্যাগ করিয়াছে। নিউপোর্ট,
গ্রাসগো প্রভৃতি নগরে মজুরেরা বেতন
হ্রাসের আশয়ে একতাক্ষ হইয়া যে প্রকার
প্রত্নদিগের ব্যক্তি বন্ধ ও প্রত্নপক্ষ অপর
মজুরদিগের আশ্রয় করিয়া তদ্রূপ অত্যা
চার করিয়াছে, তাহা এ দেশের লোকের
কখন জ্ঞান ও মরন পথে অবতীর্ণ হয়
নাই। এখানে কোন দল অত্যাচার সহ্য
করে? নীল কমিসন, এতদেশীয় সংবাদ
পত্র, মিসমিট্রি কোন দলের অত্যাচা
রের কথা বলিয়া থাকেন? নীলকর ও
চা-করেরাই যে অত্যাচারকারী গবর্ণমেন্ট
কি এ কথা অস্বীকার করিতে সাহসী হই-
বেন? কোন চা-কর বা নীলকর এ পর্য্যন্ত
নিজ কুবক অথবা মজুরের নিকটে প্রহার
সহ্য করিয়াছেন? কোন নীল বা চা-কর
মজুরদিগের অসমত বেতন প্রার্থনার উৎ-
সাহ হইয়াছে? নীল চাষ পরিত্যক্ত হইল
কেন? কুবকের ঘোব না নীলকরের অত্যা-
চার তাহার কারণ? যখন স্বীকৃতকারী দলে
রই অত্যাচার সহ্যমান হইতেছে, যখন ক
বক ও মজুরদিগকে তদানক অত্যাচার হ
ইতে মুক্ত করিবার প্রার্থনার চতুর্দিক হ
ইতে করণ হ্রাস উদ্ভিত হইতেছে, যেখানে
অসংখ্য অত্যাচার হইলেই গবর্ণর জেনারেল
পর্য্যন্ত তৎক্ষণাৎ জানিতে পারেন, সেই
কলিকাতায়ও যখন আইন ঘোষে সময়ে
সময়ে মহান অপকার হইতেছে, তখন গব
র্ণমেন্ট কি সাহসে নির্বাহক নীল প্রদেশে
আইন প্রচলিত করিলেন? ভাল! গ
বর্ণমেন্ট মজুরদিগের কুবকার বিধায় যেন
চিৎ্র না করিলেন, সর চার্লস উডের
তদ্রূপ ও মজুর দুটি কিংবদন্তি এড়াইবেন?

গতসংখ্যা চ'কা নিউসে এক খানি
বাংলা পুস্তকের সমালোচন কালে বলা
হইয়াছে, বাঙ্গালীরা এক্ষণে গবর্ণমেন্টের
প্রতি বিরাগ প্রদর্শন করিতেছেন, তাঁহা
দিগের প্রণীত 'ডাঃ ডাব্লিউ' সংবাদ পত্রে
সর্বদা গবর্ণমেন্টের নিন্দাবাদ দৃষ্ট হয়।
আর এক স্থলে চিবস সাহেবের নিথয়ে
লিখিত হইয়াছে, ইউরোপীয় কর্মচারি
দিগের দোষ দর্শন করিলেই এতদেশীয়
শ্রাবণীয় সম্বাদ পত্র তাহাকে বিপাকে কে
লিবার চেষ্টা পায়। চ'কা নিউস কোন্
চক্ষে ও কিরূপ অবস্থায় এতদেশীয় সংবাদ
পত্র সকলকে বিদ্রোহামুরাগী ও অতুতক্তি
মূল্য দেখিলেন ? গবর্ণমেন্ট এদেশী
রদিগের অনিষ্ট ও অপ্রিয় কাণ্ডের অনু
ষ্ঠান করিলে তাহাঁর প্রতিবাদ করা কি

সরাস্বতী ট্রিনিটিয়ান।

এ মহান জাতি ১৯১৭ সালে কলিকাতায়
তাইরা বর্ষাবিধি পূর্ণপূর্বব গণ-
নরসে মতায় অন্যতর সভা পদে
হিও হইয়াছেন। আনানিগের দেশে-
তিনিদি ভারতবর্ষীয় সভার ও কর্মস
সুগম অতি শীঘ্র ইহার সভা-
লা করিবেন; ইহার সম্মাননা
হুগ হইতে ভোপনি হই যাচ্ছে;
শও বদদেশের প্রতিমিদি হইয়া
কজাসা ধারা অকপট হুগ ই-
ধনা করিতেছে। এদেশী গের
ত বিবরে অঙ্গসংখ্য কক্ষ-
ইহার ফুল; সৌভাগ্য দী দে-
ওয়া যায়। অন্য অন্য লক্ষ-
এদেশে উপনীত হুগ
ন অনুভান দারা ইহারিটে
করিতে হয়, কিন্তু তিনি
তাজন হুগ আছেন। দেশের
করা ইহার প্রতি এমনি গীত ও
গ যে ইনি হুগ গবর্নর জেন লর পদ
হইবেন মার্বা এই আশা করি-
ছেন।

একশীয়েরা অযোগ্য পদে প্রতি
প্রভার স্থাপন করেন নাই ইহা হইতে
দেশের যে মহান অভ্যুদয় হাতের এক
হুগী মাশা আছে, ইনি মাজাজের গবর্নর
পদে অবস্থা কালে তাহা বাৎসরিক সকল
করিয়ছেন সেই চিব মবোরব পূর্ব করি
বার উপায় দী উপকরণ গারদীও ইহার
অন্যতর অপরিচিত ন। উৎসাহ,
স্বাধীনতা, হিতের উৎসাহ, প্রভৃতি ইহা-
করিতে পারে নাই। আর,
যদি এতিমিদি হইয়া আনিতা-
বিক্রম কবি, ইহার সবিধে
করিবে। আর, যাদের সুখ-
ভোগে সৌভাগ্য কবি, একটা
উপায় অতর ও দেশে সজ্ঞা পাতি-

য় যদি প্রভার ইতিমাদন করিবার ইচ্ছা
থাকে, তাহা পূর্ণ হুগ হুগ হুগ না। তিনি
যদি সুন্দররূপে আর কবির নিয়ম করিয়া
আখ্যল আর সৈধ্যইয়া দিতে পারেন,
আনানিগের ইলাজ গবর্নরমেট কখন প্রকার
উন্নতি সাধনার ব্যয়ে কাতরতা ও রূপতা
করিবেন না।

কি কি মাযোজ অনুভান করিলে
এদেশীয়দিগের সবিধে উপকর হইয়া
এইতি জামিয়ার সভাবনা আছে, তাহা
তাঁহার জ্ঞানদ্বারা করিয়া দিয়া নিঃসৃত
অন্যকে প্রায় পাঠিতে হয়। তিনি
এদেশে অনেক দিন ছিলেন, এদেশের
বিষয়ে তাঁহার সবিধে অতিমতা জরি-
গাছে। তাহা আনরা তাঁহাকে একটা
বিষয়ে বিশেষরূপে মনোনিবেশ করিতে
অনুরোধ করিতেছি, তাহা সম্পাদিত
হইলেই এদেশের যাবতীয় বিষয়ের উন্নতি
ভার উন্নতি হইবে সন্দেহ নাই। সে
বিষয়—শিক্ষা। হুগ চারিটা লক্ষ, হুগ চারি
টি এদেশের নাম, ও হুগ চারিটা গল্প
শিক্ষা হইলেই যে শিক্ষা সম্পূর্ণ হয়, সে
শিক্ষার নিমিত্ত আমরা সর চাবলস ট্রিনি-
টিয়ানকে অনুরোধ করিতেছি না। তাহা
এক প্রকার বিজ্ঞান বলিলে হয়। যে শিক্ষা
দারা এদেশীয়দিগের ধর্মনীতি ও বুদ্ধি
প্রভৃতি যাবতীয় বিষয় মার্জিত হয়, তাহা
শিক্ষার্থী আমরা অনুরোধ করিতেছি। তা
হুগ উদার শিক্ষা ব্যক্তিকে কার একপ
সামর্থ্য আছে, যে চিত্তকনের আসনকে
অপূর্ণ করিয়া এদেশীয় লোকের চিত্ত
কে সদ্য উৎসাহ সম্পন্ন ও অধ্যবসায়মান
করিয়া ফুলাতে পারে। কার একপ সাম-
র্থ্য আছে যে অপকর্মের ভীততাকে দূরী
কৃত করিয়া লোকস ও সজ্ঞাসাহসকে
হৃদয়ে বজ্রমূল করিয়া দিতে পারে। কার
এক সামর্থ্য আছে যে বুদ্ধি, বাহ্য
ও কাব্যাদি বিবিধী বিলুপ্ত আর বাধী
মতা প্রভৃতিক উদীপিত করিয়া বুদ্ধি

বাহ্যকরণে লোকস উদার শিক্ষাদান
বহুবার দিন। সম্পন্ন হইবার সম্ভাবনা নাই,
এক অর্থ কোথা হইতে আনিবে। এ দেশে
র সম্মান প্রায় পাওয়াও আবশ্যিক।
চারলস ট্রিনিটিয়ান লাক বেকিট সম্প্র
দায়ের লোক। বেকিটের গবর্নরী পদ
কালে তিনি এদেশে ছিলেন। ব্যয় সং-
ক্ষেপ কাব্যে তাঁহার বিলম্ব প্রাণী
আছে। ব্যয় সংক্ষেপার্থ তাঁহাকে অন্যত্র
হুতিক্রম করিতে হইবে না। তিনি
এক ব্যয়, সৈন্য সংখ্যা ও সৈন্যের ব্যয়,
পবলিকওয়ার্ড এবং ইংলণ্ডে ভারতবর্ষের
বলিয়া যে ব্যয় হইতেছে; তাহার এতি
হুতিপাত করুন, এই সকল বিষয় সংক্ষেপ
অপব্যয় নিবারণ হইলেই বর্ষাকালের
গণা ভ্রোতের ব্যয় আয়ের ভ্রোত বর্ধিত
ও প্রবাহিত হইতে থাকিবে। বাতল্যকপে
এ দেশীয় যোগ্য ব্যক্তিদিকে উন্নত পদ
এদান করাও ব্যয় সংক্ষেপের একটা উৎ-
উপায়। উপসংহার হলে আর একটা
বিষয়ের উল্লেখ করা আবশ্যিক হইতেছে।
অনেকের বেকশ সংস্কার জরিয়াকে
এখন রবর্নমেট সর শিক্ষাদান ভারপ্রাপ্ত
না করিয়া যদি কেবল সাহায্য দান প্রথা
অবলম্বন করেন, আমরা সে কৃতকাব্য হইতে
পারেন, চারলস ট্রিনিটিয়ান সেই সুসং-
কালের পরভর হইয়া বেন কার্য না ক-
রেন। আমরা পলীগ্রামের অভ্যুদয়ে বাস
করি; পলীগ্রামের সহকার সজ্ঞা জানি,
দ্রিগবিক্রম সাহায্যদান প্রথা অবলম্বন
করিয়া কৃতকাব্যতা লাভের আশিঃ অনেক
বিলম্ব আছে।

আমেরিকার হুগ।
যে বিষয় দক্ষিণ দিকের সমস্তি হুগ
অভিভাব করিয়া এখন মৌল্য বিক্ষেপ
করেন, সেই বিষয়েই আমরা দ্রিগবিক্রম
সাহায্যদান দাতা, সংপ্রদান প্রভৃতি
করিয়া ইহা হুগ করিয়া হুগ হুগ।
অন্যতর হুগ হুগ হুগ হুগ হুগ

১। জাতিগত পার্থক্যের দূরীকরণের নিমিত্তে
কর্তৃপক্ষ কর্তৃক। তাঁহার বিশেষণ
এই উপায়ে নিবৃত্ত হইয়াছে। কিন্তু এখানে
বলি সত্য কি না সন্দেহ বহন।
যদিও ইহা, ভারতীয় আন্দোলনের
কিন্তু পণ্ডিত সত্ত্ব বলা দেখিতেছি না।
কিন্তু বিচার যে একান্ত সাহস ও সাহসের
অবদান করিতেছেন, তাহাতে ততক্ষণ
অসম্মতি ও সন্দেহভিষিক্তে অসম্মতি
কেন্দ্র আশঙ্কা করিতে হইতেছে। তাঁহা
বিবেচনা কি একতা! কি সাহস! যতক্ষণ
অসম্মতি ও সন্দেহে অবশেষ করিতেছে, তত
বাহ্যে পরাভূত হইতেছে! পক্ষান্তরে সত্য
পণ্ডিত লিখনের বিস্তার সৌহার্দ্য সাহস ও
সেই সাহস করিয়াছেন। সন্দেহ বিচার
এককালে বন্ধ হইয়াছে। ততক্ষণ বাণী
এককালে বন্ধ হইয়া গিয়াছে। যাহা
যেই অসম্মতি ও সন্দেহ বিচার
অসম্মতি হইয়াছে। কেবল একান্ত সাহস
লিখনের যোগে অনুসারে সাহসিক
হস্ত করিয়া যেওনা হইতেছে। হস্ত
কিন্তু ক্রান্তি সেনা সাহসী হইয়াছে।
ইহারা বিলম্ব সাহস অবদান পূর্বক
করিতেছে। শুনা বাইতেছে সর্ব হাতেই
আম্র বাসেরা প্রভুবিদের বাসী লুণ্ঠন ও
গবর্ণমেন্টের সেনাবলে অবশেষ করিতে
হে। কলকাতা বিদ্রোহীদিগকে বিবিধ
আক্রমণ সহ করিতে হইতেছে। সন্দেহ
কোন্সের বিবরণ এই, এ মুহুর্তে অসম্মতি
বিবরণ ব্যতীত হইতেছে। সন্দেহ
সাহসীল বন জন বিদ্রোহী সেনাকে
পার বধ করাতে সত্যপণ্ডিত
রাহেন, যদি সাহসীলকে তাঁহার
সম্পর্ক করা না হয়, তাহা হইলে
গবর্ণমেন্টের আক্রমণ তাঁহার
যা আজ আক্রমণকে বধ করা
লিখনের ইহার প্রত্যক্ষ করিতে
সাহসী। কলকাতা এ মুহুর্তে
ধরিল। কলকাতা বিদ্রোহের

[illegible]

$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}$

३ मरहो...
नाम, ...
...
...
...
...

[illegible]

লগ্ননের এক রেইসওয়ে কোম্পানি দ্বারা
নল পাতিয়া বাদ্যধোনে একটি চলাইবার
চেষ্টা করিতেছেন। টিকেত অধির প্রয়োজন
নাই। একটি প্রতিযোক্ত ১৭০ ফোণ হাইবে।
আমরা কয়েক পেল্লারের দ্বারা গাড়ি চলিতে
দেখি এট।

কিন্তু যখন গাভ তথবাহি সর চারুল
 ত্রি বিনিয়ান পোর্ট আফিস এ উকলাস জন
 করিতে গিয়াছিলেন । তত্ৰত্য কর্মচারিকা
 ইহাতে বির কতিয়াছেন তাহাদিগের অনে
 কেব অর উদ্বিগ্ন । সর চারুল এখনি দিবে
 যেন প্রথমে হস্তাংশ না করেন ।

• ଓଁ ସାଂସ୍ ଜନିହାସ ।

ভারতবর্ষীয় সৈন্যের এক জন কর্মচারি
মকসলাইট সনাতার গায়ে নিজ শিখা নিশা
সম্পর্কনে সম্পাদকের নামে পুলিশ অভিযোগ
করেন, তাহ'তে প্রয়েন থাকেব আসামীর গ
ফ হইয়া বলিয়াছেন যে আসামী একশে অ
কারণ শিখা নিশা করা হইয়াছে ব্যক্তিগে গ
রিয়া অসুভাষ করিতেছেন এবং বাদীর বহা
গর হইয়াছে ডাল পুনঃ প্রেরণ করিতে ইদা
ত আছেন । অসুভাষই দাখল শাস্ত ।

ଦେଶାଧୀର ମନମାନ ଓଡ଼ିଆହିଲ ବିକ
କେନ କଢି କରେ ନାହିଁ ।

দিল্লীবেজেন্ট বলেন কারুণ্য ব্যক্তিচার
 মোখে ধরা পড়াতো জীবন মৃত্যু ও পৃথকের
 ক্ষমতা বুঝান করিয়া তাহাদিগের চোনের বিস্ময়
 নগরে প্রচুর করিয়া দেওয়া হইবে আর এক
 জন চোরের হস্ত কেমন রূপ দণ্ড কর্ণে ।
 কারুল আদিও সেই পূর্বকাল স্মরণ করাইয়া
 দিতেছে ।

ମହାନ୍ଦୀର ଉପନଳୟେ ନା-୧ ୧.୧୧.୧୧ ହଟେ
 ୧୦.୦୦.୦୦ ନକ ମୋକ ଆସି ମେନାମେର ୧୦.୦୦.୦୦
 ଯା:ତ୍ରୀ କାମୀରେ ମହାନ୍ଦୀର ହଟେନାମିନ ।

গণ্ড বারের কয়েকদিনের সিরিউ নামক

গলাঙ্গল-৭: ভারতবর্ষের বিচ্ছিন্ন কারী পারি
 তর্ক বহু বলিয়া তর্ক বিতর্ক করা হইয়াছে। ই
 তৎকালেই, লক্ষ্য বিধের আদ্যমাত্র হইলেই
 পৌর-বিধান লোপ নিবারণ হইতে পারে।

১. ইতিহাসে বিবৃত বসেন, বালালা দেবের
মেষ্টারকে মরবার ১৭ই জুলাই পাটনার
বাংলা করিষেন। প্রত্যাগমন কালে কিছু দিন
কালজিলাতে থাকিবেন।

ইহক পত্র আদো যদেন ত্রিবাঙ্কুরের রাজ্য
নিজ রাজধানীতে যদন করিবারে এইর কো-
চিনাখিলক্তি নাজাদেজ আনিবেক ।

উক্ত পত্র আছে। বসেন বাহু, কেশবদেব
সেন ব্রাহ্মণ্যভ্রাতারে আপনপুত্রের অন্নপ্রাশন
বিবাহের। আমাদিগের এক জন পাত্রভ্রাতার
নিমিত্ত পাঠাইয়াছেন, তৎকালে শৌভাগ্য
দিগের ন্যায় - "সাহু বা ৩, জীবা ৩" ইত্যাদি
প্রার্থনা করা হইয়াছিল। কেশব বাহু একপ
অস্ত্রিবেণ আমাদিগের শু একপ বোধ হইতে
হে না।

सायबतदर्थेय वायडापक मक। ।

-১৫ কাছারীস্থ মুখ্য কার ত্রাণদেবীর রাজ্যাব
নতিত মন্ডতা নগরদেশের যে নদী কইকোরে
সেইম সাতবে তৎসংক্রান্ত এক বিল সিংহ
কামিনী বংশে জগৎ করিয়া ছই নদীর
বাধ হি গোষ্ঠিতে অল্পমতি করিতাহেন।

তিনি আশে নাকালিত উপনিবেশের দ্বি-
-বার্ষিক বিচাৰের উন্নিতব মিল সিলেট কমিটি
ক'র সভাপতি ক'রিয়। তিনি নগাঁহের মধ্যে
'নগোষ্ঠী' গিটে বসিয়াছেন।

[illegible]

ইউরোপীয় সভ্যতায় ।

সংখ্যক ১৮ই ডিসেম্বর বাকি ছিল প্রবন্ধলেখক
স্বাপিত ৪৪ তাহারইকেন ইংলেণ্ড প্রত্যক্ষ আইক-
নিরন ধাপ ১ম প্রকাশ করিবে। আর গো-
ট গালেও নাজুয়ার কাউন্সিলকে প্রিন্সের সিং
হাসন 'ক' ক' অধ্যবসায় করিয়াছেন। সভাপতি
সিদ্ধান্ত বদ্ধার্থে অনুমোদন করিতেছেন।

ସମ୍ପାଦକ ଶ୍ରୀ ରବିଚନ୍ଦ୍ର କୁମାର
ସେନ ମହାନ୍ତି

কেনেবল লাক্ষ্যবান। দুইজন
সঙ্গী সাহায্য করিতেছেন। হঠাৎ
সেনাপতির সৈন্য লক্ষ্য করিয়া
উল্লসিত হইয়া আসিয়া উপস্থিত
হইল। তিনি সৈন্যকে
উদ্ভাবিত করিয়া
স্বয়ং তাহাদের
আগুণে লক্ষ্য
করিতেছেন।
সৈন্যের
আগুণে
লক্ষ্য

এজন কবি ওহাৰ্ভাৰ হুইটমেন
কবিতাৰেণ উইলিয়াম শ্বেক্সপীয়াৰ
কবিতাৰেণ আৰ্ণল্ড মাইলি
কবিতাৰেণ

তুলার আমায়েরি না আমায়েরি
মহাকবি উপাধিত হইয়াছে। গাভির
আমায়েরি কবিবর।

হোমিওপ্যাথি টিমসন কলিকতা
গেট শিউরি (কলিকতা) কলিকতা-১৬৬
ইন্ডিয়া।

কণ্ঠ—২৪৫ ডিগ্রি বহু। নারিকেল
রি সাংঘব টেনশ্যাক্স গুরু প্রাচীন
সাঁওলে ঘোষ করা হয় - ৭১ই মেসিয়ার
নর বিউকোয়েল উভয়বিধকারী হইবে
মিউইফ—১৩ই ডিসেম্বর।

ବିକ୍ରମ-ପଦ୍ମ-ମୋକ୍ଷେନ। ସୁପ୍ରସନ୍ନ-ସମ୍ପଦ-
 ହର। କୃତ-ସମ୍ପଦ-ସର୍ବ-ସମ୍ପଦ-ସମ୍ପଦ-
 ତପନ-ସୁଦ-ସମ୍ପଦ-ସମ୍ପଦ-
 ନାହିଁ ତାହାର ବିକ୍ରମ-ସମ୍ପଦ-
 ଆର, ନାହିଁ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ। ଆଜି ହର-

पत्रिका—२०४ दिनांक १०/११/२०२०
 राजधानी दिल्ली, भारत
 पत्रिका निदेशक राजेश कुमार

[illegible]

লগ্নম—২৫ই ডিসেম্বর। ১৩ই ডিসেম্বর
ভারতবর্ষে আমেরিকার উত্তরাংশের . ৭
ম্যাসেচাউসেটস্‌ জাতিসংঘ করির দুইজন
ভিত্তিক হটলেট সফাংশীকৃত মুক্ত করির
এ দুইজন দুইজন সেনাপতি কাল কালে প
আর এ সেনা আত্মক হটলেট সেনা বোধ হই
পূর্বকার মুক্ত হটলেট পারে 'কিন বিলাকর
কালে উপ বলা করিয়াছে।

জ্যোতবাল মরুসাইত দেপ নক মদী
 বিদ্যাপ কবিতা পবপাবে আঁসিয়াছেন, বি
 মনুষ্যকে পরাষ্ট বইয়াছে। ক্রুতান্তিকম
 প্রাবন্ধে নান প্রদেশে ব্যাটখিলি মনুষ্য

স্বাধীনতা আন্দোলন। সোমবারের পাহারার নিষি-
দ্ধ অভিযান উৎসাহিত কিন্তু নিষিদ্ধিত নয়। সপ্তম
পাঠ কামাঙ্গিনীর অকুটে ঘটিয়া উঠে ন', এমন
কি ৩১ শে তারিখের ও ৭ই অক্টোবরের পত্র দুই
পৃষ্ঠ ১৯ই আধিনে ও ১১ই কার্তিকের পত্র তিন
সৌর ৩২ শে দিবসে ও ১০ অক্টোবরের ও তিন
সৌর ৩৭ই দিবসের পত্র দুই পৃষ্ঠ ২৫ শে দিবসে
প্রতি বই আছে। স'মানতঃ সপ্তাহ কাল ঘ-
টিল ন, তাইলে কোন পত্র প্রাপ্ত হওয়া
তত্ব প্রাপ্তকের পক্ষে এক আশঙ্কা ঘটিল।
কলকাতা সপ্তাহিকাতার কোম'পক প্রাপ্ত ৫ইমে
প্রাপ্তকর প্রাপ্তকর নারী কালকাতা। কলকাতা
অধিনে সপ্তাহিকাতার প্রাপ্তকর। কলকাতা

[illegible]

১। জগদধি সাহাবা ন-
 ২। জগদধি সাহাবা ন-
 ৩। জগদধি সাহাবা ন-
 ৪। জগদধি সাহাবা ন-
 ৫। জগদধি সাহাবা ন-
 ৬। জগদধি সাহাবা ন-
 ৭। জগদধি সাহাবা ন-
 ৮। জগদধি সাহাবা ন-
 ৯। জগদধি সাহাবা ন-
 ১০। জগদধি সাহাবা ন-

६. म. म.
इ. प्र. वि. वि. वि.

काली

২২.৮ ডিনেয়ার ১৮-৬২,-

— • हाजि मज्झिमसक

স্বীকৃত সে, **বহানয়েষু ।**

অধ্যাপকের সংখ্যা
 ১৮৭৫ সালে পাঠক-
 ই আয়োজন মজিলপুর
 পাদশালিবিদ্যালয়ে
 উদ্ভিদাদমাত। লেখেন
 পুরোজালে সাহায্য
 আয়োজন বিশেষ
 এলিডলি কলেজের বৈদিক
 হাত যে তাঁদা
 তান করেন তাহা উহ
 বালিকা বিদ্যালয়ের
 আয়োজন আয়োজন ন
 এবং সেই সকল টা-
 । বিদ্যালয়ের কোন
 দ্বারা ব্যক্তি হয় না।
 তাহা হ'ল। বৈদিক
 বিদ্যালয়ের
 অধ্যাপক আয়োজন
 মজিলপুর টা।
 হ'ল। বিদ্যালয়ের
 আয়োজন
 কবি
 হয়।, কিন্তু
 আয়োজন
 এই বৈদিক
 হ'ল সে
 দ্বারা
 নান ক

[illegible]

७४ राजस्थान 'वर्षा' १९७४

২.৬ কিছুই আন : ১. ৬ ৬১।৬১ ৬১

निर्देशार्थकः श्रीगुरुदेवः ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

সে সময়ে ও আত্মশাসনত ব্রাহ্মণ্য পরিচালনা তাঁ-
হার মজিলপুর হাইস্কুলে প্রাপ্ত। য পরে গড় জাঙ্গাল
মান অবস্থি-বালিকা বিদ্যালয় বারপার বাই বী-
নাবহার পণ্ডিত হর পণ্ডে প্রিন্সিপাল বাহু গারানচন্দ্র
মিত্র আত্মপ্রদ করিয়া উক্ত কায়েদ ভারপ্রাপ্ত
করিলেন। এক্ষণে জুধাকরের মজিলপুর হা সৎ-
বাদনাও এক্ষণে হারান বাবুর প্রমুখ, ও উদ্ভি-
ত। ছেন না কোন কল্পিত অধ্যাপক হাণ্ড ও উদ্ভি-
ত। এই সংবাদ প্রচার করিয়াছেন ?

୪ର୍ଥ । ମ ଶୁଣିବ ଟାକାବ କିହୁ ବାଲିକା ସି-
ବାଲମୟେ କଥା ବାରିତ କଥା ନାହିଁ । କି ମି-
ବା । ବାଲିକା ବିଦ୍ୟାଳୟର ବଡ଼ମ ମଙ୍ଗଳାଧିକ
ଶିକ୍ଷକ ବାବୁ ଜୀବା ଚକ୍ରାବିହାରୀ ଉଦୟ ସେନ
ଏହି କଥାବାର ଅନ୍ତରେ ।

সম্পাদক মহাশয় এখানে আমি বিষয় পূর্কক
আপনার ক্রিয়াক্ষেত্র ক'রিতেছি। বিবেচনা করি
রা দেখুন এবিষয়টি বড় উৎসাহের বিষয় নয়।
উক্ত সুধাকর সংবাদদাতা আশা করিতে পারেন
কর কলসিক্ত ক'রিতেছেন। আমি দেখেছি হিন্দু
নামের দ্বারা সংগ্রহ করি এবং সে অর্থ তদ্বি
বয়ে খরচ হইবে। ইং। সামান্য কোষের কথ
নহে। যমের আগেই পাণ্ডা নাই সুধাকর স
কামক উচ্চতর প্রাণ ও সংবাদ দাতা, এ দ্বারা
আপনি সুধাকরকে সজ্ঞা করিয়া লিখিবেন।

মঙ্গলকোটের কথা ১৭২২ সনকত। দ্বিতীয় বর্ষ।
মঙ্গলকোট। গাউন ক'লত দীপ শিখাবনার।
তা'ব সন ১৭২২ তিথি ১৭ ওয়া। এতোক মঙ্গলকোট
কর্তব্য।

শ্রীমতী সোমপ্রকাশমঙ্গলা দত্ত

অছেদিয়েবু !

দুই শব্দ' গভীরস্বর এতদ্ব্যপেক্ষে ব্যাখ্যে যে কত
মহুবা বধ করিয়াছিল তাহা নাথায়; কহা নাই।
এবং সবও প্রায় তরুণ বইবার উপক্রম হইয়াছে
সমস্তই গৌ যেব ইত্যাদি পালদিশেও আবধ
করিতেছে। কিন্তু সত্যকথা প্রযুক্ত মহুবা মণ্ডলী-
তে প্রবেশ করিতে পারে নাই। কি তত্ব কি অভ-
জত সকলেই দুই এক দণ্ড যেন। থাকিতে খীর
সীর কর্তৃ সমাধা করেন। সমস্তার পব কেত গৃহেব
বহির্ভূত হয় ন।। সেই জন্মেই সমস্তীর সমস্তার
কবিত্তে পা'রতেছে ন।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीदेवनागरा नाथ काष्ठिक

ॐ शुक्लो

मन्त्राष्टाश्रि ।

[illegible]

১২৬৯ মাঘ চইতে আশ্বিন পর্য্যন্ত ৫ টি
 " " যজ্ঞসংস্করণে বসন্তোৎসব।
 ১২৭০ অশ্বিন চইতে ১০ টি পর্য্যন্ত ৫ টি
 " " সপ্তমাসে বসন্তোৎসব।
 ১২৭১ অশ্বিন চইতে ১০ টি পর্য্যন্ত ৫ টি
 " " সপ্তমাসে বসন্তোৎসব।
 ১২৭২ মাঘ চইতে ১০ টি পর্য্যন্ত ৫ টি
 " " সপ্তমাসে বসন্তোৎসব।
 ১২৭৩ অশ্বিন চইতে ১০ টি পর্য্যন্ত ৫ টি
 " " সপ্তমাসে বসন্তোৎসব।
 ১২৭৪ অশ্বিন চইতে ১০ টি পর্য্যন্ত ৫ টি
 " " সপ্তমাসে বসন্তোৎসব।
 ১২৭৫ অশ্বিন চইতে ১০ টি পর্য্যন্ত ৫ টি
 " " সপ্তমাসে বসন্তোৎসব।

সোমপ্রকাশ সংগ্রহ কলকাতা

विद्युत्-चुम्बक ।

‘অগ্রিম ফুলা বা পাঠিলে মফস্বলে নোনা-
কাল প্রেরণ করা যায় না ।

ইহাও অগ্রিম মূল-বার্ষিক ১০ টাকা মাপের
সিকিউরিটি। ছয় মাসের মধ্যে লক্ষ্য সাধন
করা হইলে মোট মূল্য ১০ টাকা হইবে।
অন্যথায় মূল্য ১০ টাকা হইবে।
১০ টাকা মূল্যের ১০ শতাংশ ১০ টাকা
মূল্যের ১০ শতাংশ ১০ টাকা মূল্যের ১০ শতাংশ

১৯৩৭ সালের ১৫ই আগস্ট তারিখে
 জা. প. ১০০-১০১ নং আইন দ্বারা
 গঠিত

১৫. এই প্রকল্পের সুদ-এর কাল ৩০ বছর হইবে।
১৬. এই প্রকল্পের সুদ-এর কাল ৩০ বছর হইবে।
১৭. এই প্রকল্পের সুদ-এর কাল ৩০ বছর হইবে।

১। এজন্য ১। জি। ২ নম্বর অত্রীত চ'
 রা ১৯৬০, ১। ১৯৬০, ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০
 প্রথমে ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০
 হাতে কোন উত্তর অথবা ফলাফল পাওয়া যায়
 কামজব ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০
 বিং পাঠ্য ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০
 সোজা আদর্শ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০
 মন্য নীত পাঠ্য ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০ ১৯৬০

ବୌଦ୍ଧ ବ୍ୟବସାୟ ସେବାକାଂକ୍ଷୀମାନଙ୍କୁ
 ଶୁଦ୍ଧତା ଦେବା ପାଇଁ ଲାଭିଲା ନା କାନୁନି
 ତାହା ଶୁଦ୍ଧ କରା ଯାଉଥିଲା ।

কেহ সোমপ্রকাশে প্রথম বাব প্রাক্ত প ১০
আনা। দ্বিতীয় ও তৃতীয় বাব ১০ আনা ব'দে।
বিত্তে হইবে তাহার পর ১০ আনা কবি
লগ্না বাইবে।

সকলের খাতির, সমর্থ ও ইচ্ছা, তাঁহা
নিম্নের অন্তর্গত কার্যসমূহ দিতে চাইবে।

এই পত্র কলিকাতার পুর্ব মাডল। প্রেসে প্রস্তুত
করা হইয়াছে।

११ प्रवर्ततां प्रकृतिरिदं वा अर्थिवः करसतो मुनिवदसोः ॥ श्रीवर्गः ।

2010年12月10日

बनी। यदि । कविता बनी।

कविप्रभु विनायक अष्टाशुभ बाटोको

মহাকুশল্যের নামে যে গভর্ণি ডাবুক আছে,
জাহা নরগন্তনি মেওয়া অথবা বিজ্ঞান কড়া
বাইবে। যাঁহার সেই ডাবুক বরণ করি নাই
যার অথবা ক্রম করিবার ইচ্ছা আছে; তিনি
কলিকাতার আন্তর্গত ফিরর কোম্পানির
টে পলিবেলস করিলে সবিশেষ হস্তান্তর
পারিবেন।

সেবাশ্রবণ

●●●●●

आदिनि अयदि गोमयकाटवन्न आदि

আজি অবধি মোমতাকাশের 'আজি
এক করিয়া হুজু হইবে।' অতঃপর বাঁহারা
বাহ্যাসিক মূল্য বান করিবেন, তাঁহাবিশিষ্টকে
৩১০ টাকা নীচ টাক। দিতে হইবে, 'আ-
জিক অগ্রিম মূল্য' (১০ টাকা) 'অগ্রিম'
বর্জিত হইল। 'মকবলের' গ্রাহকবিশিষ্টকে
মতল ভাক মানুল দিতে হইবে। 'বার্ষিক'
ডাক মানুল ৩১০ হয়, কিন্তু বাঁহারা মূল্য
ক্লেবল নশকাত চিটি প্রোজেক্টরী করিয়া
দিবেন, তাঁহারা তাহার কাম ('চাকি'
আনা) বাব পাইবেন। বাঁহারা 'মতল'
ডাক মানুল দিতে অনগ্রহ হইবেন, আজি
হইবেন, 'আজিকের' 'মতল' হইবে
তাঁহাবিশিষ্টকে 'আজি' দিতে হইবে 'আ-'

[illegible]

গোলা

১৮৫৭ খ্রিঃ। রিয়া দেখুন রেজেন্টের প্রাণ
কিন্তু কি যথার্থ বিচারের গণ্য হয় হইল
এক জন যথার্থ দ্বন্দ্ব দিয়া ভূমি জয়
যেহা তাহার বন্ধু হইতে বঞ্চিত হইল না?
তা যদি কেউ যদি বিজয়ের করেন-
নি মারি রেজেন্ট করিয়া লইত তাহা
হইলে সন্তোষে তাহার বন্ধু দুঃখ হইত
না। কিন্তু তাহার এই অঙ্গ অনুবধানতা-
তে কি তাহার সকল বন্ধু নষ্ট হওয়া
স্বাভাবিক? যাহাতে তাহার বন্ধু
বিদ্রোহী ও শত্রুতা অন্য কোন সহজ উপায়
নাই কি তাহার কখনও কখনও কর্তব্য নয়?
আর কি তাহার হইতে পারে কি উপায়

১৫
১৬
১৭
১৮
১৯
২০
২১
২২
২৩
২৪
২৫
২৬
২৭
২৮
২৯
৩০
৩১
৩২
৩৩
৩৪
৩৫
৩৬
৩৭
৩৮
৩৯
৪০
৪১
৪২
৪৩
৪৪
৪৫
৪৬
৪৭
৪৮
৪৯
৫০
৫১
৫২
৫৩
৫৪
৫৫
৫৬
৫৭
৫৮
৫৯
৬০
৬১
৬২
৬৩
৬৪
৬৫
৬৬
৬৭
৬৮
৬৯
৭০
৭১
৭২
৭৩
৭৪
৭৫
৭৬
৭৭
৭৮
৭৯
৮০
৮১
৮২
৮৩
৮৪
৮৫
৮৬
৮৭
৮৮
৮৯
৯০
৯১
৯২
৯৩
৯৪
৯৫
৯৬
৯৭
৯৮
৯৯
১০০

মর চার্লস উত্তর জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন গবর্ণমেন্টের চিহ্নিত সিবিল কর্মচারীরা কোন খনির কোম্পানির অংশী হইতে পারেন কি না? তদুত্তরে মর চার্লস উক্ত সিবিলরাহেন অংশ গ্রহণ করিবার পক্ষে কোন হানি নাই; কিন্তু তাহা ব্যবসায় স্বরূপ অর্থ বিক্রয় করা নিষিদ্ধ এবং যে প্রদেশে কোম্পানির কাজ চলিবে, তথায় তাঁহারা কোন পদ পাইতে পারিবেন না। ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট চা, নীল, তুলা প্রভৃতির বিষয়ে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন চিহ্নিত কর্মচারীরা কৃষি কার্যের কোন কোম্পানির অংশী হইতে পারেন কি না? মর চার্লস উক্ত তাহার এই উত্তর দেন।

করিত। কোন এক্ষণে ব্যবসায়ীর কার্য
করিত পারিবে না। যে প্রদেশে চা-
- - - - - কেবল থাকিবে তাহার কোন
কর পারিবে না। লাভ করিত প্রভাব
করিত। ছিলেন যে কর্তারী এই কার্য করি
বেন, তাহাকে আর উন্নত হইবে যেওনা
হইবে না। সর চারলস উক্ত কাহাতে ন
হইয়াছেন। পক্ষান্তরে বিলিটোরি
কর্তারীরা এক্ষণে কোন রাজার অ
ধিকার মধ্যে কুরি করিয়া অন্য - - -
কর করিতে পারিবে না।

[illegible]

নাহাতরে ভালুক এতুতি করি করি
কেন। অনেকের নীল ও চা...
আছে। যদি ইহা সত্য হয়, তাহা...
নীল ও চা... অত্যাচার...
য়ের বিষয় আছে। এ দেশীয়...
সকল অদ্যাপিও অতি...
আছে। তাহার উপর কর্তৃত্ব...
সায় সযত্ন থাকিলে অত্যাচার...
কেন? অতএব গবর্ণমেন্টের কর্তব্য...
তীয় কর্তৃত্বারির নিকটে এই...
করাইয়া লম্বে, যে যে...
কর্ম করিবেন, তত্বে...
ভূমি অথবা ব্যবসায়ের...
থাকে। তাহার এ...
তাহানিগের উন্নত...
নহে; তাহানিগ...
করা কর্তব্য।

[illegible]

ইহার বেতন মাসিক ১৫০০ টাকা অধিক
হইবে না। প্রতি বৎসরের আরম্ভে সভা
পতি রাজধানীর পোতা হুজি হেতু এক
শত ব্যয়ের হিসাব ও মিউনিসিপাল কর
হুজি প্রভৃতির প্রস্তাব করিবেন। উক্ত
মাসিক টেন্ডা এই গুলি বিবেচনা করি-
য়া ব্যয় সংশ্লিষ্ট বা হুজি, অথবা অন্য
কোন পরিবর্ত করিতে পারিবেন। বিশেষ
প্রয়োজন উপস্থিত হইলে সভাপতি সভা
সময় সভাস্থলে আহ্বান করিবেন, এবং

নি ও সহকারী সভাপতি আর পাঁচ
জন সভা একত্র হইলেই সভার কার্য হই-
বে। পক্ষান্তরে দশ জন সভ্য এক মত
হইলে সভাপতিতে সভা করিতে বলিতে
পারিবেন। যদি তিনি এ অনুমোদন প্রত্যা-
না করেন, তাহা হইলে এ দশ ব্যক্ত অন্-
য সভ্যদিগকে আহ্বান করিয়া আপা-
২ টি করিতে পারিবেন। সভাপতি

সহকারী সভাপতি অনুপস্থিত অথ-
বা দেখি এ কথা যদি তিনি অংশের দুই
অংশ সভা এক মত ইয়া বলেন, তাহা
হইলে সভাপতিগকে পরচুক্ত করা হইবে।
সভাপতির সহায়তার জন্য এক জন ইঞ্জি-
নিয়ার ডিউটিংসক ও কর নির্ধারক নিযুক্ত
করবেন। সভাপতি ইঞ্জিনিগকে নিযুক্ত
অথবা পরচুক্ত করিতে পারিবেন। যে
সকল কর্মচারির বেতন ২০০ টাকার মূল
ট হাদিগকে সভাপতি নিযুক্ত অথবা পর-
চুক্ত করিতে পারিবেন। সভাপতি সময়ে
সময়ে কোন ক্ষুদ্র কার্য বিবেচনা করি-
বার জন্য বিশেষ কমিটি করিতে পারিবে
ন। কিন্তু এই বিশেষ সভা কেবল পরা
মর্শ দিবেন; কোন বিষয়ের প্রতিবাদ ক-
রিতে পারিবেন না। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর
যদি যোগ্য বোধ করেন সভাপতির হস্তে
রাজধানীর পুলিশের ভার সমান পারিবে
ন। নগরের পোতা হুজি বাঁধার জন্য
যে যে প্রকার আবশ্যিক তাহা নগরবাসিনী
গকে দিতে হইবে, কোনরূপে সহজে

থার প্রায় হইতে দেওয়া হইবে না।

এই প্রস্তাবটি অনেক অংশ উল্লেখ
হইয়াছে সন্দেহ নাই। কিন্তু ইহার আ-
র্থিক অস্বহীনতা দোষও দৃষ্ট হইতেছে।
একশত কলিকাতার পোতা হুজি হেতু এ-
কাধক লক্ষ টাকা কর স্বরূপ আদায় হয়।
ইহার মধ্যে ইনকমট্যক্সের শতকরা এক
টাকা আছে। কিন্তু আপাততঃ যে এক
ভ্রম হইতেছে তাহাতে ও অন্য অন্য বি-
ষয়ের ব্যয়, আর অপেক্ষা অধিক হইতে
ছে ভবিষ্যৎ আর দশ লক্ষ টাকা কর্ত্ত
করিতে হইবে। ইহার সুদ এবং নিয়মিত
ব্যয় নির্বাহের ভবিষ্যৎ উপায় কি? ইতেন
সাহেব তাহার কয়েকটি উপায় প্রদর্শন
করিয়াছেন। গবর্নমেন্ট গহাটীর (ট্রাণ্ড)
হাফিয়া দিতেছেন। তথায় সভা কয়েকটি
গড়া করিবেন। যত দিন গড়া না হইতেছে,
তত দিন তীরে বাগিচা জব্বা রাখিগে
তদুপরি প্রতি টনে ২ টাকার অধিক কর
লওয়া হইবে। এ প্রকার গবর্নমেন্টকে
কলিকাতার খালও হাফিয়া দিতে হইবে।
তার তীরে জব্বা রাখিলে কর লওয়া
হইবে। আপাততঃ ধাপায় যে পরিমাণে
মাংস লওয়া হয় তাহারও কিঞ্চিৎ হুজি
করা যাইতে পারে। ইহাতেও যদি ব্যয়
কুলান না হয় মুটে, পাঁচকেড়, দোকান
দায় প্রভৃতি ক্ষুদ্র ব্যবসায়িদিগকে প্রতি
বৎসর দুই টাকার অধিক কর দিতে
হইবে। এক্ষিত্ত যে সবল ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
বড়, ঘরের ও কুটারের কর নাই তাহার
কর লাগিবে। গাড়ী, ঘোড়া প্রভৃতিরও
কর সংগৃহীত হইবে। ৩২৭

তারতবর্ষীয় সাধারণ ধনাগার হইতে
কোন বিশেষ স্থানের উন্নতির নিমিত্ত টাকা
দেওয়া আমাদিগের নিকান্ত অন্যত
যাহাতে তারতবর্ষীয় গবর্নমেন্ট
তাহা আবশ্যিক একপ অংশ

যদি প্রায়
মোদন ক-
ব্যক্তিগের
ক্ষুদ্র ব্যবসা
যে প্রস্তাব
গের বক্তব্য
হুজি ক- , তাহা
নাই বটে কিন্তু
হইতে কর এবং
যদিও অত্যাচার অ-
পলীগ্রাম হই
হইবে না।
জব্বার উপ-
কির একটি ই
মিউনিসি
র্নমেন্ট নিরে
প্রস্তাব করা
অনুমোদিত
বেতনের মত
প্রতিমিহি হা
করিলে কি
ডারমানব
যে ক্ষমতা
মাসিক ট-
ব করা না
আর বয়েক ব-
অবশ্য জাতিস-
বে সন্দেহ নাই
রিবার প্রথা
লিত করা
নিয়োগ তার
বিবেচনা

১৫ সভাপতি
বলিয়া যে
হিত করা
বর ব্যয়ও
হইবে। ই
সভাপ
লিখিত পত্র উত্তর
বর্ষ হওয়া চুক

মহাসভার
যে যে বিষ
তি লিখলেন
র সঙ্কট সম
পূর্ণ পূর্বের
ই নাই বটে
এক ছুরবর্ষ
আমেরিকার
ঠাছেন তাহা
র ক্রীতদাস
যে সঙ্কট
তি সত্তা
বিভাগের

লিলেন দেড়
এককালে রক্ত
দাবনা ছিল না
ক্রান্তি জাহাজ
করিতে সমর্থ
টির বিস্তর যুদ্ধ
বাণিজ্য জা

যুদ্ধ উপলক্ষে বিস্তর ব্যয় আবশ্যক হও
যাতে গবর্নমেন্ট মোট অচলিত করেন।
এ মোট গবর্নমেন্ট চলিত টাকার ব্যয়
মিজে কর স্বরূপ গ্রহণ করাতে তাহার
মূল্যের বিশেষ ক্ষতি হয় নাই। কিন্তু বরা
বর কাগজ অচলিত রাখা যুক্তি সিদ্ধ নয়
বলিয়া তিনি নগদ টাকা আদান প্রদান
করিবার প্রস্তাব করলেন, অথবা বলিলেন
মুদ্রায়ও কিছু পরিবর্তন করা হইবে। এক
শে আমেরিকায় প্রতি বৎসর ১১৬ কোটি
টাকা ব্যয় হইতেছে। সভাপতি আসন্ন
প্রাণী বিষয়ক কয়েকটি পরিবর্তনেরও
প্রস্তাব করিলেন।

দাসদিগের বিষয়ে লিখলেন বলিলেন হা
হারা এই যুদ্ধের সময়ে স্বাধীনতা লাভ করি
বেন, তাহারা তাহা চিরকাল ভোগ করিতে
পারিবেন। দেশের যে সকল প্রদেশে দাস
রাখিবার প্রথা ১২০০ অব্দ পূর্ণ হইবার
পূর্বে উঠিয়া যাইবে, তত্বে লোকদিগকে
ক্ষতি পূরণ স্বরূপ গবর্নমেন্টের কাগজ অ
থবা নগদ টাকা দেওয়া হইবে। এ প্রস্তা
বে, লিখলেনের উদ্যোগ প্রদর্শিত হইয়াছে
বটে, কিন্তু তিনি অদ্যাপিও দক্ষিণ বি
ভাগের সুপারেক্স করিতেছেন। তাহার
প্রমাণ এই, তিনি বলিলেন, যাহারা গবর্ন
মেন্ট কাগজ চাইয়া দাসদিগকে মুক্ত করি
বেন, তাহারা যদি পুনর্বার এই প্রকার অনু
সরণ করেন, তাহা হইলে তাহাদিগকে যে
কাগজ প্রত্যর্গণ করিতে হইবে ইহার
অর্থ কিভাবে কি দাসদিগকে নিকৃষ্ট
মিক আর্থানতা প্রদান সভাপতির অতি
প্রেরণ নয়। আর যুদ্ধ দাসদিগকে জনপ
দের বাহিরে স্থান প্রদান প্রস্তাবটিও আ
গর নিকটে ন্যায়ানুগত বলিয়া প্রতী
ত হইবে না।

আমেরিকায় ১১২,০০,০০,০০০
হইয়াছে। যুদ্ধ শেষ হ
হইবার সভাপতি

১০৪ ধানি পালি দেওয়া জাহাজ আছে।
লৌহাকৃত জাহাজ ও বিস্তর কাগজের
নৌকা প্রস্তুত হইতেছে। আর লক্ষ সেনা
যুদ্ধক্ষেত্রে আছে। এত টাকা, এত জাহ
জ ও এত সৈন্য থাকতেও গবর্নমেন্টে
জর হইতেছে না। তাহার কারণ গবর্নম
েন্টের এক জনও উত্তম সেনাপতি নাই।
তাহা হইলে দক্ষিণ বিভাগ এতদিন নিঃ
সংশয় পরাজিত হইত। নেপোলিয়ন নিজে
এক কালে এত সৈন্য রণক্ষেত্রে কখন
হুগা যান নাই। সভাপতি বিজ্ঞোহ নিঃ
রণ করিবার নিমিত্ত দৃঢ়তর প্রতিজ্ঞা করি
য়াছেন। বিজ্ঞোহিগের গুরুতর দণ্ড বি
ধান করা তাহার একান্ত অভিপ্রায়।

সভাপতি লিখলেন বিপক্ষে রা যেসক
বলুন, আমাদিগের বিরুদ্ধে বোধ হইতেছে
তিনি এক জন বখাৰ্ঘ উপযুক্ত লোক।
কিন্তু তাহার অধীনে উপযুক্ত রাজনীতিক
অথবা সেনাপতি নাই। গারিবল্দি
য়াল তিনি, লাড ক্রাইড অথবা রাসাল
পেলিসিয়ায়েব না। এক জন সেনাপতি
থাকিলে আমেরিকাকে এ যুদ্ধ যুদ্ধে এত
কাল দখল হইতে হইত না।

ব্রাহ্মণের প্রতিবন্ধ।

বঙ্গদেশে কেবল বেঙ্গপাঠনা বৈদ্যোক্তিত
ব্যবতীর ধর্ম্য ক্রিয়াকলাপ বিস্তৃত প্রায় হই
রাছে। আর সে ধর্ম্যপোষ্য দান নাই,
সে অস্বীকার নাই, সে জাতিভেদ নাই, সমুদায়
ইহা লোপ পাইয়াছে। কিন্তু কতিপয় প্রদেশের
বঙ্গে সেই জাতির পুনঃ প্রচার হইবার উপক্রম
হইতেছে। লক্ষ্যিত, ব্রাহ্মণ্যধর্মের
ক্রিয়াকলাপ কেন্দ্রবিন্দু বেনের (যিনি ব্রাহ্মণ্য
উপাসি পাইয়াছেন) পুত্রের আত্মকর্তৃ হইয়া
গিয়াছে। আত্ম কর্তৃ বঙ্গদেশকে পরিভ্রমণ
করিয়া এত দুঃখ প্রদর্শন করিয়াছে যে
কে কেশব চন্দ্র গোস্বামী এই ক্রিয়াকলাপ
উদ্ভূত দেখিয়া বখাৰ্ঘ বিস্ময়গত হইয়াছেন।
অন্য কথায় হইয়াছে যে আমাদিগের
অন্যকর্তৃ ব্রাহ্মণ্যধর্মের প্রচার

করিয়াছেন। এক জন আধিকারী কর্তৃক জন
স্বত্বাধীনে জীলোককে কলিকাতার নিকট
টব্রিট একজনকে বন্দকরিয়া আনিয়া
নিজ চাকরে রাখিয়া ছিল। এই প্রকৃতি
কার্য প্রেরিত এক ছুরকা ডিহানিককে
দীপার করিবার জন্য লোকের জুড়িয়া এক
বাঙ্গালী জাহাজে বন্দপূর্বক লইয়া যায়। পরে
ডিহানিককে চট্টগ্রামের এক গর্ভভে রাখে
চাকরের লোকসংখ্যা হ্রাস করিয়া
আজ্ঞা করে একাধি করা হইয়াছিল।
এক জন দারোগা কার্যক্রমকে তদার
গিয়া এই হত্যার আনিয়া রিপোর্ট করেন। জী
লোকেরা হৃত হইয়াছেন। তারফ বর্ষ ক্রমশঃ
হ্রাসিত কারোজিনা হইতে চলিলেন, যদি স.
খান সভ্য হয় তাহা হইলে চাকরের মাঝ
জীবন কারাবাসের আশা দেওয়া কর্তব্য।
তদাঙ্গার একপে গুরু দণ্ডনা হইলে সকল
ইউরোপীয়ের প্রতি ভারতবর্ষবাসিদের
অধিবেশন হ্রাস হবে।

৮ই মার্চ মঙ্গলবার।

কিনিক অনিরাহন ২৪ পরগণার বা-
জায়ে ৬৪ অধীন কর্তৃক পানার বাসিক ১৫
টাকা বেতনে কতকগুলি ডাকঘর নিযুক্ত
এই দেশে সর্বত্রই এই কণ হইলে ভাল
হয়।

গোয়ে সাটাডে রিকিউ বলেন যে ২৪
আজি বিদ্রোহী কলিকাতার দূর পশ্চি-
মার্গে। পথে নামা সাহেবের দ্বারা পড়ার
নয় না হয়।

আলোহাবাদ গেজেট বলেন তথ্য গবর্ন-
মেন্টের জিলা ও টেলিগ্রাফ অফিস নি-
খা-পার ইংলণ্ডীয়গবর্নমেন্টে ১৬ লক্ষ টাকা ২-
লক্ষ কলিকাতা

তিনি আরও বলেন যে আগের পোষ্ট
অফিসের কর্তৃক জন বাহু হিউগ নঃল লও-
য়া ও অন্যান্য অপরাধে কারা ক্রম হইয়াছেন
চৌধুরী প্রাণ কতক গুলি অসুস্থ লোকের
বাহুগিরির উপায় হইয়া থাকে। এই সকল
লোকের এই দেশের কলঙ্কের কারণ হই-
য়াছেন।

আজি অধ্যক্ষ নিম্ন লিখিত পত্রখানি প্রা-
কটন বক্তৃতা অংশটি পরিচালনা করিয়া এই-

কালে প্রেরণ করিয়া। আদি শান্তিনন্দ আ-
জার পূর্বক সর্বসাধারণের গোচরার্থ প্রকাশ
করিতেছি যে বর্ষ ২২ এ পৌষ
বাংলা মহানবীর আত্মশ্রিত্য প্রদেয়ীয় হু-
খি লোকসিগের সাহায্য জন্য অর্থ সংগ্রহার্থে
এক সভা হয়। তাহাতে প্রায় ৩০ লক্ষ টাকা
সংগৃহীত হইয়াছে। এই সভার অর্থব্যয় বিদ্যা
লয়ের প্রধান শিক্ষক শ্রীযুক্ত বাবু প্রিয়নন্দন
মোহন যে বক্তৃতা পাঠ করেন তাহার সারাংশ
পাঠাইতেছি অতঃপর পূর্বক মহানবীর বিখ্যাত
পত্রিকাখানি স্থান স্থান করিলে যথোচিত
বাখিত হইবে। নিবেদন।

মহানবীর এইরূপে স্থানে স্থানে স-
ভা করিয়া আগন্তিকের গুরুত্ববাহকতাদি-
গুণের পরিচয় প্রদান করুন।

৯ই মার্চ বুধবার।

কিনিক বলেন লর্ড এলগিন ও লেডি এ-
লগিন উভয়ে একত্রে সভা করিবেন। ২৩এ রা-
ত্রি ১ টার সময় এই সভার অধিবেশন হইবে।
তিনি আরও বলেন ফেন্সিগিয়াল মেম্বর সন্ন
চারলস ট্রিনিটিয়ান পরিবার মিলিটারি কিনাক
ডিনাটমেন্টের অধ্যক্ষসিগের আকিস মেম্ব-
রে গিয়াছিলেন সোমবার কঠিন হাউস মেম্ব-
রে যাইবেন।

আউড গেজেট বলেন যে, এলাহাবাদের ল-
কনোট ও গ্রুপসিটেগেট, ডবলিউ ডবলিউ
ক্যাম্পবেল সাহেব এলাহাবাদ ও অধরলপুর
রেজমেন্টে স্ট্রীটসিগের নিকট হইতে বাসি-
ক ২০.০০ টাকা বেতনে লোক। ট্র্যাকিক ব্যা-
নেজরের আকিসে নিযুক্ত হইয়াছেন।

তিনি আরও বলেন য. আদালত আ-
লিহ বিপক্ষে দস্তাখানি বলিয়া যে অভিযোগ
হইয়াছিল এক্ষণে লন্ডনে ডেপুটি কমিশনার কা-
পার সাহেবের উপর ডাক্তার তদারকস্বানের
চারপন হইয়াছে, গুলিয়া সম্বন্ধে হইল।

তিনি আরও বলেন যে মারকুইন ব্রিডাল-
বনের হুজুর পর লেফটেনেন্ট ডবলিউ সি কা-
ম্পবেল সাহেব জাহান পত্নীর ও সম্পত্তির উপ-
করাদিকারী হইয়াছেন। তাহার সম্পত্তিও
কম নয় ১৫০০০ টাকার অধিক হইবে। কাম্প-
বেল সাহেব এই অতুল সম্পত্তির অধিকারী

হইয়া
হন, এই...
কিনিক...
১ টার সময়...
দ্বিতীয়...
লাল...
সাংগে...
কিনিক...
বলিতে পারিল।
টাইমস...
নব্বয়...
নামক...
রা...
নাহি...
পাই।
নিডান্ত...

এক জন...
হীকা...
হিল...
সে...
ইহাতে...
ব্যতীত...

১০ই মার্চ বৃহস্পতিবার।
মাজাজে...
হেন।
নিকটে...
হেন।
প্রতি...
অকটোবর...
লগনে...
ভারতবর্ষ...
বে।
অনেক...
মাজাজ...
রাজা...
উক্ত...
বাহুগিরি...
হেন।

ডবলিউ...
জি...
মূল...
চিগবে...

১৯৪৬ খ্রি. জুলাই মাস ১৫ তারিখ
 ১৯৪৬ খ্রি. জুলাই মাস ১৫ তারিখ

করিয়াছেন। অন্য তাহার স্থিতি হইতেছে।

যেহা অবস্থিতি অনুমান করেন সমুদায় ভারতবর্ষের অর্ধ এক প্রকার রেওয়ানী আইন করিবার যে কমিশন হইয়া তাহার প্রস্তাবের দ্বারা পক্ষ সত্তার আগত অভিবেদনে অপরাধিগের রিপোর্ট প্রকাশ করিবেন। ভারতবর্ষের এক প্রকার দায় ভাগ হওয়া অসম্ভব তবে জ্যেষ্ঠাধিকার প্রচলিত করিতে পারি এক দিবস সভায় থাকে।

উক্ত সভায় সার চার্লস উডের সিবিলাইজেশন কমিশন, মুনি ও ব্যবসায়ের বিষয়ে আচার্য প্রভিভাস করিয়াছেন। সার চার্লস উড বাহা করিবেন জিরাইজেশনের সভাপতি তাহার কিছুই ভাল বলিবেন না। প্রথম কথা।

কিনিক বসেন রেভিনিউ বোর্ডের হস্তে ইনকম ট্যাক্সের কার্য বাইতেছে। কলিকাতার কমিশনের বর্গ বিদ্যাস পাইবেন এবং তাহাদিগের সেক্রেটারির পদ উঠিয়া যাইবে। কোন ক্ষতি নাই।

উক্ত সভা বিশেষ কারণে বসিয়াছেন সার চার্লস উড সিবিলাইজেশন নীতি ইনকম ট্যাক্স উঠাইব মনে। ভারতবর্ষ তাহার নিকটে এই প্রস্তাব করেন।

১১ই মার্চ শুক্রবার।

ভারতবর্ষের গণপরিষদের অধিবেশনে সার চার্লস উড আজি দিয়াছেন ১৬ লক্ষ টাকা ব্যয়ে আলাহাবাদে হস্তম আকিস প্রকৃতি হইবে। কাগজ পাইল এই তার প্রস্তাব প্রস্তাবিত। হস্তম কল্যাণী কোম্পানি বাজী প্রস্তাবের তার লইবেন।

উক্ত পক্ষিগণের পক্ষের রেওয়ানী আদায় আদায় দিয়াছেন যে কোন সিভিল পক্ষিগণের ব্যক্তিগত দিখা সাক্ষী দিতে পূত করিবেন, তাহা কই বাজির্গেটের নিকটে প্রকাশ করিবেন নচেৎ নিজে অসুস্থমান করিয়া সে দিনে সমর্পণ করিবেন। সকল সময়ে একজন হয় তবেইত।

ইংলিসমান মিস্ত্র কপে অবগত হইয়াছেন এডমন্ড টোনসাহের পক্ষভাগ করিলে বারিংটন সাহের তদীয় পক্ষে নিযুক্ত হইবেন আমা সিভিল ইন্স ও তাই।

রিকর্ডার বলেন বক্তব্যের এক জন দাখা

কী হুজুর বক্তব্যের সময় আসিডেডিলী তাহারক হস্ত করা হইয়াছে একত বোধ হইয়াছিল।

উক্ত পক্ষ লগুন হইতে সংবাদ পাইয়াছেন সার হিউরোকে পক্ষভাগ করা হইবে হিউরোকে। ভারতবর্ষের প্রধান সেনাপতির পদ উঠিয়া যাবার সম্ভব। প্রত্যেক প্রেসিডেন্সির এক এক জন সেনাপতি হইবেন। সার রবার্ট মেগিরর বৃহৎ ডিপার্টমেন্টের সেক্রেটারি বরণ সকলের উপরে কর্তৃত্ব করিবেন। কেবল জিউক অব সার হিউরোকে বিচারের অধিকার অন্য যদি পক্ষভাগ করেন তাহা হইলে ইংলণ্ডের সেনাপতি এক জন বীর হইয়া যাবেন। কলী ও প্রিন্সলী বটত বিষয় যদি এত দোষের হয়, ডিউক অব কেবল ইহা অপেক্ষা গুরুতর দোষ করিয়াছেন। বর্মণীতির বিষয়ে ইংলণ্ডের প্রধান সেনাপতি বিখ্যাত নহেন অধিক কি রানী পিতৃব্য হইলে তিনি নিজে এত দিন পক্ষভাগ হইতেন।

টাইমস অব ইন্ডিয়া বলেন মলীপ সিংহের তত্ত্বাবধায় সার জন লোগিন বোম্বাইতে আসিয়াছেন।

কিনিক বলেন কিছুদিন পূর্বে ভারতবর্ষের রেইলওয়ের একেটের আকিসে এক সভা হয়। তথায় চতুর্ভুজের শকটের আবশ্যকতার বিষয়ে তর্ক হওয়াতে অধিকাংশ সভ্য ইহার বিরুদ্ধ মত প্রকাশ করিয়াছেন। রেইলওয়ে কোম্পানি আপনাদিগের পার আপনারা কুঠার মারিতেছেন।

রেইলওয়েতে জীলোকদিগের শকটে বেশাদিগকে বাইতে দেওয়া উচিত নহে। অন্য এই বলিয়া যে প্রস্তাব করিয়াছিলম ইন্ডিয়ান রিকর্ডার তাহা সঙ্গত ও হাস্যের উপযুক্ত বলিয়া জিজ্ঞাসা করিয়াছেন। কে বেশা, কে তত্ত্বাবধায়, ইহা কিপ্রকারে জানা যাইবে? আর তাহাদিগে বেশাদিগে কিজন্য না অন্য অন্য জীলোকের সহিত, এক শকটে বাইতে পারিবে? রিকর্ডার এ প্রশ্ন এক জনের সম্মুখীন হইয়া উত্তরোত্তর দিগকে করিয়াছেন। ইউরোপে বাহা হউক এদেশে বেশা ও তত্ত্ব জীলোক বেশাদিগে বাজী জালা বাজি তাহা দিলে এক প্রকার সম্ভব হয় তবে জী

সোবরিগের কথা কিংবা শকটের আবশ্যকতা সম্বন্ধে কি শেষ অবস্থায় সিদ্ধান্ত প্রাপ্ত হইবে। শকট যখন আবশ্যিক, তখন বেশা দিগকে বাহা করিবার প্রস্তাব অসঙ্গত নহে। ইংলিশ রিকর্ডার জানিবেন আমরা বিশেষ প্রস্তাব দিচ্ছি, কিন্তু আমরা এক কালে দুই শকট যুগ্ম ও অসম্ভব বোধ করি।

আমরা হুজুরতা স্বকারে স্বীকার করিয়াছি। সাধারণ বিদ্যালয়িকার ডিরেক্টরের দিগে ডে বর্তমান বর্ষের হাজরতি প্রাপ্ত হইয়াছেন। হুইমসি দিগের প্রাপ্ত হইয়াছেন। সার জন সিভিল ও ১৬ জন জুজিসের দিগে হুইমসি পাইয়াছেন। সিভিল জুজিসের দিগে কলিকাতার অধিকাংশ দিগে প্রাপ্ত হইয়াছেন। কলিকাতা বিদ্যালয় ও কলী কলিকাতা প্রধান। হিন্দু কল বিদ্যালয় কলিকাতা কয়েকটি উত্তম বিদ্যালয় এবার অনেক দিগে হইয়াছেন। আমরা আটকিনসন সাহেবের আত করিতেছি, বিদ্যালয়িকার দিগের দিগে রিপোর্ট ও অন্য অন্য কাগজ জমা দিগের দিগে সিদ্ধান্ত হইয়া প্রেরণ করা হয়।

নিম্নলিখিত দিগেরা সিভিল জুজিসের দিগে পবীকোত্তর হইয়া হাজরতি প্রাপ্ত হইয়াছেন।

১ম প্রেরণ।

হাসিবিহারী ঘোষ	প্রেসিডেন্সি কলেজ
কাজিচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	সংস্কৃত কলেজ
কেশবনাথ বসি	প্রেসিডেন্সি কলেজ
উদ্যোক্ত চট্টোপাধ্যায়	প্রেসিডেন্সি কলেজ
চন্দ্রনাথ বসু	প্রেসিডেন্সি কলেজ
চন্দ্রনাথ দাস	প্রেসিডেন্সি কলেজ
কালীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়	ডিক্রি ইনস্টিটিউট
ভুবনমোহন পোয়েল	ডিক্রি ইনস্টিটিউট
গৌবিন্দচন্দ্র ঘোষ	প্রেসিডেন্সি কলেজ

২য় প্রেরণ।

কলিকাতা বিভাগ

বেনীবাধর দে	প্রেসিডেন্সি কলেজ
হরচন্দ্র চক্রবর্তী	সংস্কৃত কলেজ
ডবলিউ. জে. সিমন্স	ডবলিউ. জে. সিমন্স
নিহারচন্দ্র হুগোপাধ্যায়	প্রেসিডেন্সি কলেজ
শ্যামচরণ চক্রবর্তী	প্রেসিডেন্সি কলেজ
হরগলি বিভাগ।	

কেশবচন্দ্র রায়	হরগলি বিভাগ
বোম্বাই চন্দ্র	
হরপ্রসন্ন সিংহ	

[illegible]

নিম্নলিখিত ছাত্রেরা বিশ্ববিদ্যালয়ের এবে-
'ন' পাঠ্যক্রম উত্তীর্ণ হইয়া কামহসি জাতি-
গণ হইলেন।

১ম প্রেরণ।

[illegible]

୨. ନିଷ୍ପତ୍ତି

କଳିକାତା ବିଭାଗ :

অ. উদ্ভিদ	কলিকাতা যাত্রা
সংগ্রহকারী মলিক	কিছুই নাই
সংগ্রহকারী বসু	এ
সংগ্রহকারী বসু	কোলুটোলা প্রাক্কুল
সংগ্রহকারী দে	ডাউন কলেজ
সংগ্রহকারী বসু	কোলুটোলা প্রাক্কুল
সংগ্রহকারী চাট্টোপাধ্যায়	জেনারেল এনেকিউ
সংগ্রহকারী চৌধুরী	কোলুটোলা প্রাক্কুল
সংগ্রহকারী মিত্র	এই ইনস্টিটিউশন
সংগ্রহকারী বসু	কিছুই নাই
সংগ্রহকারী প্রসাদ রায়	এ
সংগ্রহকারী বসু	এ
এন. আর. সীকারদীন	ডাউন কলেজ
এ. এ. প্রসাদ বন্দ্যোপাধ্যায়	কোলুটোলা প্রাক্কুল
প্রোগ্রামার মাল মিত্র	ওয়ারিএটল মিনিমি
র. কল্লভা	কলিকাতা ট্রেনিং স্কুল
তরুণাঙ্গনা মিত্র	কিছুই নাই
চন্দ্র মণি রায়	সেন্ট পলের স্কুল

করনাগর বন্দোপাধ্যায়	উত্তর পাড়া কুল
মিঞের বন্দোপাধ্যায়	হুগলি বালেক কুল
আমিরআলি	হুগলি কলেজিয়েট কুল
বরদাচরণ বন্দোপাধ্যায়	উত্তর পাড়া কুল
বিবাজপ্রসাদ বসু	টাকি এজেন্ট কুল
নবরত্ন চট্টোপাধ্যায়	হুগলি ব্রাহ্ম কুল
বনখালী বন্দোপাধ্যায়	হুগলি কলেজিয়েট কুল
কিশোরীলাল চৌধুরী	জনাট্টো নিকুল
অবিনাশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়	বলাগড়িয়া এ.ড.ড

দেবেশ্বরলাল সেন	হুগলি কলেজিয়েট
কেশারনাথ চট্টোপাধ্যায়	উত্তর পাড়াকুল
কেশারনাথ দাস	জিবেলীটোনি ই
চুনিলাল দাস	হুগলি কলেজিয়েট স্কুল
মহেশ্বরলাল গুপ্ত	সৈয়দগাঁওব একেডেমী

कश्चिन्नगद्विविधता

শ্যামলাল দত্ত	নড়াল ডেড কুল
নিমিষচন্দ্র সিংহ	কুকনগর কলেজিয়েট স্কুল
কেদার নাথ ঘোষ	জশোহর কুল
রামবদ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	লাখিপুর এডেড কুল
মোহিনচন্দ্র সরকার	লাবনা কুল
কেশবোপালা রায়	ভগলপুর কুল
ককচন্দ্র শ্যামলাল	রাজসহি কুল

চাকারবিভাগ

সলিডনোহন রায়	ঢাকাপণ্ডিত কুল
মোহনচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়	কালিপাতা এডেটর
সেরাজুল ইসলাম	করিদপুর
বঙ্গবিহারি গুপ্ত	ঢাকাপণ্ডিত
বাকরোহন মে	
শাহাউল সেন	ঢাকা:কলেজিয়েট
বৈকুণ্ঠনাথ রায়	টাঙ্গাবা, এডেড এল
কালী প্রসন্ন বসু	বরিশাল
উদয়চন্দ্র গুপ্তা	ঢাকাপণ্ডিত
জাহান্নাথ চক্রবর্তী	করিদপুর

ଉତ୍ତର ଶ୍ରେଣୀ :

दक्षिणः । विष्णुः ।

প্রিয়নাথ বলিক
 এড্. এ. ডিউএট
 ডুলসীদাম শীল
 বেনীনাথ বসু
 প্রিয়নাথ মুখোপাধ্যায়
 মতিলাল কব
 হিরলাল বিশ্বাস
 হৃদয়নাথ বন্দ্য
 কেদারনাথ বসু

[illegible]

শিখাচন্দ্র বসু
 নাম নবজ্ঞান পিট্টাচারী
 কৃষ্ণচন্দ্র বসু (পরিচালক)
 শিখাচন্দ্র বসু
 'ক' অধ্যায়
 শিখাচন্দ্র বসু

সৌদামণি বিজ্ঞান, কলিকাতা টেকনিক্যাল স্কুল
 সৌদামণি বসন্তোপাধ্যায়, বিজ্ঞান স্কুল
 টেকনিক্যাল স্কুল, কলিকাতা টেকনিক্যাল স্কুল

हृदय विज्ञान

কালীনাথ চট্টোপাধ্যায়	এডভোকেট
সাবন, প্রসাদ সেন	হাইকোর্ট
শ্যামকৃষ্ণ ঘোষ	কালিকাতা
পূর্ণচন্দ্র মিত্র	এডভোকেট
গোপাল চন্দ্র মুখোপাধ্যায়	এডভোকেট
বসিকলাল ঘোষ	কালিকাতা
প্রসন্নকুমার সেন	এডভোকেট
করালীচরণ সরকার	মির্জাপুর
গোপালচন্দ্র মল	এডভোকেট
মহেন্দ্রনাথ বসু	কালিকাতা
কালীকুমার সেন	এডভোকেট
রসময় সূর্য	কালিকাতা
কার্তিক চন্দ্র পাল	কালিকাতা
শরচ্চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	এডভোকেট
বজ্রী নাথ মিত্র	কালিকাতা
গিরিশচন্দ্র রায়	এডভোকেট
সুধাংশুভূষণ বায়	কালিকাতা
প্রসন্নকুমার রায়	এডভোকেট
অধিকাচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়	হাইকোর্ট
বিশ্বনাথ চট্টোপাধ্যায়	মির্জাপুর
শশীভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়	এডভোকেট
বহুনাথ বসু	কালিকাতা
প্রিয়নাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	এডভোকেট
বিহারীলাল চট্টোপাধ্যায়	এডভোকেট
বিপিনবিহারী মল	মির্জাপুর
নির্মলচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	ইন্ডোবান

ঐচ্ছিকভাবে আনয়নিক আকরিত পত্র প্র-
দান করা আবশ্যিক বোধ হইল না, পরশ্রেরক
কিছু দিন দেখুন অহিবে যদি পুনরাগ উপজব
কবে, পুনরাগ রাজগোচর করিবে, অবশ্য
প্রতীকার হইবে।

“ঐতিহাসিক চরিত্রের জীবনী” প্রে-
 রিত পত্রের বক্তৃতা অংশটি স্বীকৃতিস্বরূপ পবি-
 তাক হইল এবং মূল পত্র বিবিধস্থান হইতে
 গৃহীত হইল।

বটবালের ১৭২ প্রকাশ করত গেল না, তা-
হাও কারণ এই, তিনি যে প্রতিশ্রুতি প্রকাশ ক-
রিয়াছেন, তাহা সকলের অনুমোদিত হই-
বে না।

ভাবতবীর্য সত্য সংক্রান্ত পণ্ডে যে যে বিবরণ
লিখি হইয়াছে, তাহার জগৎ সমুদায়ই সৌন্দর্য
বিশেষ প্রকাশিত হইয়াছে, তবে পত্রপ্ৰেক্ষক
গাথা সত্যের রহস্য প্রকাশ হয় না বলিয়া যে
অস্বপ্ন করিয়াছেন, তাহা অসঙ্গত বটে, শাখা
বটার কার্য্য বিবরণ প্রকাশ কর, অস্বপ্ন অব-
শ্যক।

মালিশহর নিবাসনরুপ্রতি বক্তব্য এই- ১৮-
কনাবী ঠাকুর হইয়া বসি স্নেহে অর্থ বাসকোষ
সংগ্রহ করিয়া প্রানের উন্নতির নিমিত্ত ব্যয়িত
কর। এ টাক্স হওয়া কল্যাণ নহে। তবে বিদগ্ধ
কায় হইয়াছে বলিয়া পত্র প্রেরণে কোন
অসুবিধা নহে, নাকিটোটার মোটর করিলে
স্বাস্থ্য নিবারণ হইতে পারিবে।

পরমপুজনীয় শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ
সম্পাদক মহাশয়েষ ।

আমি জানি এই প্রকল্পটিতে উল্লিখিত বিষয়
সংক্রান্ত ও আশেপাশের লোকেরা এই যে প্রকল্প
সংক্রান্ত আরও অনেকগুলি প্রশ্ন উত্থাপন করছেন।

খনই ত্রাণদানের নিমিত্ত দিয়া কুৎসা। আপনকার পক্ষিকার জেঁঝেতে গাং নাই। এই সকল কার্য হারা দিলক্ষণ প্রতীক্ষমান হইতেছে যে আপনিসি আধুনিক ত্রাণদানের অঙ্গরূপ করেন ও ত্রাণদানের এক জন বন্ধু। আমিও পূর্বে আপনকার বড়প্রবিন্ট ছিলান, সম্প্রতি বিশক্ষণ অঙ্গধারণ করিয়া দেখিলাম যে ত্রাণ দর্প আপনাদের দেশে কিছু কবিত্তে পারিতেছে না। ও ত্রাণদানের কার্য প্রণয়। আমার অঙ্গ-বুদ্ধিতে সমীচীন বলিয়া প্রতীক্ষমান হইতেছে না। কিছু দিন তইল অদোষ্যানাথ পাকড়ানি কি এদোমীতে গৈতুক প্রকৃতি করিলেন তাহার দ্র। আমি লম্বু পাটলাব না। সম্প্রতি কেশব বাবুর পুত্রের জাত কথ্য দেখিতে গিয়াছিলান দেখানেন ‘শিশুর জাগুয়েও জীয়েও ইত্যাদি’ প্রার্থনা শুনিলাম কিছু ত্রাণ দর্পের ব্যাখ্যানে প’ড়িয়াছিলান যে ‘‘আমরা পৌত্তলিকদিগের মত জাগু য়েও মল দেও ইত্যাদি প্রার্থনা করি না। অম্বুর কিছুই ঠিক করিয়া উঠিতে পারিলাম না। যে দেখেছে বাবু কলিকাতা ত্রাণ সমাজে ব্যাখ্যান দিতে দিতে উক্ত প্রকার বাক্য প্রয়োগ করিয়াছিলেন তিনিই আমার কেশব বাবুর পুত্রের জাত কথ্য উপলক্ষে এই প্রকার বাক্য প্রয়োগ করিলেন আমি বধন এই সকল চিন্তায় ব্যাকুল আছি তখন আমার কেশব বাবুর পরিবারস্থ কোন ব্যক্তি আমাকে সমাচার দিলেন যে ‘‘প্রিয়তম! বাড়িরে এই সকল খুনখাশ দেখিতেছি কিছু বাটীর ভিতর পৌত্তলিক জিন্স অঙ্গসারে বকী পূজা সম্পন্ন হইয়াছে’’ এই বাক্য শুনিয়া আমার কেশব এক অনির্কটচরী ভাবে উদয় হইল, বলিলাম ত্রাণদানের সকল লগাই কপট দেখিতে পাই।’’ কেশব বাবু—‘‘যাঁকে আমিবা। নিম্মল পরি ত্রাণ বলিয়া জানি, তাঁহার দীর্ঘত এই প্রকার ব্যংহান হইল। তাহার মনে করি—‘‘আমুও বাবুর পুত্রের যে দিন ময়প্রাশন ত্রাণ দর্পারূপে হইয়াছিল তাহার দিন দুই গবে তাহার বড়। হইয়াছিল বলিয়া কেশব বাবু আত্মাতিক অগত্যাংগে বকী-ভূত হইয়। বকী পূজা কবাইলেন এবং বাড়ি-এ ত্রাণ অঙ্গরূপ করিলেন।’’

2649

ক্রিয়াক্ষম সোমপ্রকাশ সম্পাদক

অটোম্যাটিক ।

বহানিঃ আপনাত ২২৭ গোবিন্দ সোদ-

এখানে বিবিধ সংবাদ মধ্যে একটি পড়।
সংবাদ পাঠ করিয়া বিশ্রিত হইলান।
বাপ্ত অবোধাণান্য পাকড়ানি মহাপ্রাণ ভী
পিতার মৃত্যু দিবসাবধি দশ দিন পাকড় উপ
রীয় দাবণ, পাকড় পাকড়ানি, কখনে পাকড়
হবিয়া, কতজন এতদ্রি দিমু ধর্ম্মহরণ
শেঠ গ্রন্থ পূর্বক ব্রাহ্ম ধর্ম্ম মতে শিষ্ট
সংস্কর করিয়াছেন। ইহা যদি সত্য হয়, তা
কই অল্পত সংবাদ সন্দেহ নাই। বার পাক
ড়ানি মহাপ্রাণ হইলে দলের মনোরম্য পরি
পিন্ন। কি নির্মল ব্রাহ্ম ধর্ম্মে কলকারোপ কর
লেন? তিনি যদি লোকতরে এতই ভীত হইত
ছিলেন, তবে ব্রাহ্ম মতে প্রোত করিতে কোন
কেন? ব্রাহ্মেরা কি বশোরাণি বিস্তার করি
বার জন্য অল্পতান করিয়া থাকেন? ব্রাহ্মেরা
কি অত্যাণ্ডি লোকতরের এত দান? লক্ষ্য
মহাপ্রাণ! যদি পাকড়ানি মহাপ্রাণ (বৌদ্ধ
উনি জাতিতে, ব্রাহ্মণ) দশ দিন মনোর
হণ করিলেন তবে ইহার মতে মনোর
১৫ দিন, মৃত্ত ব্রাহ্মেরা এক দান অপোঁর
করিলেন, ইহার অল্পরোধে ব্রাহ্মধর্ম্মে
তের স্বীকার করিতে হইল। বড়ই
বিবর। লক্ষ্যমক মহাপ্রাণ! মধ্যে মধ্যে
পের এককর কার্যের কিছুক্ষণ
কেই ব্রাহ্ম ধর্ম্মের প্রতি বিরুদ্ধ
করিয়া থাকেন। কিন্তু তাঁহারা যদি
করিয়া দেখেন, উপাসকের দোষ
দোষ কর না।

অবশেষে প্রাকৃতিকতাবাদকে কিছু না কিছু
এই প্রত্যাহার উপন্যাসকে পরিণত করেছিল
না। বোধহয় আর উপরি উক্ত ঘটনা যা হক
এখন প্রাকৃতিকতাবাদ নামকই বাক্যে মিথাক
কর্তব্য।

२३१ भाष } अक्षर-वर्ण सङ्ग
२२७२ } भाष ।

মান্যবর শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসঙ্গীতক
মহাশয় নমীণেব ।

মহাপুত্র। গত ২২শে ডিসেম্বর সোমপ্রকাশ
অগ্রহ করিয়া। আমার যে অমণ হস্তান্তর একাংশ
করিয়াছেন, তাহার লিখিত প্রতিজ্ঞা অগ্রহণ
উল্লাসের সারীতর নিবারণী সভার সভাপতি
জাংগর নিম্নে লিখিয়া। একাংশ করিয়া বা-
খিত করিবেন।

“উল্লা” এই গ্রামের নাম বোধ হয় নব্বই
বলবাসিনগণই তুলিয়াছেন। ইহার প্রাচীন স্থানসমূহ-

ভাগ্যের বিবরণ না জানিলে ইহা'র বর্ধমান
 দুর্বলতা কাহারই ক্ষমতা আকর্ষণ করিতে পা-
 য়েনক না। একনা ইহার মহামাত্রী জনিত দুর্ব-
 ল'র সহিত ইহার পূর্নাভ্যর্থকতা কথ্য বলি-
 তেছি।

“উল্লাসায় শ্রীর পূর্ক পূর্ক সন্তানগণের
বীৰ্য্য নিবন্ধন বীৰ্য্যগণ নামে বিখ্যাত। এই
শ্রব কুকুনগবেদ ৬ কোশ দক্ষিণে ভাণী-পী
শাণা চূর্ণা নামক নদীর তীরস্থ। ইহার দৈর্ঘ্য
উত্তর দক্ষিণে ২ কোশ, প্রস্থ পূর্ক পশ্চিমে
১ কোশ। ১২৬৩ বঙ্গাব্দের পূর্বে ইহা আত্মসা-
দিক দ্বিত্বিশত সহস্র ব্যক্তির আবাসস্থান ছিল।
হৃহুহু অটালিকা, লোকাকীর্ণ রাজপথ, বাস্ত-
ভাপরিপূর্ণ হাট ও বাজার দ্বারা সুশোভিত
ছিল। নিত্য উৎসবের ও স্বচ্ছন্দতার উল্লাস-
ধ্বনি ছুই তিন কোশ পথ লইয়। পশ্চিমে নদ
আকর্ষণ করিত। ইহার নিবাসীবর্গ স্বার্থপরতা
বিহীন, ব্যস্তান ও সন্মানিত ছিলেন। কি দ্বি-
ত্রের কুসীদ, কি ধনীরা আটালিকা প্রতিধাত্তে
নিয়োজিত ছিল। ইহাতে শত শত সন্তান,
সন্তা, স্নেহবৎ জাকী ও ধার্মিক লোক ছিলেন।
সমস্ত গ্রামের মধ্যে একটি আত্মস্থ দৃষ্ট হইত।
নিবাসিগণের সম্পত্তিরূপ সরস কন্যার পরিচয়
এখন কদা প্রতিগৃহে নিরতই বহু বাজুর আগমন
করিতেন। সংকেপতঃ প্রতিগৃহই পরম আন-
ন্দেব স্থান ছিল।

‘হার’ সম্বন্ধে ইহার সে সৌভাগ্যবান
অনুভূত হইয়াছে। সে সুধনলিনী মুক্ত হইয়া
গিয়াছে। ইহার কলস তকল। হইয়াছেন।
সমনাগ্নিব নাগ প্রবল মহামারী ইহার অধি-
কাংশ নিবাসী হত করিয়াছে। ইহার জীবিত
ব্যক্তিগণকে অকম্পা ও দুঃখ করিয়া বাঁচি-
য়াছে।

১০ সন ১২৬৩ বঙ্গাব্দে ভাঙ্গনালে এই ঘটনা ঘটিয়াছিল। ভাঙ্গনালীতে এই ঘটনা ঘটিয়াছিল। ভাঙ্গনালীতে এই ঘটনা ঘটিয়াছিল।

অগ্রিতে উল্লিখিত হইল। চিত্তাশ্রমে প্রথম অবস্থার
হইল। কিছু দিনের মধ্যে ১৯১২-১৩ উপায়
বহিল না। তখন রাধাপথ, গঙ্গা, যোড়, জঙ্গল,
বৃন্দাবন পরিপূর্ণ হইল। পুণ্ড্রপথে কুশাল ও
গুপ্তপথ গ্রাম অধিকার করিল। স্বেচ্ছায় জননী
অবস্থায় ক্রোড়ে অবস্থায় কুশালপাশে সন্তান
জননীর বিকৃতাবস্থার বিকৃতি লাভ হইল। জী
বন ত্যাগ করিল। জীবন স্থানে বা আশ্রয়
বাক্যে জননীকে ডাকিল। উত্তর হইল না।
স্বাভাবিক ও আশ্রয় অভাবে গুপ্ত মধ্য কান্দিতা
কান্দিতা বেড়াইল। অবশেষে অচেতন জননীর
ক্রোড়ে লীন হইল। এবং অনতিবিলম্বে মৃত্যু
তাহার অভিনব প্রকৃতি কৃত্রিম মৃত্যু বাড়ির
চরণ করিল। লইল। কোন স্থানে কোন ব্যক্তি
পীড়া হইতে একটু আশ্রয় লাভ করিয়াছেন,
এমন সময়ে গুপ্ত আশ্রয় সকলে কল্যাণ
পাইলেন। তাঁহাকে পথ, দেয় এমন কোণ
হিল না। তিনি পথান্তরে লোকলীল। সন্তান
করিলেন। এই রূপে চতুর্দিকে মৃত্যু হইতে
আশ্রয় হইতে লাগিল। কতকাল ব্যক্তি দেশ
বিদেশে পলায়ন করিলেন। গ্রাম গ্রামান্তরে
ত্যাগ করি খারগ করিল। বিদ্যালয় সকলের
কার্য স্থগিত হইল। মুন্সেফী কাছারী স্থান-
স্থগিত হইল।

“ সেই বিপদ-বর সমস্ত কাঁচা-মণের দয়ালু
গবর্ণামণি করেকাজন ভাষ্যের পাঠাইয়া। বিদ্য
আমক উপকান করিয়াছিলেন। কিন্তু তাঁচারও
অনেকে কন্যাস্ত্র হইয়া পলায়ন করিলেন। এ
কণে দ্বিতীয় অবধি পৌষ পর্যন্ত পঞ্চ মাসের
মধ্যে অসুখাম পঞ্চ সহস্র ব্যক্তি গড় হইলেন
মাঘ মাস অর্থাৎ বর্ষান্তরে প্রায়শ কিছু
শান্ত হইল। ২০০। ১০০ কবিতা লোক
মৃত্যুদণ্ডে পতিত হইতে লাগিল। পুনরায়
বর্ষাকাল পড়িতে পড়িতে মহামারীর অনল
অগ্নি উঠিল। ৫। ৬ মাসের মধ্যে অসুখাম
দ্বিসহস্র লোক কালগ্রাসে পড়িত হইল। তাহার
পরে এসম হইয়া উঠিল যে দিল্লীর নিম্নের
পদাংশ করিলেই পীড়া হইতে লাগিল এবং কি
চাঞ্চল্য অনেক লোক লীল, সহস্রও করিলেন।
সেই অবধি একদা পর্যন্ত প্রতি বর্ষে কাষা
আবণ হইতে পীড়ার উপদ্রব আরম্ভ হইয়া। অ-
প্রায়শ পৌষ পর্যন্ত থাকে। তৎপরে অবশিষ্ট
কয়েক মাস কিছু স্বাভাবিক সঞ্চে গড় হয়। এইকণ
অন্যদিকের প্রাসাদে প্রায় কিঞ্চিৎ সুস্থ হই-
তেছে।

“কিন্তু ইহার প্রত্যক্ষ প্রমাণকণেই” হইয়া গিয়া
ছে। ইহার অর্থান্তিক। সকল পরিচালিত হইয়াছে,

ইহাদি গুণ সমূহ শ্রীমদ ঈশ্বর আवास বস-
নাছে। রাজপথ বনাকীর্ণ হইয়াছে। ছাটি বাজার
লোক শূন্য ও উৎসবাদি আঘোদি শূন্য হইয়া-
ছে। এই প্রাচীন নিবিড় বনভিত্তি পূর্ণ, বহুজন
সমানকীর্ত্ত অঙ্গপাত রূপে এক লক্ষ্যক্ষেত্র সন্নি-
ত্বিয়া আছে। সম্মান পন্ন ইহার রাষ্ট্রাচারে জ্ঞান
লোক বাতাচিত্ত করে না। কিন্তু সন ১২৬৩ সাল
অবধি সন ১২৬৬ সাল পর্যন্ত চ বি বৎসর বে-
ভাবে গত করিয়াছে তদপেক্ষ ক্রমে ভাল দেখা
গাইতেছে। এই ৪ বৎসবে গ্রামের স্বাভিজ্ঞান-
সত্ত্ব সংস্থা নিবাসীর মধ্যে সন্তুষ্ট সহস্ত্র লোক
কালের কয়েক পতিত হইয়াছেন। অন্যান্য
পঞ্চ সহস্ত্র লোক স্থানান্তরিত হইয় ছেন। অন্য-
নিষ্ঠ দশ সহস্ত্র ব্যক্তি স্থানান্তরিতকে বেগ ভোগ
করিতেছেন, আর আরে ইহাদিগের শবীর শীত
হইয়াছে চিকিৎসাও দায়। অংগের ক্ষতি
উর্দ্ধবা নির্জন হইয়া গিয়াছে। অনেক
পক্ষে আবির নির্মাণ করা দুঃসংসা হইয়াছে

“এই উন্নয়নক ছবিসমূহ র প্রতিষ্ঠার মাধ্যমে
উদ্দেশ্যে এত সত্য হইয়াছে। আমরা এত দিন
কেবল আপন আপন লইয়া লাল কল্যাণ।
কাল আদি সকল সময় কেবল কলা অর্থাৎ
আনন্দমগ্নের সম্মুখ প্রাসঙ্গ্য জীবিত ব্যক্তি
করণ পদ্ধতি নিয়ন্ত্রণ জ্ঞান ভোগ করিতে মন
এবং আনন্দমগ্নের পূর্ণ স্বর্ধে শ্রম ক্রমে আ-
বশ্যতা বোধ হইতেছে। এই উন্নয়নক প্রতি-
ষ্ঠার অর্থ আমরা সম্মুখে দুটি বস্তু প্রাপ্ত
ছি। এক প্রাথমিক জ্ঞান পরিচালনা কর
সত্য একটি উন্নয়নক স্থাপিত করা। এই দুটি
বিষয়ই গুরুতর ও নিত্য জ্ঞান। একে এত
দুটি সময়েই আনন্দমগ্নের সম্মুখ পদার্থমূলক
সাহায্য আনন্দ। সকলে সম্মুখ হইয়া
যেক্টেই নিজের প্রাথমিক ক্রিয়াক আনন্দমগ্ন
প্রাথমিক নিয়ন্ত্রণ হইবেক।। সম্মুখ প্রাথমিক
জ্ঞানার্থ আনন্দমগ্নের বিশেষ মনোযোগী হইবে
হইবেক।

১০ জনাল শু পকিল দুর্গজ বাবিশূন ভোবা
 মনুষ্য পরিদৃষ্ট করি যদিও অগ্রেদ কার্য। নিত
 তাহা গব্য যেক্টের লাভায়া বাতিবেক একে
 রেই হইতে গাটিনে না। বিশেষতঃ তাহ।
 তাম্র ব্যয় সাধা। একটী উদ্যমানর উপায়ে
 নায় তাহা অসম্ভব নহে। বসন্ত একটী উদ্য
 মানর নিত্যক আশংক হইয়া উঠিয়াছে। এই
 মঙ্গলকর কার্যে সাধারণ উৎসাহে আবশ্যক
 দেশ বিদেশের ধনিগণের সাহায্য। ১১ ক
 প্রয়োজন। মজুত আবাদিগণের গ্রাম হইতে
 উৎসাহিত লোকের ব্যয় নির্বাহ হওয়া আবশ্যিক।

প্রাক্তন আঁমরা এই উপাধি প্রচার সিদ্ধি
কর যত্নবান চাই।

বক্তৃতা সমাপ্তির পর উক্ত প্রাণের ওজন
বাড়িয়া হানীর সত্যের মেঘের নিম্নে হইলেন

তৎপরে এক এক ব্যক্তিই প্রস্তাবে, এক এক
ব্যক্তিই পৌষকতার সম্মতিকার অন্য নিম্নে
সময় সকল অবধারিত হইল।

১। এই সভার কার্য বিবরণ একটা বিজ্ঞা
ন সমীক্ষার দ্বারা করা যায় এবং তাহার সঙ্গে
কর্তব্যের বিবেচনা প্রেরিত হয়।

২। তাঁরা সংগ্রহ জনা নিম্নের লিখিত
ব্যক্তিগণ স্থানে স্থানে কর্মচারী নিযুক্ত হন।

ক্রিয়াকার্য্য ভারতীয় মুখোপাধ্যায় প্রভৃতি
উল্লেখ

৩। প্যামালান মিত্র প্রভৃতি কলিকাতা প্রভৃতি
স্থানে

৪। চক্রবর্তী বক্তৃতা বর্জমানস্থানে

৫। চক্রবর্তী মিত্র প্রভৃতি মজুমদার প্রদেশে
রামসিংহ মুন্ডো প্রভৃতি মুরলীধার প্রদেশে

৬। চক্রবর্তী মুন্ডো প্রভৃতি কলিকাতা প্রদেশে
৭। উক্ত কর্মচারীগণ যে টাকা সংগ্রহ
করবেন তাহা মাসে মাসে কলিকাতা হিত কর্ম-
চারীর নিকট পাঠাইবেন।

৮। কলিকাতা হিত কর্মচারী এই ক কোন
জাতি জমা করিয়া দিয়া আবশ্যকমতে সভাগ-
ণের অনুমতি ক্রমে টাকা ব্যয় করিবেন।

৯। অধ্যক্ষ বাধ্য সংগ্রহ বিবরণ মুদ্রিত
হইলে পর তাহার একখণ্ড শান্তিপুরে ক্রিয়াকার্য্য
চেষ্টা মাজিষ্ট্রেট মহাশয়ের নিকট পাঠান
হয়

এই পর্যায়ে অবধারিত হইল। তাঁহা ৮ ঘটিকার
সময়ে সভা ভঙ্গ হইল।

বর্জমান
১৩ই পৌষ ১২৬৩

পথিক।

ক্রিয়াকার্য্য সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয় সঙ্গীপে

১৩ই পৌষের সোমপ্রকাশ

খানি নিবাসি মহাশয়গণাধার্য্য সার্ভ অধ্যা-
পক ক্রিয়াকার্য্য সোমপ্রকাশ তত্ত্বাবধায়ক
১৩ই পৌষের সোমপ্রকাশে প্রকাশিত
মাসিক প্রবন্ধে এইরূপ মীমাংসা করিয়াছেন যে
বাক্য কতক পূর্বকাল পর্য্যন্ত বিবাহ কাল বলিয়া
অভ্যন্তর করিলে শাস্ত্রোক্তা দৃষ্ট হয় না বটে,
কিন্তু প্রাচীন গ্রন্থকারগণের ও সার্ভ তত্ত্বাবধায়ক-
বর্ণিত অভিপ্রায় এই যে, এই সময়ের কালের
মধ্যে কেবল অষ্টম, নবম ও দশম বর্ষই কন্যার
বিবাহের যুগ্য কাল, ও দ্বিগুণ বাহু অতুর্ন পূর্ণপ

যুগ্য যে কাল সে গৌণ কাল।

উক্তবর্ণীণ মহাশয়ের বিবাহ দ্বারা
সম্পন্ন হইয়াছে, নবম ও দশম বর্ষের

নারি বিবাহের যুগ্য কাল হইল তবে ততন-
এইরূপে হির সিদ্ধান্ত প্রাপ্ত হওয়া উচিত হইবে

তিন বৎসর পর্য্যন্ত চূড়ান্ত যুগ্য কাল তৎপরে
তাহার গৌণ কাল, ও তিন বৎসর পরে সহ

বৎসর পর্য্যন্ত বাগদানের যুগ্য কাল তৎপরে
তাহার গৌণ কাল। এবং অষ্টম, নবম ও দশম

বৎসর কন্যার বিবাহের যুগ্যকাল তৎপরে
তাহার গৌণ কাল বিশেষতঃ কোন কর্মচারী

কর্মসকল গৌণ কালে করিয়াও থাকে এবং
বিলম্বে তাহা অসিদ্ধ হয় না বটে, কিন্তু যুগ্য

কালে করাই প্রাপ্ত। উক্তবর্ণীণ মহাশয়ের সভা
অপেক্ষাপাতী বর্ষা পর্য্যন্ত সিদ্ধান্তে আনান স-

ম্পূর্ণ ন্যায়ের তত্ত্বাবধায়ক, অতএব তদ্বিষয়ে যাহা
কোন প্রশ্ন নাই।

একপক্ষে পত্নী, পৌষের সোমপ্রকাশে তিনি
যে লিখিয়াছেন, কৃতদ্বারের বিবাহ যদি নিষিদ্ধ

হইত, তাহা হইলে তৃতীয় চতুর্থ বর্ষ বিবাহ
ধারক মুনি বচন সকল অসঙ্গত হইত (১) এই

বিষয়ে আবার সার্ভ প্রাপ্ত আছে তাহা বক্তৃতা
করিতেছি, উক্তবর্ণীণ মহাশয় কৃপা পূর্বক উ-

ক্ত প্রশ্নে ১৩কৃত করুন।

আমি কৃতদ্বারের কন্যার বাগদান নিষেধক
যে মতবচন প্রমাণ করিয়াছি, মুদ্রিত পত্রে উক্ত

অন্যান্য বচনে দ্বিতীয় তৃতীয় চতুর্থ বর্ষ বিবাহ
যেবদি দৃষ্ট হওয়াতে ও অনেক স্থলে বক্তৃতা

পাঠে কন্যাদান প্রথা প্রাপ্ত থাকে, য-
ত্নে এই নিষেধ বচনটীক অপ্রযুক্ত পরে বল যা

ইতে পাবে কিনা।

ক্রিয়াকার্য্য সোমপ্রকাশ সম্পাদক

১৩ই মার্চ ১২৬৩

ক্রিয়াকার্য্য সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয়গণ

"ব্রহ্মপদাদে হি বিব্রত চেতসো

মকস্য চেতো হু ভবেত নীদনম্

বিব্রতঃপ্রভৃতিতে বিভাকরে

বিভক্তিঃসিদ্ধান্তমস্মিন জগৎ

অন্তঃসিদ্ধান্তমস্মিন জগৎ

অন্তঃসিদ্ধান্তমস্মিন জগৎ

অন্তঃসিদ্ধান্তমস্মিন জগৎ

অন্তঃসিদ্ধান্তমস্মিন জগৎ

অন্তঃসিদ্ধান্তমস্মিন জগৎ

বক্তৃতা সমাপ্ত হইয়াছে। এইরূপে একবার
প্রকাশিত হইয়াছে। উক্তপ্রদেশে বাক্য
অবিস্মরণীয়।

১। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

২। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

৩। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

৪। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

৫। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

৬। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

৭। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

৮। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

৯। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১০। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১১। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১২। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১৩। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১৪। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১৫। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১৬। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১৭। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১৮। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

১৯। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

২০। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

২১। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

২২। বাক্য প্রকাশিত হইয়াছে।

সোমপ্রকাশ

স্বদেশী প্রগতিশীলতার পথিক, স্বদেশী স্ফূর্তিসহী ন স্বদেশী

৫ ডিগ্রী
২০ মার্চ

{ সন ১২৬২। ২১ এ মাঘ। ইং ১৮৬৩। ২ ফেব্রুয়ারি

দৈনিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অগ্রিম ১০ টাকা।

সোমপ্রকাশের অবস্থা বৃদ্ধি

সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

আজি অবশিষ্ট সোমপ্রকাশের আর এক
সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন। সত্যাপন বাহারা
‘দৈনিক মূল্য’ নাম করিবেন, তাঁহাদিগকে ৫০
‘দৈনিক মূল্য’ নাম করিতে হইবে। দৈনিক অ-
গ্রিম মূল্য ১০ টাকা। অপরিবর্তিত রহিল।
মকসদের গ্রাহকদিগকে অত্যন্ত ডাক মাফুল
কিতে হইবে। বার্ষিক ডাক মাফুল ৩০ টকা,
কিন্তু বাহারা ২০। প্রথম সংক্রান্ত চিঠি
‘স্বদেশী করিয়া দিলেন, তাঁহারা তাঁহারা
‘চাউ’ নাম।) বাহা ‘পাইবেরী’ নামের খত
‘দৈনিক মূল্য’ নামে ‘স্বদেশী’ হইবেন, আনা
ইবেন আশা দিগের সংক্রান্ত হইলে তাঁহা-
দিগকে মাফুল দিতে হইবে ন।

বিজ্ঞাপন।

মুদ্রারক্ষণ।

১৮৬৩ এপ্রিলের নিমিত্ত মুদ্রারক্ষণ
পুনঃ পোষিত হইয়া কলিকাতা মুদ্রারক্ষণ
‘দৈনিক মূল্য’ ১ টাকা মূল্যে বিক্রয় হইতেছে।
‘স্বদেশী’ গ্রাহকগণ স্বদেশী বা সংক্রান্ত ক-
লেক্টে জিগিরিচক্র বিজ্ঞাপনের নিকট পো-
ষ্টে ১০ মূল্য পাঠাইলে পাইবেন প্রত্যেক
পাঠ আনার একন এক সের।

জিগিরিচক্র শ্রদ্ধা

বিজ্ঞাপন।

বিচার পদ্ধতি।

কলেক্ট প্রকৃতি দেশের প্রধান প্রধান
নিচালকের বিচার প্রণালী দ্বারা যে সকল
বিচার পদ্ধতি প্রকটিত হইয়াছে, বিশেষতঃ

মহামান্য জে ডবলিউ শিখ সাহেবের প্রণীত
‘বিচার পদ্ধতি’ প্রধান প্রধান আদালতের
ব্যবহারার্থ ইংরাজী ভাষায় বিবর্তিত হইয়া
নিকশিত হইয়াছে, তাহা হইতে এ প্রদে-
শের ব্যবহার উপযোগী ও প্রয়োজনীয় এত-
দূরব্য বিচারব্যবস্থা নিয়ম বোধ গম্য হয়, এমত
বিবিধ বিধান চাকর ডেপুটি কালেক্টর জিগিরিচক্র
বাগ মকসদের নিকট ও অন্যান্য ব্যক্তিগণ ক-
লেক্ট সেরল বসতায় অগ্রবাসিত হইয়া
জিগিরিচক্র বাগ মকসদের নিকট ও জিগিরিচক্র বাগ
মকসদের চক্রবর্তি কর্তৃক প্রকাশিত হইয়াছে।
গ্রাহকগণ আশা দিগের প্রদান করে তত করিলে
প্রাপ্ত হইবেন মূল্য ১ এক টাকা মাত্র।

শ্রদ্ধা রাখণ

নিউ ইন্ডিয়ান লাইব্রেরী

১৫ই ফেব্রুয়ারি ১৮৬৩

বিজ্ঞাপন।

কলিকাতা জিলার অফিসে পাঠ্য বইকেমারি
মহাসতপুর নামে যে পত্ৰি তাহা ‘স্বদেশী’
তাহা মকসদের দেওয়া অথবা বিক্রয় করা
হইবে। বই মাত্র সেট তাহা মকসদের লাই-
বার ‘স্বদেশী’ জয় করিয়া বই আছে, তিনি
কলিকাতা ‘স্বদেশী’ জয় করিয়া মকসদের নিক-
টে আবেদন করিলে সবিশেষ রক্ষণ আনিতে
পারিবেন।

সোমপ্রকাশ।

২১ই মার্চ ১৮৬৩।

আমরা গত বারে কোন কারণ বশতঃ
সোমপ্রকাশের সমুদায় কার্য অচল কর-
্ষন করিতে পারি নাই, কোন কোন বিষ-

যে সহকারিদিগের উপরে ভার্য্য
হইয়াছিল। তাঁহাদিগের অবস্থা
গত বারের সোমপ্রকাশের কতিপয়
হোলিকরণ হইয়া উঠিয়াছে। ‘স্বদেশী’
তদ্বিমিত্ত বার পর নাই কলিকাতা
বোধ হয় পাঠকগণ আপনাদিগের উপায়
কণে এ অপরাধ মার্জনা করিবেন।

বোম্বাইয়ের রামচন্দ্র বালক

শ্রেণী গমন করিবার সঙ্কল্প করিয়া
আমরা গত বারে এ সমাচার পাঠকগণ
মোচর করিয়াছিলাম, ‘স্বদেশী’
আশীয়ের নিকটে তাঁহারা ইংলণ্ড গমনের
উদ্দেশ্যাদি অবগত করিলাম। ‘স্বদেশী’
মানে ইংলণ্ডে বাজা করিবেন। ‘স্বদেশী’
য়ের কয়েক জন পারসী তাঁহাকে
করিয়া পাঠাইতেছেন। ‘স্বদেশী’
কাতার কোন কোন বণিক তাঁহারা
সাহ মানে উদ্বুদ্ধ হইয়াছেন। ‘স্বদেশী’
আনন্দের সমাদ। ‘স্বদেশী’ লোকেরা বহু
দিন এই রূপ এজেন্ট ও প্রতিমিতি হইয়া
ইউরোপ খণ্ডে গমন পূর্বক কার্য নির্বাহ
না করিবেন, তত দিন এদেশের ব্যক্তিগণ
অতীত লোক সন্তাননা নাই। আমরা এক-
বিধ বিষয়ের নিমিত্ত দেশীয় লোকদিগকে
স্বদেশী উদ্দেশ্য করিয়া থাকি।

রামচন্দ্র বালক উপযুক্ত লোক

ভারতবর্ষের অর্থ সাংশোধন বিষয়ে তাঁ-
হার সবিশেষ যত্ন আছে। তাঁহার অর্থ-
রূপ উদার। তিনি ইংলণ্ডে অবস্থান করি-

কেবল বাণিজ্য বলিয়া । তাহাও বর্জিত
অনেক বিষয়েই প্রয়োজনীয় সম্ভাবনা
আছে ।

—•—

বাবু জয়কৃষ্ণ মুখোপাধ্যায়ের কথায়
এস হইতে মুক্তি লাভের সম্ভাবনা
করিয়া আমরা যেমন হৃষ্ট হইয়াছিলাম,
তেমনি আর একটি জনপ্রতিশ্রুতি শুনিয়া অনা-
স্থানিত হইলাম । শুনা গেল কারাবাস
দণ্ড এখনও তাঁহার নিকট প্রভুত্বের সমন
কায়ো আচাৰ্য্যতা করিয়া সম্পূর্ণরূপে
কৃতকাৰ্য্য হইতে পারে নাই ; এখনও
তিনি বৈয়াকরণিক প্রভুত্ব পরিত্যাগ করি-
তে পারেন নাই ; এখনও তিনি অসতের
পরামর্শের বশবর্তী হইয়া বিপক্ষগণকে
তর প্রদর্শন করিতেছেন । যাহা হউ-
ক, এসম্বন্ধে যদি সত্য হয়, অত্যন্ত কো-
ণের বিষয় । কোণের কারণ এই, জয়কৃষ্ণ
বাবু কেবল মনুষ্য সমাজের কণ্টক স্বরূপ
অকর্ষণ্য ও অপদার্থ নহেন । তাঁহাতে প-
রামর্শ আছে । তাঁহার তুল্য অধবাসায়
নীল চতুর ও দক্ষ লোক এদেশীয় জমী-
দারবলে অল্প দৃষ্ট হন । তিনি দেশহিত
কর অনেক সংক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিয়াছে
ন । তাঁহার যদি ছুই একটি প্রধান দোষ
না থাকিত, তিনি এক জন মহাত্মা বলিয়া
পরিগণিত হইতে পারিতেন সন্দেহ নাই ।
এ দোষ দুইকুন্ডে বিদ্ধ মাত্র গোমুত্রের
ম্যায় তাঁহার সমুদায় সংক্রিয়ানুষ্ঠানকে
বিকল করিয়া তুলিয়াছে ।

শিবকৃষ্ণ বন্দ্যোপাধ্যায় যে দীপান্তব-
বাসী হইয়াছেন, তাঁহার নিমিত্ত আমরা
ক্ষণকালও কাতর হই না । কারণ তিনি কে-
বল মনুষ্য সমাজের কণ্টক স্বরূপ ছিলেন ।
কিন্তু যে সকল ব্যক্তি হইতে দেশের
উপকার লাভের সম্ভাবনা আছে, তাঁহা-
দের দোষ চূর্ণ্য করিয়া অরণ করিলে অসং-
খ্যে অতিশয় বাধা জন্মে । আমরা মধ্যে
এক দিবস অরণ করিলাম, বাবু কালীপ্র-

সন্ন সিংহের চৌপুত্রের বাগানে এক ব্যক্তি
মদ্যে মেশা হন না বলিয়া তাহাতে মরকি-
য়া (অহিকেনসার) মিশ্রিত করিয়া খাই-
য়া প্রাণত্যাগ করিয়াছে । এতৎ সংক্রান্ত
এইরূপ একটি তরঙ্গের জনববও
ছিল যে কালীপ্রসন্ন বাবু রক্ত দেবতার
নিমিত্ত মদ্যে মরকি, মদ্যে মদ্য দিয়া
ছিলেন । যাহা হউক, এই সম্ভাব্য প্রতি-
গোচর হইবার আশা দিগেব পশু কবণ
যৎপরোনাস্তি পরিত্যাগিত হইল । পরিত্যা-
গের কারণ এই, কালীপ্রসন্ন বাবু হইতে
বঙ্গদেশের অনেকের উপকার লাভ হই-
তেছে, তাঁহার আলয়ে একটা একটা জন-
র্থকর কুৎসিত ঘটনা ঘটিল । শাশি রথকে-
রা তাঁহার প্রতি সন্দেহ করিতে তাঁহার
বিপদ ঘটিবার সম্ভাবনাও হইয়াছিল । যা-
হাদের বিষয় এই যে তিনি নিরদোষ হই-
য়াছেন ।

যাহা হউক, অন্য এবিষয়ের প্রসঙ্গ
করিবার তাৎপর্য্য এই, এদেশের ভাগ-
বানদিগের অনেকের অসংসংগ প্রভা-
বে অনেক সোণও অপবান ঘটিয়া থাকে ।
তাহাদিগেব কৃত্য হইয়া সে সংসর্গ প-
রিত্যাগ করিয়া সংস্কারক্রিয় হন এবং
জীবন্তি সান্ন মংক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিয়া
দেশের মুখ উজ্জ্বল করেন । আমাদের
অনুভব হইয়াছে, আমাদের প্রাথমিক অব-
শ্যেই সত্য উৎসুক, নিন্দাবাদ অবগেনকে ।

কিন্তু তাঁহার কয়েক জন ভ্রাতাই যে
কেবল মদ্যে মেশা হইতেছেন একপ-
নব, আর একজন কেপিয়াছেন । কয়েক
জন সুবর্ণবর্ণিক বস্ত্রোপবীত ধারণ করিয়া
বৈশ্য হইয়া চেষ্টা পাইতেছেন । অনেক
দিন অবধি এ বিষয়ের গোপনোপ-
ধারিত হইয়াছে । এতৎসংক্রান্ত একটি বাবু হইয়া
একটি হইয়াছে । এই সম্বন্ধে আমরা
দেব এক অস্বাভাবিক এক পানি ব্যবস্থা পত্র
আমাদিগের হস্তে আনিয়া দিলেন । তাঁ-

হার মানস এই, আমরা এই বিষয়
কিছু আন্দোলন ও বিচার করি ; কিন্তু
সুবর্ণবর্ণিকেরা বস্ত্রোপবীত ধারণ করিয়া
অগতের যে কি ইচ্ছা হইবে কিছু
হিস করিয়া উঠিতে পারিলাম না । সুতরা-
এবিষয়ে বিচারে প্রভুত্ব জন্মিল না ।
মুরোধকারী আশীষের প্রতি আমাদিগে
বক্তব্য এই, অনেক জুটিয়াছে, আনাদিগে
কে এই সঙ্গে কেলিয়া আর দল ভাবা
করিব বয়োজন নাই । এই প্রস্তাবটি
লিখিতে লিখিতে আমাদিগের একটি ভা-
বনা উপস্থিত হইল, যে কালে যে বিষয়ে
সবিশেষ প্রাধিকার হয়, সে কালের এক
একটি বিশেষ বিশেষ নাম হইয়া থাকে,
যথা— "সত্য, শ্রদ্ধা, দায়িত্ব" ইত্য-
দি ইত্যাদি ভাষায় গোলভ্রম হই-
য়াইরন এক প্রভুত্ব আছে, কলিকাতা
এই বর্তমান অবস্থায় কতজন একটা
কি নাম দেওয়া হইল । আমরা গাইকগে
এ উপরেই সেই নামটি মনোনিবেশ করিবার
তার অর্পণ করিলাম । আমাদিগের মনে
যে নামটি উদয় হইয়াছে, আমরা তাহ
বাক্য করিতে সাহসী হইলাম না ।

সব চরিত্রসমূহ ট্রিবিলায়নকে আ-
নন্দন পত্র দান ।

কমস চেম্বরের সভাপতি জে. এন. টেনেন
সাবেব প্রভুত্ব বর্ণকসম্প্রদায়ের ও তিনি
হি হইয়া ১০ই মার্চ শনিবার এবং ভারত
বর্ষীয় সভার সভাপতি রাজা রাধাকান্তের
বাক্যেব প্রভুত্ব এদেশীয়দিগেব প্রতিনি-
ধন হইয়া ১৫ই মার্চবার মর চা-
ট্রিবিলায়নকে সভাপতি করিয়া এক এক
অভিনন্দন পত্র দান করিয়াছেন । ৩২
উত্তমবিধ অভিনন্দন পত্র অনুবাদিত
হইয়া স্থানান্তরে প্রেরিত হইল ।

মর চাট্রিবিলায়ন উদার যথ-
যথ উত্তর দান করিয়া অভিনন্দন পত্র
লাভগণের সম্মান বর্জন করিয়াছেন । উত্ত-
পত্রই অভিনন্দন কর্তা ও উত্তরদাতা উ-

যেই যেই ও উৎকর্ষিত হইয়াছে। পশ্চিম বঙ্গের প্রাক্তন অধিক হইবে সর চার্লস ট্রিভিটালসিবিলাসন পদে প্রতিষ্ঠিত হইয়া এদেশে আগমন করিয়াছিলেন। তৎকালে রাজা রাধাকান্তদেব ও কালীকান্তদেব বাহা হুয়ের সঙ্ঘত তাঁহার আলাপ ছিল। বহুকাল পর পরস্পর সাক্ষাৎকার লাভ হওয়াতে সেই পূর্ব ভাব সুত্পথে আকর্ষ হয়। কিরূপে পরস্পর আলাপ সুখ অনুভব করিয়া আশ্চর্য লাভ করেন। এদেশের প্রতি চার্লস ট্রিভিলাসনের যে এক পট কেহ আছে, তাহা এই আলাপক্রিয়া ও তিনি অভিনন্দন পত্রের যে উত্তর দান করেন তাহার সুস্মৃতি প্রতীকমান হইতেছে।

সর চার্লস ট্রিভিলাসন এদেশে আগমন করিতে অভিনন্দন পত্রদ্বাংগণ কেবল যে অকৃত্রিম আশ্রয় প্রকাশ করিয়াছেন একপ নয়, তাহা হইতে ভারতবর্ষের বিশেষতঃ স্ব স্ব সংস্কারের মহাতীর্থে লাভের যে সম্পূর্ণ আশা আছে, তাহাও প্রকাশ করা হইয়াছে। কাহার কি বাঞ্ছিত বিষয়, অভিনন্দন পত্র পাঠ করিলে তৎসংক্রিয় লাভ হুত্ব হয় না। বাঞ্ছিত্য জবাব কর কমিয়া যায় এবং বাঞ্ছিত্য প্রতি প্রতি স্মরণরূপ হইয়া উহার সবিশেষ উন্নতি হয়, ইহাই বণিক সংস্কারের প্রধান আর্থিক বিষয়। ভারতবর্ষীয়া সভ্য এদেশের প্রতিনিধি; ইনকম ট্যাক্স এদেশীরদিগের বিষয় বিধিষ্ট পদার্থ; এ ট্যাক্সটি রহিত হয়, ইহা যে এ সভ্য প্রতিনিধিগণের প্রধান আর্থনীতি হইবে একথা বলা বাহুল্য।

চার্লস ট্রিভিলাসন হইতে উত্তরাধিক অভিনন্দন পত্রদ্বাংগণের যে মনোরথ পূর্ণ হইবে তাহার বিশেষ লক্ষণ দেখা গাইতেছে। তিনি কলিকাতায় পদার্পণ করিয়া অবধি কুহিন নছেন, বিশেষ বিশেষ কাব্যালয় দর্শন করিতেছেন। কষ্টম

হটম ও ইনকম ট্যাক্স আকিস উত্তর হলেই তাঁহার ভূলাকপে দৃষ্টি নিপতিত হইয়াছে। তিনি তৎসংক্রিয় ইনকম ট্যাক্সের প্রতিবাদী, অতএব তাঁহার যে তত্ত্ববুলন চেষ্টা করিবে, তাহা কিছু বিচিত্র নহে, বাঞ্ছিত্য জবাবে করগ্রহ হইতে মুক্ত করাও তাঁহার অভিপ্রেত। তিনি ভারতবর্ষীয় সভ্যর প্রদত্ত অভিনন্দন পত্রের উত্তর দান কালে স্মৃতিস্মরণেই কহিয়াছেন, অজ্ঞাত সমুদায় জ্ঞেয় বিষয় তিনি ভূলাকপে দর্শন করিবেন।

যে উপায় দ্বারা এতদ্বিধিনি অতীর্থে সিদ্ধির সম্ভাবনা আছে, জনববে শুনা যাইতেছে, তিনি তদবলয়ন চেষ্টায় উদ্যোগী নছেন। মাস্ত্রাজে জনববে উঠিয়াছে, মৈন্য কন্ডাইয়া দেওয়া হইবে, এখ নেনও অনেক কর্ণাকর্ষ করিতেছেন যে সিবিলাসনদিগের বেতন কন্ডাইয়া দেওয়া হইবে। আর পল্লিত্য গ চেষ্ঠা করিতে গেলে ব্যয় সংক্ষেপ বাতিরেকে তদ্বিষয়ে কৃতার্থতা লাভের সম্ভাবনা কি? এরোজনাতিবিক্রম মৈন্য ও সিবিলাসনদিগের মোটা বেতনই ভারতবর্ষীয় কোষগৃহ শুষ্ক ও শূন্য করিতেছে। আমরা বরাবর মৈন্য সংক্রান্ত অনাবশ্যক ও অসমত ব্যয়ের বিষয়ের প্রতিবাদ করিয়া আসিতেছি। চার্লস ট্রিভিলাসন যদি পবলিকওয়ার্কের বিশেষতঃ রেলওয়ের ডাকহীতদিগের বিষয়ে কিছু মনোযোগ করেন, অনেক ব্যয় সংক্ষেপ করিয়া আনিতে পারিবেন।

জিনিঃ মন্ডমা, মাকির সন্ধান
দলী ও বিচার।

১৯ই মার্চ সোমবার হিলির বিচার আরম্ভ হয়। যাবতীয় পেটিশুরি, বিস্তার দর্শক ও অন্য অন্য লোক উপস্থিত ছিলেন। বেং ১১ ঘটিকার পর বিচারপতি সর চার্লস জাকসন আসন পরিগ্রহ করিলে কার্ট হিলির অপরাধবৃত্তান্ত পাঠ ক-

রিলেন। ইংলণ্ডের বারী বিচার প্রতিবাদী। ইংলণ্ডের পক্ষ উকীল আডবোকেট জেনারেল ও জেহার সাহেব প্রতিবাদীর পক্ষ উকীল ডেইন ও পাল সাহেব। বারীর উকীল আডবোকেট জেনারেল কাউই সাহেব প্রথমে মিন্নি বিচার বক্তৃতা করিলেন—

কুহি মন্ডমাগণ! আমি আগন্তুককে যে মকদ্দমার বিচার করিতে আসিতেছি, তাহা অতি গুরুতর। সামান্য বিষয়ে যে কোন বৈলক্ষ্য থাকুক না কেন এবং সংবাদ পত্রাদিতে যে কিছু বলা হইতে পারে, আমি প্রার্থনা করি আপনাদের যথার্থ এমাম গ্রহণ করিয়া নিরপেক্ষরূপে আশ্রমত প্রকাশ করিবেন। বিচার বিষয়ে আপনাদিগের বিচার্য এই—
এ বাক্তি কুহিমন্ডাকে ২৫ করিয়াছে কিনা? ১৮৬১-৬২-৬৩-৬৪-৬৫-৬৬-৬৭-৬৮-৬৯-৭০-৭১-৭২-৭৩-৭৪-৭৫-৭৬-৭৭-৭৮-৭৯-৮০-৮১-৮২-৮৩-৮৪-৮৫-৮৬-৮৭-৮৮-৮৯-৯০-৯১-৯২-৯৩-৯৪-৯৫-৯৬-৯৭-৯৮-৯৯-১০০-১০১-১০২-১০৩-১০৪-১০৫-১০৬-১০৭-১০৮-১০৯-১১০-১১১-১১২-১১৩-১১৪-১১৫-১১৬-১১৭-১১৮-১১৯-১২০-১২১-১২২-১২৩-১২৪-১২৫-১২৬-১২৭-১২৮-১২৯-১৩০-১৩১-১৩২-১৩৩-১৩৪-১৩৫-১৩৬-১৩৭-১৩৮-১৩৯-১৪০-১৪১-১৪২-১৪৩-১৪৪-১৪৫-১৪৬-১৪৭-১৪৮-১৪৯-১৫০-১৫১-১৫২-১৫৩-১৫৪-১৫৫-১৫৬-১৫৭-১৫৮-১৫৯-১৬০-১৬১-১৬২-১৬৩-১৬৪-১৬৫-১৬৬-১৬৭-১৬৮-১৬৯-১৭০-১৭১-১৭২-১৭৩-১৭৪-১৭৫-১৭৬-১৭৭-১৭৮-১৭৯-১৮০-১৮১-১৮২-১৮৩-১৮৪-১৮৫-১৮৬-১৮৭-১৮৮-১৮৯-১৯০-১৯১-১৯২-১৯৩-১৯৪-১৯৫-১৯৬-১৯৭-১৯৮-১৯৯-২০০-২০১-২০২-২০৩-২০৪-২০৫-২০৬-২০৭-২০৮-২০৯-২১০-২১১-২১২-২১৩-২১৪-২১৫-২১৬-২১৭-২১৮-২১৯-২২০-২২১-২২২-২২৩-২২৪-২২৫-২২৬-২২৭-২২৮-২২৯-২৩০-২৩১-২৩২-২৩৩-২৩৪-২৩৫-২৩৬-২৩৭-২৩৮-২৩৯-২৪০-২৪১-২৪২-২৪৩-২৪৪-২৪৫-২৪৬-২৪৭-২৪৮-২৪৯-২৫০-২৫১-২৫২-২৫৩-২৫৪-২৫৫-২৫৬-২৫৭-২৫৮-২৫৯-২৬০-২৬১-২৬২-২৬৩-২৬৪-২৬৫-২৬৬-২৬৭-২৬৮-২৬৯-২৭০-২৭১-২৭২-২৭৩-২৭৪-২৭৫-২৭৬-২৭৭-২৭৮-২৭৯-২৮০-২৮১-২৮২-২৮৩-২৮৪-২৮৫-২৮৬-২৮৭-২৮৮-২৮৯-২৯০-২৯১-২৯২-২৯৩-২৯৪-২৯৫-২৯৬-২৯৭-২৯৮-২৯৯-৩০০-৩০১-৩০২-৩০৩-৩০৪-৩০৫-৩০৬-৩০৭-৩০৮-৩০৯-৩১০-৩১১-৩১২-৩১৩-৩১৪-৩১৫-৩১৬-৩১৭-৩১৮-৩১৯-৩২০-৩২১-৩২২-৩২৩-৩২৪-৩২৫-৩২৬-৩২৭-৩২৮-৩২৯-৩৩০-৩৩১-৩৩২-৩৩৩-৩৩৪-৩৩৫-৩৩৬-৩৩৭-৩৩৮-৩৩৯-৩৪০-৩৪১-৩৪২-৩৪৩-৩৪৪-৩৪৫-৩৪৬-৩৪৭-৩৪৮-৩৪৯-৩৫০-৩৫১-৩৫২-৩৫৩-৩৫৪-৩৫৫-৩৫৬-৩৫৭-৩৫৮-৩৫৯-৩৬০-৩৬১-৩৬২-৩৬৩-৩৬৪-৩৬৫-৩৬৬-৩৬৭-৩৬৮-৩৬৯-৩৭০-৩৭১-৩৭২-৩৭৩-৩৭৪-৩৭৫-৩৭৬-৩৭৭-৩৭৮-৩৭৯-৩৮০-৩৮১-৩৮২-৩৮৩-৩৮৪-৩৮৫-৩৮৬-৩৮৭-৩৮৮-৩৮৯-৩৯০-৩৯১-৩৯২-৩৯৩-৩৯৪-৩৯৫-৩৯৬-৩৯৭-৩৯৮-৩৯৯-৪০০-৪০১-৪০২-৪০৩-৪০৪-৪০৫-৪০৬-৪০৭-৪০৮-৪০৯-৪১০-৪১১-৪১২-৪১৩-৪১৪-৪১৫-৪১৬-৪১৭-৪১৮-৪১৯-৪২০-৪২১-৪২২-৪২৩-৪২৪-৪২৫-৪২৬-৪২৭-৪২৮-৪২৯-৪৩০-৪৩১-৪৩২-৪৩৩-৪৩৪-৪৩৫-৪৩৬-৪৩৭-৪৩৮-৪৩৯-৪৪০-৪৪১-৪৪২-৪৪৩-৪৪৪-৪৪৫-৪৪৬-৪৪৭-৪৪৮-৪৪৯-৪৫০-৪৫১-৪৫২-৪৫৩-৪৫৪-৪৫৫-৪৫৬-৪৫৭-৪৫৮-৪৫৯-৪৬০-৪৬১-৪৬২-৪৬৩-৪৬৪-৪৬৫-৪৬৬-৪৬৭-৪৬৮-৪৬৯-৪৭০-৪৭১-৪৭২-৪৭৩-৪৭৪-৪৭৫-৪৭৬-৪৭৭-৪৭৮-৪৭৯-৪৮০-৪৮১-৪৮২-৪৮৩-৪৮৪-৪৮৫-৪৮৬-৪৮৭-৪৮৮-৪৮৯-৪৯০-৪৯১-৪৯২-৪৯৩-৪৯৪-৪৯৫-৪৯৬-৪৯৭-৪৯৮-৪৯৯-৫০০-৫০১-৫০২-৫০৩-৫০৪-৫০৫-৫০৬-৫০৭-৫০৮-৫০৯-৫১০-৫১১-৫১২-৫১৩-৫১৪-৫১৫-৫১৬-৫১৭-৫১৮-৫১৯-৫২০-৫২১-৫২২-৫২৩-৫২৪-৫২৫-৫২৬-৫২৭-৫২৮-৫২৯-৫৩০-৫৩১-৫৩২-৫৩৩-৫৩৪-৫৩৫-৫৩৬-৫৩৭-৫৩৮-৫৩৯-৫৪০-৫৪১-৫৪২-৫৪৩-৫৪৪-৫৪৫-৫৪৬-৫৪৭-৫৪৮-৫৪৯-৫৫০-৫৫১-৫৫২-৫৫৩-৫৫৪-৫৫৫-৫৫৬-৫৫৭-৫৫৮-৫৫৯-৫৬০-৫৬১-৫৬২-৫৬৩-৫৬৪-৫৬৫-৫৬৬-৫৬৭-৫৬৮-৫৬৯-৫৭০-৫৭১-৫৭২-৫৭৩-৫৭৪-৫৭৫-৫৭৬-৫৭৭-৫৭৮-৫৭৯-৫৮০-৫৮১-৫৮২-৫৮৩-৫৮৪-৫৮৫-৫৮৬-৫৮৭-৫৮৮-৫৮৯-৫৯০-৫৯১-৫৯২-৫৯৩-৫৯৪-৫৯৫-৫৯৬-৫৯৭-৫৯৮-৫৯৯-৬০০-৬০১-৬০২-৬০৩-৬০৪-৬০৫-৬০৬-৬০৭-৬০৮-৬০৯-৬১০-৬১১-৬১২-৬১৩-৬১৪-৬১৫-৬১৬-৬১৭-৬১৮-৬১৯-৬২০-৬২১-৬২২-৬২৩-৬২৪-৬২৫-৬২৬-৬২৭-৬২৮-৬২৯-৬৩০-৬৩১-৬৩২-৬৩৩-৬৩৪-৬৩৫-৬৩৬-৬৩৭-৬৩৮-৬৩৯-৬৪০-৬৪১-৬৪২-৬৪৩-৬৪৪-৬৪৫-৬৪৬-৬৪৭-৬৪৮-৬৪৯-৬৫০-৬৫১-৬৫২-৬৫৩-৬৫৪-৬৫৫-৬৫৬-৬৫৭-৬৫৮-৬৫৯-৬৬০-৬৬১-৬৬২-৬৬৩-৬৬৪-৬৬৫-৬৬৬-৬৬৭-৬৬৮-৬৬৯-৬৭০-৬৭১-৬৭২-৬৭৩-৬৭৪-৬৭৫-৬৭৬-৬৭৭-৬৭৮-৬৭৯-৬৮০-৬৮১-৬৮২-৬৮৩-৬৮৪-৬৮৫-৬৮৬-৬৮৭-৬৮৮-৬৮৯-৬৯০-৬৯১-৬৯২-৬৯৩-৬৯৪-৬৯৫-৬৯৬-৬৯৭-৬৯৮-৬৯৯-৭০০-৭০১-৭০২-৭০৩-৭০৪-৭০৫-৭০৬-৭০৭-৭০৮-৭০৯-৭১০-৭১১-৭১২-৭১৩-৭১৪-৭১৫-৭১৬-৭১৭-৭১৮-৭১৯-৭২০-৭২১-৭২২-৭২৩-৭২৪-৭২৫-৭২৬-৭২৭-৭২৮-৭২৯-৭৩০-৭৩১-৭৩২-৭৩৩-৭৩৪-৭৩৫-৭৩৬-৭৩৭-৭৩৮-৭৩৯-৭৪০-৭৪১-৭৪২-৭৪৩-৭৪৪-৭৪৫-৭৪৬-৭৪৭-৭৪৮-৭৪৯-৭৫০-৭৫১-৭৫২-৭৫৩-৭৫৪-৭৫৫-৭৫৬-৭৫৭-৭৫৮-৭৫৯-৭৬০-৭৬১-৭৬২-৭৬৩-৭৬৪-৭৬৫-৭৬৬-৭৬৭-৭৬৮-৭৬৯-৭৭০-৭৭১-৭৭২-৭৭৩-৭৭৪-৭৭৫-৭৭৬-৭৭৭-৭৭৮-৭৭৯-৭৮০-৭৮১-৭৮২-৭৮৩-৭৮৪-৭৮৫-৭৮৬-৭৮৭-৭৮৮-৭৮৯-৭৯০-৭৯১-৭৯২-৭৯৩-৭৯৪-৭৯৫-৭৯৬-৭৯৭-৭৯৮-৭৯৯-৮০০-৮০১-৮০২-৮০৩-৮০৪-৮০৫-৮০৬-৮০৭-৮০৮-৮০৯-৮১০-৮১১-৮১২-৮১৩-৮১৪-৮১৫-৮১৬-৮১৭-৮১৮-৮১৯-৮২০-৮২১-৮২২-৮২৩-৮২৪-৮২৫-৮২৬-৮২৭-৮২৮-৮২৯-৮৩০-৮৩১-৮৩২-৮৩৩-৮৩৪-৮৩৫-৮৩৬-৮৩৭-৮৩৮-৮৩৯-৮৪০-৮৪১-৮৪২-৮৪৩-৮৪৪-৮৪৫-৮৪৬-৮৪৭-৮৪৮-৮৪৯-৮৫০-৮৫১-৮৫২-৮৫৩-৮৫৪-৮৫৫-৮৫৬-৮৫৭-৮৫৮-৮৫৯-৮৬০-৮৬১-৮৬২-৮৬৩-৮৬৪-৮৬৫-৮৬৬-৮৬৭-৮৬৮-৮৬৯-৮৭০-৮৭১-৮৭২-৮৭৩-৮৭৪-৮৭৫-৮৭৬-৮৭৭-৮৭৮-৮৭৯-৮৮০-৮৮১-৮৮২-৮৮৩-৮৮৪-৮৮৫-৮৮৬-৮৮৭-৮৮৮-৮৮৯-৮৯০-৮৯১-৮৯২-৮৯৩-৮৯৪-৮৯৫-৮৯৬-৮৯৭-৮৯৮-৮৯৯-৯০০-৯০১-৯০২-৯০৩-৯০৪-৯০৫-৯০৬-৯০৭-৯০৮-৯০৯-৯১০-৯১১-৯১২-৯১৩-৯১৪-৯১৫-৯১৬-৯১৭-৯১৮-৯১৯-৯২০-৯২১-৯২২-৯২৩-৯২৪-৯২৫-৯২৬-৯২৭-৯২৮-৯২৯-৯৩০-৯৩১-৯৩২-৯৩৩-৯৩৪-৯৩৫-৯৩৬-৯৩৭-৯৩৮-৯৩৯-৯৪০-৯৪১-৯৪২-৯৪৩-৯৪৪-৯৪৫-৯৪৬-৯৪৭-৯৪৮-৯৪৯-৯৫০-৯৫১-৯৫২-৯৫৩-৯৫৪-৯৫৫-৯৫৬-৯৫৭-৯৫৮-৯৫৯-৯৬০-৯৬১-৯৬২-৯৬৩-৯৬৪-৯৬৫-৯৬৬-৯৬৭-৯৬৮-৯৬৯-৯৭০-৯৭১-৯৭২-৯৭৩-৯৭৪-৯৭৫-৯৭৬-৯৭৭-৯৭৮-৯৭৯-৯৮০-৯৮১-৯৮২-৯৮৩-৯৮৪-৯৮৫-৯৮৬-৯৮৭-৯৮৮-৯৮৯-৯৯০-৯৯১-৯৯২-৯৯৩-৯৯৪-৯৯৫-৯৯৬-৯৯৭-৯৯৮-৯৯৯-১০০০-১০০১-১০০২-১০০৩-১০০৪-১০০৫-১০০৬-১০০৭-১০০৮-১০০৯-১০১০-১০১১-১০১২-১০১৩-১০১৪-১০১৫-১০১৬-১০১৭-১০১৮-১০১৯-১০২০-১০২১-১০২২-১০২৩-১০২৪-১০২৫-১০২৬-১০২৭-১০২৮-১০২৯-১০৩০-১০৩১-১০৩২-১০৩৩-১০৩৪-১০৩৫-১০৩৬-১০৩৭-১০৩৮-১০৩৯-১০৪০-১০৪১-১০৪২-১০৪৩-১০৪৪-১০৪৫-১০৪৬-১০৪৭-১০৪৮-১০৪৯-১০৫০-১০৫১-১০৫২-১০৫৩-১০৫৪-১০৫৫-১০৫৬-১০৫৭-১০৫৮-১০৫৯-১০৬০-১০৬১-১০৬২-১০৬৩-১০৬৪-১০৬৫-১০৬৬-১০৬৭-১০৬৮-১০৬৯-১০৭০-১০৭১-১০৭২-১০৭৩-১০৭৪-১০৭৫-১০৭৬-১০৭৭-১০৭৮-১০৭৯-১০৮০-১০৮১-১০৮২-১০৮৩-১০৮৪-১০৮৫-১০৮৬-১০৮৭-১০৮৮-১০৮৯-১০৯০-১০৯১-১০৯২-১০৯৩-১০৯৪-১০৯৫-১০৯৬-১০৯৭-১০৯৮-১০৯৯-১১০০-১১০১-১১০২-১১০৩-১১০৪-১১০৫-১১০৬-১১০৭-১১০৮-১১০৯-১১১০-১১১১-১১১২-১১১৩-১১১৪-১১১৫-১১১৬-১১১৭-১১১৮-১১১৯-১১২০-১১২১-১১২২-১১২৩-১১২৪-১১২৫-১১২৬-১১২৭-১১২৮-১১২৯-১১৩০-১১৩১-১১৩২-১১৩৩-১১৩৪-১১৩৫-১১৩৬-১১৩৭-১১৩৮-১১৩৯-১১৪০-১১৪১-১১৪২-১১৪৩-১১৪৪-১১৪৫-১১৪৬-১১৪৭-১১৪৮-১১৪৯-১১৫০-১১৫১-১১৫২-১১৫৩-১১৫৪-১১৫৫-১১৫৬-১১৫৭-১১৫৮-১১৫৯-১১৬০-১১৬১-১১৬২-১১৬৩-১১৬৪-১১৬৫-১১৬৬-১১৬৭-১১৬৮-১১৬৯-১১৭০-১১৭১-১১৭২-১১৭৩-১১৭৪-১১৭৫-১১৭৬-১১৭৭-১১৭৮-১১৭৯-১১৮০-১১৮১-১১৮২-১১৮৩-১১৮৪-১১৮৫-১১৮৬-১১৮৭-১১৮৮-১১৮৯-১১৯০-১১৯১-১১৯২-১১৯৩-১১৯৪-১১৯৫-১১৯৬-১১৯৭-১১৯৮-১১৯৯-১২০০-১২০১-১২০২-১২০৩-১২০৪-১২০৫-১২০৬-১২০৭-১২০৮-১২০৯-১২১০-১২১১-১২১২-১২১৩-১২১৪-১২১৫-১২১৬-১২১৭-১২১৮-১২১৯-১২২০-১২২১-১২২২-১২২৩-১২২৪-১২২৫-১২২৬-১২২৭-১২২৮-১২২৯-১২৩০-১২৩১-১২৩২-১২৩৩-১২৩৪-১২৩৫-১২৩৬-১২৩৭-১২৩৮-১২৩৯-১২৪০-১২৪১-১২৪২-১২৪৩-১২৪৪-১২৪৫-১২৪৬-১২৪৭-১২৪৮-১২৪৯-১২৫০-১২৫১-১২৫২-১২৫৩-১২৫৪-১২৫৫-১২৫৬-১২৫৭-১২৫৮-১২৫৯-১২৬০-১২৬১-১২৬২-১২৬৩-১২৬৪-১২৬৫-১২৬৬-১২৬৭-১২৬৮-১২৬৯-১২৭০-১২৭১-১২৭২-১২৭৩-১২৭৪-১২৭৫-১২৭৬-১২৭৭-১২৭৮-১২৭৯-১২৮০-১২৮১-১২৮২-১২৮৩-১২৮৪-১২৮৫-১২৮৬-১২৮৭-১২৮৮-১২৮৯-১২৯০-১২৯১-১২৯২-১২৯৩-১২৯৪-১২৯৫-১২৯৬-১২৯৭-১২৯৮-১২৯৯-১৩০০-১৩০১-১৩০২-১৩০৩-১৩০৪-১৩০৫-১৩০৬-১৩০৭-১৩০৮-১৩০৯-১৩১০-১৩১১-১৩১২-১৩১৩-১৩১৪-১৩১৫-১৩১৬-১৩১৭-১৩১৮-১৩১৯-১৩২০-১৩২১-১৩২২-১৩২৩-১৩২৪-১৩২৫-১৩২৬-১৩২৭-১৩২৮-১৩২৯-১৩৩০-১৩৩১-১৩৩২-১৩৩৩-১৩৩৪-১৩৩৫-১৩৩৬-১৩৩৭-১৩৩৮-১৩৩৯-১৩৪০-১৩৪১-১৩৪২-১৩৪৩-১৩৪৪-১৩৪৫-১৩৪৬-১৩৪৭-১৩৪৮-১৩৪৯-১৩৫০-১৩৫১-১৩৫২-১৩৫৩-১৩৫৪-১৩৫৫-১৩৫৬-১৩৫৭-১৩৫৮-১৩৫৯-১৩৬০-১৩৬১-১৩৬২-১৩৬৩-১৩৬৪-১৩৬৫-১৩৬৬-১৩৬৭-১৩৬৮-১৩৬৯-১৩৭০-১৩৭১-১৩৭২-১৩৭৩-১৩৭৪-১৩৭৫-১৩৭৬-১৩৭৭-১৩৭৮-১৩৭৯-১৩৮০-১৩৮১-১৩৮২-১৩৮৩-১৩৮৪-১৩৮৫-১৩৮৬-১৩৮৭-১৩৮৮-১৩৮৯-১৩৯০-১৩৯১-১৩৯২-১৩৯৩-১৩৯৪-১৩৯৫-১৩৯৬-১৩৯৭-১৩৯৮-১৩৯৯-১৪০০-১৪০১-১৪০২-১৪০৩-১৪০৪-১৪০৫-১৪০৬-১৪০৭-১৪০৮-১৪০৯-১৪১০-১৪১১-১৪১২-১৪১৩-১৪১৪-১৪১৫-১৪১৬-১৪১৭-১৪১৮-১৪১৯-১৪২০-১৪২১-১৪২২-১৪২৩-১৪২৪-১৪২৫-১৪২৬-১৪২৭-১৪২৮-১৪২৯-১৪৩০-১৪৩১-১৪৩২-১৪৩৩-১৪৩৪-১৪৩৫-১৪৩৬-

বলিয়া কেবল অপরাধী করিওন । সে
সে আক্রমণের সময় ছিল, এবং অনেকে
হত্যা ও লুণ্ঠ প্রভৃতিতে প্রবৃত্তি দেয়, এ
বিষয়ে গবর্ণমেন্ট বাদী নহেন । অতএব
অপরাধী যদি কেথেন সে নিজে হত্যা
করিয়াছে, তবে তাহাকে দোষী বলিবেন,
১৮২ এককালে মুক্ত করিবার অনুরোধ
করিবেন ।

কাউই সাহেব তৎপরে লুণ্ঠ প্রভৃতির
বিষয় উল্লেখ করিলেন কিন্তু স্পর্শে বাধা
হিলির প্রতি কোন দোষারোপ করিলেন
না । পরিশেষে বলিলেন হিলি মুক্ত হইলে
তিনি সম্ভব হইবেন । আরো তিনি এ ক
থাও বলিলেন সাক্ষিদিগের বক্তব্য বহু
অসঙ্গত আছে এবং সাক্ষিদিগের সকলে
বিত্তিক স্পর্শে হত্যাকারী প্রমাণ করিতে
পারে নাই । তৎপরে নিম্ন লিখিত সাক্ষি
দিগের জবানবন্দী হইল ।

হিলির ভগিনীপাতি কুন্দিস বিহার
বলিলেন হিলি এই দেশে জন্মিয়াছে, তাহা
বাতা পিতা উভয়ে অগ্রসরগণের লোক,
অগ্রসর এপ্রলে তাহার ২১ বৎসর বয়স
পূর্ণ হইবে । পবে এক জন এতদেশীয়
সাক্ষী বলিল গত বৎসর ১২ই অর্থাৎ ১৩ই
অগ্রহণ্মসে যে দাঙ্গা হয়, তাহাতে রহিমু
জার পাণে প্রথমে গুলি লাগে, পরে সে
বাটার ভিতর পলায়ন করিলে বাহিরের
দার হইতে হিলি বহুস্ত তাহার বক্ষঃস্থলে
গুলি করে । তাহাতে তাহার মৃত্যু হয়
এই সেই হিলি তাহার সন্দেহ নাই । সে
তখন শ্বেতবস্ত্র পরিধান করিয়াছিল । উই
ন সাহেবের আশ্রম নুসারে সে বলিল হিলি
বাটার রক্ত দেয় নাই এবং সে আর কা
হাও রক্ত মাখা দেখে নাই ।

অপর সাক্ষী সন্নিবুদ্ধিও এই একা
বাক্য দিয়া হিলিকে বখার্ব হত্যাকা
রী বলিয়া নির্দেশ করিল । সে তাহার সম
রহিমুজার নিকটে দণ্ডায়মান ছিল ।
আরও পূর্ব সাক্ষীর নাম স্পর্শাতি

খানে বলিল, সে মরেল, সাহেবের কয়েক
জন লাঠিয়াল ও সিপাহীকে দর্শন করিয়া
ছিল । আর একজন সাক্ষীও একপ লপথ
পূর্বক হিলিকে হত্যাকারী বলিয়া নির্দেশ
করিল এবং হিলিকে চিনিয়া দিল । তৃতীয়
বলিল, আমি রহিমুজার বাটাতে থাকি
তাম । হিলি বহুস্তে রহিমুজাকে বধ করে,
পরে তাহার মৃত দেহ ও আমাকে এক
নৌকায় লইয়া যায় । হিলি প্রথমে সেই
নৌকায় ছিল । হিলি যাবতীয় দম্ভকে
লুণ্ঠ ও বধ করিতে উৎসাহ দেয় । বড়ুও
এই প্রকার সাক্ষ্য দিল । রহিমুজার স্ত্রী
কলগা বিবি বলিল, আক্রমণকারিরা বাটা
র নিকটে আসিলে রহিমুজা গবর্ণমেন্ট ও
ইংলণ্ডেশ্বরীর দোহাই দিয়া হিলিকে ব
লিল “ আমাকে যেখানে ইচ্ছা লইয়া চল
বিস্ত আমাকে প্রাণে নষ্ট করিও না, আ
মার অনেক পোষ্য পরিবার আছে, আর
যদিও আমাকে বধ করা তোমাদিগের এ
কান্ত ইচ্ছা থাকে, দোহাই ইংরেজের
আমার পরিবারের স্ত্রীলোকদিগের কোন
প্রকারে অপমান করিও না । ” হিলি ব
হুস্ত রহিমুজাকে গুলি করে । পক্ষান্ত
তাহার আজ্ঞানুসারে আমাকে ও মৃত বা
টার দেহ অন্য অন্য ব্যক্তির সতি
লইয়া যাওয়া হয় । রহিমুজার একটি পুত্র
ও কয়েকটি স্ত্রীলোক গুলি দ্বারা অস্ত
হয় । কোন প্রকারে হিলির লোকেরা বিন
য় প্রবণ করে নাই । সে সময়ে আমি এম
নিবৃত্ত হইয়াছিলাম যে হিলির কি প্র
কার বস্ত্র তাহা দর্শন করি নাই ।

তোবি বিনিও এই প্রকার বলিল ।
সে হিলিকে চিনিতে পারেনা, কিন্তু মিস্ত
র কপে বলিল একজন ইউরোপীয় তথায়
উপস্থিত ছিল । সেখানকারও এই কথা বলি
ল । বিশেষের মধ্যে এই বলিল যে হিলি
র মুখের কিয়দংশ সে দেখিয়াছে, এবং
সে যে মরেলের সুপরিণেতাণ্ড তথায়
কোন সন্দেহ নাই ।

সাক্ষী বলিল, সে হিলিকে বহুস্ত
গুলি করিতে দেখে নাই, কিন্তু মিস্তর ক
রিয়া একপাও বলিতে পারে না যে হিলি
হইতে একাজ হয় নাই । ডেপুটি মাজি
স্ট্রেট বক্সমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় বলিলেন
আমি গত বৎসরের অগ্রহণ্মসে আসে বরা
খানির দাঙ্গার কথা অবগত করিয়া তথায়
গমন করিয়াছিলাম । তিন জন সাক্ষীর
জবানবন্দী লই, তাহার মধ্যে এক জন
মৃত প্রায় ছিল । ১২ই ডিসেম্বর কুল্লিয়ার
হিলির সহিত আমার সাক্ষাৎ হয় । মরে
লের কয়েক জন প্রজার উপস্থিতিতে
ওয়াতে আমি হিলিকে তাহার নিকটে ধরিয়া
দিতে বলি । হিলি বলিলেন তাহার
নির্দোষী । হিলির নাম জিজ্ঞাসা করাত
তিনি তাহা বলিলেন না । মরেলের বাটার
ভিতর হইতে দুই ব্যক্তিকে বাহির কব
হয় । ৬ই ডিসেম্বর হিলিকে প্রেরণ করি
বার পরামর্শ দিয়াছিলাম । হিলির এক
জন বন্ধু গত জুলাই মাসে বলেন বাহাদুর
হিলি বলিয়া খুঁজ করা হইয়াছে সে বহু
হিলি নহে । হিলি যে হত্যাকারী একথা অ
নেক ব্যক্তি তাহার নিকটে বলিয়াছে ।

পুলিশ জমাদার দীনবন্ধু সিংহ বলি
ল, আমি হিলিকে বহুস্তে দাঙ্গাস্থলে দ
র্শন করিয়াছি । তাহার পর সে হিলিকে
চিনিয়া দিল । কুল্লিয়ার চৌকিদারও একথা
বলিল । ছেনেরি লুই মিচেল হিলিকে
আসামে খুঁজ করেন । যখন সে খুঁজ
হয়, তখন সে প্রথমে কুল্লিয়ার করিয়া
উঠিয়াছিল । সেবে সে আপনাকে হিলি
বলিয়া পরিচয় দেয় । সাক্ষীর জবানবন্দি
শেষ হইলে যিনি কুরিদিগের প্রধান, তিনি
বলিলেন হিলির পক্ষ সমর্থন করী উর্ক
দের বাক্য অবগের আবশ্যকতা নাই ।
বাদী তাহার দোষ সপ্রমাণ করিতে পারেন
নাই । অনন্তর কুরিরা সকলে তাহাকে
একবাচ্যে নির্দোষী বলিলেন । বিচারপতি
তাহাকে সম্মতি দেওয়াতে তাহাকে তৎক্ষ

গাং হুত করিলেন। দুখবার জীবনসময়
শেষ হইয়াছে।

কি কারণে হিলিকে হাতিয়া দেওয়া

হইল বুঝা গেল না।

পাঠকগণ! আপনারা কি কৃত্রিম সত্য-
দ অবগোচর করিয়া সৌমপ্রকাশের পূর্ব
নিরীক্ষণ করিয়া আছেন? সৌমপ্রকাশ
প্রতি সত্ত্বাহে যথাসম্ভব কৃত্রিম সত্য দিয়া
আপনারিগের কৌতুহল পূর্ণ করিয়া থাকে
বটে কিন্তু আমি যে একটি সত্যকৃত কৃত্রিম
সত্য দিতে চানিয়াছি, ঐক্য সত্য-
চার কখন আপনারিগের অবশ্য বিবরণে
প্রবেশ করে নাই, অবশ্য তারা দুই প্রাকৃতিক
এমন আশ্চর্য সত্য কখন যে আপনারি
গের অবশ্য পথের অভিমুখ হইবে, আপনা
রা একপ কখন মনেও করেন নাই। সে
সত্য এই—ভেনিস হিলি বিনা বটে
অব্যাহতি পাইয়াছে!! সত্য দুখবারের
সাময়কালে এই সত্যচার কখন নগরসম
হইল, নগর বিস্তার, রোষ, ক্ষোভ, ও ভয়ে
একান্ত পরাধীন হইয়া কপালিত হইয়া
করিয়াছিল। বাহারা স্বকর্ণে আজ্ঞাদান
অবশ্য না করিয়াছিলেন, তাহারা এখন
ইহাতে বিশ্বাস করেন নাই। তাহাদিগের
অবিশ্বাস হওয়া আশ্চর্যের বিষয় নহে।
হিলির চুরাচারতার বিষয়ে কাহারও সন্দেহ
হইল না; তাহাকে বরাখালির অরাজক
কাণ্ডের কর্তা বলিয়া তাহাদিগের দৃঢ়তর
সংস্কার জন্মিয়াছিল; তাহার অপরাধও
বহুতর সুশ্রুতি প্রমাণ দ্বারা সপ্রমাণ হই
য়াছে, অর্থাৎ সেই চুরাচার অব্যাহতি পা
ইল। এ সত্য শুনিতে সভ্য বলিয়া তাহা
তে কাহার বিশ্বাস জন্মিতে পারে? বাহা
হটক, ঐ দুখবার সচিচার, আইন, ঐক্য
ও নিয়ম ও তারতম্যের দ্বারা এ সত্যদার
পাপের নিকটে পরাভূ হইয়াছে। সামান্য
মুটিয়া অবশি ধনবান বণিক পর্যন্ত সক
লেই সাক্ষিগণ বিস্তারিত হইয়াছেন। ইতি

সৌমপ্রকাশে অপরাধ করিলে বড় দর না
বলিয়া এদেশীয়দিগের যে সংস্কার ছিল,
সত্য দুখবার তাহা লোকের হৃদয়ে দৃঢ়তর
কল্পে বদ্ধবল করিয়া দিয়াছে। মেগোলি
রাজের পতন কালে তাহার সেনারা যেকপ
দৃঢ়তর ও রোষপূর্ণ হইয়াছিল, বরা
খালির অরাজক কাণ্ডকারীর মুক্তি লাভ
করবে, এদেশীয় সমাজ ততোধিক দৃঢ়তর
হইয়াছে। বার! তারতম্য কি চুরবরা
তে পতিত হইলেন!

চুরিয়া যেকপ মত প্রকাশ করুন না
কেন, আমরা কৃত্রিম কহিতে পারি
হিলি ইহাতে বরাখালির হত্যাকাণ্ড হইয়া
ছে। সাক্ষিগণের বাক্যে আমাদের
অনুমান সংস্কার জন্মিতেছে না। এ প্রকার
অভ্যুত্থান, একপ মনঃসম্মত মানবস্বভাব, একপ
অনুষ্ঠিত ব্যবহার অন্য কোন দেশে কখন
দৃঢ় হয় নাই। করাসী বিজোহে সত্য
সত্য লোক এক এক স্থানে হত হইয়াছেন
যথার্থ বটে, কিন্তু এগার শাস্তি, সময়ে
কোন সত্যবশে ও সত্যতম গবর্ণমেন্টের
অধীনে চুরল ব্যক্তির উপরে একপ অভ্যু
ত্থান হইয়াছে, ইহা কখন অবশ্য করা যায়
নাই। ইহা একপ আর একটি দৃঢ়তর
প্রদর্শন করিতে পারেন না। অভ্যুত্থান
তা কালের বিচারও ইহার নিকটে লজ্জিত
হইয়াছে। মনুষ্য কোথ লোভ, স্বার্থপরতা ও
বৈরমিত্যনির্ভরতা দ্বারা প্রেরিত হইয়া
যে সমস্ত কুক্রিয়া করিয়া থাকে, সেসমুদায়
এক হিলির দ্বারা এক পদে সম্পাদিত হই
য়াছে। হিলি হৃদয় হৃদয়লুপ্ত হত্যা
বলাৎকার ক্রম হত্যাদি কোন পাপ ক্রিয়া
রই অনুষ্ঠান করিতে বাকি রাখে নাই।
ভরানক যুদ্ধের পরও অসম্মত সেনাগণ
শত্রু দলের সত্য ব্যক্তিগণের অত্যাচার
ক্রিয়া করিতে দের নিভাত চুরাচার হিলি
রহিমউল্লাকে এ সম্মান প্রদান করে
নাই।

কি প্রমাণ ও কি মুক্তি অবলম্বন করি

রা চুরিয়া হিলিকে হুত করিলেন, তাহা
চুরিয়া উঠা আমাদের মুক্তিপথের স
ত্য হইতেছে। সাক্ষিগণ কি বলিয়াছে?
তাহারা কি বলে নাই যে এক জন ইতিম
দীয় বাহার সময়ে উপস্থিত ছিল?
সকলেই কি স্পষ্টাক্ষরে কহে নাই যে
সকলের লোক হইতে এ কাণ্ড হইয়াছে?
অধিকাংশ লোকে কি হিলিকে হত্যাকারী
বলিয়া নির্দেশ করে নাই? রাজিকুল
দ্বারা ও হত্যাকাণ্ড হইয়াছিল; কৃত্রিম
উদার নিকটে তাহারা ছিল, তাহারা
সকলে শপথ পূর্বক বলিয়াছে যে তাহারা
চকে দেখিয়াছে হিলি বন্দক দ্বারা তাহার
প্রাণ বধ করিয়াছে। তাহারা দুই ছিল
তাহারা যথার্থ বাহা দেখিয়াছে, তাহাই
বলিয়াছে, অর্থাৎ এক জন ইতিমদীয় না
দাহলে ছিল, কিন্তু সে হিলি কি আর কেহ
তাহা তাহারা অস্বীকার ও দুই প্রাকৃতিক সত্য
দেখিতে পার নাই। হিলির চুরিগণ
বস্ত্রের বর্ণের বিষয়েও সাক্ষিগণের
বাক্যের অনুমান বৈলক্ষ্য ২য় নাই।
তবে বৈলক্ষ্যের মধ্যে এই হইতেছে
কেহ বলে তাহার হাতে বন্দক ছিল,
কিন্তু তাহা ছুড়িতে দেখে নাই, কেহ বলে
বন্দকে সঙ্গী ছিল, কেহ বলে তাহা ছিল
না। এই বৈলক্ষ্য দেখিয়া চুরি কি
কবাক্য মিথ্যা জ্ঞান করিয়াছেন?
একপ হওয়া কি বৈলক্ষ্য নয়? সেই সাক্ষ
গ বাহার সময়; লোক হত ও আহত হই
তেছে; চুরাচার জীলোকদিগের অবমান
না করিতেছে, ও দিকে গৃহ দাহ হইতে
ছে; সে সময়ে কি সকলের চিত্ত সমান
অবস্থায় থাকা সম্ভবিত? উত্তরবিসমতা
হেতু কি দৃষ্টিবিজ্ঞ হইবার সম্ভাবনা
নাই; সকলেই কি সমান স্থানে ও সমান
অবস্থায় দাঁড়াইয়াছিল? একপ সামান্য
লক্ষ্য হওয়াতেই সাক্ষিবাক্য যে সত্য
তাহাই কি সপ্রমাণ হইতেছে না? সাক্ষিগণ
শিক্ষিত হইলে তাহাদিগের বাক্যের বৈল

কথা হইবে কেন? কোন সাক্ষী তাহাকে চিনি বলিয়াছে, কেহ বা বলিয়াছে চিনি না; তাহাতে কি হিলির অপরাধের ভূমি তা হইতে পারে? অনেক কি হিলিকে স্পষ্ট বাক্যে হত্যাকারী বলিয়া নির্দেশ করে নাই? অনেক কি তাহাকে আদালতে চিনিয়া দেয় নাই? হিলির কি মরেনের সহিত পরিচয় নাই? সে কি সুরুলিয়াতে কখন যায় নাই? তবে যে কাল ও দুরতা ঘটিল যৎকিঞ্চিৎ বৈলক্ষ্য্য হইয়াছে, কৃষকদিগের সেকপ হওয়াই নৈসর্গিক। আমরা অনেক কৃষককে দেখিয়াছি, তাহা দিগের কাল ও দুরত্বের জ্ঞান নাই। বিশেষতঃ এত অধিক দিনের পর তাহা দিগের সকল বিষয় অরণ থাকে কি সম্ভাবিত? যখন তেপুটি মাজিন্টে টবকিম বাবু সন্দেশ করিয়া হিলিকে পরিতোষিত, সে বারবার আপনায় ঈমান তঁড়াইয়াছিল কেন? সে দোষী না হইলে নাম তঁড়াইবার কি প্রয়োজন ছিল? আমরা শুনিয়াছি যখন বকিম বাবু তাহাকে চিনিতে পারিয়া প্রেরণ করিবার চেষ্টা পান, তখন ঐ ত্রুটি বলিয়াছিল “বে মরেনলগের উপরে পদাধি করিবে; আমি তাহাকে গুলি করি।” আর হিলি যদি দোষী না হইবে, সে কি অন্য পলায়ন করিল? যখন আ সামে ধৃত হয়, তখন তাহার সহিত প্রায় ১০০ টাকার অধিকেন ছিল, তাহা বিক্রয় করিয়া ত্রুটি ও চীনদেশে যাইবে সে এই সঙ্কল্প করিয়াছিল।

এই সমস্ত দোষীপায়ন প্রমাণ থাকিতে যদি হিলির অপরাধ প্রমাণ না হইল, কিসে যে প্রমাণ হইবে, তাহা ও আমরা বুঝিতে পারিতেছি না। আদালতে ২৪ সংখ্য সাক্ষী উপস্থিত হইয়াছিল, তাহাদিগের মধ্যে দুই চারি জনের বাক্যের আশ্রয় কিছুরি বৈলক্ষ্য্য হয়, কিন্তু অনেকের বাক্যের বৈলক্ষ্য্য হয় নাই। যাদিগের বাক্যের বৈলক্ষ্য্য হয় নাই, যদি

কোন তাহারাই সাক্ষী থাকিত, তাহা হইলে জুরিরা কি করিতেন? কাউই না হইত কিংবা বলিতেন যে সকল সাক্ষী হিলির দোষ প্রমাণ করিতে পারে নাই? যে স্থানে অনেক সাক্ষী থাকে, সেখানে সকল সাক্ষীর দ্বারা কি সকল বিষয় প্রমাণ হয়? এক জন ইউরোপীয় দালা হলে ছিল, কতকগুলি প্রমাণ হইয়াছে; সেই ইউরোপীয় মরেনলের লোক কতকগুলি দ্বারা ইহা প্রমাণ হইয়াছে; আর কতকগুলি দ্বারা প্রমাণ হইয়াছে, মরেনলের সেই লোক হিলি ও সেই হিলিই রহিম উজার প্রাণ বঁধ করিয়াছে। বাস্তবিক রহিম উজার প্রাণহত্যা ও দালাকর্তা কে, জুরিরা যদি পক্ষপাতপূর্ণাচিত্তে হয় অনুসন্ধান দ্বারা বাহির করিবার আভ্যন্তরিক চেষ্টা করিতেন, তাহা হইলে কি তাহারাই

রীতির অনুসারে প্রমাণের বলাবল ও সম্ভাসমত বিচার করিতেন না? তাহা হইলে কি হিলিকে যথার্থ দোষী বলিয়া তাহা দিগের স্ববন্দন হইত না? তাহাদিগের বাস্তবিক সে সকল চেষ্টা ছিল না, কেবল ত্রুটি করা হইয়াছে এই মাত্র। তাহারাই হিলিকে অনুগ্রহ করিয়া ছাড়িয়া দিয়াছেন কি না, সে বিষয়ের বিচারে আমাদিগের প্রয়োজন নাই।

তাল আমরা যেন বীকীর করিলাম জুরিরা যে বিচার করিয়াছেন, তাহাই ঠিক, হিলি দোষী নহে, কিন্তু মনুবা হত্যা ও প্রাণহত্যা যে সমস্ত বিষয় কাণ্ড ঘটিল, সে কে করিল? গবর্ণমেন্ট কি হির করিয়াছেন? ডেবিলে কি অদৃশ্য রূপে ঐ সকল কাজ করিয়াছে? নাকি এবেল বলিয়াছেন কোন পাপকীরার অনুসন্ধান করিতে হইলে আগে আপন আপন জিজ্ঞাসা করিবে, তাহা করা কোন ব্যক্তির দ্বারা? এ যুক্তির অনুসারে রহিম উজারকে হত্যা করা দ্বারা কুরা আগে এই বিবেচনা করা আবশ্যিক। এই ঘটনার পূর্বে মরেনলের

সহিত রহিম উজার দুই জন বন্ধু দালা হইয়া যায়। তাহাতে মরেনলের অধীনের কয়েকজনের মেয়াদ হয়। মরেনল তাহাতে আত্মমুগ্ধ হয়। রহিম উজারকে জব্দ করা যাবার তাহার আভ্যন্তরিক চেষ্টা ছিল, সে সেই জন্য আপন গাতি জমা একুতি মুশিদিগকে বিক্রয় করিয়া সামান্য কৃষি কার্য অবলম্বন করেন। দালায় সমস্তই মরেনলের তরফ লোক তরফে ছিল তবিলে কোম্পানিও সন্দেহ নাই, এক জন ইউরোপীয় বেতখায় ছিল, ইহাও কোম্পানির করিতে পারিবে না। তবে সে ইউরোপীয় কে? খা ইউরোপীয় তাহুরী! আপন দালাহলে উপস্থিত থাকিলে পাছে উত্তরকালে কোন বিপাকে পড়িতে হয়, এই ভাবিয়া মরেনল যত্ন দ্বারা রক্ষা হইয়া অধীনস্থ লোক দ্বারা কি কাজ শেষ করিয়া মরেন নাই; হিলি কি তাহার অধীন লোক নহে? পৌলত চৌকিদার হত্যা কালে কি বলিয়াছিল? হিলি হইতে রহিম উজার সর্বনাশ হইয়াছে এই কথা কি সে বলে নাই; একপ প্রমাণ নহেও যে হিলি নির্দোষ হইল, আমরা কোন জনেই ইহা বুঝিতে পারিতেছি না। ইউরোপীয়েরা এতদূর একজন ইউরোপীয়কে বধ করিয়া মুক্তি লাভ করিয়াছেন বটে, কিন্তু এত দুর্ভাগ্য করিয়া যে হিলি মুক্তি লাভ করিবে তাহা যথেষ্ট অগোচর। তাল সে যেন রহিম উজার হত্যাকারী বলিয়া দণ্ডিত না হইল, সে যে দালায় সমস্ত উপস্থিত ছিল, তাহার কি হইল? তাহার দণ্ড কোথায়? আমাদিগের স্বকর্ম যদি বিচারপতি ও জুরিরা দ্বারা অর্থাত্ত ও উৎসাহ দানে কুকাচার অনুষ্ঠান হয়, তাহাকে কি দোষী জ্ঞান করেন না? এখন অবধি কি এই নিয়ম হইবে যে দালায় উপরে দালায় রাখ থাকিবে, সে দ্বন্দ্বের তাহার প্রাণ বধ না করিয়া অন্য দ্বারা করা হইয়া যিনা বটে অব্যাহতি পাই

যে? আমরা সাক্ষাতিখানে বালভেরি আ
ডবোকেট জেরল হিলিকে দোষী করি
বার চেষ্টা পান নাই। জুরির নিকটে
তিনি যে প্রকার বক্তৃতা করিয়াছেন তা
হাতে তাহার বাদীর ওকালতী করা না
হইয়া হিলিরই ওকালতী করা হইয়াছে।
তিনি মরেলকে সাক্ষী মানিলেন না
কেন? কেন? সাহেব এক বার মরেল ও
রহিমউল্লাহ উভয় মোকদ্দমার বিচার করেন,
তাঁহার সাক্ষ্য গ্রহণ করিলেন না কেন?
তাঁহার বক্তৃতা মধ্যে উৎসাহের নাম গন্ধ
ছিল না। তিনি এইরূপে কাজ করেন,
তিনি কি গবর্নমেন্টের প্রতিনিধি ও পরা
নন্দাদাতা হইবার যোগ্য লোক? গবর্নমে
ন্ট বাদী হইয়া আর একটি অন্যায্য করি
য়াছেন। মর্গান সাহেবের নিকটে যশো
হর হিলির বিচার হইবে যে কথা ছিল
এক হইল না কেন? তাহার কসাইটোলার
মহামতিরা নাই বলিয়া কি হইল না?
বিচার যে অতিশয় অন্যায্য হইয়াছে
তাঁহা বলা বাহুল্য। একপ অবিচার
সুপ্রিমকোর্টেও হয় নাই।

হিলির মকদ্দমা রক্তপ্ত ইংলণ্ডে

গোচর কর

কর্তব্য।

আমরা কহিতেছি, হিলি রাজমউল্লার
এক প্রাণ জাতি, ও মান এ সমস্তাদেব সাহাব
এক, কসাইটোলার মহাপুরুষেরা কহিতেছেন
হইল নহে। এখন এবিসয়েস মীমাংসা গোষণ
এক হাইকোর্টে হইল না। হাইকোর্ট ক
হইল না? কেন? সেটার মধ্যে হইয়া
হল। কলিকাতায় উচ্চতম আদালত প্রতি
ত হওয়ারে আমরা যে উচ্চতম আদালত
সংগঠিত, তাহা তা বাধুকায় সেহু স্বরূপ
হইল। হিলির মকদ্দমা দেখিয়া বিশেষ যোগ
দেওয়া উচিত আদালত এদেশের উচ্চ
তম অনিষ্ট সাধনের নিমিত্তই হইয়াছে, তা
সমুদ্রে এক এবিসয়ের মীমাংসা প্রাণ, মৃত্যু,
স্বাধীনতা, অপকৃতি ইত্যাদি

হইতে অভ্যস্ত নহে। সেখানে কসাইটো
লার মহামতিদিগের আধিপত্য নাই। তা
হাতে মোকদ্দমা পক্ষপাতপূর্ণ হইয়া বাবতীর
বিষয় তম তম করিয়া বিচার করিয়া থাকেন।
তাঁহাদিগের নিকটে এবিসয়ের যথার্থ মীমাং
সা হইবে সম্ভব নাই।

এবিষয় ইংলণ্ডের গোচর করিবার
আর একটি কারণ আছে। ইংলণ্ডের মনে
কহিতেছেন, ভারতবর্ষের আধিপত্য ইষ্ট
ইণ্ডিয়া কোম্পানির হস্তগত হওয়ার
সেই সঙ্গে সঙ্গে অত্যাচার ও অবিচারাদি স
মুদ্রা প্রবৃত্তি করিয়াছে। তিনি দেখুন, ভার
তবর্ষগোষ্ঠী কেমন সতর্ক আছেন। মকদ্দমা
বাসিদিগের ধন, প্রাণ, মান কেমন নিরাপদে
রক্ষিয়াছে? কিংবা অর্থবল থাকিলে এখানে
না চলে এমন কর্মই নাই। এখানে গেম
পুলিস তেমন বিচারকর্তা, তেমন জুরি
সকলই স্বাধীন। প্রবল ব্যক্তির বিশেষত। ইউ
রোপীয়দিগের সুখাদেশ না করিয়া অগত
পাত্রে সেই প্রায় কাজ করিতে পারেন না।
রাজাই ইউরোপীয়দিগকে দুর্নিম দাক্ষ্য ব্যাঘ্রের
ভাষা ভাঙিয়া দিয়া এদেশীয়দিগকে উৎসন্ন করি
বার নিমিত্ত কি ভারতবর্ষের শাসন তার গ্রহণ
করিয়াছেন? অগতীধর কি এই নিমিত্ত ইং
রাজতান্ত্রিকে তত্তর সাগর পার করিয়া এমে
নে আনিয়াছেন? ভারতবর্ষ নব্বন্ধে এই কি
উদ্দেশ্য? কতব্য কম? যদি উল্লিখিত
প্রকার অত্যাচার কাণ্ড হইয়া অমনি অমনি
গেদ ভাঙে বাসিদিগের ধন প্রাণাদি রক্ষার
আর কতজন, কি? আমরা এত দিন যে যবনা
ধিকারেব নিমিত্ত ও বিভিন্ন গবর্নমেন্টের প্রশং
না ও প্রশংসার দোষ প্রমাণ ও গর্ব কো
রু হইল। যবনাধিকারেও একপ ঘটনা
নিরল ছিল। লোকী কে? যে অর্থ
কাজ দেখিয়া অত্যন্ত দুঃখিত প্রবর্তিত
কবে সেই কি প্রশংসা দোষী নহে? তাহার
দণ্ড না হইলে কি কৃষ্ণের নিবারণ সভ্যতা
আছে? উপস্থিত নিমিত্ত তাহা বৈ হইল?
সকল ব্যক্তির মত হইবে, তাঁহাদিগের
আপেক্ষা কি? তাহা এইমাত্র নিবেদন
আমরা আইনান, জানী করিলাম, পরে
কোন উপাত্ত উপস্থিত হয়, সাহেব

রক্ষা করিবেন। অপরাধিতা প্রযুক্ত সাহেবের
ভরসা তাহারা অর্থ লোভ নব্বন্ধ করিতে
পারে না। ভারতবর্ষের গবর্নমেন্টে কিংবা সেই
মূল মোক্ষ সংশোধনে বদলান নহেন।

উপস্থিত বিষয়ই ইংলণ্ডের গোচর
করিবার ক্ষেত্র আর এক বিষয় তাহাকে
নাম আবশ্যক। জুরি প্রাণী যেন আত্ম
দেশে না থাকে। জুরি প্রাণী প্রাণীগণের
ধীনতা ও সবিচার মূল যথার্থ বটে, কিন্তু
ন তাহার এই রূপ চূড়ান্ত হইল, তাহা
এদেশ হইতে বত নীচ অভ্যস্ত হয়, ততই
মকদ্দমের বিষয়।

উপস্থিত বিষয় বেকপে ইংলণ্ডের গোচর
করিতে হইবে, আমরা তাহারও প্রকার
ভেদ কহিয়া দিতেছি। সর মর্গটী ওয়েল
সের বেলায় বেকপ আবেদন কর। হইয়াছি
ল, তাহাতে প্রয়োজন নাই। হিলির মকদ্দ
মার বাবতীর রক্তা আদ্যোপাধ্য পুস্তকাকার
বুদ্ভিত করিয়া ইংলণ্ডের প্রধান প্রধান
কোর নিকটে প্রেরণ করা উচিত। তাহাতে
জুরির বিচারের কথা যেন বিশেষ করিয়া
লিখিত থাকে। বত দিন আমরা ইউরোপীয়
দিগের অত্যাচারতা লাভে সমর্থ না হইব
এবং বত দিন ইউরোপীয়দিগের সমস্ত
এদেশীয় লোক জুরির গলে প্রতিলিত না
হইবেন, তত দিন জুরি প্রাণী হারা এদেশের
অনিষ্ট বিনা ইষ্টলাভ সম্ভাবনা নাই। কসাই
টোলার জুরিদিগের যে কেমন রূপ, তাহা
অনবেদন ইতন সাহেবের একটি সংক্ষিপ্ত
বাক্য দ্বারা পরিচিত হইয়াছে। তিনি বলিয়া
ছিলেন, "অপরাধ করিয়া যদি আমার অ
ব্যক্তি পাইবার আশা থাকে, তাহা হইলে
আমি সুপ্রিমকোর্টের বিচারই মনোনীত
করিব।"

সুপ্রিমকোর্টের প্রসঙ্গ হওয়ারে হাইকোর্
টের মহিতি উহার ভারতবর্ষ সাধারণ একটি
ইচ্ছা আদালতের দ্বারা উদ্ভিত হইল। স
বিচার প্রদানকালে এই উচ্চ আদালতের
কেই কম নহেন দেবদেও দাঃ সাহেব
বাল্লাদেশের নীচবর্ণীভিত্ত প্রাণীগণের
দুঃখতার বিষয় সাধারণের গোচর করিবার
চেষ্টা করিয়াছিলেন, সেই অপরাধে ততপুস্ত

দু'প্রীমকোট তাহার কারাবাস দণ্ড করেন। আর হাইকোর্ট প্রজার সর্দস্বতকারী তুরা-
সাকে দৈন্যপ্যমান প্রমাণ সঙ্গেও বিনা দণ্ডে
অবাহতি দিলেন। হাইকোর্ট হওয়াতে
তারতবর্ধের যে মহোপকার লাভ হইয়াছে,
এই প্রসঙ্গে টংলগের লোকেরা তাহাও
জানিতে পারিবেন।

অস্তাবিত পুস্তক মধ্যে আর একটি বি-
য়ের উল্লেখ করাও আবশ্যিক। বঙ্গদেশের
প্রজারা বন্ধুক ও অস্ত্রাদি প্রয়োগে পটু নন,
এবং তাঁহাদিগের ঘরে অস্ত্রাদি থাকিবারও
যে নাই! পক্ষান্তরে বঙ্গদেশবাসী উত্তরো
পীয়েরা সঙ্কল্পে স্বহস্তে বস্ত্রকাচি রাখিতে
পারেন, তাহার প্রয়োগ বিষয়ে তাঁহাদিগের
বিলম্ব নৈপুণ্যও আছে, এতদ্ব্যতীত বঙ্গদেশে
সময়ে সময়ে মহতী অনর্থ ঘটনা হইয়া থাকে
নরেন্দ্রের লোকদিগের যদি বস্ত্রক ব্যবহার নি-
শিদ্ধ হইত, তাহা হইলে কি গুলির শব্দ রাহি
মউল্লার প্রাণবধ সম্ভাবনা থাকিত? উত্তর প-
ক্ষে তুল্য ব্যবহারই উচিত। হয় এককালে সক-
লেরই অস্ত্র ব্যবহার নিষিদ্ধ হউক, ন বা
সকলেরই অস্ত্র ব্যবহার অসম্মত হউক। নি-
স্ত প্রজামণ্ডলীর মধ্যে, অস্ত্রধারী উত্তরোপী
য়েব বাস কি ভগ্নকর ব্যাপার নয়?

প্রাপ্ত।

১। এখানে একটি কুখ্যাত অসমাজ সং-
গঠিত হইয়াছে। ইহার প্রারম্ভ অতি অস-
ম্মত হইয়াছে, বলিলে কি অসম্মত মানস
কর নাই। আগামী কল্য মঙ্গলবার ইহার চতুর্থ
অধিবেশন হইবে। অতিশয় আকান্দার বিষয়
এই যে বিরুদ্ধতা-বনশী মহাপুরুষেরা ইহার
অন্তর্ভুক্তগণকে গণ্য, কোন বিজ্ঞাতিক
প্রদর্শন করেন নাই। এটি অসম্মতই পরী-
ক্ষা হয় না। সত্য বটে 'কুখ্যাত' শব্দে কেবল
পরিজ্ঞান লাভ করা গিয়াছে এবং অজ্ঞতা নো-
ডা মহাপুরুষের যেকোন মিথি চরিত্র, ত্রা-
স্বর্গের প্রতি ইহাদের যেকোন একান্ত অ-
সম্মত তাহাতে সত্যগণ যে এতদ্বিধা এবং উ-
পদেশ করিয়া উদ্বেগপানসা কাব্য নিশি-
সম্মত করিবেন একপ বড় ভরসা ছিল না।
এখন সংগঠিতবিস হইতেই

কেহ কেহ এসকল বাতান্ড আরম্ভ করিয়া
ছেন এবং কোম সত্যকে সম্পূর্ণ বাপে ত্রা-
স্বর্গাবলম্বী আনিয়াও কেহই প্রকাশ্যে কোন
বিরাগ প্রদর্শন করিতেছেন না, ইহা কি
অত্যন্ত আকান্দার নহে? হে! অগদীশ!
এ তোমারই অপার ২ পার মহিমা! এই
বিশুদ্ধ স্বর্গের জয়পতাকা এখানেও যে
উড়তী হইবে ইহা কে বাণ্ডে পারিতেন।
২। এখানে একটি ইংরেজি বঙ্গবিদ্যালয়
বহুকাল যাবৎ প্রতিষ্ঠিত ও কয়েকবৎসর যাবৎ
গবর্নমেন্টের অতুল্য প্রাপ্ত হইতেছে।
কিন্তু তাহার জীবিত কিছুই হয় নাই বলিলে
অত্যন্ত হয় না। এতদূর দিনদিন ইহার
মূলফয়ই হইতেছে, ইংলিশ সাহায্য কা-
রিগণের যত্নশীলতার অভাব কোন হিতকারী
কাণ্ড অযত্ন সিদ্ধ হয় না। এই বিদ্যালয়টির
যে যে চোখ সাধারণের দৃষ্টিগোচর তইতে
আরম্ভ হইতেছে, নতুন কি আশ্চর্য মাত্রও
যদি গবর্নমেন্টের কাগোচর হয় তাহা হইলে
কি আর তাহারা ইহার সাহায্য চানে অকা-
রাখিবেন? প্রত্যুত সাহায্যদান রহিতই
হইবে। অতএব কুলটির কার্যকারক হেত
মার্গের প্রচেষ্টার সকলকেই আমার পাহুনা
নিবেদন এই দ্বারাতে ইহার বাধ্যপ্রাণী সং-
শোধিত হয় তাহাও প্রতি কাহারই অবয়ব না
থাকে।

৩। অসম্মত হইল এখানকার বুনোকাটি
উত্তর-গিয়া আপাততঃ ঘোষ গানের চৌকী
ভুক্ত হইয়াছে। এটি বঃ ভাল হয় নাই। এই
সেরপুর স্থানটি নিতান্ত ক্ষুদ্র নহে। এখানে
মহাসম্মত কয়েকটি জমিদারের অধিবসতি,
ইহাদের নিকটই না থাকিয়া সুমঙ্গল চৌকীর
চিরস্থায়ী হওয়া নিতান্ত অসম্ভাবিত বোধ
হইতেছে।

৪। এখানকার খানটি মঙ্গল নয়, আশুনি-
দারগা নাহেবও হিতৈশী ও সত্যসাহী বটে
ন। কিন্তু সম্পাদক মহাশয় একটি বিষয় এক-
পও উল্লেখ করি নাই সেটি আমার আজিকার
প্রধান উদ্দেশ্য, সে এই যে এখানে আসি-
য়াই অনিশাচিহ্ন একপে ২০ আইনজীবী
চৌকীদারি টাক বসিয়াছে এবং পুলিশ নাম-
ধারি কতিপয় চৌকীদার রক্ষক নিদিষ্ট হই-

য়াছে একপে সকল বিষয় ভাল করিয়া দেখা
গেল, এ কেবল নামে গোয়াইয়া আনানি ভ-
কণ। বিখ্যাত (পুলিশ) পুলিশদের কর্তব্য
নিম্নত। নিবন্ধন অত্রতা অসম্মতের বরণ-পূর্ণ
পেকা অধিক রেশট সহ্য করিতে হইতেছে
অধিকতর অবস্থায় উহাদের কাহাকে "পু-
লিশ" না করিয়া "চৌকীদার" বলিলে-তা-
হাকে বেণীপারদে বাইতে হয়। সুতপূর্ণ
ইউনিভার্সিটিটির নিকটে উক্তব্য একটি মো-
কদ্দমা হইয়া অত্রস্থ কয়েকজন জেসজোগ
করিয়াছে।

পুলিশগণ (উক্ত নাম ধারী চৌকীদার-
গণ) কেনই যে তাহাদের কর্তব্যের প্রতি মনো-
যোগী না হয় তাহা বুলি উঠাও মহাদাম
এককালমালপুরের আইটে (একপে ডিপু-
সাহেবের এবিসয়ে মনোযোগ করা অতিশয়
কর্তব্য হইয়াছে ইহাদের (পুলিশদের) অমনো-
যোগিতায় একপে তা রাস্তা দিয়া যুগ মান-
কত না করিয়া চলিবার ঘো নাই।

এই টাক (চৌকীদারি টাক, মিহরিভ
করিবার সময়েও কয়েকজন পক্ষাটত
স্বর বৈরনির্বা তনের পরা কাটা প্রসন্ন ক-
রাছেন, তবিস্বজন যে কত গতির বেচারা তাহা
শাইতেছে তাহার প্রতি কতপক্ষে বঃ বঃ
চিঠি নাই। ডি, মাজিষ্ট্রেট সাহেবও বাজিলা
রাহিয়া পক্ষাইত নিগোহ করেন, অসম্মত
কি বলিল:

যাহা হউক সুতপূর্ণ ডিপুটি সাহেব বঃ
গুলির সংস্কার করান আবিস্ব করিয়াছেন কিন্তু
তাহার কাণ্ড, আনি না বেন মধ্যে মধ্যে
গিত থাকে স্থানীয় জনগণ তো টাক দিতে
তিলার্জ ও গোণ করিতে পারেন না, পুলিশগণ
টাক অদ্বায় কাণ্ডে বিলম্ব দক, এখানে
পুলিশ প্রহরী নিযুক্ত হওয়া অবধি দুবি ডা
কাইতিরও অত্যন্ত প্রাচুর্য, হইয়াছে
পূর্বে সম্পন্ন ব্যক্তিগণ লাঠিয়াল ও বন্ধুকাধী
বরকন্দাজ চাকর রাখিয়া প্রহরীর কাণ্ডা
কীহ করিতেন। কেহ কেহ অসম্মত খন প্র-
ণের ভয়ে তাহাই করিতেছেন।

৫। ১০ আনির জমিদার শ্রীযুক্ত বাবু
গোবিন্দকুমার চৌধুরী মহাশয় সম্প্রতি একটি
কটোয়া আনাইয়া অত্রস্থ ব্যক্তি দিগেদ

হবি ফুল। ধূমে পাকিরাছেন। বাহা হউক
তিনি এই বিজিত সকলের খ্যাতিবাহী বটেন।
সেরপুর

১২৬৬। ১ মাদ।

বিবিধ সংবাদ।

১২ই মার্চ সোমবার।

গত মঙ্গলবার লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বাকীপুবে
এক দরবার করেন। ঐ সময়ে বেহারের দ্বা-
তীয় তালুকদার ও সম্ভ্রান্ত লোক উপস্থিত
হইয়াছিলেন। লেপ্টেনেন্ট গবর্নর বেহারের মু-
তন পুলিশ দর্শন করিয়া গবর্নর জেনরলের
সহিত কাশী পর্য্যটন গমন করিবেন।

ঢাকা প্রকাশ বলেন, সাতারের এক জন
ব্রাহ্মণ এক স্বাক্ষরের পুস্তকে হত্যা করিয়া
বিচারালয়ের ওশে অন্যহাতি পাওয়াতে খাম
রাউন্ডের দাবতীয় অসংলোক কুকর্মে উৎ-
সাহী হইয়াছে। তাহার প্রকাশ্যরূপে বলি
তেছে যখন এক ব্যক্তি হত্যা করিয়া মুক্তি
লাভ করিল তখন সাধারণ চুরি করিলে কাহা
রও দণ্ড দিবার সম্ভাবনা নাই। যথার্থ কথা,
বিচারালয়ের দোষ সমাজে বর্জ্য, কলিকাতা-
র জুরিগণের বিচার দোষে ইউরোপীয় বিগে-
র অভিচার হইতেছে।

হিন্দুপেট্রি যট আবেদন করিয়াছেন মার্চমাসে
র শেষ পর্য্যন্ত ভারতবর্ষীয় ধ্যানধারণক সভার
কাধ্য চলিবে। ইহার মধ্যে সরকারস ট্রিনি-
য়ান ১৮৬৩:৬৪ অক্টবর আর ব্যয়ের হিসাব
অংশ করিতে পারেন।

উক্তপত্র বলেন, কিয়দিকস পূর্বে ট্রেবর
ও বর্গান সাহেব বারু দিগবর মিত্রের মোক-
দমার জমীদারের নারেবেরা মৌরসী পাট্টা-
লে তাহা জুগিত হইলে বলিয়া যে আজ্ঞা দি-
য়াছিলেন প্রধানতম বিচারপতি সম্রাতি তা-
দ্য বিজ্ঞ হস্ত প্রকাশ করিয়াছেন। জন,
দৈন্য সাহেব নামক এক জন জমীদার নারে-
বের মৌরসী পাট্টা দিবার কসতার বিষয়ে
আদালত করিতে বারু দিগবরমিত্রের মোকদ-
মার পুনর্বিচার হইতেছে। এ আজ্ঞাটি রহি-
ত করা অসম্মত কর্তব্য, অন্যথা প্রত্যেক
নারেবের হাতে পড়িয়া অনেক জমীদারের
সর্বনাশ হইবার সম্ভাবনা।

অন্য চৌনহালে ওকালতির পরীক্ষা আ-
রম্ভ হইয়াছে। ট্রেবর, ওডিন, প্রেম-
ভিক্টা, ও বোকেট সাহেব পরীক্ষণপদ
নিযুক্ত হইয়াছেন।

উত্তরগঙ্গাখালের নিজামত আদালত
খাজা দিয়াছেন যেন সরাই বা কোটেলে
কোন ব্যক্তি অভিচার করিলে অধ্যক্ষেরা তা-
হাকে বহিষ্কৃত করিতে পারিবেন। যদি তিনি
সহজে চলিয়া না যান তাহা হইলে পুত্রাণে
মোকেরা তাহাকে দুর করিয়া দিবে। ৩৫
আজ্ঞা বলবতী করা উচিত তাহা হইলে
আর কোটেলের শাস্তিভঙ্গের কথা আদালত
গের প্রতিগোচর হইবে না।

দিল্লীগেজেট খাইরাবাদের মেজান জীহুজি
দর্শনে বিশেষ হর্ষ প্রকাশ করিয়াছেন। তিন
বৎসর হইল এই মেলা আরম্ভ হইয়াছে। এস-
বর সর্বমুখ ১৫২,৮৪৮ টাকার প্রবোয় বা-
হী হইয়াছে। ইহার মধ্যে ৩২:৫১ টাকার গো-
মহিন অর্থ প্রকৃতি বিক্রীত হইয়াছে। এস-
বর মেটের উৎসাহ না থাকিলে বাণিজ্যের পরি-
শেষ জীহুজি হয় না। পূর্বকালে মিসবদেখে
বিদেশে গিয়া বাণিজ্য করা অপর্য্য বলিয়া গ-
ণিত হইত কিন্তু রাজা টলেমির উৎসাহ দানে
বাণিজ্যের এত জীহুজি হইয়াছিল যে কো-
ল তাহার শুধু শাসনের ব্যয় চলিত। এই
সকল কারণেই আমরা সর্বদা বলিতেছি
ভারতবর্ষ গবর্নমেন্টে যদি যথোচিত উৎসাহ দে-
ত ভারতবর্ষ আশিয়ার বস্ত্রের বাণিজ্য এক
টিয়া করিতে পারেন।

আল হাবার গেজেট বলেন, আগস্ট
উক্ত নগরে এত লোকের আনন্দানি হইয়াছে
যে হোটেলের স্থান হয় না। কাশী পর্য্যটন
নগরে খোলাতে বিস্তর লোক কমিগাতা হই-
তে তথায় গমন করিয়াছেন।

উক্তপত্রের এক জন সংবাদ দাতা বলেন
বাসায় আরের অভিযান প্রাচুর্য্য হইয়াছে।
তথায় যখনও তীরে একটি হস্তম ট্রান্সপোর্ট
হইয়াছে।

১৩ই মার্চ মঙ্গলবার।

ইংলিসমান ব্রিসস হইতে সংবাদ পাওয়া
ছেন তথায় বিস্তর চিনি প্রস্তুত হইয়াছে
কিন্তু সে সমুদায় বিক্রীত হইবার জটিল সম-
স্যা

বনা দেখা যাইতেছে না। ব্রিসস প্রদেশ
একটি বনভাগী উপনিবেশ হইয়া উঠিতেছে।

সংসদ, লেবের এক জন জমীদার প্রবোয়
নিখিরাংজন, সম্রাতি তথায় পতিত হুবি
বিজ্ঞ হইবার সময়ে কয়েকটি কুত্র লাঠি প্রতি
একটি ১৮৬৩:৬৪ নীল, ৫ হইয়াছে। কিন্তু
৩০০ একাদেশ একটি হুত্র লাঠির প্রতি
৩০০০ তাহা টাকার অধিক লাভ হয় নাই,
তাহার কারণ এই এক ব্যক্তি প্রথমে তাহার
জন্য আবেদন করেন। অপর এক জন আবে-
দন করিয়া বিজ্ঞের সময়ে আপন আবেদন
পত্র ফিরাইয়া দেন। বিজ্ঞ হইয়াছে যে কুত্র
বিজ্ঞ আবেদনকারী উপস্থিত না থাকেন
তাহার নীলাম হয় না। সম্রাতি উক্ত ৩০০
একাদেশ প্রতি একাদেশ ২০ টাকায় বিক্রীত হয়
পত্র ফেরত আদায় করেন আবেদন কারীরা
এক পসামনী হইয়া এই প্রকারে গবর্নমেন্টকে
ঠগাটাইয়াছেন, সবে কলির কারণে।

ফিনিল বলেন, বিজ্ঞগণের রাজ্য
বিস্তার সম্রাতিসম্রাতিসম্রাতিসম্রাতি হইতে
কাশী গমন করিয়াছেন।

উক্ত গ্রন্থ আনন্দোদয়িত সংবাদ
দাতা বলেন, আগস্টমাসের হুত্র আফিস
নগর প্রস্তাব ও মোকদমা নিষ্পত্তি হইতেছে।
ফলস্বে সামান্য গোলায় কিছু করিতে না
পারে এই প্রকার প্রস্তাব দেওয়া হইয়াছে।
সব চারমাস উক্ত ১৬ লক্ষ টাকার প্রস্তাব
তাহার দাত লক্ষ টাকার সমাপনের ঐচ্ছিক
হইতেছে। বারিক, মিল্লানে ৫৩ টাকার
হইবে। এমনিগণ যে আনন্দোদয়িত আবেদন
করিল

খলিগা হইতে টেলিগ্রাফে সংবাদ
যাছে ১২ই জানুয়ারি লেপ্টেনেন্ট
ব্রিগেডীয়ার্ডের রাজ্যযোগে
কলিগা কুত্র নগর হইতে দণ্ডিত
লেপ্টেনেন্ট ফিলিপ আনন্দ ৪০০০০০

চাকারিগণ প্রবোয় নগর
মাসের প্রবোয় নগর বলেন আগস্টমাস
ল কলেব বিচার নগর নগর তাহার
গের এত প্রবোয় নগর নগর
ব্রিসস নগর নগর নগর
১৩ অধ্যয়ন সম্রাতিসম্রাতিসম্রাতি

কিনিকল বলেন গবর্নর জেনারেল ডেভি-
য়ারি কলিকাতা হইতে পাটনার দাইবেন।
তথায় এক দরবার করিয়া পরে কাশী ও
অম্বালার দরবার করিবেন। অম্বালার পর-
বেই লেফটেনেন্ট গবর্নর লার্ড এলগিনের
সাক্ষাৎ করিবেন। গবর্নর জেনারেল গ্রীষ্ম কাল
সিহিল্লার পর্বতে অতিবাহিত করিবেন, এবং

১৮৬৫ অব্দের শীতকালে কলিকাতার এত্যাগমন করিয়াছেন। তারতবর্ষের গবর্নর জেনারেল সিগেলের কি অভিযোগ এই কাল হইবে?

উক্ত পত্র বলেন বারু শঙ্কর পণ্ডিতের সনৎ অধ্যাপিকা আইনে নাই; আশাভাষ্য: তাঁহার শিক্ষক স্বর্ণ বাসের ব্যার হইয়াছে। তিনি বিচার কাণ্ড অথবা ওকালতি এতদ্বয়ের কিছুই করিতে পারিতেছেন না। ষ্টেট সেক্রেটারি তাহা বিবাহিলেন তারতবর্ষের গবর্নর তাঁহার নিয়োগপ্রাপ্ত প্রদান করিলেন, কিন্তু তাঁহার বিবরণে সে অমতা না থাকিতে ইংলণ্ডে এ বিবরণে নিমিত্ত লেখা হইয়াছে।

টাইমস অব ইন্ডিয়ায় পারিসত সংবাদ দাতা বলেন যদিও কল্যাণীসরাট এতি বৎসর নিজ ব্যবসার জন্য এক কোটি চতুর্দশ লক্ষ টাকা পাঠরা থাকেন, তথাপি তাঁহার ও রাজার এত ব্যয় যে ইহাতে কল্যাণ হইয়া না, মধ্যে মধ্যে ইহা সিগেলের নিকটে কর্তব্য করিতে হয়। সর্গ টের ১৩ টি বাটী ও বিস্তার অর্থ আছে। রাজার বহু অলঙ্কার প্রভৃতিতে তরানক ব্যয় করেন। দুই নেপোলিয়ন বৈশ্ব রাজনীতিজ্ঞ ভেমন বাগ্মশাস্ত্রজ্ঞ নহেন।

মাস্ত্রাজের বিচারালয়ে এক জন গবর্নরকে রিপোর্টার নিযুক্ত হইয়াছেন। ইনি বাবতীর বোকাদ্বার বিবরণ লিখিয়া প্রকাশ করিবেন। তাহার এ অপব্যয়ের কারণ বুঝিতে পারিতেছি না। সংবাদ পত্রের রিপোর্টারেরা তবে কি করেন?

কাঞ্চলিক মল বহিষ্কৃত এক ব্যক্তি সম্প্রতি বাইপিনের কাঞ্চলিক গিরজার প্রবেশ করিতে গিরজার বাবতীর লোক তাঁহাকে তরানক প্রহার করেন। পুলিশের লোকেরা বধ: সবরে আসিয়া উপস্থিত না হইলে তাঁহার প্রাণ নষ্ট হইবার সম্ভাবনা ছিল। গিরজার পুরোহিত এই বিষয়ে উৎসাহ দিয়াছিলেন বলিয়া তাঁহার দুই শত টাকা করিয়াছে। ও দুই শত টাকার মুচলকা লওয়া হইয়াছে। যে বর্ষ যে পরিমাণে আভিসমুদ্র উদযলবিধিদের সেই পরিমাণে অসত্যতা দৃষ্টিগোচর হয়।

১৮ই মার্চ শুক্রবার।

মিউনিসিপাল কমিশনরেরা কলিকাতার হুৎপাং প্রাণালীর (প্রুণের) জন্য আট

লক্ষ টাকা কর্তব্য করিয়াছেন। তাঁহারা যে কমিশন প্রদান করেন, তাহার কি হইল।

হরকরা দুর্গা ত হিলিকে নয় মাস লাজত রাখা অম্যায় হইয়াছে বলিয়া প্রকাশ করিয়াছেন। তিনি বশোহরের মাস্ট্রেটের প্রতি দোষারোপ করিয়া এতদ্বারা সিগেল চরিত্রের প্রতি দোষারোপ করিয়াছেন। হার মতে ইউরোপীয় সিগেল মনসলে পাবনা র বাবিনতা অব্যাহত থাকিবার সম্ভব নাই। অবশ্য মল গরুর জন্য এতদ্বারা চর ককে বধ করিয়া আবার হাজত কিংবা মর্ডান সভাকে এবিধে আবেদন করিতে বলা হইল।

সিদ্ধেশ্বর হারদ্রাবাস মগরে ১৮৬৬নেট গুদামে ৬০০ টাকার অধিকেন রাখা হয়। কিন্তু সম্প্রতি বাল খুলিয়া দেখা গেল যে, তাহা কেবল খুলিতে পরিপূর্ণ রহিয়াছে। পি গীলিকা অধিকেন থাকে। কি খুলি তানরা বাখিয়াছে?

পুনা অবজারবর বলেন অপদ্রিন হইল যে লাতে পুলিশের লোকের সহিত কয়েক আকিসরের এক লড়াই হইয়া গিয়াছে। সমস্ত হলের এক বেসেডাব স্রী এক হিন্দুর পুত্র গীতে স্থান করিয়া সে পুলিশ কর্মচারীরা বাবতীর বেসেডা ও অর্থ করেন করে। সাকি সরেরা বেসেডা সিগেল পক্ষ হইয়া লড়াই করিয়া তাহা সিগেলকে মুক্ত করেন। ততঃ তাহা মের পুনর্বার তাহা সিগেলকে করেন কল্যাণ আ জা মেওরাতে পুলিশের সহিত আকিসর সিগেল তরানক লড়াই হয়। আকিসরের পুলিশ সিগেল সিগেলের লাঠির সমুখে ডিঙিতে ন পাইয়া পরাজিত হইয়া পক্ষাৎ হত হইয়াছেন। এক জন গুরুতররূপে আহত হইয়াছেন। মল ব্যাপার নয়।

সমাজের হিন্দুস্থানী বলেন লজোর রূপস বাসেরা অনরব খুলিয়া দিয়াছেন নেপালের সহিত তারতবর্ষের গবর্নরদের শীত এক মুক্ত হইবে। তাঁহারা আরও বলেন মহারাজ সিং বিজয় সিংহ নেপালে গমন করিতে অক্ষম হইয়া তাহাকে রুদ্ধ করিয়াছেন। তাখচ সিং

কর সিংহ জল বাহাদুরের সহিত শীকার করি য়েছেন। এই সকল অনরব বাই গবর্নরদের প্রতি দোষারোপ করেন তাহের বিলম্ব পাই ১৮৬৬।

মিনিক ১৮৬৬ বর্ষের গবর্নরদের আভা সিগেলের এখন অবধি বাহাদুর লর্দ বধ করি য়ে তাহা দেখে প্রতি সার্ব সারি আর্গি পুর কার না সিগেল হই আর্গি দেওয়া হইবে। প্রতি বৎসর বর্ষের ইহা করা ১০০০ টাকা ব্যয় হইয়া থাকে। আর্গি কারি নীতন পাঠকদের জন্য কল্যাণ সপের উপর বহু দান হই য়েছে।

১২ই মার্চ শনিবার।

সিগেলের একখানি আমেরিকান আভা- মেব কাগজের এক জন বাবিকের (মালার্ট বোধ হইতেছে) উপর বিরক্ত হইয়া এক খিয়ার কারা তাহার পায়ে আঘাত করে। তাহা দেখে তাহা তাহার অভিযোগ ছিল। অনরব কাগজের গবর্নরদের লোক দ্বারা স- য হইয়া ১৮৬৬ তলঃ মালীন দিয়া মুক্ত হয়। রাতিবোগে কয়েক জন বাবিক কাগজ- এর উৎসাহে আহত বাবিককে বলপূর্বক চিকিৎসালয় হইতে জাহাজে লইয়া যায়। কিন্তু তাহাকে পুনর্বার পাঠরা গিয়াছে। বাহাদুর, গবর্নরকে কল্যাণ প্রকাশিগের জীবন ও সম্পত্তি আধিকার নিয়োগ করিতে ছেন।

আলাদা মেম্বের বলেন, কানী ও জু- বিবর্তি স্থানে ওলাউতা বিধেয় প্রাণুর্ভাব হইয়াছে।

নিম্নলিখিত মূল্যে গবর্নরদের কাগজ বিক্রয় হইতেছে।

৪ টাকার সিগা	১২। ১২। ০
৫ টাকার কোম্পানির	১৫। ১৫। ০
৫ টাকার সিগা	১০৫। ১০৫
১১ টাকার কোম্পানি	১১২০। ১১২০

তারতবর্ষের ব. ব. পক্ষ মতা।

১৮৬৬ লজোর বি বিবহার।

অনরবস হার টন সাহেব মনিমপুর জে- ল দ অস্থার মেহবা ও কিতপুর পরগণা মাথা বধ আইনের অধীনস্থ করিবার বিলের প্রস্তাব করিলেন এবং কহিলেন যে বিল সিলেট কমি

অসিদ্ধান্তী ভাষ্যের অন্য একটী। ১।
 দিগের নিত্যত্ব অপ্রীতিকর বোধ হইতেছে।
 নিয়ম হইয়াছে, বাঁচাবা নিয়মিত ৭। এর এক-
 মাসের মধ্যে। ২। ভাক করের টাকা অসিদ্ধান্তী
 করিবেন, তাঁহাদিগের দাসাদাস ফোক করিয়া
 নির্দ্ধারিত করের বিংশ টাকা আদায় করা যাই-
 বে। এক শতীকের কব বাকী থাকিতে অসিদ্ধান্তী
 শতীকের কর আদায় করিতে পারিবেন না।

‘अथ भक्तियोगः’

আপনি গত ২২এ পৌষের সোমবারকালে
আমাদের বিবরণে যে প্রস্তাবনা লিখিয়াছেন
তাঁহা পাঠ করিয়া আপনার উপর অশ্রদ্ধার
ভাবের অনেক স্থান হইয়াছে। আপনি যে উদ্দেশ্য
লেনছেন, আমি তা বিচারিলাম আপনি তাঁটিকে
ভাটি পূর করেন। সম্পাদক দ্বারা। আমি না-
তাল হই নাই, আমি নাক দেখাও বৈলঙ্গল নাকে
হাত দিলে পান, অক্ষিপ হস্ত কর্তার বলিলে
দাম হস্ত পূর্ণ কবি না, আমায় বিলঙ্গল জান
আছে, তবে কিছু টিপসি বটে। গবর্ণমেন্টকে
আপনি দোষ দিতেছেন কেন? আপনি নান্দ্রা
ছেন "এক চিলে দুই পক্ষি মাথা", কিন্তু গবর্ণ-
মেন্ট আশপারি সবকে এক চিলে "তিন পক্ষি
ভাটিতেছেন। প্রথম মনের একচেটে কবিয়া অ-
পরাধি ধনলাক কবিতেছেন। দ্বিতীয় আপনায়
বস্তু বিজ্ঞ ও সোন্দর্য বিজ্ঞ লোকদ্বিগের
মর্মে দুটি কবিতেছেন যে মনের কর ধার্য করা
যেমন মন খাওয়া নিবারণ নিবারণ। তৃতীয়।
নব্বশ লাক্ষ্যম্বদ্যাপিগণকে উৎসাহ দিতেছেন
যদি বাবা খুব খাওয়া, অল্পকঃপুটি লাক্ষ্যম্বদের
চারে মনের আর কবিয়া দ্বাদশ ভাটাকে
ভিগ্নেজ করা গিয়াছে, অল্পকঃপুটিকালেই
তোমাদের দল হকি কবিয়াছেন বলিয়া প্রায়
মন পাইয়াছেন, এবং তোমাদের অধিক জন
গণিতে হইলে বেশ জন বলিয়া তোমাদের বা-
ড়ীর নিকটে নিকটে ৬৮টি লাক্ষ্যম্বদ্যাপি হইয়া-
ছে। আপনি যা বলুন তা বলুন, গবর্ণমেন্ট আ-
মাদের বধেই হিতকারী। আমাদের সংখ্যা হ্রাস
করা গবর্ণমেন্ট যে আমায় পাইতেছেন তাহাতে
আমরা কত বাধিত তাহা আপনি কি বুঝিবেন।
হ ওপক্ষে প্রায় দশকোশ পক্ষ গিয়া কর্তাকে
আনিতে হইত, এখন যে দিকে চাই তাঁদের
বাট বাজার। এক দিকে দুই কোশ, এক দিকে
দশকোশ জনপূর্বসোপান কর্তার কবিতে-
ছে। বুঝিতে পারিয়াছেন? প্রায়ের নিকটে দু-
ইটি জুড়ন তাঁটি ওষ্ঠিত হইয়াছে। ইত্যাদি
আমার কষ্টে আনিস পাইতাম না, একজন প-
ষবে পক্ষ দুটো খাওয়া। দ্বাদশ গবর্ণমেন্ট পক্ষ হা-
টার হাত হইতে বাঁচাইয়াছেন। সম্পাদক
শ্রেষ্ঠ। আপনি বৈদিক তাহা নেদারল্যান্ড
সকলকে জানাইয়াছিলেন, তাহান কাবণ এই
ত বাবুল সব লোক বৈদিকের দলভুক্ত, বৈদিক
লোক বড় দ্বাদ্য।। আমি যদি জনসমাজ পত্রি-
য় দিতে পারিতাম যে আপনি আমায় দিব দল-
বইলে আমাদের দলের গৌরবের প-

দ্বিতীয় পক্ষিত না। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮০। ৮১। ৮২। ৮৩। ৮৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০। ৯১। ৯২। ৯৩। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮। ৯৯। ১০০।

(২) মোদ প্রকাশের কোন অংশে কোন
মোদ প্রকাশটি না পাও- সম্প্রদায়ের আন্তরিক
এ চেটী আছে। আর হুজি সংকারে বত টহার
স্ববহার উৎকর্ষ হইবে, ততই ইহার উৎকর্ষ পা-
ঠকপণের নরন গোচর হইবে। স।

পরমপুণ্যসীমায় ব্রহ্মসুখমোক্ষকোষঃ

गङ्गा नदी महानदी है ।

‘বকেচ’ গ্রন্থ যে দুই আশীষের একটি
 প্রধান বোণ, তাহা বঙ্গদেশমাত্রেই সর্বত্র বি-
 দিত আছে। কিন্তু গ্রীষ্মে সেই বোণ এক
 প্রকার ঘোলাচাঁব হইয়া উঠিয়াছে। এখানকার
 বড় আদালত সত্বেও হ্রিষিত অবস্থার বিষয়
 গণ্যমণ্ট পূর্ণস্ত আনান হ.।ছে; কিন্তু দুইটি
 এজালোকের যে আশীষদে, হস্তে পড়াতক
 হ্রদিশ। হইতেছে তাহ। কেহ দেখিয়াও দেখিতে-
 ছেন না। শুনিয়াও শুনিতেছেন না।

অল্প দিবস হইল আমি এখানকার কালেক্ট-
রিতে বড় টাকা রাজস্ব দিতে দিরাহিলার
স্থলে প্রবেশ করিয়া আসলাম। আমার
দেখিয়া একবারে হতাশ হইলাম। দেখিলাম
এতোক জেলাদার, একশত টাকা রাজস্বের
উপর ১০ আনা, তহনীলদার ১০ আনা, রেজ-
ক্টরির সহ ১০ আনা সদর পাটওয়ারি ১০
আনা, পোদার ১ টাকা কিলিকদার ১০ আনা
না। পাইলে ডালামে আকর, কি টাকা আসে
কি নব্বয় রেজক্টরির ইত্যাদি করেন না। যদি এক
এ সকল না দেন, তিনি প্রাণকালারবি সাহেব
কাল পর্যন্ত দণ্ডমান হইয়া যারবার বিনা
কিলিকে তাহার। কিরি। চারনা, তিনি সদর
দর্শনী দেন তাঁহান হুই মিনিটের মধ্যেই
কার্য সাধন হয়। প্রধান অধীকারের
ধরত দিতে বড় কুণ্ডিত হন না, তাঁহার
চারগণও বড় পরাভব হন না। কিন্তু
ডালুকদার ও রায়তলোকেই বড়।
কথা বোধ করি বিচারকমণ্ডলের
গোচর নহে, কিন্তু কেহ ইহা
রূপ করিতে সচেষ্ট হন না। অতএব আমি
কালেক্টর জীবন্ত টেইলর সাহেব, ও
বাহু বহন। থবু ও কালিকাদার
কালেক্টরদিগকে সিদ্ধান্ত বিনয় ও আর্থনা করি-
তেছি। তাঁহার। কালেক্টরির শিরিভাদার, পে-
দার, নাজির, ও প্রধান প্রধান কর্মীদার ও
মিরাসদারদের গোমস্তাদিগকে ভাল
তাহারের অর্থনা যদি গ্রহণরূপে কালেক্টর
লখোদর অর্থগুণুদিগের উৎকোচ রোজ
চিকিৎসা বিধান করেন।

圖 5-5

६ म० अ० १३७२

कन्यादि-
उत्तरकन्यादि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

সোমপ্রকাশ

“সর্বস্বাং সন্নিহিতাং পৃথিবীং বরুণী সন্নিহিতা ন হীমতা।”

৫ টাকা।
১৩সংখ্যা।

সম ১২৬৮। ২৮এ বাঘ। ইং ১৮৬৩। ২ ফেব্রুয়ারি

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক আদায় ১০ টাকা।

সোমপ্রকাশের অবয়ব বৃদ্ধি

সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

আজি অবধি সোমপ্রকাশের আর এক বহুলা হুজি হইল। অতঃপর বাঁহারা বাহ্যিক মূল্য দান করিবেন, উহাদিগকে ১১-সাতের পাঁচ টাকা দিতে হইবে বার্ষিক আদায় মূল্য (১০ টাকা) অপরিবর্তিত রহিল। মকদ্দমের গ্রাহকদিগকে অত্যন্ত ডাক মামুল দিতে হইবে। বার্ষিক ডাক মামুল ৩০ টক মাত্র যাঁহারা মূল্য প্রেরণ সংক্রান্ত চিঠি প্রেরণ করিয়া দিবেন, তাঁহারা ডাকের ব্যয় (চাঁবি আনা) স্বাক্ষর পাইবেন, যাঁহারা স্বতঃপ্রসূত ডাক মামুল দিতে অনবরত হইবেন, আনা দিবেন, আমাদিগের কণ্ঠপ্রত্যয় হইলে তাঁহাদিগকে মামুল দিতে হইবে না।

বিজ্ঞাপন।

কলিকাতার জিলায় অতঃপাতি বাটকেয়ারি মহকুমার মাঝে যে পল্লি তালুক আছে, তাহা দরপত্তি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা যাইবে। যাঁহাদের সেই তালুক দরপত্তি দেওয়া অথবা বিক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তঁহাদের কলিকাতার জাতন কিনির কোম্পানির নিকটে আবেদন করিলে সর্বশেষ হস্তান্তর প্রাপ্তি পাবেন।

বিজ্ঞাপন।

পোর্টকল।

অর্থাৎ জলপথে কলিকাতার সীমান্ত

বাঁহারাভের নিয়ম।

সরকারি বাহাদুরের ওয়াহাদস্যায় সর্বসাধারণকে জ্ঞাত করা হইতেছে যে অন্য

ভারিগ অর্থাৎ কলিকাতা, জাহাজ, মালবোটে, তরু, বজরা, ১০০ টন মূল্যের নৌকা সকল এই তালুক নদীতে বাহিরাগে কলিকাতা গী বা মধ্য বাঁহারাভকালীন সময়ে নাটানের তিতব আলো রাখিবেন অর্থাৎ বেশানে রাখিলে নত হইতে পারে চুক্তি হয়, যদ্যপি উক্ত নিয়মের অন্যথা হয় তবে একশত টাকা (১০০) অস্ত্রীনা দিতে হইবে।

ইং ১৮৬৩।

জলপথে প্রবেশের নিয়ম কথা

কলিকাতা।

বিজ্ঞাপন।

গানবাহু, হক ডাক্তার, রাস্তা মুনিংহ, গৌর কলিকাতা, নিত্যানন্দ টেব্রানী, হকমোহন ভট্টাচার্য প্রভৃতি প্রাচীন কলিকাতাদিগের উক্ত উক্ত গানবাহু সংগঠিত ও একত্রিত করিয়া সুচিত্র করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য ১ এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

সহকারী ব্রিটিশ ৭০ নং কলি।

চাঁদ, গোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং চৌঃ

সোমপ্রকাশ।

১৩৬৮ সাল।

গত মেইলে বাবু শত্ৰুনাথ পণ্ডিতের সনন্দ আসিয়াছে। গত সোমবার তিনি তাহা প্রাপ্ত হইয়া হাইকোর্টের বিচারসভায় আসীন হইয়াছেন। শত্ৰুনাথ বাবু প্রথমে অতি সামান্যকপ শিফা পাইয়াছিলেন, তিনি কেবল আপনাদের অন্যান্য পরিজন উৎসাহ অধাবুয়ায় ও বিস্তৃত ব্যবহার

দ্বারা ক্রমে উন্নত পদস্থ হইয়া আশ্চর্য উচ্চতম পদ লাভ করিলেন। এক্ষণে তাহার দুটি বিষয়ে মনঃ দুর্ভাগ্যবশত হইল। এক ইংলণ্ডের প্রচার প্রতি বিজ্ঞান, তাহা নাই; যিনি আপনাদের প্রবর্তা ও কলিকাতা পরিচয় দিতে পারিবেন, তিনিই কলিকাতা কটে আদায়ের হইবেন বর্ন ও আদায়ের প্রতিবন্ধক হইবেন। বিজ্ঞান, প্রবর্তা ও শত্ৰুনাথ বাবুকে আদায় করিয়া উক্ত পূর্ণচিত্রে উৎকৃষ্ট ও গুণবিশিষ্ট করিয়া দিলা হইবেন। শত্ৰুনাথ বাবু প্রথমে সামান্যকপ শিফা লাভ করিয়াও কলিকাতা যত্নে যদি এত দূর করিয়া ফুলিলেন, তাহা হইলে উপাধিধারী হইক মনঃপ্রবর্ত হইয়া অপেক্ষা সহস্র দুর্ভাগ্য হইলে তাহা দিগকে অবস্থাপিত করিতে পারিতেন না।

অন্যদিকের মাঝে আদায়
কাজে যত্ন।

এক জন পত্র প্রেরণ আমাদিগের উপরি লিখিত প্রবর্তা জিজ্ঞাসা করিয়াছেন। এই প্রবর্তা তাহা বোধ হইতেছে জমীদারেরা বাজে আদায় ২ বলিয়া আর নিকট হইতে যে অবৈধ অর্থ সংগ্রহ করেন, তাহা সাধারণের পোক্তর করিয়া জমীদারদিগের অন্যায় ব্যবহারের প্রতি চয় দেওয়া পত্রপ্রেরকের যত্নে হইতেছে, বাজে আদায় কাটকে বাজে আদায় সেকপ বহে। প্রবর্তা লিখিত

দারের বৃত্ত বিবাদ বিসম্বাদ হয়, এই ব্যক্তি
আদায়ই তাহার একটি প্রধান কারণ ।

বাজে আদায় যে প্রজাদিগের অধিক-
তর বেশকর হয়, তাহার আর একটি
বিশেষ কারণ আছে । এই অর্থ কেবল জমী
দারের কোষগৃহভূক্ত হয় না, নায়েব
গমতা প্রভৃতি উহার আরো অনেক অংশী
আছেন । বোধ কর, জমীদার পিতার
আদা কৃত্য উপলক্ষে প্রজার নিকটে একটি
চাঁদা করিলেন । যে প্রজাকে সেই চাঁদার
এক টাকা দিতে হইবে, সে গমতাকে টাকা
প্রতি দুই কপ ১০ আনা না দিয়া নি-
কুতি পাইতে পারে না । একপ নায়েব ও
পদাতিক প্রভৃতিরও অংশ আছে

এইলে নায়েব ও গমতার কিঞ্চিৎ
পরিচয় দেওয়াও অতিশয় আবশ্যক হই-
তেছে, তাহা হইলে পাঠকগণ অনাগ্রাসে
বুঝিতে পারিবেন, কিরূপ অদ্ভুত প্রণালী
তে জমীদারীর কার্য চলিতেছে । নায়েব
ও গমতা জমীদারের কর্মচারী । তাঁহারা
মকসলে থাকেন । প্রজার সহিত তাঁহাদি-
গেরই সতত ও সাক্ষাৎ সংঘর্ষ । গমতা
ধাককা আদায় করেন । তাঁহার অধীনে
এক এক জন পাইক থাকে । নায়েব গম-
তাদিগের কার্য ও জমীদারদিগের মক-
সল সংক্রান্ত অন্য অন্য কার্য দর্শন
করেন । এক এক নায়েবের অধীনে ৫-৭
জমীদার তাহারও অধিক গমতা থাকে । গম-
তা ও নায়েবদিগের কমতা ও বেতনের
কথা শুধু বলিলে ইহার অনভিজ্ঞ পাঠক
বুঝিতে পারিবেন । ১৪ পরগণার সচ-
িব প্রভৃতি পাওয়া যায়, গমতার
হিস ও তাঁর বেতন পাইয়া থাকেন,
আ অন্য-জিলায় ২ ও ১ টাকাও আছে ।
নায়েবের বেতন সচরাচর ২০ । ২৫ টাকাই
হয় থাকে, তাঁর সংখ্যা ৩০ । ৫০ টাকা ।
উপর্যুক্ত কি বিবেচনা করিতেছেন, ইহা
হি এই অংশ বেতনেই পরিচূর্ণ থাকে
ইহাতেই কি ইহাদিগের দিন নির্ভূতি

হয় ? ইহা অপেক্ষা কি ইহাদিগের আর
অধিক উপার্জন নাই ? আমরাই উত্তর দি-
তেছি, আরো অনেক উপার্জন আছে । এক
টাকা মাসিক বেতন পাইয়া কি এক জন
গৃহস্থের কখন চলিতে পারে ? গমতার
উদাসীন নছেন, তাঁহাদিগের পুত্র কলত্র
দি আছে, তাঁহাদিগের গৃহে নিত্য ইনাম
ত্বিক কিয়দর অনুষ্ঠান হইয়া থাকে, কোন
কোন ব্যক্তি ভূগোঁসব ও শ্যামাপূজা প্র-
ভৃতিও করেন । এ সকল কিরূপে বিনা সম্মা-
দিত হইবার সম্ভাবনা আছে ? নায়েবেরা
উচ্চ পদস্থ, তাঁহাদিগের আবার সেই পরি-
মাণে এই সকল কার্যে অধিক ব্যয় হইয়া
থাকে । সে সমুদায় ব্যয়ই তাঁহার প্রজার
নিকটে হইতে সংগ্রহ করিয়া লয় ।
জমীদার ও নায়েবদিগের ন্যায় গমতাদি-
গেরও আবদার আছে । তন্নিমিত্ত তাঁহাদি-
গের একটি নির্দিষ্ট আদা আছে । তাহার
বার্ষিক বৃত্ত টাকা আদায় করেন, তাহার
প্রতি টাকার হিসাব আনা বলিয়া ১০
আনা করিয়া লইয়া থাকেন ।

পাঠকগণ গমতাদিগের যেমন সামান্য
বেতনের কথা শু নলেন, তাঁহাদিগের
মতা কিন্তু তেমন সামান্য নয় । তাঁহাদিগের
র কমতার সীমা নাই, তাঁহার আইন
আদালত মানেন না, যে প্রজা ধাককা অর্থ
বা গমতাদিগের এ. সা দিতে বিলম্ব করে,
তাহাকে (গমতার ইচ্ছা লোককেই এইরূপে
প্রহারাদি করে, তজ্জ প্রজার সহিত একপ
ব্যবহার করিতে সাহসী হয় না) উপায়ে
প্রহার করা গমতাদিগের সহজ (এখন
অনেক কমিগেছে বাটে তথালি অনেক
পর্বত) কথা । প্রজারা তাঁহাদিগকে বম
স্বরূপ দেখে । তাঁহাদিগের হাতের ন্যায়
মুখেরও বিলক্ষণ গুণ আছে । মুখ এমন
পবিত্র যে প্রজাদিগের সহিত ব্যবহার
কালে তাহাদিগের বাক্য শ্রবণ করিলে
কর্ণে হাত (গমতার একে অশিক্ষিত,
তাঁহাতে সতত ইতর লোকের সহিত সং-

সর্গ, একপ হওয়া বড় আশ্চর্য্যের বিষয়
নয়) দিতে হয় । নায়েবদিগের কমতা
আবার ইহার বহু গুণে অধিক । এক এক
নায়েবের অধীনে ৫-৭ জন গমতা থাকে ।
সেই ৫-৭ জন গমতার প্রত্যেকের বৃত্ত
কমতা, তাহা একত্র করিয়া বৃত্ত হয়, এক
নায়েব বৃত্ত কমতা ধারণ করেন

গমতা ও নায়েবদিগের বার্ষিক আর
কত, অধিদিতবৃত্তান্ত পাঠকগণ বোধ
হয়, এখনও স্পষ্ট করিয়া বুঝিতে পারেন
নাই । গমতার সচরাচর বার্ষিক ২ । ৩
পত এবং নায়েবের ২ । ৩ হাজার টাকা
উপার্জন করেন । ইহা স্থান কল্প উপা-

কোন কোন গমতা ও নায়েবের
ইহা অপেক্ষা অধিক হয় । জমীদারদি-
গের ন্যায় নায়েবেরাও প্রজাদিগের নিক-
ট মজুর পান, এবং পুজাদির অন্নপ্রাশন
নামির কালে চাঁদা করিয়া থাকেন ।

আমরা সামগ্রিক স্পষ্টরূপে বাজে আ-
দায়ের স্বরূপ পাঠকগণের জ্ঞানদলন করি-
তা দিবার চেষ্টা করিয়া গমতা ও নায়েবদিগের
বৃত্তান্ত এত বিস্তারিত করিয়া লিখিলাম ।
একণে যে যে বাবে জমীদারদিগের বাজে
আদায় হইয়া থাকে, তাহার একটি ক্ষণ
দেওয়া বাইতেছে ।

১ । প্রজার প্রকার বিবাদ করিয়া
জমীদারের নিকটে উৎসাহ হইলে জমী-
দার তাহাকে অধিক অপরাধী বোধ করে
নয়, তাহার অর্থ দণ্ড (জমীদারের নিবটে
প্রদরাদি ক্ষেত্র অপেক্ষা অর্থ দণ্ডেরই
প্রাধান্য) করিয়া থাকেন । তাঁহাদিগের
লোভ রিপুটী কিঞ্চিৎ অবল, তাঁহারা উত-
্তের নিকটে হইতেই কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ গ্রহণ
করেন ।

২ । উৎসব, পিতৃ মাতৃ কৃত্য অথবা
পুজাদির অন্নপ্রাশনাদির উপলক্ষ করিয়া
চাঁদা

৩ । পবিত্র ভূমির খালের জমা ।
৪ । নায়েবের জমা ।
৫ । কোন কোন জমীদার, লোক

—
এদেশের কলকল
ইংলেণ্ডে গোরন
ইংলেণ্ডে বীর
উপনিবেশ অফুতি
সবকিছাই
আমার কায়া নি
ডা. এডেলি
ভি. আর মুর্ট
রক্তাক্ত আ
অবস্থা হ
এবং

১৯

গণিত। "স্বদেশী" নামের বিবরণ হইতে
কেন করা "অনিষ্ট" হইল। এই সংস্থা
বাসুদেব কাশ্যপের অনুরোধে হওয়াতে কাশ্য
ডা ও অন্যান্য প্রভৃতির সম্মেলন হইয়া
হইয়াছে। ইহার বিপরীত কাশ্য অনু
ষ্ঠিত হওয়াতে নিউ জিলেণ্ডে অধ্যাপিত
ভারতীয় জাতি বৈর ও বিদ্বেষ বাপীর
দৃষ্ট হইতেছে। শাসন কর্তা সর কার্ড প্রে
মেরে নিউ জিলেণ্ডের সরকারিদের হস্তে
শাসন ভার সমর্পণ করিতে বাধ্য হইয়া
ছেন। উল্লিখিত বিষয় সকলের ভারতবর্ষে
কি কি আছে? শাসন ভার কাহার হস্ত
গত? কোন জাতীর লোক দেশের প্রধান
প্রধান পদ পাইয়া থাকেন? কাহার দ্বারা
এদেশের রাজস্ব আদায় ও তাহার ব্যব
হায়া থাকে? অপব্যয় হইলে তাহার প্র
তিবন্ধ ও নিবারণ করা কাহার ক্ষমতা?
এই সকল প্রশ্নের এক মাত্র উত্তর আছে:
এইগুলি ভারতবর্ষীয়াদিগের হস্তগত নাই।
আমাদিগের দেশের আইন, রাজস্ব ও
রাজনীতি "ব্রিটিশ" কোন ক্ষমতা নাই। "তা
বটে এক্ষণে চারিটি ব্যবস্থাপক সভা হই
যাছে, কিন্তু তাঁহারা এককল সভার কার্য
ক্ষমতা কল্পিয়াছেন, তাঁহারা তাঁহাদিগকে
জাতীয় প্রতিনিধি সভা বলা দূরে থাকুক
গণপরিষদ বা প্রণয়নী সভা বলিতেও সঙ্ক
চিত হন।

এখন আমরা স্বদেশীদিগকে কি
জ্ঞান করিতেছি, ইংলণ্ডের ব্যব এদেশে
স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রবর্তিত করিবার
চেষ্টা পাওয়া উচিত কি না? সাধারণ
সভা স্থাপন চেষ্টা বিবেচ্য কি না? আদ্য
কি চিত্তক্লান্ত দেখিব আমাদিগের দেশের
আইন, করস্থাপন প্রভৃতি "ব্রিটিশ" কাশ্য স
কল করেছেন। গবর্ণমেন্ট কর্মচারির দ্বারা
নিয়ন্ত্রিত হইবে? কত দিন আমবা দে
শের শাসন ও মুক্ত সংস্কার কাশ্য হইতে
বঞ্চিত থাকিব? আমরা অনেক বার
এ প্রস্তাব করিয়াছি, কিন্তু এখন পর্যন্ত

স্বদেশীরা তাহার উত্তর দানে মৌখিক
লবী হইয়া আসছেন। এই সকল বিষয়ে
চেষ্টা করিয়া কৃতকায্য হইবার কি সম্ভ
ব হইবে? আমরা বলিতেছি, হইয়াছে।
কবে আর বিনয় কেন?

১. বোধ হয়, সকলেই জানেন আমাদি
গের দেশের ব্যবস্থা ও শাসন ব্যক্তি গুরু
তর বিষয় সকলের সমাধান ইংলণ্ডে হইয়া
থাকে। ইংলণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের আজ্ঞার
উপর আমাদিগের আর আপত্তি নাই।
সভা বটে উক্ত গবর্ণমেন্ট পক্ষপাতপূর্ণ,
তাহার প্রমোদ ভারতবর্ষীয়াদিগকে অসুখী
করিতে চাহেন না, কিন্তু তাহারা সর্বদা
সকল বিষয়ের স্বকণ জানিতে পারেন
না। তাহার উপর আমার আমাদিগের
প্রতিকারী ব্যবস্থা আছে। তাহারা
"ভারতবর্ষীয়া"দিগের মতল ও ইচ্ছা
স্থলধন বিশিষ্ট। "নামে" যাবতীয় বিষ
য় ভিন্ন বর্ণে বিভিন্ন নরিন প্রদর্শন করে
ন। ভারতবর্ষীয়া গবর্ণমেন্ট সাজনী হইয়া
সকল বিষয়ে প্রকৃত অবস্থা ইংলণ্ডী
য়া গবর্ণমেন্টের গোচর করিতে পারেন
না। একপ হলে কি করা কর্তব্য? যাবৎ
এদেশে স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রবর্তিত
না হয়, যাবৎ এদেশের কার্য ব্যক্তিক
এদেশের প্রতিনিধি করূপ ইংলণ্ডে নিয়ো
জিত করিয়া রাখা উচিত। আপাততঃ ইং
লণ্ডীয়া গবর্ণমেন্ট এদেশের ব্যবস্থা কৃত
জানিতে না পারিতে যে যে অনিষ্ট ঘটনা
র সম্ভাবনা আছে, প্রতিনিধিগণ ইংলণ্ডে
অবস্থান করিলে কেবল যে তত্ত্বাবধানে স
মন হইবেন একপ নয়, তাহারা ক্রমে তা
রতবর্ষে স্বাধীন শাসন প্রণালী প্রবর্তিত
করিবার চেষ্টা করিয়া কৃতকায্য ও হইতে
পারিবেন।

প্রতিনিধি বিদেশে যে প্রণালীতে
কার্যাবস্থান করিতে হইবে, তাহাও আম
রা বর্জিত দিতেছি। ভারতবর্ষীয়া
এবং অস্বাধ্যা বোম্বাই ও মাদ্রাসের সভ

এই পরামর্শে হইয়া এক
টনা, কানী, আলো
লাহোর, পুন,
সভা: কলকাতাকেও
আশান করা হইত।
স্থান কলকাতা নিম্ন
কলকাতা, কলকাতা, কলকাতা
অপাততঃ কলকাতা
হইত। ভারতবর্ষীয়া
আর এই কলকাতা
কলকাতা। এদেশের
গোচর করাই প্রতিনিধিগণের
ব্য হইবে। সুবাসন চেষ্টা
সংগ্রহ হইবে না।
শুনিতে পাই বোম্বাইয়ের
সীরা কলকাতার লোক
কলকাতা। বর্জিত
প্রসিদ্ধি আছে। এবিধের
ইহার কাছ হইবেন?

২. হুতন প্রঃ।
বিজয়বজ্র। ইহার কথা বলে। পূর্
ইকপাতার জীবক বাস গোপীমোহন
ইহার রচনা করিয়াছেন। এদেশের
নামেই ইহার নাম দেওয়া হইয়াছে।
কার বিজ্ঞাপনের আওতে লিখিত।
"ইংলণ্ডীয়া" তাহার মতল নামে মনো
প্রসিদ্ধ উপস্থাপন এক সকল যে প্রণালীতে
সম্পন্ন হইয়া থাকে সেই প্রণালী অনু
সারে এই পুস্তক আনি রচিত হইয়াছে
কিন্তু আমার এই উদ্যম সম্প্রদায়ের
হইবার কোন সম্ভাবনা বোধ হইবে
না। যেহেতু ইউরোপীয় লোকদি
কার্য সকল যেকপ কলকাতা ও চম
জনক, ভারতবর্ষীয়াদিগের
কলকাতা পাওয়া যায় না। সু
প্রদেশীয় লোকের কার্য
কলকাতা তাহার ইংলণ্ডীয়া

19

1

এই গ্রন্থের আদ্যোপান্ত পাঠ করিয়া
আমাদিগের এই সংস্কার জন্মিল, বিজয়ব
জ্যেতে কল্যাণভক্তের নিমজ্জিত নামক নবলে
র অনেক অনুকরণ আছে। উক্তর নামকে
রই জন্ম বুজাত প্রথম আবিষ্কৃত ছিল ;
উক্তর নামকেই অসামান্য উদ্যম ও সাহ
সিকি গুণ সম্পন্ন বলিয়া বর্ণি : হইয়াছেন ;
যে কারণে উক্তর নামিকার উক্তর নামকে
পতি ২য় সংস্কার হয়, তদন্ত গৌরবান্বিত
আছে যে কারণে উক্তর নামিকার পিতা
উক্তর নামকে কল্যাণানে অনন্ত
হন, তাহারও এক রূপ, আছে ; গ্রন্থের
উপসংহার ও প্রারম্ভ এক ভাবে করা হইয়া
ছে, তবে কোন কোন বিষয়ে বিস্তারিত

अनुष्ठित अनुष्ठानकारी आचारविधय
भक्त मयर्चन ।

১লা ফেব্রুয়ারি ইতিহাসে বিবরণ পাঠ
করিয়া আমবা অভিযার কৃত ও বিধিত হই
নাম । বিবরণ ও ফোতের কারণ এই— প্রথম,
বাক সঙ্গমস্থানের যে যে ব্যক্তি ক্রম প্রাপ্ত
প্রাপ্তি করতেন প্রাপ্ত হইয়াছেন, সঙ্গমস্থান
জীহাদিগের ক্রম সংশোধন হইবে । পুনর্বার
প্রাপ্ত জীহাদিগের পক্ষ সমর্থন করিয়া সেই
ক্রম জীহাদিগের ক্রমে সংশোধন করিয়া দিতে

উক্ত পত্রের চেষ্টামূলক সংবাদ দাতা পূর্ব
বালসার জ্যেষ্ঠ দাসী রাণিয়ার প্রথম একটি
উদাহরণ প্রদর্শন করিয়াছেন। কতে আলি
খাঁ নামক এক জমিদারের এক বীরী পল্লার-
ন কল্লিতে কতে আলি ছোট আদালতে এই
ভাবে এক প্রতিজ্ঞা পত্র লিখিল করিয়া
নালীশ করেন যে পা'রী (দাসী) উহার
নিষ্কটে ৪৫ টাকা মগদ ও ১০ টাকার
গহনা লইয়া ছাঁকার করে, সে যাবজ্জীবন তাঁ
হার বাসীতে থাকিবে আর সে বাঁহা উপা-
র্জন করিবে তাহা উহাকে দিবে। বিচার-
পতি বাবু কালীকিশোর দাস এ নালীশ অগ্রাহ্য
করিয়াছেন। এখন বীরী রাণিয়ার প্রথম সং-
বাদ পত্রে আদালতের দরজা
লিখিত্যাক্ষরান পূর্ববালসার অর্থাৎ

আবদুল আজিজ এইচ. টীকাদেব
তুইলক জুলি আনিয়া প্রভৃতির
মির্জা করিবার মানস করি-
ল। টিবিগিয়ন প্রভৃতির মেটকাও
বৈজ্ঞানিক করিতে গিয়াছিলে
এই লোক বোচিও কতখানি সু-
চিন্তিত করাইলে টিবিগিয়ান
রাই এই সময় বোচিও সম্পর্ক
কর্তৃক হইয়াছে। 'ডিমিগিও' বৈজ্ঞা-
নিক, বোচ হর ক্রমে সকল
স্বাধীন এই কণ্ঠে বসন করিতে
হইল। এই সময় হুখার।

শেখোয়ারের শাসন তার-
হইল। ডিগেডির হেলি সাহেবের
এই প্রথম সেনাপ-
কর্তার পদে আসিলে অধীন হইবে
কর্তৃক হইতেই ইহার অন্যতর একটি
পদে আসিলে এক জন চিত্র
কর্তৃক হইবে।

কর্তৃক সহকারী কমিসনর ডর
এই প্রথম বলিয়াছেন এবং সর
পেকা পুরাতন অধিক রেসন জ

এসন সর চারলস টিবিগিয়ান
উঠাইবার উদ্দেশ্যে দেখিতে
গিয়ে সুখনিবারই প্রাক্কর-
কর্তৃক কর্তৃক।

স্বাধীন চৌমহালে ওকালতি
ই প্রথম অধিক পরীক্ষার ইল
ইলেন। আবদা জুলিয়া জুখিত
সেডেলি কালেক্টর একজন উপা-
উহার অন্যতর পরীক্ষারকে প্র
স্বাধীন পাঠাইয়া দিবার চেষ্টা পা-
কর্তৃক অপর হাউরা তাহা
জুলিকিত ব্যক্তিরও যদি একা
উহা বলিয়া বোধ হইল না, তবে
কর্তৃক কি কল হইল।

জেলার তরফের মিলা হইয়া
মিলা ওলি এক ইকির আপেক্ষা

মির্জাগেজেট বলেন ৩ নমিত বাটালিয়ন
রাইফল সৈন্যদল গত রাতিতে আগরা যাত্রা
করিয়াছে।

ইংলিসমান বলেন উত্তর পশ্চিম প্রদেশে
র লেফটেনেন্ট গবর্নর এডমন্টন সাহেবের পদে
এইচ, বি, হারিস্টন সাহেব নিযুক্ত হইবেন।

বোচাই হইতে চারিজন পারদী কলিকা
তার আগমন করিয়াছেন। ইহার গভ কল্যা
সংকৃত কালেজে আসিয়াছিলেন। ইহারি
গের নাম ডাক্তার ডাউনসী। অর্ধেক
কলিকা, অপর কলিকা কলিকা। এবং
রসদী নামের ওকালি কলিকা। ইহারি ইটরো-
পের অনেক বেশ কর্তৃক করিয়াছেন। সুদার
তারতর কর্তৃক করিবারও ইহারিগের ইচ্ছা
আছে। বাবালী কলিকার ও ধনী ব্যক্তি
গের কবে এইকণ প্রেরিত করবে।

২৪ এ নাম হুখাপতিয়ার।

ডাক্তার মিলিয়ন নামক এক জন কলিকা
চিকিৎসক গারিফল্ডির ক্ষত পর হইতে এক
বন্দকের গুলি বাহির করিয়াছেন। ইটালীয়ে-
রা ই ডাক্তারের আতিশয় সম্মান কর্তৃক
করিয়াছেন। একাধিক বাস্তবিক সন্মানের
হইয়াছে। কারণ সুদার ইটালীর ও ইংলান্ড
চিকিৎসক পুরস্কারে বলিয়াছিলেন ডাক্তার পর
মধ্যে গুলি নাই এক জন ইংলান্ড এই গুলির
জন্য ২০,০০০ টাকা (দ্বিতে চাচেন) গারি-
ফল্ডি ডাক্তার কলিকা দ্বিতে বলেন, কিন্তু
সেনাপতি টর ডাক্তার মেগলসের চিত্র প্রাক্কর
রাখিয়াছেন। ইহাতেই আরও প্রকাশ
গারিফল্ডির ব্যায় অস্বাধীন
বন্দে হইতবী অপর দাক্তার প্রেরণ করি
করিয়াছেন।

পকাবে সুইনাইন ও গর্জন হকের চাব হই-
তেছে। কলিকাতাও উহার বীজ বগন আ-
রত হইয়াছে। আবদা হারিস্টনের হকের
বিদ্যে বহুপ অবশ্য করিতেই তাহাতে প-
কাবে সিকোনি হক হওয়া অসম্ভব নহে।

এতদ্ব্যতীত বিখ্যাত কুরাচোর। কি-
ন্তু সম্প্রতি টাইমস অব ইন্ডিয়া বলিয়াছেন
পেনিকুলার ডিগেডিল কোম্পানি প্রি-
যোগিতা নিবারণ করিবার উদ্দেশ্যে ও আবদা
নিবারণের কল্যাণার্থে বৈজ্ঞানিক

আপনারিগের মাত গোপন করিয়া রাখেন।
আবদা মেডিক কোম্পানি আপনাবিধি সা-
হুত। সন্ধান করিতে পারেন কি না।

রাইফলসের মে লায় বন্দুক মাত ও প্রেরিত
একটি বন্দুক আপন বাটীতে নিবারণ করিতে
উহার তাহা প্রেরণ করেন। ডিগিগিও প্রি-
কালি সহায় পর সূত আতিশয় বিবর্ত হই-
য়াছেন। এক বহাতি বলেন সত্য বটে গো-
লায় বন্দুক ইংলণ্ডে রাখির বাটীতে নিবন্ধি-
ত হন, তাহা তাহার প্রতিনিধিকে নিজ
বাটীতে নিবন্ধন করা অসম সাহস। অজান্ত
কল নীল প্রি-কালিরা এইকণ কাগজে অসম
সাহস বোধ করেন বটে কিন্তু রাইফলসের
তাহা বোধ করেন না।

হারদরাবাদে এই অসম জনরব উঠিয়াছে
রোহিলারা যুট আরত করিয়াছে এবং নিজ-
দের এক জন সেনাপতি তাহারিগকে বন্দ
করিতে গিয়া হত হইয়াছেন। মধ্য ও নামক
যে ব্যক্তি নানা সাহেবের সহায় বলিয়া। হত
হন, তাহার নিকটে কলিকাতা পত্র পাঠরা-
গিয়াছে। এসুদার নানা সাহেবের দ্বিগত।
এক খানিতে তিনি জিখিয়াছেন যুদ্ধে পরা-
জিত হইয়া তিনি এক ডাক বন্দুককে বেশ
পলায়ন করেন। তিনি এক বার হুখাপনে ক-
লিকাতার আসিয়া বহু বাজারের বন্দিক্রিগে
নিকটে আপনায় গবর্ন মেডের কাগজ বিক্রীত
করিয়া খেবে নেপালে পলায়ন করেন। নানা
সাহেব মধ্য ওকে দাক্ষিণাত্যে বিক্রীত তা-
পিত করিবার অন্য কলিকাতা পত্র জিখিয়া-
ছেন। বোধ হয় নানা সাহেবের নাম প্রাক্কর
একপ অসম জনরবের নিহতি হইবে না।

মির্জাগেজেট বলেন এডওয়ার (সৈন্যের)
অভাবে তাহার হইতে মুলতান পত্রের রেই-
লওয়ে সম্পূর্ণ হইতেছে না। রেইলওয়ে কো-
ম্পানি ডিগিগিও লোহের এডো প্যাকিগেডেন।
গত বৎসর ২, ৮০, ৮০০ জন আরোহী গমন
করেন, ইহারিগের মধ্যে ২, ৭৭, ০০০ জন
কলিকাতা প্রদেশে গমন করেন। কোম্পানি
হার মানে লককরা জিন টাকার মত হইয়াছে।
সাধারণ লোকের হইতে কলিকাতা রেইলওয়ে
আসিয়া গিয়ে পত্র প্রেরণ। কলিকাতা
আবদা প্রি-কালি টিবিগিও প্যাকিগিও।

সিঙ্গাপুরে কি কোন বসেন সেখানে বিরোধ
হইয়াছে। বিরোধীরা ৩০০০ ক্রান্তীকে বেষ্টি
ত করিয়া কিছু দিই আহারের খিচুড়ি বর্জিত
হইয়াছে। চীনদেশ হইতে এক বর্গ ক্রান্তী সেনা
কর্তৃক গমন করিতেছে। বিদেশে কেবল অর্ধ
সেনা ক্রান্তীরাই, ইহার খোঁজবের ও অতি
মুখ্য হইয়াছে।

পূর্বে বসেন, ১৮-১১-৩২ আদে সিঙ্গাপুর
পূর্বে ৪ ৩৩, ১৫, ৫২৩ টাকার বাণিজ্যের
নী ও ৫, ৫৭, ২১, ১০৪ টাকার আদায়
হইয়াছে। সিঙ্গাপুরের আদায় ৩০০০ হইতে
কিছু কম আদায় উক্ত উপনিবেশের ব্যয় তার
হইতে যুক্ত হইবে।

পূর্বে বসেন পূর্বের রাষ্ট্র। তুলার সাহায্য
কর উঠাইয়া দিবার আদায় করিয়াছেন। উক্ত
সাহায্যের সাহায্য তুলার দ্বারা পাচ বৎসরের
অন্য দিকের সেওরা হইবে। তুলারকে অন্য
বিধ কোন করও দিতে হইবে না। পাচ বৎস
রের পর সাহায্যের ব্যবস্থা অনুসারে কর লও
হইবে। এক্ষণে এসেছেন অনেক এমিলের
মাঝিগিরের সহযোগিতার পরিচয় দিতেছেন
একটি ও ঐতিহাসিকের দিকটো নিশ্চয়
র নাই।

সোমাইয়ের বিখ্যাতালয়ের মহাসভা সর
আলেকজান্ডার প্রান্তকে আপনাবিগের বাই
ন চালায় করিয়াছেন। সর আলেকজান্ডার
প্রান্ত এদের বর্ষা উপস্থিত, যে ব্যক্তি তাঁ
হার মৃত্যু পাঠ করিয়াছেন তিনি তাঁহার
অন্যায়ের কথা জানিয়াছেন।

অন্যোধ্যাগেজের এক জন পত্র প্রেরক
বলে, সিঙ্গাপুরে পত্রের দ্বারা স্থানান্তর
করিবার জন্য গমনের জন্য এক সপ্ত টাকা
প্রদান করিয়াছেন। এই টাকা ব্যাটী কর দা
র আদায় হইবে। সপ্তাহে তথ্যের দৈনিক
তথ্যের দৈনিক ও মৃত হইয়া বহু ২ রক ও বাট
কর হইয়াছে। অনেক দার ও আদায় বা
তাসের সঙ্গে আপনাপন সুস্থিরা গিয়াছিল।
এবার এত বরক পড়িয়াছে যে রাজ্য সপ্ত
দৈনিক হইয়াছে।

ক্রান্তীরাই লক্ষ্য হইতে না লইয়া তা
পরিবর্তে এক কঠিন বিষয় তারতর্ঘ্য ও চীন
হইতে রোগের লক্ষ্য হইয়াছে। তাহা হইলে লক্ষ্য
বসেনের বাণিজ্য একচেটিয়া করিবে।

কোনো আদায় লভিক বাহু রাজ্যের
লাল মিঞা তার গুলুদ্বারা চক্রবর্তী কলি
কাজ সিঙ্গাপুরের বস্তু হইয়াছেন। যদি
এতদেশীয় রাজ্যের প্রতিমিথি অংশ এই
রোগ হইয়া থাকে কিভাবে জাতের চক্রবর্তী
আদায়ের প্রতিমিথি হইতে পারেন, আ
দায় হইতে পারিবে না। তিনি যে কেবল

এদেশীয়বিগের সকলকার সংসর্গ পরিভাগ
করিয়াছেন একপক্ষে অন্য বসেন উচিত পাই
কিছু এদেশীয়বিগের প্রতি প্রদত্ত করেন
লেনটনও গবর্নর আদায় করিয়াছেন বা
কিছু টাকার তত্ত্বাভি পত্র ব্যাটীকে কে
করকালে স্থান সংগ্রহ করিতে পারিলেন না।
দারজালিতে মো.এস.আইন প্রদত্ত হই
য়াছে।

পূর্বে গবর্নমেন্টে দার হইতে দার
খানী দান্য দিত করবেন একপক্ষ অন্যর উচিত
রাহে। সপ্তাহে দারখানী দান্য দিত ক
রা একটা রোগ হইয়াছে।

গত বৎসর সমুদায় তারতর্ঘ্য হইতে ১২.
৫২ ৩৬৭ বস্তু। তুলার দান্য হইয়াছে। বর্ধ
মান বর্ধে আরও বস্তু।

গত কল্যাণ একচেটি পূর্বে নিয়মিত
টাকার অধিকার বিক্রীত হইয়াছে।

সিদ্ধক	গত
বেহারের ১৮ ৩১	১৮৫৫ ১১/১০
কানীর ১১০০	১০৩১ ৮/৫
	মেট্রিকা
	২১, ০০ ২১৫
	২১, ০০ ২১৫

কেন্দ্র অব ইতিহাস সিঙ্গাপুর বোকা
বিবরে বলিয়াছেন এতদেশীয় নাকিগিরের
কথার প্রচার করা যায় না। আর এক স্থানে
লেখা হইয়াছে দুরি যদি নির্দোষী কথাটির
পরিবর্তে উল্লীয়া প্রাধান্যে বলিভেন
দেব সঙ্গায় হইল না তাহা হইলে সর
সাধারণের দ্বারা তাঁহাগিরের মতের একতা
হইত। এই লেখার দ্বারা স্পষ্ট দেখা হই
তেছে তাঁহার মতে হিলি নির্দোষ নহে।

২৫ এপ্রিল শুক্রবার।
ইংলিসমান বলে, অনাহটি শুক্র বোকা
রে ও মালবে অপেক্ষাকৃত অল্প অধিকার
প্রদত্ত।

গত কল্যাণ গবর্নর দেবরাজ উত্তর পশ্চিমা
কলে গমন করিয়াছেন। আগামি গবর্নর কানী
র হেইলওয়ে টেননে ভোজ ও মৃত্যু হইবে।
অনেক ভ্রমলোক কানী হইতে তদ্বিধি
গমন করিয়াছেন। সব রকম নৈপিত্ত সঙ্গ
ধান সপ্ত বলিরা সত্যাপতিগুণে প্রতিষ্ঠিত
হইয়া গবর্নর প্রদত্ত প্রতিমিথি হইয়া কা
রা করিলেন।

হরকরা বলে, সঙ্গায় সঙ্গায় বোকা
বী আদায় লভিক দ্বারা সর চার সপ্ত টাকি
মানকে এক অভিনন্দন পত্র প্রদান করিলেন।

আলাহাবাদ গেজেট বলে, উত্তর পশ্চি
মাঞ্চলে হুইয়া হুইয়াতে পদ্যের বিধ অধি
কার সত্যাবনা। এবার গবর্নর খাল প্রদত্ত
হইয়াছে। আদায়ের বিষয় করক দিগদ হই
ল এই প্রদেশে হুইয়া আরও হইয়াছে।

পিট, জে. রিড দারক
কল্যাণ গবর্নরকে তার প্রদত্ত করিয়া হুইয়া
র অন্য কার্য কর হইতে সে কার্য
মুক্ত হইয়াছে। তদ্বিধি উত্তর পশ্চি
গবর্নমেন্ট আদায় করিয়াছেন উক্তকাল
মোটর কোন কর্ম পাইবে না। সিঙ্গাপুর
জা ও তাহা রহিত হইল। সে কি
আগায় কর্ম পূর্ণপ্রদত্ত হই

নদীয়া বিভাগের ইতিহাস
পূর্বে অধীন প্রদত্ত হইবে।
সাক্ষীর অপরাধে মালীল কর
সপ্তাহে হোট আদায়ের মত উত্তর
যে মালীল তার তাহাতে প্রদত্ত।
তিনি ইতিহাসের দিকটো বেতন পাই
অন্য উক্ত তাহা দিয়া বস্তু পুস্তিক
করিয়াছেন। আদায় অদায় করি
নির্দোষতা সঙ্গায় করিলেন।

একপক্ষ অন্যপ্রতি ইংলীয়া
মালীল গুলুদ্বারা খেলেন।
মালীলগকে প্রদান করিতে বলিয়াছেন।
উপায়র্জন এক নির্দোষ হইবে।
তোহ না

ইতিহাস গ্রিকর্মার বলে
মেডিকাল কলেজের দ্বারা
উক্ত কলেজের দ্বারা
প্রদত্ত হয়। কিন্তু বিখ্যাত
সেলের তাহা সঙ্গায় করিয়াছেন।
লগের অধ্যাপকদিগকে পুস্তিক
ত নহে।

উক্তপত্র আরও বসেন
কাউন্সেল এলগিন কক
ও মালীল বিদ্যালয় কর্তৃক
হেন

২৬ এপ্রিল
এবংসর। ১৫ জন
বি, এল সেন, ডাক্তার
বি, এল পত্রীকায়
নবর না হইয়াছে
ইবার বোগ দিলি
হইয়াছেন।

গবর্নর
বহু
অচল
বেদান্ত
হুইয়া
উত্তর
আদায়
১৮ জন
তদ্বিধি
হুইয়াছেন

নিউইয়র্ক ২২ এ ডিসেম্বর। কংগ্রেসটিতে মন্ত্রী
মহার বড় গোলযোগ উপস্থিত হইয়াছে। সেনে
ট মহার সাধারণতঃ প্রকাশ করেন, তখন মতা এই
অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন যে, কলকাতার
জাতি ত্যাগবিশেষে শিক্ষান দায়িত্ব বিচারপ্রণালীর
প্রতি ত্যাগবিশেষে কোণ অধিক। নিউইয়র্ক
প্রকাশ্যে, আগামী কর্ম পরিচালনা করেন।
আইন প্রণয়ন প্রণয়ন প্রণয়ন প্রণয়ন প্রণয়ন
করিয়াছেন কিন্তু মতাদর্শে নিম্নলিখিত ত্যাগবিশেষে-

৩) এ জাফর হাতি—পুলিদের উপস্থিতিতে
 লেপ্টোমাট জি. বি. জনকোমার সাহেব, লিখিত
 হওতে হুদলি হুদরা নগর নিয়ন্ত্রণ

পুলিশের সহকারী জলবিদ্যেট টি. লিউলবিয়ার সাহেব বদলি হইয়া পিনার হইতে মুম্বই গিয়াছেন।

আসান পুলিশের সহকারী জলবিদ্যেট এ. এইচ. জেন্স সাহেব বদলি হইয়া গিয়াছেন।

ডাক্তার বিটলস সাহেব বদলি হইয়া আসান বা বদলি হইয়া কোন অফিসে না হইতে বৈন এস. এস. সিঙ্কোর সাহেব ২৪পহলমান সি. ল সহকারী সাবজেনারেলের অফিসে কাজ করিবেন।

২২। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

২৩। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

২৪। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

২৫। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

২৬। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

২৭। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

২৮। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

২৯। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

৩০। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

৩১। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

৩২। কেরালা—জম্মিউ জি. জি. টেলর-সাহেব স্বাক্ষরপত্রের জাইন্ট ম্যাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং স্বাক্ষরপত্রের অফিসে কাজ করিবেন।

—০০০—

পত্র প্রেরণের প্রতি।

কেন্দ্রীয় চাকরীর পর অসংখ্য যোগ দিতে পারিতাম হইল।

১১ ই মার্চ শুক্রবার বাহু মোবাইল টা-কুনব গুডে ব্রাকসিংগে বে সাংস্কৃতিক উ-না চর তৎসংক্রান্ত ব্রাকসিংগে বিবোধী বে পত্র আনাদিগের চতুর্থ হইয়াছে। তাহা আশা মিগের প্রকাশ করিবার উদ্দেশ্যে।

—০—

প্রেরিত।

খ্রীষ্ট সোমপ্রকাশসম্পাদক
ম. হাদিয়েবু।

গবর্নমেন্ট সংস্থাপিত বিচারালয়ের কার্য প্রণালীতে নির্দ্ধারিত হইবার উদ্দেশ্যে এবং বাহী প্রতিবাদীগণকে কট সহ না করিতে হয় এই অভিপ্রায়ে দরিত্রপালক গবর্নমেন্ট যে ১৮৭২ সালের ৮ আইন প্রচার করেন তদনুসারে বিচারপতিগণ কার্য করিলে বদী প্রতিবাদী উ-ত্তরের মঙ্গল হয় সন্দেহ নাই কিন্তু পুরীপ। দেশীয় হাকিম বিদ্যাপতিগণ স্বহস্তে সাক্ষর লক্ষ্য না লেখাতে পুনরায় সর্বগ্রামী আনলা-গণ যে কিপর্যন্ত অগাচার করিতেছে তাহা বলিয়া জানান যায় না। বিচারপতিগণ তাহা দেখিয়াও দেখেন না। তাহারা কেবল কত ফরসা হইল ইহাও প্রতি লক্ষ্য করেন। বাহী প্রতিবাদীর সর্বগ্রামী হইতে না কেন তাহারা কতগুলি মোকদ্দম নিষ্পত্তি করিলেন কিহা রাহি এই চিন্তা করিতে থাকেন। কারণ গব-র্নমেন্ট সংস্থার প্রতি দৃষ্টি করিয়া পদত্ব কর-বেন। কিম্বদিক জাগরমিতি।

৩০ জাহুয়ি ১৮৬৩।
দ্রিহত মুক্তকরণ।

২২ লং বহু।

খ্রীষ্ট সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাপ্রসন্ন সমীপেবু।

খ্রীষ্ট এখানে দিবসের অত্যন্ত উজ্জ্বল

আমুজাও হইতেছে। আর এত রজনীতেই কোন না কোন বাটীতে শিকড়ের বাইতেছে। গত ২২ তারিখে অদৃষ্ট এক মহাজনের দামান কাটিয়া অনেক টাকাব প্রণয়ি অপহরণ করি-য়া এক দিনের জন্য তৎকালে জিরোভিত হই-রাছিল আবার গত দুজনীতে এক বেলায় নরম গুণে অভিভূত এক সিন্দ খনন করিয়া বহু-লা প্রণয়ি এক রক্ত সিন্দুক বাহিরে। আনন্দন করিতেছিল, এমন সময় বেশা জগদ্বিত হইয়া চীৎকার করিতে তদুপগণ আদতের রিক্ত হস্তে প্রধান করিতাহ। এককল দেখিয়া তদুপগণ আশা দিগের নগররক্ষকগণ মগন দক্ষার্থ তিরু মাজ যত্ববান হইতেছে না। ইহার পূর্ব ৭ (এ-গারটা) হইতে বারটা পর্যন্ত এক ঘটনাকাল কি-কিং হো হা করিয়া অবলীল। জনে শরম করি-য়া স্থান মিত্রা বাহু কিছু মাস গত হইলে কার সাধা নির্দ্ধারিত টাকাদেব এক গরম কল দিবে। মঙ্গলমক মহাপ্র। নগর রক্ষকদিগের দৈবিকোলা কেবল যে এই একমাত্র আশিষ্ট সকার হইতে ছে একপ নচে। ইহা দিগের অননোযোগে ক-তক কলি মুক্ত লোক রজনী ২। ৩ দুটা তিনটা বসন্ত গুহবদগের আদানে আশি লাগাইয়া গোড়াইতে আরম্ভ করিতেছে। এত দিনজন যে ক-ত লোককে কত কতি মগ করিত হইতেছে তা-হা বলিয়া শেষ করা হইতে পারে না। সেদ্বিস প্রভতিবটার সময় কোন এক পূর্ব এলাকার এস খনাতা ও তীর গুহে অশি লাগাইয়া গুহখানি-নীকে মনস্তানে গোড়াইবার চেষ্টা করিয়াছিল। কিন্তু গুহখানি সাংস্কৃত মৌজাখানাতঃ কএ-কটি মহান লবিত পরিতাপ পাইয়াছে। আর ২ জাহাদি তদুপ হইয়াছে। এ জেলার পূর্ব ৭ মাজিউট খ্রীষ্ট মোকোর্ট সাহেব এই একটি মুক্ত নিয়ম করিয়াছিলেন, যে চৌকিদারের যা-সে শিকড়ের বা অন্য কোন একর আশিষ্ট ঘটি-তিন চতুর্কথা সেট চৌকিদারকে বহুতর ৬ করিগান। করিতেন, এতনা চৌকিদারের ২০ কালে অশিষ্ট বস্তু ও মতর্কত, মহাকার স্বাক-কর্তৃক সম্পাদন করিত অতরাং তৎকালের এত প্রা-চুর্তা ছিলনা। বাহী হইক আনাদিগের বর্তমান মাজিউট সাহেব এই রূপ একটি নিয়ম সংস্থাপ-ন করিয়া নগররক্ষকদিগকে ও প্রাচুর্তা না করিলে জাহাদিগের মঙ্গল নাই।

পাখিয়া একাত্ত বাধ্য।

১৪ ই-মার্চ ১৯৩২ সাল। নগররক্ষক পাল

বেঙ্গল সঙ্গীতি এখানকার দুইনেকি জা-
 দাত ত এক অভিজিত দুইনেকি জাতিগোত্র।
 দাবি নহোদয়-রেন্ডেণ্ডা সঙ্গীত দাত বিচার

স্বতন্ত্র করিয়াছেন । গত শনিবার ৪০টি বোম্ব-
৥২, অধিক নিষ্পত্তি হইয়াছে, এতদ্ব্যতিরিক্ত
অতিরিক্ত সাক্ষ্যের অবশ্যবশি হইয়া গিয়াছে,
যাতে বেক্স অক্ষ বিচার হইতে হইবে।
কিন্তু পের বিদিত হইবেক । এতলে এই মাস ব-
যা বার কোড়া তার ভোগ বৈধের কি, আ-
লের দারস্থ আছে । ইংলণ্ডের বোর্ডিং স্কুল
র বিবরণ কিঞ্চিৎ লিখিতে মানন করিয়াছি ।
হা এই, ইংলণ্ডে ১৮৬১ অব্দে প্রতিষ্ঠিত করা
অপরাধির মধ্যে ২৮টি ক্রীলোক, ইহাতে এ
ডোক ৪৮৮টি অপরাধির মধ্যে ১টি ক্রীলোক হই
তেছে । শুদ্ধতর অপরাধে দোষী সংখ্যা ১৩৩৪২
পুরুষ এবং ৩৯৭৭ ক্রীলোক, জেটা ক্রী সংখ্যা ৩১
৫০০, জ্ঞান হত্যাব্যতিরিক্ত অন্যবিধ দোষগ্রস্ত
শ্রেনীর ক্রীলোক সংখ্যা মোট ৫৯৯৮১ অর্থাৎ
ইংলণ্ডের সমুদয় ক্রী সংখ্যা মধ্যে ৮৯৬০৩
জন অপরাধী অর্থাৎ প্রত্যেক ১০৯ জনের এক
জন দোষী ।

প্রাক্তন
বোম্ব আমতা

ক্রিয়াকার চার্লস ট্রিবেল্যান মহোদয়
প্রতি নিবেদন ।

শুন ট্রিবেল্যান মহোদয় ।

কত আশা করি তোমা প্রতি ।

হও তুমি মহোদয়, বিচক্ষণ মহোদয়,

ভারতের বিতকারী প্রতি ॥ ১ ॥

তুমি হে অশেষ গুণধান ।

পুর দীনভারতের কাম ।

কাতরে ভারত চায়, যদি তার চর চার,

চিরকাল হবে তব মান ॥ ২ ॥

নিবীড় ভারতবাসিন্দ ।

কত দুঃখ সহ্য অকাবণ ।

হুট্টেতে বিজ্ঞোহ করে, শিটে কত প্রাণে মরে,

শিটে কত সজিছে এখন ॥ ৩ ॥

প্রবলের কণ্ড প্রত্যাচার ।

সজিছে ভারত অনিবার ।

আবার, ক্রিয়াকার, নয়ে মান সন্মোহন,

হল বলা করিছে বিচার ॥ ৪ ॥

আব এক হুগ্রেছে বিষম ।

কাল ইনকম লক্ষণ ।

১৮ অবি লোকে কর, বিজনে লামান্য নর,

হরিজেন নহে ছোট বস ॥ ৫ ॥

গৃহের একে কস দার ।

ভাতে ইনকম কিংবা দার ।

অমটন বার মান, এবে বাড়ে মান মান,

কণ্ঠেরে দেখেতে বৈবার ॥ ৬ ॥

কত লোকে ইনকম করে ।

গোপের কতই স্তুতি করে ।

ছেলের ছন্দব দেন, তাপিত দারেতে কেরা,

খিল দিয়ে বোম্ব থাকে মরে ॥ ৭ ॥

পাঁচ শত দুঃখ আর দার ।

বটে পাশ দুঃখ দেখে দার ।

কিন্তু কতু গিডিউল, চক্ষে তার বর্ষে শূল,

কেরে কেরে অশেষ প্রকার ॥ ৮ ॥

সত্য বটে বারি খনিবর ।

ইনকমে নারি পান তর ।

কিন্তু আর জানাইতে, সেই দারে গুণে দিতে,

মর্মান্তিক তাঁর ও কাতর ॥ ৯ ॥

এত কষ্ট সহ্যে কি কাবণ ।

ভাবতবর্ষের প্রজাগণ ॥

নিজ্জ সম বাক আর, ইনকম বিদ্যু আর,

কিনে ঘোচে ভাতে অনটন ॥ ১০ ॥

রাজার সংসাবে মিছা বার ।

জান তুমি কতইত দর ।

সেই বার প্রথমনে, ছাড় ছাড়ি প্রজাগণে,

চুঁচোমেবে তাতে গল কর ॥ ১১ ॥

আর এক আছে নিবেদন ।

বিদ্যা দানে দাও তুমি মন ।

মাধারণ জনগণ, যাতে পায় বিদ্যাধম,

তাতে ধন কর বিসর্জন ॥ ১২ ॥

কল্যাণে ছাখিবাকালিন্দন
নাং কলিকাতা

মল্যপ্রাপ্তি

ক্রিয়াকার বাহু ক্রিপতি তটীচায়া

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ আবার পর্য্যন্ত

কোং

বাহুড়া

৫০ টাকা

ক্রিয়াকার বাহু দারকান্য সন্ন্যাস

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ পৌষ পর্য্যন্ত

কোং

পটলডাঙ্গা

১০

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ কাৰ্ত্তিক পর্য্যন্ত

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ কাৰ্ত্তিক পর্য্যন্ত

কোং

সৈয়দাবাদ

কোং ১০

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ কাৰ্ত্তিক পর্য্যন্ত

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ কাৰ্ত্তিক পর্য্যন্ত

কোং

বকীরা

কোং ১০

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ কাৰ্ত্তিক পর্য্যন্ত

কোং

কোং ১০

কোং ১০

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ পৌষ পর্য্যন্ত

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ কাৰ্ত্তিক পর্য্যন্ত

১২৬৯ সাল হইতে ৭০ কাৰ্ত্তিক পর্য্যন্ত

কোং ১০

কোং ১০

কোং ১০

সোমপ্রকাশ সংকলিত কয়েকটি
বিশেষ নিয়ম ।

অগ্রিম মূল্য না পাইলে মফস্বলে সোমপ্র-
কাশ প্রেরণ করা যায় না ।

উহার অগ্রিম মূল্য বার্ষিক ১০ এবং যাগু-
সিক ৫০ টাকা হয় মাসের মূলে লওয়া যায় না ।

যাহারা সোমপ্রকাশের মূল্য টাঙ্গ টিকিট
পাঠান তাহারা এক অথবা আধ আনা অধিক
মূল্যের ও রসীকের টিকিট না প্রেরণ করেন ।

যখন বিনি মফস্বল হইতে সোমপ্রকাশের
মূল্য পাঠাইবেন তাহা যেন বেশিটরি কবিতা
দেন ।

পূর্বপ্রদত্ত মূল্যের কাল সন্তোষ হইলে মূ-
ল্য পাঠাইতে কেহ যেন অসঙ্গত বিলম্ব না
করেন ।

বাঁহাঙ্গিণের মূল্য দিবার সময় অন্তত ৫০
য়া বাঁহাঙ্গি, সঙ্গতমত সময় প্রতীক, কবিতা
প্রাথমে সোমপ্রকাশে প্রচাঙ্ক করিয়া তাহার
পর চিঠি লিখিয়া জানান হইবে, যদি তা
হাতে কোন উত্তর অথবা মূল্য না পাওয়া যায়
কাজক বহু হইবে । মূল্যের নিমিত্ত চিঠি বেয়া-
রিং পাঠান হইবে । কলিকাতা সংকলিত
লেজে আশাধিগের নামে চিঠি আইলে আ-
মরা শীঘ্র পাইব ।

বাঁহাঙ্গি যখন সোমপ্রকাশ পরিচালন করিব-
ন ইচ্ছা হইবে চিঠি লিখিয়া না জানাইলে
তাঁহা গ্রাহ্য করা যাইবে না ।

কেহ সোমপ্রকাশে বিজ্ঞাপন দিতে ইচ্ছা
কবিলে তাহাকে প্রথম দার প্রতি পংক্তি ৮০
আনা দ্বিতীয় ও তৃতীয় দার ১০ আনা করিয়া
দিতে হইবে তাহার পর ৮০ আনা করিয়া
লওয়া যাইবে ।

মফস্বলের বাঁহাঙ্গি হইবেন, তাহা-
বিলের অন্তত তাকমাগুল দিতে হইবে

০৫ পত্র কলিকাতার পূর্বপ্রদত্ত মূল্যের সো-
মপ্রকাশের মূল্যের মূল্যের মূল্যের মূল্যের
বিজ্ঞাপনের মূল্যের মূল্যের মূল্যের মূল্যের

प्रवर्णतां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती मुतिमहती न चीरतां ।

मासिक दूना १ टोना
वार्षिक आश्रित ३० टोना

ਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਭਰਮਾਂ ਪਰ੍ਧਾਨ ।

বালক প্রতিলিপনে এবং বালক পুস্তক
অপাবগ হইবে তাহার অন্যান্য বিষয়ে
সংগ্রহ করা যাইবে না । যে যে বালক প
বলিয়া এই সকল ছাত্রকে পাইবে
তাহারা হিন্দু বা অন্য কোন গণ মেষ্টে কুলে
যেন যেতনে পাঁচ বৎসরকাল পাঠ করিতে
১৮৬৩ সাল । তারিখ ২৩এ
এইচ উডে ।

বাল্যাদি মধ্যবিভাগের কুল
সমূহের উন্মেষ্টের ।

সোমপ্রকাশ ।

৫ই ফাল্গুন ।

মধ্যে মধ্যে দেখিতে পাওয়া যায়
সোমপ্রকাশের মকসল গ্রাহকগণের কেহ
কেহ বিস্মৃতি ক্রমে মূল্য প্রেরণ করিতে
অসম্মত বিলম্ব করেন, তাহাতে আমাদি-
গের নিয়ম ব্যাহত ও অসুবিধা ঘটে ।
এই নিমিত্ত আজি অবধি এই নিয়ম করা
যাইতেছে, যে মাসে যে যে ব্যক্তির মূল্য
কাল অতীত হইবে, তাহাদিগের অগ্রগার্ব
“প্রাপ্য মূল্য” এই শিরোনাম দিয়া তাহা
দিগের নাম, বাসস্থান ও মূল্যনির্দেশকাল
লিখিয়া দেওয়া হইবে । তাহার পরও
যিনি অসম্মত বিলম্ব করিবেন, তাহাকে
আর একবার জানান হইবে, তাহাতেও
যদি মূল্য অথবা চিঠি না আইসে, তাহার
সোমপ্রকাশ লওয়া অভিহিত নয় বিবে-
চনা করিয়া কাগজ বন্ধ করা হইবে ।

২০—

আমরা অতিশয় দুঃখিত হইলাম, পরি-
কালক অকালে দেহ পরিত্যাগ করিয়াছে ।
সকাল ভাষায় এক খানিও উৎকৃষ্ট দিন
সমাপ্ত পত্র নাই । পরিদর্শককে দেখি
আমাদিগের কথঞ্চিৎ এই জ
ছিল যে ইহা ক্রমে সেই ক্ষেত্রে দুঃ-
তে সমর্থ হইবে, কিন্তু তাহাও উদ্ভূ-
হইল । সম্পাদক বিরক্ত হইয়া পরি-
ত উঠিয়া দিলেন । তিনি বিরা-
র্য যে কারণ নির্দেশ করিয়াছেন,
গণের অনাদর উহার অন্যতর

বলিয়া উপন্যস্ত হইয়াছে । ইংরাজী
সমাচার পত্রাদির ন্যায় সমাচার পত্র
পাঠের মর্মজ ও তৎপাঠে অনুবক্ত লোক
বাঙ্গালিদিগের মধ্যে আজিও অধিক
হন নাই যথার্থ বটে, কিন্তু যদি অনু-
ধাবন করিয়া দেখা যায়, তাহাদিগের
জ্ঞান সম্পূর্ণ দোষাক্ষেপ কোন ক্রমেই ন্যা-
য়ানুগত বলিয়া প্রতীয়মান হয় না । একগে
আমরা দেখিতে পাইতেছি, বাঙ্গালিদিগের
দিন দিন পাঠ ক্ষুধা বৃদ্ধি হইতেছে । কিন্তু
সেই বৃত্তকার অনুকপ ভোজ্য লাভ ন
হওয়াতে তাহার আবার মান্দা হইয়া যা
ইতেছে । কলতঃ আমাদিগের সংস্কার এই
রূপ, সম্পাদকদিগের যথার্থীতি পত্র স
ম্পাদন ক্ষমতা বিহীন বাঙ্গাল সমাচার প
ত্রের উন্নতির সমধিক প্রতিবন্ধকতা করি
তেছে । ভাল সমগ্রী প্রস্তুত করিয়া সম্মুখে
উপস্থিত করিলে কাহার তাহাতে লোভ
না জন্মে : ভাল মন্দ বুঝিতে পারেন, এখন
একপ অনেক লোক হইয়াছেন । আমরা
সম্পাদকের একটী সঙ্কোভ অনুচিত প্র-
তিজ্ঞা দেখিয়া যার পর নাই ক্রুদ্ধ হইলাম ।
তিনি প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন, বাঙ্গালি সমা-
জের একপ অবস্থা থাকিতে তিনি আর
বাঙ্গালিদিগের উপকার করিবেন না । তা
হার সদৃশ দেশহিতৈষী উদারমস্তক ব্যক্তি
রা যদি একপ প্রতিজ্ঞা করেন, তবে কাহা
হইতে সমাজের আবস্থা সংশোধিত হইবে;
যে যে রূপ ব্যবহার করুক না কেন : সম্মু-
খে যত কেন প্রতিবন্ধক উপস্থিত হউক
না, সমুদায় অতিক্রম করিয়া সৎকর্মসাধন
করিব, মহতের এইরূপ মহতী প্রতিজ্ঞা
চাই । অস্পষ্ট ভাষাৎসাহ হওয়া আমাদি-
গের একটী নৈসর্গিক দোষ, তাহাতেই
এদেশের উন্নতি এত পশ্চাদ্বর্ত্তিনী হই-
য়াছে ।

— — —

বহু দিন হইল, অচিহ্নিত কর্মচারিরা
আপনাদিগের পেন্সন বিষয়ের সুবিধা

বী হইয়া সর চার্লস উডের নিকটে এক
আবেদন করিয়াছিলেন । সম্প্রতি শুনা যা
ইতেছে, সেই আবেদন পত্র তাহার অনু-
মতি সহিত রাজধানীতে উপনীত হইয়াছে
কিন্তু আজিও গেজেটে প্রচারিত দৃষ্ট
হয় নাই । আবেদনকারিদিগের পাঁচ
বৎসর করিয়া লাভ হইয়াছে । পূর্বে ২০ও
৩০ বৎসরে স্ব স্ব বেতনের তৃতীয় ও অর্ধ
অংশ পেন্সন পাঠবার নিয়ম ছিল, এখন
১৫ ও ২৫ হইতেছে । কিন্তু এই ১৫ ও ২৫
বৎসরে পেন্সন লইতে হইলে ডাক্তারের
সর্টিফিকেট দিতে হইবে । ৩০ বৎসর হই-
লে আর সর্টিফিকেটের প্রয়োজন হইবে
না । অন্য কারণে হউক আর পাড়া নিব-
ন্ধ হউক, যেন ছুটিই কর্ম কালের মধ্যে
পরিগণিত হইবে না, কেবল গাণিতমণ্ড
অনুগ্রহ করিয়া প্রিভিলেজ লীভ বলিয়া
যে ছুটি দিয়া থাকেন, তাহা পরিগণিত
হইবে । সর্টিফিকেট পাঠ বৎসর করিয়া যে
লাভ করিলেন, ইহা সামান্য লাভ নহে,
তবে আকাক্ষার ইয়ত্তা নাই, এই ইচ্ছা
হইতেছে, যদি বিনা ডাক্তারের সর্টিফিক-
ট ২৫ বৎসর, আর সর্টিফিকেটে ২০ বৎসর
পর্যন্ত পেন্সনের নিয়ম হইত, তাহা হইলে
ভাল হইত । ভারতবর্ষে অবিচ্ছেদ্য অতঃ
শরীরে ২৫ বৎসর বয়স করা সহজ কথা নয়,
অনেকেব অদ্রুটে ইহা ঘটনা উঠিবার
সম্ভাবনা নাই । একটী বিষয় অশেষ
অন্যায় আজ্ঞা হইয়াছে, পাড়া কালকে
কর্মকাল মধ্যে গণনা করা অতিশয় উচিত
ছিল ।

— — —

যে বিষয় যাহার নিতান্ত প্রিয় ও অ-
তীক্ট হয়, অন্যার্থ ঘটনাক্রমে সে তদনু-
ল বলিয়া গণনা করে ; আমরাও সেইরূপ
সর চার্লস ট্রিভিলিয়ানের যাবতী চে-
ফাকে চৈনকমর্ত্তাজের উত্তোলন বিষয়ে অনু-
কূল বলিয়া গণনা করিতেছি । শুনিলাম,
চার্লস ট্রিভিলিয়ান অধিক পরিমাণে

মোট প্রচলিত করিবার চেষ্টায় আছেন
আমাদিগের বোধ হইল, ইহা ইনকমটাক্স
ভাড়াইবার পূর্ব আয়োজন। ইনকমটাক্স
দাড়াইতে হইলে যে যে উপায় অবলম্বন
কর। আবশ্যিক, অধিক পরিমাণে মোট
প্রচলিত করিয়া আন বৃদ্ধি করা তাহার
অন্যতর। এ উপায়ের কোন প্রণী অথবা
সম্প্রদায়ের বিবেচ্য জগিবার সম্ভাবনা নাই।
কাহার প্রতি অত্যাচার ও গুণ্ডাও সম্ভাবিত
নহে। গবর্ণমেন্টের প্রতি প্রজার যদি বি
শ্বাস থাকে, এ উপায় দ্বারা অর্থলাভ দুর্ব্ব
বোধ হইতেছে না। গবর্ণমেন্ট ক্রমে প্রজার
প্রিয় ও অতীকৃত কাব্যের অনুষ্ঠান দ্বারা
অনুবাগ ও বিশ্বাসভাজন ও হইয়া উঠিতে
ছেন। যদি কেবল গৃহে নগদ টাকা অল্প
সঞ্চিত থাকে, আর অধিক পরিমাণে মোট
প্রচলিত হয়, আকস্মিক দুর্ঘটনা কালে
গবর্ণমেন্টের বিপদ পন্ন হইবার সম্ভাবনা
অছে, এই বলিয়া অনেক যে আশঙ্কা
করিয়া থাকেন, তাহা আমাদিগের নিকটে
বৃদ্ধিসহ বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে না।
আমাদিগের গবর্ণমেন্ট নিরবলম্বন ও নিঃ
সহায় নহেন, ইংলণ্ডের প্রসাদে ইহার।
কণমায়ে ইউরোপ খণ্ড হইতে অসংখ্য
অর্থ সংগ্রহ করিতে পারেন। গত বিস্ত্রো
হই ইহার সাফল্য দমন করিতেছে।



এতদিনের পর বুঝি বিধাতা হতভাগ্য
মুপেকদিগের প্রতি এসম্ম হইলেন। এত
দিনের পর তাঁহাদিগের বেতনের বিষয়ে
গবর্ণমেন্টের দৃষ্টি নিপতিত হইয়াছে। বা
মালি সম্পাদক স্তনিয়াছেন। তাঁহাদিগের
ছই প্রণী হইবে। প্রথম প্রণীর ৩০০
ও দ্বিতীয় প্রণীর ২০০ টাকার বেতন
হইবে। সঙ্গর আশিনের পদ উঠিয়া যাই
বে, মুপেকদের সেই কর্ম করিবেন। প্রমা
নরূপ পুরস্কার লাভ না হওয়াতে কেবল
যে মুপেকদের। তথ্যোৎসাহ ছিলেন একপ
নয়, অল্প বেতন দেখিয়া লোকের ও বা

হাদিগের প্রতি তদৃশ গৌরব ছিল না।
বিশেষতঃ ইহা এতদিন গবর্ণমেন্টের অবি
বেচনার একটি সাক্ষি স্বরূপ ছিল।

হিলির কিস্তিগুণ্ডা গুণ।

বিধাতার তত্ত্বাভিমান দুর্ব্বোধ, কখন
কোন কার্য কারণতবে কি ঘটনা হয়, সমু
দায় সহজে বুঝিয়া উঠা যায় না। বুঝিবার
নিমিত্ত অনেক সময়ে অনেক প্রশ্ন পা
ইতে হয়। আমাদিগের আদালতের
গতি ইচ্ছা অপেক্ষাও অধিকতর দুর্ব্বোধ
হইয়াছে। অসামান্য পরিশ্রম সহকারে
ইহার কার্য কারণতাবের বহুতর অনুসন্ধান
করিয়াও বহু সময়ে নিভান্ত বিকলচেত
হইতে হয়। সম্প্রতি যে হিলির নকদমা
হইয়া গিয়াছে, তদ্বারাই আমাদিগের বাক্য
সমপ্রমাণ হইতেছে। বিধিসূত্র এই, জলে
নামিয়া মাহ ধরিতে গেলেই গায়ে কাদা
লাগে, কিন্তু আমাদিগের ধর্ম্মাধিকরণ বিড়
ঘনানাটকের নায়ক হিলি সমুদায় সরো
বর আলোড়ন করিয়া মৎস্য ধরিলেন,
কিন্তু গায়ে অণুমাত্র পল্লবস্পর্শ হইল না!
বিধি সূত্র এই, ছুপ্পবেশ কর্তৃকবনে প্র
বেশ করিয়া কল আহরণ করিতে গেলে
শরীর কর্তৃক দ্বারা ক্ষত বিক্ষত হয়, কিন্তু
আমাদিগের দয়াজিচিত্ত হিলি দুর্গম কর্ত
কবনে প্রবেশ করিলেন, সঙ্কল কল
আহরণ করিলেন, কিন্তু গায়ে একটি আঁ
চড়ও লাগিল না।

এতলে হিলির অসামান্য সহিষ্ণুতা ও
গের উল্লেখ না করিলে আমাদিগকে পাত
কী হইতে হইবে! জুরিরা তাঁহাকে “নট
গিলুট” করিয়াছেন, কিন্তু তিনি এমন
সুজন যে গবর্ণমেন্ট তাঁহাকে বিনাপরাধে
এতদিন যে কারাক্ষেপ দিলেন, তাহিমিত্ত
তিনি গবর্ণমেন্টের নামে নালিশ করিলেন
না। তাঁহারুদি একজন অসামান্য সহিষ্ণুতা
গুণনা থাকিত, আমরা এতদিন লজসাহে
বের সময়ে আটমাহেবের ন্যায় বীড়ন

সাহেবের নামে আদালতে অভিযোগ উপ
স্থিত দেখিতে পাইতাম! বীড়ন সাহেব
নীলকর দলের প্রিয় বলিয়া কখনই কখন
পাইতেন না! অন্যায় দণ্ডকারির
আবার প্রেম ও স্নেহ কি?

এই এসম্মে আমাদিগের দেশের
লোকের নিরীহতা ও সুহৃৎস্বভাবের
প্রশংসা করিবার অবসরটি পরিত্যাগ ক
রাও বিবেচন হইতেছে না! হিলির মকদম
মায় ইউরোপীয়েরা জুরি হইয়াছিলেন,
তাল তাঁহারা যেন এদেশের কৃষকদিগের সর
লতা ভীতুতা ও অনতিজ্ঞতা প্রকৃতি বিষয়
অবগত নহেন, সুতরাং সাক্ষির জবানবন্দী
দেখিয়া তাঁহারা মনে করিলেন (তাঁহারা
হিলিকে অপরাধী জানিয়াও ছাড়িয়া দি
য়াছেন, একথা অবিস্মরণকারি সেনাক
রাই বলে) কৃষকেরা মিথ্যা কহিতেছে,
কাজে কাজেই তাঁহারা হত্যাভিযোগ হই
তে হিলিকে মুক্ত করিলেন। কিন্তু হিলি যে
দাদাঘনে উপস্থিত ছিল, তাহার উৎসাহ
দানে যে হত্যাকাণ্ড, গৃহদাহ ও প্রীলো
কের সতীত্ব হরণাদি ঘটনাছিল, তাহাবিয়ে
কাহারও সন্দেহ নাই। কাউই সাহেব
কৌশল ক্রমে অভিযোগ কালে লে অংশ
যে পরহার করিলেন, আমাদিগের দেশে
র লোকেরা সে বিষয়ে মোনামুলী হইয়া
রহিলেন কেন? এক জন অন্য়ায় অত্যা
চার ও অরাজক কাণ্ড করিতেছে জানিতে
পারিয়াও, যদি অপর কেহ তাহার অর্থী
না হয় গবর্ণমেন্ট কি অন্য়ায়কর্তাকে
বিনা দণ্ডে অব্যাহতি দিবেন? এ প্রশ্নটির
মোমাংসা করি। লওয়া কি আমাদিগের
দেশের লোকের কর্তব্য নহে? এ প্রশ্নের
যাবৎ মোমাংসা না হইবে, তাবৎ এদেশের
লোকের ধন আশাদি রক্ষার আশাসন
কি? সকল অত্যাচারে যে অর্থী পাওয়া
যায় না, হিলির মকদমাই তাহা হার এক
টা উদাহরণ হল। এতদিন অর্থী না হইয়া
র ধন লোভাদি অনেক কারণে

উপসংহার হলে আমরা এতৎসংক্রান্ত আর একটি বিষয় পাঠকগণের গোচর করিতেছি। বিশ্বস্ত লোক মুখে শুনিলাম, ইংলিশ বিদ্যালয় লেখাতে বাঙালি সম্পাদকের নাম লাইবেল মালীশ করিবার ভয় প্রদর্শন করা হইয়াছে। সম্পাদক এখন কি করিবেন? আপনার বাক্য প্রমাণ করিবার চেষ্টা পাইবেন? না, আর কোন উপায় অবলম্বন করিবেন? দেখিবেন যেন পৌড়দেশ না হাঙ্গে।

সিভিল সার্ভিসের পরীক্ষা ভারতবর্ষে
না হওয়া অন্যান্য ভাবেতে।

ইংলিশের একজন এডমিশনারি ব্যবসায়ীকে প্রধানতম বিচারালয়ের প্রাতিপক্ষ পক্ষে প্রতিষ্ঠিত করিয়া তাহার বর্ষীয়দিগকে এই কথা জানাইয়াছেন যে ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট যেকোন পক্ষ পক্ষে দুইটি যুক্তিবিরুদ্ধ ব্যবসায় করুন না কেন, তিনি নিজে সাক্ষ্যসমূহকে যে ব্যবসায় হস্তাধীন করিবেন তাহাতে পক্ষপাত সম্বন্ধ থাকিবে না। এতদ্ব্যতীত একটা প্রকৃতির প্রশ্ন সমাধান নিত্যমাত্র আবশ্যক হইয়া উঠিয়াছে। সে প্রশ্ন এই—

এডমিশনারি যখন দেশের সর্বোচ্চ বিচারালয়ের বিচারপতিপদ লাভের যোগ্য হইলেন তখন তাঁহারা কি জন্য মাজিস্ট্রেট কালেক্টর সিসিগনজ ও সেক্রেটারির কার্য গ্রহণ না হন? তাঁহারা প্রধানতম বিচারালয়ের বিচারাসনে আসীন হইয়া জজ, মাজিস্ট্রেট প্রভৃতির আজ্ঞার বিরুদ্ধে আপীল প্রবণ, ও তদন্ত করিয়া ভবিষ্যৎ বিচার এবং যুক্তি ও আইন বিবৃতি হইলে সেই আজ্ঞা রহিত করিতে পারিবেন, কিন্তু তাঁহারা স্বয়ং মাজিস্ট্রেট ও কালেক্টরদিগের পদ পাইতে পারিবেন না, ইহা সামান্য বিষয়কর যুক্তিবিরুদ্ধ ব্যাপার নহে।

ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট বারবার বলিয়া

আসিতেছেন উপযুক্ত হইলে তাঁহারা নিরপেক্ষ হইয়া প্রতিদ্বন্দ্বিতা ও বর্ণভেদ না করিয়া সকলকে তুল্যরূপে রাজপদে প্রতিষ্ঠিত করিবেন। ইংলিশের স্বয়ং নিজ ঘোষণা মতে শপথ পূর্বক এ বিষয়ের অধীকার করা হইয়াছে। কিন্তু কার্যকালে এ প্রতিজ্ঞাত বাক্য প্রতিপালিত হইতেছে না, কারণ কি? ইংলিশের ও ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্টের কি আমাদেরিগের প্রতি স্নেহ নাই? তাঁহারা কি অস্তরের সহিত আমাদেরিগের উন্নতি সাধন চেষ্টা করেন না? এদেশে জন্মগ্রহণ এমন কেন ব্যক্তি আছেন যে এ বিষয়ে সন্দেহ করিবেন? তবে যে আমরা মাজিস্ট্রেট, কালেক্টর প্রভৃতির পদ পাইতেছি না, তাহার একটি বিশিষ্ট কারণ আছে। ইংলিশ সিভিল সার্ভিসের পরীক্ষা গ্রহণ রীতিই সেই কারণ। এই রীতি আমাদেরিগের অতীত লাভ পথের কণ্টকস্বরূপ হইয়াছে। উহা পরিবর্তিত হইয়া ভারতবর্ষে পরীক্ষা গ্রহণ প্রথা প্রবর্তিত হয়, এই প্রার্থনায় এদেশীয়েরা বারবার ভারতবর্ষে চীৎকার করিয়া পরিশেষে প্রান্ত হইয়া পড়িয়াছেন। কর্তৃপক্ষ অচলবৎ অচলিতচিত্ত রহিয়াছেন, এ বিষয়ের কোন সন্ধান করিলেন না। এদেশীয়েরা কি অসম্মত প্রার্থনা করিতেছেন? পরীক্ষা যে স্থানে হউক না কেন, যে ব্যক্তি আপনার ক্ষমতা প্রদর্শন করিয়া পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইতে পারিবেন, তিনিই পদ হইবেন, এই নিয়মই ন্যায্যনুগত হইতেছে, নতুবা পরীক্ষা স্থান ভেদ করিয়া অকারণে এদেশীয়দিগের উন্নতি প্রতিবন্ধকতাচরণ হইয়া হইতেছে না। কেহ কেহ বলেন, এদেশীয়েরা কুপমগুরু স্বরূপ, স্বদেশ পরিত্যাগ করিয়া দেশান্তরে পদক্ষেপ করিতে হইলে ইহাদিগের প্রাণান্ত বোধ হয়, ইংলিশ সিভিল সার্ভিসের পরীক্ষায় নিয়ম হওয়াতে ইহাদিগকে অগত্যা ভিন্নদেশে গমন ও ওস্তদেশ দর্শন করিতে হইবে।

ইংলিশ ও কুপ প্রভৃতি দর্শন করা যে অবশ্য কর্তব্য তাহা আমরা অধীকার করি না, তদ্ব্যতিরেকে এদেশীয়দিগের বহুজ্ঞতা লাভ ও সাহসাদি গুণের বৃদ্ধি হওয়া সম্ভবিত নয়। কিন্তু এই কাণ্ড প্রদর্শন করিয়া যে এদেশে পরীক্ষা গ্রহণ বন্ধ করা আমাদেরিগের মতে কোন ক্রমেই যুক্তিসঙ্গত বলিয়া প্রতীতমান হইতেছে না। এদেশীয়দিগের ইংলিশ গমনের অনেক গুলি মহান প্রতিবন্ধক আছে, সিভিল সার্ভিস পরীক্ষা দানের লোভ তদতিরিক্তে সমর্থ নহে। তাহা হইলে এতদিন অনেক ইংলিশ গিয়া পরীক্ষা দিয়া আসিতেছেন। সে প্রতিবন্ধক গুলি অন্য অন্য কারণ যোগে কোন ক্রমে অন্তরিত হইবে। যাহা হউক, যদি রূপকবেরা একান্তই নিষ্ঠুর মধুর ও অগুণীর যুক্তির অনুসারী বোধ করিয়া আমাদেরিগের অবলম্বিত মত পরিভাগ না করেন, অর্থাৎ এই কপ করুন।

সিভিল সার্ভিস পরীক্ষার উপযোগী যে যে পুস্তক ও ভাষার পাঠ্যাবশ্যক এ দেশেই তদ্ব্যয়ন নিয়ম হউক। পরীক্ষার্থীরা পাঠ সাধ হইলে ইংলিশ গিয়া পরীক্ষা দিয়া আসিবেন। ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট এতদর্থ একটি বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা করুন। বিদ্যালয়ে সিভিল ও বারিক্টর পদ লাভের উপযোগী বিষয় সকল অধীক হইবে। এখানে পাঠকগণ জিজ্ঞাসা করিতে পারেন, একপ করি। বিশিষ্ট ইচ্ছা লাভের সম্ভাবনা কি? দুটা লাভ আছে। এক, যেসকল ব্যক্তির ইংলিশ গমনের অন্য কোন প্রতিবন্ধক নাই, কেবল একমাত্র প্রতিবন্ধক এই যে তাঁহারা ইংলিশ দীর্ঘ কাল বাস করিয়া আবশ্যক ব্যয় নির্বাহ পূর্বক অধ্যয়ন করিয়া সম্পন্ন করিতে পারেন না, তাঁহাদিগের পক্ষে সুবিধা হইবে। দ্বিতীয়, এই বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিয়া যাঁহারা ইংলিশে যাইতে ও অসমর্থ হইবেন তাঁহাদিগের সুশিক্ষানিবন্ধ ও গুরুতব

ক'ব্য নির্বাচনের ক্ষমতা অধিক; তাহা হইলে
গের দ্বারা ক'ব্য নির্বাচনের ক্ষমতা-পূর্ণমণ্ডলের
প্রধান প্রধান ক'ব্য নির্বাচিত হইতে পারি-
বে। এদেশে ক'ব্য নির্বাচন বিদ্যা-র একটি
ক'ব্যে মেলি সন্নিবিষ্ট বার সংগ্রহ যে
মন আবশ্যিক ভেদন প'রগণে নিবিল
সংক্রান্ত বার সংগ্রহের সত্যতা। এই
বিদ্যালয়ের ক'ব্যবিদ্যা হইবে। ক'ব্য ক'ম
হইলে অধিক বেতন দি'ন হইবে। এদেশে
সিবিল স'র্ভী আনিতে হইবে না।

আমেরিকার যুদ্ধের কথা
ক'ব্য কি ?

আমেরিকার যুদ্ধের কথা-যুদ্ধের যুদ্ধ
ক'ব্য কি ? ইহার নির্ণয় করিতে হইলে
অত্র একটি প্রশ্নের সীমা হইবে। আবশ্যিক।
উহার সহিত তত্ত্ব জাতীয় সম্মান, বাণি-
জ্য জীবিত এবং মানব মণ্ডলীর মুখ অনুভূত
রহিয়াছে। তাহা এই—আমেরিকার ক্রীত
দাসত্ব অব্যাহত থাকিবে কিনা? এক
ব্যক্তি অপর ব্যক্তিকে অসম্মতিতে বল পু-
রক কোন ক'ব্য করাইয়া লইতে পারেন
না, এই যুক্তির বলবত্তা সত্যজাতিমা-
ত্রেই সীকার করিয়া থাকেন। ইচ্ছাতে হ-
উক আর লজ্জায় পড়িয়া হউক, ইউরোপ
খণ্ডের যাবতীয় এসেণ ক্রীতদাস রাধি-
ব'র এখা ভাগ করিয়াছেন। কিন্তু বিশ্ব-
য়ের বিষয় এই, উল্লিখিত উল্লিখিত নিয়মা-
নুসারিণী বিশুদ্ধ যুক্তি অত্র জাহালামান
কি'তেও আমেরিকার দক্ষিণ বিভাগে
কোন যে এই জঘন্য এখা অবস্থিত রহি-
য়াছে এমন নহে, তথায় এই এখাটি যাব-
তীয় যুদ্ধের যুদ্ধ ও জীবনের নিয়মানুগত ব-
লিয়া প্রতিপন্ন হইয়া থাকে। সত্য বটে আ-
মিয়ার কোন কোন স্থানে ক্রীত দাস এখা
দৃষ্টিগোচর হয়, কিন্তু তাহা দিগের অবস্থার
সহিত কারোলালির ক'ব্য দাসদিগের অ-
বস্থার ভুলনা করিলে সমুদ্র ও গোপনে
যত প্রত্যেক, তত প্রত্যেক বোধ হয়। পার-

স্য, চীন, ও উরুগুয়েসীয় ওকুয়া দাস
হাজি, দিগকে পরিজন বলিয়া গণনা ও
জান করেন, তাহাদিগের সত্যনাথি হইলে
তাহারা অনেক স্থলে বাধীনতা প্রাপ্ত হয়,
এবং ওকুয়া উরুগুয়েসে কোন দাসীর গর্ভে
সন্তান জন্মিলে সে সন্তান আরজ হইয়াও
সম্পত্তির অধিকারী হইয়া থাকে। এই সক-
ল স্থানে দাসদিগের কিছু কিছু স্বাধীনতা ও
অধিকার আছে, ওকুয়াও তাহাদিগকে
সহজে তাহা হইতে বঞ্চিত করেন না।
কিন্তু আমেরিকার দাসদিগের তাহার কি
ছুই নাই। তাহাদিগকে গোমেসমহিষের
তুল্য জান করা হয়, অতি সামান্য সোনে
তাহাদিগের প্রাণ দণ্ডও হইয়া থাকে।
তত্ত্ব দাস ঘটিত আইনের বিষয় কে না
অবগত আছেন? অধিকতর আশ্চর্যের
বিষয় এই, তত্ত্ব পাদ্রিসদিগের অনেকেও
এই জঘন্য এখাকে বাইবেলের অনুমোদিত
বলিয়া প্রতিপন্ন করিয়া থাকেন। আমে-
রিকার দক্ষিণদেশ কি সত্যতম প্রদেশ
মধ্যে পরিগণিত নহে?

একদম এই প্রশ্নের আর একটি প্রশ্ন উপ-
স্থিত হইতেছে। উত্তরাংশের সত্যপতি লিঙ্ক-
লন কি উদ্দেশ্যে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়াছেন,
আমেরিকার দ্রুত জীবিত দর্শনে যাঁহারা
কাতর, তাঁহারা লিঙ্কলনের নিকট প্রস্থির
চরিতার্থতাকেই যুদ্ধ প্রবৃত্তির কারণ বলিয়া
নির্দেশ করিয়া থাকেন। তাঁহারা বলেন লি-
ঙ্কলন রাজ্য লোভে অন্ধ হইয়া এই অকা-
ব্য করিতেছেন। কিন্তু বস্তবিক তাহা
নহে। দাসত্ব প্রথার হত করিবার চেষ্টাই
উহার মূল। উত্তর বিভাগের লোকেরা
বরাবর দাসত্বের প্রতি ঘৃণা ও উহার প্রতি
বন্ধুত্ব করিয়া আসিতেছেন। কিন্তু এক
দিন মহা সত্য দক্ষিণ বিভাগের প্রতিনি-
ধি গণের অধিক ক্ষমতা থাকিতে তাঁহারা
এই জঘন্য প্রথার উন্মূলনে সমর্থ হন নাই।
একদম লিঙ্কলন সত্যপতি হওয়াতে তাঁহা
দিগের প্রাধান্য হইয়াছে। দক্ষিণ খণ্ড

অধিকতর দাসত্বের বিরুদ্ধে সত্যপতি করিয়া
বিত্তোহে প্রবৃত্ত হইয়াছেন।

অন্য একদম প্রবৃত্তিকরণের কারণ
এই, আমরা শুনিয়া আসিয়াছি হইলাম,
সম্প্রতি মাট্রে টরের প্রধান প্রধান দৈ-
কেরা অমরীবিদগণের সহিত একত্র হইয়া
এক সভা করিয়া সভাপতি লিঙ্কলনকে
এক অভিনন্দন পত্র প্রদান করিয়াছেন।
জন, কুয়ার্ট মিল সাহেব প্রভৃতি কয়েক
জন হিটলার ব্যক্তিগণ যেরূপ এই সভা হয়,
সত্যো বিদ্রোহিগণের কাব্যের এক্তি-
বাদ ও লিঙ্কলনের সপক্ষতা করিয়াছেন।
তাঁহারা সত্যপতিমা-
“ দাসত্ব উঠাইবার চেষ্টাই বিদ্রোহের
করণ। ” সভাপতি আমেরিকার সত্যপতি
অংশ একত্র করিয়া র. বিদ্রোহ জন্ম
করিতেছেন, রাজ্য লোভের জন্য যুদ্ধ
দাসত্ব উঠাইয়া দেওয়া অতি ক'ব্য, সভা
পতি লিঙ্কলন এ চেষ্টা করিয়া পুণ্ডির
ধন্যবাদের পাত্র হইয়াছেন। ইংলণ্ড বা-
সিদিগের অনেকে দাসাধিকারিদিগের
প্রতি যে সমরুধ্বংস প্রদর্শন করেন
তিনিমিত্ত সভা আক্ষেপ করিয়াছেন। প-
রিণামে সত্যো, সভাপতি শীঘ্র বিদ্রোহি-
দিগকে পরাজয় করিতে সমর্থ হন, এইরূপ
অভিলাষ প্রকাশ করিলেন। এখানে আর
একটি বিষয়ের উল্লেখ করা ক'ব্য, নিউ
ইর্ক প্রভৃতি উত্তর বিভাগের নগর সমুদ্রে
লাঙ্কসায়ারের কুর্কি বিপ্লবের ব্যক্তি-
দিগের সহায়তা জন্য বিদ্রোহী সঙ্ঘ-
বিত্ত হইয়াছে কিন্তু দক্ষিণ বিভাগে এক
পয়সাও হয় নাই। সভা এ বিষয়টি ক'ব্য
জ্ঞান সহকারে স্বীকার করিলেন।

আমেরিকার যুদ্ধ সম্পর্কে ইংলণ্ডে একটি
আশ্চর্য ব্যবহার নয়ন গোচর হইতেছে।
বিদ্রোহ লোকেরা উত্তর বিভাগের সত্যপতি
ক'ব্য, কিন্তু সংবাদ পত্র মাট্রে বিদ্রোহি-
দিগের সহায়তা করেন। অপর ইংলণ্ডী-
র সাধারণ লোকে দাসত্বের প্রতি ঘৃণা প্র-

কাশ করিয়া থাকেন। এখন কি আর সন্ধ্যা দকেরা মাঝেটের লোকদিগের এই অংশসমীয়া কার্য করুন করিয়া সৎপক্ষের সপক্ষতা করিবেন না? আমরা আর এক টি বিষয়ে অধিকতর বিশ্বাসপন্ন হইয়াছি, এখানে তাহার উল্লেখ না করিয়া মৌনাবলম্বন বিধেয় হইতেছে না। আমেরিকার গৃহযুদ্ধ উপস্থিত হওয়াতে যে স্থানের লোকেরা রেশ সাগরে নিমগ্ন হইয়া ও লিঙ্কলনের সপক্ষতা প্রস্তাব করিয়া আপনাদিগের অননুকরণীয় উদ্যোগ প্রদর্শন করিতেছেন, সেই স্থানের লোকেরাই আবার তরতর্বে রেষ্ট্রাভিল বিধিবদ্ধ করিবার চেষ্টা পাইয়া কুবকদিগকে নীলকর ও তুলকরের দাস করিয়া দিবার চেষ্টা পাইতেছেন! আমরা স্পষ্ট বুঝিতে পারিতেছি, এবিষয়ে চৌকিদারদিগের দোষ নাই, তার তবর্ষের সবিবেশ বৃত্তান্ত জানা না থাকাতাই তাহারা চৌকিদার লোকদিগের কুহকে পড়িয়া একপ করিতেছেন।

পুলিস চৌকিদারদিগের
অত্যাচার।

২৪ পরগণার অন্তঃপাতি রাজপুরের উক্তবাংশে “বসু পুকুর” নামে একটা প্রসিদ্ধ পুকুরিণী আছে। তাহার দক্ষিণ তীরে এক পঞ্চানন ঠাকুরের স্থান আছে। শক্তি ও মঙ্গলবারে তথায় তাহার পূজার সমারোহ ও হাগ বলি হইয়া থাকে। গ্রামের অসংখ্যক বৃদ্ধেরাই প্রায় সেই বলীকৃত হাগ বলপূর্বক লইয়া গিয়া প্রীতি ভোজন করে। হাগ ছিনিয়া লইবার সময়ে কখন কখন মেসাকেশি, মুঠা মুঠি ও বগুদা হইয়া থাকে। গত পূর্ণ শনিবার পাঁচা লইয়া এই কপ কাড়াকাড়ি হয়। কিন্তু এবারে একটা মহান কৌতুক বিস্ময় ও অত্যাচার করব্যাপার ঘটিয়াছে। পাঠকগণ দেখিয়া, শুনিয়া ও ভুক্তভোগী হইয়া জানিতে পারিয়াছেন সন্দেহ নাই,

বাংলাদেশের অনেক স্থানে মৃতদেহ পুলিশ চৌকিদার সৈন্য হইয়াছে। রাজপুর এ সৌভাগ্যে বঞ্চিত হন নাই। গত মঙ্গলবার সেই চৌকিদারমহারথিদিগের হউক, আর তাহাদিগের নিয়োজিতা মহারথি হউক, হাগ মাংসে লোভ দৃষ্টি পণ্ডিত হয়। সুতরাং কয়েক জন চৌকিদার সুসজ্জ হইয়া পূজা স্থানে উপস্থিত হয়। পূজার শেষ না হইতে হইতে পাঁচা কাড়াকাড়ি আরম্ভ হইল। এক দিকে চৌকিদার দল আর দিকে গ্রামের কয়েক জন উদ্ধত স্বভাব যুবক। কিয়ৎকণ পরেই হস্তাহতি আরম্ভ হইল। গ্রামের যুবকদিগের মনে মনে অস্বস্তি এই, আমরা বরাবর হাগল ছিনিয়া লইয়া থাকি, আজি চৌকিদার লইয়া যাইবে ইহা ত হইতে পারে না। পক্ষান্তরে চৌকিদারেরা ভাবিল, আমরা একে পুলিশের লোক, গ্রামের হর্তা কর্তা বিধাতা, তাহাতে আবার মৃতদেহ কমতা পাইয়াছি, আমাদিগের হস্ত হইতে যদি অন্যে পাঁচা ছিনিয়া লয়, আমাদিগের জীবনে ও পুত্র প্রয়োজন কি? এই কপে উত্তর দল মঙ্গল ও বন্ধপত্রিকর হইয়া সময়ে প্রবৃত্ত হইলেন। ঈদৃশ সময়ে বেকপ কল লাভ হয়, উত্তর দলই পর্যাপ্ত পরিমাণে তাহা লাভ করিলেন। তবে চৌকিদারেরা দলে কিছু পাতলা ছিল, সুতরাং তাহাদিগের তৎকালে কিছু কলাধিকা হইল। কিন্তু পক্ষান্তর তাহারা সে ক্ষতি কতক অংশে পূরণ করিয়া লইয়াছিল। পক্ষান্তর তাহারা বিপদ বলের যে দুই এক ব্যক্তিকে দল ভ্রষ্ট ও পৃথক দেখিতে পার, তাহাদিগের উপরে আশা পূর্ণ করিয়া বৈর নির্ভাতন করে।

এবিষয়ের ত এই পর্যন্ত গেল, পাঠকগণ অপর বৃত্তান্ত শ্রবণ করুন। চৌকিদারেরা এদিকে এই কাণ্ড করিয়া গিয়া বকুলপুরের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেটের দফতরে অভিযোগ করিল। ডেপুটি সাহেব সন্ধ্যা

জমিনে তদারক করিয়া আসামীদিগকে প্রেস্তার করিবার পরগণা দিলেন। চৌকিদারেরা এককালে সিংহপ্রতাপ হইয়া উঠিল। এই সময়ের অস্বস্তিকর কাণ্ডের কথা শুনিতে পাঠকগণ এককালে বিস্ময় পন্ন হইবেন। চৌকিদারেরা কেবল যে বৈরনির্বাতনাবী হইয়া আসামীর অধেষণে প্রবৃত্ত হইল একপ নহে, তাহাদিগের উপাধি সন্ধ্যাও বলবতী হইয়া উঠিল। জোমরা আসামী লুকাইয়া রাখিয়াছ বলিয়া হল করিয়া তত্রলোকের অন্তঃপুর মধ্যে প্রবেশ করিয়া নানা প্রকার উপজব করিল, ত্রীলোকেরা মাননাশের ভয়ে মহাভীত হইলেন; অন্তঃপুর মধ্যে কুহল গোলযোগ উপস্থিত হইল; কেবল এই মাত্র নয়, এই দুইয়েরা অসংখ্য প্রেস্তার চৌকিদার নির্দোষ ব্যক্তিদিগকে ধরিয়া টানাটানি করিতে লাগিল। আজিও পল্লীগ্রামের বেকপ অবস্থা আছে, পল্লীগ্রামবাসিরাই তাহা ভয় বুঝিতে পারেন। এই টানাটানিতে নিরীহ ভীত-স্বভাব গ্রাম্য লোকেরা সশীত হইয়া কিছু কিছু দিয়া পাপ বিদায় করিতে লাগিলেন।

এক্ষণে আমাদিগের জিজ্ঞাস্য এই, চৌকিদারেরা শান্তি সংস্থাপনার্থ নিদোষিত হইয়াছে, তাহারা পাঁচা কাড়াকাড়ি করিতে গিয়া শান্তি ভয়ে প্রবৃত্ত হইল কেন? যদি বল তাহারা দাঙ্গা করিতে যায় নাই, দাঙ্গা নিবারণ করিতে গিয়াছিল (আমরা ভাল লোকের মুখে শুনিয়াছি, বাস্তবিক তাহা নহে) তাহা হইলেও তাহাদিগের দাঙ্গার লিঙ্গ হইয়া বিধেয় হয় নাই। যখন তাহারা দেখিল, দাঙ্গা নিবারণ করিতে পারিতেছে না, তখন তাহাদিগের ধানায় সম্মান দেওয়া উচিত ছিল, তাহারা তাহা করিল না কেন? তাহারা কোন্ আইন অনুসারে এই কপ মকদ্দমার আসামীকে প্রেস্তার করিবার নিমিত্ত সহস্র অন্তঃপুর মধ্যে গমন করিল? সহস্র প্রী

লোকের বাসস্থানে প্রবেশ করা সকল জাতির নিষিদ্ধ, তাহার। সেই সাধারণ নিষেধের উল্লেখ করিয়া তত্ত্বলোকদিগের অসমান্য করিল কেন? কোন্ আইনে স্তু যুক্তিতে তাগদিগকে আসামী প্রমাণ হইল করিয়া অর্থ সংগ্রহ করিতে কহিয়াছে? আমরা এবারে ডেপুটি মাজিস্ট্রেটের নিকটে এই প্রশ্ন গুলি করিয়া ফাস্ত হইলাম, আমরা পুনরায় এবিষয়ে হস্তক্ষেপ করিব।

সূচন গ্রন্থ।

আমরা হস্তক্ষেপ লব্ধকরে স্বীকার করি। তেহি, সংস্কৃত কালেকের অধ্যক্ষ ই. বি. কাউন্সিল সাহেব বেখুম সোসাইটির ইতিহাসের প্রাথমিক সংস্থাপন ও তারতম্যবাসী ব্যবসায়ের তৎপারের আবশ্যকতা ৩ বিবরণকে উপদেশ দেন, তাহা হুদ পুস্তকাকারে মুদ্রিত হইয়া সম্প্রতি প্রচারিত হইয়াছে, আমরা উভয় এক এক প্রাণ হইয়াছি। কাউন্সিল সাহেব এক জন বিখ্যাত পণ্ডিত ও ইতিহাসজ্ঞ, যে বিষয়ের প্রসঙ্গ করা বাইতেছে তাহাতে গ্রন্থকারের অন্য গুণের পরিচয় দিবার অগ্রে ইতিহাস বিষয়ে পাণ্ডিত্যের পরিচয় প্রদানই সর্বপ্রথম আবশ্যিক। অনেকে ইতিহাস বিষয়ে দ্বিতীয় আরম্ভ বলিয়া তাঁহার গুণ ব্যাখ্যা করিয়া থাকেন, এই সংক্ষিপ্ত পরিচয় দ্বারা পাঠকগণ পরিভূত হইবেন। অত্যা আমরা যে পুস্তকের প্রসঙ্গ করিতেছি, তাহা অবশ্যে কুদ বটে কিন্তু গুণে কুদ নহে। পাঠকগণ ইহা সন্তোষ পাইলে এক ঘটাকাল পরম সন্তোষ অতিবাহিত করিতে পারিবেন সন্দেহ নাই।

প্রস্তাবিত গ্রন্থকার বলেন, গ্রীস দেশীয় হিরোডোটস ইতিহাসের জন্মদাতা। তাঁহার পূর্বে শোকে কেবল কবিদিগের কল্পিত বর্ণনাতেই সন্তুষ্ট হইতেন। বর্ণনা প্রস্তাবের অগ্রসরানে প্রবৃত্ত হইতেন না। ভূতপূর্ব বংশীয়েরা কি করিয়াছেন, তাহাদিগের ক্রিয়াকর্ম, কাণ্ড ও শাসন প্রণালী কিরূপ ছিল, তাহাদিগের চরিত্র চর্চন করিয়া কিরূপ নীতি শিক্ষা করিতে হইবে, এবং কোন্ গর্হিত

ব্যাপার হইতেই বা বিরত থাকিতে হইবে, হিরোডোটসের পূর্বের লোকেরা এসকল বিবেচনা করিতেন না। তেবতাদিগের প্রাণ ও কলহ প্রভৃতি অনৈসর্গিক বর্ণনাই কেবল তাহাদিগের সত্যিকার জীবিতকর হইত। হিরোডোটস হুর্টের পূর্ব ৪৮৪ অব্দে জন্ম গ্রহণ করেন। তাঁহার সময় অবধি বর্ণনা ইতিহাস আরম্ভ হয়। তিনি ইতিহাস নামে অমূল্য জ্ঞান অর্থ বুদ্ধি লাভ। কাউন্সিল সাহেব সেই অর্থই অনুমোদন করিয়াছেন। বস্তুতঃ অতি দূর অতীত কালের ঘটনার বর্ণনা রচনা জানিতে হইলে অসংখ্য অধ্যবসায় ও অনিবার্য অমূল্য জ্ঞান আবশ্যিক হয়। কিন্তু ইদানীন্তন কালে ইতিহাস শব্দের উদার ও গভীরতর অর্থ হইয়াছে। ভারতীয়রা ইহাকে চরিত্র বর্ণন মর্শন শাস্ত্র বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। বহু বীর নেপোলিয়ন সেট সেনেনার কারাগৃহে হুজুর অব্যবহিত পূর্বে সশোক অহকার পূর্বক ভারতীয় বলিয়াছিলেন, “তবিত্য-বংশীয়েরা আমার দিম্বের বর্ণনা বিচার করিবেন।” সন্ন্যাসী জনমকালের লোকদিগকে অনাদর করিয়া তবিত্য বংশীয়দিগকে আপনার আশাবলি করেন। তিনি নিজে এক জন প্রগাঢ় ইতিহাস পাঠক ও ইতিহাসবেত্তা ছিলেন। তাঁহার মতে ইতিহাস তবিত্য-বংশীয়দিগের বিচার বলিয়া নির্দিষ্ট হইতেছে। অনন্তর বংশীয়েরা কি উপায় অবলম্বন করিয়া সেই বিচার করিবেন, এক্ষণে এই প্রশ্ন উপস্থিত হইতেছে। কাউন্সিল সাহেব তন্নিমিত্ত জনমকালের ইতিহাস, জীবনচরিত্র প্রভৃতি তর তর করিয়া পাঠ করিতে অনুরোধ করিয়াছেন। অল্প বুদ্ধি পাঠকেরা কেবল ঘটনাব বর্ণনা পূর্ণ ইতিহাস পাঠ করিতেই সমাপ্তি ব্যগ্র হন পক্ষান্তরে বুদ্ধিমানেরা সন্মুখে সমুদয় সামান্য বর্ণনা পাঠে বিরত হন। কিন্তু এটি উত্তরেরই প্রশ্ন। কাউন্সিল সাহেব যিনিবনের চরিত্র প্রচর্চন করিয়া বলিয়াছেন, যথাকালে (মিডল এজে) প্রেরণি নামক এক জন উদাসীন যে এক ইতিহাস লেখেন, তাহা ইংলণ্ডের প্রথম ইতিহাসবেত্তা মীরস বলিয়া নির্দেশ করেন, অষ্টকালের বিখ্যাত ইতিহাসবেত্তা মন্সন গুজো তাহা হইতে অনেকবিধ সূতন আবিষ্কার করিয়াছেন। বি

শপ পরকুরাল ও গ্রোট সাহেবের হুদ গ্রীসের ইতিহাস গাচড়র অনুসন্ধান দ্বিয়ার একটি উৎকৃষ্ট চরিত্র। তাহার পূর্বে লোকের এই সংস্কার ছিল, উক্ত দেশের ইতিহাস হুদ শুধু ইইয়া গিয়াছে। তাহার আর কিছু ইচ্ছা না বিস্তার করিবার নাই। কিন্তু গ্রীক বুদ্ধি ব্যক্তিরা প্রগাঢ়তর অনুসন্ধান দ্বারা বহু ব্যক্তি তে পারেন, পরলাওরাল ও গ্রোটের পূর্বই তাহা সংগ্রহ করিয়া দিতেছে।

হিরোডোটস ইতিহাস লিখিয়া পক্ষ প্রবর্তন করিয়া গেলে পর ইউরোপে প্রকাশিত অনেকসংখ্য ইতিহাসবেত্তা আবিষ্কার হন। গ্রীসের জেনোকল, থিউসিডাইডিস, পলি বিয়স এবং রোমের লাসার্ট, লিবি টাসিটাস প্রভৃতি ব্যক্তিরা ইতিহাস প্রণয়ন করেন। রোমরাজ্য অসত্যদিগের দ্বারা পীড়িত হইলেও ইতিহাসের গৌরব তিরোহিত হয় নাই। তৎকালে বিদ্যার প্রাণ বিহীন প্রাক হইয়াছিল বটে, কিন্তু অনেক উদাসীন ও পরদরি প্রভৃতি নিজ নিজ কালের বর্ণনা রচনা লিখিয়া রাখিতে উদাসীন ছিলেন না। কাউন্সিল সাহেবের আশঙ্কিত “প্রতীক (মুদ্রা) প্রতীককরিগের ইতিহাস প্রাচীন নথ্যে লিখিয়াছেন বর্তমান সভ্যতা বিজ্ঞান বর্ণন দ্বিারে জন গ্রহণ করেন। প্রতীককে পূর্ব তন ইতিহাস ও কাব্য প্রভৃতি বর্ন করিয়া না খিলে এবং তৎকালের ইতিহাস না লিখিলে ইদানীন্তন কালের পণ্ডিতেরা পূর্বকালের ঘটনার প্রমাণ পাইতেন না। বস্তু সময় অতীত হইতে লাগিল, ততই ইতিহাসের গৌরব হ্রাস হইতে লাগিল। এই উপায় দ্বারা তবিত্য বংশীয়েরা আমাদের কণ্ড দর্শন করিয়া আশ্চর্য প্রকাশ করিবেন।

ইউরোপে বস্তু ঘটনা ঘটনা হুদ তৎপ্রাণ করাসী বিলবের বস্তু ইতিহাস ও জীবনচরিত্র প্রভৃতি পাওয়া যায় অন্য কোন কালেও এত পাওয়া যায় না। এসময়ে সমুদায় পৃথিবী যেন উৎসাহ পূর্ণ সূতন জীবন প্রাণ হইয়াছিল। করাসী আশি সাধারণ কণ্ড রাজার মস্তক হুদন ইউরোপের বস্তু যুগ, নেপোলিয়নের সময়কাল রক্তভূমিতে আগমন, তাঁহার অতুতপূর্ব চরিত্র বহিত বিগ্রহ, অর, ব্যবস্থা প্রাণ যন প্রভৃতি গুরুতর কাণ্ড। অতি অল্প কা

রূপ নথ্যে হইয়া গিয়াছে। এই সময়ে অনেক নথ্যে আপন আপন জীবনচরিত লিখিয়া রাখা হইয়াছে। নেপোলিয়নের বিপত্তি ঘটনার যে ত্রিশ বৎসর অতিবাহিত হয়, তাল ইতিহাস ও জীবনচরিতের কাল বলিল অত্যুক্তি হয় না।

এই কণ ইউরোপে ক্রমশঃ ইতিহাসের প্রসিদ্ধি হয়। কিন্তু যখন আমরা ভারতবর্ষের লোক দৃষ্টিগোচর করি, তৎকালে সূদূর অন্ধ সন্ধ্যা দৃষ্টিগোচর হয়। কাউএল সাহেব এখানে অতিশয় আক্ষেপ করিয়াছেন। সত্য নটে সকল দেশের প্রধানকার ইতিহাস গল্প পরিপূর্ণ, কিন্তু অন্য দেশে ক্রমে বর্ধিত ইতিহাসের প্রাক্কর্ষ হইয়াছে। কিন্তু ভারতবর্ষে তাহার বিপরীত ঘটনা হইয়াছে। কবি-

এই প্রথমে যে উপাখ্যান রচনা করেন, তাহাও তাহা অপরিবর্তিত রহিয়াছে। পূর্বাণ প্রসিদ্ধি অল্প কালমধ্যে ও অল্পকাল মধ্যেই পূর্ণ। তাহা হইতে বর্ধিত ইতিহাসের আশিষ্কার সভাবনা অতি অল্প। কাউএল সাহেব এখানে হতাশ হইয়াছেন। তাহার হতাশ হওয়া অসঙ্গত নয় বটে কিন্তু আমরা একমতে ভ্রমোৎসাহ হইতেছি না। ভারতবর্ষের সর্ব স্থানে জন্ম করিয়া গাঢ় অশ্রুসঞ্চার করিতে অনেক যুতন বিষয়ের আশিষ্কার সম্ভাবনা আছে। মুসলমানেরা এদেশে অতিশয় পব বর্ধিত ইতিহাস আরম্ভ হয়। তৎপরে ফেরত, আবুল ফজল প্রভৃতি কয়েক গ্রন্থ করেন। তাঁহাদের গ্রন্থ পাঠ করিলে অনেক কাস্ট্রিক রক্ত জাতিতে পারা যায়। কাউএল সাহেব প্রস্তাব করিয়াছেন এই সকল ইতিহাস মুদ্রিত করিয়া ও ইউরোপ হইতে বর্তমান ইতিহাস আনয়ন করিয়া এদেশে একটি পুস্তকালয় করা কর্তব্য। এপ্রস্তাবটি উৎকৃষ্ট সন্দেহ নাই। ঐতিহাসিক নীতিটি মুসলমান ইতিহাস সকল অভাব সন্নিবেশে আরম্ভ করিয়াছেন। বর্তমান সম্পূর্ণ ইতিহাস এতদেশীয় ধর্মী লোক ও গণের উচিত উপায় নির্ভর করিতেছে।

আমরা কাউএল সাহেবের বাবো সম্পূর্ণ অনুমোদন করিয়া এদেশীয় কৃষিকিত্তি ও শ্রমকে বিশেষরূপে অনুপ্রাণিত করিতেছি।

যে তাঁহারা ইতিহাস পাঠ ও তাহার রচনা বিষয়ে বিশেষ মনোযোগ করিয়া আমাদের দেশের একটি অত্যন্ত দুরূহ করেন। এদেশের একজন গ্রন্থকার এই নীতি আক্ষেপ করিয়াছেন যে “অসম্ভবীয় প্রধান পণ্ডিতেরা সকল শাস্ত্রের আশেপাশে কবিয়াছিলেন কিন্তু ইতিহাসের প্রতি দৃষ্টিগোচর করেন নাই। সংস্কৃত ভাষায় এই একটি মাত্র বিষয়ের অত্যন্ত আক্ষেপ। এক্ষণে সেই কর্ম আমাদের উপরে পড়িয়াছে।” বাজালী ভাষায় অনেক ইতিহাস হইয়াছে বটে, কিন্তু তাহার অধিকাংশ ইংরাজীর অনুবাদ মাত্র। মূল গ্রন্থের রচনা প্রাচীন। অগ্নিতে ইতিহাসের উন্নতি হওয়া সম্ভবিত নয়।

প্রাপ্ত।

বর্ধমান কলকাতার ও বনোয়ার

গুরু টে নিউ স্কুল।

সোমপ্রকাশ পাঠক বর্গ অবগত আছেন যে আমাদের ভূতপূর্ব লেফটেনেন্ট গবর্নর বা হায়ার দেশীয় ভাষার উন্নতির নিমিত্ত ১৮৮২ ও ৬৩ সালে ৩০ হাজার টাকা প্রদান করিয়া যান। সেই টাকা কিরূপে ব্যয় হইয়া সাধারণের শিক্ষা দিবে এই চিন্তার ডাইরেক্টর, ইন্সপেক্টর প্রভৃতি মহোদয়েরা বহুদিন চিন্তাকুল ছিলেন। ক্রমে ক্রমে উভার ২১১ ক প্রণালী উদ্ভাবিত ও হইয়াছিল কিন্তু কার্যকালে তাহা কলোপাতিত হইল না দেখিয়া এক্ষণে পরিত্যক্ত হইয়াছে।

গত জুন মাসে ত্রিযুক্ত উড়ে সাহেব বিলাত গমন করিলে বাজালীর সক্ষিপ পশ্চিম বিভাগের যুতন ইন্সপেক্টর ত্রিযুক্ত জে জি মেডলিকট সাহেব প্রতিনিধি রূপে উড়ে সাহেবের কার্য ভারগ্রহণ করেন এবং ত্রিযুক্ত বাবু ভূদেব মুখোপাধ্যায় মহাশয় তাঁহার সেই কার্যের সহকারিতায় নিযুক্ত হইলেন। উক্ত দুই মহোদয় প্রথমদিকই পুরী নিমিত্ত ৩০ হাজার টাকা কি প্রাকারে ব্যয় করিয়া যুক্ত রূপে বিনিয়োগিত হইবে উদ্ভাষ্য নিময় হইলেন। ভূদেব বাবু প্রায় ১০ বৎসর কাল শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যে নিযুক্ত আছেন, বিশেষতঃ তিনি প্রায় ১২ বৎসর কাল কলকাতা বিদ্যালয়ে থাকিয়া বাজালী ভাষার

প্রতি দেশীয় লোকদিগের কিরূপ অজ্ঞান, কিরূপ বাজালী শিক্ষা দেশীয় লোকেরা প্রাপ্ত না করে, এক্ষণে কিরূপ শিক্ষা দেওয়া তাহা দিগকে আবশ্যিক এবং দেশের অবস্থা এবং লোকের অজ্ঞানতা অনুসারে কিরূপ প্রণালী অবলম্বন করিলে তাহা সংশোধিত হইতে পারে, তাহা অত্যন্ত অগত হইয়াছেন। তিনি বিদ্যান বুদ্ধিমান চতুর ও আমাদের দেশীয় লোক দেশীয় লোক ব্যতিরেকে ইউরোপীয়েরা কখনও এ দেশের সমস্ত অবস্থা অবগত হইয়া প্রকৃতরূপে কার্য নির্বাহ করিতে পারেন না। মেডলিকট সাহেব ইন্সপেক্টর পদ প্রাপ্তির সময়ে কিছুমাত্র বাজালী জানিতেন না এবং শিক্ষা সংক্রান্ত কার্যে ও সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ ছিলেন, এজন্য তাঁহার নিয়োগের সময়ে অনেকটা সমস্যা জন্মে নাই। কিন্তু উক্ত মহোদয় কার্যে একটা রক্ষণ প্রণীত ও বুদ্ধিমান প্রদর্শন করিতেছেন তাহাতে লোকের সে আশঙ্কা বোধ হয় অনেক অংশে অপগত হইয়াছে। ইন্সপেক্টর দিগের নানাক্রমে লোকের সজিত আলাপ পরিচয় করিতে হয় এবং নানাক্রমে লোক দিগকে অতিশয় বিনয় প্রদর্শিত করিতে হয়, সুতরাং তাঁহাদিগের অপরাধ ও গুণ-তার সহিত সে কাণ্ড একটা নিত্য অধ্যক্ষ, মেডলিকট সাহেবের এই গুণ সঙ্গী পোকা প্রণয়নীয়। যিনি একবার তাহা সংগত আলাপ করিয়াছেন তাহারই তাঁহাকে উদারায় মহান ও ইন্সপেক্টরের উপযুক্ত লোক বলিয়া, বোধ হয়, সংকল্প জন্মিয়াছে। বাবা হইক, উক্ত সাহেব মহোদয় ও ভূদেব বাবু একত্রিত হইয়া পুরীতে ৩০ হাজার টাকা ব্যয়ের যে প্রণালী উদ্ভাবন করেন এবং গবর্নর মেডলিকটের অনুমোদিত হইয়া কিয়দিন হইতে তাহার কার্য আরম্ভ হইয়াছে তাহা নিয়ে বিবৃত হইতেছে।

বর্ধমান, কলকাতার ও বনোয়ার এই তিন স্থানে এক একটি টে নিউ বিদ্যালয় স্থাপিত হইয়াছে। ২০ টাকা পাথের ব্যয় সমেত মাসিক ১০০ টাকা বেতনে তিন জন অন্য তিন জন সব ডেপুটি ইন্সপেক্টর নিযুক্ত হইয়াছেন। তাঁহারা স্ব স্ব জিলার মধ্যে গ্রামে গ্রামে পরি

ভ্রমণ করতঃ ঐশিষ্টের হাজি সংগ্রহ করিয়া দিতেছেন। হাজিগ্রহণের নিয়ম এই যে, আশর মাসে লোকেরা যেরূপ পাঠশালার গুরু মহাশয়কে অথবা যদি তিনি শিক্ষাগ্রহণের অসমর্থ হইলে তবে তাঁহার পুত্র, ভাতা বা অন্য কাহার সম্পূর্ণ লোক অথবা যে কোন ব্যক্তিকে মনোনীত করিয়া ট্রেনিং স্কুলে প্রেরণ করিবেন। কিন্তু তাহাদিগকে একপ এক অসীকার পত্রে স্বাক্ষর করিতে হইবে যে তাঁহারা যে ব্যক্তিকে মনোনীত করিয়া ট্রেনিং স্কুলে প্রেরণ করিবেন তিনি তাঁহার অধ্যয়ন করিয়া প্রাপ্যপত্র সহকারে প্রত্যগমন করিলে তাঁহারা তাহাকে পাঠশালার শিক্ষা কার্যে নিযুক্ত করিয়া তাঁহার দ্বারা পাঠশালার শিক্ষাপর্বোপী বিষয় সমস্ত সম্ভাব্য শিখা নির্বাহ করাইবেন, কোন মতে তাহার অন্যথাচরণ করিবেন না। যদি করেন তবে ঐ ব্যক্তিকে ট্রেনিং স্কুলে শিখা প্রদান করিবার নিষিদ্ধ সরকারি বাহাদুরের দ্বারা টাকা ব্যয় হইবে তাহা। অধ্যয়ন করিতে কোন মতে আপত্তি করিবেন না।

জিলার সব ডেপুটি ইনস্পেকটর ও ঐ অসীকার পত্রে এক জন সাক্ষী থাকিবেন, তাঁহার স্বাক্ষর সমেত ঐ পত্র লইয়া হাজির আদিলে ট্রেনিং প্রধান শিক্ষক তাহাদিগকে এটমপ এক অসীকার পত্রে স্বাক্ষর করাইয়া লইবেন যে তিনি যে গ্রাম হইতে মনোনীত হইয়া আসিয়াছেন এখানে অধ্যয়ন করিয়া সর্টফিকেট গ্রহণ করতঃ সেই গ্রামের পাঠশালায় যাইয়া শিক্ষকতা কার্যে গ্রহণ করিবেন এবং গবর্নমেন্ট দ্বারা দত্তি বা পুরস্কার স্বরূপ মাসিক পাঁচ টাকা তাঁহাকে প্রদান করিবেন তত দিন তিনি উক্ত কার্যে সুচারু রূপে নির্বাহ করিতে থাকিবেন।

পঞ্চমে অনেকেই শঙ্কা হইয়াছিল একপ অসীকার পত্রে গ্রামস্থ লোকেরা ও ভাণ্ডারী গুরুমহাশয়েরা কখনই স্বাক্ষর করিবেন না, কিন্তু সে শঙ্কা অনেকাংশে অলপ হইয়াছে। একপে গ্রামস্থ লোকেরা গবর্নমেন্টের এই সান্ত্বনা গ্রহণ করিতেছেন। তাঁহারা বুঝিতেছেন গবর্নমেন্ট কেবল অসুগ্রহ করিয়া তাঁহাদের সম্ভাব্যপদের শিক্ষার উৎসাহনাথনে

র অন্য গ্রামে গ্রামে এক একটা পাঠশালা করিয়া দিতেছেন। এজন্য তাহাদিগকে হুতন স্বপ্ন কোন ব্যয় দিতে হইবে না। পূর্বে গুরু মহাশয়দিগকে তাঁহারা যেকপ যেতন দিয়া আসিতেছিলেন একপকার শিকিত হুতন গুরু মহাশয়কেও সেটরূপ যেতন দিলেই চলিবে, কেবল তাঁহার পাঠশালার হাজি সংগ্রহ বাহাতে রুচি হয় তাহা নিয়ে কিছুই চিন্তা করিবে এই মাত্র। একপ অসীকার করণে তাঁহাদের শঙ্কার বিষয় কি?

ভাণ্ডারী গুরু মহাশয়েরা অসীকার পত্রে স্বাক্ষর করিতে বাস্তবিকই অনেক ভীত হইয়াছিলেন কিন্তু বিশেষ বিবেচনা করিয়া দেখিলে তাঁহাদের ভয়ের বিষয় কিছুই দেখা যায় না। কারণ তাঁহারা বাবজীবন আশঙ্ক হইলেন তাহা ভীত হইতেছেন। কিন্তু গবর্নমেন্ট কি বাবজীবন তাঁহাদিগকে টোকা করিয়া দিবেন একপ অসীকার করিতেছেন? কিন্তু যদি তাহা না হইল তবে আর শঙ্কা কি? গবর্নমেন্ট তাঁহাদিগকে টোকা দেওয়া যদি রহিত করে এবং তাহাদের অন্য কোন কার্যের সুবিধা হয় তৎকালে অনায়াসে তাঁহারা উহা অ্যাগ করিতে পারিবেন। তত্বে গবর্নমেন্ট কতদিন টোকা দিবেন তাহার ভিত্তি নাই কিন্তু গুরু মহাশয়েরা দেখিবেন যে গবর্নমেন্ট বরাবর তাহাদিগকে টোকা করিয়া দেন পরে ইহা তাহাদিগের প্রাধান্য হইয়া উঠিবে। কারণ তখন তাঁহারা দেখিবেন যে তাঁহারা যে কার্যে নিযুক্ত আছেন তাহার আয় নিতান্ত কম হইবে না। গবর্নমেন্ট হইতে নিয়মিতরূপে টোকা পাওয়া যাইবে, হাজির বেতন ও স্তান বিশেষ ৫-৭-৮ ও ১০ মন পর্যন্ত হইতে পারিবে। বিনা বাসা খরচ বাটীতে পরিবারের সাপোর্ট থাকিবে। তাঁহারা এ কার্যে সন্মত করিবেন। তত্বে যদি ভেদান্তি প্রভৃতি আর শঙ্কা কিছু তাহাদের বাবসার থাকে তাহাও অবিরোধে চালাইতে পারিবেন। আর এইরূপ নিয়মে, বন্দ যে সকল লোককে শুধু ১৫ টাকা বেতনের উপর নির্ভর করিয়া পরিবার সি অ্যাগ করিয়া দেশ দেশান্তরে গমন করিতে হয়, গুরুমহাশয়েরা বিবেচনা করুন তাহাদিগের কার্য উন্নীত লোক সকলের কার্য অপেক্ষা কতগুণে সুখকর।

বহা হইল এইরূপে যেসকল লোকেরা হুদেব বাবু উত্তরে মিলিত হইয়া এই প্রণালী প্রবর্তিত করিয়াছেন ইহা পূর্বে উল্লিখিত হইয়াছে কিন্তু তাহা হইলে ও হুদেব বাবু দেশীয় লোক হুতরাং ইহার অধিকাংশই যে তাঁহার বুদ্ধিবিজ্ঞ হইয়া অনায়াসেই স্বকল্প হইতেছে। যে কোনরূপ হুতন প্রণালী প্রবর্তিত করা দ্বারা প্রবর্তিত হইয়া পুথ্যপুথ্য রূপে তাহার ক্ষতি ন করিতে হয়, একপ হইলে সেই প্রণালীকে যে অংশ সমোহ বা অসম্পূর্ণ থাকে, তাহা তাহা দোষ দূর্য ও সম্পূর্ণ হইয়া উঠে। হুদেব বাবু পূর্বোক্ত হুতন প্রণালী প্রবর্তিত করিয়া এবং গবর্নমেন্ট তাঁহাকে হুতন ইনস্পেক্টর পদে নিযুক্ত করিয়া তাঁহার প্রতি ঐ কার্যে তৎপর থাকিবার ভার প্রদান করিবার যে দায়িত্ব করিয়াছেন, তাহা তাঁহাদের প্রকৃত বিবেচনার কার্য হইয়াছে এবং এতদেশীয় লোকেরাও অপর্যাপ্তের মধ্যে এক জন হুতরিত্য ব্যক্তিকে ইনস্পেক্টর পদে আয়োজিত দেখিয়া অবশ্যই আনন্দিত হইবেন সন্দেহ নাই। কিন্তু শুনিতেছি হুদেব বাবুর ঐ হুতন পদের দ্বারা "স্পেনিয়ল ইনস্পেক্টর" হইবে। ঐ নামটি এক কালে আমাদের সাতিশর প্রিন্সিপাল কিংবা একপে উহা আমাদের পক্ষে এ নিম্নরে মেয়ের তুল্য হইয়াছে। অতএব গবর্নমেন্টে তাঁহার নামান্তর প্রদান করিলে অধিক সুখের বিষয় হইত ইতি।

সবিনয় নিবেদন —

মহাশয়! এখানে (মেহেরপুরে) আপনার কোন সংবাদলাভ নাই দেখিয়া অত্যন্ত সংবাদ মিথিতে আশঙ্কিত হইয়াছি। কিন্তু উহা কতদূর সত্য হইবে বলিতে পারি না। তাহা আপনার ও তবদীয় পাঠকগণের বিবেচ্য রহিল।

এই স্থান নদীয়া জেলার অন্তর্গতী হুতনগর হইতে প্রায় ১৪ ক্রোশ (২৮ মাইল) উত্তরে অবস্থিত। ইহার পশ্চিম পার্শ্বে টুঙ্গব নামক এক ক্ষুদ্র শাখানদী প্রবাহিত। উক্ত টুঙ্গবের জল নিতান্ত নিম্ন হইবে। কিন্তু এই গ্রামের সমুদায় লোক তাহার জল ব্যবহার

প্রিতে পারেন না। কারণ ইহার পূর্ব পার্শ্ব
এইতে উহা আর অর্ধ জোশ অন্তরে অবস্থি-
ত। পূর্ব পর্শ্বতে একটি বহু পুষ্করিণী আছে,
তাহার জল দ্বারা উক্ত পর্শ্ব আর সমুদ্র
সংগত নির্ভর হইয়া থাকে। ইহা দ্বারা
যে তাড়ন উৎপন্ন হইয়া বোধ হয় না।
এই স্থানে অনেক গুলি ভাঙ্গা ও বৈদ্যবৎ
গিরি ভিত্তির বসতি করেন।

২। এখানে একটি ইংরেজী বাঙ্গালী বি-
দ্যালয়, একটি পোর্ট আফিস, ও একটি থানা
এখানে দিন অবধি অবস্থিত আছে। সম্রাতি
কিছু দিন পূর্বে দুইটি কুপের কাছারি, এ
কটি ডিপুটি মেজিষ্ট্রেটের দফতর, তিনটি
ডিপুটি কালেক্টরের বিচারালয়, এবং একটি
ছোট আদালত স্থান সংস্থাপিত হইয়াছে।
শুনিতে পাই যে, কলকাতা পূর্বে অত্যন্ত উৎ-
কর্ষ ছিল। কিন্তু সম্রাতি আর ইহার তাড়ন
উৎকর্ষ হ্রাস হয় না। পরন্তু এক্ষণে সেবা
সমুদ্র নাই বর্ধাণ বটে। কিন্তু বিদ্যালয়টিকে নি-
তান্ত নিরুৎকর্ষ বলা যায় না। বর্তমান সময়ে
সালক সংখ্যা ৮০। ২০টি হইবে।

৩। প্রায় ৭।৮ বৎসর হইল এখানে এক
টি ডাকঘর ছিল। তখন এই স্থানে পূর্বোক্ত
বিচারালয় সকলের একটিও সংস্থাপিত
হয় নাই। মধ্যে গবর্নমেন্টের কতি বোধ হও-
য়াতে উহা অবলিখ হইয়া যায়। পরে অত্র
ভূমিরূপ সকলে একমত্যাৎসবন পূর্বক
গবর্নমেন্টের নিকট আবেদন করেন যে, পুন-
রায় এখানে একটি পোর্ট আফিস সংস্থাপিত
হয়, এবং যদি ইহাতে গবর্নমেন্টের কতি
হয়, তবে আমরা কতিপূরণ করিয়া দিব।
তদনুসারে ডাকঘর পুনরায় প্রতিষ্ঠিত হই-
য়াতে এবং তদবধি উহা চলিতেছে। এক্ষণে
মেহেরপুরে অনেক গুলি বিচারালয় হওয়াতে
উহার কার্য ও পূর্বাগে রক্ষি পাট্রাছে।
এতদ্বারা গবর্নমেন্টের কতি হইবার তখন
উদ্ভিগা বাইবার আর সম্ভাবনা নাই। পোর্ট
মাঠের ডাকঘর বাহুগী ও অতি ভদ্রলোক।
বিচারালয় সকলের বিবরণ পরে লিখিত
হইবে।

৪। সম্রাতি কিছু দিন পূর্বে এখানে
অত্যন্ত ব্যাঘ্রের তর হইয়াছে। ৪।৫ দিনের

বধ্যে একটি হাগল, একটি গোবৎস, ও এক-
টি বেব, ব্যাঘ্র লইয়া গিয়াছে। মধ্যে দম্ভা-
যাতে ও মধ্যযাতে এক ব্যক্তির সর্বাত-
কর্ত বিকৃত করিয়া দিয়াছে। এই ব্যক্তির এক-
টি হাগল ও এক গোবৎস লইয়া গিয়াছিল। সে তাহা
র হাগলের উদ্ধারার্থে যাওয়াতে এইরূপ দুর্দ্-
শা সংঘটিত হইয়াছে। যদি নিকটে লোক না
থাকিত, তবে নিশ্চয়ই উহাকে ব্যাঘ্রের গ্রাসে
পতিত হইতে হইত। নিকট লোকেরা
তাহাকে ক্রমে ব্যাঘ্র তাহাকে পরিভ্রা-
ণ করিয়া পলায়ন করিল। আবার অন্য চারি
দিন হইল, ৩ জন কৃষক সন্ধ্যাতে মাঠে তা-
হাদিগের শস্য ক্ষেত্রের রক্ষণাবেক্ষণ করিতে
ছিল। এমন সময়ে এক বাঘ আসিয়া তাহা-
দিগকে আক্রমণের উপক্রম করিলে দুই জন
একবারে তরে অতীত হইয়াছিল, একব্যক্তি
মাত্র অধি আসিয়া অত্যন্ত চীৎকার করিতে
লাগিল। উহাদিগের আত্মনাম শুনিয়া নিক-
টবর্তী লোকেরা সমাগত হওয়াতে ব্যাঘ্র
তাহাদিগের কিছুই করিতে পারে নাই।
লোকে বলিয়া থাকে যে, মধ্যে মধ্যে এই
রূপ ঘটনা বটে। কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় এই
যে, এই রূপ দেখিয়া শুনিয়াও অত্রত্য অ-
ধিবাসীর মধ্যে কেহই ইহার প্রতিবিধানের
চেষ্টা করিতেছেন না।

৫। এই গ্রামের অধিকাংশে প্রায় দুই
জোশ অন্তরে কোলা নামে এক কুহ গ্রাম
আছে, তাহাতেও এক বহু পুংশুগাল অত্য-
ন্ত দৌরাভ্য করিতেছে। এই শূগালের একগ
শায়স যে, সন্ধ্যাবেলাে জননী ক্রোধ হইতে
লইয়া গিয়া দুইটি বালককে হত ২। ৩ টিকে
আহত করিয়াছে। উহা বুঝা ব্যক্তিকে দা-
ন করিতেও পরাধু হয় নাই। কলকাতা এক
সামান্য শূগালে উক্ত গ্রাম নিতান্ত ব্যতিব্যস্ত
করিয়া তুলিয়াছে। উহার দ্বারা এই রূপ অ-
ভ্যচার হওয়াতে কয়েক ব্যক্তি উহাকে দা-
বার চেষ্টা করিয়াছিল। কিন্তু সকল প্রযত্ন হই-
তে পারে নাই। কারণ শূগাল তাহাদিগের
এই রূপ চেষ্টা দেখিয়া কোথাও পলায়ন করি-
ল, যে কেহই তাহার অনুসন্ধান করিতে পা-
রিল না। এই রূপ বখন উদ্যোগ করে, তখন
ই প্রায় নিশ্চয় হইয়া থাকে। এখানকার বা-

ঘের ভয়ের ব্যাপ, সেখানকার লোকেরা,
গালের তর ও অত্যন্ত দুঃখিত হইয়া
হইছে। অধিক কি সে শূগাল তাহাদের
অন্য কেহই বাহিরে থাকিতে পারেন না।

বিবিধ সংবাদ ।

২৮ এ বাঘ সোমবার।

নদীয়া বিভাগের কমিসনরের
অনুসারে বঙ্গদেশের গবর্নমেন্টে বাঙ্গালী
তি স্থানে ১৮৫৭ অব্দের ১৭ আইন প্রচলিত
করিতেছেন। গবর্নমেন্টের হুকুম হইয়াছে
অপরিকৃত পুষ্করিণী প্রতিষ্ঠাই অত্রের প্রধান
কারণ। এই আইন প্রচলিত হইলে গ্রামবাসি-
দিগকে আপন আপন বাগি ও পুষ্করিণী পরি-
ত্যাগ রাখিতে হইবে। বাগিহাওয়ার শাখা
তদ্বারা সত্য উত্তেজনাট এতদনুষ্ঠানের
কারণ। অন্য অন্য গ্রামেও এই আইন প্রচ-
লিত করিবার চেষ্টা করা উচিত।

রেবরেন্ড এ.জি, সটলর অধ্যক্ষ হইয়া পুন-
রায় হালিবরি কলেজ পরিদর্শন করিয়াছেন। তাহারা
বর্নীর সিভিল সার্জিসে প্রবেশ করিয়া এই স্থানে
অধ্যয়ন করিবেন। হালিবরির নাম শুনিয়া
সিভিল সার্জিসের একচেটিয়ার কথাটা আর
দিগের প্রতি পথে উদ্ভিত হইল।

ডাউলিং সাহেব সর চারলস উডকে ব-
লিয়াছেন গত শিম্প্রদুশনী সত্য তাবত
বীর রাজা ও সর্দারগণ যথোচিত উপসাহ
সহকারে দ্রব্যাদি প্রেরণ করেন নাই তাহার
কারণ এই তদ্বারা। তাহাদিগকে কতি প্রত-
হইতে হয়। তিনি তদ্বিনিত প্রস্তাব করিয়াছেন
ন বাহারা দ্রব্যাদি প্রেরণ করিবেন তৎপ ব-
র্থে তাহাদিগকে দ্বিলাতীর দ্রব্য উপভোগ
দেওয়া উচিত। সর চারলস উড উহাতে স-
ম্মত হইয়াছেন। এই রূপ বস্ত্র প্রত্যা প্রত্যা
শিম্প কাণ্ডে উপসাহ প্রদত্ত হইলে তারতবার্গে
এ সকল বিষয়ের সম্মতান মধ্যে সবিশেষ
উন্নতি হইবে সন্দেহ নাই।

লাকেনারের বজ্রসিগের সত্যতাৎ
অন্য অপর পুষ্করিণী ৫০০০ টাকা প্রদান ক-
রিয়াছেন।

আমেরিকার কমিসরিএটি ইজারদাবেরা
অন্যান্য জুয়াচুরি করিয়া দিয়া পড়িয়াছেন।

এক ব্যক্তি এক প্রেসিডেন্ট সেনার সমুদায় তত্ত্বা দিরাছে। কিন্তু এক খানিতেও তত্ত্বা না প্রেরণ নাই। কতিপয় প্রেসিডেন্ট অন অন্য প্রায় বাহির হইয়াছে। কতিপয় প্রেসিডেন্ট সর্গ হইতে সমান।

চাকা প্রকাশ সম্পাদকের নামে মাসিক ৫ ট্যাক্স হুতপূর্ণ ডেপুটি মাসিক ৫ ট্যাক্স হুতপূর্ণ বসিয়া কৌলদারিতে নালী করিয়াছেন। এইরূপ হুতপূর্ণ লাইব্রেরি মকফম হওয়া ভাল, তাহা হইলে বিচারপতিদিগের টাক্ত না হয়।

উক্তপত্র ডাক্তার জুরাভির মনিসেব প্রস্থর্তা প্রসঙ্গ করিয়া প্রকাশ করিয়াছেন। এ ব্যক্তি চাকরীর লোভে এক জাল জমীদারের সহিত ভাস খেলিতে গিয়া কয়েকটি টাকার জাল দিয়াছেন। খুঁজিয়া নানা ছলে টাকা লইয়া থাকে। কলিকাতার জুরাভির মনিসেব কত বড় জাল হইয়াছিল কিন্তু ওরাকোপ সাহেবের প্রসঙ্গে তাহা এখন কথিয়া গিয়াছে।

দিল্লী ইনস্টিটিউট জর্জাল বলেন সপ্রতি ডাক্তার প্রচার হইয়াছে।

ভারতবর্ষের রেটলওয়ে কোম্পানি হই আপনাদিগের মত পরিসর করিয়া কম করিয়াছেন দিল্লী হইয়া বেলগরে বাইবে ন। আমরা কিরদিক পূর্বে এইরূপ একটি জব ব প্রণয়ন করিয়াছিলাম তাহাতে বিবাস ন। নাই কিন্তু ইহা এক্ষণে সভ্য হওয়াতে দিল্লী এডমেন্সীর ও.ইউরোপীয় অধিবাসীরা চার্লস উডেব নিকটে এক আবেদন করি কোম্পানির এ প্রস্তাবের প্রতিবাদ করি ছেন। এক্ষণে মত পারস্পরিক বিশেষ কা কি তাহা না জানিয়া এবিষয়ে আমাদি স প্রতিপ্রায় প্রকাশ করা বিধেয় হইতেছে।

সপ্রতি পাটনার বে মরবার ৩৩, তা ডে লেপটনকে গবর্নর তত্ত্বা সঙ্গীত লে দিগকে বলিয়াছেন লোকের উৎসাহ না লেনোন গবর্নমেন্ট কোন দেশের মঙ্গল সা করিতে পারেন না। আপনাদিগে যদি নি বিদ্যা শিক্ষা না করেন, ও নিজ নিজ সংগ দিগকে তাহা না করান তাহা হইলে গবর্নর কের কালেক্টর ল স্থাপন করা সমর্থক। উক্ততর ভারাক্রান্ত কাগ্যের উপস্থিতি না হইলে গবর্নমেন্টের তাহা প্রদান করিবার উক্ত প্র সাধ নিকল কলেক্টর সাধারণ বিচারালয়ে পা পের প্রতি বাদ হইলে কাজ হইবে না। সর্গ সাধারণের ধর্মনীতি জ্ঞান দ্বারা ও র নিধারণ করিতে হইবে। আমি তাহা আপনাদিগকে এবিষয় স্মরণ বিবেচনা র

বিষয়ে মত জানিতে চাই না। তাহা যথেষ্টক সপ্রমাণ হইয়াছে। অন্য কিছু অতাব থাকি লে ও আপনাদিগের স্বার্থ ইহার প্রতিদ্ব হইবে। বীডন সাহেব স্বার্থ কথাই নাহিয়া ছেন। আপনাদিগের কাজ আপনাদিগে না করি লে বখন সে কাজের সম্যক উন্নতি হয় না কিন্তু বর্তমান সে কাজটি অবশ্য সর্গব্য বলি এদেশীয় দিগের বোধ না হইতেছে, ততদি গবর্নমেন্ট নিচেষ্ট হইতে পারেন না।

দিল্লীগেজেট বলেন, ১৫ টি কেক্সারি স্পিগিড পণ্য হুত পণ্য খণ্ড চলিবে

আলাহাবাদ গেজেট বলেন, রেটলওয়ে কর্মচারীরা বিনা মূল্যে বাণীয়ার নকটে বাইবা স্বত্ব হইতে বঞ্চিত হইতেছেন। কোম্পানির কা যা ব্যতিরেকে অন্য কোন কারণে তাহারিগ কে সিনামুল্যে হাইনে দেওয়া হইবে না। চার্লস উডেব পক্ষে এ

সম্প্রতি হই।

কিনিক বলেন ইন্ডিয়ান টাকের আসন্ন দিগের পদ উঠিয়া যাওয়াতে গবর্নমেন্ট উ হামিগকে পূর্নকার পক্ষে কিবিদ্যা বাইবার জা দেন। কিন্তু অনেকের পূর্ন পদ ব্যব স ক্ষেপ উপলক্ষে উঠিয়া যাওয়াতে তাহা বসিয়া আছেন। এক্ষণে গবর্নমেন্ট কি প্র রে উদ্যোগের কতি পূরণ করিবেন ত বিবেচিত হইতেছে। আমাদিগের মতে হামিগকে অন্য কোন কর্ম দেওয়া কর্তব্য। যে কয়েক মাস তাহার বসিয়া আট উঠিয়া তাহার বেতন পাইতে পারেন, তবে তাহার এককালে কর্ম হইতে অবস হ হইতেছেন তাহারিগকে পেন্সনের বো গ হইলে পেন্সন নচে, তাহা মাসের বেতন পু কার মঙ্গল দেওয়া কর্তব্য।

হিন্দুপেট্রিট বলেন রাজকুমার গো ম মহোদয় অন্য ম নিম্নাকরিতে টালি ন সম্পাদকের নামে এশান্ডন বিচারালয়ে না

২৩ এম. মঙ্গলবার।

ইংলিন্দ বর্ষের বোম্বাই বিবিসিয়া রে সংস্কৃত ও লাতিন শিক্ষালয়ের প্রস্তাব হাছে।

তিনি আরও বলেন রাজপুতনায় সব দিগের বিরোধ উপস্থিত হওয়াতে সি হি শাস্ত্রায় গবর্নমেন্ট একদল অধ্যাপকী ই না প্রেরণ করিয়াছেন। সাধারণ হওয়া সর্গ তা চাবে বিধেয়।

তিনি আরও বলেন জাহাঙ্গির খাঁ ম- খ্যে কলিকাতায় ১০০০০০০ টাকা আ রা ছেতমধ্যে ১০০০০০ টাকা অন্যান্য

তিনি আরও বলেন ১৮৫৮ অব্দে হোহিরা জায়গা বাদে খণ্ড হইয়াছে। প্রমাণ হওয়াতে তত্ত্বা বিচারপতি তাহা গের বাজীবন স্বীকারিত করিয়াছেন।

দিল্লীগেজেট বলে বহুকেলো একদল কসিয়া প্রবেশ করিয়া দুই আরত কসিয়াই গবর্নমেন্টের এদল টেনা যাওয়াতে তাহা রা পলায়ন করিয়াছিল কিন্তু আবার সেইরূপ উপদ্রব আরত হইয়াছে।

কিনিক বলেন রূপপুরের রাজা এড দিন গবর্নমেন্টের অধীনে ছিলেন, এক্ষণে স্বত্বা- হইয়া স্বদেশ গমনে অগ্রমতি পাইয়াছেন। বর্তমান তাহার বয়ঃপরিণাম ও বয় শ্রিতা না হয় তত দিন এক জন কার্যকর ক- র্য চারী রাখা হইবে গির হইয়াছে। রূপশিলাবাদের এক জন ডেপুটি মাসিক ২০০ মত টাকা বেতনে এককাল নিযুক্ত হইবেন।

হরকরা বলেন সি এম জাকান সাহেব ইংলণ্ডে গমন করিয়াছেন এবং লেডিক তাহার পক্ষে নিযুক্ত হইয়া নীজট এখানে আসিবেন।

লাহোর ক্রনিকেল বলেন ৩১ এ জাহাঙ্গি- রি জলদারে তরকার কক হইয়া গিয়াছে। এমন কি হকের পত্র সমুদে পথ রক্ত হই- রাছিল।

রোসকমিডো নামে যিবি এক কলিকাতুলী যের নামে এই বলিয়া অভিযোগ করে যে এই ব্যক্তি আগর সাগ হুরি করিয়াছে কিন্তু কাহুলী সী মিলি আমিগাচ আমার পরমা পাইব বলিয়া গল কাড়িয়া লইয়াছিল তা- হাতে মকফম প্রদা হইয়াছে।

৩-এম বধবার।

কিনিক বলেন বালগাঃ লপটনকে গবর্নর কানীহইতে আলিপুরে অধীক্ষক জায়গা

টাইমস অব ইন্ডিয়া বলেন, তত্ত্বা এলফি নিটোন কালেক্টর ও বিবিসিয়ালয়ের বাটী নি- র্মাণ প্রস্তাব হইতেছে। অনেক দিন হইল কলিকাতা বিবিসিয়ালয়ের বাটী নির্মাণ প্র- স্তাব হইয়া তাহা নিবিয়া গিয়াছে।

হরকরা বলেন পাতিয়ালায় হুতন মহারাজ তাহারিগের প্রাপ্ততার অব উপায় উপাধি চিন গবর্নমেন্টে প্রত্যাৰ্পণ করিয়াছেন।

হাওলাদার কালীচরণ আসামের অন্তর্গ- ত বড়পোখার গ্রামে এক দল নাগার সহিত যুদ্ধ কালে বিবেশ সাধন প্রদর্শন করাতে তাহাকে তৃতীয় শ্রেণীর সম্মান চিক দেওয়া- হইয়াছে।

পারস্যদেশ জামাঃ সত্যতর হইতেছে। মানুদ পা চিহরণ হইতে লণ্ডনে দূত হইয়া গমন করিতেছেন। বাণিজ্য সংক্রান্ত সজ্জ

সমাজিক ইকুইটি ব্লেন ১০ ই প্রধানতঃ
নাগতি সর্ব সমস্ত সীতাপুনে গিরাজন, এব
লোকা হইতে গজরির সেনেবলোর গাজর কাকার
কবিব্রাজ নামের কানপুরে গজরির গজরির

ডেপুটি মাজিস্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টর মো-
রী সৈয়দ আলি হোসেন, উক্ত আইন অমু-
দারের মতে ১৯ জেলার অধীন মাজিস্ট্রেটের
মত পাইবেন ।

১৫ই ফেব্রুয়ারি উক্ত কাছাড়ের এডিনিথি সহ
ব্রী কমিশনার লেপটেনেন্ট ডাবলিউ সি এস ক্রা-
স্বেভে এই জেলার মাজিস্ট্রেট ও সদর আমিন-
দার কমতা প্রাপ্ত হইয়াছেন ।

১৩ই মৌলবী আবদুল আলিম অমুদারি
১৯ পর্যায়ে বাবু গোবিন্দচন্দ্র বসু ১৮৪৩ অব্দে
১৯ আইন অমুদারি ত্রিপুরার মাজিস্ট্রেটের
এডিনিথি এবং ১৯৩৩ অব্দে ৯ম নিয়মাবলী
যে তথাকার ডেপুটি কালেক্টর হইবেন এবং যত
দিন অন্যকোন অমুদারি না হয় তত দিন
১৮৬১ শালের ২৫ আইনের ২২ ধারার অমুদা-
রে তথাকার ২২ জেলার অধীন মাজিস্ট্রেটের
কাঁকা করিবেন ।

এইচ ই ককস সাহেব রাজসাহির ডাক্তারের
এডিনিথি হইবেন ।

প্রেরিত ।

খ্রীষ্টীয় সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাশয়েষু ।

নিবেদন, গত শনিবার বার্ষিক আনন্দ নি-
নী খ্রীষ্টীয় মহাশয়েষু বিশ্বাসের পাকবাটার
লানের দ্বারের ও মিডিয় ছই দ্বারের কবচের
অবস্থা ভাঙ্গিয়া লোহার সিকুরে চাপি আঁচ
ভগ্ন করিবার অস্ত্র ও বস্ত্র লুণ্ঠিত একমল সিঁদা
সচোর প্রবেশ করিয়া উপর-র দ্বারের ক-
বাটের গুরসাতাধিয়ার উপরান নিকটস্থ প্রত-
সীমীর নিজাতা হইবার চোবের ভয়ে যন্ত্রাদি
লুণ্ঠিয়া পলায়ন করিয়াছে । পবে উক্ত বিশ্বাস
করি স্থান এই সমস্ত গাউয়া আপন পুত্রের
ক-এই সমস্ত নিকটস্থ থানায় জানাইবার
কাগজি শুভাগরন পুস্তক দুটি পত করিয়া এই
বিশ্বাস যন্ত্রাদি থানায় লইয়া গিয়াছেন, বিশ্বাস
কাঁকা অবস্থা ভাঙ্গা তিন অন্য অশকার হয় নাই
কিন্তু এই কোটা কাটা ও আইরন চেই কাটা যন্ত্র
দেখিয়া সিঁদা লুণ্ঠিত পিতৃ-পুত্র বন দেখে নাই ।
থানা দাবগা মহাশয়েষু আঁচ কিছুদিন থাকিলে
এইরূপ কৃতনয় অনেক বস্ত্র দুটিগোচর হই বক
অন্যদিক উনি মালিমদার বাগীতে একটা সিঁদা চুবি
হইয়া গিয়াছে সহ্য মিথ্যা প্রমাণ নেন । মহাশয়ে
নিখিয়াছিলেন বেজেউরিয়া ইশতেখার
বি মফসলে হইলে প্রত্যয় হইতে পারি-
ত না, তবে কেন এতলা ইশতেহার জারির

আইন বলবৎ থাকিতেও গোপনে ২ যবে বসে
একরূপ এতলাদি জারি হইয়া একতরফা ডিক্রী
হইয়া অনেকের সন্দেহ (১) হইতেছে ।

মান্যবর খ্রীষ্টীয় সোমপ্রকাশ সম্পাদক মহাশয়েষু ।

সম্পাদক মহাশয়েষু! অত্যন্ত পবিত্রাণিত হই-
তানির লিখিত প্রার্থনী আপনকার সমীপে
প্রবেশ করিতেছি । অরুণ করিয়া ভবলীর
ভুবনবিখ্যাত সোমপ্রকাশ প্রকাশ করত পাঠ-
কগণের গোচরীকৃত করিল, বিভাষ অমুদারী
হইবে । মহাশয়েষু! বর্তমানমুখি অমুদারী গণের মতে
ইকরেজী, ফিলিপাইন পদান শিককের করিয়া
করে অনবদ্যনত, প্রত্যাশিততা ও কুসংক-
র-নিবন্ধন-প্রত্ন-দৃষ্টি-ন বিধোঁবক, প্রত্নি
নান প্রকার নিদান্যক প্রণ করিয়া আসিতে-
ছি প্রথমতঃ ভাষা বিভাষ অমুদারী ও অলীক
বলিয়া প্রত্নি ভিন। অতবাং ভাষার তথ্য-
ভুসন্ধানে অরু হইতেও কোন কপেই প্রত্নি
হয় নাই । ক্রমে ক্রমে যখন দেখিলো এত-
কান প্রায় প্রত্নদার কৃতবিদ্যা লোকেই একবাঁকা
হইয়া নানা ভাষা ক্রমে এই বিশ্বাসই অমুদা-
লন করিয়া পাবনার বিভাষ ছন্দুই বিবেচনায়
যৎপরোনাস্তি পবিত্রাণিত হইতেছেন ও ভুয়ে-
ভুয়ে দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ করিতেছেন, ত-
খন আদিত্য প্রত্নক বলিয়া উপেক্ষা করিতে
পারিলেন না । তদবধি কয়েক মাস সাধারণ প্র-
বাস মতভাবে একান্ত মনে কেবল এই বিশ্বাসই
বাখাখায়াসন্ধানে প্রমত্ত হইলেন । মহাশয়েষু !
মহাশয়েষু! স্বাধীন হইয়া অতবাং ভাষা-
তে নিশ্চয় প্রত্নিত হইতেছে, উক্ত মহাশয়েষু !
নেন উৎকর্ষ সম্পাদনর এক মহান অতবাং
হইয়াছেন এবং এই দুর্ভাগ্য অমুদারি অমুদার-
বিত্তে অসমর্থ হইয়া পাবনার প্রত্নি অমুদারি
বী বিদ্যোৎসাহী মানবগণ নিবেদন অমুদারি-
নায় অনিত্ত হইলেও তদীয় কদর দেখন। শ-
ক্য, প্রকাশ্যকপে তৎপ্রতি বিধানার্থ ভাষা
বিদগে হস্তাক্ষণ করিতে নাহসী হইতেছেন
না । বাস্তবিক সম্পাদক প্রণ । এই মহানিষ্ঠকর
প্রত্নি বিদগে প্রত্নিকারে আপনকার (সম্পাদ-
করা) মতনী বারণন করিলে এখনকার
কলী লেন ক্রমই বক পায় না । এজিলাতে
তানান গাতি স্তত্যাং এই ক্রমে কারা মান।

(১) থানা বা... ইশতেহার জারির নিয়ম
হইলে এই ভাষাকে নিবেদনের সমধিক সম্ভাবনা
থাকে ।

প্রকার উপকারের প্রত্যাশা বাধি । সম্প্রতি কু-
লের যোগ্য ছরবস্তা হইয়াছে, উৎকর্ষ কোন
রূপেই নিশ্চিত ও নিশ্চেষ্ট থাকিতে ইচ্ছা হই-
তেছে না । ভাষার প্রবন্ধন কারণ আপনাদি-
গের গোচর করিয়া তৎপ্রত্নিকারে দরদান হই-
বার নিমিত্ত আপনাদিগের প্রধান মনোহাতি
এক বাক্য আমাকে পুনঃ পুনঃ উপদেশ প্রদান
করিতেছে। ক্রমে প্রত্নি পবিত্রতা বলিয়া গি-
য়াছেন "অমুদারি" ন বক্তব্য প্রত্যাশা ন
বৃদ্ধিতে "কেবল এই ভাষাটি অরণ করিয়া একা-
ল পর্যায়ে তাহা কনি নাহ । কারণ চেড গাউর
এক জন কৃতবিদ্যা লোক । তিনি কুসংকর
পদত্ব হইয়া, সৎকার্যের প্রতিবন্ধকতা প্রণ ও
কর্তব্য কর্মে প্রত্যাশা প্রদর্শন করেন, আপাততঃ
ইহা বিভাষ অমুদারি অমুদারি বলিয়া অ-
শাই তত্ত্ব সমাজে প্রণিত হইতে পারে । কিন্তু ২২
অমুদারি এবং ৮ই ২২এ প্রত্নি পবিত্রতা
কে প্রবন্ধন ন বাদদাতা ও পবিত্রতা প্রত্নি-
নগের কথাক্রমে ক্রমে, অমুদারি তত্ত্ব সমাজে
২২এ ২২এ প্রত্নি পবিত্রতা, প্রত্নিকার প্রত্নি
হিতৈষী বলিয়া বাধ পদ নাই সনাতন ও প্রত্নি
নিহিত হইয়াছেন । তদবধি আমাদিগেই যত্ন
যা লক্ষ্য সমাক নিবেদিত হইয়াছে । এখন
আর এই প্রত্নি পদ প্রত্নি করিতে কোন প্রত্নি
ইচ্ছা না বিশেষতঃ সম্প্রতি প্রত্নি প্রত্নি
লগী, কেবল প্রত্নি পদ প্রত্নি, এই প্রত্নি
এক প্রত্নি প্রত্নি শিকার প্রত্নি প্রত্নি
প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
আর কাল বিলম্বন, বিভাষ অমুদারি
নায় নিশ্চয় প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
গণন করিতে প্রত্নি হইলেন । তদবধি প্রত্নি
ব অমুদারি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
উৎকর্ষ প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
করেন, প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
হইয়া দাঁড়ান । প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
শরীরে কটক প্রবেশ করেন । প্রত্নি প্রত্নি
কে প্রত্নি ও সমাজ প্রত্নি করেন, প্রত্নি
প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
হইবে, প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
কলপ্রবণ ও অপাত্ত প্রত্নি হইলেন ; এবং প্রত্নি
প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
লগী হইয়া কেবল এক প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
প্রত্নি করিলে, প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
কালকোপ করাই প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
হইয়াছে । বাহ্য প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
প্রত্নি আমাদিগে প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি
এক প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি প্রত্নি

লগি উঠিয়া দাঁড়াবে। এক্ষণেই অনেক ছাত্র স্কুল পরিভ্রমণ করিয়া স্থানান্তরে গিয়াছে। অর্থাৎ এই কাঁচা দাঁড়াবে কেন? মহাপ্রভু! সকলেই ত এগুপে অর্থ ব্যয় করিয়া কেবল অশিক্ষার সমস্তই সম্ভাবনাকে স্কুলে প্রেরণ করেন। যদি তাহারই বাধ্যতা হইল, তবে আর কি নির্মিত এত অর্থ ব্যয় করিয়া তাহা! (১) কবিরেব?

১২৬২ সাল
৫ই ১৮ মাস
সোমপ্রকাশ

কল্যাণ পাঠশালার সন:

সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাপ্রভু সমীপবু।

মহাপ্রভু! বৎসরব্যাপী কীৰ্ত্তন অর্থাৎ সত্যমুচি-
তম সত্যের কিং। উৎসর্গার্থে বৎসরব্যাপী
সত্য। উৎসর্গার্থে বৎসর কিং বিজ্ঞান, ১১

মহাপ্রভু! কোন মহাপ্রভুর উত্তর চব্বি
১২৬২ কোন কোন দৃষ্টে হইলে মন বাহুল্য বিধা-
পিত হয় কোন আদর্শীয় পরিচালিত প্রাণ
মহাপ্রভু! কোন নির্ভীক ব্যক্তির মিথ্যা অপরাধ
দৃষ্ট পত্র মাহুরে গৃহীত হইলে ততোধিক এক
অনন্তর হয় আপনাতঃ সোমপ্রকাশ লেখক
আদর্শীয় পত্র তদ্বৎ। বোধ হয় অর্থাৎ অনবগত
নামের। একপা পত্র সাধুরিমে দেববোপ
দেববোপ বৎসরব্যাপী কষ্ট বোধ হয়। ১৪
মাস নিবনীয় সোমপ্রকাশে ১১ দিনব্যাপী
১২৬২ সালের এক পত্র প্রকাশ হইয়াছে। উহাতে
দেববোপ সীমিত কুটিলত্ব, অর্থাৎ বিজ্ঞানের
দেববোপ প্রিয়তম কেশবচন্দ্র সেন মহাপ্রভুর
অপটুত্ব, দেববোপ লিখিয়াছেন, এবং
কিছুকাল সীমিত, আপনি উহাও সত্যমুচি
সত্যমুচি। অমনি বেন আশ্চর্য্যতমেন স-
১২৬২ উহা প্রচার ও তদুপলক্ষে এক সম্পাদক
সীমিত লিখিয়াছেন। কি আশ্চর্য্য! বৈবর্তনিত
১২৬২ কি তরুণ! শত ব্যক্তি যাক লিখিয়াছেন,
ত ব্যক্তি যাহা লিখিয়াছেন, বৈবর্তনিত
১২৬২ যখন শীতল হইয়া লোকে তাহারও একটি
মিথ্যা অপরাধ ঘটনা কবিরেব

হয়। কেশব বাবুর নবকুমারের আত্মকর্মোপল-
ক্ষে বাহা বাহা হইয়াছিল তাহা বোধ হয় অস-
ম্ভব ব্যক্তি দেখিয়াছেন, এবং তদুপলক্ষে
দেবেজ বাবু বাহা বলিয়াছিলেন তাহাও সকলে
জানিয়াছেন, কিন্তু দীন বাবু তাহারও একটি
মিথ্যা অপরাধ ঘটনা কবিরেব। কেনই বা ক-
বিরেব ন? অর্থাৎ অনাধার সোমপ্রকাশ সম্পাদ-
ক একপা অসার পত্র মাহুরে গৃহীত হইতেছে,
তখন অল্প দিন মধ্যে, এপ্রকার শত শত পত্র
প্রেরক লক্ষ্যে তাহার শ্রীকৃষ্ণ সাধনে গড়বান
হইবেন, সত্যে নাই। প্রিয় সম্পাদক! বিবেচ-
না করিয়া দেখুন, দীন বাবুর পত্রের নাম অসার
পত্র সোমপ্রকাশে প্রচার করা কি তবৎসমূহ
ব্যক্তি উচিত? আপনকার এবাবৎসর কি? বি-
জ্ঞান বুজির অস্বাভাবিক? ইচ্ছা কি বালকো-
চিত ব্যবহার (১) নাহ? ১২৬২ সালের পত্রের
উপর নিম্নের কবিরেব প্রকাশনাও উপর, দেবে-
জ বাবুর উপর, কেশব বাবুর উপর, প্রাকগণের
উপর এম। সি ভট্টাচার্য্য পত্রের উপর প্রাকগ-
ণের (২) উপর হইবে বাক্য প্রকাশ করা কি

(১) দীননাথের পত্রের বিষয়ে আশ্চর্য্যের
লক্ষণে কবিরেব সত্যমুচি। তিনি অসার
মিথ্যা কবিরেব। এক জন ভুলে-কেবল দীন কবিরে-
ভেছেন, এটি বুঝা যায়। তিনি যে বর্তীপ-
ত্রের কথা লিখিয়াছিলেন, কেশব বাবুর সমস্ত
অপটুত্ব নথ্য তাহার অস্বাভাবিকতা অসম্ভা-
ব বলিয়াও আশ্চর্য্যের বোধ হয় না। দীন
নাথ বাবু স্বাভাবিক সমর্থন কবিরেব পত্রের অসা-
ধার্য্য নিকট পত্র লিখিয়াছেন। ১২৬২ হইলে,
এবিষয়ে আশ্চর্য্যে আপ আশ্চর্য্যের ই-
চ্ছা নাই।

(২) প্রাকগণের উপর অসার শেষ বাক্য
প্রকাশ করা কেন? প্রাকগণের দেব কি?
কতিপয় প্রাকগণ বৈবর্তনিত। দেবেজ
কেশব এতি লোকেব অন্যত্র অস্বাভাবিক দেখিয়া
মধ্যে মধ্যে প্রাকগণের আশ্চর্য্যের সাবধান কবিরে-
ব পা ক, ১২৬২ আশ্চর্য্যের প্রাকগণের এতি
বিবেচনাই, প্রাকগণের উপরও বিবেচনাই,
প্রাকগণের মন প্রমাণ প্রমাণ কবিরেব আপ-
না। প্রাকগণ লাভ করি আশ্চর্য্যের একপা
একপা নাই। প্রাকগণের আশ্চর্য্যের মনোহ-
র প্রাকগণের তাহা প্রাকগণ কবিরেব নাট।
আশ্চর্য্যের প্রাকগণের মনোহর এক
টি আছে, সে এটি—কি ধর্ম, কি আচার ব্যবহা-
র, কি বলবীর্ণ্য, কি বুদ্ধিমত্তা, সকলবিষয়েই
একদশীয়েবা সর্বোৎকৃষ্ট হন, কেবল কোন মানে

সোমপ্রকাশ সম্পাদকের উপরকার কাঁচা দাঁড়াবে
দাঁড়াবে। প্রিয়তম! আপনি কে, ও আপনাতঃ
উত্তর কার্য্য তাহা। যেন সর্বদা বিজ্ঞানমুখী
খিন র সময় প্রেরণ থাকে। আপনাকে আশ্চর্য্য
বলিব।

যে দিন কেশব বাবুর বাটীতে আশ্চর্য্যের
নবকুমারের আত্মকর্ম সম্পন্ন হয়, সে দিন কেশব
চাঁদ পৌত্তলিক পরিবাস মাতেই বাটী জাগ্রত
করিয়া বাগানে গমন করেন, এমন কি অশেষ
আশ্চর্য্যের মধ্যে তাহা বহু করিয়া প্রবর্তী নিবৃত্ত
করিয়া, বাগানে যান, যে কেশব বাবু আশ্চর্য্যের
কোন সামগ্রী ব্যবহার করিতে না পারেন। কেন-
এক প্রাকগণের জন বাটীতে থাকেন। অতঃপর
বর্তী পত্র। ১২৬২ তাহা কোন সম্ভাবনাই নাই।
কেশব বাবু প্রাকগণ বলিয়াছেন, "অতঃপরে প্রা-
কগণ পবিত্রতা ও উৎসাহ সহকারে প্রাক-
গণ সংকীৰ্ত্তন করিয়া প্রাকগণের এ পূর্ব লক্ষণ
করিলেন"। কেশব বাবু কি এমনই অসার
অপদার্থ হইলেন যে তিনি একটি অসার পো-
পমার্থে আর একটি মিথ্যা কথা কবিরেব। অস-

দোষ দিতে না পারেন, সর্বপ্রধান দেশ গণনা-
কালে আশ্চর্য্যের দেশ দ্বিতীয় বলি। প্রাকগ-
ণিত না হয়, সর্বদা আশ্চর্য্যের এই বাননা।
এই প্রাকগণের দাঁড়াবে আশ্চর্য্যের
লোকেব অস আশ্চর্য্যের দর্শন করিলেই তাহা
প্রাকগণ করিয়া উৎসাহপ্রদ চোকা পাই, কাহা-
কে অপদার্থ করা। প্রাকগণ আশ্চর্য্যের
করা আশ্চর্য্যের আশ্চর্য্যের আশ্চর্য্যের
না আশ্চর্য্যের আশ্চর্য্যের দর্শন হই-
বার কোন কারণ দেখা দাঁড়াবে না। লোক
অর্থ সমস্ত বাহ্যিক সম্ভাবনা না দেখিলে কখন
কাহান অনিষ্ট করেন। প্রাকগণের হইতে
আশ্চর্য্যের কি আশ্চর্য্যের সম্ভাবনা আছে?
কি তাহা বলেন, আশ্চর্য্যের আশ্চর্য্যের অস-
ম্ভব কবিরেব বশোলাতের অর্থ হইয়াছি, তদুপ-
রে আশ্চর্য্যের বক্তব্য এই, আশ্চর্য্যের সে
প্রার্থনা নাই, কেবল আশ্চর্য্যের বিষয়ে কেন,
তীহার ভাল করিয়া পরীক্ষা করিয়া দেখিবেন,
আশ্চর্য্যের কোন বিষয়েই বশোলাত প্রার্থনা
নাই। সে প্রার্থনা থাকিলে তাহার আশ্চর্য্যের
কে সমস্ত প্রাকগণের মনোহর আশ্চর্য্যের
সমস্ত উপলিখিত দেখিতে পাইতেন। সর্ব-
দা অস্বাভাবিক রূপে অবস্থান করাই আশ্চর্য্যের
গণের আশ্চর্য্যের। আশ্চর্য্যের যে কিছু কাজ করি-
কর্তব্য বোধ ও দেপের উত্তর। আশ্চর্য্যেরই ক-
রিয়া থাকি, আশ্চর্য্যের তৃতীয় উত্তর নাই।

১। হেতু নাটক সে সময়ে স্কুলে উপস্থিত
২। অস্বাভাবিক কাহা কবিরেব, পত্রের
৩। বিজ্ঞানিত কবিরেব, লিখিয়াছেন, তাহা
৪। ১২৬২ প্রকাশ করিয়াছেন। ১২৬২
৫। হেতুই যেন সাবধান হইয়া, বিবর্তন সময়ে
৬। সে উপস্থিত হইয়া যথারীতি সকল মন
৭। আশ্চর্য্যেরকে আর কোন এবিষয়ে
৮। কেবল কবিরেব না হয়। ১।

এই পত্র কলিকাতার পূর্বাঞ্চলীয় রেলওয়ের স্টেশন-
গুপ্ত স্টেশনের দক্ষিণ ডাকবিভাগের অধিদপ্তর
দ্বারা প্রদত্ত হইতেছে।

সোমপ্রকাশ

“प्रवर्शतां प्रकृतिविनाय पार्थिवः वरस्वती युतिमहती न क्षीयतां ।”

६ काग ।
२५ मर्यादा ।

{ মন ১২৬২। ১২ই ফাল্গুন। ইং ১৮৬৩। ২৩ ফেব্রুয়ারি।

वार्तिक सूत्राः ४-१०
वार्तिक सूत्राः ४-१०

সোমগ্রন্থকালের অবয়ব বৃদ্ধি

महानाथ विष्णुधन ।

আজি অবধি সোধ প্রকাশের আর এক
কন্ডা হুজি হইল । অতঃ পর যাহারা বাগ্গা-
'নদ দুলা ল'ন করিবেন, তাঁহা নিগকে ৫০
পাউন্ড । দিতে হইবে, বার্ষিক অ
গ্রিথ দুলা ১০ টাকা । অপরিবর্তিত রহিল
মসললে প্রাইকরিগকে অতঃ তাৎ মাগুল
দিতে হইবে । বার্ষিক তাৎ মাগুল ৩০ জন,
শিশু যাহারা দুলা প্রেরণ ল'লোন্ত চিঠি-রে
প্রেরণ করিবেন বন, তাঁহারা তাহারা বাগ্গা
(চাঁবি ১০) বাদ পাউন্ডেন । বাগ্গারা অত
দ তাৎ মাগুল দিতে অসমর্থ হইবেন, জানা
হইবে তাহা নিগের ক্ষেত্র্য হইলে তাঁহা-
নিগকে মাগুল দিতে হইবে না ।

विष्णुः पञ्च १

কলিকাতার জিলায় অফিসপাঠী বাটকেমারি
হংকংতপুর নামে যে পত্রনি তাহুক আছে,
তাহা দরপত্রনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা
নাহবে। যাহার সেই তাহুক দরপত্রনি লটে
না, অথবা ক্রয় করিবার উচ্চা আছে, তিনি
কলিকাতায় জাভন জিনের কোম্পানির মিস
টে আবেদন করিলে সর্বিশেন হু হুস্ত তানিতে
“রিবেস।

विज्ञान १

পোর্টবল ১

অর্থাৎ জনগণের কলিকাতার নৌযাচাতি
বাড়ানো উচিত।

সরকার বাহুবল কল্যাণার্থে
 "স্বাধীনতা" "স্বাধীনতা" "স্বাধীনতা"

তারিখ অথবা স্থান, জাহাজ, মানবোষ্ট,
ফক, বজরা, এ২২ উপর দুজনের নোকা সকল
এই হগলি মলীতে রাজিযোগে কমিকাতা নী
মা মধ্যে; যাভারাতকালীন সমুখে লান্ধোনের
স্তিতর আনো; রাখিবক অখীং বেদানে রা-
খিলে দু২ হইতে স্পষ্ট দৃষ্টি হয়, বরাপি উক
নিয়মের অন্যথা হয় তবে একশত টাকা
(১০০) জরিমানা দিতে হইবেক।

11-2011

उत्तराखण्ड प्रा.सं.सं. विधान सभा

बलिकाडा :

विद्यःपुन ।

সামবাব, ৪ ঠাকুর, রাণু মসিংহ, গৌর
কবিরাজ, নিত্যানন্দ বৈরাগী, ককমোহন
জ্যোতিষা প্রভৃতি প্রাচীন কবিগুণালাদিগের
উক্ত উক্ত গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত
করিয়া সংগ্রহ করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য
১ এক টাকা মাত্র

नदिक्. ३।

ਸਦਾ ਸਾਥੀ ਹੋਣਾ ਏਨਾ ਥਾਪੀ ।

ক্রিয়কর্মোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

विष्णुः १

কীৰ্ত্তিমান বৰ্ণকিউলৰ এডুকেশ্যন সোসাই-
টিৰ যে সকল পুস্তক, বাইবেল, ত্ৰিপলিটৰিতে
জীৱন্ত মহান সাহেবৰ দ্বাৰা ১৭ টাকা কৰি
মানে বিক্ৰয় হইত, সম্ভৱি এই সকল পুস্তক
কলিকাতা মিৰ্জাপুৰ এমপ্লয়েট ট্ৰিষ্ট ২২ মহন
মিসন'কুলে জীৱন্ত এক খেলিন সাহেবৰ
২ টা ১৭

माधव कुमारी को काटने

ক। কবিন্যাস বাণে বিজ্ঞান হইবে।
 হে, মাতৃ।
 সেরে গিয়া।

সেই প্রকাশ

北京（新）城市圖書館

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-मंडलः

বিবরণ দাখিল হইল, রাজ্য
ঠাকুরের আদেশ মতে
রাহুল, রতন কে আইনগত
হইবে তাঁহা...
জামনা থাকে, তিনি পুত্র...
লে নাধা + সত্য। অথবা...
তাহার বক্তব্য...
হউন, অথ। তাহার...
র উপস্থিত হইয়া...
পারিবে। ব্যবস্থাপক...
অধি উহা সত্য...
শব্দ করিয়া...
সেই দ্বার উপস্থিত হইয়া...
হে। বখন যে বিবরণ...
তাহার সমুদায়...
ক্রমেই পোষিত হইয়া থাকে।

বঙ্গালি পত্র আশাদিগের বড় প্রতি
সহায় দিতে আরম্ভ করিয়াছেন
নি শুনিয়েছেন, সর চাঁ
কমচারিদিগের হস্তে
কাল্যাতার সমর্পণ করিয়াছেন

কৃত এজিরা তল করা হইয়াছে। অন্য
মনা নতোরায় ও নীলকরদিগের দেহ ও
প্রজাতিগের নিবেদিতা মিত্রের উদ্দেশ্য
করিয়া শেষে এক বাটো এই প্রকার করি
লেন যে, সর চারলস উভ দুই রায় এই আ
ইন রচিত করিয়া যথার্থ রাজনীতি তত্ত্বতা
প্রদর্শন ও ন্যায়ানুগত কার্য করিয়াছেন।
অতএব তাঁহার কাৰ্যের অনুমোদনার্থে
হাফে এক অভিনন্দন পত্র প্রদান করা
কর্তব্য। অনন্তর সর জন লরেন্স পুনরায়
বলিলেন যদি সর চারলস উভ এ কার্য
না করিতেন, তাহা হইলে তিনি ভারতবর্ষী
র সেক্রেটারি হইবার যোগ্য হইতেন না।
সত্যোত্তর সকলেই হৃদয়কণ্ঠে কহিলেন, তা
রতবর্ষীর গবর্ণমেন্ট কণ্ঠে আইনের প্রস্তা
ব করিয়া অভিশপ্ত অশাস্য করিয়াছেন।

আমাদিগের দেশের সেক্রেটারি যেন
এই শুভ সংবাদটি শুনিয়া নিশ্চিন্ত হইয়া
পুনরায় সুখস্বাস্থ্য সেবন করেন না। ক
ণ্ঠে বিদেশে এখনও অভিনয় কাল উপ
স্থিত হয় নাই। ইহা লইয়া একটি ঘোরত
র বাগ্যুদ্ধ হইবার সম্ভাবনা আছে। এক
দিকে সেক্রেটারির ও ভারতবর্ষের জীৱজি
কারি বল এ হইলেন সৌরি বল, অন্য
দিকে সর চারলস উভ ও হইল বল বঙ্গপরি
কর হইবেন। এদেশীয়দিগের কায়মনো
বাক্যে চেবে আইয়া সর চারলস উভের
মনের বল হুজি কর। অবশ্য কর্তব্য।

—

হরকরা ও প্রতক্ষণীয় জুরি।

এক ব্যক্তি ইংলণ্ডের বিটোরিয়ার
এণ্ড বধ করিবার চেষ্টা করিয়া মৃত হইলে
সকলে তাহাকে মিত্রাঙ্গা করিলেন, তুমি
কি জমা রাজ্যীর আশি সংহার চেষ্টা করি
তাহিলে। সে অসম্মানবশত বলিল “বিধাত
হইবার জন্য।” এইরূপ হরকরার ভূত
পূর্ব সম্পাদক কর্তৃক সত্বেব প্রজ্ঞাপকে
৩২সর করিবর চেষ্টা পাইয়া বিধাত
হইয়াছিলেন। তাহার প্রতিকারী ততন

সম্পাদক এই পত্রীতে পদার্থ করি
করেন। সত্যি একদলী। জুরিদিগের
বিষয়ে হরকরার এক এতদ্বিধিত হই
করে। যেহিহা অমরা বিমিত হইয়াছি।

সম্পাদক প্রথমতঃ ভারতবর্ষে মিত্রের অ
সত্যতা, বর্ষ, সত্যতা, ও রাজনীতি সংক্র
মিত্রতার প্রশংসা করিয়া নিবিরাজেন, “যে
হুজ (জুরি) ইংলণ্ডে জরিফাং, তাহা তা
রকবর্ষে হইকে পারে না; এদেশে লোক
হা-প্রেক্ষণ তথাক অজান তিনিই আকর
হইয়া অচেন, তাহা কহার সাধা কে হুজ
করিবে, বরং মর্শন মায় হুজ স হইতে
হয়; বর্শন কোন জাতি সত্য অবস্থা হইতে
পতিতকন, তাহা তা পুনরায় নের আর
কোন সম্ভাব্য থাকে।” সম্পাদক যদি
যথার্থ রূপে ইতিহাস পাঠ করি। তবে
তাহা হইলে একটি বিদ্যা জাতিতে পাইবে
ন, কেহ কখনই অগ্রে থাকি দি। আ
মোৎসব লাভ করিতে পারেন নাই; তা
রা কেবল পরাজিত জাতি জেতগটক
জর করিতে শিখা য়ে। ভারতবর্ষের ই
দানীকন সত্যোত্তর বিবরণ লইয়া সম্পাদ
কের সহিত আমাদিগের দুখা বিতণ্ডার
প্রয়োজন নাই। সম্পাদকের প্রতি আমা
দিগের এক মাত্র বক্তব্য এই, যে দেশ পূর্ব
তন উচ্চতম অবস্থা হইতে অবপতিত হয়,
তাহার পুনরুদ্ধারের সম্ভাব্য আছে কি না,
বর্তমান ইটালিই তাহার নিদর্শন হল। তা
হা কি সাহিত্য, বিজ্ঞান, বাণিজ্য, ও না
নাথবার শিল্প শিলাদি নবীতাব প্রাপ্ত হয়
নাই; তথায় কি স্বাধীনতা প্রযুক্তি বলবতী
হয়নাই; ক্রীসেবদিকে একদার দৃষ্টি পাত
কর, আর এক দৃষ্টান্ত মর্শন করিবে। তবে
ভারতবর্ষের পূর্বাবস্থা লাভ অথবা তদপে
ক্ষা অধিকতর উন্নতি লাভের বাধ্য কি? হর
করা সম্পাদক বলেন সম্পূর্ণ বাধ্য আছে।
জীৱজিকারি বল কি সেই বাধ্য। গবর্ণমেন্ট
যদি এদেশীয়দিগের শিক্ষা য়ে কর্তব্যতা
না করেন

সম্পাদক এই পত্রীতে পদার্থ করি
করেন। সত্যি একদলী। জুরিদিগের
বিষয়ে হরকরার এক এতদ্বিধিত হই
করে। যেহিহা অমরা বিমিত হইয়াছি।
সম্পাদক প্রথমতঃ ভারতবর্ষে মিত্রের অ
সত্যতা, বর্ষ, সত্যতা, ও রাজনীতি সংক্র
মিত্রতার প্রশংসা করিয়া নিবিরাজেন, “যে
হুজ (জুরি) ইংলণ্ডে জরিফাং, তাহা তা
রকবর্ষে হইকে পারে না; এদেশে লোক
হা-প্রেক্ষণ তথাক অজান তিনিই আকর
হইয়া অচেন, তাহা কহার সাধা কে হুজ
করিবে, বরং মর্শন মায় হুজ স হইতে
হয়; বর্শন কোন জাতি সত্য অবস্থা হইতে
পতিতকন, তাহা তা পুনরায় নের আর
কোন সম্ভাব্য থাকে।” সম্পাদক যদি
যথার্থ রূপে ইতিহাস পাঠ করি। তবে
তাহা হইলে একটি বিদ্যা জাতিতে পাইবে
ন, কেহ কখনই অগ্রে থাকি দি। আ
মোৎসব লাভ করিতে পারেন নাই; তা
রা কেবল পরাজিত জাতি জেতগটক
জর করিতে শিখা য়ে। ভারতবর্ষের ই
দানীকন সত্যোত্তর বিবরণ লইয়া সম্পাদ
কের সহিত আমাদিগের দুখা বিতণ্ডার
প্রয়োজন নাই। সম্পাদকের প্রতি আমা
দিগের এক মাত্র বক্তব্য এই, যে দেশ পূর্ব
তন উচ্চতম অবস্থা হইতে অবপতিত হয়,
তাহার পুনরুদ্ধারের সম্ভাব্য আছে কি না,
বর্তমান ইটালিই তাহার নিদর্শন হল। তা
হা কি সাহিত্য, বিজ্ঞান, বাণিজ্য, ও না
নাথবার শিল্প শিলাদি নবীতাব প্রাপ্ত হয়
নাই; তথায় কি স্বাধীনতা প্রযুক্তি বলবতী
হয়নাই; ক্রীসেবদিকে একদার দৃষ্টি পাত
কর, আর এক দৃষ্টান্ত মর্শন করিবে। তবে
ভারতবর্ষের পূর্বাবস্থা লাভ অথবা তদপে
ক্ষা অধিকতর উন্নতি লাভের বাধ্য কি? হর
করা সম্পাদক বলেন সম্পূর্ণ বাধ্য আছে।
জীৱজিকারি বল কি সেই বাধ্য। গবর্ণমেন্ট
যদি এদেশীয়দিগের শিক্ষা য়ে কর্তব্যতা
না করেন

এই শিরোনামের একখানি প্রাপ্ত পত্র
সভাবারের সোমপ্রকাশে প্রচারিত হয়।
হে। এবিষয়ে আমাদিগের কিছু কিছু
কথা আছে। তদর্থে স্বাক্ষর পুনরায় এবিধা
র প্রশ্ন উপস্থাপিত করা গেল। একেশ্বর
সমাজ কর্তৃক ও রাজকর্তৃক সংক্রান্ত উন্নতি
সম্বন্ধে বিস্তৃত বিদ্যার বাহুল্য রূপে অনুশী
লন ব্যতিরেকে সমাজ হটবার সম্ভাবনা
নাই, একথা কেবল সাধারণের নয় গবর্ণ
মেন্টও স্বীকার করিয়াছেন। এই নিমিত্তই
বিদ্যাবানুশীলন বিষয়ে অধিকতর যত্ন ও
নুরাধ দৃষ্ট হইতেছে। এই নিমিত্তই কল
কাতের কারিগরদের শিক্ষা কার্যে ২১ নং
অধ্য পরিবর্তে ৫০ লক্ষ টাকা দ্বিগুণ ২
লাক্ষ করেন। কিন্তু আটকালের বিষয় এই
বিদ্যাবানুশীলন সম্বন্ধে যে এক একটি
সমাজ

যে লোক সংস্কার এত উপকার কারি
তা শক্তি আছে, তার ভবর্ষে নিয়মিতরূপে
তাহা সম্পন্ন হইতেছে না, বড় ক্ষেত্রে
বিষয়। যখন এদেশ হইতে প্রতিবৎসর
সহস্র সহস্র অমঙ্গলী ব্যক্তিকে নানা উ
পনিবেশে প্রেরণ করা হইতেছে; যখন
প্রতিবৎসর নানা প্রকার পীড়ার আধিক

CONCLUSION

[illegible]

১০০০ টি
 ১০০০ টি
 ১০০০ টি

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

স্বাধীনতা আন্দোলন, জাতি স্বাধীনতা, এই বস্তু
স্বাধীনতা আন্দোলন, জাতি স্বাধীনতা, এই বস্তু
স্বাধীনতা আন্দোলন, জাতি স্বাধীনতা, এই বস্তু
স্বাধীনতা আন্দোলন, জাতি স্বাধীনতা, এই বস্তু

উক্ত পত্র প্রাপ্তিঃ বঙ্গের চাকর লিখিত
 নিম্ন বক্তব্যঃ লিখিতঃ লিখিতঃ লিখিতঃ
 লিখিতঃ লিখিতঃ লিখিতঃ লিখিতঃ
 লিখিতঃ লিখিতঃ লিখিতঃ লিখিতঃ

अद्यापि गेहलूके वनम, अथवा जंगल-
 किं अरुणें अरुणें अरुणें अरुणें । किं अरुणें
 अद्यापि अद्यापि अद्यापि ।

“উক্ত পত্রি আরো বলেন প্রধান সেনাপতি
কানপুর হইতে অস্ত্রাদি লইয়া সেনাপতি
সাকভকের সহিত গোপন সর্গর্ভনে দিল্লী হইয়া
এবং কুবিহার লক্ষ্যে হইয়া। নীতাপুরে উপস্থি
ত হইলেম। ”-বোধ হয় তাহার পর তিন মাসের
কৈশিকপত্রি জেনারেলের সহিত সাক্ষাৎ করিতে
গাইবেন।

১১. মরীচের প্রেক্ষাপট বলের গতি বুঝবার ঐ
 দ্বিত্তে আলোকের ব্যাধে একটি ভরস্কর ছুরি
 বইয়া গিয়াছে। চোরেয়া কেণী গাৰীক
 অগ্নিদা ব্যাধে প্রবেশ কর, তাহার শর করে
 কটী সোদাগরী সিন্দুক তাগিবার চেষ্টা করি।
 কিন্তু তৎক্ষণাৎ হইতে পানো মাই, কেবল সিন্দুক
 প্রকের চাবি পাইবার আশায় দুই এদটী
 ডেকা জাঙ্গিরা ছিল, তাহাতে দুটি টাক, ম
 পাইয়াছে। চোরেয়া ধরা পড়ে নাই।

মাদ্রাসার জনসংখ্যা ১০০ হাজারের বেশি।
 লেফটেন্যান্ট গভর্নর উক্ত পলিটেকনিকের লেফট
 মেন্ট গভর্নর হওয়ার জন্য গদ্যবাক্যে লেখেন।
 দ্বিতীয় আবেদন কলিকাতা : কেবল কি বাধ্য
 হবার দোষ, না আর কোন সোপান আছে?

বাল্যকাল সন্তানসকল বহুজন। বহুদেশীয় জেগে
 নীচে গবর্ণর বেদুনি খ্যে বিদ্যালয়গত প্রাথমিক স-
 বা-বকে শিক্ষাদান করিয়াছেন। ঢাকায় জে এ
 স্কুল-বিদ্যালয়গত বহুজন, গায়ে 'ক' না? বোধ
 হয় ঢাকায় 'ক' স্কুল জে এ স্কুল বিদ্যালয়
 প্রাথমিক, মাধ্যমিক, কৃত্তকাব্য বহুজন এখনও
 দিনই আছে। কলিকাতায় বেদুনি বিদ্যালয়
 তালুক প্রাথমিক

১৩মি 'আবেদন' বসেন। গায়েনেটে প্রধান-
ত্ব বিচারালয়ে একজন এডিশনাল মজিস্ট্রেট-
কে টেকনিকাল কমিটির অধ্যক্ষ করিয়া-
ছেন। তাঁহাকে সেখানেই মকদাম হু প্রধান
টেকনিকাল সুবিধা প্রদান করা করিতে হইবে
এবং তিনি সমস্তই কাজ আবেদন গাইবেন।

७. উচ্চ শিক্ষাদায়ক আদর্শ। যত্নে সমুদায়ের
 জ্ঞান আশ্রয়িতা যেন কলিকাতা পরিভ্রমণ
 করে। ইংলণ্ডে বাইবেল বিলিভা ওয়াশিং
 আর্ডিনসন পত্র প্রকাশ করিবার মানসে
 তবায়ী পুস্তক বাইবেল বিলিভার ওয়াশিং
 মণ্ডার উচ্চ শিক্ষাদায়ক হইয়া একটী মণ্ডা
 করিবার উদ্দেশ্যে।

তিনি আরো বলেন স্বাধীনতাসাম্রাজ্য
লাকসাম্রাজ্যের দুইটি নিয়ন্ত্রণ-একটি
সভা বহিষ্কার হেঁচ পাইতেছেন।

তিনি আরো বলেন ফিটজ জেই'সরম বাস
 কোর এবং কালীচক বাবাপুর সড়কদ্বারা কলি
 কাছার কাছাপুহ মনন করিয়া সন্ধ্যায় প্রকাশ
 করিয়াছেন, পূর্বের মত মন্ত্রণা আলা জেন হ-
 ইতে উঠিয়া গিয়াছে এবং উৎসবদিবসে ৭ নি
 কাং (কাপড়) ক্রয়ের অগ্রদূত হইয়াছে।
 ইহুবলীমণ আগুন আগুন দ্বন্দ্ব হিষ্কার আ-
 দান করিতে পারিবে।

বোম্বাই সার্টিফেট প্রিন্টিং বালেন কোম্পানি
জাহাঙ্গির আনিসাটিক লাইব্রেরিতে এসে
যা সাহিত্য গ্রন্থ সংগ্রহের পাঠ্যসূচীর উপর
প্রিন্টেড ।

१ हे कादम्बर कुम्भवायु ।

ବିନିମିତ୍ତ ବାଜେନ, ପାଠିକାଳୀୟ ବ୍ୟାପାରୀଙ୍କର
 ଚାହୁଁ । ହେଉଥାନ୍ତେ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ । ବାବଦାପକ୍ଷ ମତାନ୍ତର
 ଅନାନ୍ତର ମତାପଦ ଏତଦିନ ଧୂନ୍ୟ ହିନ୍ଦୁ ଗ୍ରାମ
 ମୁଖ୍ୟର ନବାବେର ଶ୍ରେୟ । ପାଠିକାଳୀୟ ମତାପଦ
 ହେଉଥାନ୍ତେ ।

জাৰ্জা নিউসেৰ দিৱা পুৰিছ নংবাৰ ৪৩ত।
 নলেণ, জাৰ্জিয়াৰ গিৰে বোৱা দিন দিন শিৰিষ
 এৰা হইয়া পৰিছে। কেৱ কেৱ জৰাই
 "জিৰা" আৰাৰিগেৰে ৰাজপুৰুষে হওঁ
 আক্ৰমণৰ ৰূপে হৈছে, আৰু কতকগুলি জন
 নং, ৩৪৩ত থাও হইয়াছে।

জিল্লোগেজেট বলেন না কেবলমাত্রের ঘৃণি
না নিবারণ করা নিজমের বইতে ২০০ টাকা
উদ্ধৃতি।

এই ক্ষেত্রে যদি কলিফাতা কলেক্টর
সাংসারিক আনন্দভাবিক দান সম্পন্ন হইয়া
গিয়াছে। এই ইহার প্রথম পারিতোষিক
দান। সভাপতি এটাই চাইতে। ও একেই
বি. কাউন্সিলের বারু প্যারোটান নিজে ও বারু
সাহেব বন্দোপাধ্যায় প্রভৃতি অনেক ভর
লোক উৎসাহিত হইয়া হারমিগের উৎসাহ
বর্জন করিয়াছেন।

বহুসংখ্যক স্বতন্ত্র পণ্যের দাখল বঙ্গের ১৮৬২
 সালের প্রথম আইনটোয় এক কোম্পানি টাকায়
 কিনা নাগরিকদের ১০০০০০০ টাকায় প্রসার
 করিয়াছে। অতঃপর নিম্নলিখিত কোম্পানি
 কয়েক কার্যক্রমে নিম্ন লিখিত টাকায় :

করিবেন :- সেতিহাসিক
 গ্যাস কোম্পানি ৩৫-০০-০০
 ডা কোম্পানি ৩৫-০০-০০
 ৫-০০-০০, "সেতিহাসিক"
 ২-০০-০০, "সেতিহাসিক"
 কবি : কোম্পানি ৩৫-০০-০০
 কোম্পানি ১-০০-০০ ডাকা সহস্রেরে
 ডাকা :

উক্ত পত্র-আজ্ঞা-বিশেষ
 লেখক-অধ্যাপক-স্বর্গ-আজ্ঞা-বিশেষ
 সত্য-বোধ্য-বিবক্ষিত
 সত্য-বোধ-বিশেষ

উক্ত গল্প আটকি বহন
বহনকারীকে সিলকি হাট
তা হাটকারীকে সিলকি হাট
অতীতের কল্পিত হাট
না হাট

উক্ত পত্র আশ্রয় করে এই ক্র. নং
উক্ত পত্র নং ১০১৫৫ আশ্রয় করে
আবদুল কাদের মহিউদ্দিন নবী ক. নং ১০১৫৫

ઉચ્ચ ગણિત આલોચના વક્રાવલોકન દ્વારા
 ગણિતશાસ્ત્રના અભ્યાસક્રમમાં સુધારા
 લાવવા હેતુએ સરકારે નિર્ણય લીધો છે.

চাকা কাটা
 সন্ন কাচার কারো
 সোফা চোখ বন্ধ
 গের নিকট হইতে
 বাহির হইতে

— 10 —

হরকরা) এক জন বাহিনীর
 ব্যবহারের বিষয় সিদ্ধান্ত
 উপরে সন্দেহ হওয়াতে তিনি
 তা শিখাই গর জন্য গর
 করেন, গর দিলে
 মাল বিক্রয়

ইহা সেপটম্বর অবধি প্রচলিত হইবে।
 ব্রাহ্মণী বীজের নামের।
 মেঘের আইক নামের।
 ভাষার বেড়ন পুষ্করভেদে।
 হে। এই মহামতি পলাইবাবিক
 মনঃ বিহারপতি হিলেন।

१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

ମାମଲି-୧୦ ଅନୁସନ୍ଧାନ କରାଯାଇ
 ଦେଖିଲା ଯେ ସେହି ମାମଲି ମନୁଷ୍ୟ
 ମନୁଷ୍ୟ ଶିକ୍ଷିତ ହୋଇଥିବା ଦେଖିବାକୁ
 ଯିବାକୁ ଯାଇଥିବା ଦେଖିବାକୁ
 ଯାଇଥିବା ଦେଖିବାକୁ

[illegible]



আসিয়া প্রদেশের আশায়ে বড়োহাতি অপর
করে, নতুন আর'স ও বিশদ বিবেচনা করি
বর্তমানের ন্যায় না হয় এইরূপ চেষ্টা
অধিক হইয়া থাকে, পূর্ব পূর্ব কালে উপায়
রূপে প্রকাশ লাভ না হইলে গৃহস্থানিকে ফেরে
পড়িতে হয় ।

আশা তরুণ্যের চৌদ্দাদিকের সাত্বিক
প্রভাব কাঁচা করিতে পারিতেছে না ।

সম্প্রতি এখানে বানাই ভূমির মণ্ডল
মহানর আগমন করিতে অস্ত্রা লোকেরা সাত
নয় আনন্ডিত হইয়াছেন । বারোটা মণ্ডল
অতি তরুণ ও ধর্মপায়ণ ।

উদ্ভূত বানী মনস্ক্রীণ্ড মনুষ্য
র বিদ্যা ভূষণ মণ্ডল অল্প দিন এখানে আসিয়া
ছেন, ইহার মধ্যে ইহাঁর নামে বোম্বি অভি-
যোগ পত্র জমা দাওঁবের নিকটে ফুঁরা ফুঁরা
পৌঁছিতেছে ।

২৮এ মার্চ ৬৩ সাল) পাঠকস্বা
এলাকা মীমুস

সোমপ্রকাশসম্পাদক

সংবাদলেখক ।

সম্পাদক মহোদয় । এই সাতটার মনুষ্য
লালবাণ নামক নামে এক নিবন্ধক হইতে অ-
বিভাগ হইতে কেন সন্তান এক একটা কেন মিত
হইতেছে, অস্ত্রা বক্ত চক্ৰমণি প্রাচীরের
তাল্ল কলক দ্বারা নিগদিত কেন জন্ম নতুন
ভক্তে প্রাণন করিতে সকলে তাল্ল পান করিয়া
পত্নীপুত্রিকের নাম সকলেই জানিবে বলিতেছে
তখনো কেননা কুলাবলিই অজ্ঞে লেপন, কেন-
না মনুষ্য লেপন করিয়া মিটার একটুকু নাম
বিষ উপায়ের দ্বারা উপভোগ হিতহে । কেননা
সিদ্ধ-সকল, মানসে বর প্রার্থনা করিতেছে । কি
প্রার্থনা? বোধ হয় আবার ইহা একটি নব
দেবতারূপে পরিগণিত হইবেম যে প্রাচীর
দে! কতদিনে তুমি এই কুসংসার পাশ হইতে
বিস্ফোরিত হইবে? হে মাতা, কতদিনে সোনার
পতাকা উড়িয়া যাইবে?

১৮৬৩ সাল
২২এ মার্চ

একান্ত রমণ্য
চিত্রলেখক চক্ৰবর্তী
সাতটার

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক
মহোদয় সতী

জন্মে গিয়াছেন । সুবিস্ময় যে তাঁহার বনে
বান বেড়াইয়া শীতান কর' বাড়িরিক-আর কো-
ন কর' নাই । কেবল প্রতিনিয় পূর্ণমেচৌর
চৌদা প্রাণ করিতেছেন । না তবে কেন, ইনকম
ইনকমের টাকায় পূর্ণমেচৌর কোম লক্ষ্য হ-
ইয়াছে ।

খোঁসার ছোট আফগানো জন্ম হাইট
সাতের আসিয়া এক দিন বিশকণ নিরুপেক-
ত দেখাইয়াছিলেন কিন্তু একদে আর সে ভাব
নাট । পুলাউড়ির কঠোর নাচেবের সাতীর মে ক
জান'র একটি প্রজাকে উদ্ধব দিতে বসিয়া-
ছেন । না তবে কেন এখানে গের লক্ষ্য মোস্তাব
বা কোথায় এত মেন'রই বা কোথায় যে
দাওয়াটা চাইতে আসিয়া লক্ষ্য করবে ।

সম্প্রতি এই পানবার অধীন মান। নামে
চুরি ডাকাতি'র বড়লা হইয়াছে, ২। ৩ টি
চুরি ডাকাতি'র সহায় না পাওঁর দায় এখন কি
নই আর নাট । আশার মণের শাকিরক
মিলেট সাত' মনে মনে অস্ত্র'ব করেন যে কি-
নি এই পানবারে হস্ত লাগন কর'ছেন কিন্তু
না'রী তাহা কহিতে নয় । সাত'র আবিষ্কার
তাঁহার হস্তে মিলে নিম্ন দিগ্ন রাত্রি, রাত্রি
দিন করিতে হ' তাহা তিনি টেরও পান না ।
মিলেট সা হব যে সকল আফগানকে অকিঞ্চিৎ ক
সিদ্ধা একদে তাহা দিগকে বিদ্বান করিতেছেন
তাঁহার আশ্রয় দান'র বাবা, এমনকি বিদ্বান তা-
দের ব'হাদুরের এবটু মন দেওয়া কর্জনা ।

সংবাদলেখক মহোদয় । এই সাতটার মনুষ্য
লালবাণ নামক নামে এক নিবন্ধক হইতে অ-
বিভাগ হইতে কেন সন্তান এক একটা কেন মিত
হইতেছে, অস্ত্রা বক্ত চক্ৰমণি প্রাচীরের
তাল্ল কলক দ্বারা নিগদিত কেন জন্ম নতুন
ভক্তে প্রাণন করিতে সকলে তাল্ল পান করিয়া
পত্নীপুত্রিকের নাম সকলেই জানিবে বলিতেছে
তখনো কেননা কুলাবলিই অজ্ঞে লেপন, কেন-
না মনুষ্য লেপন করিয়া মিটার একটুকু নাম
বিষ উপায়ের দ্বারা উপভোগ হিতহে । কেননা
সিদ্ধ-সকল, মানসে বর প্রার্থনা করিতেছে । কি
প্রার্থনা? বোধ হয় আবার ইহা একটি নব
দেবতারূপে পরিগণিত হইবেম যে প্রাচীর
দে! কতদিনে তুমি এই কুসংসার পাশ হইতে
বিস্ফোরিত হইবে? হে মাতা, কতদিনে সোনার
পতাকা উড়িয়া যাইবে?

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক
মহোদয় সতী

সম্পাদক মহোদয় । এই সাতটার মনুষ্য
লালবাণ নামক নামে এক নিবন্ধক হইতে অ-
বিভাগ হইতে কেন সন্তান এক একটা কেন মিত
হইতেছে, অস্ত্রা বক্ত চক্ৰমণি প্রাচীরের
তাল্ল কলক দ্বারা নিগদিত কেন জন্ম নতুন
ভক্তে প্রাণন করিতে সকলে তাল্ল পান করিয়া
পত্নীপুত্রিকের নাম সকলেই জানিবে বলিতেছে
তখনো কেননা কুলাবলিই অজ্ঞে লেপন, কেন-
না মনুষ্য লেপন করিয়া মিটার একটুকু নাম
বিষ উপায়ের দ্বারা উপভোগ হিতহে । কেননা
সিদ্ধ-সকল, মানসে বর প্রার্থনা করিতেছে । কি
প্রার্থনা? বোধ হয় আবার ইহা একটি নব
দেবতারূপে পরিগণিত হইবেম যে প্রাচীর
দে! কতদিনে তুমি এই কুসংসার পাশ হইতে
বিস্ফোরিত হইবে? হে মাতা, কতদিনে সোনার
পতাকা উড়িয়া যাইবে?

কর্মসম্পাদক
মহোদয় ।
সম্পাদক মহোদয় । এই সাতটার মনুষ্য
লালবাণ নামক নামে এক নিবন্ধক হইতে অ-
বিভাগ হইতে কেন সন্তান এক একটা কেন মিত
হইতেছে, অস্ত্রা বক্ত চক্ৰমণি প্রাচীরের
তাল্ল কলক দ্বারা নিগদিত কেন জন্ম নতুন
ভক্তে প্রাণন করিতে সকলে তাল্ল পান করিয়া
পত্নীপুত্রিকের নাম সকলেই জানিবে বলিতেছে
তখনো কেননা কুলাবলিই অজ্ঞে লেপন, কেন-
না মনুষ্য লেপন করিয়া মিটার একটুকু নাম
বিষ উপায়ের দ্বারা উপভোগ হিতহে । কেননা
সিদ্ধ-সকল, মানসে বর প্রার্থনা করিতেছে । কি
প্রার্থনা? বোধ হয় আবার ইহা একটি নব
দেবতারূপে পরিগণিত হইবেম যে প্রাচীর
দে! কতদিনে তুমি এই কুসংসার পাশ হইতে
বিস্ফোরিত হইবে? হে মাতা, কতদিনে সোনার
পতাকা উড়িয়া যাইবে?

[illegible]

১৯৭১ সালে বাংলাদেশের স্বাধীনতা লাভের পরে দেশের
 বিভিন্ন অঞ্চলে সামরিক বাহিনী প্রেরণ করা হয়।
 এই প্রেক্ষাপটে দেশের উন্নয়ন ও শান্তি
 বজায় রাখা ছিল সরকারের প্রধান লক্ষ্য।

সোমপ্রকাশ

“সর্বস্বার্থে সর্বজিহ্বায়া যাবিধা: কালী কলিযুগে ন দীপ্যতা।”

৫ ভাগ।
১৬ সংখ্যা।

{ সন ১২৬৩। ১২এ কালপুর্ন। ইং ১৮৬৩। ২ মার্চ = {

সোমপ্রকাশের অবয়ব বৃদ্ধি সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

আজি অবধি সোমপ্রকাশের আর এক
করমা হইল। অতঃপর বাঁহারা বাঁহা-
সিক মূল্য দান করিবেন, তাঁহাদিগকে ৫০
সাতের পাঁচ টাকা দিতে হইবে, বাসিক অ-
খিম মূল্য (১০ টাকা) অপরিবর্তিত রহিল।
মকবলের গ্রাহকদিগকে সত্তর ডাক মানুল
দিতে হইবে। বাসিক ডাক মানুল ৫০ মন,
কিছু বাঁহারা মূল্য প্রেরণ সংক্রান্ত চিঠি রে
জেরী করিয়া দিবেন, তাঁহারা তাঁহার ব্যয়
জারি আনা) বাদ পাইবেন। বাঁহারা সত্ত-
র ডাক মানুল দিতে অসমর্থ হইবেন, জানা-
ইবেন, আমাদিগের অগ্রত্যয় হইলে তাঁহা-
দিগকে মানুল দিতে হইবে না।

বিজ্ঞাপন।

কলিকাতার অস্ত্রপাণ্ডী বাটেকেশ্বরী
মহেশ্বরপুর নামে যে পত্রনি তালুক আছে,
তাঁহা দরপত্রনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা
হইবে। বাঁহারা সেই তালুক দরপত্রনি লই
বার অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি
কলিকাতার জার্ডন ফিনান্স কোম্পানির নিক-
টে আবেদন করিলে সবিশেষ হস্তান্তর আনিতে
পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

রামবাবু, হরু তাঁকুর, রামু মনিংহ, গৌর
কলিয়ার, মিত্যানন্দ টেবরাণী ককমোহন
তটীচাৰ্য্য প্রভৃতি প্রাচীন কবিগুরাদিগের
উত্তম উত্তম গ্রন্থগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত

করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য
১ এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

বহুবাজার ট্রিট ৭৬ নং বাড়ী।

শ্রীযুক্তগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং কো.

বিজ্ঞাপন।

দ্রুত মহাশয় মনমোহন তর্কালঙ্কার এণী-
ত বাসবদত্তা গ্রন্থ কেহ হাপাইতে পারিবেন
না। কারণ তদীয় পিতৃব্য - রামরায় তটীচা-
ৰ্য্য মহাশয়কে উক্ত পুস্তক তিনি দান করিয়া-
ছেন। তৎপুত্রে আমরা তাঁহার পিতৃব্যের উ-
ত্তরাধিকারী বর্তমান আছি। আমরা তির
বাসবদত্তার দান বিক্রয়ের বদ্ধাবিকার অন্য
কাহারও নাই। অতএব শ্রীযুক্ত বাবু রামদাস
সেন মহাশয় নিবিল প্রয়ত্ন হইল এই আশা-
দিগের অনুরোধ।

শ্রীরামলাল চট্টোপাধ্যায়
১২৬৩। ১ কাশ্বন
হুমিলা

বিজ্ঞাপন।

ডাক্তর হানিগ বরজর সাহেবের এসিষ্ট
ওলাউঠার ডিস্পেন্সারি একশে ঘণ্টাতলা বাঁহা
গের উত্তরে সাহাআদার মসজিদের নিজ প-
শ্চিমে কসাইটোলা টিউটের ৩৬ নং বাড়ী-
তে স্থাপিত হইয়াছে। বাঁহারা ঐযথ কিছা ও-
লাউঠ। রোগের চিকিৎসার প্রয়োজন হইবেক
উক্ত বাড়ীতে আমার নিকট আইলে অথবা
সংবাদ পাঠাইলে অবিলম্বে এবং অল্প মূল্যে

ঐযথ চিকিৎসা ও তা
বের বহি পাইবেন ই।

২০৬ সোমও

১২৬ নং

কলিকাতা সংক

বিক প্রভৃতি অধ্যয়ন
তাঁহাদিগকে এবিধে
কেন? কারণ এই ি
উপস্থিত হইয়াছে।
মিও ইহার সীমাহীমা
একটি বিবেচনার বি-
হার এক পক্ষে যুক্তি,
তন সংস্কার, এ উত্তরে
যুক্তি কাহারো প্র-
কৃত কার্যে করিবে,
সংস্কার সকলকে ক-
তেছে না। এই প-
বনা কার্য: আজি কা-
কল একাধিপত্য রে
তেছে, তাহাতে প্রত্যাবি
পক্ষ ব্যাহত হইবে,
লক্ষিত হইতেছে না।
হার পূর্বে কালেক্সে
তাঁহার কার্যও যুক্তি
তেছে।

এখন বধন সংক-
হর, তৎকালে তাঁহার

বিবাহের উচিত বিবেচনা হইয়াছে সন্দেহ
হইতে পারে না।

১ ০। পক্ষাৎ

বিবাহের কালে

হয়। যখন নিম্ন

কার উল্লেখিত হই

বার আংশিক রূপ

৪ নম্বর ব্যবহার

বিবেচনা কী। আর

ম্বর বেদপাঠ নিবেদ

নিক বসিয়া তৎপা

। কিং যখন সেই

কার হইতে

জাতিকে লওয়া না

। পুত্রের পদ সৎ

স্থানান্তিরেক করেন

নীচে হউক, আর

উত্তর হলেই তুল্য

বসনা। যাহা হউক,

। এতদ্বিধা

উপায় হইয়াছে,

মেটের নিরূপ

কন্যা বিক্রয় নিবেদক একটি

আইন তওয়া উচিত।

এদেশের উন্নতির অন্তরায় গণনা ক-

রিতে গেলে বহুবিবাহ প্রধান পদ-লাভ

করিবে সন্দেহ নাই। এই কুসংস্কৃত প্রথা নি

বন্ধন ঘদদেশে যে যে অপকার হইতেছে,

অনেকে অনেক বার তাহার গণনা করি

য়াছেন, তাহা এক প্রকার পুরাতন হইয়া

নিয়াছে, তদ্বিধে আমাদিগের মতন বন্ধ

নাই। বিদ্রোহ ঘটনার পূর্বে এই সম

ন প্রথার উল্লেখ এক বার চেষ্টা হই

য়াছিল, কিন্তু তাহাতে কলোদর হয় নাই।

সম্প্রতি এদেশীয় এক জন প্রধান সমাজ

সংস্কারক পুনরায় এবিষয়ে হস্তক্ষেপ করি

য়াছেন এবং তারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার

অন্যতর সভা এতৎসংক্রান্ত এক বিল ব্যব

স্থাপক সভায় উপস্থাপিত করিবেন, অসী

কার করিয়াছেন। আমাদিগের দেশের লো

কেরা রাজসহায়তার অপেক্ষা না করিয়া

স্বয়ং সমাজ দোষ সংশোধন করিবেন, আ

জিও একপ আশার অবকাশ হয় নাই। রা

জবিধি দ্বারা বলপূর্বকই ইংলিগকে তদ্বি

য়ে প্রবর্তিত করিতে হইবে। এবিষয়টি অন্য

অন্য বিষয়ের ন্যায় ধর্মসম্বন্ধ নহে। অতএব

ইহাতে হস্তক্ষেপ করিয়া সাধারণ প্রজার বি

ষেয়তাজন হইবার সম্ভাবনা নাই। বহুবিবাহ

নিবন্ধ হইলে কেবল যে আমাদিগের স

মাজ একটি মহত্তর অপকর্ষ হইতে মুক্ত

হইবে একপ নয়, অনেকসংখ্য হতভাগ্য

রমণী অসহ্য যন্ত্রণার হস্ত তহিতে পরিণাম

পাইবেন সন্দেহ নাই। সেই যন্ত্রণা এক

বিধ ও একজাতীয় নহে। অনেকে এক

কাণে স্বামি সৌভাগ্য ও সংসার সুখে

বঞ্চিত হয়। অনেকে চিত্ত দৌর্বল্য হেতু

আপনাকে ও পিতৃ কুলকে চির কলঙ্কিত

করে। সেই সেই হতভাগ্যদিগের জন্য

পিতামাতাকে অসংখ্য ক্লেশ ভোগ করিতে

হয়। অদ্য আমাদিগের এবিষয়ের প্রম

করিবার উদ্দেশ্য এই, এই সঙ্গে সঙ্গে

কন্যা বিক্রয় নিবেদক একটি আইন করা

আবশ্যক।

বহুবিবাহের ন্যায় কন্যা বিক্রয় বিধ

য়েও রাজ হস্তক্ষেপ অবৈধ হইতেছে না।

সমাজের অনিষ্ট ও নিকর্ষকারিতা পক্ষে

বহুবিবাহের ন্যায় ইহারও বিলম্বন মপ

ক্ষতা আছে। ইহা কেবল ভিত্তিশাস্ত্র প্রতি

বিদ্ধ নয়, এদেশীয় ভক্তলোকদিগেরও

নিতান্ত বিদ্ভিষ্ট। যে বিষয়ে অধিকাংশ

লোকের ও ধর্মের বিদ্বেষ আছে, তদ্বিধে

হস্তক্ষেপ করিয়া নিরাপত্তা জ্ঞান হইবার

সম্ভাবনা কি। কন্যা বিক্রয়ের দোষ এক

প্রথম নহে। প্রথম, পিতামাতা কন্যাকে অর্প

নোতে গো মেঘ মহিষের ন্যায় বিক্রয়

করেন, কিন্তু সেই বিক্রয় যে কতদূর যুক্তি

সিদ্ধ, তাহা আমরা বুঝিতে পারিতেছি

না। দ্বিতীয়, পিতামাতার কন্যার উপরে

প্রভুত্ব আছে যথার্থ বটে কিন্তু সেই প্রভ

ত্ব বলে এক স্বাধীন জীবকে যেচ্ছন্নত

বিক্রয় করা ক্রমে সমস্ত হইতে পারে-

যাহারা কন্যা বিক্রয় করে, তাহাদিগের ব

রের কপ জ্ঞান ও অর্থ সম্পত্তির বিষয় বি

বেচনা করা নাই, পরিণামে কন্যার কি

দশা হইবে, তাহাও এক বার বিবেচনা

করা হয় না, যে অধিক টাকা দিতে পারে

সেই বিক্রয়কার প্রিয় পাত্র হয়। এতট

প্রসিদ্ধ কথাই আছে, কন্যা বিক্রয়কার

কন্যা জন্মে তাহার এক কালুড় লাভ

হইল, জ্ঞান হয়।

কন্যা বিক্রয়কারিরা সচরাচর যে সক

ল ব্যক্তির হস্তে কন্যা সমর্পণ করে, তাহ

র দুই একটি উদাহরণ প্রদর্শিত হইতে

ছে, তদ্বারাই ইহার অনর্থকারিতা পরি

ক্ষুট রূপে প্রাকগণের হৃদয়ঙ্গম হইবে।

বোধ কর এক ব্যক্তির ৫ বিঘা মাঠ ত

কোমর কুড়ি ছিল। সে তাহা বিক্রয় করি

করা উত্তর পশ্চিমা
র্গের পদের যথেষ্ট
সিতেছিলেন। ইচ্ছা
বকে, কেহ হারিও
বা অন্যকে ঐ পদ
ছিলেন। আমরা নি
বর্ষীয় প্রধান কৌজি
বসমিত সভা হারিও
ন প্রাপ্ত হইয়াছেন।
এদেশে অনেক দিন
কাল বারুয় অনেক বিধ
ছেন; তাহার কার্যো
ছে। অতএব তাহাকে
পদ দান করা গর্বমে

রা বিবাহ করিল। তাহার বড় উপার্জন কমতা, বিদ্যা ও বুদ্ধি, এক ভূমি বিক্রয় দ্বারা সে সমুদায়ের পরিচর্য্য হইল। তাহার নিজের উপার্জন কমতা মাই; তাহার যে পৈতৃক সঞ্চিত বস্তুকি কিছু অল্পের সংস্থান ছিল, তাহাও গেল। এখন সে কি কপে আপনায় ও পরিবারের প্রতি পালন করে? কিন্তু সেই বা তাহার সন্তান সন্ততির লেখা পড়া হয়? উহারা যে পরিণী মে পরের গলগ্রহ হইয়া উঠবে, তাহা নিয়ে সন্দেহ কি? কলক: এইরূপে যে বিবাহ নির্বাহ হয়, তজ্জাত সন্তানগণের প্রায় লেখা পড়া হয় না। তাহার পৈতৃক সম্পত্তির মধ্যে কেবল পিতার নিম্নতা ও বুদ্ধতার অধিকারী হয়। এতদ্ব্যতীত নিমিত্ত বুদ্ধতা অনেক গৃহকে অধিকার করিয়া আছে, দেখিতে পাওয়া যায়। এতদ্বারা কি প্রতিপন্ন হইতেছে না যে কন্যা বিক্রয় কেবল কন্যার সাংসারিক সুখের কণ্টক নয়, সমাজেরও একটি বিষম কণ্টক স্বরূপ হইয়া আছে। যে কন্যা বিক্রীত হয়, সংসার ধর্ম্মে প্রবৃত্ত হইয়া প্রায় তাহাকে অনন্ত চরবস্থা ভোগ করিতে হয়, বোধ হয়, অনেকে বুঢ়কে ইহা দর্শন করি যাহেন।

২০৭

অপর, কন্যাবিক্রয় বার্তাশাস্ত্রের এ কাণ্ড অননুমোদিত। বার্তাশাস্ত্র সকল কে প্রম করিয়া জীবিকা অর্জন করিতে কহে, কিন্তু কন্যা বিক্রয়কারির তাদৃশ ভীতিকা অর্জনে প্রয়োজন হয় না। কন্যাই তাহাদিগের জীবিকা, কন্যাই তাহাদিগের সম্বল। যে কন্যা বিক্রয়ের এক দোষ, তন্নি বারখার্ব রাজ বিধির দ্বারা হস্তাবলম্বন কি আবশ্যক নয়? উপসংহার স্থলে আমরা ব্যবস্থাপকগণকে এই মাত্র অনুরোধ করি তেছি, তাহাদিগের কন্যা বিক্রয়ের অন্য ন্য দোষানুসন্ধানে প্রয়োজন নাই, তাহারা কেবল এই বিষয়টী বিবেচনা করুন, পিতা তাহাদার লোভ প্রবৃত্তির চরিতার্থতার

নিমিত্ত কন্যার বাবজীবন সাংসারিক সুখে বিসর্জন কর কেন? তাদৃশ কন্যাপন আমাদিগের সমাজ সংস্কার ও ব্যবস্থাপকগণের কি কৃপার পাত্র নহে? আমরা এতীকা করিয়া রহিলাম, বহু বিবাহ বিলের পরেই যেন কন্যাবিক্রয় বিল বাবস্থাপক সত্য প্রবেশিত হয়।

তারতবর্ণের জীবিত
প্রকৃত পথ কি?

আজি কালি " তারতবর্ণের তারতবর্ণ শাসন " ও " তারতবর্ণের জীবিত সাধন " এই দুই মনোহর বাচ্য অনুকণ আমাদিগের প্রবণ গোচর হইতেছে। অনেকে ব্যাখ্যার মধুর সংগীত দ্বারা মগনশীল হইয়া এই দুই মনোহর বক্তার পুনঃ পুনঃ উচ্চারণ দ্বারা লোককে মোহিত করিয়া দ্বার্ষ সাধন করিতেছেন। অধিক কোতের বিষয় এই, তারতবর্ণের জীবিত সাধনের একুত পথের আবিষ্করণে অঙ্গ লোককে উদ্বুদ্ধ দেখা যাইতেছে। তারতবর্ণের জীবিত সাধনের একুত পথ কি, তন্নির্ণয়ে প্রবৃত্ত হইতে হইলে, অগ্রে তারতবর্ণ শব্দের অতি ধৈর্য নির্ণয় আবশ্যক। এখানে তারতবর্ণ শব্দে তারতবর্ণ বাসী লোক বুঝাইতেছে। তারতবর্ণ একগুণে অনেকবিধ লোকের বসতি হইয়াছে, সে সমুদায়ই তারতবর্ণ শব্দের বাচ্য সন্দেহ নাই। কিন্তু যখন জীবিত সাধন করা হইতেছে, তখন তাহাদিগের মধ্যে তাহাদিগের জীবিত সাধনের অঙ্গতা আছে, তাহারাই এখানে এই শব্দের মুখ্য অর্থ। এইরূপে মূল্যার্থ গ্রহণ করিলে অজ্ঞতা হিন্দু ও মুসলমানেরাই নিঃসংশয় জীবিত সাধন হয়, ইউরোপীয় ও আমেরিক প্রভৃতি লক্ষ্য হয় না। কারণ কে যে জ্ঞ ব্যক্তিরা জীবিত সাধন হইয়া এ দেশে আসিয়াছে, বিশেষতঃ এ দেশে তাহাদিগের ভাগ অতি অঙ্গমাত্র দৃষ্ট হয়। সেই অঙ্গ সংখ্য লোকের (৩০ বা ৩৫ হাজারের) নিমিত্ত অধিকসংখ্য লোকের

কার্য্যে বিপরীতভাবে সাধন হইতেছে। সেই ১৮ কোটির জীবিত সাধন সেই ৩০ বা ৩৫ হাজারের সাধন করা হইতেছে।

পতিত ভূমি বিক্রয় হইলেও জীবিত হইবে, কথা উঠিল; তাহা বিক্রয়ের নিয়মাদি একটুকু মনে সেই বিক্রয় কার্য্য দ্বারা বিক্রয় বা ইউরোপীয় কে অধিকতর হইলেন? তারতবর্ণের বাসিন্দা তুলার চাব হইলে তারতবর্ণের হইবে, কথা উঠিল; তুলোপত্রের মি অধিক হইল, চাব-আলুর বহু সম্বন্ধে রাজ্য ঘাট প্রভৃতির জীবিত হইতে লাগিল, তাহাতে অধিকতর বাস কে হইল? তারতবর্ণের বাস সম্বন্ধে উদ্বুদ্ধ লাভ করিতে পারেন কণ্টকিত বিধিবদ্ধ করিলে সেই উদ্বুদ্ধ তাহাদিগের দ্বারা এই ভাগ করিয়া তাহা বিক্রয় চেষ্টা হইল, কেউ কেউ চেষ্টা করিয়া হইলেন, অঙ্গমাত্র পদচ্যুত করিবার উদ্দেশ্যে " তারতবর্ণ শাসন " এর উদ্দেশ্য চেষ্টা হইতে লাগিল, যদিও সকল হয়, কে তাহারা অধিক বাস হইবেন? তারতবর্ণের জীবিত সাধন সহিত এতদূর ভাষা বিরোধ হইলে হোটে আমদানি হইলে তার জীবিত হইবে, অঙ্গমাত্র হইল; হাট হোটে আমদানি প্রতিষ্ঠিত হইল তাহারা কে অধিকতর লভবান? নিমিত্ত সর্বিসের পরামর্শ দ্বারা করিয়া ইংলণ্ডে তুল্য হইল রীতি হইলে তারতবর্ণের জীবিত হইল; তৎপ্রাণ তাহার প্রবর্তিত তাহারা কে সমধিক লাভবান? এখানে অনেক

ইউরোপীয়েরা কি এদেশীয়দিগকে উল্লিখিত বিষয়ের কল ভোগ করিয়া নিবারণ করিয়া রাখিয়াছেন? কেহ শ্রমের সাফল্যসম্বন্ধে কতক বিবরণ কল ভোগ নিবেদন করেন নাই বস্তুতঃ, কিং পরস্পর। সম্বন্ধে নিবেদন করা আছে ইউরোপীয়েরা এদেশীয়দিগের পক্ষা অনেক বিষয়ে আধার লাভ করিয়াছেন, তাহাদের ধর্ম ও আচার ব্যবহারের একবিবক্ষণ তাহাদের অনেক বধা আছে; অতএব তাহাদের সহিত দেশিদিগের প্রতিযোগিতা হইলে এদেশে যে কলভোগে বঞ্চিত হইবেন তাহা ভবিষ্যৎ কলকগুলি বিষয় কেবল এদেশীয়দিগের সুবিধা উদ্দেশ্য করিয়াই হইয়া থাকে, তদ্বারা এদেশের আনন্দ যে যৎকিঞ্চিৎ উপকার লাভ হয়, তাহা নহে।

যে বিষয় দ্বারা এ দেশের জীবিত হইয়া আছে, তদ্বিষয়ে এ দেশী সাফল্য সম্বন্ধে প্রবর্তিত করা, সেই বিষয়ে ইহাদিগকে শিক্ষা দেওয়াই এদেশের জীবিত সাফল্যপথ। এদেশে রেলওয়ে হইলে কেহ এদেশীয়েরা আরোহণাধিকার সামান্য কল বিনা যুখ্য কল ভোগে পারী হইতে পারেন নাই; রেলওয়ে দেশে হয় নাই, ইহারা কল প্রকৃতির ও চালনা বিধি তখন যেমন অজ্ঞ ছিলেন, এখনও সেইরূপ রহিয়াছে। ১২ বৎসর হইল, এদেশে রেল হইয়াছে, এপ্যন্ত এদেশের লোকের কল খনন কল প্রকৃত করি এদেশের কল জন লোকে শ্রুতি পাইছেন? এদেশের কল জন লোকে জ্ঞান শিখিয়াছেন? একে ত এদেশে সহজে আলস্য পথ্য পরিচায়া সমসাধ্য কার্য ব্যাপ্ত হইতে পারে। তাহাতে আবার কাহার উৎ

সাহ দেওয়া নাই, এতদ্ব্যতীত অসুখসাহ দেও আছে। এদেশীয়েরা ততৎকায়ে সমর্থ হইবেন না বলিয়াই অনেকে নিষেধ করিয়া রাখিয়াছেন। বাহ্যিক বুদ্ধি আছে, তাহাকে শিখাইলে শিখিতে পারে না, একি রূপ কথা? শিক্ষা ও কাজ না করিলে কি কখন কাহার বুদ্ধি মার্জনা, শরীর পাটব, লাহস ও বল বীজ্যদির বৃদ্ধি হয়? রেল পাড়ির কল ও তরুণকরণ ইংলণ্ডে প্রকৃত হয়, আর এখানে প্রকৃত হইতে পারে না, ইহা বুদ্ধি রালওরা সহজ নহে। চেষ্টার অসাধ্য কোন কৰ্ম আছে? এদেশে চেষ্টা নাই বলিয়া সমুদায় বিষয়েরই অসমর্থি। বা দালিয়া যে যে কারিক্রিয়া করিতে পারেন, সাঁওতালেরা কি তাহা করিতে সমর্থ? তাহাদিগের সে অসামর্থ্যের কারণ কি? তাহাদিগের শিক্ষা ও চেষ্টা নাই। এদেশে তুল্য জগিতেছে, কিন্তু সে তুল্য ইংলণ্ডে গিয়া কৃত ও বৃত্ত হইয়া আসিতেছে, গতানুগতিক আহার ভাড়া লাগিতেছে; এ দেশীয়েরা কেবল মজুরী করিয়া তাহার উপাধন করিতেছেন মাত্র, সেই তুল্য প্রকৃত কলভোগী হইতে পারিতেছেন না। এদেশে তুল্য জগিতা ইংলণ্ডে চলিয়া গেল, তাহাতে এদেশের কি জীবিত হইল? এদেশীয়দিগের মজুরী লাভ, ইহাই কি জীবিত জীবিত? এদেশীয়েরা কি তুল্য পরিহার করিবার ও বৃত্ত প্রকৃত করিবার কল করিতে শিক্ষা করিয়াছেন? ইহারা কি সেই কল দ্বারা বৃত্ত প্রকৃত করিতেছেন? এদেশে সেই কল প্রকৃত করিলে এবং ইহাদিগকে সেই কল প্রকৃত করিতে শিখাইলে কি এদেশের মজুরী জীবিত হইত না?

আমরা উপরে উদাহরণরূপ কেবল কয়েকটি বিষয়ের প্রসঙ্গ করিলাম, এদেশীয়দিগকে কাজে প্রবর্তিত করিবার শিক্ষা দিবার অনেক বিষয় আছে, ইহারা যাহা সেইগুলি বৃত্ত ও বৃত্তে সমাধান করি

তে সমর্থ না হইবে, তাহা এ দেশের সমস্ত জীবিত লাভ সমাধান নাই। গবর্ণমেন্টের যে তদ্বিষয়ে শিক্ষাদান ও উৎসাহ দানের ভার, সেখানে বলা বাহুল্য। পিতাই পুত্রদিগের শিক্ষাদান ভার গ্রহণ করেন। যে পিতা বৃত্ত পণ্ডিত হন, তিনি কখন পুত্রকে অজ্ঞান, অন্ধ ও দুঃখপন্ন দেখিয়া নির্ভুত হইতে পারেন না। আমাদের গবর্ণমেন্ট যদি অজ্ঞ হইতেন, আর এদেশীয়েরা শিক্ষা রসজ্ঞ হইতেন, আমরা তাহাদিগকে উদ্ভেজন করিতাম না। ব্রিটিশ গবর্ণমেন্ট এ দেশের শিক্ষা, রক্ষা প্রকৃতি যাবতীয় বিষয়েরই ভার গ্রহণ করিয়াছেন। এখন সেই গুণীত ভারোচিত কার্য না করিলে তাহাদিগকে কর্তব্যের অননুষ্ঠান জনা প্রত্যাহার ভাগী হইতে হইবে।

— — —

এল, এল, উপাধিধারিরা প্রধানতঃ
বিচারালয়ে ওকালতী করিতে
পারিবেন কি না?

সম্প্রতি সর বার্নেস পিকক এই প্রশ্নটি উত্থাপিত করিয়াছেন, যে সকল ছাত্র বিশ্ববিদ্যালয় হইতে বি. এল, এবং এল, এল উপাধি প্রাপ্ত হইয়া ওকালতি করিতে আসিতেছেন তাহাদিগের উত্তর জ্ঞেয় একবিধ বৃত্ত ও ক্ষমতা দিয়া প্রধানতঃ বিচারালয়ে ওকালতী করিতে দেওয়া উচিত কি না? এই প্রশ্ন উপলক্ষ করিয়া অনেক বি. এল, সমবাসসারী এল, এল, উপাধিধারিদিগের বিরুদ্ধে চিৎকার আরম্ভ করিয়াছেন। তাহারা বলেন তাহারা এখন বি. এ, উপাধি প্রাপ্ত হইয়া আইনের পরীক্ষা দিয়া বি. এল, উপাধি প্রাপ্ত হন, কিন্তু এল, এলেরা কেবল এল, এ, পরীক্ষা দিয়া ব্যবস্থা অব্যয়ন করেন। পরীক্ষার মধ্যম ও সন্মান নহে। বি. এলদিগের প্রতি বিষয়ে সমুদায়ের অর্ধেক মধ্যম লইতে হয়, পক্ষান্তরে এল, এলেরা তৃতীয়াংশ প্রাপ্ত হইলেই এল, এল পদ পাইয়া থাকে

पठित कुमि, विकृत मंगलात
आहेत।

১৪ ই কালগুণের কার্যত্ববর্ষীয় ব্যবস্থা
পূর্ব সভার হারিস্টন সাহেব পণ্ডিত ভূমি
বিক্রয় সংক্রান্ত বিল উপস্থিত করিয়াছি
লেন ।- উহা অবিলম্বে বিধিবদ্ধ হইয়া
হে । পণ্ডিত ভূমি বিক্রীত হইয়া বনপূর্ণ
ভূমি পরিচ্ছন্ন ও তথার নামাধিধ শস্য ও
চা প্রভৃতি উৎপন্ন হয়, গবর্ণমেন্টের এই
নিষেধ আভিলাষ । [তদ্বারা ভারতবর্ষের
সকল হইবার সম্পূর্ণ সভাবনা আছে ।
কিন্তু এংলীর দোবে গবর্ণমেন্টের সেই
উৎকৃষ্ট মনোরথ সকল হইবার ব্যতিক্রম
ঘটিতেছে । লোকে ভ্রমিসিত হাঁহাদিগের
নিকট কৃতজ্ঞ হইতেছেন না । পাঠকগণ কি
মনে করিতেছেন, আমরা এই কথা বলি
তে, হি যে এদেশের অধিকাংশ ভূমি বন
পূর্ণ থাকুক ? না, আমাদিগের সে ইচ্ছা
নয় । আমরাই সমুদয় ভূমি লইব, অন্য
জাতিকে বিশেষতঃ ইউরোপীয়দিগকে এ
দেশে কৃষি কার্য্য করিতে দিব না । ইহাও
আমরা এক দিনের জন্য মনে করি না ।
ইউরোপীয়েরা আহুন, কৃষকদিগকে উৎকৃ
ষ্টরূপে কৃষি কার্য্য প্রভৃতির শিক্ষা প্রদান
করুন এবং সাক্ষাৎ সহজে হটক আর
পরাম্পরা সহজে হটক দেশের ধন ও সৌ
ভাগ্য বৃদ্ধি করুন এইচ্ছা কোন ভারতবর্ষী
দের না হইবে ? এখানে আমাদিগের কে
বল বস্তুবা এই, এদেশীয়দিগের উপরে
তক্ষণা অত্যাচার না হয়, এবং গবর্ণমেন্ট
নিজে অবিচার না করেন । ২০৯

হারিণ্টন সাট্‌বের বিলের মর্ম এই,
পতিত ভূমির উপর কাহার স্বত্ব থাকিলে
তিনি তাহা বিক্রীত হইবার অনতিপূ
র্বে জেলার কালেক্টরের নিকটে জানা
ইবেন। কালেক্টর সে বিষয়ের শীঘ্র
(সম্মারি) বিচার ও নিষ্পত্তি করিবেন।
অর্থাৎ যদি তাহাতে অসন্তুষ্টি হন, তাহা হ
ইলে উক্ত আদালতে আপীল করিতে পা

হইবেন। এই বিচার্য্য অর্থ আদায়
 তি সেই আদায়ের দ্বারা কলিকাতা
 দিগের আদায়ই হুগলী হুগলী হুগলী
 হুগলী যদি কোন বিচার্য্য এই অর্থ
 বোধ হইবে, অর্থাৎ অর্থিক দিক
 দালতের মত গ্রহণ কর এই বিচার্য্য
 ক্রম হইলে যদি কোম দিগে অর্থ
 করেন, আর তাঁহার অর্থিক দিক
 নিক ও তাঁহার দিগে অর্থিক দিক
 হয়, তথাপি তিনি বিচার্য্য অর্থ
 হইবেন না; গবর্ণমেন্টের দিগে
 তাহার মূল্য অর্থাৎ কাঁ। পাঠ্য
 যে যে কারণে সর। দিগে
 কানিডের পঠিত কুনি হুগলী
 পরিবর্তন করেন, তৎপক্ষে
 একটা প্রধান। উক্ত মূল্য
 অন্য অন্য সঙ্গতির দিগে
 বহু ও কানিড আদায়
 কর্তব্য। হারিস্টন দিগে
 দিগে গবর্ণমেন্ট বলেন, দিগে
 ব্যক্তি তাঁকা দিগে কুনি
 দিগে মূলধন বিনিবেশ
 বর্তী করিয়া কুনি
 তাহা হইতে বহু হুগলী
 র অতিশয় কর্তের হইবে
 বাহার যে সঙ্গতির
 বহু আছে, সে তাহা
 করিলেও যদি তাহাতে
 না দেওয়া হয়, সেটী
 কর্তের হইবে না? তাহা
 দিগে ব্যবহার নয়? সর্বদে
 এই নিয়ম হইয়া আসিতেছে,
 বাহার বহু অর্থাৎ
 কে অবশ্যই দিতে হইবে,
 কিছু লওয়া আর না
 কোন দেশের কোন
 অনাগমোপভোগের
 যেন মাই। ভারতবর্ষের
 ব্যবস্থাপক সভা ইচ্ছামত

কে কেবলি তরলবলন করে নাই।
হুইট সত্যক অসত্যবাহার ছিল,
কর্মসি নিরুদ্যমির জ্ঞান তৎপ্রদেশে।
পুটি কাচেরিত হয় নাই, তখনও ই-
কে কিছু পুটিকর প্রব্য তখনও প্রবর্তন
এন নীলকর। অমায়্যা শীতল কেবল-
ক। বহন প্রক্তি হুইটপাত করিলে স্পষ্ট
কর আছে যে ইংলওবাসিনীগের ন্যায়
। মাঝি শারীরবিধানবিৎ পণ্ডিতগণের
। বিদ্যাইহাও সবল শরীর হইবার উ-
রিভে দূর্ব অধক শ করিয়াছে।
রা কি অল বা ও হুটিকাদির উপরে
। শি করিয়াছে। আবাদিগের শারীরিক
। হু কীপতা ৫ নির্ভর করে, তখিবরে
। শারী। বিধানবিৎপণ্ডিতেরাও
। সিদ্ধান্তক রাছেন। এতখিবরে স-
। জেন্স কে লীও সাহেব বাবা বলেন
। সার তখি মিরে সফলিত হইল।
। লেন " মনু " যে বে দেশে বাস করে
। ই দেশের ৫ শ বাহু হুটিকাদির তার-
। হু বাহ্য্য ইবাণে তাহার শারীর-
। নসিক শাি ইত্তর বিবেক হয়।
। ৩, সাপর্গা প্রভৃতি দেশে অত্যন্ত
। তা ও প্রা মৎসর হয় বাস আর
। মর অতাই বিবহন তত্তদেপবাসিরা
। ও দুর্জল ংলগেপী বিনির্ভ হয়।
। গাি অণে ৫ অক্ষ শীতল দেশবা-
। আবার বিলক্ষণ সবলকার ও মানসিক
। বিনির্ভ হয়। ৪৫ ও ৬৩ ডিক্রী
। রেখার মধ্যে স্থাপিত দেশবাসিরা ইহা-
। াণ, তাহারাই পৃথিবীত সকল আতি
। কা হুটকার ও দেশ সত্য করিতে সক্ষ-
। যেসকল দেশে সর্বদা অহু পরিবর্তন
। তদেপবাসিগেরও তৌতিক ও মান
। বনের বিলক্ষণ প্রাচুর্ভাব হয়। বখা- ডে-
। হুইভেন, ইংলও ও তৎসমিহিত দী-
। ৩ কোপল্যাণ্ড সাহেব আরো বলেন
। ১০ হল ভূমি সমুচ্চর অপেক্ষা অধিক
। ৫ ংলভাদির নিকটস্থ, সেই সকল স্থান
। রা বিলক্ষণ দুর্জকার হইরা থাকে। তা-
। ব্যাদ্যাদি কপ কার্যে বিলক্ষণ রত এবং
। ও নিঃ সুবিহ মোকের অপেক্ষা

অধিকতর দীর্ঘজীবী হয়। তাহাদিগের
। জীতলাকে। অধিকতর সত্যবাহু ও সর্ব
। বহাবা হইরা থাকে।
। এতদ্বারা তাই প্রতীয়মান হইতেছে যে
। স্বাস্থ্যকর অল বাহু হুটিকাদি বিনির্ভ দেশে
। বাস করিলে লোকের স্বভাবতই পুটিকর প্রব্য
। তখন প্রভৃতি হইরা থাকে। আগর, কুচ
। কার হয় বলিয়াই তাহার স্বভাবতঃ (৩)
। আভ্যাসিক বলোপার্জন প্রভৃতি হয়। তাহা-
। নিগের বেশী স্বভাবতঃ হয়, আবাদিগকে
। তাহা চেষ্টা করিয়া করিতে হইবে। কিন্তু কি
। রূপে সে চেষ্টা করিতে হইবে, আবার আগা-
। বি বাবে পাঠকগণের গোচর করিব।

মুতন পুস্তক ও পত্রিকা।

কয়েক সপ্তাহ হইল, কয়েক খানি মুতন
। পুস্তক ও পত্রিকা আবাদিগের হস্তগত হই
। রাহে। অবকাশ বিরহে আমরা কেবল যে
। প্রবন্ধকার ও পত্রিকা প্রণয়নকারিগণকে প্র-
। মনোমুগ্ধ করিতে অসমর্থ হইরাছি এরূপ নহে,
। আপনাদিগের স্বকর্তব্য সাধন করিয়া তাহাদিগের
। নিকটে ংল মুতন হইতে পারি নাই। অল
। কিংপ পরিব্রাণে ংল শোখে প্রভুত হইলাম।

১। সীতার অধবেশন। পদ্যময় গ্রন্থ। ঢাকা
। বাতাল বাজার ব্রাহ্ম কুলের পণ্ডিত জীমদন
। মোহন মিত্র প্রণীত। ইহা ঢাকা মুতন বস্ত্রে
। মুদ্রিত হইরা প্রচারিত হইরাছে। ইহাতে রা-
। বের বিব্রহ ও বিলাপ বর্ণিত হুই হইল। আ-
। বরা কয়েক স্থান আনন্স সহকারে পাঠ করি
। লাম। রচনা সম্পূর্ণরূপে নির্ভোব হয় নাই ব-
। তে, কিন্তু সলিত হইরাছে। প্রবন্ধকারের কাব্য
। রচনা বক্তি আছে, তাহা স্পষ্ট বোধ হইল।
। কয়েকটি কবিতা উদ্ধৃত হইতেছে, পাঠ-
। কগণ স্বয়ংই কবির সম্ভবতঃ পরীক্ষা করুন
। উদ্ধৃত কবিতা কয়েকটি এই—

করি রান উর্ধে বিলোকন,

বলে অচেতন বেধে ভেবে সচেতন,

ভবি যে জীবন হাতা, জীবের জীবন পাতা,

এই বার বঁচাও জীবন।

(৩) দ্যায়ানি বাবা যে বলোপার্জন
। হয়, তাহাকে আভ্যাসিক বল কহে।

আমি মই মনের উদ্যোগে,
। মোর মনরমে শত ধারেরিহে গাঁহি,
। সন্ন্যাসী বসে, কখন কখনো প্রসে,
। বহির্করি সন্থিত অপি পাঠি
। ভূমি না ক উতাপ বাহুণ
। আমার উতাপ কেন কর মই সোচন,
। তোমার এতকি আছে, গিরা প্রেরণি কহে
। জায়াইহে মনের বহুণ
। যে বারিহ। বারি বিবেক,
। কত মলী মল পূর্ণ কর কণে কণে,
। মোর বাহ্যপূর্ণ কর, হইরা মনোমুগ্ধ হয়,
। বাও আন-প্রিয়ান কহে।
। বিমল বসিও প্রেরণীয়ে,
। তব প্রেরণী মল তালে মনোমুগ্ধ,
। আর কি শিখাও আমি, বা বেখভাতকবাণী
। তাই বলে এস বেহে কিহে।

২। পদ্য পাঠ প্রবন্ধকাগ বিতীর্ণবার সু-
। মিত। জীবুজ বস্তু গোপাল চট্টোপাধ্যায় ইহা-
। র সফলন করিয়াছেন। ইহা লালকনিগের পা-
। ঠাধ সংগৃহীত হইরাছে। বিদ্যালয়ে পদ্যগ্রন্থ
। বিরল প্রচার, বহু বাহুর এই গ্রন্থ অনেক অং-
। থে সেই অভাব দূর করিতে সমর্থ হইরাছে।
। বহু বাহু যে গুলি স্বয়ং র না করিয়াছেন, এ-
। বং যে গুলি সংগ্রহ করিয়াছেন, উত্তরেতেই
। তাহার সম্ভবতঃ পরিচর হইরাছে।

৩। ধর্মচর্চা। ইহাতে প্রবন্ধকারের নাম
। অথবা কোন্ বস্ত্রে মুদ্রিত হইরাছে, তাহা লি-
। খিত নাই। বোধ হয়, কলিকাতা ব্রাহ্ম সমাজ
। হইতে ইহার মুদ্রণ ও প্রচারণ ক্রিয়া সম্পন্ন হ-
। ইরাছে। ইহাতে ব্রাহ্ম ধর্ম বর্ণিত কয়েকটি উ-
। পদেশ আছে। একটি উপদেশ এহলে উদ্ধৃত
। হইল।

পুত্রের প্রতি পিতার উপদেশ।

যেপ্রিয়পুত্র! তুমি ইহবকে লক্ষ্য করিয়া সকল
। কার্য সম্পন্ন কর, তিনি তোমার পিতা, মাতা।
। সুহৃদ, সকল স্থানে সকল অবস্থাতে তিনি তো-
। মার একমাত্র সত্যর ও গতি, তাঁহাকে স্মরণ
। কর, সম্ভার জীবন তাঁহার কার্যে নিয়োগ
। কর, এক সুহৃদের জন্য তাঁহাকে বিন্মুত হইরা
। থাকিও না। তাঁহার জ্যোতি দৃষ্টি করিয়া আপ-
। নাকে উত্তল কর, সর্বদা সেই ভূমিনন্দ উপ-
। ভোগ কর, সংসারের কুটিলতা পারিত্যা-
। গ করিয়া সেই পবিত্র সুস্বরূপের সন্থিত দিন দিন
। সন্নিহিত হও। আমি যখন তোমাকে জামল
। পামল কারিয়াছিলাম, তখন আমার মনে এই
। আশা ছিল, যে পদ্যময়ের প্রতি অস্বস্ত
। হইরা তুমি আমার পুত্র উজ্জল করিবে, আমার
। সেই আশা পূর্ণ কর। ইহর ভিন্ন তোমার আর
। গতি নাই, তিনিই তোমার, একমাত্র পরম, তাঁ-
। হাতে প্রীতি করিবে, অজ্ঞাপণের সন্থিত তাঁহার
। প্রিয় কার্য সাধন করিবে, এইজন্য তুমি এই
। পৃথিবীতে জন্ম গ্রহণ করিহা; অতএব প্রতি

1998

[illegible]

একাদশকার কুসি
নীল, ডিম্বী, লবঙ্গ,
আম্রভি, আম্রবিধ, মল
রিকেল ও শুভাক ক
অল বাহু বিভাজ্য আ
বোম্বাকর্ষণ আতি অ
হইতে পারে না। পুকা
কল পাওয়া যায়, বি
পারে না, অসীম মধ্যে
মুতরাং সকলেই নদী
হয়। এই সকল ঐ
বাহু কামরায় স্নানের,
লকর কেনি সাহেবের
নীলকর কেনি সাহেব
মুখ সন্দেশে একাধা
ডায়া বর্ণন করা বাহুল্য
সাহেবের অনন্তের কুসি
হই নীল একেতৎসর নরি
অবলোকন করিলেন না
মন্তঃকরণে কোত ও
ডায়ায় সন্দেহ নাই।
সাহেব অজাদিগের উপ
রি করিতে ক্রটি করি
ছোট আদালতের অজ
নীলকরদিগের প্রতি পু
হিলেন, খোখ করি তাঁ
হইরা, যালিষ্টেই সাহে

কুঠিয়ার নিকটবর্তি গ্রাম।
ইর্ঠেনের উত্তর পুরাতন কুঠিয়া, জুহ
দবপুর, গোপীনাথপুর ও শিরালদহ। এই
কল গ্রামে কাষার কুমার চাষাধোপা শুঁড়ি
কবর্ড প্রভৃতিই অধিকাংশ। ইহার মধ্যে কু
ঠিয়াতে ৩।৪ ঘর ব্রাহ্মণ আছে। পশ্চিমে
কুঠি সদীর উত্তর তীরে মকলমেকে হরেরচক
র কড়াদিনগর সাবটে ও উদিবাড়ি। এই
কল গ্রামে ব্রাহ্মণ ও কার্বহ ডেলি ও শুঁড়ি
কুঠি অনেক প্রকার জাতি বাস করে।
মধ্যে উদিবাড়িতে ব্রাহ্মণের সংখ্যা অধিক।
কলে চোতর্দাস ও অগড়ী। এই কুঠি গ্রামে
কল কার্বহ ও ডেলি প্রভৃতি সকলই কিছু
কু আছে। তাহার মধ্যে কার্বহের জাগ অ-

অন্য স্থানখানি হইতে কুঠিরাতে আসি
বার মত ১ মনো, ২ ককগজ, ৩ রাবনগর,
৪ চুরাতালা, ৫ আলমতাল। হইরা কুঠিরাতে
আসিয়া উপস্থিত হইলাম। ইহার মধ্যে
একটি পোল আছে, তদ্বধ্যে একটি পোল
মতিবহৎ। ককগজ পর্যন্ত মধ্যে মধ্যে অনেক
মুঠে পতিত কুঠি আছে। শুনিলাম নীলকর
হাজারিদের নৌরাখাই কুঠি পতিত হইবার
প্রধান কারণ। ককগজ হইতে আলমতাল
যাত্রা খেজুর, খাম্ব, বব, ও নানা প্রকার ক
গাই সরিষা লক্ষা প্রভৃতি অনেক দ্রব্য এবং
মানে স্থানে ইহুও উৎসব হইরা থাকে।
মাঝ মধ্যে মধ্যে দুই একটি নীলকুঠিও দে-
খিতে পাওয়া যায়। কিন্তু প্রজারা নীল বুসন
করাতে ইহার অনেক গুলি অগ্নি পতিত
হইয়াছে।

কুটিয়া ।
এই কুটিয়া নদীরা জেলার অন্তর্গত
লিকাতা হইতে এতদান ৫৫ মাইল । এই
নদী উত্তরে গঙ্গা নদী । এই নদী আন
র বিনা হইতে নির্গত হইয়া উত্তরাতিমুখে
ন পূর্বক পদ্মার সহিত মিলিত হইয়া মাতা
অশ্রুত আন ধারণ করিয়া পূর্বদিকে গমন
কর্তেছে । অতরাং ইহাকে কেহ কেহ পদ্মাও

বিক্রীগেগেট বালেন একটি ১০ বছরের
স্বাক্ষরিত বালেন আর একটি বালকের সহিত

মিসর দেশের ছদ্মনামান কবি।
পাসা উক্ত কবিতা দ্বারা পাসার কবিতার
তিনি স্বাক্ষরিত দেখানত সুখার্ষণ নাম
যাইকে ইংরেজী নাম নাই। আপনায় ব্যক্তি
করিয়া গিয়াছেন। সম্রাট বিশেষ
মিগার অধ্যক্ষনা সময়ে তিনি কবি
যে তিনি তিনি বিশেষ কাব্য কবিতার
মতঃ নিজের ব্যক্তি নির্ধারণ, মাথার
কেন, এবং সুলভানের মত নাই।
করিবেন। পাসা বলপূর্বক বহু
করিয়াছেন। সুতরাং খ্যাতি
বিশেষ বহু নাই।

গণা বোধিত হইয়াছে ।

১. অশ্রীতিবিকারনা বহুভাট্টে, সেনাধিকার

ইহা পুনরায় বিবেচিত হইবে।

চট্টগ্রাম। তিনি কবিদের ৬ বছরমোহন তত্ত্ব।
তার প্রবীণ পদ্যময় বাসবদত্ত। এই কৃত্তিক ক
বিভেদে। এ কি কথা? তিনি কবিগণ নিকট
এই পুস্তক কৃত্তিক কবিগণের অভ্যর্থিত পাইলে
২২ তিনি কি জানেন না যে তত্ত্বালিঙ্গার মত
যদি রচিত বাবতীর পুস্তক তত্ত্ব পত্রবীরের
এক মাত্র জীবনমোহন স্বরূপ। তৎসমুদয় আ
মুদ্রিতের মূল ধন। তাই ১৮৭৭ অব্দে চট্ট
প্রসারণ করা নিভাত্ত মায় দিল্লী কার্য সম্বন্ধ
নাই। বোধ হয় সেন মতাপর বিশেষ না জানি
এই গ্রন্থ কথ্য হস্তক্ষেপ করিয়াছেন। এক্ষণে
সেন মতাপরকে আমরা জানাইতেছি। কাব্য
প্রাকর মতাপর যখন জীবিত ছিলেন, তৎক
৩ তাঁহার পিতৃব্য মহাশয় বাসবদত্ত। প্রমুখ কৃত্তিক
বিবরণ নিমিত্ত তাঁহাকে কৃত্তিক জুগ্ম অনুরোধ
করিয়া ও সম্মতি লাভে সমর্থ হন নাই। যেহেতু
তত্ত্বালিঙ্গার মতাপরের পটভূমির বাসবদত্ত। অ
ভ্যর্থিত হইয়াছিল, পরে উক্ত কৃত্তিক কলিতে
তাঁহার লক্ষ্য। বোধ হয় তাতে তাঁহার পিতৃব্যকে
বা নিবেদন করিয়াছিলেন। তাঁহার পিতৃব্য
সংস্কৃত কালেকের লেখক ছিলেন। বুদ্ধাবস্থে
প্রাপ্ত ১৮৭৩ সালে ১২৪৪ সাল তিনি পদভা
২২ এই সময়ে তত্ত্বালিঙ্গার মতাপর যুবলিঙ্গাব
প্রাপ্ত ৩৮ বাবদত্তপক পণ্ডিত ছিলেন। তিনি এ
টিতে কিত্তিকর নিবন্ধন করিয়া থাকি। অর্থাৎ
আমরা হইতেই মতাপরদত্ত পত্র লিখিয়া
উক্ত পুস্তক ধানি ছাপাইবার মত চাহিয়াছিলেন
৩০ "কিন্তু প্রত্যাহার পরে তত্ত্বালিঙ্গার ম
৩১ এই কথা লিখিয়াছিলেন যে বাসব
দত্ত আপনাকে দেওয়া পেন্স, উঃ আপ
নব্দ নামে ছাপাইবেন। আমরা যত্নে তাপা
কইতেই "কপ প্রকাশ না হয়" ইত্যাক। ব লি
বন নীতে পুস্তক ছাপাইতে তাঁহার অ স্তোভ
বিবেচনা করিয়া তত্ত্বালিঙ্গার পিতৃব্য কাম "হু"লন।
তাঁহান যে বিষয় সম্বন্ধকর করে তাহা আমরা
করিয়া এখানে সাধনী এই নাই। এক্ষণে সেন
মতাপরকে অন্য সেই পুস্তক ছাপাইতে প্রর
হইয়াছেন ২ এক্ষণে তাঁহাকে সম্প্রদায়িক কি
৩৩ তিনি মতাপর বিষয় কিছু ব্যয় করিয়া
৩৪ কেন তবে সেই ব্যয় আমবা দিব, তিনি
মায়, মতাপর পুস্তক সোমপ্রকাশ যন্ত্রে প্রাপ্ত।
৩৫ ৩৬ ৩৭ ৩৮ ৩৯ ৪০ ৪১ ৪২ ৪৩ ৪৪ ৪৫ ৪৬ ৪৭ ৪৮ ৪৯ ৫০ ৫১ ৫২ ৫৩ ৫৪ ৫৫ ৫৬ ৫৭ ৫৮ ৫৯ ৬০ ৬১ ৬২ ৬৩ ৬৪ ৬৫ ৬৬ ৬৭ ৬৮ ৬৯ ৭০ ৭১ ৭২ ৭৩ ৭৪ ৭৫ ৭৬ ৭৭ ৭৮ ৭৯ ৮০ ৮১ ৮২ ৮৩ ৮৪ ৮৫ ৮৬ ৮৭ ৮৮ ৮৯ ৯০ ৯১ ৯২ ৯৩ ৯৪ ৯৫ ৯৬ ৯৭ ৯৮ ৯৯ ১০০

১২৬১ } আশা, মল্লিক চট্টোপাধ্যায়
ইক প্র } এতেই উক্ত।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
মহাশয় সমীপে।

এই কালুঙ্গনের সোমপ্রকাশে কখন
লি নিবাসি শ্রীযুক্ত চন্দ্রকুমার ভট্টাচার্য
১২৬১ মতাপরকে কলিতে বাগদান নির্ব
১২৬১ উল্লিখ করিয়াছেন, তদ্বিষয়ে এখন আ
১২৬১ মতাপর কপা বলিবার প্রয়োজন নাই, ১২৬১

র উত্তর বিদ্যাভূষণ দিলেই ভাল হয় (১)। ত
কবীণ মতাপর কৃত্তিকার পাঠে কন্যার বাগদান
নিবেদন মতাপরকে অগ্রসর-বলিয়া। স্বীকার
করাতেই আবার পরিভাষা করিয়াছে, তদ্বি
য়ে বাবা বক্তব্য এক্ষণে তাই একান্ত কনি
তেছি।

আমাদিগের দাক্ষিণাত্য বৈদিক জৈনীর
মধ্যে কিরূপ আদান প্রদান ভেদে কুলীন, বংশ
শক ও মৌলিকের ব্যবহার ভেদ প্রচলিত আছে
তাঁহা জ্ঞাত করা আবশ্যিক, অতএব তাঁহা লিখি
তে হইল "আমাদিগের কুলীনে কুলীনে আদা
৩ প্রদানে বাগদান ব্যতীত গত্যন্ত নাই। উ
৪ কন্যা পাত্রের একমাত্র বয়স্কের পবেই কন্যা
পাত্র দিব করিয়া সম্পাদিত হইয়া থাকে, তাহা
তেই কন্যা পাত্রের সমান বয়সে বিবাহ হয়।
অতএব তাঁহা অতি কুসঙ্গ ব্যবহার। এ ব্যব
হারটি মৌলিক ও বংশজের নাই, তাহারিগের
৩ অন্যান্য জৈনীর ও অপরাপর জাতির মায়
বিবাহের পূর্বে কন্যা পাত্র দিব করিয়া বিবাহ
হয়। এই ব্যবহারটি কেবল কুলীনের ব্যবহার
৩ বলিয়াই আমরা উহাকে কুলসঙ্গ বলিয়া থাকি
তাঁহাতে কুলীনে কুলীনে আদান প্রদানে কৃত
৩ নার কুলীন পাত্রের কুলীন কন্যার বাগদান হই
৩ বার কোনরূপেই সম্ভাব্য নাই। কুলীনের বি
৩ বংহে পূর্বেই হউক বা পরেই হউক এই বাগদ
৩ কন্যা অনাথা হইলে সেই পাত্র বংশজ ও
৩ মৌলিকেরা কন্যাদান করে এবং বিবাহের
৩ পূর্বেই পাত্র অনাথা হইলে সেই কুলীনক
৩ ন্যাকে আদান কুলীনেরা গ্রহণ করে না, মৌলি
৩ লেরাই বিবাহ করে, তদ্বি মৌলিকেরা মৌলি
৩ কের কন্যাও গ্রহণ করিয়া থাকে। বংশজগের
৩ কুলীনের সতি আদান প্রদান উত্তর ব্যবহার
৩ হয় না, তাঁহারা উক্তরূপ কুলীন পাত্র কন্যা
৩ দের কিছু মৌলিকের কন্যা গ্রহণ করে। আমা
৩ দিগের কুলীন, বংশজ ও মৌলিকের এইরূপ
৩ তিস তিস ব্যবহার প্রচলিত আছে।

আমি আমাদিগের কুলসঙ্গ প্রথা পবিত্র
বিবরণ প্রস্তাব পুস্তকে যে কুলীন পাত্র কন্যার
৩ বাগদান নিবেদন মতাপর প্রদান দিয়াছি, সে
৩ নিবেদনটি যদি অগ্রসর হইল, তবে স্মৃতি
৩ পাঠে যে বিত্তীয় কৃত্তিক বার বিবাহের বিধি
৩ আছে, অবশ্য তাহাকে অগ্রসর বলিতেই হইবে
৩ অতএব আমাদিগের বংশজ ও মৌলিকেরা বা
৩ অন্য অনা জৈনী ও অপরাপর জাতির যে কৃত
৩ নার পাত্র কন্যার বাগদান করে, তাহ যদিও
৩ অসঙ্গ নহে, কিন্তু অগ্রসর ও নহে, তাহাকে অগ্র
৩ সত বলিতেই হইবে। যদিও এই নিবেদনটি অগ্র

(১) যেহেতু গত ৩১৫ তারিখ সোমপ্রকা
শে নিবাসি মতাপর লিখিয়াছেন যে "বালান
৩ পত্রের তথ্য বাক্যে ভাব করা।" "বিবাহের
৩ অন্য অন্য মতাপর রচিত হইবে, তখনও বা
৩ দান বহিত হইবে না। আমি আমার কন্যার
৩ অমৃতের পূর্বেই সতি বিবাহ দিব। এপ্রতিজ্ঞা
৩ তখনও করিতে হইবে সন্দেহ নাই। বিবাহ উ
৩ চ্চিগা না গেলে এ প্রতিজ্ঞা উচ্চিগা নাইবার স
৩ মাদান কি?"

পত্র নিবেদন হইবে, তাহাপি কুল
৩ দাক্ষিণাত্য বৈদিক জৈনীর মধ্যে
৩ বংশজ ও মৌলিকের ব্যবহার ভেদ
৩ কুলীনে কুলীনে আদান প্রদানে
৩ কন্যার বাগদান করিবার মতাপর
৩ এই অগ্রসর নিবেদনটি আমাদিগের
৩ পক্ষে প্রকৃত নিবেদনরূপে, যদিও
৩ তত্ত্বালিঙ্গার মতাপর বিবেচনা করি
৩ নে উপস্থিত করিবেন ইতি

১৫ কালুঙ্গন ১২৬১
শ্রীমদ্রত্ন বেদ্য

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
মহাশয় সমীপে

হয় মায় অতীত হইল, আমি পুনি
৩ আদান করিয়াছি। এ অকালের দুই
৩ ন মগরীতে অবস্থিত করিয়া তত্ত্ব
৩ বিবরণ অবগত হইয়াছি। পাত্রের জৈনী
৩ পোতা, অধিকৃত কের বংশজের বা
৩ লতা উক্তের অত্যাচারী মৌলিক,
৩ অপেক্ষাকৃত অধিকর ও ইত্যাদি
৩ বিবিধ মৌলিক অবলোকন করিয়া
৩ কিত হইয়াছি। বাবদত্তের একমাত্র
৩ পার্শ্ব করিয়া যদিও এ অকালের
৩ উক্ত মায় বলা বাহু বটে কিন্তু এ
৩ নানা বিবরণ অবলোকন করিলে
৩ হাম "একথা বলিতে আর ইচ্ছা
৩ যের কর্তব্য কেনের প্রতি নেত্রপাত
৩ তির মতাপর ও বিবিত্ত হইতে হয়
৩ র বীতি নীতি, কি আচার পদ্ধতি
৩ মতাপরী যে দিকেই যে বিষয়ে
৩ রণ করা যায় তাহাতেই কৃত্তিক
৩ হইতে হয়, বিশেষতঃ এতৎ বাবদত্ত
৩ মগরীর বিবরণ পর্য্যবেক্ষণ করিতে
৩ আত্যন্তিক কোতের উত্তর হইতে
৩ মের আচার ব্যবহার কাব্যপ্রকাশ
৩ লাব ধারণ করিয়াছে। আমাদিগের
৩ হাদের মতাপর পুস্তক মতাপর
৩ হইয়াছে এবং ইহার, কিত্তিক
৩ করিতে পারিয়াছেন বটে কিন্তু তাঁহাদের
৩ মতাপর হওয়া হইলে পাত্রের কন্যা
৩ পত্র করিতেছে তাহাতে পরিবর্তন
৩ রিত হইয়া অথ বর্জিত না হইয়া
৩ বহু পত্রাবার ক্ষীত করিতেছে। এই
৩ সম্প্রদায়ের বাহু মতাপর বংশ
৩ সামাজিক ভিত্তি এবং লৌকিক
৩ আগ ৩৩ আদানিত হইতে হয়, তখন
৩ হইতে থাকে যেন তারতের সৌভাগ্য
৩ দ্বয় হইয়াছে কিং হাম! কি পরিভাষা
৩ উচ্চিগের চরিত্রের অপব্যয়
৩ ত হয়, তখন আমাদের সকল
৩ মানিত্ত হইতে থাকে। সে
৩ ৩৩ আচরণে কলিকত

এই গল্প কলিকাতার পূর্বী বাড়ি। বেল ৩৫৫
 লাপ্তর টেবিলের দক্ষিণ চাকরিদেগারের ঐবারকার
 বিক্রয়বণের বাজিতে প্রতি সোমবার একশিত

পুনঃ প্রবেশিত করেন । পাঠক

স্বাধীনতা লাভ করিলেন, তদ্বিধানে আত্মীয় করিয়াছেন । তাহা করেন নাই ; এখনও তিনি স্থিতাবস্থায় যদি কোন উপায়ে ট গবর্ণমেন্টের আত্মীয় বৈকল্য সৃষ্টিতে পারেন ।

ব্যবহার দ্বারা দুই বিষয় সম্ভব । এক, প্রিজিডেন্টের স্বত্বাবলম্বী দোষ আছে, অন্যথা তিনি কেন লেফটেনেন্ট গবর্ণমেন্টের আত্মীয় করিবেন ? দ্বিতীয়, তাঁহার দোষেই বাতালার ক্রাসের হা লোক পরিচালিত করিয়াছে । তাহা হইবে, তিনি তাহাদিগের প্রতি অবশ্যই করিতেছেন কেন ? গবর্ণমেন্ট হইতেছে তিনি এক সময়ে লিখিয়াছিলেন, তিনি ক্রাসের প্রতি চূড়াবহার করেন । তাহা কুলোকে কুমন্ত্রণার তদ্বশ করিতেছে । কিন্তু তিনি যদি না করিয়া থাকেন, তাহাদিগের হার পত্রিকা ক্রাসের কোন দা যাইতেছে না ; তাহারা নির্ভর অন্যান্য পরামর্শের অনুসরণ । তাহাদিগের বালকতার পরিচয় লিখা তাহাদিগের প্রতি করণাই পারে, তাহার প্রতি করণা সময়ে তাহা কি নির্দয় ব্যবহার সম্বন্ধ । হউক, নর্মাল চীফস্ এক দূর যদি পোপনে লেফটেনেন্ট গবর্ণমেন্টের জ্ঞাত হইয়া কার্য করি । হইলে নিম্নোক্ত মানে মানে পারিতোষ । বোধ হয়, এইবারে জ্ঞান হইল, তিনি ইহার পর অবধি হইয়া কলম করিবেন । এই প্রতিক্রিয়া ইহার উপক্রম সময়ে মিলান গভ স্তম্ভবান্ হাউসিংকে আত্মীয় করা হইয়াছে ।

চাকরাপ্রকাশ সম্পাদকের দণ্ড ।

মানিকগঞ্জের ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট বাবু শ্যামচাঁদ নাথ উক্ত সম্পাদকের লায়স দে অভিযোগ করেন, তাহাতে সম্পাদকের ১০০ টাকা দণ্ড হইয়াছে । পাঠকগণ এ সম্বন্ধ গত বারের বিবিধ খবরে দেখি য়াছেন । কিন্তু এবারে আমরা চাকরাপ্রকাশে দেখিলাম, তদ্ব্যতীত মাজিষ্ট্রেট অন্যান্য করিয়া সম্পাদকের দণ্ড করিয়া ছেন । এখন, চাকরাপ্রকাশ বলেন, শ্যাম চাঁদ নাথ চাকরাপ্রকাশের নামে উক্তোক্ত গ্রন্থ সংক্রান্ত অভিযোগ করেন, কিন্তু চাকরাপ্রকাশে শ্যামচাঁদ নাথকে উক্তোক্ত গ্রন্থী বলিয়া কুজাপি লিখিত হয় নাই । অভিযোগ একরূপ ও বিচার অন্যরূপ এ সামান্য অজ্ঞান নয় । অথবা অজ্ঞানই বা কি ? অনেক আদালতেই আজি কালি ঐচ্ছিক বিচার হইতেছে । হিলির বিবরে কি হইল ? তাহার দালা হলে উপস্থিত থাকিবার অভিযোগ আদালতে উপস্থিতই হইল না । বিশেষতঃ রাজসংক্রান্ত কর্মচারির প্রতি রাজকর্মচারির কিছু রোহ হইয়া থাকে । উপস্থিত হলে শ্যামচাঁদ নাথ ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট অভিযোক্তা, আর বিচার কর্তা জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট । তাহাদিগের পরস্পর মেহমান হওয়া অযুক্ত নহে । তাঁহারা যদি পরস্পরের প্রতি মেহমান হন, অন্য অন্যায়ের পরাভব করিতে পারে । অপদেহের নিকটে পদেহের পরাভব কিরূপে সম্ভব হয় ?

দ্বিতীয়, জাইন্ট মাজিষ্ট্রেট চাকরাপ্রকাশের বক্তব্য এবং তাঁহার পক্ষসমর্থনকারির বাক্য যথোচিতরূপে শ্রবণ করেন নাই । তিনি পূর্বাধিই শ্যামচাঁদের নিকট চলিয়াছিলেন । বাহা হউক, চাকরাপ্রকাশ কোনরূপে যেন তদ্রোহ সাহ না হন । এই রূপে যদি বিচার কার্য অব্যবস্থিত নির্ধারিত হয়, বিচার প্রত্যাশা কি ?

গুরুট্রেণিঙ কুল ।

আমরা ১২ই ফাল্গুনের বোম্বাইপ্রদেশে একজন সংক্রান্ত যে প্রকাশ লিখিয়াছিলাম, উক্ত বিদ্যালয়-পক্ষপাতি এক ব্যক্তি তাহার প্রতিবাদ করিয়া এক পত্র প্রেরণ করিয়াছেন । পত্র যথাহানে প্রেরিত হইল ।

পত্রপ্রেরক বলেন যে সকল গ্রন্থ হাশয়ের কোম ক্রমেই প্রচলিত হইয়াছে । নাই, তাহারা প্রত্যাখ্যাত গুরুট্রেণিঙ কুলে অব্যয়ন করিতে বাইবে না । ১৬ । ১৭ বৎসর পর্যন্ত ৩০ । ৩২ বৎসর পর্যন্ত বরক ব্যক্তিরাই এই বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিবেন । আর একস্থলে লিখিয়াছেন “ নর্মাল কুল সকল যেকোন উপায়ে নির্ধারিত হইয়া থাকে । ট্রেণিঙ কুল সকলই সেইরূপ উপায়ে নির্ধারিত হইতেছে । নর্মাল কুলের ভূতপূর্ব শিক্ষকেরাই ট্রেণিঙের শিক্ষকতা করিয়া নিযুক্ত হইয়াছেন । ” এতদ্বারা প্রতীয়মান হইতেছে, গুরু ট্রেণিঙ কুলকে কপাত্তর নর্মাল বিদ্যালয় বলিয়া প্রতিপন্ন করাই পত্রপ্রেরকের অভিপ্রায় । ইহা যদি কপাত্তর নর্মাল বিদ্যালয় হয়, তাহাণি আমাদের আপত্তি নিরাকৃত হইতেছে না । বক্তব্য এখানে এয়োজন কি ? যে কয়েকটি নর্মাল বিদ্যালয় আছে তাহার উন্নতি করিয়া, গুরু ট্রেণিঙ বিদ্যালয় যার্ব একত্ব আর্থ (৩০০০০) প্রদান করিলে ট্রেণিঙ বিদ্যালয় অপেক্ষা বহুগুণে অধিক কল লাভ হইতে পারে । গুরু ট্রেণিঙ কুলের নিমিত্ত যতদূর ইনস্পেক্টর নিয়োজিত হইয়াছেন ; ইহার নিমিত্ত একটি অতিরিক্ত ইনস্পেক্টর পদেহ স্থাপিত হইয়াছে, ইহার পূহের ব্যয় ও যতদূর সরঞ্জামি খরচ লাগিবে, অথচ এখানে নর্মাল কুলের ন্যায় শিক্ষা হইবে না । শেষতঃ পত্রপ্রেরক স্বয়ংই স্বীকার করিয়াছেন । একপ যদি হইল, যতদূর ট্রেণিঙ কুল করিয়া হুধা অধিক ব্যয় স্বীকার করিবার প্রয়োজন কি ? তাহাদ্বারা বার ও বাজে

মৌলিক কথা

যদিও এটি একটি নিম্ন বিবরণে প্রদত্ত
হইলে অধিকতর উপকারের কি সম্ভাবনা
নয়? কলকাতা প্রভৃতি প্রেরিত পত্র
নিম্ন আলোচনা আভিনিবেশ সহকারে
পাঠ করিলে স্পষ্ট প্রতীতি ন হইবে, পরে
প্রেক্ষক আশাদিগের প্রতিবাদ করিতে
গিয়া একান্তরূপে আশাদিগের সপক্ষতা
করিয়াছেন। আমরা যে যে আপত্তি করি
যাহিলাম তিনি সে সমুদায়ই প্রায়
স্বীকার করিয়া লইয়াছেন। অপিচ ব্যয়ে
অপিচ কালে অধিক কল লাভের সম্ভাবনা
কি? পত্রপ্রেরক বুঝিমান হইল। কিরূপে
তাঁহার অপলাপ করিবেন?

লাড এলগিন ও এডমন্ডস
রাজগণ।

প্রধান শাসনকর্তা মধ্য মধ্য যদি
এডমন্ডসীয় রাজগণ, সর্কার ও জমিদার
গণের সহিত সাক্ষাৎ করেন, অধিকতর
উপকার লাভ হয়, একথা অনেকেই স্বী
কার করিয়াছেন, আমরাও অস্বীকার করি
না। প্রধান শাসনকর্তার এতদূর উৎসাহ
প্রাপ্ত হইয়া সর্কার ও রাজগণ প্রভৃতির
প্রভুত্ব যে বন্ধন হয় তদ্বিঘ্নে রেহাই
বিরুদ্ধ করিতে উৎসাহী নহেন। লাড কা
নিও এ প্রথা প্রবর্তিত করিয়া অনেক স
হায়তা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। আশাদিগের
বিষয় এই, এক্ষণে যাবতীয় গবর্ণর ও লেপে
ন্ট গবর্ণর ইহার অনুসরণ করিতেছেন।
সে দিবস সর রবার্ট মর্কিগমরি পঞ্জাবের
আর ১৫০০ হাজকে পুরস্কার দিবার সম
য়ে সর্কারদিগকে স্ত্রী শিক্ষার নিমিত্ত গল্প
বান হইতে বলেন; ইহাতে প্রাচীন যো
দ্ধাগণ এককালে আনন্দে গগন হইয়া
দগ্ধমান হইল। মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করি
লেন এ বিষয়ে মনোযোগী হইবেন। অন্য
প্রকারে এ অস্বীকৃত সাধন সহজ নহে।
সম্প্রতি লাড এলগিন উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে
হইতে হইতে দরবার করিতেছেন। তাঁহার

সকলেরই দৃষ্টি নিপতিত রহিয়াছে
এবং তাঁহার বাক্য দেশের ভবিষ্যৎ শুভা
শুভ অনুভূত রহিয়াছে। কাশী ও কান
পুরে তিনি সর্কারদিগের বিকটে, যে ব
জ্ঞতা করেন, তাহাতে সকলেই আশ্চর্য
প্রকাশ করিয়াছেন। কিন্তু আমরা অতি
শর হুসিত হইয়া কহিতেছি, তাঁহার আশ
রার বজ্ঞতা সে প্রকার হয় নাই। এই
মের দরবারে মহারাজ সিদ্ধি, জুপারের
রাণী, রানপুরের নবাব, তরতপুরের রাজা
প্রভৃতি উপস্থিত ছিলেন। রাজগণ সভায়
হওয়াতে তাঁহাদিগকে সভাসদ করিয়া
লাড এলগিন বলিলেন।

“আমার এ কথা বলা অনাবশ্যক যে
সৌভাগ্য ক্রমে ভারতবর্ষে দিন দিন শান্তি
বন্ধন হইতেছে। গৃহশান্তি দুরীভূত
হইয়াছে, এবং বহিঃশত্রুগণ ইংলণ্ডের
সেনাগণের অভাব ও বলবীচ্যের হ্রি
মা অবগত হইয়াছে। ৩ তৎপরে তাঁহাদিগ
কে বীর বীর রাজ্যে বিদ্যা ও বজ্ঞতা প্রব
র্তন এবং সহমরণ ও কন্যাহত্যা প্রভৃতির
নিবারণ বিষয়ে উৎসাহ দান করিয়া শেষে
গবর্ণর জেনরল অফিসার পূর্বক কর সকাল
ন করিয়া বলিলেন “ভারতবর্ষের প্রধান
অধীশ্রীর আভিনিবেশ স্বরূপ এনেলে শান্তি
রক্ষা করা আমার প্রধান কর্তব্য কর্ম। ই
হার জন্য ইংলণ্ডের আমায় অধীনে
এক বহু ও সাহসী সেনাদল রাখিয়াছেন
অতএব যে ব্যক্তি অসমসাহস পূর্বক সাধা
বণ শান্তি তপ কাব্যে প্রবৃত্ত হইবে, তাহার
দমন ও যাবতীয় বিশৃঙ্খলা নিবারণ বিষয়ে
আমি অণুমাত্র বিলম্ব বা সঙ্কোচ করিব
না। আবশ্যক হইলে এই সেনাদলকে
আমি নিয়োজিত করিব।”

এ কথা কে না জানে? ইংরাজদিগের
বল আছে ইহা সকলেই অবগত আছেন।
আশী হাজার সেনা ভারতবর্ষের বিপক্ষে
ক্ষমণে রাখিবার জন্য ভারতবর্ষীয় রাজগণ
হইতে বেতন পাওঁতেছে ইহাও কাহার

অবিদিত নাই। বিদেশে যখন
নীল আভিহুকে কল কল করিয়া
দিয়াও আশাদিগের সেনা
তদ কারিগিরের পরিচালনা
সে কল এখানে কেন? কাহার
অপমান করিবার জন্য আশ
হইয়াছিল? তাঁহার। ভারতবর্ষের
স্টের দাস ইহা কি তাঁহাদিগের
বারবার না বলিলেন নয়?
কি এতদুত্তির উত্তীর্ণের
এ দেশের রাজগণ অনেক সময়ে
কেহ দ্বারা অসমানিত হইয়াছে
লাড এলগিন আশিরা পত্রের
কে ভালক প জানিয়া এবং এর
জমীতিজ হইয়াও যে একপ
করিলেন ইহাই আশ্চর্য। জিহ্বা
বলেন ভারতবর্ষীয় রাজগণকে
নাশ ব্যাঘাত করা উচিত। লাড
রাজগণের নিকট দিনর ও সৈন্য
শ করিয়াছেন বলিয়া জিহ্বিকার
এক জন রাগ বিত হইয়াছেন।
স্পষ্টাতিধানে এ প্রকার সর্বসাধ
বাদ করিতেছি। অতিশর হইলে
এই ইংরাজেরা যাবতীয় সেনা
রাও পরাজিত শত্রুর প্রতি উদ্যম
করিতে জানেন না। নেপোলিয়ন
স্রীর হত বৃদ্ধ ভূপতি ইহার
গল বংশের শেষ ব্যক্তিকে রেশুও কালে
নির্জন কাঁঠ কুটীরে অন্ন বিনা এইরূপ
করিতে হইয়াছে।

— — — — —

এদেশেরা কিচিরকান হত
সঙ্কচিত করিয়া রাখিবেনকে যাই
এই ভারতবর্ষ আশাদিগের গোলমাল
মুখাবন করিয়া দেখিলে আশাদিগের
ভূমির একত অধিকারী। আশাদিগের
এ দেশের রাজকীর কার্য ব্যাঘাত।
অধীনতাধিকা উচিত। আশাদিগের
দিন জিহ্বা সাধন করিয়া ইহাদিগের

অনুচিত অনুভাববাহী প্রাক ও তাঁহাদি-
গের সহায়ক ইঞ্জিয়ান মিররের ছবি তিনি

বেশদেখিয়া আমরা যেন কইতেছি, এখনি
হস্তক্ষেপ করিয়া আমরা যাক ভাল করি
না এই কথাগুলি আমাদের জ্ঞানকে কঠিন
করিয়া ইহা মনে চেষ্টা করিতে গিয়াছিল।
ন, কিন্তু কখন দেখিতেছি ইহা না হইয়া
অনিষ্টই ঘটিয়া উঠিল। যত এ বিষয়ের আ-
ন্দোলন করা যাইতেছে, ততই তাহা দিগে
র হৃদয়ে প্রশ্ন হুতর কণে বজ্রবন হই-
তেছে। তাহা দিগের শ্রুতি আছে, "যে
বিষয়ে অধিকতর আপত্তি উপস্থিত হয়,
পরিণামে তাহারই উন্নতি হইয়া থাকে।"
কিন্তু উপস্থিত বিষয় এই ব্যক্তির উদা-
চরণ স্থল নহে, তাহা তাহার রোগাশয়
বসন্তে দুর্ভাগ্যে পরিণত হইয়াছে না। যে যে
বিষয় বিশুদ্ধ ধর্ম, যুক্তি ও ধর্মনীতির অ-
নুমোদিত, তাহাই এই ব্যক্তির উদাহরণ।
তাহার যে অনুষ্ঠান প্রসঙ্গ লইয়া বিবাদে
প্রবৃত্ত হইয়াছেন, তাহাতে কি বিশুদ্ধ
ধর্মাদির অনুমোদন পক্ষ আছে? যাহা হ-
উক, আমাদের, এখন এক এক বার
ধোঁহ হইতেছে, আমরা এবিষয়ে হস্তক্ষেপ
না করিলে ত্র্যম্বকের রণানুরাগ হুঁহ হ-
ইয়া হয় ত তাহার ক্রমে আপনাদিগের
জন্ম আপনাদিগের দেরিতে পাঠিতেন। কস-
ক আমরা দিগের সঙ্কট উপস্থিত হইয়াছে,
আমাদিগের কর্তব্য কর্তব্য ও আমাদিগকে
দায়িত্ব থাকিতে দিতেছে না।

আমরা লিখিত অভিভাব্যে সহকারে
১লা মার্চের ইতিহাস মিরর পাঠ করিলাম
স্মৃতি বোধ হইল, মিরর সম্পাদক কেবল
যে আমাদিগের অভিযোগ বোধে অসম্মত
(কিন্তু বুঝিতে পারিলাম অন্যত্র জাপ
এখন করিয়াছেন একটা বলা তখন দে-
খা না) হইয়াছেন একপক্ষে, যে
যে ধর্মের উপাসক বলিয়া অভিমান তা-
হা থাকেন, সে ধর্মেরই ধর্ম বুঝিতে পা-
রেন নাই। আমরা পূর্বে এই ভাবে লিখি-
য়াছিলাম, সন্মাদক জগিত হুত বসন্তে
১লা মার্চের ইতিহাস হইয়া থাকে, সেও যদি তাহা

পক্ষের পাঁচ জন বসন্তের লইয়া আ-
মাদের আন্দোলন করিতে চাহেন, কখন, তা-
হাতে কে নিষেধ করিতেছে; ইহাদের নি-
কটে কুতস্বতা প্রকাশ করিতেই থাকে বাহা
কিহেছে; কিন্তু তদ্বিমিত্ত জাতকর্ম নাম
দিয়া বলা আড়ম্বর করিয়া নিবন্ধক এটা
অনুষ্ঠান কেন? উহা ধর্মবুদ্ধিতে অনুষ্ঠিত
হইলেই পরিণামে উপধর্মে পরিণত হই-
বে সন্দেহ নাই; যেখানে দেখিতে ধর্ম,
আমাদের ও অনুষ্ঠানে একত্র মিলিত, সেই
স্থানেই উপধর্মের একাধিপত্য। ইতিহাস
মিরর আমাদিগের এই বক্তব্য পরিষ্কৃত
কণে পাঠকগণের গোচর করেন নাই, না
করুন, তাহাতে আমরা ক্ষতি বৃদ্ধি জ্ঞান
করি না, সোমপ্রকাশ পাঠকগণ আমাদি-
গের অভিযোগ বুঝিয়াছেন সন্দেহ নাই।
আমাদিগের এই অধিকতর ক্ষোভের হই-
তেছে যে সন্মাদক পত্রিত ভাবে লিখিগা-
মে আন্দোলন প্রসঙ্গ (নির্দেশ সন্দেহ
কি) "ধর্মের অংশ।" অপর, "আমাদের
যত উন্নত অবস্থা হয়, ততই আমোদ প্র-
মোদ ও ধর্ম এ উভয়ের যোগ হয়।" ই-
হাই কি উন্নত বিশুদ্ধ ত্র্যম্বকের অনুমো-
দিত মত? ধর্ম ও আমোদ প্রমোদ উভয়
কে একত্র মিলিত করিয়া সন্মাদক কি
এক বিকৃত পদার্থ প্রস্তুত করিতে চা-
তেছেন? সন্মাদকের একপক্ষ অস্বস্তি সং-
ঘটনা হইতে হইল, বোধ হয়, তিনি
শুনিয়াছেন, "আমাদের প্রমোদ যত
সমৃদ্ধ হইয়া উঠিত।" বোধ হয় এতদূর
হইতই তাহার এই সংস্কার জাগিয়াছে।
যাহা হউক, ধর্ম সম্বন্ধে আমাদের ধর্ম সত্য।
হুত বসন্ত যোগের মাঝে এখানে ধর্ম ও
আমোদ প্রমোদ উভয়ের মিশ্রণতাব
অর্থ নয়। উন্নত ধর্মের অভিভাব্যে উন্নত
অর্থ এই, যেমন আমাদিগের উন্নত ও
নিষ্কলিত প্রকৃতি সকল নাচপড়া ও হিঙা
হিঙা বিবেচনা দ্বারা পণ্ডিত ও চাণ্ডাল হই-
য়া থাকে, সেইরূপ আমাদিগের উন্নত

আমাদের প্রমোদ প্রকৃতি
বুদ্ধির দ্বারা নিষ্কলিত হইয়া
লে অর্থাৎ আমোদ প্রমোদ প্রকৃতি
তা-পত্রিত থাকে না। সন্মাদক
কখন, পত্রের এই অর্থ প্রকাশ
মোদ করিতেছেন না? তাহা
আর আমোদ প্রমোদ

চেষ্টা করিতেছেন কেন? ইতিহাস
মিরর আমাদিগের নগ্ননাম
নগ্ননাম প্রকাশিত হইয়াছে, তাহাতে
তদ্বিমিত্ত অধিক বক্তব্য
সন্মাদক ব্যক্তিগণের পক্ষে
হইয়াছেন, কিন্তু আমাদিগের
শিক্ষার্থী জনের অনুষ্ঠান
বাস্তব জগতের শিক্ষার্থী
র নিকটে হইবে এবং তাহা
প্রকাশ্য করিবেন? সন্মাদক
র ব্যবস্থা করিয়া দিগেই
হই। সন্মাদক প্রকাশ্য
কোণ প্রকাশ করিয়াছেন। তাহা
রিতে পারেন, আমাদিগের
তিনি বলেন, ত্র্যম্বকের
সন্মাদকের ব্যক্তিগণের
আছে, আমরা না দেখি।
বিষয়ের উল্লেখ করিয়াছিলাম।
অতি বার্থ। তাকে আমরা
আমাদিগের দোষ প্রকাশ্য
উল্লেখ করিতে পারি।
বির হইল, ত্র্যম্বক হইয়াছে,
আমরা ত্র্যম্বকের অস্বস্তি
নুষ্ঠান দেখি নাই, তাহাতেই
করিয়াছিলাম, ত্র্যম্বকের
কেন সত্য হইল সন্মাদক
কলই হুতন করিতেছেন,
তাহা আমরা দেখিতে
তাহা আমরা দেখিতে
আমাদিগের দোষ প্রকাশ্য
প্রকাশ্য করিতে পারি।
প্রকাশ্য করিতে পারি।
প্রকাশ্য করিতে পারি।

সোমপ্রকাশ যে অনুচিত অনুষ্ঠান এবং
ক কল্পিত হইবে, তাহা যদি সর্বত্র আনুষ্ঠান
পাওয়া যায় নাই, তাহা হইলে সর্বত্র
কিছু হইবে বলিয়া আমরা যে আ
নুষ্ঠান গ্রহণ করিলাম, ইতিপূর্বে মিত্র তাহাও
কল্পিত করিতে পারেন নাই।
কিন্তু এখন আনুষ্ঠানিক এক পরমা
সত্য নাই; সত্য, আমরা বর্ত
মান সমাজের বিবরণে সে কথা করি
উপায়। তাহাও আনুষ্ঠানিক কিছু নয়
ও অনেক লোক যোজনায় উক্ত অনুষ্ঠান
কল্পিত করিতেছেন। অতএব
সকল লোকের কথা বার করিবেন? আমরা
কিন্তু তাহা বিবেচনা করিতেই সে কথা
সমাজের লোক; তাহারা অনুচিত অনুষ্ঠান
গ্রহণ করিবেন অথবা বুদ্ধিতে না
হইলে অবশ্যকর্তব্য বোধে সমাজে
কল্পিত অনুষ্ঠান করিবেন, সুতরাং বুদ্ধি
না একা। হইয়া যাইবে।
সে মতের রাম মিত্র এক স্থানে লিখিয়াছে
মতের বিবেচনা বশতঃ প্রাক্কলিত
কল্পিত হইবে। তাহা অনুষ্ঠান ও অপক
ন অনুষ্ঠানের সঙ্গত করিতে প্রবৃত্তি
উপস্থিত, তাহা একপ অনুষ্ঠান সংস্কার
প্রণীত আনুষ্ঠানের বিবরণ নহে। এ
রিতে আমরা ভুক্তিভাবে অবলম্বনকেই
ও বস্তু বিবেচনা করিলাম।
প্রবীণ ভ্রমণে মিত্রের একটি পরামর্শ
কিছু বাক্যের উল্লেখ না করিয়া এ প্র
কল্পিত উপস্থাপন করা বিবেচনা হইতেছে
আমি বলেন আমরা প্রাচীন আচর
কল্পিত প্রবর্তন সঙ্গত, অতএব তৎসংস্কার
কল্পিত প্রতি আমাদিগের কান কথা
কিন্তু, চিহ্নিত নহে। এই লেখাটি দেখিয়া
কল্পিত প্রবর্তনের একটি গল্প শ্রবণ হইল।
সমস্ত এক উৎসব দিবসে এক জন আশ
কল্পিত সখ দিয়া যাইতেছিল, পথেই
কল্পিত সখ দর্শনার্থ যে সকল লোক
কল্পিত হইয়াছিল, সে তাহাদিগকে তেলি

রা কেলিয়া দিতে লাগিল, তাহা দেখিয়া এক
জন সেই পাগলকে বলিল, কেনন হে
তুমি ত বড় ধারাব লোক, সকলকে এমন
করিয়া কেলিয়া দিতেছ কেন? তাহাতে
পাগল উত্তর করিল, উহারা পাগল, আ
মার কথা শুনে না, তাই আমি কেলিয়া
দিতেছি। আমাদিগেরও সেই রূপ ঘট
না হইয়াছে। তাহারা একান্তরূপে অমর্ষ
কর অনুষ্ঠান রক্ষা করিতেছেন, তাহারা
সমাজ সংস্কারক ও উন্নয়নবাদী হইলে
ন। আর আমরা তৎপরিভাষ্য করিয়া উক্ত
তৎপরিভাষ্য অনুমোদিত উন্নত ক্রিয়ানুষ্ঠান
অবর্তন চেষ্টা পাঠ্যেছি, আমা অনুষ্ঠান
হইল।

আর এক স্থলে ইতিপূর্বে মিত্র কি
কি উপস্থাপন রসিকতা প্রকাশ করিয়াছে
ন, তিনি বলেন, “আমরা (সোমপ্রকাশ
সম্পাদক) বার বার পরামর্শ হইতেছি,
তথাপি আবার কীকৃত বস্তাব বাজালি বাল
কের ন্যায় কহিতেছি, ঠিক পরামর্শ কর
নো।” ইহার আর কি উত্তর দিব? তা
হা যেটুকু ও মাকাল পূজা করে, তাহাদি
গের নিকটে কি আমরা পরামর্শ নই? তা
থাপি তাহাদিগকে কি আমরা পুনঃ পুনঃ
তৎপরিভাষ্য করাইবার চেষ্টা পাঠ্যেছি
না? সম্পাদক কি আমাদিগকে মতামতের
ন্যায় ভরবান ধারণ করিতে বলেন? আ
মাদিগের সহপাঠ্যই এক মাত্র অগ্রদূত ও
সহল।

এহলে মিত্র সম্পাদকের নিকটে
কয়েকটি প্রশ্ন করা আবশ্যক বোধ হইল।
যে অনুষ্ঠান দ্বারা জনগণের অপকার ভিন্ন
উপকার সত্তাবনা নাই, তাহা বিস্তৃত প্রাক্ক
লিত অনুমোদিত হইতে পারে কি না?
কতিপয় প্রাক্কলিত আনুষ্ঠানিক যে অনুষ্ঠান
আরম্ভ করিয়াছেন, তাহারা জনগণের কোন
উপকার লাভের সত্তাবনা আছে কি না?
যে সমস্ত অনুষ্ঠানকে তাহারা এক জন
পত্রপ্রেরক ঐচ্ছিক বলিয়া বিবেচনা করিয়া

হেন, তাহাচরণের আবশ্যকতা কি? উক্ত
কল্পিত অনুষ্ঠান করিয়া তাহাদের কি কোন
উপকার হইবে বলিয়া আনুষ্ঠানিক পারি
য়াছেন?

কল্যাণীয়াসিঙ্গের সবলক'র হইবার উপায়।

গত বারে কল্যাণীয়াসিঙ্গের হইয়াছে, তা
রা স্পষ্ট সপ্রমাণ হইতেছে, বহুত্ব যে দেশে
বাস করে, সেই দেশের জন, বাহু ও মুক্তি
দায়ক দেশে যেই সবল অথবা ঠিকন হয়।
(১) বঙ্গদেশের এই সকল বিষয়ে বহুত্ব
দায়ক আছে, অতএব (২) বঙ্গদেশবাসি
গের কি সবলক'র হইবার উপায় নাই? এ
প্রশ্নের উত্তর এই হইতে পারে যে বঙ্গদেশে
র জন বাহু মুক্তিদায়ক নীতিবাক্যের জন
নই হইয়া বাহাতে বীর্ণ হইবার জন উপস্থাপ
ন একপ উপায় অবলম্বন করা বাজালি

(১) পদাতি ও এই নিয়মাবলি বহুত্ব
হে। বঙ্গদেশের গাতি, ঘোটকাদি অপেক্ষা
উত্তর পশ্চিম প্রদেশীয় গাতি, ঘোটকাদি
যে অধিকবল ও দীর্ঘকাল হয় ইহা কেন
জানেন?

(২) বঙ্গদেশের জন বাহু মুক্তিদায়
যে নীতিবাক্য, তাহা তাহার অধিকৃত
নাই। তৎসংস্কার তাহা প্রমাণ করা আবশ
্যক, কিন্তু এ স্থলে আমরা দুই বিবেচনা
উল্লেখ না করিয়া কাল বাকিতে পারিমা
ন। গাতি ন সাদেব বলেন যে বোম্বাইয়ের
সাম্রাজ্যকালে কেন কর্মচারী সম্রাটের
পে পতিত হইলে তাহাকে দশ দিবস জন
বঙ্গদেশে বাস করিবার অধ্যমতি হইত।। বো
ম্বাই সম্রাটের বঙ্গদেশকে অতি ভয়ানক দা
মনে করিতেন। তাহাদিগের মতে বঙ্গদেশ
এই কারণে, প্রেতনিবাস, পীড়িত উপস্থাপ
ন এবং বঙ্গদেশে বঙ্গিয়া উক্ত হইত
বঙ্গদেশে টাউন সাহেব কহেন যে বঙ্গদেশ
সুখকর করিবার চেষ্টা না করিলে তাহা ভয়
নক বহুত্ব লক্ষ্য হইয়া উঠিবে ও গুলিবীর স
বল হইবে আগুন সংস্কারক রোগে ব্যাধ
করিতক।

গের উচিত। ডাক্তার এক, সি. হুজ (৩) প্রভৃতির সহায়তসারে কার্য করিতে পারিলে বঙ্গদেশের জল বায়ুর দোষ অনেক পরিমাণে নিরাকৃত হইতে পারে বটে কিন্তু বোধ্য স্থিতির গুণের উপপত্তি হওয়া সহজ নয়। বিশেষ বতঃ সূর্য্যতাপ ও মৃত্তিকা খটত দান দূরীকৃত করিবার উপায় এখন পর্য্যন্ত আবিষ্কৃত হয় নাই। এই সকল চিন্তা করিয়া কি আমরা হতাশ হইয়া নিশ্চেষ্ট ও নিষ্ক্রিয় হইয়া থাকি-
১) অগতীকর কি অ'বাদিগের বলবীর্য়াদি হ্রাস কোন উপায় করিয়া দেন নাই? তিনি কি আবাদিগের প্রতি এত নিদারুণ হইয়াছে-
২) বাঁহার অজস্র করুণাবারি আবাদিগের প্রতি অনবরত পতিত হইতেছে, যিনি আবাদিগকে গিতা, মাতা, অপেক্ষা অধিক রে-
হের সহিত লালন পালন করিতেছেন, বাঁহার অজস্রপায় সহস্যের জর, মৃত্যু প্রভৃতি সমান স্থান মধ্যে প্রায় (৪) সমসংখ্যকরূপে সংঘটিত হইতেছে, তিনি কি অ'বাদিগের বলবীর্য়াদি হ্রাস কোন উপায় সংগঠন করিয়া রাখেন নাই?

মাধ্যম স্বভাব ও অত্যাধ এই উত্তরের বশবর্তী হইয়া বাবতীয় কামের অনুষ্ঠান করিয়া থাকে। স্বভাবের শক্তি লাভ ও বলবর্তী, অত্যাধের শক্তিও বড় স্থান নহে। অত্যাধের বলে মেন, ঘব, ও অধ স্বভাবতঃ নিরামিষ (৫) তোজী হইয়াও মাংস ত্যজন করিয়া স্তম্ভ শরীরে থাকিতে পারে, অত্যাধের বলে সমস্তা পীড়াকর পদার্থের আশ্রয় লইয়াও মেঘের প্রভৃতি সুস্থকায় হইত হস অত্যাধের বলেই এতদেখীর যোগিতা কঠোর যোগ

৩) ডাক্তার হুজের ভ্রাত কালকাতা টপো গ্রামিক নামক পুস্তক দেখিবেন এবং ডাক্তার নরসিং চৌধুরী এতদেখন সাধারণ অনর্থের শারীরিক স্বাস্থ্য বিধরক যে প্রস্তাব বেখুন সোপাইটিতে পাঠ করেন তাহা দেখিবেন।

(৪) পঞ্চক অম লাইক ইনগ্রাঙ্গ নামক পুস্তক পাঠ করিবেন।

[৫] বায়ু বায়ুর সহিত মান্য প্রভৃতির সমস্ত বিচারের প্রথম ভাগ ২২৮ ও ২২৯ এর পাত দেখিবেন।

(৬) সাধনে সমর্থ হইতেন, অত্যাধের বলে পারস্য, চীন, কালিকিয়া প্রভৃতি দেশীয় কোকো (৭) গভীর সমুদ্রের ৪৫ হস্ত নিম্নে অর্ধ ঘণ্টাকাল নিবস থাকিয়া মণি, মুক্তাদি সংগ্রহ করিতেছে, অত্যাধের বলেই এক মনুষ্য শিশু শাদুল প্রভৃতি (৮) লাভ করিয়াছিল। অত্যাধের এতাদৃশ পরাক্রম বখন নগ্নন গোচর হইতেছে, তখন তাহার শরণ লইলে যে আমরা দৃঢ়তার হইতে পারিব না, ইহা কিরূপে সম্ভাবিত হইতে পারে? এখানে কেবল বায়ুমাটির অত্যাধ প্রসঙ্গ করা আবাদিগের উদ্দেশ্য নয় পুষ্টির আহাঙ্গাদির অত্যাধ প্রচারই প্রধান রূপে অভিপ্রেত।

নিবাসিন ভোজন অপেক্ষা সারিব ভোজন যে অধিকতর পুষ্টির তাহা প্রায় সমুদায় দেশের সমুদায় শারীরবিদ্যায় বিৎ পণ্ডিত স্বীকার করিয়াছেন কিন্তু মনুষ্য স্বভাবতঃ নিরামিষ ভোজী অথবা নিরামিষ ও আদিব উভয় ভোজী এতদ্বিধ লইয়া বচতর মতভেদ ঘটে হয়। নিরামিষ ভোজন

(৬) বোঁপীরা যে কেবল অত্যাধের বলে অল্পত রূপে যোগ সাধনে সমর্থ হইতেন, পশ্চাৎস্থিত গ্রন্থ পাঠে প্রতীয়মান হইবে।
১৭, টিউজ'মন সি যোগ কিসজি এন, সি পাল সব আসিষ্ট'ন্ট সরজন।

(৭) ডিল কিসজি অক রিলিজন, পাত ১০৪।

(৮) অনেক দিবস হইল আমরা এক সংবাদ পত্রে পাঠ করিয়াছিলাম যে এক ব্যাঙ্গী কোন একাধারে এক মনুষ্য শিশু সন্তান প্রাপ্ত হইয়াছিল। আপন শাবকদিগের সহিত তাহাকে লালন পালন করে। ব্যাঙ্গীর সুখ পান করিয়া ব্যাঙ্গীর শাবকদিগের সহিত মাংসাদি ভক্ষণ করিয়া সে বালক ব্যাঙ্গের সমস্ত প্রভৃতি প্রাপ্ত হইয়াছিল। ব্যাঙ্গের ব্যতঃ হস্ত পদ ভূমিতে নিক্ষেপ করিয়া জড়বেগে চলি-
তে পারিত, ব্যাঙ্গের ন্যায় বাকশক্তিহীন মনুষ্যদিগের আক্রমণে তৎপর ও লোমহা-
ত হইয়াছিল, কিন্তু ল'জ'লা বিমর্ষিত হয় নাই। (৯) নীকারিয়া এই শাদুল প্রভৃতি প্রাপ্ত মনুষ্যলককে হৃত করিয়া মনুষ্যলকে আনিয়াছিল।

সপর্ক পণ্ডিতগণ 'কালিকিয়া'র একটী মত (১) বতঃ কালিকিয়া সে মতই এই:—

“সমুদায় দেশেই, স্বাস্থ্য সাংখ্যিক, শারীরিক বোপবোপী বনোৎপাদক হইয়া থাকে। কালিকিয়া হইয়া থাকে। গোখর, তপুলাদি শস্য ও আবাদ প্রকার কল মুদ্রা অপেক্ষা কালিকিয়া মাংস অপেক্ষা মন্য ও কল মুদ্রা হ্রতবর্ষীয়দিগের শরীর সুস্থ ও সং-
এবং নিরবচ্ছিন্ন মাংস আহাঙ্গা করি-
হয়। ১০ ইংরেজদিগের দেশে কালিকিয়া পোকা শীতল, তপুলা শস্য ও আবাদ বহিরাগি পশুই অধিক করে, এই-
সই তাহাদের প্রধান খাদ্য। কল-
দেশ তৎপেক্ষা উচ্চতর, তপুলা শস্য ও আবাদ করে, তেমন গাভী হয় না। সেই-
কার লোকে ইংরেজ ও ইটলিয়ের ই-
অল্প মাংস আহাঙ্গ করিতেই লভে-
কার থাকে। এক জন কালিকিয়া-
লেন, ইংরেজেরা বড় মাংস আ-
করাশিরা তাহার বড় অংশ-
উত্তর মহাসাগরের তীরবর্তী-
প্রদেশ অথবা এ মহাসাগরের-
থান্যাদি মন্য উৎপন্ন হয় না। তাহা-
কেরা কেবল মাংস ভক্ষণ করিয়া-
করে। তাহার যেমন কল মুদ্রা-
সেইকণ শীতের প্রভাব-
কটিও হয় না। অপেক্ষাকৃত-
সকল ব্যক্তি তাহাও গম্য করিয়া-
(১) এই মতটীর উল্লেখ করিয়া-
পর্য্য এই যে আমরা পূর্বে যেমন বলি-
মনুষ্য যে দেশে বাস করে সেই-
বায়ু মৃত্তিকাদির দোষ ও গুণানুসারে-
বা সুস্থলকার হয়, সেইকণ এতদ্বারা-
বাণ হইবে যে মনুষ্য যে দেশে বাস-
দেশের বলবর্ষিকর উৎপন্ন হওয়া-
রিয়া সুস্থ ও বলিষ্ঠ হয়। এতদুপলক্ষে-
আহার করা মনুষ্যের পক্ষে উচিত-
তত্ত্ববিদ্যেও আবাদিগের বক্তব্য-
হইবে।

জানিতব্যকাল মূল ও শস্য পুষ্টি
কৃত কৃষি কেবল বাৎসরিক আহার অবলম্বন
হয়, এ ছিল। এই সকল বিষয় প্রধান প্র-
বন্ধী ছিল। কালে অপর্যাপ্ত পণ্য, পুষ্টি ও
বাহ্যিক হওয়া বার, তাহাতেই লোকের
আহারের সংগ্রহ হয়। তাহার
কালে বহু ও বাৎসরিক করিয়া
মৌসুমীতে তাহা অত্যাশ্রয়
বায়েরও প্রয়োজন করে। (১০)। এই মত
মান হইয়া অতিপ্রাচীন বিবরণে তোলন
নাই, যেমন "বে সকল দেশে শস্যাদি
আনিয়াই বা, কৃষি শক্তি সম্পন্ন যুদ্ধিমান
সকল সে দেশেই অবস্থিতি করাই বা
তাহার।" (১১)। "তথ্যেতে বিজ্ঞান
অভিবিদ্যার প্রাকৃতিক হইয়া সে সকল
করিয়া।" (১২)। "কালক্রমে
প্রবর্তন।" (১৩)। "কালক্রমে
পারিত্য।" (১৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (১৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (১৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (১৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (১৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (১৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (২৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৩৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৪৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৫৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৬৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৭৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৮৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯০)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯১)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯২)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯৩)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯৪)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯৫)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯৬)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯৭)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯৮)। "কালক্রমে
এই সকল।" (৯৯)। "কালক্রমে
এই সকল।" (১০০)।

কৃত পুস্তক ও পত্রিকা ।

লিখিত। সংস্কৃতকালেজের প্রিন্সি
কাউন্সেল সাহেবের কৃতচাক্ষরিক
গ্রন্থী অনুবাদ। ইহা বাৎসরিক
কালক্রমে সংগ্রহ হইতে সংকলিত
বে সর্বদে দেবগণ সম্বন্ধীয় অর্থ
তি-নিয়ম জন, তৎকালে কলির অনু-
কৃত, সেনাদিগের সাক্ষ্য হয়,
তাবলম্বী তৎকালে ছিলেন তাহার
বতাদিগের কথোপকথন হয়। ইহা
উক্ত মৈবগে চাক্ষরিক মত কলি
কৃত কলিচাক্ষরিক এক মায়ান
এই মত।
বাত্মবস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির
ধারিত ও বিচার। প্রথম ভাগ ২০৩
গায়নাপাত।

হাউসে। কাউন্সেল সাহেব বহুত প্রস্তাবের
শেষকালে তাহাও উদ্ধৃত করিয়াছেন।

চাক্ষরিক। পুষ্টি, জল, অগ্নি ও বায়ু
এই চারি বৃত্ত অকার করে। তাহার বলে
এই চারি বৃত্তের বোঝে দেহ হৃদি ও সেই দে
হের চৈতন্য শক্তি উৎপন্ন হয়। তাহাদিগের
মতে দেহাতিরিক্ত আত্মা ও লোকান্তর নাই,
এবং বাগবতাদি মীমংসা হই হইয়াছে।

রহস্য। মৈত্রেয়দিগের মোহনাথ এই মতে
রহস্য করেন বলিয়া নির্দেশিত হইয়াছে
"চাক্ষরিক" এমি সাধারণ সংজ্ঞা। এতদ্ব্যতী
বলম্বী বাবতীর ব্যক্তিকেই চাক্ষরিক বলা যায়
এতৎ সম্ভাব্য প্রবর্তিত। চাক্ষরিক নামে এক
ব্যক্তি ছিলেন তাহার নাম হইতেই সাধারণ
নাম হইয়াছে।

২। রহস্য সংকলিত। ইহা একবারি মা-
সিক পত্রিকা। কলিকাতা কলকাতা সোসাইটি
ও ড্যানিকিউলার লিটরেচার সোসাইটির আদে
শাস্ত্রসারে ইহা প্রচারিত হইতে আরম্ভ হই-
য়াছে। বিবিধার্থ সংগ্রহ রকতি পূরণ করাই
পত্রিকা প্রচারকদিগের উদ্দেশ্য।

প্রথম সংখ্যায় আম দিগের হস্তগত
হইয়াছে। এখন ইহার গুণদোষ বিচার করি
বার আমাদিগের ইচ্ছা নাই। আমাদি
গের মতে একমত দেখিয়াই গুণ দোষ পরী
ক্ষা হইয়া থাকিবে। তবে আপা
ততঃ আমরা ইহার প্রশংসায় এই মাত্র
বলিতে পারি, লেখকেরা যদি অধ্যবসায় স
ম্পন্ন হন, তবে ইহা বিবিধার্থ সংগ্রহের পদ
প্রাপ্ত হইতে পারিবে। এখানে সম্পাদককে
একটি বিষয়ে সাবধান করা আবশ্যক হইল,
তাহাকে কিছু "অতিরিক্ত" বলিয়া বোধ
হইতেছে। "কৃষ্ণ" কি? এই নিয়মাদি দিয়া
যে প্রস্তাবটি লিখিত হইয়াছে, তাহাতে এম
নি অতিরিক্ত প্রিয়তা প্রদর্শিত হইয়াছে যে
মূল কথাই জম্ম অধিকার। প্রস্তাব লেখক
কথাটিকেই রাক্ত প্রসাদ নির্দোষ ও রাজ্য অধি
কার হেতু বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। উহার
হেতু বহুত। সেখানে প্রস্তাবের উপক্রম
উপসংহার করা হইয়াছে তাহাতে এখানে
কথা শেষ ইচ্ছাটুকু বুঝাইতে হইল।
"৩। অতিমান। ইহা কলিকাতা প্রান্তর
এ হইতে লাহরিতে মুদ্রিত হইয়া প্রচারিত

হইয়াছে। ইহাতে ইবরের উপাসনা প্রাচীন
ও স্ততি প্রকৃতি আছে।

আগত ।

২৯এ মাস মঙ্গলবার ।

অগস্তীরের কি আশঙ্ক্য হুটি। তাহার
হুটি। বিবর পর্য্যালোচনা করিলে কে না বি
অগস্তীর হইল। হুটিয়া হইতে হুটিয়া দে-
খিলান ধীপের ন্যায় এক এক বানি গ্রাম,
তত্তির সকলি জল ও নদ কুমির ন্যায় প্রব
চল। এখানে আমাদিগের আর এখন পরি
বার ও বহুবাহুবদিগের কথা বলা নাই।
এখানে এখন কেবল প্রকৃতিদেবীর সহিত
পরিচয় হইতেছে। "অগস্তীর" নামক এ
কটি ক্ষুদ্র বন্দরে রাশি আভিহিত করিলাম।
৩০এ বুধবার প্রাতে পূর্বাভিমুখে গমন
করিয়া পাবনা জেলার অন্তর্গত মাজিরগঞ্জে
উপস্থিত হইলাম, তথায় শুনিলাম একজন
হেবের একটি নীল কুঠা এবং নীলকরদিগের
প্রাধিকার অস্বাভাবিক। আমাদিগের প্রতি অ
ভ্যুতীর্ণ করা আছে। এখানকার জল বায়ু
উত্তম উৎকৃষ্ট নহে। ইহাও নিকটে কামার
হাটি পমিকটে দেপুর প্রকৃতি বতকগুলি
গ্রাম নীলকর ও আর একজনকে পত্নি দে
ওরাতে আমাদিগের অত্যন্ত কষ্ট হইয়াছে।
এখানে কৃষক ও সামান্য ব্যবসায়ী অধিক,
চাক্ষরিক অতি অল্প। লেখা পড়া অল্পশীল
নাই বলিলেই হয়। বুধবার আমাদিগের নামক
স্থানে অবস্থিতি করা হইল। ১লা কাশ্যন
রহস্যবিদ্যার পাবনা হুটিয়া বসুনা দিয়া ক
রিদপুর ডান হাতে রাখিয়া ঢাকা জেলার
প্রবেশ করিলাম। অগস্তীর পাড়ার অ
বস্থিতি হইল। ২রা কাশ্যন শুক্রবার নোকা
চাক্ষরিক বাণিকগণের উত্তীর্ণ হইলাম।

এই কালের উত্তর নীল জাগীর, পশ্চিম
নবগ্রাম, দক্ষিণ রক্তগ্রাম, পূর্বে খলেশ্বরী
এবং এই নদী বসুনা হইতে নিগত হইয়া
সাবার ও কুলবেড়ে দিয়া বড়ি গঙ্গার পতিত
হইয়াছে। এখানকার জল বায়ু বায়ুশূন্য,
কুমির বায়ুশূন্য। বালি সংযুক্ত নদীর জল
সাবিত হইয়া পলোপলপিত অত্যন্ত ব্যাধাত
করিয়া থাকে।

চৌকিদারী বহির লিখিত বাণিকগণ

খানার সমীপে ১২-১৩ বর বসতি। বহুখা
সংখ্যা প্রায় ৩১২০। চৌকিদারের সংখ্যা
২৮১। এখানে হিন্দু মূলবান দুই প্রকার
জাতি বস করে। অল্পসংখ্যক হিন্দুর ভাষা অ-
ধিক। কয়েকটি নিত্য প্রসিদ্ধ পরাম্পর আছে।
কিন্তু অধিক লোক বাহাদুরী, ও আনা চাকরে
এবং ও আনা লোক কবি কর্ম করিয়া জীবিকা
নির্ভর করে। এখানে অনেক সংস্কার লোক
আছেন যারা কিছু তাঁহারা সর্বদা বাড়ীতে
বাস করিতে পারেন না বলিয়া ঘেঁষের সম-
ধিক উন্নতি হইতেছে না। এখানকার
অধিকাংশ লোক বিদেশীরাগিরের সহিত
বন্দোপকল্প করিতে ভাল বাসেন। রাষ্ট্র
যাট প্রকৃতি তত উৎকৃষ্ট না হইক কিন্তু গড়ে
নানাধর্ম প্রভৃতি বিক্রয় হইয়া থাকে। অনেকের
আমার হস্তের কার্কেটের ব্যাগটি দেখিয়া
ইটি কি এই কথা জিজ্ঞাসা করিতে এবং
এই হুটে দেখিতে লাগিলেন।

এই গড়ে এবং গজ হইতে, প্রায় এক
ক্রোশ অন্তরে গবর্ণমেন্ট সাহায্যকৃত স্কুল
ইংরেজী বাকালি বিদ্যালয় আছে। গড়ের
কুলটি অগণকীয় পুর্বে স্থাপিত। আমি
প্রায় দুই বটা বালকদিগকে পরীক্ষা করিয়া
দেখিলাম বিদ্যালয়টির ২১শ উন্নতি সাধন
হয় নাই। পুর্বে যে সকল শিক্ষক ছিলেন
তাঁহাদেরই দ্বারা কিছুই হয় নাই তবে
একশে যে দুই জন নিযুক্ত হইয়াছেন তাঁহারা
ইহা করিলে করিতে পারেন। বিদ্যালয়ে
৫০ জন ছাত্র অধ্যয়ন করিতেছে। অর্থাৎ
৪১ জন আগত ছিল। প্রায় অর্ধ বটার
অধিক হইবে ছাত্রদিগের বিদ্যা বিষয়ে
উৎসাহ সর্বদা বন্ধুতা করিয়া তথা হইতে
বহিগত হইলাম। দ্বিতীয় কুলটি নিত্য প্রসিদ্ধ
মতে গড়ের কুলের শিক্ষকেরা আমার সহি
৩ মতঃ সঙ্গার করিলেন। এখানে এক
লীল কুঠী আছে। জি পি ওয়াইন সাহেব
ইহার কর্মচারীদ্বারা প্রসাদিগে
র প্রতি পুর্বে বেকশ অত্যাচার হইয়া গিয়া
ছে এখন উদ্ধার হয় না। এখানে লেপুটি
মাটিষ্ট্রেট ও মুলেকের কাচারি, ডাকঘর
এবং একটি খানা আছে। ডিঃ মনিষ্ট্রেট
বিকেন সাহেব অতি উদ্র লোক। ইনি এ

খানে দুজন আসিয়াছেন। মোহ করি ইহার
সুবিচারে কমে সকলেই সম্মত হইতে পারেন।
অর্থাৎ আমলাদিগের (মকলের দাওয়ত)
হাতে টক আছে। এখানকার কোম্পানীর
সেবাস্থানবাদের কিঞ্চিৎ প্রশংসা প্রাপ্তিতে পা-
তরা যায়। শুধা পেল এবং নকার দুইজনক বড়
পাকা লোক নহেন। তাঁহার বিচারে লে. টক
দুই নহে। অত্রত্য নারের দায়োখা হিন্দু।
হিন্দুধর্মে তাঁহার বিলম্ব আদ্য আছে। এই
বাণিজ্যকে প্রায় চল্লিশ বানিরও অধিক হই
বে দুই দায় হইয়া পরেরের বিলম্ব জাতি হ
ইয়া গিয়াছে। এখানে শিবসারি উপলক্ষে
একটা বেলা হইয়া থাকে। তাহাতে ৮. ১. ১০
মিন পর্যন্ত নানা দ্রব্য বিক্রয় এবং বহুসংখ্যক
সমাগম হয়। এখানে রাবরক মুলনী নামক
একজন সম্পন্ন বৈদ্য বাড়ীতে অতিশি সেবার
নিয়ম করিয়া বিশেষ চাকরী করিতে গিয়া
ছেন, কিন্তু বাড়ী রক্ষকের। তাহা সম্পূর্ণ রক্ষা
করিতেছে না।

২২০
প্রান্ত।

বেহেরপুর। ১৩ ই কাছন, ১২৩০ মাল।

১। বেহেরপুর প্রসিদ্ধ বলরাম হাতির অধিক
কুনি। উক্ত ব্যক্তি এক হুতন ধর্ম প্রবর্তিত
কর। তাহা বলরামচন্দ্রের ধর্ম বলিয়া বিখ্যে-
ত। এখন প্রবাদ আছে যে, উক্ত ব্যক্তি, বীর
কুহ, বর্জবান, কলিকাতা, মলীয়া, রাজসাহী,
মিনামপুর, রঙ্গপুর প্রকৃতি অনেক বিদ্যাতে
অনেক নিধ্য করিয়া গিয়াছে। প্রায় ৪০ ব-
সর হইল, বলরাম হাতি বানবলীলা সমরণ
করিয়াছে। বলরাম প্রথমে অতি সামান্য
লোক ছিল। এই গ্রামের চৌকিদারী করিয়া
কথঞ্চিৎ জীবিকা নির্ভর করিত। অনন্তর কোন
দারপ যশতঃ নিকটস্থ হইয়া যায়। কিছু দিন
পরে এত্যাগমন পূর্বক কর্ম প্রচার করিতে
আরম্ভ করে। ইহার সুভাবিনেরও নানা ধপ
আকর্ষণ কথা প্রসিদ্ধ আছে। এই ব্যক্তি যদি
যদি তিন দিন অগ্রে বলিয়াছিল যে, আমি
অনুক দিন এতকালের সময় বেহ ত্যাগ করিব।
তখন ইহার পরীতে কোন রোগের চিহ্নই ন-
কিত হয় নাই। গড়ে বাস্তবিকঃ দুই বাঁকিয়া
পূর্বকথিত সময়ে দেহত্যাগ করিল। তাঁহার

কর পরীক্ষা করিয়া
কামাৎ, কিছুই হইল
করে হুতনিক করিয়া
মলীয়ায় প্রায় ৩০০০
রক্ষা করিলে তাহার দেহ
তারা সকলেরই দিগন্ত
রাম হাতির উপলক্ষী
এক কীর্ত্তী তাহার
হইল।

২। ইহার বীর্য প্রায়
৩০০০ আছে। অধিক
হিলাস। আরও উক্ত
সামান্য কথা বিজ্ঞান
র দ্বারা বোধ হইল, যে
ইহা বীর্য জানে তাহা
কর্মবীর্য করে, এবং
বিদ্যাতেই যে এই ধর্ম
আদ্য করে। কিন্তু ইহার
কর্মের দ্বারা ইহা

বিদ্যা-সম্বন্ধ, এবং
পর দায় বলিয়া
কেই এক দায়
কলত। ইহার
বলিলেও নানা
হাৎ অধিকা
একটি অস্ত্র
আর পুর্বে
বলিয়া পরিচয়
অবতার বলিয়া
তান করিয়া

২। একশে অধিক
১০ ই কাছন
পদীতে
প্রায়ই
বিশেষতঃ
সংস্কৃত
হাতিগের
না পারাতে
বশের হইয়া
৩। ২০
বে এক ব্যক্তির

উক্ত পত্রের লগুনস্থলস্থিত ...
 সাংগেব কলী ...
 "আমরা এক্ষেপে ...
 সুবিধে পাঠিতে হি ...
 হিত ব্যবহারী ...
 ও মিবরী কলী ...
 ন। যে ব্যক্তি ...
 কলী ...
 কলী ...
 বল ...
 কৌর ...
 ধরিতা ...
 কমতা ...
 না। যে ...
 র ...
 আমা ...
 ই ...
 লঃ ...

উৎসর্গ : ২৪৪ কান্টন শনিবার।
 গভর্ণমেণ্ট অননবল হারিউটস সা-
 রিফ ন্যাট ইনস্টিটিউশনাল সিস্টেমের জেপুটিনারী নব-
 বৈশিষ্ট্য। উৎসর্গ নব-
 সেক্টরীয় অতিথিগণ, কিলসিয়ারাল মোফেটাইবি
 নগর সার্কলের ওপর প্রাপ্তি নব-
 সার্কলতঃ

সম্মত হইয়াছেন। প্রণীত হইয়াছে কোন
 বাস্তবিক পদ্ধতি। অন্যকে কষ্ট দেওয়াতে
 তাঁহান অসুস্থমানার্থ এক বিচারালয় বলিবে।
 সম্বন্ধীয় মাটিংসন কোমি. সি. হইয়াছেন। ১৮ই
 মাৰ্চ খ্রিষ্টাব্দ অব গবেষণের বিষয়ের দিন স্থির
 হইয়াছে। বলাই। জাভান নাবিক আনোভী
 কল পাঠালিও নিকটে জলধর হইয়াছে
 হাংগুয়েন বিজ্ঞান জেন. ও অনেক সভা হইয়া
 ছে। উল্লেখ্য সভা সভাপতি লিঙ্কন:নর যে
 সভার অধ্যক্ষ হইয়া কনিষ্ঠ হইয়াছেন।

[illegible]

१. अनिलि मोहय गीतागोविन्द २।
महाकाव्य शुक्लानुवाकः दशैकः ईदम् ।
किं च अत्र पार्तसारथ्य वीरसूयेन २५
वीर महाकाव्ये अभिरुचिरेण हृदेयम् ।

কমিটি নি আদেশ লঙ্ঘন করার পোষক
হইলেন।

পত্রপ্রেরকের প্রতি।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্র।

“স্বদেশ” এই পত্রের প্রতি পত্র প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

কেন্দ্রের বাহ্যিক পক্ষ সমর্থন করিয়া

প্রেরিত।

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

স্বদেশস্বপ্ন প্রকাশিত পত্রের

সে সবই নিত্যমহোপকারক। তিনি
জ্ঞান ও সাধনবোধের দীপ্তি কবন; বাবহার
ক এক খানি গ্রন্থ লিখিয়া গিয়াছেন। পাণি-
নিবনের দীপ্তি। এবং সর্বদর্শন সংগ্রহ
ক সমস্ত হিন্দু দর্শনের সার গ্রন্থ করিয়া
খানি গ্রন্থ প্রণয়ন করিয়াছেন এতদ্ভি-
তনি পণ্ডিত মণ্ডলীর প্রচুর রূপে উৎসাহ
ন করিয়াছিলেন। তাঁহার কালে সংস্কৃত
দান পুনর্জীবন প্রদান হয়। এখানে ইহাও
গত হওয়া আবশ্যক যে এই সময়ে
১৪০ খৃঃাব্দ) ইউরোপে সারিতোর আ-
চনার পুনরাবর্তন হয়। কিন্তু তারতবর্ষে অগে-
ইউরোপের সমধিক উপকার হয়। তাহার
তু এই যে, তারতবর্ষে বিদ্যাচর্চার পুনরাবর্তন
লে পর সেই পুনর্জীবন বিষয়েরই আন্দোলন
হইয়াছিল। কোন মূর্তন জীবের সমাগম হয়
ই। সুতরাং কোন অতিনব বিষয়ের আবি-
দ্য না হইয়া কেবল সেই পুরাতন বিষয় এক
মূর্তন রূপে মাত্র ধারণ করিয়াছিল। ইউরো-
বিদ্যাচর্চার সঙ্গে মূর্তন বিষয়ের ক্রমশঃ স-
ম হইয়াছিল। তাহারিণের বিদ্যা গ্রীস,
পেলেতিন এবং বোগদাদ মগর হইতে
অংশে মীত হইয়াছিল। বার্তাশাস্ত্রে কথিত
হয় যে, কোন জাতির ধন কেবল দেশীয় উৎ-
কৃষ্ট সিল্পীরা বিক্রয়ে এবং অমানুষ্যে প্রেরণ
হয় না। অপরদেশীয় উৎপাদিত সামগ্রী
শে আনয়ন করিতে হয়। বিদ্যাবিষয়েও
রূপ। কেবল অমরেশীর পুরাতন ভাব সমূহে
মালোচনা করিলে বিদ্যার প্রচুর পরিমাণে
হয় না। অপরদেশীয় সব মন উৎকৃষ্ট ভাব
অমরেশীর বিদ্যার সংযোগ কনিত হইয়া, তা
ইহাও দেশীয় এবং অমানুষ্যীয় অভিনব
একত্র হইয়া তাহার এক মূর্তন রূপ হয়।
দেখা বিদ্যাচর্চার পুনঃপ্রকার করিবার জন্য
পুণ্ডিত বিদ্যা ও ইউরোপীয় অভিনব
বিদ্যার সমন্বয় সংস্থাপন করিয়া
কিছু উত্তর উদ্ভাবন বিষয়ে অস্বস্তা যুবক
সর্বোচ্চকরণে অভিনিবিষ্ট হইয়া নিত্য-
মাত্র মতান্তর পরিগ্রহ করা কর্তব্য। তৎপরে
বিদ্যার বিষয়ের অন্তর্ভুক্ত কিয়দংশ পাঠ
হইয়া।

তার বক্তৃতা সমাপন হইলে বাকু কালীক
একটু বক্তৃতা করলেন, তৎপরে
এই বিষয়ে কিছু বলিয়া সভা ভঙ্গ
হইল।

জীবানন্দ হাজর
বাং কালীঘাট

নিম্নোক্ত সৌখিক সঙ্গীত
মহাশয় সমীপে।

দয়া আমাদিগের আত্মিক হস্তি, এই আ-
বিক হস্তির অঙ্গুষ্ঠা হইয়া আমরা সুখাভি-
ম, পণ্ডিতকে কল এবং বিপদকে আশ্রয়

একান করিয়া থাকি। মনুষ্য নওমীর মধ্যে না-
বা প্রকার ধর্ম এবং বহুবিধ সম্পদ আছে,
কিন্তু এমত কোন ধর্ম বা সম্পদ নাই করিত-
কে সাহায্য না করা বাচার উপদেশ। যে যে প্র-
কারের দ্বারা লোক উত্তম না কেন, তাহার কি-
কিৎ দান আছেই আছে, এমন কি কিছু
কিন্তু দ্বারা উপার্জিত ধন বা সামগ্রীও অন্য
কিছুকে দিয়া সাহায্য করিতেছে। অতএব প-
রের দুঃখ নিবারণ যে মনুষ্যের আত্মিক ধর্ম
তাঁহাতে কোন সন্দেহ নাই এবং এই বিষয় জ-
ইয়াও কোন বিবাদ হইতেছে না। এক্ষণে জিজ্ঞা-
না এই যে কি প্রকারে দান করিলে ধর্মার্থ হুঁখি
দিগেব একটু উপকার হয়? এই প্রশ্ন স্মৃতিতে
অতি সামান্য, কিন্তু জিজ্ঞাস্য হইবার উত্তর
প্রদান করিতে হইলে তাঁহাকে যে কত চিন্তা
করিতে হয় তাহা তিনিই জানেন।

একণে হিন্দু সমাজের মধ্যে দুই প্রকার
লোক আছে। শাস্ত্রশির আতীতহিন্দু এবং অ-
শাস্ত্রিক ও কুসংস্কার বর্জিত নব্য সম্প্রদায়। এ-
বমোক্ত ব্যক্তির শাস্ত্রের দ্বারা ইচ্ছা কেবল ত্রা-
কন সেবাই প্রবৃত্ত ধর্ম বলিয়া জানেন, অন্য
জাতীয় লোককে ধনদান করিলে ত্রাণকে
ধনদানের ভুল্য কল নাই এই তাঁহাদিগের বি-
শ্বাস, কিন্তু শেবোক্ত যুক্তিদান ধীরেব সকল ম-
নুষ্যই বহুলাংশে অগম্যধর্মের পুত্র, সকলের স-
হিতই আমাদিগের ভ্রাতৃ মজ্ঞ, চণ্ডাল একজন
আমাদিগের যেমন আত্মীয়, ত্রাণও তাহা অ-
পেক্ষা অধিকতর আত্মীয় নহে ইহা জানিয়া
কেবল ধর্মার্থ করিত, ধর্মার্থ অসামান্য এবং ধর্মার্থ
বিপদকে রক্ষা করেন, কে জানে সে ব্যক্তি ত্রা-
কন বা কত্রি সূত্র বা বনম। কিন্তু এই মনুষ্য স-
ম্প্রদায়ের এই বিষয়ে আনি ভাল মনোবোধ
দেখিতেছি না। এই দানক্রিয়া একাকী অপেক্ষা
অন্যের সহিত মিলিত হইয়া করিলে যে বিশেষ
উপকার হয় তাহা এখনও তাঁহাদিগের হৃদয়ঙ্গম
হয় নাই। আপনাত আশঙ্কায় সমুদ্রে নবিত প-
ড়িলে সকলেই সাধ্যাভ্যাসে তাহাকে দান ক-
রিয়া থাকেন বটে, কিন্তু ইহা অপেক্ষা সাধারণ
ধন হইতে দানক্রিয়া চলিলে কি অধিকতর উত-
কর কল উৎপন্ন হয় না?

একপ অনেক ব্যক্তি আছে যে তাহাদিগের
পরিগ্রহের শক্তি এক বাবেই বার নাই। তাহা-
বা দিগের ১২ বর্গ পরিগ্রহ করিতে পারে না
কিন্তু দুই বর্গ কাল যে কোন এক কর্ম করিতে
পারে, কিন্তু এমত ব্যক্তিদিকে কে ক-
র্ম নিযুক্ত করে, সুতরাং তাহার। কিংক প-
রিগ্রহশক্তি থাকিতেও কার্যাত্মক পদার্থ
ভিক্ষুক হইয়া পড়ে। এমত অনেক ভ্রম পরিবার
আছে, বাচন কর্তা লোকান্তরিত হওয়াতে ভ্র-
মার সম্মান মত এককালে হারিয়া যুঁহে পড়-
ত হয়। অনেক লোককে একপ দেখা বাইতেছে
যে তাহার। ব্যবসারী লোক হইয়াও সঁজির জ-
তাবে ব্যবসার কল্যাণেই না পারিয়া জী পুত্র,
কন্যা দিগকে ভরণ পোষণ করিতে অক্ষম হইয়া
মিডান্ত কালে কাল কাপন করিতেছে। এই সকল
ব্যাপার কি ভরণ করছে? ইহা অরণ করিয়া আ-

মাদিগের মনে কি দুঃখ হয় না? আমাদিগের
মজুরদিগের কর্মীতাব হওয়াতে অস্বাভাবিক দাক্ষ-
ক্য হইতেছে অতএব তাহাদিগকে একপ
আমাদের সাহায্য করা উচিত, এই কথা প্রব-
করিয়া আমা : সকলেই ব্যবসায়ী না হওয়া প্রে-
রণ করিতেছি, উত্তম, ইহা না করিলে মজুর
বন্ধ হইয়া, কিন্তু আমাদিগের মজুরদিগের
মাত্র আত্মভাবে আমাদিগের দেশের যে কত লো-
ক মানব জীলা মরণ করিতেছে তাহার কি চই-
তেছে? এখানে বাক্য করা উচিত নহে কিন্তু ম-
বলিলেও মনের ক্ষোভ যায় না। বিলম্বিত চরিত্র
বলে কি এত আদর?

একপে আমার এত লিখিবার উদ্দেশ্য
মহাশয় এই প্রশ্ন করিতে পারেন। আমাদিগের
প্রায় বিদ্যাঃসারী মহাপ্রয়ণ যে কল উদ্দেশ্য
হইয়া। প্রায় প্রায় চাঁদ, করিয়া এবং গর্ভমে-
কীর স হ্যা লইয়া বিদ্যাঃসারী স্থাপন করিতে হ-
ন, ধর্মমতি স ধর্মগাণী বেরণ সত্যপ্রতি প্রচায়েব
জনা কারনমোবাক্যে চেষ্টা করিয়া, ত্রাণ দান
স্থাপন করিতে হন, সেইরূপ ভিন্ন ভিন্ন ধর্ম
দয়াজ্জিত সাধু মহাপ্রয়ণ (বিশেষতঃ ভূ-
ধিকারিণ) পরম্পরের সাহায্য মূল ধন সংগ্র-
হ করিয়া প্রকৃত প্রভাবে দানিত্র দুঃখ মোচন ক-
কুন। কতকগুলি বুদ্ধিমান মজুর সাধু এই
লিখ্য কণ্ড সোলাইটি দেয় হউন, এক জন
ক্রেটার হউন, এবং এক এক গ্রামে এক এক ক-
পনবর্ষক রূপে থাকিয়া তদাত্ম লোকের অ-
হা সতার স্থাপন করিয়া, সাহায্য প্রার্থন, তরুন।
যে কোন পরিবারকে ৪। ৫ বা ১০ টাকা দানিত্র
মানিয়ে দিলে তাহার। মজুর কাল বাপাঃ ক-
বিত্তে পারে তাহাদিগকে তাহাই দেওয়া উচিত
যে ব্যক্তি পুঁত্রর অভাবে কোন কারবার চলা
ইয়া দিনপাত করিতে আরিতেছে না, তাহা
উল্লিখিত সাধারণ রিলিফ হইতে পুঁত্র
ওয়া হউক, এই রূপ সাহায্য বাচ। অতঃপর
কে তাহা স্থানীয় ও অস্থায়ী পুঁত্রক প্রদত্ত হউ-
ক। চাঁদা দ্বারা যে মূল ধন সংগৃহীত হইয়া
তাহা কোন ব্যাকে জমা না রাখিয়া তাহা
কোন কারবার চলাইলে তদ্বারা অনেক
ক প্রতিপা লাভ হইতে পারে। এইরূপ
স্থানে রিলিফ কণ্ড সোলাইটি হইলে পর তবসা
কর লোকের হুঃপর্যাপি বিলক্ষণ ধর্ম হইয়া
হ এবং ইহা হওয়াও জ্ঞান, ধানহে যে চেতু
সকলে আপন আপন ধান একত্রিত করিলেই
প্রত্যন্ত বিষয় সম সম হইতে পারে উতি।

২৬এ ক্রেতারি।

১৮৬৩ সাল।

একান্তবন্দ্য

জিরাধাগোবিন্দ চন্দ্র :

[illegible]

বাহু দিতে পারিলাম না। এখানে প্রায় ৩-৪ সপ্তাহ থাকায় সচরাচর জ্বর প্রকট হইল না বাঁধাইলে চলেনা। কয়েক দিন হইল। ইটি সাহেবের কাছারির ভিতর ছুই জন নাড়ারের ঐ রূপ জ্বর ঠক ঠক পুষ্ট রক্তের ইউরোপীয় হলে টেরটা পোড়ন) জাহাজ-কে ৫।৫ টাকা করিমানা ভদ্রভাবে এক এক সপ্তাহ করেই হুজুম দিয়াছেন। আহার অনাহার বলিতে পারি না। কাছারি বা বখাল-এ গুরুতর পাপ না হইলে সেখানে কেহ যায় না। অন্যকৃত অত্যাচার নহা করিতে না পা-বিয়া দুঃখীলোকেরা সাহেবের দিকট দরখাস্ত করিলে অর্থাৎ বাজু মধ্যে দিলে, সাহেব ক্রিষ্ণ-কণ পের দরখাস্তকারীকে ছুইবার, জুকিয়া সে যদি বাহিরে থাকে অথবা একটুই অন্তরে থাকে তবে তাহার বাইরে বাইরে অথবা উপস্থিত হইলেও দরখাস্ত দ্বিগুণ কেসেন। সাহেব পূর্বে ২।১ টার পর আসিডেন এখন ঠিক দশ-টার কাছারিতে আইসেন। কিন্তু বখস আসুন বাজি না হইলে আর কুঠিতে গমন করেন না। পর্য্যাপ্তকিতে যত্নে সাঙরা বোধ করি নিবেদ আছে। কিন্তু কিসের মধ্যে তিনবার বাইরা কু-টীতে থাকা থাইরা আসা নিবেদ মাই। মজা-দ্য। একে পীড়কাল তাতেইখানে প্রত্যাধি-কে) পীড়াধিকা হইরা থাকে, তাতে আবার তিন দশটা চইতে রাতি ৮।৯ টা পর্য্যন্ত অন্য-ধারে ও লামায়া বস্ত্রে থাকা লোকের পক্ষে ও রেশপকর। মোক্তার ও আকলা মজালদের। কাদের হারা খাল, কোশালা এবং জলখা-ন আনাইরা থাকেন। প্রতিবের উপায় কি? ৭।১২৩৪৫ মোকদ্দমা খরিয়া বলেন এই আশা-৭ ও ভরে তাহার। অধিকাকের নার ধিক্রিয়া থাকে। সাহেবের সুখের ভাব দেখিলে বকে ভুলিতে হয়।

অধিকাংশ মোকদ্দমাই জিস মিস। আর ক-খার কথায় লোকের অসুখিয়া ও মলাখিকা। ব্যাধিচারকের। বিচার হারা শক্তি স্থাপন ক-রিয়া থাকেন ইনি অসুখিয়ার তাহা সারেন। এত ছোট ছোট, ইহা চইতে বড় বড় ঘটন। হইয়া থাকে। কট এতে ও আমাদের এখানকার এক-মি চিডির ও অসুখি নহে? এমন কি আমাদের এখানে বিচার কার্য একচেটিয়া চইরা পড়িয়া-ছে। বাজিগেট সাহেব নুতন লোক। যেপুস আনাদের কত বরদাস্ত। এতেও যদি আপনায় কিছু জ্ঞান না হয়, তবে পুনরায় বাহিরা বাহির। কলগুরি বিচারকদিগের শুণ বাধ্য ও আ-নাহেব সচিবকৃত। বাজু করিব।

২। গত সোমবার এক জন গাজোরান পা-ডিব উপর একটা রুহৎ কাঠ উন্মোচন করিতে-ছিল, চঠাৎ তাড়া সরিয়া তাহার নতকোণরি পড়িতে মৃত্যু কর্তৃ হইয়া সে প্রাণ ত্যাগ করি-য়াছে। সিবেদন ইতি।

১৮৬৩। ২২এ কেবলগারি। একান্তবাধা মেদনীপুর।

মান্যবর জীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক মহাশয় সমীপে

রত ২৮এ বাবের সোমপ্রকাশে একখণ্ড ছইরাছে যে "লাফেলারের দ্বিতীয় ইরীক-বার্ষিক বাজুপুর্বে একটি সভা হয় এবং উক্ত সভার দ্বারা রাজকুমারি রায় চৌধুরী এক শত টাকা প্রাক্রিত করেন।" যে ব্যক্তি আপনায় সমী-পে একুশ প্রেরিত প্রেরণ করিয়াছেন, বোধ হয় তিনি রাজকুমারি বাবুর বিশেষ অনুগ্রহ পাই-হইবার জন্য, একুশ লিখিয়াছেন। বাজুপুর্বে বাসী সকলেই ইহা সবিশেষ জ্ঞাত আছেন যে, রাজকুমারি বাবু ১০০ টাকা প্রদান করেন মাই। তিনি সভা দিবসে সে স্থলে উপস্থিতই ছিলেন না। অতএব একুশ লিখা। সংবাদ জনসমাজে প্রচার করা উক্ত পত্র প্রেরকের কেবল লিখা। বামিতা প্রকাশ পাউতেছে সন্দেহ নাই। যে কয়েক জন মহাশয় ব্যক্তি "লাফেলারের দু-র্দশাপন" বহুবানিগের দ্বারা মোচনার্ণ অর্থ প্রদান করিয়াছেন, তাহাদিগের নাম ২২এ সা-বেব পরিদর্শকে প্রকাশ ছইরাছে; আপনিকি উক্ত দিবসের পরিদর্শক দৃষ্টি করেন নাই? অ-থবা পরিদর্শকের সৎবাদ সাতাকে লিখা। বাসী বিবেচনা করিয়াছেন? বাহা হউক, একবে আপ-নায় সংবাদ সাতার লিখা। বাহিতার প্রকাশ বরূপ (১) সেই সকল ব্যক্তির নাম মিসে প্র-কাশ করা যাইতেছে বখা—

জীযুক্ত বাবু সনানন্দ রায় চৌধুরী	
বাজুপুর্বে	১০০
" " কৃষ্ণমোহন মিত্র	জননগর ১০০
" " হরিন্দ্রনাথ	মজীলপুর ১০০
" " নবীনচন্দ্র ঘোষ	হরিনাতি ২৫
" " শ্যামচন্দ্র বিদ্যাস	গোবিন্দপুর ২৫
" " কেশবচন্দ্র রায় চৌধুরী	রাজপুর ১৬
মম ১২৬৯ সাল। ১ই কাছার	
কমার্টিং বাজুপুর্বে লিখানিঃ	

(১) আমরা সবিশেষ অনুসন্ধান করিয়া জা-লিলাস, যিনি আমাদের পূর্বে সংবাদ দেন, তাহার বালকতা প্রকাশ করা ছইরাছে। সস্ত্র-ডিকার পত্রপ্রেরকের একটি বিষয় বিশেষ করিয়া না লেখা ভাল হয় নাই। জীযুক্ত বাবু সনানন্দ রায় চৌধুরী যদি এরকারী টাকা ছইতে দিয়া থাকেন, তাহাৎ রাজকুমারি বাবুর অংশ আছে। ন

প্রাপ্ত মূল্য

জীযুক্ত বাবু হরিকৃষ্ণ মলিক, মেহের পুর ১২৬৯ কাছার ছইতে ৭০ আবেণ পত্রা

" " সীলকন্যা কলাপ	টেকরি
১২৬৯ অগ্রহায়ণ ছইতে ৭০ বৈশাখ পর্য্যন্ত	৫
" " টমস রুজ মঙ্গ	ভগবান গৌলা
১২৬৯ পৌষ ছইতে ৭০ অগ্রহায়ণ পর্য্যন্ত	১০
" " হুগি ভবানী	আলৌপুর
১২৬৯ কাছার ছইতে ৭০ আবেণ পর্য্যন্ত	৫৪
" " রেবরেন্ড সেব্রেল ডাইমন সাহেব	কৃষ্ণনগর
১২৭০ বৈশাখ ছইতে চৈত্র পর্য্যন্ত	১৩।০
" " রমানাথ তর্কবাণী	মেদনীপুর
১২৬৯ আবেণ ছইতে পৌষ পর্য্যন্ত	৫

সোমপ্রকাশ সংক্রান্ত কয়েকটি বিশেষ নিয়ম

অগ্রিম মূল্য না পাইলে প্রকাশের সোমপ্র-কাশ প্রেরণ করা যার না। ইহার অগ্রিম মূল্য বার্ষিক ১০ এবং বাধ্য-নিক ৫।৫ টাকা হয় বাসের মূলে মূল্য লওয়া যার না।

বাঁহা। সোমপ্রকাশের মূল্য খেলা টিকিট পাঠান তাঁহারা এক অথবা আধ আনার অধিক মূল্যের ও রসীদেব টিকিট না প্রেরণ করেন।

যখন যিনি মকদ্দম ছইতে সোমপ্রকাশের মূল্য পাঠাইবেন তাহা যেন রেজিষ্ট্রি করিয়া দেন।

পূর্বে প্রাপ্ত মূল্যের কাল অতীত ছইলে মূ-ল্য পাঠাইতে কেহ বেন অনন্ত বিলম্ব না করেন।

বাঁহা। যিনি মূল্য দিবার সময় অতীত ৫-টা থাকে, সন্তোষ সমর প্রতীক্য কবিয়া এবং সোমপ্রকাশে প্রচার কবিয়া তাহার পর চিঠি লিখিয়া জানান চইবে, যদি তা-হাতে কোন উত্তর অথবা মূল্য না পাওয়া যায় কাগজ বড় ছইবে। মূল্যের বিভিন্ন চিঠি বেগা-রিং পাঠান চইবে। কলিকাতা সংস্কৃতক-মেজে আমাদিগের নামে চিঠি আইলে আ-মরা পত্র পাইব।

বাঁহা। যখন সোমপ্রকাশ পরিভাগ কবিয়া-র ছইরা ছইবে চিঠি লিখিয়া না জানাইলে তাহা প্রাণ করা যাইবে না।

কেহ সোমপ্রকাশে বিজ্ঞাপন দিতে টাকা করিলে তাহাকে প্রথম দাদ প্রতি পত্রিক ৭০ আনা দ্বিতীয় বার ১০ আনা তৃতীয় বার ৭০ আনা দিতে ছইবে। তাহার পর ১২৪০ টাকা কবিসম বাব দেওয়া ছইবে।

মকদ্দমের বাঁহা। মর্ধ্য ছইবেন, তাহা-বিগের অন্তত তাকমাখল দিতে ছইবে।

এই পত্র কলিকাতার পূর্ব মাজলা রেলওয়ের সো-নাপুর টেনরের নিকট চাকতিগোড়ার জীবাগারায় বিদ্যাকুণ্ডের দ্বাৰা অতি সোমবার প্রকাশিত হয়।

সোমপ্রকাশ

২৩৭

১৩৬৬

সর্বস্বত্ব সংরক্ষিত। প্রার্থিত: স্বদেশী মুদ্রিত।

৫ টাকা।
১৩৬৬

সন. ১২৬২। ১২এ ফাল্গুন। ইং ১৮৬৩। ২ মার্চ

বার্ষিক মূল্য ১০ টাকা।
বার্ষিক আদায় ১০ টাকা।

সোমপ্রকাশের অবসর হুজি সংক্রান্ত বিজ্ঞাপন।

আজি অবধি সোমপ্রকাশের আর এক
করমা হুজি হইল। অতঃপর বাঁহারা বাঁহা
সিক মূল্য দান করিবেন, তাহাদিগকে ৫০
নাড়ি পাঁচ টাকা দিতে চাইবে, বার্ষিক আ
খি মূল্য (১০ টাকা) অপরিবর্তিত রাখিল।
মকসলের গ্রাহকদিগকে স্বতন্ত্র ডাক মাসুল
দিতে চাইবে। বার্ষিক ডাক মাসুল ৩০ কর,
কিছু বাঁহারা মূল্য প্রেরণ সংক্রান্ত চিঠি রে
জেষ্ট্রী করিয়া দিবেন, তাহারা তাহার ব্যয়
(০৫৫ আনা) বাস পাইবেন। বাঁহারা স্বত-
ন্ত্র ডাক মাসুল দিতে অসমর্থ হইবেন, আনা
টবেন আমাদিগের লক্ষ্যভূত হইলে তাহা-
দিগকে মাসুল দিতে হইবে না।

বিজ্ঞাপন।

করিমপুর জিলার অন্তঃপাতী বাটকেয়ারি
বংশধর নামে যে পত্রনি তালুক আছে,
তাহা দরপত্রনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা
হইবে। বাঁহারা সেই তালুক দরপত্রনি লই
বার অথবা তদ্বিষয়ে ইচ্ছা আছে তিনি
কলিকাতা জাতীয় ভিতর কোম্পানির নিক
ট আবেদন করিলে সনিশ্চয় রত্নাঙ্ক জানিতে
পারিবেন।

বিজ্ঞাপন।

বাঁহারা, হক টাকার, রাস্তা নুসিং, গৌর
পতিয়া, মিডামাথ টেবলগী, কলকাতা
তটাবাধ প্রকৃতি প্রাচীন কবিওলাদিগের
১৩৬৬ গাজপতি সংগৃহীত ও একত্রিত

করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য
১ এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

বহুবাজার ষ্ট্রিট ৭৬ নং বাড়ি।

ঐযত্নগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

বিজ্ঞাপন।

বৃহৎ মহাক্ষা মনমোহন তর্কালঙ্কার প্রণী
ত বাসবদত্তা এক কেহ হাপাইতে পারিবেন
না। কারণ তদীয় পিতব্য - রামচন্দ্র তট্টাচার্য
বা বাহালয়কে উক্ত পুস্তক তিনি দান করিয়া
ছেন। তৎসময়ে আমবা তাহার পিতব্যের উ-
ত্তরাধিকারী বর্তমান আছি। আমরা তির
বাসবদত্তার দান বিক্রয়ের স্বত্বাধিকার অন্য
কাহারও নাই। অতএব ঐযুক্ত বাবু রামচন্দ্র
সেন মহাশয় লিখিল প্রবর হইল এই আমা-
দিগের অনুরোধ।

ঐরামলাল চট্টোপাধ্যায়

১২৬২ ২ মার্চ

কলিকাতা

বিজ্ঞাপন।

ডাক্তার হানিগ বরজর সাহেবের প্রসিদ্ধ
ওলাউঠার ডিসেন্সারি একশে পঞ্চদশ বাজা
রের উত্তরে সাহাজাদার মসজিদের নিম্ন প-
শ্চিমে কলাইটোলা টিউব টের ৩৬ নং বাড়ি
তে স্থাপিত হইয়াছে। বাঁহারা উষ্ম কিংবা ও-
লাউঠা রোগের চিকিৎসার প্রয়োজন হইবেক
উক্ত বাড়িতে আমার নিকট আইলো অথবা
সংবাদ পাঠাইলে অবিলম্বে এবং অল্প মূল্যে

উষ্ম চিকিৎসা ও ডাক্তার হানিগবরজর সাহেব
বের বহি পাইবেন ইতি

আবদুল হানিগ

সোমপ্রকাশ।

১২এ ফাল্গুন।

কলিকাতা সংস্কৃত কালেক্টর

নিক প্রকৃতি অধ্যয়ন করিতে পারা
তাহাদিগকে এবিষয়ে বক্তিত করা হইবে
কেন? সুতরাং এই বিষয় লইয়া আলো-
চনা হইয়াছে। সেক্ষেত্রে মর্মান
সিও ইহার মীমাংসা করেন আই।
একটি বিবেচনীর বিষয় সন্দেহ নাই।
এক পক্ষে যুক্তি, আর এক পক্ষে
স্বতন্ত্র সংস্কার, এ উভয়ের বিরোধ নাই।
যুক্তি কাহারো এতি বিলম্বিত করে
করিতে কহিতে পারে না। সংস্কার
সংস্কার সকলকে লক্ষ্য করিয়া
কহে না। উপস্থলে জরাজীর্ণ
কর কার? জিহা কলি যুক্তির মর্মান
রূপ একা পক্ষ বেরিতে পাওয়া যায়
কহে, জাহাজে স্থাপিত হইলেই বৈধ
পক্ষ ব্যাহত হইবে। তাহার কোন
লাভিত হইতেছে না। চিন্তনতঃ
হার পূর্বে কালেক্টর অধ্যক্ষ
জাহাজ কাব্যও যুক্তিরই সপক্ষতা
কহে। ২৩৭

প্রথম বর্ষন সংস্কৃত কালেক্টর

হয়, তৎকালে জ্ঞান ও বৈদ্য ব্যতিরিক্ত

জাতিকে কালেজে গ্রহণ করিবার নি
দ্রিল না । অপর, তৎকালে অষ্টমী ও
চপদে কালেজ বন্ধ থাকিত । পশ্চাৎ
যশ ও নবশাক গ্রহণ ও রবিবারে কালেজ
ধাকিবার অনুমতি হয় । যখন নিয়ম
প অর্গল তথ্য হইয়া যায় উল্লেখিত হই
ছে, তখন আর সেই যার আংশিক রূক
গিয়া কতকগুলির প্রতি নৃশংস ব্যবহার
কম ? এখানে ইহাও বিবেচনা কঃ । আব
্যক, শাস্ত্রে স্ত্রী ও পুত্রের বেদপাঠ নিষেধ
হাছে, ব্যাকরণাদি বেদাদ বলিয়া তৎপা
ও প্রতিষিদ্ধ হইয়াছে । কিন্তু যখন সেই
নিষেধ উলঙ্ঘন করিয়া কায়স্থ প্রভৃতিকে
পাঠিয়া হইল, তখন অন্যজাতিকে লওয়া না
কেন ? শাস্ত্রকারেরা পুত্রের পদ সন্ধ্যা
নুসারে নিষেধের স্থানাতিরেক করেন
হই । জলের এক হাত নীচে হউক, আর
দুই হাত নীচে হউক, উভয় স্থলেই তুল্য
প্রাণবিরোগ সম্ভাবনা । যাহা হউক,
এ বনিক ও কৃষকের প্রভৃতি কয়েকটি
লোক এক্ষণে উদয়শীল হইয়াছে,
আদিগের প্রতি গবর্ণমেন্টের নিকূপ
যা উচিত হয় না ।

—৩৩—

কিন্তু সম্পাদকেরা উত্তর পশ্চিমা
দেশের লেফটেনেন্ট গবর্ণর পদের প্ৰবেশ
বিনিয়োগ করিয়া আসিতেছিলেন । ইহা
কিছু কেহ বীভন সাক্ষরকে, কেহ হারিড
সাহেবকে কেহবা অন্যকে এই পদ
দিতে উদ্যত হইয়াছিলেন । আমরা নি
শ্চয় শুনিলাম, তৎকালে প্রধান কোজি
সাহেব পদ প্রাপ্ত হইয়াছেন ।
কিন্তু সাহেব এদেশে অনেক দিন
নাছেন; এদেশের জল বায়ুর অন্ত বিধ
পরিবর্তন সহ্য করিয়াছেন; তাহার শরীর
বিলক্ষণ প্রতিষ্ঠা আছে । অতএব তাঁহাকে
পুরস্কার স্বরূপ এই পদ দান করা গবর্ণমে

ন্টের উচিত বিবেচনা হইয়াছে সন্দেহ
নাই ।

কন্যা বিক্রয় নিষেধক একটা

আইন হওয়া উচিত ।

এদেশের উন্নতির অন্তরায় গণনা ক
রিতে গেলে বহুবিবাহ প্রধান পদ লাভ
করিবে সন্দেহনাই । এই কুসংস্কৃত প্রথা নি
বন্ধন এদেশের যে যে অপকার হইতেছে,
অনেকে অনেক বার তাহার গণনা করি
য়াছেন, তাহা এক প্রকার পুরাতন হইয়া
গিয়াছে, তদ্বিষয়ে আমাদের মতন বক্ত
ব্য নাই । বিজোহ ঘটনার পূর্বে এই জঘ
ন্য প্রথার উল্লান্ন এক বার চেষ্টা হই
য়াছিল, কিন্তু তাহাতে ফলোদয় হয় নাই ।
সম্রাতি এদেশীয় এক জন প্রধান সমাজ
সংস্কারক পুনরায় এবিষয়ে হস্তক্ষেপ করি
য়াছেন এবং তারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার
অন্যতর সভ্য একতঃসংক্রান্ত এক বিল ব্যব
স্থাপক সভার উপস্থাপিত করিবেন, অঙ্গী
কার করিয়াছেন । আমাদের দেশের লো
কেরা রাজসহায়তার অপেক্ষা না করিয়া
স্বয়ং সমাজ দোষ সংশোধন করিবেন, আ
জিও একপ আশার অবকাশ হয় নাই । রা
জবিধি দ্বারা বলপূর্বকই ইহাদিগকে তদ্বি
ষয়ে প্রবর্তিত করিতে চাইবে । এবিষয়টি অন্য
অন্য বিষয়ের ন্যায় ধর্মসম্বন্ধ নয় । অতএব
ইহাতে হস্তক্ষেপ করিয়া সাধারণ প্রজার বি
ষেভাজন হইবার সম্ভাবনা নাই । বহুবিবাহ
নিষিদ্ধ হইলে কেবল যে আমাদের দেশের স
মাজ একটা মহত্তর অপকর্ষ হইতে মুক্ত
হইবে একপ নয়, অনেকসংখ্য হতভাগ্য
রমণী অসম্মত সঙ্গের চক্র হইতে পরিজ্ঞান
পাইবেন সন্দেহ নাই । সেই বস্ত্রা এক
বিধ ও একজাতীয় নহে । আমেরিক এক
কালে স্বামি সৌভাগ্য ও সংসার সুখে
বঞ্চিত হয় অনেক চিত্ত দৌর্বল্য হেতু
আপনাকে ও পিতৃ কুলকে চির কলঙ্কিত
করে । সেই সেই হতভাগ্যাদিগের জন্য

পিতামাতাকে অসংখ্য ক্লেশ ভোগ করিতে
হয় । অন্য আমাদের দেশের এবিষয়ের এসম
করিবার উদ্দেশ্য এই, এই সময়ে সময়ে
কন্যা বিক্রয় নিষেধক একটা আইন করা
আবশ্যক ।

বহু বিবাহের ন্যায় কন্যা বিক্রয় বি
য়েও রাজ হস্তক্ষেপ অবৈধ হইতেছে না ।
সমাজের অনিষ্ট ও নিকর্ষকারিতা পক্ষে
বহু বিবাহের ন্যায় ইহারও বিলক্ষণ সপ
কতা আছে । ইহা কেবল চিন্তাশাস্ত্র প্রতি
ষিদ্ধ নয়, এদেশীয় তত্ত্বলোকদিগেরও
নিষ্ঠাত বিদ্বিত । যে বিষয়ে অধিকাংশ
লোকের ও ধর্মের বিঘ্নে আছে, তদ্বিষয়ে
হস্তক্ষেপ করিয়া বিরাগ ভাজন হইবার
সম্ভাবনা কি ? কন্যা বিক্রয়ের দোষ এক
শূণ্য নহে । প্রথম, পিতামাতা কন্যাকে অর্গ
লোভে গো মেঘ মহিমার ন্যায় বিক্রয়
করেন, কিন্তু সেই বিক্রয় যে কতদূর যুক্তি
সিদ্ধ, তাহা আমরা বুঝিতে পারিতেছি
না । দ্বিতীয়, পিতামাতার কন্যার উপরে
প্রভুত্ব আছে যথার্থ বটে কিন্তু সেই প্রভু
ত্ব বলে এক স্বাধীন জীবকে যেকোন
বিক্রয় করা কিরূপে সম্ভব হইতে পারে
যাহাবা কন্যা বিক্রয় করে, তাহাদিগের ব
রের রূপ, গুণ ও অর্থ সম্বন্ধি বিষয় বি
বেচনা করা নাই, পরিণামে কন্যার কি
দশা হইবে, তাহাও এক বার বিবেচনা
করা হয় না, যে অধিক টাকা দিতে পারে
সেই বিক্রয়কার প্রিয় পাত্র হয় । এতটী
প্রসিদ্ধ কথাই আছে, কন্যা বিক্রয়কারির
কন্যা জন্মিলে তাহার এক তালুক ভাগ
হইল, জ্ঞান হয় ।

কন্যা বিক্রয়কারিয়া সচরাচর যে সক
ল ব্যক্তির হস্তে কন্যা সমর্পণ করে, তাহা
র দুই একটি উদাহরণ প্রদর্শিত হইতে
ছে, তদ্বারাই ইহার অনর্থকারিতা স্পষ্ট
সুট কপে পাঠকগণের হৃদয়ঙ্গম হইবে ।
বোধ কর এক ব্যক্তির ৫ বিঘা মাত্র ভূ
ক্ষেত্রের ভূমি ছিল ! সে তাহা বিক্রয় করে

পতিত ভূমি বিক্রয় হইলে ভারতীয়
ঐরুদ্দি হইবে, কথা উঠিল ; অবিলম্বে
বিক্রয়ের নিয়মাবলি প্রকটিত হইল :
সেই বিক্রয় কার্য দ্বারা হিন্দু, মুসল
বা ইউরোপীয় কে অধিকতর লাভ
হইলেন : ভারতবর্ষে বাহ্যিক পণ্য
ভুলার চাপ হইলে ভারতবর্ষের ঐ
হইবে, কথা উঠিল ; ভুলোপযোগিনী
নি অধিক হইল, চাপ আরও হইল,
সমস্তে রাখা ঘাট প্রভৃতির উৎকর্ষ সাধ
হইতে লাগিল, তাহাতে অধিকতর লা
বান কে হইল ? ভারতবর্ষের : ধর্ম
সমস্তে উৎকর্ষ লাভ করিতে পারেন না
কর্তৃপক্ষ বিল বিধিবদ্ধ করিলে সঙ্গ
সেই উৎকর্ষ তাহাদিগের হস্তগত
এই ভাণ করিয়া তাহা বিধিবদ্ধ ক
চেষ্টা হইল, টেটসেক্রেটারি তাহার
তিবাদী হইলেন, তৎকালে তাঁর
পদচ্যুত করিবার উদ্দেশ্যে " ভারত
ভারতবর্ষশাসন " দ্বারা উঠিল : সেই
চেষ্টা হইতে লাগিল, যদি সেই চেষ্টা
সফল হয়, কে তাহারা অধিক লাভ
বান হইবেন ? ভারতবর্ষে নীলকর প্রভৃ
তির সহিত এতদ্বারা নদা বিরোধ হয়, যক
অলে ছোট আদালত হইলে ভারতবর্ষের
ঐরুদ্দি হইবে, জঙ্গলা হইল, স্থানে স্থানে
ছোট আদালত প্রতিষ্ঠিতও হইল, কিন্তু
তাহারা কে অধিকতর লাভবান হইলেন ?
সিভিল সার্ভিসের পরীক্ষার দ্বারা উল্লিখিত
করিয়া ইংলণ্ডে তদ্রূপ রীতি প্রবর্তি
হইলে ভারতবর্ষে ঐরুদ্দি হইবে, প্র
হইল ; তৎপ্রথা তথায় প্রবর্তিত হইল, কি
তাহারা কে সমধিক লাভবান হইলেন
এবলে অনেক দিভাগ্য করিলে

ন. ইউরোপীয়েরা কি এদেশীয়দি-
গ উল্লিখিত বিষয়ের কল ভোগ ক-
রিবার করিয়া রাখিয়াছেন? কেহ
নীতিগণের সাক্ষাৎসম্মুখে তত্ত্ব বি-
কল ভোগ নিবেদন করেন নাই বরঞ্চ
কিছু পরস্পর সাক্ষাৎ নিবেদন করা
হইতে। ইউরোপীয়েরা এদেশীয়দিগের
কল অনেক বিষয়ে আখ্যান লাভ করি-
লেন, তাঁহাদিগের ধর্ম ও আচার রীতি
এবং উৎসব নিবন্ধন তাঁহাদিগের অনেক
খবর আছে; অতএব তাঁহাদিগের সহিত
এদেশীয়দিগের প্রতিযোগিতা হইলে এদেশ-
ীয়রা যে কলভোগে বঞ্চিত হইবেন সু-
খ হইবে। অতীত কতকগুলি বিষয় কেবল
ইউরোপীয়দিগের সুবিধা উদ্দেশ্য করিয়াই
হইয়া থাকে, তদ্বারা এদেশের আনু-
শঙ্গিক যে যৎকিঞ্চিৎ উপকার লাভ হয়,
সেই।

যে যে বিষয় দ্বারা এ দেশের জীবিক
প্রাপ্তি আছে, তত্ত্ববিধে এ দেশী
কে সাক্ষাৎ সম্মুখে অবশিষ্ট করা,
সেই সেই বিষয়ে ইংল্যান্ডকে শিক্ষা
দেওয়াই এদেশের জীবিক সা-
ধনের প্রকৃত পথ। এদেশে রেলওয়ে হই-
য়াছে, কিন্তু এদেশীয়েরা আরোহণাদিকপ
তাহার সামান্য কল বিনা মুখ্য কল ভোগে
অধিকারী হইতে পারেন নাই; রেলওয়ে
যখন এদেশে হয় নাই, ইংল্যান্ড কল প্রভৃতির
নির্মাণ ও চালনাদি বিষয়ে তখন যেমন অন-
ভিজ্ঞ ছিলেন, এখনও সেইরূপ রহিয়া
ছেন। ১১। ১২ বৎসর হইল, এদেশে
রেলওয়ে হইয়াছে, এপর্যন্ত এদেশের
কয় জন লোকে কয় জন কল প্রস্তুত করি-
য়াছেন? এদেশের কয় জন লোকে শকট
'লক' হইয়াছেন? এদেশের কয় জন লোকে
ভেড়ার কাজ শিখিয়াছেন? একে ত এদেশ-
ের লোকের সহজে আলস্য শয়ান পরিচ্যা-
প করিয়া অমসাহ্য কাড়ো ব্যাপৃত হইলে
উৎসাহ নহেন, তাহাতে আবার কাহার উৎসাহ

নাহ দেওয়া নাই, প্রকৃত অনুসাহ দেও
আছে। এদেশীয়েরা তত্ত্বকাড়ো মর্মে হই-
লেন না বলিয়াই অনেকে শিক্ষা করিয়া রাখি-
য়াছেন। বাহারবুদ্ধি আছে, তাহাকে শি-
খাইলে শিখিতে পারেনা, একি রূপ কথা
শিক্ষা ও কাজ না করিলে কি কখন কাহার
বুদ্ধি মার্জনা, শরীর পাটব, সাহস ও
বল বীজ্যাদির বুদ্ধি হয়? রেল গাড়ির কল
ও তরুণকরণ ইংলণ্ডে প্রস্তুত হয়, আর
এখানে প্রস্তুত হইতে পারে না, ইহা বুদ্ধি
য়ালওয়া সহজ নহে। চেকার অসাধ্য
কোন কর্ম আছে? এদেশে চেকা নাই
বলিয়া সমুদায় বিষয়েরই অসম্পত্তি। বা-
দালিয়া যে যে কারিকিয়া করিতে পারেন,
সাঁওতালেরা কি তাহা করিতে সমর্থ? তা-
হাদিগের সে অসামর্থ্যের কারণ কি?
তাহাদিগের শিক্ষা ও চেকা নাই। এদেশে
শে তুল্য জমিতেছে, কিন্তু সে তুল্য ইংল-
ণ্ডে গিয়া হুত ও বস্ত্র হইয়া আসিতেছে,
গভারাতের জাহাজ তাকা লাগিতেছে; এ
দেশীয়েরা কেবল মজুরী করিয়া তাহার
উৎপাদন করিতেছেন মাত্র, সেই তুল্য
প্রকৃত কলভোগী হইতে পারিতেছেন না।
এদেশে তুল্য জমিয়া ইংলণ্ডে চলিয়া
গেল, তাহাতে এদেশের কি জীবিক হই-
ল? এদেশীয়দিগের মজুরী লাভ, ইহাই
কি জীবিক জীবিক? এদেশীয়েরা কি
তুল্য পরিষ্কার কবিরার ও বস্ত্র প্রস্তুত ক-
রিবার কল করিতে শিক্ষা করিয়াছেন?
ইহারা কি সেই কল দ্বারা বস্ত্র প্রস্তুত
করিতেছেন? এদেশে সেই কল প্রস্তুত
করিলে এবং ইংল্যান্ডকে সেই কল প্রস্তুত
করিতে শিখাইলে কি এদেশের মজুরসী
জীবিক হইত না।

আমরা উপরে উদাহরণরূপ কেবল
কয়েকটা বিষয়ের প্রসঙ্গ করিলাম, এদেশ-
ীয়দিগকে কাজে অবশিষ্ট করিবার শিক্ষা
দিবার অনেক বিষয় আছে, ইহারা যাবৎ
সেইগুলি যত্ন ও সহজে সম্পাদন করি

তে সমর্থ না হইবেন, তাবৎ এ দেশের স-
মস্ত জীবিক লাভ সম্ভাবনা নাই। গবর্ণমে-
ন্টের যে তত্ত্ববিধে শিক্ষাদান ও উৎসাহ
দানের ভার, সেকথা বলা বাহুল্য। শিখাই
পুঙ্খনিগম শিক্ষাদান ভার গ্রহণ করেন।
যে শিখা যত্ন পণ্ডিত হইয়া তিনি কখন
পুঙ্খকে অজ্ঞান জ্ঞান ও চরৎসংগম দেখিয়া
মিষ্ট হইতে পারেন না। আমাদিগের
গবর্ণমেন্ট যদি অজ্ঞ হইতেন, আর এদেশ-
ীয়েরা শিক্ষা রসজ্ঞ হইতেন, আমরা
তাঁহাদিগকে উত্তেজনা করিতাম না। ব্রি-
টিশ গবর্ণমেন্ট এ দেশের শিক্ষা, রক্ষা ও
ভূতি ব্যবসায় বিষয়েরই ভার গ্রহণ করিয়া
ছেন। এখন সেই গৃহীত ভারোচিত কাৰ্য্য
না করিলে তাঁহাদিগকে কর্তব্যের অননু-
ষ্ঠান জন্য এতাবার ভগ্নী হইতে হইবে।

— — —

এল, এল, উপাধিধারিতা প্রধানতম
বিচারালয়ে ওপালতী করিতে
পারিবেন কি না?

সম্প্রতি সর বার্ণেস পিকক এই প্রশ্ন-
টা উত্থাপিত করিয়াছেন, যে সকল ছাত্র
বিশ্ববিদ্যালয় হইতে বি, এল, এবং এল,
এল উপাধি প্রাপ্ত হইয়া ওকালতি করিতে
আসিতেছেন তাহাদিগের উত্তর জ্ঞেয়কে
একবিধ স্বত্ব ও ক্ষমতা দিয়া প্রধানতম বিচা-
রালয়ে ওকালতী করিতে দেওয়া উচিত
কি না? এই প্রশ্ন উপলক্ষ করিয়া অনেক
বি, এল, সমবাদসারী এল, এল, উপাধি
ধারিদিগের বিরুদ্ধে চিৎকার আরম্ভ করি-
য়াছেন। তাঁহারা বলেন তাঁহারা এখন
বি, এ, উপাধি প্রাপ্ত হইয়া আইনের
পরীক্ষা দিয়া বি, এল, উপাধি প্রাপ্ত হইয়া,
কিন্তু এল, এলেরা কেবল এল, এ, প-
ক্ষা দিয়া ব্যবস্থা অধ্যয়ন করেন। পরীক্ষা
নয়নও সমান নহে। বি, এলদিগের প্রতি
বিষয়ে সমুদায়ের অধিক নয়ন লইতে
কর, পক্ষান্তরে এল, এলেরা তৃতীয়াংশ
প্রাপ্ত হইলেই প্রশংসা পত্র পাইয়া থাকে-

ন। এমিকে এত বৈলক্ষ্য দিও কল্যাণে বৈলক্ষ্য নাই। অতএব সেই কল্যাণে বৈলক্ষ্য হওয়া উচিত।

এই সকল ব্যক্তির স্বার্থপরতা আমা দিগের চিত্ত বিরাগ উৎপাদন করিয়াছে যথার্থ বটে, কিন্তু আমরা তাঁহাদিগের প্রদর্শিত যুক্তিকে অসম্মত বলিয়া স্বীকার করিতে পারিতেছি না। পরোক্ষ অংশে বধন বৈলক্ষ্য লক্ষিত হইতেছে, তখন কল্যাণে বৈলক্ষ্য হওয়াও উচিত সন্দেহ কি? পুরস্কার গত ইতর বিশেষ না থাকিলে লোকে সচরাচর অধিকতর জম স্বীকারে উৎসাহ হইবে কেন? কলতঃ বি, এল ও এল, এল, উত্তরের স্বত্ব ও অধিকার বিষয়ে বৈলক্ষ্য থাকা অসম্মত নয়। কিন্তু এলএল দিগের প্রধানতম বিচারালয়ে ওকালতী করিবার পথ রোধের যে চেষ্টা হইতেছে, আমরা তাহার অনুমোদন করিতে পারিতেছি না। এল, এলেরা যদি প্রধানতম আদালতে নিয়মানুসঙ্গ স্বকর্তব্য সাধন করিতে পারেন, তাঁহাদিগকে বঞ্চিত করা কি রূপে ন্যায়ানুগত হইতে পারে? বি, এলদিগের সম্মানস্বার্থ জ্ঞেয়ী ভেদ করি লেই হইতে পারে। ২৬৩

এখানে আমরা এল, এলদিগকে এক টী পরামর্শ দিতেছি, তাঁহারা তাহার অনুসরণ করুন। তাঁহারা মকদ্দম আদালতে যাউন, তথায় তাঁহাদিগের ওতিষ্ঠা লাভ সহকারে বিলক্ষণ অর্থ লাভ হইবে সন্দেহ নাই। তথায় অজ্ঞ অথবা অস্পষ্ট উকীলদিগেরই একাধিপত্য। এল এলেরা তথায় উপস্থিত হইলে (অজ্ঞ ও অস্পষ্ট উকীলেরা) নিঃসংশয় আপনাদিগের রাজস্বকে হ্রাস পদ রাখিতে পারিবেন না, সুরাজ লাভে প্রমাণগণের ন্যায় মওক্কে লেরা বিজোহী হইবে সন্দেহ নাই। মকদ্দম আদালত সকলেরও কিঞ্চিৎ আলোক লাভ হইবে।

পতিত ভূমি বিক্রয় সংক্রান্ত আইন।

১৪ ই কালুগনের ভারতবর্ষীয় ব্যবহা পক সত্য হারিংটন সাহেব পতিত ভূমি বিক্রয় সংক্রান্ত বিল উপস্থিত করিয়াছেন। উহা অবিলম্বে বিধিবদ্ধ হইয়াছে। পতিত ভূমি বিক্রীত হইয়া বনশূণ্য ভূমি পরিষ্কৃত ও তথায় নামাধি পশ্য ও চা প্রভৃতি উৎপন্ন হয়, গবর্ণমেন্টের এই নিতান্ত অভিলাষ। [তদ্বারা ভারতবর্ষের মঙ্গল হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা আছে। কিন্তু এংলীর দেশে গবর্ণমেন্টের সেই উৎকৃষ্ট মনোরথ সকল হইবার ব্যতিক্রম ঘটিতেছে। লোকে তন্নিমিত্ত তাঁহাদিগের নিকট ক্রুদ্ধ হইতেছেন না। পাঠকগণ কি মনে করিতেছেন, আমরা এই কথা বলিতেছি যে এদেশের অধিকাংশ ভূমি বনশূণ্য বহুক? না, আমরা দিগের সে ইচ্ছা নয়। আমরাই সমুদয় ভূমি লইব, অন্য জাতিকে বিশেষতঃ ইউরোপীয়দিগকে এ দেশে কৃষি কাব্য করিতে দিব না। ইহাও আমরা এক দিনের জন্য মনে করি না। ইউরোপীয়েরা আহ্নন, কৃষকদিগকে উৎকৃষ্টরূপে কৃষি কাব্য প্রভৃতির শিক্ষা প্রদান করুন এবং সাক্ষাৎ সহজে হটক আর পরস্পর সহজে হটক দেশের ধন ও সৌভাগ্য বৃদ্ধি করুন এইহা কোন ভারতবর্ষীয়ের না হইবে? এহলে আমাদের কে বল বহুবা এই, এংলীয়দিগের উপরে তৎক্ষণা অত্যাচার না হয়, এবং গবর্ণমেন্ট নিজে অবিচার না করেন।

হারিং টন সাহেবের বিলের মর্ম এই, পতিত ভূমির উপর কাকার স্বত্ব থাকিলে তিনি তাহা বিক্রীত হইবার অনতিপূর্বে জেলার কালেক্টরের নিকটে জমা হইবেন। কালেক্টর সে বিষয়ের খীত্র (সম্মতি) বিচার ও নিষ্পত্তি করিবেন। অর্থাৎ যদি তাহাতে অসন্তুষ্টি হয়, তাহা হইলে উক্ত আদালতে আপীল করিতে পা

রিবেন। এই বিচারালয়স্থিত কাকার পতি সেই আদালত করণ করিবেন। দিগের আজাই হুত্ব হইবে। হারিংটন যদি কোন বিষয়ের খীত্রাণা বোধ করেন, প্রমাণতর অবস্থা হারিংটনের সত্ব গ্রহণ করিবেন। প্রমাণ হইলে যদি কেহ আপত্তি করেন, অথবা তাঁহার সেই আপত্তি নিষ্পত্তি ও তাঁহার স্বত্ব উত্তমরূপে প্রমাণ হয়, তৎক্ষণি তিনি বিক্রীত ভূমি পুনরুৎপাদন হইবেন না; গবর্ণমেন্ট কোনও তাহার মূল্য প্রদান করিবেন। ২৪৩ যে কারণে সর টালমেন উক্ত কানিডের পতিত ভূমি সংক্রান্ত আইন পরিবর্তন করেন, তদ্বোধ স্বত্ব বিক্রীত একটা প্রধান। উক্ত মন্ত্রী যদিও অন্য অন্য সম্পত্তির ন্যায় পতিত স্বত্ব ও ভাষাদি আইনের অন্তর্ভুক্ত কর্তব্য। হারিংটন সাহেব অধিকাংশ দ্বারা উৎকৃষ্ট মূল্যে, বোধ ক ব্যক্তি টাকা দিয়া ভূমি জয় করি হাতে মূলধন বিনিবেশ করিয়া বতী করিয়া কুলিলেন, তাহার পর তাহা হইতে বঞ্চিত হন, তাহা হইতে অতিশয় কষ্টের হইবে। সত্যক্ বাহার যে সম্পত্তির উপর হ্রাস পড়ছে, সে তাহা বহু কষ্টে করিলেও যদি তাহাতে তাহার আনা বেওয়া হয়, সেটা কি তাহার অধিকার হইবে না? তাহা কি যুক্তি স্বাক্ষর ব্যবহার নয়? সর্বদেশে চির এই নিয়ম হইয়া আসিতেছে, আদ বাহার স্বত্ব প্রমাণ হইবে, সে স্বত্ব কে অবশ্যই দিতে হইবে, তৎপরিণ কিম্ব লওয়া আর না লওয়া তাঁহার ইচ্ছা কোন দেশের কোন ব্যবস্থাপকই সহ অনাগমোপভোগের প্রমাণ সংস্থাপন রেন নাই। ভারতবর্ষীয় গবর্ণমেন্ট অং ব্যবস্থাপক সত্য ইচ্ছাসত্ব এতৎপরিবর্তে,

ন। আইনের কথা বুঝে থাকুক, না
বা কি বলিতেছে, তাহাও বুঝিয়া
না করা উচিত। কেতা পাছে কখন
এই ভয়ে বিবল হইয়া যুক্তি কি
অধিকারির খব্র গোপে লুপ্তি কি
হয়? এই নিয়ম সকল সঙ্গী হইয়া উপ
স্থিত হইবে? বোধ কর, একজনকে এক
ক আশি আর জনকে বিচার করিল
পরে খবার অধিকারী মারীশ করি
গোপনার স্বয় সম্মান করিল। তখন
যদি তাঁহাকে যদি কোমার তা
হুনি পাইতে না, কিন্তু আমি তোমা
রূপ দিতেছি। আমার নে' কথা
হইবে-ত? কৌশলী আদালত আ
ত্মসিদ্ধি অপ'রণকারী বলিয়া তো
ও দিবেন না? দেওয়ানী আদা
লত সঙ্গত করিবেন? তাহা
পারেন, গবর্ণমেন্ট কি সুকৃতিতে
নিয়ম নিয়ন্ত্রিত করিতে উদ্যত
হইয়া নিয়ন্ত্রিত প্রকৃত ফল
এ কার্য সাধারণ লোকের
সুস্থিতি হয়, গবর্ণমেন্টের পক্ষে
কেন? অপর একালে ইহা বিবেচ
নামূলক, খবার অধিকারিগণ
সেত্রেও কেতার অন্তঃকরণ করে
একিঞ্চি হুলা লইয়া স্বাধীনতা
কিছু হওয়া সহজ, অথবা তিনি
আগমে পরের ভূমি জয় করিয়া
হুলাধন বিনিয়োগ ও পরিচাল
হেন তাঁহার সেই বিনিয়োগিত
ও পরিচালনের পুরস্কার লইয়া
রিজার্গ সহজ? কেতা যদি এ অনু
সহ্য করিতে না চাহেন, তাহা হইলে
রই সম্পত্তিকর করিবার পূর্বে বিশ
পে জায়া কর্তব্য প্রস্তাবিত, ভূমির
অধিকারী আছেন কি না? তাঁহার
একাল হইলে কি খবার অধিকারী
সর হওতো? করিবেন? বাহার জয়
তাহারই ক্ষতি হয়, ইহাই আমরা বরা

বরা শুনিয়া আসিতেছি, কিন্তু বাহার জয়,
তাহার লাভ, অন্যের ক্ষতি একথা আমরা
এই মুহূর্ত্তে শুনিলাম।

এই বিলের প্রতি আমাদিগের আর
এক বিশেষ আপত্তি আছে,
আমাদিগের বিচারালয়ের অবস্থা
হয় নাই। মাজিস্ট্রেট কালেক্টর প্রভৃতিও
অনেক সময়ে পক্ষপাত প্রাদুর্ভাব ও জা
তি বৈর প্রেরিত হইয়া কার্য করেন আর
লাদিগের ত কথাই নাই। টাকা ব্যয় করি
লে এক ব্যক্তি অন্যরূপে একজনকে নামে
ডিক্রী লইতে পারেন, অথচ প্রত্যয়ী ডি
ক্রীজারির পূর্বে তাহার বিহু বিসর্গও জা
নিতে পারেন না। একপ হলে গোপনে
লোকের সম্পত্তি বিক্রয় হওয়া অন্তর্ভুক্ত
নয়। বিশেষতঃ ব্রিটিজ, বিশেষবাসী, খ্রী
লোক ও অপ্রাপ্তবয়স্কদিগকে নিঃশেষ
সর্বস্বত্ব হইতে হইবে। অপর, বঙ্গদেশের
মৌকফদার বিচার তার কালেক্টরদিগের
হস্তে দেওয়া অত্যন্ত অন্যায়। একাদশ মো
কফদার দেওয়ানী আদালতেরই অধিকার।
দেওয়ানী আদালত ব্যক্তিরকে অন্যত্র
এবস্থিৎ মৌকফদার খবার ও হুলা বিচার
বইবার সত্তাবনা নাই।

ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্ট একপে অতিশ
ব অন্যায় করিতে চলিলেন। কলিকাতা বিল
রহিত হইবার পর অবধি তাঁহারা নানা
কৌশলে ইউরোপীয়দিগের সহায়তা কাষ্যে
প্রবৃত্ত হইয়াছেন, তখন তাঁহারা একদে
লীদিগের প্রতি অবিচার করিতেও ভীত
ও সঙ্কুচিত নহেন। তাহার এই পক্ষপাত
প্রত্যয়ে মোহিত হইয়াই বাহ্যিক ইংল
ণ্ডীয় গবর্ণমেন্টের সঙ্গী আসিয়া লজ্জন
করিতেছেন। বাহা হউক তাঁহারা কি
ইহাতে কৃতকার্য হইতে পারিবেন? ইং
লণ্ডীয় গবর্ণমেন্ট কি তাঁহাদিগের কৃত এই
পক্ষপাত সুবিধ ব্যবহার অনুমোদন করি
বেন? কলিকাতা বিলের প্রতি কি ইহা হয়

বহা হইবে না? দেখা হইল, সর চার্লস
উক্ত কি করেন।

কলিকাতা ওয়ার্ড ।

সমাজের পক্ষে দুইটী কলিকাতা
ওয়ার্ড হইবে। বাহ্যিক বাহ্যিক রাজকুমারদিগে
র তত্ত্বাবধান জন্য ৫ জন আইনজীবী ও
তত্ত্বাবধান নিযুক্ত হইয়াছেন। তদ্ব্য
রমানাথ ঠাকুর ও হরেন্দ্রকৃষ্ণ বাহাদুর
এদেশীয়, আর ৩ জন ইউরোপীয়। আ
মরা অনেক দিন অবধি ওয়ার্ডের হুলা
ন অবন করিতেছি, অনেক আই ও জজ
কালেক্টর প্রভৃতি এই হানে অপ্রাপ্ত ব
য়স্কদিগকে প্রেরণ করিতে অনিচ্ছ হই
য়াছেন। তাঁহাদিগের অনিচ্ছা নিষ্কার
নহে। বাহা হউক গবর্ণমেন্ট যে তত্ত্বাব
ধানক নিয়োগ করিতেছেন, ইহাতে আ
মরা অতিশয় আনন্দিত হইলাম। তদ্ব্য
বধানকরা বালকদিগের চরিত্র শিক্ষার
প্রতি কিঞ্চিৎ বিশেষ দৃষ্টি রাখিবেন।
তাঁহাদিগের চরিত্রগত জ্ঞান বোধের উপ
র অনেক প্রদেশের সুভাষিত নির্ভর
করিতেছে। এখন ত এই রূপ একটী
অনরুপ উচিত আছে, অপ্রাপ্ত বয়স্ক রাজকু
মারেরা ওয়ার্ডে কেবল আবকারির জি
জ্ঞি শিক্ষা করিতে আইসেন। আমাদি
গের দেশের জমীদার ও রাজকুমারেরা
যদি অপদার্থ ও অবিদ্যাকারির মায় ইঞ্জি
র সেবা ও আশ্রয়ের হস্তে সময় সমর্পণ
না করিয়া কৃতবিদ্যা ও সচরিত্র হইয়া
প্রদেশের জীতি স্বকর্তব্য সাধন করেন;
জিহ্বা কি প্রাত্যাতিক অঙ্গগণিকণবলী
শৌধরাজির মায় ভারতবর্ষের এতি গু
হের ভারশোভা সম্পাদন করিতে বি
বীৰ্যকাল উদ্যমিত থাকিত।

বঙ্গালিদিগের অধিকতর হুলাকার

হইবার উপায় কি?

বীৰ্যবাহিনী আশ্রয়ের এক প্রধান কারণ।

‘মোক্ষার্জন’ দ্বারা ভাববলবন করে নাই।
 ১৭ বছর অত্যন্ত অসত্যাযত্নে ছিল,
 ধনপারীকিক নিরুদ্যমিত্তি আনি তৎক্ষণাৎ
 পর মধ্যে উদ্ভিত হয় নাই, তখনই ইং-
 বাসিন্দা পুষ্টিকর দ্রব্য তৎক্ষণে ও অস্বস্তি
 প্রকট হিল। অন্যান্য শীতল দেশবা-
 গাকেরও প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে পাই
 গতি হইবে যে ইংলণ্ডবাসিন্দাদের ন্যায়
 গরীব শ্রমীরবিধানবিধি পণ্ডিতগণের
 হই না হইয়াও সর্বল শ্রমীর হইবার উ-
 ত্ত নিরর্থক অবলম্বন করিয়াছে।
 কলকাতা জল বায়ু ও বৃত্তিকামির উপরে
 ক প্রতিক্রিয়া আবাদিগের শারীরিক
 ও ক্রিয়াকলাপে বিঘ্নিত করে, তাহাও
 নাই। শ্রমীর বিধানবিধিগণিতেরাও
 হয় সিদ্ধান্ত করিয়াছেন। এতদ্বিধের স-
 র কলকাতা কোপলাও সাহেব বাহা বলেন
 সার জাতি নিয়ে সন্নিবিষ্ট হইল।
 সেনা সন্তান যে যে দেশে বাস করে
 দেশের জল বায়ু বৃত্তিকামির তার-
 হু বাহ্যিক পরিমাণে তাহার শারীর-
 সিক শক্তির ইত্যর বিশেষ হয়।
 , সাপেক্ষে প্রতি দেশে অত্যন্ত
 ১ ও প্রতি বৎসর হয় বাস গ্রাম
 এর অতীব নিবন্ধন তত্ত্বকেন্দ্রবাসিন্দা
 ও তুর্জল মাংসপেশী বিশিষ্ট হয়।
 াদি অপেক্ষা অসম্পূর্ণ দেশবা-
 সবার বিলক্ষণ সর্বলকার ও মানসিক
 বিশিষ্ট হয়। ২৫ ও ৩৬ ডিগ্রী
 রখার মধ্যে স্থাপিত দেশবাসিন্দা ইহা-
 ১৭, তাহারাই পৃথিবীস্থ সকল জাতি
 কা দৃঢ়ক ও ক্রম সহ্য করিতে সক্ষ-
 মে সক দেশে সকল ক্রম পরিবর্তন
 তত্ত্বকেন্দ্রবাসিন্দাদেরও ভৌতিক ও মান-
 বলের বিলক্ষণ প্রভাব হয় যথা- ভে-
 , গুইডেন, ইংলণ্ড ও তৎসম্বন্ধিত জা-
 তি। ৩ কোপলাও সাহেব আরো বলেন
 ১৭ সকল জাতি সমুদ্রের অপেক্ষা অধিক
 ও পর্বতাদির নিকটস্থ, সেই সকল স্থান
 ১৭ বিলক্ষণ দৃঢ়কার হইয়া থাকে। তা-
 ১ ব্যাখ্যা দি কপ কার্যে বিলক্ষণ রূপ এবং
 ১ ৩ সিংহ জাতি লোকের অপেক্ষা

অধিকতর দীর্ঘজীবী হয়। তাহাদিগের
 জীলোকের। অধিকতর সন্তানপ্রসূ ও ধর্ম
 পরায়ণ হইয়া থাকে। ৩

এতদ্বারা পাই প্রতীকমান হইতেছে যে
 বাসকার অল বায়ু বৃত্তিকামি বিশিষ্ট দেশে
 বাস করিলে লোকের স্বাস্থ্যকর হই পুষ্টিকর দ্রব্য
 তৎক্ষণে প্রাপ্তি হইয়া থাকে। অপর, হু
 কার হয় বলিয়াই তাহার প্রভাবতা (৩)
 আক্যাসিক বলোপার্জন প্রকট হয়। তাহা-
 সিনের বেগী স্বভাবতা হয়, আবাদিগকে
 তাহা চেষ্টা করিয়া করিতে হইবে। কিন্তু কি
 রূপে সে চেষ্টা করিতে হইবে, আবাদি আদা-
 নি বারে পাঠকগণের নোচর করিব।

সুতন পুস্তক ও পত্রিকা।

কয়েক সপ্তাহ হইল, কয়েক খানি সুতন
 পুস্তক ও পত্রিকা আবাদিগের হস্তগত হই
 রাহে। অবকাশ বিরহে আমরা কেবল যে
 প্রকৃতির ও পত্রিকা প্রস্তুতকারিগকে পূর্ণ
 বনোদন করিতে অসমর্থ হইরাছি এরূপ নহে,
 আপনারাও স্বকর্তব্য সাধন করিয়া তাহাদিগের
 নিকটে কণ বৃত্ত হইতে পারি নাই। অত-
 ক্রিয় পরিমাণে কণ শোষে প্রেরণ হইলান।

১। সীতার অধোবন, পদ্যবর গ্রন্থ, ঢাকা
 বাঙ্গাল বাঙ্গালী কলেজের পণ্ডিত জীহন
 মোহন দ্বারা প্রণীত। ইহা ঢাকা সুতন বরে
 মুদ্রিত হইয়া প্রচারিত হইয়াছে। ইহাতে রা-
 মের বিবাহ ও বিলাপ বর্ণিত বৃত্ত হইল। জা-
 মরা কয়েক স্থান আমল সহকারে পাঠ করি-
 লাম। বচনা সম্পূর্ণরূপে নির্দোষ হয় নাট ব-
 টে কিন্তু মলিন হইয়াছে। প্রকাশকের কাব্য
 রচনা শক্তি আছে, তাহা পাই বোধ হইল।
 কয়েকটি কবিতা উদ্ধৃত হইতেছে, পাঠ-
 কগণ স্বরাই কবির সঙ্গরতর পরীক্ষা করুন
 উদ্ধৃত কবিতা কয়েকটি এই—

করি নাম উর্দ্ধে বিলোকন,
 বলে অচেতন মেঘে তেবে সচেতন,
 তুমি যে জীবন ছাড়া, জীবের জীবন পাড়া,
 এই বার বাঁচাও জীবন।

(৩) ব্যাখ্যা দি দ্বারা যে বলোপার্জন
 হয়, তাহাকে আক্যাসিক বল কহে।

আমি নই মল্লিকার কিকি,
 মোর কলসে পত ধারে বহে বারি,
 গদা বসন্তে গলে, কলস নিভে গলে,
 অরিসরি নহিতে না পারি
 কুমি না ক উজাপ বারণ।
 আমার উজাপ কেন কর না মোচন,
 তোমার এলকি আছে, কিরা প্রেমীর কাছে
 জামাইতে কুপেণ বদন।
 যে বারিদ। বারি বহিবেন,
 কত নদী মদ পূর্ণ কর কপে কপে,
 মোর বাহ্যপূর্ণ কর, কইরা সন্দেহ হয়,
 যাও এনে-প্রেরার লহরে।
 বিনয়ে বলিও প্রেমীরে,
 তব প্রেমাবীণ সঙ্গা ভাসে মেঘসীরে,
 আর কি শিখাব আমি, যা বেগ চাতকবাণী
 তাই বলে এস বেয়ে কিরে।”

২। পদ্য পাঠ প্রথমভাগ দ্বিতীয়বার
 মুদ্রিত। জীবুৎক বহু গোপাল চট্টোপাধ্যায় ইহা-
 র সঙ্কলন করিয়াছেন। ইহা সালকলিগেব পা-
 ঠাণ সংগৃহীত হইয়াছে। বিদ্যালয়ে পদ্যগ্রন্থ
 বিরল প্রচার, বহু বাবুর এই গ্রন্থ অনেক ক-
 পে সেই অভাব দূর করিতে সমর্থ হইয়াছে।
 বহু বাবু যেগুলি যত্নে র না করিয়াছেন এ-
 বং যেগুলি সংগ্রহ করিয়াছেন, উত্তরেতেই
 তাহার সমস্ততার পরিচয় হইয়াছে।

৩। ধর্মচর্চা। ইহাতে প্রকাশকের নাম
 অথবা কোন বস্ত্র মুদ্রিত হইয়াছে, তাহা নি-
 খিত নাই। ১০৫৫ হয়, কলিকাতা প্রকাশক
 হইতে ইহার মুদ্রণ ও প্রচারণ কিরা সম্পন্ন
 হইয়াছে। ইহাতে প্রায় ধর্ম বৃত্তিত কয়েকটি
 পদ্য আছে। একটি উপদেশ ৫২৬৭ উত্ত
 হইল।

পুস্তক প্রতি পিতাব উপদেশ।

ধর্মপ্রপত্ত। হু ম ইদরকে লকা করি, ৭০০
 কার্য সম্পন্ন কর, তিনি তোমার পিতা, মতি
 অহুদ; সকল স্থানে সকল অবস্থাতে তিনি
 মার একমাত্র সঙ্গার ও গতি, তাঁহাকে স-
 কন, সমুদায় জীবন তাঁহার কার্যে নিয়ো-
 কর, এক হুহ-উদ জন্ম তাঁহাকে নিশ্চয় হই-
 থাকিও ন। তাঁহার জ্যোতি বৃত্তি কবির আ-
 মাকে উজল কর, সর্গদ, সেই ভূমানস
 ভোগ কর, সমসারের কুটিলতা পদ্য-
 ব কবিতা সেই পবিত্র স্বাক্ষরপেব সহিত দি-
 সন্নিবিষ্ট হও। আমি যখন তোমাকে লালন
 পালন করিয়াছিলুম, তখন আমিই মনে
 আশা ছিল, যে পুত্রযেধেরেব প্রতি অহুদ
 হইয় তুমি আমার গৃহ উজল করিবে, তাহা
 সেই আশা পূর্ণ কর। ইদর তির তোমার
 পতি নাই, তিনিই তোমার একমাত্র প-
 তাতে জীতি করিবে, অহুদারের সহিত তাঁহা
 প্রায় কার্য সাধন করিবে, এইজন্য তুমি এই
 পুথিরিতে অহুদ গ্রন্থ করিয়াছ; অতএব তাঁহা

[illegible]

ন ২(গবর্ণর জেনারেল)

संस्कृत-कविशास्त्रम् । एतद् द्वाविंशोऽध्यायः ।

দিল্লীতে গিয়ে বঙ্গের একটি ১০ বৎসরের
শিক্ষার্থীকে বঙ্গের একটি বালকের মত

প্রদান করিয়া পাঠ্যক। প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
সংগ্রহ করিয়াছেন। প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
৩। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
৪। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
৫। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
৬। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
৭। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
৮। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
৯। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।
১০। মাতা গণেশের মিত্র প্রদান করিয়া পাঠ্যক।

উক্ত সঙ্গীতক আরও বলেন চাকর অ-
১। রটি হইয়া নিয়াছে।

নিম্নলিখ বলেন পোর্ট আফিসের যে হুতন
মণি হইবার কপন। আছে, তাহা এবং স-
ময় হইবে না। ইহাতে প্র ১০ লক্ষ টাক
গয় হইবে।

তিনি আরো বলেন, ১৭ ই কেরতালি গ
৪৭ জেনেরল আগার একটি ময়দার কলি-
১১। ছিলেন। তথায় গোরালিমের মহারাজ
১২। প্রতি অনেক উপস্থিত ছিলেন।

তিনি আরো বলেন, অমরপুরের মহারাজ
১৩। মণি ৩ অমরপুরের সহিত কলিকা
১৪। প্রদান করিয়াছেন। আসিবার সময় আ-
১৫। হাবার ও বেনারস দিয়া আসিবেন, এবং
১৬। হইতে হিন্দুরে অপর্যাপ্ত দেখিতে বাই
১৭।

আলহাবাদ গেজেট বলেন তথায় শীত
১৮। ক হুতবে। তথায় একটি হুত হুতী
১৯। সেই স্থানেই ইহার কাণ্ড হইবে।

২০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২১। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২২। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২৩। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২৪। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২৫। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২৬। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২৭। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২৮। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
২৯। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-
৩০। ৩০। ৬ জন লোক খিদিরপুর হইতে নে-

১৪ই কাছন বুধবার

কিনিক বলেন, নাহেনারের দুর্ভিক্ষ
নিবারণার্থ কলিকাতা হইতে প্রায় ৩৮০০০০
টাকারও অধিক প্রেরিত হইয়াছে।

উক্ত পত্র আরো বলেন, গবর্ণর জেনেরলে-
র দরবার দিল্লীতে না হইয়া, বিরাটে হইবে।
উক্ত বিবেচনা হইয়াছে, তথায় দরবার করি-
লে দিল্লীর অবমাননা করা হইত।

উক্ত পত্র অথবা আর বিচার কাণ্ড সংক্রা-
ত প্রচারিত হিপোট ডেবিয়া লিখিয়াছেন
১৮ ১১। ৩২ অথবা তথায় পুলিশ কার্য দিকা
৩৩। প্রায় ২৭২৫০২ টাকা ব্যয় হইয়াছে।

১২ই আগস্টারি সমাট নেপোলিয়ন একটি
বক্তৃতা করিয়া ক্রান্তের ব্যবস্থাপক সভার
কার্য আরম্ভ করিয়াছেন। উহার বক্তৃতার
লোকে সমস্ত প্রকাশ করে নাই।

রাইরড কেণ্ড বলেন, স্প্রুয়েড রোডে
পুরাতন পোর্ট আফিসের নিকটে প্রধানতন
বিচারালয়ের বাড়ি নির্মাণ নীত আরম্ভ
হইবে। কলিকাতার ডেপুটি কালেক্টর অল্প
কতি নিয়াছেন যে অধ্যাবধি ১৫ দিনের মধ্যে
তত্ত্বা লোকসিংকে উত্তীর্ণা বাইতে হইবে।
গবর্ণমেট প্রধানতন বিচারালয়ের অন্য ৬
৩৪। কতি করিলেন।

উক্ত পত্র ইন্ডিয়ান কিলড ডেবিয়া লিখি-
৩৫। রাছেন ময় ৩৮। ১৮ পিকক সাহেব ভূতপূর্ণ ম
৩৬। মর আলভারের সিরিভারের পদ উঠাইবার
৩৭। অন্য গবর্ণমেটে অভ্যর্থনা করিয়াছেন।

সম্রাটর হিন্দুস্তানী বলেন গবর্ণর জেন
৩৮। রল প্রত্যাহত হইতেছেন। এক দিন রাজিতে
৩৯। তাকমল আলোকপূর্ণ হইয়াছিল। লর্ড
৪০। এলগিন ও লেডি এলগিন তাকমলার্ণ নিয়া
৪১। ছিলেন। তথায় অধিক সংখ্য লোকের সমা-
৪২। গম হইয়াছিল।

তিনি আরো বলেন করাসী গবর্ণমেটে
৪৩। তত্ত্বাবধিগের হুত ক. বন আনিবার নিমিত্ত
৪৪। মিত্রকে আদেশ করিয়াছিলেন। তিনি বলেন
৪৫। এক ডিপার্টমেন্টে তলার অভাবে প্রায়
৪৬। ৩০০০০ লোক নিরুপা হইয়া রহিয়াছে।
৪৭। পারিসে টাকার ৮০০০০ টাকা ব্যয় উঠি-
৪৮। য়াছে।

১৫ ই কাছন বৃহস্পতিবার।

গবর্ণমেন্ট চাকরো চাকর বীজ ও চাকর
৪৯। হুতন হুতক চিনকে বিনা হুত্রে প্রদান করিব-

৫০। র লক্ষ্য করিয়াছেন, উদ্বাসিতগের
৫১। মামলায় গভীর গবর্ণমেটে বীজ হুত
৫২। র টাক প্রত্যাহন করিবার আদেশ
৫৩। ছেন। আর একটি আনিবের সংসার
৫৪। তথায় কয়েক জন এতদেশীয় চাকর
৫৫। ছেন। কয়েক জন বীজকর হইয়াছেন
৫৬। বের চাকর ক্রমশঃ বর্জিত হইতেছে।
৫৭। বিবর বসমতো সর্বশেষে হইবে।

৫৮। বসমতো বীজের চাকর এক প্রকার বস
৫৯। তে কলিকাতার বীজকর কোম্পানি সিদ্ধ
৬০। শে এক জন কর্মচারিকে প্রেরণ করিয়াছে।
৬১। তথায় বীজ হইতে পারে কি না ইহা
৬২। উদ্বাসিতগের অভিপ্রায়। আনিবের
৬৩। য়ে উক্ত প্রদেশে বিস্তার বীজ অধিক।
৬৪। হুতকসিংগের লাত মেইয়া না দিতে পা-
৬৫। লে বীজকরেরা কোনহায়েই হুতকার্য হই-
৬৬। পারিবেন না। ২৪৭

আউয়ার পেপার বলেন, মেম্বারের উপ
৬৭। শে এক পানি এতদেশীয় আদায় টেলিও
৬৮। কের তার ও কয়েক জন এতদেশীয়
৬৯। ত্রী আনিতেছিল। উপকুলে বস
৭০। নিমিত্ত আদায় লাগাইলে টেলিও
৭১। চারিরা বলপূর্বক বাজীসিংগের দ্বারা
৭২। সাইরা লইয়াছিল। এবিষয়ে নালী
৭৩। তে গবর্ণমেটে ইহার অগ্রসরণ করিতে
৭৪। ন। এক্ষণে প্রকাশ হইতেছে এক
৭৫। রসীর দোষে এই অভিচার হইয়াছিল।
৭৬। হুত হুত প্রায় হইয়াছে। এক
৭৭। এতি দে. লায়োপ করা সহজ
৭৮। উক্ত পত্র আরও বলেন, সিদ্ধান্তে
৭৯। রায় গজপালের উপস্থাপ হইয়াছে।

৮০। মিসর দেশের হুতন আসি
৮১। পাসা উত্তম কপে রাজ্য আসি
৮২। তিনি স্বার্থার্থ প্রকাশ
৮৩। হইতে টাকার সাইরা আপদার ব্য-
৮৪। করিয়া হইয়াছেন। সম্রাট বিদেশী
৮৫। দিগের অধ্যর্থনা সম্বন্ধে তিনি
৮৬। যে কতি তিনটি বিশেষ কাণ্ড করি-
৮৭। নতঃ সিজের ব্যয় নির্ধারণ
৮৮। কপ, এবং হুততানের মত
৮৯। করিবেন। পাসা বলপূর্বক
৯০। করিয়াছেন। হুতের
৯১। বিশেষ বস নাই

শনিবার আলিগড় পর্যন্ত রেইলওয়ে
হ।

। বার্টল কিয়ার কানাডার হুতন বন্দর
র নতুন দর্শনার্থ গমন করিয়াছেন।
হারাজ সিংহিয়া বোম্বাই দর্শনের ক-
প্রাণ হইয়াছেন। লেপ্টনকে এ, জি, মে
চাচার সঙ্গে বাইবেন।

। আজ এখিনিয়র বলেন কল্যাণে ন-
হারদরাবাগে খাজা ও বোম্বাইয়ের
লওয়ে মিলিত হইবার সম্ভবনা আছে।
বর ইংলণ্ডের গবর্নমেন্টের বিবেচনা-
রণ করা হইয়াছে। এদিকে খল গ্রাম পণ্য
রেইলওয়ে হইয়াছে। বর্ধাকালের পূর্বে
পূরের রেইলওয়ে মলকাপুর পর্যন্ত খল
দুর হইয়াছে। নাকি তিন বৎসরের মধ্যে
বাক ও ভারতবর্ষের রেইলওয়ে কলকাতার
লত হইবে। মুর্শাপুর পর্যন্ত রেইলওয়ে
গবার বে কথা ছিল তাহার ও বহুনা সে হুর
দুর হইল।

। পলা হইতেছে পলাবের নিবিলিয়ানের
লঙার ব্যবস্থা বিদ্যালয়ে শিক্ষা করিবার
। সাত বৎসর কর্ম করিয়া তিন বৎসরের
সর পাইবেন। এখনই পলাবের কপে বা
পক হইয়া নিযুক্ত হইলে কি স্নায়ের সাধব
পরিপূর্ণ বিচার ক্রিয়া সম্পাদিত হয় না।
। বর বিপ্লব বনিক গ্রাম সাহেবের মৃত্যু
। তাহার জুলা খনী বনিক ইংলণ্ডে
। আছেন।

। আপানের খনী হুজিরা করে খানি বা-
ীর জাহাজ ক্রয় করিয়া বাণিজ্য আরম্ভ ক-
রাছেন। তখন হইতে এককপে বিস্তর নীল
চাউল প্রকৃতি রঙানী হইতেছে। বিনেপে
বিজ্ঞান আবশ্যকতা সকলেই বুঝিতেছেন
তদনুসারে কার্য করিতেছেন। কিন্তু এবি-
য় বুঝিমান দুর্ভ কেবল বরদেপেই পাওয়া

। ইংলিসমান বলেন, গবর্নমেন্ট ব্যবতীয়
। ডেলির মিলেটারি অকিস কণ্ড বহুস্তে
। করিতেছেন।

। এক অব ইণ্ডিয়া বলেন আরাকান, রে-
। বোলবিনের লোকেরা মিউনিসিপাল
। অসমুদ্র হইয়াছেন। তখন কলিকা-
। য় বাতীর কর অর্থাৎ শত করা ৭৪
। করা হইতেছে। রেজুপের গাড়ীর টাকা
। ার, বিপ্লব। নিয়ম কর্তার অবিবেচনা
। প্রতি হিতকর বিষয়ও লোকের
। র তেজ হইয়া উঠে।

। নাক এক জন ইন্ডো-পীও আপনা
। খাতার জাল খরচ লিখিয়া পলায়ন
। হাকে খত ক-বার জন্য পুলিশ
। না বাহির হইয়াছে।

। সংবাদ আসিয়াছে আনান্দে বিদ্রোহ উপ-
। স্থিত হইয়াছে। করানীদিগের হস্তে কেবল
। সেগন নগর মাত্র আছে বিদ্রোহীরা তাহাও
। আক্রমণ করিবার উদ্যোগ করিতেছে। করা-
। শীরা ১৮৭৭ অব্দের পূর্বে ভারতবর্ষের গব-
। নমেটের ন্যায় অতি মোতপ্রযুক্ত এই সত-
। টে পড়িয়াছেন।

। ১৬ই ফাল্গুন শুক্রবার।

। ফিনিক বলেন গবর্নমেন্ট ভারতবর্ষের ব-
। র্তমান বলটিয়র ইস্যু দ্বিগুণে ১৮৭৭ অব্দের
। ২৩ আইনের অধীন হইবার আদেশ করিয়া
। ছেন।

। তিনি আরো বলেন উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের
। কানাবুয়ের বার নির্দাহার ৩১০০০ টাকা কর্ত্ত
। হইয়াছে। তখন গ্রাম ১৩৩১ জেল আছে।

। টাইমস অব ইণ্ডিয়া বলেন বরোদা রে-
। লওয়ে কোম্পানির কলকটিও ইকিনিয়র ক-
। পেল কেনেত আগামি মেলে ইংলণ্ড হইতে
। আসিবেন।

। সিলিমেন্ট ইনকোয়ারার বলেন, ৬৯ বৎ-
। সর বয়স এক বৃদ্ধা স্ত্রীর গর্ভে একটা সন্তান
। জন্মিয়াছে। তাহার নামের বয়স ৭৪ বৎসর।
। নিলিনেটি ইনকোয়ারারের শাক্য সন্দেহ করা
। আশাশিগের উচিত হয় না, কিন্তু বোধ হয়,
। অনেক ঐ কাণ্ডে অসমসঙ্গিক বোধ করিয়া
। তাহার বাক্য আদার করিবেন।

। চাকানীপ্রকাশিকা বলেন মালিকগণের
। র ডেপুটি মাজিষ্ট্রেট জনপ্রকাশ সম্পাদকের
। নানে আইটে মাজিষ্ট্রেটের নিম্নে যে লাই-
। বেল নালিশ করেন, আইটে মাজিষ্ট্রেট তাহা
। তে সম্পাদকের ১০০ টাকা দণ্ড করিয়াছেন।
। বার্তাপ্রকাশিকা বলেন, মাজিষ্ট্রেট পক্ষপাত
। করিয়াছেন। আমরা চুপে আছি, পক্ষপাতের
। কথায় অনুমোদন করিতে পারি না, কিন্তু
। আমরা একই বলিতে পারি, চাকপ্রকাশ
। ডেপুটি মাজিষ্ট্রেটের যে নিন্দা করিয়াছেন,
। তাহা কেবল ভ্রমজনক মত্রে।

। ১৭ই ফাল্গুন শনিবার।

। ১৭ দেশ হইতে সংবাদ আসিয়াছে, সি-
। কিয়াক প্রদেশে সিংহবিদ্রোহের সক্তি রাজ
। সেনাগণের এক বৃহৎ হয়। তাহাতে রাজ সে-
। নাপন সম্পূর্ণরূপে পরাভূ হইয়াছে। করানী
। আকিসরেরা রণ ক্ষেত্রে রাজ সেনাগণকে লই-
। যা বার। একটা কামান কাটিয়া তিন জন আ-
। কিসরের প্রাণ বিয়োগ হয়।

। গবর্নর জেনরল স্থানে স্থানে দরবার ও
। স্থানে স্থানে বক্তৃতা করিতেছেন। কিন্তু তা-
। হার আগরার বক্তৃতাটা আশাশিগের সিতা
। ত অপ্রীতিবিহারী হইয়াছে। দেশবিহার

। অথবা প্রজাগণের হস্তে তৎ প্রদর্শন করা
। দরবার করিবার উদ্দেশ্য নয়, ইংলণ্ডের প্র-
। তিবিধি সত্যকালে দরবার ও রাজগণ-
। আক্রমণ করিয়া সপান বর্জন করিলে টিউ-
। গবর্নমেন্টের প্রতি তাহাশিগের তক্তি ও
। প্রীতি হইবে ইহাই দরবার করিবার উদ্দেশ্য,
। কিন্তু গবার জেনরলের আগরার বক্তৃতা
। হারা রাজা ও সদস্যগণের অবমাননা করা
। হইয়াছে। আগামি বারে আমরা কিত্তি, বি-
। ত্ত, রিত্তকপে এ বিষয়ের পুনঃ প্রসঙ্গ করিব।

। ফিনিক বলেন বোম্বাইয়ের প্রধানতম বি-
। চারালয়ের কর্মচারিরা পূর্বমত কী না পাঠ্য
। নির্ধারিত বেতন পাইবেন টেলর সাহেব দা-
। দে ১৭০০ প্রধান রেজিষ্টার কম্পিউট ম-
। ২৫০০ এবং আপিলেট কোর্টের বেত্রি-
। পিনহি ২১০০ সহকারী রেজিষ্টার মারিয়াট
। টাকা পাইবেন। ইন্সপেক্টরদিগের ও বেতন
। বৃদ্ধি হইবে।

। তিনি আরো বলেন অমৃতপুরের ৪০০০
। অণ্যায় প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত শিবদীন এ
। এডভেট কর্নেল ব্রুক সাহেবের সহি ৭৭০০
। তদ্রূপে গবর্নমেন্টে কালেক্ট দর্শন করিয়া
। কার উন্নতির নিমিত্ত ১০ প্রদান করি-
। ছেন।

। তিনি আরো বলেন বৃহস্পতিবার গব-
। জেনরল ও লেপ্টনকে গবর্নর ডাকমহলের
। দান দেখিতে দিয়াছিলেন, সেখানে গ-
। ৭০০ ৮০০ চাক্র উপস্থিত হইয়াছিল।

। বোম্বাইয়ের সত্যর সেক্রেটারি অগরব
। সত গণের সম্মতি ক্রমে, সর চারলস টি-
। লিয়নকে ভারতবর্ষের ব্যস্তাংক ম-
। কিনালিয়াল মেধর হইয়াছেন বলিয়া এক-
। নি অতনন্দন পত্র প্রদান করিয়াছেন।
। চারলস টি লিয়ন ও সারের তাহা প্রদান
। রা তাহাশিগকে দণ্ড্যাব প্রদান করিয়াছেন

। বরদেপীর ব্যবস্থাপক সভা

। ১০ই ফাল্গুন শনিবার।

। আসাম, কাছাড় ও ——— মত্রে ১৭৭০
। বিলে মিলেটিকবিটি বে রিপোর্ট করিয়া
। ইডেন লাভের তাহা সত্য অর্পণ করিলে।
। অনেক জর্জ বিল্ডের পর এই বিল স-
। র গৌচর্য্য প্রকাশিত হইল। দুই মত্রে
। ইহা পুনর্বার বিবেচিত হইবে।

করিয়াছে। ব্রিটিশ ইণ্ডিয়া কোম্পানী

পীর জাহাজ সাইড হইতে বো
মিতেছিল তাহা জলমগ্ন হইয়াছে।
বিকেরা কেহই রক্ষণ পায় নাই।
উনামক জাহাজ আমেরিকা হই-
লে লাক্সেমবার্গের নতুননিগের
ব্যতীত আনয়ন করিয়াছে। এই জাহা-
জগণের মধ্যে ওয়াসিংটনের কর্তৃপ-
ক্ষ পত্র লিখিয়াছেন তাহার। বহু
। সজ্জা করুন, মতেই সাফল্য সহ
প্রার্থনা করিয়া যুদ্ধ শেষ করুন।
বিজ্ঞোহেব সম্পূর্ণ বিবরণ জানা

মহাসভার অধিকাংশ রাজ্য
সমিতিছেন। রাজা এই এডুসের
দিগের প্রতিনিধিগণকে প্রচণ্ড কর
ত হইয়াছেন। উহা একটি সামান্য
। প্রেরিত হইয়াছে। করানী মহাসভা
ভিনন্দন পত্র মিতিছেন, প্রিন্স
কবল জাহাজে আসন্নত। দাসত্ব উঠা
কোম্পানী লগ্নের লোকেরা বিশেষ
শীঘ্র করিয়াছেন। পিউবেলার সমুদ্র
রা মেরিকীয়দিগকে আক্রমণ করি
হইতেছে। বিস্তার সম্ভা কন্য হইয়া

গুলি ধর্ম পরিপূর্ণ জাহাজ ব্রেজিলের
বন্দর হস্তগত হইয়াছে। লোকেরা তাহ
ভবিষ্যৎ ভবিষ্যৎ গবর্ণমেন্ট ও ইংরাজ
উভয় দিক হইয়াছে। ইংরাজ রণতর
গাচ খানি জাহাজ ধৃত কবীতে
গবর্ণমেন্ট ক্ষতি পূরণ কবিত্তে স্বী

কর মুদ্রেন। কর্তৃক কামেল কলিকাতার প্রধান
কমিটিয়ার বিচারপতি হইয়াছেন। তাহ
বহুত্ব উপলক্ষে মাকেটের বণিক সম্মত
করেন। এই সভা কলিকাতার গবর্ণ
মেন্টের বিরুদ্ধে প্রতিপ্রের প্রকাশ করিয়াছেন।

এরূপ প্রস্তাব লাওবরগের আলভারসান হ
কেন। ওয়াশিংটন কবিত্তের পরিবর্তে আলভারসান
হইয়াছেন। কবিত্ত পদত্যাগ করিয়াছেন। এর
কেন্দ্রে পাইল্ট স্থাপিত হইয়াছে। ১৮৫১ অব্দে
কেন্দ্রে পাইল্ট সভাস সম্মানার্থ চিহ্ন এই জুন প্রিন্স
কেন্দ্রে পাইল্টের আরা স্থাপিত হইবে। লক সাহে
হইয়াছিল সেপাটনট গবর্ণর হইয়াছেন
কেন্দ্রে পাইল্টের পরিবর্তে রিড সাহেব রণত
কেন্দ্রে পাইল্টের পরিবর্তে রিড সাহেব রণত
কেন্দ্রে পাইল্টের পরিবর্তে রিড সাহেব রণত

কেন্দ্রে পাইল্টের পরিবর্তে রিড সাহেব রণত
কেন্দ্রে পাইল্টের পরিবর্তে রিড সাহেব রণত
কেন্দ্রে পাইল্টের পরিবর্তে রিড সাহেব রণত

বর্ণমেন্ট বিজ্ঞাপন ।

আমেরিকীয় লেপ্টনটগবর্ণরের
আদেশাঙ্গারী নিয়োগ ।

৭৭৭৭—এইচ জাক সাহেব বাবুজান
। লোকাল কমিটির বেহর হইবে

ম। ই. জে. সচল ওয়ার্থ সাহেব তাহার সম্মান
ক হইবেন।

১৬ ই কেক্সারি—বাবু মনমথ সঙ্গিক ও বাবু
রমণীমোহন চৌধুরী রক্ষণের শিক্ষা সংক্রান্ত
লোকাল কমিটির মেম্বর হইবেন।

১৭ কেক্সারি—টি. এচ. এইচ. সচল সাহেব
বালেশ্বর প্রতিনিধি মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর
হইবেন এবং ১৮৩১ অব্দে ২৭ জাইনের ২২
খারাজসারে প্রথম প্রণীত অধীন মা-
জিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন।

এক ওয়াস সাহেব রক্ষণের প্রতিনিধি
মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন এবং উক্ত আই
ন অনুসারে তৎকালীন ২২ প্রণীত অধীন মা-
জিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন।

আব এ যাক্স সাহেব কাছাড়ের মেডিকেল
কর্তব্যী হইবেন।

মোহনপুরের ছোট জাহাজের লক বাবু
বেণীমোহন সাহেব ১৮৬১ অব্দে ২৫ জাইনের
২২ খারাজসারে প্রথম প্রণীত অধীন মা-
জিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন।

উত্তর বিহারের বেবেনিউ সরকারের আদ-
মি. সার্ট সাহেব ১৮৩৩ অব্দে ২২ নিয়ম অনু-
সারে তৎকালীন ডেপুটি কালেক্টরের কমতা পাই
য়াছেন।

এক, জে. আলেকজান্ডার সাহেব কিছুদিনের
কন্য ভগলপুরের প্রতিনিধি মাজিষ্ট্রেট ও কলে
ক্টর হইবেন।

১৮ ই কেক্সারি—এক. সি. কাউল সাহেব
বালেশ্বর প্রতিনিধি সিবিল ও সেন্স জজ হই-
বেন।

টি. জে. সি. প্রাণ্ট সাহেব পড়বেতার ডাব
প্রাণ্ট হইবেন এবং বাবুজান ও বেদীনীপুরের মা-
জিষ্ট্রেট ও ডেপুটি কালেক্টরের কমতা পাইবেন।

লেপ্টনট, এক কবি সাহেব ভাঙ্গারি-
বালেশ্বর অতি রক্ষণ সহকারী কমিসনরের প্রতি
নিধি হইবেন।

১৯ কেক্সারি—এইচ. আব. মেডিকেল সাহেব
ভগলপুরের ১ ন প্রণীত মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর
হইবেন।

এক, আব. কবল সাহেব বেদীনীপুরের
মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর হইবেন।

কি. জে. মাকেড সাহেব বেহাভের মাজিষ্ট্রে
ট ও কালেক্টর হইবেন।

আমসাম প্রিন্স সহকারী ভগলপুরে
সি. ডি. মাসুই সাহেব বালেশ্বর হইয়া, মিন-
পুরে গিয়াছেন।

১৯ কেক্সারি—জে. গার্ডার সাহেব
পাবনার পিকাসংক্রান্ত লোকাল কমিটির মে-
ম্বর হইবেন।

মৌলবী মহম্মদ কবিত্তের স্বী এবং বুনসি
চিরালস সারগেব শিক্ষাসংক্রান্ত লোকাল
কমিটির মেম্বর হইবেন।

মহম্মদ হাব প্রতিরিক্ত সহকারী কমিসনর
সি. গ. ক্রস সাহেব ১৮৫৩ অব্দে ২ জাইনের
১৯ খারাজসারি কমতা প্রাপ্ত হইয়াছেন।

সি. বেথুন সাহেব ১৮৬২ অব্দে ৫ অ-
ইনে ২ খারাজসারি কমিসনর বালেশ্বর
বালেশ্বর মোকা মেথিবার জমা প্রতিনিধি সন-
বেহর হইবেন।

২০ কেক্সারি—প্রতিনিধি অধ্যাপক জে
ইওয়ার্ড সাহেব মেডিকেল কালেক্টর এনটিমি,
ফিল্ডলজি, কল্যাণেট এনটিমি, ও জুজির
অধ্যাপক হইবেন।

জবলউই. ওয়ার্ড সাহেব সাহাবাদে শি
কামাংক্রান্ত লোকাল কমিটির মেম্বর হইবেন।

২১ কেক্সারি—বাবু কালীপ্রসন্ন সিং কা
কোর অধ্যাপক ডিপেন্দ্রনাথ প্রতিনিধি সন-
সিউল্ট সন-সন হইবেন।

এইচ. এস. টমসন সাহেব কিনইদেহের জে
আদালতের জজ হইবেন, কিন্তু যে পর্যন্ত তা
কোন অফিস না হয় তত দিন থাকরণ
প্রতিনিধি সিবিল জজ থাকিবেন।

২৬ কেক্সারি—এ. সি. মাল্ল সাহেব
বালেশ্বর সহকারী মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর
হইবেন। ১৮৬১ অব্দে ২৫ জাইনের ২২
খারাজসারে তৎকালীন ১ ন প্রণীত অধীন মা-
জিষ্ট্রেটের কমতা পাইবেন।

মাজব। কিনইদেহ, কোট্টাপুর ও মজা
লেন প্রতিনিধি জজ এইচ. এল. সারেন মনে
বের ছোট আদালতের জজ হইবেন।

এস. সি. সেন সাহেব, বালেশ্বর প্রতিনিধি
প্রতিনিধি জজ সাহেব হইবেন
আম. সি. জে. মাল্ল সাহেব সাহাবাদে
উই. ম. কলেক্টর ও ডেপুটি কালেক্টর হইবেন,
কিন্তু যে পর্যন্ত কন্য কোন অফিস না হয়
তত দিন বালেশ্বর মাজিষ্ট্রেট ও কালেক্টর থাকি-
বেন।

পত্রপ্রেরকের প্রতি ।

শ্রাবণ বর পয়ার গুলি উৎসৃষ্ট হইয়াছে
কিন্তু পূর্বে সমাদৃত অতি সামান্য।
সবিশেষ না জানিয়া বাকুইয়া
প্রচার কন্য নিবন্ধ হইতেছে না।

পোপালচন্দ্র বালেশ্বর পত্র প্র-
যোগ্য নহে।

স্বতন্ত্র নিদান আবিষ্কারী জ্ঞান
মনোনিভ হইল না।

পুঁচিল বালের পত্র প্রকাশ কর
তেছে না।

প্রেরিত ।

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক
মহোদয়ের ।

শ্রীমতী সেন বহরগুর উক্ত বাক্য
ত একটি বিজ্ঞাপন বিধত এই
ব পত্রিকার প্রকাশিত দে

১২
 ১৩
 ১৪

১৫
 ১৬
 ১৭

১৮
 ১৯
 ২০

২১
 ২২
 ২৩

২৪
 ২৫
 ২৬

২৭
 ২৮
 ২৯

৩০
 ৩১
 ৩২

৩৩
 ৩৪
 ৩৫

৩৬
 ৩৭
 ৩৮

৩৯
 ৪০
 ৪১

৪২
 ৪৩
 ৪৪

৪৫
 ৪৬
 ৪৭

৪৮
 ৪৯
 ৫০

৫১
 ৫২
 ৫৩

৫৪
 ৫৫
 ৫৬

৫৭
 ৫৮
 ৫৯

৬০
 ৬১
 ৬২

৬৩
 ৬৪
 ৬৫

৬৬
 ৬৭
 ৬৮

৬৯
 ৭০
 ৭১

৭২
 ৭৩
 ৭৪

৭৫
 ৭৬
 ৭৭

৭৮
 ৭৯
 ৮০

৮১
 ৮২
 ৮৩

৮৪
 ৮৫
 ৮৬

৮৭
 ৮৮
 ৮৯

৯০
 ৯১
 ৯২

৯৩
 ৯৪
 ৯৫

৯৬
 ৯৭
 ৯৮

৯৯
 ১০০
 ১০১

১০২
 ১০৩
 ১০৪

১০৫
 ১০৬
 ১০৭

১০৮
 ১০৯
 ১১০

১১১
 ১১২
 ১১৩

১১৪
 ১১৫
 ১১৬

১১৭
 ১১৮
 ১১৯

১২০
 ১২১
 ১২২

১২৩
 ১২৪
 ১২৫

১২৬
 ১২৭
 ১২৮

১২৯
 ১৩০
 ১৩১

১৩২
 ১৩৩
 ১৩৪

১৩৫
 ১৩৬
 ১৩৭

১৩৮
 ১৩৯
 ১৪০

১৪১
 ১৪২
 ১৪৩

১৪৪
 ১৪৫
 ১৪৬

১৪৭
 ১৪৮
 ১৪৯

১৫০
 ১৫১
 ১৫২

১৫৩
 ১৫৪
 ১৫৫

১৫৬
 ১৫৭
 ১৫৮

১৫৯
 ১৬০
 ১৬১

১৬২
 ১৬৩
 ১৬৪

১৬৫
 ১৬৬
 ১৬৭

১৬৮
 ১৬৯
 ১৭০

১৭১
 ১৭২
 ১৭৩

১৭৪
 ১৭৫
 ১৭৬

১৭৭
 ১৭৮
 ১৭৯

১৮০
 ১৮১
 ১৮২

১৮৩
 ১৮৪
 ১৮৫

১৮৬
 ১৮৭
 ১৮৮

১৮৯
 ১৯০
 ১৯১

১৯২
 ১৯৩
 ১৯৪

১৯৫
 ১৯৬
 ১৯৭

১৯৮
 ১৯৯
 ২০০

২০১
 ২০২
 ২০৩

২০৪
 ২০৫
 ২০৬

২০৭
 ২০৮
 ২০৯

২১০
 ২১১
 ২১২

২১৩
 ২১৪
 ২১৫

২১৬
 ২১৭
 ২১৮

২১৯
 ২২০
 ২২১

২২২
 ২২৩
 ২২৪

২২৫
 ২২৬
 ২২৭

২২৮
 ২২৯
 ২৩০

২৩১
 ২৩২
 ২৩৩

২৩৪
 ২৩৫
 ২৩৬

২৩৭
 ২৩৮
 ২৩৯

২৪০
 ২৪১
 ২৪২

২৪৩
 ২৪৪
 ২৪৫

২৪৬
 ২৪৭
 ২৪৮

২৪৯
 ২৫০
 ২৫১

২৫২
 ২৫৩
 ২৫৪

২৫৫
 ২৫৬
 ২৫৭

২৫৮
 ২৫৯
 ২৬০

২৬১
 ২৬২
 ২৬৩

২৬৪
 ২৬৫
 ২৬৬

২৬৭
 ২৬৮
 ২৬৯

২৭০
 ২৭১
 ২৭২

২৭৩
 ২৭৪
 ২৭৫

২৭৬
 ২৭৭
 ২৭৮

২৭৯
 ২৮০
 ২৮১

২৮২
 ২৮৩
 ২৮৪

২৮৫
 ২৮৬
 ২৮৭

২৮৮
 ২৮৯
 ২৯০

২৯১
 ২৯২
 ২৯৩

২৯৪
 ২৯৫
 ২৯৬

২৯৭
 ২৯৮
 ২৯৯

৩০০
 ৩০১
 ৩০২

৩০৩
 ৩০৪
 ৩০৫

৩০৬
 ৩০৭
 ৩০৮

৩০৯
 ৩১০
 ৩১১

৩১২
 ৩১৩
 ৩১৪

৩১৫
 ৩১৬
 ৩১৭

৩১৮
 ৩১৯
 ৩২০

৩২১
 ৩২২
 ৩২৩

৩২৪
 ৩২৫
 ৩২৬

৩২৭
 ৩২৮
 ৩২৯

৩৩০
 ৩৩১
 ৩৩২

৩৩৩
 ৩৩৪
 ৩৩৫

৩৩৬
 ৩৩৭
 ৩৩৮

৩৩৯
 ৩৪

[illegible][illegible]

এক বিপরীত তাৎপৰ্য্য কমে, ইহা-
থে সুমাত্র উপস্থিত বোধ হয়।
কি বিবর্তিত হইয়া কেবল ইঞ্জির
কিরা অথবা অতীবকে মন্দীভূত
করে। তিক্তবাসী বিমূঢ় হইয়া যথেষ্ট
হইয়া, অসংকল্পকভাবে যেমন সংকল্প করিয়া
। হায়! ইহাদের কি বিপরীত সংস্কার
। হে!

সম্পাদক মহাশয়! যখন এই বঙ্গবাসীগণ
বহাৰাধা জনক জননীর মেঘ পাশেই করি-
। এতদূর ভাষন অল্পম নগের এতদ শ্রুত্ব
রিয়া অল্পকণি পরিত্যাগ পূৰ্বক বিদেশান্তর-
। পদ চালাইয়া করিতে থাকিলেন, তখন ইহা
কি মানন করিয়াছিলেন? অর্থোপার্জন ক-
। গিতাভ্যাসে হুখে বোচন, অমেশন
রক্তি সাধন, অকীর সৌভাগ্য বর্জন, অনাথ দ-
ত্রেব হুখে নিবারণ এবং প্রকারান্তর ইহা। যে
কালে ইহাদের অন্তরে বলবতী ছিল ইহা-
চ বোধ হইতে পারে না। কিন্তু কি কোণের বি-
। একদা সে সকল পবিত্র তাৎপৰ্য্য কেন অত্যা-
হইল? একদা কি অতিমত অর্থ উপার্জনে
। কন হইয়া তাহার বর্থাৎ ব্যবহার বিস্মরণ হ-
ইয়া তাহাকে মহানগের কারণ করিয়া ফেলিলে
ন? বহুদিক্ সনাকারে জানোয়ারত হওয়াতে ক-
। য়ের তর উত্তম রূপে জাগিতে পারিয়া। তৎসা-
। নেতৃকি হইয়া উঠিয়াছেন? ইঞ্জির সেবার
। অর্থের সার্থকা সাধন হয়? ন
। কের করাই কি বর্থাৎ মহান-
। মাহাশয়! ইহা বিদেশে আসিয়া
। একর আধীনতা প্রাপ্ত হইয়াছেন,
। দ্বাধীনতাই ইহাদের উল্লিখিত অসং কা-
। হিতের এক প্রকার মন্দীভূত কারণ বলি-
। ও বহা বাইতে পারে। সম্পাদক মহাশয়!
। মাপনাকে একটা কথা জিজ্ঞাসা করি,
। বা নিভা মহাব্যোম ইন্দ্র-নন্দ এখান অধি-
। ই আধীনতাই কি এই প্রকার?

জীবন্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক

মহাশয়েষু।

সম্পাদক সোমপ্রকাশে বঙ্গবাসী বাবুর
। উত্তর বিচারসনে আসীন হইবার সংবাদ
। হইয়া বার পত্রমাই আফ্রাসিত হই-
। হইয়া কেন, ইহা অপেক্ষা অজা-
। য়ের কি হইতে পারে? বোধ হয়
। গিরিভূক্ত বাস্তবগণ ভিন্ন সমুদায়
। বা এই সংবাদে আফ্রাসিত হইয়াছেন।
। এই প্রাণ দ্বারা চিত্তিত ও অচিত্তিত কর্মচারী
। বহিঃ একটা গরিত্ত জর আছে তাহা কি-
। হই হইল বটে, কিন্তু সত্যক প্রকারে হু-
। হই, বোধ হয় সে আশা পূর্ণ হইবার সময়
। এখনও পুঙ্খিত হয় নাই। বাহা হউক, পত্র
। বাবু সকল সমুদায় পরম্পরার অধিকারী হ-
। ইয়া কাল সুখ্যাতির সহিত সমর আসা-
। লতেশালতী করিয়া উচ্চতম আদালতের বি-
। চাষণ হইয়া পাঠ সহস্র টকা বেতন পাউত

লাগিলেন, সেই প্রকার গুণ ও বোধ্যতা বিবেচ-
। নাহ জেলা আদালতের উকীলেরা এক কালে
। এখান সমর আসিনী পদ ও চারিগত টকা বেতন
। ন না পান কেন? এই বিষয়ে আমি জেলাস্থিত
। যোগ্য উকীল গণকে সম্বোধন পূর্বক এতদ পূর্বি-
। কাহার, নিবেদন করিতেছি, অতঃপর তাঁহারা
। সমবেত হইয়া। এই বিষয়ের জন্য হাইকোর্টের
। দ্বারা পদমোটে আর্থনা করুন, তাহা হইলে
। উচ্চাধিকার আদালত সিদ্ধি পক্ষে বড় বিষয়
। হইবেক না। তদ্বারা দ্বিবিধ উপকার সাধিত
। হইবেক। অর্থাৎ অতি জবাব বেতনে জবাবা মক-
। সন গানে গাইতে আনিছ। বশত সে সকল
। মহা ব্যক্তি মুন্সেফী কার্যে বিবর্ত হইয়া জেলা
। কোর্টে ওকালতী করিতেছেন, তাঁহারা। অসা-
। ধারণ গুণক বোধ্য ও বিচারকম হইলেও কখন
। বিচারপতি হইতে পারেন না, এই সে অনাগর
। নিম্ন আ'চ, তাহা। বহুত হইলে তাঁহারাও ই-
। ছ। পূর্বক ঐ পদ স্বীকার করিবেন। এবং বাসি
। উৎসাহ ক্ষুদ্র মোকদ্দমার আদালতের জজ হও-
। গাব নাহ জেলা কোর্টের উকীল প্রেনীর গৌরব
। বর্জিত হইয়া জেলা কোর্টের উকীলগণ একটা স-
। জুত পদ হইয়া উঠিবে। দ্বিতীয় (" কেবল আ-
। মার গুণে পুত্র মুখ দেখাব না, ") অসুপযুক্ত
। মুন্সেফগণ কেহবা আদালত কেহবা উকীলের
। কেহবা পদ পক্ষান্তরে অসুপযুক্ত সাহায্যে
। বিচার কার্য সমাধা করিয়া গণমোহের চক্ষে
। ধুলি দিয়া যে উচ্চ পদ প্রাপ্ত হইতেছেন তখন
। আন উৎসাহ না হইয়া বোধ্য ও উপযুক্ত পাত্রের
। পুরস্কার হইবে। একান্ত বশব্দ

৫ ই কালীপূর্ণ } জীবন্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
১২৬৯ } বহরমপুর

প্রাপ্ত মূল্য।

জীবন্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
১২৭০ বৈশাখ অবধি ১৮৭১ পর্যন্ত কোং ১৩০
১০ ভারিচরণ চট্টোপাধ্যায় পটলডাঙ্গা
১২৬৯ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্যন্ত
কোং ১০
১০ কালিদাস বন্দ্যোপাধ্যায় দেবগ্রাম
১২৬৯ ভাদ্র হইতে মাঘ পর্যন্ত কোং ৫
১০ জগদীশচন্দ্র দাস বরিশাল
১২৬৯ অগ্রহায়ণ হইতে ৭০ কার্তিক পর্যন্ত
কোং ১৩
১০ রাধাগোবিন্দ দত্ত মজুমদারপুর
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্যন্ত কোং ৫
১০ কালীচরণ চট্টোপাধ্যায় দিনাজপুর স্কুল
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্যন্ত কোং ৫
১০ মহিমচন্দ্র দাস চুমাগলি
১২৬৯ ভাদ্র হইতে মাঘ পর্যন্ত কোং ৫
১০ রত্নাবিনয়ক রায় মণিলাল বাটী
১২৬৯ কাশ্বন হইতে ৭০ মাঘ পর্যন্ত কোং ১৩
১০ জীবন্ত সোমপ্রকাশ সম্পাদক
১২৬৯ কাশ্বন হইতে ৭০ মাঘ পর্যন্ত কোং ১৩

১০ মেদিনীপুর লাইব্রেরি মেদিনীপুর
১২৬৯ অগ্রহায়ণ হইতে বৈশাখ পর্যন্ত
কোং ৫
১০ মহেশচন্দ্র বিগান সংস্কৃত কালেক
১২৬৯ কাশ্বন হইতে ৭০ আষাঢ় পর্যন্ত
কোং ৫
১০ পশুভূষণ রায় জেলা রাজসাহি
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্যন্ত কোং ৫
১০ শ্যামচরণ ঘোষ বশোভন চৌধাড়া
১২৬৯ পৌষ হইতে ৭০ জ্যৈষ্ঠ পর্যন্ত কোং ৫
১০ কালীকান্ত রায় চট্টগ্রাম
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ আষাঢ় পর্যন্ত কোং ৫

সোমপ্রকাশ সংক্রান্ত কয়েকটি

বিশেষ নিয়ম।

অগ্রিম মূল্য না পাউলে ভক্তবলে সোমপ্র-
কাশ প্রেরণ করা যায় না।
ইহার অগ্রিম মূল্য বার্ষিক ১০ এবং মাসিক
৫ টাক, হয় মালেক মাসে মূল্য লওয়া
যায় না।
যাঁহারা সোমপ্রকাশের মূল্য বোধ্য টিকিট
পাঠান তাঁহারা এক অর্থন আর্থ আদায় অধিক
মূল্যের ও রসীদের টিকিট না প্রেরণ করেন।
যখন যিনি মকদ্দম হইতে সোমপ্রকাশের
মূল্য পাঠাইবেন তাহা সেন রেজিষ্টারি করিয়া
দেন।
পূর্বপ্রাপ্ত মূল্যের কাল অতীত হইলে মূ-
ল্য পাঠাইতে কেহ যেন অসম্মত বিলম্ব না
করেন।
যাঁহাদের মূল্য দিবার সময় অতীত হই-
য়া বাইবে, সঙ্কটমত সময় এতীকা করিয়া
এগুণে সোমপ্রকাশে প্রচার করিয়া তাহার
পত্র চিঠি লিখিয়া জানান হইবে, যদি তা-
হাতে কোম উত্তর অথবা মূল্য না পাওয়া যায়
কাগজ বন্ধ হইবে। মূল্যের নিমিত্ত চিঠি বেচা-
রিং পাঠান হইবে। কলিকাতা সংস্কৃতকা-
লেজে আদালতের নামে চিঠি আইলে তা-
মরা শীঘ্র পাউব।
যাঁহারা যখন সোমপ্রকাশ পরিভাগ করিব
বইছা হইবে চিঠি লিখিয়া না জানাইলে
তাঁহা গ্রাহ করা বাইবে না।
কেহ সোমপ্রকাশে বিজ্ঞাপন দিতে ইচ্ছা
করিলে তাঁহাকে প্রথম বার প্রতি পংক্তি ৭০
আনা, দ্বিতীয় বার ১০ আনা তৃতীয় বার ১০
আনা দিতে হইবে। তাহার পর ১২১০ টাক
কমিসন বাদ দেওয়া বাইবে।
মকদ্দমের যাঁহারা লম্বা হইবেন, তাঁহা
বিগের পত্র ডাকমাফুল দিতে হইবে।
এই পত্র কলিকাতার পূর্ব মাজলা রেল ওয়ার
মাগুর স্টেশনের দক্ষিণ চাকতিগোড়ার জৈবাকান
বিজ্ঞানভবনের বাটীতে প্রতি সোমবার প্রকাশিত হয়

সোমপ্রকাশ

“স্বর্গেরা সজ্জিতবিতায পার্থিবঃ স্বরাজ্যে নৃপিতলহনী ন স্বীকর্তা।”

৫ তারিখ।
১৮ সংখ্যা।

{ সন ১২৬২ । ৪ ঠা চৈত্র । ইং ১৮৬৩ । ১৬ মার্চ }

{ মাসিক মূল্য ১ টা
বার্ষিক মূল্য ১০ টা }

বিজ্ঞাপন।

মাননীয় বারু রামলাল চট্টোপাধ্যায় ও শ্যামলাল চট্টোপাধ্যায় মহাশয়
সমীপে।

সবিনয় নিবেদন--

কবির নমনমোহন তর্কালঙ্কার প্রণীত
(বাসবদত্তা) অতি উত্তম গ্রন্থ বঙ্গীয় আমন্ত্রণ
কতিপয় বঙ্গ কবিগাহিলেন যে উক্ত পুস্তক
লেখকের মৃত্যু হইয়াছে, গ্রন্থকারের পুত্রানিও
কেহ নাই, আত্মীয়গণ দ্বারা বর্তমান
আছেন তাঁহারাও এগতীয় উহা মুদ্রিত করি
লেন না, অতএব আপনি এই বহি সাহিত্য
সংসারের উপকারার্থে পুনর্বার ছাপাইতে
পারেন, ইহাতে বোধ হয় কেহ আপত্তি করি
লেন না। আমি তাঁহাদিগের এই অগ্ররে সেই
পুস্তক ছাপাইতে দি। এই পুস্তক ৫০০ পত
১৫ মুদ্রাকনের অর্থ আজ্ঞা প্রদান করিয়াছি
এ উহার ছাপা প্রায় শেষ হইল। আমার মর্মে
সমস্ত এই পুস্তকের কারণ ২৫০০ টাকা ব্যয়
হইয়াছে। আপনি আমাকে এই ব্যয় প্রদান
করিলে সমস্ত মুদ্রিত পুস্তক আপনাদিগের
নামে সোমপ্রকাশ সম্পাদকের সমীপে পাঠা
ইব তাহার পর আপনাদি পুস্তক বিক্রয়ে যে
লাভ হইবেক তাহা গ্রহণ করিতে পারবেন
কিন্তু আপনাদি যদি এই পুস্তকের স্বত্ব বিক্রয়
করিতে ইচ্ছা করেন, তবে আমি তাহা ক্রয়
করিতে প্রস্তুত আছি ইহা বিশেষতঃ নিনে
সমিতি -

তার ২১ কাউন
৩৮ মাল

ঈরামলাল সেন
সহ-সম্পাদক

বিজ্ঞাপন

করিলেন। জিলায় অধ্যাপক। বাটমেনারি

মহম্মদপুর নামে যে পটনি ভাটুক আছে,
তাঁহা মরণপত্নি দেওরা অথবা বিক্রয় করা
হইলে। বাঁহার সেই ভাটুক মরণপত্নি নই
বার অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি
কলিকাতার জার্ডন কিনার কোম্পানির নিক
টে আবেদন করিলে সবিশেষ রক্ষা জানিতে
পারিবেন

বিজ্ঞাপন। ২৫৩

রাঁধবার, হরু তাঁরুর, রাগু নলিৎ, গৌর
কবিরাজ, নিত্যানন্দ বৈরাগী, কৃষ্ণমোহন
তর্কালঙ্কার প্রভৃতি প্রাচীন কবিগাহাদিগের
উত্তম উত্তম গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত
করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য
১ এক টাকা মাত্র।

কলিকাতা।

সকলজ্ঞার টিউ ৭৬ নং বাসি।

ঈরামলাল চট্টোপাধ্যায় এবং কোং

সোমপ্রকাশ।

৫৮ নং মোকদ্দার।

জয়পুরের মহারাজ নিজ মন্ত্রী ও অ
ন্যান্য কর্মচারি সমিতিবাহারে ২৭ এ কা
লুপ্ত কলিকাতা সংস্কৃত ও প্রেসিডেন্সি
কালেক্টরে দেখিতে অসিয়াছিলেন।

কিছুদিন অবধি কলিকাতার ওয়াড
লইবা গোলযোগ চলিয়াছে। এই টা উঠি
য়া যায়, অনেক একপ চেকা করিতেছেন।
কিন্তু আমাদিগের মতে এ চেকা ইষ্টকল

দায়িনী মতে। এ বিষয়ে কিছু
যে অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন।
তাহার সম্পূর্ণ অনুমোদন করিতে।
প্রাপ্ত বরফ পিড়িহীন যদি।
যদি পূর্ববৎ নিজ নিজ কামে
শিক্ষার ব্যবস্থা হয়, তাহাৎ অসি
ইউসিহির সত্বনা অভিপ্রায়।
নদিসের বিদ্যা ও চরিত্র।
কর অনেক। উহার কলিহির
সেই প্রতিবন্ধক রাখা পারি
হয়। উহার চিরস্থায়ী হইয়া
মেকের স্বার্থসিদ্ধির পথ
মকহলে শিক্ষার বিষয় হইলে
চরাসর স্বার্থপর ব্যক্তিদ্বিগের
প্রাক্ত্যব হইয়া উঠিবে। হারার
হাদিগের বিরুদ্ধে অনুরোধ ও
তা এই অপ্রাক্ত্যব্যবহার শিশুদিগে
পৈতৃক সম্পত্তির মত বিদ্যা ও
শিক্ষার ও সংহারকারিনী হইলে
প্রত্যেক কলিকাতার বাসিন্দা শিক্ষার
নিরম করা হইয়াছে, তাহা উৎকর্ষ
নাই। নগরের অপর পক্ষীপ্রাণে উ
কালান্ত সজ্জিত নয়। তবে
ওয়াডের উদ্ভাবন বিষয়ে
রাহিলাম, অন্য তাহার
কেহি। বাহাতে ওয়াড হ বাসিন্দ
কপে-বিলাতী পাপকিরার অনু
না করে, সর্বতোভাবে সেই চে
ক। সেই পাপ কিরার
ব্যতীত বিবেক আছে, তাহা

ত করা হউক এবং সেই তত্ত্বাবধান
বিল ভাবে সম্পাদিত না হয় ।

এমনি গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের প্রথা
শিক্ষকের অসাধু ব্যবহারের কথা বারবার
ব্যাখ্যা দিয়ে আসি গেছে। গত গোচর হইতেছে, মধ্যে
মধ্যে তাঁহার বিপক্ষ ও সপক্ষ উভয়বিধ
পত্রও প্রাদিগের হস্তে আসিতেছে ।
আমরা হাতে অতিশয় অসুস্থিত হইয়া
ছি । কিন্তু প্রধান শিক্ষক এক জন শিক্ষিত
ও তিনি যে আপনার শিক্ষার অনু
করণ করিয়া বিপক্ষ আচরণ করিতেছে
না, ইহা সন্দেহের কারণে কোতের হইবে
না । দুটা বিষয়ে আমরা তাঁহার
অসুস্থিত হইলাম । এক, তিনি
এই বিদ্যালয়ের প্রতি প্রতিশ্রুতি
করিয়া থাকেন, এমন কি তাহা উ
নিমিত্ত তিনি আন্তরিক চেষ্টা
করেন । দ্বিতীয়, গবর্ণমেন্ট বি
দ্যালয়ের প্রতি তিনি নিদারুণ
কিরিয়াছেন । শিক্ষিত ব্যক্তির প্রী
তিরোধী আচরণ, ইহার জন্য অ
সুস্থ আছে । একে আমরা
গবর্ণের প্রীতির অবস্থা সম্প্রদায়
কিছুই করিতে পারিতেছি না,
এই সমস্যায় মহানুভব ব্যক্তি তাঁহা
বিস্তারিত করেন, আমরা তাহারও
কিরিয়া করিব । দ্বিতীয় বিষয়ে
(তর বিষয়ে) তাঁহার অসাধু ব্যবহা
র আমরা প্রথমে প্রত্যয় করি না
কিন্তু তাঁহার সপক্ষে যে পত্র আমাদি
কি হইতে আসিয়াছে, তাহারাই সমগ্র
প্রতিশ্রুতি তিনি কেবল বিবেক বশবর্তী
করিয়া উত্তর পদচ্যুতির কারণ হইয়া
কিছুই তাঁহার সোমপ্রকাশে তাঁ
কিছুই পত্র প্রকাশিত হয়, তাঁহার
কিছু পত্র তাঁরা প্রতীক্ষমান হই
কি মনে করিয়াছেন, সেই পত্র
প্রকাশিত হইলেন । কিন্তু বাস্তবিক
কিছুই লিখিত নয়, তিনি সে

পত্র লিখিয়াছিলেন, তাঁহার নাম আমা
দিগের নিকটে আছে । বাহা হউক আমরা
তাঁহাকে পুনরায় সাবধান করিয়া দিলাম,
তিনি যেন সতর্ক হন ।



ইনকম টাক্স ও তাহার শত্রু ।

সর চার্লস ট্রিভিলিয়ান এপ্রেল
মানে আর ব্যয় সংক্রান্ত একটা হিসাব
প্রদান করিবেন । সেটা দিন দিনদিন স
মীপত্রবর্তী হইতেছে । ইনকম টাক্সের
কি দশা হইবে ? এই প্রশ্ন নইয়া অনেক
বিধ আলোচন উপস্থিত হইয়াছে । অনেকে
অনুমানে অনেক প্রকার সিদ্ধান্তও করিতে
ছেন । কেহ কহিতেছেন, চার্লস ট্রিভিলি
য়ান লেভ সাহেবের নাম এককালে ইন
কম টাক্স রহিত না করিয়া আপাততঃ বা
ষিক সহস্র মুদ্রাকে সীমা করিবেন, কেহ
কহিতেছেন, এককালে উহা উঠাইয়া দি
বেন । কিন্তু আমাদিগের বোধ হইতেছে,
ট্রিভিলিয়ান সাহেব এককালে উহা উঠাই
য়া দিতে পারিবেন না । ইহার একটা প্র
ধান শত্রু উপস্থিত । ম্যাকগেটের আমদানী
কর রহিত করিবার প্রার্থনার চীৎকার আ
রম্ভ করিয়াছেন । সর চার্লস ট্রিভিলিয়া
ন যে এক কালে উভয়বিধ কর রহিত ক
রিয়াও রাজ্যের আর ব্যয়ের সমতা বিধান
সমর্থ হইবেন, ইহা সন্দেহিত নহে । অত
এব স্পষ্টই বোধ হইতেছে, ইনকম টাক্স
রহিত করা তাঁহার আন্তরিক ইচ্ছার বিষয়
হইলেও তিনি কতিপয় কৃতকাব্য হইতে
পারিবেন না । তবে কেহ কেহ সর্বণের
কর রুজি করিয়াও যে ইনকম টাক্স রহিত
করিবার পরামর্শ দিতেছেন, আমরা কে
ম ক্রমে তদনুমোদনকারী নহি । কতক
গুলি লোকের কষ্ট নিবারণ করিতে গিয়া
যাবতীয় প্রকার বিশেষতঃ দরিদ্র ব্যক্তি
দিগের সাক্ষাৎ সম্বন্ধে কষ্ট রুজি করা
বিষয় নহ । সর্বণে প্রয়োজন হয়
না, এমন কেহই নাই, এবং সেই সর্বণে

উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের লেপ্টেনেন্ট
গবর্ণর ।

আমরা পূর্বে হারিংটন সাহেবের
উত্তর পশ্চিমাঞ্চলের লেপ্টেনেন্ট গবর্ণর পদে
প্রতিষ্ঠিত হইবার সম্বন্ধ দিরাহিলাম, এ
বারে আবার তাঁহার তৎপদ অধীকারের
ও ভ্রমও সাহেবের তৎপদ লাভের
সম্ভাব্য দিতেছি । তিনি এই পদ গ্রহণ ক
রেন নাই, তাহার কারণ এই, তিনি বাল
ন, লেপ্টেনেন্ট গবর্ণর পদে অধিক ক্ষমতা,
যোগ্যতা ও পরিশ্রম আবশ্যক করে, কিন্তু
তাঁহার শরীর সুস্থ না থাকিতে তাঁহার তা
দৃশ যোগ্যতা ও পরিশ্রমক্ষমতা নাই ।
আজি কালি ভারতবর্ষে একপ ন্যায়পন্য
৭ সাধু ও বখাও লোক অতি বি
রল । উত্তর পশ্চিমাঞ্চল বঙ্গদেশ
অপেক্ষা বহুদূরে আত্মকর, পদটি অ
(বার্ষিক লক্ষ টাকা বেতন) ও পৌরন
উত্তর সম্বন্ধেই লোভনীয় । আপনার ক্ষ
তা বিবেচনা করিয়া এ সকল লোভ পদ
পের আকর্ষণ ছেদন সহজ নয় । অপর, হা
রিংটন সাহেবের পরিশ্রম ক্ষমতার কিঞ্চিৎ
হ্রাস হইয়াছে বটে, কিন্তু এই পদে যে যে গুণ
আবশ্যক, তদংশে তাঁহার ক্ষমতা নাই ।
তিনি রাজনীতি ও রাজবিধিই পূর্ণ
দক্ষ, রাজস্ব সংক্রান্ত কার্যেই অপর
নহেন । উক্ত কারণে উক্ত পদ পরিভ্রাণ
করাটাই তাঁহার ন্যায়পন্যতানিগুণ
সবিশেষ পরিচয় কইয়াছে ।
গেজেট হইয়াছে কিম্বা, স্মারক সেজেটানি
ই, ভ্রমও সাহেব এই পদ গ্রহণ করিয়াছেন ।
ইনি হারিংটন সাহেবের অপেক্ষা সর্ব
বিষয়েই নিকট । ইনি কিম্বালিয়ান সে.
টারি ছিলেন বটে, কিন্তু সচরাচর স্মৃতিতে
পাওয়া যায়, ইহার কতিপয় ভাষণ সম্বন্ধে

মাই। জাহাঙ্গীর নবাবের বাকিতে ইংলণ্ড হইতে উইলসন, লেড ও সন্ন চার্লস ট্রিবি নিয়মকে আনিবার প্রয়োজন হইত না। আইন ও ইহার ভেতন নৈশূণ্য মাই। এতদ্ভিন্ন ইহার খুঁটখাটী ব্যক্তিরিগের প্রতি দর পক্ষপাত আছে। বাহা হউক, হকের তৎপন্ন লাভ অতাবনীর্য় অননুমোদনীয় হইয়াছে। জা গেল, ই. এচ' লসিওটন সাহেব তুম ১ সাহেবের কণ্ঠে হইয়াছেন।

— ০ —
জি. এ. উপাধির পরীক্ষা
ফল।

অন্য বহু ভূমি ভূতন ভূবনে ভুক্তি হইলেন। যে ৭ ব্যক্তি এম এ পরীক্ষার্থী হইয়াছিলেন, তন্মধ্যে ৩ জন পরীক্ষাতে উত্তীর্ণ হইয়াছেন। ইহা সামান্য আনন্দ কর ব্যাপার নহে। এত দূর ঘটনা উঠিবে নহে একপ সন্তোষের কারণ মাই। বঙ্গভূমি ধীরে ধীরে অগ্রসর হইতে পারেন না বটে কিন্তু বুদ্ধিমান সন্তান অগ্রসর করেন বলিয়া যে চিরপ্রসিদ্ধি আছে, আজি তাহা বিশেষ রূপে সমর্থিত হইল। যে জন জন পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছেন, তন্মধ্যে ৩ জন গণিত পাঠে, ২ জন ইতিহাস ও বাস্তব পাঠে এবং ১ জন দর্শন পাঠে পরীক্ষা দিয়াছিলেন। কয়েক জনই বাঙ্গালি ও কয়েক জনই প্রেসিডেন্সি কলেজের ছাত্র। ইহারা পরীক্ষা দিয়া কেবল যে স্ব নামের গৌরব বৃদ্ধি করিয়াছেন একপ নয়, চূড়ান্ত বঙ্গদেশের যুগ উজ্জ্বল এবং প্রেসিডেন্সি কলেজের সম্মান বর্দ্ধন করি যাহেন। একপে ইহাদিগের নিকটে আ যাদিগের বক্তব্য এই, বঙ্গদেশের এই একটি চূর্ণাঙ্গ আছে, বাঙ্গালির জ্ঞানের নিমিত্ত অধ্যয়ন করেন না, অর্ধোপার্জ নার্থই ইহাদিগের অধ্যয়ন প্রবৃত্তি। সেই ওহতির কথকিত চবিত্তার্থতা হইলেই উহারা পণ্ডিতদের সহিত লিঙ্গ প্রবৃত্তি

কেহ লসাক্ষি যেন। উক্ত এম এ পরীক্ষা হুজি বিম্বের অধিকতর বঙ্গশীল হইয়া সেই কলঙ্ক দূর করুন, এবং বাহাতে বঙ্গদেশীর্য় দিগের অসম্মিলতা ও বিদ্যানুরানিতা ক্র ভুক্তি সলুপ শিকার আদর্শ হইতে পা রেন, সেই চেষ্টা করুন। পরশেনে তাঁহা বিগের নিকটে আবাদিগের একটি বিশেষ অনুরোধ এই, এ দেশে যে একটি বিশেষ বিম্বের অস্তাব আছে, তাঁহারা তাহা দূরী ভূত করুন। সে অস্তাব এই, বাঙ্গলা তাহা অতি দীন অবস্থায় অছেন, সেই দৈন্য দূর করিয়া ইহাকে উন্নত পথে প্রতিষ্ঠিত করুন। বঙ্গদেশের ভাব্য উন্নতি ব্যতিরেকে কি কখন কোন দেশ উন্নত পথে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

যে কয় ব্যক্তি পরীক্ষোত্তীর্ণ হইয়া ছেন, তাঁহাদিগের নাম নিম্নে লিখিত হইল।

বীরেশ্বর মিত্র	২০৬
যজ্ঞেশ্বর মুখোপাধ্য	গণিত।
নবীনকৃষ্ণ মুখো	গণিত।
উপেন্দ্রনাথ সি	দর্শন।
এসন্নকুমার বসু	২০৬ ও বাস্তব।
রমানাথ মল্লী	গণিত।

— ০ —
সন্ন চার্লস উডকে অভিনন্দন
পত্র দান।

গত ২৪ কালুগুন শনিবার এদেশী যেরা রাজসম্মুখে আপনাদিগের একটি কর্তব্য সাধন করিয়াছেন। ঐ দিবস সন্ন চার্লস উডকে অভিনন্দন পত্র দিবার জন্য ভারতবর্ষীয় সভাপ্রুহে অত্রতা হিন্দ ও মুসলমান সমাজের অলঙ্কার স্বরূপ প্রায় বাবর্তীয় প্রধান লোক সনবেত হইয়া ছিলেন। বেনা আড়াই ঘটিকার পর অব ধি সতা প্রুহে লোক সমাগম হইতে অত্র ত্র হর, কাযারত্বেন সময়ে এত লোক উ পস্থিত হইয়াছিলেন যে উক্ত প্রশস্ত বাটী

কেও স্থান সমাবেশ হইতে পারিত না। তা হু ভিত্তির সঙ্কলন সম্বন্ধে হইয়া হরটার পর লিঙ্গ সমাগম হইয়া বঙ্গদেশের সমাজের অগ্রগতি হুহ ও সমাজীয় রাজ্যের অগ্রগতি হুহ পণ্ডিত আনন্দ প্রকাশ করি। বক্তিত্তে সম সময়ে এ দেশে ইংরাজিগের আবিষ্কার বঙ্গভূমি হইতে আনন্দ করত সন্ন চার্লস অল্যাপিত অরন আছে। ইহা অগ্রসর হইতে গের র. জা. অভিনন্দন বিদ্যানুরানিতা হইতে। এদেশে আচার, কলঙ্ক, অসম্মিলতা এখা গত বহু বৈলক্ষণ্য অগ্রসর হুহ সন্নচার অব্যাহত রাখিরা। সন্ন চার্লস নির্বাহ করা সম্ভব হুহ সমাগম। সন্ন চার্লসের কায্য মাই। কিন্তু ইং বর্তমান ভারতবর্ষীয় লেকচারার লস উড এই হু মাধ্য কায্য নির্বাহ করিতেছেন। তিনি সন্ন চার্লস এই ভাবে বক্তব্য করিয়াছেন। আঠার কোটি লোক ইংলণ্ডের আনন্দ আছে, তাঁহাদিগের উপকার করা আবার সন্ন প্রধান উদ্দেশ্য। তিনি যথার্থ কথাই কহিয়াছেন। তিনি সন্ন চার্লসের ভাষা মাই। কিন্তু ইং পাঠে এদেশে শাসন করিতেছেন এদেশীর্য়দিগের রাজনীতি ও উন্নতি লাভ হর, ইহাই তাঁহা রিক চেষ্টা; ইহাদিগের স্বাধীনতা অব্যাহত রাখা তাঁহা শাসনের এক অঙ্গী ইহাতে অভিনন্দন রাখা। তাঁহাকে অপমান করিবার চেষ্টা তেছেন যথার্থ বটে কিন্তু ভারতবর্ষীয় অবশ্যই স্বীকার করিবেন, তাঁহা ভারতবর্ষের যথার্থ হিত সাধিত হুহ হুহ রাজা শেষে বলিলেন, সন্ন চার্লস উডের সহিবেচনার বিনয় কাল বিদিত হইবে সন্দেহ নাই।

অনন্তর রাজা কালীকৃষ্ণ হাটুর প্র স্তাব করিলেন, সন্ন চার্লস উড ভারত

মহান দেশভক্তি কর্তব্য, কিন্তু গুরুতর বিষয়ে
ইংলণ্ডীয় গবর্নমেন্টকে হস্তার্পণ করিতে
না বিশেষ সকল সময়ে স্বার্থ বিচার হইত।
স্বার্থ হইবে। বারু কিশোরীচাঁদ বিহার
ইহার পোষকতা করিয়া একটি বক্তৃতা
করিলেন। তৎপরে মৌলবী আবদুল ল
জিক প্রভৃতি কয়েক জনও কিছু কিছু
বক্তৃতা করিলেন, শেষে অভিনন্দন পত্র
পঠিত হইল। পাঠকরণ হানাতের তাহা
করিতেন।

তারতর্ষ্যীয় সভা যেকোন গুরুতর এই
করিয়াছেন, প্রধান উদ্দেশ্যী হইয়া সা
চারুলস উডের অভিভাবক পত্র প্রস
করাতে তাহার অনুকূপ কার্য করা হই
রাছে। সভার প্রতি আমাদিগের যে আ
তী আশা ও ভক্তি আছে, তাহার আরো
বৃদ্ধি হইল। অভিনন্দন পত্র প্রদান করা
তে কেবল যে সর চারুলস উডের সহায়
তা লাভ হইবে ততপ নয়, এ দেশেরও
লক্ষ্যেরো আশা
তে
ম কেবল শস্যো
হয় নিম্নো
কোর আকুটি
তে আক্ষেপ না করিয়া অবশ্য কর্তব্য
বোধে স্বকর্তব্য সাধন করেন, তাঁহারা
বুদ্ধিপ্রপারিবেন, কর্তব্য সাধনের সঙ্গে
পূরকার লাভ আছে। বাহা হউক, এই অতি
মন্দনপত্র প্রদানের অনুষ্ঠানটি কি প্রকারে পূর্বে
হইলো জান হইত। বাহা হউক এরা শু
নিলাম গত মেইলে সভার যুক্তিত কার্য বি
বরণের কয়েক শত খণ্ড ইংলণ্ডে বিতরণের
করা প্রেরিত হইরাছে, এবং আন্তর্জাতিক
অগ্নিমা হইতে টেলিগ্রাফে অভিনন্দন
পত্রের মর্ম প্রেরিত হইবে, তাহা হইলে
তাদৃশ চানি নাই। পার্লামেন্টে সভার
অধিবেশন বন্ধ হইবার পূর্বে ইহার
চারুলস উডের হস্তগত হইবে। এবং
মহাসভার তারতর্ষ্য, ডুলা ও কর্তৃ
নিম্ন লিখিত অঙ্গল সাংবাদিক হইত।

বন্দী আছে। এইরূপকারিগণ ও মাঝেমাঝে
সেই সাহেবকে সেবা পত্তি করিয়া সর
চারুলস উত্তরে আক্রমণ করিবেন সন্দেহ
নাই। আরও বরং প্রেরিত অভিনন্দন পত্র
যদি যথাসময়ে সর চারুলসের হস্তগা
হয়, নিঃসংশয় তিনি বিপক্ষ নির্মিত
জালের বৈকল্য সম্পাদনে সমর্থ
অভিনন্দন পত্র দ্বারা এসেছে আর
কিঞ্চিৎ বক্তব্যশেষ আছে, যে
জ্ঞান ও পণ্ডিত প্রভৃতি দ্বারা কৃত ও
রূপ এক এক ধান অভিনন্দন পত্র প্রেরণ
করা উচিত। সর চারুলসের বিপক্ষ যেন
এবল, তেমনি তাঁহার পক্ষ সহ্য
লাভ করিবার আশা করি।

হুতন পুলিশ স্টেশনার ৩০

ସୁଦ୍ଧନ ଶିଚାରମପତି ।

মানুষের মৃত্যুতে অধিকতর আশি
বলিয়া আর সমস্ত মৃত্যু বিপর্যয়ে সমধি
ক হুদা হইয়া থাকে। কিন্তু মৃত্যু হইলেই
যে যাবতীর বিষয় উপকারী হইবে একপ
নিয়ম নয়। মৃত্যু আর মৃত্যুচ হয়। যে
কোন ব্যবসায় হউক, অনতিমুখে মৃত্যু
নৌক হইতে তাহার অধিকতর বিনা প্রা
ইষ্ট হয় না। বিচারপতি মৃত্যু (যিনি ম
তন বিচার কার্যে) প্রবৃত্ত হইয়াছেন
ভাল মতেন। হুদা বিপর্যয়ে হইতে অনেক
অবিচার হয়।

পাঠকগণের অন্তর অর্থে, 'যদি
পূর্বে রক্তপূরের পাঁচো নইবা দাবার কণ
লিখিরাডিলান, বাকুইপুরের মৃতন (ইনি
যে কেবল বাকুইপুরে মৃতন আশিগাছের
একগ নহে, ইনি এ কাছো মৃতন ত্রুতা
হইয়াছেন) তেপুটি মালিষ্ট্রেট দাব ব'
রিমিদের গুরু নগ করিরাছেন । কিন্তু
চৌকিদারেরা আশামীর অবস্থার্থ কয়েক
জনের বাটা মধ্যে যে প্রবেশ করিরাছিল,
তখন্য যে মালিশ হয়, তাহা অগ্রাহ্য ক
রিয়াছেন । মালিষ্ট্রেট দাবাকারিমিদের

গোলাপের বিদ্রোহ :
১. বহুতর ফেডারেল গভর্নমেন্টের
ত নিরীক্ষিত জাতি আন্দোলন
বিদ্রোহ যে জাতি আন্দোলন
বাংলাদেশে লক্ষ্যে লক্ষ্যে
২. ও. গভর্নমেন্টের রাজি
নেব কে জনপুর্ক এক জাতি
অবস্থায় রাষ্ট্র, অবস্থায়, এবং
নীতিগত এবং নীতির করিতে
অবস্থায়, করিয়া শাসন করি-
তাম সক্ষম হয় না। ইহার
জন্য প্রমাণ আছে। বঙ্গ
ও বাংলাদেশ শাসন প্র-
তিষ্ঠা বৈলক্ষ্য ছিল, তত-
তও সর্বত্র পোলবোম হই-
বৎ গবর্নমেন্টের অত্যাচার
জি স্বাধীনতা ভোগ করিতে
পারেনি হইতে হইতে তাড়ন
রও সত্যবনা হইয়াছে। জাতি
এক জাতি এক অত্যাচার
র বেধে বিদ্রোহ চিরস্থায়ি
৩. সন্ত্রাসি ইউরোপ হইতে
আসিয়াছে, তাহার জাতি-
নীতিগত পোলাপের বি-
দ্রোহ উত্তীর্ণ করিয়াছেন।
৪. একটি অতি গোপন প্রেম
নে ইউরোপ জাতি অসত্য
যত। তুর্ক দেশের দ্বারা আ-
বরণ পোলাপের রাজ্য
করকা করেন, কিন্তু বৃহ বি-
পোলাপের বঙ্গবন্ধু ও রূপী
হওয়াতে ১৯৭৩ অব্দে রূপী
প্রতিরোধ রাজ্য ও অস্ত্রীয়া
কে অংশ করিয়া লন। সেই
পোলাপের সৌভাগ্য অস্ত্র
ই হইল নামে বঙ্গবন্ধু
একবার পোলাপকে বা-
কেটা পান, কিন্তু কুতূহল
মাই। রূপী বিদ্রোহ ও

গোলাপের বিদ্রোহ :
১. বহুতর ফেডারেল গভর্নমেন্টের
ত নিরীক্ষিত জাতি আন্দোলন
বিদ্রোহ যে জাতি আন্দোলন
বাংলাদেশে লক্ষ্যে লক্ষ্যে
২. ও. গভর্নমেন্টের রাজি
নেব কে জনপুর্ক এক জাতি
অবস্থায় রাষ্ট্র, অবস্থায়, এবং
নীতিগত এবং নীতির করিতে
অবস্থায়, করিয়া শাসন করি-
তাম সক্ষম হয় না। ইহার
জন্য প্রমাণ আছে। বঙ্গ
ও বাংলাদেশ শাসন প্র-
তিষ্ঠা বৈলক্ষ্য ছিল, তত-
তও সর্বত্র পোলবোম হই-
বৎ গবর্নমেন্টের অত্যাচার
জি স্বাধীনতা ভোগ করিতে
পারেনি হইতে হইতে তাড়ন
রও সত্যবনা হইয়াছে। জাতি
এক জাতি এক অত্যাচার
র বেধে বিদ্রোহ চিরস্থায়ি
৩. সন্ত্রাসি ইউরোপ হইতে
আসিয়াছে, তাহার জাতি-
নীতিগত পোলাপের বি-
দ্রোহ উত্তীর্ণ করিয়াছেন।
৪. একটি অতি গোপন প্রেম
নে ইউরোপ জাতি অসত্য
যত। তুর্ক দেশের দ্বারা আ-
বরণ পোলাপের রাজ্য
করকা করেন, কিন্তু বৃহ বি-
পোলাপের বঙ্গবন্ধু ও রূপী
হওয়াতে ১৯৭৩ অব্দে রূপী
প্রতিরোধ রাজ্য ও অস্ত্রীয়া
কে অংশ করিয়া লন। সেই
পোলাপের সৌভাগ্য অস্ত্র
ই হইল নামে বঙ্গবন্ধু
একবার পোলাপকে বা-
কেটা পান, কিন্তু কুতূহল
মাই। রূপী বিদ্রোহ ও

১. বহুতর ফেডারেল গভর্নমেন্টের
ত নিরীক্ষিত জাতি আন্দোলন
বিদ্রোহ যে জাতি আন্দোলন
বাংলাদেশে লক্ষ্যে লক্ষ্যে
২. ও. গভর্নমেন্টের রাজি
নেব কে জনপুর্ক এক জাতি
অবস্থায় রাষ্ট্র, অবস্থায়, এবং
নীতিগত এবং নীতির করিতে
অবস্থায়, করিয়া শাসন করি-
তাম সক্ষম হয় না। ইহার
জন্য প্রমাণ আছে। বঙ্গ
ও বাংলাদেশ শাসন প্র-
তিষ্ঠা বৈলক্ষ্য ছিল, তত-
তও সর্বত্র পোলবোম হই-
বৎ গবর্নমেন্টের অত্যাচার
জি স্বাধীনতা ভোগ করিতে
পারেনি হইতে হইতে তাড়ন
রও সত্যবনা হইয়াছে। জাতি
এক জাতি এক অত্যাচার
র বেধে বিদ্রোহ চিরস্থায়ি
৩. সন্ত্রাসি ইউরোপ হইতে
আসিয়াছে, তাহার জাতি-
নীতিগত পোলাপের বি-
দ্রোহ উত্তীর্ণ করিয়াছেন।
৪. একটি অতি গোপন প্রেম
নে ইউরোপ জাতি অসত্য
যত। তুর্ক দেশের দ্বারা আ-
বরণ পোলাপের রাজ্য
করকা করেন, কিন্তু বৃহ বি-
পোলাপের বঙ্গবন্ধু ও রূপী
হওয়াতে ১৯৭৩ অব্দে রূপী
প্রতিরোধ রাজ্য ও অস্ত্রীয়া
কে অংশ করিয়া লন। সেই
পোলাপের সৌভাগ্য অস্ত্র
ই হইল নামে বঙ্গবন্ধু
একবার পোলাপকে বা-
কেটা পান, কিন্তু কুতূহল
মাই। রূপী বিদ্রোহ ও

[illegible]

(২) উক্ত সংস্থার নথিপত্র
কিন্তু যখন টেনোগ্রাফিক এক
টিক অক কলিকাতা পুস্তক
(৩) এক দিন অস্তর চারি
মিত মাংস দেওয়া হইত।

অগ্নীশ্বরের ন্যায়পরতা ও সকলের
প্রতি সমান করণ। প্রভৃতি প্রতিপন্ন হওয়ার
উদ্দেশ্যে সুবিখ্যাত কুশ সাহেব বালিকা জন
কে যে দেশে শস্য উৎপন্ন না হয়, তথায় প-
খাদি প্রভৃতির পরিমাণে করেন। তদনুযায়ী
সেই পরিমাণের মাংস তরল করিয়া শুষ্ক ও
মিষ্টি হইয়া থাকে। এই বাক্য দ্বারা প্রমাণ
যতাবত। নিরামিষ ও আমিষ উভয় পক্ষ
তোমার ইহা আংশিক রূপে প্রতিপন্ন হয়

১১) তাঁহার রচিত ডিক্শনারি অব প্রো-
ক্টিক্যাল মেডিসিন পুস্তকের দ্বিতীয় ভাগের
৩৪৫। ৩৪৭ পৃষ্ঠ দেখিবেন।

বসন্তের পক্ষে পান্থিকপন্থা বা নগরীয় পন্থা
আমলাক, জাম্বীর, অশ্বথ, প্রভৃতি এই, নগরীয়
নগরীয় উৎকর্ষা প্রকার করা অতি আবশ্যিক।
উৎকর্ষা অপেক্ষা আধিক্যে অধিকতর (১) উৎক-
র্ষা আছে। নগরনগরনে অধিকতর নগরনগর
বিষয়ই নগরীয় উৎকর্ষা হুগ হইয়া যায়।
নগরকার্য প্রকার প্রকৃতি পান্থিকপন্থা বা নগরীয়
পন্থা প্রচলিত হইয়াছে। এদেশে বিলম্ব
উৎকর্ষা আছে। অতএব এখানে উৎকর্ষা অপেক্ষা
আপাদিত্র অধিকতর বিধি দুই হয় (২)।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহকারে স্বীকার করি—
ভেছি, নিম্ন লিখিত পুস্তকগুলি আমাদের
হস্তগত হইয়াছে।

১ ভারতবর্ষের সত্যার বার্ষিক কার্য, বিবরণ ।
দেশহিতৈষী যাদেরই এই সত্যার কার্যের
প্রতি চুষ্টি আছে । এই সত্যার দ্বারা এনে
শের বহুতর প্রেরণ সাধন হইয়াছে, আরো
হইবার সম্ভাবনা আছে । এই নিমিত্তই
আমিরা কোন বিবরণে সত্যার উদ্যোগী অথবা

হাঙ্গাম মধ্যে কোন হাঙ্গামে কত পরিমাণে পানি-
কর-পানি-আছে তাহা শুদ্ধতঃ বুঝিতে
পারি-যাই।

(୯) କର୍ମ ହାର୍ଡିଏଲ ସୋସ୍ତ ହାସଲ ହୁଏ ୨୨୦
 ପାଉଁଶ ଓ ଡାକ୍ତାର ନର୍ମାଲ ଟୀସର୍ ମିଧିତ
 ମାଧ୍ୟମେ କରମଧେର ମାତ୍ରିୟିକ ଅବସ୍ଥା ବିବରକ
 କେନ୍ଦ୍ରର ଦେଖିବେ ।

(২) বহুসংখ্যিক আবিষ্কৃতকণের বি-
শি দৃষ্ট হয়। মাংসাহারে নিরুষ্ঠ প্রেরণ উত্তে-
জিত না হয় এই অতিপ্রায়ে, যোগ হয় তিনি
তদাহারের অন্য পঞ্চাঙ্গিণিত বিধি প্রদান
করিয়াছেন। যজ্ঞ করিয়া মাংস ভোজন
করিবে অর্থাৎ বহুসংখ্যক মাংস ভোজন করণকে
ঈশ্বর অনুষ্ঠান বলা যায়, আপনাই অন্য পঞ্চ
মারিতা মাংস ভোজন প্রেরণকে ব্রাহ্মণী
প্রেরণ বলা যায়। ৩১ শ্লোক ৫ম অধ্যায়।
কোন কোন পঞ্চ পঞ্চাঙ্গির মাংস ভোজন
করা উচিত, তাহার বিস্তারিত উপদেশ বহু-
সংখ্যিক দৃষ্ট হয়। ৫ম অধ্যায়ের ১১ অবধি
২৩ পর্যন্ত সবদিক গৌরব দেখিবেন।

ইন্দ্রিয়াদি বর্ণন করিলে আত্মরূপ কহে—
উৎসাহ ও উদ্বেগান বেধিলে আত্মাহ্বিত
হই। অমেরা যে কারণে বিবরণ প্রাপ্ত হইরা-
ছি, তাহার মূল মর্ম এই—

সকল বৎসর ভারতবর্ষীয় ও স্থানীয় ব্যব-
স্থাপক সভাসকলের এবং প্রাথমিক বিচারী
সময়ের জন্যে ভারত হইল। সভা প্রাধান্যের বি-
চারালয়ের কার্যে সবিশেষ মনোযোগ
প্রকাশ করিয়াছেন। ব্যবস্থাপক সভার ১৮৯২
অক্টোবর ১০ আইন সম্মতাবধি বিল ১৮৯২ অ.
নং ৩ আইন) ও জমিদারি ডাকের বিল
এই দুই বিধিবদ্ধ হইয়াছে। একমাত্র আইন
টি এত দীর্ঘ বিধিবদ্ধ করা হয় যে ভারতবর্ষ
সভা উৎপ্রেতি আপনাদিগের সভা প্রকাশ করি-
বার অবসর পান নাই। অতএব তাহার ব-
লে "এ প্রকার হ্রতগতি আইন হইলে সা-
ধারণের আর্থের সবিশেষ হানি সম্ভাবনা
হইল। গাড়ি পালকী ও মিনিমিসিপাল বিল
অন্যাপিও জমদেশীয় ব্যবস্থাপক সভার হস্ত
রহিয়াছে। ভারতবর্ষীয় সভা এ দুইবিধই
পোষকতা করিয়াছেন। কলিকাতা বিল ও পা-
লীগ্রামের লোকাল বিল রহিত হওয়ায় সভা
আজ্ঞাদি প্রকাশ করিয়াছেন। ভারতবর্ষের ন্যায়
অপেক্ষা দেড়কোটি টাকা অধিক আয় হওয়া
তে ও তহাকের কর রহিত এবং ইনকম ট্যাকের
শুল্ক হ্রাস দুই টাকা করিয়া বাওরাতে সভা
আজ্ঞাদিত হইয়াছেন। ভারতবর্ষীয় সভার
চেষ্ঠাতেই তহাকের কর রহিত হইয়াছে। স-
রিশেষে সভা ইনকম ট্যাক ও ব্যবস্থাপ-
ক সভার কাথের প্রতিবাদ করিয়াছেন।
ব্যবস্থাপক সভা সর্বদা সকল বিষয় প্রকাশ
করেন না, তদ্বিষয়ে অভিশর অনিষ্ট প্রতিবার
সম্ভাবনা। কলিকাতার ডেপুটি ও ম্যাজিস্ট্রেট
সর্ববিষয়ের বিষয় উল্লিখিত হইয়াছে। বা-
হাতে সমুদায় ভারতবর্ষে চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত
হয়, সভা সেই চেষ্ঠা আছেন। লার্ড কার্জি
ও প্রাইম মিনিস্টারের গমন, লার্ড এলস্টিন ও সর্
চার্লস ট্রিভিনিয়ানের আগমনের বিষয়
রিপোর্টে লিখিত হইয়াছে।

২। প্রেরণা প্রাপ্ত। ইহা বাজনা নাটক,
কালীঘাটস্থ শ্রীকৃষ্ণ বাবু গুরুপ্রিয় বন্দ্যোপা-
ধ্যায় একত্রে প্রণয়ন করিয়াছেন।

হৈরাহিন বিকৃত কিছু
 ন কল্পিত। অতিপ্রাচীন
 হিন্দু সভ্যতার অল্প
 কাহাদেও গীতা ও বুদ্ধা
 তত্ত্বাবধানার্থে গবর্নমেন্ট পু-
 ঠানের আঁকা প্রকাশ করে
 স্কার অর্ডার দিচ্ছে।
 হিন্দু ও মুসলিমের মধ্যে
 এই অল্প, উক্ত অল্প
 হিন্দু পুঁজি অল্প বাস
 অনেক পরিমাণে তাহার
 রে। স্কার বিদ্যা বাগী
 যে আধিক্যের পরিমাণ
 রে ও মিউজিয়াম, এই জি
 আশ্রয় (১) হাইলি
 বিদ্যা ও বাস পুঁজি হর
 পক ও পুঁজি আশ্রয় প্রক্রিয়
 হ, এই মিউজিয়াম (৩)
 মিউজিয়াম প্রকাশ করা যোগে
 পুঁজি আশ্রয় করে। এই তিন
 এই স্কার প্রকাশ অধিকতর
 পুঁজি উদ্ভিদ অশ্রয়
 উদ্ভিদ আছে। নিম্ন একটি
 উদ্ভিদ তাহা অবগত হই

[illegible]

১) নিম্নলিখিত প্রতিষ্ঠানগুলির মধ্যে কোনটি
কিছু কিছু পুস্তকের ১৯৩৩-৩৪ খ্রিঃ

প্রোকেসর জর্জটন কর্তৃক বিব্রটিত কে-
কমন.সাইক গুলক ঘেখিবেন।

টেলিগ্রাম, ডিকশনারি এবং ভলিউমিক
এ নামে গ্রন্থ সংগ্ৰহেণ ।

১) তালিকা দ্বারা নির্দিষ্ট উদ্ভিদ ও

১। উদ্যানিক মাটক, উদ্যান বাহু বসি
সেবার প্রণীত।

আগন্ত।

১। কাজের বিবরণ।

অন্য আধি চাকর, উপনিভ হইল।
একদেব বালালাসে যে কয়েকটি প্রধান নগর
আছে, কলিকাতা তির অনেক অংশে চাকর
প্রাধান্য প্রকাশ কর। যায়। সুতরাং হইতে
বাহ্যকার বরুণ, সাগরের মাঝ বিস্তৃত
নদী ও বং গিয়া অনগর সকল উত্তীর্ণ হই-
রা যে একশ উৎকর্ষ নগরে প্রবিষ্ট হইতে পা-
রিত পূর্ণও তাহা অনুভব করিতে পারি-
নাই, কেবল চাকর যাইতেছি এই মাত্র
জানি। বাক্য হউক, যদিও কলিকাতার সহিত
চাকা নগর অংশে সমান না হউক কিন্তু ক-
লিকাতার তীব্র এখানে অনেকাংশে পাওয়া
যাইতে পারে।

এই নগরের উত্তর সীমা ভাওয়াল পাহাড়া।
এই ভাওয়াল কেবল জনসংখ্য তুলি, চাকা
হইতে প্রায় ১০ ক্রোশ উত্তরে কতকগুলি
লোকের বাস ও এক জন আমির আছেন
বটে কিন্তু ব্যাস্তি হিংস্র জন্তুর ভয়ে
তাহার মধ্যে প্রবিষ্ট হওয়া সহজ ব্যাপার
নহে। উপরি উক্ত জলচক হইতে ১৫ ম-
নসিংহ পর্বত বিস্তৃত। এখান হইতে বৈশ্ব-
সিংহ সীমা প্রায় ৩০ ক্রোশ হইবেক।
অন্যে ভাওয়াল ও ভাওয়াল অধিক এবং উহার
বৃহৎ চাকর নদী প্রভৃতির এক প্রতিমা
আছে। চাকর পশ্চিম সীমা সুলতানগঞ্জ বা
সবায়গঞ্জ। পশ্চিমে সুকিমলা নদী। এই নদী
খলেশ্বরী নদী হইতে নির্গত হইয়া পূর্বা-
নুত্রে গঙ্গাপূর্বক পূর্ব চাকর এ খলেশ্বরীতে
পতিত হওয়াতে খলেশ্বরী এবং সুকিমলা
বেষ্টিত ভূমিখণ্ড দীপের আকার ধারণ করি-
য়াছে। চাকর পূর্ব সীমার একটি খাল আছে।
খালের পূর্বদিকে কলিকাতার ও ময়ূপজ না-
রক দুই খানি গ্রাম আছে এবং উহার উপরে
একটি কোমর সেতু আছে। এই সেতু মন
১৯০৭ সালে নির্মিত হইয়াছে ওয়াশিংটন
সার্কলের বয়ে নির্মিত হইয়াছে। পোলটি

সেখানে কলিকাতার সার্কলের প্রা-
সের ব্যাপার।

কলিকাতার বাহিরে ইতস্ততঃ অগম করি-
লে যেমন বনোধ্য উদ্যান এই মণ্ডে মণ্ডে প-
রীগ্রাম দেখিতে পাওয়া যায়, তাকর বাহিরে
সেবার দেখিতে পাওয়া যায় না, এখানে কে-
বল বৈশ্বসিংহ উদ্যান মাত্র আছে। কলিকাতা
হইতে গঙ্গার পশ্চিম পারে হাতিয়া, খালিকা
প্রভৃতি স্থান যেমন উৎকর্ষ নগর সুল্য বোধ
হয়, তাকা হইতে সুকিমলা নদী পক্ষে তা-
হার কিছুমাত্র দেখিতে পাওয়া যায় না। এ-
খানে কেবল হুলাসি, বেষ্টিত কাঃ খানি বহু-
ময় মাত্র আছে। কলিকাতার নিকট হইতে ব-
জার দিকে গুটিপাত করিলে অবিলম্বে পরি-
পূর্ণিত গঙ্গার শোভা সন্দর্শন করা যায়, সুকি-
মলা তাহার কিছুই দেখিতে পাওয়া যায়
না, কেবল কতকগুলি লোকের সহিত সন্দর্শন
হইয়া থাকে।

চাকা পূর্ব পশ্চিমে দীর্ঘ প্রায় দুই ক্রোশ
এবং উত্তর দক্ষিণে প্রশস্ত প্রায় দুই ক্রোশ
হইবেক। এই নগর কলিকাতা হইতে উত্তর
পূর্ব দিকে প্রায় ১০০ মত ক্রোশ অন্তরে
অবস্থিত।

চাকর মধ্যে বহু নদী অপেক্ষাকৃত
চোট ও বড় ইষ্টকালর আছে বর্ষা বটে,
কিন্তু তদনির্দিষ্ট হইতে নির্ভর করা যায়।
বৎসর বৎসর এই সকল হইবে আশুন নাহিয়া
হোকানদার ও হুহু লোকের বিস্তার কতি
হইয়া থাকে। সম্রাতি প্রায় ২০০ মত হুহু
তদ্বীভূত হইয়া গিয়াছে। কলিকাতার মাত্র
এখানেও খোলায় বহু বিস্তারিত অগ্রমতি
দেওয়া উচিত।

এখানে হিংস্রদিগের কোমল ও সুন্দর
নামদিগের বসতি ও মিসমিসিগের বসতি
যয় আছে। হিংস্রদিগের কোমল ও সুন্দর
সুলতানদিগের বসতির অধিক, মিসমিসি
৫টি মাত্র। এক জন হিংস্রদিগের নির্মিত
একটি শিবের মন্দিরের উচ্চতা প্রায় ৫০ হাত
হইবেক। এখানকার শিবের মন্দির দেখিতে
দ্রিক (তত উক না হউক) মৌরোর বসতি,
কোনটা বা মিসমিসিগের বসতি, মাত্র।
এখানে চাকা, কামের এবং বিষ্টকাল

সার্কলের ১৯০৫ সালে
উৎকর্ষ চিকিৎসা
অষ্টাঙ্গিক
সবায়গঞ্জ, হাতিয়া
বহু-বহু
এই স্থান হাতিয়া, হাতিয়া
অবস্থিত, কিন্তু সেখানে
শিব তাহার এক
গোলা লোকের
খিনিক, করিতে
বহু-বহু, কামের
অবস্থিত করিতে
একটি প্রশস্ত মত, কামের
হে, বোধ হয় উক্ত
আসার ছিল।
নিচ সুবাসিত
বার নাই, সে মাত্র
প্রমা এবং মাত্র
মধ্যে হাতিয়া করিতে
চাক
সাক্ষর প্রায় নাই। কামের
সের বসতির (সকল) মাত্র
আছে, কামের বসতির
মুখে এষ্ট ইষ্টকাল
কেবল মাত্রী কামের
অধিকাংশ স্থানে
বারে মরমণা মাই হুতরাং
হইবার উপায় নাই, তাহ
হইতে পারে তাহা বসতির
এখানে চাকর বসতির
নাই। মসিমিসিগের বসতির
হে-বহু করিয়া। মসিমিসিগের
বসতির অবস্থিত ইষ্টকাল
এখানে গাতি চিকিৎসা
পাথর পরিধান মাই, গাতি
ক্রোশ গমন কর তাহাতে
১০ হাত বাও তাহাতে
থিবে।

২১৩ বিবিধ-সংকল

২৬ একজন মোহন-
তারতবর্ষি, গঙ্গার
ইংলওবর্ষীর বসতির
গের-সীমার মত উৎকর্ষ

ইহে না। ক্রমে ইহকন-
তছে।

তদন্তর এক বহুবার করেন।
ইহে হইয়াছিল। যোগ্য ব-
রাজধানীর অবমাননা করা

এই আগন্তুক কাটোয়মেটে
ক বাসী কর করিতে দিল্লী-
ভাগ্য করিয়াছেন, উহাতে ও
র আশে না কি?

পেজেন্ট ইলেন, সজ্ঞাতি কচ-
নিক ১ এক জন খালসী ক-
চত হইয়াছে।

উল্লিখিত এক জন পত্রিকার
লেখক। রাজস্বের ধর্মোন্মাদ
অর্থ ক্রমশঃ বর্ধিত হইতেছে,
পারিত্য সখ্যাত্ত হইতেছে। বস-
ন ও বোম্বাইয়ের শুভারের
বণিকেরা হারান দিয়া কুবক
করিয়া প্রকৃতভাবে তাহার
বহু সংশোধন করিয়া উঠিতে
জরীক বিদ্যা হার এই অমিত
পারি পাঠ।

পত্রিকাটির সংবাদ জাতা বলে
তব সাতদিন প্রাক্তন হইতে-
কৃত হইতেছে।

এরকম সখ্যাত্তবর্ধের সজ্ঞাতি
কম্পনবর বিচারালয়ে গুটিত
কৃত লিখিয়াছেন। এক্ষণে

অধঃসম নিকট আসিয়া হটাৎ চীৎ
সমীকৃত নিভিল খে (নিখর পাঠক)
ন রেয়া এক ছুরি হারা। বাবহার
চর্চা সঙ্গারী ক'য়দন এই কাও
খির সাগর করিলেন। কিন্তু কয়েক
সাতবার বসর আঘাত লাগে হই
কর্ত্তি পুলিশ সেনারা এই সংবাদ
জাহুকে সজ্ঞা চড়াইয়া তাহাকে
হত্যাকারী পুত্রের এক কোণে
সে সেইস্থানে সেই ছুরিঘা-
র করে কহানে আঘাত করিল।
ত কয়েক জন সিপাহী কৃত্রিমতে
তথ্য হইতে পলায়ন করিল সে-
তাহাকে গুলি করিবার আজ।
গারে এক জন সিপাহী তাহাকে
কাপে ও ব্যক্তিকে এই নিষ্ঠ
আনা করাতে সে বসিল-বে এ-

ক মোকদ্দমার সে বিব্রল ঐক্যে কিছু উৎকোচ
দিত। কিন্তু তিনি অন্য পক্ষের নিকটে অধি-
কতর প্রমাণ প্রদীপ্ত-ভাণ্ডার বিধরে কিছুমান ম-
নোমোখী হল নাই। সে তাহাতে সর্ম্মভাষ হই
গাছে। একজনকে তাহার জীবিত থাকা কথা
এই বিবেচনা করিয়া সে সেই ধৃত আত্মাকে
বধ করিয়া নিজ প্রাণত্যাগ করিল ইহা অখ্যামি
গের বিচারালয়ের ক.খোর একটা টীকা। কবে
আমি হকের দুর্ভাবনার দূর হইবে।

কাফালায় দাকার মোকদ্দমার শেষ হইয়া-
ছে। ৬ জন পুলিশ সিপাহির দুই মাস অবধি
হয় মাস পর্যন্ত যেখানে চটয়াছে।

মাজার টাইমস বলেন নর উইলিয়ম ডে-
নিসন পুনর্জন্ম পূর্ব পর্যন্ত যেটে বাসিতে আসি
তেছেন। তথা হইতে পর্যন্ত যেটের বাবতীর
আফিস পুনর্জন্ম দুর্ভাবনা যাইতেছে। যোধক
ডেফ ডানডব্বীর পর্যন্ত যেটে মীল'গ'রিতে মৃতম
বাগী প্রকৃত করিবার বিধরে সজ্ঞা হন নাই।

অধুবার রাণীর কানী হইয়া আত্ম হইয়া-
ছে। তাহার কমিটা ডিগিনী এক জন সাধারণ জ-
মিদারের সহিত ব্যক্তিগতভাবে লিগ হওয়াতে
রাণী মৌকক মানহ'মি লজাকরিয়া। সীর আত্মাব
সংগোষা রাজিকালে তাহার প্রাণ বধ করেন তা-
হার মৃতদেহ এক কল্যাণাচার মীত সমাধিত ১৪
এক জন নরতকী হত্যার রামিতে রাণীর বাসী-
ত ছিলেন। সে মাজেটেটকে সংবাদ দেওয়াতে মৃত
বেহ বাতির করা হয়। সেলিম জক রাণী ও তা-
হার জাতা ও আর দুই জনের কানী ও এক জ-
নকে হাতবৎসর জীপান্তর প্রেরণের আজ্ঞা দেন।
মাজারের প্রধানজন বিচারালয় ইহার পরিবর্ত
করিয়া রাণী ও তাহার জাতার কানী সবচর দুই
জনের জীপান্তর ও অপর ব্যক্তির কৃত্তির আজ
দিয়াছেন। এই আজ্ঞা হওয়াতে অনেকে বিস্ময়।
গর হইয়াছেন এরূপ বিচার বিধরেরই বটে

গতরবিহার অবধি মোদপুর বেলঘরিয়া ও
মদনবার জৈমন পুজিয়াছে। গরি কনকর সভা
চর, পূর্ব রাজ্যসার রেইলওয়ে কল্যানি রবিবা-
রেও রাণীর শকট চালাইবেন। উৎসবে ইহা
অবিবাদে চলিয়া থাকে কিন্তু তারতবর্ধে মাজ
বিশপই প্রচার বিবন বিদ্যোখী।
২৭ এ কাতন মজলবার।

কিনিস বলেন নর চারলস ট্রিভিট্যান কলি-
কাতরে কয়েকটি দাতব্য চিকিৎসালয় উঠাইয়া
দবার প্রভাব করিয়াছেন। কলিকাতার একদে
হুইও তথ্যবীপু প্রকৃতি করে কহানে আর ক-
য়েকটি আছে। একদেবে বীতিতে দাতব্য চিকিৎ

সালরের কারী হইয়া থাকে, তাহাতে কতিপা বে-
লে মোকের বড় কতি নাই, অথচ দুর্ভাবনার
কিছু লাভ হইতে পারে বটে কিন্তু অল্পখান
করিয়া দেখিলে ঐ গুলি উঠাইয়া বিদ্যে বড়
অমায় হইবে, যাতে উহা অবস্থা সংশোধিত
হইয়া উঠা-হরিজের পক্ষে কল্যাণকারী হয়,
সেই চেষ্টা করিয়া।

নিম্ন লিখিত বর্গবিবরণে ১৮৬০, ৬১, ৬২
আব্দে নিম্ন লিখিত পরিমাণ টাকা উদ্ধৃত
হইয়াছে।

মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে	মাজার পর্যন্ত যেটে
১৯৬০	১৯৬১	১৯৬২	১৯৬৩	১৯৬৪	১৯৬৫	১৯৬৬	১৯৬৭	১৯৬৮	১৯৬৯
১৯৭০	১৯৭১	১৯৭২	১৯৭৩	১৯৭৪	১৯৭৫	১৯৭৬	১৯৭৭	১৯৭৮	১৯৭৯
১৯৮০	১৯৮১	১৯৮২	১৯৮৩	১৯৮৪	১৯৮৫	১৯৮৬	১৯৮৭	১৯৮৮	১৯৮৯
১৯৯০	১৯৯১	১৯৯২	১৯৯৩	১৯৯৪	১৯৯৫	১৯৯৬	১৯৯৭	১৯৯৮	১৯৯৯

বোম্বাই মজাটে রিভিউ বলেন নীচ পেনি
জুলার অরিকটেল কোলা'মর এডি প্রবেশ
হইতে বেল আনিবার তার সমর্পিত হইবে, ট-
লও হইতে জাহাজ আলিলেই কারী আরও
হইবে।

মাহোরকমিকেল বলেন ১৮৬২ আবে
পঞ্জাব প্রদেশের ছোটআমলাত মজুদে ৩,০৬১
মোকদ্দমা উপস্থিত হইয়াছিল। তদন্তে লাভো
তে ৫৯০ অগুতনবে ৯৫ বীমিতে ৫৯৫ পেনো-
রারে ৫৫০ নিমলায় ৫৫৮ মোকদ্দমার বিচার হই
রাছে। অপ্রতিষ্ট মোকদ্দমার আজিও নিষ্পত্ত
হয় নাই।

এই আবে। বলেন, নর চারলস ট্রিভিট
নর রাজস্বসংক্রান্ত কার্যে বড় একজন এক জন
নিবিলিয়ামকে নিযুক্ত করিবার অভিলাষ করি-
য়াছেন। এ,ও হিউন সংস্কারেরই একজন আভিস
কল্পণ হওয়ায়।

১৮৪৭ খ্রিস্টাব্দে জাভা-র জেনেভেল হুহুলা
নামক এক শহরটিতে করিডা শহরীর মিত্র
গোত্রি-বংশের গোমস্তার প্রাকৃতিকভাবে সেলা
বিশেষকৈ সৈন্যের লম্বাঙ্গর হইয়াছিল। তখন
কিছুকাল জেনেভেল শহর শহরী বংশের গোমস্তাই
হইত। ১৮৪৭ খ্রিস্টাব্দে করিডা শহর করিডা শহরী বংশের

৩. মিউনিসিপ্যাল কর্পোরেশন কর্তৃক স্থানীয়
৪. টোলসহ প্রবেশের চাকরগণের উন্নয়ন
কর্তৃক - সবই হইবে। মুখ্যকর্তার কর্তৃত্ব
৫. স. ট্রিনিটিয়াম - - - - -
৬. - - - - -

১৩. "অসম নিমিত্ত ১৯০০ টাক. যুগ্মোদয় জুটি
১৪. "অসম বিকল্প কবিতাছেন। ব. অসম।
১৫. "অসম জুটি, অসম - - - - -"

সং: ৫৩ মূল্য ৫০ পাইয়াছিল।
 আদায়ী ১৩০ টি মার্চ মোকদ্দম বি. অ. বি.
 ৭৫ নং এল পিওর ফক্সের ব্যক্তিগত এবং
 মোটামুটি ৫০০ টি।

२४-७७ काल ७७ न दृष्टीव ।

१३ कला एकाच ठिकाणी विद्यमानात या-
 १४ कला एकाच ठिकाणी विद्यमानात या-

क्र. १३३०	१३३०-३३	२९६२३००
क्र. १३३०	१३३०-३३	२९६२३००

কিন্তু বলেন যে আর টি পাউল সাহেব,
 ১০০০ প্রদানবানী ভেদেব সাহেব ৩০ সিদ্ধ
 ১ টি বানানবানী ব্রহ্মিক সাহেব ৩২ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৩৩ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৩৪ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৩৫ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৩৬ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৩৭ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৩৮ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৩৯ সিদ্ধ
 ১০০০ সিদ্ধ ব্রহ্মিক বানান সাহেব ৪০ সিদ্ধ

निम्न तल्लिखित सूचकाङ्क लक्ष्य
'स' श्रेणी में है

"11 6:00 PM
 6:00 PM

1989. 2000 412825040
1989. 2000 412825040

1975-76 1 1000000
7 1000000

"...
..."
...
...
..."

7

नि. ५११३ को. १५ ब. ३३. अतिवर्धक को. ३३. अति

P **A** **R** **T**

অবোধাধিকারী বসেন ওদাকান কবিরার
 যোগে আকর্ষণের পৌরোহিত্যের বাসপ্রাপ্ত কোন
 রাজার নিকট হইতে উৎকর্ষ প্রাপ্ত করিতে
 তাঁহার হইবেই কবিরাস ও বন মাল র টাক।
 হও হইবেই কবর হইবে এবং জাতীয় ও বহু
 মর কবিরাস ও পীড় হাকান টাক। হও হ
 ইয়াছে। শেখের বাক্ত আশিল কবির। মুক্ত
 হইবার অমুমতি পাঠিয়াছে। শেখের এই মক
 মালি কলিকাতা প্রধানতম বিচারালয়ে মা
 নিবে।

ফিনিক্স বলেন অন্তঃস্বকাজ। [ম ইভেন স
ডবল ইউরোপিয়ান গ্যামিং ১ বহুগতর অদকাণ জ
বিস্ময় আবেদন কবিগাছেন। বহির্নিউ বোডে
র সের্ভেটরি এইট এল ডাফিয়ার সাংসার
বক্তৃতাশীল হারকালক সত্যিকার একজন সত্যিকার
সত্যিকার।

তিনি আবার বলেন, কানপুর বেতারের
সেতার খনির কয়েক জন কর্মকানকে কো-
অপরাধে অভিযুক্ত করা হইতে বিচারার্থ আ-
হ্বান করা হয়, লক্ষ্য করেই অজের অগ্নিগণ উ-
ঠে উঠে বিচার করিতেছিল, ইতিমধ্যে
কান, কানপুরের নিবাসী বীত জন, এক
টোল, হাতে এক স্তম্ভ লইয়া বিচারকে
কি অস্বাভাবিক করিয়াছে। এ একটি শুভ নমুনা।

[illegible]

২৭।

৭। অপরদিকে বরেন্দ্র এক জন গুলিগ চৌ
দার ১৮ই ফেব্রুয়ারি ৪৪ গণিত বেকিনেবটেন
জন টেন নেকের প্রতি নিহত বাহাদুর কবিয়া
এক জন টেন নেকের গুলিতে একটা বড়ের গোর
ছিল। চৌকীদারেরা জাহা ডাক, সেখানে
সমস্ত হস্তগত ডাক্তার, ডাক্তার ২৭ ও ডাক্তার
জগদন করে, পাচাৎ কলকাতা সে কে ডাক
হাতে সে যেতলী ডাক্তার: কুলিগ, ক
তে সমস্ত ডাক্তার জাহা ডাক ১৮২৭ হস্তগত ডাক

[illegible][illegible]

বাংলায় প্রকাশিত বঙ্গবন্ধু
খ্রিঃ ১৯৬৬-৬৭ টাকার প্রথম অর্ধাবধি
পাঠ্য ।

मिनि आदि यत्नन कीदृशमिति चेत्
यत्नन यत्नन मिनिनव कीदृशमिति ।

পৰ্বত দেৱালয়ৰ পোতাশাল

তিনু বজ্র লোক ভূতীত প্রেরণ। এম
 নাদ য় ভাড়া করিয়া উক্ত
 গমল কবিত্তেছেন। রেলওয়ে
 প্রাণোহেন স্বকর ও ভূতুর্ন
 এই এক কাশীতেই
 জিন করিতে গাইছেন।

१। कण्डू उदयः एक रात्रि काशीं गच्छति
 २। कान्ति कश्चिद् एक काशीं गच्छति
 ३। कान्ति कश्चिद् एक काशीं गच्छति
 ४। कान्ति कश्चिद् एक काशीं गच्छति
 ५। कान्ति कश्चिद् एक काशीं गच्छति

আমরা, নবুনা একুটি হৃদয় বহির্ভূত
 সূনা বোকাই নবরে প্রেরিত ইচ্ছা
 বাবা হৃদয় অনেক সূনা
 স্মিতাছে! আমনিবের এক ক
 লাভ। বাবে অপরাধ সূনা
 এক কটো কৈবিলেব মাংস
 একা জনকই মোহিত
 মঃ দেবের মতি কর্তব্য
 হইতেছে। মোহ মঃ দেব
 ন বটে।

সত্যব্রতের প্রিয়তমে ও বা. হাজি
কুলি প্রেরিত হইয়াছে, ইত্যাদিগের
স্বাক্ষর লিখিত আছে, তাহা এক্ষণে
উদ্ধৃত।

১৮-১২ আদ ৩ ৩১৭ জুলাই অঃ

হাঙ্গেরিয়ার পদার্থবিদগণ সকল যে যে সময়ে
সংশোধিত ও সংশোধিত হইয়াছে তাহা
সকলকে লক্ষ্য করিয়া আইন ও প্রমাণ
প্রদর্শিত করিয়াছেন, তাহা অসংখ্য
পূর্বক জ্ঞানার্থের কার্যের অন্তর্গত
হয়। শাস্ত্র সংক্রান্ত জ্ঞানই
এই, ও সর্বাধিকার উন্নতিসাধন, এ

Abstract

সামগ্রিকভাবে জরুরি
সুইচ হাইট সাফে বের
হি, বহিষ্কৃত আমির
প্রধান সদর আলী
এবং হাইট সাফে
বর তিন জনেরই
অভিন্নরূপ, তথাপি
এনি কি প্রকার
পূর। তাহা কৃষ্ণে
স্বরূপে (অভিন্ন) এ

সূর্য চক্ৰবর্তী পতঙ্গ-
লে এক জন বাকুল
তৎপরে তিনি
সেরেস্তাদার তাঁহার
কমরের সাফে বহন
হইত। রম
দিকে গকে লইতে
বৎসর সেরে
গিয়েন ঘেরনি

পারিলেবে একটি বালায় না লিখিয়া দে
নীকে কোন প্রকারেই পবিত্রাণ করি. তথা
ভেছি না। নীলকমরেরা যে একাধ নামের
কবিরাছেন, সেই প্রজা সাতটি লিখিত হই
৮। ১০ বৎসর পূর্বে বলিয়াছে, (বহুত
কমখা একপাণ্ড হইয়াছে) অথচ, তত
নীলকর'গকে সেই বোকখা উঠাই
বার অপ্রাতি নিরাছেন। সম্প্রদক '৮৭
হলোক লিখিত হইবার ৮। ১০ বৎসর
যে জাতির বড় হইয়াছে তাহাৎ স্বাক
কোম দলীল দাখিল হইলে তাহাৎ জাতি
নীল বল. বার কি না? এবং এট ক' আ
নীল আদালতে দাখিল করিলে ১,৫০০
রাশ হয় কি না? এবং কোন বাঙ্গালি বর
কম দলীল আদালতে দাখিল করি
তবে তিনি জীবন দর্শন না করি নি
পাইতেন কি না? আপনিই বলুন। তা
পনি বলিবেন যে নীলকর নাছেন, তা
হার আবার অপরাধ কি? মহান '৮৮
না হইয়াছে এমন দুর্ভর্যই নাই. তা
নির্দোষ হইলেন, তখন এক তা
জাল দলীল কবিলে আর কত বড় অ'
ইবে? কলকাতা যে একার ব্যাপার উপা
রাছে, তাহাতে আর কোন প্রকারেই এ

যে আদালতের দফাদান বর্ণনায় বর্ণিত হয় সেই
পাপত্রকে বান্ধাওঁতে করিয়া এইরূপের
মিলনকারী আদালতকে তাকা করুন।
পাঠন।

এক জন আদালত।

১৮৬৩/২২এ কেজিবি—
পূর্বক

অন্য জনে প্রভুত্ব করিয়াছেন। কিন্তু কামর
জমরবে শুনিতে পাই আমলাদ্বিগকে এক স্থলে
বাধিয়া বসে বসে ব্যাখ্যা দান। নাকি সরকারী
কর্ম চাইছে?

এখানকার মুন্সেফ বাবু বহুনাথ মলিক গত
কাল এখানে পাহাচিয়াছেন, বহু বাবু পূর্বে বর্ড-
মাসের মুন্সেফ ছিলেন, তাঁহার গুণগ্রাম আমর
পূর্বেই জাতি আছে, একদে পাবনার বাতান
গিয়ে না লাগিলেই রক্ষা।

শ্রীমত সোমপ্রকাশসম্পাদক

সম্পাদকের।

আদালতের উকীল এবং
বিএল ও এল এম।

শ্রীমত সোমপ্রকাশ সম্পাদক! বিএল ও এল এল-
মিগেন পদ সংক্রান্ত বিষয় শুনে সস্তম্ভ হইয়া
গেলিলাম উপস্থিত হইয়াছি, এ এ কাছের
সোমপ্রকাশে তৎসময়ে আপনি যে অভিপ্রায়
ব্যক্ত করিয়াছেন, তাহা বিশেষ মনেযোগপূর্বক
পাঠ করিলাম বটে কিন্তু সোমপ্রকাশ প্রকাশিত
অন্যান্য বিষয়ে আপনাব অভিপ্রায় স্পষ্ট যে
রূপে সন্তোষ প্রাপ্ত হইয়াছে তরূপে সন্তোষ
করিতে পারি। বিএল ও এল এলদিগের বিষয়ে আ-
মর বাবু বক্তব্য তাহা পবে লিখিব। বঙ্গদেশে
র আদালতের উকীলদিগের সাধারণ আচার
ব্যবহার বহুনাথ আমাব জানা আছে, এম
সেই লিখিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

সম্পাদক! আদালতের উকীলদিগের যে
মকল সঙ্গের আবশ্যক, তৎপ্রতি বর্ধ
জন এম বিএল এই দুইই প্রধান। সো-
ক পত্রাঙ্গী আকীরবর্গের প্রতি যে কথ-
অর্থন করিতে সহসা সক্ষম করে না উ-
কীলদিগের প্রতি মোকদ্দমা সঙ্গের সে সঙ্গ
১ কার্যনির্বাহ করে এবং তাঁহারা যে পদার্থ
ইউনিক্সের মাস কামা করিয়া গুলুগুটী কর।
অতএব উকীলদিগের কর্তব্য তাঁহার মকদমার
সমুদায় অবস্থায় তৎসংক্রান্ত কাগজ গুলু
যোগ সঙ্গের আবগার হইয়া এবং সত্যসত্য
এই কৃতি করিয়া যদি আইন ও এম বিএল
সেই মোকদ্দমা উপস্থিত করিলে অবস্থা তা-
হার উত্তর দিলে মকদমের লাভ হইবার সম্ভা-

নেন উকীলেই এইরূপ ব্যবহার করায় থাকেন।
আবার হাইকোর্টের উকীল মহাপ্রসিদ্ধের অ-
বৈক প্রথমে মকদমান অবস্থা অবগত হন না।
এবং আদালতের আদালত সনুদার টীকা চতুর্থ-
ত না। ইহলে ওকালত মানব আকর করে না।
হুগির। আপনাদিগের হুজি বিবেচনা। সনুদার
মকদমার লিখিত দাবিল করিয়া বেন। পূর্বে
এইরূপ অজ্ঞাত সেবার মোটে অনেকের মক-
দমা চাইয়াছে। মকদমার মোকদ্দমা করায় যে কর্ম
চুই বসে কিবা সনুদার একজন পড়ে নির্মা-
হ কবিত হইবেক অন্য তাঁহার সনুদার বেতম
এমন করা কেবল এম বিএল হুগির তরুণ স-
চে এম বিএল। পক্ষ প্রাপ্ত হইবেক পক্ষ মক-
দমাকে বিত্তন বার দিতে হয়। বাবু বহুনাথ
বাবু মহাপ্রসিদ্ধ পত্রিকা পদ করিতে অনেক
রূপ কলহোপ করিয়াছেন। আমি জানি মা-
তুনাথ বাবু হাইকোর্টের জজের আগনে আদা-
ন হইয়া পূর্বে মকদমার মকদমার সনুদার
ব্যবহার করিয়াছেন। পূর্বে উকীলদিগের বেত-
ন আদালতে আদান করিয়াছিল, মোক-
দ্দমা সম্প্রতি পড়ে উকীলদিগের বেতম পাওতে
মকদমার পূর্বে পূর্ববার সেই রূপ সনুদার কবে
তবে উকীল ও মকদমার কবিত কতি মকদমার
তরুণ না। মকদমার আদালত কবিত কত
যেমন উত্তর মোকদ্দমা বলে বা মকদমা আ-
লেম না। সেই রূপ সনুদার হুগির আদালতের
উকীল মহাপ্রসিদ্ধ বাস আদালত গ্রহণ করিতে
কথ হুজি বেন। অতঃ প্রাপ্ত এক মকদমার
আদালতের মধ্যে একজন সনুদার হইতে কি না মক-
দমার। আদালতের আদালত কেবল বাবু বহুনা-
থ পত্রিক সনুদার এবিধে বিত্তন করিয়া বিশেষ-
ত বলাই হইয়াছিল, একদে সনুদার বাবু
কক বে মকদমার সনুদার করিয়াছেন সনুদা-
র আদালতের আদালতের সনুদার কবিত হইয়া
সনুদার হইয়াছে, পক্ষ সনুদার আদালতের
অন্যান্য মালিক এবং অন্যান্য উত্তর মকদমার
বাবু বিত্তন হুজি হুলক কোন সনুদার উকী-
ল করিয়া মকদমার সনুদার ও সনুদারের অব-
স্থা করিয়া। উকীলদিগের সনুদারদিগের একজন অ-
ন্যান্য মকদমা করিতে প্রাপ্তি দেওয়াতে কেবল
আদালতের সনুদার ও সনুদার কত হইবেক
মকদমার বিত্তন সনুদার ও সনুদার এবং প্র-
কারণ ও অবস্থা। এই সনুদার পত্রিক

মন নহে। যেসব ও আদালতের
বা ও আইন মিলন। আদালতের
এবং সনুদারের প্রতি
যে যে বিত্তন আদালত
উকীলদিগের সেই সে
অবস্থা করিয়া। ওক
হুজি ব্যক্তিরাই যে
রিয়া থাকেন, যে
সনুদার হইবেক। আ-
ন বিত্তন কার্য নির্মা-
কর্ম নির্মা করিয়া
একজন সনুদার ক-
থবা পূর্ববিত্তনের
পারে কি যে কো
মোটে মকদমার
পূর্ববিত্তনের কবিত
না। সনুদার বেতম
আদালতের সনুদার
ও বাবু বহুনাথ
মোটে ও সনুদার
উত্তর বিত্তন। ইহার
লোক, মোটে কর
বেন।

সম্পাদক! আপনি
মকদমার আদালত
প্রতিষ্ঠান। সনুদার
তে পাবিবেক এবং
উকীলদিগের কবিত
মকদমার কবিত
কবিত বিত্তন। উকী-
লেম তাঁহার আদাল-
ত হইবেক না। আর
একজন উপাধি আ-
দালতের সনুদার
করিয়াছেন। টক
ও সনুদার প্রাপ্ত
এবং সনুদার কবিত
সনুদার হইতে
সনুদার বেতম
নাথ বিত্তন কবিত
নি বিএল ও এল এল
প এই যে এমন
লাভ পাবিবেক না।
টা দিলে কি আ-
ন সনুদার সনুদার
এল ও এল এল।

এই পত্র কলিকাতার সুকীর্ষ দাতব্য রেজিষ্টার
 নাপুর কৌলম্বের বহিঃ চাকরিদেয়াতীর জিয়ারতী
 বিভাগবহন বাগীচ অতি সুখেদার আশাশিত্য

“ प्रवर्त्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः सरस्वती श्रुतिमहो न क्षीयतां । ”

{ সন ১২৬৩ । ১১ ই চৈত্র । ইং ১৮৬৩ । ২৩ মার্চ

प्राथमिक शिक्षा : ५०० रु.
प्राथमिक शिक्षण : ५०० रु.

স্বপ্নে ও ইচ্ছা প্রবর্তিত কথিব্যবহৃত অন্তর্যমতি

ଅମଳାତେ ରାଜା । ବିଦ୍ୟାବିତ୍ ।

স্বলেও ইহা প্রবর্তিত কবিবার অনুমতি
দিয়াছেন। ইহা যে এদেশের আত্মস্বয়ী
উন্নতিব একটা প্রধান কারণ, তাহা
অগুনত্র সংশয় নাই। ইহা সর্বত্র প্রবর্তিত
হইলে গবর্ণমেন্টও লাভবান হইবেন। তা-
হাদিগকে মধ্যে মধ্যে কর প্রণালী পরিব-
র্তিত করিয়া আপনাদিগের সহিত প্রজা-
গকে উদ্বেজিত করিতে হইবে না। কিন্তু
বঙ্গদেশে যে প্রণালীতে ভাণ্ডার বন্দোবস্ত
করা হইয়াছে, আমরা ইহার সম্পূর্ণ
অনুমোদনকারী নহি। এতদ্বারা আশানু-
কূল ফল লাভ হইতেছে না। জমিদারেরা
গবর্ণমেন্টের ও আপনাদিগের প্রাণ্য সং-
গ্রহে যেকোন যত্নবান, ভূমির উর্বরতা গুণ
বর্ধনে সেকোন নতুন প্রজাতিগণের সহিত
চিরস্থায়ী বন্দোবস্তই বিধেয়। তাহাদিগের
হস্তে ভূস্বামিই প্রধান উচিত। যুক্তিও
তাহাদিগের সম্প্রদায় কবিতোছে। তাহা-
দিগের সন্ততি বন্দোবস্ত হইলে তাহারা
গাণপণ্যে আপন আপন ভূখণ্ডকে উর্বর
কারণ্যে আনবে সন্দেহ নাই।

প্রণালীতে রাজ। নিম্নোক্ত-
হইত, তাহার পরিবর্তন
করা বিভাগ ব্যবস্থা
ন্যায় তৎকালে সমিতি।

রাজব সংগ্রহের কার কিস্ত ভূমির উপ তাঁ কার নির্দিষ্ট ছিল ভূমির উপে তৃতীয় কোন স্থলে অর্থাৎ রাজব ছিল। ভূমির কাঞ্চন

রাজ্যের আর বণীক
আর বণীক : রাজ্যের
শাসন কাব্য বীহ
নহে। সুতরাং রাজ্যের
কাহার নির্ণয় ক
গের প্রধান সহায়

হারা এই বৃহৎ শানে এসে
মীনার ও কবর খোঁজা
মূল অনুসন্ধান করিয়া
রাস্তা সহজ পরিবর্তিত
বোধ করিলেন। হারা হারা
এই বহায়াত ভাষা ও

সকল দেখিয়া সিতেছে
 লেন তারতবধে যে কপথ
 চিরকাল সংসারে প্রাচুর্য
 মনে হওয়াও নৈসর্গিক
 হউক, তাঁহা বা ইত্যতঃ
 পরিশেষে দেখিলে মোহ

রাজস্ব সঞ্চয়িত্র (জাঃ)
৩৩৩ কুশানীদির দ্বাৰা

বঙ্গদেশের বর্তমান চিরস্থায়ী বন্দো-

ନାମବାସୁ, ଛକ ପାହୁନ, ଗ୍ରାମ ନାମ ୫, ଗୋର
 ବସିରାଜ, ନିଆଁନିଆଁ ଦେବ ଓ ଛକରେ, ଛକ
 ଛକଚାମା, ଛକଚି ଆଞ୍ଚଳିକ ଛକଚାମାଚିରାମ
 ଛକଚି ଛକଚି ନାମଚିରାମ ଛକଚି ଛକଚି
 ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି
 ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି
 ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି
 ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି ଛକଚି

কলিকাতা ।
 মহাশয়াল ষ্ট্রিট নং ৩৯-এ পাঠি ।
 জ্যৈষ্ঠমাসে পালন চাউৎগ শস্য ধনং যোগ্য

সোমপ্রকাশ ।

६ टोडा मीठवाडीत ।

କଳିକାତା ମଂଦୁକ କାନ୍ଦୁକେ ହୃଦୟ
ଦିକ୍ ପ୍ରକାଶିତ ଏହାମୁଖାତ ଶିଖାଦ ।

ଚିରନ୍ତ ଶ୍ରୀ ବଳେନାଥ -

সামগ্র্য অনেক দাব মেথ্র প্রকাশে চির
হাধী বন্দাবস্তের প্রসঙ্গ করিয়াছি। একচে
এই বিষয় লইয়া অনেক স্থলে আলোচন
কইতেছে। ভারতবর্ষে যে যে প্রদেশে এ
মুকোবস্ত নাই, সর চার্লস উড হস্ত

বঙ্গদেশের বর্তমান চিরস্থায়ী বন্দো-
বস্ত প্রণালী যে কারণে প্রায়ঃ ও প্রেবো-
বোধে লাভ করণওয়ালিস ও তদানীন্তন
ডিরেক্টর সত্বে একান্ত অনুমোদিত হয়
তাহা উল্লিখিত হইতেছে। তাঁহারা তৎ
কালে এদেশে পরনবাগত, সুতরাং এদেশে
সম্বন্ধীয় বিষয় সমাক রূপে অবগত ছিলেন
না না। তাঁহারা দেখিলেন ভারতবর্ষে
মোগল সাম্রাজ্যের সময়ে যে কদম

কিন্তু ইংল্যান্ডে ভূস্বামিদিগের অনেক
সাদৃশ্যও দৃষ্ট হইল। তাহার নিদ্রিষ্ট এক
একট প্রদেশে রাজস্ব সংগ্রহ করিতেন।
কৃষকগণ তাঁহাদের অধীনে ছিল। ইং-
ল্যান্ডে ভূস্বামিদিগের যার ভাষাদিগের
এক দফারেরও অভাব ছিল না, বিশেষ-
তঃ তাহার লোকান্তর গমন করিলে পর
ভূস্বামিদিগের পুত্রেরা ভূস্বামিদিগের উত্তরা-
ধিকারী হইতেন।

এইরূপ ভ্রমপূর্ণ হইয়া ইংরাজ
সাম্রাজ্যকে ১ জনিয়ারদিগকেই সমুদায়
ভূমি প্রকৃত অধিকারী জ্ঞান করিলেন।
কিন্তু তৎকালে একজন বিবচনা করা হইল
যে রাজস্ব সংগ্রহ করিতেছেন
রাজস্ব ভূস্বামিদিগের আপ্য-
কৃতকরা ভূস্বামিদিগের অধীনে
১, কিন্তু তারা ভূস্বামিদিগের
অপর, কৃষকগণ যে স্বত্ব
ভূমি পদ্ধতি করিয়াছে,
করিয়া দিক উন্নতি করি-
ত্ব এবং পূর্ণ পরম্পরা ভোগ
সেইভাবে, সকল ধর্ম করা

অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে,
যদি বর্তমান চিরস্থায়ী বন্দোব-
স্তের প্রথম গণ্ডির অধিবাসী
যদিও পরিচয় প্রদ করিতেছে, তে-
দিয়ে গবর্ণমেন্টে উদ্যোগেরও
কিছু পরিচয় হইয়াছে। চিরস্থায়ী
ভূমি ভূমিতে জমির আধিপত্য
কৃষকগণের স্বত্ব হইয়াছে, ম-সু গব-
র্নমেন্টে জমিদারি দেশের উন্নতির
তার দৃষ্টান্ত করিতে। তাহার ভাবি-
কলিকাতা জমিদার প্রভৃতি ধনশালী,
যদিও জমিদারি হস্তগত থাকিলে
অন্যভাবে জমি করিয়া ভূমি
অর্থনীতি গবর্ণমেন্ট আটকা
প্রতিবেদন জমিদারের দ্বারা
কিন্তু পরবর্তী ইংল্যান্ড লভ

করিয়া ফুলিলেন। কিন্তু তাহার যে আ-
লোচন লভিগের স্থানীয় হইলেন, গবর্ণ-
মেন্ট তাহা বুঝিতে পারিলেন না।

এই বন্দোবস্ত যে কতদূর কলোপধারী
হইয়াছে, তাহা অনেকেই প্রত্যক্ষ ও তা-
হার কলোপ করিতেছেন। সুপ্রসিদ্ধ
ইতিহাস লেখক মিল বলেন, যদি এই
বন্দোবস্ত অতিশয়িত কল প্রসব করিত,
তাহা হইলে এক দিনে এদেশবাসীরা
মোগল সম্রাটদিগের অত্যাচার সকল
বিস্মৃত হইতেন সম্ভব নাই।

আমরা যে প্রণালী অবলম্বন করিতে
অনুরোধ করিতেছি, তাহার কলোপধা-
রিতা অনেক প্রধান লোকের ক্ষয়ক্ষতি
হইয়াছে। তাহা আকাশ কুমুদের ন্যায়
কল্পিত পদার্থ নহে। তাহা আমেরিকার
ও ইউরোপ খণ্ডের বহুতর প্রদেশে প্র-
বর্তিত দৃষ্ট হইতেছে। ইংলণ্ডে এই প্র-
ণালী বিরলপ্রচার বটে, কিন্তু উহা যে
যে ক্ষত্র প্রদেশে ইহা লক্ষ্যবশত হই-
য়াছে, সেই সেই স্থানের কৃষিকার্যের উ-
ন্নতি দেখিয়া কোন্ সম্ভব ব্যক্তি ইহার
উপযোগিতার বিষয় যুক্ত কণ্ঠে স্বীকার
না করিবেন। সুপ্রসিদ্ধ কবি ওয়াডস-
ওয়ার্থ যে কৃষকদিগের বর্ণনা করিয়াছেন,
কবরলও এবং ওয়েস্টমোরলও জিল ইং-
লণ্ডে অন্য কোন প্রদেশবাসী কৃষকদিগের
প্রতি তাহা অহিত পাবে না। কোন
ব্যক্তি এই প্রদেশের উন্নতি বিষয় অ-
স্বীকার করিতে পারেন? এই উন্নতির কা-
রণ জিজ্ঞাসা করিলে কে না বলিবেন যে
কৃষকদিগের ভূস্বামিই উহার মূল।

সমস্ত ইউরোপ খণ্ডের মধ্যে সুইজার-
লণ্ডের ন্যায় প্রকৃত অর্থনৈতিক ভূমি অন্য-
ত্র কোথাপি নাই। কিন্তু তাহার কৃষকদিগের
ভূস্বামি থাকিতে উহা অধিকতর উন্নত
হইয়া উঠিয়াছে। ইংলিস নামে এক ব্যক্তি
বলেন, জুরিচের নিকটবর্তী স্থানে
ভ্রমণ করিতে করিতে যদি চতুর্দিকে দৃষ্টি

ক্ষেপ করা যায়, তত্রত্য কৃষকদিগের অসা-
মান্য পরিভ্রম দেখিয়া একান্ত বিস্ময়াপন্ন
হইতে হয়। আমি রাত্রি ৪।৫ টার সময়
পুনের বাতায়ন উন্মোচন করিয়া দেখি-
য়াছি যে কৃষকেরা আপন আপন ক্ষেত্রে
আসিয়া উৎসাহিত হইয়াছে এবং অপর রাতে
ভ্রমণের পর ৮।৯ টার সময় প্রত্যগতও
হইয়া দেখিযাছি, তাহার ভূগর্ভস্থ বা ত
কালতা বন্ধন করিতেছে, এই প্রদেশের
কোথাপি এমন একটা ক্ষেত্র, উদ্যান বৃক্ষ বা
উদ্ভিদ নাই, যাহাতে কৃষি পারিপাট্য ও
অসীম পরিভ্রম চিত্র দৃষ্টিগোচর হয় না।
অপর, পূর্বে এই প্রদেশের সমুদায় অংশে
যত শস্য উৎপন্ন হইত, কৃষকাদিকার প্র-
বর্তিত হইলে পর তাহার চতুর্দিকে তত
শস্য উৎপন্ন ও তত মেঘ গবাদি সমৃদ্ধ
হইতে আরম্ভ হয়। গোল্ড স্মিথ এই প্রদে-
শের কৃষকদিগের এইরূপ বর্ণন করিয়াছেন

“যদিও কুটীরে বাস সামান্য আহার
তাহাতেও অসন্তোষ নাটিক তাহার।
ছোট বড় নাহি দেশে সমান সকলে।
এই হেতু নাহি জানে যে কবে বুলে।
নাহিক নিকটে তার চক্ষ্য উদ্যত।
অপন কুটীরে যাবে হয় অনাদর।”

ইউরোপের অন্যান্য প্রদেশ অপেক্ষা
নরওয়েতে কৃষকাদিকার প্রথা সর্বপ্রা-
প্রবর্তিত হয়। লেড বলেন, তৎকালীন কৃ-
ষকেরা যেকোন একমতা অবলম্বন করিয়া
যেকোন পরিভ্রম সহকারে ভূমিতে জ-
সেচন করে, সেকোন অন্যত্র কোথাপি দৃষ্ট
হয় না। তিনি বলেন, ভূসম্পত্তি যদি উ-
ন্নত ও স্পৃহণীয় হয়, তাহা হইলে উন্নত
অর্থনৈতিক উন্নতি ও স্পৃহণীয় সন্দে-
হ নাই, আর যে সমাজ এই সম্পত্তি বি-
ভক্তরূপে বিতরণ হইয়াছে, তাহাই উ-
ন্নত ও সমৃদ্ধিসম্পন্ন দৃষ্ট হয়।

জরমেনির অনেক সংখ্যা প্রদেশে কৃ-
ষকাদিকার প্রণালী আছে। সেই সকল প্র-
দেশের মধ্যে পোল্যান্ডের সবিভিন্ন সমুদায়

শ্রীমতী। এইরূপে কতিপয় ইংলণ্ডের অনু-
মোদিত বিধিবিধি অন্য কিছুই অনুকূল
নয়নে বর্ণন করেন না। তিনিও এই দেশে
শের কৃষি প্রণালীর প্রচলন করিতে ক্রটি
করেন নাই। তিনি বলেন এই দেশের
কৃষকেরা অন্যান্য দেশের কৃষকদিগের
ন্যায় ভূসম্পত্তি বিক্রীত করে, তাহারা যে
ভূমি কর্ষণ করে, তাহা ভাঙ্গাখিঁচের সম-
স্তি; এই নিমিত্তই তাহারা সমধিক সৌভা-
গ্য সম্পন্ন দৃষ্ট হয়।

কৃষকাদিকার প্রণালীর উপযোগিতা বেল-
জিয়ম দেশে দেখা যায়, একপ
অন্য দেশে অল্প দৃষ্ট হয়। ইউ-
রোপ খণ্ডের সমুদায় দেশ অপেক্ষা এই
দেশের ভূমি অনুরূপ, কিন্তু এ দেশীয় কৃষ-
কগণ উর্বর ভূমি চাহে না। যত কদম্বা
ভূমি হউক না কেন, এক জম সাহায্যে
তাহারা তাহাকে শস্যশালিনী করিয়া তু-
লে। কাল সহকারে তাহাদিগের মিকট
ভূমির অপকর্ষ বিলুপ্ত হইয়া যায়। তত্ৰতা
কৃষকেরা অতিশয় মিতব্যরী, তাহারা ক্রমে
ক্রমে অর্থ সংগ্রহ করিয়া সুযোগ পাইলেই
ভূমি ক্রয় করে। ভূমি বিক্রয়ের নাম শু-
নিবামাত্র তাহারা অতিশয় ব্যগ্র হইয়া
উঠে। এইরূপে প্রতিযোগিতা দ্বারা এই
দেশের ভূমির মূল্য এত বৃদ্ধি হইয়াছে
যে কেহ তাহা শতকরা দুই টাকা মাত্র লাভ
পায়। ইংলিস সাগরস্থ দীপ সমূহেও এ-
রূপ কৃষি পদ্ধতি প্রচলিত আছে। এই
কদম্বীপ সমূহে উইলিয়ম থরনটন বলিয়া
হেন, কুজ পারেনসি গ্রামে যত শস্য বিক্রী-
ত হয়, তত সমুদায় ইংলণ্ডে হয় না।
হিল বলেন, যে এই কুজ দীপবাসিরা
বেঙ্গল সুখী, একপ সুখী লোক আন
অন্যত্র আর দেখি নাই। সর জর্জ হেড
কহিয়াছেন, পণ্ডিতেরা যে দিকে নেত্রপাত
করেন, কৃষকদিগের মুখ সচ্ছন্দতা সর্বত্রই
লক্ষিত হইবেক। ২২

উপরে যেসকল প্রদর্শিত হইল তদ্বারা

প্রতীয়মান হইতেছে, কৃষকেরা ভূমি বিক্রয়
লাভ করিলে কেবলবে ভূমির উর্বরতাও ন
আমদমে যত্নবান হয় একপ নহে তাহারা
ভূমির স্বামি হইতে একান্ত ব্যগ্র। আমি
দিশের দেশের কৃষকেরা এক যে আলস
বলিয়া প্রসিদ্ধ, ইহাদিগেরও যে ভূমিতে
নিজ স্বয়ং আছে তাহা কদম্বা দ্বারা
ইহাদিগের তাদৃশ আলস্য দূর্দৈগোচর হয়
না। এতদ্বিধ, ইহারা ভূমির স্বামি হইতে
বিবরে একপ ব্যগ্র যে ভূমি ক্রয়ের সুযোগ
প উপস্থিত হইলে ইহারা আপনাদিগের
আবশ্যক নিত্য ব্যয় বন্ধ করিয়াও তাহা
ক্রয় করে। "অতএব ইহাদিগের সহিত যে
একটি চিরস্থায়ী বন্দোবস্ত হয় তাহা একা-
ন্ত প্রার্থনীয় নহেই নাই। তাহা করিলে
এ দেশের সবিশেষ মঙ্গল হইবার সম্পূর্ণ
সম্ভাবনা আছে। তবে যদি বাঙ্গালা দেশের
ন্যায় মধ্যস্থলে জমীদার বালিয়া এক প্রে-
রাধা হয়, তাহাতে আমাদিগের তাদৃশ
আপত্তি নাই। কারণ পদবর্ণমেন্টের নিত্য
মুতন কর সংগ্রাহক নিয়োজিত করা অ-
পেক্ষা চিরকালের মত একবিধ কর সং-
গ্রাহক থাকিলে প্রজার প্রতি তাহাদিগের
বৎসিক মেহ জন্মিবার সম্ভাবনা থাকে।

২৭২

১৮৩১-৩২ অকের শিফা সংক্রান্ত
রিপোর্ট।

১৮৩১-৩২ অকের শিফা সংক্রান্ত
রিপোর্ট প্রকাশিত হইয়াছে। ইহা পাঠ
করিয়া আমরা বাঙালানুগুণ না হউক অপেক্ষা
কাকূত অধিকতর সন্তোষ লাভ করিলাম।
প্রতি বৎসর আমাদিগের দেশের বিদ্যা-
লয় ও ছাত্রের সংখ্যা বৃদ্ধি হইতেছে।

১৮৬১-৬২ অকে বৎসরে বিদ্যা-
শিক্ষার জন্য সমুদায়ে ১১০১৪৬৬ টাকা
ব্যয় হয়। বাঙালদিগের বেতন ও দান
প্রভৃতি হইতে লক্ষ ২২০,৬৮৮ টাকা
তাহার অনর্নিবেশিত আছে, তাহা বাদ
দিলে ৮,৮০,৭৭৪ টাকা মাত্র সাধারণ রা-

জ্য হইতে ব্যয় হইয়াছে। বাকি
মধ্যে এই ব্যয়ের তাগিদা
হইতেছে।
বেতন
পুরস্কার প্রভৃতি
সংস্কার প্রভৃতি
কাগজ প্রভৃতি ব্যয়ে ব্যয়
আনুকূল্য

মোট টাকা

পূর্ব বৎসরে ৮২৬ টি বিদ্যালয়
৫০,৭১৪ জন ছাত্র সংখ্যা ছিল।
বৎসর ১৮৬৫ টি বিদ্যালয় ৫২,৭১২
ছাত্র হইয়াছে। ইহার মধ্যে
যে প্রকৃতির বিদ্যালয়ে বিদ্যা
নাই। ডিরেক্টর আটকিলান
ন এই সকল বিদ্যালয়ের মধ্যে
পাঠাইতে ইচ্ছুক নহেন। ২৭২

সমুদায় বৎসরে ছাত্র
কেন নদবি, আটকিলান সাহেব
ইহার মধ্যে অন্ততঃ ৪০ লক্ষ শি-
শুক থাকি উচিত। কিন্তু এ-
শিক্ষা প্রাপ্ত হইতেছে না। কি-
এই শোচনীয় কলম বর্ণন করা বাকি
কাহার কাছে এই মোহ নিবৃত্তি
একজিবারের উপায় কি। বৎস
১৫ কোটি টাকা আদায় হয়, তা-
হে ৮,৮০,৭৭৪ টাকা মাত্র বিদ্যা
জন্য দেওয়া হইতেছে। অন্য
জাতিবৈর নিবন্ধন অনেক মত যে
বটে কিন্তু সমুদায় ভারতবর্ষ এক
হইয়া শিক্ষা কার্যে অধিকতর
জন্য চিন্তা করিতেছেন। এ-
টাকা সমুদায় ভারতবর্ষের জন্য
কিছু উপকার হয়। কিন্তু এক্ষণে
২১ লক্ষ মাত্র দেওয়া হইতেছে।
প্রতি পলীগ্রামে এক এক বিদ্যা
হইতেছে, যত দিন কৃষক ও মজুর
মহানেরা বিদ্যা শিক্ষা না করিলে
দিন দেশের সম্পূর্ণ মঙ্গল সম্ভাব্য

তাঁহাই জন্মাই আমরা সর্বদা গবর্ণমেন্টে
কিছুই না পরিমাণে সর্বত্র আনুকূল্য
এবং বিবরণে উদ্ভূতনা করিয়া থাকি।
বটে কতক তরুণ তরুণীরা ন্যায় সাহায্য
নব বদ্যালয় ও মধ্যে মধ্যে গবর্ণমেন্টে
গঠিত একটি উচ্চশিক্ষার বিদ্যালয় থাকা
গেছে আবশ্যিক। গবর্ণমেন্টের বিদ্যা
দ্বারা সাধারণ সমাজ হস্তক্ষেপ পরিত্যাগ
আজ্ঞাও উপস্থিত হয় নাই। তাহা
।। উপস্থিত হয়, এই আমাদিগের আশ
লে কিছু বাহ্যিক পরিমাণে সহায়তা
নেই। অবলম্বন না করিলে সে অতীত
ব হইবার সম্ভাবনা নাই।

পক্ষ মধ্যে বারাসত ব্যতিরিক্ত
এ গবর্ণমেন্ট বিদ্যালয়ের উন্নয়ন
হইল। সমুদায় বঙ্গদেশের
পরিবর্তন ও বারাসতেই অভ্যাস
হয়। এই বিভাগে আনুকূল্য
ও চাকুরী সংখ্যা অধিক, কিন্তু
ইবার পর অবধি বারাসতের
ঘটনাছে। অন্য অন্য জেলারও
একই উন্নতি দৃষ্টি গোচর হইল।
এ প্রান্ত বঙ্গদেশ বিদ্যালয়ের
প্রদেয়িকা পরীক্ষায় কৃতকাৰ্য্য
ইহা আমাদিগের অনঙ্গ আ
বিষয়। আমাদিগের বিষয় এই যে
উন্নতি শিক্ষার কিছু মাত্র
পাই বলিলে অভ্যাস হয় না।
সম্প্রতি কয়েকটি বিদ্যালয় হই

লম্পেটের। যে যে রিপোর্ট করি
তরমধ্যে আমরা মার্টিন সাহেবের
ই দেখিয়া অধিকতর সন্তোষ লাভ
।। বিদ্যা শিক্ষার যে সমস্ত প্রতি
ও তাহা হইতে উদ্ভূত হইবার যে
উপায় আছে, তিনি স্পষ্ট করিয়া
উল্লেখ করিয়াছেন। এক বিষয়ে
তাঁহার সহিত আমাদিগের মতের
হইতেছে না। আমরা একটা নিমি

শাহিনাং ডেপুটি ইনস্পেক্টরের সংখ্যা ক
মাত্রা দিয়া সেই টাঁকা দ্বারা শিক্ষাদানের
উপায় বৃদ্ধি করিলে অধিক উপকরণ
।। তিনি তদন্তের রিপোর্ট দ্বারা লিখিয়াছেন
“পূর্বেই পরিবর্তনের জন্য অধিকতর
ডেপুটি ইনস্পেক্টর নিয়োগ আবশ্যিক,
অমরা যদি স্বচক্ষে উক্ত বিভাগের অবস্থা
দর্শন করিতাম, তাহা হইলে ডেপুটি ইন
স্পেক্টরের সংখ্যা কমাইব ব প্রস্তাব না
করি। তাহার বৃদ্ধি করিবারই প্রস্তাব ক
রিতাম।” যে স্থলে ডেপুটি ইনস্পেক্টর
সংখ্যা বৃদ্ধি করা আবশ্যিক, তাহার বৃদ্ধি
না করা আমাদিগের অতিমত মতে। আ
মাদিগের সেবাক্ষেত্রে দুটি তাৎপৰ্য্য আছে।
এক, ডেপুটি ইনস্পেক্টরদিগের আনাত
যথোচিত রূপে কাজ করেন না। দ্বিতীয়,
সকল স্থলে উপযুক্ত শিক্ষক নিয়োজিত
না থাকাত তত্ত্বাবধান ক্রিয়া সমাজ কোনো
পধাবিনী হইতেছে না। কিন্তু যদি ভাল শি
ক্ষক ও কাৰ্য্যক্ষম অনঙ্গ ইনস্পেক্টর ও
ডেপুটি ইনস্পেক্টর রাখা হয়, তাহা হইলে
কি অঙ্গসংখ্যা লোকের তত্ত্বাবধান অ
ধিক পরিমাণে কলোৎপাদক হয় না। যে
শিক্ষকে পদার্থ নাই, কেবল এক তত্ত্বাব
ধান দ্বারা কি তাহা হইতে অধিকতর ফল
লাভ প্রত্যাশা করা যাইতে পারে? পক্ষ
স্তরে যে শিক্ষকে পদার্থ আছে, তাহার
সহিত অঙ্গ তত্ত্বাবধান যোগ হইলেই
তাহা শুদ্ধ শরীরকে অঙ্গমাত্র অগ্নি সং
যোগের ন্যায় অধিকতর কাৰ্য্যকারী হয়।
পরিশেষে আমরা স্পষ্ট করিয়া কহিতে
ছি, আমাদিগের বাক্যের মূল তাৎপৰ্য্য
এই, অঙ্গ ও অঙ্গবর্ধ ইনস্পেক্টরের
সংখ্যা কমাইয়া যদি সেই টাঁকা কৰ্ম্মক্ষেত্র
ও উপযুক্ত শিক্ষক নিয়োগ বিবরণে ব্যয়িত
হয়, সমধিক উপকার দর্শে সন্দেহ নাই।
ভাল শিক্ষক রাখিতে হইলে অধিক ব্যয়
আবশ্যিক হয়। পৰ্যাপ্ত পুরস্কার লাভ না
হইলে ভাল লোকের গুরুতর ক্ষয় হইবে।
এই হইবে কেন?

মার্টিন সাহেবের ন্যায় উন্নত সাহেবের
রিপোর্ট ও আমাদিগের আশঙ্ক কর হইয়া
ছে। আমরা বেহার ও অন্যান্য ইনস্পেক্ট
রের রিপোর্ট দেখিয়া সন্তুষ্ট হইলাম না।
কিন্তু আমরা তাঁহাদিগের সম্পূর্ণ দোষ দিতে
হিনা। তত্বে সমাজ আজিও উৎকৃষ্টাবস্থা
হয় নাই। তত্বে লোকেরা কুসংস্কার জাল
আচ্ছন্ন হইয়া আছে। সুতরাং তত্বে ইনস্প
েক্টরদিগের মার্টিন ও উদ্ভে। সাহেবের
ন্যায় কৃতকাৰ্য্য হওয়া সম্ভব নহে।

রিপোর্টের বিষয়ে আমরা ১৯০৭
একটা বক্তব্য আছে, তদ্বারা ১৯০৭
তীর্থ ব্যক্তি বিশেষ প্রতিষ্ঠিত ও গুরুত্ব
শযনিগের পাঠশালায় সবিধে বৃত্তান্ত
রিপোর্ট মধ্যে একাধিত হয়। আমরা
স্বদেশীয়দিগকে অনুরোধ করিতেছি যাঁ
হারা গবর্ণমেন্টে সাহায্য না লইতেছেন,
তাঁহারাও যেন ডিরেক্টরের নিকটে আপনা
দিগের বিদ্যালয়ের বৃত্তান্ত প্রেরণ করেন
এবং ডিরেক্টর ও যন্ত্রবান হইয়া তাহা
আনাইয়া লন। ইহা তাৎক্ষণিক সমাজের
মান সর্বমানচিত্র। ইহাকে সম্পূর্ণ কর
অতিশয় আবশ্যিক।

বঙ্গ সমাজের কলিকাতার
শোভা।

কবিগণ বঙ্গদেশে প্রতিরমীয়া ন্যায়
নানিয়া বর্ণন করিয়াছেন। কবি বর্ণিত
লিখাই আমরা “রমণীয়া” বিশেষণ দ্বারা
ইহার গুণ গৌরব বৃদ্ধি করিতেছি না, বা
স্তবিক ইহার গৌরবতা গুণ আছে। শীত
কালে জগৎপুত্র মীহার জালে আচ্ছন্ন হ
ইয়া থাকে। কতিপয় উদ্ভিদ তিন্ন তরুল
তাদি সমুদায়ই প্রায় শীত প্রভাবে শো
ভা হীন হয়; জীব জন্ত সকলের ক্ষুধি
থাকে না; গগন মণ্ডল নির্যত কাল ভূমি
হৃত দৃষ্ট হয়; জল ও চন্দ্রমা শীততরে
ভীত হইয়াই যেন জড় ও মলিন ভাব
ধারণ করে। কিন্তু বঙ্গ সমাজ হইলে

সময় হইতে শুরু হইয়াছে।
তাহার উদ্দেশ্য মনে করিয়া
; তাহা করিয়া সকল উৎসাহ পূর্ণ
হইয়া উঠে ; গণমতের নির্দেশ
কর্তৃত্বাদি লোহিতমান হয়। যে কালে
গণমতের উত্তর এত সৌভাগ্য
উৎসাহ হয়, তাহা কে রক্ষা করিবে ?

এই সময়ের কালে গণস্বার্থের কি
নাই হইতে পারে ? চতুর্দিকে মনোপ
কর্তৃত্বের আশা পোতা মনোপ
নির্দেশনী : এটি উৎসাহের ধরে ; নানা
ধর্মী : সুসুখের সঙ্গে মালা বিবরণ অমো
দিত হয় ; কোকিলের কাকলীমতের আশ
হইবার পর নাই এতিনাভ করে ; সুশী
তল দাঁকিলে কুচন্দ্রের আলো প্রায় এক
বোধিত হয় : আমরা যখন এই সকল সুখ
অনুভব করি, জগদীশ্বরের মহিমা হৃদেই
আমাদিগের হৃদয়ে উদ্ভিত হইয়া অনির্বচ
নীয় মঙ্গল উপস্থিত করিয়া দেয়। এতি
রূপে, এতি লভ্য ও এতি জীবে সেই
অধিতীরের রচনা কৌশল, জাহার করণা,
ত-জাহার মহিমার পরিচয় পাইয়া চিত্ত
আনন্দমাগরে নিমগ্ন হইয়া নিঃস্ব হইয়া
পড়ে। উৎকালে আমাদিগের বোধ হই
ত থাকে আমরা যেন অন্য এক অদ্ভুত
ঐশ্বর্যলোকে এম্বিত হইয়াছি ; আমরা যেন
মৃত্যুবিধ-জীবন প্রাপ্ত হইয়াছি ; আমরা
যেন আর এক অধিপতির অধিকাংশ উপ

কিন্তু কলিকাতা এ সময়ে বিপণিত
ধারণ করিয়াছে। এখন আর ধর্ম ও
শরৎকালের ন্যায় সৌখ ও অট্টালিকার
খেত, পীত, নীল ও নোহিতাণ প্রায়
নয়নমোচর হইয়াছে। সকল পক্ষ যত
বলবান হইতেছে, ততই প্রশস্ত রায়
সকলের ইচ্ছাকরে কুসুমচূর্ণের ন্যায়
ভীরমান হইয়া নগরকে কেবল এক
গাহিত বর্ণ করিয়া তুলিতেছে। যিনি

একবার ব.স. লিটেলের একটি "রাজ্য"
অর্ধশতাব্দীকাল ভ্রমণ করেন, তাঁহাকে চি
নিয়া লওয়া তার হয়। এম. বাটলেকের
উৎকর্ষে তদবধি দেখিলে তারে বিস্মিত
হইয়া জনমীর কোড় আঁখর করে মনে
মাই। কলিকাতায় বস্তুকালে নানাবর্ণের
ঐতিহ্যাত্মক এই কথা পেন, অন্য
অন্য ইতিহাসেরও উল্লেখ হয় না এমন নয়,
রাজ্যের বাহির হইলে আরই দীর্ঘতম ও স
কিঁত মনরঞ্জন হইবে গন্ধে বসন্ত নানা
বিবরণ নব মস্তককেও মনোহর করি। "কুল"
কলিকাতার কোকিলের অধিকার লাগিয়া, কা
ক জাহার পদ প্রকাশ করিয়া মিত্রের সুখ
র হইতে গান করিয়া অবশেষে আনন্দ বিধান
করিয়া থাকে। উৎস ও বিহীন গন্ধে মন
মহাদিকের সমস্ত বাহ্যিক লইয়া তুলি
জিহ্বার ধ্বংসের সুখ উপস্থাপন করে।
বসন্তকালে পল্লী প্রদে গমন করিলে আ
রাম ও উদ্যানাদি বর্ণন করিয়া যেকোন
সেই অধিতীরের অলৌকিক মহিমার প
রিচয় পাওয়া যায়, কলিকাতায়ও সেইরূপ
রাজ্য ও মনোমোহন দর্শন করিলে মি
উনিসিপাল কমিসনরদিগের মহিমা অপরি
চিত থাকে না। এতদ্বিধ, কমিসনরদিগের
মাহাত্ম্যের পরিচয় পাইবার আরো অনেক
অসাধারণ প্রমাণ আছে। এই নগরের ভিত্তি
তরে একপ অনেক স্থান আছে তথায়
অপেক্ষাপরিহারকদিগের আসনের মধ্যেও
হুই এক ধারণা ধুলি পড়েন। সেই সেই
স্থানের পুতিগন্ধি কপাল রাশি উন্নত শি
রা হইয়া অসাধারণ রূপে কমিসনরদিগের
পুণ্যের পরিচয় দিতেছে।

পরিণামে কমিসনরদিগের আর
একটি মাহাত্ম্য বর্ণন না করিয়া এ প্রস্তাবে
র উপসংহার করা বিবেচন হইতে পারে না।
একত কলিকাতার লোকসংখ্যানুসারে
কেনে স্বাধিকার বিস্তৃত জল পাওয়া যায়।
যে বহুতর দীর্ঘিকা আছে, তাহাও আ
গত প্রায় দুই শত বর্ষের মধ্যে

এই বসন্ত কালেই হইবে।
পূর্বেই প্রস্তাবনা করিয়াছি।
রাজ্যের অসাধারণ রূপে
কর্তৃত্ব হইয়াছে। আমরা
উৎকর্ষে হইয়াছে।
এখানে একটি বৈশিষ্ট্য
গণস্বার্থের হইয়াছে।
কলিকাতার ভিত্তি
তাহা হইয়াছে।
গৌর চতুর্দিকে
সেই পদ্ধতি
পদ করিতেছে, কমিসনরদিগের
মৌরী উন্নত করি।
বাইলা লোকের
সম্মতি আছে।
পদ পানকে
রাহিয়াছেন।
জল করিয়া
এখন নিশ্চিত
সিগের জীবন
ন করেন।
উন্নত করিয়া
সহর কেন
লাক।

উপস্থাপিত হইয়াছে

উপস্থাপিত হইয়াছে
বার ট.উ.স.হালে একটি সভা হইয়া
নেপটেনট-পরিচয় ও উদ্ভি অনেক
পীর সভ্য বর্জিত এবং এতদ্বিধ
উদ্ভি অনেক সভ্য হইয়াছে
সমাজ গৃহ উত্তম রূপে সুসজ্জিত
উক্ত বিদ্যালয় সংক্রান্ত ব্যক্তিরা এক
পরিচ্ছদ ধারণ করিতে টাউনহালের
ই শোভা পাবে। বেলা ৪টা টার সময়
বিদ্যালয়ের বাইরে চাটপনের
সভাপতি) অনুরোধ করিয়াছেন
সভাপতির আসন গ্রহণ করিলেন

[illegible]

এই ভাষা লিখি নাই।
এই ইংরেজি লিখি নাই।
একটি অসুস্থতার বাহির
কি ছিল না, কতএব
পুস্তক লিখিয়া কি হই
ক কিঞ্চিৎ অতিশয়
সেই মোহপ্রকাশ পাঠ
র মেঝার এই ভাষা
হইবে। এখানে একটি
উপস্থিত হইয়াছে, তাহা
হইতেছে না। অথবা প্রশ্ন
ইহা? মিরর সম্পাদককে
তথ্য করেন, তাহার উত্তর
তাঁহার সে শুণী বিলম্ব
ক, প্রশ্ন করা উচিত। সে
প্রশ্ন প্রত্যক্ষ একমাত্র অব
জ্ঞাপনীয় পরিভাষা করিয়া

এই প্রশ্নে মিরর সম্পাদকের
জন্মত সন্তান তার প্রকাশ পা
শব্দক পুঙ্খ লিখিয়াছিলেন,
অসুস্থতার পুস্তকে যজ্ঞোপবীত
আই, কিন্তু উপস্থিত ব্যক্তির
এই বিলাপ করিতে হইবে, তা
কৌতুক করিয়া জিজ্ঞাসা করি
লাম, এ কত বয়সে ত্রাণের নিকাশ
। আচার্যের নিকটে হইবেন এবং কত
বয়সে ত্রাণের করিবেন? সম্পাদক সর
স্বাক্ষর কৌতুক হুজিতে পারেন নাই।
বেদের কথা অতিশয় ক্রুদ্ধ হইয়া
। কিন্তু আমরা ত্রাণসমাজে কই বেদের
দানদর, দেখিতে পাই না। তাহা হইলে
দেবদেবতার ঠিকর পিতৃ শ্রাব কালে
পু বাতা স্বাক্ষরিত এই বৈদিকমন্ত্র পাঠ
যেন কোন? সম্পাদক অত ক্রুদ্ধ হইলে
ইহা? পূর্বাগত ব্যবস্থিততা চাই।
আমাদের প্রস্তাব, বিস্তৃত মন্ত্রের অংশ
বিভক্ত ধর্মের আসনীয় এই প্রশ্ন
মিরর কতকগুলি প্রমাণ ব্যক্তি প্রেরণ
হইল, তাহার উত্তর দান যোগ্য নহে।
উপস্থিত হইলে মিররের কোণ ইংরেজি
অভিধান করিয়াছে। তাহার এখানে

কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিতে আসামিগের প্রাতি
অভিধান... জাতকর্ম্মাদি দ্বারা অগতের কি
উপকার লাভ সম্ভব না আছে, যদি এই ক
খাণী তিনি সাধারণত বুঝাইয়া দিবার চেষ্টা
করেন, তাহা হইলেই আমরা অসুস্থতার
প্রাতিগের প্রতি যে মোহপ্রকাশ করিয়াছি
তাঁহা সম্বন্ধ হইবে। বাক্যেরা সূত্রমত
অসুস্থতার নিমিত্ত কতি ও কই সহ্য করেন,
তাঁহা মিরর কি উপস্থিত নিমিত্ত কতি সহ্য
করা হয়? অসুস্থতার অসুস্থতাই কি যথার্থ
বর্ণন? অসুস্থতার অসুস্থতাই কি উপস্থিত প্রিয়
পদার্থ? নিমিত্ত অসুস্থতাই কি অগতের ক
লাপনিধান? উপস্থিত অসুস্থতার নিমিত্তই
কি ত্রাণেরা ত্রাণসমাজের আশ্রয় গ্রহণ করি
রাছেন? উহা অপেক্ষা কি উত্তর অসুস্থতান
নাহ? আম নিগের চেপেব লোকেরা অসুস্থতা
তিনিগের আশ্রয় হইয়া রাখাছেন, তাহাদি
গের অনেকে কষ্টব্যাকর্ষণ যোগে অসুস্থতা
হইয়া পশু সন্তান অবস্থার জীবনধারণ করি
তেছেন, তাহাদিগের অনেকের শারীরিক ও
মানসিক উত্তরবিধ চূর্ণসমত দুই হইতেছে যে
অসুস্থতান দ্বারা। তাহা নিগের অবস্থা সংশো
ধিত হইয়া উন্নতি লাভ হয়, তাহা কি ত্রাণ
দিগের আশ্রয়ীর নহে? অসুস্থতার
অসুস্থতার অসুস্থতায় মত হইয়া সেই সেই
নহা অসুস্থতান বিস্তৃত হওয়া কি ত্রাণদিগের
উচিত? ত্রাণেরা কি মধ্যে মধ্যে আসামিগের
ত্রিগণের অবস্থা লক্ষ্য করিয়া থাকেন?
তাঁহা সূত্রিগণ প্রবর্ত হইলে কি আর অ
লোক অসুস্থতান হইয়া আশ্রয়িত থাকিতে
ইহা হয়? সেই হতভাগ্য ত্রিগণের অবস্থার
উন্নতি সম্পাদন কি কখনও জাতকর্ম্মাদি
অপেক্ষা প্রশস্ততর অসুস্থতান নহে?

এই প্রস্তাবের উপস্থিত কালে আমরা
বিস্তৃত পুঙ্খক মিরর সম্পাদককে একটি প্রশ্ন
জিজ্ঞাসা করিতেছি, তিনি যেন অসুস্থতা ক
রিয়া উত্তর দেন। মিরর সম্পাদক আসামি
গের নায় ত্রাণধর্ম কালক্রমে অগতের এক
মাত্র বর্ণন হইবে বলিয়া সম্ভাবনা করেন নহে
হনাই। কিন্তু কতিপয় ত্রাণ যে অসুস্থতান
অসুস্থতান প্রবর্তন চেষ্টা করিতেছেন, তাহা কি
ত্রাণধর্মের বিপরীত হইয়াছে বাস্তবিক

হইবে না? অন্য অন্য আশ্রয় গ্রহণ
কালে ত্রাণদিগের অসুস্থতান অসুস্থতান
সমত হইলে ত্রাণেরা কি বাস্তবিক
অসুস্থতান প্রবর্তন নাই জাতকর্ম্মাদিকে
স্বয়ং প্রবর্তন বলিয়া ত্রাণেরা নহে কই
তে পারিবেন?

আগত

১০ই ফাল্গুন ১২৬৩

চাকার

কলিকাতার বহুভাষায়, দীনবন্ধু, গিলাশি
বিলাসী প্রভৃতি যেন সকল দ্বারা বিশেষ
বিশেষ নাম আছে সেই কপ এই চাকার
মধ্যে নসগোনা পাখ্যহাট, বাস্তবিক প্র
কৃতি ১৬৩ টি (মহা)) দ্বারা নাম আছে।
কলিকাতার বহুভাষায়ের মধ্যে যেন চক
আছে সেইকপ এখানেও একটি বহুভাষায়
চক আছে। এই চকের মধ্যে, প্রকাশ একটি
কামান ইষ্টক দ্বারা গঠিত আছে। এই সন্তান
কলিকাতার আশ্রয়ীর চৌকিদারী বাহির হি
সাবে লোকানন্দের সমত প্রায় ১৩২৩০ বর
লোকের দান এবং বহুভাষায়ের দ্বারা
প্রায় ১০০০ লোক সংগী হইবেক। এখা
নে সর্বাধিক মূল্যমান অধিক হইবেক।
তাঁহা ও লক্ষ্যমণ্ডিত নিত্য কই নহে।
তাঁহা অতি বহুভাষায় কতকগুলি বহু
মলাকা দ্বারা অসুস্থতান চাকার বহু
করিয়া থাকে। তাহা বহু নিমিত্তের সমত
তুই অনেক আশ্রয়ীর হয়। এদেশীয় মানবগণ
অত্যন্ত দীর্ঘ জীবন, প্রায় অনেকটী অশা
মলিক ও অসুস্থতান কিন্তু বৈদিকনিষ্ঠ
তপস। সহস্র জীলোকের মধ্যে এক জন অ
সুস্থতা আছে কিনা সম্ভব নয়।

এখানে অন্য বহুভাষায় বহুভাষায় বাস করে
বটে, কিন্তু হিন্দু ও মুসলমানই অধিক। যদি
কলিকাতার বহুভাষায়ের মূল্যমান নিগের যে এক
লক্ষ হইয়া থাকে, এখানে তাহার কোন
অংশে কই নাই, প্রায় কোন কোন অংশে
অধিক হইয়া থাকে। মিররদিগের কলিকাতা
প্রভৃতি দ্বারা কই বর্ণন প্রকাশ করিয়া বহুভাষায়
কত কথা হইয়াছেন এখানে সেজন্য হইতে
পারেন নাই। অসুস্থতার আশ্রয়ীর

সম্মান প্রদান পাইয়া যান। সাত্ত্বিক
ভায়ে ধর্ম প্রতিপালন তদারক প্রদান মহাত্মা
অতি অসুখ। চাকার ও টি প্রদানমাত্র
নাহে। তদাধা জীবন রূপ প্রদান নাহি।
ত্রেয় যাত্রীতে য লম্বা হয়, সেটাই সর্ব
প্রধান। যে বিত্তর প্রদান প্রদান ন হইলে
লগতের সম্পূর্ণ মঙ্গল সম্ভব নাহি। তাহার
উৎকর্ষ সাধনে অনেক কৃতবিদ্যা ব্যক্তি
লব্ধাশ্রয় দেখিতে পাওয়া যায়, উহা অপেক্ষা
আত্মপের বিত্তর আর্থ কি আছে। এখানে
কর যৎসম্মানের অধিনায়ক জীবন যাত্র
রক্তকর বিত্তর কোন কর্তব্য বিষয়ের প্রতিজ্ঞা
করিয়া তাহার অন্যায়চরণ করাত অনেক
কৃতবিদ্যা ব্যক্তির তাহার প্রতি অস্বীকার হান
হওয়াতে এখানে প্রাক্ষণিকের উন্নতি পক্ষে
অত্যন্ত বাধা হইতেছে। আমি এই সাধন
বুধবির উক্ত সমাজে গমন পূর্বক সবার অ
বস্থা সম্বন্ধে কথিত। অত্যন্ত দুঃখিত হইলাম
উপাচার উপানয়ন পর তদ্ব্যবস্থার
জুট প্রস্তাব পা. করিলেন। তাহার পর ৪ টি
সংগীত হইয়া সভা ভঙ্গ হইল। আচার উৎ
কর্ষ যৎসম্মানের কল্যাণ বিষয়ক বক্তব্য
তা বা কথোপকথন কিছুই হইল না। সম-
য়ে ২৩ টি প্রাক্ষণিক উপস্থিত ছিলেন, তন্মধ্যে
কেবল উপাচার্য প্রস্থিত হই। তখন জন আ-
মার সহিত কিছুক্ষণ আলাপ করিয়া বস্তা
নে প্রস্থান করিলেন।

গুনিলাম একদিগের প্রতি অনেকে অ
সন্তুষ্ট হইয়া সমাজ পরিভ্রমণ করিয়াছেন।
কিন্তু পরিভ্রমণ না করিয়া মোক সমাজের
প্রতি করাই তাহাদিগের কর্তব্য ছিল। যাহা
নিগের ধর্মো বিত্তর আর্থ প্রদান নাহি।
হইতেছে যোগ্য, তাহার দ্বারা সমাজ
ব্যয় দেখিয়া, তৎসংশোধন চেষ্টা করিয়া
নিষ্কিন্দ্র থাকতে পারেন না। এখানে কার্জন
ও সন্ন্যস্তী পূজা তিন চারি দিন হইয়া
থাকে। চাকার দক্ষিণদিক দ্বারায়ণও মন্দি-
র এই দুটি প্রধান ব্যক্তি।

আমি অস্বাস্থ্য করিয়া এখানে এ
খানে যেই পূজা নাহি। এখানেই প্রাক্ষণিক
হইলে ২৪ পরগণা প্রভৃতিব ন্যায় এখানে
কলাবিজ্ঞান বা শিল্পী দেওয়া হয় না।

এখানে প্রাক্ষণিক হইলে সমাজকে মোতা
জনে পূজা বা মাধ্যম করা হইয়া থাকে।
কেন সেই পীড়া হইলে সমাজে বসিষ্ঠ
র নীর (সকলিষেমাখা) নিকট পূজা
মানিয়া তাহারই আশ্রয় করিয়া থাকে।
এখানেই কার্জন এক অস্বাস্থ্য টাকের
হই করিয়াছেন। তিনি মধ্য এই আত্মা
প্রদান করিয়াছিলেন, যাহারা চাকার
মধ্যে কাছিক ও সন্ন্যস্তী প্রতিমা সাজাইয়া
সামান্য ব্যক্তি করিয়া তাহাদিগকে টাক
দিতে হইবে। যাহারা ব্যক্তি করিয়াছিলেন
তাহাদিগকে টাক দিতে হইয়াছে। ২৭৭

কর্তব্য ন্যায় কর্তব্য হারেরা সংস্কৃত
নিকালিনী ও অস্বাস্থ্য মন্ত্রনালিনী নামক
দুটি সভা সংস্থাপন করিয়াছেন। আমি সং-
স্কৃত সভার কার্যপ্রণালী প্রত্যক্ষ করিয়া
চলিয়া প্রীত ও অস্বাস্থ্য হইয়াছি। ২৭৭
সংস্কৃত সভার বেল ২ টার মধ্যে সভার কার্য
আরম্ভ হইয়া ৩ টার পর শেষ হইয়া থাকে।
উহা দ্বারা চাকারিগের বিলম্বন সংস্কৃত চাকার
হইতেছে। অস্বাস্থ্য মন্ত্রনালিনী সভার
ইহিক ও পার্শ্ববর্তিক উত্তরবিশ্ব বিদ্যের আ-
লোচনা হইয়া থাকে।

কএক বৎসর অবধি বিক্রমপুরনিবাসী
জীবন চন্দ্রনাথ চাকারিগের চাকারিগের
সাহেবের দ্বারা বাধ্যতাব শিকারতা কার্য
নির্বাহ করিতেছেন। ইনি পৃথিবীর ব্যক্তি
গতি-সংস্কার একটি আত্মবিশ্বাস গতি আবি-
ষ্কার করিয়া। তদ্বিষয়ক এক খানি পুস্তক প্র-
কাশ করিয়াছেন। কিন্তু অস্বাস্থ্য প্রদান
স্বাস্থ্য প্রদানকে উৎসাহ প্রদান না করিয়া
স্বাস্থ্য প্রদান করিয়াছেন। তিনি আমাকে
এইজন্য উৎসাহ প্রদান একটা ব্যাপার উপ-
স্থিত হইলে উক্ত দেশের লোকেরা তাহা
যথা সম্মান করিবার নিমিত্ত বক্তব্য কত
পরিশ্রম ও বক্তব্য করিয়া কত উৎ-
সাহ প্রদান করিতেন কিন্তু আমাদিগের দৈ-
শের মানবগণ তাহাতে কণপাতও করলেন
না। ইহাব বক্তব্য বৎসর বৎসর পৃথিবী
লিখিত মন্ত্রনালিনী দ্বারা হইতেছে। আ-
পাততা যোগ্য হয় এটি কর্তব্যের যোগ্য
নহে।

কিছু কল অতীত হইল। এই
রক্তকর দান মানক এক ব্যক্তি
লবন করিয়া আগরতলা নামক
ব্রতী রাজবাটিতে কথ্য করিতে
সময়ে তদাধা অত্যন্ত যাত্রীতর
দ্বারা প্রদান সময়ে একমাত্র হই
বিশ্ব হইতে উৎসাহ হইবার। আশ্রয়
বলি প্রদান পূর্বক রক্তকালী পূজা
উৎসাহে দ্বারা উক্ত পূজা
পূজাকারিগকে বিজ্ঞপ করিবার আ-
একটি পীড়াকে দেবতা করিয়া এবং
কালীপূজা নিম্না করিয়া সেই পীড়
দে বলি প্রদান করে। এই ব্যাপার
রিয়া রাজা বিরক্ত হইয়া পীড়াকে
কার দ্বারা প্রদান করেন। অন্ত
কাল সে স্থান হইতে
আসিয়াছেন। এক্ষণে তিনি
জারোগার পক্ষে অতিবিক্ত হইয়া
ইনি সকল ধর্মেরই পোষকতা কা-
কিন কোন মতেই হিন্দু পারিতে
ইনি যেমন ধর্মের লোক, তেমনি
কর্মীও হইয়াছে।

২৭৭ বিবিধ সংবাদ।

১৪ই চৈত্র মোকদ্দার।

এক জন চাকার হইতে সিবিলাকে
পানীয় বসন্তের অতিশয় প্রাণহান
আগরার সেকি জন কালেক্টর
ত্রেয় একটি বক্তব্য প্রদান করিয়া
এটা কেবল চাকারিগের বাধ্যতাব
প্রকাশিত হইয়াছে, বোম্বাইয়ে
ইউরোপীয় বন্দিক আর্ম ক্রম
করিয়া বিক্রয় করেন। রক্তকর
প্রাক্ষণিক কোম্পানি ১০০০
প্রকারে বিক্রিত হইবার কথা
হে। এইসকল বিবরণ কোল
পায়ে আপনাতা কলার মারিতে
রক্তকর আর্ম করিতেছেন। ইহাদি
কি বক্তব্য মনে হইবে প্রত্যাব
অস্বাস্থ্য টাকার সংস্কার
প্রাক্ষণিক আশ্রয়ত কিঞ্চিৎ
ন।

৮. ১টি সাহেব গবর্ণমেন্টে আজ্ঞাপত্র
দ্বারা নিবাসের বিষয়ে লিখিয়াছেন
পেঙ্গা পর্জিতে অধিকতর গ্রীষ্ম হ-
ক উহাতে আশ্চর্য্যও করিবেন,
বাস্তবিক কথা ।

গেজেট বলেন জরপুত্রের বাজা বাণী
লিকাভায় বিশেষ টোনে আনিয়া-
ইমিয় ১১,০০০ টাকা ভাড়া দেন ।
সম্পাদকেরাও বাধ্যদিককেও
কিঞ্চিৎ অর্থ প্রদান দিয়া চেন । এ-
র কানেজের কৃতবিদ্যা ছাড়াও হোলি
আমোদ করেন নাই, বরং অন্যক
ইতে বিবস্ত করিবার চেষ্টা করিয়াছে
কানীর ন্যায় কুসংস্কারবিশিষ্ট হা
র্থের হৃৎকেন হইতেছে, আনাদিগে
বাঞ্ছনীয় প্রাপ্তিও - - -
হেন কেন ?

এক জন দিল্লী হইতে লিখি-
তৃত্য লোকদিগের আবেদন অত্র-
একদিন দিল্লী হইয়া রেইনওরে
বিষয়ে সম্মত হইয়াছেন । লাভ
আজ যমুনার তক্ষণদিগে ট্রেনের
পিত করিয়াছেন । গবর্ণর জেনারেল
চীন রাজধানীর উন্নতির জন্য আ-
করিয়াছেন । কিন্তু এক মেণ্ডি উ-
নগরটি এক কালে সমৃদ্ধি করি-
।

৮ টাইমস্ তত্ত্ব্য সরকারী দুইখা-
শয় করিয়াছেন । উদ্ধারা জানা
আহাজ মীলকার খোপের নিকটে
তত্ত্ব্য অধীদার ও অধিবাসির
গেট প্রতি বিশেষ সম্বোধন
জি গবর্ণমেন্ট তাহাদিগকে ধন্য
করিয়াছেন । ৪৮ অগেঙ্গা তাহা
পুষ্কর দেওয়া উচিত ছিল ।

এদিকের বলাই সম্রাতি সব
মিলিয়ান সেক্রেটারি বেলি সাহে-
অল্পসারে আশ্রয় গবর্ণমেন্ট ও
সম্পাদকেরাও টাইমস্ আইন, টে-
৯ কোথাউয়ের সহিত ডাকের
র তাহাদিগের অতিপ্রায় প্রকা-

লিমান বলেন, খত, প্রত্যুত্তে অপরিণিত
ই - - - - - থাকে । ইষ্টাঙ্গ আইন সং-
শোধন করা তাহান অতিশ্রুত । যখন হারি-
টম সাহেব এবিষয়ে বিল করুন, তৎসঙ্গে
বাজ. দিনকর রাও সাহাব প্রতিবাদ করিয়া
ছিলেন কিন্তু এতক্ষণে - - - - - তাহার ক-
বা স্বাধীনতার কল - - - - - লোম হইয়াছিল ।
আদালতে কোন বিচারনকল লইতে হইলে
ছোট ছোট ইষ্টাঙ্গ জুটিয়া লইতে হয়
কেন ? এমী কি অর্থ উপার্জন করিয়া মর-
- - - - - ও চারলস্ আলেক জগুর না
মর্কট্টই ব্যক্তি ভাবতবীর রেইনওরে কো-
ম্পানির দ্রব্য অগহরণ করিতে ইংরোপী
বেত চারি বৎসর পরিশ্রম করিয়া বস হই-
রাছে । কিন্তু কিরিত আলেকজণ্ডারের
সত বৎসর কী-গান্তব বাস করিতে হইবে ।
মগুর এ প্রকার সিত্তা কেন ?

অজ্ঞাবধি বলাই বটিকার পর বাণ্ডো-
র্ড সাহেব আসিয়াটিক সোসাইটি বটিতে
কৃত্ত্ব্য বিষয়ক উপদেশ দিবেন । কয়েক দিন
সাবধি ইহা পঠিত হইবে । সাহারা তাহা অবশ
করিতে চাহেন তাহাদিগকে মশ টাকা করিয়া
কি দিতে হইবে । এট সকল উপদেশকরিগ
তে উৎসাহ দেওয়া কৃত্ত্ব্য ।

হিন্দুগেটি বটি জ্ঞাপ করিয়াছেন ১৮১৩ ।
৩৮ মাসের ব্যয়ের হিসাব প্রকৃত না হইলে
দ্রমও সাহেব উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে গমন করিতে
পাখিনে না ।

জু প্রন কলেবর খারী মগুরাজ পর আনাদিগের
হস্তগত হইয়াছে । তা ছাড়াও বিগয় এই ই-
- - - - - একশে মগুর কোন অঙ্গীল বিষয় লি-
খিত হইবে না । সম্পাদক টাইকে সাহিত্য
পর দণ্ডিতেন কখনা করিয়াছেন । তাহা হটক
ইহা নাচীতেও আনাদিগের অকুচি জ্ঞা-
রাছে । সম্পাদক এই সঙ্গে নামমীও পরিবর্ত
করুন ।

৫ টি চৈত্র মঙ্গল ধাং ।
হরকরার কাছাড় মধ্যমী তা বলেন । তত-
তা চার কাণো নিমুক্ত জলিয়া । লাক্ষ্যগাভের
হৃদিক বিপদাপন্ন ব্যক্তিদেবের সাহায্য প্র-
ত্যেকে ও আনাদিগের দিয়া ২৫০ টাকা প্রদান
করিয়াছে ।
তাকাবার্তা প্রকাশিত। বলেন, তত্ত্ব্য এক

গতি বস্তুকেও গুলিমাণিত। আশ্রয় করিব,
হ, নিঃ কে ও'ল কবিস অব কোথা হইতেই
আসিল ১৮১৩ নিমুক্ত হর নাট ।

কিন্তু ১৮১৩ একশে অনেক অর্থের আদ
দান হইতেছে ।
ও ২৫০ টি চৈত্র - - - - - ৪০০০০০ টাকা
বাজিল - - - - - ৫৬৭০০
মেল - - - - - ১৪০০০০
২৫০০০০
২৫০০০০
১২০০০০
৫০০০০
আলেক জগুর। হইতে ৭৫০০০ টাকার অর্থ
আনাদিগে হইয়াছে এবং ও'লক'ওস হইতে
১৪০০০০ টাকার অর্থও আনাদিগে হইয়াছে ।
তত্ত্ব্য কোবল ইংলও ব্যাঙ্কে ১২০০০০০ টাকা-
র অর্থ বিক্রীত হইয়াছে ।

সাহেব জগুর বলেন, ভাবতবীর বস-
তাপক সত, এচিলন - - - - - আনবেবল এ-
ওমার্টন - - - - - পল্ল বেয় প্রদান ওম - - - - -
রক্ত হইয়াছেন ।

সেও ই সটতে বিবিট বলেন প্রধান সেবা-
গতি মোহাট্টরে প্রাতঃ কৃত্ত্ব্য হইয়াছেন, ওমার্টন
ডে'হ আশ্রয় লইয়া পুন, গমন করিবেন ।

ইংলসম - - - - - হারদনাগিহ লক্ষ্যমতা
বলেন তথ্যমান একজন ব্রাহ্মণ পোপনে রাণ
সাহেবের পক্ষে ছিল বলিয়া হৃত হইয়াছে ।

বাকালি সম্পাদক বলেন বাজাসাব লেপট-
নন্ট গবর্ণর আজ্ঞা করিয়াছেন, ট. টি টেব-
এইচ এল জে'রর রাজ। প্রতাপচন্দ্র সিংহ
মহারাজ সতীত চৈত্র রাণ বাহাদুর লাহু বম
নাম তাঁকুর কুমার হরেন্দ্র কৃত্ত্ব্য বাহাদুর কৈব-
চন্দ্র বিদ্যাসাগর এবং সাধাবণ শিকারাব-
তাইবেক্টব ও রে বিপিউ কবিসনবের, ওমার
র তত্ত্ব্যধারক হইবেন ।

উক্তপত্র আনো বলেন মন বাটল কিয়া - - -
গামী যে দানে নিমুক্ত মঙ্গলমর্ষ বাইব - - -
ভিলাষ করিয়াছেন ।

ই লিসমান বলেন এক জন কাছাড় মগুর
মী মহারাজ মর অজবাহারকে লিখিয়াছেন
যে তিনি বিক'টে বিজ্ঞাপি প্রদান ক্রি, এমার-
কে দেখিয়াছেন এবং তিনি মান। ও ম'লা র,
প'ববার গণের পর বাহক ছিলেন এক-
তিনি সেই ও'ল পথে চার, ইয় কে, লয়, হেন
চই চৈত্র সুদবার ।

কিন্তু বলেন, জরপুত্রের মগুরাজ মে
উকাল কালে ১০০০ টাকা প্রদান করিব

আমরা অক্ষাধিত হইল য় কুমার আমি
কিন্তু লগালী সে রাষ্ট্র লগাল বারিওর
তে গমন করেন ইনি এক বংশের ঐ উপাধি
প্রাপ্ত হইয়াছেন।

উইলিয়াম হাউস নামক এক জন পুলক ই
স্টের মামলা মোমেদ নামক এক ব্যক্তিকে
ভার করিয়া বধ কর। প্রধানতম বি-
ভাগ্য এক বংশের মামলা হইয়াছে
করা। বংশেরাও মৃত ব্যক্তির মীমাংসা
মৃত্যু হইয়াছে এখন যদি বৈধ গীতি
বধ করে তবে তাহার মীমাংসা হইবে
রাণীরেরা মামলা পান করেন। তাঁহা-
রূপ কিছু হইয়া থাকে সন্দেহ নাই
কিন্তু ব্যক্তি যদি সেই কিছু মস্তিক
স্বাধীনতার আশ সংস্কার করে, উইলি-
উইলিট দিয়া তাহাকে মুক্ত করবে

মল। এম্বাসার ওয়েলসের বিবাহ উ-
ভেন ব্যক্তিগণ অনেক আশঙ্কিত হই-
য়াছে। যদিও লগাল কেবল টাকা ন-
হয়। একজন ভাষা হয় নাই। যদি
আর সত্য হইত, যে কোন রূপে
টাকা যদি হইলেই যদিও ফল হ-

গভেষ্টার অক্ষাধিত সংবাদমাত, ব-
তি অক্ষাধিত সংবাদমাত সেনাপতি লগা-
আক্ষাধিত সংবাদমাত এক মুক্ত পরাজিত
। আমের ও তাঁহার পুত্র আক্ষাধিত
গভেষ্টার বিবাহের আশঙ্কিত হইয়া
রতেছে। যদি করিলে আক্ষাধিত

যদিও তাহা সেনাপতির সমস্ততা-
গভেষ্টার টাকা প্রেরিত হইয়া-
। মুক্ত টাকা সংগৃহীত হইয়াছে।
কিন্তু সমস্ততার আশঙ্কিত হইয়া
করিয়াছেন।

আক্ষাধিত এখান এখান লোকেরা ড-
ক্টার কায়েদ সাহেবের নিকটে
আক্ষাধিত বিলাসের অন্য সহ-
আক্ষাধিত করিয়াছেন। তাঁহা-
। গীতি-উপনিবেশকারিণী বহুল
হবে আক্ষাধিত করিয়া আক্ষাধিত
। বিলাসিতা করিয়া আক্ষাধিত
এ আক্ষাধিত করিয়া মীলকর
এ আক্ষাধিত করিয়া করিয়া
। তাঁহা করিয়া ১১০০০ টাকা

১১০০০ টাকা। তাঁহা করিয়া ১১০০০ টাকা।
এক করিয়াছেন। আক্ষাধিত ও পেন্সন
। আক্ষাধিত আক্ষাধিত আক্ষাধিত
টাকা ১১০০০ টাকা। এখান ১১০০০ টাকা।

পূর্বাঙ্গের বৈলম্বের পেন্সন ১১-
লগাল নামক এক ব্যক্তি এক জন অক্ষাধিত
এক উইলিয়াম হাউস করিয়া তাহার ম-
ত্যা হয়। এখান ১১০০০ টাকা।
পাউন্ড। কিন্তু উইলিয়াম হাউস মামলা
তখন পেন্সন করিয়া অক্ষাধিত করিয়াছে। হাউস
আক্ষাধিতের পেন্সন এখান ১১০০০ টাকা।
। বৈলম্বের একজন অক্ষাধিত লোকের
আক্ষাধিত বিচার তাহা হয় করিয়া

পূর্বাঙ্গের বৈলম্বের পেন্সন ১১-
লগাল নামক এক ব্যক্তি এক জন অক্ষাধিত
এক উইলিয়াম হাউস করিয়া তাহার ম-
ত্যা হয়। এখান ১১০০০ টাকা।
পাউন্ড। কিন্তু উইলিয়াম হাউস মামলা
তখন পেন্সন করিয়া অক্ষাধিত করিয়াছে। হাউস
আক্ষাধিতের পেন্সন এখান ১১০০০ টাকা।
। বৈলম্বের একজন অক্ষাধিত লোকের
আক্ষাধিত বিচার তাহা হয় করিয়া

সংগত আক্ষাধিত আক্ষাধিতের প্রধান
সেনাপতি বহুল মুক্ত হইয়াছে। আর এক জন
সংগত ১১০০০ টাকা। এখান ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

টাইলস অব টাইলস বলেন বৈলম্বের হইতে বি-
লাসপুত্র পেন্সন ১১০০০ টাকা।
টাকা লইয়া বৈলম্বের প্রত্যেক আক্ষাধিত
। তাঁহা করিয়া এক ব্যক্তি হইয়া করিয়া অর্থ অপ-
করিয়াছে। সন্দেহ ক্রমে তাঁহা করিয়া এক
সংগত করিয়া হইয়াছে।

১১ই চৈত্র শুক্রবার।

টাইলস অব টাইলস বলেন, বৈলম্বের প-
১১ই চৈত্র শুক্রবার।
করিয়া ১১০০০ টাকা। এখান ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

উক্ত পত্র আরো বলেন মর কোম্পানি
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

আলাউদ্দীন মোহাম্মদ বলেন মোহাম্মদ
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

ইউরোপীয় নিকটবর্তী বৈলম্বের মোহাম্মদ
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

১১ই চৈত্র শনিবার।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

উক্ত পত্র আরো বলেন আক্ষাধিত
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

উক্ত পত্র আরো বলেন আক্ষাধিত
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

উক্ত পত্র আরো বলেন আক্ষাধিত
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।
। তাহা করিয়া পেন্সন ১১০০০ টাকা।
কিন্তু বৈলম্বের প্রত্যেক করিয়া হইতেছে।

১৭৭৩ খ্রিঃ অতীতকাল
 আমায়ও অসুখে এই লক্ষণ
 ছিল, গায়ে এমন ক্রমে
 জ্বর পোত পড়িত নিবন্ধ
 যাহা হইত অসুখের
 সব বস্তু লক্ষ্য করিতে
 কণ্ঠস্থিত ও গায়ে

পুস্তক, হিন্দু ও মুসলমান নামা জাতীয় নামা প্রকার লোকের বাসি গরিব হইয়া রহিয়াছে, তাহা দেখা দর্শনার্থী কয়েক জন উক্ত লোকের আশ্রয়-স্থলেন। আশ্রয় সেই লোকদের এক পাখি-কিৎকণ দণ্ডায়মান হইয়া দেখিলেন, হরিদাস নামে পুস্তক হইয়া বালকটী শিশু ইত্যদ্যঃ বালোচিত্ত ক্রীড়া করিয়া বেড়াইতেছে; কয়েক জন বড় প্রকৃতি পাখী ও এক জন উচ্চ সাধিকা জীলোক জুটয়াছেন। তাঁহারা ২৪৫ উল্লোলন ও রোগিনিমগ্নে বিতরণ কবিতোহু দেখিয়া, কবণ জিজ্ঞাসা কবাতো (পুস্তক জন ছিল, বালক অথবা সেই কার্য কবিতো, থাকে) শু। গেল একগে ইহারা বালকের প্রতিনিধি হইয়া উৎসাহিয়া থাকে, সে নিজ নাম দেয় না। বাহা হউক, কবাবও নিকট কিছ না লইয়া সকলকেই উৎসাহিয়া থাকে, এই কথা শুনিয়া অবধি আশ্রয়-গেব বে একটা লোকের জন্মিয়াছিল, একটা তাঁহা লোক দুইজনে হইল। দেখিলেন, উক্ত পাখী-গণ, উপস্থিত হুতবিশ্বাস ও অবিলম্বিততক্তি সংযুক্ত মনব দেশীয় ফেলো নির্ভীক বাহী দ্বিগোন নিকট হরিদাস লুটের নামে এক একটা পয়সা লইয়া উৎসাহিতে ছন। কোন কোন বা-হী বা হরিদাস লুটের নামে আপনাই কব কবণ আশ্রয় দিতেছে। প্রথম প্রথম দুই এক জন এই হরিদাস লুটের পয়সায় লওয়াই এ ব রূপ পালন ও আশ্রয় জনগণের হুত বিশ্বাসের কারণ হইয়াছে। কি ধর্মজন বিদ্র। আশ্রয় এট বহু ক্রমে বীভৎস হুসংকারে আশ্রয় কবির, রাধিয়াছে।

২। **সভাপতি**। প্রায় তিন বৎসর কাল এই
সংগঠন। প্রকৃতি গ্রামে যেরূপ ভয়াবহ, অত্যাচার-
মণীর কার ও গীতাদি রোগের প্রাদুর্ভাব হইয়া
ছিল সমগ্রতি বসন্ত কালুর সমাপনে ধারু পনি-
বর্গনের সঙ্কিত ডাহার কিঞ্চিৎ লাঘব হইয়াছে
(সংগঠন ভাল)। এক্ষণে আরও বড় সুতন কার ক-
টেডেছে না। এই পূর্বা লক্ষণ দেখিয়া অনেক
অসুস্থ্য ক'নি হ'ছেন উত্তরোত্তর এপ্রমেলগী
সুস্থ হইতে পারিবে। অপবস্থ, এই মেলাগালী
তালনাফ সীতাবলভ্য মধ্যে ছায়া সংখ্যার নিত্য
অবস্থা বর্তমানে অবস্থা বিদ্যালয়িব যেরূপ ছয়
বহু। অসুস্থ্য ছিল (তাৎ। প্রোধ কর আপনায় স-
বণ থাকিতে পারে। সোমসংকাশ একবার উদ্ভি-
বর কিঞ্চিৎ প্রত্যাহিত হইয়াছিল) এক্ষণে, তা
কার অসুস্থ্যকালে অপবস্থ হইয়াছে। বিশেষতঃ
ঐযুক্ত বাবু ঐশ্বর্য্য বিদ্যারত্ন ও ঐযুক্ত বাবু
কেন্দ্র মোহন কল প্রকৃতি করেক জন বিদ্যালয়-
গী সমাপন দেখাযিটেরী সভাপনের একপ্রা-
তিশয়ে বিদ্যালয়ের উন্নতি পথ ক্রমশঃ বিস্ত-
ক হইতেছে।

৩। জাতিসংঘের কার্যকর দিবস পর্য্যন্ত এখানে
ক'তজন জীবিত ভর হইয়াছিল, বাঁটুরা গোবর-
চাকর, ইত্যাদি ও গৈশ্বর প্রভৃতি আগে এক
এক জাহাজে ২। ৩ বারীতে চুরি হইয়া গিয়া
ছে। এই উপায়ে এখানেকার সবল লোক কিছু
দিনের মধ্যেই লক্ষিত ও বিনষ্ট হইয়া
হইবে। কিন্তু গোবরচাকর কার্যকর ভাণ্ডার
নিজ প্রাণের ক'রুখানায় চিনি মুক্তি করিতে

নিয়া খুঁত হইল। ছয় মাসের জন্য কারাবাস হও
 ঐ প্রকৃত হওয়াতে ভদ্রদি আর কোন উপায় ন
 মিটে পণ্ডিত বায় নাই। সুখের বিষয় এই, ভদ্র
 কারাগারে বা 'জুদি' পর মধ্যে এক চট্টোপাধ্যায়ের
 বিবাহের দিন স্থির হইয়াছিল।

ସଂ: ୧୮-୭୩। ୧ ମାର୍ଚ୍ଚ

३१५८

বিশ্বনাথ
শ্রী কৃষ্ণমোহন ভট্টাচার্য্য

इति ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । (३)

সংগ্রহিত সঙ্গ্রহাবস্থা নামক এক কৃত্তন প্রকার
টিকিৎস প্রণালী উদ্ভাবিত হইয়াছে। প্রচ-
লিত জাফ্ফারি টিকিৎসার সচিৎ উহার অনেক
প্রভেদ, এখন কি উহার মূল নিয়মগুলি প্রচ-
লিত টিকিৎস নামের মূল। যখনগুলির সম্পূ-
র্ণ বিপরীত। প্রচলিত জাফ্ফারি টিকিৎসা নামের
বিষয়সম্বন্ধে সঙ্গ্রহ ব্যবস্থা অসীক বলিতে
হয়, এবং সঙ্গ্রহ ব্যবস্থা সত্য বলিয়া স্বীকার করি-
লে প্রচলিত জাফ্ফারি টিকিৎসা নিত্যকাল অপ্র-
ভের হয়। পড়ে। এই দুই প্রণালীর মধ্যে কো-
ন্ প্রণালীটি প্রাথমিক ভাৱে বিচার করা জা-
মাদের সাধ্য নহে, সুতরাং সঙ্গ্রহ ব্যবস্থাকে অ-
রূপ আমারা কেবল তাহাই লিখিতে প্রবৃত্ত হই-
তেছি।

লাজনির অর্ধশত তে, নুতন নগরের জন্ম-
 তি হুরে (এলুও মেউস। নদী দেখানে পরম্পর
 সন্ধ্য হইয়াছে ডাঙার নিজটে) মেইসেন নাম
 ক একটি ক্ষুদ্র গ্রাম আছে। ঐ ক্ষুদ্র গ্রামটিতে
 হুইট অতি বিখ্যাত নগর বংশের উদ্ভব কর,
 একটির নাম স্বেগেল ও অপরটির নাম হানি-
 মান। স্বেগেল বংশের নাম সর্বত্র পূজা হই-
 য়াছে, একলে হানিমানের কথা অশ্রিত হই-
 তেছে।

১৭৫৫ খৃঃ অব্দে সাহিবএল খিউনিয়ান জ্যেষ্ঠতমিক
হানিম্যান মেইসেন প্রাদেশিক জজ প্রাণ কনেন।
তঁাহার পিতা খনবান লোক ছিলেন মং বটে
কিন্তু দারিদ্র্যের সহিত তঁাহার ভাবুপ পরিচয়ও
ছিল না। তেঁসকেন মংকে যে এমিলি টীমের
বাসিন্দা হইত হুই ডিন মেই মকল বাস
চিহ্নিত করিয়া জীবিক। নির্ভর করিতেন। এই-
রূপ অবস্থাপন্ন পিতার পুত্র হইয়া হানিম্যান
কিন্তু বেদিকায় বসিয়াছিলেন তঁাহার বর্ণন
করা আমানিগেদ্বাংকিপ্রোড নহে সুতরাং তঁা-
হার বালাবিস্তার কথা এখানে একবারে পরিত্যাগ
কর হইল। তঁাহার পিতা ও জীবিক। বিষয়ে মং
কেপে এটমার বল। বাইতেছে যে তিনি ১৭৭৫

(১) সন্ধ্যা, রোগ, অস্তিত্ব হইতেও পথি শ-
কের স্বাধীনতা, স্বাধীনতা ধর্মিলে " সন্ধ্যা রোগ-
দুঃখ। যে উৎস সেবন করিলে কোন কোন রোগের
সন্ধ্যা রোগ উৎসের হয় সেই উৎস হাবাই উৎস
বাগ বিলাসিত হয়—বেতিকিংস। শাস্ত্র এই
রূপ বিধান করে সেই শাস্ত্রকে ভাংগবা সন্ধ্যা
ব্যবস্থা বলিল। উৎসের করিল।

১৭। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ১৮। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ১৯। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২০। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২১। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২২। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২৩। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২৪। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২৫। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২৬। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২৭। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২৮। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ২৯। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত
 ৩০। অর্থনৈতিক নিবন্ধিত

ইহা অল্প আশ্চর্যের বিষয়
 তবুও সর্ব প্রথম চিকিৎসা
 ও প্রশাসিত হইতে লাগিলেন
 অরং চিকিৎসা শাস্ত্রের প্রতি
 আরম্ভ করিলেন, ক্রমে গুরুত্ব
 বৃদ্ধি পাইতে বলিয়া তাঁহার
 অনন্তর পানিসাধন চিকিৎসা
 করিলেন, অনেক অর্থ তিরো
 ক্রমে ব্যয়িত্র্য প্রকৃতি, মাংস
 বটী আশিয়া তাঁহাকে আক্রমণ
 হানিসানের ১১ মী সমাধি
 ক্রির পক্ষে এক অধিক সমর্থ
 মহে। কিন্তু সে কালীন

শ্রীরামস্বামী বিদ্যাসাগরজী
র সময় তাঁহার মহাবাহু কায়
র নীতন করা কোনমতেই
এ দিকের কার্যক্রমী আদ্য
সের উপায় প্রদান করিয়াছিলেন
কণ্ড বিবর্ত প্রিয়ের দ্বা।

পাঠ্যবহান হইলিখান দি
তক লক্ষ্য করিয়া কথায় পাঠ্য
র অর্থ পাঠ্যের ভাষা। পাঠ্য
কর্তা করিতেছে একেবে যে ধারাল
বালাকেই হুঁত পুনঃপ্রদত্ত।
অবগাহ হয় না। পুনঃ প্রদত্ত
না। পাঠ্যকর্ম একবারে করি
তা দেখিল। জমীর অবস্থা
সংবাদেয় অবস্থার পরিচয়
জ হইয়াছে, পূজনীয় বাস্তবিক
ভিত্তিনাক্ষ বিদ্যা বিষয়
বিধান চেষ্টার প্রত্যয়

এক দিন কাকিতে গিয়া
 দেখে এইরূপ চিত্তার উদ্ভাস
 শান্ত ও অকিঞ্চিৎকর
 অনিশ্চয়; কিন্তু ঐশ্বর্য
 বর এরূপ প্রকাশ্যেই
 না কথিত। রাগিনের
 বস্তু আশ্রয়ের স্থান
 হইল, নিমি অতি সাধার
 আশ্রয় অবস্থিত নহে
 হোম জমিদার নহে
 শান্ত বসতি করেন নাই ?
 কি আশ্রয়ের কষ্ট, দণ্ড
 নাই না? হোমপ্রতিধা
 কোন সন্ত উদার আশ্র
 শান্ত অশোক। অবশ্যই
 উপায় আছে । এইরূপ
 তাঁহার মনে হইল যে
 শান্তির উদয় দেখন করি

डनि १
 कनेहि -
 छेदेर
 गनत्र
 माः
 डाग
 निभा
 गोह
 मड
 अओ
 नम
 रिउम
 मह
 विवरे
 कोक

এই পত্র কলিকাতার নগর সভাপতি হোসেন আলী খান
কর্তৃক প্রেরণ করা হয়েছে।

সোমপ্রকাশ

সর্বস্বতাং প্রকৃতিহিতায় পার্থিবঃ স্বরক্ষণী মুনিগৃহীতী ন স্বীকৃতা । ৩

৫ ভাগ ।
২০ সংখ্যা ।

সন ১২৬২ । ১৮ ই চৈত্র । ইং ১৮৬৩ । ৩০ মার্চ

মাসিক ইলা
বার্ষিক ১০

বিজ্ঞাপন ।

করিমপুর জিলার অন্তঃপাতী নাটকেয়ারি
মহম্মদপুর নামে যে পতনি ডাক আছে,
তাহা দরপতনি দেওয়া অথবা বিক্রয় করা
যাইবে। বাঁহার সেই ডাক দরপতনি লই
বার অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি
কলিকাতার জাডন কিনব কোম্পানির নিক-
টে আবেদন করিলে সর্বিশেষ র্তাহার জানিতে
পারিবেন

বিজ্ঞাপন ।

রানবাবু, হরী ঠাকুর রায় মুনিংহ, গৌর
কবিরাজ, নিত্যানন্দ বৈরাগী, রুকমোহন
ভট্টাচার্য প্রভৃতি প্রাচীন কবিগুরুগণের
উত্তম উত্তম গানগুলি সংগৃহীত ও একত্রিত
করিয়া মুদ্রিত করা গিয়াছে। পুস্তকের মূল্য
এক টাকা মাত্র ।

কলিকাতা

বঙ্গবাজার ট্রিট ৬৭ নং বাড়ী ।

শ্রীমন্তগোপাল চট্টোপাধ্যায় এবং বৈ

সোমপ্রকাশ !

১৮৮ চৈত্র সোমবার ।

১৮৬০ অব্দের ৪৫ আইনে (ভারত
বর্ষীয় দণ্ড বিধিতে) বহুবিবাহকারির
দণ্ডের যে বিধান করা হইয়াছে, তাহাতে
মধ্যে মধ্যে অনেকের ক্রম ক্রমে, সম্ভ্র-
তি আশাশ্রিতকে এক জন কিস্কাস্য করি-
রাছেন, তাহা হিন্দুদিগের বিদগে খাটিবে
ইহার উত্তর দানহলে আশাশ্র-
িত্য এই, বহুবিবাহ নিষেধক বি-

ধির মর্ম্ম এই, বাহাদিগের আচার ব্যবহা-
র ও শাস্ত্রে বহুবিবাহের নাজে নাই, তাঁ-
হারা বহুবিবাহ করিয়া দণ্ডভোগী হইবেন
না, আর বাহাদিগের শাস্ত্রানুসারে নিষেধ
আছে, তাঁহারা করিলেই দণ্ডভোগী হই-
বেন । হিন্দু জাতির বহুবিবাহ প্রথা অচলি-
ত আছে, অতএব হিন্দুদিগের নিষেধ সত্তা
বনা কি ? উহা যদি দণ্ডবিধি দ্বারা নিষিদ্ধ
হইত, তাহা হইলে আর এদেশীয় সমাজ
সংস্কারকদিগকে বহুবিবাহের নিষেধার্থ
যত্ন পরাম পাইতে হইত না । অধিক
দিন অবধি এ বিষয়ের চেষ্টা হইতেছে
প্রশ্নকারক অরণ করিয়া দেখিবেন, কন্যা
বিক্রয় নিষেধক একটা যত্ন বিধি বিধান
আবশ্যক বলিয়া সোমপ্রকাশে যে একটা
প্রস্তাব লিখিত হয়, তাহাতে এই বিষয়ের
অঙ্গ করা হইয়াছিল ।

উল্লিখিত দণ্ডবিধিতে যে বহুবিবাহের
নিষেধ আছে, তাহা যে সকল জাতির উ-
পরে নাই, তাহারা অপর প্রমাণ এই, স-
ম্প্রতি পারসীদিগের যে ব্যবস্থানুগ্রহ
হইতেছে, তাহাতে বহুবিবাহ নিষেধের এ-
কটা বিশেষ প্রকরণ করা হইয়াছে । সে
এই—“যদি কোন পরসী পুরুষ আপনার
স্ত্রীসঙ্গে ও পাবলী স্ত্রীলোক পতিসঙ্গে
বিধি বোধিত পরিত্যাগ পত্র না লইয়া অপর
বিবাহ করে, তাহাকে ভারতবর্ষীয় দণ্ড-
বিধির নিষিদ্ধ দণ্ড ভোগী হইতে হ-
বে ।” বহুবিবাহ নিষেধক দণ্ডবিধি লিখা

রণ হইলে একদম যত্ন
প্রয়োজন কি ?
উক্ত প্রশ্নকারকের
করা কর্তব্য, যে বিষয়ে
পরামর্শাগত আচারি ব্যক্তি
দিক হইয়া আশ্রিত্য
তদ্বিচারার্থ বিশেষ বিধি
যে সামান্য বিধি দ্বারা
রিবেন, ইহা কোন ক্রমে
যত্ন অরাম
হ নাই ।

২৮৬

রেজিষ্টারি বি

২৫ এ কেজারারি
অধিবেশন দিবসে ইতি
দস্তাবেজের রেজিষ্টারি
কমিটির রিপোর্ট অর্গত
৫৭ নং মাসিকের
ফর্মস সাহেব দ্বারা
বিত রেজিষ্টারি সংক্রান্ত
লেখ্য উপস্থিত করিয়াছি
ঐ কমিটি তদ্বিষয়ে রি
এখন রেজিষ্টারি সভা
তাহা ঐতিহ্য এবং তদ
দিগ সমাক নিবারণ হই
বিশেষে ইহার হুজি
প্রস্তাবিত আইনের
প্রস্তাবিত আই
নিষিদ্ধ হই

এক জন সাধারণ রেজিষ্টার (রে-
জিষ্টার হোনারস) হইবেন । স্থানীয় গব-
র্নমেন্ট এই পদে এক জন স্বতন্ত্র
জজকে নিযুক্ত করিতে অথবা রেবে-
ন্যার হস্তে এই কার্যের ভার প্র-
দান করিবেন । প্রত্যেক জেলায়

একজন হোনারস রেজিষ্টার (ডিষ্ট্রিক্ট রে-
জিষ্টার) এবং জোহাদিগের অধীনে ছোট
জজ বা অন্য কোন কর্মচারী
রেজিষ্টার হইতে পারিবেন । গব-

র্নমেন্টে অপর ব্যক্তিদিগকেও
ইচ্ছা করিতে পারিবেন । প্র-
ত্যেক জেলায় এক এক জন রেজিষ্টার
হইবেন ডেপুটি রেজিষ্টারেরা কি-
ংবা দলিল রেজিষ্টারি করিবে
কোন দলিল রেজিষ্টারি
রেজিষ্টারদের মধ্যে তদ্বিষয়ে ডি-
ষ্ট্রিক্ট হওয়ার নিকটে আ-

ল দিষ্ট্রিক্ট হইয়া কালিকা আ-
ন রেজিষ্টার হইবে ।
২০০ জন রেজিষ্টারি হইবে, কিন্তু
ডিষ্ট্রিক্ট হইয়া প্রদর্শিত হয়, রেজিষ্টার
কর্তৃক হইতে গিয়া রেজিষ্টার
বিশেষতঃ উইল, দান পত্র

লইবার ক্ষমতা প্রদান
করিবার কালে রেজিষ্টারে
নে গমন বিতান্ড আবশ্য
হইলে তিন আসনের
বিশেষ হইবে । কিন্তু উ-
ইতে এ নিয়ম নহে । ১০০
লোর অধিকার বস্তু বিক্র-
র দলিল রেজিষ্টারি না
গরানী আদালতে প্রাপ্য
হইলে এই প্রকার দুয়ো
বিবার হয় সপ্তাহ পরে
প্রদর্শিত ।

বিত্ত হইয়াছে, সম্পত্তি
রেজিষ্টারের এলা-
কা হইলে এক

র নিকটে তাহা রেজিষ্টারি করিলে চলি-
বে । কিন্তু একপ স্থলে ডেপুটি রেজিষ্টার
দলিলের সকল ডিষ্ট্রিক্ট রেজিষ্টারের নিক-
টে প্রেরণ করিবেন, তিনি উহা নিজ পুস্ত-
কে লিখিয়া লইয়া অন্য অন্য ডেপুটি রে-
জিষ্টারের (বা হাদিগের এলাকার সম্পত্তি
র অন্য অন্য অংশ আছে, তাহাদিগের)
নিকটে প্রেরণ করিবেন । রেজিষ্টারি করি-
বার সময়ে ক্রয় বিক্রয়াদিকারী উত্তর বা
জিক্রকে উপস্থিত হইতে হইবে । যাঁহারা
প্রতিনিধি দ্বারা কার্য করিবার ইচ্ছা
করিবেন, জোহাদিগকে তাহার যথার্থের
বিষয় ডেপুটি রেজিষ্টারের স্পষ্ট হৃদয়
পর করিয়া দিতে হইবে । গবর্নমেন্টে
কোন দলিল রেজিষ্টারি করিতে হই-
লে তৎক্ষণাতঃ পত্র কর্মচারী নিজে অথবা
পত্র দ্বারা আপন সম্পত্তি জানাইলে রে-
জিষ্টারি হইতে পারিবে । যে কোন দলিল
ন হইক, রেজিষ্টারকে ভাল রূপে জানি-
তে হইবে যে আবেদনকারীরা যথার্থ ক্রয়
বিক্রয়াদিকারী কি না ।

দলিলের কোন সাক্ষীকে উপস্থিত ক-
রিতে হইলে রেজিষ্টার তাঁহাকে পররূপে
দিয়া আনিতে পারিবেন । কেহ মিথ্যা
সাক্ষ্য দিলে দণ্ডবিধির ১৯২ ধারানুসারে
তাঁহাকে ফৌজদারিতে সমর্পণ করা হই-
বে । যদি দেওয়ানী আদালতে কোন দ-
লিল জাল সপ্রমাণ হয়, তাহা হইলে এই আ-
দালতকে এ বিবরণের সংবাদ ডেপুটি রেজি-
ষ্টারের নিকটে দিতে হইবে । তিনি নিজ
পুস্তকে এই বিবরণ লিখিয়া রাখিবেন । ১০০
টাকা পর্য্যন্তের রেজিষ্টারি খতের টাকা
আদায় করিতে হইলে তদ্বিষয়ে হুতন
মোকদ্দমা করিতে হইবে না । দেওয়ানী
আদালতে তাহা অর্পণ করিলে আদালত
তাহা ডিক্রিয়ার্দিব দ্বারা প্রত্যর্ষিকে এক
পররূপ দ্বারা অবশ্যক করিয়া জিজ্ঞাসা
করিবেকি তিনি প্রত্যেক অবসরে কার্য ক-

র করেন তিনি এই খত লিখিয়া দিরাছেন,
তাহা হইলে এক কালে তাঁহার সম্পত্তি
বিক্রীত করিয়া অথবা অন্য উপায়ে টাকা
আদায় করা হইবে । যদি প্রত্যাশী স্থান
তাগ করিয়া পলাইবার চেষ্টায় থাকেন,
তাহা হইলে অগ্রেই তাঁহার সম্পত্তি ফ্রো-
জরা অথবা তাঁহাকে হাজতে দেওয়া
পারিবে । কিন্তু একপ স্থলে টাকা

হইবার এক বৎসরের মধ্যে নালীশ করা
উচিত । অর্থাৎ যদি ইচ্ছা করেন, তাহা
কালের মধ্যে নালীশ করিতে পারিবেন,
কিন্তু এক বৎসর অতীত হইলে উল্লিখিত
রূপে মোকদ্দমার শীঘ্র নিষ্পত্তি হইবে
না । উইল ও দত্তক লইবার অনুমতি
প্রাপ্তি রেজিষ্টারী হইলে রেজিষ্টারের আ-
কিসে তাহা রাখিতে হইবে । রেজিষ্টার
সেই সকল একপ বাস্তব মধ্যে রাখিবেন যে
তাহা অগ্নিতে বিনষ্ট না হয় । উইলকারী
র হস্তের পর সম্পত্তির উত্তরাধিকারী আ-
বেদন করিলে তাঁহাকে তাহার এক নকল
দেওয়া হইবে । অন্য অন্য ব্যক্তিও আ-
বেদন করিলে কি দিয়া তাহার নকল ল-
ইতে পারিবেন । প্রতি বৎসর জন্ত দলিল
রেজিষ্টারী হইলে তাহার এক এক তালিকা
আকিসের প্রকাশ্য স্থানে রাখিতে হইবে ।

উপর উক্ত রেজিষ্টারি সংক্রান্ত আ-
ইনের পাণ্ডুলেখাঙ্গী অনেক অংশে উৎক-
র্ষ হইয়াছে । উহার আপত্তিযোগ্য অংশ
গুলি সংশোধিত হইয়া বিধিবদ্ধ হইলে
উহার দ্বারা সম্পূর্ণরূপে না হইক, অনেক
অংশে জাল নিবারণ সম্ভাবনা আছে ।
কাজ প্রভৃতির বিস্তারকাজ অতএব তাহা
দিগের প্রতি রেজিষ্টারীর ভার দিলে কা-
র্য সুসম্পন্ন হওয়া কঠিন । যাঁহারা আ-
পাততঃ গবর্নমেন্টের কর্ম করিতেছেন,
জোহাদিগের হস্তে না দিয়া এই কার্য স্বত-
ন্ত্র কর্মচারীর হস্তে দেওয়া কর্তব্য । যাঁ-
হারা দলিল রেজিষ্টারি করিতে
তাঁহাদের অধিক ব্যক্তি কি না

তাহার অনুসন্ধান করিবা রেজিষ্ট্রের
জমা কর্তব্য। যে সে সাক্ষির উপরে
নির্ভর করিলে যাবার্থী নির্ণয় সম্ভবিত
নয়। যাবৎ সাক্ষিকণ্য সংশ্লিষ্ট না
হইতাহে, তাবৎ তত্ত্বনির্ণার্থ দুটি
উপায় অবলম্বন করিতে চাই। এক,
রেজিষ্ট্রের স্বয়ং আবেদনকারি বাস-
স্থানে গিয়া তত্ত্ব করেন, অথবা আ-
মের পাঁচ জন তত্ত্ব নোককে জিজ্ঞাসা
করা হয়। রেজিষ্ট্রের আবেদন হইলে
অনুষ্ঠান দুই সপ্তাহের মিয়াদ দিয়া এক
পররাণা আবেদনকারিদিগের বাটীতে,
আকিসে, ও এক প্রকাশ্য স্থানে এটকিয়া
দেওয়া কর্তব্য। এই কালের মধ্যে যদি
কেহ কোন আপত্তি না করেন, দলিল
রেজিষ্ট্রের হইবে। কেহ আপত্তি করিলে
তদ্বিষয় নিকটস্থ বেঞ্চানী আদালতে মীমাং-
সার্থ প্রেরিত হইবে। একপত্র ক্রিয়াতে
কিছু বিলম্ব হইবে বটে, কিন্তু এতদ্বারা ত
বিষয়ের অনিষ্ট বিধারণ হইতে সর্বশেষ
সম্ভাবনা আছে। জীলোক আবেদনকা-
রী হইলে তাহার মোক্তারকে দাখা ক-
রিয়া উল্লিখিত প্রকারে অনুসন্ধান লইতে
হইবে। বিষয় বিশেষে কমিসন নি-
যুক্ত করা আবশ্যিক। আমাদিগের দেশী
য় মোক্তার। আর হুজুর কালেক্ট উইল ক-
রিয়া থাকেন। এই সকল উল্লেখ হইয়া
কর্তৃব্যক বিধান উপস্থিত হয়। একপত্র
লে উইল লিখিত হইবার তাহা
রেজিষ্ট্রের নিকটে প্রেরণ করিতে হই-
বে। রেজিষ্ট্র যদি বিশ্বাসী সাক্ষী গান,
তাহা হইলে আপন আকিসে তাহা রেজি-
ষ্ট্রের করিয়া রাখিবেন। নচেৎ তিনি নি-
জে গিয়া অথবা বিশ্বস্তলোক প্রেরণ দ্বারা
তাহার অনুসন্ধান করিবেন।

রেজিষ্ট্রের করা পত সন্মত নাহী
শের বিষয়ে আমাদিগের এটী মতী আ-
পত্তি আছে। আইনের প্রবর্তকতা ব-
লে, ডিক্লারারিয়ার ন্যায় উহার কাজ করি

লে মকদ্দমার শীঘ্র নিষ্পত্তি হইবার ও
কর্মচারিদিগের সময় বাঁচিবার সম্ভাবনা
আছে। মকদ্দমার শীঘ্র নিষ্পত্তি হয়,
ইহা একান্ত প্রার্থনা। সন্দেহ নাই কিন্তু
কর্মচারিগণের অবসর সাধারণ হিতের
তুচ্ছ ন্যূন হইতে পারে না। বিচারপতির
পরামর্শ ও সময় সংক্ষেপ চাইব বলিয়া
সাধারণকে দাখা বিষয় হইতে বঞ্চিত
করা বিধেয় হইবে না। রেজিষ্ট্রের কালে
যদি অনুসন্ধানকর্তার দোষে রেজিষ্ট্রের
যথার্থ না হয়, তাহা হইলে ডিক্লারারিয়ার
ন্যায় রেজিষ্ট্রের বহু প্রকৃতির মকদ্দমা
হইলে বহুতর অনর্থ ঘটবে সন্দেহ নাই।
একপত্র না করিয়া একপত্র আইনের অনু-
সারে উল্লিখিত রীতিমত সত্বর মকদ্দমা
করাই উচিত। পরিশেষে আর একটী
কথার উল্লেখ অতিশয় আবশ্যিক। স্থাবর
বিষয়ের ক্ষয় বিক্রয়াদির দলিলের ন্যায়
অস্থাবর বিষয়ের বহু প্রকৃতির রেজিষ্ট্রের
করাও যে অনৈতিক করা হইতাহে, ইহা
যুক্তি সম্মত হইছে না। একপত্র করিলে
নিত্য কর্তব্য ক্ষয় বিক্রয়াদি ব্যবহার কাব্যে
মহাবিশ্ব জঘিবে সন্দেহ নাই। আমরা
স্মৃতিঃকরে কহিতে পারি এ আইন কোন
ক্ষেত্রেই চলিত হইবে না। অতএব অত্যা-
বন বিষয়ে রেজিষ্ট্রের করবার প্রস্তাব প-
বিত্যাগ করা কর্তব্য। অপর, রেজিষ্ট্রের
কি অতি অপেক্ষা করা আবশ্যিক; অন্যথা
লোকে রেজিষ্ট্রের করিবার বিষয়কে অত্যা-
চার ও অর্থোপার্জননের একটা উপায়
বোধ করিবে।

২৮৭

১৮৬৩ সালের ৩০ তারিখ।

১৮৬৩ সালের ৩০ তারিখের এটি
ইংলণ্ডের রাজ্যে এই ন্যায় দিয়া এক পু-
স্তক মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়াছেন। পু-
স্তক খনি পাঠ্য বলে তাহার লিপি চাও
যেঁর ভূমসী প্রশংসা করিতে হয়। তিনি
আপনার প্রকৃত অভিপ্রায়কে একপত্র আ-
কর করিয়া রাখিয়াছেন যে বাঁহারা তাহাকে

১৮৬৩ সালে না জানেন; তাহা
তাঁহার আশয়ের সাধনা ও উদ্দেশ্য
করিয়া মোহিত হইবেন সন্দেহ নাই।
আপনার অগত্যাভিত্যাক্রম
একপত্র প্রেরণ উপকরণ ও
করিয়াছেন যে তাঁহার পরিচিতি
তদ্বর্ণনে নিতান্ত বিখ্যাত হইবে।
তাঁহার প্রেরণ আদি অর্থ ও
স্থানে পাঠ করিবে, সেইজন্যই বোধ
হবে, কেউ সেক্রেটারি সব চারলস্
অক্রমণ করা ও জীবিকাকারিদলে
হতা করা তাঁহার এক এচারের
ক্ষেপ। প্রথমে তিনি ইংল্যান্ড
গী। উত্তর জাতিতে মহা আর্থ
নাথ ও পুণ্ডির মধ্যে স
পাইবার বোনা বলিয়া বর্ণি-
তাহার রাজ্য দিনকর রাও, ম
ই ও দৈবনাশরণ সিংহের প্রের-
ছেন। তাঁহার প্রশংসার বিষয়
হোলডস্ সত্বর সাঙ্গীত ই
হরকরা ও দেও অব ইঞ্জির
এ কথা বলেন না যে ভারত
কখন উন্নতি হইবে না। বরং
কোমরে বীকার করিয়াছেন
শীঘ্র সেই পুণ্ডর উন্নত
প্রাপ্ত হইতে পারিবেন। এই
হইবার জন্য তাঁহার মতে
সর্বশেষ আবশ্যিকতা আছে।
দ্বিতীয় সুপারিশ। শান্তির বি-
এই অভিপ্রায় প্রকাশ করি
লাউ ডেসহোসি ভারতবর্ষীয়
রাজ্য গ্রহণ করিয়া শান্তির
রিয়া নিগাহেন। তাঁহার
কতদূর যুক্তিসিদ্ধ, তাহা
বিত্রোহ ও নিরপেক্ষ ইংরাজদিগের
বাহুল্য পরিমাণে সমান
হে। যদি কোন সমুদ্র আপন
বাসিগণের সর্ব্ব করণ করিয়া
পরিচালন করিয়া সাধন

তাহার সেই সমুদায় প্রকল্প, প্রণালী
হয়, অন্যো রাজ্যে হরণ করিয়া অপনায়
রাজ্যের ক্ষতি স্থাপন বিষয়ক লাত্ত ডেল
হৌসির ম ও লেজ সাংকেষে তদনুসার
সেইকপাচরণী ও প্রণালী সন্দেশ
হই।

কেন্দ্র সাংকেষ ভারতবর্ষে ভারত বর্ষ
পদ, প্রাক্তি বিন, ও পতিত ভূমি বিক্র
য়, প্রত্যয় যেরূপ যে যে অভিচার ও কা
প, পাঠে, তাহার পুনরুৎপাদন পুনরু

। পাঠাধন তত্ত্ব বিষয় বহু
অন্যকালে সন্দেশিত দর্শন
ও এই সকল বিষয়ে লেজ সাংকে
যে তাহা, সেই একই যুক্তি
বিস্তৃত হইতেছে। শিশোর
নন্দ সাংকেষে কথিত হইল।

প্রাক্তি দর্শন দিয়া বাক্য
সংক্রান্ত করিয়া প্রতিষ্ঠা
এই ও বাক্যের অনুরূপতা
বাক্য, তাহাই হইয়াছে, অতএব তাহা
এই ও বাক্যের অনুরূপতা
এই ও বাক্যের অনুরূপতা

তার নিমিত্তে প্রকৃতিকারিদের সহায়
করিছেন, যে ও প্রাক্তি প্রকৃতিকারি
কিন্তু বাক্যের ও প্রাক্তি প্রকৃতিকারি
রোপীদিগে "অতঃ, রাজশূন্যে
নাই, তাহার মতের প্রাক্তি ও প্রাক্তি
মনে করেন কীংবল; পাঠে প্রাক্তি
করিতেছেন, তাহা দিগের প্রাক্তি পক্ষপাত
গেল বিষয় যে এই প্রাক্তি গবর্ণমেন্টে
কিন্তু আসন্নাদি বিবেচনা করেন না।
হাদিগের তা দেখিতে পাই, গবর্ণমেন্টে
গের উন্নতির অনেক সময় এদেশীয়
বিরোধী আচরণ করেন।

অন্যে প্রাক্তি নিমিত্তে বিন।

অন্যে প্রাক্তি নিমিত্তে বিন।
অন্যে প্রাক্তি নিমিত্তে বিন।
অন্যে প্রাক্তি নিমিত্তে বিন।
অন্যে প্রাক্তি নিমিত্তে বিন।
অন্যে প্রাক্তি নিমিত্তে বিন।

সিলেট কমিটি তাহা প্রকাশিত করিয়া
সাধারণের মত গ্রহণার্থী হইয়াছেন। আ
মরা পূর্বে এই বিলের সাধারণ পাঠবর্ণের
গোচর করিয়াছি। অন্য এ বিষয়ে আমা
দিগের যে যে বক্তব্য আছে, ব্যক্ত করা
যাইতেছে। ব্যবস্থাপক সভা অবৈতনিক
মাজিস্ট্রেট দিগকে নগরের মিউনিসিপাল
কায়ে নযুক্ত করিবার প্রস্তাব করিয়াছে
ন, কিন্তু ইহা আমাদিগের অনুমোদিত
হইতেছে না। নগরের ধনী লোকের এই
ক্ষেত্রে অবৈতনিক মাজিস্ট্রেট পদে প্রতি
ষ্ঠিত আছেন, মধ্যম শ্রেণীর লোক বহু
নাই। কিন্তু মধ্যম শ্রেণীর লোক না থা
কিলে যথাবিধি কার্য সম্পন্ন ও উন্নত
উন্নতি হইবার সম্ভাবনা অতি অল্প। ধনী
বক্তব্য প্রথম শ্রেণীর লোক, তাহারা
মধ্যম ও উন্নত শ্রেণীর অবস্থা সনক
বক্তব্য নাই। কর নিরূপণ কালে তা
হাদিগের হইতে ব্যক্তিগত প্রতিহার অস
ম্ভব নাই। অপর, ইংলণ্ডের গবর্ণ
মেন্ট ও মহাসভা বাহার বিনী
আসিতেছেন ক্রমে এদেশে ইংলণ্ডের
নগর সাধীন শাসন প্রণালী প্রদর্শিত করা
হইবে। তাহা করিতে হইলে অত্র মিউ
নিসিপাল সমাজে সাধীনতা প্রদান এবং
মধ্যম শ্রেণীকে তাহার অন্তর্নিবেশিত করা
আবশ্যক, অন্যথা ইন্টেলিজেন্স হওয়া সম্ভা
বিত নহে। ইউরোপের ব্যবহার প্রকল্প
একনে বর্গরদিগে (মধ্যম শ্রেণীর)
সাধীনতা হয়। সেই সাধীনতা কোন বা
হ্যচারী হইবে ও অন্যাপি হরণ করিতে পা
রেন নাই। কলিকাতারও অত্র সেইকপ
সাধীনতা দেওয়া কর্তব্য।

গবর্ণমেন্টে যত মিউনিসিপাল সভা
র সভা নিয়োগ তার প্রদান করিতে
ছেন, কিন্তু আমাদিগের নিকটে একা
ধাতি যুক্তিসিদ্ধ বিনী প্রতীক্ষান
হইতেছে না, নগরবাসিদের হইতে এ
কার দেওয়া বিধেয় হয়। তাহা
করিতে হইবে।

নেপোলিয়ন এত যে সমতায়, তিনিও
নগরবাসিদের এ সমতায় এতি হইতে
প করেন নাই। বিলের যে অংশে সামান্য
পাইকেটদিগের সম্মতি পর লইবার বিধি
করা হইতেছে, তাহা আমাদিগের মতে
উত্তম কল্প বিনী বোধ হইতেছে না।
অনেক পরিচিত কথক মধ্যে মধ্যে তরকারী,
প্রাক্তি অনিরা নগর দিগে করে, তাহা
দিগের উপর বার ধারা করা নিরুত্তরতা
সন্দেশ নাই। যাহারা চিরস্থায়ী ব্যবহারী
আর বাহার অতঃ, এতি বৎসর ৩০০
টাকা উৎসর্গ করে, তাহা তিরিষ্ক অন্য
কেন ক্ষুদ্র বৎসর নিকটে কর লওয়া
উচিত নহে। গভী প্রাক্তি করের বিষে
আমাদিগের কোন অংশ নাই। কিন্তু
কতিস (বিচারপতি) দিগের অংশ
কিছু কর প্রদান হইতে শুরু করা হইতেছে
কেন। যখন গবর্ণমেন্টে নিজে ইনকম
ট্যাক্স দিতেছেন, তখন অন্য ব্যক্তির সা
ধারণ কর হইতে মুক্ত হইয়া বিধেয় হয়
না।

যে পরিমাণে বাটার ক্ষুদ্র প্রদান প্রদান
করা হইয়াছে তাহা কিছু অধিক বোধ হ
ইতেছে। ইহাতে পরিচিত লোকদিগের স
বিশেষ কষ্ট হইবার সম্ভাবনা আছে। যাব
তীয় একাধারের প্রাক্তি পরপ্রণালী করি
না প্রাক্তি জন দিগের উপায় করা অতি
আবশ্যক। এক্ষণে রাজধানীর প্রাক্তি, অ
তঃ তাহা হইয়া উঠিবে। নন্দ সাংকে
লিক, প্রাক্তি প্রাক্তি প্রাক্তি প্রাক্তি
হইয়াছে, তাহা সহজে সম্পন্ন হওয়া কঠিন।
অতএব এ প্রাক্তি পরিত্যাগ করিয়া যদি
দিনে দুইবার প্রাক্তি দ্বারা নগর পরি
কার করান হয় এবং প্রাক্তি দুই ধারে
পরপ্রণালী করিয়া যথাবিধি প্রাক্তি জন
সংস্কার করা হয় এবং স্থানে স্থানে প্রাক্তি
করান করিয়া। নগরবাসিদের বিশেষ জন
লাভের উপায় করা হয়, অপর ব্যয়ে কলি
কাতা অধিকার প্রাক্তি হইয়া উঠিবে
সন্দেশ নাই।

জুয়াখেল।

ইহাদিনিগের এতঃ গল্প আছে, শর-
তেন এক মেলাবক, সিংহ ও পুতর বধ
করিয়া তাহা, বগের শোণিত মিঃ অর্চ করা-
তে জাকাহুক ও মদের সৃষ্টি হয়। ইহাব
ভাঃপষা এই, লোকে খতা তঃনৈব শিক্তর
এর নম্র থাকে, সুবাপান করিতে সিংহের
চাপ চকল হয়, পরিশেষে শুবরের ন্যায়
নার পক্ষে ও নীচ প্রবৃত্তি হয়। কিন্তু এই
এককর সুরা সেবন অপেক্ষাও অব
একটি অধিকতর অনিষ্টকর বিষয় আছে,

লোকে খপ্প কাল মধ্যে সর্ববাস্ত
হয়। সে বিষয়টি—জুয়াখেলা। এই খেলায়
কবে সৃষ্টি হয়, তাহার বিবরণ হয় নাই, কিন্তু
সর্বকালে লোকে এতখুলক অনিষ্ট নিব-
ন্ধন আকোশ করিয়া আসিতেছেন। এত
পে সুরাপানের সহিত এই ভয়ানক ক্রীড়ার
সবিশেষ প্রাচুর্য্যব হইতেছে। মধ্যে
করেক বৎসর পুলিষের এ বিঘ্নে কিছু
বৃষ্টি হওয়াতে ইহার কতক নিবার হইয়া
ছিল। কিন্তু এক্ষণে ইহা পুনর্বার পূর্ব রূপ
ধারণ করিতেছে।

জুয়াখেলা নাম। অব্যবহিত
মেসারা, কুপন, (১) চাপু চামড়া, ও

(১) কুপন খেলায় একটি কাঠের ঘুটি
আছে, তাহা ঘুরাইয়া এক সবাধ নিঃক্ষেপ করা
হয়, কোন্ বিশেষ দিক উপরে থাকিলে ক্রীড়া
কারীর জিত হয়। এই ক্রীড়া সন্তানর ভয়
ভয়। চাপুতে কাঠের কড়াটি বসে পালে
সত্তরকের ন্যায় ইহার কতক দাগ
হইলে। ইহাতে বিশেষ দ্রুতি গতি আব
শ্যক। এইনিমিত্ত চীৎকার করে চীৎকার
ন্য অগ্রে প্রতিবন্ধিকে তাড়াতাড়ি পুনঃ ভয়
জ করে। চামড়ার খেলায়
সপ্তকুলগীর দ্বারা করা হয়। ইহা
যে ব্যক্তি অধুলি বা পাটি
কই জয় হয়। মেসারার দ্বারা সন্তানর জা-
নেন। মেসিকাক এক কাল দাসের
ক্রীড়া, ইহাতে ১০০ কখন কখন ১৫০ খানি
ভাঁস থাকে। কলিকাতার দলিলা, ডেইলির

গেজিট্‌র। কলিকাতার বাবতীর চতুর্
দোকানে এবং অধিকাংশ চীনের বাসিন্দ
কুপন, চাপু, ও চামড়ার খেলা হয়। চী-
নেরা অত্যন্ত দুঃখাসক্ত। অধিকতর ধন
পান ও দুতক্রীড়া ইহাদিনিগের জীবনের
প্রধান উদ্দেশ্য বলিলে হয়। ইহাদিনিগের
রচিত চতুর্ দোকানে রাজার ছাঃ চোর,
পাঁইট কাটা, কয়েক খালানী, ভাকাইত
একটি একত্রিত হয়। ইহারা অতিশয় মর্দ,
প্রথমে এসকল ব্যক্তিকে গুলি ও চতুর্
মত্ত করিয়া পরিশেষে তাহাদিনিগের সর্ববাস্ত
করে। উক্ত জুয়া চোর চীন্দিনিগের এম
নি একা, যে এক চতুর্ বিক্রতার দোকানে
চতাকাও হইলেও অন্য ব্যক্তি তাকা প্র
কাশ করে না, সুতরাং পুলিষের চক্ষের
উপর ও রাজধানীর বকঃ হুলে থাকিয়াও
ইহারা অনায়াসে ভয়ানক ব্যবসার চালা
ইয়া সমাজের সহ্য অনিষ্ট সাধন করিতে
ছে। কলিকাতা ও মকমলের আর বাবতীর
গুলির আতড়া ও শুড়ির দোকানে মেসার
রার প্রাচুর্য্যব আছে। এক্ষণে অনেক
ভক্তলোকের দাঁটিতেও এই ক্রীড়া হইয়া
থাকে। ২৪ পরগণা ও জগলীতে মেসারা
বাজের সংখ্যা অধিক। সচরাচর এতি
রবিবারে এবং বাবতীর পর্ব, বিশেষতঃ
শিবরাত্রি, চতুর্, বধ ও পূজার সময়ে
এ ক্রীড়ার সবিশেষ প্রাচুর্য্যব হয়।

কিযদিবস হইল ২৪ পরগণার অস্তঃ
পাতি আশুত পাড়া পুপনের নিমিত্ত খ্যাতি
লাভ করিয়াছে। এই ভানে বিস্তর মাতাল
ব্রহ্মচার ও জুয়াচোরের বসতি। ইহাদি
গব কাবিকা নির্বাহ, বিশেষতঃ ইন্দি।
মেসার অমঃ কোন উপাশ না থাকতে
ইহারা এ ক্রীড়াতে নিত্য আসক্ত হইয়া
কাল হরণ করিতেছে। চতুর্, বর্জি
এবং যত জননা লোক এ আতড়ার আ
বাজার, টালিগঞ্জ ও রূপাখালিয়া এই খেলা
র ম. জু.। স্থানস্থাননিগের মধ্যে বাহার
ধন, তাহার এই খেলা কবিয়া থাকে।

সিলা থাকে। ১৮৬৩-৬৪
৫০০৭৭০ টাকা জমা
কর। অথচ নিজেই
দায়গা আছে।

আমরা আগন্তুক
বয় বর্ণন করিলাম বর্ষ
বিঘ্নে ২৪ পরগণার
গড়পড়া হইয়াছে। পু
হইত, একপে তাহা
এত দৃষ্টি হইতেছে।
তার পুনিবে জুয়াখেলা
বটে, কিন্তু দুঃখাসক্ত
কিঃ জরিমানা দিয়া মি
সামান্য দণ্ড দ্বারা এই
নড়াঘনা নাই। বাহার
হাদিনিগের এবং বাহার
হার কারাবাস দণ্ড বিধান
কারী অপেক্ষা বাতির
দোষ। তাহার প্রত্যয়ে ইহার
থাকে। চোর অপেক্ষা চোর
কারীর ন্যায় জুয়াখেলা
দিগের অধিকতর বণ্ড
২৪ পরগণার মাজিক্টে
দিগের অনুরোধ এই, তিনি
দিগে দৃষ্টিপাত করিয়া
চিত দণ্ড দেন। একে
মাদিনিগের সমাজের
তোছে, জুয়াখেলা যদি
যত্ন করে তাহা হইলে ও

২৮৩
বোম্বাইয়ের
নির্মিত ৩০০
১৮৬৩

আজি কালি বোম্বাই
কেবল তাবৎ বর্ষে নয়, ই
অন্য ২৪ পরগণা
লাভ করিয়াছেন। আর
তাহাদিনিগের দৈনন্দিন
হইতেছে, বিশেষতঃ

যায় তাঁহাদের ঐক্যবর্ধনের অপর প্রদেয়
সিদ্ধিগকে ক্ষেপ্ত করিয়াছেন। কিন্তু
মাতৃবাঁধী ঐক্যবর্ধনের অন্য অন্য
প্রদেয়সিদ্ধি ন্যায় ইহাদিগের কি
স্বাচার, স্বাধীনতা কি স্বাধীন কোন বিব
সরই নিব্বিদ্ধি পদ্ধতি নাই। এত
এক অপর অসংখ্য অনেক বিশৃঙ্খল।
এই ইহাদিগের প্রধান ও একমাত্র
কিন্তুই হয় নও স্বার্থই ব্যবস্থা পদ্ধতির
লাভিলাভ মাত্র থাকে। একমাত্র বাসি
সংসার মনোগত বাসিগণের আর
প্রাক্য মনোগতঃ নিরুপিত ব্যবস্থা
লাভিলাভ মাত্রই সৎসার যাত্রা নির্ভর
হয়। হয় সৎসার নাই। এই সকল
ইহাদিগের ব্যবস্থাপন পদ্ধতি সংগ্রহ
করা যায় হয়। সম্প্রতি তাহা সং
গ্রহ হইয়াছে। এক বৎসরেরও অধিক
কাল ইহাদিগের অবস্থানানুসারে এক
নিম্ন নিম্ন হইল। তাঁহারা এই আই
ন প্রণয়ন করিয়াছেন। বিবাহ, উত্তরাধি
কৃত্য ইত্যাদি বিবরণে তাঁহাদিগের
নির্দেশনাই হইয়াছে। কোন ব্যক্তি প
র্যাপ্ত হইয়াছে বাতিরে এক জী
বিত্য করিয়া অপর জীব পাণি গ্রহণ
করিতে পারিবেন না একপ জীলোকে
রাজ্য পূর্ণপাক্ষিক পরিভোগ করিয়া পত্নী
কর গ্রহণকরিতে পারিবেন না। পারসী
দিগের মতো আমাদিগের পুনরায় ইহা
করণ করিয়া ইচ্ছা করিল।

এতদ্বারা দীর্ঘদিনের অধিকতর

বলকার হইবার

উপায়।

নিম্নোক্ত ভোজন মণ্ডল ব্যক্তির পিরা
দিকেন মনোগত পুষ্টি বর্ধন ও বল সাধনার্থ
সমস্ত পুষ্টি আবশ্যিক। তাহা যখন কল
পুষ্টি উদ্ভিদ দ্বারা মধ্য পুষ্টি পরিমাণ
প্রাপ্ত। বাহ্য তখন নিম্নোক্ত ভোজন দ্বারা
লাভ হইবে। কোন ক্রমেই অসম্ভব নহে।

উত্তর। স্বভাবের প্রাণাধার্য নিম্ন নিম্নিত উ
দাহরণগুলি প্রদর্শন করেন। এখন, নিম্ন
বক্তার মত ভোজী হিন্দুস্থানিরা মৎস্যাহারী
মৎস্যাহারিগণের অপেক্ষা অধিক বলবান।
দ্বিতীয়, আরবদেশে বীণের প্রয়োগকারী
লোকেরা কেবল গোলকায় আহার করিয়া
থাকে, অপর তাহার বৈষ্ণব বলবান ও অধি
শীল ভাষা প্রসিদ্ধি আছে। তৃতীয়, স্পেন
দেশীয় গেলিগো নামক নিম্নোক্ত ভোজী
লোকেরা ও আর্মেনিয়ানের মৎস্যাহারী ভাষ
বাহক। এ প্রকার বলবান যে তাহারা সচ
রাচর সাত মণ ভার বহন করে, এবং ১৮১১
মণ ও ৮৫০০ পায়ে ইত্যাদি। ভিন্ন ভিন্ন
দেশবাসিগণের শারীরিক ও মানসিক শক্তি
বৈলম্ব্য এবং মাংস ও উদ্ভিদে খাদ্য পোষ
ক ও পুষ্টির ফাইব্রিন নামক পদার্থের হিতি
বিবরণে পুষ্টি যে প্রমাণ প্রয়োগ প্রদর্শন করা
হইয়াছে। তাহা যদিও নিম্নোক্তোক্তন ম
পক্ষিগণের মতের যত্নবীরতা বিনোদ গ
ব্যাপ্ত হইয়াছে তথাপি আমরা অন্য এবিধ
য়ে অন্য অন্য প্রমাণ প্রদর্শনেও প্রস্তুত হই
লাম।

রসায়ন বিদ্যা দ্বারা নিম্নোক্তভাবে প্র
তিপন্ন হইয়াছে যে মৎস্য বাসি অপেক্ষা
মাংসে পোষিত রক্তিকারি ও মাংসপেশীদ
চতাকারি কাইব্রিন ও আর সাত গুণ অ
ধিক আছে। এক গোয়া মাংস ভক্ষণ করিলে
যে পরিমাণে রক্ত বৃদ্ধি হইবে, সেই পরিমাণে
রক্ত রক্তির জন্য আর একসের তিনগোয়া
উদ্ভিদ বস্ত্র আহার করা আবশ্যিক। এত
শীঘ্রেরা কি সচরাচর এই পরিমাণে উদ্ভিদ
আহার করিয়া থাকেন? না, করিতে
সমর্থ হন। আহার করিলেও কি এম
গোয়া মাংস যে সমস্ত মধ্য পরিপাক হয়,
সেই সমস্ত মধ্য একসের তিনগোয়া মৎস্য
দি পরিপাক হয়? বস্তুতঃ মাংস ও উ
দ্ভিদে যেকোন ভাষায় বৃদ্ধি হয় তাহাতে মাং
সকে পক্ষ ও উদ্ভিদকে আহার বলিলে অত্য
ধিক হয় না। একগোয়া মাংসে যে সাত ভাগ
আছে, এবং তাহা ভক্ষণ করিয়া যে বল
বীর্ঘ্যাদি গুণ লাভ হয়, তাহার অন্য এদেশী
রক্তিকারি একসের তিনগোয়া মৎস্যদি উত্তর

করিতে হয়! (১) পুষ্টি উদ্ভিদ হই
যাছে। মৎস্যাহারী হিন্দুস্থানিরা মৎ
স্যাহারী (২) বালালীদিগের অপেক্ষা
অধিকতর বলবান হয়। ইহার উত্তরদান হলে
আমাদিগের জিজ্ঞাস্য এই, বালালীরা অধি
শীল ভাষা প্রদর্শন করে। অতীত কালে অধিক
দিন বস কাঁটলে, ক কলিকাতার বালালী
মৎস্য হৃদয় ১৮৫৫ হইল ৯ মৎস্যাহারী কাপড়
লাভের প্রতীক প্রদেয়ের লোকেরা কলিকাতা
তায় দীর্ঘকাল বাস করিয়া কি আপনাদিগে
শরীরের পুষ্টিও অবস্থা অগ্রগতি করিয়া
হন না? এতদ্বারা স্পষ্ট প্রতীক্যমান হইতেছে
যে হিন্দুস্থানিরা শারীরিক ও স্পেনদেশবাসিরা
আপনাদিগের দেশের জল বায়ু ও বৃত্তিকা
দি গুণে বিনোদিত হয় (৩)। হিন্দুস্থানিরা
দেশের গুণে যতাবতঃ বলবান হন বটে কিন্তু
তাঁহারা যদি মাংসাহারে রত হন তাহা হই
লে একপের অপেক্ষা অধিকতর বলবান মান
সিক ও উত্তরমণ্ডলী হইবেন সন্দেহ নাই। আ
মাদিগের বিলম্ব রূপ জানা আছে যে মৎস্য
ব্যক্তি কলিকাতা হইতে উত্তর পশ্চিমাতলে
গমন করিয়া যে কোন তাহাঃগের মধ্য বা
হারা মাংস আহার করেন তাহারা নিম্নোক্ত
ভোজী প্রবাসি অপেক্ষা অধিকতর বল ও
বীর্ঘ্য বিশিষ্ট হন।

নিম্নোক্ত ভোজন মণ্ডলঃ বলেন মাংস
ভক্ষণ করিলে শরীর শীঘ্র বল প্রাপ্ত হইতে
থাকে, একারণ তাহা পূরণ করিবার নিমিত্তে
মাংসাহারিগণকে পুনঃ পুনঃ আহার করিতে
হয়। এবাব্যক্তি অত্যধিক বিলম্ব বলিয়া বোধ
হইতেছে। ইতিহাসে কহিতেছে প্রচুর পরি
মাণে মাংসাহারী একইমো জাতি এক মাস
কালও অনশন করিয়া জীবনধারণ করিতে

(১) ভক্তি গজাঃদি হৃৎকায় পক্ষরা এই
জনাঃ প্রচুর পরিমিত উদ্ভিদ ভাষা ভক্ষণ করিয়া
নিম্ন নিম্ন লীল্যকার সমস্ত রাশিতে সমর্থ হয়।

(২) মৎস্য মাংস জুলা পুষ্টির কিংবা উচ্চ
সাধক নহে। তাহাতে বালালীদিগের মধ্য মাং
স বাইবান যে রীতি প্রচলিত আছে তাহাতে
অত্যধিক উপকার লাভের সম্ভাবনা। উত্তর
ভিষ্ণুদিগের অধিক উদ্ভিদে যেদিন মৎস্য পুষ্টি
দেখিবে।

(৩) এই কারণে মৎস্য মাংস ও প্রতীক্য
ভাষা শীতলদেশবাসিরা বর্জ্যব্যব বিশিষ্ট হয়।

আমি সন্মতি পূর্বক সকল বাসিন্দা বেল
বোডে আসনভেদী পথ্যত বেড়াইতে গিয়া
ছিলাম, আর এক হেঁসন আগে গেলেই রেল
রোডের বর্তমান পূর্ব উত্তর সীমা কুঠি পর্যন্ত
যাওয়া ঘাইত। কলিকাতা পক্ষাৎ করিয়া
বেলেঘাটার পোল পার হইলেই ক্রমে পলী
আমের দাব দেখিতে পাওয়া যায়। মগরের
কোলাহল অংশে অংশে অক্ষত হইতে থাকে,
বাস্তার গুলে বাতাসের সঙ্গে উড়িয়া ও আর
আমাদিগকে ঘিরিতে পায়ে না এবং বহু বড়
ইষ্টকালস সকলও ক্রমে ক্রমে চকুর বহিষ্কৃত
হয়। কিছু দূর পথ্যত কলিকাতার নগর-স
দিকের দুই একখানি বাগান মধ্যে নগের দুটি
পথে পতিত হইয়া মগরের দাব অরুণ করা
ইয়া দেয়, গরে তাহারিও ক্রমে ক্রমে অক
র্ষিত হইয়া যায়। অন্যদূর খেনোয়াঠ, লুনা
না ও এমো পুকের দুটি পথে পতিত হয়,
মগদম'র রাষ্ট্র। 'ক'ৎ করিলেই মগের প'স
কাত বাতাস আরও হইয়া পরীর শীতল হয়
আমদাশান এ পক্ষকার দেখিয়া চকুর পীড়া
দুরীভূত হয় এবং বীনের জন্তর বাসিন্দা'স
চল এক আশী নহু বহু খাটোবহ ও বাসিন্দা
(কাপা) পাকার প্রতিকল টুট বেলে'লো
বোটা ঘর সকল দেখিতে পাইয়া গলী ও
ঘের পবিচয় প্রাপ্ত হওয়া যায়। যে স্থানে
ফোন আমের মধ্য দিয়া বাসিন্দার ব্রথ গমন
করে সে স্থানে প্রতি ঘর ও প্রতি দ্বার হঠাৎ
আবাল বৃদ্ধ বনিতাকে ব্যস্ত সমস্ত হইয়া এক
দুই অনিবিদ্য মেয়ে গাড়ি'র প্রতি মেয়ে'র
করিজে দেখা যায়, তাহারি প্রতি দিন ৪
বেলা বহু বার গাড়ি যাত্রী ভর্তি দারই এবং
করিয়া দেখে কিন্তু তাহাপি তাহাদিগের জ্ঞাত
ও গাড়ি দেখিতে বিরক্তি অঙ্গে না, তাহারি
যে রোজ রোজ সুবেলা ওপ্রকার হা করে কি
দেখে কিছুই বুঝিতে পারা যায় না, সেই পা

১. এই সকল পুস্তক প্রণয়িত হইয়াছে
 ২. এই সকল পুস্তক প্রণয়িত হইয়াছে
 ৩. এই সকল পুস্তক প্রণয়িত হইয়াছে
 ৪. এই সকল পুস্তক প্রণয়িত হইয়াছে
 ৫. এই সকল পুস্তক প্রণয়িত হইয়াছে

কারী কমিসরি জেনরল কর সাহেব
ও বিদায় লইয়া অবিহিত কালে উক্ত
কোর্টের দেয়াল সংবাদ পত্র প্রকাশ করাতে
স্বর্গীয় গবর্ণমেন্ট তাঁহাকে পদচ্যুত করিয়া
কর্মচাৰী হইয়া সংবাদপত্রে ন. (অধিকার)
দ্বারা নিকটে প্রণালীর দোষ প্রকাশন ক

গবর্ণমেন্টের জগদী নামক পুত্রাভ্যাস হ. হাট
০ টাকার বিক্রি হইয়াছে। ইহা একপ
ইয়াছে যে ক্রেতার ক্ষতিব সম্ভাবনা।

উক্ত গবর্ণমেন্টের জগদী ও বীন্দো
গবর্ণমেন্টের জগদী নামক পুত্রাভ্যাস হ. হাট
০ টাকার বিক্রি হইয়াছে। ইহা একপ
ইয়াছে যে ক্রেতার ক্ষতিব সম্ভাবনা।

উক্ত গবর্ণমেন্টের জগদী ও বীন্দো
গবর্ণমেন্টের জগদী নামক পুত্রাভ্যাস হ. হাট
০ টাকার বিক্রি হইয়াছে। ইহা একপ
ইয়াছে যে ক্রেতার ক্ষতিব সম্ভাবনা।

উক্ত গবর্ণমেন্টের জগদী ও বীন্দো
গবর্ণমেন্টের জগদী নামক পুত্রাভ্যাস হ. হাট
০ টাকার বিক্রি হইয়াছে। ইহা একপ
ইয়াছে যে ক্রেতার ক্ষতিব সম্ভাবনা।

১৬.৩৬৮

২১৮৩৯

৩২৫.৩৭৮

৩৩৮৮৬

৪২৭.৭৭১

নিউজিনিপাল বিলে

করিবার প্রস্তাবক
বলয়ন না করিলে এ
কিন্তু টিন।

বিরাটে এক দরবার
করিবার প্রস্তাব লোক-
করেন। গবর্ণর জেন-
করেন। বালেন নাই, সে
করিবার আজ। বিরাট
পারিছেন। যদি
করিবার করা গৌরবহানি
করিবার করিবার করিবার

করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

রা যে কতিপয় প্রকারে অকার্য্যকর, উচিত
করিবার করিবার করিবার

বোম্বাই স্টেটে রিভিউ করে - তা ধনী
পারসী লোকী মফায়া ওয়া দিয়া
বাপান হইতে একটি ৫০ টাকা, সু. বউ
চান। আট আনার এক বাসকের
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

সাহ. ও. কের রাজ। সর জেনরল কের পুনর্দী
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

চালা নিউজের আলাদা সংবাদ দাতা বলে
ন বালেন। কের: ব্রিটিস আফিসার: গর হতে
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

বালেন। লিখিয়াছেন কেরিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

সমাচার চিন্তামণী ২. লন 'আ মিগ্‌বিজ
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

আর ৪৩ ২২.০০.০০০

বাহ ৪২ ৪০ ১২ ৩২০

অকুল ৪ ৪২.০০.০০০

সেও সাহেব ৪২ ২৭.১২.০০০ আর, ৪২.
৭২.১.৩৮৬০ টাকা এর ধর্য্যাহিলেন। কিন্তু
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

উক্ত পত্র এডমেনশ্বর বালেনের উপর ইন-
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

উক্ত পত্রের লগন সংবাদ দাতা। (উইন-
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

১৫ ই টেব্রু ১২

আমরা অভিযন্তা করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার
করিবার করিবার করিবার

১৫

ব'দ এ'লো ব'লি'কা'বিদ্যালয়টী' প্রধান শিক্ষক
নহা'লগে'র' ল'গ' ভূমি'এ' ব'লি'ক' হ'উ'ল' ল'গ'।
হ'উ'লে' এক' দিন' প্রধান' শিক্ষক' নহা'লগ' কু'ল-
কা'র' ব'ল'ত' উ'ঠ'। হ'উ'ল'। দি'বার' জ'না' হ'উ'। ক'দি-
তে' ছ'ল'। ব'ল'। ন'হ'ল' হ'উ'ল'। এ'ই' প'ার'। প্রধান'
শিক্ষক' নহা'লগে'র' ল'গ' ভূমি' এ'লো, তা'র' উ'ঠ'। হ'উ'ল'
ব'ল'। এ'ই' প্রধান' ক'ল'। হ'উ'ল'। ক'দি'বার' জ'না'।
ক'দি' ? অ'র' এ'ই' ক'ল'। ক'দি'লে'। অ'র'। ব'লি-
কা'বিদ্যালয়'র' উ'ঠ'। হ'উ'ল'। দি'লো'। ক'দি' উ'ঠ'। হ'উ'ল'
ন'। হ'উ'। অ'র' এ'ই' ল'গ'। ব'লি'কা'বিদ্যালয়'র' ক'ল'।

(১) বঙ্গবাসীদেব বঙ্গবাসী শিক্ষককে জানা-
দায়ক বোধ করাই ও সমস্যা-র কথা । যখন
তব পক্ষে যে উৎসাহী শব্দক নিযুক্ত হইল, তখন
যাকে ছাড়িয়া দিয়া পু. ক. ব. ব. শিক্ষকদিগকে
স্বাধীন বিভাগ করিয়া দিলে কি চলিত না?

উক্ত পত্র আ বা ... আশা ...

দ্বিতীয় টিকিট ...

তিনি আশা ...

অন্তিম পত্র ...

ইংল্যান্ড ...

কিন্তু ...

হৃদয় ...

৬ই ...

২৪ পরগণার ...

অন্য ...

১১ ...

২। ...

৩। ...

৪। ...

সেই ...

২। ...

মতিহারি ...

ইউরোপীয় সমাচার

লণ্ডন ২৬ ...

পটমাক ...

উত্তর ...

পোলা ...

আবল ...

গ্রীস ...

সপ্তম ...

গবর্ণমেট বিজ্ঞপ্তি

১৮ই ...

১৭ই ...

১৬ই ...

১৫ই ...

১৪ই ...

১৩ই ...

**সামান্যর জীবিত সোমপ্রকাশসম্পাদক
মহাশয় সমীপে।**

সম্প্রতি উল্লম্বিত। এনে একটি বালিকা
বিদ্যালয় সংস্থাপিত হইয়াছে। আপাততঃ বাবু
রাজকৃষ্ণ সুখোপাধ্যায় বিদ্যালয়ের নিমিত্ত
আপনার বৈঠকখানা বাটি দিয়াছেন। এক্ষণে
৫৫টি বালিকা এতদ্বাশিষ্ট আশ্রয় হইতেছে।
তাঁহারা এতৎকালে ৩০টি অর্থ ৯০ পয়সা
অর্থায়ন করে। এতদ্বারা লোকের আশঙ্কায়
পূর্বক নিজ নিজ বালিকাসমিগকে বিদ্যালয়ে
প্রেরণ করিতেছেন।

নিম্ন লিখিত মহাশয়েরা বালিক কিছু কিছু
দান করিবেন স্বীকার করিয়াছেন।

বাবু রাজকৃষ্ণ সুখোপাধ্যায় ১৫ টাকা।
বাবু বিজয়কৃষ্ণ সুখোপাধ্যায় ১০ টাকা।
বাবু সখীন্দ্র কৃষ্ণ সুখোপাধ্যায় এম এ ৫ টাকা।
একং পূর্ণব্রহ্মের নিকটে জিন টাকার নিমিত্ত
সাহায্য আর্থনা করা হইয়াছে।

একান্ত বনবন
জীববিহার চট্টোপাধ্যায়।

**জীবিত সোমপ্রকাশসম্পাদক
মহাশয়ের।**

এই চাকা জিলাব অস্ত্র পাতি বিক্রম পুরের
অন্তর্গত রাজনগর (পূর্বে যেখানে রাজা রাজ-
বল্লভের বাসস্থান ছিল) রেলপন্থে স্থাপিত
ছিল, তৎপরে এরোজম নাই, কেবল এই মাত্র
বলিলেই আপনাদের পাঠকগণ বোধ করিতে
পারিবেন যে, বর্তমান রাজা রাজবল্লভ জীবিত
ছিলেন তৎকালে এই রাজনগর চাকা জিলাব
মধ্যে অস্তিত্ব ছিল। কিন্তু কালের কি কুটিল
গতি! ঘটনার কি আশ্চর্য্য! কালক্রমে
তাঁহার এরূপ অবস্থায় হইয়াছে যে এই রাজ-
নগরের পূর্বকার ইতিহাস, তখনকার এই রাজ-
নগরকে আর সেই রাজনগর বলিয়া বোধ হয়
না। এখনও এখানে অনেক ধনাঢ্য লোক আ-
ছেন বটে কিন্তু তাঁহারা সকলেই বিদ্যার সাহা-
য্যে বঞ্চিত। এখানে আর ৩। ৪ মধ্যমিক
লোকের বসতি হইবে, কিন্তু এখন একটি বিদ্যা-
লয় নাই যে তৎসমস্তগণ অচাক্ষুণ্যে শিক্ষা
লাভ করিতে পারেন। কিন্তু এই বিদ্যালয়
সংস্থাপিত হইবে, অস্ত্রাধ্যক্ষ সন্তানদের বি-
দ্যালয় সংস্থাপন বিষয়ে তাঁহারা উৎসাহ নাই।
বরং তাঁহাদের বিরুদ্ধে তাঁহাই একাধিক করিয়া বা-
কেন। সুতরাং বিবর্তন কি বলিব অজ্ঞান হইল
কেবল একটি (মহাকাল) বিদ্যালয় সংস্থাপিত
হইয়াছে। জীবিত বাবু কৃষ্ণকমল সেন মহাশয়
এই বিদ্যালয়ের সংস্থাপন বিষয়ে প্রধান উদ-
যোগী। কৃষ্ণ বাবুর অধিক ধন নাই বটে কিন্তু
তাঁহাদের কৃষ্ণা বিবর্তন অস্বাভাবিক আছে। তিনি
আর একটি কাজ সম্পন্ন করিয়াছেন। সে কাজটি
এই,—নিম্নের মতো এইখানে একটি বা-
লিকা বিদ্যালয় স্থাপন করিয়াছেন। বালিকার
সংখ্যা ৩০। তাঁহাদের নাম 'সোমপ্রকাশ বালিকা

কৃষ্ণ বাবুর নাম উল্লেখযোগ্য। এম এ এম
উল্লেখযোগ্য বিদ্যালয় হওয়া কঠিন হয় না।
১২ ফাল্গুন ১২৬২।

কল্যাণ বিজয়পুর সোমপ্রকাশ

জীবিত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয় সমীপে।

আমার যে দিনের প্রতিজ্ঞাভাঙ্গার এখান-
কার ছোট আদালতের বিবরণ আপনাদের পাঠ-
কগণকে অবগত করিতে আর বিলম্ব করা বড়
ভাল দেখায় না। এখানে ছোট আদালত সং-
স্থাপিত হওয়াতে প্রধান সদর আমিনী কাহারি
উঠিয়া গিয়াছে। কিন্তু প্রধান সদর আমিনী
কাহারি এক জন আমলাকেও মারিয়া অভিনব
আদালতে দেখিতে পাই না। অভিনব আমলা
জনী সকলেই নৃত্য লোক। ছোট আদালত
হওয়াতেই তাঁহার এখানে পদার্পণ করিয়া-
ছেন। আমলাজ্ঞ, সকলেই ত্রাণ কেবল
এক জন নম। তিনি আমাদের পুরাতন কেদার
বাবু। কেদার বাবু জন্ম আদালতে ১০০ শত
টাকা বেতনে অধ্যক্ষ ছিলেন। এখন ৫০
টাকা হ্রাসের সহিত ছোট আদালতে প্রবেশ
করিয়াছেন। অবশিষ্ট আমলাজনী বেনী বাবুর
ভিকারপুর, গুরু মহাশয়, গুরুপুত্র, এবং বাজির
মহাশয়নকারক ত্রাণ। ইহারা বহুদিন বেনী
বাবুকে আশীর্বাদ করিয়াছিলেন। এখন তাঁ-
হার পদস্থিতি দেখিয়া গোপবর্ষনে পদস্থির
নাগর নাগরান হইতে আসিয়া জুটিয়া গড়িয়া-
ছেন। বেনী বাবুও তাঁহাদের অস্বস্তি এত-
ইতে না পারিয়া (ইনি এক জন প্রাচীন সম্রা-
টের লোক, ত্রাণের উপরোধ একজন কেমনে
পারেন) ত্যাগিগকেই নিযুক্ত করিয়াছেন। বধন
ইহারা প্রধান নিযুক্ত, বধন এবং প্রাচীন আম-
লারা পদস্থ হইয়া কানিতে কানিত বাকী
ধান ভবন আমরা একটি কানি শুভ ঘটনার প্র-
ত্যাশা করিয়া তাঁহাদের সুখে বড় আনন্দ হই-
নাই। আমরা তাঁহাদেরিলাম বধন বেনী বাবু
দেখিয়া অনিরা। আমলা নিযুক্ত করিতেছেন,
তখন অর্ধপ্রত্যর্থা। আর বড় উৎকোচ দ্বারা
বিত্ত হইবে না। কিন্তু আমলা মহাশয়েরা
আমাদের সে প্রত্যাশাকে বড় অধিক দূর দূ-
রী হইতে দেন নাই। তাঁহারা প্রাচীনদের অ-
পেক্ষা এককটি সরস হইয়া উঠিয়াছেন। না
হবে কেন একেত্র ত্রাণ জাতি তাঁহাদের
আবার কর্তার লক্ষ্যবর্তী। তিনি জানিতে পা-
রিলে বড় বিরক্ত হইতে পারিবেন না।
হবে কেন? ত্রাণ কটাকে ত প্রতিপালক করা
গই। বাতাহটিক বেনী বাবুকে এখন সন্তু-
কর্ষের মিত্তি। এতদ্বা অস্বস্তিগণের সহিত
সাক্ষাৎ করিতে হইতেছে তাঁহার আর সন্তু-
কর্ষ নাই। এইখানে আমাদের কেদার বাবুর বি-
বরণ কিঞ্চিৎ বিবর্তন করিয়াছেন। বিবর্তন আ-
বর্তন। তিনি এতদ্বা বড় দূর। তিনি, উল্লেখ
লোকের অর্থ ৩। ৪ মধ্যমিক আমলা করিয়া

কেদার উল্লেখযোগ্য। এম এ এম
উল্লেখযোগ্য বিদ্যালয় হওয়া কঠিন হয় না।
১২ ফাল্গুন ১২৬২।

বেনী বাবু নিযুক্ত হওয়া আমাদের
অতিশয় পরিচয়। এম এ এম
উল্লেখযোগ্য বিদ্যালয় হওয়া কঠিন হয় না।
১২ ফাল্গুন ১২৬২।

বেনীপুর

সামান্যর জীবিত সোমপ্রকাশ

মহাশয়

বি, এ, এম, এ, উপাধি

৩০ টি কলকাতা

সম্পাদক মহাশয়!—
হয় জন বাবুলি হার এবং
আপ হইয়াছেন তিনি।
একাদ করিয়াছেন আমায়
অনুভব করিয়াছি কিছু
সকলেই নিরাশদের উল্লেখ
হা না লিখিয়া কানি বা
মহাশয় লিখিয়াছেন।
ত অধ্যক্ষ করেন না।
নিবর্তন আমায় এতদ্বা
করিয়াছেন হইলেই তাঁহা
ত শিক্ষা প্রদত্তেও জলা
ব এবং এ উপাধিধারী।
তিক্ষিত বহুদীন হইয়া
ত আমলাজাত ও বিদ্যার
পিকার আমায় হইতে পারেন সেই
বহাশয়। এতদ্বা করিয়া বো কি
পুটি মেজিতে ৩। ৪ বেত
জাল বিজ্ঞতা কিতে আর
হউন আর ৩। ৪ হউন
জন, কেদার ১০০ শত
বাবু বা কেদার ১০০ শত
উল্লেখযোগ্য

বঙ্গদেশের বাহাদুর নবাব হুইয়েন, তাঁর
 দিগের বাহাদুর হুইয়েন হুইয়েন :

স্বদেশীয় ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, শূদ্র, বৌদ্ধ, খ্রীষ্টান, মুসলমান, জৈন, পারস্য, ইত্যাদি সকল সম্প্রদায়ের লোকেরা এই সভায় যোগ দিয়াছিলেন।

এই আবেদনকারীকে পূর্ণ মতি। যেকোনো ক্ষেত্রে
 আবেদনকারীকে পূর্ণ মতি। যেকোনো ক্ষেত্রে
 আবেদনকারীকে পূর্ণ মতি। যেকোনো ক্ষেত্রে

সামপ্রকাশ

সংবাদ পত্রিকা

২১ সংখ্যা।

{ সন ১২৬৩ । ২৫এ চৈত্র । ই. ১৮৬৩ । ৬ই এপ্রেল }

বার্ষিক মূল্য ১ টাকা।
বার্ষিক অংশ ১০ টাকা।

বিজ্ঞাপন।

ঐযুক্ত শ্রীমান চট্টোপাধ্যায় কবি-
ব্রহ্মসমাজের তালিকাভুক্ত কৃত্ত বাসবদত্তার
স্বত্বাধিকারী নথিয়া আপত্তি করিয়াছেন, যদি
তিনি এক মাসের মধ্যে আবশ্যিক প্রমাণ
পত্রের দ্বারা সে মন্তব্য সম্পাদকের নিকট
বা পণ্ডিত ইন্দ্রচন্দ্র বিদ্যাসাগর মহোদয়ের
নিকট উক্ত স্বত্ব প্রমাণ করিতে পারেন, তাহা
হইলে উহা উহাকে প্রদান করা হইবেক
নতুবা উহার সঙ্গে তাঁহার কিছুমাত্র সম্পর্ক
থাকিবে না ইতি—

৩৭২৫ চৈত্র
১২৬৩ সাল

ঐরাবদাস মেন
নাং বহরমপুর

বিজ্ঞাপন।

করিমপুর জিয়ার অধ্যাপ্তা বাউকেসারি
মহম্মদপুর নামে যে পুস্তক আছে
তাহা মরণপত্রে দেওয়া অথবা বিক্রয় করা
হইবে। ইহার সেই তালুক মরণপত্রে চই
বব অথবা ক্রয় করিবার ইচ্ছা আছে, তিনি
কলিকাতার জার্ডন কিনার কোম্পানির নিম্ন
৩৩ আবেদন করিলে সবিবেক ইচ্ছা অনুসারে
পারিবে।

সামপ্রকাশ।

২৫এ চৈত্র ১২৬৩

আমরা শুনিয়া জানিতে হইলাম,
অবনীশ্বরের যে সকল দরিদ্র ব্যক্তির
হি দায়ে সর্বস্বত্ব হইয়াছে, হাই কোর্টের
জজ বাবু শত্ৰুনাথ পণ্ডিত উদ্যোগী হইয়া
আজকের মাসব্যাপী চালা করিয়াছেন।

আজকের মাসব্যাপী চালা করিয়াছেন।

টাকাস টাকা দিয়াছেন। কে কত
দিয়াছেন, তাহার কথা আমাদের হস্ত
গত হয় নাই। এই নিমিত্ত আমরা তাহা
পাঠকগণের গোঁচর করিতে পারিলাম
না। এ দান যে অধিকতর প্রশংসনীয়,
তাহা বলা বাহুল্য। শুধু গেল শত্ৰুনাথ
বাবু ৫০০ টাকা দান করিয়াছেন। তিনি
এই ৫০০ টাকা দিয়া যে যশ ও পুণ্য অর্জন
করিলেন, কোন পথে ৫০০০ টাকা
ব্যয় করিয়াও তালা পারিতেন না।

৩০১

অনুরেবল মি. জে. আরকিন সাহেব
বোম্বাইয়ের কল হওয়াতে বিশ্ব বিদ্যালয়-
য়ের সহকারী সভাপতি (বইস চান্সেল-
রের) পদ পূর্ণ হয়। সমাচারপত্রসম্পাদকের
এ পদে আপনাদিগের মনো-
মত লোক নিয়োজিত করিবার নিমিত্ত
বাধ্য হইয়াছিলেন। কেহ সর চার্লস
টুবিলায়নকে, কেহ গবর্নর জেনারলের
কৌন্সিল সভার ব্যবস্থাপক সভা অনুরেবল
সম্মত মেইন সাহেবকে, কেহ প্রসিদ্ধ ডাক্তার
ডক সাহেবকে এই পদে বরণ করিয়া
ছিলেন। একপক্ষের গবর্নমেন্ট কৃত নি-
য়োগ দ্বারা সকল পক্ষের মনোরঞ্জন হওয়া
কঠিন। কিন্তু গবর্নমেন্ট যে ব্যক্তিকে তৎ-
পদে নিয়োজিত করিয়াছেন, বোধ হয়,
২।১ জন ব্যক্তিরকে সকল পক্ষেরই
তাহাতে সন্তোষ জন্মিয়াছে। মেইন সা-
হেব সেই পদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন।

লাভ, বিদ্যা, বুদ্ধি ও কল্যাণ
কেহই ছান করেন। কিন্তু কেহই
কে আমরা প্রাধান্য প্রদান করিয়া
তাহার কারণ এই, সর চার্লস
য়ন ও ডক সাহেবের এক এক
দোষ আছে। বিশ্ব বিদ্যালয়
সেই দোষ অনর্থক নিমিত্ত হইতে পারে।
চার্লস টুবিলায়ন জন্মজন্ম
তঃ ৩০ মাসের ব্যবসায় তাহাকে
অনুরেবল করিবার প্রথা প্রবর্তিত
বার চেতন আছেন। তাঁহার বিশ্ব
লয় সম্পর্ক হইলে এই বিষয়ে
বিষয় উপস্থিত হইয়া উঠিত।
ব খুঁট খুঁটে মন্তব্য। তাঁহার বিশ্ব
লয় সন্তুষ্ট হইলে সন্তোষ কান্ড
সম্পন্ন হওয়া সম্ভাবিত নয়।
ব তাঁহাদিগের মায় কোম বিবেচনা
হেন। তিনি অপকল্যাণ চিন্তে
করিয়া সন্তোষ বিবেচনা
করিতে সন্তোষ হইবে সন্দেহ নাই।

৩০২

মহম্মদ মসিন ও মাদরাসা কালেক্টর

মাদরাসা কালেক্টর অধ্যক্ষ মি. সা-
হেব জগন্নাথ মহম্মদ মসিন
উঠাইয়া দিবার প্রস্তাব করিয়াছেন। তিনি
বলেন আরবী ও পারসী ভাষা শিক্ষার্থী
লিকাতায় এক মাত্র বিদ্যালয় থাকিবে
যথেষ্ট হইবে। মৌলবী আবদুল
হুসেন মাদরাসা খতিয়ান

নলেন মহম্মদ মসিন আরবী ভাষার অনু-
ধীন জনা নিজ নামে কালেক্স স্থাপন
করিয়া বিস্তর অর্থ দিয়া যান, এক্ষণে
সেই বিদ্যালয় উঠাইয়া দিলেন দাতার উ-
দ্দেশ্যের বিরুদ্ধ কার্য্য হইবে, গবর্ণমেন্ট
দ্বারা ও যুক্তি অনুসারে, এ কার্য্য করিতে
সম্মত হইল না। মৌলবী আবদুল লতিফ
এই প্রদর্শন করিয়াছেন, তাহা সহ
ধন্য করা যায় না বটে, কিন্তু যদি অ-
ন্য কার্য্য দেখা যায়, তাহা অধঃপর
করা ও প্রণীত হইয়া। মহম্মদ মসিন
লোকের উৎসাহার্থে অর্থ দান করিয়া
করিয়াছেন। এ কার্য্য দ্বারা অধিকতর উ-
ৎসাহ সত্তাবনা আছে, তাহা বিবরণে
সেই প্রদর্শন হইলে তাহার অধীতি
অসম্ভব সত্তাবনা কি? এই অর্থ যদি সা-
ধারণ শিক্ষার্থ প্রদত্ত হয়, দেশের অধি-
কতর উপকার হইবে, তাহা হইলে তাহার
অধিকতর প্রীতি না জন্মিবে কেন? তবে
গবর্ণমেন্ট এই টাকা শিক্ষা কার্য্যে না দিয়া
কার্য্য ব্যর্থ করেন, তাহা হই-
লে লতিফ যে আপত্তি করিতে
হেন, তাহা অবশ্যই আদরনীয় হইবে।

গণনা করিয়া যদি কার্য্যাকা-
র্য্য দেখা যায়, তাহা হইলে আমা-
দিগের মতে কেবল মহম্মদ মসিনের
কাজের কেন মাদরাসা উঠাইয়া দেওয়াও
নিষেধ। এই উত্তর কালেক্স হইতে এ-
পর্য্যন্ত মাদরাসার কোন উপকার হয় নাই,
হইবেও এই একপ সত্তাবনা নাই। কয়জন
মুসলিম হইল এই বিদ্যালয় হইতে বা-
হির হইয়া নিজে যশোলাভ ও দেশের
উপকার সাধন করিয়াছেন? আরবী ভাষা
মুসলমানদিগের কেবল ধর্ম্মার্থ শিক্ষা করা,
এই ভাষার কোরাণ লিখিত আছে বলিয়া
তাঁহারা তাহা শিক্ষা করেন। এই ভাষা
ভারতবর্ষের ভাষা নহে। মুসলমানদিগের

না নাই। সংস্কৃত ভাষা হইতে যেমন ভারত
বর্ষের যাবতীয় মুতন ভাষা উৎপন্ন হইয়া
ছে, আরবী হইতে কি সংস্কৃত কোন
মুতন ভাষা উৎপন্ন হইয়াছে? উহার দ্বারা
কি কোন ভাষার উন্নতি সাধন সত্তাবনা
আছে? কলিকাতা এক্ষণে এ দেশবাসী মু-
সলমানেরা বাকালি হইয়া পড়িয়াছেন।
তাহাদিগের ইংরাজী ও বাকালি উভয়
ভাষা শিক্ষা করিলে বরূপ উপকার দর্শি-
বার সত্তাবনা আছে, আরবী ও পারসী
ভাষা শিক্ষায় তাহার। সংশয় এক্ষণে
উপকার সত্তাবনা নাই। এক্ষণে মাদরাসার
প্রতিভার ৩০,২০০ ও মহম্মদ মসিনে
৩০,৭১২ টাকা ব্যয় হইতেছে। এই এক
লক্ষ টাকা কি অন্য প্রকারে ব্যয় করিলে
অধিক উপকার হয় না? এই এক লক্ষ
টাকা প্রতিবৎসর সাধারণ শিক্ষাকার্য্যে
ব্যয়িত হইলে মহত্তর উপকার দর্শিতে
পারে। তবে মুসলমানদিগের হস্ত
সাক্ষাৎ ও ইংরাজী শিক্ষার্থ কলিকাতা
হুল নামে যে দুখটি আছে উল্লিখিত হু-
দন হইতে কিছু অর্থ লইয়া উৎকৃষ্ট
করিয়া তদুপা উচিত। পারসী ও আরবী
ভাষা এক কালে উঠিয়া যার আমাদেবর এ-
কপ অভিজ্ঞত নহে। বিশ্ববিদ্যালয়ে যদি
এই দুই ভাষার এক এক জন অধ্যাপক হয়
তাহা হইলেই চরিতার্থতা হইল। এই
দুটি বিদেশীয় ভাষার জন্য এত ব্যয় ও
এত আড়ম্বরের কোন প্রয়োজন নাই।

বেলা।

বঙ্গদেশীয় গবর্ণমেন্টের সেক্রেটারি
গেজেটে প্রকাশ করিয়াছেন, ১৮৬৩ অব্দের
জানুয়ারি মাসে আলীপুরে লেপ্টেনেন্ট গব-
র্ণরের বাটীর সম্মুখে কৃষি জাতীয় ভ্রম
প্রদর্শনার্থ একটা মেলা হইবে। গবর্ণমে-
ন্টের আয়োজনে কৃষিসমাজ এই বিষয়ে সা-
হায্য করিতে সম্মত হইয়াছেন। ইহা

দিন লিখিত ব্যক্তির এই সত্যের অস্বাভাবিক
বিশিষ্ট হইবে।

এ প্রোটি সারহেব।
ব্রিগেডিয়ার জেনারেল সাউদান, সি বি।
সি, এক মর্টে মর্স।
সি পি হব মোস।
অনরেবল এ. ইডেন।
লেপ্টেনেন্ট কর্ণেল এচ, সি, জেমস।
টি অগুর্সন এম, ডি।
জে. বেক উইথ।
ডব্লিউ. জাওয়ার্থ।
ডগলাস স্ট্র্যাট।
এস, পি. প্রিকিথ।
বাবু এসসকুমার ঠাকুর।
রামগোপাল ঘোষ।
মৌলবী আবদুল লতিফ।

গো. মেধ, মহিব, পল্লী, ও অন্য অন্য
পোষিত রক্ত, কৃষির যন্ত্র ও অস্ত্র, ও মাঝা
প্রকার কৃষিকাজ জবা প্রদর্শিত ও উৎ-
পন্ন তাহা বিক্রীত হইবে। আমাদিগের
দেশের লোকের বিষয় বিশেষে বিলক্ষণ
জিহ্বা আছে। উহা যদি এই বিষয়ে প্রদ-
র্শিত হয়, এক্ষণের অনেক বিদ্যা উৎকর্ষ
লাভ করিতে পারে। আমাদিগের দেশে
কৃষি সাধন সেই আচ্ছাদিত সময়ের লক্ষণ
রহিয়াছে। সেই অস্থি চর্চাবশিষ্ট বলক
রহিয়াছে। সেই প্রম কাতর কীর্জীবী কৃষক
রহিয়াছে। প্রতিযোগিতা হইলে এই
সকল বিষয়ে উন্নতি হইবার বিলক্ষণ
সত্তাবনা আছে। আমাদিগের ইচ্ছা এই
সকল জবা সংগ্রহ ও কৃষি প্রভৃতির উ-
ৎকর্ষ সাধন জন্য এক ওকটি সভা হয়।
জমিদারেরা কৃষিকার্য্যের উন্নতি সাধনার্থ
কেমন উৎসাহ দেন, এই দ্বারে তাহার
রীতি হইবে।

বীতন সাহেব কলিকাতা বিলের প্রস্তাব
করিয়া লোকের যেমন বিরাগ ভাজন হই-
য়াছিলেন, এই সকল কার্য্য দ্বারা তে-
মাদের মনোভাব পরিবর্তিত হইয়াছে। আমাদি

রুড্রাঙ্গ অমরা পাঠক বেল নগর
স্থিত কবিগা (সতেন্দি, কঁ. দাং) আ
১ উৎকর্ষ পরীক্ষা করুন।
নীক্ষা করিবার পূর্বই আর
উহার এই একটা উৎকর্ষের
ন করিতেছি। য ইংলিস্থান
র প্রতি বিবেচ্য একাংশ করি

প্রথমে এই বলিয়া আবেগপূর্ণ
যে কলিক তাগ ৩০ জন ইউনি
১৮ জন মাত্র এদেশী। অবৈতনিক
নক্টেট আছেন, তাহাচ এদেশী। বরদা
র সংখ্যাই অধিক, অতএব সংখ্যা সমান
করিলে জটিল (বিচারপতিদিগের)
গা দ্বারা কার্য নির্বাহের যে প্রস্তাব
না হইয়াছে, তাহা সঙ্গত হইতেছে না।
পরে, জটিল সত্তা দ্বারা সতাপতি
৩ সহকারী সতাপতি নিরোগের যে প্র
দান করা হইয়াছে, তাহারিহিত করিয়া
দর্শনমন্ডে উদ্যোগকে নিরোগিত করেন,
এই রূপ বিধি করাই উচিত। তাহা না
করিলে এই কর্মচারিদিগকে মনোমীত ক
রাব সময়ে উক্তর জাতীয় জটিলদিগের
সম্পন্ন বিবাদ ও অন্যায় উপায় অবল
ম্বন করিয়া মত গ্রহণ চেষ্টা হওয়া অসম্ভা
বিত নয়। সত্তা এখানে ইংলণ্ডীয় মহা
বতার প্রতিনিধিগণের উৎকোচ দিয়া
সত্তা হইবার চেষ্টার বিষয় ইতিতে উল্লেখ
করিয়াছেন। সত্তা আরো বলেন, মিউনি
শিপাল সতাপতির হস্তে পুলিশের ভার
দেওয়া অনুচিত। উক্তর কথ্য করিচক গিয়া
তিনি কোন কথ্য সুচারুরূপে নির্বাহ করি
তে পারিবেন না। আর, সতাপতিক ২০০৬
৩ সহকারীকে ১০০০ টাকা বেতন দিলেই
পর্যাপ্ত হইবে। এই বেতনে একগণ উপ
যুক্ত বিজ্ঞানবিৎ লোক পাওয়া যাইতে
পারে; বিশেষতঃ ২০০০ টাকা এক জেলা
জজের বেতনের সমান।

কার্য প্রণালীর বিষয়ে সত্তা

ব করিয়াছেন, অতঃপাট জন জটিল
উপস্থিত না। বাকিলে জটিল সত্তার
কার্যাবল্য হইতে পা ববে না, একপ নিয়
ম করা কর্তব্য। অকিলের সমান্য কার্য
র তব সতাপতিব হাল না দিয়া সহকারী
সতাপতি ও সেক্রেটারীর চক্ষে দেওয়াই
কর্তব্য। সতাপতি নগরর অবস্থা দর্শন
বিবেচন। বাৎসরিক আয় ব্যয়ের উপরে
সেপ্টেম্বর গবর্নরের ক্ষমতা থাকা উচিত
নাহ, নগরর বর্ষা বিভাগের অবস্থা ও
অতএব অনুসারে সংযুক্ত অর্থব্যয় করা
কর্তব্য। কোকামেব কয়েক বর্ষের তাঁহারা
বনেন, কেট মরমাত্রেয় উপরে বাৎসরিক
আট টাকা কর ধার্য্যন করিয়া জবোর
মূল্য ধরিয়া কবিলে তব হয়। অর্থাৎ
চুই শত অথবা অধিক টাকার দোকানে
আট টাকা ও তাহার মানে তিন টাকা
করা কর্তব্য। পাইলট, কড়, তরকারী
ওলা প্রভৃতির উপর কর ধার্য্য করা স
তার নিত্য অনতিমত। এবিধের আমরা
বাংলা বলিয়াহিনাম, তাঁহারাও সেইরূপ
কহিয়াছেন।

বাটীর কর একগণ বাৎসরিক সতাপতি
তাহার শতকরা সাড়ে সাত টাকা লওয়া
হইয়া থাকে। বিলে মল টাকা পর্য্য
ন্ত কবিবার প্রস্তাব হইয়াছে। সত্তা।
স্পর্ধাতিধানে ইহার প্রতিবাদ করিয়াছে
ন। গত বৎসর যে কমিসন নিযুক্ত হইয়া
হিলেন, তাঁহারা যখন শতকরা সাড়ে সাত
টাকা শেষ সীমা বলিয়া নির্দেশ ক
রিয়াছিলেন, তখন আর বৃদ্ধি করা যুক্তি
সিদ্ধ নহে। বিলের এক মলে লিখিত হই
য়াছে বাটীর নিকটে যে পতিত স্থান
থাকিবে তাহার কর দিতে হইবে। এই প
তিতি স্থান কাহাকে বলে? যদি জমদ অ
থবা উদ্যান উহার অর্থ হয়, তাহার কর
লওয়া অনায়া, উহার দ্বারা অধিকারীকে
হই একাধে করিবার করা হইবে। অপর,

তবে কি একাধে সর্বত্র এক প্রকার তড়া ল
ওয়া বিধায় হইবে? সত্তা এই নিমিত্ত
প্রস্তাব করিয়াছেন যে অস্থান চুই জন
জটিল করবে। একজন বিশেষ কর্মচারী
বচকে সমুদায় দর্শন করিয়া স্থান ভেদে
কর ভেদ করেন। সত্তা আরো বলেন, ধর্ম্মা
লগের নাম 'হিন্দুদিগের হস্তা কালে থাকি
বার ধর্ম্ম (গঙ্গাদেবী ধর্ম্ম) প্রভৃতির কর
ওনা উচিত না। এখানে মুসলমানদিগের
কবর স্থানের এই রূপ কর মুক্তি প্রার্থনা
করা সত্তার উচিত ছিল। মিউনিসিপাল
বিলে পূর্বা ২ টির আর্থক কর লইবার
প্রস্তাব হইয়াছে, সত্তা তাহার প্রতিবাদ
করিয়াছেন। তাঁহারা বলেন তাহ হইলে
তড়াগীরা বাটী করিয়া মূলধন বিনিয়োগে
র ব্যাঘাত জন্মিবে। কোন ব্যক্তি অনুপ
স্থিত তড়াব লোতে আশ্রয় কর দিয়া কতি
সহা করিবেন? পরঃ প্রণালীর বিষয়ে সত্তা
বলেন হিন্দুরা এ জল ব্যবহার করিতে পা
রেন না। অতএব তাঁহাদিগের নিকটে
অন্য অন্য প্রণালীর ন্যায় সমান কর লওয়া
অনায়, তাঁহা দর্শনের নিমিত্ত স্তম্ভন পুঙ্
রিণী প্রভৃতি ধনন করা ও পুণ্যতন পুঙ্
রিণীর সংস্কার করা উচিত।

ভূমির বিষয়ে সত্তা বলেন যদি এই
নির্বুদ্ধিয়ার কার্য্য করাই প্রোৎসাহ হয়,
তাহা হইলে এই টাকার ভারতবর্ষীয় ধনাগার
হইতে দেওয়া কর্তব্য। ভারতবর্ষের প্র
ধান রাজধানীর শোভার ও স্বাস্থ্যের জন্য
সাধারণ ধনাগার হইতে দেওয়া অনায়া
নহে। যদি ভারতবর্ষীয় গবর্নরকে আপত্তি
করেন তাহা হইলে কিয়দিকের জন্য
অর্থাৎ মত দিন এই কার্য্য সম্পূর্ণ না হয়,
তত দিনের জন্য বিশেষ কর লওয়া উচি
ত। এই কর সকল কর প্রণালীর নিকট
হইতে সমান রূপে লওয়া উচিত নহে যে
বিভাগের লোকদিগের অধিক উপকার
হইবে তাঁহারা এই টাকা দিবেন। মিউনি
শিপাল সত্তা যে কর করিয়াছেন, তাহা

পরিশোধ করিবার জন্য এতি বৎসর বেড় লক টাকা রাখা উচিত । নগর রাস্তা নিউনিসিপাল সম্পত্তি করা উচিত, তাহার বাণিজ্যের কর স্বরূপ যে টাকা আদায় হইবে তাহা নগরের শোভার জন্য ব্যয় করা আবশ্যিক । সত্য খালের নাসুল লইয়াও নিউনিসিপাল করের অন্তর্নিবেশিত করিতে কহিয়াছেন । ভারতবর্ষের গবর্ণমেন্টের খাল খননে যে ব্যয় হইয়াছে, সত্য ক্রমশঃ তাহার পরিশোধ করিতে প্রস্তুত আছেন । সত্য নগরের লোক সংখ্যা, জম ও বৃত্তুর হিসাব করিবার প্রস্তাবে অনুমোদন করিয়াছেন । তবে তাঁহারা বলেন একদে নীর জীলোকের নাম প্রকাশ করিবার রীতি না থাকিতে সংখ্যা ও বয়স দিলে পক্ষান্তর হইবে । আর, বৃত্তাসংবাদ আট দিনের মধ্যে না দিয়া ছয় সপ্তাহের মধ্যে দিবার নিয়ম করিলে ভাল হয়, এ সময়ের মধ্যে অশৌচাত্ত ও আত্মাতির গোলা শেষ হইয়া যাইবে । কয় দিতে বিলম্ব হইলে এক বিজ্ঞাপন দেওয়া হইবে । পাঁচ দিনের ভিতর না দিলে এক টাকা জরিমানা দিবার হইয়াছে । সত্য বা ন জরিমানা দিবার নিয়ম না করিয়া জুডিসিয়ালের উপর এই বিষয়ের বিবেচনার ভার দিলে ভাল হয় । কারণ একপ অনেক অনাথ জীলোক ও পিতামাতাহীন বালক আছে যে তাহারা আইন জানিতে পারে না, অতএব তাহাদিগের অর্থ সত্তা বিধেয় নয় । পুরাতন বাটী ভগ্ন করিবার পূর্বে অন্ততঃ দুই জন জুটি সের তাহা দর্শন করিতে যাওয়া কর্তব্য । কারণ ভগ্নবস্তুর অনেক অত্যাচার হয় । পরিশোধে সত্য কয় কিছু কমান্বয়ের অনুমোদন করিয়াছেন । তাঁহারা বলেন গাড়ী যোদ্ধা প্রভৃতি গণনা বাবতীর কর ধরিত্ত করিলে নগরবাসিন্দগকে লাভকরী আর ৩০ টাকা দিতে হইবে । এতদ্বিষ ইনকম ট্যাক্স আছে ।

ভারতবর্ষে সত্য সকল আপত্তি

উপস্থিত করিয়াছেন তাহার অধিকাংশই আমাদিগের অনুমোদিত, কেবল আমাদিগের কয়েকটি বিষয়ে তাঁহাদিগের অনুমোদন হইতে পারি নাই । নিউনিসিপাল প্রস্তাবে স্বাধীনতা আবশ্যিক কি না ? যদি স্বাধীনতা হয়, সত্যপতি মিরোরের তার গবর্ণমেন্টের হস্তে দেওয়া তাহার নিজস্ব বিবেচ্য সন্দেহ নাই । কোন বিষয়ের স্বত্বভোগ হইতে গেলে যদি প্রথমে কিছু গোলযোগ ও কষ্ট হইবার সম্ভাবনা থাকে, তাহা বা প্রকি আমরা তাহা ত্যাগ করিব ? সত্য সময়ে জুরির বিচার ভাল হয় না, তাহা বলায় কি এই প্রথা উঠাইয়া দেওয়া কর্তব্য ? তাহা আছে বলিয়া থানা কাহার উপেক্ষণীয় হয় ? সত্য ব্যয়ের বিষয়ে গবর্ণমেন্টের সম্পর্ক রহিত করিবার প্রস্তাব বহিরা অপরাধ মার গমন করিয়াছেন । এবিষয়ে গবর্ণমেন্টের কিছু কিছু ক্ষমতা থাকা উচিত, অন্যথা জেগী বিশেষের সুবিধা হেতু পঞ্জীকরণের উন্নতির প্রস্তাবে তাঁহারা যে পোল যোগের আশঙ্কা করিয়াছেন, তাহা মিথ্যা উচিত ।

জলের করের ভারতমা করাও আমাদিগের অতিমত নহে । পরমালা হইতে তাহাতে সকলেরই উপকার দর্শিবে সত্য হইবে । পান ব্যতিরেকে জলের কি অন্য ব্যবহার নাই ? তাহাতে রাস্তার কিস্তিবিধা হইবে না । ইউরোপীয়ের বিপর্যয়লায় জলই পান করেন ? সত্য সাধারণ রাজস্ব হইতে কলিকাতার উন্নতির নিমিত্ত টাকা দিবার যে প্রস্তাব করিয়াছেন, আমরা তাহারও অনুমোদনকাঃ নহি । কলিকাতা উপকার ভোগী হইবে সত্য রণে সে টাকা দিবেন কেন ? কেটি বিষয়ে সত্য অতি শিশুস্ব স্বাক্ষর করিয়াছেন । বৃত্ত জীলোকদিগের নষ্ট প্রকাশ করিলে ক্ষতি কি ? আমরা কি আপন আপন জীর নামে সম্পত্তি করিয়া ? জীলোকদিগের নামে কি মোকদ্দম হয় না ?

আমরা স্বাধীন মিলিত যে কার্য করিব সাধারণ জিয়ার তাহা করিবার জন্য সত্য আর আর ব্যক্তি মিথিয়ারে সম্পূর্ণ মুক্তিদিয়া ইংরাজী পক্ষ করে। যাক বলুন প্রকৃত বস্তুতঃ যদি কলিকাতার স্বার্থ উন্নতি করিতে চাওন, ভারতবর্ষের সত্য প্রকৃতি গ্রাহ করিবেন ।

পোলভের বিবরণ ।

এক জন ইংরাজ কবি বলিয়াছেন “ স্বাধীনতা লাভের ইচ্ছা এক ব্যক্তি আরম্ভ হইলে যত দূর পরাধীন হইতে কেন, শেষে নিঃসংশয় জয় লাভ হইবে এই স্বাধীনতা লাভার্থ যত প্রয়াস তে আরম্ভ হইয়াছে । ”

রাজ্য মহান রাষ্ট্র বিজয়ী হইতে কী তাহারা যে কয়েকটি উন্নতির প্রস্তাব করিবার চেষ্টা পান, তাহাও প্রকৃত স্বাধীন শাসন প্রণালীর আধার থাকিবার প্রস্তাবী প্রধান । যে যেসকল নের নাম কলঙ্কিত করিবার এক পাওয়া হইয়াছে, তিনি স্বাধীনতা জন প্রধান প্রতিশোধক হইলেন তৎকালে ইংরাজ রাজ্য মহাবীরের অভ্যুত্থানের প্রতিবাদ করেন, সেই ইংলণ্ড একদে স্বাধীনতা রণ স্বাধীনতার প্রধান বন্ধ হইয়াছেন মেক্সিকো ও জের্সি প্রভৃতি প্রদেশ স্বাধীন করিয়া স্বীকার করা এবং জীলোক ইটালিকে স্বাধীনতা প্রদান করা ইহার প্রধান দুইটা হল । অন্য পোলভের উক্ত প করিয়া আমরা এতৎ ওসকল প্রস্তুত হইয়াছি ।

আমরা পূর্বে এক ব্যক্তি পোলভের বিবরণে বিব. মিথিয়ারিণাম । তা পর উক্ত দেশে কয়েকটি বৃত্তী ইয়াছে । রুশিয় গবর্ণমেন্ট বন্দবান যুবকদিগকে বন্দপূর্বক

বিত্তোহাওয়ার চেষ্টা পাওয়াতে বিজ্ঞা
১। কি উভয়ভাষায় হয়। অর্থমতঃ ধন
গাণীদারেরা এই কার্যের অনুমো
দন নাই। ইংলণ্ড ও ক্রাফ্‌স্‌ভ
গাণীদারেরা এই বিজ্ঞাহ চেষ্টাকে আ
লিঙ্গী বলিয়া অস্বীকার করিয়া
কলেন। কিন্তু বিজ্ঞাহিরা ক্রমশঃ প্রবল
হইয়া উঠিতেছে। আর যাবতীর নগর
তেও সেনা 'মজ্ঞ ও যুদ্ধ সামগ্রী যাইতে
। সেনাপতি লাহুইকজ নামক একজন
যা যোদ্ধা (বিনি ১৮৩০ অব্দের যুদ্ধ
এই প্রকরণে) দেশের প্রধান শাসন
এবং সেনাপতি মারারোলকি প্রধান
সেনাপতি হইয়াছেন। ইহার মধ্যে নয়
হইয়া গিয়াছে। সকল যুদ্ধেই
প্রাণীয়েরা জয়লাভ করিয়াছে। তা
একান্ত রূপে সমুখ যুদ্ধ করিতেছে
১। কিন্তু বসন্ত থাকিয়া সুযোগ ক্রমে
যুদ্ধ স্থল বদল হইয়া যুদ্ধ করিতেছে।
শির সেনারা তাহাদিগের কিছুই করিয়া
টতে পারিতেছে না। সন্দেহ যে টেল
যাদিয়াছে, তাহারা জানা গেল বিজ্ঞা
এর ক্রমশঃ প্রবল ও বল বৃদ্ধি হইতে
যাদিগের আর একটা সুবিধা
গিছে। এমিরার যথেষ্টাচারী
হাফ নিবারণ বিষয়ে রুশিয়ার
সেনা 'সামগ্রী' হন, কিন্তু তাহাদের প্রজা
ইহাতে অসম্মত হইয়াছে। ইংলণ্ড,
ক্রাফ্‌স্‌ভ ও ইটালী ইহার প্রতিবাদ
করিয়াছেন। এতদ্বারা স্পষ্ট প্রতীয়মান
হইতেছে এমির গবর্ণমেন্ট যদি রুশিয়ার
এর কোন একান্ত সাহায্য দান করেন
তাহা হইলে ইংলণ্ড ও ক্রাফ্‌স্‌ভ ইতি
করিবেন সন্দেহ নাই।

অস্ত্রীয়া আলিয়ার পরিকল্পনা করিবেন
১। ইহা প্রকাশ করিয়াছেন। ইংলান্ড
কুর্জকে সিংহাসন করিয়াছেন।
একান্ত করে, স্পার্ট আলেক
হইয়া নিজ জাতি কনট্রা

নকে উক্ত দেশের স্বাধীন রাজা করিয়া
দ্বার প্রস্তাব করিয়াছেন। এ সংবাদ
২। কি সত্য হয়; আর, রুশির গবর্ণমেন্ট
১৮৩৫ অব্দের সন্ধির ম্যায় যদি ইহার অ
নুষ্ঠান না করেন, তাহা হইলে পোলাণ্ড
নিঃসংশয় পুনর্বার স্বাধীন হইবে। বিশেষ
বৎসর সত্য জর্জনি, যুদ্ধপ্রিয় ও উদারায়
তুশ, এবং স্বাধীন ইংলণ্ডের যাবতীর
কে কে তাহাদিগের শুভাকাঙ্ক্ষী হইয়াছে
ন বাহা হউক, রুশির গবর্ণমেন্টের কর্তৃ
ব্যক্তিগণেরা ক্ষিপ্র বিনীত ও মজ্ঞ ভাব
অপন্ন করেন। আসিয়ার বন্য জাতিদি
গণে সত্য করা উক্ত দেশীয় গবর্ণমেন্টের
পক্ষে সহজ বটে, কিন্তু তাহারা পরাক্রান্ত
মত, লোকদিগের মনোরঞ্জন করিতে পা
রেন না। পোলাণ্ড স্বাধীন হইলে জর্জনির
পক্ষে সবিশেষ উপকার ঘনিষ্ঠর সত্তাব
না থাকে। তখন আর রুশিয়ার ইচ্ছা
করিলেই জর্জনি আক্রমণ করিতে সমর্থ
হইবে না। অতএব জর্জনির পোলাণ্ড
সাহায্য দান করা সবিশেষ আবশ্যিক।
পোলাণ্ডের স্বাধীনতা জর্জনির রক্ষার
উপায় আমরা নিঃসন্দেহরূপে বলিতে
পারি, উক্ত দেশ স্বাধীন ও রুশিয়ার অস
তার হ্রাস হইলে সহস্রাব্দ জর্জনি ইটা
লির মত স্বাধীন ও এক জাতিসাধারণ
গবর্ণমেন্টের অধীন হইতে পারিবে।

ইউরাসিয়ার মিররের বক্ত পরিবর্ত।

আমরা ১। তা এ দেশের ইতিহাস
মিরর দেখিয়া পরিচোব লাভ করিলাম।
যদি এইমিররের মিররের লেখার মায়
এই প্রকরণে আর, নিঃসন্দেহরূপে নির্দেশ
করা হইত পারে, আমরা এক দিন তা
হার জ্ঞান ও জ্ঞানার্থ যে চেষ্টা পাইয়াছিলা
ম, তাহা বর্তমান রূপে হইয়াছে। তিনি
সকল তত্ত্ব স্বীকার না করিয়া, কিন্তু তিনি
আমাদিগের মত প্রকাশিত হইয়াছেন। তিনি
স্পার্টাকেই নির্দেশিয়াছেন, আরও (কিন্তু

কর্তব্য মাসের) নির্দিষ্ট তাহার জ্ঞান
নাই। আমরা যে বরাবর বাহ্য আক্রমণের
প্রতি বিবেচ্য একান্ত এবং ধর্মের নামে
উৎসব ক্রিয়ায় রূপা ব্যয় পীতকার যে প্র
তিবাদ করিয়া আসিতেছি, তিনি তাহা যু
ক্তি সহ বলিয়া স্বীকার করিয়া গিয়াছেন।
ধর্মকে সাংসারিক বিষয়ের সহিত মিশ্রিত
করিলে আমরা যে অনিষ্ট অশঙ্কা করিয়া
ছিলাম, তিনি তাহা সমূলক বলিয়া স্বীকা
র করিয়াছেন। ধর্মকে আমোদ এমোদে
পণ্য বসিত করিলে তাহার মনুষ্য ও উদার
ধর্মে না বলিয়া আমরা যে দচনোপন্যাস
করিয়াছিলাম, তিনি তাহা যুক্তিসহ বলিয়া
প্রমাণ করিয়াছেন। তবে আর তাহার স
হিত আমাদিগের মতের অমৈত্রিকা কি?
তাহার যে অনুষ্ঠান আরম্ভ করিয়াছেন,
তাহা হইতে উল্লিখিত সহস্রাব্দ লোকগুলি
ঘটিবার সত্তাবনা আছে বলিয়াই আমরা
এক আপত্তি করিতেছি।

একটা বিষয়ে কেবল তাহাকে আনা
দিগের মতের অনুমোদনকারী দেখা যা
ইতেছে না। সে অনুমোদনের কারণ আ
মাদিগের এই বোধ হয়, সে বিষয়ে তিনি
এখনও পর্যাপ্ত আমাদিগের অতিশয়
বুদ্ধিতে পারেন নাই। তিনি মনে করিয়া
ছেন, আমরা সকলকে এই উপদেশ দি
তেছি যে কেহ ধর্মকে সংসার সহজে না
আনিয়া কেবল মনোমধ্যে রাখেন। আনা
বিধের সে অতিশয় মত। ধর্মকে যদি
সংসার সহজে না আনা যায়, তাহারা জন
তের কি উন্নতি সত্তাবনা আছে? ত্রাঙ্গ
ধর্মকে যে সংসার সহজে আনিতে হইবে,
তদ্বিধের সংসার কি? তবে ত্রাঙ্গেরা যে
প্রকার এক পুনঃপ্রতি অনুষ্ঠান সৃষ্টি করিয়া
সংসার সহজে আনিতে চাহিতেছেন, আ
মরা সেভাবে আনিতে চাহিতেছি না।
আমাদিগের মত এই, ত্রাঙ্গধর্ম মানুষের
যাবতীর কার্যের সাশনকর্তা স্বরূপ হই
বেন, মানুষকে তাহার আত্মানুসারী হইয়া

বাংলায় কাজ করিতে হইবে ; মানুষের
বন্ধন যে কার্যে প্রযুক্তি জড়িত, তখনই
তাহাকে তাবিত্ত হইবে ত্রাণার্থ তাঁহার
সমুদে দণ্ডায়মান আছেন ; তাঁহার আ-
দর্শিত পথের অনুমাত্র অতিক্রম করিলে ১২
কণাৎ বণ্ডভাগী হইতে হইবে। এই চিন্তা
নিরন্তর মানুষের অন্তরে আগ্রহ : থাকিবে।
ইহাই কি একমাত্র প্রাথমিক দর : জগ-
তের সমুদায় লোকেরই যদি ধর্ম এই-
রূপ দৃঢ় ভক্তি থাকে, কেহ যদি প্রাণ-
ভেদে ধর্মপথ পরিত্যাগ না করে, পৃথিবী
কি স্বর্নভূলা হয় না ?

মিরর সম্পাদকের আর আর কথার
উত্তর দানে আমাদিগের ইচ্ছা নাই।
হুখা তর্ক ও উপহাস রসিকতা প্রদর্শন
করিয়া জল্পলাভ করিবার নিমিত্ত আমরা
এ বিচারে প্রবৃত্ত হই নাই, বতিপয় ত্রাণ
জাতি বশত : অকিঞ্চিৎকর অনর্থকুল
মুতনবিধ অনুষ্ঠান প্রবর্তিত করিয়া জগ-
তের অনিষ্ট সংঘর্ষে প্রবৃত্ত হইয়াছেন।
সেই জাতি নিরাকরণই আমাদিগের এই
বিচার প্রবৃত্তির কারণ।

বাহা হউক, আমরা ইণ্ডিয়ান মিররের
মত পরিবর্ত্ত দেখিয়া যেমন কষ্ট হইলাম,
তেমনি রাইয়ত ক্রেণ্ডের মুতন মনবেশ
ধারণ দেখিয়া দুঃখিত হইলাম। এই উত্তর
লানেই তাঁহার বাক্যেরও উত্তর দান
হইল। তাঁহার সম্প্রদায় হইবার নিমিত্ত
আর আমাদিগের স্বতন্ত্র রূপধূলি মাখিবার
ইচ্ছা নাই। “অনুষ্ঠান ধর্ম নয়” “অনু-
ষ্ঠান ধর্ম নয়” “অনুষ্ঠান ধর্ম নয়” আ-
মরা তিনবার তাঁহাকে শুনাইলাম, তিনি
এখন কান্ত হইল, আমরা নোম-বলধন
করিলাম।

উপসংহার স্থলে ইণ্ডিয়ান মিরর স-
ম্পাদককে আমাদিগের সন্নিবেশ অনু-
বোধ এই, তিনি যেন আর অনুচিত অনু-
কারী ত্রাণদিগের পক্ষ সমর্থন করি-
তাহাদিগকে প্রোৎসাহিত না করেন।

ত্রাণদিগের হুখা অনুষ্ঠানের আদ্যোদে-
কাল হরণ করিবার সময় নয়, তাঁহাদিগের
কক্ষে অনেক মহৎ কর্তব্য সাধনের তার
পতিত হইয়াছে। তাঁহারা সেই সকল
বিষয়ে মনোনিবেশ করুন।

এতদ্বেশ্বরদিগের সবলকার হইবার উপায়।

আমিষ ভোজন বিরোধিতা, আর হুগলী আ-
পত্তি করিয়া থাকেন। প্রথম, বাংসাহারে জি-
বাংসা প্রযুক্তি নিরুই প্রযুক্তির প্রবলতা হয়।
বিত্তীয়, উপচিকীর্ষা হস্তির কাণ্ডা হইয়া
থাকে। ইহার সংক্ষিপ্ত উত্তর এই, আমরা
জগতের আর বাবতীয় লোককে, আমিষ
ভোজী দেখিতে পাই, কেহ সংস্র কেহ বা
পশু পক্ষ্যাদির বাংস ভোজন করেন, আমি-
ষাশির সহিত নিরানিবাশির সংখ্যা করিলে
জগতে নিরানিবাশী নাই বলিলে অত্যুক্তি হয়
না। কিন্তু আমরা জগতে উপচিকীর্ষা হস্তির
হুগলী ও জিবাংসা হস্তির প্রবলতা দেখিতে
পাই না। তবে যে দেশ কাল, পাত্র ভেদে স-
বরে সময়ে জিবাংসা হস্তিকে বসবতী দেখা
যায়, তাহার কারণ স্বতন্ত্র। জগতের সমুদায়
লোকে আমিষ ভোজন ত্যাগ করিলেও একপ
দেখা বাইত। এখন আমাদিগের ক্রোধোদি
আছে, তখন উহার কারণের কি অসঙ্গতি
আছে? বাস্তব জবাব যে কারণ নয় এমনও
নয়। কোন কোন দ্রব্য আহার করিলে কানো
দ্রব্য হয়, আর কোন কোন দ্রব্য ভক্ষণ করিলে
ক্রোধ প্রতি হয়। এই নিয়মাত্মক বাংসাহা-
রে উর্জ্জ্বলতা, সাহস উদ্যোগশীলতা ও
উগ্রতাশির রহি হইয়া থাকে আর নিরানিষ
আহারে, তীক্ষ্ণতা, ক্রমসহনে কাঁপুতা, আল-
সা প্রযুক্তি প্রবল হয় (১) বিদ্যাভ্রমীলমাদির
জ্ঞানান্তিরেকে ইহার বহু ব্যতিক্রম লক্ষিত হ-
ইয়া থাকে। বিদ্যাচর্চার অসঙ্গতা হেতু তীক্ষ্ণ-
জাতিদিগের পঠিত। প্রত্যাবলি অতি দীচ
রক্তি সকলের প্রাচুর্য্য বৃদ্ধি হয়, আর উগ্র-
জাতীয় জাতিদিগের নিষ্ঠুরাচার প্রযুক্তি প্র-

(১) বাহু বস্তুর সহিত মানব প্রকৃতির
সম্বন্ধ বিচার প্রথম ভাগের ২০৪ ও ২০৫ পৃ-
ষ্ঠা দেখিবেন।

বল দেখা যায়। বিদ্যার উন্নতি হইলে উত্তরে-
রই : জগতিয় দোষ হুগলী হইতে থাকে। প-
শুভারে উগ্রজাতীয় জাতিদিগের প্রাচুর্য্য
হংস প্রকাশ পায়, তীক্ষ্ণ জাতিদিগের দোষ
প্রকাশ পায় না। ইহা এক প্রকার নিষ্ঠুর
বাক্য যে উগ্রপ্রকৃতিজাতিরা বিদ্যার উন্নতি
বেকপ উদ্যোগ, দয়া, বিশ্বভ্রাতৃত্ব প্রভৃতি
উদ্যোগে বিভ্রান্ত হইয়া, বহু প্রকৃতি
হু জাতিরা লোকপন্ন। (২) পূর্বে উক্ত
ইয়াছে যে উত্তিম অপেক্ষা আমিষে অধিক
র উগ্র পদার্থ আছে। সত্যাবস্থায়, যখন
জাতীয় জাতিরা অধিকতর দয়া, ক্রম, প্রেম
শির পরিচয় প্রদান করিয়া থাকে, আর উত্তিম
অপেক্ষা বাংসে বহন উগ্র কর পদার্থ প্রযুক্তি-
তর আছে প্রকাশ হইয়াছে, তখন জাতীয়
র প্রকৃতি পাত প্রকৃতিহু এতদ্বেশ্বরদিগের অ-
পরিমিত আমিষ ভক্ষণ করিলে অধিক দা-
রা যে অধিক ইষ্টলাভ হইবে তদ্বিতরে লোক-
হ কি? ৩০৭

একদম আমরা ব্যারানের আকর্ষণ
প্রদর্শন ও গুণগণনে প্রবৃত্ত হইলাম। প্রাথমিক
ও বাংসগোষ্ঠী আমাদিগের শারীরিক বাল্য
মুখ্য কারণ বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে। এ-
নিত ও বাংসগোষ্ঠীর অবস্থানবিশ্বন আমা-
দের শরীর সবল বা দুর্বল হইয়া থাকে।

ত হইবে এবং বাংসগোষ্ঠী বেকপ পু-
হইবে তদ্ব্যসারে শারীরিক বল হুগলী
এতদ্বিতরে : সুবিখ্যাত ভাষ্যের (৩) আশু হুগলী
সাহেব বাহা বলেন তাহার কোন কোন অংশ
পাঠকদিগের গোচরার্থ আমরা নিম্নে উদ্ধৃত
করিলাম। তিনি বলেন “সর্বত্র বাংসগোষ্ঠীর
সকালন দ্বারা আমরা জীবন ধারণ করি-
তেছি। ৩০৮ সকল বাংসগোষ্ঠী দ্বারা নিবৃত্ত

(২) বহু প্রকৃতিহু লোকে সমস্ত
চর উগ্রতর গুণে বিভ্রান্ত হয় না বলিয়া উ-
গ্রপ্রকৃতিবাহিত ব্যক্তির গুণপ্রকৃতি অসমর্থ
ইয়া তাহার দোষ কীর্ণনে আশ্রয় লয়
করে।

(৩) তাঁহার নিরচিত কিংবদন্তি
মার্যেট্ট হুগলী এও এতদ্বেশ্বরন, বহু
দেখিবেন।

প্রথমে প্রভৃতি জিরা সম্পাদিত হইতেছে, তাহার বহিঃকাল নিম্নে কাল স্থগিত। একে তাহা হইলে অবিলম্বে দৃষ্ট্য উপস্থিত হয়। মাংসপেশীর সহায়তা ব্যতিরেকে বহুশ্যের দৃঢ়প্রতিজ্ঞতা ও মানসিক উচ্চতর ভাব সকল কার্যে কখনই পরিণত হইতে পারে না। সন্ধান ও কল্প বিয়োগ এবং অন্যান্য ঘোরতর ক্রোধে পতিত হইয়া বহুশ্য মাংসপেশীর বল ব্যতিরেকে আর অন্তর বেদনা প্রকাশ করিতে সক্ষম হয় না। মাংসপেশীর সঞ্চালনেই আমরা শারীরিক বল প্রাপ্ত হই। কোন একটা মাংসপেশী পরিণত রূপে সঞ্চালিত হইলে তাহাতে অধিক পরিণত রক্তের জোতি প্রবাহিত হয়। সুতরাং তাহার অবস্থা প্রভৃতি স্থিতি হয়। পরি-
 সন্ধান নিবন্ধন কেবল মাংসপেশী স্থিতি প্রাপ্ত হয় এবং নহে, রক্তেরও পরিণাম প্রাপ্ত হয়। মাংসপেশীর মধ্যে রক্তাধার সকল সংস্থাপিত রহিয়াছে, মাংসপেশীর সঞ্চালনে সেই সকল রক্তাধার হইতে শোণিত নির্গত হইয়া বেগবতী জোতিবতী সন্ধ্যায় শরীরস্থ নানা স্থানে প্রবাহিত হয়। মাংসপেশী ও রক্ত এই দুই পদার্থের পরস্পর যোগ যেমন প্রত্যেক স্থানেই হয় সেজন্য অন্য কোন বস্তুতে নয়নগোচর হয় না।
 শরীর সঞ্চালিত হইলে শরীর মধ্যে রক্ত ও বেগ ও পরিণাম স্থিতি হয়। রক্ত প্রভৃতি পরিণাম স্থিতি হইলে যে যে স্থানে সঞ্চালিত হয় সেই সকল স্থান পূর্ণ হয়। পরিণাম করিলে রক্তের পুষ্টিসাধক কণার প্রাণ হয়। সেট কতি পূরণ করিবার জন্য অধিক পরিমাণে ভোজন করিতে হয়। সেই অতিরিক্ত আহার পবিপাক করিবার জন্য কুখা ও পাকশক্তি হ্রাস হয়। সুতরাং শোণিত এই প্রকারে প্রাপ্ত হইয়া শরীরে শোণিত হইবে বলিয়া পরিণাম কালে আমাদিগের নিশ্বাস প্রবাহ স্থিতি হয়। এই রূপে শোণিত হইতে হইয়া শরীরস্থ সঞ্চিত অম্ল প্রভৃতি হ্রাস বল বীৰ্য প্রাপ্ত হয়। সুতরাং বহুশ্য অধিকতর পরিণাম পূর্ণক কার্য করিতে সক্ষম হয়।

পদ প্রভৃতি, বাহ্যিক, ব্যায়াম প্রভৃতি

নানা উপায় দ্বারা শরীর সঞ্চালিত হইয়া থাকে। ইহার মধ্যে বহুশ্যের দৃঢ়তা মাংসপেশী সঞ্চালনকে অধিকতর দৃঢ় হয়। শরীর বিধান বিধি পণ্ডিতেরা সুস্পষ্ট রূপে ইহার কারণ নির্দেশ করিয়াছেন। বিখ্যাত আণ্ড্রু কুথ সাহেব বলেন “পরিণাম কালে নানা প্রকারে বহুশ্যের সঞ্চালিত হইবে, তত তির তির মাংসপেশীর শোণিত বেগ স্থিতি হইবে সমস্ত মাংসপেশী সঞ্চালিত না হইলে বাহ্যিক কল্যাণের সম্ভাবনা থাকে না। শরীরের যে অঙ্গ পরিণাম করিবে কেবল সেই অঙ্গের মাংসপেশী সকল সঞ্চালিত হইবে। কিন্তু শরীরের এক এক নিম্নত সঞ্চালিত হইলে সেই অঙ্গের মাংসপেশী প্রাপ্ত ও দুর্বল হইয়া পড়ে কখন পরিণাম, কখন বিজ্ঞান এই নিয়মানুসারে মাংসপেশীদিগকে সঞ্চালিত করিলে শরীর সুস্থ ও বলিষ্ঠ হয়।” ব্যায়ামের অত্যাস ব্যায়াম কুথ সাহেবের এই সকল উপদেশ যে রূপ পালন করা হয়, অন্য কোন প্রকার শরীর পরিণাম দ্বারা সঞ্চালিত হয় না। বাহ্যিক কখন কখন আশঙ্কায় গমন করিয়াছেন তাহার আমাদিগের মতের পোষকতা করিবেন সন্দেহ নাই। এতেনে যে রীতির অনুসারে (১) ব্যায়াম করা হয় তাহাতে প্রাপ্ত কল লাভের সম্ভাবনা অল্প, প্রভৃতি কখন কখন অনিষ্ট হইয়া থাকে। কেবল শীত কালে না করিয়া, প্রতি দিবস প্রত্যবে—শীত কালে অধিক, গ্রীষ্ম ও বর্ষা কালে অল্প—ব্যায়াম করিলে আশাশ্রিত ইষ্ট ফল প্রাপ্ত হয়। উদাহরণ স্বরূপ একটা বিবরণ উল্লেখ করা বাইতেছে। এদেশের এক তরলোক বাল্যাবধি চতুর্দশ বৎসর বয়স্ক পণ্ডিত অত্যন্ত ক্লান্ত ও দুর্বল ছিলেন। ১৫ বৎসরের সময় তিনি ব্যায়াম আরম্ভ করিলেন। তিনি যে বৎসর কুস্তির আশঙ্কায় প্রবেশ করিয়াছিলেন তাহার পর বৎসরে তাহার শরীর এমন শীত ও সবল হইয়া উঠিল যেখান একটা বীরের মত বোধ হইতে লাগিল। তাহার অবস্থা হৃদয়

৪ বাঙ্গালিদিগের মধ্যে অত্যন্ত লোকে ব্যায়ামাত্ম্যাস করিয়া থাকেন, বাহ্যিক কুস্তি করেন তাহারি মধ্যে অনেককেই কেবল শীত কালে করেন।

সঙ্গে সঙ্গে, সাহস প্রবেশ ও বিলম্ব স্থিতি হইয়া উঠিল। এতেনে আর একটা উদাহরণ প্রদর্শন আবশ্যক হইল। এক ব্যক্তি বাল্যকাল অবধি শ্যাম অত্যাস করেন। ৮ বৎসর বয়স্ক কালে প্রায় বাঙ্গালী মাংসেরই শরীর লেগে হয়। কিন্তু উল্লিখিত ব্যক্তির অশীতি বৎসরেও যাবৎ প্রতি দৃষ্টি, কণ না করিয়া কেবল শরীরে প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে তাঁহাকে ৫০ বা ৫৫ বৎসরের অধিক বয়স বলিয়া বোধ হইত না। তিনি সেই পূর্ণ বয়সেও অল্প পরিমাণে কুস্তি করিতেন।

পরিণাম কালে চিত্তের প্রাণতা ও উৎসাহ থাকি অতিশয় আবশ্যক। আমাদিগের মনের অবস্থার প্রতি পরিণামের ফলাফল অনেক পরিমাণে নির্ভর করে। এ চিত্তবলে কুথ সাহেব বহু কথা বলিয়াছেন তাহা এতেনে উল্লেখ হইতেছে। “পরিণামের শুরু কল ভোজ্য কারণ আমাদিগের মানসে নিহিত আছে, তাহার প্রতি হতাশ হইয়া পরিণাম করিলে আমাদিগের শরীরকে প্রবল করা হয়। মাংসপেশী সকল মনের অধীন। মনের আশা বহন করিবার জন্য তাহারাই হইতে হইয়াছে। কুথ সাহেব এই মতপোষক একটা দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিয়াছেন। তিনি বলেন “মহা রণক্ষেত্রে যখন শত্রু উপস্থিত না থাকিত করানী সেনাগণ নির্যাস ও দুর্বল হইত। কিন্তু রুশিয়াদিগের ভোগ্যমান ভোগ্যদিগের কথ কুথের প্রবেশ করিয়া মাত্র তাহারা যেন কোথা হইতে রক্তন বস প্রাপ্ত হইত। কিন্তু পূর্বে তাহার যে সমস্ত গল্প বহন করিতে অত্যন্ত ক্লেশ বোধ করিত, পালন বদনে সেই সেই অঙ্গ শত্রু পুণ্ডিত মহাধেয়ে নিবেশ করিত।

বয়স্ক, বল, শরীরের অবস্থা এবং পূর্বাভাস, এ সমস্তের অনুসারে পরিণাম করা উচিত। এ একটা নিয়ম অবলম্বন করিবার কারণ কুথ সাহেব সুস্পষ্টরূপে লিখিয়াছেন। তিনি বলেন “শরীর অনবদ্য ৫ ও পূর্ণ হইতেছে: যখন কোন এক পরিণাম

৫ নিশ্বাস প্রবাহ অঙ্গ চালনাধি নিবন্ধন শরীরের কল এবং আহারাদি দ্বারা পূর্ণ হই থাকে।

এ মাংসের ব্যবসায়ের প্রত্যাহার হইয়া পুনর্বার
ব্যবসায়ের ব্যবসায়িক সভার অন্যতম সভার
আমদ এখণ করিয়াছেন ।

লসান বালন জয়ন্তিয়ার বিজ্ঞাপন
১৬ গণিত উত্তরোত্তর রেজিমেন্টের
টেন্ট লেগুটিন্ট আব, এন, বার্ট মনকে
আহত করিয়াছেন ।

উক্ত পত্র আরো বলেন লক্ষ্যেত লর্ড
নিউকম্বার নামে বীভূত একটি কালেক্ট অতিষ্ঠিত
হইবে ।

উক্ত পত্র আরো বলেন জিগুরার রাজা মারে।
কতকগুলি লোককে একত্র করিয়া গ্রাম
ও লুট করিয়াছেন ।

মকমলাইট বলেন আশামী ১লা এপ্রিল
গীর্জা মন্দিরে টে। গ্রাম সম্পূর্ণ হইবে ।

গুণাক নিউস বলেন ঢাকার প্রায় সমস্ত
চণ্ডাচ্ছন্ন গ্রাম অগ্নিদাহে ভস্মাৎ হইয়া গি-
য়াছে ।

২১এ টেত্র সুখবার ।

১১ দিনক বলেন লাকেনারাবের মর্ত্তক নি-
সতার সেক্রেটারি লগনে ৪০০০০ টাকা
করিয়াছেন ।

কীলি গেজেট বলেন বাজপতনার সমস্ত
খোলাখোলা নিহত হইয়াছে ।

উক্ত পত্র আরো বলেন কেও সোলাইটি
সভার যে কয়েক সভা ভারতবর্ষের বিষয় জানি-
বার জন্য ইংলণ্ড হইতে আনিয়াছেন, তাঁহারা
এখন আবার উপস্থিত হইয়াছেন ।

২৪এ বেত্রয়ারি পোলাডীতবা কলিহর-
গর লিখিত এক চুক্তি করা হইয়াছে । কলিহর,
কলিহরী নীলা পরিভাষণ পুরস্কার পলায়ন করি-
য়াছে ।

আলাহাবাদ গেজেট বলেন সাইগুর হইতে
সিদিংগপুর পর্যন্ত রেলপথে সম্পূর্ণ হইয়াছে ।
বিদ্যুৎ লাইন নির্মাণ নীল সেতু অবস্থায়
হইবে ।

২১এ টেত্র সুখবার ।

পোলাল রাও মাধক যে ব্যক্তিকে 'ব্রজোচ-
ক' হত্যাকারী বলিয়া খুঁজিয়া কড়া দণ্ড, তাঁহার
পরাধে কোন প্রমাণ ন। পাওয়াতে তাঁহাকে
চলিয়া হইয়াছে ।

লোসোটারের উপত্যকার রেলস ট্রান্সম-
বাহার জন্য পঞ্জাবের কৃষিকার্য সম্বন্ধে
বর্ণন হইয়াছেন । তাঁহার কীলি ও কৃষক
পক্ষে পুরস্কার দিবার ঘোষণাক্রিয় দিয়া-
। পুরস্কার দিবার তৃত্ব রক বে. ৩৭ করা হই-

তেছে । এতদ্ব্যতীত এক ব্যক্তি তত্ত্বাবধায়ক হই-
য়াছেন । উক্ত প্রদেশে বিলকণ নীল জমিতে-
ছে ; কিন্তু অধিক বিলকণ নদীয়া ও বন্দো-
বনের অধ্যাচারকারী নীলকর নাই ।

ভারতবর্ষ হইতে তুলা লইয়া বাউবার জন্য
এক কতানী কোম্পানি হইয়াছেন । তত্ত্বাবধায়ক
পর্মেন্ট ট. চামিগর সভারত্যা করিবেন । কয়েক
মাসাধি ভারতবর্ষের বিলকণ তুলা ফ্রান্সে যা-
ইতোছে । আবার দেখিব বর্ষা তুলা দিলে
কেনন না এ মোটা তুলা কল ।

নীলগিরি ত এক ১. ৩৫, ৭০২টি লিফোনা
হক আছে । তত্ত্বাবধায়ক অপরিতেও নীল বলেন
লক্ষ্যেত হকটি গ্রাম পাঁচ হস্ত উক্ত হইয়াছে ।
এই চাব বে. ৪৪ গ্রাম রক হইবে না । দার-
জি. ডেব লিফোনা হক সকলের কি হইল ?

মাস্ত্র জেন প্রধানতম বিচারালয়ের বিচার-
পাঠ্য 'ভারত' পর্মেন্টকে জানাইয়াছি-
লেন দ্বিতীয় প্রেরণ অধীন মাজিষ্ট্রেটরা আ-
ইনের মর্ম না বুঝিয়া গ্রাম সামান্য কারণে
অপরাধীদিগকে সেলিয়নে সমর্পণ করেন । অ-
তএব তাঁহারা বলেন যে পর্মেন্ট ৭ আইনের
১৯ ধারায় যে অর্চিহিত কর্মচারিগকে
অপরাধ ও অযোগ্যতার জন্য পদচ্যুত করিবার
কমতা তাঁহাদের হস্তে সমর্পণ করেন । পর্ম-
েন্ট ১৯ ধারার আবেদন গ্রাহ্য করিয়াছেন,
কিন্তু পদচ্যুত ব্যক্তিরা পর্মেন্টের নিকটে আ-
নীল করিতে পারিবেন । চিহ্নিতেরা কি জম
প্রদান রচিত

মাস্ত্র পর্মেন্ট মন বৎসরের জন্য ৪৫০
বিশ্বাসিত নিজে লিফোনা চাব করিবেন ।
অনেক কাকিকর ওয়াইন, কুর্স ও মতীয়ে
এই চাব করিয়াছেন ।

অযোগ্যতার অগত্যা নিবারণ করিবার একটি
ট্রেন উপায় উদ্ভাবিত হইয়াছে । সম্প্রতি এক
পলীগ্রামের কুপ একটি মৃত শিশুর দেহ লুট
করাতে তত্ত্বাবধায়ক চৌকিদার এক জন দীর্ঘ
যাবতীয় বিবরণ অবস্থায় দর্শনার্থ প্রেরণ করে ।
সেই দীর্ঘের লাকাল্লাবে এক বিধবা, মৃত
করাতে সে আপনাব চরিত্র হোয় আঁকায় করে
কিন্তু মস্তানটিকে বধ করিবার বিষয় আঁকায় করে
রাহ । তত্ত্বাবধায়ক বসিল সে মস্তানটির ক্রন্দ
ধ্বনি শ্রবণ করিয়াছিল । এই স্ত্রীলোকের মন
বৎস মেসায় হইয়াছে । তথাপি বিধবা বিবাহ
প্রচলিত হইতেছে না ।

মেকর বাঁও এতদ্ব্যতীত মাজিষ্ট্রেটদিগকে
লইয়া দেবান্নে যে উপনিবেশ করেন, তাঁহা

দিলেব গিনজা ও বিদ্যালয়ের জন্য পর্মেন্ট
কিকিৎ গ্রহ দিয়াছেন । সর জর্জ কুপার বলে-
ন তত্ত্বাবধায়ক অতিশয় সচরিত্র পর্মেন্ট
ওপরিহার ।

ক্রীট্র উত্তরোত্তর ও এতদ্ব্যতীতেরা ল-
কেনারাবের মজবুদিলেব সভারত্যা জন্য ১০৬৭
টাকা চাঁদ করিয়াছেন । নাজপুতনা হইতে
মকমলাইট ৮০০০ টাকা আনিয়াছে ।

সিকুর অম্ব 'ভ ভারতবর্ষ' মননের কাজী
মহম্মদ বেলাই, সেক্রেট গ্রহণ করাতে সেলি-
নে বিচার হইয়া 'ভ'হার ৫০০ টাকা জরিমানা
হইয়াছে ।

কলিকাতার কনিষ্ঠ মাজিষ্ট্রেট রবার্টস সাহেব
ব পুলিশে ডেপুটি অপরিতেও নীল বিচার
সময়ে মোহাম্মদ মাজক এক ব্যক্তি কে অনাগ্র ক-
বিলকণ করিয়া এই ব্যক্তি প্রধানতম বিচার-
লয়ে নার্মশ করিয়া ৬০০ টাকা ক্ষতি পূরণ পা-
ইয়াছে । সে রাণম অনাগ্র অধরোধন রক্তাণ্ড
এই, সে রাণ 'মস' পর্মেন্ট নামে এক স্ত্রী ল ক-
কে লিখা কলিতে চাঁদ, কিন্তু সে সমস্ত হয় না
উ । তথাপি গোনাগ মর্করা 'ভ'হার নিকটে
আমুপতা করিয়া, তাহাতে তত্ত্বাবধায়ক লিখা
হইয়া মোহাম্মদ পুলিশে প্রেরণ করে, বর্টস
তাহাকে কয়েক কবে 'কবে আশাদিগের বিচার
পতিয়া বর্ষা আইন অনুসারে কার্য করি-
লিখা করিবেন ?

২২এ টেত্র সুখবার ।

লাহোর জর্জ কল বলেন এক মন 'ভ'হার
দেবান্নের অনেক কর্ম করিয়াছে

মাস্ত্র টাইমস বলেন আলফা বন মো-
করা অধিবাসা বালক চত্যা হইতে ৫ টা
উৎসব দিগে বালকদিগকে অলঙ্কার পরাইয়া
শালাইয়া দিয়াছেন ।

ভারতবর্ষীয় পর্মেন্টের 'ভ'হার মধ্যে মন চা-
রলস উক্ত আলা দিয়াছেন প্রধানতম চি-
লকের প্রধান বিচার পাঁচ ও কনিষ্ঠ জাজ
সাতবৎসর অল্প এক বছরের বিদায় পা-
বেন । বিদায়ের বৎসরে তাহাদিগকে ৫০০০
১০০০ টাকা দেওয়া হইবে । 'ভ'হার ১০০০
ধের বিদায়ের বিষয় যে নিয়ম আছে তৎস-
মানে দেওয়া হইবে । অন্য অন্য 'ভ'হার আ-
ক যেতনে চিকিৎসকের সার্টিফিকেট দিয়া
পনম মাস বাৎসরিক মন সহস্র টাকা 'ভ'
নে বিদায় হইতে পারিবেন, উক্ত অধিক
কাল 'ভ'হারি থাকিলে কর্ম থাকিবেন । 'ভ'
শেব কার্যাত্মকে যে 'ভ'হার 'ভ'হার

অন্য সকলকে বিদায় দেওয়ার হাট । এদায়ের
কাল পোস্তমের সময় কাই, হালা পোস্তম পবি
পিত্ত হইবেন ।

ଆମେ ସାଧାରଣ ମଣିଷ ନୁହେଁ । ଆମେ ଏହି ମଣିଷ
 ଜାତିର ସଦସ୍ୟ । ଆମେ ଏହି ମଣିଷ ଜାତିର ଏକ
 ସଦସ୍ୟ । ଆମେ ଏହି ମଣିଷ ଜାତିର ଏକ
 ସଦସ୍ୟ । ଆମେ ଏହି ମଣିଷ ଜାତିର ଏକ

ধৰ্ম্মাৰ্থক বসেনন তে তিনিগ - চানল - ১৩
 মত ধৰ্ম্মেন হৈবত চন । তিনি মাৰত জাৰ্ম্মীক
 টম্বৰি এজ্জি ক'ৰ্ম্মেন, ১৩ ময় লিখিমা চন
 জীৱাব। না ধুৱায় মদ চানল উত্তক অ - ১৩
 মদ পত এধাৰ ন বন, অমাৰ কন ১৩
 লাঠীমানলী হুজ নীলকানব লেখ, অমাৰ ১৩
 ১৩ জিৱিকৰ্ম্মী নদ ১৩ হুজ হুজ ১৩
 ধাৰ্ম্মিক জীৱাব ১৩ হুজ হুজ ১৩

टाईमिंग एवं ट्रेडिंग एक दिन गन्ना गन्ना
 नदम एक दिन १०० टोनालोक काठे हटे
 कागज थपुड कतिउ हने। अनेक दाने एक
 वे कागज ओ थपुड थपुड हटैतेह

তিনি আসেন। নলেন যাঁসাজে ওলাউঠার
 আত্মজীবনী।

੨੭੬ ਏ. ੧ ਅੰਨਿਥਾਇ ।

१३ कला टाउमहाले कल गूल प्रकृति द्वा.
 लाभादने के स्थान के द्वारा हिल ।

ইংলিসমান বলেন ঐয় .৭০০০ টা হা মু-
দ্রার তুল্য জলগাঁ। হটেতে বে। বাইরে আশিত-
ছিল। দৈব.৭. উন্নয়ন। ও নিবন্ধের অধা
অধি লাগিয়া। সমুদ্র তত্ত্বাবধান হইয়াছে।

পাঠনা। হঠাৎ এক ব্যক্তি লিখিতাছেন।
 'এ বছর পাঠনা নগরে যে কপ তরানক
 অগ্নিকাণ্ড হইল, বাইঃডে, তাঃ প্রবণ করিলে
 অ.পনি চমকুত হইলেন। প্রঃ সভা হই এব-
 ল খটিক। সহকাঃ এ গা লিগিয়া ২০। ২৫
 খাম। বাঃী তঃনাগণ করিতেছে। ১৪ই টেঃ
 বেলঃ ৩ মিন খটিক সময় সঃঃ বাঃ। নগরে
 'খ লিগিয়া, বাঃনগর ছাঃ দাঃগাঃিয়া।

১ শিবদাসপুর এই 'ভবনী' স্থান একেবারে
ছািব খাঁর করিয়া। ঢোলিয়া'ছ। একটি রক্ত বিধবা
ও একটি বালক এবং একটি গরু অর্ধদেহ হই
রাছে। তাহা'দিগের জীবন রক্ষার বড় ভরসা
নাই।

এদেশের কুল ইনস্পেক্টর অধিকারী
সাহেব পাবনার কুল রক্ষার্থে চতুঃপাশ করিয়া
অত্রাঃ ইনডো বোম্বাঃ দেরী নবনির্মিত
খালিকাঃ বিদ্যালয়ের এবং এখানীর কএকটি বা-
লিকাঃ গার্লসঃ প্রদান করিয়া অত্রাঃ নন্দোব

প্রকাশ করিয়াছেন এবং বলিয়া বিখ্যাত, যে এই বালিকা বিদ্যালয়ের উন্নতি ও উন্নতি সাধন জন্য তিনি যথোচিত যত্নবান হইতেন।”

ইণ্ডিয়ান রিকার্ডস বলেন সাংবাদিক ন'ভেল
অকাল লওয়াতে বারু কেওরোচন চট্টোপা-
ধ্যায় বাংলাদেশের প্রতিিনিধি লিবিয় অডিটর
হইয়াছেন ।

દેઉલ્લાખીર મમાદાન

লগুন ১০ই ম'চ—সকল জে ম'জ টেব্রাম
কালগ্রামে গড়িত হইয়াছেন। ইংলণ্ডেশী
পোল গের বিবয়ে মধ্যস্থতা স্বাধা মীমাংসা
করিতে লগুন করিয়াছেন। তুল। অন্যান্য
মহার্জ টেব্রাম হ।

নউটরক ২৭৫ ফেব্রুৱাৰি—৩১:৩০ ব মে
বি। বাপান নদীৰ পদ শাৰে গমন কৰিয়া হু।
দক্ষিণাংশৰ মেমাৰা কেটিক ও অলিগাহাত
পৰ জিত উইয়াহু।

নিউইয়র্ক ২৮ এ কেব্রয়ারি—দ' কণাংশের
সন ১-কুবর্ণ আক্রমণ করিয়া উত্তরাংশের এক
খান কাছাকাছি অধিকার করিয়াছে। উত্তরাংশের
সমাপন নিউইয়র্ক এ স কবিয়া আসিয়াছে।
মতান্তর লিঙ্কলনের উপর উত্তর পাশের বি-
ভাগন লে, কমিগেন বিচ্ছেদ ভাব রুদ্ধ হইয়া
ক। স্ববর্ণের ৭২ টিকা প্রায়শঃ হইয়াছে।

১৯৪৮—মেইলযোগে চীন-বশ হটতে
মধ্যম আন্দোলন বিস্তারিত। টেবিল ও শাও-
ইঙে জয়লাভ করিয়াছে।

সেই টের বিক্ষিত সেনারা পুনর্বার পলা
 তিত হইয়াছে। পিছিন হইতে কোন সখ্য গা-
 লিয়া যায় নাই। জাপান খবরসেণ্টের যুদ্ধ সং-
 ক্রান্ত বিষয় দিন দিন উৎসাহ বৃদ্ধি কইতেছে।

ক্রিকে। ১১ই ফেব্রুয়ারি—সেনাপতি জ।
শ্রিটেক আপনাকে গোম্বাওর ডিষ্ট্রিক্ট ও
জাতিসংগঠন সম্বন্ধে টেলিগ্রাম প্রদান বলিয়া
সোধণ ক বরা দিয়াছেন।

নিউইয়র্ক ২৮এ যেক্সপারি—সেনাপতি বা-
লেক ভাপকিলড ও আনকেমনস নগর দখ-
লিয়াছেন। এই কল কিরাস্তা যে সেনাপতি
বসবসাইড পোর্ট হালা ৩০টারকে বিনাশ করি-
য়াছেন।

লগুন এই মার্চ—ইণ্ডিয়ান কোজিল সভার
অচিহ্নিত কর্মচারিদিগের আবেদনের বিবরণ
বিবচনা হইতেছে।

আমেরিকা ২১ এ মেজ — মিউইলক ট-
ইমন বলেন, অন্য কোন গবর্ণমেন্টে স্বকিণাংশ-
কে যদি শ্রাধীন বলিয়া স্বীকার করেন আরম্ভ
বিকার গবর্ণমেন্ট এই বিবেচনা করিবে যে
তাহারা আরম্ভ নক। সন্তি বুদ্ধি ধোবন। করিয়া
মিলেন এই মহাম গজ এই রূপ অনুমান করেন
যে কাল দুইনাগের মধ্যে স্বকিণাংশকে স্বাধীন
বলিয়া স্বীকার করিবে না। স্বকিণাংশ

কছেন সভার প্রস্তাব চাইতে হে যে আঙ্গিনী দে
মান পর্যায় যেন গরবেইট কলিকাতাকে আঙ্গিনী
বলিয়, স্বীকার না করিবেন তাহার কলিকাতা
যে একেই আছেন তাহাকে তথা চাইতে আ-
জ্ঞান করা চাইবে। উক্তবাংলার দেওয়ান চি-
ফ্বান চাবলটন ও চেভানা আফগানের হে
করি'তছে। বিরূপে অত্যন্ত পীড়ার প্রতিবাদ
চাইতে। সুসন্ধান প্রকৃতি উপকূলক দেশ
মতল বিস্মিলি নদীর জল দ্বারা বহত চাইতে।
জা'গ'র নিকটে উক্তবাংলার অনেক কামা-
ন করা'হ। পোশ কার্ডিনাল এটোমেনির কাম
শ্রিত্যগের আবেদন অগ্রাহ্য করিয়াছেন।

আসন্ন হইতে সম্মান কামিতাহে যে কৃষ্ণী
র সম্মতি পোলাওকে একটি স্বতন্ত্র রাজ্য ঘাট-
বেন। জিউক কনটোনইটান উহার বিধায়ক
এ পদে হইবেন।

লগুন ওরা মার্ক—ইতিহাস আকিসরসি
আব একখানি আসনদান পত্র পাঠিয়ে
সভার সমাপ্তি হইয়াছে।

সর জি, সি লুটস ব'লগাহেন যে ১৮৯০ খ-
 কে চীন দেশ লুটনে যে অর্থ লাভ করা যায় তাহা
 এখন আর ভাল করিয়া দেখা যায় না।

কর্ণেল নর্থ জিজ্ঞাসা করিতে ৭২ ডায়রী
উক্ত বলিয়াছেন বর্মান লুই প্রাপ্ত অর্থ ৩ ১/২
বিংশ গ করির। দেওয়া চাইবে।

বিশ্রোভকালে বাঙ্গালদেশের যে সময়
জিবর অকিলর প্রাণত্যাগ করেন, তাহাদি
বন্দনার চিত্র পীড়, কলিকাতার পাঠ
হউবে।

গবর্ণমেন্টে বিজ্ঞাপন।

বাক্যলক্ষণীয় লেপ্টনকেগবর্ধনের
আদেশস্বাক্ষর নিম্নোক্ত।

১৮ই মার্চ—বেবয়েও টিপি কিন্ন সাহে
সেঁদনীপুৰৰ বিবাচকাৰ্য্যেৰেৱেলিটৰ
যেন।

এইট এস যে ওয়েকেনও যশোহর
কান-জাও মোকাল ক'হটির মেঘর হইবে
জা-না-মো-র কার-মো-র ভেগ-টা -
হেট ও ভেগ-টা কালেক্টর মোলী দা-
হগল ও বর্জ-মো-র মা-জি-হে-টের সন্মু-
খা-পা-ই-বেন । ১০২

মর্গা বিভাগেও ভেগুনি বাড়ি: ১৫ টি ও "১৫" খালেকের মৌলবী মহম্মদ আলি ১৯৬১ অকের ২০ আইনের ২২ ধারা ও ১৯৬৪ অকের ১০ আইনের ১ ধারা অনুসারে মেম্বিনীপুর র ১৫ জেলা নির্বাহী অধীন বাড়ি: ১৫ টির কমতা আইনের ১৫২ উক্ত আইনের ৩৮ ধারা অনুসারে, ১৫ নতুন বিচারালয়ে আলিবার উপস্থিত ১৫ বা মোবিগাতির প্রথম কল্যাণসহায়ক বা পারিবেন, আলি ১৯৬৬ অকের ১২ ধারা ও ১৯৬৯ অকের ১৫ নিয়ম ও অকের ২৩ আইন অনুসারে, ১৫

ওয়েবের বিচারসংক্রান্ত কনভা পাই-

মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

মার্চ—এ ডবল ডবল সাপ্তাহিক সাপ্তাহিক
১২ পৃষ্ঠা সাপ্তাহিক ও সেসময় ২৪ পৃষ্ঠা
বঙ্গবাসীর সাপ্তাহিক সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

এ মার্চ—এ টি মাসিক সাপ্তাহিক ২৪ পৃষ্ঠা
যা, হুগলী ও বঙ্গবাসীর মাসিক সাপ্তাহিক
সাপ্তাহিক ।

প্রেরিত ।

সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয়ের ।

সোমপ্রকাশ! বেদিনীপুর জেলায় অল্প
১ পিঙ্কাল নামে একটি বিখ্যাত গ্রাম
। সেখানে অনেক গুলি ভক্ত লোক
করেন। তথায় ১০। ১২ বৎসর অতিত হ
গবন জোনবস সার হেনর হুজিঙ্কব
একটি বাজাল পাঠশালা থাকতে তথা
অনেক গুলি বাজাল দেশীয় ভাষায় শিক্ষিত
গিহল এবং ভাষা গ্রামের ভাষাভাষী
এক আশা করা গিয়াছিল। কিন্তু দুর্ভাগ্য
। তদুপায়ে অনেক জন লোকের (বহু
লালার মিয়নামি কিছুই অবগত ছিলেন
।) পূর্বে বানভাষা সেই পাঠশালাটি
সে কাগজে পড়িত গী। তাই উচিত
যাতে গ্রামের বেকত হুবহু গিহা চলে
। না। অধিকাংশ লোকই অজানা কারে
কর এবং চিন্তা। পরমিতা, সলকাগোদ
পিত্ত বাননে আসক্ত ।

মহাশয়! সেই গ্রামের কয়েকজন এই বৎ
তপায় আবার একটি বাজাল পাঠশালা স্থাপ
বিত্ত। পাঠশালাটি স্থানান্তরে চলি
পাঠ হয় যামের মনে পড়ান ১৫০ জন
ইয়াছে। ছাত্রেরা সকলেই মনোযোগ
অধ্যয়ন করিতেছে। বহুবার তাঁরা
সেই পাঠশালাটির পক্ষে মনোবো-

গী আছে । পাঠশালাটি কিছুকাল থাকি ল
গ্রামের অনেক উন্নতিব সম্ভাবন। কিন্তু কি অ-
কপেন বিবর, সেই গ্রামের ও তৎপাশ্বে
অন্য এক গ্রামের কয়েক জন ভক্ত লোক ইহা
এত মনোযোগ করা হুবে থাকুক, ইহাও গ্রাম
বিপাক হইবে উচিত।

কি আশ্চর্যের বিবর! সম্প্রদায় মহাশয়
স্বদেশের উন্নতি সাধনে বহুদূর গিয়াছে। কি
মানবজাতি, চত নচে? আসব। অর্থে, পা-
কিন করিয়া নি তহু কোমল করিব, কত প
বাপকার বিজ্ঞানিত করিব না জগদীশ্বর
কি এই অতিশয় আশ্চর্যের সর্বজন স্পষ্ট
রক্ত দিয়াছেন? উক্ত মহাশয়রা বলিয়া থা-
কেন তাঁহাটি পব সত্যনিয়মে অনেক লেখা
পড়া শিখাইবার প্রয়োজন কি? জগদীশ্বর তাঁ
হাঙ্গকে এমন অবস্থা দিয়াছেন, যে সকল
জীবনযাত্রা নির্ভর হইতে পারে। কিন্তু ই
তাঁহাটি বৈবিক জনা মতা মদি বলি
ইহা। ধর্মোপার্জনই কি বিদ্যাধ্যয়নের বৃথা
উপায়?

বেদিনীপুর

কমার্চ অপকপাতিন

২৩৪ মার্চ

সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয়ের ।

আপনার গত ১১ ই দি.সীর সোমপ্রকাশে
‘অনুতপাপাতাপিণ্য কমার্চ জমিদারনা’
এই আশ্চর্য প্রেরিত পত্র খানি পঠ করিয়া
আশ্চর্যের মনে সুগম বিবর ও চর্চের উদয়
হইয়াছে। অসীম আশ্চর্যমোদনসহ
শিক্ষিত ভাবের জুগবিগণ যে স্বকর্তব্য
অবগারেণে সচেত হইবেন এবং অনুতাপিত
চিত্ত আনুকূল্য পাপের পরিচর গ্রহণ
করিয়া সাধারণের জ্ঞান গোচর করিবেন
ইহা বিশ্বাসের কারণ হইয়াছে। এবং পরম
মঙ্গলময় পরবর্তী যে তবসাক্ষর লেখ করা
টব হুজিঙ্কব তেব করিয়া সত্যের জোড়ি
ধর্মের মনোবল সূক্তি প্রকাশ করিতেছেন—
ইহা হর্ষের নিদান। পরশেরক জুগলী
মহাশয়, যে সকল গৈরিক ও অনুতপাপের
জন্য অনুতাপ করিয়াছেন, তৎসমুদায়
পাঠ করিয়া মহাদয় ও মনোহরিত্বী ব্যক্তি মা-
য়েই বিবিত ও হর্ষিত হইবেন সন্দেহ নাই,
কিন্তু বোধ করি অপরাপর অনেক আশ্রয়
ভবিষ্য পাঠক । কিছু বিশেষ আশঙ্কাজনক
কথা আছে। সেই বৈবিক আশঙ্কায় কারণ উপ-
সংহার হুজিঙ্কব হইবেক, একদে অপরা-
পর বিবর লিখিত হইবে। জুগলী মহাশয় লিখি-
য়াছেন “যে আমার তেজস্বিতার অত্যা এইত
অন্যের অনুবোধে গ্রহণ পীড়ন করিতে হয়,
অতএব গবর্ণমেন্টের পোস্ত হইলে আমার অ-
ভাচর সকল নিবৃত্ত হইতে পারে” । তাঁহার
লিখন দ্বারা স্পষ্ট প্রতীতি হইতেছে যে তাঁহার

জমিদারীর অন্তর্গত আশ্রয় মঙ্গল নিবারণ
করিবার নত্যা হইয়া থাকে। তৎপ্রতি প্রতি
নাই তখন অন্য অন্যের অর্থাৎ অতিক্রম
করিয়া সে সমুদয় বাক্য বাক্যে সমর্থ হন
। ইহাতে উহা বাক্য অনুভবের তত-
কাল আন্তরিক ভাবের প্রমাণ অর্থাৎ পাপের কিছু
মন্দোহ জন্মিত হইবে। কারণ তাঁহার তেজস্বিতা
নাই বলিয়া, যদি তাঁহার পুত্র অনুভব হইয়া
বাক্য তাহা হইলে সে অত্যা তেজস্বিতা হই-
বার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা। তৎপুত্র অনুভব
ইপাণের প্রমাণ। যদিও তৎপুত্র, যদিও তাঁ-
হার পুত্র অনুভব না হইয়া থাকে তথাপি
যে পরিমাণ ইয়াছে তাহাই আশ্চর্যের
পক্ষে অল্প আশঙ্কায় যথার্থ নাই। পরম ক-
রুণাময় গবর্ণমেন্ট যে কত প্রকার উপায়ে আ-
শ্চর্যের তাঁহার অধ্যয়ন পথে লইয়া যাইতে-
ছেন তাহা আশ্চর্যের প্রমাণ হইতে পারে।

উক্ত জুগলী মহাশয় পুত্রের প্রমাণ ও পুত্রের
একদম পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের
বিপাকতা করিতে সক্ষম। যদিও সক্ষম
মনে করেন (মঙ্গল জুগলী হুগলী অল্প লিখি
য়াছেন) “তাঁহার অন্যায় ভাচরের বিপাক
অভিযোগ করিলে সক্ষম হইবেন এবং তা
টেমারী প্রভৃতি লিখিত হইবে। কিন্তু আশঙ্কায়
বিবর, যাঁহা অনুভব করি নিবৃত্ত হইলে
করুণাময় গবর্ণমেন্ট তাহা পাপজনিত আশঙ্কা
ন দ্বারা মঙ্গল করিতেছেন।

একদে গবর্ণমেন্টের জুগলী মহাশয়ের
মহীপে এই আশঙ্কায়—যে তিনি যে প্রকার ম
ভাচর ব্যক্তি করিয়াছেন তাহাতে অসম, সা
ভিশয় পণ্ডিতের লভ করিয়াছে, তিনি আ
কেন কাল মপেক হইয়া গবর্ণমেন্টের প্রতি
চাতিয়া থাকেন।

পূর্ব পিত্ত প্রতিমাত্রকে আশঙ্কিত। রূপ
অনুভব অধিকার প্রদান করিয়াছেন, তিনি
পিত্ত অনেকই অনুভব সত্যের বহু প্রদান করি
যাছেন, অসম, অসম, বহু বাচর দ্বারা
তাঁহাঙ্গকে মণ্ডিত করিয়া কোলিয়াছে। তা-
হা করিলে অবশ্যই তাঁহাঙ্গকে পুত্রের পুত্রের
ও উন্নত করিতে পারি। অতএব আপন সত্য-
র প্রতি নির্ভর করিয়া পাপ করি ছরীকরণে চে
ই, করুন, উহা হইতে অনুভবের প্রমাণ হইবেন।
তাঁহা হইলে সত্যের অনুভব পরিচর্য করি-
য়া আর কুত্র লৌকিক অনুভব রক্ষার জন্য
হইতে হইবেক না। দেহ- জগদীশ্বর মা
পিত্ত হুজিঙ্কব অধিক দন সমর্পণ করিয়াছেন, তা
পিত্তকে বহু সংখ্যক লোকের উপর আশ্রিত
প্রদান করিয়াছেন, আপনি সেই ধর্মোপার্জনী,
কমতামুখী উপভারের জন্য তাঁহার নিকট
দয়ী রহিয়াছেন। তিনি বাহু কে যত দিয়াছেন
তাঁহার নিকট হইতে তত দ্বিগুণ হইবে এই স-
ত্যের সর্ম আপনি গ্রহণ করুন, তৎসমুদায়ী কার্য
করুন। তেজস্বিতা মা থাকিবে কি অসম। চেটা
দ্বারা তাঁহার পুত্রের পুত্রের পুত্রের পুত্রের
অনুভব কি অচেতন হইবে পুত্রের? যে যে কার্যের
আশঙ্কা, ইহার প্রমাণ হইবেক।

অগতীশ্বর কি তাঁকে তাঁর পত্নীরোধ করিয়া
বন্দী রাখিয়াছেন নাই। আপনি তাঁর
তাই উন, নিস্কীর্ণতা তাঁর পত্নীর কল্পন,
পুরুষার্থ প্রকাশে যত্নবান হইল। আপনার দ্বারা
আমাদিগের জন্মভূমির অনেক উপকার হই
তে পারিবে।

পরিণেহে উপলক্ষ্যে যখন আমাদিগের
বিশেষ আশ্রয় কামন্যে কল্পিত হইল।
উল্লিখিত ভূমির মালিকের সমুদয় স্বত্ব ও
পৈতৃক অধিকার এই ভূমির উপর আমল
লোকের বিবরণ লিপিবদ্ধ হইল। ১২৬১ সালের
মে মাসে বর্তমান প্রদান ভূমির মালিক
এবং তাঁহার পুত্র ও সন্তানদের
সমিত্তি সর্বস্ব মনুষ্য হইতেছে। এ নিমিত্ত
আমাদিগের ক্ষমা প্রার্থিত হইয়াছে যে আ-
মাদিগের আমল ভূমির মালিকের এই পত্র
বিস্তৃত হইবে। আমরা তাঁহার সমস্ত
চরিত্র পাঠে সন্তোষ প্রাপ্ত হইয়া তাঁহাকে বার
বার বিনামূলি প্রদান করিতেছি। এক্ষণে আমরা
এই বিষয় বিশেষরূপে তত্ত্বাবধান করিতে
এরূপ হইল।

আমাদের কমান্ডার সোমবার
পাঠক

নান্যর জীযুক্ত সোমবারসম্পাদক

মহাশয় সমীপে।

কামপুত্র জন্মসাহেবের বিয়ে টিউনি
একবার মাহাত্ম্য হইল। তাহা হইল। তাহা
পাঠ করিয়া অশ্রু কবিতা হিলান, কিন্তু যখন
সেই বিবাহ বিষয়ী মহাশয় জন্ম পত্রিকা
হইতে সংগৃহীত করিয়া। অশ্রুতা তাহা আ-
লোক্য করিয়া। আমাৰ মনোমতো। কল্পনাম
সম্পন্ন। এবং এই সমস্ত ভাষা কবিতার নিমিত্ত
মহাশয়ের ১৯তম বর্ষের পত্রিকা লইয়া। এখান-
কার প্রসিদ্ধ বেসিটর এস টিউনি সাহেবের
একটি রেলওয়েস্টেশন কোম্পানীর দ্বারা
লেন্সসাহেবের অপমানের বিষয়টি পাঠ করি-
লাম, তাহা প্রবণ করিয়া তিনি এই সংবাদটি
মধ্য বলিয়া। মহাশয়ের পত্রিকাখানি জন্ম সা-
হেবের নিউট প্রেরণ করেন। পত্র পুনরাব-
হ। জন্মসাহেব মহাশয়ের পত্রিকা পাঠ করিয়া।
এই কথা বলিয়াছেন যে, নিউট পত্রের এ-
কটি প্রবন্ধ। এবং সংবাদ কোথায় পাইয়া থাকে।

কানপুর হইতে লক্ষ্মী পর্বত বাণীশ নক-
টে দ্বারা যোগাযোগ হইবে এই বিষয় বহু-
বর্ষের অধিক কথোপকথন হইতেছে। এবং আ-
মরাও টেউলসের দ্বারা বাণীশ নামে গমনাপ-
ন্ন করিব এই আশয়ে টিউনি কালকাল ভাবিতছি।
বিশ্ব ভক্তিমণ্ডলে আমাদিগের অতিশয় পরি-
পূর্ণ হইলে তাহা বলা যুক্ত। এক্ষণে কানপুর
হইতে লক্ষ্মী হইতে হইলে যে রাস্তা কর
কেন ও ভগ্নিগি টাকা যাত্র এবং সময়

এখানে বহু প্রাইভেট ডাঃ আছে তাহা
সমস্ত জেনারেলের পাড়ি ও চক্ষু উত্তম ইহা
নকলেই বিনিময় থাকেন, এবং আমি এই জন্ম-
বীতি বিবরণ করিয়া। কল্পনাম গভীর ভাষা
ডাক পাড়িতে লক্ষ্মী গমন করিয়াছিল।
কিন্তু আমাৰ অপর প্রাইভেট যে বিবরণ সাম-
কালে এখান হই ৬ পাঠ করি তাহা পব-
নম বেলা ছুটি প্রবন্ধের সময় আমল বাগ
পৌরুষাছিল। আমল এই প্রবন্ধ ক-
রা। মেসিলাম এক পুণ্ডিত এই ভাষা।
লিখা। অত্র মহাশয় হেল সাহেবের পত্র।

গবর্ণমেণ্টে ভেরেভেট হই যত্নবান হইয়া যত্ন
বটে কিন্তু মাঝকাল এখানে হোটেলে যাত্রা
ভাষা তাহাতে গুণ হইতে গতি হইতে হইত।
অতএব আমরা হট্টইনগিয়া। লেন্সসাহেবের
কে বিনয় পূর্বক অনুরোধ করাতছি, যে তাঁ-
হা। মালি দ্বারা লোক বহু প্রাপ্ত করিয়া।
কানপুর হইতে লক্ষ্মী পর্বত, লেন্স সাহেব
চালন তাহা হইলে আমাদিগের এবং সর্বসা-
ধারণের যে আশ্রয়ভীর উপকার হইবে তাহা
সন্দেহ নাই।

মহাশয় লক্ষ্মী নগরের অট লক্ষ্মী মেসি-
গিয়েভ কাউন্সিলর বাগ অবলোকন করিয়া আ-
মাৰ মনোমতো এই বিবেচনা হইল যে আমা-
দিগের পেন্সন ইহা অগে। উল্লিখিত ইহা
কখনই সম্ভবিত নহে।

তথ্যঃ আমাৰ একটি অশ্রুতা মেসিলাম। সেটি
এই কতগুলি চিঠিগাণি টিউনি। এবং ছুটি
তিনটি ইউনোপীয় কতগুলি নথি ও প্রাপ্ত
আমল বেগমকে লইয়া। অধিক কালকাল কবি-
গেছেন। মহাশয় ডেল তাহা আউত এমাক
সেবন করিয়াছেন কি এই গুণ পুরুষের জন্ম?

এখানে বিবরণে পেন্সনের টিউনি গমন
গমন হইয়া থাকে কিন্তু ইটি খুঁটিপারের বিপ-
লিত কর্তব্য। অতএব যদি ডাক্তার কটন, এবং তা-
ক্তর ডাক এই ছুটি মহাশয় মনোমতো হইয়া
গবর্ণমেণ্টে পিটিন করিয়া এই বিষয় নিষা।
কাহাটি উঠাইয়া দেন তাহা হইলে এক আন-
ন্দেব বিবরণ।

কানপুর
মার্চ ২৫, ১৮৬৩

এক পাঠক

জীযুক্ত সোমবারসম্পাদক

মহাশয় সমীপে।

আমি ১৫ই কাঙ্কনে যে প্রবন্ধ প্রেরণ করি,
তাহা ১৯এ কাঙ্কনের সোমবারে প্রকাশ
হইয়াছে। কিন্তু তদবধি গারি সোমবার প্রতীক
করিয়া মেসিলাম জীযুক্ত চক্রবর্তীর ভক্তবাণীশ
ভট্টাচার্য্য মহাশয় তাহার উত্তর না দিয়া মে-
নামলেন থাকিলেন, অতএব তাহাতে সন্দে-
হিত হইল এক্ষণে পাইতেছে। এক্ষণে পাঠক-
বিবেচনা করিয়া দেখুন তিনি যে এই বি-
বরণ প্রবন্ধ হইয়া ১৫ই পৌষের সোমবারে
অশ্রুতা প্রকাশ পূর্বক জন্মক প্রার্থে

উপস্থাপন করিয়াছিলেন, তাহাকে কাঙ্কন
প্রকাশ পাইল। বহু ভাষা বিচারে
প্রতিপাদিত তিন বৎসরের পত্র সাহা
পর্যায় (১) বাগদানের কাল ও আমাদিগের
কুলোনের কৃতদার পাত্র (২) বাগদানের
এই দুইটি বিষয়ই অত্র প্রবন্ধে লিপিবদ্ধ
হইছে। এখন তিন আর উত্তর প্রকাশ কর-
নাই করুন কতি না। বোধ হয়, বিচার
এ সিদ্ধান্তে সন্তুষ্ট হইয়া থাকিবেন
তদ্বিষয়ে যাহা কিছু বক্তব্য অবশিষ্ট
না। ভূমির সন্তিত্তি বিচার করিয়া তাহার
কথা অবশ্যক, কেন না তাহা হইলে
কাঙ্কন জন্ম আছে, প্রকাশিত হইয়া
সিদ্ধান্ত দ্বিতীকৃত হইবে। এক্ষণে প্রার্থন

(১) অমরা যে জীযুক্ত আমলসাহেবের
গৌণ ও জীযুক্ত চক্রবর্তীর ভক্তবাণীশের পত্র
কা লইয়া বিচার করিয়া মীমাংসা করি, তাহা
দিগের এরূপ অবসর ও ইচ্ছা নাই। বাগদার
কাল নির্ণয় বিষয়ে আমাদিগের শাস্ত্র ও
অমুসারী যে সংকল জন্মিয়াছে, এবং
অপবর্জিত হইয়াছে। এক্ষণে
মার্চ বৎসর ভট্টাচার্য্য লইয়া
হইল, তিন বৎসরের পত্র বিচার
কন্যাদান কাল, তিনি সন্তান বহু
কে বিবাহ কাল বলিয়া নির্ণয় করেন, ইহা
যুক্তি ও এই কথা কহিতে হইবে। ইহাতে সন্দেহ
উদ্ভব হইবে না। পূর্বকার ব্যবহার
ভাগ করিয়া বাগদার সন্তান বহু পাত্র
করিতে পারেন, তাহারা যে আর ২। ১ সন্তান
অধিক স্বীকার করবেন না কেন, তাহা
যুক্তিতে পারিতেছি না। বিশেষতঃ এ নিমিত্ত
অনাপূর্ণ। ঘটনার সন্ধাননা অত্র, অমরা
প্রবীর ও বিবাহের কিঞ্চিৎ পূর্বক লক্ষ্য করি-
বাব এখা আছে।

২। বৈদিক জেনীর প্রধান কুলীশ
কৃতদার পাত্রের দ্বারা দ্বিতীয় পাত্রের কন্যাদান
বাকান প্রথা নাই। তাহারা যদি দ্বিতীয় পাত্র
কন্যাদান স্বীকার করেন, কৃতদার পাত্র
স্বীকার করিতে পারিবেন না তাহাও অমরা
যুক্তিতে পারিলাম না, পাত্রের কোন কুল
কৃতদার পাত্র কন্যাদানের নিষেধ নাই।
সের চক্ষে দ্বিতীয় পাত্র আর কৃতদার পাত্র
আমাদিগের ব্যবহার আছে, যিনি কুল
দ্বিতীয় পাত্র কন্যাদান করেন, তিনি
হইয়া বান, এরূপ বিনি কৃতদার পাত্র কন্যাদান
করবেন, তিনিও ছোট হইয়া বানবের
বেদান্তবাণীশ মিজপুত্রের যে স্থানে দ্বিতীয়
পাত্র ও কৃতদার পাত্রের এসজ করিয়াছেন, তাহা
হামাণী থলিয়া দেখিবেন, তাহা কুলীশ বৈদিক
দিগের বর্তমান ব্যবহার বিষয়ে লিপিত
নাই, বর্তমান ব্যবহার পরিবর্তিত হইয়া
ব্যবহার প্রচলিত কবিতার জন্ম হইয়া
তদ্বিষয়ে হইয়াছে। বেদান্তবাণীশ
অমরা প্রবন্ধ উত্তর দান ইচ্ছা হইয়া
হাছে, আর অত্র উত্তর দ্বিবার প্রা

কেহ কোন প্রকারে বিজ্ঞান দিতে ইচ্ছা করিলেও হাতে এখনও প্রতিপত্তি নাই। দ্বিতীয় বার ১০ মাস। তৃতীয় বার ১০ মাস দিতে হবে। ক - প - ১২৪০ টাকা ক - ম - ১২৪০ টাকা।

যেন যথেষ্ট জ্ঞান করতঃ তৎসম্বন্ধে
সেবাসেবায় উক্ত প্রদানে বিরত না
হইবে।

আমার কুলসম্বন্ধ প্রমাণ পরিবর্তন বিষয়ক
পুস্তকে বিস্তারিতভাবে তথ্যাদি যে দুইটি বিষয়ে
আপত্তি আছে, তাহার প্রমাণ এই, তিন
বাহিরে অব্যবহিত পূর্বে প্রদত্ত কনিষ্ঠ
চাচের। তদ্বিষয়ে আমার প্রমাণ এই যে, কুলীন
বংশের মৌলিকের বাবদ তৎকালীন সামাজিক
প্রথা বর্ণনা করিয়া কুপ্রথা পরিবর্তন পূর্বক
কুলপ্রথা প্রতিষ্ঠা করা কর্তব্য কি না।
সামাজিক লোকের নিকট লৌকিক যুক্তি
পক্ষা পাত্ত সমস্ত যুক্তির বল অধিক কি

১৯এ চৈত্র মঙ্গলবার

শ্রীআনন্দচন্দ্র বেদান্তবাসী

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয়েষু।

কলুটোল, চৈতন্য নগর।

প্রায় দুই বৎসর অতিক্রম হইল এই কলুটোল
মক স্থানে কোন মনোহর ভবনে চৈতন্য না-
ম একটি সত্য সংস্থাপিত হইয়াছে, এত রবি-
র অপরাহ্নে শ্রীযুক্ত বৈষ্ণবচরণ বাবাজী
স্বতঃ চৈতন্যচরিতামৃত পাঠ করিয়া নাম
কীর্তন করিয়া থাকেন, এবং উক্ত মহা-
দেউতীর অঙ্গসারী চৈতন্য ইতি পূর্বে
তৎকালের পল্লভে দীপ্যমান ছিলেন। তাহার
পর মন উল্লাসিত করিয়া নিজ অর্চনায়
সিদ্ধ হইলেন। প্রায় এক ঘণ্টা অতিক্রম হইল উক্ত
দীপ্যমান কোন মহত্ব এত অপরূপ স্বপ্ন দেখিয়া
নাম, সেই অপরূপ অতি চমৎকার, তাহার
মহাশক্তি প্রতি রবিবারে এই বাবাজীর পাঠ
করিবার নিমিত্ত উক্ত সভার অধিষ্ঠিত হন
সমস্ত আসনাত্যবে সজায়মান থাকেন,
অপরূপ পাঠ এবং একমুখিত হইয়া
সাক্ষাতে করিতে অন্তর্ভুক্ত হন। মহত্ব
চৈতন্য বৈষ্ণবচরণকে আনন্দোপান্ত
বর্ণনা করিলেন, তিনি তদনিবাস
চৈতন্য শব্দটারোহণ করিয়া তৎকালের স্থানে
যন পূর্বক সমস্ত ব্যক্ত করিলেন। তৎপরে
সমস্তপরে বস্তু হইয়া আসন গোলাব ও পু-
র সভায় আয়োজন করি ত আদেশ কবি-
লেন উক্ত অধ্যাপি সভাতে প্রতি রবিবারে হা-
পিত থাকে। তৎকালের তদ্বিষয়ে প্রবলভাবে
বহু ১০ই চৈত্র রবিবার দিবা পাঁচ ঘটিকার সম-
কালক বস্তু সমস্তিয়াহারে শব্দটারোহণে সভা-
উল্লাসিত হইয়া বস্তু বৈষ্ণবচরণ সমস্তকে বি-
শ্রামিত বসাইলেন অমল্য তিনি যোগবলে
সভে পারিলেন চৈতন্য প্রভু দেহ ধারণ করি-
য়াসিগারেন। অতএব তিনি তৎকালীন গঙ্গাদ ও
জ্ঞান কবিগণের এতদ্বারা ১৯এ আপ-
ন্য ১৯এ চৈত্র মঙ্গলবার ১৯এ

আমার কুলসম্বন্ধ প্রমাণ পরিবর্তন বিষয়ক
পুস্তকে বিস্তারিতভাবে তথ্যাদি যে দুইটি বিষয়ে
আপত্তি আছে, তাহার প্রমাণ এই, তিন
বাহিরে অব্যবহিত পূর্বে প্রদত্ত কনিষ্ঠ
চাচের। তদ্বিষয়ে আমার প্রমাণ এই যে, কুলীন
বংশের মৌলিকের বাবদ তৎকালীন সামাজিক
প্রথা বর্ণনা করিয়া কুপ্রথা পরিবর্তন পূর্বক
কুলপ্রথা প্রতিষ্ঠা করা কর্তব্য কি না।
সামাজিক লোকের নিকট লৌকিক যুক্তি
পক্ষা পাত্ত সমস্ত যুক্তির বল অধিক কি

সম্পাদক মহাশয়! আদ্যাপিও একমুখ লোক
কলিকাতায় আস করিতেছে। হায়! এসকল লো-
কের কত দূর চৈতন্য হইবে। এতাবধি আ-
জিও উচ্চারণক অনার্য্যে প্রাণনা ক বভেহ,
ইহাও। কষ্টে বসিতে পারিতেছেন না।
কলুটোল। আপনকার নিতান্ত বশব-
স্ব মার্গ, ৬৩ মাল বটবাস

শ্রীযুক্ত সোমপ্রকাশসম্পাদক

মহাশয়েষু।

মহাশয় অমূল্য পূর্বক নিম্নলিখিত পত্রি-
কা দ্বারা আপনকার আগামী সংখ্যায় প্রকাশ
করিলে অভ্যন্তরীণ হইবে।
আপনার একান্ত বশব-
স্ব এম এম এম।
বঙ্গ দেশের পূর্ব বিভাগস্থ বিদ্যালয়
সমূহের ইন্সপেক্টর।

বঙ্গদেশের পূর্ব বিভাগস্থ বিদ্যালয়
সমূহের ইন্সপেক্টর বো আর, এম, এম, এম
সাহেবের প্রতি।

মহাশয়! আপনকার ১১ ফেব্রুয়ারি দিবসীয়
১২২৯ বছরের পত্রিকাতে ভেলা কবিদগুণের
অভ্যুপাধী কামাটপুর নিবাসী বাবু বরদাকান্ত
লিখিতবারে ভাঙ্গী গবর্ণমেন্ট বঙ্গবিদ্যালয়ে
তিন বৎসরের নিমিত্ত চারি টাকার একটি ছাত্র
হস্তি প্রদানের সম্বন্ধ প্রাপ্ত হইয়া অভ্যন্তরীণ
হইল। উক্ত মহাশয়কে পূর্বক অর্থ ও
কমতা দ্বারা আপনকার অভ্যুপাধী জ্ঞান বর্জনে
অগ্রসর হইয়াছেন যেখানে বৎসরোত্তরী প্রীত
হইল। ইহা আমার সম্পূর্ণ ইচ্ছা সে একবিধ
ছাত্রজি ও পুরস্কার সাভাগের নাম করণ হয়।
আপনি অমূল্য করিয়া বাবু বরদাকান্ত লিখিত
রূপে আমার ধন্যবাদ জানাইয়া কবি-
জ্ঞানি ভরসা করি তিনি এই ছাত্রজি এক
তত্ত্ব বিজ্ঞান চিরস্থায়ী করেন।
ভাঙ্গী নাম অনন্তবংশগণের
কেশহিঁদেবী বলিয়া পরিগণিত হইবে।

আপনার একা-
তত্ত্বজি, এম এম
প্রাচীন বিদ্যাধ্যাপনে

যদ্যপিও পুস্তকালয়
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ পৌষ পর্বা
টীকাবাহন মৈত্র
১২৬৯ চৈত্র হইতে ৭০ ফাল্গুন পর্বা
ব্রাহ্মসাহি আনন্দলাল সাহা পু-
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ বিষ্ণু
ছাত্রজি বস্তু
১২৬৯ চৈত্র হইতে ৭০ আশ্বিন
মহম্মদ আব্দুল নব
১২৬৯ চৈত্র হইতে ৭০ তাজ পর্ব
গোবিন্দলাল ও
১২৬৯ ফাল্গুন হইতে ৭০ মাঘ পর্ব
তোলালাল গাল বি
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ পৌষ পর্বা
শ্যামবন চারচৌধুরী
১২৬৯ চৈত্র হইতে ৭০ তাজ পর্ব
শ্রীচন্দ্র সাহা'নগ পুস্তকালয়
১২৬৯ মাঘ হইতে ৭০ পৌষ পর্বা

সোমপ্রকাশ সংগ্রহ কলেক্ট

নিম্নলিখিত

অগ্রিম মূল্য ন। পটলে দক্ষলেন দ'ব-
কাশ প্রেরণ করা যায় না।
ইহার অগ্রিম মূল্য বাবদ ১০ এবং ১০
খিক ১০ টাক ছয় মাসের স্থানে লওয়া যায়
বাঁচাব। যান একাধারে মূল্য টাকটিকি
পাঠান তাহান। এক অর্থ, আধ আনার অধিক
মূল্যের ও রম্যের টিকিট না প্রেরণ করেন।
বখন যিনি দক্ষলেন হইতে সোমপ্রকাশের
মূল্য পাঠাইবেন তাহা বেন বেকজি করণ
লেন।

পূর্বপ্রাপ্ত মূল্যের কাল অতিক্রম হইলে মূ-
ল্য পাঠাইতে কেহ বেন অগ্র ১০ দিলেন
করেন।

বাঁচাবগের মূল্য দিবার সময় অতিক্রম হই-
রা কাইবে, ১০ মাস সময় অতিক্রম করিয়া এ-
বধে সোমপ্রকাশে প্রেরণ করিয়া তাহান
চিঠি লিখিয়া জানান হইবে, যদি তাহা
কোন উত্তর অথবা মূল্য না পাওর। যার কাই-
বহু হইবে। মূল্যের নিমিত্ত চিঠি প্রেরণ
পাঠান হইবে। কলিকাতা সংস্কৃতকালে
আমাদিগের নামে চিঠি আইলে আমবা পার
পাইব।

বাঁচাব বখন সোমপ্রকাশ পরিচাল্য কর-
বার ইচ্ছা হইবে চিঠি লিখিয়া মা আনাই-
তা প্রাচী করা যাইবে না।

দক্ষলেনের বাঁচাব। সমর্থ হইবেন, এ-
নিগের অর্থ কাকমা লিখিত
কেহ সে প্রাণে গন হই
লিলে উ-ব-ম-তি-জি-
দ্বিতীয় বা-
হিঁদেবী
সন বাব

